

महाभारत भाषा

हरिवंश पर्व प्रथम भाग

जिसमें

एकसे एकसौद्वाछठ अध्याय पृष्ठ १ से ४७२ तककीकथा-दक्षोत्पत्ति मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान, द्वादशादित्योंकी जन्मकथा, श्राद्धफल अरु यदुवंशमें कृष्णजी का उत्पन्नहोके वसुदेवजीके द्वारा मथुरासे गोकुलमें नन्दके घरमें पहुँचके कंसके भेजेहुये पूतना, वत्सासुर, बकासुर, अघासुर, गर्दभासुर, केशी आदिका वध गोवर्द्धनोद्धारण अरु अक्रूरकेद्वारा मथुरामें आके रजक धनुषभञ्जन, कुवलयापीड़हाथी और चाणूर मुष्टिकादि सहित कंसवध पुनि कृष्णके विवाहादि अरु प्रद्युम्नजी को सूतिकागृहसे शम्बरद्वारा समुद्रमें पात पुनि धीमरके द्वारा मछली के पेटसे प्रद्युम्नको रतिके पास पहुँचके शम्बरराक्षस को वध करके स्त्री सहित द्वारकागमन वर्णितहै ॥

जिसको

श्रीभार्गव वंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के व्ययसे ज़िला रोहतक वेरीग्राम निवासी पण्डित रविदत्त वैद्यने अत्यन्त परिश्रम से देवनागरी भाषामें उल्था रचना किया है ॥

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

मई सन १८९८ ई० ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी है उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥



जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेकप्रकार के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेद कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानो यह पुस्तक वेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेखाने में छपीथी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारखानेका दस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़े हरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी कीमतमें किफ़ायत होसक्ती है ॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग २ भी मिलते हैं ॥

पहले भाग में (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरे भाग में (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरे भागमें (८) कर्णपर्व्व (९) शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिकपर्व्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्व राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व (१५) आश्रमवासिकपर्व्व (१६) मौसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

हरिवंशपर्व भाषा प्रथमभाग का सूचीपत्र ॥

इति प्रथम भाग सूचीपत्र समाप्तम् ॥



महाभारत हरिवंशपर्व ॥

प्रथम भाग ॥

पहिला अध्याय ॥

इस ग्रथकी आदिमें नारायण और नरोंमें उत्तमनर महाराज और देवी सरस्वती इन्होंको नमस्कार करके पश्चात् ग्रन्थको वर्णन करते हैं १ वेदव्यासजी के मुखारविंदसे निकसाहुआ और प्रमाणसे रहित और पुण्यदेनेवाला और पवित्र और पापों को हरनेवाला और कल्याणरूप ऐसे वर्णन किये महाभारतको जो पुरुष श्रवणकरते हैं तिन्होंको पुष्करतीर्थके जलसे अभिषेचनकरना आवश्यक नहीं २ और पराशरमुनिके पुत्र और सत्यवतीके हृदयके आनन्द देनेवाले ऐसे व्यासजी महाराज सम्पूर्णों से अधिक वर्त्तते हैं क्योंकि जिनके मुखारविन्द से निकसाहुआ वाणीरूप अमृतको सम्पूर्ण जगत् पानकरताहै ३ और सौ गौवोंके सींगोंको सुवर्णसे जटितकर और बहुश्रुति वेद के जाननेवाले ब्राह्मणको देनेसे जो फलहोताहै सो पवित्र भारतकी कथासुननेसे भी वैसाही फल मनुष्यको प्राप्त होजाताहै ४ और जो सौ अश्वमेधयज्ञोंका पुण्यहै और जो बारहहजार इन्द्रयज्ञों का फलहै सो फल हरिवंशपुराण के दानसे होजाताहै यह महर्षि व्यासजी महाराजको कहाहै ५ और जो वाजपेययज्ञका फलहै और राजसूययज्ञका जो फल है और हस्ती रथ इन्होंके दानका जो फलहै तिसको भी हरिवंशपुराण के दान से प्राप्तहोजाताहै इसमें व्यासजीका वचन प्रमाणहै और महर्षि वाल्मीकिजीका भी कहाहै ६ और जो पुरुष हरिवंशपुराणको विधिसे लिखाताहै सो बडे तपवाला

है और वह हरिके चरणकमलको ऐसे प्राप्तहोताहै कि जैसे कमल के लोभी भौंरा प्राप्तहोते हैं ७ और जो महर्षिपितामह अर्थात् ब्रह्मासे छठाहै और अक्षयविभूति करके जो युक्तहै और जो नारायणके अंशसे उत्पन्नहुआहै और एक जिनके पुत्र है और वेदके निधि ऐसे व्यासजी महाराजको नमस्कार करके ८ और आद्य पुरुष ईशान, पुरुहूत, पुरुष्टुत, सत्य, केवल, अविनाशी, व्यक्ताव्यक्त, सनातन ९ असत्य, सत्यासत्य विश्वरूप, सत्य, असत्यसेपरे, परावरों के रचनेवाले, पुराण परम अव्यय १० मङ्गल करनेवाले, मङ्गलरूप ऐसे विष्णुभगवान् को नमस्कार करके और सम्पूर्ण देवताओं में मुख्य पापसे रहित पवित्र इन्द्रियों के ईश्वर चराचरों के गुरु ऐसे हरिभगवान् को नमस्कार करके ११ पश्चात् ऋषियों में मुख्य और धर्म्मात्मा महामुनि ऐसे शौनकऋषि नैमिषारण्य क्षेत्रमें सम्पूर्ण शास्त्रों के जाननेवाले सूतजी से पूछतेभये १२ अब शौनक कहते हैं कि सूतजी आपने वहुत आख्यान वर्णन कियाहै सम्पूर्ण भारतवंशियोंका और अन्य सवराजाओं के १३ और देव, दानव, गन्धर्व, उरग, राक्षस, दैत्य, सिद्ध, गुह्यक इन सम्पूर्णोंके १४ अद्भुत कर्म और पराक्रम को वर्णनकिये और धर्मनिश्चय, कथायोग, वहुत उत्तम मुख्यजन्म १५ ये सपूर्ण कहे और सुंदरवाणीकरके पवित्रपुराण कहे और तहा मनको सुख देनेवाला अमृतरूप १६ कुरुवोंका जन्मभी कहा परन्तु हे रोमहर्षणके पुत्र वृष्णि और अंधक कुलोंका आख्यान नहीं वर्णनकिया अव तिन्हों के वंशकहनेको आप योग्यहो १७ अव सौति कहनेलगा कि ऐसे सुनके सूतजी ने कहा कि हे शौनक जनमेजय राजाने जो धर्मके जाननेवाले और व्यासजी के शिष्य ऐसे वैशम्पायनजी से पूछाहै सोही वृष्णियों के वंशादिसे में तुम्हारे आगे वर्णनकरताहू १८ हे शौनक अति वुद्धिवाला जनमेजय भारत राजाओंके सपूर्ण इतिहास सुनकर वैशंपायनजीसे कहतेभये १९ फिर जनमेजय कहनेलगे कि हे मुने महाभारतका आख्यान वहुत अर्थवाला विस्तारपूर्व्वक आपने कहा और मैंने सुनाहै २० और तहा वहुत पुरुषर्षभ शूरवीर कहे हैं और नामोंकरके कर्मोंकरके वृष्णि और अंधक महारथकहे हैं २१ और हे द्विजोत्तम तिन्होंके स्वच्छकर्म भी तहा २ अल्परीति और विस्तारसे कहे परन्तु हे प्रभो पुरातन कथनमें मेरे तृप्ति नहींहुई और पांडव और वृष्णि एकही राशिमाने हैं २२ और वंश में कुशल तुम प्रत्यक्ष तिन्होंको दिखानेवाले भये हे तपोधन अव विस्तारकरके इन्होंके

कुलको वर्णनकरो २३ और जिन जिन वशमें जो जो भये हैं तिन सम्पूर्णों के जाननेकी इच्छाकरताहू सो हे महामुने २४ प्रजापतिसे लेकर तिन्होंकी आदि सृष्टिको चिंतवन करके सम्पूर्ण वर्णनकरो २५ सूतजी शौनकऋषि से कहते हैं कि हे शौनक ऐसे सत्कार करके पूछाहुआ महातप और महात्मा वैशम्पायन विस्तार से आनुपूर्वी तिस कथाको वर्णन करते भये २६ वैशम्पायन ऋषिने जनमेजय से कहा कि हे राजन् मेरी कही हुई दिव्य और पवित्र और पापोंके नाशकरनेवाली विचित्र बहुत अर्थवाली वेदमें मानीहुई ऐसी कथाको श्रवण कर २७ और हे राजन् इस कथाको जो वारवार सुनते हैं वे अपने वंशको धारण करके स्वर्गलोकमें आनन्द करते हे २८ हे राजन जो अव्यक्त, कारण, नित्य सदसदात्मक ब्रह्म तिससे प्रधान पुरुष ईश्वर जगत्को रचतेभये २९ सो हे राजन् तिसको अपरिमित पराक्रमवाला और सम्पूर्ण भूतोंको रचनेवाला नारायणमें परायण ऐसा ब्रह्माजान ३० महत्तत्त्वसे अहकार उत्पन्न होताभया और तिससे पच महाभूत होतेभये और तिन्होंसे प्राणियोंके भेद होते भये ऐसे सनातनसर्ग होताभया ३१ और विस्तारसे बुद्धिके अनुसार श्रवणके अनुसार कहताहू तुम पूर्वोके चरित्रोंको सुनो कीर्तिके बढानेवाले हैं ३२ और धन यशके बढानेवाले हैं शत्रुको नष्ट करते हैं स्वर्ग में प्राप्त करते हैं ३३ और योग्यके अर्थ योग्य हैं और सम्पूर्ण पवित्रके अर्थ पवित्रहै अब वृष्णिवंशसे लगाकर उत्तम भूतसर्ग कहताहू ३४ तिसके अनन्तर स्वयम्भू भगवान् प्रजारचने की इच्छा करते हुए आदि में जलोंको रचतेभये पीछे तिन जलों में बीज डालते भये ३५ जलोंको नार कहते हैं और जलोंको नरसूनु भी कहते हैं वे जल तिस ईश्वर का पहले अयन होतेभये इसवास्ते नारायण कहते हैं ३६ पश्चात् तिनजलोंमें हिरण्यवर्ण ब्रह्माण्ड होताभया तिससे ब्रह्मा उत्पन्न होतेभये ३७ पश्चात् हिरण्यगर्भ भगवान् परिवत्सर जलमें वासकरके तिसको दो करते भये ३८ स्वर्ग और भूमि तिन दोनोंमेंसे प्रभु आकाशको रचतेभये और जलों में पृथ्वीको रचतेभये और दश दिशा रचताभया ३९ औरपश्चात् काल, मन, वाणी, कामना, क्रोध, इति इन्हों को रचताभया पश्चात् प्रजापतियों के रचने की इच्छा करता हुआ ब्रह्मा तद्रूप सृष्टिको रचताभया ४० पश्चात् मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, बड़े तेजवाले वशिष्ठ जी इन सातऋषियों को मनसे रचते भये ४१ ये सातों भगवत्

विषय निश्चय को प्राप्त होते भये और पुराणों में ये सात ब्रह्माही माने हैं ४२ पश्चात् ब्रह्मा क्रोधित होकर क्रोधसे है उत्पत्ति जिसकी ऐसे रुद्र को रचते भये और पूर्व्वों के भी पूर्व्व सनत्कुमार प्रभुको रचतेभये ४३ वैशम्पायन कहते हैं हे राजन् ये सातऋषि प्रजा रचतेभये और रुद्रभी रचतेभये और स्कन्द सनत्कुमार रचते भया ४४ और तिन्होंके बहुत बडे सातवंश होतेभये दिव्य देवगणों करके सहित क्रियावाले और प्रजावाले महर्षियों करके भूषित होतेभये ४५ और बिजली, वज्र, मेघ, रक्त इन्द्रधनुष, पक्षी इन्हों को आदि में रचते भये ४६ और यज्ञ सिद्धिके अर्थ ऋचा, सामवेद, अथर्व्ववेद इनको रचतेभये और तिन्हों करके साध्यवस्तु रचतेभये और हे राजन् ऐसे सुनते हैं कि तिन्हों से देवताओं का यजन करतेभये ४७ और सम्पूर्ण ऊँचे नीचे प्राणी तिस ब्रह्माके गात्र से उत्पन्न होतेभये पश्चात् प्रजा सर्ग को रचताहुआ ब्रह्माकी ४८ जब रचीहुई प्रजा नहीं बढतीभई तब अपने शरीरको दो बनाकर एक शरीरसे आधेका पुरुष ४९ और आधे की स्त्री रचताभया सो पुरुष अनेक प्रकार की प्रजा को रचताभया और तिसकी महिमा स्वर्ग और पृथ्वीतलपर फैलतीभई ५० विराट्को तो विष्णुरचता भया और वह विराट् पुरुष को रचताभया सो हे राजन् तिस पुरुषको मनुजान और तिसी को मन्वन्तर कहते हैं ५१ वह विराट्से उत्पन्नहुआ प्रभु पुरुष प्रजा सर्गको रचताभया ५२ इसको नारायण विसर्ग कहते हैं और यह प्रजा योनिसे नहीं उत्पन्नभई है इसको श्रवण करनेवाला धनवान् आयुष्मान् कीर्त्तिवान् प्रजावान् ऐसा होजाताहै ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांआदिसर्गकथनेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् यह प्रजापति ऐसी सृष्टिको रचकर पश्चात् अयोनिसे उत्पन्नभई सतरूपा स्त्रीको प्राप्तहोताभया १ और प्रजारचतेहुए इसकी महिमा स्वर्गमें जातीभई और हे महाराज यहसतरूपा धर्म्म से उपजती भई २ पश्चात् यह दशहजार वर्ष बडा घोरतप करके दीप्ततपवाले पुरुष भर्ता को प्राप्त होतीभई ३ हे तात सो पुरुष स्वायम्भुवमनु कहाहै और तिसके इकहत्तर युग को मन्वन्तर कहते हैं ४ वैराज पुरुषसे वीरपुत्र को सतरूपा उत्पन्न करतीभई यह

कर्दम की काम्या कन्या को विवाहता भया इसके प्रियव्रत, उत्तानपाद ऐसे दो पुत्र होतेभये ५ और यह प्रियव्रत वशिष्ठमुनिकी कन्यापाकर सम्राट्, कुक्षि, विराट्, प्रभु इन चारपुत्रोंको उत्पन्न करताभया ६ और उत्तानपादको पुत्रत्वकरके अत्रिप्रजापति ग्रहण करतेभये ७ उत्तानपादसे चारपुत्रोंको सूनृता जनतीभई और यह धर्मकी कन्या वाजिमेधसे उत्पन्न होतीभई ८ और इस में उत्तानपाद जो है ध्रुव, कीर्त्तिमान्, आयुष्मान् वसु ९ इन्होंको उत्पन्न करताभया तिन्हों में हे राजन् ध्रुव महत् यशकी प्रार्थना करताहुआ देवताओं के तीनहजारवर्ष तपकरताभया १० तिस ध्रुवजीको प्रभु ब्रह्मा प्रसन्नहोकर सप्तर्षियों से आगे अचल आत्मसमान स्थान देतेभये ११ और सम्पूर्ण देवता और असुरों के आचार्य शुक्राचार्य्य इस के अभिमान और समृद्धि और महिमाको देखकर १२ श्लोक कहतेभये कि अहो देखो इसके तपका प्रभाव और अद्भुत सुतका प्रभाव १३ कि जिस ध्रुवको सप्तर्षि आगेकरके स्थित होरहे हैं तिस ध्रुवसे शम्भुनामा स्त्री श्लिष्टि और भव्य नाम पुत्रको उत्पन्न करतीभई १४ श्लिष्टि जो है सुच्छायास्त्री विषे निर्मल पाच पुत्रोंको उत्पन्न करताभया रिपु, रिपुजय, रिप्र, वृकल, वृकतेज १५ और रिपु बृहती स्त्रीसे सम्पूर्ण तेजवाले चाक्षुपको पैदा करताभया और पुष्करणी स्त्री विषे चाक्षुपमनुको उत्पन्न करतेभये १६ पश्चात् अरण्यनाम महात्मा प्रजापति की पुत्री नड्वला विषे वडे तेजवाले दशपुत्र उत्पन्न करतेभये १७ ऊरु, पूरु, शतद्युम्न, तपस्वी सत्यवाक्, कवि १८ अग्निष्टुत्, अतिरात्र, सुद्युम्न, अभिमन्यु ये दशपुत्र वडे तेज वाले नड्वलासे होतेभये १९ और आग्नेयी स्त्री ऊरुस वडे तेजवाले छ पुत्रों को उत्पन्न करतीभई अग, सुमनस, स्वाति, क्रतु, अङ्गिरा, गय २० इन्होंमेंसे अङ्ग जोहै सुनीथा कन्या विषे एकवेनको उत्पन्न करताभया पश्चात् वेनके अपचारसे महान्कोप होताभया २१ पश्चात् ऋषि प्रजाकेवास्ते इसके दक्षिण हाथको मथने लगे मथतेहुए एक महान्ऋषि उत्पन्न होताभया २२ तिसको देखकर सम्पूर्ण मुनि कहते भये कि यह प्रजाको आनन्दित करेगा और यह वडे तेजवाला महत् यशको प्राप्तहोवेगा २३ वेनके हाथसे उत्पन्नहुआ जो वह वैन्यहै तिसका पृथुनाम रखते भये और अग्निकेसे तेजवाला पृथु धनुष और कवच धारण करके और क्षत्रियोंकी आदि मे होनेवाला यह इस पृथ्वी की रक्षा करताभया २४ राजसूय यज्ञोंसे अभिषिक्त राजाओं में यह आद्य राजा होताभया और तिसमे विपुलसून

मागध होतेभये २५ और हे राजन् तिस पृथुने पृथ्वी से प्रजाकी वृत्तिके अर्थ देवता ऋषिगण २६ पितृ, दानव, गन्धर्व्व, अप्सरागण, सर्प, राक्षस, शैल, पर्व्वत २७ इन्हों करके सहित पृथक् पृथक् पात्र बनाकर शस्यों को दुहते भये और यह पृथ्वी दुहीहुई वाञ्छित क्षीर देतीभई तिस से सम्पूर्ण प्राण धारण करतेभये और पृथुराजाके धर्म्म के जाननेवाले अन्तर्धान और पालि दो पुत्र होतेभये पश्चात् शिखण्डिनी स्त्री अन्तर्धान से हविर्धान को जनतीभई २८ हविर्धान से अग्नि की पुत्री धिषणा छ पुत्रों को जनती भई प्राचीनवर्हि, शुक्ल, गय, कृष्ण, व्रज अजिन इन्हों को २९ तिन्हों में प्राचीनवर्हि भगवान् प्रजापति होतेभये हे महाराज तिसने हविर्धानसे यह सम्पूर्ण प्रजा बढ़ाई है ३० हे जनमेजय इसको यज्ञों से पूर्वतरफ है अग्रभाग जिन्होंका ऐसी कुशा बिछाई है इस वास्ते प्राचीनवर्हि विख्यातहै ३१ परचात् यह प्राचीनवर्हि समुद्रकी पुत्री सवर्णाको विवाहता भया ३२ यह सवर्णा प्राचीनवर्हि से धनुर्विद्या जाननेवाले सम्पूर्ण प्रचेतानाम से प्रसिद्ध ऐसे दश पुत्रों को जनतीभई ३३ ये दशहू एक धर्म्मको आचरण करके जलोंके विषे दशहजारवर्ष घोरतप करनेलगे ३४ इन्हों के तपकरतेहुए नहीं रक्षा कियेहुए वृक्ष पृथ्वीको दवातेभये और प्रजा नष्टहोतीभई पश्चात् चाक्षुष मन्वंतर में प्रजा वृक्षोंकी दवाईहुई चेष्टा करने को नहीं समर्थ होतीभई ३५ और वृक्षों ने आकाशभी रोंकलिया इस वास्ते पवन चलनेको नहीं समर्थ होतीभई ३६ जब दशहजार वर्ष प्रजा को नहीं चेष्टाकरी तब तप युक्त प्रचेता यह सुन ३७ और क्रोध होकर मुखसे अग्नि और वायु रचतेभये सो वायु वृक्षोंको उपाडकर सुखाने लगा ३८ और अग्नि दग्ध करनेलगा जब कुछेक वृक्ष बाकीरहे ३९ तब सोम देवता वृक्षोंका नाश जानकर आया और वचन कहनेलगा हे प्रजापतियो कोप को त्यागो तुम प्राचीनवर्हि के पुत्र राजाहो ४० इस वास्ते वृक्षों से शून्य पृथ्वी मतकरो और अग्नि वायुको शान्तकरो और यह वृक्षों की रत्नरूप कन्या तुम धारणकरो ४१ भविष्यत् जानके तुम्हारे वास्ते यह रक्खी है और मारिषा नाम कन्या यह रची है ४२ हे महाराज यह तुम्हारी भार्या सोमवंशको बढ़ावेगी और इससे आधे हमारे तेजसे और आधे तुम्हारे तेजसे ४३ इसमें दक्षनाम प्रजापति पुत्रहोगा और तुम्हारे तेजरूप अग्नि से दग्धहुई इस पृथ्वी को ४४ फिर आप अग्निके समानहोकर दक्षबढ़ावेगा पश्चात् सोमके वचनसे ये प्रचेता तिस

कन्याको ग्रहणकर ४५ वृक्षोंपर शांत होतेभये पश्चात् तिसमें मनसे गर्भ धारण करातेभये ४६ पश्चात् तिनदश प्रचेताओंसे और सोमके अंशसे बहुत तेजवाली प्रजाओंका पति ऐसा दक्ष उत्पन्न होताभया ४७ पश्चात् हे राजन् यह दक्ष अचर चर द्विपद चतुष्पद इन भेदोंकरके मनसे पुत्र और स्त्रियोंको रचताभया पश्चात् तिन्होंमेंसे १० कन्या धर्मको और १३ कश्यपको ४८ वाकीरहीं नक्षत्राख्य सोम को देताभया तिन्होंकेविषे देवता पक्षी गौ नाग दितिज दानव ४९ गंधर्व अप्सरा और जाति ये सम्पूर्ण उत्पन्न होतेभये और हे राजन् तिससे आदिले मैथुन से प्रजा होतीभई ५० और पूर्वोक्त प्रजा संकल्प दर्शन स्पर्शसे कही है ५१ इतना सुन जनमेजयने कहा हे भगवन् देव दानव गंधर्व उरग और महात्मा दक्ष इन्हों का सम्भव आपने पहिले कहाहै ५२ कि ब्रह्माके दहिने अंगूठे से दक्षभया और वामसे तिसकी पत्नी ५३ फिर कैसे यह महातपा प्रचेताओंका पुत्रभया इस मेरे संशयको आप दूरकरो ५४ और सोमका दौहित्ररूप दक्ष फिर श्वशुर कैसेहुआ ५५ इतना सुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् प्राणियों की उत्पत्ति और लय नित्यहै इस वास्ते यहां ऋषि और विद्वान्जन मोहित नहीं होते ५६ और युगयुगमें ये दक्षादिक राजा होते हैं पश्चात् नष्ट होजाते है यहा विद्वान् मोहित नहीं होताहै ५७ और हे राजन् पहिले वडापन और छोटापन नहीं होताभया किंतु तप वडा होताभया क्योंकि प्रभावही कारणहै ५८ इस दक्षकी चराचर सृष्टि कोजो जानताहै तिसकी संतति वढाकरती है और अंतमें स्वर्गको जाताहै ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांप्रजासर्गेदक्षोत्पत्तिकथनेद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

जनमेजयने कहा हे ऋषे देव दानव गंधर्व उरग इन्होंकी उत्पत्ति विस्तारसे कहो १ इतनी कथासुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् जब ब्रह्माने दक्षको प्रजा रचने की आज्ञादी तब दक्ष जैसे भूतों को रचताभया तिसको सुन २ दक्ष जोहै आदिमें मनसे भूतोंको रचताभया पश्चात् ऋषि देव गंधर्व असुर राक्षस ३ यक्ष भूत पिशाच पक्षी पशु सर्प इन्हों को मनसे रचताभया और जब इसकी मानसी प्रजा नहीं वढतीभई ४ तब प्रजाकेहेतु यह धर्मात्मा चिन्ताकरके मैथुन धर्म से प्रजारचनेकी इच्छा करताभया ५ पश्चात् तपसेयुक्त सर्वलोकोंको धारने

वाली ऐसी वीरण प्रजापतिकी असिक्नी कन्या को विवाहकर ६ तिस विषे दक्ष प्रजापति पांचहज़ार पुत्र उत्पन्न करताभया ७ प्रजा रचनेकी इच्छा करते हुए तिन महाभागोंको देखकर देवर्षि नारदमुनि यह प्रियसम्वाद कहतेभये ८ तिन्हों के नाशकेवास्ते और अपने शापकेवास्ते जिस नारद को परमेष्ठी कश्यप उत्पन्न करतेभये ९ सो दक्षके शाप से मुनि पहलेही ब्रह्माने दक्षकी पुत्री के उत्पन्न करदिया १० और फिर ब्रह्मा असिक्नी में तिसको उत्पन्न करतेभये ११ तिसनारदने दक्षकेपुत्र हर्यश्वको नष्टकिये १२ पश्चात् दक्ष तिसके मारने में उद्यम करने लगा परचात् ब्रह्मा ब्रह्मर्षियों को लेकर याचना करनेलगा १३ जब ब्रह्मा को शामिल करके दक्ष कहनेलगा कि महाराज यह मेरी कन्याविषे तेरा पुत्रहो १४ ऐसे कह दक्षने अपनी पुत्रीदई और दक्ष शापके भयसे तिसके नारदमुनि होता भया १५ इतना सुन जनमेजय ने कहा हे भगवन् प्रजापतिकेपुत्र महर्षि नारद ने कैसे नष्टकिये सो तत्त्व से सुनने की इच्छा करताहूं १६ इतना सुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् महावीर्य प्रजारचनेकी इच्छावाले ऐसे दक्षके पुत्रों से नारदमुनि वचन कहतेभये १७ हे दक्षकेपुत्रो तुम मूर्ख हो और प्रजारचने की इच्छा करते हो और इस पृथ्वीका प्रमाण जानते नहीं हो १८ और अन्तर ऊर्द्ध अध इसको नहीं जानते तो कैसे प्रजारचोगे वे सपूर्ण इनवचनों को सुन कर दिशाओंको चलेगये १९ और अबतक भी नहीं निवृत्त होते हैं जैसे समुद्र से नदी जब ये हर्यश्व नष्टहोगये तब प्रचेताकापुत्र दक्षप्रजापति २० वैरणी स्त्री विषे हज़ार पुत्रोंको रचताभया पश्चात् शबलाश्व संज्ञक ये पुत्र प्रजा वढाने की इच्छा करतेभये २१ पश्चात् नारद मुनिके प्रेरेहुए परस्पर में वचन कहनेलगे कि नारद ठीक कहताहै इसवास्ते २२ भ्राताओं की पदवी को जाना योग्यहै इसमें सन्देह नहीं और पृथ्वीका प्रमाण जानके सुखपूर्वक प्रजा रचेंगे २३ ये सम्पूर्ण एकाग्र चित्तकरके स्वस्थ मनसे यथावत् विचार वेभी सम्पूर्ण दिशाओंको गमन करतेभये २४ और वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् अबतक वे नहीं आये जैसे समुद्रसे नदी नहींआती पश्चात् जब शबलाश्व नष्टहोगये तब दक्ष क्रोधकर के वचन कहताभया २५ किहे नारद तू नाशको प्राप्तहोजाय और गर्भवासमें वस ऐसे कहताभया वैशम्पायनजी कहे हैं हे राजन् तिस दिनसे लेके भ्राता जो है भ्राताको ढूंढने नहींजाय २६ और जाय तो नाशको प्राप्तहोजाता है ऐसे दक्ष

तिन पुत्रोंको नष्ट जानकर २७ फिर वैरणी स्त्री के विषे साठकन्याओंको उत्पन्न करताभया ऐसा सुने हैं तिन्होंमें से कुछ भार्या धर्म्म से समर्थ कश्यपमुनि २८ और हे राजन् सोम,धर्म और महर्षि ये ग्रहण करतेभये दक्षप्रजापति दशकन्या धर्मको देताभया और तेरह कश्यपको २९ सत्ताईस सोमको और चारि अरिष्टनेमिको और दो बहुपुत्रको दो अंगिराको ३० और दो बुद्धिमान् कृशाश्वको ऐसे देतेभये हे राजन् तिन कन्याओं के नामसुनो अरुन्वती वसु यामी लम्वा भानु मरुत्वती ३१ सकल्पा मुहूर्त्ता साध्या विश्वा हेराजन् ये दशधर्म्म की पत्नी होतीभई अब तिन्होंकी सतति को सुनो ३२ विश्वा से विश्वेदेवा होतेभये और साध्यासे साध्य होतेभये और मरुत्वतीसे मरुत्वान् वसुसे वसव हे राजन् ३३ भानुसे भानव और मुहूर्त्तासे मुहूर्त्त और लम्वासे घोप और यामिसे नागवीथी ३४ और पृथ्वी सम्पूर्ण विषय अरुन्धती से उत्पन्न होताभया और सङ्कल्पा से सर्व्व सङ्कल्प होताभया ३५ और नागवीथी जामिनी इन्हों से वृषल होताभया और हे राजन् जो प्रचेता के पुत्र दक्ष सोमको कन्या देतेभये सो ३६ सम्पूर्ण नक्षत्र नाम्नी ज्योतिष में कही हैं और सम्पूर्ण ज्योतिपुरोगम से आदि लेकर आप विख्यातहैं ३७ और वसु आठ कहे हैं अब तिनका विस्तार करते हैं आप, ध्रुव सोम, धर, वायु, अग्नि ३८ प्रत्यूष, प्रभास ये आठ वसु कहे हे तिन्हो में आप के पुत्र वैतण्ड्य, श्रमशात मुनि ये होतेभये ३९ और ध्रुवकापुत्र लोकोंको मारने वाला काल होताभया और सोमका पुत्र वर्चा जिससे मनुष्य वर्चस्वी होजाता है ४० सो होताभया और धरकापुत्र द्रविण और हुतहव्य वह हुए और मनोहरा से शिशिर, प्राण, रमण ये पुत्र होतेभये ४१ और अनिलकी भार्या शिवासे मनोजव और अविज्ञातगति दो पुत्र होते भये ४२ और अग्नि के कुमार पुत्र होताभया सो शोभाकरके युक्त शरके झुड में प्राप्त कियाहै और तिस से पश्चात् शाख और विशाख,नैगमेय ये होतेभये ४३ और कृत्तिकाओंकी सन्तान होने से कार्त्तिकेय कहाये और स्कन्द सनत्कुमार इन्हों को चौथेभाग के तेजमे रचते भये ४४ और प्रत्यूषकेपुत्र देवलनामऋषि होतेभये और देवलके भी क्षमा वाले और तपस्वी दोपुत्र होतेभये ४५ और श्रेष्ठ स्त्री ब्रह्मको जाननेवाली योग से सिद्ध सम्पूर्ण जगत् में आसक्त बृहस्पतिजीकी भगिनी ४६ यह आठवां वसु प्रभास की भार्या होतीभई तिस विषे महाभाग प्रजापति विश्वकर्मा होतेभये ४७

वाली ऐसी वीरण प्रजापतिकी असिक्री क
प्रजापति पाचहज़ार पुत्र उत्पन्न करताभया
तिन महाभागोंको देखकर देवर्षि नारदमुनि
के नाशकेवास्ते और अपने शापकेवास्ते
न्न करतेभये ६ सो दक्षके शाप से मुनि प
करदिया १० और फिर ब्रह्मा असिक्नी में तिन
रदने दक्षकेपुत्र हर्यश्वको नष्टकिये १२ पश्चात्
लगा पश्चात् ब्रह्मा ब्रह्मर्षियों को लेकर या
शामिल करके दक्ष कहनेलगा कि महाराज
ऐसे कह दक्षने अपनी पुत्रीदई और दक्ष शाप
भया १५ इतना सुन जनमेजय ने कहा हे भग
ने कैसे नष्टकिये सो तत्त्व से सुनने की इच्छा
यनजी ने कहा कि हे राजन् महावीर्य प्रजा
से नारदमुनि वचन कहतेभये १७ हे दक्षके
की इच्छा करते हो और इस पृथ्वीका प्रमा
ऊर्द्ध अध इसको नहीं जानते तो कैसे
कर दिशाओंको चलेगये १६ और
से नदी जब ये हर्यश्व नष्टहोगये
विषे हज़ार पुत्रोंको रचताभया
इच्छा करतेभये २१ पश्चात्
नारद ठीक कहताहै इसवास्ते
सन्देह नहीं और पृथ्वीका प्र
एकाग्र चित्तकरके स्वस्थ मन
करतेभये २४ और वैशम्पायन
जैसे समुद्रसे नदी नहींआती
के वचन कहताभया २५ किहे
ऐसे कहताभया वैशम्पायनजी
भ्राताको ढूंढने नहींजाय २६

कश्यप से दितिके दोपुत्र होतेभये ६९ हिरण्याक्ष और वीर्यवान् हिरण्यकशिपु और सिंहिकानाम कन्या होतीभई सो विप्रचित्ति की स्त्री होतीभई ७० तिसके पुत्र बडे वलवान् सैंहिकेय गणोंकरके सहित दशहजार कहे हैं ७१ और हे राजन् तिन्हों के पुत्र और पौत्र सैकड़ों और हजारहों हुए हैं ऐसे इन्होंकी गिनती नहीं हे महावाहो अर्थात् लम्बी भुजाओंवाले अब हिरण्यकशिपु का वंश सुनो ७२ विख्यात है वीर्य्य जिसका ऐसे हिरण्यकशिपु के चारपुत्र अनुह्राद ह्राद प्रह्राद संह्राद ये होतेभये ७३ और ह्रादका पुत्र ह्रद हुआ और संह्राद के सुंद निसुंद दोपुत्र होतेभये ७४ और ह्रदके पुत्र आयु शिवि काल ये होतेभये और प्रह्रादका पुत्र विरोचन होताभया तिसके राजाबलि होतेभये ७५ हे राजन् बलिके सौपुत्र होतेभये तिन में वाणासुर बडा होताभया धृतराष्ट्र सूर्य्य चन्द्रमा इन्द्रतापन ७६ कुम्भनाभ गर्दभाक्ष कुक्षि इन्होंसे आदिलेकर होतेभये और महाबलवाला इन्हों में बडा वाणासुर महादेवजी को अतिप्रिय होता भया ७७ जो वाणासुर पहले कल्पमें महादेवजी को प्रसन्नकर और यह वरदान मांगताभया कि तुम सम्पूर्ण कालमें मेरे समीपहो ७८ और हे राजन् तिस वाणासुरके लोहिती भार्य्यासे इन्द्र-दमन होताभया और सौहजार राक्षसों के समूह होतेभये ७९ और हिरण्याक्ष के बडे बलवाले पांचपुत्र झर्झरशकुनि भूतसंतापन ८० महानाभ विक्रान्त काल-नाभ ये होतेभये और हे राजन् तपस्वी बहुत पराक्रमवाले महावीर्यवान् ऐसे सौ पुत्र दनुके होतेभये ८१ तिन्हों में से प्रधानों को कहते हैं सुनो द्विमूर्द्धा शकुनि शंकुशिरा शंकुकर्ण विरोध गवेष्ठी दुन्दुभि अयोमुख शम्बर कपिल वामन ८२ मरीचि मघवान् इरा गर्गशिरा वृक विक्षोभण केतुवीर्य्य शतह्रद ८३ इन्द्रजित् सर्वजित् वज्रनाभ महानाभ विक्रान्त कालनाभ एकचक्र महावाहु तारक वैश्वा-नर पुलोमा विद्रावण महाशिरा ८४ स्वर्भानु वृषपर्व्वा तुहुगंड सूक्ष्म निचन्द्र ऊर्णनाभ महागिरि ८५ असिलोमा केशी शठवलक मद गगनमूर्द्धा कुंभनाभ ८६ प्रमद मय कुपथ हयग्रीव वैसृप विरूपाक्ष सुपथ हरहर ८७ हिरण्यकशिपु शतमाय शंवर शरभ शलभ विप्रचित्ति ८८ बडे वीर्यवान् ये दनुके पुत्र सम्पूर्ण कश्यपसे उत्पन्न होतेभये विप्रचित्तिहै प्रधान जिन्हों में ऐसे महाबलवान ये दा-नव होतेभये ८९ और हे राजन् जो इनकी सन्तान पुत्र पौत्रहैं तिनकी संख्या करने को मैं समर्थ नहीं ९० और स्वर्भानु के प्रभानाम कन्या होती भई और

पुलोमाके उपदानवी तीन कन्याहुई हयशिरा, शर्मिष्ठा, वार्षपर्व्वणी ९१ और वैश्वानरके पुलोमा, कालिका दोपुत्री होतीभई इन दोनों को मरीचिके पुत्र कश्यपजी व्याहतेभये ९२ तिन दोनों से साठहजार दानवों को उत्पन्न करते भये और चौदहसौ दानवों को काली से उत्पन्न करतेभये ९३ और पौलोम और कालकेय ये दानव बड़े बलवान् ९४ और हे राजन् ये हिरण्यपुरवासि दानव ब्रह्मा का तपकरके देवताओं से अवध्य होतेभये और पश्चात् अर्जुन इन्हों को मारता भया ९५ और हे राजन् प्रभा से नहुष होताभया और शची से संजय शर्मिष्ठा पुरुको जनतीभई और उपदानवी दुष्यंतको ९६ तिसके अनन्तर सिंहिकाके पुत्र विप्रचित्ति से बड़े वीर्यवाले अति दारुण ९७ दैत्य दानव संयोग से बहुत पराक्रमवाले सैंहिकेय नाम से विख्यात ऐसे ये तेरह पुत्र होतेभये ९८ व्यंशशल्य बलिनभ महानल वातापि नमुचि इल्वल खसृम ९९ आजिकनरक कालनाभ राहु यह इन्हों में बड़ा और शूरवीर चन्द्रमा सूर्यको मर्दन करनेवाला ऐसा होताभया १०० और शुकयोतरण वज्रनाभ होते भये मूक तुहुंड ये दोनों ह्रदके पुत्रभये १०१ और सुदका पुत्र मारीच ताडका विषे होताभया ये सम्पूर्ण दानव दनुकेवंशको बढातेभये १०२ और तिन्होंके पुत्र और पौत्र सैकडों हजारों होते भये और सह्राद दैत्यके कुलमें निवातकवच सञ्ज्ञक १०३ बड़े तपस्वी तीनकरोड़पुत्र मणिमती में बसनेयोग्य होते भये सो भी स्वर्गनिवासी देवताओंसे अवध्य होतेभये पश्चात् ये सम्पूर्ण अर्जुनको मारे हैं और बड़ेपराक्रमवाली छ कन्या १०४ काकी श्येनी भासी सुग्रीवी शुचि गृध्रिका ये ताम्रासे उत्पन्नहोतीभई तिन्होंमें काकी काकोंको जनतीभई और उलूकी उल्लुओं को १०५ श्येनी सिकरों को भासी भास पक्षियों को गृध्रिका गृद्धों को शुची जलजीव और पक्षियों को और हे राजन् सुग्रीवी १०६ अश्व और गर्दभों को इन सम्पूर्णों को ये उत्पन्न करतीभई ऐसे ताम्राका वंशकहाहै और हे राजन् विनताके अरुण और गरुड दो पुत्र होतेभये १०७ यह गरुड सुन्दर पक्षोंवाला पक्षियों में श्रेष्ठ अपने कर्म करके दारुण ऐसा होताभया और अपरिमित पराक्रमवाले एकहजार सर्प सुरसाके होतेभये १०८ और हे राजन् ये सर्प अनेक शिरवाले होतेभये और कद्रू के बड़े बलवाले हजारपुत्र होतेभये १०९ और ये सम्पूर्ण अनेक शिरवाले नाग होते सो सम्पूर्ण गरुड़के वशहोते और शेष,वासुकि,तक्षक ये इन्होंमें प्रधानहोते

भये ११० ऐरावत, महापद्म, कम्बल, अश्वत्तर, एलापत्र, शंख, कर्कोटक, धनंजय १११ महानील, महाकर्ण, धृतराष्ट्र, वलाहक, कुहर, पुष्पदंत, दुर्मुख, सुमुख ११२ शंख शंखपाल, कपिल, वामन, नहुष, शंखरोमा, मणि इनसे आदि लेकर बहुत नाग होतेभये ११३ और तिन क्रूर चौदहहजार पुत्र पौत्रोंको गरुड मारताभया नहीं तो बहुत बढजाते ११४ और हे राजन् इन सर्पों का गण क्रोधवशजानो और जल स्थलके जीव और पक्षी धराके उत्पन्न होतेभये ११५ और सुरभि गाय भैंस इनको जनतीभई और वृक्ष वेलि, सम्पूर्ण स्थाणुजाति इन्होंको इरा जनती भई ११६ और यक्ष राक्षस मुनि अप्सरा इन्हों को खसाजनतीभई और बडे पराक्रम वाले गंधर्वोंको अरिष्टा जनतीभई ११७ हे राजन् ये स्थावर जंगम कश्यपके वंशमें कहे हैं और तिन्होंके पुत्र पौत्र सैकडों हजारहों होतेभये ११८ हे राजन् यह सृष्टि स्वारोचिप मन्वतरमें कही है और वैवस्वत मन्वतरमें विस्तृत वरुणके यज्ञमें ११९ आहुति देतेहुए ब्रह्माकी सृष्टि कही है पहले जो सात ब्रह्मर्षिभये तिन्हों को मन से १२० ब्रह्मा पुत्रभाव कल्पना करताभया पश्चात् हे राजन् देवता और दैत्यों का विरोधहुआ १२१ तब दितिके सम्पूर्ण पुत्र नष्ट करदिये यह दिति दुःखितहुई आराधन से कश्यपजी को प्रसन्न करतीभई १२२ कश्यपजी इसको वरसे लुभाते भये तब इसने कहा महाराज यह वरहो बडे पराक्रमवाला समर्थ इन्द्रको मारे ऐसा पुत्रदो १२३ ये आराधित तपस्वी यह वर देतेभये पश्चात् वरदेके और अव्यग्र चित्तहुए कश्यपजी दितिसे कहनेलगे १२४ कि हे प्यारी जो इस व्रतको शुद्ध होकर धारण करेगी तो इन्द्रको तेरापुत्र मारेगा और सौ वर्ष गर्भ धारणकरेगी १२५ और महातप कश्यपजी दितिसे कहनेलगे कि जो तू पवित्रहोके व्रतको धारणकरेगी तो निश्चय गर्भको धारेगी तब अंगीकारकर और पवित्रहोके गर्भ धारण करतीभई १२६ और कश्यपजी करातेभये पश्चात् अमित पराक्रमवाले कश्यपजी देव समूहको प्रकाश करतेहुए देवताओं से अवध्य १२७ दुर्द्धर्ष तेज को दितिमें स्थापनकर तपकी इच्छाकरके पर्वतमें गमन करतेभये पश्चात् इन्द्र अवकाश देखताहुआ ठहरताभया १२८ जब सौ वर्षमें एकवर्षरहा तब दिति भूल के विना पैर धोये शयन करतीभई १२९ यह अवसर इन्द्र देख सूक्ष्म शरीर धारणकर वज्रले दितिके गर्भमें प्रवेशहोकर और गर्भके सातटुकडे बनादिये १३० जब यह खण्डित किया गर्भ रोनाभया तब इन्द्र ने फिर वज्रसे एक एकके मान

पुलोमाके उपदानवी तीन कन्याहुई हयशिरा, शर्मिष्ठा, वार्षपर्व्वणी ९१ और वैश्वानरके पुलोमा, कालिका दोपुत्री होतीभई इन दोनों को मरीचिके पुत्र कश्यपजी व्याहतेभये ९२ तिन दोनों से साठहजार दानवों को उत्पन्न करते भये और चौदहसौ दानवों को काली से उत्पन्न करतेभये ९३ और पौलोम और कालकेय ये दानव बडे बलवान् ९४ और हे राजन् ये हिरण्यपुरवासि दानव ब्रह्माको तपकरके देवताओं से अवध्य होतेभये और पश्चात् अर्जुन इन्हों को मारता भया ९५ और हे राजन् प्रभा से नहुष होताभया और शची से संजय शर्मिष्ठा पुरुको जनतीभई और उपदानवी दुष्यंतको ९६ तिसके अनन्तर सिंहिकाके पुत्र विप्रचित्ति से बडे वीर्यवाले अति दारुण ९७ दैत्य दानव संयोग से बहुत पराक्रमवाले सैंहिकेय नाम से विख्यात ऐसे ये तेरह पुत्र होतेभये ९८ व्यंशशल्य बलिनभ महाबल वातापि नमुचि इल्वल खसृम ९९ आजिकनरक कालनाभ राहु यह इन्हों में बडा और शूरवीर चन्द्रमा सूर्यको मर्दन करनेवाला ऐसा होताभया १०० और शुकयोतरण वज्रनाभ होते भये मूक तुहुड ये दोनों ह्रदके पुत्रभये १०१ और सुदका पुत्र मारीच ताडका विषे होताभया ये सम्पूर्ण दानव दनुकेवंशको वढातेभये १०२ और तिन्होंके पुत्र और पौत्र सैकडों हजारहों होते भये और सह्राद दैत्यके कुलमें निवातकवच संज्ञक १०३ बडे तपस्वी तीनकरोड़पुत्र मणिमती में वसनेयोग्य होते भये सो भी स्वर्गनिवासी देवताओंसे अवध्य होतेभये पश्चात् ये सम्पूर्ण अर्जुनको मारे हैं और बडेपराक्रमवाली छः कन्या १०४ काकी श्येनी भासी सुग्रीवी शुचि गृध्रिका ये ताम्रासे उत्पन्नहोतीभई तिन्होंमें काकी काकोंको जनतीभई और उलूकी उल्लुओं को १०५ श्येनी सिकरों को भासी भास पक्षियों को गृध्रिका गृध्रों को शुची जलजीव और पक्षियों को और हे राजन् सुग्रीवी १०६ अश्व और गर्दभों को इन सम्पूर्णोंको ये उत्पन्न करतीभई ऐसे ताम्राका वंशकहाहै और हे राजन् विनताके अरुण और गरुड दो पुत्र होतेभये १०७ यह गरुड सुन्दर पक्षोंवाला पक्षियों में श्रेष्ठ अपने कर्मकरके दारुण ऐसा होताभया और अपरिमित पराक्रमवाले एकहजार सर्प सुरसाके होतेभये १०८ और हे राजन् ये सर्प अनेक शिरवाले होतेभये और कद्रू के बडे बलवाले हजारपुत्र होतेभये १०९ और ये सम्पूर्ण अनेक शिरवाले नाग होते सो सम्पूर्ण गरुड़के वशहोते और शेष,वासुकि,तक्षक ये इन्हों में प्रधानहोते

भये ११० ऐरावत, महापद्म, कम्बल, अश्वतर, एलापत्र, शंखककोर्टक, धनंजय १११ महानील, महाकर्ण, धृतराष्ट्र, वलाहक, कुहर, पुष्पदंत, दुर्मुख, सुमुख ११२ शंख शंखपाल, कपिल, वामन, नहुप, शखरोमा, मणि इनसे आदि लेकर वहुत नाग होतेभये ११३ और तिन क्रूर चौदह हजार पुत्र पौत्रोंको गरुड़ मारताभया नहीं तो बहुत बढजाते ११४ और हे राजन् इन सर्पों का गण क्रोधवशजानो और जल स्थलके जीव और पक्षी धराके उत्पन्न होतेभये ११५ और सुरभि गाय भैंस इनको जनतीभई और वृक्ष वेलि, सम्पूर्ण स्थाणुजाति इन्हींको इरा जनती भई ११६ और यक्ष राक्षस मुनि अप्सरा इन्हों को श्वसाजनतीभई और वडे पराक्रम वाले गंधर्वोंको अरिष्टा जनतीभई ११७ हे राजन् ये स्थावर जंगम कश्यपके वंशमें कहे हैं और तिन्होंके पुत्र पौत्र सैकड़ों हजारहों होतेभये ११८ हे राजन् यह सृष्टि स्वारोचिप मन्वंतरमें कही है और वैवस्वत मन्वंतरमें विस्तृत वरुणके यज्ञमें ११९ आहुति देतेहुए ब्रह्माकी सृष्टि कही है पहले जो सात ब्रह्मर्षिभये तिन्हों को मन से १२० ब्रह्मा पुत्रभाव कल्पना करताभया पश्चात् हे राजन् देवता और दैत्यों का विरोधहुआ १२१ तब दितिके सम्पूर्ण पुत्र नष्ट करदिये यह दिति दुःखितहुई आराधन से कश्यपजी को प्रसन्न करतीभई १२२ कश्यपजी इसको वरसे लुभाते भये तब इसने कहा महाराज यह वरदो वडे पराक्रमवाला समर्थ इन्द्रको मारे ऐसा पुत्रदो १२३ ये आराधित तपस्वी यह वर देतेभये पश्चात् वरदेके और अव्यग्र चित्तहुए कश्यपजी दितिसे कहनेलगे १२४ कि हे प्यारी जो इस व्रतको शुद्ध होकर धारण करेगी तो इन्द्रको तेरापुत्र मारेगा और सौ वर्ष गर्भ धारणकरेगी १२५ और महातप कश्यपजी दितिसे कहनेलगे कि जो तू पवित्रहोके व्रतको धारणकरेगी तो निश्चय गर्भको धारेगी तब अंगीकारकर और पवित्रहोके गर्भ धारण करतीभई १२६ और कश्यपजी करातेभये पश्चात् अमित पराक्रमवाले कश्यपजी देव समूहको प्रकाश करतेहुए देवताओं से अवध्य १२७ दुर्द्धर्ष तेज को दितिमें स्थापनकर तपकी इच्छाकरके पर्वतमें गमन करतेभये पश्चात् इन्द्र अवकाश देखताहुआ ठहरताभया १२८ जब सौ वर्षमें एकवर्षरहा तब दिति भूल के विना पैर धोये शयन करतीभई १२९ यह अवसर इन्द्र देख सूक्ष्म शरीर धारणकर वज्रले दितिके गर्भमें प्रवेशहोकर और गर्भके सातटुकड़े बना दिये १३० जब यह खण्डित किया गर्भ रोनाभया तब इन्द्र ने फिर वज्रसे एक एकके सात

सात टुकडे बनादिये १३१ हे राजन् वे मरुत्नाम उंचास देवते होतेभये १३२ हे राजन् प्राणी और देवनाओं के समूहको प्रकाश करतेहुए हरि इन सम्पूर्णोंको ब्रह्माको देतेभये १३३ हे राजन् हरिही पुरुष है वीरहै जिष्णुहै प्रजापति है १३४ वही मेघरूप है अग्निरूपहै और यह सम्पूर्ण जगत् तिसने रचाहै १३५ और हे राजन् जो पुरुष इस मारुतों के जन्मको सुने हैं तिन्होंको इसलोक में और परलोकमें किसी प्रकारका भय नहीं होताहै १३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांमारुतोत्पत्तिकथनंनामतृतीयोऽध्याय. ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते है कि हे राजन् ब्रह्मा आदिमें वेनकेपुत्र पृथुका राज्याभिषेककरके और पश्चात् क्रमसे राज्याभिषेक करतेभये १ ब्राह्मण बेल नक्षत्र ग्रह यज्ञ तप इन्हों का राजा चन्द्रमा किया २ और जलों का राजा वरुण और राजाओं का प्रभु वैश्रवण और अंगिरा के पुत्र बृहस्पतिजी को विश्वेदेवों का राजा करताभया ३ और भृगुओं का राजा शुक्रकिया और आदित्योंका राजा विष्णु किया और वसुओंका राजा अग्नि ४ और प्रजापतियों का राजा दक्ष और मारुतों का राजा वासव और दैत्य व दानवोंका राजा प्रह्लाद ५ और पितरोंका राजा धर्म्मराज किया और यक्ष व राक्षस ६ और सम्पूर्ण भूत पिशाचों का राजा महादेव जी पर्व्वतों का राजा हिमाचल नदियों का राजा सागर ७ साध्यों का राजा नारायण रुद्रों का राजा वृषभध्वज दानवों का राजा विप्रचित्ति ८ और गन्ध, मारुत भूत अशरीरी शब्द आकाशवान् इन्होंका राजा वायु करतेभये ९ और सागर नद मेघ वर्षाहुआ जल गधर्व इन्हों का राजा चित्ररथ करतेभये १० और नागों का राजा वासुकि सर्पों का राजा तक्षक सम्पूर्ण जाढ वालों का राजा शेष ११ हस्तियों का राजा ऐरावत घोड़ोंका राजा उच्चै श्रवा पक्षियोंका राजा गरुड़ १२ मृगोंका राजा शार्दूल गौवोंका राजा वृष वनस्पतियोंका राजा पिलखन १३ गन्धर्व अप्सगओं का राजा कामदेव और ऋतु मास दिन १४ पक्ष रात्रि मुहूर्त तिथि पर्व्व घटी पल प्रमाण ऋतुओं का अयन १५ गिन्ती योग इन्होंका राजा सम्वतसर करतेभये हे राजन् ब्रह्मा क्रमसे ऐसे राज्य बांटकर १६ दिशापालों को स्थापन करतेभये पूर्व्वदिशा में तो वैराज प्रजापति

का १७ पुत्रसुधन्वा को दिशापाल करतेभये और दक्षिण दिशाका राजा कर्दम प्रजापतिका १८ पुत्र शङ्खपदको करतेभये और पश्चिम दिशामे रजसका पुत्र १६ महात्मा केतुमान्को राजा करतेभये तैसेही उत्तर दिशामें पर्जन्य प्रजापति का पुत्र २० हिरण्यरोमाको राजा करतेभये हे राजन् वे सम्पूर्ण अब भी सप्तद्वीप और पत्तन और देश इन्हों सहित पृथ्वीकी धर्मसे पालना करते हैं २१ और ये सम्पूर्ण राजा राजसूय यज्ञकरके और वेदविधि करके पृथुको राजाओं का राजा कर २२ तिसके पश्चात् बडे तेजवाला चाक्षुषमन्वन्तर व्यतीत होतसते २३ ब्रह्मा वैवस्वतमनुको राज्य देतेभये हे राजन् अब विस्तारसे वैवस्वतमनुको तेरेआगे कहूंगा २४ तेरेको अनुकूल होनेसे क्योंकि जिससे तेरेको सुनने की वाञ्छाहै हे राजन् ये चरित्र पुराणोंमें मानेहुएहैं २५ और धन आयु यश इन्होंको वढाते हैं और स्वर्गमें वासकराते हैं शुभके देनेवाले हैं २६ इतना सुन जनमेजय ने कहा कि हे भगवन् वैशम्पायनजी पृथुका जन्म विस्तारसे कहो और तिस महात्माने जैसे पृथ्वी दुही सो चरित्र भी कहो २७ और हे भगवन् जैसे पितर देवता ऋषि दैत्य नाग यक्ष वृक्ष २८ पर्वत पिशाच गन्धर्व ब्राह्मण शूरवीर राक्षस ये सम्पूर्ण पृथ्वी को दोहतेभये २९ सो भी कहो और हे मुने इन्हों के पात्र विशेष वर्णनकरो और वत्स विशेष वर्णन करो और क्रमसे दूध विशेष और दोहनेवाले भी कहो ३० और हे तात जिस कारण से क्रोधहुए महर्षियों ने वेनकाहाथ मथा सो कारणभी वर्णन करो ३१ ऐसे सुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् बडे आनन्दकी वार्ता है वेनके पुत्र पृथुके विस्तारसे तेरे आगे चरित्र कहूंगा आप सावधान होकर एकाग्र चित्तसे श्रवण करो ३२ और हे राजन् अपवित्र तुच्छ मनवाला अशिष्य अव्रत कृतघ्न अहित इन्होंके आगे ३३ स्वर्ग यश आयु धन इन्होंके देनेवाले और ऋषियों के कहेहुए ये चरित्र नहीं कहिये हे राजन् आपके आगे यथावत् कहता हूं ३४ हे राजन् जो पुरुष वेनके पुत्र पृथुके चरित्र नित्य ब्राह्मणोंको नमस्कारकरके कहताहै तिसको किसीप्रकारकादुःख नहीं होता ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांपृथूपाख्याने चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् पहले अत्रिके वंशमें उत्पन्नहुआ और

अत्रिके समान प्रभु धर्मकी रक्षाकरनेवाला ऐसा अङ्गनाम प्रजापति होताभया १ और तिसके मृत्युकीपुत्री सुनीथाके विषे नहीं धर्मका जाननेवाला प्रजापति वेनहोताभया २ यह कालात्मजाका पुत्र नानाके दोषों करके अपने धर्मों को छोड़कर और कामलोभों में वर्त्तताभया ३ और यह राजा वेन अधर्मयुक्त मर्यादा स्थापन करताभया और वेदधर्मों को छोड़कर अधर्ममें मग्नरहताभया ४ और वेनके राज्य में वेदों का पढ़ना देवताओं का पूजन नहीं होताभया और यज्ञोंमें होमाहुआ देवताओं को अमृत भी नहीं मिलता भया ५ क्योंकि जिस वेनका काल समीप आनेसे यह खोटी प्रतिज्ञा होतीभई कि कोई देवताओं का यज्ञमतकरो हवनमतकरो ६ और हे जनमेजय कहताभया कि मेराही यज्ञकरना उचितहै और यज्ञकरनेवाला भी मैंहूं और यज्ञरूपभी मैंहीहू इसवास्ते मेरेही विषे यज्ञ हवन करने उचित हैं ७ ऐसी लंघित मर्यादा को ग्रहण करतेहुए वेन को बहुत दिनों मरीचि से आदि लेकर महर्षि कहते भये ८ हे वेन बहुत वर्षों तक हम दीक्षा करेंगे और हे वेन यह अधर्म मतकर और यह सनातन धर्म नहीं है ९ और तू अत्रिके वंश में जन्मा है प्रजाओंका पतिहै और तैंने प्रतिज्ञा भी करलीहै कि मैं प्रजाओंको पालूंगा १० हे राजन् ऐसे कहतेहुये सम्पूर्ण ऋषियों के अर्थको अनर्थ जाननेवाला और दुर्बुद्धि वेन हँसके वचन कहताभया ११ कि हे ऋषियो तुम मूर्खहो और निश्चयकरके मेरे को जानते नहींहो मेरेसे अन्य धर्मका जाननेवाला कौन है और मैं किसका श्रवणकरूं क्योंकि श्रुत वीर्य तप सत्य इन्हों करके मेरे समान पृथ्वीपर कौनहै १२ और सम्पूर्ण प्राणी और धर्म इन्होंको मैं उत्पन्न करनेवालाहू १३ और जो मैं इच्छाकरूं तो पृथ्वीको दग्धकरदूं और जलोंसे डुबोदूं और पृथ्वी समुद्रको रोकदूं इसमें संदेह नहीं १४ हे राजन् जब राजावेन मोह और गर्वसे नहीं नम्र होताभया तब महात्मा महर्षि क्रोधहोकर १५ और फुरती करतेहुये इस महाबलवान् को पकड़ और क्रोधयुक्त ऋषि इसकी जंघाको मथनेलगे १६ मथतेहुये राजाकी जंघासे बहुत छोटा दृढ़ अंगवाला बहुत काला ऐसा पुरुष होताभया १७ हे जनमेजय पुरुष डरके और अंजलि बांधके स्थितहोताभया तब अत्रिजी इसको विह्वल देखकर निषीद अर्थात् ठहर ऐसे कहतेभये १८ इसवास्ते वह पुरुष निषाद वंशका करनेवाला होताभया और वेनके पापसे उत्पन्नभये धीवरों को भी रचताभया १९ और वि-

न्ध्याचल में रहनेवाले जो अधर्म रुचि तुपार और तुम्बरु इन सम्पूर्णों को वेनसे उत्पन्नहुये जानो २० पश्चात् महात्मा ऋषि क्रोधितहोकर और अरणीकी तरह वेनके दहने हाथको मथतेभये २१ तिसहाथसे जलताहुआ साक्षात् अग्निकीसी कान्तिवाला २२ और धनुप कवच धारणकिये बडे यशवाला और बड़े शब्द वाला आजगव धनुप धारणकिये २३ और रक्षाकेवास्ते दिव्य शरोंको धारण किये उत्तम कान्तिवाला कवच धारण किये ऐसा पृथुराजा उत्पन्न होताभया २४ तिसके उत्पन्नहोतेही सम्पूर्ण भूत प्रसन्नहोकर आवतेभये २५ और हे राजन् तिस महात्मा सत्पुत्र के जन्म से पुन्नाम नरक से रक्षाकियाहुआ वेन स्वर्गको प्राप्त होताभया २६ और तिसके अभिषेकके वास्ते सम्पूर्ण समुद्र नदी रत्न और जल लेकर चारोंतरफसे प्राप्तहोतेभये २७ और सम्पूर्ण देवता और आंगिरसोंकरके सहित भगवान् ब्रह्मा २८ और सम्पूर्ण स्थावर जंगम प्राणी ये आनकर वेनके पुत्र प्रजाको पालनेवाला उत्तम कान्तिवाला ऐसे पृथुको राज्यतिलक देतेभये २९ और धर्मके जाननेवाले राजों के आदि राज्यविषे अभिषेक कियाहुआ और महातेजवाला प्रतापवान् ३० ऐसा वेनका पुत्र पृथुराजा पिता से दुःखितकरी प्रजाको अनुरंजित अर्थात् सुखी करताभया ३१ इसवास्ते अनुराग से तिस पृथुका राजानाम होताभया और तिस राजाके समुद्रकीतरफ जातेहुये जल थंभते भये ३२ और पर्वत इस पृथुराजाको मार्गदेतेभये और इसकी ध्वजा कभी नहीं टूटतीभई और तिसकाल में विनाबोये अन्न उपजतेभये और अन्न चिन्ताकरकेही सिद्धहोतेभये ३३ और गौ कामदुघा होतीभई और पुटकरमें मधुहोताभया और इसीकालमें शोभन ब्रह्माके यज्ञमें ३४ सौत्यदिनविषे बड़ी बुद्धिवाले सूतजी सूति नाम मातासे होतेभये और तिसी महायज्ञविषे बुद्धिमान् मागधभी उत्पन्नहोता भया ३५ और ये दोनों सुरर्षियों से पृथुराजा की स्तुतिकेवास्ते बुलाये आतेभये तिन्होंसे सम्पूर्ण ऋषि कहतेभये कि इसके कर्मोंके अनुरूप स्तुतिकरो ३६ ऐसे सुनकर सूत और मागध सम्पूर्ण ऋषियों से कहते भये ३७ हे भगवन् हम तो अपने कर्मोंकरके देवता और ऋषियोंको प्रसन्नकरते हैं हे द्विजाओ इसतेजस्वी राजाके कर्म लक्षण और यश हम नहीं जानते ३८ जिससे स्तुतिकरें ऐसे ऋषि सुन कहनेलगे कि भविष्य अर्थात् होनेवाले इसके कर्मोंकरके स्तुतिकरो ३९ पश्चात् महाबल सत्यबोलनेवाला दानकरने के स्वभाववाला सत्यसन्ध नरोंका

ईश्वर ४० श्रीमान् शत्रुओंको जीतनेवाला क्षमा शील धर्मज्ञ कृतज्ञ दयावान् प्रियभाषण ४१ करनेवाला मान्यको माननेवाला यज्ञों का करनेवाला सत्यसगर मनको रोकनेवाला शान्त रतसे रहित व्यवहार में स्थित ४२ ऐसा राजापृथु जो जो कर्मकरताभया तिससे आदि लेकर हे राजन् जनमेजय सूत मागध बंदीजनों ने तिन आशीर्वादोंकरके जनोंकी स्तुतिकरी है ४३ और हे राजन् स्तुतिके अंतमें प्रजाके ईश्वर राजापृथु तिन्होंपर प्रसन्नहोकर सूतको तो अनूपदेश देतेभये और मागधको मगधदेश देतेभये ४४ और हे राजन् तिस राजापृथुको देखकर परम प्रसन्नहुए ऋषि प्रजाओंसे कहनेलगे कि हे प्रजाओ तुम्हारी वृत्तिका देनेवाला यह राजा होवेगा ४५ तिसके अनन्तर हे राजन् सम्पूर्ण प्रजा पृथुको प्राप्तहोकर कहतीभई कि हे राजन् आप हमारेको वृत्ति दो ऐसे प्रजाके वचनसुन ४६ और महर्षियों के वचन से प्रजाके हितकरने की इच्छाकरके प्रार्थना किये राजापृथु धनुष और बाणलेकर यह बली पृथ्वीको मर्दन करनेलगा तब वे ४७ पृथुकेभय से व्याकुलहुई पृथ्वी गौ बनकर भागतीभई राजापृथुभी धनुष लेकर इसके पीछे दौडते भये ४८ यह वैन्यके भयसे ब्रह्मलोक आदि लोकों में दौड़तीभई परन्तु आगे धनुष लिये पृथुको देखतीभई ४९ पश्चात् जब यह अपनी शरण कहीं नहीं देखतीभई तो वह त्रिलोकपूज्याय पृथ्वी अंजली बांधकर प्रकाशित तीक्ष्ण बाणोंकरके दीप्त तेजवाला और सावधान महायोगवाला महात्मा देवताओं से अजीत ५० ऐसे पृथुकोही प्राप्त होकर वचन कहतीभई ५१ कि हे राजन् स्त्रीका वध यह अधर्म आप करने को नहीं योग्यहो और हे राजन् मेरेविना पृथ्वी को कैसे धारण करेगा ५२ और हे राजन् मेरे विषे ये लोक स्थितहैं और यह जगत् भी मैंने धारण कियाहै सो हे राजन् जब मेरा नाश होजायगा तब प्रजाका भी नाश होजायगा इसमें सन्देहनहीं ५३ हे राजन् जो आप प्रजाके कल्याण की इच्छाकरीहो तो मेरेको मारनेको नहीं योग्यहो और हे राजन् मेरे वचनसुन ५४ उपायसे प्रारंभकिये सम्पूर्ण कार्य सिद्धहोते हैं सो हे राजन् उपायको देख जिस से पृथ्वीको धारणकरे ५५ और मेरेको मारके भी हे राजन् प्रजा धारण करने में समर्थ न होवेगा और हे महाराज कोपको त्याग मैं तेरेको अनुकूलहोंगी ५६ और हे राजन् पशुआदि योनियोंमें भी प्राप्तहुई स्त्री मारनीयोग्य नहीं इसवास्ते धर्मी त्याग करने को योग्य नहीं हो ५७ हे राजन् जनमेजय उदारचित्त राजा

पृथु ऐसे वहुत प्रकारके पृथ्वीके वचनसुन और धर्मात्मा राजापृथु क्रोधको रोंक पृथ्वी के प्रति यह वचन कहताभया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायापृथूपाख्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

राजापृथु कहनेलगा कि हे भद्रे जो पुरुष एक अपने अर्थ अथवा दूसरे के अर्थ वहुत अथवा एक प्राणीको मारताहै तिसको पापलगता है १ और जिस एक के मारने में वहुत सुखी होवें तिसके मारने में पातक नहीं और उपपातक भी नहीं २ और जहा एकखलके मारनेसे वहुतो को आनन्दहोवे सो वध पुण्य का देनेवाला होताहै ३ सो इसवास्ते जगत् के हितकरनेवाला मेरा वचन नहीं करेगी तो प्रजाके निमित्त तेरेको हनन करूंगा ४ और हे पृथ्वी मेरी शिक्षाको नहीं मानेगी तो अब तेरेको वाणसे मारके और प्रजा धारणकरनेवाला मैं अपनी आत्माको विख्यात करूंगा ५ इसवास्ते धर्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ जो तू है मेरी शिक्षामानके और इस प्रजाको जिवा क्योंकि जिससे प्रजाधारण करने में तू समर्थ है ६ और तेरेमें पुत्री भाव करूंगा और पश्चात् घोर दर्शन तेरे मारने वास्ते जो यह वाणहै तिसको त्यागदूंगा ७ हे जनमेजय ऐसे पृथुराजा के वचन सुन पृथ्वीने कहा हे शूरवीर यह सम्पूर्ण में धारण करूंगी इसमे सन्देह नहीं परंतु सम्पूर्ण कार्य्य उपाय से किये सिद्धहोते हैं ८ हे राजन् ऐसा उपाय देख जिसमे प्रजाओं को धारणकरे हे राजन् मेरा ऐसा बछडा देख जिससे मैं प्रसन्नहुई दुही जाऊं ९ और हे धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ सब जगह मेरेको एकसाकर जिससे झराहुआ मेरा दूध सम्पूर्णको भिगोवे १० वैशम्पायनजी ने कहा हे राजन् तब यह राजा धनुष करके सैकडों हजारों पर्वतोंको उखाड़ताभया ११ और पृथ्वीको वरावर करताभया और हे राजन् मन्वन्तर व्यतीत होने यह विषम होतीभई १२ क्योंकि स्वभावसेही इसके सम विषमहै और पहले चाक्षुष मन्वतरमें समहोतीभई १३ और हेराजन् पहले निसर्गमें पृथ्वीके विषमहोनेसे पुर और ग्रामोंका विभाग भी नहीं होताभया १४ और खेती गोरक्षा वणिकपथ सत्य असत्य लोभ मत्सरता १५ येभी सम्पूर्ण वस्तु पृथुसेही आदि लेकर होतीभई १६ और जहां जहां पृथ्वी वरावर होतीभई वहां वहां प्रजा वसतीभई १७ और वडे कष्टमेंथी प्रजाओं

का आहार तब मूलफल होताभया हे राजन् ऐसे सुनते हैं १८ हे पुरुषों में सिंह रूप जनमेजय पश्चात् यह प्रतापवान् पृथु स्वायम्भुवमनु को बछड़ाबनाकर और अपने हाथ में पृथ्वी को दुहताभया १९ तिससे ये सम्पूर्ण खेती उत्पन्न होतीभई और तिसही अन्नसे अबभी सम्पूर्ण मनुष्य जीते हैं २० पश्चात् हे राजन् यह ऋषियों ने दुही है तब चन्द्रमा बछड़ा किया और अङ्गिरा के पुत्र बृहस्पति जी दुहनेवाले हुए २१ और वेदपात्र बनाया और नित्यब्रह्मरूप दूधको दुहतेभये २२ पश्चात् इन्द्रआदि देवता दुहतेभये तिन्हों ने सुवर्णका पात्रबनाया २३ और इन्द्र बछड़ा और सविता प्रभु दुहनेवाला किया और ऊर्ज्ज करनेवाला अमृत दुहते भये २४ पश्चात् यह पितरों ने दुही है तिन्हों ने चांदीकापात्र किया २५ और प्रतापवान् वैवस्वत यम बछड़ा किया और स्वधा दूधको दुहतेभये और लोकोंको प्रेरणेवाला काल अन्तक दुहनेवाला होताभया २६ पश्चात् नाग दुहतेभये तिन्हों ने तक्षक बछड़ाकिया और तूंबीपात्रकिया और विष दूध दुहतेभये २७ और हे राजन् नागों में और सर्पों में श्रेष्ठ प्रतापवान् ऐसे ऐरावत और धृतराष्ट्र दुहने वाले होतेभये २८ तिस विषसेही महाकाय और तीव्र विषवाले ऐसे नाग और सर्प जीवते हैं और इन्होंके तिस वीर्यकाही पराक्रमहै और तिसीके आश्रआश्रय हैं २९ पश्चात् हे राजन् यह असुरों ने दुही है तिन्हों ने लोहेका पात्र किया ३० और प्रह्लादजी के पुत्र विरोचन बछड़ा किया और शत्रुओं को नाशकरनेवाली माया को दुहतेभये और दैत्यों में श्रेष्ठ द्विमूर्द्धा और मधु ये बलवान् दुहनेवाले होतेभये ३१ हे राजन् तिसी मायाकरके अबभी मायावीअसुर जीते हैं और तिस मायासेही बली हैं और बुद्धिमान् हैं ३२ पश्चात् यक्षों ने पृथ्वी दुही है तिन्हों ने कच्चापात्र किया ३३ और कुबेर बछड़ा किया और तीनशिरोंवाला तपस्वी तेजस्वी ऐसा मणिवरका पिता रजतनाभ दुहनेवाला होताभया ३४ और हे राजन् अन्तर्द्धान अर्थात् छुपना विद्या को दुहतेभये ३५ पश्चात् राक्षस और पिशाचों ने यह दुही है तिन्होंने मुरदेका कपाल पात्रकिया ३६ और रजतनाभ दुहनेवाला होताभया और सुमाली बछड़ा होताभया और रुधिर दूध दुहतेभये ३७ हे राजन् तिसी दूध से यक्ष राक्षस पिशाच भूतसमूह ये सम्पूर्ण देवताओं की तुल्यहोकर वर्त्तते हैं ३८ पश्चात् हे राजन् गन्धर्व और अप्सरा दुहतीभई तिन्हों ने कमलपात्र किया और चित्ररथ बछड़ा किया और सुन्दर गन्ध को दुहतेभये ३९ और तहा

सूर्य के समान महात्मा अतिबलवान् गन्धर्वों के राजा ऐसे सुरुचि दुहनेवाले होते भये ४० पश्चात् इसको पर्वत दुहतेभये ४१ तिन्हों ने हिमवान् बछडा किया और महागिरि सुमेरु दुहनेवाला और पर्वतही पात्र किया ४२ और अनेकप्रकार के ओषध और रत्नोंको दुहतेभये तिसीकरके हे राजन् ये पर्वत स्थित हैं पश्चात् इस को वनस्पती दुहतीभई ४३ तिन्होंने पत्तोंका पात्रकिया पिलखन बछडा किया और फूलाहुआ शाल दुहनेवाला किया और कटाहुआ जलाहुआ का फिर जा-मनाको दुहतेभये ४४ हे राजन् सो यह पृथ्वी धात्री और विधात्री चराचर जीवों कीयोनि जीवोंका स्थानरूप सम्पूर्ण कामों को दुहनेवाली और सम्पूर्ण खेतियों को उत्पन्न करनेवाली ४५ समुद्र पर्य्यन्त ऐसी होतीभई और मेदिनी ऐसी वि-ख्यातभई और मधुकैटभ के मेद से व्यासहोने से ४६ इसको ब्रह्मवादी मेदिनी कहते हैं और हे राजन् राजा पृथुके योगसे यह पुत्री भाव को प्राप्त होतीभई ४७ और तबसेही इस को देवी और पृथ्वी कहते हैं और हे राजन् पृथु से शोधीहुई और बाटीहुई ४८ इस पृथ्वी में बहुतसी खेतिया और खानि होतीभई और बढती भई और पुर शहर ग्राम बहुतसे बसतेभये हे राजन् ऐसे प्रभाववाला और राजा-ओं में श्रेष्ठ पृथुराजा होताभया ४९ हे राजन् जीव समूहों में यह राजा पृथुही नमस्कारके योग्यहै और पूजने के योग्यहै और वेद वेदाङ्गके जाननेवाले महा-भाग ब्राह्मणों में भी यही पूज्यहै ५० क्योंकि जिससे सनातन ब्रह्मयोनि है और राजापनाकी इच्छा करतेहुए महाभाग राजाओं ५१ में भी यह महाप्रतापवान् आदि राजा वेनका पुत्र ऐसा पृथुही पूजने के योग्य है और युद्धमें जीतने की वाञ्छावाले योद्धाओं में भी यह पृथुही पूज्य है ५२ क्योंकि योद्धाओं में आदि योद्धा होने से हे जनमेजय जो योद्धा पृथुके गुणोंका कीर्त्तनकरके युद्धमें जाता है ५३ सो घोरयुद्ध को तिरके और उत्तम कीर्त्ति को प्राप्त होताहै और हे राजन् दुकान वृत्तियोंवाले द्रव्ययुक्त वैश्यों में भी यह वृत्तिका देनेवाला ५४ और बड़े यशवाला पृथुही पूज्यहै और हे राजन् त्रिवर्णकी शुश्रूषा करनेवाले शूद्रों में भी उत्तम कीर्त्ति के वास्ते यही सेव्यहै ५५ हे जनमेजय ये बछडे और दोहनेवाले और दूध और पात्र सम्पूर्ण मैंने तेरे प्रति कहे हैं और क्याकहूं ५६॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांपृथूपाख्यानेपृथिवीदोहनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा हे तपोधन वैशम्पायनजी सम्पूर्ण मन्वन्तर और तिन्होंका विसर्ग विस्तार वर्णनकरो १ और जितने मनुहैं और जितना काल है और जितने मन्वन्तरहैं तिन्होंको श्रवण करनेकी इच्छा करूहूं २ तब वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् विस्तारसे तो मन्वन्तरोंका वर्णन सौवर्ष मेंभी करनेको मैं समर्थ नहीं परन्तु सक्षेप से कहताहूं श्रवणकरो ३ स्वायम्भुव, स्वारोचिष औतमि, तामस, रैवत, चाक्षुष ४ वैवस्वत हे राजन् यह मनु अब वर्तताहै सावर्णि, सौत्य, रौच्य ५ मेरु सावर्ण ऐसे चार मनुकहे हैं हे राजन् ये व्यतीतहुए और वर्त्तमान और आनेवाले सम्पूर्ण मनु तेरे से कहेहैं ६ अब इन्हों के ऋषि और पुत्र और देवसमूह इन्होंको वर्णनकरताहूं श्रवणकरो ७ मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वशिष्ठ ये सात ब्रह्माके पुत्र ८ उत्तर दिशामें सप्तर्षि और यामानाम देवता ये सम्पूर्ण स्वायम्भुव मनुमें होते भये ९ और आग्नीध्र, अग्निबाहु, मेधातिथि, वसु, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, हव्य, सवन १० ये स्वायम्भुव मनुके बडेपराक्रमी दशपुत्र होतेभये हे राजन् यह तेरे प्रति प्रथम मन्वन्तर कहाहै ११ और वशिष्ठका पुत्र और ऊर्जस्तंब, काश्यप प्राण, बृहस्पति, दत्त, निश्च्यवन १२ ये महानत महर्षि और तुषित नाम देवता स्वारोचिष मन्वन्तर में होतेभये १३ और हविघ्र, सुकृति, ज्योति, आप, मूर्ति, अयस्मय, प्रथित, नभस्य, नभ, ऊर्ज १४ हे राजन् ये महावीर्य पराक्रमवाले और महात्मा स्वारोचिष मनुके पुत्र कहे हैं १५ हे राजन् यह दूसरा मन्वन्तर कहाहै अब तीसरा मन्वन्तरकहैं हैं तिसको सुनो और वशिष्ठजी के वाशिष्ठनामसे विख्यात सातपुत्रहुये और हिरण्यगर्भके ऊर्जनामसे विख्यात १६ हे राजन् ये औत्तमिकें दश मनोरम पुत्रहैं १७ ईष ऊर्ज तनूर्ज मधुमाधव शुचि शुक्र सह नभस्य नभ १८ मानव दशपुत्रहुये हैं अब चौथा मन्वन्तर कहे हैं सुनो १९ काव्य, पृथु, अग्नि, जन्यु, धामा, कपीवान् ये सपूर्ण ऋषि २० और पुराणोंमे पुत्र पौत्रभी कहेहैं और सत्य देवगण ये तामस मन्वतरमें होतेभये २१ हे राजन् अब इसके पुत्र कहतेहैं द्युति, तपस्य, सुतपा तपोमूल, तपोधन २२ तपोरति, अकल्माष, धन्वी, तन्वी, परन्तप, ये महाबलवान् तामसके दशपुत्र होतेभये २३ पवन देवताने ये कहेहैं हे महाराज अब पांचवा

मन्वंतर कहेहैं वेदवाहु,यदुध्र, वेदशिरा २४ हिरण्यरोमा, पर्जन्य,सोमसे उत्पन्न हुआ ऊर्द्धवाहु सत्यवादी आत्रेय ये सप्तर्पि २५ और अभूत,रजस्वभाव, पारिप्लव रैभ्य ये देवता पांचवें मन्वंतरमें होतेभये २६ अव रैवतके पुत्र कहते हैं धृतिमान् अव्यय, युक्त, तत्त्वदर्शी, निरुत्सक २७ अरण्य,प्रकाश,निर्मोह, सत्यवान्,कृती ये रैवतके पुत्रहैं हे राजन् यहपाचवें मन्वंतरमें कहेहैं २८ हे राजन् अव छठा मन्वंतर कहते हैं भृगु, नभ, विवस्वान्, सुधामा, विरजा २९ अतिनामा, सहिष्णु ये सप्तर्षि चाक्षुप मन्वंतरमें होतेभये ३० और आप्य,प्रभूत, ऋभु, पृथु,लेखा इन नामोंवाले पांच देवताओंके समूह होतेभये ३१ और हे राजन् अङ्गिराऋषिके पुत्र महात्मा महातेजवाले नड्वलाके पुत्र ऊरुसे आदिलेकर दशहोतेभये ३२ हे राजन् यह छठा मन्वन्तर कहाहै और अत्रि,वशिष्ठ, कश्यप ३३ गौतम,भरद्वाज,विश्वामित्र ऋचीकके पुत्र ३४ जमदग्नि ये सप्तर्षि और साध्य, रुद्र, विश्वेदेवा, वसु, मरुत ३५ आदित्य, अश्विनीकुमार ये देवता वैवस्वत में अब वर्त्तते हैं ३६ और इक्ष्वाकु से आदि लेकर दशपुत्र ये सम्पूर्ण वैवस्वत मनुमें होतेभये ३७ हे राजन् इन सात महर्पियों के पुत्र और पौत्र सम्पूर्ण मन्वन्तरों में और सम्पूर्ण दिशाओं में ३८ लोकव्यवस्था के वास्ते और लोक रक्षाके वास्ते स्थितहोते हैं और जव मन्वन्तर व्यतीतहोजाताहै ३९ तव ये कार्यकरके स्वर्गमें चलेजाते हैं और तिन्होंसे अन्य तपकरके युक्त इनके स्थानपर आजातेहैं ४० हे राजन् ऐसे व्यतीत हुये और वर्त्तमान सात मनु क्रमसे तेरे आगे कहे हैं ४१ हे राजन् अव आने वाले छःमनु कहते हैं हे राजन् तिन्होंमें पांच सावर्णसंज्ञक मनुजानो ४२ और एक वैवस्वत तिन्हों में चार ब्रह्मा के पुत्र सावर्णिताको प्राप्तहुये हैं ४३ ये चारों दक्षके दौहित्र और प्रिया के पुत्र होतेभये वडे तेजवाले ऋषि मेरुपर्वत में तप करतेभये ४४ और रुचिप्रजापति के पुत्र रौच्यमनु होतेभये और भूतिनाम स्त्रीके विषे रुचिकापुत्र भौत्यमनु होताभया ४५ अव सावर्णि मनुको कहते हैं ४६ परशुराम, व्यास, अत्रिकापुत्र द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा ४७ कृपाचार्य्य, कौशिक, गालव ये सातों ब्रह्माके सदृश और धन्य ४८ और जाति तप मन्त्र व्याकरण इन्हों से ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित ४९ भूत भव्य भव इन्हों को जान तपसे प्रसिद्ध और चिन्तक ५० और इन्होंको ऐश्वर्य के द्वारा जानके गृहस्थ प्रणाम करते हैं ५१ और सात गुणों करके युक्त और दीर्घ आयुवाले और दीर्घ नेत्रोंवाले ५२

बुद्धिकरके प्रत्यक्ष धर्मोंवाले और कृतआदि युगों में ५३ गोत्रोंको प्रावृत्त करने वाले और वर्णाश्रमको प्रवर्तनेवाले और सत्यधर्ममें परायण ५४ और दूसरोंके अर्थ वरको देनेवाले ऐसे भविष्य सप्तर्षि कहे हैं ५५ ऐसे सप्तर्षियोंका आख्यान कहा अब सावर्णिमनुके भविष्य पुत्रोंको सुनो ५६ ऊर्ध्व, कश्यप वरीयान्, अम्बरीयान्, समत, धृतिमान्, वसु, चरिष्णु, आर्य्य, धृष्णु, वाज, सुमति ५७ हे राजन् ये सावर्णि मनुके पुत्र कहे हैं अब मेरु सावर्णोंको कहते हैं सुनो ५८ मेधातिथि, पौलस्त्य, वसु, काश्यपु, भार्गव, अङ्गिरा ५६ वाशिष्ठ, पौलह ये सप्तर्षि रोहित मन्वन्तरमें हुएहैं ६० और दक्षके पुत्र रोहितके देवताओंके तीनगण ६१ और धृष्टकेतु, पश्चहोत्र, निराकृती, पृथुश्रवा, भूरिधामा, ऋर्चीक, अष्टहत, गय ६२ ये प्रथम सावर्णि के तेजस्वी नौपुत्र होतेभये अब दशवा मनु कहते हैं ६३ हविष्मान्, पौलह, सुकृति, भार्गव, आपुमूर्त्ति, आत्रिय, वशिष्ठ ६४ और पौलस्त्य, प्रामति, नभोग, काश्यप, अङ्गिरा, नभस सत्य ये परमर्षि होतेभये ६५ और ऋषियों के मन्त्र देवताओंके गुणहोतेभये और उत्तम, कुनिपक्ष ६६ शतानीक निरामित्र, वृषसेन, जयद्रथ, भूरिद्युम्न, सुवर्चा ये दशपुत्र होतेभये ६७ और ग्यारहवें मन्वन्तर में जो सप्तर्षि कहे हैं तिन्हों को सुनो ६८ काश्यप, भार्गव और आत्रेय, अङ्गिरा, पौलस्त्य, निश्चर, पुलह ६६ ये सप्तर्षि हैं और ब्रह्माके पुत्र तीन देवताओं के समूह होतेभये ७० और सम्वर्तग, सुशर्मा, देवानीक, पुरुवह ७१ क्षेमधन्वा, दृढायुध, आदर्श, पण्डक,मनु ये नौपुत्र होतेभये और चतुर्थ सावर्णि में द्युति,सुतपा ७२ अङ्गिरा,काश्यप, पौलस्त्य, पौलह,तपोरति, भार्गव ये सप्तर्षि होतेभये और ब्रह्मा के पुत्र पाच देवताओं के समूह होतेभये ७३ और देववायु अहर, देवश्रेष्ठ, विदूरथ, मित्रवान्, मित्रदेव, मित्रसेन, मित्रकृत ७४ मित्रबाहु सुवर्चा ये बारह पुत्र होतेभये और तेरहवें मनु में ७५ अङ्गिरा, पौलस्त्य, पौलह भार्गव ७६ निष्प्रकंपु, कश्यप, वाशिष्ठ ये सप्तर्षि ७७ तीन देवताओं के गण होते भये और ये तेरह रुचिके पुत्र होतेभये ७८ चित्रसेन, विश्वमित्र, नय, धर्म्मभृत धृत,सुनेत्र,क्षत्रवृद्धि,सुतपा,निर्भय,दृढ ७६ और चौदहवें भौत्यमनुमें आग्नीध्र काश्यप,पौलस्त्य,भार्गव, शुचिर,अङ्गिरा, वाशिष्ठ, शुक्र ये सप्तर्षि होतेभये ८० हे राजन् ऐसे ये मन्वन्तर तेरे से कहे हैं ८१ इन्हों को पुरुष प्रात काल कीर्त्तनकरे तो सुख आयु यश इन्हों को प्राप्त होताहै ८२ और ऋषियों के स्मरणसे भी ऐसाही

फलहोताहै और हे राजन् भौत्यमनुमें पाच देवताओंके समूह होतेभये ८३ और तरगभीरु, वप्र, तरस्मानुग्र, अभिमानी प्रवीण, जिष्णु, सक्रन्दन ८४ तेजस्वी, सबल ये भौत्यमनु के पुत्र होते भये ८५ हे राजन् इन नामों से मनु तेरे आगे वर्णन करे हैं और हे राजन् समुद्रपर्य्यन्त यह पृथ्वी हजार युग पर्यन्त तिन्हों ने पाली है ८६ और प्रजाओंकरके तिसमें नित्य सहार होताहै ८७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायामनुवर्णननामसप्तमोऽध्याय ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

ऐसेसुन जनमेजयने कहा कि हे राजन् अब मन्वंतरों के दिन और युगों के दिन ब्रह्मा के दिन इन्होंका प्रमाण वर्णनकरो १ ऐसेसुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् सूर्य मनुष्यों के अहोरात्रको भजताहै तिस अहोरात्रको लेकर गणना करते हैं हे राजन् तू सुन २ पद्रह निमेषोंकी एक काष्ठा होती है और तीस काष्ठाओंकी एककला और तीस कलाओंका एक मुहूर्त्त और तीस मुहूर्त्तोंका ३ मनुष्योंका एक दिन रात चन्द्रमा सूर्यकी गतिको अहोरात्र कहते हैं ४ और पन्द्रह अहोरात्रों का एकपक्ष कहाहै और दो पक्षोंका एकमास कहाहै और दो मासों की एकऋतु ५ और तीन ऋतुओं का एक अयन और दो अयनों का एकवर्ष और तीन अयनोंका दक्षिण और उत्तर कहते हैं ६ और मनुष्योंके एक मासका पितरों का एक अहोरात्र होताहै ७ तिन्हों में कृष्ण पितरों का दिनहै और शुक्लपक्ष रात्रिहै हे राजन् कृष्णपक्षमें पितरोंका अह श्राद्ध वर्त्तताहै ८ और मनुष्यों का एकवर्ष देवताओं का एक अहोरात्र है तिसमें उत्तरायण दिन ९ और दक्षिणायन रात्रि और देवताओं के दशवर्ष मनुका एक अहोरात्र होता है १० और तिन दशदिनों का मनुका एकपक्ष होताहै और तिन दशपक्षों का एकमास होताहै और चार महीनों की ११ एकऋतु और तीनऋतुओं का एक अयन और दो अयनोंका एकवर्ष १२ और तिन चार हजार वर्षोंका एक कृतयुग और चारसौवर्ष सध्या और इतनाही सध्याश १३ और तीनहजार वर्ष त्रेता और तीनसौवर्ष संध्या और इतनाही सध्याश १४ और दोहजारवर्ष द्वापर और दोसौवर्षकी संध्या और इतनाही सध्याश १५ और एकहजार वर्षका कलियुग और सौवर्षकी इसकी संध्या और इतनाही सध्याश १६ हे राजन् यह वारह ह-

च्यार युगोंकी सख्या कही है इस देवताओं के मानसे युगसख्या जानो १७ हे राजन् कृत त्रेता द्वापर कलियुग ये इकहत्तर चौकडी १८ एकमन्वतरकहाहै और इसीको अयन कहते हैं और जब दक्षिण और उत्तर दो मनु होजावें १९ तब मनु लीनहोजाताहै पश्चात् इतनेही काल दूसरा मनुरहताहै २० और दशहजार मनुओंका ब्रह्माका एकवर्ष कहाहै २१ और ब्रह्माके एक दिनमें चौदह मनु वर्तते हैं और तिसीको कल्पभी कहतेहैं और ऐसेही हजार युगोंपर्यन्त रात्रिकही है २२ तहा पर्व्वत वन वागोंकरके सहित पृथ्वी डूब जाती है और हे राजन् जब चारयुगोंका एकहजार होजाय तब निरशेष कल्प कहनाहै २३ ऐसे कुछ एक अधिक सत्तरवर्ष के मन्वतर २४ कहाहै ऐसे चौदह मनु वेद पुराणों में कहे हैं ये चौदह मनु कीर्तिके वढ़ानेवाले कहे है २५ और हे राजन् मन्वतरों में सहार कहाहै २६ और संहारोंके अन्तमें संभव कहाहै सो और हे राजन् प्रजाओं का सहार और विसर्ग इन्होंका अन्त सोवर्षसे भी कहनेको समर्थ नहीं २७ और मन्वतरोंमें जो सहार सुनिये है तहा शेष देवता ब्रह्मर्षि ये तप ब्रह्मचर्य शुद्धकरके सहित रहते हैं २८ और जब हजारयुग पूर्ण होजातेहै तब निरशेष कल्प कहाहै तहां सपूर्ण भूत आदित्यके तेज से दग्धहुए २९ ब्रह्माको आगेकर आदित्यके गणोंकरके सहित जो सम्पूर्ण भूतोंके रचने ३० और अव्यक्त और शाश्वत ऐसा नारायण है तिसको सम्पूर्ण भूत प्रवेश होजाते हैं ३१ पश्चात् सम्पूर्ण समुद्र मिलजाते हैं तिन्हों में ब्रह्माका एकहजार वर्ष नारायण निद्राको धारण करते हैं ३२ और इस रात्रि में ब्रह्मा निद्रायोगको प्राप्तहुए शयन करता है ३३ पश्चात् तिस रात्रि को उल्लघन करके और ब्रह्माजागकर फिर सृष्टि रचने की इच्छा करताहै ३४ पश्चात् हे राजन् सोही पुरानीस्मृति और वही वृत्तान्त वही चेष्टित वही देवता और वही देवताओं के स्थान सम्पूर्ण वैसेही होजाते है ३५ और आदित्यकी किरणों से दग्धहुए सम्पूर्ण भूत और देव ऋषि यक्ष गन्धर्व पिशाच उरग राक्षस ये सम्पूर्ण उत्पन्न होजाते है ३६ और ठाढ गरमी नानारूप इन सम्पूर्णोंको ब्रह्मा नारायण से निकसके रचताभया ३७ और जो सम्पूर्ण मनुष्य देवता महर्षि हैं सकृत शुद्ध मग इन्हों की रचना निरतर धर्म से होती है और हे राजन् ऐसेही कालसख्या का जाननेवाला ईश्वर फिर ऐसीही हजारयुगकी सख्याका दिन बनाकर और फिर हजार वर्षकी रात्रि बनाताहै ३८ ऐसे वारम्वार भूतोंको रचताहै और संहार

करताहै ३९ और हे भरतश्रेष्ठ जिन वृष्णियों में असुरों के नाश के अर्थ और सम्पूर्ण लोकों के हितके अर्थ हरि भगवान् जन्मलेतेभये तिन वृष्णियों के वंश का प्रसङ्ग से वर्तमान वैवस्वत के निसर्ग को कहूंगा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांमन्वन्तरानुकीर्त्तननामाष्टमोऽध्याय ८ ॥

नवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेभये हे राजन् दक्षकी पुत्रीविषे कश्यपजी से विवस्वान् होतेभये और तिस विवस्वान्के त्वष्टाकीपुत्री १ रेणु नामभार्या होतीभई पश्चात् सुन्दरतप और तेजसे युक्त और रूप यौवनवाली २ भर्त्ता के रूपसे नहीं प्रसन्न होतीहुई और सञ्ज्ञानाम से विख्यात ऐसी भार्या हुई है ३ और उस आदित्यमण्डलके तेजका रूप गात्रोंमें परिदग्धहुआ अतिकान्तकी तरह नहीं होताभया ४ तब स्नेहसे यह कहतीभई यह अण्डस्थ मरा नहीं इसवास्ते मार्तण्डनाम होता भया ५ और विवस्वान् अधिक तेजस्वी होनेसे तीनोंलोकोंको तापकरताभया६ और हे राजन् यह आदित्य तिससञ्ज्ञामें एककन्या और दोपुत्र उत्पन्न करतेभये ७ तिन्होंमें विवस्वान् का पुत्र श्राद्धदेव होताभया और यमुना और यम ये उत्पन्न होतेभये ८ पश्चात् विवस्वान्का श्यामवर्ण देखकर और वह संज्ञा तिसको नहीं सहतीहुई अपनीछाया सवर्णाको रचतीभई ९ पश्चात् यह मायावती छाया अञ्जलि बाध सञ्ज्ञाके आगे स्थितहोकर १० कहनेलगी कि हे भामिनी मेरे को आज्ञा फरमाओ मैं वैसेही करूंगी सञ्ज्ञाकहनेलगी कि हे छाये तेरा कल्याणहो मैं अपने पिताके भवन में जातीहूं और तू विकारसे रहितहोके मेरे भवनमें वस ११ ये दोनों मेरे पुत्र और यह कन्या तेरेसे रक्षा करनी योग्यहै और हे छाये भगवान् सूर्य्यके आगे यह वृत्तान्त कहना नहीं १२ यह सुन छाया कहनेलगी हे देवि तू सुखपूर्व्वक जा जबतक मेरेकेशों को ग्रहण नहीं करेगा और शापनहीं देगा तबतक मैं नहीं कहोंगी १३ तब वैशम्पायन कहनेलगे ऐसेसुन सञ्ज्ञाकहने लगी कि अच्छा ठीक है पश्चात् यह तपस्विनी लज्जितसी हुई त्वष्टा पिता के स्थान में जाती भई १४ तब यह पिताके समीप गई तब पिताने झिड़कदी और कहनेलगा कि तू अपने भर्त्ता के पासजा १५ तब यह घोड़ीका रूप धारणकर और उत्तरमें कुरुदेशोंमें जाके वहा तृण चरतीभई १६ और यहा आदित्य इसको

संज्ञाही जानताहुआ इसमें आत्माके समान पुत्र पैदा करताभया १७ और पूर्व
जमनुके समान उत्पन्नभया सोही सावर्णि मनुहोताभया १८ और दूसरापुत्र शनै
श्चर होताभया सो हे राजन् यह संज्ञाके पुत्रोंसे १६ अपने पुत्रोंमें अधिक स्नेह
करतीभई तिसको मनुसहताभया और यमनहीं सहताभया २० पश्चात् यह कोप
होकर भावी के बलसे और बालभावसे पैरकरके तिसको ताडन करताभया २१
और हे राजन् यहछाया दुःखितहुई अरे तेरा चरण टूटजाओ ऐसे शापदेतीभई
२२ पश्चात् यह यम छायाके वाक्यों से कांपताहुआ और शापसे उद्विग्न हुआ
पिताके आगे अञ्जलिबांध सम्पूर्ण कहताभया २३ कि हे भगवन् यह मेराशाप
दूरकरो और हे भगवन् माताको सपूर्ण पुत्रोंमें बराबर वर्त्तना उचितहै २४ सोयह
हमारेको छोडकर और छोटोंपर मोह करती है सो हे भगवन् मैं क्रोधकर बालभाव
से और मोहसे इसकेलात मारनेको तैयारहुआ और मारी तो नहीं २५ सो हे भ-
गवन् यहमेरा अपराध क्षमाकरो क्योंकि जिससे तेरी पूजनीयाका मैंने तिरस्कार
किया इसवास्ते यहचरण निस्संदेहपडेगा २६ सो हे लोकेश माताने मेरेको शाप
दियाहै सो आप यह दयाकरो कि तेरीकृपासे यह चरण नहीं पडे २७ इतनासुन
विवस्वान् कहताभया कि यह तो निश्चय ऐसेही होगा क्योंकि जिससे धर्मज्ञ और
सत्यवादी ऐसे तेरेमें क्रोध उत्पन्न होताभया २८ क्योंकि और तेरीमाताके वचन
को अन्यथा करनेको भी मैं समर्त्थ नहीं इसवास्ते कृमि तेरे पैरसे मांस लेलेकर
पृथ्वीमें प्राप्त होवेंगे २६ और तिसकेपीछे तू सुखको प्राप्तहोगा ऐसे तेरी माताका
वचन सत्य होवेगा ३० और शापके परिहारकरके तू भी रक्षित होवेगा ऐसे यम
को कह पश्चात् सूर्य भगवान् छायाको कहतेभये कि हे प्रिये तुल्य पुत्रोंमें तू न्यून
अधिकस्नेह क्यों करतीहै ३१ ऐसे छायासुन तिसवार्त्ताको गुप्तकरती कुछ उत्तर
नहीं देतीभई ३२ पश्चात् विवस्वान् आत्माको टेककर योगसमाधिमें सत्य देखते
भये पश्चात् हे राजन् तिसकानाश करनेको तैयारहुए ३३ और केश पकडलिये
तब सपूर्ण वृत्तान्त छाया कहतीभई ३४ पश्चात् विवस्वान् ऐसेसुन क्रोधयुक्त होकर
दग्धकरनेकी इच्छाकरके त्वष्टाकेपास जातेभये यह त्वष्टा इसका विधि से पूजन
कर क्रोधको शान्तकर ऐसावचन कहताभया ३५ त्वष्टा कहनेलगा कि हे भगवन्
आपके अत्यन्त तेजसे यह रूप शोभायमान [illegible] होना सो आपके तेज को
नहीं सहती हुई संज्ञा घोडीबनकर हरित [illegible] और शुभचारिणी

नित्य तपकरनेवाली और घोड़ीका रूप धारणकर ३७ पत्तोंका भोजन करने वाली, कृश और दीन, जटा को धारणकिये ब्रह्मचारिणी और हाथी के सूंड से व्याकुल करी पद्मिनी के समान अतिव्याकुल ३८ और श्लाघाके योग्य और योगबलसे संयुक्त ऐसी स्त्री को आज देखेगा और हे देवेश सूर्य जो मेरे मतको आप योग्य जानो हो तो ३६ आपके भी रूपका निवृत्त करदेऊं तब तिरछे और ऊंचे रूपसे संयुक्त सूर्य्य हुआ ४० और तिस रूपको धारण करनेवाला सूर्य त्वष्टा प्रजापति के वचनको अच्छीतरह मानताभया ४१ और रूपकी सिद्धिके वास्ते त्वष्टाको आज्ञा देताभया तब समीप में त्वष्टा प्राप्तहो ४२ भ्रामणयन्त्रके द्वारा सूर्य के रूप को अर्थात् तेज को सूक्ष्मरूप सुन्दर करताभया पीछे हे राजन् तेज की अल्पतासे तिसका निर्भासितरूपहुआ ४३ तब कांतिसे भी अधिक कांति ऐसा रूप पहले से भी अधिक शोभित होताभया ४४ और तबसे लगायत सूर्य्य का लोहितरूप मुख हुआ है ४५ और सूर्य्य के मुखके प्रथम च्युतरूप तेजसे बारह आदित्य उपजतेभये इसवास्ते सब आदित्यों की उत्पत्ति सूर्य्य के मुखसे मानी गई है ४६ और धाता १ अर्य्यमा २ मित्र ३ वरुण ४ अंश ५ भग ६।४७ इन्द्र ७ विवस्वान् ८ पूषा ६ पर्जन्य १० त्वष्टा ११ विष्णु १२, ४८ ये उपजनेवालों के नाम हैं इन आदित्यों को अपने देहसे उपजेहुए देख सूर्य्य अति आनन्द को प्राप्त होताभया और गन्ध पुष्प आभूषण रत्नों से जटित मुकुट ४६ इन्हों करके सबों को पूजता भया तब त्वष्टा कहनेलगा हे देव उत्तर कुरुके देश में ५० घोडी के रूपको प्राप्तहुई और हरितदूब से संयुक्त देशमें विचरती ऐसी अपनी भार्य्या के समीप गमन करो ५१ तब अपनी भार्या के रूपकी लीलाकर अर्थात् आप भी अश्वके रूपको धारणकर और योगको प्राप्तहो ५२ सबों के तेजसे और नियमों से अतितेज और नियमवाली अपनी भार्याको देखताभया तब अश्वही के रूप में सूर्य्य मैथुनकेअर्थ चेष्टा करतीहुई उस अपनीभार्या के मुखमें समागम करता भया ५३ तब वह घोडी परपुरुषकी शङ्काकर सूर्य्य के वीर्य को अपनी नासिका के द्वारा बाहर काढनेलगी ५४ तब वैद्यों में उत्तम और दिव्यरूपवाले ऐसे अश्विनीकुमार उपजते भये पीछे नासत्य और दस्र इस नाम से विख्यातहुए ५५ ऐसे आठ में प्रजापतिरूप सूर्य्य के ये दोनोंपुत्र हुए हैं पीछे दिव्यरूप से सूर्य्य अपनी भार्याको देखताभया ५६ तब हे जनमेजय भार्य्या आनन्दित होनेलगी

पीछे इस कर्म से अतिपीड़ित मनवाला धर्मराज ५७ इस प्रजाको धर्म से पालने लगा अर्थात् धर्महीके आश्रय हुआ सो इस धर्म के प्रतापसे अति कीर्त्तिवाला धर्म्मराज ५८ पितरों के राजापन और लोकपालता को प्राप्तहुआ और सूर्यका पुत्र सावर्णिमनु ५९ भावीरूप सावर्णि अन्तर में प्रकाशित होगा जो अब भी मेरु पर्वतके पृष्ठभाग में घोरतप कररहाहै ६० और तिसके तेजसे त्वष्टाने युद्ध में नहीं प्रतिहत होनेवाला ऐसा विष्णुका चक्र दैत्यों के नाशनेवास्ते प्रकाशित कियाहै ६१ और सावर्णिमनु और धर्मराज इन दोनोंसे छोटी और अति यश-वाली ६२ और नदियों में श्रेष्ठ और लोकको सुखदेनेवाली और यमुना नामसे विख्यात नदी होतीभई ६३ और इस सावर्णिमनुका दूसराभ्राता शनैश्चर सब लोकके पूजनेयोग्य ग्रहताको प्राप्तहुआ ६४ जो देवताओंके इसजन्मको श्रवण करे और धारणकरे वह मनुष्य दुःखोंसे रहितहोके अति यशको प्राप्तहोताहै६५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि वैवस्वतमनु के इक्ष्वाकु १ नाभाग २ धृष्णु ३ शर्याति ४ । १ नरिष्य ५ प्रांशु ६ नाभागारिष्ट ७ करूप ८ पृषध्र ९ ऐसे नामोंवाले ९ पुत्र उपजतेभये २ परन्तु इन पुत्रोंकी उत्पत्तिसे पहले हे राजन् पुत्रकी कामनावाला मनु मित्रावरुण की यज्ञ करताभया ३ हे भारत तब मनु मित्रावरुण के अंशमें अग्नि में बहुतसी आहुती देताभया ४ तब ऐसे आहुती देने से देवता गंधर्व मनुष्य तपोधनवाले मुनि ये सब तृप्तहोतेभये ५ तब दिव्य वस्त्रोंको धारण करे और दिव्य आभूषणों से भाभूषित और दिव्य रूपवाली ऐसी इड़ानामसे विख्यात कन्या उपजती भई ६ ऐसे सुना है तब दण्डको धारण करनेवाला मनु इलासे कहनेलगा पुत्रि तू मेरेसंग स्थानपै चल ७ तब पुत्रकी कामनावाले मनुजीसे धर्मयुक्तवचन इला कहनेलगी ८ हे कहनेवालों में श्रेष्ठ मैं मित्रावरुणके अंश में जन्मीहूं इसवास्ते तिन्होंके सकाशमें जाऊंगी ९ क्योंकि हतक्रिया धर्म मेरे को मतमारो ऐसे मनुजीसे कह मित्रावरुणके समीप में जाके इला भजली बाध कहनेलगी १० हे देवताओ तुमदोनोंके अंशसे मैं उपजीहूं इसवास्ते ११ मेरेको तुम्हारा क्या करनाचाहिये और मनुजीने ऐसे कहा कि तू मेरीपुत्री है १२ पीछे

ऐसे कहनेवाली और धर्म्म में परायण ऐसी इलाके अर्थ मित्र और वरुण जैसे कहतेभये तैसे सुन १३ हे सुन्दर कटिवाली वरवर्णिनि इसतेरे धर्मसे और सत्यसे और विनयतासे और शान्तिसे और सत्यसे हम दोनों प्रसन्नहुये १४ और महाभागे तू हमारी पुत्री है ऐसे संसारमें विख्यात होवेगी और वंशको उत्पन्न करनेवाला पुत्र तूही मनुजी के होगी १५ अर्थात् हे शोभने जगत्को प्रिय और मनुके वंशको बढानेवाला और तीन लोकमें सुद्युम्न इस नामसे विख्यात ऐसा पुत्र होवेगा १६ पीछे ऐसे सुन पिताके समीपमें गमन करतीहुई इसी अन्तर में चन्द्रमाके पुत्र बुधने मैथुनके अर्थ याचनाकरी १७ तब चन्द्रमा के पुत्र बुधसे तिस इलामें पुरूरवा जन्म लेताभया ऐसे पुत्रको उत्पन्न कर पीछे इला सुद्युम्न होताभया १८ और हे भारत सुद्युम्नके परमधार्मिक और उत्कल गय विनताश्व इन नामोंसे विख्यात तीन पुत्र होतेभये १९ और उत्कलके उत्कला और विनताश्व के दिक्पश्चिमा और गयके गया ऐसी पुरी हे भरतश्रेष्ठ होती भई २० और हे अरिंदम जब मनुजी सूर्यमें प्रवेशकरतेभये तब दशमनुके पुत्र इसपृथ्वी का विभागकर ग्रहण करतेभये २१ तब मध्यदेशका राजा इक्ष्वाकुहुआ २२ और तिस समयमें कन्याभावसे इसगुणको सुद्युम्न नहीं प्राप्तहुआ २३ और वशिष्ठजी के वचनसे महात्मा पुरुषों के समान प्रतिष्ठाको सुद्युम्न प्राप्तहोके पीछे प्रयाग के समीपमें राज्यको प्राप्तहुआ २४ हे राजन् उस राज्यको पुरूरवा के अर्थ देताभया २५ और उसी राज्यस्थान को धृष्टक अम्बरीप दण्डक ऐसे नामोंवाले तीन पुत्रहुए २६ तिन्होंमें महात्मा दण्डक राजा तपस्वियोंके योग्य उत्तम दण्डकारण्य नामसे विख्यात और लोकमें विख्यात ऐसे वनको रचताभया २७ तिसमें प्रवेश करनेसेही मनुष्य पापोंसे छूटजाताहै और हे भारत पीछे पुरुरवा पुत्रको उत्पन्न कर सुद्युम्न तो स्वर्ग में प्राप्तहोतेभये २८ और नरिष्यन्के शकजातिवाले राजा पुत्र हुए और नाभाके राजाओं में उत्तम अम्बरीप पुत्र हुआ २९ और धृष्टके युद्धमें धृष्टरूप ऐसा धार्ष्टकक्षत्रहुआ और शर्यातिके आनर्त नामवाला पुत्र ३० और सुकन्या नामसे विख्यात और जो च्यवनमुनिकी भार्याहुई ऐसी पुत्रीहुई ३१ इसभांति मिथुन उपजाहै और आनर्त्तके महाद्युतिवाला रेवनामवाला पुत्र उपजा ३२ जिसका आनर्त्तदेशमें राज्यहुआ और कुशस्थली अर्थात् द्वारका राजधानीहुई ३३ और रेवके ककुद्मीनामवाला और धार्मिक और रैवतनामसे

भी विख्यात ऐसा एक ज्येष्ठ पुत्रहुआ २४ वाकी अन्यभी १०० पुत्रहुए तिन्होंमें से रैवतपुत्र १ अपनी कन्याको ग्रहणकर ब्रह्मलोकमें गमन करताभया २५ तहां एक मुहूर्त्तके समान वहुतसे युगोंको वीतेहुए सुन जवान अवस्थामें स्थितहुआ यादवों से आवृत २६ और द्वारावती नामसे प्रसिद्ध और वहुत द्वारोंवाली और वहुत सुन्दर और श्रीकृष्ण हैं अग्रणी जिन्होंका ऐसे भोज वृष्णि अन्धक २७ इन कुलोंसे रक्षित ऐसी अपनी पुरीमें आके प्राप्तहुआ पीछे सब यथार्थ तत्त्वसुन रैवत राजा अपनी रेवती पुत्री को वलदेवजी के अर्थ विवाहके २८ मेरुपर्व्वतके शिखरपे आप तप करनेवास्ते जाताभया और वलदेवजी भी सुखपूर्वक रेवतीके संग रमण करतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांवैलोत्पत्तौदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

जनमेजय ने प्रश्न किया हे द्विजोत्तम वहुतसा काल व्यतीत होगया परन्तु रेवती और रैवत राजाको वृद्धता कैसे नहीं प्राप्तहुई १ और मेरुकोगये शर्याति राजाकी संतति इस समयमें भी कैसे पृथ्वीमें स्थितरही सो तत्त्वसे श्रवण करने की इच्छा करूहूं २ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि हे राजन् वृद्धता क्षुधा तृषा मृत्यु ऋतु चक्र ये सब ब्रह्मलोकमें नहीं उपजते हैं ३ और जब रैवत राजा ब्रह्म· लोकमें चलेगये तब कुशस्थली यक्ष और राक्षसों ने ग्रहणकरी ४ और इसराजा के १०० भ्राता राक्षसों से पीडित सब दिशाओं में चलेगये ५ और हे राजेन्द्र जब सब भ्राता भाजगये तब अन्य क्षत्रियभी भयभीतहोके जहां तहां भाजनेलगे ६ ऐसे हे महाराज समूहके समूह इकट्ठेहोकर शार्य्यात इसनामसे विख्यात क्षत्रिय होतेभये ७ और हे कुरुनन्दन पर्वतों में प्रवेश करनेलगे ८ और नाभागारिष्टके वैश्यजातिवाले दो पुत्र ब्राह्मणताको प्राप्तहुए और करूरके युद्धमें कुशल और कारूप इसनाम से विख्यात ऐसे क्षत्रिय उत्पन्नहुए ९ और पृषध्रराजा गुरुकी गायके मरजाने से हे जनमेजय शापसे शूद्र होगया ऐसे नव वैवस्वत मनुजी के पुत्रोंका वर्णन किया है १० और मनुजीकी छींकमें इक्ष्वाकु उपजा ११ और इक्ष्वाकुके वहुतसी दक्षिणा देनेवाले १०० पुत्र उपजे तिन्होंमें ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षि हुआ और वह युद्ध करने में समर्थ नहीं हुआ १२ और अयोध्यापुरीका स्वा·

सीभी हुआ और विकुक्षिके उत्तमरूप ५० और शकुनिनाम १० हैं मुख्य जिन्हों में ऐसे ५० पुत्र १३ उत्तरके देशमें राज्यको प्राप्त हो प्रजाकी पालना करतेभये १४ और वशातिनाम मुख्यहैं जिन्होंमें और प्रजाकीपालना करनेवाले ऐसे ४८ विकुक्षि के पुत्र दक्षिण दिशामें वसतेभये १५ और एक समयमें इक्ष्वाकु राजा पर्वकालमें विकुक्षिसे कहनेलगा हे महावल श्राद्धके अर्थ मृगकोमार मासलाओ १६ तव पिताके वचनको नहीं मान और श्राद्धका निरादरकर १७ और शशाके मासको खाके शशाद पुत्र शिकार खेलनेको चलागया तव वशिष्ठजी के वचन से इक्ष्वाकु राजाने विकुक्षिका परित्याग किया १८ तव इक्ष्वाकुके समीप में शशाद पुत्र वसतारहा पीछे शशादके अतिवीर्यवाला ककुत्स्थपुत्र उपजा १९ पीछे एक समयमें वृषरूपहुए इन्द्रके पीछे यही सव राक्षसोंको जीतताभया २० पीछे ककुत्स्थके अनेना पुत्रहुआ पीछे अनेनाके पृथु पुत्रहुआ पीछे पृथुके विष्टराश्व पुत्र हुआ पीछे विष्टराश्वके आर्द्रपुत्रहुआ २१ पीछे आर्द्रके युवनाश्वपुत्र हुआ पीछे युवनाश्वके श्रावपुत्र हुआ पीछे श्रावके श्रावस्तपुत्र हुआ जिसने श्रावस्तीनाम पुरी रची २२ पीछे श्रावस्तके वृहदश्व पुत्र हुआ पीछे वृहदश्व के परमधार्मिक कुवलाश्व पुत्रहुआ २३ और इसीको धुन्धुदैत्यके मारने से धुधुमार भी कहते हैं २४ तव जनमेजयने प्रश्न किया हे ब्रह्मन् धुन्धुदैत्यके मारनेका आख्यान तत्त्व से सुननेकी इच्छा करताहू जिसकारणसे कुवलाश्वका नाम धुन्धुमार हुआ २५ तव वैशंपायनजी कहनेलगे कुवलाश्वके उत्तम धनुर्विद्यावाले और सव विद्याओं में कुशल २६ और वलवन्त और सुन्दर ऐसे १०० पुत्र उपजतेभये पीछे वृहदश्व पिता कुवलाश्वपुत्रको राज्य स्थानपर प्राप्तकर २७ आप वनमें गया तव उत्तङ्कऋषि उस राजाके गमनको निवारण करतेभये २८ और उत्तङ्कमुनिनेकहा हे राजन् आप इस लोककी रक्षाकरने योग्यहो और हे पार्थिव निरुद्विग्न होके तपकरने को समर्थ नहीं हो २९ क्योंकि मेरे आश्रम के समीप में मरुधन्वादेश में वालुकासे पूर्ण उज्जानक विख्यातहै ३० तिसमें देवताओं से अवध्य और वड़े शरीरवाला और अति वलवाला और पृथ्वी के भीतर प्रवेशकिये और वालूरेत से अन्तर्हित ३१ मधु राक्षसका पुत्र धुधुनाम महाराक्षस तपकोकर लोकके नाशार्थ शयन करताहै ३२ और एक वर्षके अन्तमें जव जव वह राक्षस श्वासको छोड़ताहै तव तव पर्वत वन आदिसे संयुक्त पृथ्वी कांपती है ३३ और पीछे निम

के श्वाससे उपजे वातसे अतिरज उडताहै और सूर्य के मार्गको आधीसे आच्छादितकर सात दिनों तक पृथ्वी कांपती ही रहती है ३४ और धूमासे संयुक्त अग्निके किरणके प्रकाशित रहते हैं इसवास्ते हे राजन् मैं अपने आश्रममें ठहरने को समर्थ नहींहोता ३५ इसलिये हे महाराज लोकके हितकी कामनाकर इस बड़े शरीरवाले राक्षसको मारो और जब आप इसको मारोगे तब स्वस्थरूप लोक होजावेंगे ३६ और हे पृथ्वीपते तिसको मारने वास्ते आपही समर्थ हैं और हे अनघ पूर्वयुगमें विष्णुभगवान्ने मेरे अर्थ वरदियाहै ३७ कि जो इस महाबली राक्षसको मारेगा तिसके तेजको तुम बढ़ाओगे ऐसे मेरे से कहाहै ३८ और हे पृथ्वीपाल अल्पतेजसे महातेजवाला यह राक्षस दिव्यशत १०० वर्षोंमें भी दग्ध होनेको समर्थ नहीं होसकेगा ३९ क्योंकि तिसराक्षसमें ऐसा बलहै कि देवताओंकी भी सामर्थ्य नहीं है ऐसे उत्तङ्कमुनिने राजासे वचनकहे ४० तब बृहदश्व राजा अपने कुवलाश्व पुत्रको धुन्धुदैत्यके मारने वास्ते देताभया ४१ और बृहदश्व कहनेलगा हे भगवन् मैंने शस्त्रों का त्याग करदिया है और हे द्विज श्रेष्ठ यह मेरा पुत्र धुन्धु राक्षस को मारेगा इसमें संशय नहीं ४२ ऐसे पुत्रको आज्ञा देकर राजर्षि तपके अर्थ पर्व्वत को गमन करताभया ४३ पीछे कुवलाश्व राजा अपने १०० पुत्रोंको सङ्गले धुन्धुराक्षसके मारनेवास्ते उत्तङ्कमुनिके साथचला ४४ तिस समयमें कुवलाश्व राजाके शरीर में उत्तंककी आज्ञासे और संसारके हित वास्ते विष्णु भगवान् अपने तेजसे प्रवेश करतेभये ४५ और जब राजाने गमन किया तब आकाशमें महाशब्द होनेलगा कि यह श्रीमान् राजा अवध्यहै और धुंधु राक्षसको मारेगा ४६ पीछे दिव्य पुष्पों की वर्षा राजा के चारों तरफ देवते करनेलगे और हे भरतर्षभ देवताओं में नगारे बजनेलागे पीछे अपने १०० पुत्रों सहित राजा बालू रेतसे पूरित समुद्रको खुदावता भया ४७ तब हे कौरव्य नारायण के तेजसे पुष्टकिया राजा फिर बलवाला होताभया ४८ जब राजा के पुत्रों ने अति खोदन किया तब धुंधुराक्षस पश्चिम दिशाको प्राप्तहो खड़ाहुआ ४९ तब मुखसे उपजे अग्निकर क्रोधसे लोकोंको उद्वर्तन करनेकी तरह वेगसे पानी गिरताभया जैसे चन्द्रमाके उदयमें समुद्र ५० पीछे उस राक्षसने राजाके सब पुत्र दग्ध करदिये केवल तीन ३ शेष रहे ५१ पीछे तिस अतिबलवाले राक्षसके सन्मुख अति तेजवाला राजा प्राप्तहो ५२ राक्षसके जलमय वेगको योगविद्यासे

पानकर पीछे जलसे अग्निको शात करताभया ५३ पीछे राक्षसको मार उत्तङ्क मुनिको दिखाताभया तव उत्तङ्कमुनिने राजाके अर्थ वरदिया कि हे राजन् अक्षयरूप द्रव्य तेरेपास होवेगा और किसी कालमें भी शत्रुओं से पराजय नहीं होगा ५४ और धर्म्म में रति और अक्षय कालतक स्वर्ग में वासहोगा और जो राक्षसने तेरेपुत्र मारदिये हैं तिन्हों को भी अक्षय लोक प्राप्त होवेगा ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायाधुन्धुवधेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तिस कुवलाश्व राजाके ३ पुत्र शेषरहे तिन्हो में ज्येष्ठ पुत्र दृढाश्वहुआ और चन्द्राश्व कपिलाश्व ये दोनों छोटेपुत्र हुए १ पीछे दृढाश्वके हर्य्यश्व पुत्रहुआ पीछे हर्य्यश्व के निकुम्भ पुत्रहुआ २ पीछे निकुम्भ के युद्धमें विशारद सहताश्व पुत्रहुआ पीछे हेराजन् अकृशाश्व औरकृशाश्व ऐसे नामोंवाले दोपुत्र सहताश्व के हुए ३ और सत्पुरुषों की माता और तीन लोक में दृषद्वतीनाम से विख्यात ऐसी हेमवतीकन्या उपजी पीछे हेमवती का प्रसेनजित् पुत्रहुआ ४ और गौरी नामवाली पतिव्रता भार्या को प्राप्तहुआ पीछे पतिकेशाप से यही गौरी वाहुदानदी होतीभई ५ पीछे वाहुदानदी में युवनाश्व राजा उत्पन्नहुआ पीछे युवनाश्व के त्रिलोकी को जीतनेवाला मान्धाता राजा पुत्रहुआ ६ तिसने शशविंदु राजाकी पुत्री और चैत्ररथी नाम से विख्यात ७ और साध्वी और विंदुमती नामसे विख्यात और अतिरूपवाली और पतिव्रता और दशहजार १०००० भ्राताओं से वडी ८ ऐसी स्त्रीको विवाहकर तिसमें पुरुकुत्स और मुचकुन्द ऐसे नामोंवाले दोपुत्र उपजे ९ पीछे पुरुकुत्सके त्रसदस्यु पुत्र उपजा १० पीछे त्रसदस्युके नर्मदानदी में सम्भूत पुत्रहुआ पीछे सम्भूतके सुधन्वा राजा पुत्रहुआ ११ पीछे सुधन्वा के त्रिधन्वा पुत्रहुआ पीछे त्रिधन्वाके त्र्य्यारुण पुत्रहुआ १२ पीछे त्र्य्यारुणके अतिवलवाला सत्यव्रत पुत्रहुआ पीछे यही सत्यव्रत सवों के विवाहों में विघ्न करनेलगा १३ जिसने प्रथम अन्य से विवाहित करी भार्याको आप ग्रहण किया और वालकपने से व कामसे व मोहसे व आनन्द से व चपलता से किसीक पुरवासी की कन्या को हरताभया १४ ऐसे अधर्म करने से त्र्य्यारुण राजा इस पुत्रको त्यागताभया १५ तव त्यागा हुआ

के श्वाससे उपजे वातसे अतिरज उडताहै और सूर्य्य के मार्गको आवृत्तिसे आ-
च्छादितकर सात दिनों तक पृथ्वी कांपती ही रहती है ३४ और धूमासे संयुक्त
अग्निके किरणके प्रकाशित रहते हैं इसवास्ते हे राजन् मैं अपने आश्रममें ठहर-
ने को समर्थ नहींहोता ३५ इसलिये हे महाराज लोकके हितकी कामनाकर इस
बडे शरीरवाले राक्षसको मारो और जब आप इसको मारोगे तब स्वस्थरूप लोक
होजावेंगे ३६ और हे पृथ्वीपते तिसको मारने वास्ते आपही समर्थ हैं और हे
अनघ पूर्वयुगमें विष्णुभगवान्ने मेरे अर्थ वरदियाहै ३७ कि जो इस महाबली
राक्षसको मारेगा तिसके तेजको तुम बढाओगे ऐसे मेरे से कहाहै ३८ और हे
पृथ्वीपाल अल्पतेजसे महातेजवाला यह राक्षस दिव्यशत १०० वर्षोंमें भी दग्ध
होनेको समर्थ नहीं होसकेगा ३९ क्योंकि तिसराक्षसमें ऐसा बलहै कि देवता-
ओंकी भी सामर्थ्य नहीं है ऐसे उत्तङ्कमुनिने राजासे वचनकहे ४० तब बृहदश्व
राजा अपने कुवलाश्व पुत्रको धुन्धुदैत्यके मारने वास्ते देताभया ४१ और बृह-
दश्व कहनेलगा हे भगवन् मैंने शस्त्रों का त्याग करदिया है और हे द्विज श्रेष्ठ
यह मेरा पुत्र धुन्धु राक्षस को मारेगा इसमें संशय नहीं ४२ ऐसे पुत्रको आज्ञा
देकर राजर्षि तपके अर्थ पर्वत को गमन करताभया ४३ पीछे कुवलाश्व राजा
अपने १०० पुत्रोंको सङ्गले धुन्धुराक्षसके मारनेवास्ते उत्तङ्कमुनिके साथचला ४४
तिस समयमें कुवलाश्व राजाके शरीर में उत्तंककी आज्ञासे और संसारके हित
वास्ते विष्णु भगवान् अपने तेजसे प्रवेश करतेभये ४५ और जब राजाने गमन
किया तब आकाशमें महाशब्द होनेलगा कि यह श्रीमान् राजा अवध्यहै और
धुंधु राक्षसको मारेगा ४६ पीछे दिव्य पुष्पों की वर्षा राजा के चारों तरफ देवते
करनेलगे और हे भरतर्षभ देवताओं में नगारे बजनेलागे पीछे अपने १०० पुत्रों
सहित राजा वालू रेतसे पूरित समुद्रको खुदावता भया ४७ तब हे कौरव्य नारा-
यण के तेजसे पुष्टकिया राजा फिर बलवाला होताभया ४८ जब राजा के पुत्रों
ने अति खोदन किया तब धुंधुराक्षस पश्चिम दिशाको प्राप्तहो खडाहुआ ४९
तब मुखसे उपजे अग्निकर क्रोधसे लोकोंको उद्वर्तन करनेकी तरह वेगसे पानी
गिरताभया जैसे चन्द्रमाके उदयमें समुद्र ५० पीछे उस राक्षसने राजाके सब पुत्र
दग्ध करदिये केवल तीन ३ शेष रहे ५१ पीछे तिस अतिबलवाले राक्षसके स-
म्मुख अति तेजवाला राजा प्राप्तहो ५२ राक्षसके जलमय वेगको योगविद्यासे

पानकर पीछे जलसे अग्निको शांत करताभया ५३ पीछे राक्षसको मार उत्तङ्क मुनिको दिखाताभया तब उत्तङ्कमुनिने राजाके अर्थ वरदिया कि हे राजन् अक्षयरूप द्रव्य तेरेपास होवेगा और किसी कालमें भी शत्रुओं से पराजय नहीं होगा ५४ और धर्म्म में रति और अक्षय कालतक स्वर्ग में वासहोगा और जो राक्षसने तेरेपुत्र मारदिये हैं तिन्हों को भी अक्षय लोक प्राप्त होवेगा ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायाधुन्धुवधेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तिस कुवलाश्व राजाके ३ पुत्र शेषरहे तिन्हों में ज्येष्ठ पुत्र दृढाश्वहुआ और चन्द्राश्व कपिलाश्व ये दोनों छोटेपुत्र हुए १ पीछे दृढाश्वके हर्य्यश्व पुत्रहुआ पीछे हर्य्यश्व के निकुम्भ पुत्रहुआ २ पीछे निकुम्भ के युद्धमें विशारद सहताश्व पुत्रहुआ पीछे हे राजन् अकृशाश्व और कृशाश्व ऐसे नामोंवाले दोपुत्र सहताश्व के हुए ३ और सत्पुरुषों की माता और तीन लोक में दृषद्वतीनाम से विख्यात ऐसी हेमवतीकन्या उपजी पीछे हेमवती का प्रसेनजित् पुत्रहुआ ४ और गौरी नामवाली पतिव्रता भार्या को प्राप्तहुआ पीछे पतिकेशाप से यही गौरी बाहुदानदी होतीभई ५ पीछे बाहुदानदी में युवनाश्व राजा उत्पन्नहुआ पीछे युवनाश्व के त्रिलोकी को जीतनेवाला मान्धाता राजा पुत्रहुआ ६ तिसने शशबिंदु राजाकी पुत्री और चैत्ररथी नाम से विख्यात ७ और साध्वी और बिंदुमती नामसे विख्यात और अतिरूपवाली और पतिव्रता और दशहजार १०००० भ्राताओं से बडी ८ ऐसी स्त्रीको विवाहकर तिसमें पुरुकुत्स और मुचकुन्द ऐसे नामोंवाले दोपुत्र उपजे ९ पीछे पुरुकुत्सके त्रसदस्यु पुत्र उपजा १० पीछे त्रसदस्युके नर्मदानदी में सम्भूत पुत्रहुआ पीछे सम्भूतके सुधन्वा राजा पुत्रहुआ ११ पीछे सुधन्वा के त्रिधन्वा पुत्रहुआ पीछे त्रिधन्वाके त्रय्यारुण पुत्रहुआ १२ पीछे त्रय्यारुणके अतिबलवाला सत्यव्रत पुत्रहुआ पीछे यही सत्यव्रत सबों के विवाहों में विघ्न करनेलगा १३ जिसने प्रथम अन्य से विवाहित करी भार्याको आप ग्रहण किया और बालकपने से व कामसे व मोहसे व आनन्द से व चपलता से किसीक पुरवासी की कन्या को हरताभया १४ ऐसे अधर्म्म करने से त्रय्यारुण राजा इस पुत्रको त्यागताभया १५ तब त्यागा हुआ

पुत्र पितासे वारम्वार कहनेलगा में कहा गमनकरूं १६ तव तिसको पिता कहने लगा हेदुष्ट तू चाडालों के कुलमें मिलजा और तेरे करके में पुत्रवाला नहींहूं १७ ऐसे पिताके वचन सुन नगरसे निकसताभया और वशिष्ठजी भी तिसको नहीं रोंकतेभये १८ तव सत्यव्रत पुत्र चाण्डालोंमें वसनेलगा और त्र्य्यारुण पिताभी वनमें चलागया १९ तव तिस राज्यमण्डल में १२ वर्षोंतक हे राजेंद्र तिस पापसे इन्द्रने वर्षा नहीं करी २० और तिस राजा की राज्यके विषय में अपनी भार्या को स्थापितकर विश्वामित्र मुनि विपुल तप करनेलगे २१ पीछे विश्वामित्रकी स्त्री अपने मध्यम औरसपुत्र को गलेमेंवाध कुटुम्बकी पालना वास्ते १०० गायों के मूल्यमें वेचने को नगरमें चली २२ तव हे भारत उस गले में वँधेहुए महर्षि पुत्रको धर्मात्मा वही सत्यव्रत छुटाताभया २३ और सब कुटुम्बकी पालना करने लगा दयाकरके और विश्वामित्रकी प्रसन्नताके २४ अर्थ पीछे गलेमें बाधने से वह विश्वामित्र का पुत्र गालवनाम से विख्यातहुआ ऐसे गालवजी सत्यव्रत वीरने छुटाराहै २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांगालवोत्पत्तौद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि पीछे वही सत्यव्रत दयासे व प्रतिज्ञासे विश्वामित्र की स्त्रियों को नियममें स्थितहो पोषताभया १ और मृग शूकर भैंसे वनके पशु इन्होंको मार मासको विश्वामित्रके आश्रममें वृक्षपर बांधता भया २ और उपांशुव्रत अर्थात् अन्य कोई नहीं जानसके ऐसे नियमको अंगीकारकर और बारहवर्ष की दीक्षाको प्राप्तहो पिताकी आज्ञाको पालताहुआ राजा के वनवासके पीछे भी पूर्वोक्त स्थानमेंही सत्यव्रत वसताहुआ ३ तव अयोध्यापुरी को और सब राज्यको उपाध्यायके सम्वन्धसे वशिष्ठजी रक्षा करनेभये ४ पीछे बालकपने से व भावी से सत्यव्रत वशिष्ठजी में नित्यप्रति क्रोधको धारण करताभया ५ क्योंकि जब पिताने सत्यव्रत पुत्रको त्यागा तब वशिष्ठजी किसी कारणकर नहीं वर्जते भये ६ क्योंकि यह सत्यव्रत अपराधी है कितनेक कालतक प्रायश्चित्तकरो ७ और वशिष्ठजी यहभी विचारनेलगे कि जो इसने पाप किये हैं तिन्हों की निवृत्ति बारह वर्ष की दीक्षा में होजावेगी ८ तव इसका अभिषेचन कियाजावेगा

अथवा इसके पुत्र का अभिषेचन कियाजावेगा और इस अभिप्राय को नहीं जाननेवाला सत्यव्रत वशिष्ठजी से वैर रखनेलगा ९।१० और इस पिता पुत्र के ऐसे कारण होने में इन्द्र बारह वर्ष तक नहीं वर्षताभया ११ पीछे एक समय में वह सत्यव्रत दीक्षा को धारण करेहुए जहां तहां गया परन्तु कहीं भी मांस नहीं मिला तब वशिष्ठजी की कामधेनु गाय को देख क्रोधसे व मोहसे व परिश्रमसे संयुक्त और क्षुधा से पीडित १२ और मत्त १ प्रमत्त २ उन्मत्त ३ श्रांत ४ बुभुक्षित ५ त्वरमाण ६ भीरु ७ लुब्ध ८ क्रुद्ध ९ कामी १० इन दश धर्मोंवाला होके १३ वह राजपुत्र उस गायको मार मांस ले विश्वामित्रके पुत्रों को खवाके पीछे आप खाताभया १४ तब इस आख्यानको वशिष्ठजी सुन इसपै क्रोध करनेलगे १५ और क्रुद्धहुए भगवान् वशिष्ठजी इस राजपुत्र के अर्थ ऐसे कहने लगे १६ हे क्रूर तेरे पूर्व्वोक्त अपराध को मैं दूर करदूं हूँ परन्तु तैंने तीन अपराध अर्थात् एक तो पिताका अपरितोष दूसरा गायका मारना और तीसरा अप्रोक्षित गायके मांसको खाना ये तीन अपराध किये हैं १७ इसवास्ते तैंने त्रिशंकु अर्थात् ३ अपराध किये हैं इसलिये तेरेको त्रिशंकु सब कहैंगे १८ पीछे समय में विश्वामित्रजी आके अपने कुटुम्बकापालना करनेवाला देख तिस राजपुत्र से कहनेलगे कि वरमांग १९ तब राजपुत्र ने कही मैं अपने इस शरीर सहित स्वर्गलोकमें जाऊं ऐसा वरमांगा २० पीछे जब बारहवर्ष के पश्चात् अनावृष्टि के भय शान्त होगये तब इस राजपुत्र को पिताके राज्यपर प्राप्तकर विश्वामित्रजी यज्ञ करानेलगे २१ तब देवते और वशिष्ठजीके देखतेहुए विश्वामित्रजी शरीर सहित इस राजपुत्र को स्वर्ग में प्राप्त करतेभये २२ और इस सत्यव्रतके केकय वंशकी सत्यरथा रानी दिव्यरूपवाले हरिश्चन्द्र पुत्रको उपजातीभई २३ सो यह हरिश्चन्द्र राजा त्रिशंकुका पुत्रहुआ और इसने राजसूय यज्ञकरी और चक्रवर्त्ती राजाहुआ २४ पीछे हरिश्चन्द्रके वीर्यवाला रोहित पुत्रहुआ जिसने देशकी सिद्धिके अर्थ रोहितपुर रचा २५ पीछे यह राजर्षि राज्यकर और प्रजाकी पालना कर और संसारको असाररूप जान इस रोहितपुरको ब्राह्मणों के अर्थ देताभया। २६ पीछे रोहित के हरितपुत्र हुआ पीछे हरित के चञ्चुपुत्र हुआ पीछे चञ्चुके विजय और सुदेव इन नामोंवाले २ पुत्रहुए २७ पीछे इन्होंमें विजयने सबजत्री जीतलिये इसवास्ते यह विजय कहाया पीछे विजयके धर्मअर्थको जाननेवाला

रुरुकपुत्र हुआ २८ पीछे रुरुकके वृकपुत्र हुआ पीछे वृकके बाहुपुत्र हुआ इस राजाको शक यवन काम्बोज पारद पल्हव २९ हैहय तालजङ्घ ऐसे नामोंवाले मनुष्य राज्यसे अलग करतेभये और यह राजा अति धार्मिकभी नहींहुआ ३० पीछे इस बाहु के सकाश से औरसी में विष से संयुक्त सगरपुत्र हुआ तिसको भृगुवंश में होनेवाले और्वमुनि पालते भये ३१ पीछे इसी मुनिसे सगर राजा आग्नेयअस्त्रको सीख पीछे तालजंघ हैहय इनकोमार और सब पृथ्वीको जीत पीछे ३२ शक पल्हव पारद इन क्षत्रियों के धर्मोंको छुटाताभया ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांत्रिशङ्कुचरित्रेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

जनमेजय ने प्रश्न किया विषसे सहित कैसे सगर राजा जन्मता भया और किसवास्ते शकआदि क्षत्रियों के १ कुलोचित धर्मोंको क्रुद्धरूप राजा होके छुटाताभया हे तपोधन यह सब विस्तारसे मेरे प्रतिकहो २ तब वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजन् व्यसनवाले बाहुका राज्य जब हैहय तालजंघ शक इन आदियों ने हरलिया ३ तब राजा वनको गया और वह दुःखित राजा वन में जाके मरगया ४ और इस राजाकी गर्भिणी स्त्रीको प्रथम दूसरी रानीने विष देदियाथा ५ सो विषसेयुक्त बालकको धारण किये बाहुकी रानी भी संगगई जब पतिके प्राणान्त होगये तब चिता बनाय वनमें पतिकेसंग गर्भवती रानी जलने लगी ६ तब दयाभाव से और्वमुनि जलने से वर्जतेभये ७ पीछे और्वमुनि के आश्रममें विषसहित बालकजन्मा ८ तब मुनि उस बालकके जातकर्मादि करा पीछे सब वेदोंका अध्ययन करा ९ पीछे अस्त्र देताभया पीछे देवताओं को भी दुःसह ऐसे आग्नेय अस्त्रको सीख और सेना इकट्ठीकर १० हैहय सहित क्षत्रियों को मारताभया जैसे क्रुद्धहुआ रुद्र पशुओंको और संसारमें कीर्ति बढ़ानेलगा ११ पीछे शक यवन काम्बोज पारद पल्हव इनसबोंको मारनेलगा १२ तब हाहा पुकारतेहुए ये सब वशिष्ठजी की शरणगये १३ तब नियमकरा वशिष्ठजी सगर को वर्जतेभये १४ और शकआदि क्षत्रियोंको अभय देतेभये १५ तब सगरराजा अपनी प्रतिज्ञा और वशिष्ठजी के वचनको सुन तिनक्षत्रियों के धर्म्मोंको नाशताभया १६ पीछे शकजातिके क्षत्रियों के आधेशिरको मुड़ा छोड़ताभया पीछे

यवन और काम्बोज क्षत्रियों के सम्पूर्ण शिरको मुड़ा छोड़ताभया १७ पीछे पारद क्षत्रियोंको छुटेहुए वालोंवाले वनाय छोड़ताभया पीछे पल्हव क्षत्रियोंको श्मश्रू धारण करनेवाले वनाय छोड़ताभया ऐसे ये सब स्वाध्याय वषट्कार से रहित सगरजीने करदिये १८ और शक यवन काम्बोज पारद पल्हव कोलिसर्प महिष दार्वाचोल केरल १९ इन सब क्षत्रियोंके धर्म्मोंका नाशकरदिया और वशिष्ठजी के बचन से २० खसतुखार चोलमद्र किष्किन्धिक कोतलवंग शाल्वकोंकण २१ इन देशोंके राजाओं को भी धर्मसे रहित करताभया ऐसे पृथिवी को जीत धर्म्म को जाननेवाला सगर राजा अश्वमेध यज्ञके अर्थ दीक्षितहो अश्वको चलाने लगा २२ पीछे चलताहुआ अश्व पूर्व्वदक्षिणके समुद्रके समीपमें अपहृतहुआ पृथिवी में प्रवेश करताभया २३ तब राजा उस देशको अपने पुत्रोंके द्वारा खुदाताभया तब उस जगहको खोदतेहुए २४ आदिदेव कृष्णहरि प्रजापति विष्णु इन नामोंवाले कपिल मुनिजी को शयन करतेहुए देखतेभये २५ तब जागनेसे कपिल मुनिजीके नेत्रोंके तेजसे सगरके सब पुत्र दग्धहोगये २६ परन्तु वर्हकेतु सकेतु धर्म्मरथ पञ्चजन इन नामोंवाले ४ पुत्र अवशेष रहे २७ और इन्होंही से वशवढेगा पीछे सगरजीके अर्थ कपिल मुनिजीने वरदानदिया कि इक्ष्वाकुका अक्षय वंशरहेगा और तेरीसुन्दरकीर्त्ति वढैगी २८ और समुद्र पुत्र होवेगा और अक्षय स्वर्गवास होगा और मेरे नेत्रोंके तेजसे जो पुत्र दग्ध होगये हैं तिन्हों को अक्षयलोक प्राप्तहोवेंगे २९ पीछे समुद्र अर्घ्य ग्रहणकर तिस सगर राजाको प्रणाम करताभया और तिस कर्म्म से समुद्र को सागर कहते हैं ३० ऐसे समुद्र से उस अश्वको ग्रहणकर १०० अश्वमेध यज्ञ करताभया ३१ और सगर राजा के ६०००० साठहजार पुत्रहुए ऐसे हमोंने सुनाहै ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांसगरोत्पत्तिचरित्रकथनेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

जनमेजयने प्रश्नकिया हे द्विज तिसमहात्मारूप सगर राजाके ६०००० साठ हज़ार पुत्र कैसे जन्मे १ तब वैशम्पायनजी कहनेलगे सगर राजाके दोभार्य्या हुईं वेदोंमें तपसे पापोंको दग्ध करतीभईं तिन्होंमें विदर्भकी पुत्री और केशिनी नाम से विख्यात ऐसी बड़ी भार्य्याहुई २ और अरिष्टनेमिकी पुत्री और रूप में

पृथ्वीभरमें अतिसुन्दर और महतीनामसे विख्यात ऐसीछोटी भार्य्याहुई ३ और हे जनमेजय और्वमुनि तिन दोनोंको वर देनेलगे एक भार्य्या के ६०००० पुत्रों को जन्मेगी ४ और एक भार्य्या के वंशको धारण करनेवाला पुत्र उपजेगा सो तुम दोनों इच्छापूर्व्वक ऐसे वरको ग्रहणकरो ५ तब एक भार्य्यालोभको प्राप्तहो शूरवीर रूप ६०००० पुत्रोंको मागतीभई और एक भार्या वंशको चलानेवाले पुत्र को मांगतीभई ऐसेही मुनि वरदान देतेभये ६ तब केशिनी भार्य्याके असमंजा नामवाला पुत्र उपजा यह समयपाके महाबल पञ्चजननाम राजाहुआ ७ और दूसरीरानी बीजों से पूर्ण तूंबी उपजातीभई तिसमें ६०००० तिलोंके समान गर्भ कालके अनुसार उपज बढतेभये ८ तिन्होंको सगरराजा घृतसे पूर्ण कुम्भमें प्राप्त करनेलगा और जितने गर्भ थे उतनेही राजाने धायें पोषणके वास्ते प्राप्तकरीं ९ पीछे दशवें महीने में क्रमसे सगरकी प्रीतिको बढानेवाले १० कालके अनुसार ६०००० बालक उपजतेभये हे पृथ्वीपते ऐसे तूंबीके माहसे पुत्र उपजे हैं ११ पीछे पञ्चजनके अंशुमान् पुत्रहुआ और अंशुमान्के दिलीप पुत्रहुआ पीछे दिलीपके खट्वाङ्ग पुत्रहुआ १२ जिसने स्वर्ग से फिर इस लोकमें आगमनकर १ मुहूर्त्तभर जीवके सत्यसे और बुद्धिसे तीनोंलोक अनुसंधित करदिये १३ पीछे दिलीप के भगीरथ पुत्रहुआ जिसने यह श्रीगङ्गाजी इसलोक में प्राप्तकरी १४ और समुद्र में मिला पुत्रीभाव से मानता भया १५ इसवास्ते वंशचिंतक गङ्गाको भागीरथी कहते हैं पीछे भगीरथके श्रुत पुत्रहुआ १६ पीछे श्रुतके नाभाग पुत्रहुआ पीछे नाभाग के अम्बरीष पुत्रहुआ पीछे अंबरीष के सिन्धुद्वीप पुत्रहुआ १७ पीछे सिन्धुद्वीपके अयुताजित् पुत्रहुआ पीछे अयुताजित्के महायशवाला ऋतुपर्ण पुत्रहुआ १८ यह राजा पासों के खेलमें अति चतुर और नलराजाको मित्र होताभया पीछे ऋतुपर्ण के आर्त्तपर्णि पुत्रहुआ १९ पीछे आर्त्तपर्णि के सुदास पुत्रहुआ यह राजा इन्द्रका मित्र होताभया पीछे सुदासकापुत्र सौदासहुआ २० इसीको कल्मापपाद और मित्रसह भी कहते हैं पीछे कल्मापपाद के सर्वकर्म्मा पुत्रहुआ २१ पीछे सर्वकर्म्माके अनरण्य पुत्रहुआ पीछे अनरण्य के निघ्न पुत्र हुआ पीछे निघ्नके २२ अनमित्र और रघु ऐसे नामोंवाले २ पुत्रहुए पीछे अनमित्रके दुलिदुह पुत्रहुआ २३ पीछे दुलिदुहके दिलीप पुत्रहुआ यह रामचन्द्रजी का प्रपितामह लगा पीछे दिलीप के दीर्घ बाहुओंवाला रघुपुत्र हुआ २४ यह

अयोध्यापुरी में महाबली होताभया पीछे रघुकेअज पुत्रहुआ पीछे अजके दश-
रथ पुत्रहुआ २५ पीछे दशरथ के धर्मात्मा और महायशवाले ऐसे रामचन्द्रजी
पुत्रहुए पीछे रामचन्द्रके कुश पुत्रहुआ २६ पीछे कुशके अतिथि पुत्रहुआ पीछे
अतिथिके निषध पुत्रहुआ पीछे निषध के नल पुत्रहुआ पीछे नलके नभ पुत्र
हुआ २७ पीछे नभके पुण्डरीक पुत्रहुआ पीछे पुण्डरीकके क्षेमधन्वा पुत्रहुआ
पीछे क्षेमधन्वाके प्रतापवाला देवानीक पुत्रहुआ २८ पीछे देवानीक के अही-
नगु पुत्रहुआ पीछे अहीनगुके सुधन्वा पुत्रहुआ २९ पीछे सुधन्वा के नल पुत्र
हुआ पीछे नल के उक्थ पुत्रहुआ ३० पीछे उक्थ के वज्रनाभ पुत्रहुआ पीछे
वज्रनाभके शख पुत्रहुआ पीछे शखके व्युषिताश्व पुत्रहुआ ३१ पीछे व्युषिता-
श्वके पुष्प पुत्रहुआ पीछे पुष्पके अर्थसिद्धि पुत्रहुआ पीछे अर्थसिद्धिके सुद-
र्शन पुत्रहुआ पीछे सुदर्शन के अग्निवर्ण पुत्रहुआ ३२ पीछे अग्निवर्ण के
शीघ्र पुत्रहुआ पीछे शीघ्र के मरु पुत्रहुआ पीछे मरु योगको प्राप्तकलाप द्वीप
को प्राप्तहुआ ३३ पीछे मरुके विश्रुतवत् पुत्रहुआ पीछे विश्रुतवत्के बृहद्बलपुत्र
हुआ और हे भरतर्षभ नलराजा पुराणों मे विख्यात है ३४ एकता वीरसेन का
पुत्र और दूसरा इक्ष्वाकुवंश में होनेवाला ऐसे जानो और इक्ष्वाकुवंश के राजा
प्रधानता से यहा कहदिये गये ३५ अर्थात् ये सब सूर्यवंशी राजों का वंशकहा
इस श्राद्धदेव रूप सूर्यवंश के आख्यानको पठन करनेसे सततिवाला और पापों
से रहित और अति आयुवाला ऐसा मनुष्य होजाताहै ३६ और सूर्य के लोक
में वासका अधिकारी होजाताहै ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायामादित्यवंशानुकीर्त्तनेपचदशोऽध्याय १५॥

सोलहवां अध्याय॥

जनमेजय ने प्रश्नकिया हे ब्राह्मणों में उत्तम विवस्वान् सूर्यको श्राद्धदेवत्व
कैसे प्राप्तहुआ यह और श्राद्धकी उत्तमविधि श्रवण करनेकी इच्छा करताहूं १
और पितरों के आदि सर्गको सुनना चाहताहूं कौन पितर हुएहैं और ब्राह्मणों
के सकाश से श्रवण भी करा है २ और स्वर्ग में स्थित और देवताओं के भी
देवते ऐसे पितर हैं यह वेदके जाननेवालों ने कहाहै सो यह विस्तारपूर्वक जा
नने की इच्छाहै ३ और जो पितरों का गुण कहाहै और जो पितरों का वल है

और जैसे हमारे किये श्राद्धसे पितरों की तृप्तिहोती है ४ और प्रसन्नहुए पितर कल्याण देते हैं ऐसे पितरों के उत्तम सर्गको जानने की इच्छा है ५ तब वैश-म्पायन कहनेलगे हे जनमेजय पितरों के उत्तम सर्गको तेरे प्रति कहताहूं और जैसे हमाराकिया श्राद्ध पितरों को तृप्तिकरै है ६ और प्रसन्नहुए पितर कल्याण से मनुष्यको युक्त करते हैं यह सब मार्कण्डेयजी ने प्रश्न करनेवाले भीष्मपिता-महजी के अर्थ कहाहै ७ पीछे शरशय्यापर स्थित भीष्मजीसे राजायुधिष्ठिरभी इस प्रश्नको पूछनेभये हैं ८ वह यथाक्रम से जैसे भीष्मजी ने कहाहै और मार्क-ण्डेयजी के अर्थ सनत्कुमारने वर्णन कियाहै ९ एकसमयमें युधिष्ठिरने कहा हे धर्मज्ञ पुष्टिकी इच्छाकरनेवाले मनुष्यको कैसे पुष्टि प्राप्तहोती है और किस कर्म्म को करने में मनुष्य शोच नहीं करताहै १० यह आख्यान सुननेकी इच्छाहै तब भीष्मजी कहनेलगे सब कामोंके फलरूप श्राद्धोंसे जो पितरों को तृप्तकरै हैं ऐसे निरन्तर श्राद्ध करनेवाला मनुष्य परलोकमें और इस लोकमें सुखको प्राप्त होता है ११ और हे युधिष्ठिर पितरधर्म की कामनावाले को धर्म्म और प्रजाकी काम-नावालेको प्रजा और पुष्टि की कामनावाले को पुष्टि देते हैं १२ तब युधिष्ठिर ने प्रश्नकिया कितनों के पितर स्वर्ग में बसते हैं और कितनों के पितर नरकमें बसते हैं क्योंकि सब प्राणी कर्म्म के फलको प्राप्तहोते हैं १३ और विशेषकर फल को चाहनेवाले मनुष्य श्राद्ध को करते हैं और पिता पितामह १४ प्रपितामह इन तीनपुस्तों के अर्थ हमेशा पिण्डदान देते रहते हैं सो दियेहुए श्राद्ध पितरों के अर्थ कैसे पहुंचते हैं १५ और नरकमें स्थितहुए पितर फलदेनेको कैसे समर्थ हैं अथवा वे पितर अन्य कोई हैं फिर हम किन्हीं की पूजाकरें १६ और हमों ने सुनाहै देवते भी स्वर्गमें पितरों को पूजते हैं सो हे महामुने यह विस्तारपूर्वक सुननेकी इच्छा करताहूं १७ इस कथाको आपकहो जैसे पितरों के अर्थ देने से तृप्तिहोती है १८ तब भीष्मजी कहनेलगे हे अरिन्दम यहां तेरे प्रति वर्णन कर-ताहूं जैसे मैंने सुनाहै और जौन से वे अन्य पितरहैं और जिन्होंको हम हमेशा पूजते हैं १९ यह सब लोकान्तर में गयेहुये मेरे पिताने मेरे अर्थ कहा है और एकसमय श्राद्धकालमें मैंने अपने पिता के अर्थ पिण्ड देनाचाहा २० अर्थात् पिण्डको ग्रहणकर देनेको उद्यतभया तब मेरापिता अपने हाथसे पृथ्वी का भे-दनकर पिण्डको मांगनेलगा और तब हाथों के आभूषणों से भूषित और केयूर

भूषणोंसे भूषित २१ और लाल अगुली और लाल तलुआसे सयुक्त ऐसे हाथ को मैंने देखा और जैसे जीनते के हाथमें चिह्न देखेथे वे भी सब देखे परन्तु बौधायन आदि कल्प सूत्रों में ऐसी विधि नहीं देखीगई ऐसा निश्चय कर २२ कुशोंपर मैंने पिण्डदान किया तब प्रसन्नहुआ मेरापिता मधुरवाणी से २३ मेरे को ऐसे कहनेलगा हे पुत्र तेरे करके मैं पुत्रवालाहूं इसलोक में और परलोक में कृतार्थ हुआहू २४ हे पुत्र धर्मोंको जाननेवाला और अति पण्डित ऐसे श्रेष्ठ पुत्ररूप तैंने मेरा उपकार किया और हे दृढव्रत २५ मैंने तो अपने जानने का उपाय किया परन्तु जैसे धर्म्म की रक्षा करनेवाला मनुष्य धर्म्म के चतुर्थांशको प्राप्त होताहै २६ और धर्मकी नहीं रक्षा करनेवाला मनुष्य पापके चतुर्थांश को प्राप्तहोता है २७ तैसे तैंने परम्परा और वेदकी मर्य्यादा को जान वेद धर्म्मोंकी रक्षाकरी २८ और मेरी भी प्रीतिकरी इसवास्ते तेरेपर प्रसन्नहुआ मैं उत्तम वरदान करूगा इसलिये तीनोलोकों में दुर्लभ वरमाग २९ और हे पुत्र जबतक तू जीवने की इच्छा करेगा तबतक तेरी मृत्यु नहीं होगी ३० अर्थात् तेरी आज्ञा लेकर तेरी मृत्युहोगी और जो तेरे वाञ्छितहो वह अन्यवर माग ३१ ऐसे कहते हुए पिता को मैं नमस्कारकर अजलिबाध ऐसे कहनेलगा ३२ हे सत्तम आप की प्रसन्नता होने से मैं कृतकृत्य होगया ३३ और जो आपसे मैं फिर अनुग्रहके योग्यहू तो आपसे प्रकाशित किये प्रश्नकी इच्छा करूहू ३४ तब वह धर्मात्मा मेरे से कहनेलगे हे भीष्मजी तेरी इच्छाहो वह कह ३५ हे पुत्र तेरे संशय को मैं दूर करूगा हे भारत जो तू मेरे से पूछेगा तब अन्तर्हित हुए पिता से मै ऐसे पूछनेलगा ३६ भीष्मबोला पितर देवताओं के भी देवते सुने हैं इसवास्ते देवतेही पितर है या अन्य कोई इसलिये हम किसको पूजें ३७ और हमारा दिया हुआ श्राद्ध कैसे अन्य लोकों में गये पितरों को तृप्तकरै है और श्राद्धका फल क्या है ३८ और देव मनुष्य दानव यक्ष राक्षस गन्धर्व्व किन्नर दिव्यसर्प ३९ ये सब किस पितर को श्राद्ध करते है इसमें मेरे को अति सशय है और अति आश्चर्य है और आप सर्वज्ञ है इसवास्ते हे धर्मज्ञ इस प्रश्नका उत्तर वर्णन करो ४० ऐसे भीष्मजी के वचन को सुन ४१ शन्तनुराजा कहनेलगे हे भारत जो तुम मेरे से प्रश्न करोहो उसका उत्तर सक्षेप से तेरे प्रति कहता हू जैसे पितरों की उत्पत्ति हुई है और हे अनघ ४२ जैसे श्राद्धदिये का फल मिलता है

और सावधान होके पितृश्राद्धमें पितरोंका कारणसुन देवताओं के पितर ब्रह्मा जी के पुत्र कहे हैं तिन्हों को देव मनुष्य राक्षस यक्ष गन्धर्व किन्नर दिव्य सर्प ये पूजते हैं ४३ और श्राद्धों मे तृप्तकिये ये सब जगत्को तृप्तकरते हैं ऐसे ब्रह्माकी आज्ञाहै ४४ इस वास्ते हे महाभाग आलस्य को त्याग उत्तम श्राद्धों से तिन्हों का पूजनकर ये सब कामनाके फलोंको देनेवाले पितर तेरा कल्याण करेंगे ४५ और हे भारत तेरेसे नाम गोत्र आदिसे आराधित किये ते पितर स्वर्ग में बसने वाले हमोंको भी तृप्तकरेंगे ४६ और इस विषयक शेष आख्यान को पितरों के भक्त और आत्मज्ञानको जाननेवाले ऐसे मार्कण्डेयमुनि वर्णन करेंगे ४७ और मेरेपर अनुग्रह करने वास्ते इस श्राद्धमें उपस्थित अर्थात् बैठेहुएहैं ऐसे महाभाग्यवाले मार्कण्डेयजी से तू प्रश्नकर ऐसे कह शन्तनुराजा अन्तर्हित हुए ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायां पितृकल्पेषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

भीष्मजी कहनेलगे हे युधिष्ठिर तब मैं पिताके वचन को मान जो प्रश्न अपने पितासे कियाथा वही फिर मार्कण्डेयजी से करनेलगा १ तब धर्मात्मा और अतितपको करनेवाले ऐसे मार्कण्डेयजी मेरेसे कहनेलगे हे भीष्म तेरे प्रश्नका उत्तर विस्तारसे कहूंगा इसलिये शुश्रूषा करने के योग्य और सावधान ऐसा तू होजा २ और मैं पितरोंके प्रतापसे दीर्घआयुको प्राप्तहुआ और पितरोंकी भक्तिसे पूर्वलोकों में उत्तम यशको प्राप्तहुआ ३ पीछे कई हजारवर्षोंवाले युगान्तमें मेरु पर्वतपर स्थितहो मैं तप करनेलगा ४ तब एक समयमें पर्व्वतके उत्तरकी तरफसे आकाशको अपने तेजसे प्रकाशित करतेहुए विमानको आतेहुए देखताभया ५ और तिस विमान में प्रकाशमान सूर्य्यके समान शय्यापर दीप्त तेजवाले ६ और अनुमानमें अंगुष्ठमात्र ऐसे पुरुषको स्थित अर्थात् सैनकरतेहुए देखताभया जैसे अग्निमें स्थित अग्नि तब मैं तिसपुरुषको शिरसे प्रणामकर ७ पीछे पाद्य अर्घ्य से पूजताभया पीछे मैं ऐसे कहनेलगा हे विभो आपको मैं कैसे जानूं ८ और तपके वीर्यसे उत्पन्न और नारायणके गुणोंसे संयुक्त ऐसे आप देवताओं केभी देवतेहो ऐसी मेरी मति है ९ तब हे अनघ वह धर्मात्मा आश्चर्य्यरूप की तरह मेरेको कहनेलगा कि आपने जिसतपका आचरण नहीं किया है जिससे

मेरेको जाने-१० परन्तु वह क्षणभरमें अति उत्तम रूपको धारनेलगा और रूप में ऐसा पुरुष कहींभी मैंने देखा नहीं ११ तब सनत्कुमारजी कहनेलगे हे विप्रो मेरेको प्रथम होनेवाला और मनसे उपजा ऐसा ब्रह्माका पुत्र जानो और तपके वीर्य्य से नारायणके सब गुण मेरेमें उपजे हैं १२ इसलिये मेरेको सनत्कुमार इस नामसे कहते है ऐसे पहले वेदोंमें विख्यातहै सो वह मैंहूं हे भार्गव तेरा कल्याणहो और मै आपके किस कार्य्यको करू १३ और जितने ब्रह्माजी के पुत्रहैं वे मेरे छोटेभ्राताहैं तिन्होंके वंश इस ससार में प्रतिष्ठित होरहे है १४ और क्रतु, वशिष्ठ, पुलह,पुलस्त्य, अत्रि, अङ्गिरा, मरीचि इनसात नामोंवाले और देव गन्धर्व आदिसे सेवित किये १५ और पूजित किये इन तीनलोकों को धारणकररहे हैं और यति धर्मको धारण करनेवाले हम आत्माको आत्मामें सयुक्तकर १६ और प्रजा के धर्म्म और काम को दूरकर जैसे उत्पन्न हुआ हू तैसाही मैं हू इमवास्ते कुमार मेरे तई जानो १७ और इसी कारणसे मेरेको सनत्कुमार नामसे बोलते हैं और मेरी भक्तिसे और दर्शनकी आकाक्षासे आपने तपकियाहै १८ सो मै देख लिया इसलिये तेरा मैं क्या काम करू ऐसे कहतेहुए सनत्कुमारजी से मैं कहने लगा १९ हे देव जो आपने ऐसी कृपाकरी तो २० पितरों का सर्ग और श्राद्धका फल इन्होंका आख्यान वर्णन करो २१ तब हे भीष्म वह देवेश्वर मेरे सशय को दूर करताभया २२ और ऐसे कहनेलगा बहुत वर्षोंकी कथाके अन्त में हे मार्कण्डेय २३ एक समय में ब्रह्माजी देवताओं को रचते भये इसलिये कि ये देवते मेरेको पूजेंगे तब वे देवते ब्रह्माजी को त्याग फल की प्राप्ति के अर्थ पूजा करने लगे २४ तब ब्रह्माजी ने उन्हों के अर्थ शाप दिया तुम योग्य बात को नहीं जानते भये इसवास्ते हे देवताओ तुम नष्ट संज्ञावाले होजाओ और पश्चात् ससारवासी मनुष्य भी ऐसेही मोहित रहेंगे २५ तब फिर देवते नम्ररूपहोके ब्रह्माजी से याचना करनेलगे संसार के हितके वास्ते तब ब्रह्माजी ने कहा २६ कि तुम्होंने व्यभिचार कर्म्म कियाहै इसलिये तुम प्रायश्चित्तकरो और पुत्रों से जाके प्रश्नकरो तब ज्ञान को प्राप्तहोजाओगे २७ तब वे देवते आर्त्त की तरह होकर प्रायश्चित्त के अर्थ पुत्रोंसे पूछतेभये तब तिन्हों के अर्थ शुद्ध आत्मावाले वे पुत्र वाणी मन कर्म्म इन्द्रों से उपजनेवाले प्रायश्चित्त कहनेभये २८ ऐसे प्रायश्चित्त को जब वे देवते जानकर सज्ञाको प्राप्तहुये तब वे पुत्र कहने

लगे २६ उन देवताओं को हे पुत्रो तुम गमनकरो ३० ऐसे जब पुत्र कहनेलगे तब वे आश्चर्य्यमानतेहुये ब्रह्माजी के समीप में जा पूछनेलगे ३१ कि हे ब्रह्मन् जो हमोंने पुत्र पैदाकियेथे वे हमको पुत्ररूप कहनेलगे यह अतिआश्चर्य है ३२ तब ब्रह्माजी ने कहा कि तुम शरीरको उपजानेवाले हो इसलिये तिन्हों के तुम देवते मानेजाओगे और वे ज्ञानको देनेवाले हैं इसलिये वे तुम्हारे पितर माने जावेंगे ३३ अर्थात् तुम दोनों आपसमें शरीरदाता पितर और ज्ञानदाता पितर हैं ३४ ऐसे जानो तब फिर वे आकर पुत्रों के प्रति कहनेलगे कि ब्रह्माजी ने हमारा सन्देह दूर कियाहै इसलिये आप और हम आपस में प्रीतिवाले हैं ३५ और जो आपने हमारा मोहदूर कियाहै इसलिये तुम धर्मज्ञहो और हमारे पितर हो सो कहो आपका क्या कामकरें अथवा आपको क्या वाञ्छितकरें और जो आपने हमारे का पुत्र भावकहकर वचन कहा वह ठीक है ३६ इसवास्ते आप हमारे पितर होवेंगे इसमें सशय नहीं है और जो कोई पितररूप तुम्हारेको श्राद्धमें नहीं पूजके कर्म करेंगे तिन्हों के फल को राक्षस दैत्य दिव्यसर्प ये प्राप्त होजावेंगे ३७ और श्राद्धके द्वारा दिव्य पितरों से प्रसन्नकिये लौकिक पितर अपने अधिदेवतारूप सोमको बढ़ावेंगे ३८ पीछे श्राद्धोंसे पुष्टहुआ सोम अर्थात् चन्द्रमा,समुद्र,पर्वत,वन ३९ इन्होंसे संयुक्त स्थावर जंगमरूप जगत्को पुष्टकरेगा ४० और पुष्टिकी कामना करनेवाले जो मनुष्य श्राद्धोंको करेंगे तिन्हों के अर्थ पुष्टिसन्तान ४१ आदिको पितरदेवेंगे और जो नामगोत्रका उच्चारणकर श्राद्ध में तीनपिण्डोंका दानकरेंगे तब ४२ लोकान्तरमें भी बसतेहुए पितर तृप्तहोजावेंगे ऐसे ब्रह्माजी ने यह आख्यान कहाहै ४३ सो सनत्कुमारजी कहनेलगे कि ऐसे देवते और पितर आपसमें देवते और पितरहुएहैं ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांपितृकल्पेसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे कि ऐसे देवतोंके देवते और दिव्य नेत्रवाले सनत्कुमारजी ने जब मेरे अर्थ कहा १ तब फिर मैं अपने सन्देहको दूरकरनेलगा २ हे अमर श्रेष्ठ सनत्कुमारजी पितरों के गण कितने हैं और वे पितर कितनों में गतिस्थितहैं ३ तब सनत्कुमारजी कहनेलगे हे मार्कण्डेय स्वर्गमें सात पितर

के गणहैं तिन्होंमें चार ४ मूर्त्तिवाले हैं और तीन मूर्त्तिसे रहित हैं ४ अर्थात् प्रमाणमें भी प्रवेशकरने की सामर्थ्य वाले है तिन्हों के लोक और सर्गको कहता हूं आप सुनो और हे तपोधन ५ तिन पितरोंका प्रभाव और बडप्पनको भी विस्तारसे कहताहू ६ अब प्रथम धर्म्मकी मूर्त्तिको धारण करनेवाले जो तीन पितृगण कहे हैं तिन्होंके नाम और लोकका कीर्त्तन करताहू सुनलीजिये ७ मूर्त्तिसेरहित और अति प्रकाशवाले और विराट् प्रजापति के पुत्र और लोकमें वैराज नाम से विख्यात ऐसे तीन पितृगणों का सनातन लोक में वासहै ८ अर्थात् ये नित्यप्रति प्रकट रहते हैं इन पितरों को विधि दृष्टकर्म्म से देवते पूजते है ९ और येही पितृगण योगसे भ्रष्ट हो फिर हजारों युगों के अन्त में ब्रह्मवादी होजाते हैं १० और येही फिर स्मृतिको प्राप्तहो योगगतिको प्राप्तहोजाते है ऐसे योगियों के भी योगको बढानेवाले ११ ये पितर हैं और येही पहिले योगबलसे चन्द्रमा को पुष्टकरते रहेहै १२ इसवास्ते इन योगीरूप पितरों के अर्थ विशेषकर श्राद्ध देनेचाहिये ऐसे अमृतको पीनेवाले पितरोंका प्रथमकल्प कहाहै १३ पीछे इन्हों के मनसे उपजनेवाली और मेना नामवाली कन्या हुई है पीछे वह हिमालय पर्व्वत की भार्य्या हुई है इसीवास्ते हिमालय को मेनाक भी कहते हैं १४ पीछे मेनाक के पर्व्वतों में श्रेष्ठ और अनेक प्रकारके रत्नों से अन्वित और क्रौंच नामवाला ऐसा वडा पर्व्वत पुत्रहुआहै १५ और मेनाभार्या में शैलराजके सकाशसे अपर्णा १ एक पर्णा २ एक पाटला ३ । १६ इन नामोंवाली तीन कन्या पैदाहुई हैं पीछे वे तीनोंकन्या देव और दैत्योंसे भी दुश्चर ऐसे तपको करतीहुई स्थावर जङ्गमरूप जगत्को तप्त करनेलगीं १७ और एकपर्णा कन्या एक पत्ता का भोजन रोज करनेलगी और एक पाटलाकन्या पाटला वृक्षके एक पुष्पका भोजन रोज करनेलगी १८ और अपर्णाकन्या निराहार रहनेलगी तब इस अपर्णाकी माता वर्ज्जती भई तब माताके स्नेह से दु खित और मातासे वर्जित की हुई १९ और तीन लोकोंमें भी अतिसुंदरि रूपवाली ऐसी यह अपर्णा उमा इस नामसे विख्यातहुई २० ऐसे तीन कन्याओं से जगत् ठहरेगा २१ पीछे तप को करनेवाली और योगबल को धारण करनेवाली और ब्रह्मको जाननेवाली और ऊर्द्ध्वीर्यवाली ऐसी ये तीनों कन्याहुई २२ परन्तु इन्हों में उत्तम और बडी और महा योगबलसे युक्त ऐसी उमाहुई सो यह महादेवजी को विवाही गई २३

पीछे एकपर्णा कन्या महात्मारूप असित देवको विवाहीगई २४ पीछे एक पाटलाकन्या जैगीषव्य को विवाही गई ऐसे ये भी दोनों कन्या योगाचार्य्यों को दीगईं २५ और सोमपद लोक में वसनेवाले मरीचि के पुत्र पितर हैं तिन्हों को देवते पुष्ट करते हैं २६ ये सब अग्निष्वात्ता इस नामसे विख्यात और अमिततेज वाले ऐसे हैं इन्हों के मनसे उपजनेवाली और अच्छोदा नामसे विख्यातहै २७ और निम्नस्थानमें प्राप्त ऐसी पुत्री हुई है जिसके सकाशसे उत्पन्नहुआ अच्छोद नाम सर विख्यात है और तिस कन्याने कभी भी वे पितर पहले नहीं देखे २८ परन्तु एकसमय में मूर्त्तिरहित पितरों को मन्दमुसुक्यान संयुक्त हो देखती भई अर्थात् जिन्हों के मनसे उपजी थी तिन्हों को देख और अपने पिताको नहीं जानती २९ और तिसी दुःखसे दुःखितहुई पतिको वरनेकी इच्छाकरनेलगी तब आकाशचारी और वसुनाम से विख्यात ३० ऐसे पिताको पतिकी जगह वरने को तैयारहुई तब इस अपराधसे योग भ्रष्ट होकर स्वर्गसे पतितहुई ३१ और पड़तीहुई तीन विमानों को देखती भई कि त्रसरेणु के समान विमानों में अपने पितरों को ३२ स्थित हुई देखके नीचे को है शिर जिसका ऐसे पड़ती हुई और पीडित हुई ऐसे कहनेलगी हे पितरो मेरी रक्षाकरो ३३ तब पितर कहनेलगे हे पुत्रि भयमतकर तब दीनवाणी से पितरोंको प्रसन्न करतीभई ३४ तब पितर कहनेलगे हे कन्ये तू अपने अपराधकरके योगसे भ्रष्टहुई है इसवास्ते पतितहोती है ३५ क्योंकि जिन शरीरोंसे कर्म्म करते हैं तिन्होंसेही देवतेभी कर्मके फलको प्राप्त होते हैं ३६ और देवताके शरीर को त्याग पीछे मनुष्य के शरीरमें प्राप्तहो कर्म्मको भोगते हैं इसवास्ते हे पुत्रि इस शरीरको त्याग पीछे इस तपके फल को प्राप्त होवेगी ३७ ऐसे पितरों के वचनको सुन पीछे अपने पितरोंको प्रसन्नकरती भई तब वे पितर दयाकरतेहुए कृपासे प्रसाद करतेभये ३८ तब अवश्य भावीको जान वे पितर ऐसे कहनेलगे हे पुत्रि इस वसुराजाकी तू कन्या फिर उत्पन्नहोवेगी ३९ पश्चात् कन्याहोके फिर अपने लोकोंको प्राप्तहोवेगी ४० और पराशरके पुत्र वेदव्यास जी तिसकी माताभी तूही होवेगी और वह वेदव्यास एक वेदका चार विभागकरेगा ४१ और शन्तनुराजाके कीर्तिके बढ़ानेवाले विचित्र वीर्य और चित्रांगद ४२ इन दो पुत्रोंको प्राप्तहो फिर उत्तम लोकों में वसेगी और हे पुत्रि पितरों के अपराध करनेसे मनुष्य निन्दित जन्मको पावेगी ४३ और इसी गनार्थ

आद्रिकानाम रानी में तू कन्या होवेगी परन्तु अष्टाविंश युगमें अट्ठाईसवें द्वापर में मच्छकी योनिसे उत्पन्न हो मच्छोदरी नामसे विख्यात होवेगी ४४ ऐसे मल्लाहकी पुत्री सत्यवतीनाम से विख्यात द्वापर के अन्त में उपजी है ४५ और सुन्दर दीखनेवाले वैभ्राजनाम लोक में बर्हिषदनाम से पितर स्वर्ग में वसते हैं ४६ तिन्हों को देवता, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, नाग, सर्प, गरुड ये सब पुष्ट करते हैं ४७ और पुलस्त्य प्रजापति के ये महात्मारूप पितर पुत्र कहे हैं ४८ पीछे इन्हों के मनमे उपजने वाली और पीवरी नाम से विख्यात और योगरूप और योगाचार्य की पत्नी और योगीश्वरकी माता ४६ और धर्मोंको धारण करनेवाली ऐसी कन्या द्वापरके अन्तमें उपजेगी और पराशर के कुलसे उपजनेवाले और शुकनामसे विख्यात ५० ऐसे महायोगी और ब्राह्मणोंमें उत्तम और व्यासजीके सकाशसे अरणी में प्रकाशित रूप उत्पन्न हुए जैसे धूमारहित अग्नी ५१ ऐसे शुकदेवजी महाराज इस पीवरी कन्या में जन्मेंगे और पीछे शुकदेवजी महाराज से ५२ कृष्ण, गौर, प्रभु, शम्भु इन नामोंवाले चारपुत्र और कृत्वीनामसे विख्यात और ब्रह्मदत्तकी माता और अणुहराजा की रानी ५३ ऐसी कन्या इन्होंकी उत्पत्ती होवेगी ऐसे इन धर्मात्मा पुत्रों को और धर्मवती कन्याको उत्पन्नकर पीछे अपने पिता वेदव्यासजी के मुखसे धर्मोंको सुन ५४ महायोगी शुकदेवजी उत्तम गतिको प्राप्त होवेंगे अर्थात् शाश्वत ब्रह्म में युक्त होजावेंगे ५५ और मूर्ति से रहित और धर्मकी मूर्त्तिको धारण करनेवाले और जहा वृष्ण्यधक कुलकथा उपजी है ऐसे पितरहैं ५६ और सुकाल नामसे विख्यात और वशिष्ठ प्रजापति के पुत्र ऐसे स्वर्गलोक में वसनेवाले पितर कहे हैं ५७ तिन्होंको उत्तम कर्मों में उत्तम ब्राह्मण पुष्ट करते हैं तिन्हों के मनसे उपजी कन्या और गौनामसे स्वर्ग में विख्यात ऐसी पुत्रीउपजेगी ५८ और तिसी वंशमें शुकदेवजीकी रानी और एक शृङ्गानाम से विख्यात और साध्यों की कीर्त्तिके बढानेवाली ऐसी होवेगी ५६ ये पितर मरीचि के गर्भोंको धारण करनेवाले लोकोंमें अर्थात् सूर्य्यकी किरणों के समान प्रकाशित हुए लोकोंमें वसते हैं और अंगिरा मुनिके पुत्र और पहिले साध्यों से बढायेहुए ऐसे जो पितर हैं ६० तिन्हों के फलको चाहनेवाले क्षत्रियगण पुष्ट करते हैं और इन्होंके मनसे उपजनेवाली और यशोदा नामसे विख्यात ६१ और विश्व महाराजा की रानी और वृद्धशर्मा राजाके पुत्रकी बधू

और दिलीप राजाकी माता ऐसी पुत्री होवेगी ६२ और जिस दिलीपकी अ- श्वमेध महायज्ञमें प्रसन्नहुए मुनिजनोंने देवलोक में यह गाथा गाई है ६३ कि महात्मारूप शांडिल्य के अग्र जन्मको सुनके सावधानहुए पुरुष ६४ सत्यवादी और महात्मा ऐसे यजमान रूप दिलीप राजाको देखेंगे वे सब स्वर्ग में बसने वाले जानो और कर्दम प्रजापति के ६५ पिता पुलहऋषि से उत्पन्नहुए और सुस्वधा नामसे विख्यात ऐसे महात्मा पितर हैं और ये लोकों में तथा स्वर्ग में विमानों में बैठेहुए विचरते रहते हैं ६६ इन्होंको फलके चाहनेवाले वैश्यगण पुष्ट करते हैं और तिन्हों के मनसे उपजनेवाली और विरजानाम से विख्यात ६७ और ययाति राजाकी माता और नहुषराजाकी रानी ऐसी पुत्री उपजी है ऐसे पितरों के तीनगण तो कहचुके और चौथेको कहते हैं ६८ शुक्राचार्य्यकी पुत्री और स्वधानामसे विख्यात तिसमें उत्पन्नहुए और सोमपा नामवाले और मा- नसनाम लोकमें बसनेवाले और अग्नी के पुत्र ऐसे पितरहैं तिन्होंको शूद्रगण पुष्ट करते हैं ६९ और तिन्होंके मनसे उपजनेवाली और सब नदियों में उत्तम नर्म्मदा नामसे विख्यात ७० और सब जीवों को पुष्ट करनेवाली और दक्षिण मार्ग में बहनेवाली और पुरुकुत्स राजा की पत्नी और त्रसदस्यु राजाकी मा- ता ७१ ऐसीपुत्री उपजेगी और इन पितरोंकी पूजाको अङ्गीकार करनेसे युग युगके प्रति धर्म्मोंकी नष्टता होतसते भी ७२ मनुराजा श्राद्धसे तृप्त करताहै इस वास्ते इस वैवस्वतमनुजीको श्राद्धदेव भी कहते हैं ७३ और सब पितरोंके श्राद्ध में चांदी के पात्र कहाहै अथवा चांदीसे युक्तअन्य धातुओं के पात्र कहेहैं और पितृ कर्म्म में प्रथमस्वधा शब्दका उच्चारणसे संयुक्त श्राद्ध पितरोंको प्रसन्न कर देता है ७४ और जो मनुष्य प्रथम सोमाय पितृमते स्वधा इस मन्त्र से पीछे अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा इस मन्त्र से ७५ पीछे नमोयमायाङ्गिरसे स्वधा इस मन्त्र से उत्तरायण सूर्य्य में अग्नी द्वारा अथवा जल के द्वारा आहुतिकर पितरों को प्रसन्न करते हैं ७६ वे पितर तिस पुरुषके अर्थ पुष्टि अनेकप्रकार की सन्तान स्वर्गवास आरोग्य इन्हों को देते हैं ७७ और मनोवाञ्छित फल को भी पितर देते हैं इस वास्ते हे मार्कण्डेय देवकर्म्म से पितृकर्म्म विशेष कहा है इसे देवताओं के पिता लौकिक पितरों को पोषते हैं और भक्तों को प्रसाद देते हैं इसवास्ते हे भार्गव तिन पितरों को नमस्कार कर और आप पितरोंके भक्तहैं

और विशेषकर मेराभी भक्त है ७८ इसलिये तेरा कल्याणहोगा सो हे प्रिय दिव्यज्ञान तेरे अर्थ देताहू ७९ इस गतिको हे मार्कण्डेय अप्रमत्तहोके देख परन्तु पितरोंकी गति अतिअगम्यहै ८० अर्थात् तेरे सरीखे सिद्धकोही प्रतीत होसक्ती है ऐसे मेरेको कह ८१ पीछे देवताओं को भी दुर्लभ ऐसा दिव्यज्ञानरूप देकर पीछे अग्निके समान प्रकाशित होताहुआ ८२ सनत्कुमार मनोवाञ्छितगति को गमन करताभया ८३ ऐसे हे भीष्म आपजानो तिस देवर्षिके सकाशसे देवताओंको भी दुर्लभ ऐसा आख्यान मुझको प्राप्त हुआहै ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपितृकल्पेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे पूर्व्वयुग में भरद्वाज के पुत्र ब्राह्मणहुये हैं पीछे वे योगविरोधी कर्मकरके योगको नहीं प्राप्त होतेभये भ्रष्टहोगये और अपभ्रंशको प्राप्तहुए और योगधर्म के अपचारी ऐसे वे मानसरोवरमें बसे १। २ पीछे उसी योगके अर्थको ध्यावतेहुये कालधर्म्मको प्राप्तहोय ३ शरीरको त्याग मोहितहुये बहुत दिनोंतक स्वर्गलोक में बसे पीछे कुरुक्षेत्र देशमे कौशिकऋषिके वंशमें उपजे ४ तब हिंसा करके व्यवहार करतेहुये कुत्सितजातिको प्राप्तहुये ५ परन्तु पितरोंके प्रसादसे पूर्वजन्मकी स्मृति तिन्होंको बनीरही ६ पीछे धर्म्मके करने से फिर कर्मोंके अनुसार ब्राह्मणके शरीरको प्राप्तहोंगे ७ तब पूर्व्वजाती में प्रार्थित योगको प्राप्तहो उत्तम सिद्धिको प्राप्त होवेंगे पीछे शाश्वत लोकमें बसेंगे ८ ऐसे सनत्कुमारजी मेरे प्रति कहके फिर कहनेलगे कि हे मार्कण्डेय योगधर्म्म में उत्तम सिद्धि को तू प्राप्त होवेगा ९ और अल्पबुद्धिवालों को योग दुर्लभहै और कुत्सित व्यसनोंवाले मनुष्य योगको प्राप्तहोकेभी नाशवान् होजाते हैं १० और अधर्मों में वर्तते हैं और गुरुओंको पीडित करते हैं और अयाच्य वस्तुको नहीं याचनेवाले और शरणागत की रक्षाकरनेवाले ११ और कृपणों पर दया करने वाले और धनकी अग्निसे गर्व को नहीं प्राप्तहोनेवाले और युक्त आहारयुक्त विहार करनेवाले और अपने कर्मोंमेंयुक्त चेष्टावाले १२ और ध्यान और अध्ययन में इसवक्त तत्पर रहनेवाले और नष्टहुये द्रव्यकी प्राप्तिवास्ते चोरोंको खोजनेवाले और नित्यप्रति भोगोंसे अलग रहनेवाले और गाम गदिरा १३ कामदेव इन्हीं

और दिलीप राजाकी माता ऐसी पुत्री होवेगी ६२ और जिस दिलीपकी अ-श्वमेध महायज्ञमें प्रसन्नहुए मुनिजनोंने देवलोक में यह गाथा गाई है ६३ कि महात्मारूप शाण्डिल्य के अग्र जन्मको सुनके सावधानहुए पुरुष ६४ सत्यवादी और महात्मा ऐसे यजमान रूप दिलीप राजाको देखेंगे वे सब स्वर्ग में बसने वाले जानो और कर्द्दम प्रजापति के ६५ पिता पुलहऋषि से उत्पन्नहुए और सुस्वधा नामसे विख्यात ऐसे महात्मा पितर हैं और ये लोकों में तथा स्वर्ग में विमानों में बैठेहुए विचरते रहते हैं ६६ इन्होंको फलके चाहनेवाले वैश्यगण पुष्ट करते हैं और तिन्हों के मनसे उपजनेवाली और विरजानाम से विख्यात ६७ और ययाति राजाकी माता और नहुषराजाकी रानी ऐसी पुत्री उपजी है ऐसे पितरों के तीनगण तो कहचुके और चौथेको कहते हैं ६८ शुक्राचार्य्यकी पुत्री और स्वधानामसे विख्यात तिसमें उत्पन्नहुए और सोमपा नामवाले और मानसनाम लोकमें बसनेवाले और अग्नी के पुत्र ऐसे पितरहैं तिन्होंको शूद्रगण पुष्ट करते हैं ६९ और तिन्होंके मनसे उपजनेवाली और सब नदियों में उत्तम नर्म्मदा नामसे विख्यात ७० और सब जीवों को पुष्ट करनेवाली और दक्षिण मार्ग्ग में बहनेवाली और पुरुकुत्स राजा की पत्नी और त्रसदस्यु राजाकी माता ७१ ऐसीपुत्री उपजेगी और इन पितरोंकी पूजाको अङ्गीकार करनेसे युग युगके प्रति धर्म्मोंकी नष्टता होतसते भी ७२ मनुराजा श्राद्धसे तृप्त करताहै इस वास्ते इस वैवस्वतमनुजीको श्राद्धदेव भी कहते हैं ७३ और सब पितरोंके श्राद्ध में चादी के पात्र कहाहै अथवा चादीसे युक्तअन्य धातुओं के पात्र कहेहैं और पितृ कर्म्म में प्रथमस्वधा शब्दका उच्चारणसे सयुक्त श्राद्ध पितरोंको प्रसन्न कर देता है ७४ और जो मनुष्य प्रथम सोमाय पितृमते स्वधा इस मन्त्र से पीछे अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा इस मन्त्र से ७५ पीछे नमोयमायागिरसे स्वधा इस मन्त्र से उत्तरायण सूर्य्य में अग्नी द्वारा अथवा जल के द्वारा आहुतीकर पितरों को प्रसन्न करते हैं ७६ वे पितर तिस पुरुषके अर्थ पुष्टि अनेकप्रकार की सन्तान स्वर्गवास आरोग्य इन्हों को देते हैं ७७ और मनोवाञ्छित फल को भी पितर देते हैं इस वास्ते हे मार्कण्डेय देवकर्म्म से पितृकर्म्म विशेष कहा है ऐसे देवताओं के पितर लौकिक पितरों को पोषते हैं और भक्तों को प्रसाद देते हैं इसवास्ते हे भार्गव तिन पितरों को नमस्कार कर और आप पितरोंके भक्तहैं

और विशेषकर मेराभी भक्त है ७८ इसलिये तेरा कल्याणहोगा सो हे प्रिय दिव्यज्ञान तेरे अर्थ देताहू ७९ इस गतिको हे मार्कण्डेय अप्रमत्तहोके देख परन्तु पितरोंकी गति अतिअगम्यहै ८० अर्थात् तेरे सरीखे सिद्धकोही प्रतीत होसक्ती है ऐसे मेरेको कह ८१ पीछे देवताओं को भी दुर्लभ ऐसा दिव्यज्ञानरूप देकर पीछे अग्निके समान प्रकाशित होताहुआ ८२ सनत्कुमार मनोवाञ्छितगति को गमन करताभया ८३ ऐसे हे भीष्म आपजानो तिस देवर्षिके सकाशसे देवताओंको भी दुर्लभ ऐसा आख्यान मुझको प्राप्त हुआहै ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांपितृकल्पेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे पूर्व्वयुग में भरद्वाज के पुत्र ब्राह्मणहुये हैं पीछे वे योगविरोधी कर्मकरके योगको नहीं प्राप्त होतेभये भ्रष्टहोगये और अपभ्रशको प्राप्तहुए और योगधर्म के अपचारी ऐसे वे मानसरोवरमें बसे १।२ पीछे उसी योगके अर्थको ध्यावतेहुये कालधर्म्मको प्राप्तहोय ३ शरीरको त्याग मोहितहुये बहुत दिनोंतक स्वर्गलोक में बसे पीछे कुरुक्षेत्र देशमें कौशिकऋषिके वंशमें उपजे ४ तब हिंसा करके व्यवहार करतेहुये कुत्सितजातिको प्राप्तहुये ५ परन्तु पितरोंके प्रसादसे पूर्वजन्मकी स्मृति तिन्होंको बनीरही ६ पीछे धर्म्मके करने से फिर कर्मोंके अनुसार ब्राह्मणके शरीरको प्राप्तहोंगे ७ तब पूर्व्वजाती में भावित योगको प्राप्तहो उत्तम सिद्धिको प्राप्त होवेंगे पीछे शाश्वत लोकमें बसेंगे ८ ऐसे सनत्कुमारजी मेरे प्रति कहके फिर कहनेलगे कि हे मार्कण्डेय योगधर्म में उत्तम सिद्धि को तू प्राप्त होवेगा ९ और अल्पबुद्धिवालो को योग दुर्लभहै और कुत्सित व्यसनोंवाले मनुष्य योगको प्राप्तहोकेभी नाशवान् होजाते हैं १० और अधर्मों में वर्तते हैं और गुरुओंको पीड़ित करते हैं और अयाच्य वस्तुको नहीं याचनेवाले और शरणागत की रक्षाकरनेवाले ११ और कृपणों पर दया करने वाले और धनकी अग्निसे गर्व को नहीं प्राप्तहोनेवाले और युक्त आहारयुक्त विहार वर्तनेवाले और अपने कर्मोंमेंयुक्त चेष्टावाले १२ और ध्यान और अध्ययन में हरवक्त तत्पर रहनेवाले और नष्टहुये द्रव्यकी प्राप्तिवास्ते चोरोंको खोजनेवाले और नित्यप्रति भोगोंसे अलग रहनेवाले और मास मदिरा १३ कामदेव इन्हों

और दिलीप राजाकी माता ऐसी पुत्री होवेगी ६२ और जिस दिलीपकी अ-श्वमेध महायज्ञमें प्रसन्नहुए मुनिजनोंने देवलोक में यह गाथा गाई है ६३ कि महात्मारूप शाण्डिल्य के अग्र जन्मको सुनके सावधानहुए पुरुष ६४ सत्यवादी और महात्मा ऐसे यजमान रूप दिलीप राजाको देखेंगे वे सब स्वर्ग में वसने वाले जानो और कर्द्दम प्रजापति के ६५ पिता पुलहऋषि से उत्पन्नहुए और सुस्वधा नामसे विख्यात ऐसे महात्मा पितर हैं और ये लोकों में तथा स्वर्ग में विमानो में बैठेहुए विचरते रहते है ६६ इन्होंको फलके चाहनेवाले वैश्यगण पुष्ट करते हे और तिन्हों के मनसे उपजनेवाली और विरजानाम से विख्यात ६७ और ययाति राजाकी माता और नहुषराजाकी रानी ऐसी पुत्री उपजी है ऐसे पितरों के तीनगण तो कहचुके और चौथेको कहते हैं ६८ शुक्राचार्य्यकी पुत्री और स्वधानामसे विख्यात तिसमें उत्पन्नहुए और सोमपा नामवाले और मा-नसनाम लोकमें वसनेवाले और अग्नी के पुत्र ऐसे पितरहैं तिन्होंको शूद्रगण पुष्ट करते हैं ६९ और तिन्होंके मनसे उपजनेवाली और सब नदियों में उत्तम नर्म्मदा नामसे विख्यात ७० और सब जीवों को पुष्ट करनेवाली और दक्षिण मार्ग्ग में वहनेवाली और पुरुकुत्स राजा की पत्नी और त्रसदस्यु राजाकी मा-ता ७१ ऐसीपुत्री उपजेगी और इन पितरोंकी पूजाको अङ्गीकार करनेसे युग युगके प्रति धर्म्मोंकी नष्टता होतसते भी ७२ मनुराजा श्राद्धसे तृप्त करताहै इस वास्ते इस वैवस्वतमनुजीको श्राद्धदेव भी कहते हे ७३ और सब पितरोंके श्राद्ध में चादी के पात्र कहाहै अथवा चादीसे युक्तअन्य धातुओं के पात्र कहेहैं और पितृ कर्म्म में प्रथमस्वधा शब्दका उच्चारणसे सयुक्त श्राद्ध पितरोंको प्रसन्न कर देता है ७४ और जो मनुष्य प्रथम सोमाय पितृमते स्वधा इस मन्त्र से पीछे अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा इस मन्त्र से ७५ पीछे नमोयमायांगिरसे स्वधा इस मन्त्र से उत्तरायण सूर्य्य में अग्नी द्वारा अथवा जल के द्वारा आहुतीकर पितरों को प्रसन्न करते हे ७६ वे पितर तिस पुरुषके अर्थ पुष्टि अनेकप्रकार की सन्तान स्वर्गवास आरोग्य इन्हों को देते हैं ७७ और मनोवाञ्छित फल को भी पितर देते हैं इस वास्ते हे मार्कण्डेय देवकर्म्म से पितृकर्म्म विशेष कहा है ऐसे देवताओं के पितर लौकिक पितरों को पोषते हैं और भक्तों को प्रसाद देते हैं इसवास्ते हे भार्गव तिन पितरों को नमस्कार कर और आप पितरोंके भक्तहैं

और विशेषकर मेराभी भक्त है ७८ इसलिये तेरा कल्याणहोगा सो हे प्रिय दि-
व्यज्ञान तेरे अर्थ देताहू ७९ इस गतिको हे मार्कण्डेय अप्रमत्तहोके देख परन्तु
पितरोंकी गति अतिअगम्यहै ८० अर्थात् तेरे सरीखे सिद्धकोही प्रतीत होसक्ती
है ऐसे मेरेको कह ८१ पीछे देवताओं को भी दुर्लभ ऐसा दिव्यज्ञानरूप देकर
पीछे अग्निके समान प्रकाशित होताहुआ ८२ सनत्कुमार मनोवाञ्छितगति
को गमन करताभया ८३ ऐसे हे भीष्म आपजानो तिस देवर्षिके सकाशसे दे-
वताओंको भी दुर्लभ ऐसा आख्यान मुझको प्राप्त हुआहै ८४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायापितृकल्पेऽष्टादशोऽध्याय १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे पूर्व्वयुग में भरद्वाज के पुत्र ब्राह्मणहुये हैं पीछे वे योगविरोधी कर्मकरके योगको नहीं प्राप्त होतेभये भ्रष्टहोगये और अपभ्रंशको प्राप्तहुए और योगधर्म के अपचारी ऐसे वे मानसरोवरमें वसे १।२ पीछे उसी योगके अर्थको ध्यावतेहुये कालधर्म्मको प्राप्तहोय ३ शरीरको त्याग मोहितहुये बहुत दिनोंतक स्वर्गलोक में वसे पीछे कुरुक्षेत्र देशमें कौशिकऋषिके वंशमें उपजे ४ तब हिंसा करके व्यवहार करतेहुये कुत्सितजातिको प्राप्तहुये ५ परन्तु पितरोंके प्रसादसे पूर्वजन्मकी स्मृति तिन्होंको बनीरही ६ पीछे धर्म्मके करने से फिर कर्मोंके अनुसार ब्राह्मणके शरीरको प्राप्तहोंगे ७ तब पूर्व्वजाती में प्रार्थित योगको प्राप्तहो उत्तम सिद्धिको प्राप्त होवेंगे पीछे शाश्वत लोकमें वसेंगे ८ ऐसे सनत्कुमारजी मेरे प्रति कहके फिर कहनेलगे कि हे मार्कण्डेय योगधर्म्म में उत्तम सिद्धि को तू प्राप्त होवेगा ९ और अल्पबुद्धिवालों को योग दुर्लभहै और कुत्सित व्यसनोंवाले मनुष्य योगको प्राप्तहोकेभी नाशवान् होजाते हैं १० और अधर्मों में वर्तते हैं और गुरुओंको पीडित करते हैं और अयाच्य वस्तुको नहीं याचनेवाले और शरणागत की रक्षाकरनेवाले ११ और कृपणों पर दया करने वाले और धनकी अग्निसे गर्व को नहीं प्राप्तहोनेवाले और युक्त आहारयुक्त विहार वर्तनेवाले और अपने कर्मोंमेंयुक्त चेष्टावाले १२ और ध्यान और अध्ययन में हरवक्त तत्पर रहनेवाले और नष्टहुये द्रव्यकी प्राप्तिवास्ते चोरोंको खोजनेवाले और नित्यप्रति भोगोंसे अलग रहनेवाले और मान मदिरा १३ काम्वेव इन्हों

से अलग रहनेवाले और ब्राह्मणकी वृत्तिको नहीं दूर करनेवाले और दुष्ट मनुष्योंके अर्थात् ग्रामीण पुरुषों में बैठके चर्चाको नहीं करनेवाले कथन को नहीं सुननेवाले और आलस्यको वर्जनेवाले १४ और अपने मनके अनुसार विशेष कर नहीं वर्तनेवाले और ब्रह्मवादियोंकी सभामें निरन्तर बैठनेवाले ऐसे मनुष्य योगको प्राप्त होते हैं परन्तु पृथ्वीभरमें योग बहुत दुर्लभहै १५ और शांतस्वरूप और क्रोधको जीतनेवाले मान और अहंकारसे रहित और कल्याणके साक्षात् पात्र और उत्तम व्रतोंको धारण करनेवाले १६ और अपने दोष और प्रमादका स्मरण करनेवाले ध्यान और अध्ययनमें हरवक्त रहनेवाले और शान्तरूप मार्गमें स्थित रहनेवाले जैसे पहले मुनिजन हुये हैं तिन्होंकी तरह व्यवहारोंको वर्तनेवाले ऐसे मनुष्य परम शान्तिको प्राप्त होते हैं इसमें संशय नहीं १७ इस वास्ते हे धर्मज्ञ मार्कण्डेय तूभी योगरूपी धर्मको धारणकर योगको धारणकरने वाला मनुष्य उत्तम सिद्धिको प्राप्त होताहै १८ और योग धर्मसे उपरान्त अन्य धर्म नहीं है और सब धर्म्मोंमें उत्तमरूप योगका आचरणकर १९ और कालके अनुसार थोडा भोजनकरो और इन्द्रियोंको जीतो और निरन्तर श्राद्धोंको करो तब योगधर्म्म को प्राप्तहोगे २० ऐसे भगवान् सनत्कुमार मेरे अर्थ कहके अं रहित होतेभये इस विषय में अठारहवर्ष बीते परन्तु मेरे को एक दिनके समा प्रतीतहुये २१ और तिसही मुनिकी कृपासे ग्लानि,क्षुधा,तृषा येभी नहीं उपज २२ और अठारहवर्ष मुनिके संग जो सम्वाद हुआ यह भी काल मैंने शिष्य सकाश से जाना २३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपितृकल्पेऊनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे जब सनत्कुमारजी अन्तर्द्धान होगये तब तिन्हं की कृपासे मेरे ज्ञानसहित दिव्यनेत्र प्रकटहुआ १ पीछे हे भीष्म जिन कौशि के पुत्रों का संवाद पहले सनत्कुमारजी मेरे अर्थ कहतेभये तिन ब्राह्मणों क कुरुक्षेत्र में मैं देखताभया २ तिन्होंमें सातवॉविप्र ब्रह्मदत्त नामसे विख्यात औ शिल कर्मसे युक्त ऐसा राजाहुआ ३ और तिसको शुकदेवजी की कृत्वी ना वाली कन्या अणुह नामवाले राजाके सकाश से काम्पिल्यनगरमें जन्मती भई

तब भीष्म कहनेलगा हे युधिष्ठिर जैसे मार्कण्डेय मुनि ने मेरे अर्थ कहा है तैसे इसवंशको मैं कहताहूं आप श्रवणकरो ५ तब युधिष्ठिरने प्रश्नकिया अणुह राजा किसका पुत्रहुआ और किसकालमें उपजा और पीछे धर्म्म में श्रेष्ठ और महा यशको धारण करनेवाला ६ और ब्रह्मदत्त नामसे विख्यात ऐसा अणुहका पुत्र कितने पराक्रमवाला राजा होताभया ७ और तिन पूर्व्वोक्त कौशिक ब्राह्मणों में यह ब्रह्मदत्त कैसे सातवाँ हुआ और अल्पवीर्य्य वालेको लोकपूजित शुक्रदेवजी कृत्वी नामवाली अपनी कन्या को नहीं देसकते ८ इसवास्ते विस्तार पूर्वक ब्रह्मदत्त राजाके चरित्रको सुननेकी इच्छाहै सो आप कहनेको योग्यहो जैसे मार्कण्डेयजी ने आपके अर्थ कहा है तैसे ९ तब भीष्मजी कहनेलगे हे राजन् जब मेरा पितामह प्रतीप नामवाला राजर्षि ने जिसकाल में राज्यकिया है तब मैंने सुनाहै १० महाभाग और योगी और राजर्षियों में उत्तम और सब प्राणियों के शब्दको जाननेवाला और सपूर्ण प्राणियोंके हितमेंरत ऐसा ब्रह्मदत्त राजाहुआ है ११ और महायशवाला और योगाचार्य्य ऐसा गालव राजा का मित्रहुआ है जिसने तपसे शिक्षाकी उत्पत्तिकर क्रमबढाया १२ और योग विद्या में कुशल और कण्डरीक नाम से विख्यात ऐसा ब्रह्मदत्त राजाका मन्त्री हुआहै १३ और सातजन्मों में ये सातों आपस में सहाय करनेवाले रहे हैं जैसे मार्कण्डेयजीने कहाहै तैसे १४ अब पौरववंश में होनेवाले ब्रह्मदत्त राजाका पुरातनवंश वर्णन करताहूं तू श्रवणकर १५ प्रथम बृहत्क्षत्रके परमधार्मिक सुहोत्र नामवाला पुत्रहुआ पीछे सुहोत्रके हस्ती पुत्रहुआ १६ जिसने यह प्रथम हस्तिनापुर रचाहै पीछे हस्तीके परमधार्मिक १७ और अजमीढ, द्विमीढ, पुर्मीढ इन नामोंवाले तीनपुत्र हुये पीछे हे राजन् अजमीढ के सकाश से धूमिनीरानी में बृहदिषु पुत्रहुआ १८ पीछे बृहदिषुके बृहद्धनु पुत्रहुआ पीछे बृहद्धनुके बृहद्धर्मा पुत्रहुआ १९ पीछे बृहद्धर्माके सत्यजित् पुत्रहुआ पीछे सत्यजित्के विश्वजित् पुत्रहुआ पीछे विश्वजित्के सेनजित् राजापुत्रहुआ २० पीछे सेनजित्के लोक में मानेहुये और रुचिर, श्वेतकेतु, महिम्नार २१ और आवन्तक इन नामोंवाले चार पुत्रहुये पीछे रुचिरके महायशवाला पृथुषेण पुत्रहुआ २२ पीछे पृथुषेणके पार पुत्रहुआ पीछे पारके नीप पुत्रहुआ पीछे नीपके अमित पराक्रमवाले और महारथ और शूरवीर ऐसे १०० पुत्रहुये २३ इसीवास्ते नीपनाममें सब राजे नि-

ख्यात हुये हैं २४ पीछे नीपोंकी कीर्त्तिको वढानेवाला और वशका करनेवाला ऐसा काम्पिल्य नगरमें समरपुत्रहुआ २५ पीछे समरके पर, पार,सदश्व इननामों वाले और परम धर्म्मज्ञ ऐसे तीन पुत्रहुये पीछे पारके पृथु पुत्रहुआ २६ पीछे पृथु के सुकृत पुत्रहुआ पीछे सुकृत के सव गुणोंवाला विभ्राज पुत्रहुआ २७ पीछे विभ्राज के अणुद पुत्रहुआ और यही शुकदेवजी का जमाई और कृत्वीरानी का पतिहुआ २८ पीछे अणुह के राजर्पिरूप ब्रह्मदत्त पुत्र हुआ पीछे ब्रह्मदत्त के विष्वक्सेन पुत्र हुआ और सर्व्वसेन नामवाला दूसरा भी पुत्र ब्रह्मदत्त के हुआ ऐसा भी सुनाहै २९ और एक पूजनी नामवाली पक्षीकी स्त्री ने ब्रह्मदत्त राजाके घर में वहुतदिन वासकर इस सर्व्वसेन के दोनों नेत्र निकास दिये हैं ३० और ब्रह्मदत्त के विष्वक्सेन नामवाले पुत्र के दण्डसेन नामवाला राजा पुत्र हुआ पीछे दण्डसेन के भल्लाट पुत्र हुआ यह राधा के पुत्र कर्ण ने पहले मारदियाहै ३१ और हे युधिष्ठिर भल्लाटके दुर्बुद्धिनाम पुत्रहुआ ३२ यह सव नीप नामवाले क्षत्रियों का राजाहुआ जिसके अर्थ उग्रायुध राजाने सव नीप नाम वाले राजे मारदिये ३३ पीछे अतिगर्वी और गर्व में रुचि रखनेवाला और निरन्तर अन्याय में रत और मदसे सयुक्त ऐसा उग्रायुधराजा मैंने युद्धमें मारा ३४ तव युधिष्ठिर कहनेलगा उग्रायुध किसका पुत्रहुआ और किसवशमें जन्मा और किसवास्ते आपने मारा यह वात मेरेसे वर्णन करो ३५ तव भीष्मजी कहनेलगे अजमीढ के पवीनर नाम राजा पुत्रहुआ पीछे पवीनर के धृतिमान पुत्रहुआ पीछे धृतिमानके सत्यधृती पुत्रहुआ ३६ पीछे सत्यधृतीके वडे प्रतापवाला दृढनेमि पुत्रहुआ पीछे दृढनेमि के सुधर्मा राजा पुत्रहुआ ३७ पीछे सुधर्मा के सार्वभौमनाम से विख्यात और पृथ्वीमण्डलमें एकराजा और अतिप्रतापवाला ऐसा पुत्रहुआ ३८ पीछे सार्वभौमके महान् पुत्रहुआ पीछे महान्के रुक्मरथ नामवाला पुत्रहुआ ३९ पीछे रुक्मरथ के सुपार्श्व नामवाला राजा पुत्रहुआ पीछे सुपार्श्व के परमधार्मिक सुमती पुत्रहुआ ४० पीछे सुमतीके धर्मात्मा और वीर्य्यवाला सन्नति पुत्रहुआ पीछे सन्नतीके महावलवाला और कौशिल्य देश के हिरण्य नामका शिष्य ऐसा कृतनाम पुत्रहुआ ४१ पीछे कृतके उग्रायुध पुत्र हुआ जिसने अपने पराक्रमसे पाञ्चालदेशका पति ४२ और पृषत्का पितामह और महातेजस्वी ऐसा नीपनामवाला राजा मारा ४३ पीछे उग्रायुध के महा

यशवाला क्षेम्य पुत्रहुआ पीछे क्षेम्यके सुवीर पुत्रहुआ पीछे सुवीर के नृपञ्जय पुत्रहुआ ४४ पीछे नृपञ्जय के बहुरथ पुत्रहुआ ऐसे पौरव वंशमें यह उपजे हैं परन्तु हे युधिष्ठिर उग्रायुधराजाकी बुद्धि बिगडगई ४५ क्योंकि अतिबलको प्राप्त हो नीपराजाको मार और नीपके समीपवर्ती अन्य राजाओं को भी युद्धमें मार गर्वसे पूर्ण होताभया ४६ और जब मेरापिता शांतहोगया तब अपने मंत्रियों करके सहित पृथ्वीमण्डल में शयनकरतेहुये मेरेको ४७ उग्रायुधका दूत आके ऐसा वचन कहनेलगा कि हेभीष्म अतियशवाली और स्त्रियों में रत्नरूप ऐसी योजनगंधाको ४८ मेरी भार्य्या के अर्थ हे कुरुनन्दन प्राप्तकर ऐसेकरने से तेरा राज्य और धन बनारहेगा इसमें संशय नहीं है ४९ और मैं तेरी कामनाओं को पूरीकरूंगा और मेरे समान रत्नोंवाला अन्य पुरुष नहीं है अब मेरे प्रज्वलित चक्रको जान ५० और मेरेको देख युद्धमें शत्रु भागजातेहैं और जो तू अपने देश और कुल और प्राणों का कल्याण चाहताहै ५१ तो मेरी आज्ञाको मान अन्यथा इस विषयमें शांति नहीं है ५२ ऐसे उग्रायुधके दूतके वचनको सुन डाभकी शय्यापै शयनकरनेवाला मैं अग्निकी शिखा के समान उस दूतके वचन को यादकर और उस दुष्टबुद्धिवाले उग्रायुधके अभिप्रायको जान ५३ सब सेना के पतियोंको आज्ञादेकर और मेरे आश्रयभूत विचित्रवीर्य बालक ५४ को देख क्रोधसे संयुक्तहो मैं युद्धके वास्ते मनको धारणकरनेलगा तब तात्पर्यको जाननेवाले मंत्री ५५ ऋत्विक्‌मित्र शास्त्रके जाननेवाले विद्वान् इनसबोंको मैंने रोंक दिया ५६ और मंत्री मेरेसे कहनेलगे कि हे भीष्म उस पापी उग्रायुधका चक्र बढ़ाहुआ है और आप पिताके पातकसे संयुक्तहै इसवास्ते अभी युद्धकरना उचित नहीं है ५७ हम सब सामपूर्व्वक दाम भेदको नियुक्त करतेहैं कि पिताके अशौचसे शुद्धहोके पीछे देवताओंको नमस्कारकर ५८ और ब्राह्मणोंके सकाशसे स्वस्तिवाचन करा और ब्राह्मणों की पूजाकर और ब्राह्मणों की आज्ञा ले गमनकरनेमें जयपावेगा ५९ और जबतक अशौचरहै तबतक बुद्धिमान् शस्त्रों को ग्रहण न करै और न युद्धका आरंभकरै ऐसी वृद्धोंकी शिक्षाहै ६० इसवास्ते तिस दुष्टको समय पाके आप मारोगे जैसे शम्बरासुर को इन्द्रने मारा है तैसे ६१ तब विद्वान् और वृद्धों के वचनको सुनके युद्धसे मैं मनको हटाताभया ६२ हे युधिष्ठिर मैं पिताके अर्थ कर्म्म का आरम्भ करताभया ६३ और अनेकप्रकार

जाताहै १३६ यह कथा शुक्राचार्य्यजी ने कही है हे राजन् अपनी रक्षाकरनेवाले बुद्धिमान् मनुष्यको कथा धारण करनी चाहिये १३७ और मैंने तेरे अर्थ दारुण अपराध किया है अर्थात् तेरे पुत्रको अंधाकिया तेरे में विश्वास नहीं करसक्ती १३८ ऐसे वह चिड़िया कहकर आकाशमार्ग में गमन करतीभई सो हे युधिष्ठिर ब्रह्मदत्त राजा का चिड़ियाके सग वृत्तान्त मैंने तेरे अर्थ वर्णन किया १३९ फिर भीष्मजी कहनेलगे हे युधिष्ठिर जो आप मेरे से श्राद्धसम्बन्धी प्रश्न पूछते हैं इस वास्ते सनत्कुमारजी ने मार्कण्डेयजी के अर्थ कहा ऐसा पुरातन इतिहास कहूं हूं १४० और श्राद्धके फलका उद्देशकर सात जन्मों में सुकृतका फल प्राप्तहुआ है वहभी श्रवणकर १४१ और गालव, कण्डरीक, ब्रह्मदत्त राजा इन्हों का भी चरित्र श्रवणकर १४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांचटकाख्याननामविंशोऽध्याय २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे हे भीष्म श्राद्धसे उत्तमलोक और उत्तमज्ञान प्राप्त होताहै इसवास्ते श्राद्धका फल दिखायाजाताहै १ जैसे सात जन्मोंमें ब्रह्मदत्तने योग और धर्म्म प्राप्त कियाहै और जैसे गायकी हिंसाकर श्राद्धकरने से ब्राह्मणों को फल प्राप्तहुआहै वह भी श्रवणकर २ पश्चात् सनत्कुमारजी के कहेहुए उन सात ब्राह्मणोंको दिव्य चक्षुसे देखतभया ३ और तिन्हों के वाग्दुष्ट १ क्रोधन २ हिंस ३ पिशुन ४ कवि ५।४ पष्ठ ६ पितृवर्त्ती ७ ऐसे नाम होतेभये और ये सब विश्वामित्रके पुत्रहुये ५ जब विश्वामित्रने शापदेदिया तब गार्ग्यऋषिके शिष्य होके गुरुके घरमें वासकरनेलगे ६ पीछे गुरुकी आज्ञासे समान बच्छावाली और कपिला और चापसे आईहुई और दूधको देनेवाली ऐसी गायको वनमें लेजाने लगे ७ तब मार्गमें बालरूपनेसे या मोहसे ८ हे भीष्म गायकोमार उसके मांस को खानेवास्ते दुर्बुद्धि उपजतीभई और तिनसातोंमें कवि और पष्ठ नामवाले इनदोनोंको वे पांचोंवर्जें भी ९ परन्तु नहीं मानतेभये पश्चात् तिन्होंमें पितृवर्त्ती सातवा विश्वामित्रका पुत्र सब प्रति कहनेलगा १० अगर तुमको यह गाय मारनीही उचितहै तो पितरोंका उद्देश्यकर मारनी चाहिये इससे यह गायभी धर्म्म को प्राप्तहोगी ११ और पितृकर्म्म में इसगायके मासको वर्तने में हमारेको पापभी

नहीं लगेगा ऐसे सब अङ्गीकारकर उसगायको जलआदिसे स्नान करायके१२ पितरों के अर्थ कल्पनाकर उसगाय के मासको भक्षण करतेभये १३ पीछे वनसे बछडाको ग्रहणकर गुरुके समीप में जाय ऐसे कहनेलगे हे गुरु सिंहने गाय तो मारदई परन्तु यह बछड़ा बचाहै इसको आप ग्रहणकीजिये तब कोमलतासे वह गुरु उस बच्छाको ग्रहण करताभया १४ ऐसे वे सातों गुरुको अन्याय से ठगके समय में अर्थात् आयुके क्षयहोने पै मरते भये १५ पीछे वे सातों क्रूरतासे और गायके मारनेसे और गुरुके अगाड़ी मिथ्या बोलने से उग्र और हिंसाकरनेवाले और बलवाले ऐसे पारधी के पुत्रहुए १६ परन्तु पितरों की पूजाके अर्थ गायको बर्ततेभये १७ इसवास्ते पूर्व्व जन्मकाभी ज्ञान बनारहा और सुकृत कर्मानुसधान भी बनारहा १८ पीछे वे सातों पारधी दशार्ण देश में विचरतेहुये धर्म्मकी वाञ्छा करनेवाले और अपने कर्म्ममें सावधान और लोभ और झूठसे रहित ऐसे होके प्राणों की रक्षाके वास्ते अपना कर्म्म करतेहुये १९ बाकी सब कालमें ध्यानको करनेवाले ऐसे होतेभये २० और निर्वैर १ निर्वृत्ती २ क्षान्त ३ निर्मन्यु ४ कृती ५ वैघस् ६ मातृवर्त्ती ७ ये उन्होंके क्रमसे नामहुए २१ और वे हिंसा धर्म्मको भी करतेहुये माता और पिता को अति प्रसन्न करतेभये २२ जब दैवयोग से माता और पिताकी मृत्यु होगई तब वे अपने अपने धनुषोंको त्याग वनमें अपने प्राणोंको छोड़तेभये २३ इस शुभकर्म्म के करने से और पूर्व्वोक्त कर्म्म के फलको भोगनेके वास्ते वे सातों कालंजर पर्वतमें २४ उन्मुस १ नित्यवित्रस्त २ स्तब्धकर्ण ३ विलोचन ४ पण्डित ५ अघस्मर ६ नादी ७ इन सात नामोंवाले मृग होके उपजे २५ परन्तु पूर्व्वजन्मका ज्ञान पूर्ण बनारहा पीछे वनमें विचरनेवाले और इन्द्रियोंको शान्त करनेवाले और द्वन्द्वसे रहित २६ और शुभकर्म्म करनेवाले और हिंसारहित उत्तम धर्म करनेवाले ऐसे होके योग धर्म्मको प्राप्तहुये२७ पश्चात् निर्ज्जल देशमें हलके भोजन करतेहुये और तपको धारण करतेहुये प्राणोंको त्यागतेभये २८ हे राजन् तिन्होंके पैरोंके चिह्न कालञ्जर पर्व्वतमें अब तक भी दीखते हैं २९ इस शुभकर्म के करने से वे सातों शरद्वीप में नदीके समीप चकुओं के शरीर को प्राप्तहुये ३० परन्तु इस शरीर में भी मैथुन धर्म्म को त्याग और मुनियोंके समान धर्मोंको धारण करनेवाले ३१ और निस्पृह १ निर्मम २ शान्त ३ निर्द्वन्द्व ४ नि परिग्रह ५ निर्वृत्ती ६ निर्भृत ७ इन नामोंवाले

और ब्रह्मचर्य्यको धारण करनेवाले और तपको तपनेवाले ऐसेहोके नदीके तट पै प्राणोंको त्यागतेभये ३२ पीछे ये सातों मानसरोवरमें हंस होतेभये परन्तु पूर्व जन्मकाज्ञान तहा भी बनारहा और ब्राह्मणके शरीरमें प्राप्तहोके गुरुके अगाड़ी मिथ्या वचन कहे ३३ इसवास्ते तिरछी योनि में जन्मलेके संसार में भ्रमे और पितरोंकी पूजाके अर्थ अपने स्वार्थ में तत्पर गायको वर्ततेभये इसवास्ते उत्तम जन्म और उत्तमज्ञान प्रकटहोतामया ३४ और तिन्हेंमें पाचवा जिसका आदि में कवीनामथा वह पाञ्चिकनाम राजा का मन्त्री होगा और तिन्हों में छठा षष्ठ नामवाला कण्डरीक नामसे विख्यात राजाका मन्त्री हुआ ३५ और तिन्हों में पितृवर्त्ती नामसे विख्यात सातवा ब्रह्मदत्त राजाहुआ और पूर्वजन्म में गुरुकुल में प्राप्तहो जो वेद श्रवण कियाथा उसके प्रतापसे जन्म जन्म गैलबुद्धी समरती गई ३६ ऐसे वे सातोंहंस ब्रह्मचार्दियों के समान धर्मको जाननेवाले योगधर्म को प्राप्तहो जहा तहा विचरनेलगे ३७ और उन हंसों के सुमना १ शुद्धवाक् २ शुद्ध ३ पञ्चम ४ छिद्रदर्शन ५ सुनेत्र ६ स्वतन्त्र ७ ये नामहुए ३८ पीछे उन हंसोंको समुद्रमें विचरतेहुए बहुतदिन होगये तब एक समय में नीपवंशका विभ्राज नामवाला राजा ३९ सुन्दर वस्त्र और गहना आदि से अपने शरीर को भूषित कर और मन्त्रियों सहित राजा उस वन में चलागया ४० जहा वे हंस रहाकरते थे तब सातवा सुतन्त्र नामवाला हंस शोभा संयुक्त याचता हुआ उस राजाको देख यह विचारताभया ४१ कि इसके समान मैं होजाऊं अर्थात् जो सुकृत नियम और तप मेराहै उसके प्रताप से निष्फलरूप तप और व्रतआदि से दुःखित होरहाहूं ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायामेकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

मार्कंडेयजी कहनेलगे हे भीष्म जब उस सातवें हमने पूर्वोक्त समाचार कहे तब छिद्र दर्शन और सुनेत्र इन नामोंवाले दो हंस बोले १ हे स्वतन्त्र हम जो आप इस राजा के समान सुखको चाहते हो तो हम दोनों तुम्हारे मन्त्री होनेकी इच्छा करते हैं ऐसे वे तीनों हंस कहतेभये तब शुद्धवाक् नामवाला दूसरा हंस कहनेलगा २ हे स्वतन्त्र सातों हंस कामकी वाञ्छाकरके योगधर्म को छोड़ नीचे

वर की प्रार्थना करै है इसवास्ते मेरे वाक्य को सुन ३ हे प्रिय कांपिल्यनगर में ब्रह्मदत्त नामसे विख्यात तू राजा होगा और ये दोनों हंस तेरे मन्त्री होवेंगे ४ ऐसे चार हंस उन तीनों हंसों को शापदेके बोलने में अयोग्य करते भये तब वे तीनों हंस उन चारहंसों से कहनेलगे कि हमपै दया कब होवेगी ५ तब सुमना नामवाला हंस अपने सहचारी हंसों की सलाहलेके ६ कहनेलगा अन्तवाला तुम्हारेको शापहोगा इसमें संशय नहीं अर्थात् इस हंसके शरीरको त्याग मनुष्यके शरीरको प्राप्तहोगे पश्चात् योगधर्मको प्राप्त होजावोगे ७ और सब प्राणियोंकी बोलीको जाननेवाला और ब्रह्मदत्तनाम से विख्यात ऐसापद सुतन्त्रहोगा और इसके प्रतापसे हमको पितरोंकी प्रसन्नता प्राप्तहुई है ८ अर्थात् उस गुरुकी गाय को पितरों के अर्थ हम वर्त्ततेभये यह इसीने उपदेश किया अब हम सब योग को प्राप्त होवेंगे ९ और हे तीनों हंसो जब तुम राजा और राजा के मंत्री होके बहुत भोगों को भोगचुको तब एक ब्राह्मण के मुखसे कहेहुये श्लोक को सुनके योगधर्म को प्राप्त होजावोगे १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपितृकल्पेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे वे सातोंहंस वायु जल इन्हों को भक्षण करतेहुये १ अपने अपने शरीरोंको सुखातेभये २ और वह पूर्वोक्त विभ्राजनामवाला राजा उसवनमें विचरके उन योग धर्मवाले हंसोंको देखताभया ३ और दयाभावसे उन हंसोंकोही याद करताहुआ अपने पुरमें आके प्राप्तहुआ ४ पीछे विभ्राजके परमधार्मिक अणुह नामवाला पुत्रहुआ ५ इसअणुहके अर्थ शुकदेवस्वामी अच्छे लक्षणोंवाली सत्त्वशील गुणोंसे संयुक्त ६ और योगधर्ममें रत और कृत्वीनामसे विख्यात ऐसी कन्या देतेभये ७ और हे भीष्म सनत्कुमारजी ने मेरे समीपमें सत्य धर्मोंको धारणकरनेवालोंमें श्रेष्ठ और योगरूप और योगीकी पत्नी और योगीकी माता ऐसी यही पितृकन्या प्रकाशितकी है ८ सो मैं पितृसर्गमें तेरे अर्थ कहचुकाहूं पीछे विभ्राज राजा अणुह पुत्रको राज्यपै स्थापनकर ९ और पुरके जनों से सलाहकर और ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचनकरा तपकरनेके वास्ते जिस मानसरोवरमें वे हंस वासकरतेथे उसमें जाताहुआ १० और तहांजाके भोजनको त्याग

पवनको भक्षण करनेवाला और तपको धारण करनेवाला ऐसाहोके कामों को त्याग उग्रतपको करनेलगा ११ तब तिस राजाका यह संकल्प हुआ इनहंसोंमें से एकको ऐसा कामेंपुत्र होके रमणकरूं १२ पश्चात् यह विभ्राज राजा सूर्य के समान प्रकाशितहुआ १३ और जिसके प्रतापसे विभ्राजित नामवन और वै- भ्राज नामसरोवर ऐसा विख्यातहै १४ पीछे उनसात हंसोंमेंसे चारयोगधर्मी रहे और तीनयोगसे भ्रष्टके पश्चात् ये सातों हंसके देहको त्याग १५ कांपिल्यनगर में ब्रह्मदत्त आदि नामोंसे विख्यात और पापोंसे रहित ऐसे सातोंजन्मे १६ परंतु चारोंको पूर्वजन्मका स्मरणरहा और तीन मोहित अर्थात् पूर्वजन्मको नहीं जा- नतेभये १७ और वह सातवां स्वतन्त्र हंस अणुहराजा के ब्रह्मदत्त नामसे पुत्र उपजा और इसका पूर्व्वचिंतित पक्षियों में संकल्परहा इसवास्ते पक्षीमात्रमें प्यार करनेलगा १८ और यह ब्रह्मदत्तराजा ज्ञान, ध्यान, तप इन्होंसे पवित्र वेद और वेदांगों के पारको जाननेवाला ऐसाहुआ १९ और छिद्रदर्शी पांचवा हंस और सुनेत्र छठा हंस ये दोनों बाभ्रव्य और वत्स इनराजमंत्रियों के कुलमें उपजे २० परन्तु वेद और वेदांगों के जाननेवाले और पूर्वजन्मके प्रभावसे ब्रह्मदत्त राजा के सहायक और पांचाल कण्डरीक इन नामोंसे विख्यातहुए २१ और तिन्होंमें पांचाल नामवाला ऋग्वेदको पढ़के ब्रह्मदत्त राजाका आचार्य हुआ और क- ण्डरीक सामवेद और यजुर्वेदको पढ़के अध्वर्यु हुआ २२ और सब प्राणियोंकी बोलीको जाननेवाला ब्रह्मदत्तराजा जो है तिसके ये दोनोंमित्र होतेभये २३ ये तीनों ग्राम्यधर्म में निरत और कामदेवके वशमें वर्तनेवाले और पूर्वजन्मके प्र- भावसे धर्म्म, काम, अर्थ इन्होंको जाननेवाले ऐसे हुए २४ पीछे अणुहराजा ब्रह्मदत्त को राज्यपै प्राप्तकर योगधर्म्म के प्रतापसे परमगति को प्राप्तहुआ २५ पीछे ब्रह्मदत्तराजा योगको जाननेवाली और सन्नती नामसे विख्यात ऐसी दे- वलकी पुत्री से विवाहागया २६ ऐसे पांचवा हंस पांचाल नामसे विख्यात और छठाहंस कण्डरीक नामसे विख्यात और सातवा हंस ब्रह्मदत्त नामसे विख्यात ऐसे ये तीनों जन्मे २७ और बाकीके सहचारी चारहंस दरिद्रसे संयुक्त श्रोत्रीय कुलमें चारभ्राता जन्मतेभये और धृतिमान् १ सुमना २ विद्वान् ३ तत्त्वदर्शी ४ ऐसे नामोंसे विख्यात और वेदके अध्ययन में कुशल और अपने सहचारियों के छिद्रको देखनेवाले २८ ऐसे हुए पीछे पूर्वजन्मके प्रभावसे चारोंकी एकमति

उपजी तब माता पितासे आज्ञालेकर योगधर्म्म के वास्ते गमन करनेलगे २६ तब तिन्होंका पिता कहनेलगा हे पुत्रो हमको त्यागके जो आप गमन करतेहो यह अधर्म्म है ३० क्योंकि हमारी दरिद्रताको दूरकरे विना और पुत्रभावके उत्तम सुखोंको हमारे अर्थ दिये विना और हमारी टहलकरे विना कैसे आप गमन करनेके योग्यहो ३१ तब वे चारों पिताके प्रति कहनेलगे तुम्हारी आजीविका के वास्ते उपाय कहते हैं तुम सुनो ३२ ॥

अब प्रसंग प्रकाशित करनेकेवास्ते संस्कृत श्लोकोंका वर्णन करते हैं ॥

श्लोक ॥ सप्तव्याधादशार्णेषु मृगाःकालञ्जरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपे हंसाःसरसिमानसे ३३ तेऽपिजाताःकुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमध्वानं यूयंतेभ्योविषीदथ ३४ ॥

इस श्लोकको मंत्रियों सहित ब्रह्मदत्त राजाको जाकेसुना वह राजा प्रीतिसे ग्राम अतिभोग मनोवाञ्छित पदार्थ ये सबदेवेगा ३५ इसवास्ते हे स्वामिन् राजा के पास आप गमन कीजिये ऐसे वे चारोंविप्र कहके और पिताको पूजके योग धर्म्मको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहुये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपितृकल्पेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे हे भीष्मजी प्रथम ब्रह्मदत्त के पितामह जो विभ्राज राजाने उन हंसोंकापुत्र बनना चाहाथा इसवास्ते वह विभ्राज विष्वक्सेन नामसे विख्यात पुत्र ब्रह्मदत्त राजाके उपजा १ पीछे एकसमय में अपनी भार्या के संग ब्रह्मदत्त राजा वनमें विचरताभया जैसे इन्द्राणी के संग इन्द्र २ पीछे वनमें कामसे पीडित पिपीलिकाको कामसे पीडित पिपीलिक अर्थात् कीड़ीके पति को भोगके वास्ते याचनाकरने लगरही ३ और याचना करनेवाली और कोप करनेवाली ऐसी कीडी के वचन को सुन ब्रह्मदत्त राजा आपही आप अत्यन्त हँसनेलगा ४ तब सन्नती नामवाली और बहुत दिनों में व्रत करनेवाली ऐसी ब्रह्मदत्तकी रानी लज्जितहोके उदासीन हुई ५ तब राजाने बहुत प्रकार प्रसन्न करी तब ऐसे कहनेलगी कि हे राजन् तैंने मेरी गैलमें ऐसा उपहास कियाहै कि मैं जीवनेके योग्य नहीं हूं ६ तब राजाने सब वृत्तान्त कीडी और कीडी के पति

का वर्णन किया तब कुपितहोके कहनेलगी ऐसा मनुष्यके शरीरमें प्रभाव नहीं होता ७ क्योंकि कीडी के शब्दको कौन मनुष्य जानसक्ता है देवता के प्रसाद और पूर्व्व जन्मके स्मरण के बिना ८ और हेराजन् तपके बलसे अथवा विद्या से सब प्राणियों के शब्दको जानताहै ९ तो मेरेको यथार्थकरि ऐसा उपदेशकर कि मैंभी जानलेऊ अर्थात् मेरेको प्रतीति करादे अगर नहीं तो मैं अपने प्राणों को त्यागदूगी यह मेरी प्रतिज्ञाहै १० तब तिस रानी के कठोर अक्षरोंवाले वचन कोसुन परम आपत् से त्रस्तहुआ ११ सब भूतोंके ईश और देवताओं में श्रेष्ठ और शरणागतके दुःखको मेटनेवाले ऐसे परमेश्वरका ध्यान करनेलगा अर्थात् सावधानहोके भोजन को त्याग छ रात्रितक ध्यानकिया १२ तब छठीं रात्रि में साक्षात् नारायण को देखताभया और सब प्राणियों पै दयाकरनेवाले नारायण ने राजाके प्रति यह वचन कहा १३ हे ब्रह्मदत्त प्रभातमें तू कल्याणको प्राप्तहोगा ऐसे कहके नारायण अन्तर्हित होतेभये १४ और उन चार ब्राह्मणों का पिता पुत्रों से पूर्वोक्त श्लोक को यादकरि कृतकृत्यके समान हुआ १५ मंत्रियोंसहित ब्रह्मदत्त राजाके अर्थ उस श्लोक को सुनाने के वास्ते उपाय करनेलगा १६ पश्चात् राजा नारायण से वरको प्राप्तहो और सुन्दर सरोवर में स्नानकर सुवर्ण के रथमें बैठ प्रसन्नहुआ अपनी पुरी में प्रवेश करनेलगा १७ और कण्डरीक मंत्री घोड़ोंकी रस्सी को पकड़ रथमें बैठाहुआ और पाञ्चालमंत्री चवँर और व्यजन को धारणकिये रथमें बैठाहुआ १८ ऐसे तिन्होंको देख वह पूर्व्वोक्त ब्राह्मण इस वक्ष्यमाण श्लोकको मन्त्रियों सहित राजाके अर्थ सुनानेलगा १९ ॥

वह श्लोकभी अर्थ सहित प्रकाशित किया जाताहै ॥

श्लोक ॥ सप्तव्याधादशार्णेषु मृगाकालञ्जरेगिरौ ॥ चक्रवाकाशरद्वीपेहंसासरसिमानसे २० तेऽपिजाताःकुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमध्वानयूयंतेभ्योविषीदथ २१ ॥

दशार्णदेशमें सात पारधी जन्मे पीछे कालंजरपर्व्वतमें वेही सातमृग जन्मे पीछे शरद्वीप में वेही सातचकवे जन्मे पीछे वेही मानसरोवर में सातहंस जन्मे २२ पीछे तिन्होंमें से चार कुरुक्षेत्रमें वेदको जाननेवाले विप्र जन्मे सो वे चारों उत्तम मार्गको प्राप्तहुये और आप तीनों योगसे भ्रष्टहुये शिथिलरूप बनोहो २३ इस वचन को सुनतेही मन्त्रियों सहित ब्रह्मदत्त राजा मोहको प्राप्त हुआ और कण्डरीक मन्त्री के हाथमें घोड़ोंकी रस्सी और चाबुक छूटगया २४ और

पाञ्चाल मन्त्री के हाथसे चॅवर और व्यजन छूटगया अर्थात् ये दोनों भी मोहित होगये ऐसे इन तिन्हों को पुरवासी और राजमन्त्री २५ देखके आश्चर्य्य करनेलगे पीछे दो घडी में सञ्ज्ञा को प्राप्तहो पुरी में प्रवेश करते भये २६ पीछे उस सरोवरको और पूर्व्वजन्म के योगधर्म्म को यादकर उस ब्राह्मणको विपुल भोगों से और द्रव्यों से प्रसन्न करते भये २७ पीछे विष्वक्सेन पुत्रको राज्य पै स्थापितकर रानी सहित ब्रह्मदत्त राजा वनको गमन करताभया २८ पीछे देवलकी पुत्री सन्नतीनामवाली रानी परम प्रसन्नहोके वनको गमनकरनेवाले राजा से कहनेलगी २९ हे महाराज उस पिपीलिका के शब्द को जाननेवाली मैंने क्रोधका उद्देशकर कामों में आसक्तहुये आप प्रेरित किये ३० अबसे हम उत्तम और वाञ्छितगतिको प्राप्तहोवेंगे और आप पूर्व्व जन्मके योगधर्म्मको भूलगये थे इसवास्ते मैंने फिर स्मरण करवाया ३१ पीछे परम प्रसन्नहुआ राजा रानी के वचनको सुन योगधर्म्मको प्राप्तहो उत्तम गतिको प्राप्तहुआ ३२ पीछे धर्म्मात्मा कंडरीक मन्त्री भी योगधर्म्मको प्राप्तहो उत्तम गतिको प्राप्तहुआ ३३ पीछे पाञ्चाल मन्त्री भी उत्तम शिक्षाको प्राप्तकर योगधर्म्मको प्राप्तहो उत्तम गतिको प्राप्त हुये ३४ ऐसे यह प्रत्यक्ष वृत्तान्त पहले बीताहै इसको हे भीष्मजी तू धारणकर पीछे कल्याणसे युक्तहोगा ३५ और इस ब्रह्मदत्त आदि आख्यानको जो धारण करेंगे वे मनुष्य मरके तिरछी योनिवाले पक्षियों के शरीरको नहीं प्राप्तहोंगे ३६ ऐसे यह आख्यान श्रवण करनेसे उत्तम गतिको प्राप्त करताहै और इसको विशेषकर श्रवण करनेसे शान्तिभी प्राप्तहोती है ३७ पीछे ज्ञानको प्राप्तहो मुक्तिका होजाना जरूरही है सो वैशम्पायनजी कहनेलगे हे जनमेजय ऐसे श्राद्धके फल का उद्देशकर चन्द्रमा की तृप्तिके अर्थ मार्कण्डेयजी ने भीष्मजी से यह कहाहै ३८ और सम्पूर्णलोक चन्द्रमाकेद्वारा तृप्तहोताहै ३९ इसवास्ते क्षत्रिय वंशके प्रसङ्ग से चन्द्रमाका वंश प्रकाशितकिया जाताहै सो आप श्रवण कीजिये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपितृकल्पे चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे हे राजन् प्रजाको रचनेकी इच्छा करनेवाले ब्रह्मा के मनसे चन्द्रमाका पिता अत्रिऋषि उपजा १ पीछे ये अत्रि कर्म्म मन वाणी

इन्होंसे सब मनुष्योंके कल्याणकेअर्थ शुभकर्मोंका आचरण करनेलगा २ पीछे सब प्राणियों में दया रखनेवाला और धर्मात्मा और उग्रव्रतों को धारण करने वाला और काष्ठ भीत पत्थर इन्होंके समान शरीर को धारण करनेवाला और आकाशके सामने दोनों भुजाओंको उठाके धारण करनेवाला ३ और महातेज वाला ऐसा अत्रि ऋषि सब इन्द्रियों का निग्रह करनेवाला मौन को प्राप्तहो ४ तीन हजार दिव्यवर्षोंतक उग्रतप को करनेलगा ऐसे हमने सुनाहै ५ पीछे महा पराक्रमवाले और ऊर्द्धगत वीर्यको धारण करनेवाले ऐसे अत्रिऋषिके शरीरके ऊर्द्धभागमें अमृत उपजा ६ तब दोनों नेत्रोंकेद्वारा दशोंदिशाओंको प्रकाशित करताहुआ ७ पानी गिरनेलगा तिस तेजसयुक्त पानीरूप गर्भको प्रफुल्लितहुई दशोंदिशा मिलके धारण करनेलगीं परन्तु धारण करने में समर्थ न हुई ८ जब उन्होंसे धारण नहीं कियागया तब वह तेजरूप गर्भ पृथ्वी में पडनेलगा ९ त पड़ताहुआ उस अमृत रूप गर्भ को सब के बड़े ब्रह्माजी देखके लोकों के क ल्याणकेअर्थ रथ में स्थापित करतेभये १० अब रथकास्वरूप वर्णन किया जात है ॥ हेजनमेजय काष्ठ की तरह वेदों से रचाहुआ और धर्मरूप और सत्यरू ब्रह्मका सग्रह और सफेद रङ्गवाले हजारों वेदके मत्र रूप घोडों से संयुक्त ऐस रथकास्वरूप हमने सुनाहै ११ और जब चन्द्रमारूप तेज पृथ्वी में पड़नेलगा त ब्रह्माके मनसे उपजे सातपुत्र १२ और अङ्गिरा और अङ्गिरा के पुत्र भृगु औ भृगुकेपुत्र ऋग्वेद और यजुर्वेदके द्वारा चन्द्रमाकी स्तुति करनेलगे १३ तब च न्द्रमाका तेज बढके सब लोकोंको पुष्ट करताहुआ त्रिलोकीको प्रकाशित करने लगा १४ और उस उत्तम रथमें बैठके समुद्रपर्यंत सम्पूर्ण पृथ्वीकी इक्कीस परि क्रमा चन्द्रमाने करी १५ और जो रथके वेगसे चन्द्रमाका तेज पृथ्वी में प्राप्तहुअ उसमे सब औषधिया उपजने लगीं १६ इसवास्ते चन्द्रमा के तेजसे सब अन्न आदि औषधियें प्रफुल्लित होती हैं औरइन अन्न आदि औषधियों के प्रतापसे अण्डज, स्वेदज, जरायुज, उद्भिज चारप्रकारकी प्रजा जीवती है ऐसे हे राजन सब जगत् को पुष्ट करनेवाला चन्द्रमा कहा है १७ पीछे उत्तम कर्मों से उत्तम तेजको प्राप्तहो एकहज्जार पद्म संख्यावाले वर्षोंतक तप करताभया १८ इसीवास्ते जो सुवर्ण के समान वर्णवाली देवी इस जगत्को धारण कररही है अर्थात् सब प्रकार के जलों का स्वामी चन्द्रमा को पागया १९ और हे जनमेजय यही च·

न्द्रमा सव प्रकार के बीज और औषधी और ब्राह्मण और जल इन सवों का स्वामी वनाया गया २० ऐसे उत्तम राज्य पै प्राप्तहो चन्द्रमा सबलोक लोकान्तरों को अपने तेज से प्रकाशित करता है २१ पीछे दक्षप्रजापति अपनी अश्विनी आदि और रेवती पर्य्यंत जो सत्ताईस नक्षत्रहैं इन पुत्रियों को चन्द्रमा के अर्थ विवाहता भया २२ पीछे चन्द्रमा उत्तम राज्यको प्राप्तहो राजरूप यज्ञका आरम्भ करने लगा तिस में जहा एक अशरफी एक गाय की दक्षिणा थी उस जगह लाख लाख अशरफी और लाख लाख गौकादान करताभया २३ और उस यज्ञ में अत्रिमुनी होता वनते भये और भृगुमुनी अध्वर्य्यु वनते भये और अङ्गिरा मुनी उद्गाता वनतेभये और साक्षात् ब्रह्माजी ब्रह्मा वनतेभये २४ अथवा वशिष्ठ जी ब्रह्मा वनतेभये और साक्षात् नारायण सनत्कुमार आदि ब्रह्मर्षियोंसे सयुक्त हो सभापति वनतेभये २५ और हे जनमेजय मैंने ऐसा सुनाहै यज्ञके अन्त में मुनिजनों के अर्थ चन्द्रमाने त्रिलोकी का दान करदिया २६ और सिनिवाली कुहू अर्थात् अमावास्या और द्युति, पुष्टि, प्रभा, वसु और कीर्त्ति, धृति, लक्ष्मी येभी नवोंदेवी चन्द्रमाको सेवनेलगीं २७ ऐसे यशको पूर्णकर देवते और मुनि जनों से पूजितकिया सव राजाओं से प्रधान ऐसा चन्द्रमा होके दशोंदिशाओं को भासित करताभया प्रकाशित होताभया २८ परन्तु हे जनमेजय ऐसे उत्तम ऐश्वर्य्य को प्राप्तहो और मदसे भ्रमताहुआ चन्द्रमा की अनीति से वुद्धिभ्रष्ट होनेलगी २९ तव वह चन्द्रमा अतियशवाली और तारानामवाली वृहस्पतिकी भार्याको हरताभया ३० तव देवते और राजर्षियों ने अत्यन्त समझाया भी परतु उसतारा नामवाली स्त्रीको नहीं छोडताभया ३१ तव चन्द्रमाके सग वृहस्पतिजी युद्धकरने को तय्यारभये तव चन्द्रमाकी तरफ मददेनेवाले दैत्यों के गुरु शुक्राचार्यजी हुये ३२ और एकसमयमें वृहस्पतिजी अपने पितामे पहले महादेव जीसे पठन करतेभये उस स्नेह से महादेवजी ३३ आजगव नामवाले धनुषको धारणकर वृहस्पतिजी के तरफ मदद देनेवालेहुये और उसीवक्त दैत्योंके नाश करनेवाले महादेवजी ने ब्रह्मशिर नामवाला उग्रअस्त्र रचलिया ३४ जिस करके दैत्योंका यशनाशको प्राप्तहुआ तव देवते और दैत्योंका आपसमें लोकके क्षय करनेवाला और तारकामय नामसे विख्यात ३५ ऐसा युद्ध होनेलगा तव वहुत से दैत्य और वहुतसे देवते नाशको प्राप्तहोगये पीछे निमयुद्धमें वचेहुये तुषित

आवेगी २१ इसलिये तुम्हारे कार्य्यकी सिद्धिके अर्थ तुम्हारी सहायतासे सवृक्ष
में गमन करूंगा ऐसे कहके पुरूरवाके स्थानपै जा २२ रात्रिमें एक मेढाको हर
ताभया और वह उर्वशी दोनों मेढ़ानमें माताके समान स्नेह किया करती २३
और गन्धर्व का आगमन और अपने शापके अन्तको जानके वह यशवाली
उर्वशी राजासे कहनेलगी मेरे पुत्रको कोई हरलेगया २४ ऐसे राजासे कहा भी,
परन्तु उससमय में नग्नरूप राजाथा यह विचारनेलगा कि मैथुनसे अलग अब
मेरेको नंगादेखेगी तो मेरेपास रहेगी नहीं २५ इसवास्ते राजा उठा नहीं पीछे
फिर गंधर्वोंने दूसरा मेढाभी हरलिया तव उर्वशी कहनेलगी २६ हे प्रभो हे राजन्
दूसरा भी मेरा पुत्र हरलिया अर्थात् मेरे कोई स्वामी नहीं है इससे मैं क्याकरूं
ऐसे कहनेसे उठके नगाही राजा मेढोके खोजके अनुसार भागा २७ तव गंधर्वों
ने वडी अति उग्रविजली उत्पन्नकरके राजाके महलमें प्रकाशित करदी २८ तव
उस चादने में उर्वशी उस नग्नभूत राजाको देख अन्तर्द्धान अर्थात् दीखने से
वैठरही २९ तव अतर्हितहुई उर्वशी को देख मेढाओं को त्याग गंधर्व स्वर्गलोक
को चलेगये और राजा उन दोनोंमेढाओंको ग्रहणकर जब अपने स्थानमें आके
३० उर्वशी नहीं देखी तव दुःखितहोके विलाप करनेलगा और जहां तहां ढूढ़ता
हुआ सम्पूर्ण पृथ्वीभरमें विचरा ३१ पीछे कुरुक्षेत्रमें प्लक्षतीर्थ के समीपमें हेमव
तीनदीमें पांच अप्सराओंके संग उस उर्वशीको स्नान सम्बन्धी क्रीड़ाकरती हुई
देख विलाप करनेलगा ३२ और वह उर्वशी भी उस राजाको नजदीक से देख
उनपांच उर्वशियोंसे कहनेलगी कि जिसके स्थानपै में वहुत दिन वासकरतीभई
वह पुरुषोत्तम राजा यहहै ३३ तव उस उर्वशीको देख राजा कहनेलगा कि हे प्रिये
हे जाये तुम स्थितहो और वचनमें स्थितहो इनआदि वचनोंको आपसमें कहने
लगी ३४ तव उर्वशी कहनेलगी हे राजन् तेरे सकाशसे मेरे गर्भ ठहररहा है एक
वर्षमें तेरेपुत्र उपजेंगे इसमें संशयनहीं ३५ और एकरात्रि हे राजन् मेरे संग तू
फिरभी वसेगा तव प्रसन्नहोके राजा अपने पुरको चलागया ३६ जव एकवर्ष व्य
तीतहोगया तव वह उर्वशी फिर आके एकरात्रि राजाके संग वासकरती भई ३७
और राजासे कहनेलगी हे राजन् तेरेको वर देनेवाले गंधर्व होंगे इसलिये इन
गंधर्वों से वरदानले और इनसे कुछ वर्णनकर ३८ अर्थात् इनगंधर्वों से यह मा
माग हे गंधर्वों में तुम्हारे समान होजाऊं ऐसे राजा गंधर्वों से वरमागनेलगा तव

गन्धर्व वर देतेभये ३९ और अग्नि से स्थाली को पूर्णकर गन्धर्व कहनेलगे हे राजन् इस देवकी पूजा करने से हमारे लोकों को तू प्राप्त होगा ४० पीछे तिन उर्वशी के पुत्रोंको राजा ग्रहणकर और गन्धर्वों का दिया अग्नि को वनमें गेर अपने स्थानपै आके प्राप्तहुआ ४१ फिर उलटा जाके देखे तो राजा जहां अग्नि गेरीथी उस जगह अग्नि नहीं दीखा किंतु जांटी के वृक्षसे संयुक्त पीपलकावृक्ष ऊगा हुआ प्रतीत हुआ तब राजा आश्चर्य्य माननेलगा ४२ पीछे इस अग्नि नाश को गन्धर्वों के अर्थ कहताभया इस वचन को सुनके गन्धर्व कहनेलगे कि ४३ इस पीपल वृक्षकी अरणीबना तिसको मथके अग्निको उपजाले ऐसेही वह राजा उस अग्निकेद्वारा अनेक यज्ञों को करताभया ४४ तिसके प्रताप से गन्धर्वों के लोकमें प्राप्तहुआ ४५ और इसी राजाने एक अग्नि के तीन अग्नि बनादिये हैं ४६ हे राजन् ऐसा प्रभाववाला यह पुरूरवा राजा ४७ मुनिजनों से स्तुतिकिया और पवित्र ऐसे प्रयागजी में राज्य करताभया ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांऐलोत्पत्तिकथनेषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे पुरूरवा राजाके देवताके पुत्रोंके समान और स्वर्ग में उपजनेवाले और महात्मा और आयु १ अमावसु २।१ विश्वायु ३ श्रुतायु ४ दृढायु ५ वनायु ६ शतायु ७ ऐसे नामोंवाले सात पुत्रहुये २ पीछे अमावसुके भीम और नग्नजित् ये दो पुत्रहुये पीछे भीमके श्रीमान् कांचनप्रभ पुत्रहुआ ३ पीछे कांचनप्रभ के विद्वान् और महाबलवाला सुहोत्र पुत्रहुआ पीछे सुहोत्र के केशनीरानी में जह्नु पुत्रहुआ ४ जिसने सर्व्वमेध और महामख इस नाम वाला महायज्ञकिया और पतिके लोभसे जिसको गंगा प्राप्त होतीभई ५ तब वह गंगाकी इच्छा नहीं करनेलगा तब गंगाजीने सब यज्ञस्थान जलमे डुबोदिये ६ तब क्रोधको प्राप्तहो जह्नु राजाकहनेलगा कि हे गङ्गे तैंने बहुतबुराकाम किया है इसवास्ते तेरे जलका पानकरूं तू अपने स्नानके फलको तत्काल प्राप्तहोगी ऐसे कहके राजर्षि जह्नु गंगाके जलको पीनेलगा ७ तब पीहुई गंगाको देख महर्षिजन जह्नु राजाकी पुत्री ८ बनातेहुये पीछे युवनाश्व राजाकी पुत्री कावेरी को जह्नुराजा विवाहता भया ९ और युवनाश्व के शापसे पहलेही गंगा

अपने आधे भागसे कावेरी रचदी है १० पीछे जह्नुराजा कावेरी रानी में एक
धार्म्मिक सुनह नामवाले पुत्रको उत्पन्न करताभया पीछे सुनहके अजक नाम
पुत्रहुआ ११ पीछे अजक के बलाकाश्व नाम पुत्रहुआ यह मृगयाशील हुआ
पीछे बलाकाश्वके कुशनाम पुत्रहुआ १२ पीछे कुशके देवसमान तेजवाले औ
कुशिक कुशनाम कुशांब मूर्त्तिमान् १३ इन नामोंवाले चार पुत्रहुये पीछे ब्रह्म
चारी पहुओं के संग बढाहुआ कुशिक राजा तप करनेलगा और यह चाहने
लगा कि इन्द्रकेसमान पुत्रकोप्राप्तहूं १४ ऐसे हजारोंवर्षोंके व्यतीत होनेके बाद
इन्द्र अति तप करनेवाले उस कुशिक राजाको देख १५ अपनेही अंश को उस
राजाके पुत्र उपजाताभया १६ तब गाधिनामवाला कुशिकका पुत्र और साक्षात्
१७ इन्द्रका अंश ऐसा गाधि पौरकुत्सी रानीमें उपजा पीछे गाधिके महाभाग्य
वाली और सत्यवती नामसे विख्यात ऐसी पुत्रीउपजी १८ इसको ऋचीकनाम
वाले भृगु पुत्रके अर्थ गाधि देताभया पीछे प्रसन्नहुआ ऋचीकमुनि १९ अपने
और गाधिके पुत्र होनेके अर्थ चरुबनाके अपनी स्त्री से कहनेलगा २० हे प्रिये
ये दो चरुके दोने हैं इन्होंमें से एक तो यह तेरी माताके खानेके वास्ते हैं इसके
प्रतापसे तेरी माता अति तेजवाला २१ और क्षत्रियोंमें उत्तम और इस संसारके
क्षत्रियोंसे नहीं जीतनेमें आनेवाला और बलवन्त क्षत्रियोंको मारनेवाला ऐसा
पुत्र उपजेगा इसलिये ये चरुका दोना अपनी माताके अर्त्थ देना और हे क-
ल्याणी ये दूसरा चरुका दोना तेरे अर्त्थ देताहू इसके खाने से धैर्य्यवाला और
तपकरनेवाला २२ और शांतस्वरूप और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ऐसे पुत्रको तू जनेगी
ऐसे ऋचीकमुनि सत्यवती भार्य्यासे कहके २३ तप करनेके अर्त्थ बनमें प्रवेश
करताभया पीछे अपनी भार्य्या करके सहित गाधि २४ तीर्त्थयात्राके प्रसंग से
पुत्रीको देखने वास्ते ऋचीकमुनि के आश्रममें प्राप्तहुआ २५ तब दोनों चरुके
दोनोंको ग्रहणकर सत्यवती माताके अर्थ देतीभई और सब वृत्तान्त कहतीभई
२६ परन्तु दैवयोगसे माता विपरीत भावसे अपने चरुके दोनेको पुत्रीके अर्त्थ
देतीभई २७ और पुत्री के दोनेको आप अंगीकार करतीभई पीछे क्षत्रियों के
अन्त करनेवाले गर्भको सत्यवती २८ धारतीभई तब ऋचीकमुनि देखके और
योगविद्या से विचार २९ अपनी स्त्री के अर्थ कहनेलगे हे भद्रे चरुके दोनों के
बदलने से माताने तुझे ठगली ३० इसवास्ते क्रूरकर्म्म करनेवाला और अति

दारुण ऐसे पुत्रको तू जनेगी और ब्रह्मस्वरूप और उग्रतप को करनेवाला ऐसे भ्राताको तेरी माता ३१ जनेगी क्योंकि जिस दोने में तपकरके मैंने ब्रह्मअर्पण करदिया था वह दोना तेरी माता ने अंगीकार किया है ऐसे पति के वचन को सुन ३२ पतिको मनानेलगी कि ऐसे पुत्र को मैं नहीं चाहती तब मुनि कहने लगे ३३ कि हे भद्रे यह तेरा संकल्प पूर्णहोना मुश्किल है और पिता माता के कारण से उग्रकर्म्मा पुत्रहोगा ३४ फिर सत्यवती कहनेलगी हे मुने जो इच्छा करो तो संसार को भी रचसकते हो और पुत्र के रचने की तो क्या कथाहै ३५ इसलिये शांतस्वरूप और कोमल स्वभाववाला ऐसापुत्र देनेको योग्यहो और हे द्विजोत्तम क्षत्रियों के नाश करनेवाला और उग्ररूप ऐसा मेरे पौत्रहोना चाहिये ३६ अगर अन्यथा नहीं करने की आपकी वाञ्छा है तो तब सत्यवती पै प्रसन्न होके ३७ मुनि कहनेलगे हे भद्रे पुत्र और पौत्र में विशेषता नहीं है इस वास्ते तेरी वाञ्छा पूरीहोगी ३८ तब सत्यवती तप को करनेवाला और इन्द्रियों को जीतनेवाला और शान्तस्वरूप और जमदग्नि नाम से विख्यात ऐसे पुत्र को जनतीभई ३९ और पीछे सत्य और धर्म में परायण और पवित्र ऐसी यही सत्यवती कौशिकी नामसे विख्यात महानदी होती भई ४० और इक्ष्वाकु वंश से होनेवाला रेणुनाम राजा हुआ तिसकी रेणुकानाम पुत्री के संग जमदग्नि का विवाह हुआ ४१ पीछे जमदग्नि के सकाश से रेणुका स्त्री में अतिदारुण और सबविद्याके अन्तको जाननेवाला ४२ और धनुर्वेद के पारको प्राप्त और क्षत्रियों को नाशनेवाला और अग्निके समान दीप्तरूप और परशुराम नामसे विख्यात ऐसापुत्र होताभया ४३ ऐसे हे जनमेजय सत्यवती में जमदग्नि ऋषि उपजे हैं ४४ और कुशिक का पुत्र गाधिराजाके ऋचीक मुनिके चरु के प्रताप से अति तपस्वी और अति विद्यावान् और शान्तस्वरूप ऐसा विश्वामित्र पुत्र उपजा ४५ यह अपने कर्तव्य से ब्रह्मर्षियों के समान होके सप्तऋषियों में प्राप्त हुआ ४६ और पहिले यह विश्वामित्र गाधिराजा के विश्वरथ नाम से विख्यात पुत्रहुआ ४७ पीछे विश्वामित्र के देवरात आदिनामों से त्रिलोकी में विख्यात ऐसे पुत्रहुये तिन्होंके नाम श्रवणकर ४८ देव १ श्रवा २ और कति ३ और जिस कतिसे कात्यायननामसे विख्यात पुरुष कहाये और शालावती स्त्री में हिरण्याक्ष पुत्रहुआ और रेणुनामवाली स्त्रीमें रेणुमान् ४९ और साकृति और गालव और

मुद्गल और मधुच्छन्द और जप और देवल ये पुत्र उपजे ५० और दृष्टवती रानी में अष्टक और कच्छप और हारित ये तीनपुत्र उपजे ऐसे विश्वामित्र के पुत्रहुये हैं तिन कौशिकोंके गोत्र ससारमें अनेक विख्यातहैं ५१ पीछे पाणिन १ बभ्रव २ ध्यान ३ जप ४ पार्थिव ५ देवरात ६ शालक ७ अपन ८ वाष्कल ९। ५२ लोहित १० यामरुन ११ कारीपय १२ ये बारह देवके पुत्रहुये अर्थात् विश्वामित्रजी के पौत्रहुये और हे राजन् सैंधवपन आदि नामों से विख्यात सुश्रुतके पुत्रहुये और विश्वामित्र के पौत्र कहाये ५३ और याज्ञवल्क्य और अघमर्षण और औदुम्बर और अभिस्नात और तारकायन और चुचुल ५४ इननामोंवाले छः पुत्र हिरण्याक्ष के उपजे ये भी विश्वामित्र के पौत्रकहाये और साकृति और गालव ये रेणुमान् के पुत्रहुये अर्थात् विश्वामित्र के पौत्रकहाये और नारायण और नर ये दोनों विश्वामित्रके पुत्रहुये ५५ पीछे ये सब प्रवर भेदकरके विवाह करनेलगे ऐसेब्रह्मर्षि विश्वामित्रके वंशमें जन्मेहुये मनुष्यों का ५६ इस वंशमें संबन्ध होनेलगा और विश्वामित्र के पुत्रों में शुन शेफनामवाला प्रथम पुत्रहुआ ५७ यह भृगुवंशमें उपजनेवाला होके कौशिक वंशमें हुआ ५८।५९ क्योंकि एक समयमें हरिश्चंद्र राजाकी यज्ञमें यह शुन शेफ पशुकी जगह नियुक्त कियागया तब देवताओं ने विश्वामित्र के अर्थ अर्पणकिया ६० इसवास्ते यह देवरात नामसे विख्यातहुआ ऐसे देवरात आदि सातपुत्र विश्वामित्र के हुये हैं ६१ और अष्टक के लौहिपुत्र हुआ ऐसे जह्नुगण प्रकाशित कियागया है ६२ अब इससे उपरान्त महात्मा रूप आयु राजाका वंश वर्णन किया जावेगा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांप्रमानुगुवंशकीर्त्तनेसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे हेराजन् आयु राजाके राहुकी पुत्री प्रभामें महारथ और वीर १ और नहुष और वृद्धशर्म्मा और रम्भ और रजी और अनेना इन नामों वाले और त्रिलोकीमें विख्यात ऐसे पांचपुत्र उपजे २ पीछे इन्होंमें से रजी राजा के पांचसौपुत्र उपजे जिन्हों के प्रतापसे इन्द्रको भयदेनेवाला और राजेयनाम से विख्यात ऐसा क्षत्रहुआ ३ पीछे एक समयमें देवता और दैत्योंके युद्धका आरंभ होनेलगा तब देवते और दैत्य ब्रह्माजी के पासजाके कहनेलगे ४ हे भगवन् हम

दोनोंमें कौनकी जीत होवेगी आप वर्णन कीजिये और तुम्हारे वचन को हम श्रवण करने की इच्छा करते हैं ५ तव ब्रह्माजी कहने लगे जिन्हों की मदद में अतिसामर्थ्यवाला रजी राजा शस्त्रोंको धारणकर युद्ध करेगा तव वे तीनलोकों को भी जीतेंगे इसमें सशय नहीं है ६ और जहा रजी राजा होवेगा वहीं धैर्य्य होवेगा और जहा धैर्य्य होगा तहा लक्ष्मीहोवेगी वहीं धर्म्म होवेगा और जहा धर्म्महोवेगा तहा जय होगा, इसमें संशय नहींहै तव ब्रह्माजी के वचनको सुनि के देवते और दैत्य रजीके आधीन जयको जान और अपनी अपनी जयको चाहनेवाले उस रजी राजाको वरने के वास्ते गये ७। ८ तव राहुका दौहित्र और परम तेजस्वी और चन्द्रमाके वंशको बढ़ानेवाला ९ ऐसे रजी राजाके पास प्रसन्न हुए देवते और दैत्य जाके कहनेलगे हे राजन् अपने धनुष्‌को धारण कर जयके अर्थ देवते और दैत्योंमें कोयेसेके सग कृपा कीजिये १० तव देवते और दैत्योंके प्रयोजनको जाननेवाला और अपने यशको प्रकाश करनेवाला ऐसा रजी राजा कहनेलगा ११ जो सव दैत्यगणों को अपने वीर्य्यसे जीतके धर्म्म से इन्द्रकी पदवीको प्राप्तहूं अर्थात् इन्द्र होजाऊ तव युद्ध करूगा १२ तव सव देवते प्रसन्न होके कहनेलगे हे नृपते तेरा मनोरथ सिद्ध होवेगा। ऐसे कहके देवते चलेगये पीछे रजी राजा जैसे देवतों से पूछताभया तैसे दैत्यों से पूछनेलगा कि अपने वीर्य्यसे सव देवताओं को जीतलेऊ तो तुम्हाराभी इन्द्रवनू १३ तव गर्व्व से पूरितहुये दैत्य अपने प्रयोजन को जान अभिमान सहित वचन कहनेलगे १४ कि हमाराइन्द्र प्रह्लादहै जिसके अर्थ देवताओंको जीतनेकी इच्छा हम करते हैं हे राजन् जो हमारे इन्द्रहोनेकी इच्छा आप करते हैं तो आप यहीं ठहरिये १५ तव रजी राजाने कहा ठीकहै पीछे देवताओंने आके कहा हे राजन् इन दैत्योंको जीतके आप हमारे इन्द्रहोवेंगे इसवास्ते आप युद्धमें सहायता करो १६ तव उस युद्धमें जो इन्द्रसे नहीं मरसक्तेथे उन सव दैत्योंको मार १७ वहुतदिनों से गईहुई देवताओं की शोभाको दैत्योंसे ग्रहण करताभया १८ पीछे महावीर्य वाले रजी राजाके अर्थ देवतोंसहित इन्द्र कहनेलगा कि मैं रजीराजाकापुत्रहूंगा इसलिये हे राजन् आप सव देवताओं के इन्द्रहै इसमें सशय नहीं १९ अर्थात् कर्मोंसे मैं रजी राजाका पुत्र ऐसी ख्यातिको प्राप्तहूगा ऐसे इन्द्रके वचनको श्रवणकर इन्द्रकी माया से मोहित हुआ राजा २० प्रसन्न होके इन्द्रसे कहनेलगा

कि आपका मनोरथ पूर्ण होगा जब देवताओं के समान राजा स्वर्गलोक में इन्द्रकी पदवीको प्राप्त हुआ २१ तब राजा के पांचसौ पुत्र इन्द्रके मकाशसे सब पदार्थोंको ग्रहणकर स्वर्गलोक में राज्य करनेलगे २२ पीछे बहुत दिनोंके व्यतीत होजानेपै राज्य भ्रष्ट और भागभ्रष्ट इन्द्र २३ अतिबलवाले बृहस्पतिजी से कहनेलगा २४ हे ब्रह्मर्षि बडबेरी के फलके समान यज्ञ भागको मेरे अर्थ दिया करो जिसके प्रतापसे मैं तृप्तहुआ स्थितरहूं और हे बृहस्पति जी कृश और दुःखित मनवाला और राज्य भ्रष्ट और यज्ञ भागसे रहित और पराक्रम और बल से रहित और मूढ ऐसा मुझे रजीराजाके पुत्रोंने करदिया है २५ तब बृहस्पति जी कहनेलगे हे इन्द्र जो आपकी ऐसी वाञ्छाहै तो संशय मतकरे और मैं तेरे प्यारके अर्थ अकर्तव्य नहीं करताभया २६ परन्तु हे देवेन्द्र अब मैं ऐसा उपाय करूंगा कि जिसके प्रताप से आपको तत्काल यज्ञभाग और अपने राज्य को प्राप्तहोगा २७ हे पुत्र तेरामन ग्लानि को मत प्राप्तहो पीछे बृहस्पतिजी ने ऐसा धर्म्म कराया कि इन्द्रका तेज बढनेलगा २८ और रजीराजाके पुत्रोंकी बुद्धिमें मोह उपजनेलगा अर्थात् वाद प्रतिवाद प्रयोजनसे संयुक्त और धर्मका वैरी २९ और अति तर्कों से संयुक्त ऐसा अधर्म्मरूप शास्त्र बनाके अल्पबुद्धीवाले रजी राजाके पुत्रोंको पढानेलगा ३० इस शास्त्रको पढके वे सब धर्म्मशास्त्रों के बैरी होगये ३१ और न्यायसे रहित कर्मोंको करनेलगे और तिस बुरेमतको अंगीकार करतेभये तिस अधर्म्म के प्रतापसे वे सब राजाके पुत्र नाशको प्राप्त होगये ३२ तब अतिदुर्लभ त्रिलोकी के राज्यको बृहस्पतिजी के प्रतापसे इन्द्र प्राप्तहोगया ३३ पीछे रागद्वेष आदिमें उन्मत्तहुए और ब्राह्मणके बैरीवीर्य्य और पराक्रम से रहित काम क्रोधसे युक्त ऐसे मोहित रूपवाले रजी राजाके पुत्रोंको मारके अपने सिंहासनपै इन्द्रबैठा ३४ जो मनुष्य इस आख्यानको श्रवणकरे व धारणकरे वह दुःखको प्राप्त नहीं होताहै अर्थात् उसका अन्तःकरण नहीं बिगडताहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांमाथुरचतुर्वेदीकृतेअष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि रम्भराजाके वंश चला नहीं इसवास्ते अनेनाके वंशको कहतेहैं अनेनाके अतियशवाला प्रतिक्षत्र पुत्रहुआ १ पीछे प्रतिक्षत्र के

सञ्जय पुत्रहुआ पीछे सञ्जय के जय पुत्रहुआ पीछे जयके विजय पुत्रहुआ २ पीछे विजयके कृती पुत्रहुआ पीछे कृती के हर्य्यत्वरपुत्रहुआ पीछे हर्य्यत्वत् के प्रतापवाला सहदेव पुत्रहुआ ३ पीछे सहदेव के धर्मात्मा नदीन पुत्रहुआ पीछे नदीनके जयत्सेन पुत्रहुआ पीछे जयत्सेनके सकृती पुत्रहुआ ४ पीछे सकृती के अतियशवाला क्षत्रधर्मा पुत्रहुआ ऐसे अनेनाराजाका वंश प्रकाशित किया अब क्षत्रवृद्धके वंशको श्रवणकर ५ क्षत्रवृद्धके सुनहोत्र पुत्रहुआ पीछे सुनहोत्र के परमधार्मिक ६ और काश शल गृत्समद इन नामोंवाले तीन पुत्रहुये पीछे गृत्समद के शुनक पुत्रहुआ और पीछे शुनक के शौनकनाम से विख्यात ७ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये जन्मे और शल राजाके आर्ष्णिसेण पुत्रहुआ पीछे आर्ष्णिसेण के काश्य पुत्रहुआ ८ पीछे काश्यके काश्यप पुत्रहुआ पीछे काश्यपके दीर्घतपा पुत्रहुआ पीछे दीर्घतपाके धन्व पुत्रहुआ पीछे धन्वके धन्वतरी पुत्रहुआ ९ अर्थात् वहुतसे तपकरने से फिर धन्वन्तरी देवता मनुष्यों में जन्म लेताभया १० तव जनमेजयने कहा धन्वन्तरी देवता मनुष्योंमें कैसे जन्मा यह जाननेकी इच्छाहै इसवास्ते मेरे अर्थ विस्तारसे कहो ११ तव वैशम्पायन कहने लगे हेराजन् धन्वन्तरीकी उत्पत्तिसुन जैसे समुद्रको मथ अमृत काढने के वक्त १२ प्रथम एक कलशा निकसा तिस कलशेमें अत्यन्त शोभासे सयुक्त एकपुरुष निकस विष्णुको देख वहीं स्थितरहा १३ तव विष्णुने कहा कि अप्नाम जलसे तू उपजा है इसवास्ते तेरा नाम अब्जधरा तव वह अब्ज विष्णुके अर्थ कहने लगा हे प्रभो मैं आपका पुत्रहू १४ इसवास्ते हे लोकस्वामिन् मेरे अर्थ यज्ञभाग और स्थान दीजिये ऐसे कहने से विष्णुभगवान् सत्यवचन कहनेलगे १५ कि यज्ञका विभाग और अग्निहोत्र आदि मैंने देवता और मुनियों के अर्थ वाट दियेहैं १६ इसवास्ते तेरे अर्थ यज्ञभाग आदि नहीं रहाहै इसवास्ते तू देवताओं का प्रियरहेगा १७ और दूसरे जन्ममें ससारमें ख्यातिको प्राप्तहोवेगा और जवतू गर्भमें प्राप्तहोवेगा तव अणिमादिक अष्टसिद्धि तेरेको प्राप्तहोवेंगी १८ और निःसही शरीरसे देवतेपनेको प्राप्तहोवेगा और हे प्रिय चरुमंत्र व्रत जप इन आदिसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तेरेको पूजेंगे १९ और तू आयुर्वेदके आठ विभाग करेगा इस अवश्य भावीको ब्रह्माजी जानतेहैं २० इसलिये द्वापरयुगमें दूसरे शरीरको प्राप्त होवेगा इसमें सशय नहीं ऐसे वरदानदेके विष्णु भगवान् अन्तर्द्धानहोगये २१

जब द्वापरयुग आके प्राप्तहुआ तब काशीका राजा और धन्वनाग से विख्यात और पुत्रकी कामना से उग्रतप करनेलगा २२ और यह ध्यान करनेलगा कि जो देवता मेरे अर्थ पुत्रदेगा तिसकी मैं शरणहुआ हूं अर्थात् समुद्र मथने के वक्त जो अब्जनामवाला देवताहुआ है तिसकी आराधना करताभया २३ तब प्रसन्नहोके वही देव राजासे कहनेलगा जो तेरी इच्छा है सो वरमाग वही मैं हे राजन् तेरेको दूगा २४ तब राजा कहनेलगा हे भगवन् जो आप मेरे ऊपर प्रसन्नहुये हैं तो आपही मेरे पुत्रहोके संसारमें विख्यातहोजाओ तबवह देव ऐसेही होगा ऐसे कहकर वहीं अन्तर्द्धान होगया २५ तब तिसराजाकी रानी में धन्वन्तरी नामसे विख्यात और साक्षात् देव और काशीका राजा और सब जीवोंके रोगोंको नाशनेवाला २६ ऐसा पुत्रहुआ पीछे यही धन्वतरी कर्तव्यसहित आयुर्वेदको भरद्वाजऋषि से पढ़के फिर विस्तारपूर्वक बना आठप्रकारसे शिष्यों के अर्थ प्रकाशित करताभया २७ पीछे धन्वतरीके केतुमान् पुत्रहुआ पीछे केतुमान् के भीमरथ पुत्रहुआ २८ पीछे भीमरथके दिवोदास पुत्रहुआ यहीधर्मात्मा काशी का स्वामीहुआ २९ इसीकालमें शून्यरूप काशीपुरी में क्षेमकनाम राक्षस प्रवेश करताभया ३० क्योंकि बुद्धिमान् निकुम्भमुनि ने काशीपुरी के अर्थ शापदिया कि हजार वर्ष तक काशीपुरी शून्यरहेगी इसमें सशय नहीं ३१ जब काशीपुरी के अर्थ शाप देदिया तब दिवोदास राजाने गोमती नदी के तटपै सब काशी वासी बसाके ३२ पुरी रचलई जिस पुरी में पहले भद्रश्रेण्य राजाका राज्यथा पीछे दिवोदास राजाने भद्रश्रेण्य के उत्तम धनुष्धारण करनेवाले १०० पुत्रों का ३३ नाशकर अपने बलसे उस पुरी में अपना राज्य करलिया ३४ तब जनमेजय ने प्रश्न किया कि काशीपुरी को निकुम्भमुनि किसवास्ते शाप देतेभये और जो सिद्धिक्षेत्रको शापित करताभया ३५ ऐसा निकुम्भमुनि कौनथा तब वैशम्पायन कहनेलगे दिवोदास राजा प्रकाशित रूप काशीपुरीमें बसके राज्य करने लगा ३६ इसीकालमें पार्वती सहित महादेवजी पार्वतीकी प्रीतिकरने के वास्ते हिमालयके समीप में बसने लगे ३७ और महादेवजी की आज्ञासे सब तपस्वी रूप पार्षद पूर्वोक्त उपदेशों करके पार्वतीजी को प्रसन्न करने लगे ३८ तब पार्वतीजी प्रसन्न होनेलगीं परन्तु पार्वती की माता मेना नहीं प्रसन्नहुई और वारम्वार पार्वतीजी और महादेवजीकी निंदा करनेलगी ३९ और कहनेलगी हे पुत्री पार्षदों

सहित यह तेरा भर्त्ता महादेव सब काल में दरिद्रही बनारहे है और इसके शी-
लता बिल्कुल नहीं ४० ऐसे माताके वचनको सुन स्त्रीस्वभावसे क्रोध को प्राप्तहो
और आश्चर्य्यवान् महादेव के समीप आके ४१ मुखके वर्ण को बिगाड पार्वती
जी महादेवजी से कहनेलगीं हे देव मैं इस जगह नहीं बसूगी जहा आपका
स्थानहै ४२ उस जगह मुझको प्राप्तकर तब महादेवजी त्रिलोकी के स्थानों को
देख के पृथ्वीमण्डल में सिद्धक्षेत्र काशीपुरी को बसने योग्य विचारते भये ४३
परन्तु दिवोदास राजाके राज्यसेयुक्त उस काशीपुरी को विचार समीप में स्थित
हुआ निकुम्भ पार्षदसे कहनेलगे हे राक्षसेश अभिगमनकर काशीपुरीको शून्य
बनादे ४४ कोमल उपायसे क्योंकि काशीपुरीका दिवोदास राजा अति वीर्य्य
वाला है तब निकुम्भपार्षद जाके काशीपुरी में ४५ कड्कनाम नापित को स्वप्न
में दर्शन देताभया और कहताभया हे अनघ तू मेरा स्थान रच मैं तेरा कल्याण
करूंगा ४६ अर्थात् मेरे रूपकी प्रतिमाबना काशीपुरी में स्थापित करदे तब स्वप्न
केपीछे इसी विधि से वह नापित मूर्त्ति को स्थापित करताभया ४७ और राजा
को जनाके पुरी के द्वारपै उस मूर्त्ति के अर्थ बहुतसी पूजा नित्यप्रति करताभया
४८ पीछे गंध, धूप, फूलोंकीमाला अनेक प्रकारकी बली अन्नपान इन आदि से
अत्यन्त पूजा होनेलगी ४९ ऐसे वह निकुम्भ पार्षद नित्य पूजा को प्राप्तहोने
लगा तब काशीवासियों के अर्थ पुत्र द्रव्य आयु सब कामना इन आदि हजार
हों प्रकार के वर देनेलगा ५० तब एक समय में सुयशा नामवाली काशी के
राजाकी रानी और राजाकी भेजीहुई ५१ और सुन्दर स्वभाववाली और दिव्य
रूपवाली ऐसी उस मूर्त्ति स्थान के समीपमें आके नानाप्रकारकी पूजाकर एक
पुत्र मागने लगी ५२ ऐसे बारम्बार रोजके रोज पुत्रकी प्राप्तिके अर्थ पूजा क-
रनेलगी परतु वह निकुम्भ पार्षद पुत्र नहीं देताभया ५३ क्योंकि इसकारण से
कि मेरे पै राजा क्रोधकरे तो कार्य्यकी सिद्धिहोवे पीछे बहुतकाल में राजा को
क्रोध व्याप्त होके ५४ राजा कहनेलगा कि देखो यह महाद्वारपै एक भूतनगरके
मनुष्यों पै प्रसन्नहुआ सैकडों वरदेताहै और मेरे को क्यों नहीं देता और मेरे
मित्र इसनगरी में अनेक प्रकारसे इसको पूजते भी है ५५ तथा पुत्रकी प्राप्ति के
वास्ते मैने अपनी रानीको भी इसकी पूजाके वास्ते बारम्बार भेजी परतु यहदेव
मेरे अर्थ पुत्र नहीं देता इसवास्ते किसी कारण करके कृतघ्नी है अबसे अगाडी

मेरे सकाशसे विशेषकर सत्कारको प्राप्त नहीं होगा ५६ और इसीवास्ते मैं इस दुष्टदेवके स्थानको फोडके पृथ्वी में मिलाऊंगा ऐसे निश्चयकरके दुरात्मा काशी का राजा ५७ उस निकुम्भनामवाले महादेवजी के पार्षदके स्थानको नाशता भया तब गिरेहुए मकानको देखके वह गण राजा के अर्थ शाप देताभया ५८ अब कहनेलगा कि विनाअपराध के जो मेरास्थान गिरवादियाहै इसवास्ते आपही आप शून्यरूप तेरीपुरी होजावेगी ५६ तिस शापकरके काशीपुरी शून्य होगई ऐसे निकुम्भपुरीको शापदेके महादेवजी के समीपमें जाताभया ६० तब आपहीआप चारोंतर्फ से पुरीखाली होगई तब तिस पुरी में अपना स्थानबना ६१ पार्वतीकेसंग महादेवजी बसनेलगे परन्तु गृहरूप आश्चर्य से पार्वती रतिको प्राप्त नहींहुई ६२ और महादेवजी से कहनेलगीं इस पुरी में मैं नहीं बसूंगी ६३ तब महादेवजी कहनेलगे इस स्थानको मैं नहीं छोडूंगा और अन्य स्थान में मैं नहीं जाऊंगा और तू इसी गृहको गमनकर ६४ जब हँसके महादेवजीने अपनी वाणीसे यह कहदिया कि मैं काशीवास को नहीं छोडूंगा ६५ इसीवास्ते सर्वदा नमस्कृत महादेवजी सबकाल में काशीपुरी में बसतेरहते हैं ६६ और कृतयुग त्रेतायुग द्वापर इन तीनयुगों में साक्षात् पार्वतीकेसंग महादेव काशी में बसते रहते हैं ६७ और कलियुगमें वह काशीमें महादेवजीका पुर दीखता नहीं है ६८ और काशीपुरी तो बसतीही रहैहै ऐसे काशीकेवास्ते शापदियाहै ६९ और भद्रश्रेण्य राजाके दुर्दमपुत्र हुआ यह दिवोदास राजाने बालकजान दयासे छोड़ दिया अर्थात् मारानहीं ७० पीछे समयपाके इस दुर्दमने दिवोदास राजाके सकाशसे सब पदार्थ छीनलिये हैं ७१ पीछे दिवोदास के दृषद्वती रानी में प्रतर्दन पुत्रहुआ ७२ पीछे प्रतर्दन केवत्स भार्गव इन नामोंवाले दोपुत्र उपजे ७३ पीछे वत्सके अलर्क पुत्रहुआ पीछे अलर्क के सन्नती पुत्रहुआ ७४ और यह अलर्क काशीका राजा ब्रह्मण्य और सत्यवादी हुआ और ऐसाभी सुनाहै ७५ कि ६६ हजारवर्षतक जवानरूपसे सम्पन्न यहराजारहाहै ७६ और लोपामुद्राके प्रतापसे इस राजाको यह उमरमिली है ७७ और इसीने शापके अन्तमें क्षेमक राक्षसको मार फिर काशीपुरी बसाई है ७८ पीछे सन्नतीके सुनीथ नामवाला पुत्रहुआ पीछे सुनीथ के अति यशवाला क्षेम्यनाम पुत्रहुआ ७९ पीछे क्षेम्यके केतुमान् राजा पुत्रहुआ पीछे केतुमान् के सुकेतु पुत्रहुआ पीछे सुकेतुके धर्मकेतु पुत्रहुआ ८०

पीछे धर्मकेतुके महारथी सत्यकेतु पुत्रहुआ पीछे सत्यकेतुके विभु पुत्रहुआ ८१ पीछे विभुके सुविभु पुत्रहुआ पीछे सुविभुके सुकुमार पुत्रहुआ पीछे सुकुमार के धर्मात्मा धृष्टकेतु पुत्रहुआ ८२ पीछे धृष्टकेतुके वेणुहोत्र पुत्रहुआ पीछे वेणुहोत्र के भर्गनाम पुत्रहुआ ८३ और पूर्वोक्त वत्सके वत्सभूमि पुत्रहुआ और भार्गव के भृगुभूमि पुत्रहुआ ८४ ऐसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन वंशों में हजारों काश्यप के वंशमें उपजे हैं अब नहुषके वंशको मेरेसे जान ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायाऊनतिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे विरजानामवाली पितृकन्या में इन्द्र के समान तेजवाले १ और यति ययाति सम्पाति आयाति पाञ्चिक सुयाति इन नामोंवाले छः पुत्र नहुषके हुये और इन्हों में ययाति राजाहुआ २ तिन्हों में यति बड़ा पुत्र हुआ और ब्रह्मभूत मुनिहोके मोक्षको प्राप्तहुआ ३ और ययाति ककुत्स्थ की कन्या और गौनामवाली तिसको प्राप्तहुआ ४ और यही ययाति पाचों भाइयों की पृथ्वी को जीत ५ पीछे शुक्राचार्य्य की पुत्री देवयानी को और वृषपर्व्वा राक्षसकी पुत्री शर्मिष्ठाको विवाहताभया ६ पीछे यदु,तुर्वसु ये दोपुत्र देवयानी के उपजे और द्रुह्यु, अणु, पुरु ये तीनपुत्र शर्मिष्ठा के उपजे ७ और इसी ययाति राजा के अर्थ प्रसन्न हुआ इन्द्र मनके वेग के समान वेगवाले और सफेद रंग के ८ ऐसे दिव्य घोड़ों से संयुक्त और परम प्रकाशरूप और सुवर्ण से बना हुआ ऐसा रथ देताभया ९ जिसकरके छः रात्रि में सम्पूर्ण पृथ्वी को और इन्द्र सहित सब देवताओं को युद्ध में जीतताभया १० और यही रथ इन्हों के वंश में सबके पास रहा ११ परन्तु कुरुके पौत्र जनमेजयके वक्तमें गर्गमुनि के पुत्र के शाप से १२ रथ नाशको प्राप्तहुआ क्योंकि वह जनमेजय राजा १३ वाकक्रूर नामवाले गर्गमुनि के पुत्र को मारताभया तब ब्रह्महत्या को प्राप्त हुआ लोहूकी गन्धसे संयुक्त राजा जहां तहां जाताभया १४ परन्तु पुरवासी मनुष्यों ने त्यागदिया तब कहींभी सुखको प्राप्त न हुआ १५ तब इन्द्रोत नामवाले शौनकके शरण जाके रहा तब यह शौनकमुनि इस जनमेजयके हाथसे अश्वमेध यज्ञ करावताभया तब इस राजाके शरीरसे लोहू गन्ध दूरहुआ १६ तिससमयमें

प्रसन्नहुये इन्द्रसे यही दिव्यरथ वसुनामवाले चन्देरीकेराजाने लेलिया औरवसु
से वृहद्रथनामवाले राजाने लिया १७ पीछे वहीरथ वृहद्रथसे जरासन्धने लिय
पीछे जरासन्धको मार वही रथ भीमसेन ने लिया १८ पीछे हे जनमेजय भीम
सेनने प्रीतिसे वही रथ कृष्ण महाराज को दिया और सातद्वीपों से संयुक्त इस
सम्पूर्ण पृथ्वी को जीत १६ ययाति राजा अपने पुत्रों के अर्थ पांचभाग करता
भया अर्थात् दक्षिण पूर्वकी दिशामें अर्थात् अग्निकोणमें तुर्वसुको राज्यदिया
२० और पश्चिम दिशामें द्रुह्युको राज्यदिया और उत्तरदिशा में अणुको राज्य
दिया और ईशान दिशामें यदुको राज्यदिया २१ और मध्यदेशमें पुरुको राज्य
दिया ऐसे सातद्वीपों पर्यन्तकी पृथ्वी को ययाति राजा अपने पुत्रोंके अर्थ वि
भाग करताभया २२ पीछे सब राज्यभार को पुत्रोंके अर्थ देके वृद्ध अवस्थाको
धारण करताभया २३ तब शस्त्रों को त्याग पृथ्वी को देख ययाति राजा प्रसन्न
होके २४ अपने यदु पुत्र से कहनेलगा हे पुत्र मेरी वृद्धावस्था को तू ग्रहणकर
और तेरी तरुण अवस्थाको मैं ग्रहणकर पृथ्वी भरमें विचरूंगा २५ तब यदु क
हनेलगा मैंने अबतक कुछ सुकृत नहीं कियाहै २६ और पान भोजन आदिसे
उपजे बहुतसे दोष वृद्ध अवस्थामें पीडादेते हैं इसवास्ते हे राजन् तेरी वृद्ध अ
वस्थाको मैं ग्रहण नहीं करसक्ता २७ और हे नृप मेरेसे अतिप्रिय तेरे बहुतसे
पुत्रहैं हे धर्म्मज्ञ तिन्होंमेंसे एक कोईसे वृद्ध अवस्था देनेको बदले तब कोपको
प्राप्तहो ययाति राजा पुत्रकी निन्दा करता हुआ कहनेलगा २८ हे दुर्बुद्धे मेरा
अनादर करके ऐसा कौन आश्रम व कौन धर्म्म है जिसका तू आचरण करेगा
२६ ऐसे कहकर कोपसे प्राप्तहो यदुके अर्थ शाप देने लगा कि हे मूढ तेरी स-
न्तान को राज्य पदवी नहीं मिलेगी ३० पीछे ययाति राजा तुर्वसु, द्रुह्यु, अणु
इन तीन पुत्रोंसे वही पूर्वोक्त वृत्तान्त कहनेलगा तब इन्होंनेभी राजाका कहना
नहीं माना ३१ तब इन्होंके अर्थभी शापदेके जो शाप विस्तारपूर्वक पहले कह
चुके हैं ३२ ऐसे चारपुत्रोंको शापितकर पीछे राजा पुरुपुत्रसे कहनेलगा हे पुत्र
तू मेरी वृद्धअवस्थाको ग्रहणकर और मैं तेरी तरुण अवस्थासे पृथ्वी में विचरूं
जो तू माने तो ३३ तब प्रतापवाला पुरु पिताकी वृद्ध अवस्थाको ग्रहण करता
भया और पुरुकी तरुण अवस्थाको ययातिराजा ग्रहणकर पृथ्वीभरमें विचरता
भया ३४ तब कामोंके अन्त को विचारता हुआ अपनी विश्वाची रानीके संग

चैत्ररथ वनमें रमण करनेलगा ३५ परन्तु कामों के भोगसे तृप्त नहीं हुआ तब अपने पुरु पुत्रसे वृद्ध अवस्थाको ग्रहणकर ३६ तरुणअवस्था उलटी देताभया तिसी समय में हे जनमेजय ययाति राजाने गाथागाई है तिसको सुन तिसके सुनने से मनुष्य कामदेव से सकुचित होजाताहै जैसे कछुआ अपने अङ्गों को सकोचताहै तैसे ३७ कविभी कामों के उपभोग करके काम शान्त नहीं होताहै जैसे घृतसे अग्नि ३८ और जो इस पृथ्वी में अन्य सुवर्ण पशु स्त्री ये सब भी एक मनुष्यके वास्ते बहुत नहीं हैं इसवास्ते मनुष्यको प्रथमही शान्त होजाना चाहिये ३९ और जब सब प्राणियों में कर्म्म से मनसे वाणीसे पापका आचरण नहीं करताहै तब ब्रह्मको प्राप्त होताहै ४० और जब अन्यों से आप नहीं डरे है और न अन्योंको आप डरावे है और न आप इच्छा करे है और न वैरकरताहै तब ब्रह्मको प्राप्त होताहै ४१ और जो दुर्मती मनुष्यों से त्यागी नहींजाती और जो वृद्ध अवस्था के सग वृद्ध नहीं होती ऐसी प्राणों को नाशनेवाले रोगके समान जो तृष्णा है तिसको त्यागने में सुख होताहै ४२ और वृद्ध अवस्थाके सगके सभी वृद्ध अर्थात् जीर्ण होजाते हैं और दातभी जीर्ण होजाते हैं परन्तु धनकीआशा और जीवनेकी आशा जीर्ण नहीं होती ४३ और जो काम सुखहै और स्वर्गादिक जो सुखहै यह सब तृष्णाक्षयरूप सुखसे सोलहवें हिस्सेभी नहीं है ४४ ऐसे भार्य्या सहित ययातिराजा कहके वनमें बसा और बहुतकाल तक उग्रतपको करनेलगा ४५ पीछे भृगुतुङ्गपै तपकरके भोजन आदिको छोड देहका त्यागकर अपनी भार्या सहित स्वर्गमें प्राप्तहुआ ४६ तिसके वंशमें जो पाच पुत्रहुये हैं तिन्होंके वंशोंसे यह सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होरही है जैसे सूर्य्यकी किरणोंसे ४७ हे जनमेजय प्रथम राजऋषियों का माना यदु के वंशका श्रवण कर जहा वृष्णिकुल में साक्षात् नारायण जन्मलेते भये ४८ और हे राजन् इस पवित्ररूप ययातिके चरित्रको पठन करने से और श्रवण करने से स्वस्थ और सन्तानवाला और आयुवाला और कीर्त्तिवाला ऐसा पुरुष होजाताहै ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांययातिचरितेत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

जनमेजयने कहा हे भगवन् पुरु द्रुह्यु अणु तुर्वसु यदु इन्हों के अलग २ वंशों

के श्रवणकी इच्छाकरूहूं १ और वृष्णिवंश के प्रसङ्गसे अपने वंशको प्रथमसुना चाहताहूं सो हे भगवन् विस्तार पूर्वक आप कहनेको योग्यहैं २ तब वैशम्पायन जी कहनेलगे हे राजन् पुरुकेवंशको विस्तारमे श्रवणकर जिसमें आपभी जन्मे हैं ३ इसवास्ते प्रथम पुरुके वंशको कहताहूं पीछे द्रुह्यु अणु यदु तुर्वसु इन्हों के वंशोंको कहूंगा ४ पुरुके महा वीर्य्यवाला जनमेजय राजा पुत्रहुआ और जनमेजयके प्रचिन्वान् पुत्रहुआ यह पूर्वदिशाके राजाओंको जीतताभया ५ पीछे प्रचिन्वान्के प्रवीर पुत्रहुआ पीछे प्रवीरके मनस्यु पुत्रहुआ पीछे मनस्युके अभयद पुत्रहुआ ६ पीछे अभयदके सुधन्वा पुत्रहुआ पीछे सुधन्वाके बहुगव पुत्रहुआ पीछे बहुगवके सम्पाति पुत्रहुआ ७ पीछे सम्पातिके अहंपाति पुत्रहुआ पीछे अहंपाति के रौद्राश्व पुत्रहुआ पीछे रौद्राश्वके घृताची नामवाली अप्सरा में ८ ऋचेयु कृकणेयु कक्षेयु स्थण्डिलेयु सन्नतेयु ९ दशार्णेयु जलेयु स्थलेयु महाबलवन नित्यवनेयु इननामोंवाले दशपुत्रहुये १० और रुद्रा १ शूद्रा २ भद्रा ३ मलदा ४ ग्वलदा ५ बलदा ६ सुग्मा ७।११ तला ८ चला ९ गोत्रपला १० इननामों वाली अप्सराओंके रूपोंसे उत्तम रूपोंवाली दशपुत्रीहुईं और इनदशोंको अत्रिवंशमें उपजा और प्रभाकर नामवाला विवाहताभया १२ पीछे रुद्रामें इसीके सकाशसे यशवाला सोमपुत्र उपजा जब राहुने सूर्य्यहत करदिया तब आकाश से पृथ्वी में सूर्य पडनेलगा १३ तब अँधेरेमे युक्तलोकमें इसी ने प्रकाशकियाहै तब पडतेहुये सूर्य्य से कहा तेरा कल्याणहो १४ उसी वक्त उस मुनिके वचन से सूर्य पृथ्वी में नहीं पड़ा और इसीतपस्वीने अत्रिके बहुतसे गोत्र आत्रेयनामसे विख्यात प्रकाशितकिये १५ पीछे पुत्रिका धर्मवाली उन दश कन्याओं में अत्रि तपस्वीरूप दशपुत्रों को उपजाताभया १६ पीछे वेदको जाननेवाले और गोत्र को बढानेवाले १७ और स्वस्त्यात्रेयनामसे विख्यात और अन्यके धनमें वर्जित ऐसे मुनिहोतेभये और पूर्वोक्त कक्षेयुके महारथी १८ सभानर चाक्षुष परमंयु इन नामोंवाले तीन पुत्रहुए पीछे सभानर के विद्वान्रूप कालानल पुत्रहुआ १९ पीछे कालानलके धर्मको जाननेवाला सृञ्जय पुत्रहुआ पीछे सृञ्जय के वीररूप पुरञ्जय पुत्रहुआ २० पीछे पुरञ्जयके जनमेजय पुत्रहुआ पीछे जनमेजयके महाशाल पुत्रहुआ २१ पीछे महाशालके देवोंमें विख्यात और अनिमनिष्ठावाला और उदारचित्तवाला ऐसामहामना पुत्रहुआ २२ पीछे महामनाके उशीनर और

तितिक्षु इननामोंवाले दो पुत्रहुए २३ और उशीनरके राजर्षिवंशज और नृगा कृमि नवा दर्वा दृषद्वती २४ इननामोंवाली पांच रानियोंमें पांचपुत्र उपजे पीछे उशीनरके नृगारानी में नृगपुत्रहुआ कृम्यारानीमें कृमीपुत्रहुआ २५ और नवा रानी में नवपुत्रहुए और दर्वारानी में सुव्रतपुत्रहुआ और दृषद्वतीरानीमें शिवि पुत्रहुआ २६ ऐसे पांचपुत्रहुये पीछे शिविके शिवयनामसे विख्यात पुत्रहुये और नृगके यौधेय पुत्रहुआ और नवका नव देशों में राज्यहुआ और कृमी ने कृमिलापुरीरची २७ और सुव्रतके अवष्टनामसे विख्यातपुत्रहुये और शिविके लोकमें विश्रुत २८ और वृषदर्भ सुवीर कैकेय मद्रक इननामोंसे विख्यात चारपुत्रहुये तिन्हों के नामोंसे कैकेय मद्रक २९ वृषदर्भ सुवीर ऐसे देश विख्यातहुये हैं अव तितिक्षु के वंशको श्रवणकर तितिक्षुके पूर्व्वदिशा में ३० उपद्रथ नामवाला राजा पुत्र हुआ पीछे उपद्रथके फेनपुत्र हुआ पीछे फेनके सुतपापुत्र हुआ ३१ पीछे सुतपाके सुवर्ण के तरकसवाला और महायोगी ऐसा मनुष्य देह में वलीराजा पुत्र हुआ ३२ पीछे वली के अंग वंग सुह्म ३३ पुंड्र कलिंग इन नामोंवाले पांचपुत्र हुये और इसी वास्ते वालेयनाम से क्षत्रवंश विख्यात हुआ और इसी वली के वंश में ब्राह्मणभी पुत्रहुए ३४ पीछे प्रसन्नहुये ब्रह्माजी ने इसवली के अर्थ वरदान किया कि हे राजन् तू महायोगी होगा और कल्पके प्रमाण तेरा आयुहोगा ३५ और संग्राम में तेरे को कोई जीत न सकेगा और धर्म्म में प्रधानता तेरी रहेगी और त्रिलोकी में तेरे पुत्रों की ख्याति रहेगी ३६ और वलमें तेरे समान कोई नहीं रहेगा और धर्म्म तत्त्वको तू देखनेवाला होगा और चारोंवर्णों के स्थापन करनेवाला तू होगा ३७ ऐसे ब्रह्माजी के वचनको सुन राजावली शांतस्वरूप हुआ और इसी राजाकी सुदेष्णा नामवाली स्त्री में ३८ मुनियों में श्रेष्ठ दीर्घतपा मुनिके सकाशसे क्षेत्रज्ञ संज्ञावाले जो पूर्व्वोक्त पांचपुत्र हुये हैं ३९ तिन्हों को राज्य पै स्थापितकर कृतार्थ हुआ और योगात्मा ऐसा वली राजा ज्ञानको प्राप्त हो कालके अनुसार विचरताहुआ ४० बहुत से काल में अपने स्थानको प्राप्त हुआ और तिसके पांचों पुत्रों के नामों से अंग वंग सुह्मक ४१ कलिंग पुंड्र इन नामोंवाले देश विख्यात होगये हैं अब मेरे से अंगके वंशको श्रवणकर अंगके राजाओंका राजा दधिवाहन पुत्रहुआ ४२ पीछे दधिवाहनके दिविरथ पुत्रहुआ पीछे दिविरथके इन्द्रकेसमान पराक्रमवाला ४३ और विद्वान् ऐसा धर्मरथ पुत्र

हुआ पीछे धर्म्मरथ के चित्ररथ पुत्रहुआ पीछे इसी धर्म्मरथने विष्णुपद पर्व्वत में ४४ यज्ञके वक्त इन्द्रके सग अमृत का पानकिया पीछे चित्ररथके दशरथ पुत्र हुआ ४५ पीछे यही लोमपाद नाम से विख्यातहुआ और इसी के शांतानाम पुत्रीहुई और इसी के ऋष्यशृंग मुनिकी कृपासे चतुरग पुत्रहुआ ४६ पीछे चतुरगके पृथुलाक्षपुत्र हुआ ४७ पीछे पृथुलाक्षके चंपपुत्र हुआ इसने मालिनीपुरी का नाम चंपा धरदिया ४८ पीछे चपके पूर्णभद्र मुनिके प्रसादसे हर्य्यंग पुत्र हुआ और इस राजाकेसमय में ४९ ऋष्यशृंगमुनि इन्द्रके ऐरावतहस्तीको अपने मंत्रों के बलसे पृथ्वी में उतारताभया ५० पीछे हर्य्यंग के भद्ररथ पुत्रहुआ पीछे भद्रथके बृहत्कर्म्मा पुत्रहुआ पीछे बृहत्कर्मा के बृहद्दर्भ पुत्रहुआ पीछे बृहद्दर्भके बृहन्मनापुत्रहुआ ५१ पीछे बृहन्मनाके जयद्रथ पुत्रहुआ पीछे जयद्रथके दृढरथ पुत्रहुआ पीछे दृढरथके विश्वजित पुत्रहुआ पीछे विश्वजित्के कर्ण पुत्रहुआ पीछे कर्ण के विकर्ण पुत्रहुआ ५२ पीछे विकर्ण के कुलको बढानेवाले १०० पुत्र हुए और बृहद्दर्भकापुत्र बृहन्मनाराजा जो पूर्व कहाहै ५३ तिसके यशोदेवी और सत्यानामवाली दो रानीहुई ५४ सो यशोदेवी में जयद्रथ उपजा और सत्यारानी में ब्राह्मणोंसे शांतिमें श्रेष्ठ और क्षत्रियों में शूर वीरता में श्रेष्ठ ऐसा विजय नामवाला पुत्रहुआ ५५ पीछे विजय के धृति पुत्र हुआ पीछे धृति के धृतव्रत पुत्रहुआ पीछे धृतव्रतके सत्यकर्म्मा पुत्रहुआ ५६ पीछे सत्यकर्म्मा के अधिरथ नामसे विख्यात सूतपुत्रहुआ यही अधिरथ नदी में बहतेहुये कर्णको ग्रहणकर अपनापुत्र बनाताहुआ इसीवास्ते सूतका पुत्र कर्ण कहाया ५७ यह सम्पूर्ण आपके अर्थ प्रकाशित किया पीछे कर्णके वृषसेन पुत्रहुआ पीछे वृषसेनके वृष पुत्रहुआ ऐसे सत्यव्रत और महात्मा और प्रजावाले और महारथी ऐसे इसवंश में राजा प्रकाशित किये ५८ हे जनमेजय जिस वंश में आप उपजे हैं उस रौद्राश्वका पुत्र ऋचेयुके वंशको श्रवणकर ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायामनुवंशानुकीर्त्तनएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

बत्तीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे सब राजाओं से अनाधृष्य और सब पृथ्वीमण्डल में एक राजा ऐसा ऋचेयु हुआ पीछे इसने तक्षक सर्पकी ज्वलना १ नाम पुत्री में

प्रतिनारपुत्र पैदाकिया पीछे प्रतिनारके परमधार्मिक २ तसु प्रतिरथ सुबाहु इन नामोंवाले तीन पुत्र और गौरी नामसे विख्यात और मान्धाता की माता ऐसी एक कन्याहुई ३ ये तीनों पुत्र वेदको जाननेवाले और ब्रह्मण्य और सत्यवादी और अस्त्रविद्या में कुशल और बलवाले और युद्ध में निपुण ऐसे होनेभये ४ पीछे प्रतिरथ के कण्वनाम पुत्र हुआ पीछे कण्व के मेधातिथि पुत्र हुआ और इसी से कण्व द्विज हुआ ५ पीछे मेधातिथि के ब्रह्मवादिनी और इलिनी नाम वाली ऐसी कन्या उपजी तिसको तसु विवाहताभया ६ पीछे तसुके धर्मकावेत्ता और प्रतापवाला और ब्रह्मवादी ऐसा सुरोध पुत्र हुआ पीछे इस सुरोध के उपजानवी नामवाली भार्य्याहुई ७ और यहीभार्य्या दुष्मन्त सुष्मन्त प्रवीर अनघ ८ इन नामोंवाले चार पुत्रोंको प्राप्तहुई पीछे दुष्मन्तके शकुन्तला भार्य्यामें सब जीवों को दमन करनेवाला और दशहजार हाथियों के बल को धारण करने वाला ९ और चक्रवर्त्ती और भरतनाम से विख्यात ऐसा पुत्रहुआ जिसके नाम से इस वंशमें भारत कहाये हैं १० और एकसमय में जब दुष्मन्त राजाने शकुन्तलारानीको ग्रहण नहीं किया तब दुष्मन्त राजाके प्रति आकाशवाणी कहने लगी मातातोभस्त्रा अर्थात् लोहार की फूकनी के समान होतीहै और जिस से उपजाहै उसीपिताका पुत्र कहावे है ११ इसवास्ते हे दुष्मन्त राजन् पुत्र की पालनाकर और शकुन्तला का अपमान मतकरै और अपने वीर्य्य से उपजा पुत्र उत्तमलोकोंमें लेजाया करताहै १२ और यह बालक तेरे से उपजाहै ऐसे शकुन्तला ठीककहती है पीछे राजाभरतके पुत्र माताओं के कोपसे नष्टहोगये १३ हे जनमेजय यह मैं तेरेप्रति कहताभयाहूं पीछे मरुत देवताओंने बृहस्पतिका १४ पुत्र भरद्वाज भरतका पुत्र बनाया और यही भरद्वाज के व्याख्यानको कहताहूं और भरद्वाजमुनि मरुतयज्ञ करताभया १५ तब भरद्वाज के वितथनाम पुत्रहुआ १६ जब वितथका जन्म होताभया तब भरतराजा स्वर्गलोक को प्राप्तहुआ पीछे वितथ को राज्यपै स्थापितकर भरद्वाज वनकोगया १७ पीछे वितथ के सुहोत्र सुहोता गय गर्ग कपिल इननामोंवाले पांच पुत्रहुये १८ पीछे सुहोत्रके काशिक और गृत्समती इन नामोंवाले दोपुत्रहुये १९ पीछे गृत्समती के ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ऐसे बहुतसे पुत्रहुये अब अजमीढ़के वंशको श्रवण कीजिये २० अजमीढ़ के नीलनीरानी में सुशांति पुत्रहुआ पीछे सुशांति के पुरुजाति पुत्रहुआ पीछे

हुआ पीछे धर्म्मरथ के चित्ररथ पुत्रहुआ पीछे इसी धर्म्मरथने विष्णुपद पर्व्वत में ४४ यज्ञके वक्त इन्द्रके सग अमृत का पानकिया पीछे चित्ररथके दशरथ पुत्र हुआ ४५ पीछे यही लोमपाद नाम से विख्यातहुआ और इसी के शांतानाम पुत्रीहुई और इसी के कृष्यशृंग मुनिकी कृपासे चतुरग पुत्रहुआ ४६ पीछे चतुरगके पृथुलाक्षपुत्र हुआ ४७ पीछे पृथुलाक्षके चंपपुत्र हुआ इसने मालिनीपुरी का नाम चपा धरदिया ४८ पीछे चपके पूर्णभद्र मुनिके प्रसादसे हर्य्यंग पुत्र हुआ और इस राजाकेसमय में ४९ ऋक्षशृंगमुनि इन्द्रके ऐरावतहस्तीको अपने मन्त्रों के वलसे पृथ्वी में उतारताभया ५० पीछे हर्य्यंग के भद्ररथ पुत्रहुआ पीछे भद्ररथके वृहत्कर्म्मा पुत्रहुआ पीछे वृहत्कर्मा के वृहद्दर्भ पुत्रहुआ पीछे वृहद्दर्भके वृहन्मनापुत्रहुआ ५१ पीछे वृहन्मनाके जयद्रथ पुत्रहुआ पीछे जयद्रथके दृढरथ पुत्रहुआ पीछे दृढरथके विश्वजित् पुत्रहुआ पीछे विश्वजित्के कर्ण पुत्रहुआ पीछे कर्ण के विकर्ण पुत्रहुआ ५२ पीछे विकर्ण के कुलको वढानेवाले १०० पुत्र हुए और वृहद्दर्भकापुत्र वृहन्मनाराजा जो पूर्वकहाहै ५३ तिसके यशोदेवी और सत्यानामवाली दो रानीहुई ५४ सो यशोदेवी मे जयद्रथ उपजा और सत्यारानी में ब्राह्मणों से शातिमें श्रेष्ठ और क्षत्रियों में शूर वीरता में श्रेष्ठ ऐसा विजय नामवाला पुत्रहुआ ५५ पीछे विजय के धृति पुत्र हुआ पीछे धृति के धृतव्रत पुत्रहुआ पीछे धृतव्रतके सत्यकर्म्मा पुत्रहुआ ५६ पीछे सत्यकर्म्मा के अधिरथ नामसे विख्यात सूतपुत्रहुआ यही अधिरथ नदी में वहतेहुये कर्णको ग्रहणकर अपनापुत्र वनाताहुआ इसीवास्ते सूतका पुत्र कर्ण कहाया ५७ यह सम्पूर्ण आपके अर्थ प्रकाशित किया पीछे कर्णके वृषसेन पुत्रहुआ पीछे वृषसेनके वृष पुत्रहुआ ऐसे सत्यव्रत और महात्मा और प्रजावाले और महारथी ऐसे इसवंश में राजा प्रकाशित किये ५८ हे जनमेजय जिस वश मे आप उपजे हैं उस रौद्राश्वका पुत्र ऋचेयुके वशको श्रवणकर ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायाकक्षेयुर्वंशानुकीर्त्तनेएकात्रिंशोऽध्याय ३१ ॥

वत्तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे सव राजाओं से अनाधृष्य और सव पृथ्वीमण्डल में एक राजा ऐसा ऋचेयु हुआ पीछे इसने तक्षक सर्पकी ज्वलना १ नाम पुत्री में

मतिनारपुत्र पैदाकिया पीछे मतिनारके परमधार्मिक २ तसु प्रतिरथ सुबाहु इन नामोंवाले तीन पुत्र और गौरी नामसे विख्यात और मान्धाता की माता ऐसी एक कन्याहुई ३ ये तीनों पुत्र वेदको जाननेवाले और ब्रह्मण्य और सत्यवादी और अस्त्रविद्या में कुशल और बलवाले और युद्ध में निपुण ऐसे होनेभये ४ पीछे प्रतिरथ के कण्वनाम पुत्र हुआ पीछे कण्व के मेधातिथि पुत्र हुआ और इसी से कण्व द्विज हुआ ५ पीछे मेधातिथि के ब्रह्मवादिनी और इलिनी नामवाली ऐसी कन्या उपजी तिसको तसु विवाहताभया ६ पीछे तसुके धर्मकावेत्ता और प्रतापवाला और ब्रह्मवादी ऐसा सुरोध पुत्र हुआ पीछे इस सुरोध के उपजानवी नामवाली भार्य्याहुई ७ और यहीभार्य्या दुष्मन्त सुष्मन्त प्रवीर अनघ ८ इन नामोंवाले चार पुत्रोंको प्राप्तहुई पीछे दुष्मन्तके शकुन्तला भार्य्यामें सब जीवों को दमन करनेवाला और दशहजार हाथियों के बल को धारण करनेवाला ९ और चक्रवर्त्ती और भरतनाम से विख्यात ऐसा पुत्रहुआ जिसके नाम से इस वंशमें भारत कहाये हैं १० और एकसमय में जब दुष्मन्त राजाने शकुन्तलारानीको ग्रहण नहीं किया तब दुष्मन्त राजाके प्रति आकाशवाणी कहने लगी मातातोभस्रा अर्थात् लोहार की फूकनी के समान होतीहै और जिस से उपजाहै उसीपिताका पुत्र कहावै है ११ इसवास्ते हे दुष्मन्त राजन् पुत्र की पालनाकर और शकुन्तला का अपमान मतकरै और अपने वीर्य से उपजा पुत्र उत्तमलोकों में लेजाया करताहै १२ और यह बालक तेरे से उपजाहै ऐसे शकुन्तला ठीककहती है पीछे राजाभरतके पुत्र माताओं के कोपसे नष्टहोगये १३ हे जनमेजय यह मे तेरेप्रति कहताभयाहूं पीछे मरुत देवताओं ने बृहस्पतिका १४ पुत्र भरद्वाज भरतका पुत्र बनाया और यही भरद्वाज के व्याख्यानको कहताहूं और भरद्वाजमुनि मरुतयज्ञ करताभया १५ तब भरद्वाज के वितथनाम पुत्रहुआ १६ जब वितथका जन्म होताभया तब भरतराजा स्वर्गलोक को प्राप्तहुआ पीछे वितथ को राज्यपै स्थापितकर भरद्वाज वनकोगया १७ पीछे वितथ के सुहोत्र सुहोता गय गर्ग कपिल इन नामोंवाले पांच पुत्रहुये १८ पीछे सुहोत्रके काशिक और गृत्समती इन नामोंवाले दोपुत्रहुये १९ पीछे गृत्समती के ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ऐसे बहुतसे पुत्रहुये अब अजमीढ के वंशको श्रवण कीजिये २० अजमीढ के नीलनीरानी में सुशान्ति पुत्रहुआ पीछे सुशान्ति के पुरुजानी पुत्रहुआ पीछे

पुरुजाती के वाह्याश्व पुत्रहुआ २१ पीछे वाह्याश्वके देवताओं के समान उपम वाले और मुद्गल सृञ्जय बृहदीपु २२ यवीनर कृमिलाश्व इन नामोंवाले पांचपु हुये इन्होंने बहुतसे देशोंकी पालनाकरी २३ इसीवास्ते पञ्चालनामसे विख्या हुये २४ पीछे मुद्गल के अतियशवाला मौद्गल्य पुत्रहुआ २५ पीछे मौद्गल्य के सुमहायशा ब्रह्मर्षिपुत्रहुआ २६ और जिसके सकाशसे इंद्रसेना बध्रश्वनामवाले पुत्रको प्राप्तहुई पीछे बध्रश्वके मैनकारानी में २७ दिवोदासराजा और अहल्या कन्या ये दोनों जन्मतेभये पीछे अहल्या भार्य्यामें शरद्वान् अर्थात् गौतमसे २८ ऋषियों में श्रेष्ठ शतानन्द पुत्रहुआ पीछे शतानन्दके धनुर्वेदके पारको जानने वाला सत्यधृति पुत्रहुआ २९ पीछे एकसमय में अप्सरा को देखके इसी सत्य धृतीकावीर्य शरों के वनमें स्खलित होगया तब उस वीर्य से एक लड़का और एक लड़की पैदा होतीभई ३० पीछे शान्तनु राजा वनमें शिकारकेवास्ते गया तहां उस लड़का लड़कीको देख कृपासे ग्रहण करलिया था इसीवास्ते उस लड़काकानाम कृपा और लड़कीकानाम कृपी धरदियागया ३१ ऐसे गौतमों का वंश प्रकाशित कियागयाहै अब दिवोदासके वंशको वर्णन करते हैं ३२ दिवो दासके ब्रह्मर्षिरूप मित्रयुपुत्रहुआ पीछे मित्रयुके सोमपुत्रहुआ ऐसे मैत्रेयनाम वालोंका भी वंश प्रकाशित किया ३३ और महात्मारूप सृञ्जयके पञ्चजन पुत्र हुआ ३४ पीछे पञ्चजनके सोमदत्त पुत्रहुआ पीछे सोमदत्तके सहदेव पुत्रहुआ ३५ पीछे सहदेव के सोमक पुत्रहुआ ३६ पीछे सोमक के जन्तु पुत्रहुआ पीछे जन्तुके सौपुत्रहुये तिन्हों में युवापुत्र पृषत्नामसे विख्यात द्रुपदका पिताहुआ ३७ पीछे पृषत् के द्रुपदहुआ पीछे द्रुपद के धृष्टद्युम्न पुत्रहुआ पीछे धृष्टद्युम्नके धृष्टकेतु पुत्र हुआ ऐसे सोमकवंश भी प्रकाशित कियागया ३८ और एकसमयमें धूमनीनामवाली अजमीढ राजाकी रानी व्रत आदिमें समन्वितहोके ३९ पुत्रकी प्राप्तिके अर्थ दशहजार वर्षोंतक उग्रतप करतीभई और अग्निमें हवनकरके पवित्र और परिमित भोजन करनेलगी ४० तब एकसमय में अग्निहोत्र की कुशाओं पै हे जनमेजय शयन करती भई तब उस धूमनी रानी के सग अजमीढ राजा विषय करताभया ४१ तब धूम्रवर्णवाला और सुन्दर दर्शनवाला और ऋक्षनाम से विख्यात ऐसा पुत्र उपजा पीछे ऋक्षके सवर्ण पुत्रहुआ पीछे सवर्ण के कुरु पुत्रहुआ ४२ इसी कुरुने प्रयागमें आके पवित्र और रमणीय और महात्माज

नोंसे सेवित ऐसा कुरुक्षेत्र विख्यात करदिया ४३ और इसकावंशभी अतिबड़ा हुआहै जिसमें सब मनुष्य कौरव नामसे विख्यात होतेभये पीछे कुरुके सुधन्वा सुधनु परीक्षित अरिमेजय इन नामोंवाले चारपुत्र हुये ४४ पीछे सुधन्वा के सुहोत्र पुत्रहुआ ४५ पीछे सुहोत्र के धर्म्मार्थ को जाननेवाला च्यवन पुत्र हुआ पीछे च्यवनके कृतयज्ञ पुत्रहुआ पीछे यही कृतयज्ञ यज्ञोंके द्वारा धर्मको जानने वाला ४६ यही कृतयज्ञ वैद्यारानी में इन्द्रकेसमान आकाशचारी और वीर और वसुनाम से विख्यात ऐसा पुत्र उपजाताभया ४७ पीछे वसुके गिरिका रानी में महारथ मगधराट् बृहद्रथ ४८ कुश मारुत यदु मत्स्यवाली ऐसे नामोंवाले सात पुत्रहुये ४६ पीछे बृहद्रथके कुशाग्र पुत्रहुआ पीछे कुशाग्रके वृषभपुत्र हुआ ५० पीछे वृषभ के पुष्पवान् पुत्र हुआ पीछे पुष्पवान् के सत्यहित पुत्र हुआ पीछे सत्यहित के धर्मको जाननेवाला ऊर्जपुत्र हुआ ५१ पीछे ऊर्जकी रानीके शरीरसे दोभाग अलग २ पैदाहुये पीछे जरा राक्षसी ने दोनोंभाग जोड़दिये इस वास्ते जरासन्ध नामवाला पुत्रहुआ ५२ इसने सब क्षत्रिय जीते और यह अतिबलवाला हुआ पीछे जरासन्ध के प्रतापवाला सहदेव पुत्र हुआ ५३ पीछे सहदेवके उदायु पुत्र हुआ पीछे उदायुके परम धार्मिक ५४ श्रुतशर्मा पुत्रहुआ यह मगध देशमें वासकरता भया और पूर्वोक्त परमधार्मिक जनमेजय पुत्रहुआ ५५ पीछे जनमेजयके उग्रसेन भीमसेन इननामोंवाले महारथी तीनपुत्रहुये ५६ और जनमेजयके सुरथ और मतिमान् इन नामोंवाले दोपुत्र अन्यभीहुए ५७ पीछे सुरथके विदूरथ पुत्रहुआ पीछे विदूरथके महारथी ऋक्षपुत्र हुआ ५८ और हे राजन् आपके वंशमें दो ऋक्षराजा हुएहैं और दो परीक्षित हुएहैं ५६ और तीन भीमसेन और दो जनमेजय ऐसे हुए हैं पीछे दूसरे ऋक्षके भीमसेन पुत्र हुआ ६० पीछे भीमसेन के प्रतीप पुत्रहुआ पीछे प्रतीपके महारथी और शान्तनु देवापि वाह्लिक इन नामोंवाले तीन पुत्रहुए ६१ पीछे शान्तनु को वंश यहहै जिसमें आप उपजे और वाह्लिकका सप्तरत्नोंको वहनेवाला राज्यहुआ ६२ पीछे वाह्लिक के महायशवाला सोमदत्त पुत्र हुआ पीछे सोमदत्त के भूरि भूरिश्रवा शल इन नामोंवाले तीनपुत्र हुए ६३ और पूर्वोक्त देवापि राजा देवताओं का उपाध्याय हुआ और च्यवनके कृतनामवाले पुत्रकेसंग इसकी मित्रताहुई ६४ पीछे यह शान्तनु राजा कौरवों में प्रतापी हुआ अब शान्तनु के वंशको कहने

हैं जहां हे राजन् तुम जन्मेहो ६५ पीछे शान्तनुके गंगारानी मे देवव्रत नामसे विख्यात पुत्रहुआ पीछे यही देवव्रत कौरवों का पितामह भीष्मनाम से ख्याति को प्राप्तहुआ ६६ पीछे शांतनु राजासे कालीरानी में धर्मात्मा विचित्रवीर्य पुत्र हुआ ६७ पीछे वेदव्यासजी विचित्रवीर्यकी रानियों में धृतराष्ट्र पाण्डु विदुर इन्हों को उपजाते भये ६८ पीछे धृतराष्ट्र गान्धारी रानी में १०० पुत्रोंको उपजाता भया तिन्हों में ज्येष्ठ पुत्र दुर्य्योधन राजाहुआ ६९ और पाण्डु के अर्जुन पुत्रहुआ अर्जुनके अभिमन्यु हुआ पीछे अभिमन्युके परीक्षित पुत्र हुआ ७० पीछे परीक्षित के हे राजन् जनमेजय अर्थात् आप पुत्र हुए हैं ऐसे कौरववंश प्रकाशित कियागया अब तुर्वसु द्रुह्यु अणु यदु इन्हों के वंश कहेजाते हैं ७१ तुर्वसुके वह्नि पुत्र हुआ पीछे वह्निके गोभानु पुत्रहुआ पीछे गोभानु के त्रैशानु पुत्रहुआ ७२ पीछे त्रैशानु के करन्धम पुत्र हुआ पीछे करन्धम के मरुत पुत्र हुआ ७३ पीछे इस राजाने यज्ञबहुतकरी परन्तु पुत्रकी संतान नहींहुई किंतु सम्मता नामवाली एक पुत्रीहुई ७४ पीछे दक्षिणा की जगह संवर्तके अर्थ दीगई तब तिसपुत्री में दुष्मन्त पुत्रहुआ है ७५ ऐसे ययातिराजा के शापसे तुर्वसुका वंश पौरव वंशमें मिलगयाहै ७६ पीछे दुष्मन्तके करुत्थाम पुत्रहुआ पीछे करुत्थामके आक्रीड़ पुत्रहुआ ७७ पीछे अथाक्रीड के पाण्ड्य केरल कोल चोल इन नामोंवाले चार पुत्रहुए जिन्होंके नामसे पाण्ड्य चोल केरल कोल ऐसे देश विख्यात हुएहैं ७८ और द्रुह्युके बभ्रु और सेतु इन नामोंवाले दो पुत्रहुए पीछे सेतुके अङ्गार पुत्र हुआ यह मरुतों का पतिहुआ ७९ इसकेसङ्ग यौवनाश्व राजा का चौदह महीनों तक युद्ध रहा परन्तु अतिकष्टसे यौवनाश्वने यह मारदिया ८० पीछे अङ्गार के गान्धार पुत्रहुआ जिसके नामसे गान्धार देश विख्यातहै ८१ और गान्धार देशमें अतिउत्तम अश्व उपजते हैं और अणुके धर्म पुत्रहुआ पीछे धर्म्म के घृत पुत्रहुआ ८२ पीछे घृतके दुदुह पुत्रहुआ पीछे दुदुहके प्रचेता पुत्रहुआ पीछे प्रचेताके सुचेता पुत्रहुआ ऐसे अणुका वंश भी प्रकाशित किया ८३ अब मैं ज्येष्ठ और उत्तम तेजवाले ऐसे यदुका वंश विस्तार से कहताहूं आप श्रवण कीजिये ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपूरुवंशानुकीर्त्तनेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तैंतीसवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे यदुके देवपुत्रोंके समान और सहस्रद पयोद क्रोष्टा नील अञ्जिक इननामोंवाले पाच पुत्रहुये १ पीछे सहस्रदके परमधार्मिक हैहय हय वेणुहय इन नामोंवाले तीनपुत्रहुए २ पीछे हैहयके धर्मनेत्र पुत्रहुआ पीछे धर्मनेत्रके कार्त्त पुत्रहुआ पीछे कार्त्तके साहंज पुत्रहुआ ३ जिसने साहजनी नाम पुरीरची पीछे साहंजके महिष्मान् पुत्रहुआ ४ जिसने माहिष्मती पुरीरची पीछे महिष्मान् के भद्रश्रेण्य पुत्रहुआ ५ यह काशी का राजाहुआ पहले कह चुकेहैं पीछे भद्रश्रेण्यके दुर्द्दमनाम पुत्रहुआ ६ पीछे दुर्द्दम के कनक पुत्रहुआ पीछे कनकके लोकमें विख्यात ७ और कृतवीर्य कृतौजा कृतकर्मा कृताग्नी इन नामोंवाले चार पुत्रहुए पीछे कृतवीर्य के अर्जुन पुत्रहुआ ८ जिसने हजारबाहुओंके प्रताप से सातद्वीपों में राज्यकिया यह सूर्य्य के समान तेजवाले रथसे अकेला पृथ्वी को जीतताभया ९ और यही दशहजार वर्षों तक उग्रतप करके अत्रिकेपुत्र दत्तात्रेयजीकी पूजाकरताभया तब दत्तात्रेयजीने चार वरदिये तिन्हों में अर्जुनने कहा कि मेरे हजारभुजा होजावें प्रथम यह वरमागा १० पीछे कहा कि अधर्म में प्राप्तहुये मेरेको सत्पुरुष निवारणकरें यह दूसरा वरमांगा पीछे उग्र कर्त्तव्यसे पृथ्वीको जीत पीछे धर्मकरके प्रसन्नकरू ऐसे तीसरा वरमागा ११ पीछे बहुतसे संग्रामोंको जीत और हजारहों शत्रुओंको मार उग्रसग्राम में मेरेसे अधिक पुरुषके हाथ मेरी मृत्युहोवे यह चौथा वरमागा १२ तब हे राजन् योगेश्वर रूप इस अर्जुन राजाके युद्धके वक्त हजारबाहु प्रकटहोनेलगे १३ तब इस राजा ने सातद्वीप पर्वत समुद्र नगर इन्हों से सयुक्त सम्पूर्ण पृथ्वीजीती १४ पीछे इसीने सातों द्वीपोंमें सातसौ यज्ञकिये १५ और सबयज्ञों में जहा एक दक्षिणाथी उस जगह लक्षदक्षिणादी और सब यज्ञों में सुवर्ण के यज्ञस्तम्भ और सुवर्णकी वेदी बनाई १६ और सब यज्ञों में विमानों पै स्थित और भूषणों से भूषित ऐसे देवते गन्धर्व अप्सरा नित्यप्रति समीप मे प्राप्तहैं १७ और जिसकी यज्ञमें महिमासे विस्मितहुआ वरीदासका पुत्र नारदनामसे विख्यात गन्धर्व ने गाथागाई है १८ वह गाथाकही जाती है नारद कहनेलगा यज्ञ दान तप पराक्रम श्रुत इन्होंकरके इस सहस्रबाहु अर्जुन राजाकी गतिको राजे नहीं प्राप्तहोवेंगे १९ और लाद

भई पीछे गान्धारी में महाबलवाला अनमित्र पुत्र उपजा १ और माद्रीरानी में युधाजित और देवमीढुष इननामोंवाले दो पुत्रहुए ऐसे तीनप्रकारसे वंशचला २ पीछे युधाजितके वृष्णी अंधक इननामों से विख्यात दो पुत्रहुए पीछे वृष्णी के स्वफल्क और चित्रक इननामोंवाले दो पुत्रहुए ३ और हे महाराज यह धर्मात्मा स्वफल्क जिस देशमें बसै तिस देशमें व्याधिका भय और अनावृष्टिका भय होवे नहीं ४ पीछे एक समयमें काशिराज के राज्यमें तीन वर्षतक इन्द्र ने वर्षा नहींकरी ५ तब उसराज्यमें यही स्वफल्क बसायागया तब इन्द्रने वर्षाकी ६ तब काशीका राजा स्वफल्क के अर्थ गान्जनी नामवाली पुत्रीको देताभया और यह गांझनी रानी ब्राह्मणों के अर्थ नित्यप्रति गायोंका दानकिया करती ७ क्योंकि जब अपनी माताके पेटमें स्थित बहुतसे वर्षोंतक जन्म नहीं लेतीभई तब इसके अर्थ पिता कहनेलगा ८ हे गर्भ तू जल्द जन्मको प्राप्तहो तेरेको सुख प्राप्तहोगा किसवास्ते उदरमें स्थित रहताहै तब गर्भस्थित यह कन्या कहनेलगी कि नित्यप्रति मैं गायोंका दानकिया करूंगी ९ जो आप इस कहनेको मानो तो मैं जन्म लेऊं तब इसके वचनको सुन पिताने नित्यप्रति गायका देना अंगीकार किया तब जन्मी १० पीछे स्वफल्कके दाता और यज्ञ करनेवाला और वीर बहुत दक्षिणा देनेवाला और वेदों के अर्थ को जाननेवाला और अतिथि अर्थात् अभ्यागतोंमें मित्रता करनेवाला ऐसा अक्रूर पुत्रहुआ ११ और उपमद्गु १ मद्गु २ मुदर ३ अरिमेजय ४ अविक्षिप ५ उपेक्ष ६ शत्रुघ्न ७ अरिमर्दन ८ धर्मधृक ९ यतिधर्म्मा १० गृध्र ११ मोजा १२ अंतक १३ अवाह १४ प्रतिवाह १५ ये पन्द्रहपुत्र और सुन्दरी नामवाली एक कन्या १२ ये भी सब स्वफल्क की रानीमें उपजे पीछे अक्रूरके उग्रसेना रानीमें देवताके तेजको धारणकिये प्रसेन और उपदेव इननामोंवाले दो पुत्रहुए १३ और पूर्व्वोक्त चित्रकके पृथु विपृथु अश्वग्रीव अश्ववाहु सुपार्श्वक गवेषण १४ अरिष्टनेमि अश्व सुधर्मा धर्मभृत सुबाहु बहुबाहु इननामोंवाले पुत्र और श्रविष्ठा और श्रवण इननामोंवाली दो कन्या पैदाहुईं १५ और पूर्व्वोक्त देवमीढुष के अश्म की रानीमें शूर पुत्रहुआ पीछे शूरके भोज्या रानी में दशपुत्रहुये १६ तिन्हों में से वसुदेवके जन्मके वक्त आकाशमें नकारे बाजतेभये १७ और शूरके स्थानमें फूलों की वर्षा होनेलगी १८ और इस वसुदेवके समान रूपमें इस मनुष्य लोकमें कोई भी नहींहुआ और

चन्द्रमाके समान कांतिको धारण करताभया १९ और वसुदेवके जन्म के पीछे देवभाग देवश्रवा अनाधृष्टि कनवक वत्सवान् गृञ्जिम २० स्याम शमीक गंडूप इननामोंवाले ६ पुत्र शूरके अन्य उपजे और पृथुकीर्ति पृथा श्रुतदेवा श्रुतश्रवा २१ राजाधिदेवी इननामोंवाली पाच पुत्रीभी शूरसेनकेहुई पीछे पृथाको मातामह कुंतिभोज राजा मागताभया २२ तब शूर राजा कुंतिभोजके अर्थ पृथाको देताभया इसवास्ते कुन्तिभोजकी पुत्री पृथाकानाम कुन्तिहुआ २३ और अत्य राजाके श्रुतदेवामें जगृहु पुत्रहुआ और चैद्यके श्रुतश्रवा रानी में २४ पूर्व जन्म में हिरण्यकशिपु नाम से विख्यात दैत्यराज और महाबलवाला ऐसा शिशुपाल पुत्रहुआ २५ और वृद्धशर्मा के पृथुकीर्ति रानी में करूपदेशका पति और वीर २६ और अति बलवाला ऐसा दन्तवक्र पुत्रहुआ और कुन्तिभोजकी पुत्री कुन्तीको पाण्डु राजा विवाहताभया २७ जिसमें धर्मराजके सकाशसे धर्म्मोंका जाननेवाला युधिष्ठिर पुत्र उपजा पीछे वायु के सकाश से भीमसेन पुत्र उपजा पीछे इन्द्रके सकाशसे मनुष्य लोकमें जिसके समान कोई भी योद्धा नहीं और इन्द्रके समान पराक्रमवाला ऐसा अर्जुन २८ पुत्रहुआ और पूर्वोक्त वृष्णिवंश में हुये अनमित्र राजाके शिनि पुत्रहुआ २९ पीछे शिनि के सत्यक पुत्रहुआ पीछे सत्यकके सात्यकी पुत्रहुआ पीछे सात्यकी के भूमि पुत्रहुआ पीछे भूमिके युगन्धर पुत्रहुआ ३० और पूर्वोक्त वसुदेव के भ्राता देवभाग के महाभाग्यवाला और पण्डितोंमें श्रेष्ठ ऐसा उद्धव पुत्रहुआ ३१ और अनाधृष्टि के अश्मकी रानी में अति यशवाला निवर्तशत्रु पुत्रहुआ ३२ और देवश्रवाके शत्रुघ्न पुत्रहुआ इसकी जन्मतेही निषादोंने रक्षाकरी और ३३ उन्हेंहीं में रहा इसवास्ते एकलव्य नाम से विख्यात यह भील कहाया यह श्रुतदेवा के पुत्र उपजाहै ३४ और वत्सावान्के सन्तानहुई नहीं तब वसुदेव कौशिक नामवाले पुत्रका उसके अर्थ देताभया ३५ और जब गडूपके सतान नहीं हुई तब श्रीकृष्ण चारुदेष्ण सुचारु पचाल कृतलक्षण इन नामोंवाले चार पुत्रोंको उसके अर्थ देतेभये ३६ और जो सग्राम से कभी भी निवृत्त नहीं हो और रुक्मिणी में उपजा छोटा पुत्र हो ३७ और जिसके चलनेकेसमय पीछे२ हजारहों काग गेल चलाकरते और चारुदेष्ण के दिये हुये मिष्ट पदार्थों को भोजन कियाकरते ३८ ऐसा चारुदेष्णहुआ और पूर्वोक्त कनवकके तंद्रिज और तन्द्रिपाल इन नामोंवाले दो पुत्रहुये ३९ और

गृञ्जिमके वीर और अश्वहनु इन नामोंवाले दो पुत्रहुये और श्यामके शमीक पुत्रहुआ ४० यह भोज सञ्ज्ञावाला होनेसे अपनेको निन्दित मानताहुआ राजा उत्तम राज्यको प्राप्तहुआ पीछे शमीकके जातशत्रु पुत्रहुआ ४१ अब वसुदेव के पुत्रोंका वंश कहा जाताहै तिन्हों को श्रवणकर ऐसे बहुत शाखावाला ४२ और तीनप्रकारसे संयुक्त ऐसे वृष्णी के वंशको धारण करने से अनर्थभागी मनुष्य नहीं होताहै ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांपंचत्रिंशोऽध्याय ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे वसुदेवके १४ चौदह भार्य्या हुईं तिन्हों के नाम पौरवी १ रोहिणी २ मदिरा ३ धरा ४।१ वैशाखी ५ भद्रा ६ सनात्री ७ सहदेवा ८ शांतिदेवा ९ सदेवा देव रक्षिता १०।२।३ रक्षिकदेवी उपदेवी ११ देवकी १२ सुतनु १३ वडवा १४ ऐसे हैं इन्हों में अन्तकी दो भोगपत्नी हुईं ४ और पौरवी रोहिणी वाह्लीक की पुत्रीहुई और वसुदेवजी की यही वडी पटरानी हुई ५ इस रोहिणी में वसुदेवजी के सकाशसे राम सारण शठ दुर्द्दम दमन श्वभ्र पिण्डारक उशीनर इन नामोंवाले आठ पुत्र ६ और चित्रा और सुभद्रा नामवाली दो २ पुत्रीहुई ऐसे दश संतान रोहिणी के जानो ७ और वसुदेवजी से देवकी रानी में अति यशवाले श्रीकृष्णजी जन्मे पीछे रामसे रेवती में निशठ पुत्रहुआ ८ और सुभद्रामें अर्जुनसे अभिमन्यु पुत्रहुआ और अक्रूरसे काशरि कन्या रानी में सत्यकेतु पुत्रहुआ ९ और वसुदेवकी सात रानियोंमें जो पुत्र उपजे हैं तिन्हों को श्रवणकर १० शांति देवारानी के भोज और विजय इन नामोंवाले दो दो पुत्रहुये और सुदेवा रानी के वृकदेव और गद इन नामोंवाले दो पुत्रहुये ११ और वृकदेवी रानी में अवगाह पुत्रहुआ और एक समय में देवक राजा का पुरोहित गार्ग्य मुनिहुआ तिसका यादवपक्ष में रहनेवाला कोइक पुरोहित १२ उक्त मुनिके पौरुषकी परीक्षा के वास्ते अपने हाथसे मुनि के लिंगको छूताभया तब गार्ग्य मुनिका वीर्य्य स्खलित न हुआ और न लिंगका उत्थान हुआ १३ तब वह पुरोहित यादवोंकी सभामें गार्ग्य मुनिको नपुंसक बताताभया तब सब यादव हँसनेलगे तब इस आख्यानको सुनके क्रोधसे प्राप्तहुआ मुनि १४ काले

लोहे के समान होगया पीछे बारहवें वर्ष में कोपकी शांति होनेसे गोपकी स्त्री के वेषके धारण करनेवाली गोपाली नामवाली अप्सराके संग भोग करताभया १५ तब गार्ग्य के सकाशसे और महादेवजी की कृपासे उस मनुष्य रूप गार्ग्य की भार्य्या में गर्भ ठहर १६ पीछे अति बलवाला कालयवन नाम से विख्यात बालक जन्मा १७ इसको रणमें बैलके पूर्वार्द्ध शरीरके समान शरीरवाले अश्व वहतेभये पीछे पुत्रकी संतानसे रहित यवन राजा के स्थानमें वृद्धिको प्राप्तहुआ इसीवास्ते इसको कालयवन कहते हैं १८ पीछे यह युद्धकी कामना से ब्राह्मणों से पूछनेलगा १९ तब नारदमुनिने इसके अर्थ वृष्णियों का कुल युद्ध करनेके वास्ते बताया पीछे एक अक्षौहिणी सेना लेके मथुरापुरी के समीप में आ २० वृष्णि कुल में अपने दूत को भेजताहुआ तब वृष्ण्यंधक वंश के सब मनुष्य श्रीकृष्ण के आश्रय होके २१ कालयवनके भयसे इकट्ठेहुये विचार करनेलगे तब सबोंकी बुद्धि में यही निश्चय हुआ कि यहां से भागनाही मुख्यहै २२ तब रमणीक मथुरापुरी को त्याग के उस कालयवनको शिवरूप मानतेहुये द्वारका पुरी में प्रवेश करने की इच्छा करनेलगे २३ और पवित्रत्व जितेन्द्रिय ऐसा मनुष्य इस कृष्णके जन्मको पूर्वकालमें श्रवण करावे वह सब प्रकारके ऋणों से रहित होके सुखको प्राप्त होताहै २४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांपट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे क्रोष्टु के अति यशवाला वृजनीवान् पुत्र हुआ पीछे वृजनीवान् के स्वाही और स्वाहा कृताम्बर इन नामोंवाले दो पुत्र हुये १ पीछे स्वाहीके उपद्गु पुत्रहुआ इसने बहुत दक्षिणाओं से संयुक्त अनेकप्रकारके यज्ञ करे २ तिन्होंके प्रतापसे चित्ररथ पुत्रहुआ ३ पीछे चित्ररथके वीर और यज्ञकरने वाला और विपुल दक्षिणा देनेवाला और राजर्षि ऐसा शशिबिन्दु पुत्रहुआ ४ पीछे शशिबिन्दु के और अति यशवाला पृथुश्रवा पुत्रहुआ ५ पीछे पृथुश्रवाके उत्तर और सुयज्ञ ऐसे दो २ पुत्रहुए पीछे सुयज्ञके ऊशन पुत्रहुआ पीछे ऊशन के स्नेयु पुत्रहुआ ६ पीछे स्नेयु के मरुत पुत्र हुआ ७ पीछे मरुतके कम्बल-बर्हिष पुत्र हुआ पीछे इस कम्बलबर्हिष ने विपुल धर्म्म किया ८ जिसके सतम-

सूति पुत्र हुआ पीछे सतप्रसूति के रुक्मकवच पुत्र हुआ ९ यह रुक्मकवच अच्छे धनुष् वाले और अच्छे कवचवाले ऐसे १०० राजाओं को पैने बाणों से मार के उत्तम शोभा को प्राप्त हुआ १० पीछे रुक्मकवच के वीरों को मारने वाला पराजित् पुत्र हुआ पीछे पराजितके अति वीर्यवाले ११ रुक्मेषु पृथुरुक्म ज्यामघ पालितहरि इन नामोंवाले पांच पुत्र हुए और पराजित् पालित और हरि इन दो पुत्रोंको विदेहोंके अर्थ देताभया १२ पीछे पृथुरुक्मके आश्रयसे रुक्मेषु राजाहुआ पीछे इन दोनोंने ज्यामघको निकासि दिया तब वह आश्रम में वसा १३ पीछे प्रशान्त व अप्रशान्त ऐसे ज्यामघको ब्राह्मणों ने बोधकराया तब धनुष्को धारणकर रथमें प्राप्तहो १४ नर्मदाके किनारे पै विचारता हुआ मेकलामृत्तिकावति ऋक्षवान् पर्वत इन्हों को जीतके शुक्तिमती पुरी में वसताभया १५ पीछे इस ज्यामघ राजाके शैब्यानामवाली और सती ऐसी रानी हुई इस राजाके पुत्रकी संतानभी नहींहुई परन्तु अन्य भार्य्याके वास्ते नहीं इच्छा करताभया १६ पीछे एक समयमें इस राजाने युद्धमें विजय पाया तहां एक कन्या प्राप्तहुई उस कन्याको ग्रहणकर अपनी रानीसे कहनेलगा यह तेरे पुत्रकी वधू है १७ यह सुनके रानी कहनेलगी मेरे तो पुत्र नहीं उपजा है कैसे तू इसको वधू मानताहै १८ तब ज्यामघ राजा कहनेलगा इसीकन्याकेतपसे वृद्धरूपवाली तेरे सकाशसे विदर्भ पुत्रहोगा उसकी यह वधू है १९ पीछे विदर्भके इसी वधू में विदर्भके शूरवीर और युद्धमें विशारद ऐसे क्रथ और कौशिक इननामोंवाले दो पुत्र २० और भीमनामवाला तीसरा पुत्र पीछे भीमके कुन्तीपुत्र हुआ २१ पीछे कुन्तीके धृष्टपुत्र हुआ पीछे धृष्टके परमधार्मिक २२ आवन्त दशार्ह विपहर ऐसे तीनपुत्र हुये पीछे दशार्हके व्योमा पुत्र हुआ पीछे व्योमाके जीमूत पुत्र हुआ २३ पीछे जीमूतके वृकती पुत्रहुआ पीछे वृकतीके भीमरथ पुत्रहुआ पीछे भीमरथके नवरथ पुत्रहुआ २४ पीछे नवरथके दशरथ पुत्रहुआ पीछे दशरथ के शकुनी पुत्रहुआ पीछे शकुनी के करम्भ पुत्रहुआ पीछे करम्भके देवरात पुत्र हुआ २५ पीछे देवरातके देवक्षत्र पुत्रहुआ पीछे देवक्षत्र के देवों के समूहके समान अति यशवाला देवक्षत्रि पुत्रहुआ पीछे देवक्षत्रि के २६ मीठीवाणीवाला मधु पुत्रहुआ पीछे मधुके वैदर्भीरानीमें पुरुद्वान् पुत्रहुआ २७ पीछे पुरुद्वान्के रोद्राकी भार्य्यामें सब गुणों से संयुक्त और सात्वतों की कीर्त्तिको बढ़ानेवाला

ऐसा सत्वान् पुत्रहुआ २८ ऐसे ज्यामघ राजाके वंशको जानने से भजानाला पुरुष होके परमप्रीति को प्राप्त होताहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे सत्त्वसे संयुक्त और भजिन भजमान दिव्य देवावृद्ध अन्धक वृष्णि इननामों वाले १ सात्वत पुत्रोंको कौशल्या रानी जनती भई २ पीछे भजमानके बाह्यक और उपबाह्यक इन नामोंवाली दो भार्य्याहुई पीछे भजमानके बाह्यक भार्या में ३ कृमिद क्रमण धृष्ण शूर पुरञ्जय इननामोंवाले पाच पुत्रहुये और इसीभजमान के उपबाह्यक रानी में ४ अयुताजित् सहस्राजित् शताजित् दासक इननामोंवाले चार पुत्रहुये ५ और पूर्व्वोक्त देवावृधराजा उत्तम पुत्रकी प्राप्तिकेवास्ते उग्रतपको करनेलगा ६ पीछे आत्माका ध्यानकर पर्णाशा नदीके जलको हमेशा छुवनेलगा तब पर्णाशा नदी इसराजाके सङ्ग प्यारकरती भई ७ और विचारनेलगी कि जैसे पुत्रकी राजा वांछाकरैहै तैसापुत्र इसरानी में नहींहोगा ८ तब पर्णाशा नदी परमरूपसे सयुक्त कुमारी कन्याके रूपको धारण कर राजाको वरतीभई ९ और तिस कन्याको राजा भी अगीकार करताभया १० तब तिसरानी में अति तेजवाला गर्भ ठहरा पीछे वह नदीरूप रानी दशवें महीने में ११ सबगुणोंसे सयुक्त और बभ्रुनामसे विख्यात ऐसे पुत्रको जन्मतीभई और इसवंशमें पुराणको जाननेवाले ऐसे भी गानकरतेहुये १२ मैंने सुने हैं कि देवावृधके गुणोंको जैसे सम्मुख कहा करते हैं तैसे दूरसे भी करतेरहे हैं १३ पीछे मनुष्योंमें श्रेष्ठबभ्रु और देवताओंके समान देवावृधहुआ और सातहजार छांसठ ७०६६ पुरुष १४ और बभ्रुदेवावृध ये सब अमृत्व को प्राप्तहुये और यज्ञका करनेवाला दानका देनेवाला विद्वान् और ब्रह्मण्य ऐसा बभ्रुका वंशहुआ १५ जिसमें मार्तिवत् आदि भोजहुये और अन्धक के काश्यपकी पुत्री में १६ कुकुर भजमान शमकम्बल बर्हिष इन नामों वाले चार पुत्र हुये पीछे कुकुर के धृष्णु पुत्र हुआ पीछे धृष्णु के १७ कपोतरोमा पुत्र हुआ पीछे कपोतरोमा के तैत्तिरि पुत्रहुआ पीछे तैत्तिरिके पुनर्वसु पुत्रहुआ पीछे पुनर्वसुके अभिजित् पुत्र हुआ १८ पीछे अभिजित् के आहुक पुत्र और आहुकी पुत्री ये दो सन्तानहुई १९

और यहां आहुक के प्रति ऐसी गाथाको गानकरते हैं शुद्ध परिवार करके युक्त और किशोरके समान उपमावाला २० ऐसा आहुक जब गमन कियाकरता तब पुत्रोंवाले और उदारचित्तवाले और हजारों शस्त्रोंवाले २१ और शुद्धकर्मवाले और यज्ञ करनेवाले ऐसे जन राजाके चारोंतरफ गमन कियाकरते और तिसके पूर्वदिशामें ध्वजावाले दशहज़ार हाथी चलाकरते २२ और मेघके समान शब्दवाले दशहज़ार रथभी चलाकरते २३ और तिससे उत्तरदिशामें इक्कीसहज़ार २१००० हाथी और इक्कीसहज़ार रथभी चलाकरते २४ और वे अंधक फिर आहुकी नामवाली बहिनको आहुकी को अवंतियोंके अर्थ देतेभये २५ और आहुकके काश्यारानी में देवगर्भों के समान और देवक उग्रसेन इननामों से विख्यात दो पुत्रहुये पीछे देवकके देवताओं के समान २६ देववान् उपदेव सन्देव देवरक्षित इन नामोंवाले चारपुत्र २७ और देवकी शांतिदेवा सन्देवा देवरक्षिता २८ गदेवी उपदेवी सुनाम्नी इन नामोंवाली सातपुत्री हुईं ये, सातो वसुदेव से विवाही गईं २९ और उग्रसेन के कंस न्यग्रोध सुनामा कंकु शंकु सुभूपण ३० राष्ट्रपाल सुतनु अनाधृष्टि इननामोंवाले नौ पुत्र ३१ और कंसा कंसवती सतनू राष्ट्रपाली कंका इन नामोंवाली पांचपुत्री हुईं ३२।३३ ऐसे इन सन्तानों मे संयुक्त कुकुरके वंश में होनेवाला उग्रसेन विख्यातहुआ इन अमित बलवाले, ३४ कुकुरों के वंश को धारण करने से उत्तमवंश और उत्तमप्रजाको मनुष्य प्राप्तहोताहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायामष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उनतालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पूर्वोक्त भजमान के विदूरथ पुत्रहुआ पीछे विदूरथ के राजाधिदेय पुत्रहुआ १ पीछे राजाधिदेय के अतिबलवाले दत्त अतिदत्त शोणाश्व श्वेतवाहन २ समीदत्त शर्मादत्त शत्रुगत्रुजित् इन नामोंवाले पुत्र और श्रवणा श्रविष्ठा इन नामोंवाली दो पुत्रीहुईं ३ और शमी के प्रतिक्षत्र पुत्रहुआ पीछे प्रतिक्षत्र के स्वयम्भोज पुत्रहुआ पीछे स्वयम्भोज के हृदिक पुत्रहुआ पीछे हृदिकके अतिपराक्रमवाले और कृतवर्मा शतधन्वा ५ भिषग वैतरण सुदान्त अतिदत्त इन नामोंवाले पुत्र और कामदा कामदन्तिका ६ इन नामोंवाली दो पुत्री हुईं और कम्बल बर्हिष के असमोजा और नाशमोजा इन नामोंवाले दो

पुत्रहुये ७ और जब असमोजा के संतान नहींहुई तब सुदष्ट्र सचरू कृष्ण इन नामोंवाले तीन पुत्रों को अधक देते भये ८ और पूर्वोक्त क्रोष्टु को गाधारी में अनमित्र पुत्र उपजा और माद्री में युधाजित् पुत्र उपजा ऐसे पहले कहचुके हैं ९ तिसी अनमित्र के निघ्नपुत्रहुआ पीछे निघ्न के प्रसेन और सत्राजित् इन नामोंवाले दो पुत्रहुये १० पीछे द्वारकापुरी में वसताहुआ स्यमंतक मणि को समुद्र से प्राप्तहुआ और यही सत्राजित् सूर्य्य का मित्रहुआ तब एक समय में प्रभातके वक्र रथमें बैठ ११। १२ समुद्रमें स्नानकरने के अर्थ और सूर्य के ध्यान के अर्थगया १३ तब सूर्य्यके अर्थ उपस्थान करनेलगा १४ तब स्पष्टमूर्तिवाला और तेज से संयुक्त मण्डलवाला ऐसा सूर्य सामने स्थित प्रतीत हुआ १५ तब सत्राजित् राजा कहनेलगा। हे देव जैसे तेजसे संयुक्त तुम्हारे को आकाश मार्ग में देखताहूं तैसेही अब मेरे सामने भी तेजसे संयुक्त प्रतीत होतेहो १६ इसलिये आपके संगमेरी मित्रतामें क्याविशेष हुआ ऐसे सुनके सूर्य स्यमंतक नामवाले मणिरत्नों को १७ अपने कण्ठसे उतार एकान्त में स्थापित करतेभये तब अति तेजरहित सूर्य्यको राजा देखताभया १८ और प्रीतिसे संयुक्तहो दोघडीतक कथा भी कहतभया और जब सूर्य्यनारायण चलनेलगे १९ तब राजा कहनेलगा। हे भगवन् जिस मणिसे तुम लोकों को प्रकाशित करतेहो वह मणिरत्न मेरेअर्थ देना उचित है २० तब उस स्यमंतक मणिको सूर्य सत्राजित् के अर्थ देताभया तब उस मणि को कण्ठ में बांध सत्राजित् द्वारका में प्रवेश करनेलगा २१ तब चारोंतरफ़ से द्वारकावासी मनुष्य दौडनेलगे कि यह सूर्यआता है ऐसे द्वारका में आश्चर्य देखके राजा अपने स्थानमें चलागया २२ पीछे दिव्यरूप स्यमंतक नामवाली इस मणिको प्रेमसे प्रसेनजित् भाई के अर्थ देताभया २३ और वह मणि नित्यप्रति सुवर्णको दिया करती और जहां वह मणिरहे तहां समय में वर्षा होवे और व्याधि का भयहोवे नहीं २४ इतने गुण मणि में विरयान होनेलगे और उस मणिको प्रसेन से श्रीकृष्ण लेने को चाहतेभये २५ परन्तु प्रसेनने दी नहीं और सामर्थ्यवाले भी श्रीकृष्ण उस मणि को हरने की इच्छा नहीं करते भये २६ पीछे एकसमय में उस मणिको धारणकर प्रसेन शिकार खेलने के वास्ते वनमें गया तब स्यमंतक मणिकेअर्थ उस प्रसेनको एक वनमें विचरनेवाला सिंह मारताभया २७ पीछे उस मणिको ग्रहणकर जब सिंह दौडनेलगा तबजानि

बलवाला जाम्बवान् ऋक्षराज सिंहकोमार मणिरत्नको ग्रहणकर अपने बिलके स्थानमें प्रवेश करताभया २८ पीछे सब द्वारकावासी प्रसेन के मरजाने से और इस स्यमतकमणि में कृष्णकी प्रार्थना रहाकरती इस वृत्तान्तको जानके सब शंकित होनेलगे २६ अर्थात् यह विचारनेलगे कि इस प्रसेनके मारनेमें श्रीकृष्ण शामिलहैं तब मिथ्या दोषसे संयुक्त और धर्मात्मा और तिस कर्मको नहीं करने वाले ऐसे श्रीकृष्ण कहनेलगे कि मणिको मैं लाऊंगा ऐसे प्रतिज्ञाकर वनकोगये ३० पीछे वनमेंजाकर जिस जगह प्रसेन शिकार खेलने लगाथा वहांसे घोड़ाके पैरों के चिह्नों के द्वारा खोजीपुरुषों से दिखातेहुये ३१ ऋक्षवान् और विन्ध्य इन पर्वतोंमें ढूंढतेहुये परिश्रम से सयुक्तहोगये ३२ तब अश्व सहित प्रसेनको प्राणों से रहित पृथ्वी में गिरेहुये को देखते भये परन्तु मणि नहीं मिली पीछे अगाड़ी से जाके ऋक्षराज का माराहुआ सिंहदेखा ३२ पीछे ऋक्षराज के पैरों के चिह्नों के अनुसार जाम्बवान् ऋक्षकी गुहाके समीपमें जाके प्राप्तहुये ३३ तब उसऋक्ष राजके बडे बिलमें औरतकी कहीहुई वाणी को सुनतेभये अर्थात् जाम्बवान् के पुत्रको मणिसे धाय माता खिलारही है और यह कहती है कि हे बालक तू मत रोवे ३४ और वही धाय माता यह भी कहती है कि प्रसेनको सिंहने मारा और सिंहको जाम्बवान् ऋक्षराजने मारा तब यह स्यमन्तक मणि मिली है इसवास्ते हे बालक रोवेमत यह मणि तेरीहै ३५ ऐसे प्रकट शब्द को श्रीकृष्ण भगवान् सुनके बिलके द्वारपै ३६ बलदेवजी सहित बहुतसे यादवों को स्थापितकर वेगसे उस ऋक्षराजके बिलमें प्रवेश करतेभये ३७ पीछे भीतरजाके जाम्बवान् को देखते भये ३८ पीछे जाम्बवान् के सग बाहुओं से श्रीकृष्णका युद्ध इक्कीस दिनों तक हुआ ३६ पीछे जब श्रीकृष्ण बिलमें चलेगये तब बलदेवजी आदि सब द्वारका में आके कहनेलगे कि श्रीकृष्ण मरगया इसमें संशय नहीं ४० पीछे श्रीकृष्ण महाबलवाले ऋक्षराज जाम्बवान् को जीत के और जाम्बवान् की जाम्बवती कन्याकेसङ्ग विवाहकरा ४१ और अपने कलंक को दूरकरनेके वास्ते स्यमतक मणिको भी ग्रहणकर और ऋक्षराजसे आज्ञालेकर बिलसे निकस ४२ भार्या सहित द्वारकापुरी में आये ऐसे अपने कलङ्क को दूरकर ४३।४४ सब यादवों की सभामें उसस्यमतक मणिको सत्राजित्के अर्थ देतेभये ४५ और सत्राजित् के दश भार्याहुईं तिन्हों में १०० पुत्रहुये ४६ और तिन्हों में ख्यातिवाले और

भङ्गकार वातपति उपस्वावान् ४७ इन नामोंवाले तीन पुत्रहुये और देशों में विख्यात और स्त्रियों में उत्तम सत्यभामा और दृढव्रता ४८ प्रस्वापिनी इन नामोंवाली तीन पुत्री हुईं इन तीनो पुत्रियों को सत्राजित् श्रीकृष्ण के अर्थ विवाहताभया ४९ और पीछे भङ्गकारके गुणोंमें सम्पन्नरूप और सम्पत्से विश्रुत और सभाक्ष भङ्गकार इन नामों से विख्यात ऐसे दो पुत्रहुये ५० ऐसे श्रीकृष्ण के इस मिथ्याभिशाप को श्रवणकरे तो उस मनुष्यको मिथ्याभिशाप अर्थात् मिथ्यादोष कभी भी नहीं लगते हैं ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांऊनचत्वारिंशोऽध्याय ३९॥

चालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जिस स्यमंतकमणि रत्न को श्रीकृष्ण सत्राजित् के अर्थ देतेभये तिसकी प्राप्तिकेवास्ते जो अनर्थ हुआ है वह श्रवणकर १ पहले सब कालमें इस सत्यभामाको और स्यमंतकमणिको ग्रहण करने के वास्ते अक्रूर चाहताभया २ तब इसीवास्ते एकसमय में जब द्वारका में कृष्ण नहीं थे तब महाबलवाला शतधन्वा सत्राजित् को रात्रि में मार स्यमंतकमणि को ग्रहणकर अक्रूरकेअर्थ देताभया ३ और तब उस मणिरत्नको अक्रूर ग्रहणकर शतधन्वा से कहनेलगा कि यह हाल किसी से कहना नहीं अर्थात् अक्रूर के पास मणि है इस वचन को नहीं कहना ऐसी प्रतिज्ञाकरले ४ और जब श्रीकृष्ण तेरेको कुछ करेगा तब हम तेरी मददमें रहेंगे और ये सब द्वारकावासी मेरे वश में हैं इसमें संशय नहीं ५ पीछे जब सत्राजित् मारागया तब दुःखसे पीडितहुई सत्यभामा रथमें बैठ वारणावत नगर को गमन करतीभई ६ पीछे वारणावत में श्रीकृष्ण के समीप में जाय शतधन्वा के हाथ से सत्राजित् की मृत्यु को प्रकटकर पार्श्व की तरफ बैठ अश्रुपात काढ़नेलगी ७ तब दग्धहुये पाण्डवों के अर्थ श्रीकृष्ण जल क्रियाकर और पाण्डवों के अन्त्यकर्म के अर्थ सात्यकि को नियुक्तकर ८ पीछे जल्द द्वारका में आके श्रीकृष्ण बलदेवजी से कहनेलगे ९ प्रसेन को सिंहने मारदिया पीछे शतधन्वाने सत्राजित्को मारदिया तब हमभी स्यमंतकमणिका स्वामी मैं हूं अर्थात् मणि मेरेको मिलनी चाहिये १० सो रथ में स्थितहो जल्द शतधन्वा को मारने से स्यमंतकमणि हमारा होसक्ता है ११ तब शतधन्वा और

श्रीकृष्णका आपसमें घोरयुद्ध होनेलगा तब शतधन्वा अक्रूरको सब दिशाओं में देखताभया १२ परन्तु जब युद्धके अर्थ प्रवृत्त हुए शतधन्वा और श्रीकृष्णको देख के सामर्थ्यवाला भी अक्रूर उस वक्त शाठ्यपने से शतधन्वा की सहाय के वास्ते नहीं प्राप्तहुआ १३ तब भयसे पीड़ित हुआ शतधन्वा भागने को बुद्धि करताभया और ४०० कोश से भी ज्यादा चलनेवाली १४ और हृदया नाम से विख्यात ऐसी घोड़ी शतधन्वा के पासथी जिसपै सवारहो शतधन्वा श्रीकृष्ण से युद्धकरे था १५ पीछे शतधन्वा ने अपनी घोड़ी को भगाया १६ तब रथ में स्थित हो बलदेव और श्रीकृष्ण भी गैलभागे परन्तु ४०० कोशपे जा पहुँचके शतधन्वा की घोड़ी के परिश्रम से तथा खेद से प्राणान्त होनेलगे तब श्रीकृष्ण बलदेवजी से कहने लगे १७ हे महाबाहो आप यहीं स्थिनरहो क्योंकि घोड़ी मरनेयोग्य होरही है इसवास्ते में पैरों से गमनकर मणिरत्नको ग्रहण करूंगा १८ तब श्रीकृष्ण पैरों से गमनकर परमात्मके प्रतापसे मिथिलापुरी के समीपमें शतधन्वाको मारताभया १९ परन्तु शतधन्वाके पास स्यमतकमणि नहीं मिली ऐसे शतधन्वा को मार श्रीकृष्ण बलदेवजी के पासगये तब बलदेव जी कहने लगे मणिरत्न मेरेको सौंपदे २० तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि शतधन्वा के पास मणि तो नहीं निकसी इस वचनको सुन क्रोधसे युक्तहुए बलदेवजी श्रीकृष्णके अर्थ वारम्वार धिक् धिक् ऐसा कहतेभये २१ और फिर कहनेलगे हे कृष्ण भ्रातापनेमे मैंने तेरा यह कर्तव्य सहाहै तेरा कल्याणहो मैंजाताहूं न द्वारका में मेरा कृत्यहै न वृष्णियों के संग मेरा कृत्यहै और न तेरेसंग मेरा कृत्यहै २२ ऐसे कहके बलदेवजी मिथिलापुरी में प्रवेश करनेलगे तब सब कामनाओं से मिथिलापुरी के राजाने बलदेवजी की पूजाकरी २३ और इसीकालमें बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अक्रूर नानाप्रकार के यज्ञोंको करताभया २४ और स्यमन्तक की रक्षाके वास्ते दीक्षामय कवचभी धारण करताभया २५ पीछे नानाप्रकारके रत्न और नानाप्रकारके धनों को यज्ञोंमें साठ साठ वर्षोंतक नियुक्त करताभया २६ तब बहुत अन्न और दक्षिणावाले और सब कामोंको देनेवाले ऐसे अक्रूर यज्ञ निरूपातहुये २७ और जब मिथिलापुरीमें बलदेवजी रहनेलगे तब दुर्योधन राजा मिथिलापुरी में जाके दिव्यरूप गदाशिक्षाको बलदेवजी से सीखताभया २८ पीछे वृष्णयन्धक वंशके महारथियों ने और श्रीकृष्णने खुशामद करके बलदेवजी का प्रवेश द्वारका में

कराया २६ और हे जनमेजय अथक वंशके पुरुषों के साथ अक्रूर द्वारकामें निकसगया ३० तब ज्ञातिभेद के भयसे श्रीकृष्ण अक्रूरको त्यागते भये पीछे जब अक्रूर चलागया तब द्वारकामें इन्द्रने वर्षा नहींकरी ३१ तब अनावृष्टी के भयसे देश दुःखित होनेलगा तब कुकुर अंधक आदि वंशों में होनेवाले द्वारकावासी अक्रूर को मनाके ३२ द्वारकापुरी में प्राप्तकरतेभये जब अक्रूर द्वारकामें आया उसीवक्त इन्द्रने वर्षाकरी ३३ पीछे शील संयुक्त और स्वसारा नामसे विख्यात ऐसीकन्या को अक्रूर श्रीकृष्णको प्रसन्न करने के अर्थ देताभया ३४ पीछे योगबलसे श्रीकृष्ण अक्रूरके पास मणिको जान सभाके मध्यमें स्थित अक्रूरसे कहनेलगे ३५ हे प्रिय जो स्यमन्तकमणि आपके पासहै वह मेरेको देनी योग्यहै ३६ और जो मेरेमें मणि सम्बन्धी क्रोधथा वह शान्तहुआ है क्योंकि उस कालको साठ वर्ष व्यतीत होगये ३७ ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको महामतीवाला अक्रूरसुनके मणि को श्रीकृष्ण के अर्थ देताभया ३८ पीछे कोमलताकर अक्रूरके हाथसे प्राप्तहुई मणिको प्रसन्नहुये, श्रीकृष्ण फिर अक्रूर के अर्थ देतेभये ३९ तब कृष्णके हाथ से स्यमन्तक मणिको ग्रहणकर अक्रूर कण्ठमें बाध सूर्य्य के समान प्रकाशित होताभया ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायाचत्वारिंशत्तमोऽध्याय ४० ॥

एकतालीसवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया अमित तेजवाले विष्णुका प्रादुर्भाव पुराणोंमें वाराह अवतार से विख्यात कथन करतेहुये सत्पुरुषों की वाणीसे सुनाहै १ परन्तु तिसका चरित्र और विधि और विस्तार और कर्म गुणकी वृद्धि और कारण और वाञ्छित इन्हों को नहीं जानताहूं २ और कैसे शरीरवाला वाराहजी हुआ और कैसी उसकी मूर्त्तिहुई और कौन देवता हुआ और कैसे आचार और प्रभावमे संयुक्त हुआ और तिससमय में तिसने क्या किया ३ और यज्ञके अर्थ इकट्ठे हुये द्विजोंके प्रति वेदव्यासजी ने जो महावाराह चरित्र कहाहै ४ जिसमें वाराह रूपमें स्थितहुए नारायण समुद्रमें स्थित पृथ्वी को अपनी दंष्ट्रापैधर निकालते भये ५ ऐसे शत्रु को मारने वाले वाराहजी के और श्री कृष्ण के कर्म्मों को विस्तार पूर्वक श्रवण करने की इच्छा करहूं ६ और कर्मों के अनुसार जो जो

ईश्वरने अवतार लिये ६ और जो ईश्वरकी ब्राह्मी प्रकृति है तिसके कहने को आप योग्यहैं ७ और देवताओं के स्वामी और शत्रुओं के मारनेवाले ऐसे विष्णु भगवान् वसुदेव के कुल में कैसे वासुदेव नामसे विख्यातहुए और देवताओंसे आवृत और पवित्र और पुण्यकरनेवालों से अलंकृत ऐसे देवलोकको त्यागके साक्षात् ८ ईश्वर कैसे मर्त्यलोकमें प्राप्तहुये ९ और देव और मनुष्योंके स्वामी और भूर्भुव लोकों को आदि कारण ऐसे ईश्वर दिव्य आत्मा को किसवास्ते मनुष्यों में युक्त करते भये १० और जो मनुष्यों के अर्थ आरोग्यरूप चक्र को वर्तनेवाले ऐसे ईश्वर कैसे मनुष्य देहमें बुद्धि करतेभये ११ और सब जगत्‌की रक्षाकरनेवाले विष्णु कैसे पृथ्वी में प्राप्तहो गोपजाति में विख्यात हुये १२ और पंचमहाभूतों को धारण करनेवाले और लक्ष्मी हैं गर्भ में जिन्हों के ऐसे ईश्वर पृथ्वी में विचरनेवाली स्त्री ने कैसे गर्भ में धारे १३ और जिसने तीन क्रमों से देवताओंकी इच्छाके अर्थ लोकोंको जीत तीनप्रकारके जगत्‌के मार्ग स्थापित किये १४ और जिसने अन्तकाल में जगत्‌का पानकर पीछे जलस्वरूप शरीर बना के एकार्णवरूप लोकों को किया १५ और जो पुराणमें पुराने शरीरवाले और वाराहके रूपको प्राप्तहो अपनी दंष्ट्राके ऊपर पृथ्वीको धर समुद्रसे बाहर निकासतेभये १६ और जो इन्द्रके अर्थ इस पृथ्वी को जीत त्रिलोकी के राज्य को देतेभये १७ और जिसने नरसिंहके रूपको धारणकर महावीर्यवाला आदिदैत्य हिरण्यकशिपु मार दिया १८ । १९ और जो पहले अग्निरूप होके पाताल में स्थितहो समुद्र के जलको पीतेभये २० और हजार शिरोंवाला और हजार पांखडियोंवाला और हजार चरणोंवाला ऐसा देव युग युगमें कहाताहै २१ और जिसकी नाभिसे ब्रह्माजी की उत्पत्तिके अर्थ कमल उपजा है २२ और जिसने सर्वदेवमय शरीर और सब शस्त्रोंको धारणकर तारकामय युद्धमें दैत्योंका नाश करदियाहै २३ और जिसने कालनेमि और तारका आदि महादैत्य जीतलिये हैं २४ और जो क्षीरसागरके उत्तरखण्डमें शाश्वतयोग को प्राप्तहो निरन्तर शयन करते हैं २५ और जो जो दैत्यों को पाताल में बसाता भया और संसार में अनेक प्रकारके चिह्न करताभया २६ और देवताओं को स्वर्ग में बसाताभया और इन्द्रको देवताओं का राजा करताभया २७ और जो पात्र दक्षिणा दीक्षा चमस उलूखल गार्हपत्यकर्म अन्वाहार्य्यकर्म २८ हवनके योग्य अग्नी वेदी

कुशास्त्रुव प्रोक्षणी पात्र ध्रुव आवभृथ्य २९ इन यज्ञकर्म्मों को रचताभया और हव्यके ग्रहण करनेवाले देवते और कव्यके ग्रहणकरनेवाले पितर जिसने बना दिये ३० और जिसने यज्ञकर्ममें मंत्रविधिसे भागकेअर्थ यज्ञस्तम्भ समिध अर्थात् ढाककी लकड़ी स्त्रुव गली समिध ३१ और यज्ञके योग्य द्रव्य और अग्नि सहित यज्ञ सदस्य यजमान मेध आदियज्ञ ३२ इन सब पदार्थों का विभाग किया और युग युगके प्रति युगों के अनुसार रूपोंको धारणकर लोकोंके कार्य करते भये ३३ और क्षण लव काष्ठा कला त्रिकला मुहूर्त तिथि मासपक्ष सवत्सर ३४ ऋतु काल योग तीनप्रकारके प्रमाण आयुक्षेत्र उपचय लक्षणरूपकी सुन्दरता ३५ और तीनवर्ण तीनलोक तीनविद्या तीन अग्नि तीनकाल तीनकर्म तीन अपाय तीनगुण ३६ इन सबोंकी रचनाभी इसीने करीहै और इसीने अन्तसे रहित ये तीनलोकभी रचे हैं और सब भूतोंके गुणोंसेसंयुक्त ३७ सब प्राणिगण भी इसीने रचे हैं और मनुष्यों के इन्द्रिय पूर्वक योगसे यही रमण करताहै ३८ और सब जगह गमन और स्थितिसे सब प्राणियोंका नेताहै और धर्मयुक्त मनुष्यों के गतिरूपभी यही है और पाप करनेवालों के यही अगतिरूप है और चारोंवर्णोंका उत्पत्तिस्थान और चातुर्होत्रका रक्षा करनेवाला ३९ यही है और चारविद्याका जाननेवाला और चारआश्रमोंका सश्रयरूप ऐसाभी यहीहै और सब दिशाओंका अन्तर आकाश पृथ्वी जल पवन अग्नि ४० चन्द्रमा सूर्य तारा गण इन्होंके रूपकोभी धारण करनेवाला यहीहै और उत्तमसे उत्तम ज्योतिभी यहीहै और उत्तमसे उत्तमतमभी यहीहै ४१ और परेसेभी परे यही है और परमात्मासे भी परे यही है और सब वेद भी नारायण में तत्परहैं ४२। ४३ और सब क्रियाभी नारायण में तत्परहैं और सब धर्मभी नारायण में तत्परहै और गति भी नारायण में तत्पर है ४४ और सत्य भी नारायण में तत्पर है और तप भी नारायण में तत्पर है ४५ और मोक्षभी नारायण में तत्परहै और परमगति भी नारायणमें तत्परहै और आदित्य आदि दिव्य और दैत्योंका अन्तकभी यही है ४६ और युगान्तमेंभी अन्तकरूप यही है और लोकों के अन्तकका भी अन्तक यहीहै और लोकके सेतुओंका सेतुभी यही है और मेध्य कर्म्म में भी मेध्य कर्म्म यही है ४७ और वेदके जाननेवालों मेंभी वेदरूप यही है और प्रभवतावालों में प्रभुरूप भी यही है और सौम्यों में सोमरूप भी यही है और अग्नियों में अग्नि

वालोंमें अग्निरूप भी यही है ४८ और मनुष्यों में मनरूप भी यही है और तपस्वियों में तपरूप भी यही है और नयवालों में विनयरूप भी यही है और तेज वालों में तेजरूप भी यही है ४६ और सृष्टिवालों में सृष्टि का कर्ता भी यही है और विग्रहवालों में लोकका कारण भूत विग्रहरूप भी यही है और गतिवालोंमें गतिरूप भी यही है ५० और आकाशमें उपजनेवाला वायुभी यही है और प्राण वायु भी यही है और आहुती को भोजन करनेवाला अग्नि भी यही है और अग्निरूप प्राणोंवाला देव भी यही है ऐसा यह साक्षात् विष्णुहै ५१ और रसमे लोहू उपजता है और लोहूसे मास उपजताहै और माससे मेद उपजता है और मेदसे हड्डिया उपजती है ५२ और हड्डियों से मज्जा उपजती है और मज्जा से वीर्य्य उपजता है और वीर्य्य से गर्भ उपजताहै ऐसे गर्भका रसमूल कहा है ५३ और वहां प्रथमभाग जल है यह सौम्यराशि कहाता है और गर्भ की गर्माई से उपजा अग्नि दूसरीराशि कहाताहै ५४ इसवास्ते चन्द्रमा के अंशसे उपजा वीर्य होता है और अग्निके अंशसे उपजा आर्तव होता है ५५ और कफके समूह में शुक्र उपजे है और पित्त के समूह में लोहू उपजे है और कफका हृदय स्थानहै और पित्तका नाभिस्थानहै ५६ और देहके मध्यमें जो हृदयहै वह मनका स्थान है और नाभि और कोष्टके बीचमें अग्निका स्थानहै ५७ और मन ब्रह्मरूपकहा है और कफ चन्द्मारूप कहाहै और पित्त अग्निरूप कहाहै ऐसे अग्नि सोमके तेजसे सब जगत्रूप उपजताहै ५८ ऐसे ग्रन्थिके समान वढतेहुये गर्भ में परमात्मासे मिलाहुआ वायु प्रवेश करैहै ५६ पीछे पाचप्रकार से शरीरमें स्थितहुआ वायु अंगोंको रचताहै और शरीर को पुष्टकरै है ६० और तिन पाचों वायुओंके प्राण अपान समान उदान व्यान ये नाम हैं इन्हों में प्राण प्रथम स्थान है यह अन्य स्थानों को वढाताहुआ आपवर्द्धै है ६१ और गुदा में अपान वायुहै और शरीर के कण्ठआदि ऊर्द्धस्थान में उदान वायुहै और सब शरीर में विचरनेवाला व्यान वायुहै ६२ और यही व्यानवायु जब विस्तृत होता है तब नाभि में स्थित समान वायु शरीरके पदार्थ को निवृत्त करताहै पीछे पाच महाभूतों की प्राप्तिहो के अर्थात् पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नी ६३ ये सब इन्द्रियों में प्रवेश होजाते है इसीवास्ते पृथ्वी तत्त्वमे देहहुआ है और वायु तत्त्व से प्राणहुये है ६४ और आकाश तत्त्वमे सब छिद्रहुये हैं और जलतत्त्व से स्राव होता है और नेत्रों का

तेज अग्नितत्त्वसे हुआहै और इन सबोंका नियन्तामन कहाहै ६५ और जिसके वीर्यसे ग्राम और देश प्रकाशित होते हैं ऐसे प्रकारसे सनातन लोकोंको रचना हुआ परमेश्वर ६६ नाशके योग्य इसलोक में मनुष्यके देहमें कैसे प्राप्तहुआ हे ब्रह्मन् यह मेरेको संशयहै और अति आश्चर्य्य है ६७ और गतिवालों का गतिरूप परमेश्वर मनुष्यके शरीरमें कैसे प्राप्तहुआ और अपने वंशके सब पुरुषों की मैंने उत्पत्तिसुनी ६८ अब विष्णु और वृष्णि कुलवालों की कथा क्रमसे उत्पत्ति श्रवण करनेकी इच्छाहै और देव दैत्योंने विष्णु भगवान् परम आश्चर्य रूपमानाहै ६९ इसवास्ते हे महामुने सुखको देनेवाले विष्णु के उत्पत्तिरूप आश्चर्य्य को मेरेअर्थ कहो और प्रख्यात बल वीर्य्यवाले और अमित तेजवाले और आश्चर्य्य कर्म करनेवाले ऐसे विष्णुका तत्त्व यहा कहो ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांएकचत्वारिंशत्तमोऽध्याय ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे विष्णु भगवान् सम्बंधी अतिप्रश्न भार तैंनेकिया अब शक्ति के अनुसार विष्णु के यश को प्रकाशित करताहुआ यह सुनलीजिये १ और विष्णुके प्रभाव सुनने में जो आपकी मतिउपजी है यह अति कल्याणकारी है इसवास्ते दिव्यरूप और मेरे सकाश से कहीहुई विष्णुकी प्रवृत्ति को तू श्रवणकर २ और हजार मुखवाले और हजार नेत्रोंवाले और हजार पैरोंवाले और हजार शिरोंवाले और हाथोंवाले ३ और हजार बाहुओंवाले और हजार मुकुटोंवाले और हजारों पदार्थोंको देनेवाले और हजारों के आदिभूत ऐसे देव ४ और हवन शवन हव्य होता पात्र पवित्रा वेदी दीक्षा चरु स्रुव श्रुक सोम सूर्य प्रोक्षणी दक्षिणायन अध्वर्यु सामग ब्रह्मा सदस्य सदन ५ यज्ञस्तम्भ समिध दर्वी चमसा उलूखल प्राग्वंश यज्ञभूमि होता चयन ६ प्रमाणभूत रहस्य चर और स्थावर प्रायश्चित्त अर्घ्य स्थण्डिल कुशा ७ यज्ञ में कहने योग्य मंत्र यज्ञ के योग्य अग्नि और यज्ञभागको ग्रहण करनेवाला और सबों से प्रथम अमृतको भोजन करनेवाला और अति तेजवाला और उग्र शस्त्रोंवाला ८ ऐसे रूपों को धारण किये यज्ञमें शाश्वतरूप वेदके जाननेवाले जिसको मानते हैं तिस विष्णु के ९ हजारहों अवतार होचुके और होवेंगे ऐसे प्रजापति ने कहा है १० और हे महा-

राज जो आपदिव्य कथाको पूछते हैं कि जिस प्रयोजनकेवास्ते वसुदेवके कुल में विष्णुभगवान् जन्मे हैं ११ वह विस्तारपूर्वक मैं कहता हूं श्रवणकीजिये महा कीर्त्तिवाले वासुदेव का चरित सुनो १२ देवते और मनुष्यों के कल्याण के अर्थ बहुतवार परमेश्वर प्रकटहुआहै १३ तिन्हों में से पवित्र और दिव्य और गुणों से संयुक्त ऐसी उत्पत्तियों को कहताहूं हे जनमेजय शुद्ध और यत्नवालाहोके श्रवणकर १४ वेद के समान पवित्ररूप इस पुराण को तेरेअर्थ कहता हूं विष्णु की दिव्य कथाको श्रवणकर १५ जब जब धर्मकी ग्लानि होती है तब तब धर्म की स्थापना करने के अर्थ विष्णुभगवान् अवतार लेते हैं १६ तिस ईश्वर की अति उत्तमरूपवाली एकमूर्त्ति आकाश में स्थितहुई उग्रतप को करती रहे है १७ और दूसरीमूर्त्ति प्रजाके संहार और रचने के वास्ते शेषशय्यापै निद्रा योग को प्राप्त हुई हजारों युगोंतक शयनकर कार्य के अर्थ प्रकट होती है १८ और पीछे देवताओं के देवता ब्रह्माजी लोकपाल, चन्द्रमा, सूर्य्य, अग्नि, कपिलमुनि १९ सातोंऋषि, देवते, महादेव, वायु, पर्व्वत, समुद्र ये सब उस शयन करने वाले ईश्वर के देह में बसते हैं २० और महानुभाववाले सनत्कुमार और प्रजाको उपजाने वाले मनुजी और प्रजाको रचनेवाले ब्रह्माजी ये सब उस ईश्वरके देह में बसते रहे हैं २१ और जब स्थावर जङ्गम नष्ट हुआ और देव दैत्य नष्टहुये और सर्प राक्षस नष्टहुये तब जिसकेमध्य २२ समुद्र के मध्य में स्थित और युद्धको करने वाले और अति बलवाले और मधुकैटभ नाम से विख्यात ऐसे दैत्य प्रलय के अन्तमें मारदिये हैं २३ और समुद्रमें शयन करतेहुये कालरूप नाभि में देवता और ऋषिगण उपजे हैं २४ तहा पौष्करनामसे विख्यात ईश्वरने अवतारलिया है जिसके अर्थ वेदों के समान यह पुराण रचागया है २५ पीछे ईश्वरने समग्र पृथ्वीको व्याप्तहो वराहजी का अवतार लियाहै २६ तब वेदरूप पैरोंवाला और यज्ञस्तम्भ रूप जाड़वाला और यज्ञरूप हाथोंवाला और चित्ती मुखवाला २७ और अग्निनरीसी जीभवाला और डाभरूप रोमोंवाला ब्रह्मरूप शिरवाला और दिन रात्रिरूप नेत्रोंवाला और दिव्य और वेदाङ्ग श्रुती इनरूप गहनोंवाला २८ और घृत रूप नासिकावाला और श्रुवारूप तुण्डवाला और सामवेद रूप घोष और शब्दवाला और धर्म सत्य से संयुक्त और शोभावाला और कर्म विक्रम सत्क्रिया इन्होंवाला २९ और प्रायश्चित्तरूप नखोंवाला और घोर और पशुरूप

जानु अर्थात् गोडावाला और महा भुजावाला और उग्रता है अन्त में जिसके ऐसा और होमरूप लिंगवाला और फलबीज महोषधी ३० वायु इन्हों से शुक्र अन्तरात्मावाला और वेदरूप फिचों से विकृतहुआ और सोमरूप शोणितवाला और वेदी रूप स्कन्धवाला और हविरूप गधवाला और हव्य कव्य रूप अति वेगवाला ३१ और प्राग्वशरूप शरीरवाला और नानाप्रकार की दीक्षाओं से पूजित और दक्षिणारूप हृदयवाला और योगी और महायज्ञवाला ३२ और उपाकर्म्मरूप ओष्ठोंवाला और प्रवर्गावर्त्तरूप भूषणवाला और नानाप्रकार के वेदरूप गमनवाला और गुप्तरूप उपनिषद्रूप आसनवाला ३३ और छायापत्नी सहायवाला और मेरुके शृगके समान ऊंचा ऐसा वाराहजी एकार्णव जल में डूबीहुई पर्वत वन आदिसे सयुक्त पृथ्वीको अपनी दंष्ट्रापै धर लोकोंके कल्याण के अर्थ निकासताभया ३४ ऐसे यज्ञवराहजी का जन्म हुआहै अब नृसिंह के जन्मका श्रवणकर ३५ जिस नृसिंहजी ने पहले कृतयुग में देवताओं का वैरी और बल से गर्वित ऐसा हिरण्यकशिपु मारा है ३६ और एकसमय में आदि दैत्य हिरण्यकशिपु ग्यारहहजार वर्षोंतक उग्रतप करताभया ३७ अर्थात् जल मात्र को ग्रहण करताभया और मौन को धारण करता हुआ और शम दम ब्रह्मचर्य्य इन्हों से दृढव्रत हुआ ३८ तब प्रसन्नहुये ब्रह्मा जी तहा आप आके ३९ हंसयुक्त और सूर्य्य के समान प्रकाशवाला ऐसे विमान में बैठ आदित्य, वसु, साध्य, मरुत् ४० रुद्र विश्वमें सहाय करनेवाले यक्ष, राक्षस, किन्नर, दिशा, विदिशा, नदी, समुद्र ४१ नक्षत्र, मुहूर्त्त, आकाशचारी महाग्रह, देवऋषि, सिद्धि, सप्तऋषि ४२ राजर्षि, गधर्व, अप्सराओं के समूह सब देवते ४३ इन्हों के सग चराचर के गुरु ब्रह्माजी आप आके दैत्यके अर्थ वचन कहते भये हे सुव्रत तेरे तपकरके मैं प्रसन्नहुआ ४४ तेराकल्याण हो मनोवांछित वरको तू माग उसीको प्राप्तहोगा ४५ तब हिरण्यकशिपु कहनेलगा हे देवसत्तम देवते, राक्षस, गधर्व, यक्ष, दिव्यसर्प, दैत्य, मनुष्य, पिशाच इन्हों से मैं नहीं मरसकू ४६ और क्रोध को प्राप्तहुये तपकरनेवाले ऋषि मेरेको शाप नहीं देसकें ४७ और शस्त्र, अस्त्र, पत्थर, वृक्ष, सूखापदार्थ व गीलापदार्थ अथवा अन्य तरहका पदार्थ ४८ इन्होंके लगने से मेरी मृत्यु नहीं हो किन्तु एक हाथके थपड़ा के प्रहार से जो बलवाहन सहित मेरे को मारने को समर्थ हो ऐसापुरुष मेरी मृत्युरूप होवे इस में सशय

नहीं ४६ और मैंहीं सूर्य्य होजाऊं और मैंहीं चन्द्रमा होजाऊं और मैंहीं पवन होजाऊं और मैंहीं अग्नि होजाऊं और मैंहीं जल और मैंहीं आकाश और मैं हीं नक्षत्र और मैंहीं दशदिशा ऐसा होजाऊं ५० और मैंहीं क्रोध, काम, वरुण, इन्द्र, यम, कुबेर इन्हों के रूपों को धारणकरूं ५१ तब ब्रह्माजी कहनेलगे हे पुत्र ये सब दिव्यरूप और अद्भुत ऐसे वर मैं तेरेअर्थ दिये सब इन कामोंको तू प्राप्त होवेगा इसमें संशय नहीं ५२ ऐसे कहके आकाशमार्ग के द्वारा प्रकाश रूप और ब्रह्मर्षि गणोंसे सेवित ब्रह्मलोक को ब्रह्माजी प्राप्तहुये ५३ पीछे ब्रह्माजीसे दियेहुये दैत्यकेअर्थ वरोंको सुनके इन्द्रादि देवते, नाग, गंधर्व,मुनि ५४ ब्रह्माजी के पास जाके जनानेलगे ५५ और देवते कहनेलगे हे भगवन् इन वरदानों के देनेसे यह दैत्य हमारेको मारेगा इसवास्ते आप प्रसन्नहोके इसकी भी मृत्युका चिंतवनकरो ५६ तब सब लोकोंको सुख देनेवाले और सृष्टि के रचनेवाले और हव्य कव्यको प्रवर्त्त करनेवाले ऐसे ब्रह्माजी ५७ लोकके कल्याणकेअर्थ वाक्य को श्रवणकर सब देवगणों के प्रति कहनेलगे ५८ हे देवताओ कियेहुये तपका फल इसको प्राप्त होवेगा परन्तु तपके फलके अंतमें विष्णुभगवान इसको मारेंगे ५६ ऐसे ब्रह्माजी के वचनको सुनके आनन्दसे युक्तहुये सब देवते दिव्यरूप अपने अपने स्थानोंको जातेभये ६० पीछे वरदानसे गर्वितहुआ हिरण्यकशिपु दैत्य सब प्रजाको पीडा देनेलगा ६१ और प्रथम आश्रम में स्थित और व्रतको धारण करनेवाले और सत्यधर्म में रत और शान्तिवाले ऐसे मुनिजनों को दु खित करनेलगा ६२ पीछे त्रिलोकी के देवताओंको जीतके और त्रिलोकी को वशमेंकर स्वर्ग में वसनेलगा ६३ पीछे वरदान से उन्मत्तहुआ स्वर्ग में वस के दैत्यों को यज्ञभाग दिवानेलगा और देवताओं के यज्ञभाग दूर करादिये ६४ तब सब आदित्य सब रुद्र विश्वेदेवा वसु इन नामोंवाले देवते विष्णु के शरणहोके स्तुति करनेलगे ६५ कि वेद यज्ञमय और ब्रह्म और ब्रह्मदेव और सनातन और भूतभव्य भविष्य इन्द्रोंको जाननेवाले और प्रभु और लोकोंमें नमस्कृत ६६ और नारायण और शरणकेयोग्य ऐसे देवके हम शरण में प्राप्तहुये हैं ६७ हे देवेश हिरण्यकशिपु के भयसे हमारी रक्षाकर तूही हमारा परमदेवहै और तूही हमारा परमगुरु है ६८ और तूही हमारा परमहै और तूही ब्रह्मादिकों का भी ब्रह्महै और हे फूलेहुये कमलके समान नेत्रवाले और हे शत्रु के पक्षको जीतनेवाले ६६

देव दिती के वंश को नाशने वास्ते हमारे मनोरथ को पूर्ण कर अर्थात् हमारी तू शरण होजा ७० तब विष्णु कहनेलगे हे देवताओ भय को त्यागो अभय में तुम्हारे अर्थ देता हू और सब देवते फिर स्वर्गलोक में जाके प्राप्त होंगे ७१ और जो यह देवताओं से नहीं मरताहै और वरदानमे गर्वित है ऐसे इस दैत्य को मैं मारूगा ७२ तब वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे देवताओं से कहके विष्णु भगवान् ७३ आधा शरीर मनुष्यका बना और आधा शरीर सिंहका बना तब हिरण्यकशिपु दैत्यकी सभामें प्राप्तहुये ७४ तब मेघों के घनके समान प्रकाश वाले और मेघोंके शब्दके समान शब्दवाले और मेघोंकेसमान तेजवाले और मेघोंकेसमान वेगवाले ७५ ऐसे नृसिंहजी अतिबलवाला और गर्वितारूप सिंह के समान पराक्रमवाला और अति बलवाले दैत्यों के समूहसे रक्षित ऐसे दैत्य को एक हाथके प्रहारसे मारताभया ७६ ऐसे नृसिंहजीका अवतार हुआहै अब वामनजी के अवतारका श्रवणकर जहा दैत्योंके नाशके वास्ते वामनरूप को धारणकर ७७। ७८ बलि राजा की यज्ञमें जब वामनजी अपने शरीरको बढा पृथ्वीको क्रमण करनेलगे तब अपने पराक्रमोंमे ७९ विप्रचित्ती, शीवीशकुरय, शकुअय शिरा, अश्वशिरा, हयग्रीव ८० वेगवान्, केतुमान्, उग्रव्यग्र, कुशकेर, पुष्कल, अश्व, अश्वपति, प्रह्लाद, अश्वशिरा, कुम्भ, सह्राद, गगनप्रिय, अनुह्लाद, हरिहर वराह सहररुज ८१ शरभ शलभ कुपन कोपन क्राथ बृहत्कीर्त्ति महाजिह्व, शंकुकर्ण, महाश्वन ८२ दीर्घजिह्व, अर्कनयन, मृदुचाप, मृदुप्रिया, वायु, गविष्ठ, नमुचि, शम्बर, वीक्षर, महान् ८३ चन्द्रहन्ता, क्रोधहन्ता, क्रोधवर्द्धन, कालक, कालकेय, वृत्रक्रोध, विरोचन ८४ गविष्ठ, वरिष्ठ, प्रलम्बनरक, इन्द्रतापन, वातापी, केतुमान्, बलदर्पित ८५ असिलोमा, पुलोमा, वाष्कल, प्रमद, मदखलिम, शालवदन, कराल, कौशिकशर ८६ एकाक्ष चन्द्रहा, राहु, सहार, मृदुश्वन इननामों वाले और शतघ्नी चक्र इन्होंको हाथोंमें धारण करनेवाले और परिघ शस्त्रको धारण करनेवाले ८७ और असमयत्ररूप शस्त्रोंको धारण करनेवाले और भिंदिपाल शस्त्रको धारण करनेवाले और शूल उलूखल इन्होंको हाथोंमें धारण करनेवाले और परशा शस्त्रको धारण करनेवाले ८८ और फासी मुद्गरको हाथोंमें धारण करनेवाले और मुशलको हाथमें धारण करनेवाले और पत्थरोंके प्रहार करनेवाले और शूलको हाथ में धारण करनेवाले ८९ और नानाप्रकारके प्रहार

करनेवाले और नानाप्रकार के वेषों को धारण करनेवाले और अति बलवाले और कछुआ और मुरगा इन्होंके मुखोंके समान मुखवाले और काक उलू इन्हों के समान मुखको धारण करनेवाले ६० और गधा ऊंट इन्होंके समान मुख को धारण करनेवाले और सूकर के मुख के समान मुख को धारण करनेवाले और भयानक रूपवाले और मच्छके मुखोंके समान मुखोंको धारण करनेवाले और गीदडके मुखके समान मुखको धारण करनेवाले ६१ और मूषा मेंढक इन्हों के मुखके समान मुखको धारण करनेवाले और घोररूपको धारण करनेवाले और भेड़ियाके मुखके समान मुखको धारण करनेवाले और बिलाव, शशा इन्हों के मुखके समान मुखवाले ६२ और बडे बड़े मुखोंवाले और कितनेक मच्छ और और मेढाके समान मुखोंवाले और कितनेक गाय, बकरी, भेड, भैंसा इन्हों के मुखके समान मुखवाले और कितनेक गोधा, सेह इन्हों के मुखके समान मुख वाले और कितनेक क्रौंच ६३ गरुड़, गैंडा, मोर इन्होंके मुखके समान मुखवाले और कितनेक हाथियों की चर्म्म के वस्त्रों को धारण करनेवाले और कितनेक काले मृगके चर्म्म को धारण करनेवाले ६४ और कितनेक फटेहुये चीरों को धारण करनेवाले और कितनेक वृक्षों के वक्लों को धारण करनेवाले और कितनेक पगडी मुकुट कुण्डल ६५ कवच इन्होंको धारण करनेवाले और कितनेक लम्बी चोटी और शङ्खके समान ग्रीवा और सुन्दर तेज इन्हों को धारण करनेवाले और कितनेक नानाप्रकारके वेष और फूलों की माला और चन्दन आदि ६६ इन्होंको धारण करनेवाले ऐसे दैत्य तेज से प्रकाशित किये अपने शस्त्रों को ग्रहणकर पृथ्वीको क्रममाण करतेहुये विष्णुके चारों तर्फमें युद्ध करने को प्राप्तहुये ६७ तब पैर और हाथों के तलवों से सब दैत्योंको भयके भयानक रूप को धारणकर पृथ्वी को तत्काल हरनेभये ६८ और भूमिके अर्थ पराक्रम करनेके वक्त चूचियों केबीच में चन्द्रमा और सूर्य्य स्थितथे वे आकाशमें शरीर को फैलाने के वक्त नाभि में स्थित होगये ६९ पीछे अति शरीर को फैलाने के वक्त गोडाके देशमें चन्द्रमा सूर्य्य स्थितहोगये ऐसे मुनियों ने कहा है १०० ऐसे वामनजीका अवतार प्रकाशित हुआ अब फिर विष्णु भगवान् के यशको कहते हैं १०१ विष्णु भगवानने दत्तात्रेय नामसे विख्यात और अतिदयासेमयुक्त ऐसा अवतार लियाहै १०२ जब देवते किया यज्ञ इन्होंका नाश होनेलगा और

चारोंवर्ण आपसमें संकीर्ण होनेलगे १०३ और धर्म शिथिलताको प्राप्तहोनेलगा और पापकी वृद्धिहोनेलगी और सत्यकानाश होनेलगा १०४ और झूठकी स्थिति होनेलगी और प्रजाका नाशहोनेलगा १०५ तब इस दत्तात्रेयजीने यज्ञक्रिया वेद संकीर्णता से रहित चारों के वर्ण ये सब फिर स्थापित किये १०६ और कृतवीर्य के पुत्र अर्जुनके अर्थ इसी दत्तात्रेयजी ने वरदानदिया १०७ कि हे राजन् जो तेरे दो बाहुहैं सो मेरे प्रतापसे हजारबाहु होजावेंगे इसमें संशयनहीं १०८ और तू सम्पूर्ण पृथ्वीकी पालना करेगा और शत्रुओंके समूह तेरेको जीतनहीं सकेंगे १०९ ये सब कार्य्य युद्धमें तेरे हुआ करेंगे ऐसे दत्तात्रेयजी का अवतार प्रकाशित किया ११० अब परशुरामजी के अवतारको कहते हैं जहां युद्धमें सेना के बीचमें स्थित सहस्रबाहु अर्जुन को १११ परशुरामजी मारतेभये अर्थात् रथमें स्थित अर्जुनको पृथ्वी में धर्षितकर ११२ उसकी हजार बाहुओं को परशुरामजी फरसासे काटतेभये ११३ पीछे क्रिरोडहों क्षत्रियों से संयुक्त पृथ्वीको ११४ इकीस वार क्षत्रियोंसे रहित ऐसी बनातेभये पीछे अतिबलवाले परशुरामजी ११५ अपने पापों को दूरकरने के वास्ते अश्वमेध यज्ञमें दक्षिणा के अर्त्थ मरीचि के पुत्र कश्यपजीको ११६ इस पृथ्वीका दानदेतेभये और वरुणजी सफेद रङ्गवाले घोडे और रथ ११७ बहुतसा सुवर्ण गाय हाथी इन्होंका भी अश्वमेध यज्ञमें परशुराम जी दान करतेभये और संसार के कल्याण के अर्त्थ तपका आचरण करतेहुये परशुरामजी ११८ देवके समान होके पर्वतों में उत्तम महेंद्रपर्वत में स्थित होरहे हैं ११९ ऐसे परशुरामजी का अवतार विख्यात हुआहै १२० और चौबीसवें युगमें राजादशरथके कमलके फूलके समान नेत्रोंवाला और साक्षात् ईश्वर और महाबाहु चारप्रकार से आत्माको विख्यात करके १२१ संसार में राम ऐसे नामसे विख्यात और तेजमें सूर्य के समान होके संसारकी प्रसन्नताके अर्थ और राक्षसों के नाशके अर्थ १२२ और धर्मकी वृद्धि के अर्थ जन्म लेतेभये १२३ और इन रामचन्द्रके अर्त्थ राक्षसोंके नाशके वास्ते विश्वामित्रजीने देवताओंसे भी दुर्द्धर्ष ऐसे शस्त्रदिये हैं १२४ और इन्हीं रामचन्द्रने मुनिजनोंकी यज्ञमें विघ्न करनेवाले मारीच और सुबाहु ये दोनों दैत्य मारदिये हैं १२५ और इन्हीं रामचन्द्रने जनक राजा की यज्ञमें लीलाकर के माहेश्वर धनुषको तोड दियाहै १२६ पीछे सब धर्मों के जाननेवाले और लक्ष्मणरूप अनुचरों से संयुक्त और सब प्राणियों में हित

करनेवाले ऐसे रामचन्द्र चौदह वर्षतक वनमें वसे हैं १२७ और उसी समय में रामचन्द्रकी सीतानामवाली रानीको रावण हरलेगयाहै १२८ तब उससीताको ढूंढनेकेअर्थ रामचन्द्रजी भीम पराक्रमवाले विराध और कवन्ध इन नामोंसे विख्यात ऐसे राक्षसोंको मारतेभये १२९ पीछे सुग्रीवकी प्रीति के अर्थ एक बाणसे महाबलवाले वालिको मारके सुग्रीव को राज्यतिलक देतेभये १३० पीछे देवते, दैत्य, राक्षस, यक्ष, पक्षी इन्होंसे नहीं मरनेके योग्य और युद्धमें दुर्मद और राक्षसोंका इन्द्र १३१ और करोड़हों राक्षसों से रक्षित और नीलेपर्व्वतकेसमान ऊंचा और त्रिलोकी को दुःखित करनेवाला और क्रूर और दुष्ट आचारोंवाला और महाबलवाला १३२ और दुर्धर और दुर्धर्ष और गर्वित और शार्दूलकेसमान पराक्रमवाला और देवताओं को भय देनेवाला और वरदानसे गर्वित १३३ और अतिबड़े बद्दलकेसमान कांतिवाला और अति बड़े शरीरवाला और अपराधका करनेवाला और पुलस्त्यके वंश में उपजनेवाला और युद्ध में दुर्जय १३४ और भ्राता,पुत्र,मंत्री,सेना इन्होंसे सयुक्त और उग्र निश्चयवाला ऐसे रावणको मनुष्योंके पति रामचन्द्रजी मारतेभये हैं १३५ और मधुका पुत्र गर्वित लवणनाम राक्षसको मधुवनमें रामचन्द्रजी के छोटे भाई शत्रुघ्नजी ने मारा १३६ तथा अन्य भी बहुतसे राक्षस युद्धोंमें मारदिये हैं ऐसेधर्मज्ञों में श्रेष्ठ रामचन्द्रजी इन कर्मोंको करके १३७ पीछे उत्तमरूप दशअश्वमेधोंका आचरणकरतेभये तब रामचन्द्रजीके राज्यमें अशुभवाणी श्रवणनहीं कीगई औरदुष्टपवन कभी चलानहीं १३८ और किसीका धन किसीने चोराया नहीं और विधवास्त्री और अनाथ मनुष्य विलाप नहीं करतेभये १३९ और सब शांतस्वरूप रहनेलगे और प्राणियोंको जल पवन विधानसे उपजा भयहुआ नहीं १४० और वृद्धमनुष्य बालकोंके प्रेतकिया नहीं करतेभये अर्थात् वृद्धोंके सम्मुख कोईभी बालक मरतानहीं और क्षत्रिय ब्राह्मणों की टहल करतेभये और वैश्य क्षत्रियोंकी टहल करतेभये १४१ और अहङ्कारसे रहित शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनों वर्णोंकी टहल करतेभये और भार्याको पति नहीं त्यागताभया और भार्या पतिको नहीं त्यागतीभई १४२ और सम्पूर्ण जगत् शांतस्वरूप रहा और दस्यु अर्थात् धाड़ियोंसे रहित पृथ्वी होतीभई और सब प्रजा अकेले रामही को स्वामी मानतीभई और रामही प्रजाके पालने वाले हुये १४३ और एक२ मनुष्यके हजार २ पुत्रहोतेभये और हजारों वर्षोंकी

आयुहोतीभई और रोगोंसे रहित प्राण होतेभये १४४ और देवता, ऋषि, मनुष्य ये सब पृथ्वीमें इकट्ठे होके विचरतेभये ये सब वृत्तान्त रामचन्द्रजी के राज्य में भुगते हैं १४५ और पुराण के जाननेवाले मनुष्य रामचन्द्रजी के माहात्म्य को गातेभी हैं १४६ कि श्याम रङ्गवाले और युवान अवस्थावाले और लाल नेत्रों वाले और प्रकाशित मुखवाले और प्रमाणिक बोलनेवाले और गोड़ों पर्यंत हाथ वाले अर्थात् सावत और सुन्दर मुखवाले और सिंहसरीखे कंधावाले और महाभुजावाले १४७ ऐसे श्रीरामचन्द्रजी ग्यारहहजार वर्षोंतक अयोध्यापुरी में राज्य करतेभये १४८ और रामचन्द्रजीके राज्यमें ऋग्वेद,सामवेद,यजुर्वेद इन्होंका घोष और धनुषकाघोष और दानकरो और भोजनकरो ऐसाघोष निरन्तर होताभया १४६ और सतोगुणवाले और सबगुणोंसे सम्पन्न और अपने तेजसे प्रकाशित ऐसे रामचन्द्रजी सूर्य्य चन्द्रमासे भी ज्यादे प्रकाशित होतेभये १५० और उत्तम दक्षिणाओंसे संयुक्त सैकड़ों यज्ञोंको अयोध्यापुरी में समाप्तकर रामचन्द्रजी स्वर्ग में प्राप्तहुये १५१ तब वैशम्पायन कहनेलगे अब सब लोकोंमें कल्याणके अर्थ माथुरकल्प में विख्यात श्रीकृष्णजी का अवतार प्रकाशित कियाजाताहै १५२ और जहां शाल्व, मैंद, कंस, द्विविद, अरिष्ट, वृषभ, केशी, पूतना १५३ कुवलया पीड़हाथी, चाणूर, मुष्टिक और मनुष्य देहमें स्थित दैत्य इन सबोंको वीर्यवाले श्रीकृष्ण मारतेभये १५४ और अद्भुत कर्मवाले बाणासुरकी हजारभुजाओं को काटतेभये और नरकासुर और महाबलवाला कालयवन येभी दोनों युद्धमें मारदिये हैं १५५ और राजाओं के सम्पूर्ण रत्न अपने तेजसे हरके पीछे दुष्ट आचारोंवाले राजा सब श्रीकृष्णने मारदिये हैं १५६ ऐसे श्रीकृष्णका अवतार हुआ है पीछे नौमेंद्वापरमें जातुकर्ण मुनिको प्रथमजन्माके पीछे वेदव्यासजी का अवतार हुआहै १५७ इस वेदव्यासजीने एकवेदके चार विभागकिये हैं और भारत वंशकी उत्पत्तिकरी हैं १५८ और हे राजन् संसार के कल्याणके अर्थ वीतेहुये विष्णुके अवतार प्रकाशित किये और होनेवाले अवतारभी कहेजाते हैं १५६ और सम्भलग्राममें विष्णुयशानामसे विख्यात संसारके कल्याणके अर्थ कल्की नामसे अगाड़ी उत्पन्नहोवेंगे १६० पीछे सब दुष्टोंको मारके गंगा, यमुनाके मध्य देशमें मित्रोंसहित निष्ठाको प्राप्तहोवेंगे १६१ पीछे मन्त्री सेना इन्होंसहित कुलकी निवृत्ति होनेके बाद १६२ और राजाओंके नाशहोने के बाद आपस में युद्ध

करके १६३ मरतेहुये और आपसमें द्रव्योंकी चोरी करतेहुये और दुःखितहुये उस कलिसंध्या समय कष्टको प्राप्तहोवेंगे १६४ ऐसे कलियुग के साथ प्रजाका नाशहोवेगा और जब क्षीणरूप कलियुग होजावेगा तब फिर स्वभावसे कृतयुग वर्तनेलगेगा १६५ ऐसे दिव्य गुणों से संयुक्त और दिव्य अवतार ब्रह्मवादियों ने पुराणों में कहे हैं १६६ इन अवतारों के कीर्त्तन करने में देवते भी मोहित होजाते हैं परन्तु संक्षेप मात्र से अवतार प्रकाशित किये हैं १६७ और अमित वीर्य्यवाले और सर्वलोकके गुरु और कीर्त्तन करने के योग्य ऐसे विष्णुके अवतारों का कीर्त्तनकरनेसे सब पितर प्रसन्नहोजाते हैं १६८ ऐसे मुनिजनों ने कहा है और योगेश्वररूप विष्णु के इन मायारूप अवतारों को श्रवण करने से १६९ भगवत्के प्रतापसे मनुष्योंके पापोंका नाश होजाताहै और ऋद्धि सिद्धि भोग इन्होंकी प्राप्ति होती है १७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे विष्णु के विश्वरूपको कृतयुगमें हरि और देवताओं में वैकुण्ठ रूपको और मानुष युगमें कृष्णरूपको मेरे से श्रवणकर १ और विष्णु के ईश्वरपने को और कर्म्मों की वर्त्तमान भूत भविष्य ऐसी गहन गति को हे राजन् श्रवणकर २ और अव्यक्त और व्यक्त चिह्नवाला और अनन्तात्मावाला और सबका आदि कारण और अविनाशी ३ और सामर्थ्यवाले ऐसे नारायण कृतयुग में हरिरूपको धारण करतेभये ४ और ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्रमा, धर्म, शुक्र, बृहस्पति ५ देवते इन्होंके रूपों को प्राप्तहो यही विष्णु इन्द्रके छोटेभ्राता बनते भये ६ अर्थात् दैत्य, दानव, राक्षस इन्हों के नाशके अर्थ अदिति के पुत्रहोके जन्मतेभये ७ और यही विष्णु आदिमें ब्रह्माजी को रचतेभये और पूर्व पुरुषरूप ब्रह्माजी सृष्टिकल्पमें प्रजापतियों को रचतभया ८ और वे प्रजापति शरीरोंको फैलातेहुये ब्रह्मवंशों को रचतेभये तिन ब्रह्मवंशों में शास्त्ररूप वेदकी प्रकटता हुई ९ ऐसे आश्चर्य रूप विष्णुके अवतार हुये हैं सो मेरे से तू जान १० और कृतयुगमें वृत्रासुरको मारने के वास्ते त्रिलोकी में तारकामयनाम से विख्यात युद्ध हुआहै ११ जिसमें गर्वितरूप दैत्य, देव, यक्ष, नाग इन्हों को मारतेभये १२

तब मरने के भयसे युद्धमें विमुखहुये देवता आदि मनकरके रक्षाकरने के योग्य नारायणकी शरणभये १३ इसी समयमें अति तेजवाले मेघ,सूर्य्य, चन्द्रमा,ग्रह इन्होंसे संयुक्त आकाशको आच्छादित करतेभये १४ और चलायमान बिजली के समूहों से वेधित किये और आपग के वेगसे हतहुये ऐसे सातपवन वेगसे चलतेभये १५ और प्रकाशमान जल और वज्रपात और पवन अग्नि इन आदि घोर उत्पातों से दग्धहुआ अम्बर प्रकाशित होनेलगा १६ और हजारहों उल्का पडनेलगीं और आकाश में स्थित विमान मूंधेहोकर पृथ्वी में पडनेलगे और कितनेक ऊपरको जानेलगे १७ और जैसे युगान्तमें संसारको भयहोताहै तैसे उस समयमें अनेक प्रकारके भय होनेलगे १८ और अँधेरासे प्रभा रहित सम्पूर्ण होने से कुछ भी नहीं जानागया और अँधेरा के समूह से परिच्छिन्नहुई दशों दिशा नहीं प्रकाशित होनेलगीं १९ और घोररूप अँधेरे से आवृतहुआ आकाश भी नहीं दिखनाभया तब २० बद्दलों के समूह और अँधेराको अपनी भुजाओं से दूरकर श्रीकृष्ण मेघरूप पर्वत के समान कांतिवाला और बद्दलों के समान रोमोंवाला तेज और शरीरसे कृष्णरूप और कृष्ण पर्वतके समान और प्रकाशित पीलेवस्त्रों को धारण कियेहुये २१ और तपायाहुआ सुवर्ण के गहनों को पहिनेहुये और धूमके अन्धकारकेसमान शरीरको धारणकिये और युगांत की अग्निके समान प्रकाशवाले २२ और आठगुने पुष्टकंधोंवाले और मुकुटसे आच्छादित मस्तकवाले और अति प्रकाशवाले शस्त्रोंसे शोभित २३ और चन्द्रमा सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशवाले और पर्वतके शिखरके समान ऊंचे २४ और सबको आनन्दित करनेवाले और शर सर्प इन्होंको धारण करनेवाले २५ और शक्ति,हल,शंख, चक्र,गदा इन्होंको धारण करनेवाले और क्षमाके मूल और हरित घोड़ोंसे सयुक्त २६ और गरुडकीमूर्ति से सयुक्त ध्वजासे शोभित और चन्द्रमा सूर्यरूप चक्रसे सयुक्त २७ और मदराचलरूप धुरीसेसयुक्त और अनन्त रस्सियोंसे सयुक्त और ग्रह नक्षत्ररूप बंधु ऐसे संयुक्त २८ ऐसे रथमें स्थित हुये ईश्वरको दैत्योंसे पराजितहुये देवने देखतेभये २९ तब इन्द्रआदि देवते अंजली बांध जय शब्दका उच्चारणकर शरणरूप देवके शरणहोनेभये ३० तब तिनदेवताओंकी वाणीको श्रवणकर विष्णु भगवान् उसयुद्धमें दैत्योंके नाशनेके अर्थ मन करताभया ३१ और आकाश में स्थित विष्णु सब देवतों के अर्थ प्रतिज्ञा

सहित वचन कहनेलगा ३२ कि हे देवताओ शांतिको प्राप्तहोजाओ और भय मतकरो मैं सब दैत्योंको जीतताहूं इस त्रिलोकी के राज्यको फिर ग्रहणकरो ३३ तब सत्यसन्धरूप विष्णु के वाक्यसे प्रसन्न हुये देवते उत्तम प्रीति को प्राप्त होते भये जैसे अमृतकी प्राप्तिसे भये हैं तैसे ३४ तब अँधेरे का नाश होतागया और मेघ दूरहोतेभये और सुन्दर पवन चलनेलगे और दशोंदिशा शुद्ध होतीभई ३५ और सब तारागण प्रकाशित होके चन्द्रमा की परिक्रमा करतेभये और सब प्रकारके तेज प्रकाशितहोके सूर्यकी परिक्रमा करनेलगे ३६ और सब ग्रह विग्रहको त्यागतेभये और सब समुद्र शुद्धहोतेभये और सबमार्ग धूलिसे रहित होतेभये और स्वर्ग आदिके मार्गभी शुद्ध होतेभये ३७ और नदी समुद्रभी अपने क्षोभोंको त्यागतेभये और मनुष्यों के अन्तरात्मा में पंचमहाभूत और इन्द्रियों के गण सुन्दरताको प्राप्त होनेलगे ३८ और शोकोंसे रहित महर्षिभी अनेकप्रकारसे वेदों का अध्ययन करनेलगे ३९ और यज्ञों में स्वादुसे संयुक्त द्रव्य होताभया और तिस को अच्छी तरहसे अग्नि देवता खानेलगा ४० और सब धर्मों की प्रवृत्ति होतीभई और प्रसन्न मनवाले और प्रीति से युक्त ऐसे लोक होतेभये ४१ ऐसे जब विष्णुने प्रतिज्ञाकर दैत्योंका नाश करने के अर्थ वाणी प्रकाशित की तब यह सब वृत्तान्त हुआ ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे तब दैत्य दानव विष्णु के दिये अभय को सुनके युद्ध में अति उद्योग करनेलगे १ अर्थात् सोने से बनाहुआ और अविनाशी और चार चक्रों से युक्त और शस्त्रों से कल्पित किया २ और अनेक प्रकार के बाजाओं से शब्दित और गैंड़ाके चर्म्म से मढ़ाहुआ और रत्नोंके समूहों से सजायाहुआ और सोनाके समूहोंसे भूषित कियाहुआ ३ और ईहा मृगोंकेगणों से आकीर्ण और पक्षियों से प्रकाशित और दिव्य अस्त्र और तूणीर को धारण करनेवाला और मेघोंके समान शब्द करनेवाला ४ और हृन्दरपीन और पताकायुक्त और सुंदर धुरीवाला और गेंदा परिघ इन्दोंसे पूरित और मूर्त्तिवाले समुद्रके समान ५ और सुवर्णके गहनोंसे संयुक्त और सुवर्णसे शोभित किया

और बहुतसी ध्वजाओं से शोभित और सूर्य्य सहित मन्दराचल पर्व्वत के स-
मान ६ और हाथीरूप बादलों के सदृश और लम्बेकेशर के समान अति तेज
वाला और हजारहों तारागणों से संयुक्त और हजारहों मेघों के समान शब्द
करताहुआ ७ और प्रकाशमान और आकाशमार्ग में चलनेवाला और दिव्य
और दूसरोंके रथको पीडा देनेवाले ऐसे रथमें युद्ध करनेके अर्थ मयनाम दैत्य
स्थितहुआ जैसे मेरु पर्व्वतपै प्रकाशमान सूर्य्य ८ और एक कोशतक निस्तार
वाला और वायस अर्त्थात् काकरूप ध्वजावाला और अनेक प्रकारके पर्व्वतों
के समूहसे आकीर्ण और नीलपर्वतके समान ६ और कालरूप लोहके चरणों
से संयुक्त और अँधेरेको दूर करनेवाली किरणों से संयुक्त और गर्जते हुये मेघ
के समान गर्जताहुआ १० और लोहके समूहरूप झरोखों से दीशत और लोहा
के शस्त्र परिघ शूल बरछी ११ प्राश और पाश मुद्गर भाला फरसा इन आदिसे
शोभित १२ और वैरियों के अर्थ मानो दूसरा मन्दराचल पर्व्वत है ऐसा और
हजारहों गधोंसेसंयुक्त ऐसे रथमें तारनामवाला दैत्य स्थितहुआ १३ और गदाको
हाथमें ग्रहणकर सेनाके सम्मुख क्रोधको प्राप्तहुआ विरोचनदैत्य स्थितहुआ १४
जैसे दीप्त सींगवाला पर्व्वत और वैरियोंकी सेनाको मर्दन करनेवाला और ह-
जारहों घोडोंसे संयुक्त ऐसे रथ में हयग्रीव दैत्य स्थितहुआ १५ और अति बड़े
धनुष्की टङ्कार करताहुआ वराहदैत्य सम्मुख स्थितहुआ १६ जैसे बडापर्वत और
गर्व्वसे नेत्रोंकेद्वारा क्रोधसे उपजा जलको बहाता हुआ और दन्त, ओष्ठ, मुख
इन्होंको फरकाताहुआ युद्ध करनेकी इच्छा करताभया १७ और अठारह घोड़ों
से संयुक्त रथमें बहुतसे दैत्योंके गणों से संयुक्त त्वष्टादैत्य स्थितहोके परिक्रमण
करनेलगा १८ और श्वेत कुण्डलों को पहिनेहुये और विप्रचित्तिका पुत्र और
कैलास पर्व्वत के समान कान्तिवाला ऐसा श्वेत नामवाला दैत्य युद्धके अर्थ
सम्मुख स्थित हुआ १६ और पर्व्वत के पत्थररूप शस्त्रों को ग्रहणकर बलिका
पुत्र अरिष्ट नामवाला दैत्य युद्ध करने को सम्मुख स्थित हुआ जैसे पृथ्वी को
धारण करनेवाला पर्वत २० और किशोर अवस्था के मनुष्य के समान प्रेरित
हुआ किशोर नामवाला दैत्य दैत्योंकी सेनाके मध्यमें सूर्यकेसमान प्रकाशित
होके स्थितहुआ २१ और लम्बेमेघ के समान कान्तिवाला और लम्बे लम्बे वस्त्र
और गहनों से शोभित ऐसा लम्बनामवाला दैत्य दैत्यों के समूह में प्रकाशित

होनेलगा जैसे धूमर से संयुक्त सूर्य २२ और टेढ़े प्रकारसे युद्धकरनेवाला और दांत, ओठ, नेत्र इनरूप शस्त्रोंवाला ऐसा महा प्रहराहु दैत्य हँसताहुआ दैत्यों के मध्यमें सम्मुख स्थितहुआ २३ और कितनेक दैत्य घोड़ों पै स्थित हो प्रकाशित होनेलगे और कितनेक दैत्य हाथी, सिंह, भगेरा, शूकर, रीछ इन्हों पै सवारहो प्रकाशित होनेलगे २४ और कितनेक दैत्य गधा, ऊंट, बद्दल, पक्षी, पवन इन्हों पै स्थित हो प्रकाशित होनेलगे २५ और कितनेक पियादे और कितनेक भयानक मुखसे युक्त और कितनेक एकपैरवाले कितनेक दो पैरवाले ऐसे होके नाचतेहुये युद्धको चाहते भये २६ और कितनेक भुजाओं को बजातेहुये और कितनेकशार्दूल के समान शब्द करतेहुये दैत्य बोलनेलगे २७ और गदा, परिघ, धनुष् और परिघके समान बाहु इन्हों से बहुतसे दैत्य देवतोंको झिड़कने लगे २८ और प्राश, फांसी, तलवार, भाला, अंकुश, पट्टिश, शतघ्नी, मुद्गर, परिघ चक्र इनआदि शस्त्रों से क्रीड़ा करतेहुये दैत्य अपनी सेनाको आनन्दित करते भये २९ ऐसे युद्ध करने के अर्थ देवताओं के सम्मुख दैत्यों की सेना स्थित होतीभई ३० ऐसे वायु, अग्नि, जल, बद्दल, पर्वत इन्हों के समान सेना युद्ध के अर्थ उन्मत्त के समान प्रकाशि होतीभई ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे हे जनमेजय दैत्योंकी सेनाका विस्तार तैनेसुना अब देवतोंकी सर्व सेनाका वैष्णव विस्तार को श्रवणकर १ तब आदित्य आठवसु ग्यारहरुद्र दोनों अश्विनीकुमार ये बहुतसी सेनाकेसंग यथाक्रम से युद्धके अर्थ कवचोंको धारण करते भये २ पीछे लोकोंकी रक्षाकरनेवाला और हजार नेत्रों वाला और सब देवताओं का स्वामी ऐसाइन्द्र ऐरावतहाथी पै सवार हुआ ३ और इसी हाथी के बाईतर्फ को गरुड़जी के वेगके समान वेगवाला और सुन्दर चक्ररूप पैरों से सयुक्त और सेना और हीरा से जटित हुआ ४ और देव गंधर्व यक्ष इन्होंसे रक्षित और प्रकाशवाले सभापति और महर्षि इन्हों से स्तुतिकिया ५ और वज्रआदि शस्त्रों से संयुक्त और पर्वतरूप मेघों के गणों से युत ६ ऐसा रथ इन्द्रका है तिसमें युद्धकरने के वास्ते जब इन्द्र स्थितहुआ तब सम्मुख उत्तम

यज्ञमें स्थितहुये ब्राह्मण गान करनेलगे ७ और जब इन्द्रगमन करनेलगा तब सब देवते बाजे बजानेलगे और सैकड़ों अप्सरा नृत्यकरनेलगीं ८ और हजार हों घोड़ोंसे और मातलिनाम सारथीसे युक्त इन्द्रकारथ शोभायमान होनेलगा ९ जैसे सूर्य के तेजसे सुमेरुपर्वत १० और दण्ड और कालयुक्त मुद्गर इन्हों को ग्रहणकर और अपने शब्दोंसे दैत्योंको भयदेताहुआ ऐसा धर्मराज देवताओं की सेनाके बीचमें स्थितहुआ ११ और चार समुद्रों से और अपनेओष्ठ मातोंको चाटतेहुये सर्पोंसे रक्षित और शङ्ख मोती इन्होंसे जटित बाजूबंदको धारणकिये हुये और जलमय शरीरको धारणकियेहुये १२ और कालपाशको धारणकियेहुये और चद्रमाकी किरणोंकेसमान घोड़ों पै सवारहुआ और वायुके वेगसे हजारहों प्रकारकी लीला करताहुआ १३ और सफेद रङ्गके शुद्ध कपड़ों को पहिने हुये और अनेकप्रकारके मूगोंकी मालाको धारणकिये और श्यामरगकी मणियोंके हारसे विभूषित १४ और फांसियोंको धारण कियेहुये और भिन्नवेलावाले समुद्र के समान क्षोभको प्राप्तहुआ ऐसा वरुणयुद्ध करनेके अर्थ देवताओंकी सेनाके मध्यमें स्थितहुआ १५ और यक्ष राक्षस इन्होंकी सेनामेंसयुक्त व गुह्यकोंके समूह सेसयुक्त और मणियोंके प्रकाशसे श्यामशरीरको धारणकरनेवाला और पालकी में स्थितहुआ १६ और शङ्खपद्मरूप खजानोंका पति और द्रव्यका स्वामी ऐसा कुबेर गदाको हाथमें लिये दीखताभया १७ पीछे पुष्पकविमान में स्थितहो युद्ध के अर्थ यही शिविका मित्र कुबेर शोभायमान होके १८ दैत्यों के सम्मुख युद्ध करने के अर्थ स्थितहुआ १९ और सेनासे पूर्व्व दिशाको इन्द्रस्थित हुआ और दक्षिण दिशाको धर्मराज स्थित हुआ और पश्चिम दिशाको वरुण स्थितहुआ और उत्तर दिशाको कुबेर स्थितहुआ २० ऐसे ये चारों लोकपाल उस देवसेना की अपनी अपनी दिशामें रक्षा करतेभये २१ और दीप्तिमान् रस्सियोंसे सयुक्त और प्रकाशमान और आकाश में चलनेवाला और सातघोड़ों से सयुक्त २२ और उदयपर्वत और अस्तपर्वत सुमेरु इन्हों पै चलनेवाला और हजारहों रस्सियों से सयुक्त २३ ऐसे रथ में अपनी बारह मूर्त्तियों से सयुक्त सूर्य्य स्थित होके देवताओं के बीचमें प्रकाशित होताभया २४ और सफेद रङ्ग के घोड़ोंसे संयुक्त रथमें शीतल किरणोंवाला और शीतलजलसे पूरित कान्तिसे जगत्को तृप्तकरताहुआ २५ और बहुतसे ताराओं से सयुक्त और ब्राह्मणोंका स्वामी और रात्रि

होनेलगा जैसे भ्रमर से संयुक्त सूर्य्य २२ और टेढ़े प्रकारसे युद्धकरनेवाला और दांत, ओष्ठ, नेत्र इनरूप शस्त्रोंवाला ऐसा महा ग्रहराहु दैत्य हँसताहुआ दैत्यों के मध्यमें सम्मुख स्थितहुआ २३ और कितनेक दैत्य घोड़ों पै स्थित हो प्रकाशित होनेलगे और कितनेक दैत्य हाथी, सिंह, बघेरा, शूकर, रीछ इन्हों पै सवारहो प्रकाशित होनेलगे २४ और कितनेक दैत्य गधा, ऊंट, बद्दल, पक्षी, पक्ष इन्हों पै स्थित हो प्रकाशित होनेलगे २५ और कितनेक पियादे और कितनेक भयानक मुखसे युक्त और कितनेक एकपैरवाले कितनेक दो पैरवाले ऐसे होके नाचतेहुये युद्धको चाहते भये २६ और कितनेक भुजाओं को बजातेहुये और कितनेकशार्दूल के समान शब्द करतेहुये दैत्य बोलनेलगे २७ और गदा, परिघ, धनुष् और परिघके समान बाहु इन्हों से बहुतसे दैत्य देवतोंको झिड़कने लगे २८ और प्राश, फांसी, तलवार, भाला, अंकुश, पट्टिश, शतघ्नी, मुद्गर, परिघ चक्र इनआदि शस्त्रों से क्रीडा करतेहुये दैत्य अपनी सेनाको आनन्दित करते भये २९ ऐसे युद्ध करने के अर्थ देवताओं के सम्मुख दैत्यों की सेना स्थित होतीभई ३० ऐसे वायु, अग्नि, जल, बद्दल, पर्वत इन्हों के समान सेना युद्ध के अर्थ उन्मत्त के समान प्रकाश होतीभई ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्याय ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे हे जनमेजय दैत्योंकी सेनाका विस्तार तैंनेसुना अब देवतोंकी सर्व सेनाका वैष्णव विस्तार को श्रवणकर १ तब आदित्य आठवसु ग्यारहरुद्र दोनों अश्विनीकुमार ये बहुतसी सेनाकेसंग यथाक्रम से युद्धकेअर्थ कवचोंको धारण करते भये २ पीछे लोकोंकी रक्षाकरनेवाला और हजार नेत्रों वाला और सब देवताओं का स्वामी ऐसाइन्द्र ऐरावतहाथी पै सवार हुआ ३ और इसी हाथी के बाईंतर्फ को गरुड़जी के वेगके समान वेगवाला और सुन्दर चक्ररूप पैरों से संयुक्त और सेना और हीरा से जटित हुआ ४ और देव गंधर्व यक्ष इन्होंसे रक्षित और प्रकाशवाले सभापति और महर्षि इन्हों से स्तुतिकिया ५ और वज्रआदि शस्त्रों से संयुक्त और पर्वतरूप मेघों के गणों से गुप्त ६ ऐसा रथ इन्द्रका है तिसमें युद्धकरने के वास्ते जब इन्द्र स्थितहुआ तब सम्मुख उद्यम

यज्ञमें स्थितहुये ब्राह्मण गान करनेलगे ७ और जब इन्द्रगमन करनेलगा तब सब देवते बाजे बजानेलगे और सैकडों अप्सरा नृत्यकरनेलगीं ८ और हजारहों घोडोंसे और मातलिनाम सारथीसे युक्त इन्द्रकारथ शोभायमान होनेलगा ९ जैसे सूर्य के तेजसे सुमेरुपर्वत १० और दण्ड और कालयुक्त मुद्गर इन्हों को ग्रहणकर और अपने शब्दोंसे दैत्योंको भयदेताहुआ ऐसा धर्मराज देवताओं की सेनाके बीचमें स्थितहुआ ११ और चार समुद्रों से और अपनेओष्ठ प्रांतोंको चाटतेहुये सर्पोंसे रक्षित और शङ्ख मोती इन्होंसे जटित बाजूबंदको धारणकिये हुये और जलमय शरीरको धारणकियेहुये १२ और कालपाशको धारणकियेहुये और चद्रमाकी किरणोंकेसमान घोडों पै सवारहुआ और वायुके वेगसे हजारहों प्रकारकी लीला करताहुआ १३ और सफेद रङ्गके शुद्ध कपडों को पहिने हुये और अनेकप्रकारके मूगोंकी मालाको धारणकिये और श्यामरंगकी मणियोंके हारसे विभूषित १४ और फांसियोंको धारण कियेहुये और भिन्नवेलावाले समुद्र के समान क्षोभको प्राप्तहुआ ऐसा वरुणयुद्ध करनेके अर्थ देवताओंकी सेनाके मध्यमें स्थितहुआ १५ और यक्ष राक्षस इन्होंकी सेनामेंसयुक्त व गुह्यकोंके समूह सेसयुक्त और मणियोंके प्रकाशसे श्यामशरीरको धारणकरनेवाला और पालकी में स्थितहुआ १६ और शङ्खपद्मरूप खजानोंका पति और द्रव्यका स्वामी ऐसा कुबेर गदाको हाथमें लिये दीखताभया १७ पीछे पुष्पकविमान में स्थितहो युद्ध के अर्थ यही शिविका मित्र कुबेर शोभायमान होके १८ दैत्यों के सम्मुख युद्ध करने के अर्थ स्थितहुआ १९ और सेनासे पूर्व्व दिशाको इन्द्रस्थित हुआ और दक्षिण दिशाको धर्म्मराज स्थित हुआ और पश्चिम दिशाको वरुण स्थितहुआ और उत्तर दिशाको कुबेर स्थितहुआ २० ऐसे ये चारों लोकपाल उस देवसेना की अपनी अपनी दिशामें रक्षा करतेभये २१ और दीप्तिमान् रश्मियोंसे सयुक्त और प्रकाशमान और आकाश में चलनेवाला और सातघोडों से संयुक्त २२ और उदयपर्वत और अस्तपर्वत सुमेरु इन्हों पै चलनेवाला और हजारहों रश्मियों से सयुक्त २३ ऐसे रथ में अपनी बारह मूर्त्तियों से सयुक्त सूर्य्य स्थित होके देवताओं के बीचमें प्रकाशित होताभया २४ और सफ़ेद रङ्गके घोडोंसे सयुक्त रथमें शीतल किरणोंवाला और शीतलजलसे पूरित कान्तिसे जगत्को तृप्तकरताहुआ २५ और बहुतसे ताराओं से सयुक्त और ब्राह्मणोंका स्वामी और रात्रि

के अँधेरे को दूरकरनेवाला २६ और आकाशमें सब तारागणों का पति और रसोंके रसको देनेवाला और औषधियों की रक्षा करने से अमृतका समुद्र २७ ऐसा चन्द्रमा स्थित होनेलगा तब सब दैत्य इस चन्द्रमाको देखतेभये २८ और जो सब प्राणियों का प्राण और जो मनुष्यों में प्राण अपान उदान समान व्यान इन पांच भेदों से विख्यात है २९ और चराचररूप इन तीन लोकों को धारण करनेवाला ३० और अग्नि का सारथी और शब्द का आदि कारण और सातस्वरों में गान करानेवाला ३१ और उत्तम तत्त्व और शरीर से रहित और आकाशमें चलनेवाला और जल्द चलनेवाला और शब्दका योनि और सम्पूर्ण प्राणियों का आयुरूप ऐसावायु दैत्योंको पीड़ा देताहुआ अच्छीतरह चलनेलगा ३२ और देव गधर्व विद्याधर इन्हों से संयुक्त मरुत् देवने तलवारोंसे क्रीड़ाकरनेलगे ३३ और क्रोधसे उपजे विषको रचतेहुये सर्प्पों के पति देवताओंके शररूपहोके मुखको फाड़ आकाश में विचरनेलगे ३४ और शिला शृङ्ग शतशाखोंवाले वृक्ष इन्हों से संयुक्त पर्वत देवताओं के अर्थ दैत्योंकी सेना पै प्रहार करनेके वास्ते सब पर्व्वत प्राप्तहुये ३५ और पद्मनाभ त्रिविक्रम इन नामों वाला और युगांतके अग्निके समान और जगत्का स्वामी ३६ और समुद्रका आदिकारण और मधुदैत्य को मारनेवाला और हवन के द्वारा भोजन करने वाला और यज्ञसे पूजित और पृथ्वी जल आकाश इन्होंके रूपवाला और भूतात्मा और शांतिस्वरूप और शान्ति करनेवाला और शत्रुओंको मारनेवाला ३७ और जगत्कीयोनि और जगत्कावीज और जगत्का गुरु और सूर्य अग्नि इन्होंके समान तेजवाला ३८ और शङ्ख चक्र गदाको धारण करनेवाला जैसें परिवेश सहित सूर्य्यका मंडल ३९ और वायेंहाथ में सब राक्षसोंको नाश करने वाली और शत्रुओं की मृत्यु करनेवाली ऐसी बड़ी गदाको धारण करनेवाला ४० और शेषहाथों में शार्ङ्गधनुष् आदि शस्त्रोंको धारण करनेवाला और गरुड़ जी के चिह्नकी ध्वजाको धारण करनेवाला ऐसा विष्णुभगवान् ४१ कश्यपका पुत्र और सर्प्पों को खानेवाला और पवन से अधिक गमन करनेवाला और आकाश में क्षोभ करनेवाला और आकाशमें गमन करनेवाला ४२ और सर्पराजको मुखमें धारण करनेसे शोभित और मन्दराचल पर्वतके समान ऊंचा ४३ और देवासुर युद्धमें सैकड़ोंवार विख्यात पराक्रमवाला और अमृतके अर्थ युद्धमें

इंद्रके हाथसे फेंकेहुये वज्रसे चिह्नितहुआ ४४ और शिखावाला और चूलवाला और तपायमान सोने के कुण्डलों को पहरनेवाला और विचित्र पत्तोंके कपड़ों वाला और धातुओंसे संयुक्त पर्वतके समान ४५ और चंद्रमाके समान तेजवाले मणि रत्नों से प्रकाशित ४६ और सुन्दररूप पंखों से आकाश को आच्छादित करताहुआ जैसे युगांत में जलको देनेवाले इन्द्रधनुष् ४७ और नील लोहित पीत ऐसी पताकाओं से अलंकृत और ध्वजारूप वेषसे आच्छादित और बड़े शरीर से संयुक्त ४८। ४९ और अरुण से पीछे उपजनेवाला और आकाश में उडनेवालों में उत्तम और सुन्दर पखोंवाला ऐसे गरुडजी पै श्रीमान् विष्णु सवारहोके युद्धमें प्राप्तहुये तब मुनिजन सावधानहोके मन्त्ररूपवाणी से विष्णुकी स्तुति करतेभये ५० और कुबेरजी से संयुक्त और धर्म्मराज है अगाडी जिसमें और वरुणजी से परिक्षिप्त और इन्द्रसे प्रकाशित ५१ और चन्द्रमाकी किरणों के समान शुद्ध और युद्धकी मत्सरता से वेगित और पवनके समान शब्दवाला और प्रकाशितरूप अग्निके समान ५२ और विष्णुके तेजसे आवृत ऐसी देवताओंकी सेना युद्धके अर्थ तैयार भई ५३ पीछे देवताओं का कल्याण अर्थात् मनोवाञ्छित हो ऐसे बृहस्पतिजी गान करनेलगे ५४ और दैत्यों का कल्याण अर्थात् मनोवाञ्छितहो ऐसे शुक्राचार्य्यजी कहनेलगे ५५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे पूर्वोक्त दोनों सेनाओंसे आपसमें जयकी इच्छाकरने वाले देवता और दैत्योंका आपसमें युद्ध होनेलगा १ तब नानाप्रकारके प्रहार करनेवाले दैत्य देवताओं के संग युद्ध करनेलगे जैसे पर्वतों से पर्वत २ तब धर्म पाप गर्व विनय इन्हों से संयुक्त देवते और राक्षसोंका घोररूप युद्ध होनेलगा ३ पीछे वेगवाले रथोंमें स्थित और अनेकप्रकारके हथियारोंको ग्रहण करनेवाले ४ आपसमें जब हथियारोंको चलानेलगे तब जगत् को त्रास देनेवाला अतिउग्र युद्धहुआ ५ पीछे अपने हाथों से फेंकेहुये परिघ आदि शस्त्रोंसे दैत्य इन्द्रआदि देवतोंको युद्धमें मारनेलगे ६ तब अतिबलवाले दैत्योंके हाथसे पीड़ितहुये और दुःखित मनसे संयुक्त ऐसे देवते युद्धमें उग्रग्लानि को प्राप्तहुये ७ पीछे अस्त्र

जालों से दुःखितहुये और परिघ शस्त्रसे खण्डित मस्तकों वाले और टूटीहुई छातीवाले ऐसे देवताओं के शरीरमें घावों से बहुतसा रक्त बहनेलगा ८ अर्थात् फाँसियों के जालोंसे दैत्योंने उद्योगसे रहित देवते करदिये और दैत्योंकी माया से मोहितहुये देवते चेष्टा करनेकोभी समर्थ नहीं होतेभये ९ और स्तंभित और प्राणों से रहित के समान आकृतीवाली और उद्योग शस्त्र आदिसे रहित ऐसी देवताओंकी सेना राक्षसोंने करदी १० तब वज्रसे मायाकी फाँसियों को काटता हुआ इन्द्र घोररूप दैत्य सेनामें प्रवेशकर ११ और बहुतसे दैत्योंको मार तामस रूप अस्त्र जालसे अँधेरा संयुक्त दैत्यों की सेनाको करताभया १२ तब इन्द्र के तेजरूप अँधेरेसे व्याप्तहुये देवते और दैत्य आपसमें नहीं जानतेभये १३ और मायाकी फाँसीसे छुटेहुये देवते दैत्योंके तमोभूत शरीरोंको काटके पृथ्वी में गिरानेलगे १४ तब सज्ञासे रहित और नीले तेजवाले और दुःखित ऐसे दैत्यों के गण पृथ्वी में पडनेलगे जैसे छिन्नपक्षवाले पर्वत १५ ऐसे अन्धकाररूपी समुद्रमें प्रविष्टहुई दैत्यों की सेना दुःखितरूप दीखनेलगी १६ तब इस तामसी मायाको दग्ध करनेवाला मयनाम दैत्य युगांतमें लोकको दग्ध करनेवाली और ऊर्व के पुत्र अग्नीकी रचीहुई १७ ऐसी मायाको रचताभया तब उस मायाके प्रतापसे सब अँधेरा दग्ध होगया और सूर्यके समान तेजवाले दैत्य युद्धमें उडनेलगे १८ तब और भी मायाके प्रतापसे दग्धहुये देवते चन्द्रमा के देशमें शीतल जल के ह्रदमें स्नान करनेको चाहतेभये १९ और उस मायासे दग्धहुये और तेजसेभ्रष्ट और अतितप्त होतेहुये ऐसे देवते इन्द्रकी शरणगये २० तब इन्द्रसे प्रेरित किया वरुण वाक्य कहनेलगा २१ हे इन्द्र पहले ब्रह्मर्षिसे उपजा और ब्रह्माके गुणों के समान गुणोंवाला और अति तेजस्वी ऐसा ऊर्व दारुण तप करताभया २२ तब आदित्यके समान अपने तेजसे जगत्को तपायमान करनेलगा तब देवते देवर्षि मुनिजन ये सब समीपमें आके स्तुतिकरनेलगे २३ और दैत्योंका स्वामी हिरण्यकशिपु दैत्यभी परमतेजवाले इस ऋषिको जानताभया २४ तब सबमुनि ऊर्वतपस्वी के अर्थ कहनेलगे हे भगवन् यह विप्रकुल वंश से रहितहै २५ तिस में सन्तान से रहित आप अकेले हैं और आपका गोत्रभी नहीं है और आप कौमारव्रत को प्राप्त हो क्लेशकरते भये हैं २६ और आप तप करने में ब्रह्माजी के समान कीर्त्तिवाले हैं २७ इस वास्ते वंशचलाने के अर्थ अपनी आत्मा

से आत्मा को वढ़ाके वढे हुये तेज से दूसरे शरीर को रचो तव ऐसे मुनियों के वचनको श्रवणकर मनमें ताडितहुआ ऊर्वमुनि सव मुनियों की निन्दा करने लगा और यह वचन कहताभया २८। २९ कि मुनिजनोंका यही शाश्वत धर्म है कि वनके मूलफल आदिका भोजन करके कालको व्यतीतकरें ३० और ब्रह्मयोनि में उपजेहुये आत्मवर्त्ती ब्राह्मणसे अच्छी तरह सेवितकिया ब्रह्मचर्य्य ब्रह्माजी को भी चलायमान करदेता है ३१ और ब्राह्मणों की तीनवृत्ती हैं एक ब्रह्मचर्य एक गृहस्थाश्रममें वसना एकवनमें वसना तिन्हों में हम वनवासीहैं ३२ अर्थात् वनमें हमारी आजीविका है और जलका भोजन करनेवाले और वायु का भोजन करनेवाले और दातरूप उलूखलको माननेवाले और पत्थर पै कूट के वनफल को खानेवाले और निरसनव्रत को करनेवाले और पंचाग्नि से तप करनेवाले ३३। ३४ और वृत्तोंसे संयुक्त ऐसे सव तपस्वी ब्रह्मचर्य्य को अगाडी कर उत्तमगतिकी प्रार्थना करते हैं और ब्राह्मणके ब्रह्मचर्य्यही ब्राह्मणपनाहै ऐसे ब्रह्मवादीजन कहते भये हैं ३५ और ब्रह्मचर्य्य में धीर्यता स्थितहै और ब्रह्मचर्य्य में तप स्थितहै और जो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य्य में स्थितहैं वे ब्राह्मण स्वर्ग में स्थित हैं ३६ और योगके विना सिद्धिकी प्राप्ति नहीं है और सिद्धिके विना यशनहीं है और ब्रह्मचर्य्य के समान यशकी जड नहीं है ३७ और जो इन्द्रियों के समूह को और पंच महाभूतों को वशमें करके ब्रह्मचर्य्यको धारण करताहै इसके उपरान्त कोई भी तपनहीं है ३८ और योगके विना शिर पै जटाको धारण करना और नियमके विना व्रतका आरम्भकरना और ब्रह्मचर्य्यविना पूजाकरनी येतीनों दम्भसञ्ज्ञक अर्थात् पाखण्ड कहाते हैं ३९ कहाभार्या है कहा संयोग है कहा भाव का वदल जानाहै जैसे ब्रह्माजी ने मनसे यह प्रजारची है ४० सो तुम्हारे तप में तपका वीर्य है इसवास्ते प्राजापत्य कर्म करके मनकेद्वारा पुत्रोंको रचो ४१ और क्योंकि मनसे रचीहुई योनि में पुत्रकी उत्पत्ति करनी तपस्वियोंके वास्ते लिखी है ४२ और साक्षात् भार्याका संयोग तपस्वियोंको नहीं करना चाहिये ४३ और निर्भयरूपहोके तुमको असत् पुरुषोंकी तरह मेरेप्रति वचन कहना अयुक्तहै ४४ अव मैं भार्या के संयोग विना अपने शरीरसे उत्पन्नहुये पुत्रको रचताहूं ४५ ऐसे आत्मासे मेराआत्मा वनकी विधिसे प्रजाको दग्ध करनेवाला और द्वितीय आत्मा दूसरे पुत्रको जनेगा ४६ तव तपस्वी ऊर्व अपनी जंघाको अग्निमें प्राप्तकर

एकडामसे मथताभया ४७ तव तिसकी जांघको भेदन करके इंधनसे रहित और ज्वाल अर्थात् अति प्रकाशरूप और जगत्को दग्धकरने की इच्छा करनेवाला ऐसा अग्निरूप पुत्रउपजा ४८ और उपजतेही अतिक्रोध करनेलगा और पिता के अर्थ कहनेलगा ४९ हे जनक मेरेको क्षुधालगरही है सो इस जगत्को दग्ध करूंगा इसलिये मेरेको त्याग ५० ऐसे स्वर्गपर्यन्त फैली हुई लठासे युक्त अग्नि दश दिशाओं को दग्ध करताहुआ प्रलय समयके अग्निके समान वढ़नेलगा ५१ तव सव संसारके कल्याणको चाहनेवाले ब्रह्माजी ऊर्वमुनि के समीपमें प्राप्त हो ५२ प्रथम हे मुने ऐसा सम्बोधन देकर ऊर्व से कहनेलगे हे पुत्र इस तेज को धारणकरो और ससार पै दयाकरो ५३ और तेरे पुत्ररूप अग्निकी सहायतामें करूंगा अर्थात् वसने को स्थान और अमृतके समान भोजनदूंगा ५४ यह मेरा वचन सत्यहै आप श्रवणकरो ५५ तव ऊर्वमुनि कहनेलगे जो आप मेरे पुत्रके अनुग्रह के अर्थ ऐसी दया करते हैं इसवास्ते मैं धन्य हू और अनुग्रहीत हूं ५६ परन्तु जन्मकालमें मेरी आज्ञासे तृप्तहोनेवाला पुत्र किन पदार्थों से तृप्त किया जावेगा अर्थात् सुखी कियाजावेगा ५७ और किस जगहपर वसाया जावेगा और पराक्रम के समान क्या भोजन किया करेगा ५८ तव ब्रह्माजी कहनेलगे कि समुद्रके मुखमें जहा वडवाअग्नि वसताहै तहां जलमें वासकरेगा ५९ और जलरूप हविका भोजन करेगा ६० पीछे युगातमें मेरे संग यह अग्नि विचरेगा ६१ और युगान्तमें जलको खानेवाला और सवप्राणी देव दैत्य राक्षस इन्होंको दग्ध करनेवाला ऐसा होवेगा ६२ तव ऐसेही होजावे ऐसे कहनेवाला और आच्छादित प्रकाशवाला ऐसा अग्नि पिताके अर्थ अपने तेजको देखकर समुद्रके मुखमें प्रवेश करताभया ६३ पीछे ऊर्व के पुत्र रूप अग्नि के प्रभाव को जानने वाले सव महर्षि और ब्रह्माजी अपने २ स्थानों को चलेगये ६४ तवइसअद्भुत रूप ऊर्वमुनि को देख हिरण्यकशिपु राक्षस मुनिको पूजके पश्चात् नम्ररूपहोके कहनेलगा ६५ हे भगवन् जो आपके तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये यह अद्भुतकार्य हुआहै और हे महाव्रत आपका और आपके पुत्रका मैं भृत्य अर्थात् अनुचर हूं इसवास्ते उत्तमकर्म्म के द्वारा मेरी श्लाघा करानी चाहिये ६६ और मैं तेरेही वशमें स्थितहू और तेरेही आराधनमें तत्परहू परन्तु हे मुनिश्रेष्ठ मैं शिथिलरूप हो रहाहू सो इसमें आपही का पराजय है ६७ तव ऊर्वमुनि कहनेलगे कि जो

तैंने मेरे को गुरु मानलिया इसवास्ते मैं धन्यहुआ और तू अनुग्रहीतहुआ इस वास्ते हेसुव्रत मेरे प्रताप से तेरेको भय नहीं उपजेगा ६८ मेरे पुत्रकी रचीहुई इस माया को ग्रहणकर यह इंधन से रहित और अग्निस्वरूप और अग्नि से भी उग्र ऐसी माया है ६९ यह तेरे वंश में वशीभूत रहेगी और अपने पक्षकी रक्षा करेगी और शत्रुके पक्षमें प्रहार करेगी ७० तब ऐसेही होजावो इस वचन का उच्चारणकर मायाको ग्रहणकर पीछे मुनिजनके अर्थ प्रणामकर प्रसन्नहुआ और सिद्ध प्रयोजनवाला ऐसा दैत्यराज स्वर्ग में प्राप्तहुआ ७१ सो यह देवताओं को भी दुःख देनेवाली माया ऊर्वमुनि के पुत्ररूप अग्नि ने रची है ७२ पीछे जब दैत्यराज अनर्थ करनेलगा तब इस मायाके अर्थ ऊर्वमुनि ने शापभी दियाहै ७३ इस माया को दूरकरना आप चाहते हैं और सुखकीइच्छा करते हैं तो हेइन्द्र जल का योनिरूप और मेरामित्र ऐसे चन्द्रमा को मेरेअर्थ देवो ७४ तिससे सहित और जलके समूह से सयुक्त मैं वरुण तेरे प्रताप से इस माया का नाश करदूगा इसमें सशय नहीं है ७५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि देवताओं की वृद्धि को चाहनेवाला इन्द्र प्रसन्न होके कहनेलगा कि हे वरुण ऐसेही होवेगा पीछे अति शीतलता रूप शस्त्रों वाले चन्द्रमा को युद्धकेअर्थ शिक्षितकर १ इन्द्र कहनेलगा हे चन्द्र तू गमनकर और वरुण की सहायता कर क्योंकि दैत्यों के नाशवास्ते और देवताओं की जयवास्ते २ अतिवीर्य्यवाला और तारागणोंकापति और सब ससारको रसका देनेवाला ३ और समुद्र के समान क्षय वृद्धिसेयुक्त और दिन रात्रि रूप काल को जगत् में योजना करनेवाला ४ और लोक छायारूप चिह्नसे चिह्नित और शशिरूप चिह्नसे लक्षित और जिसके चिह्नको नक्षत्रआदि देवताभी नहीं जानते ५ और सूर्य्य के मार्ग से ऊर्द्ध्वस्थान में स्थित तारागणों के ऊपर स्थितहोने वाला और अँधेरा को दूरकर सम्पूर्णजगत् को प्रकाशित करनेवाला ६ और श्वेतकिरणों से सयुक्त और शीतलरूप प्रकाश करनेवाला और काल योगात्मा और पूजनेके योग्य और यज्ञगम और अविनाशी ७ और औषधियोंकास्वामी

एकडाभसे मथताभया ४७ तब तिसकी जांघको भेदन करके इंधनसे रहित और ज्वाल अर्थात् अति प्रकाशरूप और जगत्को दग्धकरने की इच्छा करनेवाला ऐसा अग्निरूप पुत्रउपजा ४८ और उपजतेही अतिक्रोध करनेलगा और पिता के अर्थ कहनेलगा ४९ हे जनक मेरेको क्षुधालगरही है सो इस जगत्को दग्ध करूंगा इसलिये मेरेको त्याग ५० ऐसे स्वर्गपर्यन्त फैली हुई लठासे युक्त अग्नि दश दिशाओं को दग्ध करताहुआ प्रलय समयके अग्निके समान बढ़नेलगा ५१ तब सब संसारके कल्याणको चाहनेवाले ब्रह्माजी ऊर्वमुनि के समीपमें प्राप्त हो ५२ प्रथम हे मुने ऐसा सम्बोधन देकर ऊर्व से कहनेलगे हे पुत्र इस तेज को धारणकरो और संसार पै दयाकरो ५३ और तेरे पुत्ररूप अग्निकी सहायतामें करूंगा अर्थात् वसने को स्थान और अमृतके समान भोजनदूंगा ५४ यह मेरा वचन सत्यहै आप श्रवणकरो ५५ तब ऊर्वमुनि कहनेलगे जो आप मेरे पुत्रके अनुग्रह के अर्थ ऐसी दया करते हैं इसवास्ते मैं धन्य हू और अनुग्रहीत हूं ५६ परन्तु जन्मकालमें मेरी आज्ञासे तृप्तहोनेवाला पुत्र किन पदात्थों से तृप्त किया जावेगा अर्थात् सुखी कियाजावेगा ५७ और किस जगहपर बसाया जावेगा और पराक्रम के समान क्या भोजन किया करेगा ५८ तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि समुद्रके मुखमें जहां बड़वाअग्नि वसताहै तहा जलमें वासकरेगा ५९ और जलरूप हविका भोजन करेगा ६० पीछे युगांतमें मेरे संग यह अग्नि विचरेगा ६१ और युगान्तमें जलको खानेवाला और सबप्राणी देव दैत्य राक्षस इन्होंको दग्ध करनेवाला ऐसा होवेगा ६२ तब ऐसेही होजावे ऐसे कहनेवाला और आच्छादित प्रकाशवाला ऐसा अग्नि पिताके अर्थ अपने तेजको देखकर समुद्रके मुखमें प्रवेश करताभया ६३ पीछे ऊर्व के पुत्र रूप अग्नि के प्रभाव को जानने वाले सब महर्षि और ब्रह्माजी अपने २ स्थानों को चलेगये ६४ तब इसअद्भुत रूप ऊर्वमुनि को देख हिरण्यकशिपु राक्षस मुनिको पूजके पश्चात् नम्ररूपहोके कहनेलगा ६५ हे भगवन् जो आपके तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये यह अद्भुतकार्य हुआहै और हे महाव्रत आपका और आपके पुत्रका मैं भृत्य अर्थात् अनुचर हूं इसवास्ते उत्तमकर्म्म के द्वारा मेरी श्लाघा करानी चाहिये ६६ और मैं तेरेही वशमें स्थितहू और तेरेही आराधनमें तत्परहू परन्तु हे मुनिश्रेष्ठ मैं शिथिलरूप हो रहाहू सो इसमें आपही का पराजय है ६७ तब ऊर्वमुनि कहनेलगे कि जो

होतीभई और पत्थर और शस्त्रों से दुःखित हुये युद्धमें देवगण हाहाकार करने लगे और कितनेक देवता पत्थरोंकी वृष्टिसे दुःखितहुये और सब प्रकारसे देवताओं की सेना उद्योग से रहित करदी २६ और पत्थरों की वर्षा से और वृक्ष पर्वत इन्होंसे घोर सञ्चारवाली पृथ्वी होनेलगी जैसे पर्वतों से २७ और नाना प्रकारके पत्थर आदिसे पीड़ित भी किये परन्तु विष्णुभगवान् उस युद्ध में नहीं कांपतेभये २८ और अतिक्षमा करनेवाले विष्णु क्रोधकोभी नहीं प्राप्तहुये २९ और कालको जाननेवाले और कालरूप मेघके समान कान्तिवाले ऐसे विष्णु भगवान् देवता और दैत्यों के युद्ध को देखतेहुये ३० समय को देखतेभये पीछे विष्णुकी आज्ञासे प्रेरितकरे ३१ अग्नि और पवन देवता मयकी रची मायाको शान्त करनेके अर्थ तय्यारहुये ३२ तब इनदोनों देवताओंने मयकी सब माया दग्धकरदी ३३ और भस्मरूप बनाके नाशवान्भी करदी ३४ और अग्नि पवन आपसमें मिलके युगान्तके समान दैत्यों की सेनाको दग्ध करतेभये ३५ और और अगाडी भाजता हुआ वायु और तिस के पीछे भाजता हुआ अग्नि ये दोनों क्रीड़ा करतेहुये दैत्योंकी सेना मे विचरनेलगे ३६ और जब आकाश से दैत्योंके विमान भस्मरूपहोके पडनेलगे और दैत्योंकी मायाका नाशहोनेलगा और अग्नि अपने कर्म्मको करचुके ३७ और वायु आदि से विद्धहुये विमान भ्रष्ट होनेलगे और विष्णुभगवान्की स्तुति होनेलगी ३८ और उद्योगसे रहित दैत्य होनेलगे और बन्धनों से रहित त्रिलोकी होनेलगी और साधु साधु ऐसे कहनेवाले सब देवता प्रसन्न होनेलगे ३९ और इन्द्रकीजय होनेलगी और मय का पराजय होने लगा और सब दिशाओं की शुद्धि होनेलगी और धर्म्मका विस्तार होने लगा ४० चन्द्रमा और सूर्य्य शुद्धहोके प्रकाशित होनेलगे और तीनोंलोक प्रकृतिमें होनेलगे ४१ और मृत्युका बन्धन होनेलगा और अग्निमें हवन होनेलगा और यज्ञभागोंको देवता ग्रहणकरनेलगे और स्वर्गको देखने की इच्छा करनेलगे ४२ और सब दिशाओंमें लोकपाल गमन करनेकी इच्छा करनेलगे और आनन्दितरूप देवपक्ष होनेलगा और पराजितरूप दैत्यपक्ष होनेलगा ४३ और तीन पैरोंवाला धर्म्म प्रकाशित होने लगा और तीन पैरों से रहित पाप भ्रष्ट होनेलगा ४४ और धर्म्मका द्वार खुलनेलगा और सत्मार्ग वर्तमान होनेलगा और सब वर्ण अपने २ धर्म्मों में और आश्रमों में स्थितहोने

और क्रियाओंका आदिकारण और छंदोंका उत्पत्तिस्थान और शीतलता को
भजनेवाला और शीतल किरणोंवाला और अमृतकाआधार और चपल और
श्वेत वाहनों से संयुक्त ८ और कांति शरीरवालों को कांति और,अमृत पीने
वालों का अमृत और सौम्यरूप और सब संसार के अन्धेरे को दूरकरनेवाला
और नक्षत्रोंका राजा ९ ऐसा तू चन्द्रमाहै जिस मायासे हम दग्ध होते हैं तिस
आसुरी मायाको तू शांतकर १० तब चन्द्रमा कहनेलगा हे देवराज जो मेरे व
युद्ध के अर्थ कहते हैं सो मैं दैत्य की माया को नाशनेवाला शिशिर अर्था
अति शीतलता को वरसाताहूं ११ और मेरी शीतलता से दग्धहुये और जाड़
से वेष्टित,माया और मदसे रहित ऐसे दैत्योंको इस युद्ध में तू अभी देख १२ त
वैशम्पायन कहने लगे कि चन्द्रमा से छोडीहुई जाडारूप वृष्टी सब दैत्यों व
आच्छादित करतीभई जैसे मेघों के समूह १३ पीछे पाश और श्वेतजल इन्द
को धारण करानेवाले वरुण और चन्द्रमा उस युद्धमें हिमपातसे और पाशपा
से दैत्योंको मारतेभये १४ पीछे समुद्रों के समान क्षोभितहुये जलोंकरके युद्ध
विचरते भये १५ तब चन्द्रमा और वरुण के कर्त्तव्य से डूबतीहुई दैत्योंकी सेन
दीखती भई १६ ऐसे चन्द्रमा और वरुण दैत्यकी रचीहुई माया को शांत करते
भये १७ और चन्द्रमा के जालसे दग्धहुये और वरुणकी फांसी से बँधेहुये स
दैत्य चलने को समर्थ नहीं होतेभये जैसे शिरसे रहित पर्वत १८ और चन्द्रम
से मरेहुये और जाडासे पीडित और गरमाई रहित अग्नि के समान ऐसे सब
दैत्य होतेभये १९ तब उन दैत्यों के विचित्ररूप विमान कान्ति से रहित होके
पृथ्वीमें पड़नेलगे और आकाश में बुरी तरहसे जानेलगे २० ऐसे चन्द्रमा से
आच्छादित और वरुणकी फांसियों में बँधेहुये सब दैत्यों को आकाश में देख
मायाको जाननेवाला मयनामा दैत्य २१ शिलाके समूहसे विस्तृत और वृक्ष
आदिसे संयुक्त और कन्दरा वन आदिसेयुक्त २२ और सिंह व्याघ्र इन आदि
से आकीर्ण दैत्योंके गणों से शब्दायमान और इहां मृगोंके समूहसे आकीर्ण
और पवनसे हलतेहुये वृक्षोंसे युक्त २३ और कौंचनामवाले मयके पुत्रकी रची
हुई ऐसी पार्वती मायाको चारोंतर्फ से आकाश में रचताभया २४ और शब्द
पत्थरोंका वर्षना और वृक्षोंका पडना इन्होंसे देवताओंके समूहको मारनेलगा
और दैत्योंको जिवानने लगा २५ और तब चन्द्रमा और वरुण की माया नाश

होतीभई और पत्थर और शस्त्रों से दुःखित हुये युद्धमें देवगण हाहाकार करने लगे और कितनेक देवता पत्थरोंकी वृष्टिसे दुःखितहुये और सब प्रकारसे देवताओं की सेना उद्योग से रहित करदी २६ और पत्थरों की वर्षा से और वृक्ष पर्वत इन्होंसे घोर सञ्चारवाली पृथ्वी होनेलगी जैसे पर्वतों से २७ और नाना प्रकारके पत्थर आदिसे पीड़ित भी किये परन्तु विष्णुभगवान् उस युद्ध में नहीं कांपतेभये २८ और अतिक्षमा करनेवाले विष्णु क्रोधकोभी नहीं प्राप्तहुये २९ और कालको जाननेवाले और कालरूप मेघके समान कान्तिवाले ऐसे विष्णु भगवान् देवता और दैत्यों के युद्ध को देखतेहुये ३० समय को देखतेभये पीछे विष्णुकी आज्ञासे प्रेरितकरे ३१ अग्नि और पवन देवता मयकी रची मायाको शान्त करनेके अर्थ तय्यारहुये ३२ तब इनदोनों देवताओंने मयकी सब माया दग्धकरदी ३३ और भस्मरूप बनाके नाशवान्भी करदी ३४ और अग्नि पवन आपसमें मिलके युगान्तके समान दैत्यों की सेनाको दग्ध करतेभये ३५ और और अगाडी भाजता हुआ वायु और तिस के पीछे भाजता हुआ अग्नि ये दोनों क्रीड़ा करतेहुये दैत्योंकी सेना में विचरनेलगे ३६ और जब आकाश से दैत्योंके विमान भस्मरूपहोके पडनेलगे और दैत्योंकी मायाका नाशहोनेलगा और अग्नि अपने कर्म्मको करचुके ३७ और वायु आदि से विद्धहुये विमान भ्रष्ट होनेलगे और विष्णुभगवान्की स्तुति होनेलगी ३८ और उद्योगसे रहित दैत्य होनेलगे और बन्धनों से रहित त्रिलोकी होनेलगी और साधु साधु ऐसे कहनेवाले सब देवता प्रसन्न होनेलगे ३९ और इन्द्रकीजय होनेलगी और मय का पराजय होने लगा और सब दिशाओं की शुद्धि होनेलगी और धर्म्मका विस्तार होने लगा ४० चन्द्रमा और सूर्य्य शुद्धहोके प्रकाशित होनेलगे और तीनोंलोक प्रकृतिमें होनेलगे ४१ और मृत्युका बन्धन होनेलगा और अग्निमें हवन होनेलगा और यज्ञभागोंको देवता ग्रहणकरनेलगे और स्वर्गको देखने की इच्छा करनेलगे ४२ और सब दिशाओंमें लोकपाल गमन करनेकी इच्छा करनेलगे और आनन्दितरूप देवपक्ष होनेलगा और पराजितरूप दैत्यपक्ष होनेलगा ४३ और तीन पैरोंवाला धर्म्म प्रकाशित होने लगा और तीन पैरों से रहित पाप प्रकट होनेलगा ४४ और धर्म्मका द्वार खुलनेलगा और सत्मार्ग्ग वर्तमान होनेलगा और सब वर्ण अपने २ धर्म्मों में और आश्रमों में स्थितहोने

लगे ४५ और प्रजाकी रक्षासेसंयुक्त प्रकाश करनेवाले राजा होनेलगे और देवताओंकी स्तुति होनेलगी ४६ और दुःखोंसे रहित लोक होनेलगा और दारुणरूप अन्धेराकी शान्ति होनेलगी ऐसे वायु और पवनके संग्रामके अन्तमें४७ सूर्य्यके आकार मुकुटवाला और अतिप्रकाशितरूप बाजूबन्धसे भूषित और मन्दराचल पर्वत के समान कान्तिवाला और सैकडों प्रहारकरनेवालों में श्रेष्ठ जो सौ १०० मुखोंवाला ४८ और १०० सौ बाहुओंवाला और १०० सौ शिरोंवाला और शोभासेसंयुक्त और सौ १०० सींगोंवाले पर्वतके समान और ग्रीष्मऋतुमें तृणआदिमें लगाहुआ अग्निकेसमान बढाहुआ ४९ और धूम्ररूप बालोंवाला और हरीडाढ़ीवाला और अनेक प्रकारकी जड और मुखआदि से संयुक्त और त्रिलोकीमें शरीरके विस्तारको फैलानेवाला और अपने शरीरसे पृथ्वीको नवानेवाला ५० और बाहुओंसे आकाशको तोलनेवाला और पैरों से पर्वतोंको फेंकनेवाला और मुखके श्वासोंसे वर्षा करनेवाले मेघोंको शब्द करानेवाला ५१ पीछे तिरछी और विस्तृत और लाल ऐसे नेत्रोंवाला और मन्दराचलसेभी ज्यादह तेजवाला और युद्धमें सबदेवताओंको दग्धकरनेको आवताहुआ ५२ और सब देवगणोंको झिडकनेवाला और दशदिशाओंको आच्छादित करनेवाला और प्रलयकालमें गर्वितरूप मृत्युके समान उत्थितहुआ ५३ और सुन्दर ऊंचा तलुआ और मोटी अंगुली और फूलोंकीमाला और गहनों से संयुक्त और प्रकाशित ५४ और दाहिने हाथसे देवताओं के हाथमें गरेहुये दैत्योंके प्रति खडे होजावो ऐसे युद्धमें कहताहुआ ५५ ऐसे कालनेमि दैत्यको भयसे मिचगये हैं नेत्र जिन्होंके ऐसे सबदेवता देखतेभये ५६ और वामनरूपके समान शरीरको फैलानेवाले कालनेमि को सब प्राणी भी देखतेभये ५७ तब एक पैरको उठाके सब देवतों को दुःखित करताहुआ दैत्यों के इन्द्रसे प्रतिज्ञापूर्वक मिलके कालनेमि दैत्य प्रकाशित होनेलगा ५८ तब इन्द्रआदि सब देवता भयके देनेवाले और कालकेसमान आवतेहुये कालनेमिको देख पीडासे युक्त होनेलगे ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि दैत्योंसे प्यार करनेवाला और अतितेजसे संयुक्त

ऐसा कालनेमि दैत्य बढनेलगा जैसे वर्षाऋतुमें बद्दल १ और त्रिलोकी में फैले हुये शरीरवाले कालनेमिको देख सब दैत्यराज परिश्रमको दूरकर खडेहोनेलगे जैसे अमृतसे देवता २ और भयसे रहितहो मयतार आदि दैत्य युद्धमें जयको पानेवाले ३ शोभायमान होनेलगे और कालनेमि को देख शस्त्रविद्या में और युद्धकर्म्म में प्रीतिवाले और व्यूहों को रचनेवाले ४ होनेलगे और युद्ध में कुशल जो मयदैत्यके मुख्यमित्रथे वे कालनेमि को देख प्रसन्नहोनेलगे ५ और भय को त्यागकर युद्धके अर्थ तय्यार होनेलगे ६ और मयतार वराह हयग्रीव वीर्य्यवान् ७ विप्रचित्ति का पुत्र श्वेत खर लम्ब अरिष्ट बलिकापुत्र किशोर उष्ट्र ८ विक्रयुद्ध करनेवाला राहु इन आदि नामोंवाले सबदैत्य युद्धमें ९ कालनेमि के समीपमें प्राप्तहोके गदा चक्र परशा १० मुशल क्षेपणीय शस्त्र मुद्गर पत्थर ११ पट्टिश भिन्दिपाल परिघ शतघ्नी गदा १२ बाहू फासी प्राश १३ सर्पोंके समान बाण वज्र दीप्यमान भाले तीक्ष्ण धारवाली तलवार पैनेशूल इन आदि शस्त्रों को ग्रहणकर सबदैत्य कालनेमिके पृष्ठभागमें स्थितहुये १४ युद्धकरनेकी वाञ्छा करनेलगे तब प्रकाशमान शस्त्रोंसे दैत्योंकी सेना प्रकाशित होनेलगी १५ और जैसे वर्षाकालमें नक्षत्रों से निमीलित आकाश होताहै तैसे इन्द्रसे रक्षित देवतों की सेनाभी शोभित होनेलगी १६।२० और शीतोष्णरूप चन्द्रमा सूर्यके तेजसे प्रकाशित और वायुकेसमानवेगवाली और सौम्यरूप और तारागणोंकी पताका सेसयुक्त २१ और बद्दलरूप वस्त्रोंवाली और ग्रह नक्षत्र आदिसे भासमान और यम इन्द्र वरुण कुबेर इन्होंसे रक्षित २२ और प्रकाशमान अग्नि और पवनसेसयुक्त और नारायणमें तत्पर और समुद्रके ओघके सदृश और दिव्य २३ और यक्ष गन्धर्व आदिसेयुक्त ऐसी देवताओंकीभी सेना शोभायमान होनेलगी २४ पीछे दोनों सेनाओंका समागम होके जैसे युगान्तमें घोरयुद्ध होताहै तैसे देव दैत्योंका उग्रयुद्ध होनेलगा २५ तब दोनों सेनाओंमें प्रसन्नहुये देवता और दैत्य विचरनेलगे जैसे फूलेहुये पर्वतके दो वनों में हस्ती पीछे भेरी शङ्ख इनआदिको बजाके २६।२७ पृथ्वी आकाश दिशा इन्हों को पूर्ण करनेलगे और धनुषों के शब्दभी होनेलगे २८ और नगारोंके शब्दोंसे देवता और दैत्य आपसमें युद्ध करनेलगे २९ तब कितनेक बाहुओंसे बाहुओंको काटनेभये और देवता उत्तम लोहाके घोररूप परिघ शस्त्रोंको ३० युद्धमें दैत्यों के अर्थ छोड़नेलगे और दैत्य

भारी २ गदाओं से देवतों को मारनेलगे तब गदाकी चोटसे टूटेहुये अगोंवाले और बाणों से खंडितहुये ३१ ऐसे कितनेक मूंधे होके पृथ्वी में पडनेलगे पीछे कितनेक आपसमें युद्धकरतेहुये घोडोंके रथोंसे और विमानों से ३२ पड़नेलगे और रथोंसे रथरोंकेगये और प्यादों से प्यादे लड़नेलगे तब अतिघोर शब्द होताभया ३३ जैसे आकाश में मेघों के पीछे कितनेक रथों को तोड़ते भये और कितनेक रथों से पीडित होके आप मरते भये ३४ और किननेक पीड़ितहोके चलने को समर्थ नहीं होतेभये और कितनेक आपसमें हाथों से पकड मारते भये ३५ और कितनेक शस्त्रों से कटेहुये युद्धमें रक्तकी छर्दी करतेभये ३६ ऐसे देवता और दैत्योंका युद्ध प्रकाशमानहुआ ३७ अर्थात् दैत्यरूप महामेघवाला और देवताओं के शस्त्रोंरूप बिजलीवाला ३८ और आपस के बाणोंरूप वर्षा वाला ऐसा युद्धरूप दुर्दिन हुआ तब क्रोध को प्राप्तहुआ कालनेमि दैत्य ३९ बढनेलगा जैसे समुद्रों के ओघसे पूरित बद्दल तब तिस कालनेमि के शरीर से प्रकाशमान वज्रोंकी वर्षा से संयुक्त ४० और पर्वतों के शिखरके समान और बिजलीरूप प्रकाशसे संयुक्त ऐसे मेघ निकसने लगे और क्रोध से श्वास लेने में पसीना की वर्षा होनेलगी ४१ और मुखसे अग्नि के समान प्रकाश निकसने लगा और तिरछी और ऊपरको कद बढनेलगी ४२ जैसे पांच मुखोंवाले काले सर्प और अस्त्रोंके समूहों से और धनुष परिघ इनआदिसे संयुक्त ४३ और पवन के समान उद्धत कपड़ों को पहनेहुये ऐसा कालनेमि साक्षात् मेरु पर्व्वतके समान युद्धमें स्थित होके ४४ जांघके वेगसे फेंकेहुये पर्वतके शिखर और वृक्षोंसे ४५ देवताओं के समूहों को पृथ्वी में गिराताभया और शस्त्रसंयुक्त बाहुओं से काट दिये हैं छाती शिर जिन्हों के ४६ ऐसे देवता चलनेको भी समर्थ नहीं होते भये और कितनेक देवगण मुक्कों से मारदिये और कितनेक देवताओं के शरीर के दो २ टूक बनादिये ४७ और यक्ष गन्धर्व दिव्यसर्प देवता ये सब कालनेमि दैत्यने ऐसे दुःखित करदिये ४८ कि यत्नवालेही यत्न करनेकी सामर्थ्य नहीं करतेभये और बहुतसे बाणों से संयुक्त ४९ और ऐरावत हाथी पै स्थित ऐसा इन्द्र भी चलनेको समर्थ नहीं होत भयो और जलरहित बद्दलके समान और जलसे रहित समुद्र के समान कान्तिवाला ५० और व्यापारसे रहित ऐसा वरुण कालनेमिने युद्धमें करदिया और कालरूपवाले परिघ शस्त्रों से ५१ विलाप करना

हुआ लोकपाल कुवेर कर्म्मको त्यागनेलगा ऐसा कालनेमि ने वनादिया और सबोंको हरनेवाला धर्मराजभी मृतप्राय वनाके ५२ दक्षिण दिशा में भगादिया ऐसे सब लोकपालों को जीतके सबों के कर्म्मों को करनेवाला ऐसा कालनेमि दैत्य ५३ चारों दिशाओं में चारप्रकार से अपने शरीरको फैलाके इन्द्र यम वरुण कुवेर इनरूपोंवाला आपही होताभया और राहुसे दिखायेहुये नक्षत्रों के दिव्य मार्गको जाके ५४ यही कालनेमि चन्द्रमाकी शोभाको हरताभया और स्वर्गद्वारसे प्रकाशमान किरणोंवाले सूर्य्यको भी चलायमान करताभया ५५ अर्थात् अपनरूप विषय और दिनकर्मको हरताभया और देवताओंके मुखमें अग्निको देख अपने मुखमें शयन करताभया ५६ पीछे वायु देवताको वेगसे जीतकर अपने वेगसे वशीभूत करताभया पीछे समुद्रसे सब नदियोंको आप ग्रहणकर ५७ अपने वशमें करताभया और सब समुद्रों को अपने वशमें करताभया और सब जलोंको अपने वश में करताभया और आकाश के पदार्थों को और पृथ्वी के पदार्थोंको अपने वशमें करके ५८ पर्वतों से रक्षित पृथ्वीको स्थापित करताभया ऐसे महाभूतोंका पति और सब लोकोंका साक्षी ५९ और सब लोकोंको भय देनेवाला और ससारमें एकही लोकपाल और चन्द्रमा सूर्य्यग्रह आदिसे सयुक्त शरीरवाला ६० और अग्नि पवनसे युक्त ऐसा युद्ध में कालनेमि दैत्य ब्रह्माजी के समान प्रकाश होताभया ६१ और उससमय में सब दैत्यगण इसकी स्तुति करतेभये जैसे देवता ब्रह्माजी की ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायामष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उन्चासवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे विपरीत कर्म्म के करने से वेद धर्म्म सत्य क्षमा नारायण हैं आश्रय जिसके ऐसी श्री ये पाचों कालनेमि को नहीं प्राप्तहुये १ तब इन्हों के नहीं होने से क्रोध से सयुक्त हुआ दैत्यराज कालनेमि वैष्णवपद की इच्छा करताहुआ युद्ध में नारायणके समीपजाके प्राप्तहुआ २ तब गरुडजी पै स्थित और शख चक्र गदा को धारण करनेवाले और सुन्दर गदाको दैत्यों के नाशके अर्थ भ्रमावनेवाले ३ ऐसे विष्णुको देखताभया पीछे जलसहित वद्दल के समान और बिजली के समान वस्त्रोंवाला और स्वर्णरूप पखों से युक्त और

शिखावाले और कश्यपजीका पुत्र और आकाश में चलनेवाला ४ और दैत्यों के नाशके अर्थ युद्ध में स्वस्थरूप होके स्थितहुआ ऐसे गरुड़को देखके लोभित मनवाला कालनेमि दैत्य विष्णुके अर्थ कहनेलगा ५ कि पूर्वले दैत्यराजों का और हमारा वैरी तूही है और इसीने समुद्रमें वसनेवाले मधु और कैटभ के सग कपट कियाहै ६ और इसी ने हमारे युद्ध में वहुतसे दैत्यभी मार दियेहैं ७ और यह दयासे रहित है और युद्धमें स्त्री बालक आदिको मारनेवाला है और इसी ने दैत्यों की नारियों के केशभी पकडे हैं ८ और देवताओं का विष्णुभी तूही है और वैकुण्ठ में वसनेवाला है और सर्पों में शेषनाग भी तूही है और ब्रह्मा का भी ब्रह्मा तूही है ९ और देवताओं की रक्षा करता है और हमारे वुरेपने में स्थितहै और इसी के क्रोधसे हिरण्यकशिपु मारागयाहै १० और इसी की छाया को प्राप्तहो सब देवता यज्ञों में ऋषियों के अर्पित किये घृत आदि द्रव्यों को खाते हैं ११ और युद्धमें सब राक्षसों को मारनेका कारणभी तूही है १२ और सूर्य्यके तेजसे सयुक्त चक्रको भी शत्रुओं में तूही फेंकता है १३ और सब दैत्यों का कालरूप तूही है परन्तु कालरूपवाले मेरे सामने बहुत दिनों के बीते हुये कालके फलको तूही दुर्मती प्राप्तहोवेगा १४ और अतिखुशी की वातहै कि मेरे सम्मुख तू विष्णु प्राप्तहुआहै और अवहीं मेरे बाणसे दुखित हुआ मेरेको प्रणामकरेगा १५ और बड़ी खुशीकीवातहै पूर्वले दैत्योंके बदलेको मैं आजलूंगा अर्त्थात् दैत्योंको भय देनेवाले इस विष्णुको मारके १६ इसके आश्रयवाले सब प्राणियोंको तत्काल मारूंगा और अन्यजन्मोंमें भी उपजाहुआ यह युद्धमें दैत्योंको पीड़ादेता रहाहै १७ और यही पहले पद्मनाभ नामसे विख्यात एकार्णव घोरसमयमें मधु कैटभ दैत्यों को मारतागया १८ और यही मनुष्य और सिंहके इन दोशरीरोंको धारणकर १९ मेरे बड़े हिरण्यकशिपुको मारताभया और यही अदिति के गर्भ को प्राप्तहो २० वामनके रूपको धारणकर बलिराजाकी यज्ञ में तीनपैर पृथ्वीके मिसमे तीनलोकोंको हरताभया २१ फिर यही इस तारकामय युद्धमें मेरेसग युद्धकरनेको तैयार है परन्तु अब देवताओं के सहित यह मारा जावेगा २२ ऐसे कालनेमि बुरी बुरी वाणियोंसे बहुतप्रकार युद्धमें विष्णुके अर्थ आक्षेपरूप वचनकहके युद्ध करना चाहताभया २३ तब कालनेमिने बहुतप्रकार से निष्प्राप भी विष्णुकिया परन्तु बलावलसे सयुक्त गदाको धारणकरनेवाले

विष्णु क्रोधको प्राप्त नहीं हुये बल्कि हँसते हँसते अर्थात् मन्दमुसकान सहित वचन कहनेलगे २४ हे दैत्य गर्वका बल थोड़ा होताहै और क्षमाका बल स्थिर होताहै इसवास्ते जो तू घना बोलताहै सो अपने गर्व्वसे उपजे दोषोंसे तू मारा गया २५ और मैंने तो नीचरूप जानलिया और तेरे वाणी के बलको धिक्कारहै और जहां पुरुष नहीं होते हैं तहां स्त्रियां गर्जा करती हैं २६ और हे दैत्य जिस मार्ग को तेरे बड़े पहुँचे हैं तिस मार्ग को प्राप्तहुये तेरे को मैं देखूंगा क्योंकि ब्रह्माजी के स्थापित किये सेतु अर्थात् पुल को भेदन करके कल्याण से संयुक्त कौन जासक्ताहै २७ सो देवोंको दुःख देनेवाले तेरे को अबहीं मैं मारूंगा और अपने अपने स्थानों पै देवताओंको स्थापित करूंगा २८ तब वैशम्पायन कहने लगे कि युद्ध में विष्णु भगवान् ऐसे वचन बोलने लगे तब वह कालनेमि दैत्य क्रोधसे हँसता भया और अपने हाथों में शस्त्रों को ग्रहण करनेलगा २९ पीछे सब प्रकार के अस्त्रों को ग्रहण कर और क्रोध से दुगुने लालनेत्रोंवाला कालनेमि दैत्य अपनी सौ बाहुओंको उठाके विष्णु भगवान्की छाती में शस्त्रप्रहार करताभया ३० और मयतार आदि सब दैत्यभी अनेकप्रकार के शस्त्रों को ग्रहणकर विष्णुके सामने युद्ध के अर्थ प्राप्त होके शस्त्रों को मारने लगे ३१ पीछे अतिबलवाले दैत्यों से ताड़मान भी विष्णु युद्ध में चलायमान नहीं हुये जैसे पवनसे पर्वत ३२ पीछे कालनेमि दैत्य बड़ी गदाको बाहुओं से उठा ३३ गरुड़ के ऊपर मारताभया तब तिस दैत्यके कर्म से विष्णु आश्चर्य्यको प्राप्तहुआ ३४ जिस गदाके पातसे दुःखितहुआ गरुड़ पैरों से पृथ्वी में प्राप्तहुआ ३५ तब दुःखित रूप गरुड़जीको और क्षतरूप अपने शरीरको देखके क्रोधसे लाल नेत्रोंवाले विष्णु चक्रको धारण करतेभये ३६ पीछे गरुड़के समान वेगसे बढ़के इस विष्णु की भुजा दशोंदिशा को व्याप्त होतीभई ३७ और दिशा विदिशा आकाश पृथ्वी इन्होंको शब्दसे पूर्ण करताहुआ बलसे फिर लोकोंको उल्लंघन करने की कामनावाला विष्णु वृद्धीको प्राप्तहोताभया ३८ तब देवताओंकी जयके अर्थ आकाशमें बढ़तेहुये विष्णुको ऋषि और गन्धर्व स्तुति करनेलगे ३९ पीछे यही विष्णु अपने मुकुट से आकाश को आक्रमण करताहुआ और अपने वस्त्रों से मेघोंसहित आकाशको क्रमण करताहुआ और पैरों से पृथ्वीको आक्रमण करताहुआ व बाहुओंसे दिशाओंको आच्छादित करताहुआ ऐसा विष्णु ४०

सूर्य्य की किरणों के समान तेजवाला व हजारहों पखड़ियों से संयुक्त व शत्रु-
ओंको नाशनेवाला व दीप्तअग्नी के सदृश घोर व सुदर्शननाम से विख्यात
व सुवर्ण की नेमियों से संयुक्त व वज्र की नाभिवाला व दैत्यों के मेद हाड़
मज्जा लोहू इन्हों से पूरित ४१ व प्रहार करनेमें अद्वितीय व छुरासे भी पैना व
अनेकप्रकार की मालाओं से विस्तृत व कामना के अनुसार गमन करनेवाला
व कामरूप ४२ व साक्षात् ब्रह्माजीका रचाहुवा व सब शत्रुओंको भयका देने
वाला व महर्षियों के क्रोधसे व्याप्त व निरन्तर युद्धमें गर्वित ४३ व जिसके फें
कने से स्थावर जंगमरूप संसार मोहितहोजावे व मांसको खानेवाले प्राणी तृप्ति
को प्राप्तहोजावें ४४ व उग्रकर्म करनेवाला व सूर्य्य के तेजके समान ऐसे चक्रको
उठाके क्रोधसे दीप्तहुये ४५ व अपने तेजसे दैत्यों के तेजको नाशके करनेवाले
ऐसे विष्णु कालनेमि दैत्यकी बाहुओंको ४६ व शिरको काटतेभये ४७ तब बाहु
शिरसे रहित कालनेमि दैत्य कम्पायमान नहींहुवा अर्थात् युद्धमें कबन्धरूपही
होके स्थितरहा जैसे शाखाओं से रहित वृक्ष ४८ पीछे गरुड़ अपने पखोंको ब-
ढ़ाके व वायुके समान वेगकर कालनेमि की छाती में चोटमारताभया ४९ तब
विमुखहुवा व शाखाओं से रहित ऐसा कालनेमिका देह आकाशसे भ्रमताहुवा
व आकाशको त्याग व पृथ्वीको क्षोभित करताहुवा पड़ा ५० तब कालनेमि के
पड़नेसे देवता और ऋषियोंके गण साधुसाधु ऐसे कहतेहुये विष्णुको पूजनेलगे
५१ व शेषरहे सबदैत्य विष्णुकी बाहुओं से व्याप्तहुये चलनेको भी समर्थ नहीं
होतेभये ५२ व कितनेक दैत्यों को केशों से पकड़ मारदिया व कितनेक दैत्यों
के कंठको पकड़ मारदिया व कितनेक दैत्यों के मुखको फार मारदिया ५३ व
कितनेक दैत्यों के मध्यभागको पकड़ मारदिया ५४ ऐसे विष्णुकी गदा चक्रसे
दग्धहुये व प्राणों से रहित ऐसे दैत्य आकाशमार्ग से पृथ्वी में पड़ते भये ५५
ऐसे सबदैत्योंको मारके इन्द्रके अर्थ प्यारकर विष्णुस्थितहुये ५६ जब यह तार-
कामय युद्ध शान्तहोगया तब तिसदेशमें ५७ ब्रह्मर्षि गन्धर्व अप्सराओं के गण
इन्द्रों से सहित ब्रह्माजी प्राप्तहोके विष्णुकी पूजाकर वाक्य कहनेलगे ५८ कि हे
देव आपने बड़ा कर्मकिया और देवताओं के शल्य उखाड़दिये व इन दैत्यों के
मारनेसे हमसबको भी प्रसन्न करदिये ५९ व जो आपने यह कालनेमि दैत्यमारा
इसको युद्धमें मारनेको आप एकही समर्थथे अन्य कोई नहीं ६० व यह काल-

नेमिदैत्य चराचरलोकोंका तिरस्कार करताहुवा व ऋषियोंको पीडा देताहुवा मेरे प्रतिभी गर्जना कियाकरता ६१ सो इसतेरे उग्रकर्म से मैं अति प्रसन्नहुवा ६२ सो आपका कल्याणहो आप ब्रह्मलोकको गमनकरो जहा सभामें प्राप्तहुये ब्रह्मर्षि तेरे को देखेंगे ६३ व ब्रह्मर्षि ब्रह्मलोकमें दिव्य वाणियोंसे तेरे को पूजेंगे ६४ व तेरे अर्थ हम क्यावरदानकरें देवता और दैत्योंके अर्थ वरोंके देनेवाले आपही हैं ६५ ऐसे ब्रह्माजीके कहनेसे विष्णुभगवान् इन्द्रआदि देवताओंके प्रति शुभवाणीसे कहने लगे ६६ कि हे देवताओ तुम सबश्रवणकरो इन्द्रसेभी अतिबलवाले सबकालनेमि आदि दैत्य इसयुद्धमें मारे गयेहैं ६७ और केवल विरोचनका पुत्र बलि व राहुग्रह ये दोनोंयुद्धसे निकसगये हैं ६८ सो कछु सशयनहीं सो अपनी वाञ्छित पूर्वदिशा को इन्द्र पालनाकरो और पश्चिमदिशाको वरुण पालनाकरो और दक्षिणदिशा को धर्मराजपालो और उत्तरदिशाको कुबेरपालो ६९ और नक्षत्रोंके सग समयमें चन्द्रमा विचरो और अयनों के सहित ऋतुओं से सयुक्त वर्ष को सूर्य्यभजो ७० और घृतकेभाग प्रवर्तन करो और सभापतियों से पूजेहुये अग्नियोंमें वेदविधि से ब्राह्मण हवनकरो ७१ और बलि होमकरके देवता व स्वाध्यायकरके महर्षि व श्राद्धकरके पितर ये तीनों तृप्तिको प्राप्तहोजावें ७२ व सुन्दरमार्गमें स्थित पवन विचरो व तीनप्रकार से अग्निदेव प्रकाशित होतारहे व ब्राह्मण आदि तीनोंवर्ण तीनलोकों को अपने गुणों से तृप्तकरो ७३ व दीक्षावाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यज्ञोंको करनेलगो व यज्ञ करनेवाले विप्रों के अर्थ दक्षिणाओंका दानकरो ७४ व गायोंको सूर्य व रसोंको चन्द्रमा व प्राणियोंके प्राणोंको वायु ऐसे तृप्तकरतेहुये प्रवृत्तरहो ७५ व सब नदी समुद्रमें जाके प्राप्तहोजाओ ७६ व दैत्योंमे भयकोत्यागो व देवता शांति को प्राप्तहोजाओ व हे देवताओ तुम्हारा कल्याणहो मैं सनातन ब्रह्मलोकको गमनकरूंगा ७७ व अपने स्थानमें व स्वर्गलोकमें व युद्धमें सशय मतकरो क्योंकि दैत्य तो सदाही शिथिलरूपहैं ७८ व छिद्रको देखके बलकरते हैं व दैत्योंकी स्थिति निरतर नहीं है व कोमल भाववाले जो तुमहो सो तुम्हारी कोमलबुद्धी है ७९ और दुष्ट भाववाले दैत्योंको मैं मोहित करता हूं ८० व जब दैत्यों से उग्रभय उपजेगा तबही मैं समीप में प्राप्तहोके अभय देऊंगा ८१ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि अतियशवाले व सत्य पराक्रमवाले विष्णु ऐसे देवतों के अर्थ कहके ब्रह्माजी के साथ ब्रह्मलोक को गये ८२ सो तारकामय युद्ध में

दैत्योंका और विष्णुका ऐसे आश्चर्य्य हुआहै जो मेरे से आप पूछते हैं ८३
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायामूनपचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया देवताओंके देवरूप ब्रह्माजीके साथ विष्णु भगवा ब्रह्मलोकमें जाके क्याकर्म करतेभये १ और दैत्योंके मारनेसे पश्चात् देवताओं से सत्कृतकिये विष्णुको ब्रह्मलोकमें ब्रह्माजी किसवास्ते लेगये २ व ब्रह्मलोकमें जाके किस स्थान पै व किस योगको प्राप्तहुये व किस नियमको धारणकरतेभये ३ व ब्रह्मलोकमें बसतेहुये विष्णु के यह जगत् कैसे शोभाको प्राप्तहोताहै ४ ग्रीष्मऋतुके अन्तमें कैसे भगवान् शयन करते हैं व वर्षाऋतु के अन्त में कैसे जागते हैं व ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोके विष्णु इस लौकिक धुरको कैसे वहते हैं ५ सो हे विप्रेंद्र इस दिव्य चरित्रको विस्तारपूर्व्वक मैं जानने की इच्छा करूं हूं ६ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि जैसे ब्रह्मलोकमें जाके विष्णु ब्रह्माके सङ्ग आनंदित होते हैं तिस आख्यानको विस्तारपूर्व्वक श्रवण कर ७ व तिसविष्णुकी गति सूक्ष्म है व देवताओंसे भी जाननेके योग्य नहीं है परन्तु मैं वर्णन करताहूं तू सावधान होके श्रवणकर ८ यह विष्णु लोकमय देहहै व तीनोंलोक इसीमें रहते हैं व देवताओं में यह रहताहै व देवता इसमें रहते हैं ९ व इसके पारको कोईभी नहींजान सक्ता व लोकोंके पारोंको यह विष्णु जानताहै १० सो यह विष्णु ब्रह्माजीके बसने योग्य ब्रह्मलोकमें जाके सब ऋषिजनोंको प्रणाम करताभया ११ व महर्षियों से यज्ञमें हूयमान अग्निको देख फिर प्रणाम करताभया १२ व यज्ञमें महर्षियोंसे पूजित व यज्ञके भागको भोजन करताहुआ ऐसे अपने १३ दूसरे देहको स्थितहुये तहां देखताभया १४ पीछे सब ऋषिजनोंमें मिलके सनातन ब्रह्मलोकमें विचरने लगा १५ तहां यज्ञशालाओंसे विभूषित व ब्रह्मर्षियों के सैकड़ों लक्षणों से लक्षित ऐसे अनेक यज्ञस्तम्भोंको देखताभया १६ व घृतकेधुयांको सूंघताहुआ व ऋषियोंके मुखसे कहेहुये वेदोंको सुनताहुआ व यज्ञोंमें अपने आत्माकी पूजाको देखता हुआ ऐसा विष्णु ब्रह्मलोकमें विचरनेलगा १७ तब सबऋषि और सभामें प्राप्त सबदेवता अर्घ आदिको ग्रहणकर कहनेलगे कि जो देवताओंमें ऐश्वर्य है वह सब इसी विष्णुके प्रतापसे है और देवताओंसे जो प्रवृत्तहुआहै सो इसी विष्णु

के प्रतापसे हुआहै १८ व वेदके जाननेवाले मनुष्य अग्निसोमरूप इस जगत् को कहते हैं तिस अग्निसोमलोक विष्णु इन्हों को यह ब्रह्माजी जानताहै १९ व जैसे दूधसे दही उपजताहै व दहीको मथनेसे घृत उपजताहै तैसे पञ्चमहाभूतोंके द्वारा इस विष्णुसे जगत् उपजता है २० व जैसे इन्द्रिय व पंचमहाभूतों से परमात्मा कहाजाताहै तैसे देव वेदलोकोंने विष्णुको जानाहै २१ व जैसे पृथ्वी में देहधारियों को पचभूत व इन्द्रियोंकी प्राप्ति होतीहै तैसे देवताओंको स्वर्गलोक में प्राणेश्वररूप वैष्णवी प्राप्ति होती है २२ व यज्ञ करनेवालों को यज्ञके फलका देनेवाला व पवित्र व परमात्मा व लोक को तन्त्ररूप करनेवाला ऐसा यह विष्णु मन्त्रों करके मन्त्ररूप पूजित किया जाता है २३ तब ऋषिजन कहने लगे हे देवश्रेष्ठ हे पद्मनाभ हे महाकीर्त्तिवाले आपका सुन्दर आगमनहुआ सो यह यज्ञ सम्बन्धी आतिथ्य मन्त्रसे प्रतिग्रहणकरो २४ और इस यज्ञपूत पाद्यके आप पात्रहै व मंत्रोक्त अतिथि भी आपही हैं २५ और जब आप युद्धके अर्थ गमन करते हैं तब हमारी क्रिया प्रवर्त्त नहीं होती क्योंकि विष्णुरहित यज्ञ में कर्म्म, नहीं कियाजाता २६ व दक्षिणासहित यज्ञके आदिकारण फल आपही हैं अब हमारे से पूजितकिये अपने आत्मा को आपदेखेंगे २७ ऐसे होजाओ ऐसा वचन कहके तिन मुनिजनों को पूजते हुये विष्णु भगवान् ब्रह्मलोक में स्थितहो ब्रह्माजीकी तरह आनन्दित हुये २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायापञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे तिन ऋषियों करके पूजित भगवान् पुरातन व गुप्त दिव्य ऐसा नारायणके आश्रम में १ प्रसन्नमनसे व तिन सभामें आयेहुये देवताओं को बुलाके व आदिदेव ब्रह्मके अर्थ प्रणामकरके २ प्रवेशहोते भये व अपनानाम करके प्रसिद्ध तिस नारायण आश्रमको प्रवेशहोने के समय भगवान् हथियारों को त्यागते भये ३ व वरुण देवताकरके प्रस्तुत कियाहुआ देवताओं करके व ऋषियों करके अधिष्ठित ४ ऐसे अपने स्थान को देखतेभये व प्रलय के जलसे युक्त नक्षत्र अर्थात् तारागणों के स्थानमें युक्त व जहां अँधेरा नहीं है व जहां देवता व राक्षसकोगम्य नहीं ५ व वहां वायुका भी विचार नहीं

व चन्द्रमा सूर्य इन्द्रोंका भी प्रकाश नहीं वह स्थान भगवान्केही तेज करके प्रकाशमान है ६ ऐसे स्थानमें प्राप्तहोके अपनी जटाओंका भार बढ़ानेहुये और हजार शिर धारणकरके तहा शयन करतेभये व लोकोंके अन्तकालको जानने वाली नयनोंमें वास करनेवाली कालरूपवाली ऐसी निद्रा महात्मा भगवान्को प्राप्तहोतीभई ७ और वे भगवान् तहा समुद्रके शीतलजलमें और दिव्य शय्याके ऊपर एकार्णव में कहाहुआ व्रतकरके शयन करते भये ८ फिर तहां सोवते हुये महात्मा प्रभुकी उपासना जगत्के कल्याणके वास्ते देवता और ऋषिकरतेभये ९ और तहा सोवतेहुये भगवान् की नाभिसे उत्पन्नहुआ आद्य, पद्म, सूर्य के समान कान्तिवाला १० और हजारपत्तों से युक्त कोमल पुष्पों से युत ब्रह्मसूत्र अर्थात् यज्ञोपवीतके आकार कलियोंवाला ११ ऐसा ब्रह्माका आसन शोभायमान होताभया व सोवतेहुये भगवान् सबलोकोंको कालपर्य्यन्त पालनेलगे व तिससमयमें भगवान्के श्वाससे अनेकप्रकारकी भुजाओंकी पंक्तिके समूह निकलनेलगे १२ तब इसप्रकार रचेहुये प्राणियोंके समूहको वह कमलसे उत्पन्नहुआ ब्रह्माजी चारप्रकार विभाग करके रचताहुआ १३ फिर वे सब प्राणी सतयुग के अन्तमें कहेहुये कर्मकरके अपनी अपनी गतिको प्राप्तहोगये तिससमयमें भगवान्के तिस कर्मको ब्रह्माजी भी नहींजाने व वे अविनाशी ऋषिभी नहींजानते भये १४ और निद्रासे युत योगमें प्रविष्ट तमोगुण से युक्त ऐसे विष्णुको वे ब्रह्माजी से आदि सब ऋषि नहीं जानतेभये १५ और कहीं सोवते हैं अथवा कहीं आसन पै बैठे हैं और कौन यहा जागता है कौन सोवता है और सोवताहुआ कौन चेष्टा करताहै १६ ऐसे वे सब ब्रह्माजीसे आदि ऋषि नहीं जानतेभये और कौन यहा भोगवाला है और कौन तेजवालाहै और कृष्णसे भी कृष्ण कौनहै ऐसे सब देवता दिव्ययुक्तियों करके विचार करनेलगे १७ और इस भगवत् के जाननेको समर्थ कर्म्मसे और जन्मसे कोई भी नहीं है और दिव्य भगवान् की कथाओंसे जो विष्णुके चरित्रोंको जानते हैं १८ तिन को ऋषिजन पुराण कहते हैं अर्थात् पुरातन कहते है और वेदोंमें भी भगवान् के चरित्र पुरातन सुनेजाते है १९ और महापुराण ऐसी प्रभूतिमें परे भगवान् के नहीं है अर्थात् महापुराण ऐसे प्रसिद्धहै और जो भगवान् के स्वभावसे उपजा चरित्रहै २० तिसको समा में होनेवाली और देवतोंपास होनेवाली श्रुतिभी नहीं जानती है और यह जितो

को उत्पन्न करनेवाला ईश्वर २१ जगत्की उत्पत्तिके समय और दैत्यों के नाश के समय जागताहै और शयन करतेहुये अविनाशी भगवान् के देखनेको देवते भी समर्थ नहीं २२ और ग्रीष्मऋतु के पश्चात् भगवान् सोवते हैं और वर्षा समय के पश्चात् जागते हैं और जब भगवान् सोवते हैं तब यज्ञभी नहीं २३ क्योंकि भगवान्ही यज्ञरूपहैं और सब वेद यज्ञके अङ्गहैं और जो यज्ञकी गति कही है सो पुरुषोत्तम भगवान्ही है २४ भगवान् शरदऋतु आदि ऋतुओं में जागते हैं और जब विष्णुशयन करताहै तब वैष्णव कर्मको करताहुआ इन्द्रजी इसवार्षिक चक्र को धारण करताहै २५ और जो गह्वर भगवत्की माया संसारमें निद्रारूप प्रसिद्धहै वह अचानक प्राणियोंको द्वेष करनेवाली है २६ और घोरहै कालरात्री है और तिसनिद्रा का अङ्ग तमकेद्वारा रात्री है दिनके नाशकरनेवाली है २७ और यह नींद पृथ्वी में सब प्राणियों के आधा जीवन को हरनेवाली है और इससे युक्तहुआ और वारम्बार जंभाई लेताहुआ २८ इसके वेगको कोई भी पुरुष सहने को समर्थ नहीं है समुद्र में डूबतेहुये की तरह और संसार में मनुष्यों के अन्नसे उपजी तथा श्रमसे उपजी निद्रा सबको प्राप्तहोती है २९ और विशेषकर देहधारियों के स्वभा के अन्तमें निद्राका नाश होताहै ३० व विशेषकरके मृत्यु-काल के समय जीवों के प्राणका नाशकरती है व इसको नारायण देवतों के शरीरमें भी धारण करताहुआ ३१ व यह निद्राकालकी प्यारी है व पापिनहै व विष्णुके शरीर से उत्पन्न भई है व यह निद्रा नारायण के मुख में प्राप्त हुई ३२ संसारके हितकेवास्ते अपने पति भगवान्को सेवनकरती है ३३ व वे अविनाशी भगवान् तिस निद्राकरके ढकेहुये नारायण आश्रममें जगत्के मोहको प्राप्तकरते हुये शयन करतेभये ३४ इसप्रकार तिन्हेंको शयन करतेहुये हजारोंवर्ष व्यतीत होगये ३५ व सतयुग त्रेतायुग येभी व्यतीतहोगये पश्चात् द्वापर युगके अन्तमें महातेजवाले भगवान् ऋषियोंकरके स्तुति कियेहुये व संसारको दुःखित देखके बोध करतेभये अर्थात् जागते भये ३६ ऋषि कहनेलगे हे भगवन् स्वभाव से उपजी हुई निद्राको त्यागदेवो सुगन्ध से भीगीहुई मालाकी तरह व ब्रह्माजी सहित सब देवते आपके दर्शन की इच्छा करते हैं ३७ व ये आपके ब्रह्मवेत्ता पुरुष तीव्र नियमवाले आपकी स्तुति करते हैं ३८ व हे भगवन् आत्मासे उपजे हुये व पृथ्वी आकाश अग्नि वायु जल इनतत्त्वोंसे उपजेहुये ऐसे जीवोंकी श्रेष्ठ

वाणीको सुनो ३९ व हे देव ये समस्तऋषि मुनिमण्डल करके सहित दिव्य वाणियों करके आपकी स्तुतिकरते हैं ४० व हे कमलसरीखे नेत्रोंवाले व कमलकी नाभिव महातेजवाले भगवन् देवताओंके कार्यके गौरवसे आपका कछु कारण उत्पन्न हुआ है ४१ वैशम्पायन कहनेलगे इसप्रकार सुनके वे भगवान् सब जगत् को संक्षेप करके व अँधेरे के समूहको दूरकरतेहुये व अत्यन्त शोभामे युक्तहुये उठते भये ४२ फिर वे भगवान् इकट्ठेहुये व ब्रह्माजी समेत व कछु कहनेकी इच्छावाले व पृथ्वीके वास्ते आयेहुये ऐसे सबदेवताओंको देखतेभये ४३ और निद्रा सधान नेत्रोंवाले हरि तिन देवताओं के प्रति तत्त्वदृष्टिसे प्रयोजनकी वाणीकरके धर्म की युक्तिसे बोलतेभये ४४ श्रीभगवान् कहनेलगे हे देवताओ तुमको कहा से विग्रहहुआ और कहासे भय उत्पन्नहुआ और किसीका कार्य्य है अथवा कछु मेरे विषय कछुकार्य नहीं बना ४५ अथवा दानवोंसे उपजीहुई संसारमें कुशल नहीं है और मनुष्यों के परिश्रमकी जाननेकीइच्छा में जल्दी करताहूं ४६ और यह जो में हूं सो ब्रह्मके जाननेवाले आपके अगाड़ी शयनको त्यागके खड़ा और आपके कल्याणकेवास्ते स्थितहू सोकहो आपका क्या कार्य्यकरूं ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषायांएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे तिस भगवान् के कहनेको लोकके पितामह ब्रह्माजी सुन के सम्पूर्ण देवताओं को परमहित वाक्य कहतेभये १ हे विष्णु हे असुरोंके नाशकरनेवाले देवतोंको कछुभी भय नहीं है क्योंकि जिन देवताओंको युद्धमें आप अभयके देनेवाले भलाकरनेवाले हो २ और हे भगवन् देवतोंका मालिक ऐसे इन्द्रके जीतने के पश्चात् व वैरियों के नाशकरनेवाले आपके जीने पश्चात् अपने धर्म में युक्त ऐसे दानवोंको भी भय नहीं है ३ व सत्यमें व धर्म में युक्त ऐसे मनुष्य खेदसे दूरहोजाते हैं व तिनको अकालमें मृत्यु देखने को भी समर्थ नहीं है ४ व मनुष्यों के पतिराजा हैं और वे राजा अपने छः भागों को भोगतेहुये आपस में भेद को नहीं प्राप्त होते हैं ५ व ऐसे वे प्रजाओं को सुखके देनेवाले होते हैं व कर लेनेवाले पुरुषोंमे निन्दाको प्राप्तहुए विना व पर्वतआदि खजाना से द्रव्य को इकट्ठा करके अपने मकानों को पूर्णकरलेते हैं ६ व बढ़ेहुए अपने

देशोंकी पालना करतेहुए व क्षमासे युक्त व स्वल्प दण्ड देनेवाला व चतुर ऐसे राजा सब वर्णों की रक्षाकरते हैं ७ व जीवों को भयादिक से नहीं कम्पावते हैं ऐसे राजा अपने मन्त्रियों करके अच्छीतरह पूजित व चतुरंगिणी सेनासे युक्त ऐसे राजा छः गुणों को भोगते हैं ८ व धनुर्वेद विद्या में तत्पर व वेदों में निष्ठावाले ऐसे सब राजा यथार्थ विधि से व अत्यन्त दक्षिणावाले यज्ञोंकरके पूजन करते हैं ९ व वेदोंको पढके दिक्षाओं करके व ब्रह्मचर्याकरके महर्षियोंका पूजन करते हैं व पवित्र श्राद्धोंकरके सैकडों पितरोंका पूजनकरते हैं १० व ऐसे राजाओं को तीनलोक में वेदोक्तकर्म व लौकिक व धर्मशास्त्रोक्त कर्म अविदित नहीं अर्थात् ये सब कर्म करचुके ११ व ऐसे राजा आपस में सलूक करेहुए महर्षियों के समान तेजवाले होरहे हैं व फिर सतयुग करनेलायक हैं १२ व तिनहीं के प्रभावसे इन्द्रजी कल्याणपूर्वक वर्षते हैं व वायु यथार्थ गमनकरताहै व दशों दिशा रजकरके रहित होरही हैं १३ व पृथ्वी उत्पातों करके रहित होरही है और अच्छेप्रचार करके युक्तहै व ग्रह चन्द्रमा नक्षत्र ये सब सौम्ययोगसे विचरते हैं १४ व सूर्य भगवान् अनुकूलहुए दोनों अयनों में विचरते हैं व अनेक प्रकार की आहुति तथा सुगन्धियों से तृप्तहुआ अग्नि देवता वर्त्तताहै १५ सो इसप्रकार सब यज्ञआदिक निमित्त प्रवर्त्त होने के बाद और सम्पूर्णपृथ्वी के तृप्तकरदेने के बाद फिर तिन्होंको कालकाभय कहा है १६ व राजों को आपस में विलोम होजाने से व आपसमें ईर्षा से युक्त वर्त्तने से तिन बलवान् राजाओं की सेनासे पृथ्वी पीड़ित होजाती है १७ हे भगवन् सो यह पृथ्वी भार करके दुःखितहुई व राजाओंकरके पीडित तुम्हारी शरणआई है दृष्टांत जैसे नौकामें बैठेहुये मनुष्योंसे नौका डिगमग होजाती है १८ व युगांत सदृशरूप व पर्वतके बंध अलग छूटेहुये व जलकी पीड़ासे युक्त ऐसे अपने रूपको वारम्वार दिखाती हुई है १९ व क्षत्रियों के शरीर करके व सेनाकरके व मनुष्यों से विस्तीर्ण राष्ट्रोंकरके पीडित हुई पृथ्वी है व पुर पुरकेविषे एक एक राजाकी कोटि सख्या सेनासे युक्त है व अपने अपने राष्ट्रमें बहुतसे सैकडों हजारों ग्रामोंकासमूह विचरताहै २० और ये सब ग्रामों के मनुष्य व राजाओंकी सेनाकाबल इन्होंकरके यह पृथ्वी पीडित होरही है २१ सो हे भगवन् यह पृथ्वी निराश्रय और कालकी चेष्टासे रहित ऐसे आपके आश्रयमें आई है और आप इसकी परमगतिहो २२ और यह भूमि इस पृथ्वी के ऊपर स्थित

जीवोंकी कर्म्मभूमि है सो व्यथाको प्राप्त होरही है सो जिसप्रकार यह पृथ्वी पीड़ित नहीं हो तैसे आपको २३ क्योंकि हे भगवन् इस पृथ्वीको पीड़ा होने मे महान् दोषहै व प्राणियोंकी क्रियाका लोप होताहै व जगत् दूषित होता है २४ व यह पृथ्वी राजाओं के समूहसे पीड़ित होरही है व अपने स्वभावसे उपजीहुई क्षमाको त्याग के अचला नामवाली यह पृथ्वी चलायमान होरही है २५ व जो इस पृथ्वी के भारका उतरना है सोभी आपसेही सुनाजाता है इस वास्ते तुम्हारे सग सलाह करते हैं २६ व श्रेष्ठ मार्ग में वर्त्तमान सम्पूर्ण राजा राज्यको बढ़ावते हैं व मनुष्यों में तीनोंवर्णोंको ब्राह्मणके शरणहोना चाहिये २७ व सब वाक्यों में सत्य वचन उत्तमहै व अपने २ धर्म्म में युक्त ऐसे वर्ण उत्तमहैं व सब वेदों में जो तत्पर हैं वे विप्र श्रेष्ठहैं व जो सब विप्रों में तत्पर रहते हैं वे नर कहाते हैं २८ ऐसे जगत् धर्म्मके कारणसे मनुष्य वर्त्तते हैं सो हे भगवन् जैसे धर्म्म नष्ट नहीं हो ऐसे आप सलाहकरो २९ व धर्मका साधन करना यही श्रेष्ठ पुरुषकी गतिहै व पृथ्वी के भार उतारने के वास्ते दुष्ट राजाओंकी वध करना चाहिये ३० सो हे भगवन् इसवास्ते आप आवो तुम्हारे सग सलाह करके व पृथ्वी अगाड़ी करके हम सुमेरु पर्वतकी शिखरपै चलेंगे ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसे तिनसे दृढसलाह करके श्रीभगवान् अंधकार में आयाहुआ मेघ के समान शब्द करके व अचलरूप होके मेघ के अन्धकार सरीखे वर्णसे स्थितहोतेभये १ व तिन्होंके मोतियों की मणि बिजली के समान होतीभई व चन्द्रमासे युक्त बादल सरीसी कान्ति व बालों का चारोंतर्फ मण्डल व कालावर्ण व बड़ी छाती में रोमावली खड़ीहुई व श्रीवत्सचिह्नसे शोभायमान व दोनों स्तनोंके मुखोंसे शोभित २ पीले वस्त्रोंसे युत ऐसा अपने रूपको धारणकर लोकोंके गुरु अविनाशी भगवान् देखनेको योग्य होतेभये जैसे सन्ध्या समयमें बादल होजाते हैं ३ व फिर वे भगवान् गरुड़ की सवारीकर व ब्रह्माजी को अगाड़ीकर गमन करतेभये व सब देवता भगवान् को देखतेभये ४ तिनके पीछे २ गमन करतेभये व थोड़ेही काल में वे सब देवता सुमेरु पर्व्वतपै अपनी

सभामें पहुँचतेभये ५ फिर तहा सुमेरु पर्वतकी शिखरपै सूर्य्यकी किरणो करके झिमकतीहुई व सुवर्णके थाभोंसे रचीहुई व हीरा, मणि, तोरण इन्होंकरकेयुक्त ६ व मनोमयी चित्राओं करके युक्त व सैकडों विमानों की माला अर्थात् पंक्तियों वाली व रत्नोंके झरोखों से युत कामरूपिणी रत्नों करके भूषित ७ और रत्नों की कूपियों युत सब ऋतुओं के पुष्पों करके उत्कृष्ट ऐसी अपनी सभाको व देवमाया से युक्त दिव्य व विश्वकर्म्मा से रची हुई को वे सब देवता देखते भये ८ फिर तिस सभा को देखकर देवता प्रसन्न मन से व अपने अपने स्थान में यथाविधि से तिसमें प्रवेशहुये ९ अपने २ विमानोंपर व श्रेष्ठ आसनोंपै व कुशाओं के आसनों पै बैठते भये १० फिर तिससे अनन्तर ब्रह्माजी से प्रेराहुआ प्रभञ्जन नामवाला वायु इसप्रकार करताभया कि कौवेभी शब्द नहीं करतेभये ११ फिर सब चुपहोगये तब तिन देवताओंके मध्यमें करुणासे व खेदसे पृथ्वी वचनकहने लगी १२ पृथ्वी वचन कहती है हे देव मैं और जगत् भी तेरेहीको धारण करने लायकहै व हे भगवन् तुमहीं जीवों को धारण करतेहो व भुवनों को भी तुमहीं धारण करतेहो १३ व हे भगवन् जो कुछ आपने वलकरके व तेजकरके धारण कियाहै वही तुम्हारे प्रसादसे पश्चात् मैं भी धारण करती हू १४ व तुमसे धारण कीहुई वस्तुको मैं धारणकरूहू व विनाधारी वस्तुको नहीं धारणकरूहू व हे देव जो आपको नहीं धारण किया ऐसा कोई जीव नहीं है १५ और हे वीर हे नारायण आपही युग २ में जगत् के हितकेवास्ते महाभार उतारतेहो १६ और हे भगवन् तुम्हारेही तेजसे ढकीहुई मैं रसातलको प्राप्तहू और हे देवतोंमें श्रेष्ठ भगवन् आपके शरण आईहुईकी मेरी रक्षाकरो १७ और मैं दानवोंकरके पीडितहू और खोटी आत्मावाले राक्षसों करके पीडितहू और तुम्हारीही नित्य शरणको प्राप्तहू १८ और दुरात्मा राक्षस और दानवोंसे पीडितहुई मै आपहीकी शरणप्राप्त हूं १९ और हे भगवन् रक्षा करनेवाले आपकी शरण सैकडों हजारोंबार में नहीं होतीहूं इतने मेरेको भयहै २० और मैं पुरातन भगवान् को पहले रचीहू और मेरे रचे पहले दो राक्षस महासमुद्रमें सोतेहुए इस विष्णुभगवान्के कानोंके मैल से होतेभये २१ और वे दोनों राक्षस ब्रह्मासे प्रेरेहुए स्वर्गको ढकनेहुये बढ़तेभये २२ और वायु प्राणवाले दोनों राक्षसों को ब्रह्मा हाथसे स्पर्श न करताभया तब एकको तो कोमल जानताभया और एकको कठिन जानताभया २३ पश्चात्

ब्रह्माजी, सूर्य्य के जलसे उद्भव कोमलरूप एकका मधुनाम और एकका कैटभ
नाम ऐसे नामकरतेभये फिर तिन नामोंवाले वे दैत्य मदोन्मत्तहुए और एका
र्ण समुद्रमें युद्धकी इच्छाकरतेहुए विचरनेलगे २४ फिर ब्रह्माजी तिन आतेहुए
को देखके तिस एकार्णव समुद्रमें और भगवान्‌की नाभिसे उपजे कमलमें लुके
हुये बसतेभये २५ फिर तहां वे नारायण और ब्रह्माजी बहुत से दिन सोतेहुए
व्यतीत करतेभये और जब बहुत काल बीतचुका तब वे दोनों दैत्य जहां ब्रह्माजी
थे तिस जगहको जानतेभये फिर आतेभये २६ और महाकाया वाले घोर ऐसे
राक्षसों को ब्रह्मा देखके तिस कमल की डंडी में तड़फनेलगा २७ फिर तिसके
तड़फने से महातेजवाले विष्णु भगवान् जागके तिन्हों के संग युद्ध करनेलगे
और तिस एकार्णव समुद्रमें भगवान्‌का युद्ध तिनके सङ्ग हजारों वर्षतक भया
२८ परन्तु वे असुर युद्धमें नहीं हारे फिर बहुतकाल व्यतीत होचुका तब सो
मदवाले वे दैत्य प्रसन्न मनसे प्रभु नारायणके प्रति ऐसे कहनेलगे २९ कि हे
तेरे युद्ध से प्रसन्नभये सो आप हमारी मृत्यु करने लायकहो ३० परन्तु हमको
जिसजगह पृथ्वी पै जल नहीं हो तहां मारो ३१ और हे देवताओं में उत्तम भ
गवन् मरेहुये हम आपके पुत्रहोजायँगे क्योंकि जो कोई हमको युद्धमें जीतने
वालाहै तिसके हम पुत्रविहित करेहैं ३२ ऐसा वचन सुनके वे भगवान् तिनको
अपनी जांघों पै धरके पीड़ा करनेलगे ३३ फिर वे दोनों मधु कैटभ मृत्युकोप्राप्त
होतेभये और मरेहुए तिन दोनों का शरीर एक होताभया ३४ और मथेहुए
तिन दैत्योंके शरीरसे मेद धातु निकलके फैलतीगई ३५ फिर तिन दैत्योंके मेद
धातु से नारायण भगवान् इस पृथ्वी को ढकते भये ३६ इसतरह नारायण की
अपने प्रभावसे यह पृथ्वी स्थिरकरी है और पहले बाराह अवतार धारण करके
मार्कण्डेयजी ऋषिके देखते हुये ३७ मुखसे खोदके जल के मध्यमें निकली है
और पृथ्वी कहती है कि फिर मैं देखतोंके अगाड़ी बलिराजाके पालनाथके विष्णु
भगवान्‌को ग्रहणकरी हूं ३८ और अब मैं दुःखितहोरही हूं सो दुःखित हुई और
बिनामालिक ऐसी मैं गदाके धारण करनेवाले ३९ सबके मालिक ऐसे भगवान्‌की
शरणहूं और अग्नि तो सुवर्णका गुरुहै और गौवोंका गुरु सूर्य है ४० और नक्ष
त्रोंका गुरु चन्द्रमाहै और मेरा नारायण गुरुहै क्योंकि जो मैं स्थावर इसस्थावर
और जङ्गम जगत्‌को धारण कररहीहूं ४१ और मेरे धारणकिये हुये को गदाधर

भगवान् धारणकरते हैं और परशुरामजी महाराजने भार उतारनेकी इच्छा करके ४२ क्रोधसे इक्कीस वार क्षत्रिय मारके तिनसे जीतलई और मैं क्षत्रियों के रुधिर करके तृप्त करदई ४३ और पश्चात् भृगुजी महाराज ने अपने पिताके श्राद्धके दिन कश्यपऋषिको देदई ४४ फिर मांस, मेद, अस्थि इन्होंकरके दुर्गन्धवाली और क्षत्रियोंके रुधिरसे लिपीहुई रजस्वला स्त्रीके समान ऐसी मैं नीचेको मुख किये कश्यपऋषिके प्राप्तहुई ४५ तब कश्यपजी महाराज मेरेसे यह पूछतेभये कि पृथ्वी तू नीचेको मुख क्यों कररही है ४६ और हे शूरवीरों की पत्नी इस व्रतको धारण करतीभई क्या दुःख पाती है तब मैं कश्यपऋषिके वास्ते अपना प्रयोजन कहनेलगी ४७ हे ब्रह्मन् मेरे पति भृगुजी महाराजने मारदिये हैं इसवास्ते तिन शस्त्रकी वृत्तियोंवाले क्षत्रियों करकेही मैं हीनहूं ४८ और विधवाहूं और मेरे नगर शून्यहोरहे हैं इसवास्ते इस भारधारनेकी मेरीसामर्थ्य नहीं है सो ब्रह्मन् मेरे वास्ते ऐसा पतिकरो ४९ कि जो राजा मुझको ग्राम नगरों करके और समुद्रोंकरके सहित रक्षितकरै ऐसा वचनसुन निश्चयकर ५० तदनन्तर कश्यपजी मुझको मनुष्यों के इन्द्र मनुके अर्थ देतेभये फिर सो मैं मनुजीके पुण्यको प्राप्त होके इक्ष्वाकुराजा के कुलपर्यन्तरही ५१ पश्चात् पृथुसे पार्थिवको प्राप्तहुई इस प्रकार मनुजी महाराजके अर्थ दीहुई मुझको हजारोंराजा भोगतेहुये ५२ और बहुतसे शूरवीर क्षत्रिय मुझको जीतके स्वर्ग में प्राप्तहुये ५३ और वे सब काल के वशसे मेरेही विषय प्रलयको प्राप्तहोगये और मेरेहीवास्ते इस संसार में बलवाले क्षत्रियोंके विग्रह अर्थात् युद्धहोते हैं ५४ और यह सब वृत्तान्त हे भगवन् तुम्हारे करके प्रवृत्तकालके परिणाम होताहै ५५ और हे भगवन् जगत् के हित को आपकरो और जो भारके कारण से मेरेपर दया करतेहो तो रणके क्षय में राजाओंके प्रयोजनकरो ५६ और जिसको मैं भारकरके दुःखित रक्षाकरनेकी इच्छा करके प्राप्तहुई हूं सो चक्रके धारण करनेवाले शोभायमान एक भगवान् मेरेको अभयदेवो ५७ और भार उतारने के वास्ते यह विष्णु भगवान् युक्तहो और मुझको कहो ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वेभाषानुवादेएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं ऐसे पृथ्वीके वचनसुनके सम्पूर्ण देवता तिसीप्रयोजन को चिंतवन करतेहुये ब्रह्माजीको बोलतेभये १ हे भगवन् इस पृथ्वीकेभार उतारन की युक्ति करनी चाहिये क्योंकि संसार के शरीरकर्त्ता और लोकोंको उत्पन्न क-रनेवाले आपहीहो २ और जो कुछ महेन्द्रको कर्तव्यहै तथा धर्म्मराज को तथा वरुणको तथा कुबेरको तथा आप नारायणको ३ तथा चन्द्रमाको तथा सूर्य तथा वायु, बारह आदित्य, आठवसु, संसारको उपजानेवाले ग्यारह रुद्र ४ देवताओं के अग्रणी अश्विनीकुमार,बारह साध्यसंज्ञक देवता बृहस्पति, शुक्र, तथा काल प्रभु तथा कलियुग ५ व शिवजी तथा स्वामिकार्तिक व राक्षस, गन्धर्व, चारण महासर्पादिक ६ इन सबोंको तथा शैलादि पर्वतोंको तथा महान् लहरियोंवाले समुद्रोंको तथा गंगाजी आदि नदी ७ इन सबोंको जो कुछ कर्त्तव्यहै सो आप कहो कि किसप्रकार अपने २ अंशों करके उतरना चाहिये क्योंकि राजाओंके विग्रहमें पृथ्वीका कार्य्य आपको करनाहै ८ व आकाश में विचरनेवाले देवता तथा पृथ्वी में विचरनेवाले राजाओं को जो कर्त्तव्यहै सो कहो ९ और हे ब्रह्मन् विधिके करनेवाले ब्राह्मणोंके कुलमें अथवा क्षत्रियोंके कुलमें हमको जन्मलेना चाहिये अथवा पृथ्वी के बीचमें विना योनिमे उपजे शरीरको हम धारण करें १० इसप्रकार एक कार्य्यके करनेवाले देवताओं के वचनको ब्रह्माजी सुनके यह व-चन कहताभया ११ कि हे देवताओ जो आपको निश्चय कियाहै सो ठीक है आप तेजकरके अपने समान शरीरों को पृथ्वी पै रचो १२ व हे देवताओ तुम सब अपने २ तेजकरके पृथ्वी पै त्रिभुवन की शोभाको लिये जन्मलेओ और ब्रह्माजी कहतेहैं कि पृथ्वीके विषे सम्भव वार्त्ताको जानतेहुए मुझको भारतवंश के राजाने जो कियाहै सो सुनना चाहिये १३ पहले कश्यपके संग समुद्र की पश्चिम वेलाकी तरफ स्थितहोके व संसारके वृत्तान्तोंकी व बहुतसे पुराणों का विचार करताहुआ १४ तब विचार करतेहुए मेरे समीप शीघ्रही गंगा नदीसेयुक्त व मेघ व वायुके संग आवताहुआ १५ व विषम लहरियों को करताहुआ और नदियोंके वेगसेयुक्त व जलरूपी वस्त्रसे ढकाहुआ १६ व गऊ,मोती इन्होंकरके सुन्दर शरीरवाला और मूंगा मणि इन्होंके आभूषण पहनेहुए व सूर्य चन्द्रमा

करके युक्त और गभीर मेघसरीखा शब्द करताहुवा १७ ऐसा समुद्र मेरा तिरस्कार करके व अपनी वेलाको उल्लंघता हुवा जलकी चपल लावण्यता करके मुझको क्लेदित करताहुवा १८ इसप्रकार तिस जगह मुझको जब समुद्र पीडा देनेलगा तब तिसवक्तमें कहने लायक वाणी करके मुझे ऐसे कहा कि हे समुद्र अब तो शांतहुवा १९ फिर शान्तहोनेका वचन सुनके समुद्र अपना स्वरूप करताभया और लहरियों के समूहों के अङ्गको धारण किये व राजाकी कांति करके स्थित होताभया २० फिर गंगा के सहित तिस समुद्रको कारण के वास्ते व आपके हितकेवास्ते शाप देताभया कि हे समुद्र जिससे तू राजाकेसमान रूप धारण किये खडा है जा तू पृथ्वी के पालनेवाला राजाहोगा २१ व तहाभी तू अपने स्वभावसे उपजी लीलाको धारण करताहुवा भरत राजाकेकुलमें मनुष्यों का भर्त्ताहोगा २२ व जो शान्तहै ऐसे मुझसे कहाहुवा तू सूक्ष्मरूप होगया इस वास्ते तू श्रेष्ठ यशवाला शान्तनुनामवाला होवेगा २३ व यह नदियों में श्रेष्ठ गंगाभी सम्पूर्ण अंगोंकी शोभावाली व अच्छेकटाक्ष व रूपवाली तुझकोही प्राप्त होवेगी २४ ऐसे जब मुझसे कहा तब मेरे प्रति क्षोभकरके समुद्र बोला कि हे देवताओं के देव आप मुझको किसवास्ते शापदेते हो २५ मैं तो तेरे करके रचहुवा तेरीही कृत्यमें तत्पर रहताहूं और मैं शाप देनेलायक नहीं हूं सो आप मुझ आत्मजको किसवास्ते शाप देतेगये २६ क्योंकि हे भगवन् तेरीही प्रसन्नतासे मैं वेगसे पूर्णमासी के दिन बढताहूं सो जो यदि मैं चलायमान हुवा तो क्या दोषहै २७ व पवन से फँसेहुये जलसे पर्व्वणी में आप स्पर्शहोगये तो हे भगवन् यहां शापका कौनकारणहै २८ व हे भगवन् उठेहुये महावायु और बढेहुये मेघ व पूर्णमासी के चन्द्रमा इन तीनकारणों से मैं क्षोभको प्राप्तहुवा था २९ सो हे भगवन् इसप्रकार आपके कियेहुए तीनकारणों से भी जो मैं अपराध के लायकहूं तो आप क्षमाकरो और इस शापको दूरकरो ३० व हे देवेश इसप्रकार निरालम्ब और शापसे शिथिल अंगवाला मेरे विषे जो प्रमाण देखो तो आप मेरे पै दयाकरो ३१ व हे देव स्वर्ग में प्राप्तहुई और मेरे दोषसे समान दोषवाली इसगंगा पै आप प्रसाद अर्थात् प्रसन्नताकरो ३२ ऐसे ब्रह्माजी कहते हैं कि तब देवताओं के कार्य्यको नहीं जाननेवाला समुद्रको और शापसे त्रस्तहुये को मैं सुन्दरवाणी करके कहताभया ३३ हे समुद्र मैं प्रसन्नहुवा तू शान्तिको प्राप्त हो

चौवनवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं ऐसे पृथ्वीके वचनसुनके सम्पूर्ण देवता तिसीप्रयोजन को चिंतवन करतेहुये ब्रह्माजीको बोलतेभये १ हे भगवन् इस पृथ्वीकेभार उतरने की युक्ति करनी चाहिये क्योंकि संसार के शरीरकर्त्ता और लोकोंको उत्पन्न करनेवाले आपहीहो २ और जो कुछ महेन्द्रको कर्तव्यहै तथा धर्मराज को तथा वरुणको तथा कुबेरको तथा आप नारायणको ३ तथा चन्द्रमाको तथा सूर्य तथा वायु, बारह आदित्य, आठवसु, संसारको उपजानेवाले ग्यारह रुद्र ४ देवताओं के अग्रणी अश्विनीकुमार,बारह साध्यसंज्ञक देवता बृहस्पति, शुक्र, तथा काल प्रभु तथा कलियुग ५ व शिवजी तथा स्वामिकार्तिक व राक्षस, गन्धर्व, चारण महासर्पादिक ६ इन सबोंको तथा शैलादि पर्वतोंको तथा महान् लहरियोंवाले समुद्रोंको तथा गंगाजी आदि नदी ७ इन सबोंको जो कुछ कर्तव्यहै सो आप कहो कि किसप्रकार अपने २ अंशों करके उतरना चाहिये क्योंकि राजाओंके विग्रहमें पृथ्वीका कार्य्य आपको करनाहै ८ व आकाश में विचरनेवाले देवता तथा पृथ्वी में विचरनेवाले राजाओं को जो कर्तव्यहै सो कहो ९ और हे ब्रह्मन् विधिके करनेवाले ब्राह्मणोंके कुलमें अथवा क्षत्रियोंके कुलमें हमको जन्मलेना चाहिये अथवा पृथ्वी के बीचमें बिना योनिमे उपजे शरीरको हम धारण करें १० इसप्रकार एक कार्य्यके करनेवाले देवताओं के वचनको ब्रह्माजी सुनके यह वचन कहताभया ११ कि हे देवताओ जो आपको निश्चय कियाहै सो ठीक है आप तेजकरके अपने समान शरीरों को पृथ्वी पै रचो १२ व हे देवताओ तुम सब अपने २ तेजकरके पृथ्वी पै त्रिभुवन की शोभाको लिये जन्मलेओ और ब्रह्माजी कहते हैं कि पृथ्वीके विषे सम्भव वार्ताको जानतेहुए मुझको भारतवंश के राजाने जो कियाहै सो सुनना चाहिये १३ पहले कश्यपके संग समुद्र की पश्चिम वेलाकी तरफ स्थितकरके व संसारके वृत्तान्तोंकी व बहुतसे पुराणों का विचार करताहुआ १४ तब विचार करतेहुए मेरे समीप शीघ्रही गंगा नदीसेयुक्त व मेघ व वायुके संग आवताहुआ १५ व विषम लहरियों को करताहुआ और नदियोंके वेगसेयुक्त व जलरूपी वस्त्रसे ढकाहुआ १६ व शंख, मोती इन्होंकरके सुन्दर शरीरवाला और मूंगा मणि इन्होंके आभूषण पहनेहुए व पूर्ण चन्द्रमा

करके युक्त और गभीर मेघसरीखा शब्द करताहुवा १७ ऐसा समुद्र मेरा तिरस्कार करके व अपनी वेलाको उल्लंघता हुवा जलकी चपल लावण्यता करके मुझको क्लेदित करताहुवा १८ इसप्रकार तिस जगह मुझको जब समुद्र पीड़ा देनेलगा तब तिसवक्तमें कहने लायक वाणी करके मुझे ऐसे कहा कि हे समुद्र अब तो शांतहुवा १९ फिर शान्तहोनेका वचन सुनके समुद्र अपना स्वल्परूप करताभया और लहरियों के समूहों के अङ्गको धारण किये व राजाकी कांति करके स्थित होताभया २० फिर गंगा के सहित तिस समुद्रको कारण के वास्ते व आपके हितकेवास्ते शाप देताभया कि हे समुद्र जिससे तू राजाकेसमान रूप धारण किये खड़ा है जो तू पृथ्वी के पालनेवाला राजाहोगा २१ व तहाभी तू अपने स्वभावसे उपजी लीलाको धारण करताहुवा भरत राजाकेकुलमें मनुष्यों का भर्त्ताहोगा २२ व जो शान्तहै ऐसे मुझसे कहाहुवा तू सूक्ष्मरूप होगया इस वास्ते तू श्रेष्ठ यशवाला शान्तनुनामवाला होवेगा २३ व यह नदियों में श्रेष्ठ गंगाभी सम्पूर्ण अंगोंकी शोभावाली व अच्छेकटाक्ष व रूपवाली तुझकोही प्राप्त होवेगी २४ ऐसे जब मुझसे कहा तब मेरे प्रति क्षोभकरके समुद्र बोला कि हे देवताओं के देव आप मुझको किसवास्ते शापदेते हो २५ मैं तो तेरे करके रचहुवा तेरीही कृत्यमें तत्पर रहताहूं और मैं शाप देनेलायक नहीं हूं सो आप मुझ आत्मजको किसवास्ते शाप देतेभये २६ क्योंकि हे भगवन् तेरीही प्रसन्नतासे मैं वेगसे पूर्णमासी के दिन बढ़ताहू सो जो यदि मैं चलायमान हुवा तो क्या दोषहै २७ व पवन से फँसेहुये जलसे पर्व्वणी में आप स्पर्शहोगये तो हे भगवन् यहां शापका कौनकारणहै २८ व हे भगवन् उठेहुये महावायु और बढ़ेहुये मेघ व पूर्णमासी के चन्द्रमा इन तीनकारणों से मैं क्षोभको प्राप्तहुवा था २९ सो हे भगवन् इसप्रकार आपके कियेहुए तीनकारणों से भी जो मैं अपराध के लायकहूं तो आप क्षमाकरो और इस शापको दूरकरो ३० व हे देवेश इसप्रकार निरालम्ब और शापसे शिथिल अंगवाला मेरे विषे जो प्रमाण देखो तो आप मेरे पै दयाकरो ३१ व हे देव स्वर्ग में प्राप्तहुई और मेरे दोषसे समान दोषवाली इसगङ्गा पै आप प्रसाद अर्थात् प्रसन्नताकरो ३२ ऐसे ब्रह्माजी कहते हैं कि तब देवताओं के कार्य्यको नहीं जाननेवाला समुद्रको और शापसे त्रस्तहुये को मैं सुन्दरवाणी करके कहताभया ३३ हे समुद्र मैं प्रसन्नहुवा तू शान्तिको प्राप्त हो

व इस शापकेहोनेवाले कार्य्यको तू सुन ३४ व हे नदियों के नाथ तू भारतवर्ष में जा अपने तेजसे देहको धारणकर और इससागर के शरीर को त्याग ३५ व हे समुद्र तहां तू राजाहुवा चारों वर्णोंकी पालना कर ३६ और यह नदियों में श्रेष्ठ गङ्गा मनुष्य शरीर को धारण करके तिसी कालमें रमण करने के योग्य होगी ३७ सो हे समुद्र इस गङ्गाके संग मोद करताहुवा मेरी आज्ञासे इस जल का सङ्क्लेदसे भूलजावेगा ३८ सो यह मेरी आज्ञा तुझको जल्दीही करनी चाहिये और हे सागर प्राजापत्य विधिकरके और गङ्गा के संग इस मेरी आज्ञाको तू कर ३९ व मैंने स्वर्ग से आठवसु पृथ्वी पै प्रेरे हैं सो तिन्होंकी उत्पत्तिकेवास्ते तू युक्तकरा है ४० व यह गङ्गा व सूर्य्य के समान तेजवाले और देवताओं की प्रीति बढानेवाले ४१ ऐसे आठ वसुओं को संतानकेवास्ते धारण करो हे समुद्र फिर तिन वसुओं को शीघ्र उत्पादनकर और कुरुकुलको बढा के पश्चात् इस सागर शरीर को प्राप्त होजायगा ४२ व ब्रह्माजी कहते हैं कि हे देवताओ इस प्रकार मुझको जानके तुम्हारे हितकेवास्ते और पृथ्वी के भार उतारने के वास्ते यह मुझको करदियाहै ४३ सो तिसीसमय पृथ्वी पै मुझको शांतनुरूपका रोपण कियाहै तहां आठवसु गंगाकेविषे उत्पन्नहोरहे हैं ४४ सो अब भी पृथ्वी में गांगेयनामवाला आठवां वसु है और ये सातवसु यहां प्राप्त होगये वह एकवसु वहां है ४५ व दूसरी शान्तनु राजाकी स्त्रीकेविषे विचित्रवीर्य नामवाला और प्रतापवान् ऐसा राजा होताभया ४६ व विचित्रवीर्य राजाके पांडु धृतराष्ट्र ये दो राजा होतेभये सो अबभी पृथ्वीमें विख्यातहैं ४७ व तहां पांडुराजाके दो भार्या यौवनवती और कुंतीमाद्री इन नामोंवाली देवताओंकी स्त्रियोंके समानहैं ४८ व धृतराष्ट्र राजाके एकभार्या गांधारी नामवाली व पतिव्रताहै ४९ तहां वंशोंका विभाग होवेगा सो वहां तिन राजाओं के पुत्रोंका महान् युद्धहोवेगा ५० व तिन राजाओं के पुत्रादिकों में क्लेश होनेसे मनुष्योंका क्षय होवेगा व यह युगके अन्त में महान् भयहोगा ५१ व सेनावाले राजाओंका आपसमें नाशवान् होनेमे व धृतराष्ट्र इन्होंके जुदे २ भाग होनेसे पृथ्वीको शिथिलता प्राप्तहोवेगी ५२ व द्वापरयुगके अन्तमें पहलेभी मुझको शस्त्र व वाहनादिकों से राजाओंका क्षय देखाहै ५३ व तहां बाकीरहे मनुष्योंको रात्री में निचेत सोवतेहुयेको शिवजी के अंश शस्त्र से अपने तेजसे जलादेहै ५४ व पश्चात् अन्तस्वरूप इस क्रूरकर्मी के नाश पीछे इस

आख्यानवाला तीसरा द्वापरयुग समाप्त होजावेगा ५५ व माहेश्वरका अंशहोत सन्ते पीछे तीक्ष्ण व दारुण दर्शनवाला युग प्रवर्त्त होवेगा ५६ व जिसमें अधर्म के करनेवाले पुरुष होवेंगे व स्वल्प धर्मरहेगा व सत्यका संयोग दूरहोजायगा व भूंठ बढ़जायगा ५७ व तिससमयमें महेश्वर व स्वामिकार्त्तिक इन दो,देवोंके आश्रयहुये मनुष्य वृद्धावस्थाको प्राप्त होजावेंगे ५८ सो यह पृथ्वी के राजाओं के नाशका निर्णय कहाहै हे देवताओ सो अंशकर अवतारलेवो देरमतकरो ५९ और धर्मका अंश कुंतीरानी में अथवा माद्रीरानी में धारण करो और विग्रहका मूल कलियुग गांधारीके विषे धारणकरो ६० और ये दोपक्ष पृथ्वी,के राजाओं के होंगे और ये राजा कालसे प्रेरेहुये स्नेहवाले और पृथ्वी के अर्थ युद्ध की इच्छा करनेवाले होंगे ६१ और यह पृथ्वी जाने लोकधारिणी अपनी योनिको प्राप्तहोवे यह नैष्ठिक उपाय संसार में प्रसिद्ध कहा है ६२ इसप्रकार ब्रह्माजी का वचन सुनके पृथ्वी कालके संग राजोंके वधके वास्ते अपने स्थानमें जातीभई ६३ और ब्रह्माजी देवताओंको प्रेरतेभये और आप नारायणको और पृथ्वीको धारण करनेवाले शेष ६४ सनत्कुमार साध्यसंज्ञक देवते अग्नि,वरुण,वसु,सूर्य चन्द्रमा ६५ गन्धर्व,अप्सरा,रुद्र,विश्वेदेवा,अश्विनीकुमार इन सब देवताओं के अंशकरके ब्रह्माजी अवतार करातेभये ६६ और जैसे ये पहले कहे हैं कि कोईक तो योनिसे उत्पन्न हुये व कईक विना योनिसे तिसी प्रकार ये देवते पृथ्वीतल में ६७ दैत्यदानवोंके मारनेवाले और पुरुषोंके ईश्वर होतेभये ६८ और खिरणी वृक्षके समान सकाशवाले व वज्रके समानकडे सहनेवाले ६९ ऐसे होतेभये व कईक तो दशहजार हाथियों के समान बलवाले कईक हाथियों के समूहके समान बलवाले व कईक गदा,परिघ,शस्त्र, बरछी इन्होंको सहनेवाले और मूसल सरीखी भुजावाले ७० और पर्वतके शिखरको नाश करनेवाले व सब मूसलसे युद्ध करनेवाले ऐसे सैकडों हजारों देवते वृष्णिवंश में होतेभये ७१ और कुरुवंशमें जो देवतेथे व पांचालदेश में जो राजाथे और यज्ञकरनेवाले समृद्धिवान् ब्राह्मणोंकी योनिमें जोथे ७२ वे सब सम्पूर्ण शस्त्रविद्याके जाननेवाले व धनुष् धारण करनेवाले वेदके नियममें युक्त सम्पूर्ण ऋद्धिगुणमेंयुत पूजन करनेवाले पुण्य करनेवाले ऐसे होतेभये ७३ व वे सब क्रोधसे युक्तहुये पर्वतों को व पृथ्वी को चलायमान करतेभये व आकाश में गमन करतेभये व समुद्र को क्षोभक-

रातेभये ७४ ऐसे वैशम्पायनजी राजा जनमेजयके प्रति कहते हैं कि भूतों के उत्पन्न करनेवाले ब्रह्मा तिन्हों को इसप्रकार आज्ञादेके और लोकोंको नारायण में लय करवाके शान्तिको प्राप्त होताभया ७५ व हे जनमेजय जिसप्रकार विष्णु भगवान् प्रजाके हितके वास्ते ययाति वंश में और वसुदेवके घर जन्मलेते भये सो तू फिर सुन ७६ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्व्वभाषायादेवानामंशावतरणेचतु पंचाशत्तमोऽध्याय ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहते हैं ऐसे यह कार्य्य होचुका और जब पृथ्वी अपने स्थानपै चलीगई और भारतकुलमें अंश करके देवतों का अवतार होगया १ औ धर्म्म, इन्द्र, वायु, अश्विनीकुमार, सूर्य्य इन्होंका अवतार जब पृथ्वीमें होगया और बृहस्पति का अवतार होनेके पश्चात् व आठवां वसुका अवतार पृथ्वी होलिया ३ व मृत्यु, काल, चन्द्रमा, वरुण इनसबोंका अवतार ४ पृथ्वी में होगः व शिवजी, मित्रदेवता, कुबेर, गन्धर्व्व, उरग, यक्ष इन सबोंका अवतार जब गया ५ तब नारदमुनि नारायण के अंश को अवतार के बिना स्थित देखके फिर तहां जलतीहुई अग्नि के समान तेजवाला व उदय होता सूर्य्य के समा नेत्रोंवाला व व्यापदाका वृत्तांत सहित व जटा कमण्डलु धारण करताहुआ ऐसे अपने रूपको बनाके व चन्द्रमा के समान सफेदवस्त्र धारण कियेहुये व सु वर्ण के आभूषण पहिनेहुये व अपनी कांखमें सखीकी नाईं वीणाको ग्रहण कं हुये ८ व काला मृगचर्म्म सुवर्णका यज्ञोपवीत, दण्ड, कमण्डलु इन सबों कं धारण कियेहुये व साक्षात् इन्द्रकी तरह रूपवाला ९ व गुप्त विग्रहोंका नाशकरं वाला और महर्षि शरीरको धारण कियेहुये व गन्धर्व्व वेदके जाननेवाला १० वैररूपी क्रीडा में निश्चय करेहुये ब्रह्माका पुत्र व देव, गन्धर्व्व, मनुष्य इनके आदि कारणों को जाननेवाला मुनि ११ व चारों वेदोंको गानेवाला ऐसे विप्र के ऋषि नारदमुनि ब्रह्मलोकमें विचरनेवाले व अविनाशी १२ देवताओंकी सभ मेंस्थितहोके वेगसे विष्णुके प्रति बोलतेभये हे विष्णो आपने देवताओं का अ वतार पृथ्वी में कराहै १३ सो राजाओं के क्षयके वास्ते कराहै व यह अकारणहै व जो यह आपने राजाओं का क्षयरचाहै १४ सो हे नारायण मुझको कार्य्य के

वास्ते नहीं दिखता है व जानतेहुए आपको यह कार्य्ययुक्त नहीं है १५ क्योंकि आप नेत्रवालों के नेत्रहो सराहने लायकहो और ईश्वरों के ईश्वरहो और योग वालों के योगी और गतिवालों की गतिहो १६ व हे विभो पृथ्वी में गयेहुये देवतों के अग्रणी क्या तुम पृथ्वी पै अपने अंशको नहीं युक्त करोगे क्योंकि तेरे करके सनाथहुये और प्रेरेहुये देवते १७ कार्यान्तरमें गतहुये पृथ्वी के भारको उतारदेंगे हे विष्णो इसवास्ते मै इस देवसभामें तुम्हारे प्रेरणे को आयाहू १८ व इसमें कारण यह है कि हे भगवन् जो आपने तारकामय के युद्धमें दैत्यहनन किये थे १९ तिनकी पृथ्वी में गये हुओंकी आप गतिसुनो नारदजी कहते हैं कि पृथ्वी के विषे मुदित मथुरा नामवालीपुरी विख्यातहै २० व यमुनाके किनारे है और अनेक देशोंके मनुष्योंसे युत ऐसी मथुराहै तहा एक मधुनामवाला व युद्धमें दुर्जय ऐसा दैत्यहोताभया २१ व महान् बलवाला और सर्वोंको त्रासदेने वाला होताभया व तिसकापुत्र महान् बलवाला व सबजीवोंको त्रासदेनेवाला लवण नामवाला होताभया २२ व तहा हजारों वर्षतक क्रीडा करताभया और वह राक्षस दैवयोगसे अभिमान कर संसारको उजाडताभया २३ व जिस समय यह राक्षस था तिससमय किसीको युद्धमें नहीं २४ जीतने लायक ऐसी अयोध्यापुरी में दशरथके पुत्र रामचन्द्र होतेभये २५। २६ व धर्मको जाननेवाले व राक्षसोंको भयदेनेवाले रामचन्द्र होतेभये तब वह बलवान् राक्षस घोंमनके आश्रयहुवा २७ रामके प्रति कठोर वचन कहनेवाला अपने दूतको भेजताभया तब वह दूत रामके अगाड़ी जाके कहनेलगा हे राम जो विषयमें आसक्त होवे वह तेरा शत्रु रावण है २८ और श्रेष्ठ राजे राजव्रतमें स्थितहुये और प्रजाके शुभकी इच्छा करतेहुये बलवान् शत्रुको समझाते नहीं हैं २९ किन्तु बढेहुए देश की इच्छाकरके शत्रु मारनेही चाहिये और सब जगह राज्यकरनेवाले राजाको विशेषकर शत्रु जीतने चाहिये ३० व पहले अपनी इन्द्रिय जीतनी चाहिये तिनके जीतनेमें निश्चय जयहै और राजाको तो विशेषकर इन्द्रिय जीतनी चाहिये ३१ व व्यसन धर्म्म में फँसेहुये और बुद्धिमान् व अधिक बलवाले ऐसे शत्रुओं को सामदण्ड अर्थात् समझाने का भयनहीं है ३२ व स्वभाव से उपजे इन्द्रियों के विषयों करके सब हननहोजाते हैं क्योंकि इन्द्रियों का विषय तो इन्द्रियोंही को सुख करताहै क्योंकि जो आपने मोहकरके लक्ष्मीकेवास्ते बलवान् रावण मार

दिया ३३ और जो तुमने वन में विचरते हुये और व्रत में युक्त हुये यह कर्म किया अर्थात् रावण मारदिया सो इसको हम युक्त नहीं मानते हैं ३४ व यह नीच विधि श्रेष्ठ पुरुषों में कहीं नहीं देखी जाती है व श्रेष्ठ पुरुषों में क्रोध रहित धर्म्म रहताहै और वह धर्म्म शुभको प्राप्त करदेताहै ३५ व व्रतमें रहनेवाले तैंने रावणमारके आश्रमोंके दोष लगादियाहै व उस रावणकोही धन्यहै ३६ कि जो स्त्रीके निमित्त युद्धमें मरगया व जो नीच धर्म्ममे तुझे रावण मारदिया यहतेरी खोटी बुद्धिहै व तू अजितेंद्रियहै ३७ व जो तू बलवान्है तो अब मेरे संग युद्ध कर इसप्रकार वह दूत कहताभया फिर तिस दूतके रूखे वचन सुनके ३८ हँसते हुये भगवान् रामचन्द्र तिस दूतके प्रति यह कहनेलगे हे दूत यह तुझको तिस दैत्यके बड़ापनसे कहाहै ३९ क्योंकि जो मुझ वेदात्माको दोषकरके फेंकताहै व हे मूढ जो मैं श्रेष्ठमार्गमें वर्त्तमानथा व जो रावण मारदिया ४० व तिसने जो मेरी भार्या हरलई तो इसमें क्या दोषहै व श्रेष्ठमार्ग में स्थितहुये साधुजन वचनसेही दूषित नहीं होते हैं ४१ क्योंकि देवता तो सदा श्रेष्ठपुरुषोंमें व अन्यपुरुषोंमें भी विचरताहै सो हे दूत जो दूतकाकार्य होताहै सो तुझको करदिया अब तू जल्दी चलाजा देरमतकरे ४२ व आपाको सराहनेवाले नीच पुरुषों पै मेरेसरीखे प्रहार नहीं करते हैं अर्थात् मारते नहीं हैं सो यह शत्रुघ्ननामवाला मेराभाईहै ४३ सो तिस खोटीबुद्धिवाले दैत्यकेसंग युद्ध करेगा ऐसे रामचंद्र राजाकरके कहाहुआ वह दूत ४४ शत्रुघ्नकेसंग तिस बडे मधुवनमें जल्द गमन करनेवाली सवारी से आवताभया ४५ और वह शत्रुघ्न भी युद्धकी लालसा करताभया तिस वन में प्रवेश होताभया व तदनन्तर तिस अपने दूतके वचन सुनके क्रोधमें मूर्च्छित हुआ ४६ पीछेपीछे तिस वनको देखके व युद्धके सम्मुख आवताभया फिर वहां शत्रुघ्न का व तिस दैत्य का महान् युद्ध होनेलगा ४७ व वे दोनों शूरवीर व धनुष्को धारणकरनेवाले पैने २ बाणों से आपसमें हनन करनेलगे ४८ परन्तु को ऐसे युद्धके विमुख होताभया फिर शत्रुघ्न के बाणों से पीड़ितहुआ तब वह दैत्य ४९ देवतों के वरसे दियाहुआ व सब जीवों को मारनेवाला ऐसे अंकुश को ग्रहणकरके शब्द करनेलगा ५० व शत्रुघ्नके शिरको पृथ्वीमें नवाके काटने लगा ५१ तब वह रामचन्द्रजीके भ्राता रुक्मत् नामवाले खड्गको ग्रहणकर ५२ तिस अंकुश को व तिस दैत्य के शिरको भी छेदन करताभया व पश्चात् तिस

दैत्यकोमारके तिसके वनको भी वह बुद्धिमान् शस्त्रकरके छेदन करताभया ५३ फिर वह परमधर्म को जाननेवाला शत्रुघ्न तिस वनको छेदनकरके वहा मकान वनाने की रुचि करताभया ५४ व तिस मधुवनस्थान में मथुरानामवाली पुरी रचताभया इसप्रकार नारदमुनि भगवान्केप्रति कहरहे हैं कि हे भगवन् वह परम उदारपुरी ५५ व किला दरवाजे तोरण इन्हों से शोभित ऐसी मथुरा पहले शत्रुघ्न करके रचीहुईहै ५६ व वढेहुये देशोंकरके मिलीहुई व समृद्धिवान् मकानों करके युक्त व वगीचियोंकरके युक्त ऐसी मथुरा है व जहा अच्छीसीमा गडरही ५७ व जिसके चारोंतरफ कोट वनरहाहै व जिसके तागडी के समान खाई वन रहीहै व कुडलरूप राजाओं के मकान वनरहे ५८ व जिसमें खुलेहुये दरवाजे मुखके समान मालूम होते हैं व जहा वाजार की चौपट शोभायमान होरही हैं और जिस मथुरापुरी में रोगकरके रहित शूरवीर पुरुष हैं और जिस पुरीमें वहुत से हाथी व घोडे व रथोंका समूह है ५९ और वह अर्द्धचन्द्राकार वनीहुई और यमुनाकेतीर करके शोभितहै व जिसमें वहुत सुन्दर व्यवहारी पुरुषोंकी दूकान है और रत्नों के खजाने करके गर्वित है ६० व जहा अच्छीखेती उपजे ऐसे खेत हे व वर्षासमय इन्द्र वर्षताहै और वह नवीन नारियों करके मुदित मालूम होती है ६१ इसप्रकार प्रकाशवाली तिसपुरीमें भोजकुलको वढानेवाला राजाशूरसेन होताभया ६२ व हे विष्णो तिस शूरसेनके उग्रसेन नामवाला पुत्रहै और तिस उग्रसेन के जो कि आपने तारकामय युद्ध में माराथा ६३ वह कालनेमि नाम वाला दैत्य कसनामवाला व भोजवशको वढानेवालाहै ६४ व पृथ्वीकेविषे राजा ऐसे विख्यातहै व सिहके समान पराक्रमवालाहै राजाओं को भय करनेवालाहै व घोरहै व तिससे सव राजा भयमानते हैं ६५ व सव जीवोंको भय देनेवालाहै व श्रेष्ठ मार्ग्गसे वाहर निकला हुवाहै व दारुण अभिनिवेश करके तथा दारुण शरीरके ६६ अभिमान करके युक्तहै व तिसी अभिमान करके प्रजाके रोम खड़े करदेता है व राजधर्म्म में युक्त नहीं है व कुछ अपने पक्षवाले पुरुषों कोभी सुख नहीं देताहै ६७ व अपने राज्यमें भी प्रिय नहीं करताहै सदा करलेने में रुचि रखताहै व हे भगवन् जो कि आपने युद्ध में माराथा वह कस इसप्रकार उत्पन्न होरहा है ६८ और वह दैत्य आसुरी आत्मा करके सव जीवोंको वाधा देता है व जो पहिले हयनिकान्त नामवालादैत्य आपनेमाराया वह हयग्रीव नामवाला

दिया ३३ और जो तुमने वन में विचरते हुये और व्रत में युक्त हुये यह कर्म किया अर्थात् रावण मारदिया सो इसको हम युक्त नहीं मानते हैं ३४ व यह नीच विधि श्रेष्ठ पुरुषों में कहीं नहीं देखी जाती है व श्रेष्ठ पुरुषों में क्रोध रहित धर्म्म रहताहै और वह धर्म्म शुभको प्राप्त करदेताहै ३५ व व्रतमें रहनेवाले तैंने रावणमारके आश्रमोंके दोष लगादियाहै व उस रावणकोही धन्यहै ३६ कि जो स्त्रीके निमित्त युद्धमें मरगया व जो नीच धर्म्मसे तुम्हें रावण मारदिया यहतेरी खोटी बुद्धिहै व तू अजितेंद्रियहै ३७ व जो तू बलवान्है तो अब मेरे सग युद्ध कर इसप्रकार वह दूत कहताभया फिर तिस दूतके रूखे वचन सुनके ३८ हँसते हुये भगवान् रामचन्द्र तिस दूतके प्रति यह कहनेलगे हे दूत यह तुझको तिस दैत्यके बडापनसे कहाहै ३९ क्योंकि जो मुझ वेदात्माको दोषकरके फेंकताहै व हे मूढ जो मैं श्रेष्ठमार्गमें वर्त्तमानथा व जो रावण मारदिया ४० व तिसने जो मेरी भार्या हरलई तो इसमें क्या दोषहै व श्रेष्ठमार्ग में स्थितहुये साधुजन वचनसेही दूषित नहीं होते हैं ४१ क्योंकि देवता तो सदा श्रेष्ठपुरुषोंमें व अन्यपुरुषोंमें भी विचरताहै सो हे दूत जो दूतकाकार्य होताहै सो तुझको करदिया अब तू जल्दी चलाजा देरमतकरै ४२ व आपाको सराहनेवाले नीच पुरुषों पै मेरेसरीखे महार नहीं करते हैं अर्थात् मारते नहीं हैं सो यह शत्रुघ्ननामवाला मेराभाई है ४३ सो तिस खोटीबुद्धिवाले दैत्यकेसग युद्ध करेगा ऐसे रामचन्द्र राजाकरके कहाहुआ वह दूत ४४ शत्रुघ्नकेसग तिस बड़े मधुवनमें जल्द गमन करनेवाली सवारी से आवताभया ४५ और वह शत्रुघ्न भी युद्धकी लालसा करताभया तिस वन में प्रवेश होताभया व तदनन्तर तिस अपने दूतके वचन सुनके क्रोधसे मूर्च्छित हुआ ४६ पीछेपीछे तिस वनको देखके व युद्धके सम्मुख आवताभया फिर वहां शत्रुघ्न का व तिस दैत्य का महान् युद्ध होनेलगा ४७ व वे दोनों शूरवीर व धनुष् को धारणकरनेवाले पैने २ बाणोंसे आपसमें हनन करनेलगे ४८ परन्तु को ऐसे युद्धके विमुख होताभया फिर शत्रुघ्न के बाणों से पीड़ितहुआ तब वह दैत्य ४९ देवतों के वरसे दियाहुआ व सब जीवों को मारनेवाला ऐसे अंकुश को ग्रहणकरके शब्द करनेलगा ५० व शत्रुघ्नके शिरको पृथ्वीमें नवाके फाड़ने लगा ५१ तब वह रामचन्द्रजीके भ्राता जगत् नामवाले खड्ग को ग्रहणकर ५२ तिस अंकुश को व तिस दैत्य के शिरको भी छेदन करताभया व पश्चात् तिस

दैत्यकोमारके तिमके वनको भी वह बुद्धिमान् शस्त्रकरके छेदन करताभया ५३ फिर वह परमधर्म को जाननेवाला शत्रुघ्न तिस वनको छेदनकरके वहां मकान वनाने की रुचि करताभया ५४ व तिस मधुवनस्थान में मथुरानामवाली पुरी रचताभया इसप्रकार नारदमुनि भगवान्केप्रति कहरहे हैं कि हे भगवन् वह परम उदारपुरी ५५ व किला दरवाजे तोरण इन्हों से शोभित ऐसी मथुरा पहले शत्रुघ्न करके रचीहुई है ५६ व वढेहुये देशोंकरके मिलीहुई व समृद्धिवान् मकानों करके युक्त व वगीचियोंकरके युक्त ऐसी मथुरा है व जहा अच्छीसीमा गडरही ५७ व जिसके चारोंतरफ कोट वनरहाहै व जिसके तागडी के समान खाई वन रही है व कुडलरूप राजाओं के मकान वनरहे ५८ व जिसमें खुलेहुये दरवाजे मुखके समान मालूम होते हैं व जहा वाजार की चौपट शोभायमान होरही है और जिस मथुरापुरी में रोगकरके रहित शूरवीर पुरुष हे और जिस पुरीमें वहुत से हाथी व घोडे व रथोंका समूह है ५६ और वह अर्द्धचन्द्राकार वनीहुई और यमुनाकेतीर करके शोभितहै व जिसमें वहुत सुन्दर व्यवहारी पुरुषोंकी दूकान है और रत्नों के खजाने करके गर्वित है ६० व जहा अच्छीखेती उपजे ऐसे खेत हैं व वर्षासमय इन्द्र वर्षताहै और वह नवीन नारियों करके मुदित मालूम होती है ६१ इसप्रकार प्रकाशवाली तिसपुरीमें भोजकुलको वढानेवाला राजाशूरसेन होताभया ६२ व हे विष्णो तिस शूरसेनके उग्रसेन नामवाला पुत्रहै और तिस उग्रसेन के जो कि आपने तारकामय युद्ध में माराथा ६३ वह कालनेमि नाम वाला दैत्य कसनामवाला व भोजवशको वढानेवालाहै ६४ व पृथ्वीकेविषे राजा ऐसे निख्यातहैं व सिंहके समान पराक्रमवालाहै राजाओं को भय करनेवालाहै व घोरहै व तिससे सव राजा भयमानते हैं ६५ व सव जीवोंको भय देनेवालाहै व श्रेष्ठ मार्गसे वाहर निकला हुवा है व दारुण अभिनिवेश करके तथा दारुण शरीरके ६६ अभिमान करके युक्तहै व तिसी अभिमान करके प्रजाके रोम खड़े करदेता है व राजधर्म में युक्त नहीं है व कुछ अपने पक्षवाले पुरुषों कोभी सुख नहीं देताहै ६७ व अपने राज्यमें भी प्रिय नहीं करताहै सदा कतलेने में रुचि रखताहै व हे भगवन् जो कि आपने युद्ध में माराथा वह कस इसप्रकार उत्पन्न होरहा है ६८ और वह दैत्य आसुरी आत्मा करके सव जीवोंको वाधा देता है व जो पहिले हयनिकान्त नामवालादैत्य आपनेमाराथा वह हयग्रीव नामवाला

उत्पन्न होरहा है ६६ व केशी नामवाला तथा कंस के पीछे जन्माहुवा हयनाम वाला उत्पन्न होरहाहै और वह दुष्ट हिंसनेमें बड़ा चतुरहै व सिंहरूपहै व किसीसे नहीं रुकता है ७० और वह अकेला वृन्दावनमें बसताहै व मनुष्योंके मांसको भक्षण करलेताहै व जो कि बलिराजाका पुत्र अरिष्टनामवाला था वह ऊंचे कन्धेवाला बैलके रूपको धारण किये है ७१ व गौओंका वैरी बनरहा है व इच्छा पूर्वक विचरता है व जो कि दितिका पुत्र दानवों में श्रेष्ठ रिष्टनामवाला था ७२ वह दैत्य हाथी के रूपको धारण कियेहुये है और वह कंसका वाहन है व जो कि पहले लम्ब नामवाला दैत्यथा ७३ वह अब दैत्यों में दारुणरूप प्रलम्बनाम है व भाण्डीर वटके आश्रय बैठा रहता है व जो कि खरनामवाला था वह अब धेनुकनामवाला प्रसिद्ध है ७४ और वह तालवन में जाके चरताहै व प्रजा को दुःखदेताहै व जो कि पहले दानवों में श्रेष्ठ वाराह व किशोरनामवाले दैत्यथे ७५ वे दोनों रङ्ग अखाड़ा में चाणूर व मुष्टिकनामवाले दैत्य होरहे हैं व जो कि पहले यही मय व तारकनामवाले भौमासुर व नरकासुर के पुरमेंभी रत रहेथे ७६ नारदजी कहते हैं कि हे विष्णो इसप्रकार जो ये दैत्य तुमने पहले मारे थे ७७ वे सब मानुषी शरीर को धारण कियेहुये पृथ्वी के मनुष्यों को बाधा देरहे हैं व वे सब तेरी कथाके वैरी हैं व तेरे भक्त मनुष्यों को मारते हैं ७८ सो हे भगवन् तेरे प्रसादसे इन दानवोंका क्षयहोगा व वे स्वर्ग मेंभी तेरेसे डरते हैं व समुद्रमें भी तेरेही से डरते हैं ७९ व पृथ्वी मेंभी तेरेही से डरते हैं व अन्यसे कभीभी नहीं डरते हैं ८० व हे श्रीधर खोटा वृत्तान्तवाला व तेरेसे मराहुआ व स्वर्गसे गिरा हुआ ऐसे दैत्यकी गति पृथ्वी है व जो पृथ्वी में मनुष्य शरीरधारी मरताहै तिस का स्वर्ग में गमन होताहै ८१ व हे भगवन् तुम्हारे जागनेहुये सुलभहै सो इस वास्ते आप पृथ्वीतल में जाओ व हमभी जाते हैं ८२ व दानवों के विनाश के वास्ते आत्मा करके अपनी आत्मा को मैं रचूंहू व हे भगवन् आप देवतों को दृश्य व अदृश्यमूर्त्ति बनाओ ८३ फिर तिन्होंमें वैसे रचेहुये देखते पृथ्वीतलमें होवेंगे व हे भगवन् आप के अवतार लेने में वह क्रम नहीं रहेगा ८४ कि जो कार्य्यके वास्ते निषेध करताहै व जिसके वास्ते यह पृथ्वी आईथी व हे भगवन् तुम भारतकुलमें कार्य्यके गुरुहो व आपही भारतखण्डके नेत्रहो व आपही रक्षकहो ८५ सो इसवास्ते आप पृथ्वी में जाओ व तिन दानवों को मारो ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांनारदवाक्येपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं इसप्रकार नारदमुनि के वचन सुनके हँसतेहुए देवताओंके प्रभु ईश्वर भगवान् ऐसा प्रति वचन कहनेलगे १ हे नारद त्रिलोकीके वास्ते जो कुछ मुझसे तू कहताहै तिस सम्यक् वृत्तान्तका तू उत्तरसुन २ और जो दानव पृथ्वी में मनुष्य शरीर धारणकिये हैं वे सब मुझको जानलिये हैं व जिन दैत्यों के आश्रयहोके जो कंस दैत्य शरीरको फुलाताहै तिसको भी जानताहूं ३ और उग्रसेनक पुत्र कस व घोडे के रूपवाला केशी ४ और कुवलयापीडनाम वाला हाथी और चाणूर, मुष्टिक ये दोनों मल्ल व बैल के रूपवाला अरिष्ट दैत्य ५ खर प्रलम्ब इन सबों को मैं जानताहूं व भगवान् कहते हैं कि हे विप्र बलिकी पुत्री वह पूतना भी मुझको जानलई है ६ और जो कि गरुड के भयसे यमुनाके हृदयमें स्थितहै तिस कालीनाग को भी मैं जानूंहूं ७ और जो सबराजाओं के मस्तकपर स्थित रहाहै तिस जरासंधको भी जानताहूं और जो पहले जोतिषपुरमें नरकासुरथा व अब मनुष्य लोकमें मनुष्य शरीर धारणकिये है तिसको अच्छी तरह जानताहूं ८ व जो शोणितपुर में हजार बाहुओंवाला बाणासुर था तिस मनुष्य शरीर धारण कियेहुये को भी जानताहूं ९ व हजारों भारोंसे युक्त और देवताओंसे भी दुर्जय भारमेंयुक्त और मेरे विषे आसक्त और बडेभारसे युक्त ऐसी पृथ्वी भी जानलई है १० व जिसप्रकार इन राजाओंका क्षय होवे सो भी जानलियाहै व पृथ्वी लोकका क्षय और स्वर्गलोक की सत्क्रिया जानीजाती है ११ व तिन कठोर देहवाले व खोटी वृत्तिमें वर्त्तनेवालों का योग व अपने भक्तोंका योगदेऊंगा १२ व मैं मनुष्य लोकमें मनुष्य भावको प्राप्तहुआ तिन सब कंस आदिकों का भी वधकरूंगा १३ और जिस २ विधान करके जो शांतिको प्राप्तहोवेगा वही २ विधान मैं करूंगा १४ व इन सब देवताओंके शत्रु युद्धमें मारनेही चाहिये क्योंकि जिन देवताओंको पृथ्वी के वास्ते आपने अंश का अवतार कियाहै १५ और हे नारद देवते, ऋषि, गन्धर्व इनको मेरीही मति के अनुसार किया है व मुझको यह सब पहलेही निश्चय करलिया है १६ ऐसे नारद के प्रति कहके भगवान् ब्रह्मा के प्रति ऐसे कहते हैं हे ब्रह्मन् जिस देशमें अच्छीतरह जन्माहुआ मैं अपने वेषकरके तिन सबोंको मारूं तहांमेरा विधान

करो १७ ब्रह्माजी कहते हैं हे नारायण वह सिद्ध उपायसुनो कि जो तुम्हारेपिता व माता होवेंगे १८ व हे महाबाहो जिसजगह जन्मेहुये तुम यादवों के महान् सम्पूर्ण वंशको धारण करोगे १६ व पश्चात् तिन दैत्यों को मारके व वंशको वढाके फिर मर्यादाको आप स्थापित करोगे सो मुझसे सुनो २० पहिले कश्यप जी वरुण देवताकी महान् यज्ञमें दूधदेनेवाली गौओंको हरताभया २१ पश्चात् अदिति और सुरभीनामवाली दो कश्यपकी स्त्री तिस वरुणको उलटी देतीहुई गौओंको नहीं देनेदेतीभई २२ पीछे वरुणदेव मुझको प्राप्तहोके और शिरसे न- मस्कारकरके यह कहताभया हे भगवन् मेरी गौ गुरु कश्यपजीने हरलई २३ व मेरे गुरु कश्यपजी अपने कार्यकरके भी तिन गौओं को नहीं देते हैं क्योंकि अदिति व सुरभी इन दोनों स्त्रियों का कहामानते हैं २४ व हे प्रभो वे मेरीगौयें अक्षय हैं दिव्य हैं व इच्छापूर्वक दोह देनेवाली हैं व अपने तेजकरके रक्षितहुई सागरपर्य्यंत चरती हैं २५ सो हे भगवन् तिन गौओं को कश्यप के विना अ- न्यजन हटकने को भी कौन समर्थ है और वे गौयें अक्षय और देवताओं के अमृतके समान दूधदेती हैं २६ सो हे ब्रह्मन् समर्थ अथवा गुरु अथवा इतरजन ये सब तुमको दण्ड देनेलायक हैं और तुम हमारी परमगतिहो २७ व जो यदि कार्यको नहीं जानें ऐसे समर्थों को तुम दण्ड नहीं देवोगे तो संसारके धर्मरूप पुल टूटजावेंगे २८ और हे ब्रह्मन् आपको करनेलायकहो सो करो परन्तु मेरी गौयें दिवादेनो फिर मैं सागरकोजाऊं २६ और अविनाशी तत्त्वरूप वे गौयें मेरी आत्माहैं और हे ब्रह्मन् तेरे विषे प्रवृत्त पुरुषों को गौ और ब्राह्मणों को एकही मानाहै ३० सो इसवास्ते पहले गौओं की रक्षाकरनी चाहिये फिर रक्षितहुई गौ ब्राह्मणोंकी रक्षाकरती पश्चात गौ और ब्राह्मणोंकी रक्षाहोनेसे सब जगत्की रक्षा होजाती है ३१ ब्रह्माजी ऐसे भगवान् के प्रति कहते हैं कि इसप्रकार जब वरुण मुझसे कहने लगा तब गौओं के कारणको जाननेवाला मैं कश्यप को शाप देता भया ३२ कि जिस अंशकरके कश्यप की गौ हरलई है तिसी अंश करके पृथ्वी में जाके गोपहोगा ३३ और जो सुरभी नामवाली और अदिति नाम वाली कश्यप की स्त्री हैं वे भी दोनों तिसी के साथ जातीहुई तिसकी स्त्री हो- वेंगी ३४ व तिनके सग गोपभावकरके प्राप्तहुआ रमणकरेगा सो तिस कश्यपका अंशतेजकरके कश्यपके समान ३५ और वसुदेव इस नामकरके पृथ्वी के विषे

गौओंके बीचमें रहेहै व तहा मथुरापुरीसे नजीकही गोवर्द्धन नामवाला पर्वत है तहा वह कसको कर देनेवाला व गौओंमें अभिरत वसुदेव रहैहै और वे दोनों अदिति और सुरभी नामवाली तिसकी स्त्रीहैं ३६ सोदेवकी और रोहिणीनामसे प्रसिद्धहैं सो हे भगवन् लोकोंके कल्याणके वास्ते तहा आप अवतारलेवो ३७ व तहा तुमको जय आशीर्वाद इन्होंकरके ये देवते वढाते रहैंगे सो तुम अपनी आत्मा करके अपनी आत्माको पृथ्वीतलमें उतारके ३८ और देवकी रोहिणी इनको गर्भकरके प्रसन्नकरो और तहातुम आदिमें गोपाल लक्षणवाले ३९ बालकहुए और आत्माकरके व मायाकरके आत्माको ढकके बैठो जैसे पहिले त्रैविक्रम मन्वन्तरके समयमें हुएथे ४० अर्थात् वामनरूपहोके सब पृथ्वी ग्रहणकी थी व गोपोंकी हजारों कन्याओंसे रमणकरतेहुए पृथ्वी में विचरो और हेविष्णो तुमकरके रक्षितहुई गौ वनोंमें भाजतीहुई ४१ वनमालाकरके परिक्षिप्त तेरेशरीर को देखेंगी सो धन्यहैं और हे विष्णो गोपालोंकी वस्तीमें जब ४२ आप बालकपनेको प्राप्तहोजावोगे तब ससार भी बालकभाव को प्राप्तहोजायगा और तुम्हारे चित्तके वशहुए तुम्हारे भक्त ४३ गौओं के विषे गोपहुए निरन्तर तुम्हारे अनुचरहोवेंगे और वनमें गौचरावतेहुए और गौओं के स्थान में भाजतेहुए ४४ व यमुनाके तीरमें गोते मारतेहुए बहुत प्रीतिको प्राप्तहोवेंगे और वसुदेव का भी जीवना श्रेष्ठहोवेगा ४५ क्योंकि जिसने आप तात अर्थात् बाप कहोगे अथवा कश्यपऋषिके विना आपकिसके पुत्र वनतेहो ४६ और हेविष्णो अदिति विना तुमको धारणकरनेमें कौन समर्थ है सो हे भगवन् अपने योगसे विजयके वास्ते तुम जावो और हमभी अपने २ स्थानों को जाते हैं ४७ वैशम्पायनजी कहते हैं सो भगवान् देवतों को स्वर्ग में आज्ञादेके और क्षीर समुद्रके उत्तर दिशामें अपने देशको जातेभये ४८ तहा एक पार्वती नामवाली सुमेरु पर्व्वतकी दुर्गम गुफा है वह पर्वणियों में देवताओं को नित्य पूजती है तहा भगवान् जाके अपने पुराने शरीरको स्थापित करतेभये और अपनी आत्माको वसुदेव के घरमें योजनकरतेभये ४९।५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांविनामदवारेषपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

अथ हरिवंशान्तर्गत विष्णु पर्व्वको कहते हैं-वैशम्पायनजी कहनेलगे भगवान्को पृथ्वी में गयेहुए जानके और देवताओं के अंशोंको पृथ्वीगत जानके कंसके विनाशको कहनेवाला नारद मथुरामें जाताभया १ और वह नारदमुनि स्वर्गसे कूदके आयाहुआ मथुरापुरी के बगीचे में बैठके कंसकेप्रति दूतको भेजताभया २ फिर वह दूतमुनिकाआगमन तिसराजा कंसके प्रति कहताभया और फिर वह कंसमुनिके आगमन को सुनके जल्दही ३ अपनी पुरीसे आताभया फिर वहां आके अतिथिरूप और प्रशंसा करनेलायक और देवताओं के ऋषि और पापोंसे रहित ४ और तेजकरके अग्निके समान आकारवाले और शरीर करके सूर्य के समान कान्तिवाले ऐसे नारदमुनिको कंस देखके स्तुति करता भया और यथाविधिसे पूजा करताभया ५ फिर अग्निके समान आसन बिछाय के तिसपै बैठावताभया पीछे इन्द्रका प्यारा वह मुनि तिस आसनपै बैठके ६ उग्रसेनके पुत्र और परम कोपवाले कंसके प्रति यह कहनेलगा कि हे वीर तुझको विधिसे अन्त्येकर्मसे मेरी पूजाकरी है इसवास्ते मेरा वचन तू सुन ७ व फिर उसी तरह करनाचाहिये नारदमुनि कहते हैं हे कंस मैं स्वर्गलोकमें व ब्रह्मलोकजाता भया ८ और सूर्यका प्यारा और बड़ा ऐसा सुमेरुपर्वत पैभी गयाथा और मुझको नन्दनवनभी देखा और चैत्ररथ नामवाला कुबेरका वनदेखा ६ और देवताओंके संग नदियोंमें स्नानकिया और दिव्यतीन धारावाली ऐसीगंगा देखी १० जोकि स्मरण करनेहीसे सबकेपापोंको नाश करदेती है और मुझको सबतीर्थोंका जल स्पर्शकिया ११ और ब्रह्मऋषियोंके समूहोंकरके सेवित व देव,गंधर्व,अप्सरा इन्होंसे नादित १२ ऐसे ब्रह्माके स्थानको देखताभया सो इसप्रकार देखताहुआ एक समय अपनी वीणाको ग्रहणकियेहुये सुमेरु पर्वतके शिखरपै देवतोंसहित ब्रह्मा की सभाको देखताभया १३ व वहां सफेद पगड़ियांवाले और अनेक प्रकार के रत्नोंके आभूषण पहिनेहुए दिव्य आसनों पै बैठेहुए ऐसे ब्रह्मा आदि देवतोंको देखताभया १४ व वहां ने मुझको ऐसे सलाहकरने सुनेहैं कि अनुचरोंसहित तुम्हारे मारने का उपाय कियाहै १५ व हे कंस जो यह तेरीबहिन देवकी है तिस में जो आठवां गर्भ होगा वह तेरी मृत्युहोगा १६ और वह देवतों का सर्वस्व है

और स्वर्गकी परमगतिहै और देवताओंका परमरहस्यहै वह तेरी मृत्युहोगा १७ और वह परसेभी पर है देवतों का स्वयम्भूहै और तिसकी सव उत्पत्ति तेरेसे कहताहू १८ और वह तेरीमृत्यु निश्चयहै पहले जन्ममें भी उसीको मृत्युकरीथी तू स्मरणकर और हे कंस देवकीके गर्भमारने का यत्नकर १९ व यह मेरी तेरे विषे प्रीतिहै इसीवास्ते मैं यहा आयाहूं और जातू सवकामनाओंको भोग और तेरे मङ्गलहो मैं तो अव जाताहू २० वैशम्पायनजी कहते हैं—ऐसे कहके जव नारद चलागया तव तिसके वाक्यको चिंतवन करताहुआ कसदांतोको खिलाके ऊचा स्वरसे वहुत देरतक हँसताभया २१ और हँसताभया अपने भृत्योंके आगे ऐसे कहताभया कि सवके हास्यका वचन है और नारद निश्चय वुद्धिमान् नहीं २२ क्योंकि मैं इन्द्रकरके सहित देवताओं से युद्धमें तथा शयन करता हुआ तथा मत्त और प्रमत्तहुआ २३ कभी डरनेलायक नहीं हू और जो मैं अपनी भुजाओं करके इस पृथ्वीको क्षोभकरताहू तिस मुझको क्षोभकराने को मनुष्य लोक में कौन है २४ व अव से लेके मैं देवताओं के मार्ग में वर्त्तमान जीवोंका महान् कदनकरूगा २५ अर्थात् हननकरूगा और हयदैत्य, केशी, प्रलम्व, धेनुक, अरिष्ट, वृषभ, पूतना, कालिय २६ इन सवोंको आज्ञादेवो और ये सवदैत्य सपूर्ण पृथ्वी में विचरें और इच्छापूर्वक विचरतेहुए जो हमारे पक्षकेदूषक हें तिन्होंको मारें २७ व इस पृथ्वीकेविषे गर्भस्थजीवोंकी भी गति पिह्चानो क्योंकि नारदको हमने गर्भसेही भयकहा है २८ व हे दैत्यो तुमभी अपनी इच्छापूर्वक सन्देह से रहित विचरो और मैं तुम्हारा मालिकहू इतने देवताओंका कियाहुआ भय तुम को नहीं है २९ वैशपायनजी कहतेहं कि वह क्रीडा करनेवाला मिलेहुए लोकों का भेदकरने में शीलस्वभाववाला भेदकराके प्रीतिको प्राप्तहोताहै ३० व निरंतर खोजकरताहुआ और चचलरूपहुआ और राजाओंमें वैर करावताहुआ इस प्रकार नारदमुनि विचरताहै ३१ और वह कंस इसप्रकार वाणी कहके जलतेहुए चित्तमे अपने मकानमें प्रवेश होताभया ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेविष्णुपर्व्वणिभाषायांनारदागमनंनामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—इसप्रकार वह कंस अपने हितकारक मन्त्रियों को

आज्ञा देताभया कि तुम सब देवकी के गर्भगराने का यत्नकरो १ व पहिलेही गर्भसे लेके सब गर्भोंको मारो क्योंकि शत्रुजडमेंही मारना चाहिये और जिन में कुछ भयहोवे वह अनर्थ होताहै २ व देवकी को रहकोईहुई घरमें रक्खो और विचरतीहुई को कहीं इच्छापूर्व्वक विचरने देवो और गर्भकालमें रक्षाकरनी चाहिये ३ व मेरी स्त्रियों से कहो कि देवकी के पुष्पों के और गर्भकेमहीने गिनती रहैं और जब गर्भका परिणाम होजायगा तब हम जानलेंगे ४ व श्रेष्ठ मेरे हितदायक भृत्योंकरके राति दिन स्त्रियोंकेविषे वसुदेवकी रखवाली करावो ५ व यह सब वृत्तात वर्षों तक स्त्रियोंके आगे नहींकहना और यह मनुष्यों का यत्न मनुष्योंही से सिद्धहोताहै ६ व मेरे सरीखों से दैवभी हननहोजाताहै और कहींमत्र औषध इत्यादिक अनुकूल वस्तुओं से दैवभी उलटा होजाता है ७ वैशम्पायन जी कहते हैं इसप्रकार वह कंस देवकी के गर्भमराने को यत्न करावताभया ८ व नारद से प्रयोजन सुन के भय से सलाह करता भया और ऐसे अरिष्टसहक कंस के यत्नको भगवान् सुन के अन्तर्द्धान हुए चिंतवन करने लगे ६ व यों विचारते कि इन सात देवकी के गर्भों को यह भोजका पुत्र मारेगा और मेरे आठवें गर्भ मे कार्य्य सिद्ध होवेगा १० इसप्रकार विचारते हुए तिन्हों का चित्त पाताललोक में जाताभया और तहां पाताललोक में षड्गर्भ ऐसे नामवाले छः दैत्य हैं ११ और तिनका शरीर योद्धाओं के समान है और अमृत पिये हुये के समानहैं और तिन्होंकी अमर मूर्त्ति है और वे सब कालनेमि राक्षसके पुत्र हैं १२ और वे पहिले हिरण्यकशिपु को त्याग के ब्रह्माकी उपासना करतेभये १३ और तीव्र तपकरनेलगे और जटाओं के मण्डल धारणकरलिये पश्चात् तिन षड्गर्भों के प्रति ब्रह्मा प्रसन्नहोके वरदेतेभये १४ ब्रह्माजी कहनेलगे हे दानवोंमें श्रेष्ठ तुमको मैं तपकरके प्रसन्नकिया सो तुम वरमांगो जोतुम कहोगे सो देऊंगा १५ फिर वे सब एक प्रयोजनवाले ब्रह्माके प्रति यह कहनेभये हे भगवन् जो हमारे पै प्रसन्नभयेहो तो यह वरदान देवो कि १६ देवने महा सर्पादिक शापके देनेवाले परमऋषि इनकरके हम मरें नहीं १७ और यक्ष, गन्धर्वपति, सिद्ध, चारण इन्होंकरके भी हमारा वध नहींहोवे सो यह वरदेवो १८ पश्चात् तिनके प्रति प्रसन्नहुये ब्रह्मा अन्तरात्मा करके यह कहनेभये कि जो आपने कहा है सो सब इसीतरह होवेगा १६ ऐसे षड्गर्भों को वरदेके ब्रह्मा तो स्वर्ग लोकमें चलेगये

पीछे हिरण्यकशिपु क्रोध से वाक्य कहताभया २० तुमने जो मुझ को त्यागके ब्रह्मासे वरलिया है इसवास्ते जावो स्नेह से रहित शत्रुरूप तुमको मैं त्यागताहूं २१ और जो षड्गर्भा ऐसा शब्द तुम्हारे पिताने बडाके कहाहै इस वास्ते वही तुम्हारा गर्भगत तुम को मारेगा २२ और तुम छहू महान्दैत्य देवकी के गर्भ में होवोगे और पश्चात् तुमको कसमारेगा २३ वैशम्पायनजी कहते हैं—पीछे जहां वे असुरथे तहा विष्णु भगवान् जातेभये और तहा वे छ गर्भरूप दैत्य मिलेहुए जलके गर्भ गृह में सोयेथे २४ तिनको विष्णु देखके और सोवतेहुये और गर्भ में संस्थित और कालरूपिणी निद्रा करके सब अन्तर्द्धानहुये के समान होरहे २५ ऐसे तिन दैत्योंके शरीर को विष्णुभगवान् स्वमरूपकरके आवेश करावते भये और प्राणेश्वरोंको निकालके निद्राके वास्ते देतेभये २६ और पश्चात् तिस निद्राको सत्य पराक्रमवाले भगवान् यह कहतेभये हे निद्रे मेरेसे रचीहुई तू देवकीके भवनके समीपजा २७ और इन प्राणेश्वर षड्गर्भोंको ग्रहणकरके देवकी के छ गर्भोंमें यथाक्रमसे योजनकर २८ और पश्चात् ये गर्भ जन्मके धर्मराजके स्थान में पहुचलेंगे और कसकायत्न निष्फल होजायगा और देवकी का श्रम सफल होजायगा २९ तव तेरी प्रसन्नता पृथ्वी में अपने प्रभावके समान में करूंगा जिसकरके सब लोक में देवी होजायगी ३० और पश्चात् सातवा देवकी का गर्भ सौम्यअश होगा और मेरा अग्रज अर्थात् वडाभाई होगा ३१ और वह गर्भ सातवें महीनामें रोहिणी में प्राप्तहोगा ३२ और गर्भके सकर्षण होनेसे वह युवावस्थामें सकर्षण नामवाला होगा और यह मेरा बडाभाई चन्द्रमाके समान दर्शनवाला होगा ३३ और देवकीका यह सातवागर्भ भयसे गिरपडा ऐसे सब कहेंगे और जब मैं आठवा देवकीके गर्भ में आऊगा तव कस यत्न करेगा ३४ और वसुदेव का अनुचर नन्दगोप है तिसकी भार्या यशोदा नामवाली है ३५ तिस विषे हमारे कुल में तू नवागर्भ होगी और कृष्णपक्षकी नवमी के दिन तू जन्मलेवेगी ३६ और मैं अभिजित् योगमें और रात्रिका यौवन अर्द्धरात्रि में सुखपूर्वक गर्भको मोक्षकरूगा अर्थात् जन्मलेऊगा ३७ और हम दोनों आठवें महीने में सग जन्मलेवेंगे जब कि कस हमारी रखवारी करने की तैयारी करने लगेगा तब और आठवें महीने में जन्मलेगे तव कंस गर्भ के व्यत्यास होने से मूढ़ताको प्राप्त होजायगा ३८ और हे देवि जन्मलेने के पश्चात् मैं तो यशोदा

आज्ञा देताभया कि तुम सब देवकी के गर्भमराने का यत्नकरो १ व पहिलेही गर्भसे लेके सब गर्भोंको मारो क्योंकि शत्रुजडसेही मारना चाहिये और जिस में कुछ भयहोवे वह अनर्थ होताहै २ व देवकी को रहकोईहुई घरमें रक्खो और विलब्धहुई को कहीं इच्छापूर्व्वक विचरने देवो और गर्भकालमें रक्षाकरनी चाहिये ३ व मेरी स्त्रियों से कहो कि देवकी के पुष्पों के और गर्भकेमहीने गिनती रहैं और जब गर्भका परिणाम होजायगा तब हम जानलेंगे ४ व श्रेष्ठ मेरे हित दायक भृत्योंकरके राति दिन स्त्रियोंकेविषे वसुदेवकी रखवाली करावो ५ व यह सब वृत्तांत वर्षों तक स्त्रियोंके आगे नहींकहना और यह मनुष्यों का यत्न मनुष्योंही से सिद्धहोताहै ६ व मेरे सरीखों से दैवभी हननहोजाताहै और कहींमंत्र औषध इत्यादिक अनुकूल वस्तुओं से दैवभी उलटा होजाता है ७ वैशम्पायन जी कहते हैं इसप्रकार वह कंस देवकी के गर्भमराने को यत्न करावताभया व नारद से प्रयोजन सुन के भय से सलाह करता भया और ऐसे अरिष्टसज्ञक कंस के यत्नको भगवान् सुन के अन्तर्द्धान हुए चिंतवन करने लगे ८ व य विचारते कि इन सात देवकी के गर्भों को यह भोजका पुत्र मारेगा और मैं आठवें गर्भ से कार्य्य सिद्ध होवेगा १० इसप्रकार विचारते हुए तिन्हों का चि पाताललोक में जाताभया और तहा पाताललोक में षड्गर्भा ऐसे नामवाले छ दैत्य हैं ११ और तिनका शरीर योद्धाओं के समान है और अमृत पिये हुये के समानहै और तिन्होंकी अमर मूर्त्ति है और वे सब कालनेमि राक्षसके पुत्रहैं १२ और वे पहिले हिरण्यकशिपु को त्याग के ब्रह्माकी उपासना करतेभये १३ और तीव्र तपकरनेलगे और जटाओं के मण्डल धारणकरलिये पश्चात् तिन षड्गर्भों के प्रति ब्रह्मा प्रसन्नहोके वरदेतेभये १४ ब्रह्माजी कहनेलगे हे दानवोंमें श्रेष्ठ तुमको मैं तपकरके प्रसन्नकिया सो तुम वरमागो जोतुम कहोगे सो देऊंगा १५ फिर वे सब एक प्रयोजनवाले ब्रह्मा के प्रति यह कहतेभये हे भगवन् जो हमारे पै प्रसन्नभयेहो तो यह वरदान देवो कि १६ देवने महा सर्पादिक शापके देनेवाले परमऋषि इनकरके हम मरें नहीं १७ और यक्ष, गधर्वपति, सिद्ध, चारण इन्होंकरके भी हमारा वध नहींहोवे सो यह वरदेवो १८ पश्चात् तिनके प्रति प्रसन्नहुये ब्रह्मा अन्तरात्मा करके यह कहतेभये कि जो आपने कहा है सो सब इसीतरह होवेगा १९ ऐसे षड्गर्भों को वरदेके ब्रह्मा तो स्वर्ग लोकमें चलेगये

पीछे हिरण्यकशिपु क्रोध से वाक्य कहताभया २० तुमने जो मुझ को त्यागके ब्रह्मासे वरलिया है इसवास्ते जावो स्नेह से रहित शत्रुरूप तुमको मैं त्यागताहूं २१ और जो षड्गर्भा ऐसा शब्द तुम्हारे पिताने बढाके कहाहै इस वास्ते वही तुम्हारा गर्भगत तुम को मारेगा २२ और तुम छहूं महान्दैत्य देवकी के गर्भ में होवोगे और पश्चात् तुमको कंसमारेगा २३ वैशम्पायनजी कहते हैं—पीछे जहां वे असुरथे तहा विष्णु भगवान् जातेभये और तहा वे छ गर्भरूप दैत्य मिलेहुए जलके गर्भ गृह में सोयेथे २४ तिनको विष्णु देखके और सोवतेहुये और गर्भ में संस्थित और कालरूपिणी निद्रा करके सब अन्तर्द्धानहुये के समान होरहे २५ ऐसे तिन दैत्योंके शरीर को विष्णुभगवान् स्वप्नरूपकरके आवेश करावते भये और प्राणेश्वरोंको निकालके निद्राके वास्ते देतेभये २६ और पश्चात् तिस निद्राको सत्य पराक्रमवाले भगवान् यह कहतेभये हे निद्रे मेरेसे रचीहुई तू देवकीके भवनके समीपजा २७ और इन प्राणेश्वर षड्गर्भोंको ग्रहणकरके देवकी के छ गर्भोंमें यथाक्रमसे योजनकर २८ और पश्चात् ये गर्भ जन्मके धर्मराजके स्थान में पहुचलेंगे और कंसकायत्न निष्फल होजायगा और देवकी का श्रम सफल होजायगा २९ तब तेरी प्रसन्नता पृथ्वी में अपने प्रभावके समान मैं करूंगा जिसकरके सब लोक में देवी होजायगी ३० और पश्चात् सातवा देवकी का गर्भ सौम्यअंश होगा और मेरा अग्रज अर्थात् बडाभाई होगा ३१ और वह गर्भ सातवें महीनामें रोहिणी में प्राप्तहोगा ३२ और गर्भके संकर्षण होनेसे वह युवावस्थामें संकर्षण नामवाला होगा और यह मेरा बडाभाई चन्द्रमाके समान दर्शनवाला होगा ३३ और देवकीका यह सातवागर्भ भयसे गिरपडा ऐसे सब कहेंगे और जब में आठवां देवकीके गर्भ में आऊंगा तब कंस यत्न करेगा ३४ और वसुदेव का अनुचर नन्दगोप है तिसकी भार्या यशोदा नामवाली है ३५ तिस विषे हमारे कुल में तू नवागर्भ होगी और कृष्णपक्षकी नवमी के दिन तू जन्मलेवेगी ३६ और मै अभिजित् योगमें और रात्रिका यौवन अर्द्धरात्रि में सुखपूर्वक गर्भको मोक्षकरूंगा अर्थात् जन्मलेऊंगा ३७ और हम दोनों आठवें महीने में संग जन्मलेवेंगे जब कि कंस हमारी रखवारी करने की तैयारी करने लगेगा तब और आठवें महीने में जन्मलेंगे तब कंस गर्भ के व्यत्यास होने से मूढताको प्राप्त होजायगा ३८ और हे देवि जन्मलेने के पश्चात् मै तो यशोदा

के पास चलाजाऊंगा और तू देवकी को प्राप्तहोगी पीछे तुझ को कंस पांवोंकी तरफसे पकड़के शिलापै पटकेगा पश्चात् पटकीहुई तू आकाशमें स्थित होवेगी ३६ और मेरी छवि के समान कृष्णाहोगी और बलदेवके समान मुखवाली होवेगी और बड़ी बाहुओं को धारण करतीहुई और आकाश में मेरी बाहुओंके समान बाहुओंवाली हुई ४० और तीन शिखावाली शूलको धारणकरेगी और सुवर्णकी मूठवाली खड्ग और मदिराका पूर्णपात्र ४१ श्रेष्ठकमल इन्होंको धारण करेगी और नीलवस्त्रका घाघरा व पीताम्बर वस्त्र शिरपै धारण करेगी व चन्द्रमा के समान सफेद हारको धारण कियेहुये ४२ व दिव्य कुंडलकरके विभूषित कर्ण वाली व चन्द्रमाके समान मुखवाली ४३ व विचित्र मुकुटकरके व केशवधकरके शोभित और सर्पके समान भयङ्कर भुजाओंकरके दशोंदिशाको डरातीहुई ४४ ऐसे रूपको तू धारणकरेगी व मोरकेसमान नीली ध्वजाकरके शोभित व मोरकी चन्द्रिका बाजूबन्द से शोभित ४५ व जीवोंके समूहकरके सकीर्णहुई व मेरे मत के अनुसार वर्त्ततीहुई ऐसी तू कुमार अवस्थाको प्राप्तहोके स्वर्गलोक में चली जायगी ४६ तहां तुझको सौ नेत्रोंवाला इन्द्र देखके मेरेसे रचाकर्म करके व दिव्य अभिषेक करके देवताओंके संग योजनकरेगा ४७ व तहां तुझको बहिन बनाने केवास्ते वह इन्द्र ग्रहणकरेगा व कुशिकगोत्र होनेसे तू कौशिकी नामवाली होवेगी ४८ व फिर तेरास्थान वह इन्द्र पर्वतों में श्रेष्ठ विन्ध्याचल पर्वतपै करेगा पश्चात् तू हजारों स्थानोंकरके पृथ्वीकी शोभा करेगी ४९ व तिस पर्वतपै शुम्भ निशुम्भ इननामोंवाले दो दैत्य अनुचरोंकरके सहित मुझको मनमें स्मरणकरके मारेगी ५० व त्रिलोकी में विचरनेवाली तू सत्य उपचारकरके वर्तेगी व हे महाभागे तू वर देनेवाली व काम रूपिणी होवेगी ५१ व तू जीवों करके यात्रा के अनुसार पूजित होवेगी और मांस बलीकी तू प्यारी बनेगी और नवमी तिथिके दिन तू पशुक्रियाकी पूजाको प्राप्तहोवेगी ५२ और जो मेरे प्रभावके जाननेवाले मनुष्य तुझको प्रणाम करेंगे तिनको पुत्रका अथवा धनका कछुभी दुर्लभ नहीं है ५३ और खोटे मार्गमें चलतेहुये और महासमुद्रमें डूबतेहुये और चोरोंकरके रोकेहुये ऐसे मनुष्योंकी तू परमगति है ५४ और जो तुझको इस स्तोत्रकरके भक्तिकरके प्रणाम करेंगे तिनका मैं नाश नहीं करूंगा और वह मुझसे नहीं मांगेंगे ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वणिभाषायामार्याकरणेनिद्रासोपदेशोना
नामाष्टपंचाशत्तमोऽध्याय ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—अब हम आर्य्यानामवाले स्तोत्रको कहेंगे जो कि पहले ऋषियों ने कहा है और मैं त्रिभुवन की ईश्वरी नारायणी देवीको नमस्कार करताहू १ स्तोत्र—तू सिद्धि है और लक्ष्मी है धृति है कीर्त्तिहै लज्जा है विद्याहै सन्नतिहै मतिहै सन्ध्याहै रात्रिहै प्रभाहै निद्राहै और तूहीकालकी रात्रि है २ आर्य्या अर्थात् श्रेष्ठहै कात्यायनी है देवी है कौशिकी है ब्रह्मचारिणी है व सिद्धिसेनकी जननी है और उग्रचारी है और महान् तपकरनेवाली है ३ जयाहै विजयाहै तुष्टिहै पुष्टिहै क्षमाहै दयाहै और धर्म्मरायकी बड़ी बहिनहै और नीले वस्त्रको धारण करनेवाली है ४ व बहुत रूपोंवाली है विरूपवर्णी है और अनेक प्रकारके रूप करनेवाली है और विरूप नेत्रोंवालीहै और विशाल नेत्रोंवाली है और भक्तोंकी रक्षा करनेवाली है ५ व हे महादेवि घोरपर्वतके अग्रभागमें और नदियोंमें और गुफाओंमें और वनों में बगेचों में तू बसतीहै ६ व शबरजातिके म्लेच्छ व बर्बर जातिके म्लेच्छ और पुलिन्दजातिके म्लेच्छ इन्होंकरके पूजित है और मोरके पखोंकी ध्वजावाली है और तू सबलोकोंकेविचरती है ७ व मुरगे, बकरे,मेंढे,सिंह, भेड़े इन्होंकरके तू युक्त रहती है और घण्टे शब्दोंसे बहुलहुई तू सदा विन्ध्याचलपर्वतपे बसती है ८ व त्रिशूल,पट्टिश,अस्त्र विशेष इन्होंको धारण करती है और चन्द्रमा सूर्य्य इन्होंकी ध्वजावाली है और कृष्णपक्षमें तेरी नवमी तिथि है और शुक्लपक्षमें एकादशी है ९ व बलदेवकी भगिनी है और रात्री है और कलहकी प्यारी है और तू सब जीवोंका वासहै व निष्ठाहै और परमगतिहै १० व हे देवि तू नन्दगोप की पुत्री है और किसीसे जीती नहीं जातीहै और पुराने वस्त्रोंवाली है और श्रेष्ठवस्त्रोंवाली है और भ्रान्ति है और तूही सन्ध्याहै ११ व मिलेहुये केशोंवाली है और सबकी मृत्युहै और मदिरा मांस इनकी बलिकी प्यारी है और लक्ष्मी है और अलक्ष्मी रूपकरके दानवोंका बध करतीहै १२ और माविनी है और वेदों की माताहै और सज्जनोंकी मानाहै और अन्तर्वेदियोंमें यज्ञों की और पुरोहितों की दक्षिणा है १३ और ऋषियों की धर्मबुद्धि है और देवताओं की तू अदिति है और खेती करनेवालों की तू हलकीपनी है और जीवोंकी तू पृथ्वीरूपहै १४ और हे देवि यात्रा की तू सिद्धिहै और समुद्र की

वेलाहै और यक्षों में प्रथम यक्षी है और सर्पों में तू सुरसाहै १५ और कन्याओंमें तू ब्रह्मचर्या है और स्त्रियों के बीचमें तू सौभाग्यवती है और ब्रह्मवादिनी है आर शुभदीक्षा और परमाहै १६ और ताराग‌णोंकी तू प्रभाहै और नक्षत्रों के बीचमें तू रोहिणी और राजद्वारमें किलाआदिकों में नदियों में युद्धमें इनसवों में भी तूही है १७ और पूर्णचन्द्रमाके विषे तू पौर्णिमाहै और चर्मों के वस्त्रको तू धारण करेहै और वल्मीकिऋषि के विषे तू सरस्वती है और द्वैपायन अर्थात् वेदव्यास विषे तू स्मृति १८ और अन्य ऋषियों में तू धर्मबुद्धि है और मनुष्यों में तू मानसीदेवी हैऔर सब जीवोंकरके सुरादेवी ऐसी तू स्तुति की जाती है १९ और इन्द्रकी तू सुन्दर दृष्टि है सहस्रनयनाहै और तपस्वियोंकी तू देवी है और अग्निहोत्रियों केविषे तू अरणी है २० सब जीवों में क्षुधारूप है और देवताओं में तृप्ति है स्वाहाहै तुष्टि है धृति है और वसुओं में तू वसुमती है २१ व मनुष्यों के आशारूप है और कृतकर्मवाले मनुष्यों के तुष्टि है और दिशा, विदिशा अग्निकी शिखा, भी २२ शकुनी, पूतना, दारुण रेवती ये भी सब तूही है और सब जीवों के विषे तूनिद्राहै मोहिनी है क्षत्रियाहै २३ व विद्याओं के बीचमें तू ब्रह्मविद्या है और ओंकाररूप है वषट्कारा है और पुरातन ऋषियों ने तुझ को स्त्रियों के विषे पार्वतीकही है २४ व एक भर्त्तावाली अर्थात् पतिव्रता है ऐसे ब्रह्माका वचनहै और विवाद करनेवाले पुरुषों में तू भेदरूपहै और तूही इन्द्राणी सुनीजाती है २५ व तेरेकरके यह विश्व स्थावर और जङ्गम व्याप्त होरहाहै और सब युद्धों में सबप्रकार कीअग्नि प्रज्वलित में और नदी के तीर विषे चोरों में वनमें गुफामें प्रवासमें राजाके बन्धमें शत्रुओं के मारने में २६ प्राणों के नाश में इन सबों में तुही रक्षाहै इसमें सन्देह नहीं और हे देवि तेरे विषे मेराहृदयहो और तेरे विषे मेरामन हो औरमेरीबुद्धि हो २७ व हे देवि सब पापों से रक्षाकर यह देवीका स्तोत्र पवित्र है और इतिहाससे युक्तहै २८ और जो इसको प्रातः काल उठके और पवित्रहोकेऔर पवित्रमनहोके पढ़े वह तीन महीनों में मनके विचारे फलको प्राप्तहोवे २९ और जो छ महीनोंतक इसका पाठकरेगा वह भी इच्छाफलको प्राप्तहोवेगा औरजो नवमहीनेतक तेराअर्चन करेंगे वे दिव्यदृष्टि वाले होजावेंगे ३० और एकवर्षतक तेरापूजन करने से कामनासहित सिद्धि होजायगी और यह स्तोत्र सत्य है और ब्रह्मचर्य्य रूपहै ऐसा वेदव्यासजी का

वचनहैं ३१ व मनुष्योंका वध, घोरवध, पुत्रनाश, धनक्षय, व्याधि, मृत्यु, भय इन सबों को तू पूजितहुई शांत करेगी ३२ व तिस कंसको मोह के अकेली तू इस जगत् को भोगेगी और मैं भी अपनी वृत्ति को गौओं के विषे गोपों की तरह विधान करूंगा ३३ व अपनी वृद्धि के वास्ते कंस सेल्ह को करूंगा। इसप्रकार तिस योगनिद्राके प्रति कहके वह ईश्वर अंतर्द्धान होतेभये ३४ और वह माया भी तिस को नमस्कार करके और यही करूंगी ऐसा निश्चय करती भई ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायाम्बसगर्भविधानेआर्यास्तवेऊनषष्टितमोऽध्याय ५९॥

साठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं देवताओंके समानहुई देवकी गर्भविधानहोनेके बाद यथावत् कहेहुये तिन सातगर्भों को धारण करतीभई १ और पश्चात् उपजेहुये छःगर्भोंको कंस शिलापै फट करके मारताभया और जब सातवांगर्भ प्राप्तभया तब वह योगमाया रोहिणी के विषे प्राप्त करतीभई २ और वह देवकी अर्द्धरात्री के विषे तिस सातवें गर्भ को रजस्वलाहो के गेरतीभई और निद्राकरके आविष्टहुई वह देवकी पृथ्वीतलमें गिरतीभई ३ और वह रोहिणी तिस गर्भको स्वप्नकीतरह देखके और अपने गर्भ में धारण करतीभई और तिस पहिले अपने गर्भको नहीं देखतीभई दोघड़ीतक व्यथित होतीभई ४ तब चन्द्रमाकी रोहिणी के समान वसुदेवकी तिसरोहिणी को वह निद्रा रात्रीके अँधेरे में ऐसे कहनेलगी ५ कि हे रोहिणी इस गर्भका आकर्षण होने से और आपही फिरने से यह तेरापुत्र संकर्षण नामवालाहोगा ६ और पश्चात् चन्द्रमा की रोहिणी सरीखी वह रोहिणी तिस पुत्रको प्राप्तहोके खुशीहुई अपने घरमें नीचे को मुखकिये प्रवेशहोती भई ७ और पश्चात् वह देवकी जिसी गर्भके मार्गकरके तिस गर्भको धारण करती भई कि जिसके वास्ते कंसने सातगर्भ मारेथे ८ और तिस गर्भको कंस के रक्षा करनेवाले जन यत्नकरके राखतेभये और वे हरिभगवान् तहां गर्भमें इच्छाकरके विचरतेभये ९ और उसीदिन साथ यशोदा भी विष्णु के शरीरमे उपजी योग मायाका गर्भ धारण करतीभई १० और फिर बालक होने के समय आनेके पहिलेही आठवें महीने में वे दोनोंही देवकी और यशोदा साथ गर्भको जनती भई ११ और जिस रात्री को वृष्णिकुल में भगवान् जन्मने भये तिसी रात्रिको

यशोदा भी कन्याको जनतीभई १० और एक तो नन्दगोपकी भार्या और एक वसुदेव की भार्या यशोदा और देवकी इन नामोंवाली ये दोनों तुल्यकाल में गर्भिणी हुईं १३ फिर देवकी के तो विष्णु भगवान् जने और यशोदा के वह कन्याजनी और भगवान् के और तिस योगमायाके जन्म समय आधीरात्री में अभिजित् योगहोताभया १४ और तिस समय कांपतेभये सागर और चलायमान भये पर्वत और जलतीहुई अग्नि ये सब शांत होतेभये १५ और श्रेष्ठ वायु चलतीभई और रजशांतहोगई और तारागणोंका अच्छा प्रकाश होताभया १६ और उस समय अभिजित् नामवाला नक्षत्रथा और जयन्ती नामवाली रात्रीथी और विजय नामवाला मुहूर्त्तथा १७ तिसीसमय अव्यक्त, शाश्वत, कृष्ण, नारायण, हरि, प्रभु ऐसे भगवान् मनुष्यों को मोहतेभये जन्म लेतेभये १८ और तब देवताओं ने नकारे बजाये और प्रकाशसे इन्द्रने पुष्पोंकी वृष्टिकरी १९ और मंगलकरके युक्त वाणियोंसे महर्षि, गन्धर्व, अप्सरा ये सब स्तुति करनेलगे २० और तब भगवान् के जन्म समय सब जगत् प्रसन्न होताभया और देवताओं के सह इन्द्र भगवान्की स्तुति करताभया २१ व वसुदेव रात्रीविषे श्रीवत्स लक्षणवाले भगवान्को जन्मेहुओंको और दिव्य लक्षणोंकरके युक्तको देखके २२ यहवचन कहनेलगे हे भगवन् इस अलौकिक रूपको आप ढकिलेवो और हे देव मैं कंस से डरताहूं इसवास्ते ऐसे कहता हूं और तिस कंसने मेरे पुत्र तेरे बडे भाई मार दिये हैं २३ वैशम्पायनजी कहनेलगे—इसप्रकार वसुदेव के वचन सुनके भगवान् अपने पिताको ऐसे कहके कि मुझको नन्दगोपके घरमें लेचलो पश्चात् अपने रूपको ढकतेभये २४ और फिर ऐसा वचन सुन के पुत्रकी रक्षाकरनेवाला वसुदेव जल्द तिस पुत्रको लेके यशोदाके घरजातेभये २५ और तिससमय यशोदा को मालूमहुए बिना तहां पुत्रको स्थापितकर तिसपुत्रीको ग्रहण करताभया फिर तिसपुत्रीको ग्रहणकर ल्याके देवकीकी शय्यापै रखताभया २६ फिर वे दोनों बालक उलट फेरकरदिये तबवसुदेव कृतार्थ होताभया और अपने स्थानमें निश्चिन्तहोके बैठताभया २७ और पश्चात् तिस वरवर्णिनी कन्याकी खबर उग्रसेन के पुत्र कंसकेवास्ते वसुदेव कहताभया २८ फिर तिसको सुनके रक्षाकरनेवालों करके सहित कंस जल्द घरके दरवाजे पै आताभया और तहां दरवाजे पै आके वह पूछताभया कि क्यापैदाभयाहै जल्ददेवो ऐसेवचनोंकरके झगड़ताभया २९

फिर तिस मकानकी स्त्रिया हाहाशब्द करनेलगीं और दुःखिनी देवकी कंस के प्रति यह कहती भई ३० कि हे कंस तुमने शोभावाले सात गर्भ मेरे मारडाले अब इस कन्याको तू छोडदे क्योंकि यह कन्या तो मरी हुई के समान तुमको समझनी चाहिये ३१ और फिर तिस कन्याको कंसदेखके आनन्दसे युक्तहुआ हाथसे खोसताभया ३२ और वृथा मतिवाला वह कंस यह कहनेलगा क्या यह मरी हुई उपजी है–फिर गर्भ के शयन से क्लिष्टहुई और गर्भ के पानी से भीजे हुए बालोंवाली ३३ और पृथ्वी के समान ऐसीकन्या कंसके आगे पृथ्वी पै गेर दई पश्चात् तिस कन्याको कंस पैरों में दाब और कंपाके जल्दशिलापै पटकता भया ३४ फिर वह शिलापै पटके पीडितहुई तिस गर्भके शरीरको त्यागके स्वर्ग लोकमें ऊपरको चढतीभई ३५ और पश्चात् एकबार आकाशमें स्थितहोके केशोंको खिलाये और दिव्यमाला और चन्दनसे युक्त ३६ और देवताओं करके स्तुत ऐसी वह कन्या होतीभई और नीला और पीतवस्त्र को धारण किये हुए और हाथीके मस्तकके समान कुचाओंको धारणकिये ३७ और रथके निस्तीर्ण के समान पृष्ठभाग और चन्द्रमा के समान मुख और बिजली के समान कांति और उदयहोते सूर्यके समान नेत्र ३८ ऐसा अपने रूपको धारण करतीभई और सन्ध्या समयके मेघकेसमान शब्द करतीभई और तिसरात्री के अँधेरे में सम्पूर्ण भूतगणों से युक्तहुई ३९ और नृत्य करतीभई और हँसतीभई और विपरीत प्रकाश करतीभई भयङ्कररूपको धारणकर आकाश में स्थितहोतीभई और उत्तम मदिराको पीवतीभई ४० और हँसतीभई और तिस महाक्रूरको क्रोधमें आईहुई यह कहने लगी–हे कंस तुझ को अपनी आत्माके वास्ते जो जल्द शिलापै पटकके मैं मारीहू ४१ इसवास्ते तेरे अन्तकाल में तेरा शत्रुसे खींचाहुआ तेरी देहको मे अपने हाथोंसे फाडके ४२ तेरा गरम २ रुधिर पीऊंगी ऐसे वह देवी वचन कहके यथेष्ट मार्गकरके ४३ आकाशमें विचरतीभई और वह तहां वृष्णिकुलके घरों में ईश्वरकी आज्ञासे पुत्रकी तरह पाल्यमान पूजितहुई बढती भई ४४ और पश्चात् देखते यादवों को ऐसे कहतेभये कि इसको तुम प्रजापति के अंगसे उपजी जानो ४५ और इस योगकन्याको भगवान्की रक्षाके वास्ते अनेक अंशोंसे उपजी जानो और पश्चात् ऐसेजानेहुए श्रेष्ठ मनवाले यादव तिस का पूजन करतेभये कि जिस कृष्ण शरीरवाली देवीने कृष्णकी रक्षाकी ४६

और फिर तिस देवी के चले गये के पीछे कंस तिसको अपनी मृत्यु मानता भया और पीछे लज्जित हुआ देवकी के प्रति ऐसे कहताभया ४७ कंस कहने लगा—हे पूज्य बहिन मुझ को पतन किया और तेरे गर्भ मारे परन्तु मेरी तो मृत्यु कहीं अन्यही उपस्थितहै ४८ और मुझको नीचपनेसे पतनकिया कि स्व जनविषे प्रहारकिया—और मैं पुरुपार्थ करके दैवको नहीं जानताभया ४९ और इस गर्भगत चिन्ताको त्याग और पुत्रके सन्ताप को त्यागि और तिन पुत्रों के कालके विषयमें मैं तो हेतुहौं ५० और मनुष्योंका काल शत्रुहै और कालही वि कार करनेवालाहै और सब कुछ प्राप्तकरता है परन्तु मेरे सरीखे तिसमें हेतु हो जातेहैं ५१ और हे देवि भाग्यके अनुसार उपद्रव आते हैं और यह कष्ट है यह मेरा शत्रु है और मैं कर्त्ताहूं ऐसे यह जीनमान रहा है ५२ सो तू पुत्रसे उपजी चिंताको मतकरे और विलाप,शोकको त्याग ऐसे निरोपकर मनुष्योंकी उत्पत्ति होती है और कालकी स्थिति नहीं होती हैं ५३ और हे देवकी पुत्रकी तरह म स्तकसे तेरे पैरोंमें मैं गिरताहू सो मेरे विषे उपजे रोपको तू त्याग और तेरेवि अपनी खोटी कृतिको मैं जानताहू ५४ फिर ऐसे कहतेहुए तिसकंसको आशुवं करके पूर्ण मुखवाली और दीना और अपने पति को देखती भई ऐसी देवकी वचन कहतीभई ५५ और हे पुत्र उठ खडाहो ऐसे माताकी तरह कहनेलगी ५ देवकी कहती हैं हे पुत्र मेरेआगे कालरूपी तुझने जो गर्भमारे तिनका कारण तुझको नहीं मानूहू किंतु अपने कर्त्तव्यको यहा कारण मानतीहू ५७ और म स्तककरके मेरे पैरोंमें पडाहुआ और अपने कर्म्मकी निन्दा करता हुआ ५८ ऐसे तेरेमे अपने गर्भ का नाश मुझको सहनाही चाहिये और गर्भ मे अथवा बालक अवस्था में अथवा युवा अवस्था में अथवा वृद्ध अवस्था में मृत्यु किसी से निवृत्त नहीं होती है ५९ और यह सब काल का किया है और इसका हेतु तूहै और बिना जने बालकका दर्शन नहीं है इसीतरह मरने के पीछे भी दर्शन नहीं है ६० और जन्माहुआ भी बिना जन्मेको अर्थात् मरनेको प्राप्त विधाताके वश से होजाता है इसवास्ते हे पुत्र तू जा और मेरे शोक का कारण तेरे विषे नहीं है ६१ व मृत्युकरके अपहत होने में पहिले शेप हेतुवर्त्तता है क्योंकि ब्रह्मा करके पूर्व्वभाग्य से प्रजा की रचना कीजाती है ६२ व माता पिताके कार्य्य के वास्ते जन्मलेके उपजताहै और इसप्रकार कंस देवकीके वचनको सुनके अपने

स्थान में प्रवेश होताभया ६३ व फिर वहा कंस जलतेहुए चित्त से अपने घर में प्रवेश होके और अपने कृत्यके निष्फल होने के पश्चात् दीन और बहुतसा उदास होताभया ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांश्रीकृष्णजन्मनिषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे–वसुदेव पहिलेही चन्द्रमासेभी अधिककांतिवाला पुत्र जननेवाली रोहिणी को सुनताभया १ फिर वह वसुदेव जल्दही नन्दगोप को प्राप्तहोके शुभवाणी करके कहनेलगा कि हे नन्दगोप इस यशोदा के संग एकान्तस्थान व्रजमें तू जा २ और तहां इन दोनों वालकोंको लेजाके पश्चात् जातकर्मादि गुणोंसे युक्त करवा और हे प्रिय तहा इन वालकों को सुखसे वढा ३।४ व तहा व्रजमें रोहिणी के सुत मेरे पुत्रकी रक्षाकर क्योंकि फिर में पितृपक्ष में और पुत्रवालों के पक्षमें वाच्यहोजाऊंगा ५ व जो कि मैं एक पुत्रकाभी मुख नहीं देखूहूं इस वास्ते वुद्धिवाले और श्रेष्ठकी भी मेरी वुद्धि हरीजाती है ६ और इस निर्दयी कंससे वालक के वधमें मुझको भयहै और हे नन्दगोप जिसतरह मेरे पुत्र रोहिणेयकी रक्षाहो ७ तिसीप्रकार तत्त्वके जाननेवाला तू कर क्योंकि संसारमें बहुतसे विघ्नहैं और वालकों को दुःख देते हैं ८ सो वह वड़ा मेरापुत्र व यह छोटा तेरा पुत्र इन दोनोंको एकसा नामकरके तू सुखसे देख ९ व हे नन्द गोप जिसप्रकार वढतेहुए ये दोनों समान अवस्थावाले शोभितहुए तिस गो-व्रजमेंरहैं तिसप्रकार तू कर और हे नन्दगोप वालकपने में सब क्रीडामें रहते हैं १० व वालकपनेही में मनुष्य मोहको प्राप्तहोता है और वालकपनेही में मनुष्य मूर्खपना में रहताहै इसवास्ते वालक की विशेषकर रक्षाकरनी चाहिये ११ और वृन्दावनमें गौओं का घोष कदाचित् नहीं करना चाहिये क्योंकि तहा पापी केशी दैत्य का भयहै १२ व बिच्छू, सर्प, कीट अन्य पक्षी गौओं के ठानमें गौ इन्द्रों से इन दोनों वालकों की रक्षाकरनी चाहिये १३ व हे नन्दगोप रात्री तो चलीगई है सो अपने गाड़ों से युक्तहुआ जल्द गमनकर क्योंकि ये शकुन के पक्षी दहिने हाथ और वायेंहाथ विषे अच्छा शकुन करते हैं १४ व पश्चात् यह नन्दगोप यशोदा के संग आनन्द से युक्तहुआ अगवाणी पै चढताभया और

कुमार अवस्थाके मनुष्यों के कन्धे पै युक्त ऐसे पीनसमें तिन बालकोंको बैठाता भया १५ व पश्चात् बहुत सुन्दर और यमुनाके किनारे १६ व शीतल पवन से युक्त और बहुतसे छिड़कावसे युक्त ऐसा मार्ग्ग करके गमन करताभया १७ फिर श्रेष्ठ देशमें जाके गोवर्द्धन पर्व्वतके समीप और यमुनाके किनारे से युक्त और ठण्ढी वायुसेयुक्त और श्वपद जीवोंसेरहित और रम्य और लता गुल्म इन्होंसे युक्त व गो तृण स्यन्दती इन्हों करके शोभित १८ व गौओंका जिसमें एकसा प्रचार व ममान जिसमें तीर्थ व जलों के स्थान ऐसे वनको देख तिसमें स्थित करतेभये और जिस वनमें बैलोंके कन्धों से घसेहुये वृक्षहैं १९ व बोलतेहुये मास के खानेवाले जीव और मासकी इच्छाकरनेवाले भिकरे और वसा मेद इन्होंको खानेवाले गीदड मृग सिंह इन सबोंकरके वह वन युक्तहै २० व शार्दूलके शब्द करकेयुक्त और स्वाद्ु वृक्षोंके फलकरकेयुक्तहै व बहुत घाससेयुक्त ऐसा वह वनहै २१ व तिस वनमें गौओंका समूह और गौओंका श्रेष्ठ शब्द होरहा और गोपों की नारियों करकेयुक्त होरहा और जहा बछड़ोंके बोलनेका शब्द होरहा २२ व चारोंतरफ गाड़ोंके समूहसे गोलआर्त करलिया और तहा काटोंकीवाड बनालई और चारोंतरफ बडे२ वृक्ष टूटेहुये पड़े हैं २३ व बछडोंकेवास्ते खूटी गाड़रक्खी हैं और तिनके रस्से बाधने से अधिक शोभाहोरही है और जिस जगह बछड़ों के छारनोंसे पृथ्वीयुक्त होरही है और वामोंकरके तिन गोपोंकी कुटी आच्छादित होरहीहै २४ और क्षेमदायक बहुत प्रकारोंसे युक्तहै और हृष्टपुष्ट मनुष्योंसे युक्त होरहाहै और जहा पशुबाधनेके बहुत रस्सेपडे और जहा तक बिलोवनेका शब्द होरहा २५ और दहीके पानी से तहा की मृत्तिका गीलीहोरही और तहांदही बिलोवती हुई गोपों की नारियोंके कङ्कणके शब्दहोरहे हैं २६ और जहा श्रेष्ठ बालों को धारण कियेहुये गोपोंके बालक फिरते हैं और सबके घरके दरवाजों के आगल लगरहीहैं २७ और बीच में गौओंके स्थान बनरहे हैं और घृत की सुगन्धीसे युक्त जहा वायुचल रहाहै और नीले और पीतवस्त्रोंको धारण किये हुये जवान स्त्रियोंकरके शोभितहै २८ और वनके पुष्पों की मालाओं से युक्त ऐसी गोपोंकी कन्याओंसे युक्तहै और वे कन्या शिरपै कलश धारण कियेहुये २९ और श्रेष्ठ वस्त्र पहिने हुये और यमुनाके तीरके किनारे युक्त हैं ऐसे सुन्दर देशमें वह नन्दगोप प्रवेश होताभया और जहां आनन्द करतेहुये गोप शब्द

करहे हैं ३० और वृद्धगोप और वृद्धगोपिया गायन कररही हैं ऐसे सुखके स्थान में वे अपना निवेश करते भये ३१ और तिस जगह वसुदेव को सुख देनेवाली वह रोहिणीभी है और उदयहोता सूर्यके समान कान्तिवाला कृष्णभी है ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांगोव्रजगमनेनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं तहां तिस नन्दगोप को वसते हुये बहुतसा सुन्दर काल व्यतीत होताभया और नाम निकालेहुये वे दोनों बालकभी बढ़तेभये १ और बड़ा तो सङ्कर्षण नामवालाहै और छोटा कृष्णनामवाला है २ और सबके शरीर के अन्तर विचरनेवाले हरि भगवान् कृष्ण तो मेघ के समान काले वर्ण वाले होतेभये और जैसे समुद्रमें जल बढ़ताहै ऐसे गौओंके मध्यमें बढ़तेभये ३ और एकसमयमें कुछ कृत्यकी इच्छा करनेवाली यशोदा तिस बालकको गाडा के नीचे सुलाकर यमुनानदीको जातीभई ४ फिर वह बालक तहां बालकलीला को करताहुआ हाथ और पैरों को फेंकके मधुर शब्द से रोनेलगा व दोनों पैर ऊपरको उछाले ५ फिर एकपैर करके तिस गाडाको उलटागेरताभया व दूधपीने की इच्छाकरके फिर रोनेलगा ६ फिर उसी समय जल्दही तिसके पास दूधकी भरी चूचियोंवाली यशोदा प्राप्तहोतीभई जैसे अपने बत्सेको गौ प्राप्तहोती है ७ फिर तहां वायु के विना गिरेहुये गाडे को देखके और हाहाशब्द करके जल्द अपने बालक को ग्रहण करतीभई ८ और वह नहीं जानतीभई कि यह गाड़ा किसने गेरा और मेरा बालक तो बचगया ऐसे कहके प्रसन्न होतीभई और डरतीभई ९ व यह कहनेलगी कि हे पुत्र परम कोपवाला तेरा पिता मुझको क्या कहेगा क्योंकि गाड़ेकेनीचे सोताहुआ तेरे पै गाड़ा गिरगया १० न मेरे कुत्सितस्नान से क्या है और नदी पै गमनकरने में क्याहुआ क्योंकि हे पुत्र जो तू गाडेके नीचे गिरपाया ११ फिर इसी काल के अन्तर वन में विचरनेवाला रसीले वस्त्रों को धारण किये और गौओं से युक्त ऐसा नन्दगोप व्रजके समीप आताभया १२ फिर वह आके उलटा गिराहुआ और फूटेहुये घटोंवाला और धुर व चक्र व मस्तक इन करके टूटाहुआ १३ ऐसे गाडाको देखताभया फिर तिसको देख व डर व नेत्रों में अश्रुपूर्णकर जल्द आताभया और वह वारम्वार

कहताभया १४ कि मेरे पुत्रके कल्याण है फिर वह नन्दगोप चूचीपीवते हुये अपने वालक को देख के स्वस्थमनहोके यह कहनेलगा कि वैलोंके युद्ध विना यह गाडा कैसे गिरपडा १५ फिर गद्गद वाणीवाली और डरती हुई यशोदा कहनेलगी कि यह गाडा पृथ्वी में किसने गेरा १६ मैं नहीं जाननी क्योंकि मैं तो वस्त्रधोने के वास्ते नदी पै गईथी फिर आई जब पृथ्वी में विपरीत इस गाडेको देखती भई १७ फिर उन दोनों के ऐसे वतलातेहुये तहां वालकआके यह कहने लगे कि इसही वालक ने पैर उछालके यह गाड़ा गेराहै १८ और हमने अच्छी तरह यह देखाहै ऐसे आश्चर्य करके वे सब फूले नेत्रोंवाले १९ अपने घरों को जातेभये २० और वह नंदगोप तिस गाड़े के चक्रआदि सब बँधाताभया २१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांशकटभंगोद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे किसी समय में शकुनीवेष अर्थात् पक्षी वेष के धारण कियेहुये और कंसकी धाय पूतना नामवाली १ व घोर और प्राणों के भय करनेवाली क्रोधमे अपने परों को फटकारतीहुई २ आधीरात्री में आवर्त भई फिर आधीरात्रि के समय वारम्वार व्याघ्र सरीखा शब्द करनेवाली वह पूतनाआके ३ व गाड़े के विषे सोतेहुये कृष्ण को स्तनों से पीड़ा करतीहुई दूध पियानेलगी ४ तब वह कृष्ण तिस के स्तनों को प्राणों के साथ पीनेलगे और शब्द करनेलगे फिर छेदनहुये स्तनोंवाली वह पूतना जल्द पृथ्वी में पड़तीहुई ५ फिर तिस शब्द से वित्रस्तहुये मनुष्य जागतेभये और नन्दगोप अन्यगोप यशोदा ये क्लेशकोप्राप्त होतेभये ६ और ये सब सन्त्रास रहित और बड़ी चूचियों वाली और वज्र की तरह पृथ्वी में पड़ीहुई ऐसी पूतना को देखतेभये ७ फिर तिसको देखके सन्त्रस्त हुये वोले कि यह किसका कर्म है और ये सब गोप नंद को अगाड़ी करके तिसको देखतेभये ८ परन्तु तिस हेतुको कोई भी नहीं जानताभया और आश्चर्य करतेहुये अपने घर को चलेगये ९ फिर वे सब गोप चलेगये तब भयवाला नंदगोप यशोदाको पूछनेलगा १० कि यह कौन विधि है मैं नहीं जानता और बड़ाआश्चर्य है और मेरे पुत्र को यह भय हुआ है ११ तब यशोदा भी कहनेलगी मैभी नहीं जानती मुझको तो इस वालक के सग

शब्द होनेके बाद यहां सोतीहुई देखीथी १२ फिर नहीं जानतीहुई यशोदाविषे नंदगोप कंससे भय बताताभया और आश्चर्य्यको प्राप्त होताभया १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांपूतनावधोनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः६३॥

चौंसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं फिर काल व्यतीत होने के बाद वे दोनो कृष्ण संकर्षण नामवाले बालक घिसडते चलनेलगे १ व बालक अवस्था करके एक देवता के समान और एकसी मूर्त्ति धारण किये कांतिवाले उदय होते चन्द्रमा और सूर्य्य के समान २ व एकसी रचनावाले और एक शय्यापै सोनेवाले एक सा खानेवाले व एक वेषको धारण करनेवाले ऐसे वे दोनों बालक बढ़तेभये ३ और वे दोनों बालक एककार्य्य में गत और एक देहवाले ऐसे दो २ मालूम होतेभये और महा पराक्रमवाले वे दोनों एकही के बालक दीखतेभये ४ और एकसा प्रकाशवाले और देवताओं के वृत्तान्त धारणकिये और सम्पूर्ण जगत्के गोप वे दोनों गोपबालक होते भये ५ व आपस में मिलीहुई क्रीडाओं करके शोभित होतेभये और आपसके तेजकरके ग्रस्त होतेभये जैसे अम्बरमें चन्द्रमा और सूर्य ६ व सर्पके समान भुजावाले वे दोनों और धूलकरके लिपटेहुये अंगवाले सर्पटतेहुये शोभित होतेभये जैसे हाथियों के बच्चे ७ व कहीं भस्मकरके अंगपै लेपकरलेते हैं और कभी अग्नीकी करस का लेप करलेते हैं ऐसे वे दोनों कभी बालककी तरह अग्नी के समीप भाजते हैं ८ व कभी गोडोंकरके घिसरते हुये बच्छों के स्थान में गोबरकरके भरेहुये बालोंवाले ९ शोभायमान होते हैं और अपने पिताको शोभाकरके आनन्द देते हैं और अन्य मनुष्यों को हँसते हुये चिकड़ाते बोलनेलगते हैं १० ऐसे वे दोनों क्रीडाकरतेहुये व अपने बालों करके व्याकुल नेत्रोंवाले व चन्द्रमाकेसमान बदनवाले प्रकाशमान होतेभये ११ व सब व्रजमें विचरनेवाले और अति प्रसन्नहुये उन दोनोंको नंदगोप वर्जनेको समर्थ नहीं होतेभये १२ व एकसमय कमलसरीखे नेत्रोंवाले कृष्ण को यशोदा गाडे की जडमेंलाके वारम्वार झिडकावतीहुई १३ रस्से से पेट बिषे ऊखल को बांधती भई और जो तू समर्थ है तो अब चल ऐसे तिसको कहके और अपने कामकरने लगगई १४ फिर कार्य्य में व्यग्र यशोदाहोगई तब वे भगवान् बालक

की लीलाकरते हुये और सब ब्रजको आश्चर्य्य करतेहुये १५ तिस अङ्गण में चलपडे फिर तहा से चलके वह कृष्ण ऊखलको घिसताहुआ यमुलार्जुन वृक्षों के मध्यमें गया १६ फिर तिसके खेंचने से वह बँधाहुआ ऊखल तिरछाहोके १७ तिन यमलार्जुन वृक्षोंकी जड़में लगताभया पश्चात् वेगसे तिस बालक के खेंचने से वे दोनों वृक्ष जडपेड समेत गिरतेभये १८ व पश्चात् उभयभगवान् हँसतेभये और गोपोंको दिखानेकेवास्ते दिव्य अपने बल के आश्रय होतेभये १९ पश्चात् वह रस्सा तिस बालक के प्रभावसे कडा बँधगया फिर यमुनाकेतीर पै स्थितहुई गोपियां तिसको देखतीभई २० व दुःखपातीभई और आश्चर्यकरती यशोदा के निकट आतीभई और भ्रांतिवाले वदनसेयुक्त यशोदा से कहनेलगीं २१ कि हे यशोदे तू जल्दी आ विलम्ब कैसेकरती है क्योंकि जो कि ये दोनों अर्जुन वृक्ष ब्रजमें थे २२ वे दोनों तेरे पुत्र के ऊपर गिरपडे और वह तेरापुत्र कड़े रस्से से बँधाहुआ उसी जगह है जैसे बच्छा बँधाहुआ हो २३ व वह तेरा बालक तिन वृक्षोंकेमध्य में हँसता है और हे दुर्मेधे मूर्खिणी आपे को बुद्धिमती माननेवाली तू जल्दी उठ २४ व मृत्युके मुखसे छूटेहुए पुत्रको जीवतेहुए को ले ऐसे सुनके भयभीत वह यशोदा जल्द उठके हाहाशब्द करती हुई २५ तहा जातीभई कि जहा पडेहुये वे वृक्षथे फिर तिनके मध्यमें अपनेपुत्रको देखतीभई २६ पश्चात् रस्से से उदर बँधाहुआ और ऊखल को खींचताहुआ ऐसे बालक को गोपी और वृद्ध गोप और जवान आदि सब २७ ब्रजके मनुष्य देखने को जातेभये और गोपों के बीचमें यह महान् आश्चर्य होताभया और वनका विचार करनेवाले वे गोप अपनी २ इच्छाका वचन कहनेभये २८ व यह कहनेलगे कि ये दोनोंवृक्ष हमारे घरों के समान विस्तारवाले किसने गेरे और वायुके बिना वर्षाके बिना बिजली के गिरेबिना २९ कैसे गिरपड़े और हाथीके बिना ये किसने गेरदिये व आश्चर्य की बात है कि जडके बिना ये यमलार्जुन वृक्ष शोभित नहीं हैं ३० व जलसे बादलों के समान पृथ्वी में गिरेहुये सुन्दर लगते हैं और जो कि ये वृक्ष गोपों के रचेहुये थे इसवास्ते गोपोंको कल्याण देनेवाले हैं ३१ व ये वृक्ष नन्दगोप में प्रसन्नहुये हैं क्योंकि जो इनकी जडमें नहीं दीखताहुआ बालक बचगया ३२ व इस जगह हमारे ब्रजमें यह तीसरा उत्पातहुआ है एक तो पूतना का विनाश और गाड़ेका गिरना और वृक्षोंका पड़ना ३३ व गोप आपसमें कहरहेहैं कि इस

जगह इस नन्दगोपका निवास करना उचितनहीं दीखता है ३४ ऐसे कहतेभये और नन्दगोप तो जल्दही अपने पुत्रको उठाके और ऊखलसे खोलके अपनी गोदमें लेताभया जैसे मराहुआ फिर जीवगयाहो तैसे ३५ व कमलसरीखे कृष्ण को देखके तृप्तनहीं हुआ और यशोदा की निन्दाकरता हुआ अपने घरमें प्रवेश होगया ३६ और वह गोपजन कृष्ण दाम अर्थात् रस्से से बँधाहुआ सब व्रजमें फिरा था ३७ इसवास्ते व्रजमें गोपिया तिसको दामोदर नामकरके कहनेलगीं और वैशम्पायन कहते हैं कि हे जनमेजय यह बालक कृष्णके विचेष्टितका आश्चर्य व्रजमें बसनेवालों को होताभया ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांयमलार्जुनभंगे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं ऐसे वे दोनों कृष्ण और सङ्कर्षण बालक अवतार किये हुये तिस व्रज स्थान में सातवर्ष के होते भये १ व पश्चात् नीले व पीले वस्त्रोंको धारण करनेवाले और पीला व सफेद चन्दन का लेप करनेवाले और काक के पक्षों के समान बालवाले ऐसे वे दोनों बच्छाओं के पाली होतेभये २ व कानों को सुख देनेवाले बाजेको बजावनेवाले और सुंदर मुखवाले और वन में विचरनेवाले वे दोनों ऐसे शोभित होते भये कि जैसे तीन शिरोंवाले सर्प शोभितहोते हैं ३ व मोर के चन्दे आदि कानों में धारण किये हुये व पत्तों के मुकुट धारण किये व बहुतसे पुष्पोंकी माला से युक्त छातीवाले ऐसे वे दोनों शोभित होतेभये जैसे वृक्षों से उपजी दो कोपल शोभित होती हैं ४ व कमल के पुष्पों का मुकुट बनाये हुये व रज्जु के यज्ञोपवीत बना के धारण किये व हाथों में छीका व तूनी को धारणकिये व गोपों की बीण बजाते हुये ५ ऐसे वे दोनों विचरतेभये व कहीं हँसतेहुये व कहीं आपसमें खेलतेहुये व कहीं निद्राकी इच्छा करके ६ पत्तोंकी शय्यापै सोतेहुये ऐसे वे दोनों बच्छोंको पालतेहुये व महावनकी शोभा करतेहुये व अतिशय करके रमतेहुये किशोर अवस्थावालों की तरह चंचल होतेभये ७ व एक समय कृष्ण बलदेव के प्रति कहनेलगा कि हे श्रेष्ठ इस वनमें गोपालों के संग हमको क्रीडाकरनी नहीं चाहिये ८ व हम

वनमें हमको गायनकिया व यहवन तृण काष्ठों करके हीनहै व गोपों करके म-
थित वृक्षोंवालाहै ९ व बहुत से वृक्षोंवाले वनों की शोभा दूर दीखती है व इस
जगह गौओं करके मार्ग रुकरहे हैं व जो समीप तृण व काष्ठहै वे सब दूर भूमि
में हमको ढूंढने चाहिये १० व यहवन अल्प जलवालाहै व इसमें कुछ आश्रय
नहीं है व आश्रय से रहित व दारुण व थोडे वृक्षोंवाला ऐसा यह वनहै ११ व
विना प्रयोजन इन वृक्षों में वासकरना उचित नहीं है व बहुतदिन वासकरने से
इस वनके वृक्ष सुन्दर नहीं हैं १२ व इस वनमें आनंद नहीं है व विना प्रयोजन
की वायु चलती है व पक्षियों करके रहितहै व शून्यहै जैसे शाकआदिकों के
विना भोजनहोताहै तैसे १३ व काष्ठोंके बेचनेसे व वनमें होनेवाले शाकोंकेसमूह
करके व तृणके समूह करके यह गोपालोंका ग्राम नगरकीनाईं आचरण करता
है १४ व पर्वतोंका आभूषण गोपोंका ग्रामहै व गोपों के ग्रामका आभूषण वन
है व वनोंका आभूषण गौ है व वे गऊ हमारी परमगति हैं १५ इसवास्ते हम
अन्य वनको चलेंगे व आगाडी इन गऊआदिकनको लेचलेंगे व ये गऊ श्रेष्ठ
तृणआदिकों की खानेकी इच्छा करती हैं १६ इसवास्ते नवीन तृणवाले वनमें
चलो व वर्णोंको अपने द्वारके अगाड़ीही रहना उचित नहीं है व घरमें श्रेष्ठ खेती
भी नहीं होती है १७ इसवास्ते जैसे चक्रधारी राजा चलताहै ऐसे विचरना उ-
चितहै व इस वनमें गौका गोवर व मूत्रकरके खाग रसवाले तृण होरहे हैं १८ इस
वास्ते ये गौ तृणोंको नहीं खाती हैं व यह तृण तिनके दूधके वास्ते भी हितनहीं
है व जहां बहुतसी रमणीक स्थलीहोवें व वनकी पंक्तिहोवें १९ तहां गौओंको
चरावेंगे व तृप्तिपर्यन्त तृणसेयुक्त वन सुनाजाताहै २० व वृन्दावन नामवालाहै
व जहां स्वादु वृक्षफल व जलवंभीरी व कटकों से युक्तहै व सबगुणों करके युक्त
है २१ व जहां बहुतसे कदम्बके वृक्षहैं व यमुना के तीरके समीपहै व सुन्दर शी-
तलवायु करके युक्तहै व जहां सबऋतुओं की श्रेष्ठवायु आती है २२ व गोपियों
को सुखकरनेवालाहै व जिसके अन्तर सुन्दर वनहै व जिसके समीपही गोवर्द्धन
नामवाला महान् पर्वतहै २३ व जिस पर्वत के शिखर इन्द्र के वनके समान शो-
भितहै व इस पर्वत के मध्यमें चारकोस ऊंचा महाशाखोंवाला बड़का वृक्षहै २४
व यह भंडीरनामवाला पीपलका वृक्ष नीलमेघकी तरह अम्बरमें शोभित होरहा
है व इस पर्वतके बीचमें मानों सीम को करतीहुई है ऐसी यमुनानदी बहती

है २५ व यह नदियों में श्रेष्ठ यमुनाजी इन्द्रके वनकी कमलकी नालकी तरह शोभित होती है व तहा गोवर्द्धन नामवाला पर्वत व भण्डीर नामवाला बड़का वृक्ष २६ व रमणीक यमुनानदी इन्होंको सुखसे देखेंगे व तहां यह हमारे मनुष्यों का समूह वसना चाहिये व यह निर्गुण वन छोड़ना चाहिये २७ व हे भाई तुझको सुखरहे व अब हम कुछ कारण उत्पादन करके इन गोपों का कुछ त्रास देवेंगे क्योंकि तब ये इस वनसे चलेंगे ऐसे कहतेहुये भगवान् कृष्णके शरीरके रोमों से २८ पैदाहुए व घोर व रुधिर मास मेद इनके खानेवाले व भयके करने वाले ऐसे सैकड़ों भेड़ें तिसके चिन्तवन करतेहुये निकलपडे २९ व पश्चात् गौओं के बीच में व बच्चों में व मनुष्यों के बीच में व निर्भयहुई ३० गोपियों में आके पड़तेहुए तिन भेडियाओं को देखके तिस व्रजमें महान् त्रास होनेलगा और वे भेड़िया कहीं पाच इकट्ठी हैं और कहीं दश जुडे हैं ३१ व कहीं तीस जुडेहुये और कहीं सौ जुड़ेहुये ऐसे इकट्ठेहोके विचरनेलगे और तिस भगवान् के शरीर से इसीप्रकार निकलतेहुये और कृष्ण के श्रीवत्सलक्षणसे युक्त ३२ व कालेवदनवाले ऐसे भेडिया गोपोंको भयकरनेवाले बच्चों को भक्षण करनेलगे और गो व्रज इनमें त्रासकरनेलगे ३३ व रात्री के विषे बालकोंको हरतेहुए भेड़िया व्रजको त्रास देनेलगे और कोई वनमें जाने में और गौओं की रक्षाकरने में समर्थ नहीं रहा ३४ व वनमें कुछ ल्याने में और नदी के उतरने में ये समर्थ नहीं रहे और उद्विग्नमनवाले तिस वनमें रहतेहुये ३५ फिर ऐसे सिंहके समान पराक्रमवाले तिन भेडियाओं के पाडनेसे वह व्रज चेष्टारहित होगया और एक जगह रहनेलगे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिभाषायांगोपवृकोत्पादनंनामपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—ऐसे बढ़ेहुये तिन खोटे भेडियाओं को देख के स्त्री और पुरुषों समेत सब व्रज के मनुष्य सलाह करनेभये १ कि हमको यहां नहीं रहना चाहिये और हमअन्य बड़े वन को चलेंगे जो कि शुभदायक और सुख का स्थानहै २ और गऊ आदिकों से युक्त अभीचलो देरकरने में क्या है और

इस जगह हमारा व्रजका घोर वध इन भेड़ियाओं करके होजायगा ३ और ये धुवां सरीखे वर्णवाले और जाड़वाले और नखों से पाड़नेवाले और कालेमुख वाले ऐसे भेड़ियाओं का रात्री में गर्जने का हमको भयहै ४ और मेरापुत्र हर लिया मेराभाई मेरावच्छा मेरी गौ भेड़ियाओंको पाड़लई ऐसे घर २ में रोते हैं ५ और तिनके रोने से और गौओंके रांभनेमे वृद्ध २ गोप आके व्रजके उठाने की तय्यारी करतेभये ६ और पश्चात् तिनका वृन्दावन जानेका मत जान के व व्रजके निवासको और गौओं के हितको जान और वृन्दावन के निवासमें निश्चय करनेवालों को ७ सुन के पश्चात् नन्दगोप बृहस्पति की तरह बड़ा वाक्य कहताभया ८ कि जो हमको चलनाहै तो अभी चलो सबको जल्द आज्ञादेवो कि सावधान होजावें देरमतकरो ६ फिर तिस व्रजमें गोप यहशब्द सुनाताभया जल्दी गौओं को हांको और अपने २ वर्त्तनों को उठाके गाड़ोंमें धरो १० और बच्छोंकोहांको और गाड़ों को जोड़ो और यहांसे उठके वृन्दावन रहनेके वास्ते चलो ११ और पश्चात् तिस नन्दगोपके सुन्दर कहेको सुनके सब व्रजगमनकी लालसा करनेवाले उठनेभये १२ और ऐसे आपस में कहनेलगे कि तू उठ हम चलें और क्याबाकी रहाहै लेआ गाड़में युक्तकर पश्चात् वह जब उठनेलगा तब महान् कोलाहल होताभया १३ और उठनाभया गाड़ों समेत वह व्रज शोभित होताभया और सिंहके घोषके समान ऊंचाघोष करनेवाला और समुद्रके समान गर्जनेवाला ऐसा घोष अर्थात् तिन गोपोंका व्रजचलताभया १४ और गोपियों शिरपै गागर धरेहुये और मस्तकपै आभूषण की तरह कलशों को धारणकिये व्रजसे ऐसी तिनकी पङ्क्ती निकलती भई जैसे अम्बरसे तारागणोंकी पङ्क्ती निकलती है १५ व नीले और पीत वस्त्रको पहिनेहुई मार्ग में चलतीहुई तिनगोपियों की पंक्ती इन्द्रके धनुषकी तरह दीखनेलगी १६ और रस्सानें जूआदिकों के भार से लिपटेहुये और बड़े शरीरवाले और मार्ग में चलतेहुये गोपोंकी ऐसी शोभा भई कि जैसे वृक्षों पै चढ़ने के वास्ते रस्सा लटकताहो १७ और पश्चात् गाड़ोंके समूहने युक्त प्रकाश करके मार्ग में चलतेहुये तिस व्रज की ऐसी शोभाभई कि जैसे पवनमे निक्षिप्त छोटी २ नौकाओं के चलने से समुद्रकी शोभा होती है १८ और पश्चात् तिस स्थान से अपने २ द्रव्यको लेके सब चलेगये तब वहां काकों के भुण्ड जुड़गये १६ और वे गोप क्रमसे बड़े वृन्दावन को प्राप्त होतेभये और

तहां अपना २ सुंदर स्थान वनातेभये और गौओं के हितकेवास्ते सुदर स्थान वनाते भये २० और चारोंतरफ गाडों को खड़े करके अर्द्ध चन्द्रमा के आकार करते हुये और बीचमें चारकोस का विस्तार करते हुये और आठकोस के वि-स्तारमें तिनगाडों के चुगरदे २१ वढेहुये काटोंकरके और काटोंके वृक्षों से करते भये और चारोंतरफ खाईवनाके गुप्त करतेभये २२ व बीचमें दही विलोवने का दण्डरोपण कियाहुआ और जलकी गागर भरीहुई २३ व कीले गडेहुये और तिनकेरस्से बँधरहे और थामों के रस्से बँधेहुये फिर गाडोंके लिपटा रक्खे २४ व दही विलोवने के पात्र में तिसी प्रयोजनवाली नेजूवँधरही और वह पात्रचटाई आदिसें ढकरक्खा ऐसे वे गोप अपने तिस व्रजको शोभायमान करतेभये २५ और वहुतसी शाखावाले वृक्षोंके नीचे शुद्ध जगह करके गौओं के स्थान व नातेभये और अपने २ ऊखल स्थापित करलिये हैं २६ और पूर्वकीतरफ सबने अपने २ छीके वाधरक्खे और अपने २ घरमें अग्नि प्रज्वलित कर रक्खी और श्रेष्ठ विछावनों से युक्त पलँग विछरहेहैं २७ और तहां अपने २ घरों में जलका घडा उतारती भई गोपिया तिस वनको देखरहीं और कईक गोपिया वृक्षों की शाखाओं को खैंचरही हैं २८ और जवान, वृद्ध सबतरहके गोप तिस वनमें प्र-वेशहुये कुल्हाडों से काष्ठोंको और वृक्षोंकोभी काटरहे हैं २९ इसप्रकार करतेहुए वह वन अधिक शोभित होताभया और वह वनरमणीकहै व जिसमें स्वादु मूल फल व जलहै ३० और वे इच्छापर्य्यन्त दोह देनेवाली गौ सवप्रकारके पक्षियों का जिसमें शब्दहोरहा ऐसे वृन्दावनको प्राप्तहोतीभई और यह वन नन्दनवन अर्थात् इन्द्रके वनकेसमानहै ३१ और यहवन कृष्णको तो गौओंके हितकेवास्ते पहिलेही मनसे विचारलिया था ३२ और तिसवन में पिछला गर्मीका महीना ज्येष्ठमें भी ऐसे तृण बढ़ताहै कि जैसे इन्द्र अमृत वढाताहो ३३ व जहां लोकोंके हितके वास्ते भगवान् ठहरते हैं तहां बच्चों को व गौओंको व मनुष्योंको दुःख दुःख नहीं रहा ३४ और तिस वनमें वे गौ और नन्दगोप और युवा अवस्था वाले संकर्षण ये सब कृष्णके सगनिहितवास करतेभये ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वेभाषायांवृन्दावनप्रवेशोपक्रमोऽष्टानोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—वे दोनों वसुदेव के पुत्र तहां वृन्दावनमें प्राप्तहोके फिर वच्छाओंको चरातेहुये विचरनेलगे १ और तिन दोनोंके वनमें क्रीड़ाकरते हुये और गोपालों के संग यमुनाके तीरपै खेलतेहुये गर्मीका समय सुखसे व्यतीत होताभया २ फिर मनके कामों को दीप्तकरनेवाली वर्षा समय आती भई पश्चात् तिसऋतुमें इन्द्रके धनुषसे चिह्नित ऐसे महामेघ वर्षनेलगे ३ और सूर्य्य का अदर्शन होताभया और पृथ्वी पै तृणदीखनेलगे और नवीनजलको स्पर्शनेवाली महान् मेघकी वायुकरके वेल आदिक अच्छीतरह फूलनेलगी ४ और पृथ्वी पै यौवनमालूम होनेलगा और नवीन वर्षासे भीजेहुये तीजआदि वनके जीव विचरनेलगे ५ और दावाग्नि करके नष्टमार्ग्ग और वन प्रकाशमान होने लगा और कलापी मयूरों के नाचने का समय आताभया ६ और मदसे युक्त मयूरोंकी केकावाणी सुन्दरलगतीभई और तिसनवीन वर्षा समयमें कांतिवाले और भँवरोंको भोजन देनेवाले ७ ऐसे कदंबोंके वृक्षों पै यौवन आताभया और नवीन पीपसी आदिकों करके सुन्दर लगतेहैं और चमेली आदि पुष्पों से प्रकाशित और कदंबोंकरके बढ़ाहुआ ८ ऐसावन शोभितहोताभया और दावाग्नि करके और सूर्य्यकी किरणोंकरके सन्तप्तहुई और त्रस्तहुई पृथ्वी मेघों करके तृप्तहोतीभई ९ और मेघोंकरके छोड़ेहुए जलोंसे पर्वतोंमें ऐसी भाफ निकलती है कि मानों ऊंचा श्वास लेते हैं और महावातों से उठाहुआ ऐसा महामेघसमूह १० आकाश पृथ्वी के राजपुरों के समान दीखनेलगा और अच्छीतरह स्निग्ध हुआ वन सांपकेमुद्दे आदितृणोंसे भूषित होताभया ११ और फूलेहुए कदंबोंसे वह वन प्रदीप्तदीखनेलगगया और इन्द्रके जलसे सींचाहुआ व वायुकरके नवीन कियाहुआ १२ तिस वनकी पृथ्वीकी गंधको सूंघके मनुष्य चञ्चलगनवाले होने भये और गर्जित मेढकोंके बोलनेसे १३ और नवीन मयूरोंके कूकने से वह पृथ्वी अवकीर्ण अर्थात् शोभित होतीभई और श्रमके वेगमेंयुक्त व वर्षामें महाशब्दवाले ऐसे जलोंके समूह बहनेलगे १४ व किनारे २ के वृक्षोंको काटतेहुए और नदियों गमन करनेभये बढ़ते और निरन्तर जोरके मेघ बरसने से जड़हुई वृक्षों की और तिनके गलेहुए पत्ते १५ ऐसे शोभित होनेलगे कि जैसे आनर्त्ती

वृक्षोंके टहनियों पे बैठेहोवें और जलसे गम्भीरहुए वर्षतेहुए और गर्जतेहुए १६ ऐसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य डूबजानेकी तरह मालूम होताभया और मेघसे गिरेहुए वृक्षोंसे कहीं पृथ्वी ढकीहुईहै १७ व कहीं हरी २ घासकी मालासी प्रतीत होतीहै बज्रसे गिरेहुये और स्रोतों के द्वारा जल निकलता हुआ १८ ऐसा पर्व्वत की शिखर नीचेको पड़ती है और मेघके वर्षने से झिलानमें ठहरा हुआ पानीकरके शोभा होरही १६ व वनकी पङ्क्तियोंकी शोभा होरही और सूड़को ऊपरने किये हुए और मेघके शब्दके अनुसार शब्द करनेवाले २० ऐसे वनके हस्ती शोभायमान होतेभये जैसे आकाश में बद्दल और इसप्रकार वर्षा समयकी प्रवृत्तिको देखके और जलको धारण करनेवाले मेघोंको देखके २१ रोहिणी के पुत्र बलदेव कृष्ण के प्रति कहनेलगे कि हे कृष्ण घनरूप काले बद्दलों को आकाश में तू देख २२ व ऐसे मालूम होते हैं कि जानों तेरेवर्ण के चोरहोवें और तुझको निद्रा आनेका समय आरहाहै और तेरे शरीरके समान आकाश होरहा है २३ व तेरीतरह वर्षाके बद्दलों में यह चन्द्रमा गुप्त होरहाहै और यह नीले कमल के समान और नीलकमलके पत्तोंके समान कान्तिवाला ऐसा आकाश २४ वर्षा समयमें प्रकाश होरहा है २५ व हे कृष्ण तू देख काले बद्दलों से इस गोवर्द्धन पर्व्वतकी शोभा होरही है और मेघोंके बरसनेसे मदसे युक्तहुए २६ कालेमींड़क प्रकाशमानहोरहे हैंऔरजलसे बढ़ेहुए हरे २ कोमलतृण और कमलकेपत्ते इन्हों करके पृथ्वी आच्छादित होरही है और झिरता हुआ पर्वतका जल और मेघसे इकट्ठाहुआ वनका जल २७ व घास आदिकों से युक्त ऐसे वनकी ऐसी शोभा भई कि तहाकीसीम मालूम नहीं होती २८ व हे दामोदर जल्द पवनके चलने से इकट्ठेहुये मेघ और बिजली से युक्त और शब्द करतेहुये बहुत सुन्दर मालूम होते हैं और हे श्रीकृष्ण तीन रंगोंवाला और ज्या अर्थात् कमान और बाण से रहित २६ ऐसा इस इन्द्रके धनुष करके यह आकाश मिलाहुआ शोभित होता है और श्रावण का महीना आकाशचक्षु अर्थात् सूर्य्य नहीं दीखता है ३० व किरनोंवाला यह सूर्य्य मेघों करके बिना किरनोंवाला दीखता है और समुद्र के समूहों के समान मेघोंकी धाराओंका निरन्तर पड़ने से पृथ्वी और आकाशका सम्बन्ध दीखताहै ३१ व पृथ्वी में निरन्तर वर्षा होने से नीप सञ्ज्ञक कदम्बों की और अर्जुन वृक्षकी गंधकरके कामदेवके दीप्तकरनेवाली वायु चलरही है ३२ व

सरसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं—वे दोनों वसुदेव के पुत्र तहां वृन्दावनमें प्राप्तहोके फिर वच्छाओंको चरातेहुये विचरनेलगे १ और तिन दोनोंके वनमें क्रीडाकरते हुये और गोपालों के संग यमुनाके तीरपै खेलतेहुये गर्मीका समय सुखसे व्यतीत होताभया २ फिर मनके कामों को दीप्तकरनेवाली वर्षा समय आती भई पश्चात् तिसऋतुमें इन्द्रके धनुषसे चिह्नित ऐसे महामेघ वर्षनेलगे ३ और सूर्य्य का अदर्शन होताभया और पृथ्वी पै तृणदीखनेलगे और नवीनजलको स्पर्शने वाली महान् मेघकी वायुकरके बेल आदिक अच्छीतरह फूलनेलगी ४ और पृथ्वी पै यौवनमालूम होनेलगा और नवीन वर्षासे भीजेहुये तीजआदि वर्षाके जीव विचरनेलगे ५ और दावाग्नि करके नष्टमार्ग और वन प्रकाशमान होने लगा और कलापी मयूरों के नाचने का समय आताभया ६ और मदसे युक्त मयूरोंकी केकावाणी सुन्दरलगतीभई और तिसनवीन वर्षा समयमें कांतिवाले और भवँरोंको भोजन देनेवाले ७ ऐसे कदंबोंके वृक्षों पै यौवन आताभया और नवीन पीपसी आदिकों करके सुन्दर लगतेहैं और चमेली आदि पुष्पों से प्रकाशित और कदंबोंकरके बढ़ाहुआ ८ ऐसावन शोभितहोताभया और दावाग्नि करके और सूर्य्यकी किरणोंकरके सन्तप्तहुई और त्रस्तहुई पृथ्वी मेघोंकरके तृप्तहोतीभई ९ और मेघोंकरके छोडेहुए जलोंसे पर्वतोंमें ऐसी भाफ निकलती है कि मानों ऊंचा श्वास लेतेहैं और महावातोंसे उठाहुआ ऐसा महामेघसंयुक्त १० आकाश पृथ्वी के राजपुरों के समान दीखनेलगा और अच्छीतरह खिलाहुआ वन सांपकेमुद्दे आदितृणोंसे भूषित होताभया ११ और फूलेहुए कदंबोंसे वह वन मदीमदीखनेलगगया और इन्द्रके जलसे सींचाहुआ व वायुकरके नवीन कियाहुआ १२ तिस वनकी पृथ्वीकी गंधको सूंघके मनुष्य चञ्चलमनवाले होते भये और गर्वित मेढकोंके बोलनेसे १३ और नवीन मयूरोंके कूकने से वह पृथ्वी अवकीर्ण अर्थात् शोभित होतीभई और क्रमके वेगसेयुक्त व वर्षासे महाशब्द वाले ऐसे जलों के समूह बहनेलगे १४ व किनारे २ के वृक्षोंको काटतेहुए और नीचेको गमन करतेभये बहते और निरन्तर जोरके मेघ वर्षने से जड़हुई पक्षी और तिनके गलेहुए पत्ते १५ ऐसे शोभित होनेलगे कि जैसे आनन्दकी

वृक्षोंके टहनियोंपै बैठेहोवें और जलसे गम्भीरहुए वर्षतेहुए और गर्जतेहुए १६ ऐसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य डूबजानेकी तरह मालूम होताभया और मेघसे गिरेहुए वृक्षोंसे कहीं पृथ्वी ढकीहुईहै १७ व कहीं हरी २ घासकी मालासी प्रतीत होतीहै बज्रसे गिरेहुये और सोतों के द्वारा जल निकलता हुआ १८ ऐसा पर्व्वत की शिखर नीचेको पड़ती है और मेघके वर्षने से भिलानमें ठहरा हुआ पानीकरके शोभा होरही १९ व वनकी पङ्क्तियोंकी शोभा होरही और सूड़को ऊपरने किये हुए और मेघके शब्दके अनुसार शब्द करनेवाले २० ऐसे वनके हस्ती शोभायमान होतेभये जैसे आकाश में वद्दल और इसप्रकार वर्षा समयकी प्रवृत्तिको देखके और जलको धारण करनेवाले मेघोंको देखके २१ रोहिणी के पुत्र वलदेव कृष्ण के प्रति कहनेलगे कि हे कृष्ण घनरूप काले वद्दलों को आकाश में तू देख २२ व ऐसे मालूम होते हैं कि जानों तेरेवर्ण के चौरहोवें और तुझको निद्रा आनेका समय आरहाहै और तेरे शरीरके समान आकाश होरहा है २३ व तेरीतरह वर्षाके वद्दलों में यह चन्द्रमा गुप्त होरहाहै और यह नीले कमल के समान और नीलकमलके पत्तोंके समान कान्तिवाला ऐसा आकाश २४ वर्षा समयमें प्रकाश होरहा है २५ व हे कृष्ण तू देख काले वद्दलों से इस गोवर्द्धन पर्व्वतकी शोभा होरही है और मेघोंके वरसनेसे मदमे युक्तहुए २६ कालेभौंड़के प्रकाशमान होरहे हैं और जलसे वढेहुए हरे २ कोमलतृण और कमलकेपत्ते इन्हों करके पृथ्वी आच्छादित होरही है और भिरता हुआ पर्वतका जल और मेघसे इकट्ठाहुआ वनका जल २७ व घास आदिकों से युक्त ऐसे वनकी ऐसी शोभा भई कि तहाकीसीम मालूम नहीं होती २८ व हे दामोदर जल्द पवनके चलने से इकट्ठेहुये मेघ और विजली से युक्त और शब्द करतेहुये वहुत सुन्दर मालूम होते हैं और हे श्रीकृष्ण तीन रंगोंवाला और ज्या अर्थात् कमान और वाण से रहित २९ ऐसा इस इन्द्रके धनुष करके यह आकाश मिलाहुआ शोभित होता है और श्रावण का महीना आकाशनष्ठ अर्थात् सूर्य्य नहीं दीखता है ३० व किरनोंवाला यह सूर्य्य मेघों करके विना किरनोंवाला दीखता है और समुद्र के समूहों के समान मेघोंकी धाराओंका निरन्तर पड़ने से पृथ्वी और आकाशका सम्बन्ध दीखताहै ३१ व पृथ्वी में निरन्तर वर्षा होने से नीप नक्षत्र कदम्बों की और अर्जुन वृक्षकी गंधकरके कामदेवके दीप्तकरनेवाली वायु चलरही है ३२ व

प्रवृत्त हुई यह महान् वर्षा और महान् लम्बेवद्दल समुद्र सहित अम्बर की तरह अगाध मालूम होते हैं २३ व निर्मलधारा तो लोहे के बाणोंकीतरह और बिजली कवचकी तरहहै २४ व और इन्द्रकाधनुष आयुध की जगह ऐसे यह अम्बर इस प्रकार मालूम होताहै कि जैसे युद्धकेवास्ते सावधान होरहाहो और पर्वत, वृक्ष इन्हों के मुदरमुख मालूम होते हैं २५ व और अति घनरूप मेघोंकरके पर्वत की शिखर ढकीहुई मालूम होती है और अनेक मेघ जलरूपी हाथियों के रूप किये और मदकार लेतेहुयों की तरह शोभित होतेभये २६ व समुद्र का और आकाशका एकसारूप मालूम होताहै और समुद्रमें उठके चचलहुये और तृण आदिकों को कँपानेवाले २७ व शीतल और छोटी २ फुरहरों से युक्त ऐसे वायु कठोर चलरहे हैं और चन्द्रमा जिनमें सोताहै अर्थात् बादलों में छिपरहाहै और मेघवर्ष रहे हैं २८ ऐसीरात्रियों में और आकाश में आच्छादित सूर्य होरहा ऐसा दिनमें दशोंदिशा प्रतीत नहीं होती हैं २९ व वायुसे पूरितहुये और चर्म कोश सरीखे ऐसे मेघों के चारोंतरफ चलने से आकाश चेतन की तरह मालूम होनेलगा और सबप्रजा दिनका और रात्री के भेदको अच्छीतरह नहीं जानती है किंतु अनुमानसे सब जानते हैं ४० व गरमी के दोषसेरहित और मेघों के जल से विभूषित ऐसे इस वृन्दावनको हे श्रीकृष्ण तू देख यह इन्द्रके वनकीतरह शोभित होरहा है ४१ ऐसे यह बलदेव सबके प्रति वर्षा समय का वर्णन करताहुआ व्रजमें आवताभया ४२ और वे दोनों श्रीकृष्ण और बलदेव तिस व्रजके मित्रों के संग रमण करतेहुये तिस महावनमें विचरतेभये ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिभाषायांप्रावृड्वर्णनंनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अरसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे किसीसमय में बलदेवके बिना श्रीकृष्ण इच्छासे विचरतेहुये वनमें चलेगये १ व काकके पक्षसरीखे बालोंवाले शोभायमान और श्याम और कमल के पत्तों के समान नेत्रवाले और श्रीवत्स चिह्नसे युक्त ऐसे भगवान् चन्द्रमाकीतरह प्रकाशवाले विचरतेभये २ व चरणों आदि पैरों में आभूषण पहिनेहुये और कमलसरीखा चिकनाशरीर और कुमारअवस्थावाले वाले और अनेकप्रकार पैरोंकोधरके गमन करनेलगे ३ व मनुष्योंको प्रसन्न करने

वाले और पद्मकी केशरके समान पीले और बारीक ऐसे वस्त्रों को धारणकिये जैसे सध्यासमय में बद्दल होते हैं ४ व तिनकी भुजा वच्छों के व्यापार में युक्त होरही और लाठी रस्सा इनसे युक्त होरही और अच्छेवृत्तान्त में युक्त और देवताओं से पूजित ऐसी ये भुजाहैं ५ व पुण्डरीक कमलकी गधके समान तिनमें गधआतीहुई और तिस बालअवस्था में सुन्दरओठ और मुख दीखताहै ६ और जैसे भौरोंकी पङ्क्ती से कमल की शोभालगती हो तैसे खुलीहुई चोटी के वालों से मुखकीशोभा होरही ७ व तिस भगवान् के अर्जुन कदम्बनीप कदम्ब इनके पुष्पों के माला ऐसे शोभित होनेलगे जैसे आकाश में तारागणों की शोभाहो तैसे,८ और वह शूरवीर, कालेमेघ और आकाश के समान वर्णवाले भगवान् तिस मालाकरके शोभित होतेभये ९ व कठकेसूत्र अर्थात् कठी में मोरका चदा लगारक्खा और वह वायुसे कापताहुआ इसप्रकार वनमे प्रकाशित होतेभये१० और कहीं गातेहुये और कहीं वनमें क्रीडा करतेहुये और कहीं कूदतेभये और कभी वन में पर्णवाद्य बाजे को बजातेभये ११ व कभी मधुर बीन को इच्छा से बजातेभये और कभी गौओंकी प्रसन्नताकेवास्ते वनमें वशीबजानेलगे १२ इस प्रकार वह बाजे बजानेवाले प्रभुकृष्ण गोकुल में रमणीक और विचित्र वन की पङ्क्तियों में रमण करनेलगे १३ व जहा मेघके शब्द से प्रफुल्लितहुये और मदसे दीप्तहुये ऐसे श्रेष्ठ मयूरशब्द कररहे हैं १४ व हरीघासमें मार्गढकरहे और सापके भुड्डे जहा गद्दिनों के समान खडे १५ व नवीनजल जिन्हों में भिररहा और केशरों की नवीन गध ऐसी निकलती है जैसे बारम्बार स्त्रियामद से श्वासलेती हों १६ व जहा नवीनवायु चलरही और वृक्षों के समूह से वायुकाशब्द निकल रहा ऐसे वनकी सौम्य पङ्क्तियों में कृष्ण आनन्द को प्राप्त होताभया १७ फिर एकसमय वह गोपियों के सग तिस वनमें बड़ऊचे वृक्षको देखतेभये १८ व मेघ के समान पृथ्वी में स्थित और पत्तों से युक्त और आकाश में ऊचा और पवन से हलताहुआ १९ व नीलावर्ण और विचित्र वर्णोंवाले पक्षियों से सेवित और फल पीपसी इन्होंकरके इन्द्र के धनुषकी तरह चिमकता हुआ २० व मकान के आशाखोंवाला और लतापुष्पों से मंडित और तोफामूल और पेढोंवाला २१ व अन्यवृक्षों का राजाहो तैसे तिस देश में शुभकर्मको करताहुआ और जहा बूंद नहीं लगे और घाम नहीं लगे २२ ऐसा वह पर्व्वत के शिखर के समान भंडीर

नामवाला वड है तिस वडको देख तहां बसने के वास्ते कृष्ण प्रभु इच्छा करते भये २३ फिर पापसेरहित वे कृष्ण बराबरकी अवस्थावाले गोपालों के संग एक दिनतक रमण करतेभये जैसे पहिले स्वर्ग में रमण करते तैसे २४ पश्चात् तहां भाडीर वड़केनीचे क्रीड़ा करतेहुये कृष्णकेसंग बहुतसे गोपाल वनकी वस्तुओं से खेलतेभये २५ व और कईक गोप प्रसन्नहुए गानेलगे और कईक रति में प्यार करनेवाले गोप कृष्णही का प्रशंसा गानेलगे २६ पश्चात् ऐसे वे गानेलगे तब पराक्रमवाले कृष्ण पर्णवाद्य बाजाके अंतर वंशी बजानेलगे और तूंबीकी बीन बजानेलगे २७ इसप्रकार तहां श्रीकृष्ण को रमणकिया और एकसमय गौओं को चराताहुआ श्रीकृष्ण बैलोंकरके अलंकृत यमुनाजी के तीरपै जाताभया २८ व तरङ्गरूपी कटाक्षों से कुटिल और जलसे स्पर्शहुई सुखदायक वायुवाली २९ व जलसे उपजे पुष्पोंसे चित्रितहुई और जलमें घास आदिकों से हराजलवाली और कमलके पुष्पोंसेयुक्त ३० व जलके जीवोंसेयुक्त और अन्य जलकेयुक्त और अच्छा किनारावाली और स्वादुजलवाली ३१ अथाह जलवाली वेगकरके गमन करनेवाली और जलके वेग समयमें काटेहुये वृक्षोंवाली ३२ व जुदे२ चलते हुये स्रोत जिसमें चरणों के समानहैं और जलके आवर्त्त तिसमें नाभिकेसमान मालूमहोते हैं ३३ व जिसमें कीचड़ रोमोंकेसमान दीखती है और जहां हंस और काककी चूंचसरीखे चूंचवाला कारडवपक्षी, सारस इन्होंका शब्द होरहा है ३४ व आपस में जोड़ासमेत विचरनेवाले जीव जोड़ासे विचर रहे और बीचमें तट उदरकेसमान मालूमहोरहा ३५ और कांतिवाली और तरङ्गरूप त्रिवलीदीखती है और चकवा चकवी तट पै युक्तहोरहे हैं और जिसके तीरका विस्तार पत्तलीकी तरह दीखताहै ३६ व और बहुतसे उठेहुए झाग और हंस हसनेकी जगह मालूम होते हैं ३७ व लालकमल यमुनाजी के ओठ मालूमहोते हैं और कमल नेत्रों सरीखे प्रतीत होते हैं ३८ व बड़ाह्रद अर्थात् गहरजल मस्तक के समान और शिवाल बालोंकी जगह प्रतीत होती है और बड़े स्रोत भुजाकी तरह प्रतीत होते हैं और जिसका आभोग श्रवणोंकी तरह मालूम होते हैं ३९ व किनारे पै उपजे घास आदि गहने प्रतीतहोते हैं और मच्छी आदिकों की तागड़ी प्रतीत होती है ४० और चंचल चलतीहुई छोटीर नौका वस्त्रोंकी जगह प्रतीतहोती है और कारण्डव पक्षियों करके कुण्डल होरहा है ४१ व प्रकाशित पुष्पों के वस्त्र प्रतीत

होते हैं और हंस लक्षणोंवाली है और नाकूआदि जीवोंकरके बढ़ाहुआ शरीर वाली है ४२ व कछुआके लक्षणों से भूषित है और जिसमें श्वापदआदि बनके जीव जलपीरहे और मनुष्य जिसका जल पीते चूची पीवते हुओंकी तरह मालूम होते हैं ४३ व श्वापदआदि जीवों से उच्छिष्ट जलवाली है और आश्रमों के स्थानों से युक्त ऐसीसमुद्रकी स्त्री तिस यमुनाजीको श्रीकृष्ण देखतेभये ४४ व तहा यमुनाको शोभित करतेहुए विचरनेलगे और इसप्रकार तिसको देखते हुए भगवान् ४५ उत्तमह्रद और चारकोश में विस्तारवाला और देवताओं से भी दुस्तर और गम्भीर और अचल समुद्रकी तरह निष्कम्प ४६ व जलमें होने वाले जीवों से रहित और अगाध जलसे पूर्ण मेघसे अम्बर के समान ४७ व दुःखसे जहां प्राप्तहुआ जावे और बहुत से सर्पों से युक्त और विषरूपी धूमा से वेष्टित ४८ व पशुओं के पीनेलायक नहीं और मनुष्यों के पीनेलायक नहीं ऐसा वह जलहै ४९ व जिसके ऊपर पक्षियों से आकाश में उड़ा नहीं जाताहै और तृणोंपै भी वह जल गिरजावे तो तेजसे जलजाते हैं ५० व चारोंतरफसे ४ चारकोश में तिसका विस्तार है और विषरूपी घोरअग्नि से जलताहुआ जल है ५१ व व्रज से उत्तरदिशा में एककोशतक रोगसे रहित स्थान है और आगे तिसका रोगहै ऐसे तिस बड़े अगाध जल को देख के श्रीकृष्ण चिंतवन करने लगे ५२ कि यह अगाधजल किसकरके प्रकाशमान होरहा है और इस जगह नीलेअंजन के समान वर्णवाला ५३ व साक्षात् सर्पोंका अधिपति और दारुण ऐसा कालियसर्प रहताहै क्योंकि जो पहले सागरमें वास कियाकरता सो मुझ को जानलिया था ५४ व सर्पोंको खानेवाला गरुड़के भयसे यहा स्थित है और उसीने ये सब यमुनाके किनारे बिगार रक्खे हैं ५५ व डरताहुआ गरुड़की यहा आनेकी गम्य नहीं है और यह दारुणवन और तृणों से युक्त ५६ व वृक्ष व लता आदिकों से युक्त इस सर्पराज के वनमें विचरनेवाले मन्त्रियों से रक्षित है ५७ व निर्विषके आकार यह वन विषवाले अन्नकी तरह दुःस्पर्श होरहाहै और तिन सर्पादिकोंसे रक्षित हुआ यह वनहै ५८ और शिवालसे मैलेहुए वृक्ष और लता से युक्तहै तिनकरके दोनों किनारे प्रकाशमान होरहेहैं ५९ इस वास्ते इस सर्पराजका मुझको निग्रहकरना चाहिये कि जिससे नदी का जल श्रेष्ठ होजावे ६० और इसनागके दमनकरने से सब व्रजको मानने लायक जल होजायगा और

सब जगह सुखका मचार होजायगा ६१ और इसीवास्ते मेराब्रजमें वासहै औ गोपों में जन्महै सो इन खोटी आत्मावालोंका दमन करनाचाहिये ६२ और इस कदम्बपै चढ़के बाललीला मे इस घोर ह्रद में कूद के इस कालियसर्पको दमन करूंगा ६३ इसप्रकार करनेसे बहुतपराक्रम और संसार ख्यातिको प्राप्तहूंगा६४॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांकालियह्रददर्शने अष्टषष्टितमोऽध्याय ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

फिर श्रीकृष्ण कड़गतावाघ और कदम्बके वृक्षपैचढ़ और कदम्बकी शिखा पै १ काले मेघ के समान और कमल सरीखे नेत्रोंवाले ऐसे चंचल श्रीकृष्ण प्राप्तहो तिस यमुनाके ह्रदमें कूदके शब्द करतेभये २ पश्चात् श्रीकृष्णके कूदने से चलहुआ यमुना का ह्रद वेगमे बद्दल की तरह फटताभया ३ फिर तिस शब्द से सर्पकाभवन क्षुभित होनाभया और रोषमे व्याकुल नेत्रोंवाला सर्प जल से निकलताभया और वह सर्पोंकापति क्रोधमें प्राप्तहुआ ४ और मेघके समान वर्णवाला और लालनेत्रोंवाला ऐसा कालिय दीखता भया ५ और पांचमुखों वाला और श्वास से जीभको निकालताभया और अग्निके समान मुखवाला और बड़े २ पांचशिरोंको हलाताहुआ ६ और अपने शरीरकी अग्निसे सारे ह्रद को पूर्णकरताहुआ और क्रोधमें फूकारकरताहुआ और तेजमे जलताहुआ ७ ऐसा तिस कालियके क्रोधमे वह पानी जलने लगगया और सारीसर यमुना बहती मालूमहोनेलगी ८ व तिसके क्रोधरूप अग्नि से पूर्णहुये मुखों से वायु निकलतीभई ऐसा वह कालिय सर्प बालक लीला से यमुना में खेलतेहुये ९ तिस कृष्णको देखताभया फिर तिसको देखके तिस सर्पराजके मुखमें धुमानरीला श्वास निकलनेलगा और तिसके रोषसे निकलीहुई अग्निसे तीरके वृक्ष क्षण में भस्महोगये १० और युगके अन्तसरीखी तेज वह अग्नि निकलतीभई और तिस सर्पके पुत्र और स्त्री भृत्य अन्यसर्प ११ ये भी सब घोररूप और विषसे उपजी और धुवांसहित ऐसी अग्नि निकालतेभये १२ व पश्चात् तिस सर्पों करके पर्य्येगितहुआ श्रीकृष्ण निश्चल पैरोंको करके पर्वतकी तरह अचल स्थित होताभया १३ फिर वह सर्प तीक्ष्ण दांतोंसे और विषके जलमें कृष्णको पीड़ा

देताहुआ काटनेलगा परन्तु श्रीकृष्णको वे अन्य सर्पभी नहीं मारसके १४ व
वह पराक्रमवाला सर्पभी नहीं मारसका और फिर इस कालके अन्तर डरतेहुये
और रोतेहुये वे सब गोपाल व्रजमें आवतेभये १५ गोप कहनेलगे श्रीकृष्ण तो
मोहको प्राप्तहोके कालियह्रदमें कूदपडा और उसको वह सर्प भक्षण कर रहाहै
सो तुम जल्दआवो देर मतकरो १६ व बलवाले नन्दगोपको खबरकरो कि वह
तेरा पुत्र महाह्रद में सांपसे कटरहा है १७ इसप्रकार कहनेलगे फिर इस वज्रके
समान वचनको नन्दगोप सुनके पीडितहुआ और बलहीनहुआ तिस यमुना
के ह्रदपै जाताभया १८ व बालक अवस्थावाले और जवान अवस्थावाले और
वृद्धअवस्थावाले व्रजके मनुष्य और बलदेव तहा जल में स्थित सर्पके स्थान
को प्राप्त होताभया १९ व लज्जितहुये और आश्चर्य करतेहुये वारम्वार शोकसे
पीड़ितहुये ऐसे अनेक गोप आवतेभये २० व कईक हे पुत्र हाहा हमारे जीवन
को धिकारहै ऐसे कहनेलगे २१ और वे सब नन्दआदि गोप आशुवोंसे भरेहुये
नेत्रवाले हाहाशब्द करतेहुये तिस यमुनाकेतीर खड़े होगये व अन्य कई गोप
हा हम मरगये ऐसे वारम्वार रोने लगगये २२ और स्त्रिया यशोदाको ऐसे क-
हती हैं कि हा तू मरगई व जो तू प्रियपुत्रको सर्पराजके वशमें देखेहै और सर्प
के शरीर से खिंचरहा है जैसे हिरण तडफता हो तैसे २३ और हे यशोदे तेरा
यह हृदा हमको पत्थर के समान दीखताहै और हे यशोदे इस पुत्रको देखके तू
कैसे दुःख नहींपाती है २४ और हम नन्दगोपको वडा दुःखिनदेखरहेहैं क्योंकि
यह पुत्रके मुख विषे अचेतनकी तरह दृष्टी देरहाहै २५ ऐसे वे गोपिया कहके
और यशोदाके पीछे गमन करतीभई यह कहनेलगीं कि इस कृष्णकेविना हम
घरको नहीं जायँगी किन्तु यमुना में डूबेंगी २६ व सूर्यके विना क्यादिनहै और
चन्द्रमाके विना क्यारात्रिहै व वच्छा के विना क्या गौहै व कृष्णके विना क्या
व्रजहै २७ इसवास्ते इसकृष्णके विना हम नहीं जीवेंगी जैसे वच्छाके विनागौ
तैसे इसप्रकार तिन गोपियोंका विलाप सुनके और तिनगोपोंका विलापसुनके
२८ व नन्दगोपका विलाप सुनके और यशोदा का रोनासुनके एक गात्र और
शरीरको जाननेवाला और एक देहवाला दूसरीजगह मालूम होताहुआ ऐसा
बलदेव २९ तिस अविनाशी कृष्णके प्रति क्रोधसे यह कहनेलगा हे कृष्ण हे म-
हावाहो हे गोपियोंको आनन्द वढ़ानेवाला ३० विषके आयुधवाले इससर्पराज

सब जगह सुखका सचार होजायगा ६१ और इसीवास्ते मेराव्रजमें वासहै और गोपोंमें जन्महै सो इन खोटी आत्मावालोंका दमन करनाचाहिये ६२ और इस कदम्बपै चढके बाललीला से इस घोर ह्रद में कूद के इस कालियसर्पको दमन करूंगा ६३ इसप्रकार करनेसे बहुतपराक्रम और ससार ख्यातिको प्राप्तहूंगा६४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांकालियह्रददर्शने अष्टषष्टितमोऽध्याय ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

फिर श्रीकृष्ण कडगतावाध और कदम्बके वृक्षपैचढ़ और कदम्बकी शिखा पै १ काले मेघ के समान और कमल सरीखे नेत्रोंवाले ऐसे चंचल श्रीकृष्ण प्राप्तहो तिस यमुनाके ह्रदमें कूदके शब्द करतेभये २ पश्चात् श्रीकृष्णके कूदने से चंचलहुआ यमुनाका ह्रद वेगसे बद्दलकी तरह फटताभया ३ फिर तिस शब्द से सर्पकाभवन क्षुभित होताभया और रोपसे व्याकुल नेत्रोंवाला सर्प जल से निकलता भया और वह सर्पोंकापति क्रोध में प्राप्तहुआ ४ और मेघके समान वर्णवाला और लालनेत्रोंवाला ऐसा कालिय दीखता भया ५ और पांचमुखों वाला और स्वास से जीभको निकालताभया और अग्निके समान मुखवाला और बड़े २ पांचशिरोंको हलाताहुआ ६ और अपने शरीरकी अग्निसे सारेह्रद को पूर्णकरताहुआ और क्रोधसे फूंकार करताहुआ और तेजसे जलताहुआ ७ ऐसा तिस कालियके क्रोधसे वह पानी जलने लगगया और सोतोंकर यमुना डरती मालूमहोनेलगी ८ व तिसके क्रोधरूप अग्नि से पूर्णहुये मुखों से वायु निकलतीभई ऐसा वह कालिय सर्प्प बालक लीला से यमुना में खेलतेहुये ९ तिस कृष्णको देखताभया फिर तिसको देखके तिस सर्पराजके मुखसे धुवांस- रीखा स्वास निकलनेलगा और तिसके रोपसे निकलीहुई अग्निसे तीरके वृक्ष क्षण में भस्महोगये १० और युगके अन्तसरीखी तेज वह अग्नि निकसतीभई और तिस सर्प्पके पुत्र और स्त्री भृत्य अन्यसर्प ११ ये भी सब घोररूप और विष से उपजी और धुवांसहित ऐसी अग्नि निकालतेभये १२ व पश्चात् तिस सर्पों करके प्रवेशितहुआ श्रीकृष्ण निश्चल पैरोंको करके पर्वतकी तरह अचल स्थित होताभया १३ फिर वह सर्प्प तीक्ष्ण दांतोंसे और विषके जलसे कृष्णको पीड़ा

सत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे जब कृष्णने यमुनाकेह्रदमें सर्पराज दमन करदिया पश्चात् तिसीदेशमें कृष्ण व वलदेव सगविचरतेभये १ और वे दोनों गौके सग गौओंके पालीहुई रमणीक गोवर्द्धनपर्वतपै आतेभये २ व गोवर्द्धनपर्व्वतसे उत्तर दिशामें यमुनाकेकिनारेपै रमणीक तालवनको देखतेभये ३ और वे दोनों ताड के पत्तोंका जिसमें शब्दहोरहा ऐसे रमणीक तालवनमें परम प्रीतिसे गौओं के वच्छोंकी तरह विचरतेभये ४ व वह देश स्निग्धहै और काली मृत्तिकावाला है और जहा थली है व विशेषकरके जहा डाभहै व रोडा पत्थर आदिसे रहितहै ५ व ऊंचे २ शाखावाले व श्याम पोरियोंवाले और फल से आद्यभाग युक्तवाले ऐसे हाथी के समान ऊचे ६ ताडके वृक्षोंकरके तिस वनकी शोभा होरही है ऐसे तिस वन में श्रीकृष्ण दामोदर वचन कहनेलगे अहोताडके पकेहुये फलोंकरके यह वनकी स्थली वासकरने लायकहै ७ व स्वाद व सुगन्धवाले व श्यामवर्ण के व रसवाले ऐसे ताडके फलों को हम दोनों तोडेंगे ८ व जो इन्होंकी ऐसी मधुर और नासिकाको तृप्त करनेवाली गन्ध है तो ये अमृतके समान रसवाले होंगे ऐसे मेरीमतिहै ९ इसप्रकार कृष्णका वचन सुनके वलदेव हँसताहुवा पके हुये ताड़के फलोंको तोड़ताहुवा व तिन वृक्षोंकोभी चलायमान करनेलगा १० व यह तालवन मनुष्योंके सेवनेलायक नहीं है यह राक्षसोंके स्थानके सदृशहै ११ व यहा दारुण व गधाके रूपवाला ऐसा धेनुकदैत्य गर्द्दभों के समूहसे युक्तहुवा विचरताहै १२ व तिसघोर तालवनकी रक्षाकरताहै व अतिअभिमानवाला यह दैत्य मनुष्य पक्षी श्वापद जीव इन्हों को त्रास देनेवाला है १३ ऐसा यह दैत्य ताडका फल तोडनेका शब्द सुनके क्रोध करता हुवा जैसे हाथी चिंघाड़ गारताहो तैसे १४ व पश्चात् शब्दके अनुसार क्रोधकरके अभिमानवाला व हींसने में चतुर व नेत्रको फाडेहुये खुरोंकरके पृथ्वीको पाड़नेलगा १५ व कालकीतरह मुख फाड़े व पूंछको खडी कियेहुये तिस रोहिणी के पुत्र वलदेवके प्रति पडता हुवा देखनेलगा १६ व ताडके वृक्षोंको नीचे गिरेहुये देखके पश्चात् वह दुष्ट खर शस्त्रसे रहित वलदेवके प्रति जाडोंको फाड़के पाड़ने को आता १७ व पिछले पैरोंसे उलटा होके छाती में दुलत्ता मारताभया १८ फिर तिसीके पैरों को पकड

को तू दमनकर और हे विभो यह हमारे बांधव तुझको मनुष्य जानके ३१ वे
सब करुणासे विलापकररहेहैं ऐसे तिस रोहिणी के पुत्रके वचनको सुनके ३२ श्र
श्रीकृष्ण क्रीडासे तिस सर्पकी भुजाओंको छेदन करताभया और तिसके गा
शरीरको अपने पैरोंसे जलमें इकट्ठाकरके ३३ और अपने हाथोंसे तिसके शिरों
पैंगेर पश्चात् तिसके विचले शिरपै स्थितहोके रुचिर आभूषणवाले वह श्रीकृष्ण
३४ नृत्यकरनेलगे पश्चात् कृष्णकरके मर्द्दनकियाहुआ तिससर्पके मुखोंसे रुधि
निकलनेलगा ३५ फिर कातरहुआ यह वचनबोला कि हे कृष्ण यह क्रोध मु
झको विनाजाने हुआ ३६ और हे सुन्दर मुखवाले कृष्ण मैंने तुमको दमदिया
और तुम्हारे वशमें होगया सो तुम आज्ञादेवो कि स्त्री व सन्तान व बांधव इन्हों
वाला मैं क्याकरूं ३७ और मैं किसके वशमें प्राप्तहोऊं और आप मुझको जीव
दानदेवो इसप्रकार कहनेसे फिर पांचमुखवाले सर्पको देखके गरुड़ध्वज भगवान्
३८ क्रोधसे रहितहुये और तिस सर्पसे यह बोले कि तुझको इस यमुनाके जल
में मैं स्थान नहीं देऊंगा ३९ तू अपने कुटुम्बसमेत समुद्रके जलमेंजा और जो
फिर इसस्थल में अथवा जलमें ४० तेरा भृत्य अथवा पुत्र मुझको दीखेगा तो
उसको मैं मारदेऊंगा और इस जलको सुखहो और तू समुद्रको जा ४१ और इस
स्थानमें तेरे रहनेसे महान् दोषहै और हे सर्प समुद्रविषे तेरे मस्तकपै गरुड़ मेरे
पैरोंके चिह्नोंको देखके सर्पोंका वैरी यह तुझको नहीं मारेगा ४२ ऐसे मस्तकपै
तिस भगवान् के वचन वह सर्प्प ग्रहणकरके गोपोंके देखतेहुये तिस यमुना के
ह्रदसे जाताभया ४३ और निर्जितहुआ वहसर्प जब चलागया तब विस्मितहुये
वे गोप ४४ नन्दगोपकी प्रदक्षिणा करनेलगे और वनमें विचरनेवाले वे गोप प्र
सन्नहुये नन्दगोपसे यह कहनेलगे ४५ हे अनघ तुझको धन्यहै जो कि तेरा ऐसा
पुत्रहै और अनसेलेके गोपोंको और गौओं के ठानको ४६ जोकुछ विपत्तिहोवेगी
तिसके रक्षक कमलसरीखे नेत्रोंवाले प्रभु कृष्णहैं और कृष्णको ऐसे करदिया तो
मुनियोंकरके सेवित यमुनाका जल सुन्दरहोगया ४७ और इसयमुना के तीरपै
सुखसे गौ विचरेंगी और हमको सदासुख होवेगा और हम इस वनमें प्रकटहो
गये क्योंकि ऐसा कृष्ण यहां है ४८ और इसको हम नहीं जानतेहैं जैसे ढकीहुई
अग्नी को इसप्रकार विस्मितहुये वे सब गोप कृष्णकी स्तुति करते हुये अपने
व्रजमें जातेगये जैसे चैत्ररथ वनमें देवता जाते तैसे ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वणिबालचरितेकालीयदमनेऊनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे जब कृष्णने यमुनाकेह्रदमें सर्पगज दमन करदिया पश्चात् तिसीदेशमें कृष्ण व बलदेव सगविचरतेभये १ और वे दोनों गौंके सग गौओंके पालीहुई रमणीक गोवर्द्धनपर्वतपै आतेभये २ व गोवर्द्धनपर्वतसे उत्तर दिशामें यमुनाकेकिनारेपै रमणीक तालवनको देखतेभये ३ औरवे दोनों ताड़ के पत्तोंका जिसमें शब्दहोरहा ऐसे रमणीक तालवनमें परम प्रीतिसे गौओं के वच्छोंकी तरह विचरतेभये ४ व वह देश स्निग्धहै और काली मृत्तिकावाला है और जहा थली है व विशेषकरके जहा डाभहै व रोडा पत्थर आदिसे रहितहै ५ व ऊचे २ शाखावाले व श्याम पोरियोंवाले और फल से आद्यभाग युक्तवाले ऐसे हाथी के समान ऊचे ६ ताडके वृक्षोंकरके तिस वनकी शोभा होरही है ऐसे तिस वन में श्रीकृष्ण दामोदर वचन कहनेलगे अहोताडके पकेहुये फलोंकरके यह वनकी स्थली वासकरने लायकहै ७ व स्वाद व सुगन्धवाले व श्यामवर्ण के व रसवाले ऐसे ताडके फलों को हम दोनों तोडेंगे ८ व जो इन्होंकी ऐसी मधुर और नासिकाको तृप्त करनेवाली गन्ध है तो ये अमृतके समान रसवाले होंगे ऐसे मेरीमतिहै ९ इसप्रकार कृष्णका वचन सुनके बलदेव हँसताहुवा पके हुये ताडके फलोंको तोड़ताहुवा व तिन वृक्षोंकोभी चलायमान करनेलगा १० व यह तालवन मनुष्योंकेसेवनेलायक नहीं है यह राक्षसोंके स्थानके सदृशहै ११ व यहा दारुण व गधाके रूपवाला ऐसा धेनुकदैत्य गर्दभों के समूहमे युक्तहुवा विचरताहै १२ व तिमघोर तालवनकी रक्षाकरताहै व अतिअभिमानवाला यह दैत्य मनुष्य पक्षी श्वापद जीव इन्हों को त्रास देनेवाला है १३ ऐसा यह दैत्य ताडका फल तोड़नेका शब्द सुनके क्रोध करता हुवा जैसे हाथी चिंघाड़ मारताहो तैसे १४ व पश्चात् शब्दके अनुसार क्रोधकरके अभिमानवाला व दौंमने में चतुर व नेत्रको फाड़ेहुये खुरोंकरके पृथ्वीको पाड़नेलगा १५ व कालकीतरह मुख फाड़ व पूंछको खड़ी कियेहुये तिस रोहिणी के पुत्र बलदेवके प्रति पड़ता हुवा देखनेलगा १६ व ताड़के वृक्षोंको नीचे गिरेहुये देखके पश्चात् वह दुष्ट गर्दभ शस्त्रसे रहित बलदेवके प्रति जाड़ोंको फाड़के पाड़ने को आया १७ व पिछले पैरोंसे उलटा होके छाती में दुलत्ता मारताभया १८ फिर तिसके पैरों को पकड़

के तिस गर्दभ दैत्यको ताड़वृक्षमें पटकके बलदेवजी मारतेभये १६ पश्चात् कटि हुई जाघ व ग्रीवा व पीठ ऐसा वह खोटी आकृतिवाला दैत्य ताड़वृक्षों के फलों समेत पृथ्वीतलमें पड़ताभया २० फिर तिसके पृथ्वी में गिरनेसे प्राण निकलगये व पश्चात् तिसकी जाति के अन्य दैत्यों को भी वह बलदेव मारता भया २१ फिर वह पृथ्वी गर्दभोंकी देहसे व पकेहुये व पृथ्वी में गिरेहुये ऐसे ताड़के फलों से ऐसी शोभायमान हुई जैसे ढकेहुये मेघोंसे आकाशकी शोभाहोवे तैसे २२ व इसप्रकार अनुचरों सहित जब वह गर्दभदैत्य मारागया तब वह रमणीक तालवन बहुत शोभित हुवा २३ व भय से रहित व शोभावाला ऐसे तिस उत्तम तालवनमें सुखसे गौवें चरनेलगीं २४ फिर वे वनचारी गोप प्रसन्न मनवाले शोक भयसे रहित तिस वनमें अच्छीतरह विचरनेलगे २५ पश्चात् जब सुखसे गौवें विचरने लगीं तब हाथियों सरीखे बलवाले कृष्ण व बलदेव दोनों वृक्षोंके पत्तोंके आसन बनाके यथेष्ट बैठतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांशिशुचर्य्यायांधेनुकवधेसप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

एकहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे इससे अनन्तर आनन्दवाले वे दोनों वसुदेव के पुत्र तिस तालवन को छोड़के फिर भण्डीर वटके समीप आवतेभये १ व श्रेष्ठ मुखवाले ये दोनों बहुतसी बढ़ीहुई गौओंको चरातेहुये व बढ़ेहुये घासपे बैठेहुये तिस वनको देखरहे २ व कूदते हुये व गाते हुये व वृक्षोंको देखते हुये व वृक्षों के नाम लेते हुये ऐसे वे दोनों बलदेव व कृष्ण बच्छों समेत गौओं को चराने लगे ३ व श्रेष्ठ लक्षणोंवाले वेदोनों आपसमें कन्धोंपर हाथ रक्खे हुये व वनके पुष्पों की मालासे छानी की ऐसी शोभा भई कि जैसे बालक बच्छाके पहिले छोटे २ सींग आवैं तिनकी शोभा होवे तैसे ४ व कृष्ण तो बलदेवके वर्ण सरीखे पीले वस्त्रोंको धारण कररहे और बलदेव कृष्ण सरीखे नीले वस्त्रोंको धारण कररहे ऐसे तिन दोनोंकी ऐसी शोभाभई जैसे इन्द्रके धनुष्करके सफेद व काले वर्णवाले मेघ शोभायमान होवें तैसे ५ व तीक्ष्ण २ पुष्पोंको धारण करतेहुये व तदा वनमार्ग में वे दोनों वनकी वस्तुओं से अपना वेष धारण करते भये ६ व गोपालों करके सहित वे दोनों गोवर्द्धनपर्वत में लोकमें प्रसिद्ध होनेवाली क्री-

डाओं को करतेभये ७ इसप्रकार देवतों से पूजित वे दोनों मनुष्य दीक्षाको प्राप्त हुये व तिन गोपोंकी जातिके गुणों में युक्तहुये अनेकप्रकारकी क्रीडाओं करके वनमें विचरतेभये ८ पश्चात् क्रीडाकरतेहुये वे दोनों बहुतसी शाखावाले व वृक्षों में श्रेष्ठ ऐसे भंडीरनामवाले बडकेनीचे क्रीडाकरनेलगे ९ व तहां आपसमें गोदीलेलेके व युद्धकरतेहुये व पत्थरके टुकडे वगातेहुये व आपसमें कसरत करते हुये १० ऐसे अनेक गोपालों के सग युद्धके मार्गोंकी तरह सिंह सरीखे पराक्रमवाले वे दोनों विचरते भये ११ इसप्रकार तिनके खेलते हुये तिनको मारने के वास्ते छिद्र ढूंढताहुआ प्रलम्ब नामवाला दैत्य आताभया १२ व वह गोपाल वेषको धारणकरके व वनके पुष्पोंका आभूषण करके तिन दोनों वीरोंको लुभाता हुआ व हास्य कराताहुआ १३ व शंकासे रहित व मनुष्य शरीरको धारणकिये ऐसा प्रलम्बदानव तिनमें आवताभया १४ तब खेलतेहुये वे गोप गोपशरीरको धारण कियेहुये तिसको अपनी जातिका मानतेभये १५ व वह प्रलम्बदैत्य छिद्र देखताहुआ कृष्ण विषे व बलदेव विषे दारुण दृष्टि देनेलगा १६ फिर कृष्ण के पराक्रमको नहीं सहने लायक जानके बलदेवके मारने में यत्न करताभया १७ व जिससमय कृष्णको बालकोंको खेलनेकी आज्ञादई तब वे सबगोप दो दो इकट्ठेहोके एकबार कूदतेभये १८ व कृष्ण तो श्रीदामा गोपके सग कूदे व बलदेव प्रलम्बदैत्य के सग १९ व इसीतरह दो दो युक्तहुये अन्य गोपाल कूदतेभये २० फिर श्रीदामाको कृष्ण जीततेभये व प्रलम्बको बलदेव जीततेभये पश्चात् कृष्ण के पक्षवाले गोपों ने अन्य पक्षके गोप जीतलिये २१ व वे भाजतेहुये सब जल्दी से भंडीरबडके पेडको पकडके फिर अपनी मर्यादामें आवतेभये २२ इसप्रकार वे गोप तो क्रीडामें रतथे व वह प्रलम्बदैत्य जल्दी से बलदेवको अपने कांधेपै बैठाके विमुखहुआ भाजगया जैसे मेघ चन्द्रमाको ढकले २३ । २४ फिर बलदेव ने ऐसा भारबढ़ाया कि तिस दैत्यसे नहीं सहागया फिर वह दैत्य ऐसे अपनी काया बढ़ानेलगा जैसे मेघ २५ व भंडीरवृक्षके समीप व अंजन के पर्वत के समान ऐसे रूपको प्रलम्बासुर दिखाताभया २६ व पुष्पगुच्छों से संयुक्त व सूर्य के समान तेजवाला ऐसे प्रकाशमान हुआ जैसे सूर्य से ढकाहुआ मेघ २७ व बड़ामुख व बड़ीग्रीवा व कालके समान भयकर व गेंद व गाडीके चक्र के समान नेत्रवाला व पृथ्वीको नवाताहुआ २८ माला तगड़ीआदि से लम्बे भूषणोंवाला

व लम्बे कपड़ों से भूषित ऐसा प्रलम्ब धीरे२ चलनेलगा २६ इसप्रकार वेगकरके
वह असुर बलदेवको हरके लेगया जैसे अन्तसमयमें सबलोकों को समुद्र ह
देताहै ३० व इसप्रकार जब प्रलम्बदैत्यने बलदेवको हरलिया तब शोभित हो
लगा जैसे मेघकरके चन्द्रमा हलको पाजाताहै ३१ ऐसे हलको लिया तब
बलदेव अपनी आत्माको कछु सदिग्धकी तरह माननेलगा व दैत्यके कांधे
चढ़ा कृष्णके प्रति यह बोलनेलगा ३२ हे कृष्ण पर्वतके समान शरीरवाले इ
दैत्यको मनुष्यरूपी माया दिखाके मैं हरलियाहूं ३३ सो इस दुष्टचित्तवाले ब
ढनेवाले व गर्व से दूना तेजवाले ऐसे प्रलम्बदैत्य को मुझको शिक्षादेनी च
हिये ३४ ऐसे श्रीकृष्ण सुनके तिसके प्रति हँसताहुआ सामभाव से बोला
बलदेवके वृत्तान्तको व बल को जानगया ३५ फिर यहकहा कि हे बलदेव य
मनुष्यगात्र हमको प्रकट करसक्ताहै क्योंकि जगन्मय तू गुप्तसे भी गुप्तहोरहा
है ३६ व लोकों के विपर्यय विषे जो अपना नारायणरूपी शरीर बनाताहै ति
सका स्मरणकर व समुद्रों के समागममें जो अपना शरीर प्रकट होताहै तिसको
यादकर ३७ व पुरातन देवतों का और ब्रह्मा का और जल का और अपनी
आत्मा का प्रवर्त्त करनेवाला शरीर को तू स्मरणकर ३८ व आकाश शिर व
जल तेरीमूर्त्ति व पृथ्वी क्षमा व अग्निमुख व लोकोंकीवायु श्वास व मनब्रह्मा ३९
व हजार मुख व हजार अङ्ग व हजार चरण व हजारों पद्मनाभिवाला व हजारों
किरणों को धारण करनेवाला व शत्रुओंको जीतनेवाला ४० ऐसा तेरा जो रूप
संसारमें कहाहै तिसको सब देवता देखे हैं तिस तेरे रूपके ढूढ़नेको कौन समर्थ
है ४१ व जो इस संसारमें जानने योग्यको तूही जानताहै अर्थात् तूने कहा है
और जो तुझको जानलिया है उसको देवता भी नहीं जानते हैं ४२ व आत्मा
से उत्पन्न हुआ तेरे शरीर को आत्मा में नहीं देखते हैं किन्तु तेरे कृत्रिमरूप को
देवता पूजते हैं ४३ व देवतों ने तेरा अन्त नहीं देखा इसवास्ते तुझको अनन्त
कहते हैं व तूही सूक्ष्महै व महान् है व एकहै व सूक्ष्मोंकरके भी दुरासदहै ४४ व
तेरे एक थम्भरूप के आश्रय यह पृथ्वी स्थितहै व सब प्राणियों की योनि यह
पृथ्वी अचलहुई जगत्को धारण कररही है ४५ व चतु सागर के भोगनेवाला
है व तू चारवर्णोंका विभाग करनेवालाहै व चारयुगोंका ईश व सनातन किया
हुआ चातुर्होत्र के फलको भोगनेवाला है ४६ व हे बलदेव जिसतरह संसार में

में हू ऐसेही तूहे यह मेरा मतहे व हमदोनों एक शरीरवाले हे परन्तु ससार के वास्ते दो शरीर करहे हें ४७ व में तो निरन्तर कृष्णहू और तू पुरातनशेप हे व अपने वलकरके त्रिलोकी के वीचमें रहनेवाला है ४८ व निरन्तर ससार का देवहे व सनातन शेपहे व हमारे देह मात्रकरके यह ससार धारण होरहा है ४६ व जो मैंहू सो तूहे व तूहे सो मैंहू हमारे दोनों के एक देह हैं ५० सो इसवास्ते तू मूढ़की तरह किसतरह खडाहै और हे देव वज्रसरीखी मुष्टीकरके व वलकरके देवतों का वैरी इस दानवको मार ५१ वैशम्पायनजी कहनेलगे जव इसप्रकार कृष्णने स्मरण करवाया तव त्रिलोकी में रहनेवाला ५२ वलकरके तिस प्रलम्ब दैत्यको वज्रसरीखी मूठीकरके वलदेवजी ताडना देतेभये ५३। ५४ व गोडोंकर के दावतेभये और शिरमें मारतेभये पश्चात् तिस दैत्यका शरीर खण्डकर पृथ्वीमें पडताभया जैसे वादल फटजावे तैसे ५५ व फिर तिसके शरीरसे वहुतसा रुधिर निकसताभया जैसे गेरूका मिलाहुआ पर्वतसे पानीनिकले तैसे ५६ इसप्रकार वलदेवजी तिस दैत्यको मारके कृष्णकेसमीपमें आमिलतेभये ५७ व फिर कृष्ण व गोप और स्वर्ग में रहनेवाले देवते ये सव जय आशीर्वादों करके वलदेवकी स्तुति करनेलगे ५८ व देवते यह कहनेलगे कि वलकरके इसको यह दैत्य मारा इसवास्ते इसका वलदेव ऐसानामहै ५६ पीछे पृथ्वी में रहनेवाले मनुष्य देवतों से भी दुरासद तिसदैत्यके मारने से वलदेवके वलको जानतेभये ६०॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांशिशुचर्यायां प्रलम्बवधेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥

वहत्तरवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे इसप्रकार वलदेव व कृष्ण जव प्रवृत्त होगये और वनमें विचरतेहुये फिर एक समय दो महीने वर्षा के व्यतीत होगये १ तव एक समय व्रजमें वनसे आवतेभये और तहां शक्र अर्थात् इन्द्रादिकनको आयेहुओं को और उत्सवकी लालसावाले गोपोंको सुनतेभये २ फिर श्रीकृष्ण आश्चर्य करके गोपोंके प्रति यह वचन वोला कि यहां शक्रके नामवाला कौनहै जिसने तुमको आनन्दितकिया ३ फिर ऐसा सुनके एक वृद्ध गोप वोला कि हे पुत्र शक्र अर्थात् इन्द्रकी ध्वजाका हम आजकेदिन नित्यनाम्ने पूजनकरतेहैं सोतू सुन ४

इन्द्र देवताओंका और मेघोंका मालिकहै इसवास्ते तिसका यह हम उत्सवकरते हैं ५ व तिसीकरके प्रेरे हुये मेघवर्षाकरते हैं और तिसकी आज्ञा करनेवाले नए जलसे मेघ खेतीको उत्पन्न करते हैं ६ व मेघके जलका देनेवाला इन्द्रही है और प्रसन्न कियाहुआ वह इन्द्र सबजगत्को पाले है ७ व तिसीकरके खेती उपजतीहै और हम और अन्यजीव तिसीके मार्ग में वर्त्तरहे हैं, और देवताओंका पूजनकररहे हैं ८ और इसदेव इन्द्रके वर्षनेसे संसार में खेती बढ़ती है और पृथ्वी तृप्तहोने से अमृतसरीखा जगत् होजाताहै ९ और ये गौ दूधवाली होजाती हैं व बच्चों वाली भी होजाती हैं और हे पुत्र क्योंकि ये गौ तिस इन्द्रकरके तृणोंके बढ़ानेसे तृप्तहोती हैं १० व जहा मेघ वर्षते हैं तहा खेती से रहित और तृणों से रहित पृथ्वी नहीं है और कोई मनुष्य भूखा भी नहीं दीखता है ११ और इन्द्र सूर्य्य की जल वाली किरणों को दुहताहै पीछे वे किरण नवीन जलको भिराती हैं १२ और इन्द्र मेघोंके विषे वायुकरके ताड़ना करताहै तब उस वेगकरके जो शब्द होताहै तिसको मनुष्य गर्जना समझते हैं १३ इसप्रकार वायु करके युक्त मेघों को इन्द्र बढ़ाताहै जब तिन मेघोंके शब्द वृक्षोंको तोड़ने लायक वज्रके पड़ने के समान सुनते हैं १४ फिर इन्द्रके वज्रसे ताड़ितहुये वे मेघ आकाशसे जलछोड़ते हैं सो इन्द्र मेघों करके अपने भृत्योंकी तरह वर्षा करवाताहै १५ और कहीं तो मेघ घटाटोप करदेते हैं और आकाशको ढकदेते हैं और कहीं अंजनके समान काला होजाता है और कहीं जल के छोटे २ किणके वर्षाते हैं १६ इसप्रकार इन्द्र आकाशमें बद्दलों करके विश्वको मण्डित करताहै और कहीं छोटी २ फुहार वर्षाता है १७ इसप्रकार सूर्यकी किरणों से जलको वर्षाताहै और सब जीवों के सुखके वास्ते पृथ्वी में जल वर्षाताहै १८ और हे कृष्ण यह वर्षा समय इन्द्रसे होनेवाली है इसवास्ते वर्षासमय में प्रसन्न हुये सब राजा और हम और अन्य मनुष्य १९ सब उत्सवों करके इन्द्रका पूजन करते हैं २० ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांगिरियज्ञवर्णनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसे वृद्धगोप का वचन इन्द्र के पूजन विषे सुनके इन्द्रके प्रभावको जाननेवाले भी भगवान् फिर बोलतेभये १ कृष्ण कहता है कि

हम वनचर गोपहैं और सदा गौओं के धनसे जीवते हैं व गौ व पर्वत व वन ये हमारे देवजानो २ व खेती करनेवालों की खेतीही वृत्तिहै व दुकानदारों की दुकानही वृत्तिहै व हमारी परमवृत्ति गौहैं इसप्रकार ये तीनविद्याहैं ३ और जिस विद्याकरके जो युक्तहै उसका वही देवहै व उसको उसी की पूजाकरनी चाहिये क्योंकि उसका वही उपकारहै ४ व जो अन्य के फलको भोगताहुआ अन्यकी सत्क्रिया करै वह मनुष्य यहां व अन्यलोक में दोनोंजगह अनर्थको प्राप्तहोता है ५ व खेतियों का अन्त सीम प्रसिद्धहै व सीमों का अन्त वन सुनेजाते हैं व वनों के अन्त पर्वतहैं व वही हमारी परमगतिहै ६ व इस वनमें कामरूपी पर्वत सुनेजाते हैं और तिन्हों की गुफाओं ७ में तिनहीं के शरीर से उपजेहुये सिंह व्याघ्र भेड़िया आदिक रहते हैं और अपने वनों की रक्षाकरते हैं ८ व वन के छेदनवालोंको त्रासदेते हैं और वनमें रहनेवाले जो इन्होंका तिरस्कार करें तो तिन खोटे वृत्तान्तोंवालों को राक्षस कर्म करके मारदेते हैं ९ व ब्राह्मण तो मन्त्र यज्ञमें तत्परहैं व खेती करनेवाले हलके यज्ञमें तत्परहैं व हम गोप गिरियज्ञमें तत्पर हैं इसवास्ते हमको वनमें इस गोवर्द्धनपर्वतका पूजन करना चाहिये १० और हे गोपो मुझको यह अच्छालगताहै कि गिरि अर्थात् पर्वतकी यज्ञकरो व किसी स्थानमें अथवा वृक्षके नीचे अथवा पर्व्वतमें ११ सुखसे कर्म करके और यज्ञ लायक पवित्र पशुओंको हननकरके और दो यज्ञोंके स्थान रचके फिर सब व्रजको अपनी २ गौओं का दूध इकट्ठा करना चाहिये और क्या विचारकरतेहो १२ और शरदृतुके पुष्पोंसे भूषित गौओं को गोवर्द्धन पै लेचलो फिर दुहने के बाद गौओं को वनमें लेजाओ १३ और यह स्वादुजल और तृण आदि गुणों से युक्त और रमणीक और मेघ और जलके स्थान इन्हों से रहित ऐसी तोफा शरदृतु आरहीहै १४ और सुन्दर पुष्पोंकरके गौर मालूमहोतीहै और बाण अर्थात् झिंटी के पुष्पों करके कहींकाली मालूमहोती है और कठोर तृणों वाली है और मयूरों के शब्दसे रहितवन है १५ और यह ऋतु जलसे रहितहै और विमल है और आकाशमें बगुलोंसे रहितहै और बिजली से रहितहै और मेघ निवृत्तहोगये हैं जैसे दांतों से रहित हाथी १६ व पत्तोंके समूह सुन्दर मेघ की वायु करके व नवीन जलकरके नीचे को दबेहुये सुन्दर मालूम होते हैं १७ व वर्षासे सफ़ेदहुये बादल पगड़ीकी जगह व उड़तेहुये हंस चमरकी जगहहैं व

पूर्णचन्द्रमा छत्रकी जगहहै इसप्रकार अम्बरके अभिषेक होनेकीतरह मालूमहो
नाहै १८ व वर्षाऋतुके अन्त में हंस बहुत से प्रकाशित होरहे हैं व सारस शब्
करहे हैं व जल सूक्ष्मरूपहोरहे हैं १९ व चकवा चकवियों से युक्त तटोंवाली
भागी मण्डलवाली और हंसोंके लक्षणोंसे युक्त ऐसी समुद्र में जानेवाली नदी
अपने पति समुद्रको जाती है २० व कुमोदिनीके पुष्पों से प्रफुल्लित हुआ जल
सुन्दर मालूम होताहै व तारागणों से चित्रित अम्बर होरहा है इसप्रकार रात
दिनकी एकसी शोभाहोरही है २१ व मतवाली कुंज मधुर २ बोलरही है व पकु
पकेहुये पीले २ वर्णवाले व वर्षासे निवृत्तहुये व रमणीक ऐसे खेतों में मनग
ताहै २२ व खोदीहुई नदी और तालाब और बावली इन्होंमें कमल फूल रहे
और खेत व नदी व जोहड़ ये सब अपनी २ शोभाकरके प्रकाशितहोरहे हैं २
व लालकमल व सफेदकमल नीलेकमल ये सब श्रेष्ठ शोभाको प्राप्तहोरहे हैं २
व मितापाग मदको त्यागनेलगे मन्द २ वायु चलती है व बद्दलोंसे रहित आ
काशहै व निभृतरूप समुद्रहै व ऋतुके पर्य्यायसे शिथिलहुये मयूरोंके नृत्यकर
से गिरी हुई पांख ऐसी मालूम होती है कि जनों बहुत नेत्रों से युक्त पृथ्वी
२५ व कीचसे मैलेहुये व प्रकाशित पुष्पोंसेयुक्त और हंस सारस इन्होंके चलने
हलनेसे शोभित ऐसे तीरोंकरके यमुनानदीकी शोभाहोरही है २६ और सम्पू
र्णपकेहुये खेतोंमें और वनोंमें खेतीको खानेवाले और जलके जीवोंको खानेवाले
पक्षी मतवालेहुये विशेष करके शब्द कररहे हैं २७ व मेघके आनेके समय जो
मेघ जिन खेतियोंको सींचदई है वे सब छोटी मस्य अर्थात् घास आदि वर्ग
होगई हैं २८ व मेघमय वामको त्यागके शरदृऋतु के गुण प्रकाशित होरहे
और इसनिर्मल आकाशमें भगवत्कृष्ण चन्द्रमा चमकताहै २९ व गो दूना दूधदेती
है और वृष अर्थात् आम्लि आदि दूने प्रमत्त होरहे हैं और वनोंकी दूनी शोभा
होरही है और खेतियों करके गुणवती पृथ्वी होरही है ३० व नक्षत्र आदि तारा
गण बद्दलों से रहित अर्थात् प्रकाशितहै और जलों में पद्मके पुष्प खिलरहे हैं
और मनुष्यों के मन प्रसन्नताको प्राप्त होरहे हैं ३१ व मेघों से छूटाहुआ सूर्य
आकाश में शरदृऋतु में तीक्ष्ण किरणोंसे शोषणकरताहुआ अपने तेजको प्र
काशै ३२ व अपनी २ सेना को युक्तकिये पृथ्वीके जीतने की इच्छा करनेहुये
ऐसे राजा आपसके देशोंके सम्मुख आते हैं ३३ व जीयापोताके पुष्पोंसे ताम

वर्णवाली व विचित्र व कान्तिवाली ऐसी बँधीहुई वनकी पंक्तियों में मनलगन। है ३४ व वनोंमें शोभावाले वृक्ष प्रकाशित होरहे हैं और आसना, सातला, कचनार इन्होंके फूलों से पुष्पित होरही है ३५ व शरपुंखा, दती, प्रियगुवृक्ष और सुमरापे चिकायें गीलीहोरही हैं ३६ व यह शरद्ऋतु व्रजमें ऐसी मालूम होती है कि जैसे प्रकाशवाली स्त्री विचरतीहोवे तैसे ३७ व निश्चय देवताओं करके वढाहुआ और मेघ कालके सुख का स्थान और पक्षियों का स्थान ऐसा इस पर्व्वतरूप देवको देखते बोधकरारहे हैं ३८ व वर्षाकाल व्यतीत होनेकेबाद इस प्रकार श्रेष्ठ खेतीवाली शरदृतु प्राप्तहोनेसे नीला और चन्द्रमाके समान वहुत से पक्षियों करके ३९ और फलों करके और पीपसियों करके जैसे इन्द्रके धनुष् से मेघ की शोभाहोवे तैसे ४० सुशोभित यह गोवर्द्धन पर्वत होरहाहै और भवनोंके आकार वृक्षोंवाला और श्रेष्ठलता आदिकोंमे मण्डित और तोफा जड और पेडोंवाले वृक्षों मे युक्त और सुन्दर वायुसे युक्त ऐसा गिरिदेव अर्थात् गोवर्द्धन को हम गौओं के अर्थ पूजेंगे ४१ व गहनों से युक्त सींगोंवाली और मोरके चन्दों के गूथेहुये मुकुटोंवाली और लम्बी २ घण्टाओंसे युक्त और शरद् ऋतुके पुष्पों से युक्त ४२ ऐसी गौओंको कल्याणके वास्ते पूजो और गिरियज्ञ अर्थात् गोवर्द्धन की यज्ञकरो और इन्द्रकी पूजा तो देवते करो हमको तो यह पर्वत पूजना चाहिये ४३ व हम हठमे गोयज्ञ करेंगे इसमें सदेह नहीं और जो तुम्हारी मेरे विषे प्रीतिहै और जो तुम मेरे प्यारेहो तो ४४ तुमको गौही निरंतर पूजनी चाहिये इसमें सदेह नहीं और समझाने से तुम्हारे कल्याणकेवास्ते यह प्रीतिहो ४५ व यह मेरावचन सत्यहै तुम विनाविचारे करो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वेभाषायांशरद्वर्णनेत्रियसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसे गौओंमें जीविकावाले गोप दामोदरका वचन सुन के और तिसकी वाणीरूपी अमृतवत् को पीतेहुये शंका से रहित बोले १ हे कृष्ण यह तेरी वालक की मति गोपों को हर्ष वढानेवालीहै और हम सबको व गौओं को तेरीबुद्धि वढातीहै २ व बुद्धि पैदाकरती है व तू गति है व रति है व तूही जाननेवाला व पणहै व भयसे अभय को देनेवालाहै व प्यारोंका प्यारा

है ३ व हे कृष्ण तेरे कर्त्तव्य में यह व्रज गोकुल क्षेमवाला है और आनन्द व वमताहे व वैरियोंसे रहितहे व जैसे स्वर्ग में सुखहे तैसे यहांहे ४ व हमलोग आपकी जन्म प्रभृतियों करके व पृथ्वी में दुष्कर पराक्रमों करके व अभिमान से विस्मित होरहे हैं ५ व बलकरके और यशकरके तुम मनुष्यों में ऐसे उत्तमहो कि जैसे देवताओं में इन्द्र ६ व तीक्ष्ण प्रतापकरके व दीप्तिकरके व पूर्णवाक्य मनुष्योंमें उत्तमहो जैसे देवताओं में सूर्य ७ व कांतिकरके लक्ष्मीकरके प्रसन्नता करके व हँसताहुआ मुखकरके तुम मनुष्यों में ऐसे उत्तमहो कि जैसे देवताओं में चन्द्रमा ८ व बलकरके व शरीरकरके व बालकपना के चरित्र करके तेरेसदृश शक्तिधारण करनेवाला कोई भी मनुष्य नहीं है ९ और जो तुमने पर्वतकी पूजा करने को वचन कहाहै तिसके उल्लंघने को कौन समर्थहै जैसे समुद्रकी वेलाको तैसे १० व हे पुत्र यह इन्द्रका उत्सव यहां रहो हम गोवर्द्धन पर्व्वत का उत्सव गोपों के व गौओं के हितके वास्ते करेंगे ११ व गोप कहरहे हैं कि वर्त्तनों को इकट्ठेकरो व दूधको इकट्ठाकरो व जलों के सुन्दर कलशे पूर्णकरो १२ व बड़े वर्त्तन दूधकरके पूर्णकरो व भक्ष्यपदार्थ व भोज्य व पेय ये सब ग्रहणकरो १३ व मासके वर्त्तन व चावलों के वर्त्तन स्थापितकरो व सब व्रजका तीनदिनतक दूध इकट्ठाकरो १४ व यज्ञमें बलिके अर्थ महिषआदि पशुओं को प्रवेश करो और सब गोपों को मंगल देनेवाले इस यज्ञको प्रवर्त्त करो १५ व आनन्द को उत्पन्न करनेवाला यह व्रज और अतिआनन्द से युक्त गोप्यों का कुल सब भेरीआदि बाजों से युक्त तिस यज्ञ में प्राप्त होनेभये और बैल शब्द कररहे हैं १६ व बछड़े हुंगा ऐसाशब्द कररहे इसप्रकार वह यज्ञ गोपों को हर्ष बढ़ानेवाली होतीभई १७ जिस यज्ञ में दही के ह्रद बनरहे और दूधकी खोदीहुई नाड़ी भररही १७ व मासों की राशि से युक्त और प्रकाशमान पर्व्वतसरीखा चावलों का कूट बनरहा है इस प्रकार वह गोवर्द्धन यज्ञ प्रवृत्त होती भई १८ और वह यज्ञ प्रसन्न गोपों से युक्त है और गोपियों से शोभित है और सब यज्ञ के पाक करनेवाले आदिकोंसे युक्त वह यज्ञविधि होगई १९ तब वे गोप तिस पर्वत यज्ञको ब्राह्मणों के संग शुभदिन में करतेभये और यज्ञके पूजनके अंत में तिस यज्ञके अन्नको और तिस उत्तमदूध और दहीको २० व मासको अपनी माया से पर्वत में देव रूप धारण करके श्रीकृष्ण भोजन करनेलगा और इच्छापूर्व्वक उत्तम ब्राह्मणों

भोजनकरके तृप्तहोके २१ प्रसन्नमनवाले आशीर्वाद देके यथासुख से खड़े होते भये और बाकी के अन्नको कृष्ण भोजन करताभया और दूध पीताभया २२ फिर भोजनकरे पीछे दिव्यरूप करके ऐसे कहनेलगा कि मैं तृप्तहोगया और फिर हँसनेलगा और तिस पर्व्वतके आकारवाला और दिव्यमाला और चन्दन का लेपन किये हुये २३ व पर्वत की शिखापै स्थित ऐसे श्रीकृष्ण को वे सब गोप देख के तिस पर्व्वत की प्रधानता जानतेभये और श्रीकृष्ण भगवान् भी तिसी कृष्णरूप से तिन गोपों के संग २४ तिस गोवर्द्धन देवको नमस्कार करतेभये और वे सब गोप विस्मितहुये तिसकेप्रति बोले २५ हे भगवन् हम तेरे वशमें हैं और आपके दासहैं सो हम क्याकरें ऐसे सुनके वह देव पर्व्वत रूप वाणीकरके बोला २६ हे गोपो अबसे लेके जो गौओं में दया तो मेरापूजन कियाकरो और मैं तुम्हारा प्रधान देवहूं और सब कामों को करनेवाला हूं २७ व मेरे प्रभाव से कई हजार गौओंके समूह चारोंओर विचरते रहैं और भक्तोंका तुम्हारा वन वन में कल्याण होगा २८ और तुम्हारे संग में इन्द्रकी तरह रमण करूंगा और जो ये नदगोप आदि प्रसिद्ध गोपहैं २९ इन्हों पै प्रसन्नहुआ मैं बहुतसा धनदेऊंगा और बच्चों से युक्त गौओं का समूह मेरे विषे तृप्तिपर्य्यंत विचरो ३० और इसी प्रकार करने से मेरी परम प्रीतिहोगी इसमें संदेह नहीं और फिर तिन गौओंके समूहके समूहों को पूजन और आरती करने के वास्ते इकट्ठे करतेभये ३१ और चारों तरफ बैल और बच्छेयुक्त होरहे और वे सब गो प्रसन्नहुई और मुकटोंवाली और गुच्छे बाजूबन्द इन्हों से युक्त ऐसी गायें हैं ३२ और गलों में मालाधारण किये ऐसे हजारों गोपाल इकट्ठे होतेभये और वे गोपाल द्रव्यों को गिननेलगे ३३ और भक्तिसे युक्तहुये और चदनको लगानेवाले और रक्त और पीले और सफेद वस्त्रोंको पहनेहुये और मोरके चदोंका आभूषण बनाके हाथों मे पहनेहुये ३४ और मयूरों के चदेआदि बालों में लगायेहुये ऐसे गोप तिस पूजापै अधिक शोभित होतेभये ३५ व अन्य गोप बैलों पै चढतेभये व कईक नृत्य करतेभये व कईक गोप जल्दी जल्दी गमन करतेहुये गौओं को घेरनेलगे ३६ इसप्रकार यह गौओं का नीराजन अर्थात् आरती का उत्सव गोपों ने किया और जब यह उत्सव होचुका तब तिसी देहसे वह गोवर्द्धनरूप देव अन्तर्द्धानहोगया ३७ व पश्चात् ये सब गोप और कृष्ण तिस गिरिगत के आश्चर्य से विस्मितहुये गमन

प्राप्त होतेभये ३८ व वृद्ध व बालक आदिगोप तिस कृष्णकी स्तुति करतेभये ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभाषायांगिरियज्ञप्रवर्त्तनेचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे जब इसप्रकार इन्द्रका उत्सव दूर होगया तब क्रोध करके इन्द्र प्रवर्त्तक नामवाले मेघको कहनेलगा १ कि हे मेघों में श्रेष्ठ मेरा वचन तुम सुनो जो तुमको मेरी प्रसन्नता करनी है २ तो वृन्दावन में प्राप्तहुये दामोदरआदि इन गोपोंको जो मेरा उत्सव दूर करदियाहै ३ और इन्हों के गौओं की ही परम आजीविकाहै इसवास्ते इन्हों को गोप कहते हैं सो तुमको सात दिन तक वर्षा और वायु करके तिन गौओं को पीड़ा देनी चाहिये ४ व ऐरावतहस्ती पै चढ़के मैं आप दारुण वायु और वर्षा और बिजली के शब्दों को करूंगा ५ और तुम तेजवर्षा करोगे और वायुचलाओगे तब वन्द्राओंसमेत वे गौवें मर जावेंगी ६ इसप्रकार तिन सब मेघोंको वह इन्द्र कृष्णसे निरादरहुआ तिन मेघों को आज्ञा देताभया ७ फिर वह घोर और भयको करनेवाले ऐसे कालेमेघ पर्वत के समान आकाशको आच्छादन करतेभये ८ व बिजली चमकतीहुई और इन्द्र के धनुषसे विभूषित ऐसे मेघ आकाशमें अंधेरा करतेभये ९ व हाथियोंकी तरह व कईक मगरमच्छों की तरह व कईक सर्पोंकी तरह इसप्रकार भयंकर मेघ आकाशमें विचरनेलगे १० फिर वे आपसमें हाथियों के समूहकी तरह इकट्ठे होके आकाशको आच्छादन करतेहुये और दुर्दिन करतेभये ११ व मनुष्यके हाथके समान व हाथी की सूंड के समान ऐसी निरन्तरधारा वर्षानेलगे १२ तब ये गोप आदि मनुष्य आकाशमें स्थित समुद्र माननेलगे और अगाध दुर्दिन मानते भये १३ व आकाश में पक्षियों से उड़ा नहींगया व जब आकाशमें मेघ गर्जने लगे तब मृग आदि जीव भाजनेभये १४ व सूर्य्य चंद्रमा नक्षत्र ये सब दारुण मेघों करके ढकगये और अति वर्त्तने से मनुष्यों का विरूपहोगया १५ व मेघों के समूह करके ग्रह व तारागण व चन्द्रमा इन्होंकी कान्ति चलीगई और सूर्य्य की किरणों के बिना कान्ति से रहित आकाश होगया १६ व बारम्बार मेघका जल बरसने से सब पृथ्वी जलमयी होगई १७ और मोर मे इ मिश हुये मधुर बोलनेभये और नानास्थानके जलहद्धिको प्राप्तहोनेगये १८ व मेघों के गर्जने

से डरतेहुओं की तरह वृक्ष और तृण कांपने लगे १६ व लोकों का अन्तकाल की तरह एकार्णवारूप पृथ्वी होतीभई फिर भयसे पीडितहुये गोप विचार करने लगे २० व तिस उत्पातरूपी मेघ के वरसने से वहुतसी गौ पीडित होनेलगीं और कितनीक गौ हभा ऐसा शब्द करनेलगीं और कितनीक गौ दुःखितभई थाभ की तरह हलती नहीं हुईं और कितनीक पैर और सक्थि चरण इन्हों को नहीं कँपानेलगीं और कितनीक मुख और खुर इन्होंका यत्न नहीं करतीभई २१ व कितनीक रोमों को खडेकिये और गीले शरीर को धारण करती भई और कितनीक कूख और थनोंको सुकडाने लगीं २२ व कितनीक प्राणों को त्यागती भई और कितनीक हारीहुई गिरपडीं और कितनीक वच्चों करके सहित गौ बुदों करके कापने लगगईं २३ व और कितनीक अपने वच्चों को छाती में लगाके खडी होगईं और कितनीक नीचे को मुख किये और निराहार और कृशपेटवाली २४ व कांपती हुई पृथ्वी में गिरपडीं इस प्रकार वे गौ और वच्छे वर्षा से पीडित होतेभये और कृष्ण आदि वालक नीचे को मुख किये खडे होते भये २५ तव पीडितहुये वे गोप दीन मुखसे कृष्णके प्रति यह वोले कि हमारी रक्षा करो तब इस प्रकार दुर्दिन से उपजा दुःख गौओं को देखके २६ व मरने की तरह गोपों को देखके श्रीकृष्ण क्रोध करतेभये और यह चिन्तवन वेग से किया कि मुझको उपाय देखा है इसप्रकार उन्होंके प्रति प्रियवचन वोला अव इसपर्वतको वृक्षोंसमेत उखाड़के मैं गौओंका स्थान वनाऊं हूं २७ व इस दुःख को दूरकरूंहूं और यह पर्वत दूसरी पृथ्वी की तरह मुझको धारण करना चाहिये २८ व इसप्रकार करने से सब व्रजके मनुष्य और गौ मेरेवशमें होजायँगी ऐसे सत्य पराक्रमवाले श्रीकृष्ण चिन्तवनकरके २९ अपनी वाहुओंका वल दिखावते हुये तिस पर्वतके समीपमें गये फिर तहां जाके अपने हाथोंसे तिस पर्व्वत को उठावते भये ३० फिर एक हाथमें धारण किया हुआ वह पर्वत गुहाके आकार शरीरसे घरकी तरह वनगया ३१ व पृथ्वीसे उखाड़ाहुआ तिस पर्वतकी शिखर के शिथिलहुये छोटे २ पत्थर और वृक्ष गिरनेलगे ३२ व सब तरफमें शिखरके पत्थर गिरनेसे और पर्वतकी शिखर निवृत्त होनेसे वह अचलरूप पर्वत आकाशमें स्थिर होगया ३३ व तिस पर्व्वतमें झिरताहुआ जल और मेघकी धारा एकताको प्राप्तहोगईं और पत्थरों के गिरनेसे वह पर्वत चलायमान होगया ३४

व विशेष करके वर्षतेहुये मेघोंका शब्द और तिस पर्वतसे गिरतेहुये पत्थरोंका शब्द और वायुका शब्द और गर्जने का शब्द कुछ भी मनुष्य नहीं जानते भये ३५ व पर्वतसे मिलीहुई मेघोंकीधारा और तिस पर्वतसे झिरताहुआ जल ये दोनों मिले हुये की तरह मालूम होने लगे ३६ व विद्याधर, उरग, गन्धर्व अप्सरा ये सब आपसमें यह बतलानेलगे कि ३७ पाखोंकरके उडके यह पर्वत आकाशमें आगया है और वह पर्वत हथेली पै धराहुआ जो पृथ्वीमें उखाड़ा हुआ जो था तिसके ऊपरकी पीतलकी खानि सुवर्णके अंजनके समान प्रकाशमान होरही ३८ व तिसकी कईक शिखर तो शिथिल होगईं और कईक तिसकी शिखर आधी २ गिरगईं इसप्रकार तिसकी शिखर मेघके वर्षने से होतीभईं ३९ व कांपतेहुये तिस पर्वतके ऊपरके वृक्षोंके पुष्प पृथ्वीमें खण्ड २ गिरने लगे ४० व तिस पर्वतके भारी २ मस्तक ऊपरके घरोंसे विभूषित पृथ्वीमें कटके गिरनेभये ४१ व सर्पोंके पति क्रोधसे युक्त होतेभये और आकाश में विचरनेवाले पक्षी दुःखित होतेभये और तिस वर्षाके भयसे पक्षी पीडाको प्राप्तहोके उड़उड़के नीचेको मुखहुये पृथ्वीमें गिरतेभये ४२ व क्रोधयुक्तहुये सिंह गर्जनेलगे जैसे मेघ और गर्गरोंकी तरह मथन करतेहुये शार्दूल बोलनेलगे ४३ व विषमकी जगह एकसाहुआ और समकी जगह दुर्गमहुआ और फटी देहवाला ऐसा वह पर्वत अन्यही प्रकारका दीखनेलगगया ४४ व जियादा मेघवर्षनेसे तिसका ऐसारूप होताभया कि जैसे त्रिपुरासुरके युद्धमें शिवजीकी थामलगा रुद्रहो तैसे और श्रीकृष्ण के बाहुरूप दण्डसे वह महान् पर्वत नीलामेघसे ढकाहुआ छत्रकी तरह मालूम होनेलगा ४५ व मेघोंकरके सोवते हुयेकी तरह और गुहाके मुखों से नेत्र मिचेहुयेकी तरह इसप्रकार कृष्णकी बाहुओं के ऊपर सोवताहुआ पर्वत मालूम होनेलगा ४६ व पक्षियों से रहित वृक्षों के और मयूरों से रहित वनों के शब्द होनेसे वह पर्वत निरालम्बकी तरह दीखनेलगगया ४७ व शूरशब्द करतेहुये और शिखरपै चलायमान होनेहुये ऐसे पर्वतरेचन और शिखर ज्वर से युक्तकी तरह दीखनेलगे ४८ व तिस पर्वतके शिखरपै प्राप्तहुये और पवनके बाहनवाले और इन्द्रकरके ताड़ित ऐसेमेघ अक्षय जलको छोड़तेभये ४९ और वह कृष्ण की भुजा के ऊपर लम्बमान पर्वत ऐसे शोभित होताभया कि जैसे चक्र में आरूढ़ राजासे पीड़ित देश ५० व वह मेघका समूह तिस पर्वत को प्राप्तहोके

ठहरताभया जैसे बड़ा पुरको आगेकरके बढेहुये देश रहते हैं ५१ व गोपों की रक्षाकरनेवाले भगवान्कृष्ण तिस पर्वतको हाथमें उठाके और तोलके फिर हँसते हुये गोपों के प्रति ब्रह्माकीतरह स्थितहोके वचनबोले ५२ यह देवताओं को भी असम्भाव्य मुझको दिव्य विधि से पर्व्वतकाघर बनादिया है सो हे गोपो तुम गौओं के समूह को यहां लेआवो ५३ और वायुसे भी रहित इस जगह सुख से वासकरो ५४ व जैसे श्रेष्ठहो व जैसे सुखहो व जिसप्रकार सारहो तैसेही इस जगहका विभाग करलेवो और वर्षाका निवारणकरो ५५ व पर्वतको उखाड़ के यह पृथ्वी मैंने बहुत सुन्दर बनाई है सो यहां में त्रिलोकी के भी रखनेको समर्थ हूं फिर इस व्रजका तो क्या कहनाहै ५६ पश्चात् इस वचनको सुनके किलकिल शब्द से युक्त और गौओं के रांभने के शब्दसे युक्त तुमुल अर्थात् रण के शब्द की तरह तिन गोपोंका शब्द मेघके शब्दसे भी अधिक मालूम होताभया ५७ व फिर इस प्रकार शब्द करके वे गोप गौओं के संग तिस पर्वतके विमल और गह्वर उदर में प्रवेश होतेभये ५८ व कृष्ण भी तिस पर्व्वत की जड़में थम्भरूप खड़े हैं और एकही हाथसे तिस प्रियरूप पर्वत को धारण कररहे हैं जैसे अभ्यागतको ग्रहणकरै तैसे ५९ व सब व्रजके मनुष्यों को अपने बर्तनों से युक्त गाड़े वर्षा के भयसे तिस पर्वतका रचाहुआ घरमें प्रवेशकरदिये ६० व पश्चात् वह समर्थ इन्द्र कृष्णको अति दैवमानके और तिसके कर्मको देखके मिथ्या प्रतिज्ञा वाला होके मेघोंको निवारण करताभया ६१ और जब सातरात्रि व्यतीत होगई तब मेघों के संग स्वर्गलोकमें चलागया ६२ व पश्चात् सातरात्रि के व्यतीत होने के बाद बादलों से रहित विमल आकाश होगया और दीप्तसूर्य्य होगया ६३ व श्रमसे रहित गौ तिसी मार्गकरके आवतीभई और वह गोपोंका समूहभी फिर अपने स्थान में आवता भया ६४ व श्रीकृष्णभी तिस पर्वत को तिसी जगह प्रसन्न होके निश्चल स्थापित करतेभये ६५ ॥

इति श्रीमहाभारते हरिवंशपर्वणि विष्णुपर्वणि भाषायां गोवर्द्धनधारणे एकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे और गोवर्द्धन धारणकियेहुयेको देखके और गोकुल की रक्षाकीहुई को देखके कृष्णके दर्शन करनेको इन्द्र आताभया १ व जलके

गर्जित बद्दलके समान आकारवाला और मतवाला ऐसे ऐरावत हस्ती पै चढ़ो पृथ्वीतलमें आवताभया ३ फिर वह इन्द्र गोवर्द्धन पर्वतकी शिलाके ऊपर बैठेहुये श्रीकृष्णको देखताभया पश्चात् तिसबालकको बड़े तेजसे दीप्त और अविनाशी व गोप वेषको धारणकिये ऐसे विष्णुको प्रीतिसे प्राप्तहोगया ३ फिर कमलसरीखे नेत्रोंवाले और बद्दलसरीखे वर्णवाले और श्रीवत्स लक्षणसे युक्त ऐसे श्रीकृष्णको सहनेत्रोंसे इन्द्र देखताभया ४ पीछे शोभाकरकेयुक्त और मृत्युलोकमें देवताओंके समान और शिलाकी पीठपै बैठेहुये ऐसे श्रीकृष्णको देखके इन्द्र लज्जित होगया ५ व जिसके बैठेहुयेके दोनोंतरफ अंतर्हितहुये गरुडजी अपने पाखोंकरके छाया करहे ६ व गुप्तवनमें प्राप्तहुये और लोकोंके वृत्तान्तमें तत्पर ऐसे श्रीकृष्णको वह इन्द्र हस्तीको त्यागके प्राप्तहोताभया ७ व दिव्यमाला व चन्दनका लेप कियेहुये और हाथमें वज्र लियेहुये ऐसा देवराज इन्द्र तिसके समीपजाके शोभितहोता भया ८ व सूर्य्य के समान कान्तिवाला और बिजली के समान तेजवाला मुकुट करके और बिजली के समान कान्तिवाले और हीरासे जटित कुण्डलों करके शोभित मुखवाला है ९ व कमलसरीखी कान्तिवाला और पाच गुच्छों वाले ऐसे हारकरके तिसकी छाती विभूषितहै १० व ऐसा वह इन्द्र अपने कामरूपी हजार नेत्रोंकरके श्रीकृष्ण को देखताहुआ ११ दिव्यस्वरूपकरके मधुरवचन बोला कि हे कृष्णकृष्ण हे महाबाहो बन्धुओंको आनन्द बढ़ानेवाले १२ आपने गौओंमें प्रीतिकरके प्रति देवकर्म किया और जो तुमको युगांतसरीखे मेरे मेघोंसे गौओंकी रक्षाकरी १३ तिससे मैं प्रसन्नहोगया और स्वायम्भुव योगसे जो यह पर्वतों में उत्तम गोवर्द्धनपर्वत १४ घरकीतरह आपने आकाशमें उठालिया ति- समें कौन आश्चर्य नहींहै और हे महाराज जब मेरा उत्सवका निषेध होगया था तब मैंने क्रोधकरके १५ सात दिनतक अति वर्षाकरी सो वह मोटी वर्षा भी आपने हटाई १६ और वह वर्षा मेरेहोतेहुये देवताओं करके और दैत्यों करके भी निवारण नहीं होसक्ती है सो बड़ा आश्चर्य है और हे कृष्ण मुझको तुम बड़े प्रिय लगतेहो क्योंकि जो तुम मनुष्य शरीरको धारण करनेवाले १७ और कोपसंयुक्त ऐसे तुम सम्पूर्ण वैष्णवतेजकरके गुप्तकरतेहो और सो मैं यह मानता हूं कि आपने देवताओं का कार्य सिद्ध करदिया १८ व तुम अपने तेजसे युक्त हुये मनुष्य भावको प्राप्तहोके स्वर्गमें के कार्यके वास्ते स्थित होरहेहो सो हम

में कुछ हास्य नहीं है १६ और तुम सनकार्यों में आगे प्राप्तहोनेवाले देवताओं के नेताहो व सब देवताओं के और लोकों के तुम्हीं एक सनातनहो २० व जो आपके भारको उतारे ऐसे दूसरे को में नहीं जानताहू और जैसे शेषनाग इस संसारके भारमें युक्तहोरहाहै २१ इसीप्रकार गरुडकी सवारीवाले तुम देवताओं के भारमें युक्तहो और हे श्रीकृष्ण तिसी आपके शरीर से ब्रह्माजी ने संसार में उत्तम मनुष्य रचेहैं २२ जैसे अन्य धातुओं में से सुवर्ण तैसे और तुम स्वयम्भू भगवान् आपही वृद्धि और अवस्था करके युक्तहोजातेहो २३ और हे भगवन् आपकी गति जाननेको कोई समर्थ नहींहै जैसे पगुला मनुष्य जल्दचलनेकी गति नहीं जानेहै तैसे और पर्व्वतों में तो हिमाचल पर्व्वत श्रेष्ठहै और अगाध जल के ह्रदोंमें वरुणका स्थान अर्थात् समुद्र उत्तमहै २४ और पक्षियों में गरुड उत्तम है व इसीप्रकार देवताओंमें आप श्रेष्ठहो और जलों के नीचे लोक वसता है व तिस जलके ऊपर पर्वतहै २५ व पर्वतों के ऊपर पृथ्वी है व पृथ्वी के ऊपर मनुष्यहैं और मनुष्यलोकसे ऊपर पक्षियों की गति कही है २६ और आकाशके ऊपर स्वर्गका दरवाजा कान्तिवाला सूर्य है व तिससे ऊपर देवलोकहै और तहां विमानों में बैठके जानाबनताहै २७ हे कृष्ण जहा मैं देवताओंका मालिक इन्द्र ऐसी पदवीको पारहाहू व स्वर्गसे ऊपर महर्षियों करके पूजित ब्रह्मलोक है २८ तहा चन्द्रमा और श्रेष्ठ नक्षत्रों की गतिहै व तिससे ऊपर गोलोक है और तहा साध्यसंज्ञक देवतेहै वे तिसलोककी पालना करतेहैं २९ सो हे कृष्ण वह लोक सबसे ऊपर महाआकाश में है व तिससे भी ऊपर ऊपर आपकी तपोमयी गति है ३० तिसको ब्रह्माजी से पूछतेहुये भी हम नहीं जानतेहैं और न्यूनकर्म करनेवालों के नीचवलेलोकहैं और तिनमें नागलोक अर्थात् पाताललोक दारुण है ३१ व सब कर्मों में रहनेवालों का पृथ्वीलोक है और सब कर्म्म का क्षेत्र है और तुल्य वृत्तिवाले अस्थिर पक्षियोंका वायुके विषयकरके आकाशलोकहै ३२ और शम दमोंसे युक्त और अच्छे कर्म के करनेवालों का स्वर्गलोक है और ब्रह्मचर्य में युक्त पुरुषों की तहा गतिहै ऐसा ब्रह्मलोक है ३३ व गौओं का जहा गोलोक है वह बड़ी दुर्ल्लभ गति है और हे कृष्ण वह लोक दुःख पानाहुआ गौओं के उपद्रव हटा के तुमको स्वच्छ करदिया ३४ इसवास्ते गौओं के आज्ञा से भेराहुआ और ब्रह्मा के गौरव से तुमको प्राप्तहुआहूं और हे कृष्ण सुनो दा

पति और देवताओं का राजा ऐसा मैं इन्द्र हूं ३५ और अदिति के गर्भ पर्यादे आपका मैं बड़ाभाई हूं सो हे भगवन् तेजवाले तुमने मेघरूप से जो मुझको तेज दिखायाहै ३६ उसको आप क्षमाकरो व हे कृष्ण अपने तेजसे शोभित वालेहुये तुम ३७ ब्रह्माका व गौओंका वचन मुझसे सुनो व इन्द्र कहता है कि हे भगवन् ब्रह्मा व आकाशमें स्थितहुई गौ स्वर्ग में मुझसे ऐसे कहतीभई ३८ कि दिव्य कर्मोंकरके व अच्छी रक्षाकरके तुमने रक्षाकरी है व अन्यलोकों की व गोलोककी आपने रक्षाकरी है ३९ क्योंकि जिनसे हम उत्तमों के मग बढ़ते हैं व खेती करनेवाले मनुष्योंसे व पवित्र घृतकरके देवताओं को ४० व गौओं की प्रवृत्ति करके लक्ष्मी को इसप्रकार गौओं करके मैं तृप्तकरवाऊंगा और हे भगवन प्राणके देनेवाले तुम हमारे गुरुहो ४१ व अबसे हमारे राजाइन्द्र तुमहो इसवास्ते दूधसे भरेहुये सुवर्ण के कलशों करके ४२ सब अपने हाथमें तुमको अभिषेक करके गौओं का राजाकरना तु जैसे मैं देवताओं का इन्द्र हूं वैसे ४३ अबसे आगे तुमको पृथ्वी में गोविन्द इस नामकरके स्तुति करेंगे व मेरे आगे जैसे तुम गौओंके इन्द्र स्थापित होगये हो ४४ इसवास्ते तुमको देवता उपेन्द्र इस नाम करके स्तुति करेंगे व जो ये चातुर्मासे मेरे वर्षा के दिनहैं ४५ तिनहीं के आधे पश्चात् भागमें शरत्काल देऊंगा और तिन मेरे दोमहीना को अबसे मनुष्य जानेंगे ४६ व वर्षाऋतु सारी व्यतीत होने के बाद मेरेअर्थ उत्सव करेंगे व तिससे उपरान्त तुम पूजाको प्राप्तहोगे व तब मेरे जलमें उपजे अभिमानको मयूर त्यागदेवेंगे ४७ व अल्प बोलनेवाले और अल्प मदवाले ऐसे सब मेघ नाश करनेवाले होजावेंगे व मेरे कालके दिखानेवाले सब शान्ति को प्राप्त होजावेंगे ४८ व अगस्त्यमुनि दिशाओं में प्राप्त होजावेंगे व हजार किरणों वाले अपने तेजसे सूर्यतपेगा ४९ पश्चात् तिस शरद् समयमें गौनामी ... मनुष्य होंगे व आकाशमें जलकी याचना होंगे ५० व ... हंस मालों करके पूर्ण नदियों के किनारे होजावेंगे व ... शब्द करेंगे व मदवाले बैल होजावेंगे ५१ व ... होजावेंगी व जब मेघ चलेजावेंगे व पृथ्वीमें जलका समूह रहजावेगा ५२ व ... आकाश में हंस विचरने लगजावेंगे और ... ५३ ... उनमें ... उपजेंगे व ... ५४ व नदियोंका ...

में रहजायगा व अच्छी खेतियोंवाली सीम होजायँगी ५५ व तिस वर्षासमय के व्यतीत होजानेमें बढ़ेहुये गामोंसे युक्त पृथ्वी होजावेगी और शोभावाले मार्ग होजावेंगे व फलवाले तृण होजावेंगे ५६ व ईखोंवाले देश होजावेंगे व यज्ञप्रवर्त्त होजावेंगी तब शरद् कालमें सोके उठेहुये तुम्हारे विषय पुण्य प्रवर्त्त होवेंगे ५७ व हे कृष्ण सम्पूर्ण इसलोकमें व स्वर्गलोक में मनुष्य तुमको व मुझको ध्वजा के आकार यष्टियों के विषे पूजेंगे ५८ व पृथ्वीतल में महेंद्र और उपेंद्र ऐसे हम दोनों को जो पूजेंगे ५९ व प्रणाम करेंगे तिन्हों के कुछु दुःख नहीं होगा ऐसे कहके फिर वह इन्द्र दिव्य दूधकेसे भरेहुये तिन कलशों को ग्रहणकर ६० अभिषेक अर्थात् गौओंका राजा करताभया व गोविन्द यह नाम निकालताभया व पश्चात् अभिषेक होनेलगा तब गौओं के समूह इकट्ठे होके ६१ तिस अविनाशी श्रीकृष्ण को दूधकी धारों से सींचनेलगगईं व अमृत के संग स्वर्ग से मेघ वर्षने लगगये ६२ और वनके वृक्षों के वृक्षों का दूध चन्द्रमा के समान सफेद निकलके गिरताभया ६३ व आकाश से देवता पुष्पों की वर्षा करते भये और बाजे बजाने लगते भये और मन्त्रों में तत्पर मुनि वाणियों करके स्तुति करनेलगे ६४ व तिस एकार्णव जलको सुखा के सुन्दर शरीर को पृथ्वी धारण करतीभई व समुद्र शांतिको प्राप्त होताभया व जगत्को हितदायक पवन चलनेलगी ६५ व अपने मार्गमें स्थितहुआ सूर्य प्रकाशमान होताभया व नक्षत्रोंसे युक्त चन्द्रमा होगया व अति वृष्टिआदि सब उपद्रव शांत होगये व वैरसे रहित राजा होतेभये ६६ व पीपसी, पत्ते, पुष्प इन्हों से युक्त वृक्ष होतेभये व हाथियों के मद झिरने लगगया और वनमें मृगप्रसन्न होतेभये ६७ और पर्व्वतों में उपजी हुई धातुओंसे तिन पर्व्वतोंकी शोभा होतीभई इसप्रकार सब संसार स्वर्ग की तरह अमृतसे तृप्तहुआ प्रतीत होने लगगया ६८ और तब श्रीकृष्ण के अभिषेक समयमें दिव्यस्वर्ग से रस गिरताहुवा और गौओंके संग अविनाशी गोविन्दको इन्द्र अभिषेक करताभया ६९ और दिव्यमाला और वस्त्रों को धारण कियेहुये श्रीकृष्णके प्रति इन्द्र कहनेलगा हे कृष्ण यह तो तुम्हारा निरोग गौओं में प्रथम किया है ७० और दूसरा मेरे आगमन के कारण को तुम सुनो तुमको जल्द कंसको मारके कार्यसिद्ध करना उचितहै और अश्वरूपको धारण किये हुए केशी दैत्य को मारो ७१ और सदा अरिष्ट करनेवाले अरिष्ट दैत्यको मारो

होवेगा तब मनुष्यों में शूरवीर और अतिमनुष्य कर्म करनेवाले ऐसे ८८ तिन राजाओंकी विजयको यशकरके भोगनेवाला अर्ज्जुनहोवेगा और तुम तिससे युक्त करोगे सो हे कृष्ण यह सब मेरा कहा तुमको करनेलायक है ८९ क्योंकि यदि मैं और देवते तुम्हारे प्रिय कहाते हैं इसप्रकार इन्द्रके वचन सुनके गोविंद भावको प्राप्तहुआ ९० वह कृष्ण प्रसन्नमनसे युक्त यह प्रति वचन कहनेलगा हे इन्द्र तेरे दर्शन से मैं प्रसन्न होगया ९१ और जो तुमने कहा है सो सब ठीक है और तुम्हारे भावको मैं जानताहूं और अर्जुनके सम्भवको भी जानताहूं ९२ और पाण्डुराजाके अर्थ दईहुई पिताकी बहिनको भी जानताहूं और धर्म्म के पुत्र युधिष्ठिर को भी मैं जानताहूं ९३ और वायु की सन्तान भीमसेन को भी जानताहूं और अश्विनी कुमारों के रचेहुए भी नकुल व सहदेव इन नामोंवाले और माद्रीकी कुक्षिमें उपजेहुए ऐसे ९४ दो पुत्रों को जानताहूं ९५ और पिता की बहिन से उत्पन्नहुआ और सूतभावको प्राप्तहुआ और कन्यासे उपजा ऐसे सूर्य्य के पुत्र कर्णको भी मैं जानताहूं ९६ व युद्ध की इच्छा करनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रोंको भी जानताहूं ९७ व पाण्डुराजाके शापरूप वज्रसे उपजी मृत्यु को भी मैं जानताहूं सो हे इन्द्र तू स्वर्गलोकमें देवताओं के सुखके वास्तेजा ९८ व अर्जुनकाभंग मेरे आगे कोई नहींहोगा और अर्ज्जुन के अर्थ अक्षतरूप पाण्डवोंको निवृत्तरूप भारत से कुन्ती को दिखानेवास्ते निकासूंगा और हे इन्द्र तू जो कहै है सो तेरे ९९ पुत्र अर्ज्जुन को तेरे स्नेहसे युक्तहुआ मैं भृत्यकी तरह रक्खूंगा १०० ऐसे सत्यसे युक्त श्रीकृष्ण के प्रिय वचनसुनके वह इन्द्र स्वर्ग में जाताभया १०१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांगोविंदाभिषेकेपटसप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—ऐसे कहके जब इन्द्र चलागया तब व्रजवासियों से पूजितहुआ और गोवर्द्धन को धारण करनेवाला वह भगवान् अपने व्रज में आवताभया १ फिर तब कृष्णकी जानिके वृद्धगोप तिस कृष्णकी प्रशंसा करनेलगे और यह कहनेलगे कि हम तेरे वृत्तान्त करके धन्य हैं २ व गौओं की वर्षाके भयसे रक्षाकरी और हमारी महाभयसे रक्षाकरी है और हे गोविंद देवता-

ओंकी तुल्य पराक्रमवाले ३ अमानुष अर्थात् देवकर्म को हम देखते हैं और हे कृष्ण पर्वतके धारण करने से तुमको हम देव जानते हैं ४ व हे महाबलवाले तू कोई रुद्रोंके बीचमें है अथवा कोई मरुत् सञ्ज्ञक देवताओं में है अथवा वसुओं मेंसे कोई है और तेरापिता वसुदेव किसवास्ते है ५ व बाल्यअवस्था में यह तेरा बल व क्रीड़ा व तेराजन्म हमारे बीचमें निंदितहै और हे कृष्ण तेरी दिव्य चेष्टा हमारे मनों को शङ्कितकरैहै ६ किसवास्ते तुम गोप वेषको धारण किये हमारे विषे रमतेहो सो यहनिंदितहै और लोकपालोंके समान उपमावाले तुम गौओं को क्यों चरातेहो ७ व तू कोई देवहै अथवा दानवहै अथवा यक्षहै अथवा गन्धर्वहै और तू हमारा बान्धवहुआहै और जो तूहै वही है तेरे अर्थ नमस्कारहै ८ व किसी कार्य्यके वास्ते तू यहां अपनी इच्छाकरके विचरता है और हम सब तेरे अनुचरहैं और तेरी शरणहैं ९ वैशम्पायनजी कहनेलगे कमलसरीखे नेत्रों वाले श्रीकृष्ण ऐसे गोपोंका वचन सुनके आयेहुये तिन अपने बन्धुओंसे हँसताहुआ यह प्रतिवचन बोला १० जैसे भयानक पराक्रमवाले तुम मुझको मानतेहो तैसे मुझ को नहीं जानना चाहिये क्योंकि मैं तो तुम्हारा सजातीयबन्धु हूं ११ व जो तुम अवश्य सुनना चाहते हो तो कोई कालतक चुप रहो फिर तुम मुझको सुनलेवोगे और तत्त्व से देखलेवोगे १२ व जो यदि देवतासरीखी कांतिवाला मैं तुम्हारे सराहने लायक हूं तो पूछनेसे क्याहै यही मेरा अनुग्रह है १३ व ऐसे जब वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णने कहा तब सब गोप मौन धारणकिये दिशा २ में चलेगये १४ व फिर वह श्रीकृष्ण चन्द्रमाके नवीन यौवनको देखके और शरदृतुकी रमणीक रात्रिको देख फिर रतिकरने को मनकरता भया १५ व कभी वह पराक्रमवाला श्रीकृष्ण गोबर की रीतिसे युक्त व्रज की गलियों में अति मदवाले बैलों का युद्ध करादेताहै १६ व कभी अत्यन्त बलवाले गोपालों का युद्धकराता भया और कभी वह शूरवीर वनमें ग्राहरूपीनक्र गौओं को पकड़ताभया १७ इसप्रकार अनेक क्रीड़ा करताभया और कालको जाननेवाला वह श्रीकृष्ण कभी गोपोंकी जवान कन्याओंको रात्रिमें मानताके किशोर अवस्था दिखाताहुआ तिन्होंके संग रमण करताभया १८ और वे गोपोंकी नारी कान्तिवाले तिसके मुखको नेत्रोंसे पान करतीभई और आकाशमें चन्द्रमाको देखै ऐसे १९ व हरितालके समान पीले वस्त्रोंवाला और पसीने वस्त्रों वाला वह

श्रीकृष्ण उत्तम कांतिवाला दीखनाभया २० और वह गोविन्द अच्छीतरह बाजू-
बंद बांधेहुये और विचित्रवनमाला पहिनेहुये शोभावाले होतेभये और व्रजको
शोभितकरते भये २१ और तब गोपोंकी कन्या तिसको दामोदर ऐसा नामलेके
बोलतीभई और तिसके विचित्रव्रज में देखके और विचित्र भाषण देखके २२
वे गोपिया तिस कृष्णको मोधी चूंचियों करके और जाघों करके पीड़ित करती
भई और नेत्रों को भ्रमाकरके अपने अपने मुखों से देखती भई २३ और वे
गोपों की कन्या भाइयों करके पिताओं करके और माताओं करके वर्जी हुई
रात्रीमें विपयके प्रियकेवास्ते श्रीकृष्ण को ढूढतीभई २४ व वे सब गोपिया पङ्क्ति
बनाके व जोड़ाबनाये हुये व श्रीकृष्ण के चरित्र को गावतीहुई आपसमें रमण
करतीभई २५ व कृष्णकी लीलाके अनुसार लीला करनेवाली और कृष्णमेंही
स्थापित नेत्रों को करेहुये व कृष्णकी गति के समान गमन करनेवाली ऐसे वे
जवान गोपियां २६ वनों में हथेली बजावतीहुई व कईक कूदतीहुई व्रजकीनारी
कृष्णके चरित्रको प्राप्त होतीभई २७ व आनंदितहुई व क्रीड़ा करतीहुई वे गो-
पिया तिस कृष्ण के नृत्यको व गीतको व सस्मित देखने को आपस में करने
लगीं २८ व वे गोपिया तिस कृष्णकेभावको गातीहुई व दामोदर में तत्परहुई
व्रजमें प्राप्त होके सुखसे विचरने लगीं २९ व गोबरकी किरसों की धूलसे भरेहुये
अंगवाली वे गोपिया कृष्णको वरतीभई व जैसे मदवाले हस्ती के संग हथिनी
रमण किया करती हैं तैसे ३० श्रीकृष्ण के संग वे गोपिया रमणकरती भई व
रात्री के भावोंसे फूलेहुये नेत्रों से हँसतेहुये मुखवाली व काले मृग सरीखे नेत्रों
वाली ऐसी वे गोपियां श्रीकृष्णको नेत्रों के द्वारा पान करके तृप्त होतीभई ३१
व कमल सरीखी कांतिवाले श्रीकृष्ण के मुखको गोपिया भोगके अन्तर्गत हुई
रात्रि में रतिकी लालसामें पीवती भई ३२ व जब वे हाहा ऐसाशब्द करती तब
समझानेकी वाणी श्रीकृष्णकी कहीको ग्रहण करतीभई ३३ व तिन गोपियों की
मीढ़ियों की बालरतिकी श्रांतिसे ढीले होहोकर कुचाओं के ऊपर अच्छे प्रकार
गिरतेभये ३४ और ऐसे गोपियों के मंडलसे युक्त वह श्रीकृष्ण शरदऋतु की
चांदनी रात्रियों में गोपियों के संग रमण करताभया ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वणिभाषायांहल्लीसकक्रीडनेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं किसी एक समय श्रीकृष्ण सन्ध्याके प्रदोष समय रमण कररहे थे तब गौवों के ठान में त्रास करताहुआ अरिष्ट नामवाला दैत्य आताभया और बुझाहुआ अग्निका कोइला और मेघ के समान कान्तिवाला और पैने सींगोंवाला और सूर्य के समान नेत्रोंवाला और पैने खुरोंवाला ऐसा कालरूप वह दैत्य दूसरे कालकी तरह मालूम होताभया १।२ और जीभसे नेत्र और ओष्ठोंको वारम्बार चाटताहुआ और गर्वितरूप पूंछवाला उग्रकायवाला ३ और ज्यादे प्रमाणवाला और गोबर मूत्रसे भराहुआ अगवाला और गौओंको अति कँपानेवाला ४ और महाकटि, भारीमुख, बड़ापेट, भारे गोड़े ऐसे रूपको धारण किये लंबे सींगवाला और लम्बी कण्ठकी खाल लटकतीहुई ५ और गौवों पै चढ़नेमें चपल और वज्रसे चिह्नित मुखवाला और युद्ध करनेकी तरह सींगों को उठायेहुये और बैलोंको मारनेवाला ६ ऐसा वह अरिष्टनामवाला दैत्य गौवों का अरिष्टरूप आकृतिवाला गौवोंके ठानोंमें भाजताहुआ ७ और गौवों के सग ऋतुके विना भोगकरके गर्भ गिराताहुआ ऐसे वह चपल दैत्य तहां विचरनेलगा ८ और सींगों से प्रहार करताहुआ और भयंकर और गौवों में दुर्दम ऐसा वह दैत्य युद्ध के विना गौवों के ठानमें कभी भी नहीं प्रसन्न होताभया ९ सो वह मदोत्कट दैत्य गौवों को निरन्तर बाधा देताहुआ बछड़े और बैलों से रहित गौवों के ठानों को करनेलगा १० किसी समय कृष्ण के समीप स्थितहुई गौवोंको भयदायक मार्गसे स्थितहुआ वह दुष्टात्मा त्रासदेनेलगा ११ और इन्द्रके वज्रसे मेघगर्जनकी तरह शब्द करनेलगा तब तिस महाकायवाले और शब्द करतेहुये वृषभ को आवते देख १२ श्रीकृष्ण महाराज हाथ की तालके शब्द से निवारण करतेहुये और सिंहसरीखे शब्दों से गोदतेहुये तिसकेसन्मुख गाजे १३ फिर वह गोवृष श्रीकृष्ण को देख प्रसन्नहो के पूंछ को खड़ीकरके और नाक के शब्दसे रोष कियेहुये युद्धकी इच्छाकरके गर्जताभया १४ पश्चात् वृषगर्वा और दुष्टात्माको आते श्रीकृष्ण देखके तिसजगहसे नहीं चलतेभये और पर्वत की तरह अचल खड़ेहोगये १५ फिर वह वृषभ श्रीकृष्णकी कुक्षि विषे दृष्टिदेनेलगा और सुखसे ध्यानकी तरह पड़ताभया और कृष्णकी मृत्युकी इच्छा करके फिर

जल्द कृष्णके ऊपर गिरनेलगा १६।१७ पश्चात् गिरतेहुये तिसदुर्धरदैत्यको भगवान् डाटनेलगे और श्रीकृष्ण भगवान् काले अञ्जनके समान तिस वृषभके प्रति वृषभसरीखाही पराक्रम करनेलगे १८ फिर वह महावृषभ रूपदैत्य श्रीकृष्ण से पकड़ाहुआ मुखसे झाग गेरनेलगा और भयानक शब्द करनेलगा १६ और वे दोनों कृष्ण और वृषभ युद्ध करतेहुये ऐसे शोभितहोतेभये जैसे मेघसमय में मिलेहुये दोबद्दल शोभित होवैं तैसे २० और पश्चात तिसदैत्यका अभिमान व बलको खण्डित करके श्रीकृष्ण भगवान् तिसके पैरोंको सींगों के बीचमें करके और तिस अरिष्ट नामवाले दैत्यके कण्ठको पीडित करतेभये २१ और फिर तिसके बायेंसींगको धर्मराजके दंडकी तरह उखाड़तेभये फिर वहीसींग तिसकेमुख में देके तिस वृषभको मारते भये २२ फिर टूटाहुआ सींगवाला और फटाहुआ मुखवाला और फटाहुआ कन्धावाला ऐसा तिस दैत्य से ऐसे रुधिर निकलता भया कि जैसे मेघसे जलकीधारा २३ और जब गोविंदने वहवृषभदानव हनन किया तब सब जीव साधुसाधु ऐसे कहनेलगे २४ और तिसके कर्मकी प्रशंसा करनेलगे और वे उपेंद्रभगवान् तिस दैत्यको मारके चन्द्रमा से प्रकाशित रात्रि विषे कमलसरीखी कान्तिवाले नेत्रों से फिर रमणकरते भये २५ और वे सब गोवृत्तिवाले गोपाल कमलसरीखे नेत्रोंवाले तिस कृष्णसे प्रसन्नहोके उपासना करनेलगे जैसे स्वर्ग में इन्द्रकी देवता उपासना करते हैं तैसे २६॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायामरिष्टवधेअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कृष्णको व्रज में प्राप्तसुनके और अग्निकी तरह बढ़ताहुआ सुनके शंका करताहुआ कंस उद्वेगको प्राप्तहोताभया और तिससे भयकरनेलगा १ और जब पूतना मारदी और कालीनाग जीतलिया व धेनुक दैत्य मारदिया और प्रलम्बका नाशकरदिया २ और गोवर्द्धन पर्व्वत उठालिया और इन्द्रकी शिक्षा निष्फलकरदई और गौवों विषे आनंदताहुआ ३ अरिष्टदैत्य इच्छितकर्म से मारदिया व तिसके मारनेसे सबगोप प्रसन्नहोगये और महाभय और विनाशकंसको नजदीक दीखनेलगा ४ व यमलार्जुन वृक्षोंका उखाड़ना और शकटपटकदिया ऐसे तिस कृष्णके वह कंस अचिन्त्य कर्म सुनके व बढ़ने

हुये शत्रुओंको सुनके ५ वह मथुराकापति कंस अपनी आत्माको छेदमानहुये की तरह मानताभया और इन्द्रियोंकी संज्ञा चलीगई व मरेहुयेकी तरहहोगया ६ पश्चात् अपने भाइयों को और उग्रसेन पिताको अँधेरी रात्रिमें बुलाके व देवताओं के समान कान्तिवाला ७ वसुदेव व कंक यादव व सत्यक व दारुक और कंक यादवका छोटाभाई ८ व वैतरण नामवाला भोज व महाबलवाला विकद्रु और भयसख नामवाला राजा व महान्शोभावाला विपृथु ९ व बभ्रु व कृतवर्मा और बहुत तेजवाला भूरिश्रवा १० इन सब यादवोंको बुलाके वह मथुराकापति उग्रसेनका पुत्र ऐसे कहताभया ११ कि हे यादवो तुम सब कार्योंमें निपुण और सब वेदोंको जाननेवालेहो और न्यायके वृत्तांतमें चतुरहो और त्रिवर्ग अर्थात् धर्म अर्थ काम इन्होंके प्रवर्तकरनेवालेहो १२ और कर्तव्य वस्तुओं के करनेवाले हो और पण्डितों के समान उपमावालेहो और पर्वतोंकी तरह अचलहो और महान्वृत्तसे स्थितहो १३ व कपटरहित वृत्तिवालेहो व तुम सब गुरुकुल में वास करनेवालेहो और राजमन्त्र को धारण करनेवालेहो और धनुर्विद्याके पारको जाननेवाले हो १४ और मनुष्यों के यशको प्रकाशकरनेवालेहो और वेदों के अर्थको कहनेवालेहो और आश्रमों के व्यवहारको जाननेवालेहो और वर्णों के क्रमको जाननेवालेहो १५ और अच्छे नियमों के करनेवालेहो और नयदर्शी पुरुषों के नेताहो और परायेराष्ट्रों को छेदन करनेवाले हो और शरण आयेहुओं की रक्षा करनेवाले हो १६ ऐसे अचल चरित्रवाले तुम्हारे उद्योग करनेसे स्वर्ग भी अनुमर्दीन होजावे फिर पृथ्वी का तो क्या कहनाहै १७ और ऋषियों के समान तुम्हारा वृत्तहै और मरुतोंके समान तुम्हारा प्रभावहै और रुद्रोंके समान तुम्हारा क्रोध है और अग्नियों के समान तुम्हारी दीप्ति है १८ व पवित्र कीर्तिवाले तुम करके बढ़ाहुआ यह यदुकुल धारण होरहाहै जैसे पर्वतों से पृथ्वीतल तैसे १९ और मेरे चित्त के अनुसार वर्तनेवाले ऐसे तुम हुये पीछे मेरा अनर्थ बढ़ताहुआ क्या तुमको उपेक्षितहै २० क्योंकि यह कृष्ण ऐसा नामवाला व्रज में नन्दगोप का पुत्र मेघकी तरह बढ़ताहुआ हमारी जड़ को काटता है २१ व मंत्री से रहित और गुप्त व छिपाहुआ ऐसा मैं भी कारणसे नन्दगोप को यह पुत्र नंदगोपने अपने घरमें गुप्त करररक्खाहै २२ व जैसे उपजीहुई व्याधि व पूर्ण हुआ समुद्र व ग्रीष्म के अन्त में गर्जताहुआ मेघ है तैसे यह दुरात्मा

बढता है २३ व तिस की गति को में नहीं जानता और नन्दगोप के घर में जन्माहुआ व अद्भुतकर्म करनेवाला २४ ऐसे तिसके योगको और पराक्रमको भी नहीं जानता व क्या उत्पन्नहुआहै व क्या देवता जन्माहै सो हम नहीं जानते परन्तु अमानुष्य अति दैवकर्मोंकरके तिसका अनुमान किया जाताहै २५ व तिसने बाल्यावस्थामें पूतना शकुनी मारदी और सोया सोता हुआने स्तन पानकी इच्छाकरके प्राणोंके संग वह पूतना पीली अर्थात् मारदी २६ व यमुना के ह्रद में कालीय नागका दमन किया पश्चात् रसातल में प्राप्त कर दिया और क्षणमें तिस ह्रदसे निकास दिया २७ व वह नदगोपका पुत्र योगकरके उत्पन्न होरहाहै और इसको धेनुक दैत्य ताडवृक्षकी शिखरसे गिराके मरवादियाहै २८ व जिसके संग देवता भी युद्धकरने को समर्थ नहीं ऐसा प्रलम्ब दैत्यभी बालक हीको एक मुष्टिसे मारदियाहै २९ व इन्द्रका उत्सव भंगकरके फिर इन्द्रके रोपसे हुई वर्षा को जीतताभया और गौओं के वास्ते गोवर्द्धन को उठाके धारनाता भया ३० व बलवान् अरिष्ट दैत्यको मारदिया और व्रजमें सींगसे रहित कर दिया और वह बालकसे रहितहै परन्तु तहां बालक अवस्थाको प्राप्तहोके बालक क्रीडाओंकरके विचररहाहै ३१ सो तिस व्रजवासी कृष्णके यह कर्मोंका प्रबन्ध है व निश्चय केशी दैत्यको व मुझको भी भयहै ३२ व निश्चय पूर्व्वजन्ममें भी मेरा मृत्यु यहीथा और अब यह युद्धके वास्ते मेरे आगे ठहररहाहै ३३ क्योंकि मेरी व्रजमें अशुभ गोपपने को प्राप्तहोके व मनुष्यभावको प्राप्तहोके देवताओं के प्रभावके समान क्रीड़ा करने को कौन समर्थ है ३४ और बडा आश्चर्य है कि जो नीच शरीर करके अपने आत्माको आच्छादितकर यह कौन देव रमता है जैसे श्मशानमें दबीहुई अग्निहो तैसे ३५ और सुनाजाताहै कि पहले देवताओं के कारण के वास्ते विष्णु भगवान् वामनरूप करके इस पृथ्वी को हरताहुआ ३६ और वह विष्णु सिंहरूप करके दानवों के पितामह हिरण्यकशिपु दैत्य को मारताभया ३७ और पहले कैलासपर्व्वतपै अचिंत्यरूप धारणकरके त्रिपुरासुरको मारनेवाला शिवजीकरके सब दैत्य स्वर्ग से नीचे गिरादिये ३८ और अंगिराके पुत्र बृहस्पतिने चालित किया भार्गव दारुंमारा को प्रविष्ट होकर अनावृष्टि करताभया ३९ व अनन्तरूप व हजार शिरोंवाला व अविनाशी ऐसा यह देव वाराहरूप धारणकरके इस पृथ्वीको एकार्णव जलमें निकालताभया ४०

व पहले जब अमृत निकलाथा तब विष्णु स्त्रीरूप धारणकरके देवता व गवलों का दारुणयुद्ध करानाभया ४१ और वही विष्णु पहले अमृत निकालनेकेसमय मन्दराचलपर्व्वत को धारण करताभया व अकूपार ऐसा सुना जाता है ४२ और पहले वही विष्णु निन्दा करनेलायक वामनरूपको धारणकरके तीनपैरों करके तीनों लोकोंको व स्वर्ग स्थानको हरताभया ४३ और वही विष्णु दशरथके घर में अपने तेजके चारप्रकार भागकरके और राम सत्तकहुआ रावणको मारताभया ४४ ऐसे यह विष्णु तिसी २ रूपको प्राप्तहोके देवताओंके प्रयोजन सिद्ध करने के वास्ते अपने कार्य्यको सिद्धकरताहै ४५ सो यह निश्चय विष्णुहै अथवा इन्द्रहै अथवा मरुत् देवताओंका पतिहै सो मेरे साधनकी इच्छाकरके यहां प्राप्त होरहाहै और नारदने जो मुझे कहाथा यह ठीकहै और यहां वसुदेवके प्रति मेरी बुद्धिमें शंका आती है सो इस वसुदेवकी बुद्धि विशेषकरके हम कातर अर्थात् दुःखितपने को प्राप्तहोगये ४६ क्योंकि मैं नारदसे खट्वाग वन में मिलाथा सो उनको पूर्व मेरे से यह कहा कि हे कंस जो ४७ तुमने गर्भोंके मारनेमें यत्नकिया वह तेराकर्म वसुदेवने रात्री में निष्फल करदिया ४८ व जो कन्या तूने रात्री में शिलापै पटकी तिसको तू यशोदाकी पुत्री जान और कृष्णको वसुदेवका पुत्रजान ४९ और इस मित्ररूप वसुदेव शत्रुने रात्रीविषे ये दोनोंगर्भ तेरे वधकेवास्ते बदलदिये ५० और यह यशोदाकी कन्या पर्वतोंमें उत्तम विन्ध्याचल पर्वतमें शुंभ और निशुंभ इन दो दैत्योंको मारके ५१ अपना अभिषेक करायेहुये और वर देनेवाली और भूतोंके समूहों से सेवित ऐसे प्रकारकी यह घोर चोरों करके बलिदान से पूजित होरही है ५२ व मदिरा व मांसके भरेहुये कुंडों करके शोभित होरही है और मोरों पाखोंके विचित्र २ गहनोंसे भूषित होरहीहै ५३ और मदित पक्षियों से नादित और काकोंसे नादित और पशुओं के समूहयुक्त और आश्रम में विविध में सहित पक्षियों करकेयुक्त ५४ व सिंह व्याघ्र सूकर इन्होंके शब्दसे नादित व वृक्षों के समूहसे पीजराके समान होरहा व दुर्गम मार्गों से भारी युक्त ५५ ऐसे वनमें दिव्यपात्रों ... ... देवताओं ... आदि ... ... पात्रों से नादित ५६ ऐसे विन्ध्याचल पर्वतपै विराजमान है व अपने मनसे स्मरण करतीहै और वह दिव्योंको नित्य भानेवालीहै ... स्थान में नित्य ५७ देवताओंकरके पूजितहै और परम प्रसन्नहुई वसतीहै और यह

जो नंदगोपका पुत्र कृष्णनामवाला है ५८ इसमें नारदमुनि ने मेरे बडे कार्य्य का कारण कहाहै कि वसुदेवका पुत्र वासुदेव होवेगा ५६ सो वह तेरा स्वाभाविक मृत्यु होवेगा और बाधव भी होवेगा सो वही वसुदेवका पुत्र वासुदेव बलवाला है ६० व धर्मसे मेरा बाधवहै और हृदासे नाश करनेवाला शत्रुहै और जैसे पैरों से किसीके मस्तकपै काक बैठके ६१ उसके माम खानेकी इच्छा करके उसी के नेत्रों को चोंचसे फोड़े है तैसेही ६२ यह वसुदेव सबकी बंधुभी है और हमारीही जडको काटै है व हमारेही समीप आजीवनकरै है व भ्रूणहत्या भी उतरजाती है व गौ का वध व स्त्री का वधभी उतर जाताहै ६३ परन्तु कृतघ्नी पुरुषका दोष किसी प्रकारभी नहीं उतरता है और अपने बांधवका तो अपराध विशेष करके नहीं उतरताहै ६४ व जो कृतघ्नके अनुवधके वास्ते दारुण प्रीतिकरै है वह पतित मार्गको जल्दही प्राप्तहोजाताहै और नरकादिकों के भी दारुणमार्ग्ग में उसको जानाहै ६५ व जो विना पापवाले मेरेको पाप के हृदय से प्राप्तहोता है वह पुत्र तुझको श्लाघ्यहै कि मैं स्वजन श्लाघ्यहूं ६६ व हे वसुदेव नियमों करके और गुणोंकी वृत्तिकरके बंधुओंके प्यारकी इच्छा करके तैंने हाथियोंके घोर कलहमें छोटी २ बेलआदिकों के नाशहोनेकी तरह नाशकरवायाहै और वे हाथी युद्ध के अन्तमें महावनमें तिन बेलोंको भी साथही खालेते हैं ६७ ऐसे बधुओंके भेद कालमें जो बीचमें प्राप्तहो वहभी स्वजनहो अथवा अन्यजन वधको प्राप्तहोताहै सो हे वसुदेव विनाशके वास्ते मुझे तू काल प्रतीत होताहै ६८ व जो तू इसकुल का विरोध करताहै इसवास्ते तू अमर्षी अर्थात् कष्ट सहनेवाला नहीं है व वैरमें स्वभाव रखनेवालाहै और पापकी मतिवालाहै व मूर्ख है ६६ व हे मूढ़ यदुकुलके स्थानमें यह कर्त्तव्य तुझको शोचना चाहिये व हे वसुदेव तू वृद्ध अगाड़ी मैंने वृथाही किया है ७० व सफ़ेद शिर होनेसे भी वृद्ध नहीं होताहै न सौ वर्ष का होनेसे भी वृद्ध नहींहोता जिसकी बुद्धि बड़ीहोवे वही मनुष्यों में बड़ाहै ७१ व तू कठिन स्वभाववालाहै व बुद्धिकरके ज्ञानवान् नहीं है व तू फ़क़त् अवस्थाकर के बडाहै जैसे शरद् ऋतुमें मेघ तैसे ७२ व हे वृथा बुद्धिवाला वसुदेव तू अच्छा जानताहै कि कंस मरने के बाद मेरापुत्र मथुरा में राज्य करेगा ७३ सो तू पूरी आशावालाहै व वृथा वृद्धहुआ है व तेरा यह विचार मिथ्याहै क्योंकि जो मेरे अगाड़ी खड़ा होताहै वह जीवनेको भी समर्थ नहीं है ७४ व जो विश्वासवाने

व पहले जब अमृत निकसाथा तब विष्णु स्त्रीरूप धारणकरके देवता व राक्षसों का दारुणयुद्ध कराता भया ४१ और वही विष्णु पहले अमृत निकासनेकेसमय मन्दराचलपर्व्वत को धारण करताभया व अकूपार ऐसा सुनाजाता है ४२ और पहले वही विष्णु निन्दा करनेलायक वामनरूपको धारणकरके तीनपैरों करके तीनों लोकोंको व स्वर्ग स्थानको हरताभया ४३ और वही विष्णु दशरथकेघर में अपने तेजके चारप्रकार भागकरके और राम सञ्ज्ञकहुआ रावणको मारताभया ४४ ऐसे यह विष्णु तिसी २ रूपको प्राप्तहोके देवताओंके प्रयोजन सिद्ध करने के वास्ते अपने कार्य्यको सिद्धकरताहै ४५ सो यह निश्चय विष्णुहै अथवा इन्द्रहै अथवा मरुत् देवताओंका पतिहै सो मेरे साधनकी इच्छाकरके यहां प्राप्त होरहाहै और नारदने जो मुझे कहाथा वह ठीकहै और यहां वसुदेव के प्रति मेरी बुद्धिमें शंकाआती है सो इस वसुदेवकी बुद्धि विशेषकरके हम कातर अर्थात् कुत्सितपने को प्राप्तहोगये ४६ क्योंकि मैं नारदसे खट्वाग वन में मिलाथा सो उसको दूसरे मेरे से यह कहा कि हे कंस जो ४७ तुझने गर्भोंके मारनेमें यत्नकिया वह तेराकर्म वसुदेवने रात्री में निष्फल करदिया ४८ व जो कन्या तूने रात्री में शिलापै पटकी तिसको तू यशोदाकी पुत्री जान और कृष्णको वसुदेवका पुत्रजान ४९ और इस मित्ररूप वसुदेव शत्रुने रात्रीविषे ये दोनोंगर्भ तेरे वधकेवास्ते बदलदिये ५० और वह यशोदाकी कन्या पर्वतों में उत्तम विंध्याचल पर्वतमें शुम और निशुम इन दो दैत्योंको मारके ५१ अपना अभिषेक करायेहुये और वर देनेवाली और भूतोंके समूहों से सेवित ऐसे प्रकारकी वह घोर चोटों करके बलिदान से पूजित होरही है ५२ व मदिरा व मासके भरेहुये कुडों करके शोभित होरही है और की पाखोंके विचित्र २ गहनों से भूषित होरहाहै ५३ और गर्वित कुक्कुटों से नादित और काकोंसे नादित और बकरों के समूहयुक्त और आपस में विरोध से रहित पक्षियों करकेयुक्त ५४ व सिंह व्याघ्र शूकर इन्होंके शब्दसे नादित व वृक्षों के समूहसे पींजराके समान होरहा व दुर्गम मार्गों से चारोंतरफ़युक्त ५५ ऐसे वनमें दिव्यजलकी झारी चमर सीसा इत्यादिसेयुक्त व देवताओं के भेरी आदि सैकड़ों बाजों से नादित ५६ ऐसे विंध्याचल पर्व्वत पै तिसका स्थानहै व अपने तेजसे तिसको रचाहै और वह रिपुओंको निरय त्रासदेनेवाली है व तहां मनोरम स्थान में नित्य ५७ देवताओंकरके पूजितहुई और परम प्रसन्नहुई बसती है और यह

जो नंदगोपका पुत्र कृष्णनामवाला है ५८ इसमें नारदमुनि ने मेरे बडे कार्य्य का कारण कहाहै कि वसुदेवका पुत्र वासुदेव होवेगा ५९ सो वह तेरा स्वाभाविक मृत्यु होवेगा और बाधव भी होवेगा सो वही वसुदेवका पुत्र वासुदेव बलवाला है ६० व धर्मसे मेरा बाधवहै और हृदासे नाश करनेवाला शत्रुहै और जैसे पैरों से किसीके मस्तकपै काक बैठके ६१ उसके मास खानेकी इच्छा करके उसी के नेत्रों को चोंचमे फोड़े है तैसेही ६२ यह वसुदेव सबंधी बंधुभी है और हमारीही जडको काटै है व हमारेही समीप आजीविनकरै है व भ्रूणहत्या भी उतरजाती है व गौ का वध व स्त्री का वधभी उतर जाताहै ६३ परन्तु कृतघ्नी पुरुषका दोष किसी प्रकारभी नहीं उतरता है और अपने बांधवका तो अपराध विशेष करके नहीं उतरताहै ६४ व जो कृतघ्नके अनुबंधके वास्ते दारुण प्रीतिकरै है वह पतित मार्गको जल्दही प्राप्तहोजाताहै और नरकादिकों के भी दारुणमार्ग्ग में उसको जानाहै ६५ व जो विना पापवाले मेरेको पाप के हृदय से प्राप्तहोता है वह पुत्र तुझको श्लाघ्यहै कि मैं स्वजन श्लाघ्यहूं ६६ व हे वसुदेव नियमों करके और गुणोंकी वृत्तिकरके बंधुओंके प्यारकी इच्छा करके तैंने हाथियोंके घोर कलहमें छोटी २ बेलआदिकों के नाशहोनेकी तरह नाशकरवायाहै और वे हाथी युद्ध के अन्तमें महावनमें तिन बेलोंको भी साथही खालेते हैं ६७ ऐसे बधुओंके भेद कालमें जो बीचमें प्राप्तहो वहभी स्वजनहो अथवा अन्यजन वधको प्राप्तहोताहै सो हे वसुदेव विनाशके वास्ते मुझे तू काल प्रतीत होताहै ६८ व जो तू इसकुल का विरोध करताहै इसवास्ते तू अमर्षी अर्थात् कष्ट सहनेवाला नहीं है व वैरमें स्वभाव रखनेवालाहै और पापकी मतिवालाहै व मूर्ख है ६९ व हे मूढ यदुकुलके स्थानमें यह कर्त्तव्य तुझको शोचना चाहिये व हे वसुदेव तू वृद्ध अगाड़ी मैंने वृथाही किया है ७० व सफ़ेद शिर होनेसे भी वृद्ध नहीं होताहै व सौ वर्ष का होनेमे भी वृद्ध नहींहोता जिसकी बुद्धि बड़ीहोवे वही मनुष्यों में बड़ाहै ७१ व तू कठिन स्वभाववालाहै व बुद्धिकरके ज्ञानवान् नहीं है व तू फ़कत् अवस्थाकर के बडाहै जैसे शरद् ऋतुमें मेघ तैसे ७२ व हे वृथा बुद्धिवाला वसुदेव तू अच्छा जानताहै कि कंस मरने के बाद मेरापुत्र मथुरा में राज्य करेगा ७३ सो तू बुरी आशावालाहै व वृथा वृद्धहुआ है व तेरा यह विचार मिथ्याहै क्योंकि जो मेरे अगाडी खड़ा होताहै वह जीवनेको भी समर्थ नहीं है ७४ व जो विश्वासघाते

मेरे विषे तू प्रहार करानेकी इच्छा करता है इसवास्ते मैं तेरे पुत्रों के देखते हुये तेरा निरादर करूंगा ७५ व मेरें कुछ वृद्धका वधनहीं है व कुछ द्विजका वध व स्त्रीका भी वधनहीं है व मैंतो करेहुयेके अनुसार करताहू व बाधवों में विशेष करके करताहूं ७६ व तू यहां मेरे पिता करके बढाया हुआ वृद्ध होगया है व मेरी बड़ीबहिनका भर्त्ता है व यदुओंका प्रथम गुरु अर्थात् बड़ाहै ७७ व चक्रवर्त्ती राजाओं करके महान् कुल में विख्यातहै व धर्मकी बुद्धिवाले श्रेष्ठ यदुओं करके गुरुके अर्थ पूजितहै ७८ सो श्रेष्ठ पुरुषों में हमारी चर्चा होवेगी इसवास्ते हम क्याकरेंगे क्योंकि यदुओं में जिसका तेरा ऐसा वृत्तान्तहै ७९ व मेरा वध होजावे अथवा जय होजावे परन्तु वसुदेव की खोटी नीतियों करके श्रेष्ठ पुरुषों में सब यदुओंकी निन्दाहोवेगी ८० सो हे वसुदेव तैंने युद्धमें मेरे वधका उपाय करवाया है सो यह अविश्वास्य कर्म्म किया है व यादव वाच्य करदिये अर्थात् तिनकी चर्चा करदी ८१ और मेरा और कृष्णका अशाम्य वैर उत्पन्न हुआहै अर्थात् किसीतरह शान्त नहीं होगा परन्तु हमारे मोह सें जब एक मरजावेगा तब ये यादव शान्तिको प्राप्तहोवेंगे ८२ इसप्रकार वह कंस वसुदेवको कहके फिर अक्रूरके प्रति कहनेलगा कि हे अक्रूर तू जल्द व्रजमें जाय करके देनेवाले नन्दगोप व अन्य गोपोंको मेरी आज्ञासे लेआव ८३ व नन्दगोप से यहकहो कि वर्षौंढी करकोलेके सब गोपों से युक्तहुआ जल्द इस मथुरानगरी में आवे ८४ व कृष्ण बलदेव इनदोनों वसुदेव के पुत्रोंको कंस देखने की इच्छा कररहाहै व कंसके भृत्य व पुरोहित भी देखने की इच्छा करते हैं ८५ व ये दोनों युद्ध के जाननेवाले व रणमें युद्ध करनेलायक व दृढ़ शरीरवाले व विस्तृत उद्यमवाले ऐसे दोनों सुने हैं ८६ सो हमारे भी युद्धमें अति चतुर दो मल्ल हैं तिन्हों के संग उन दोनोंका युद्ध कराया जावेगा ८७ व वे देवताओं के समान व मेरी बहिन के पुत्र व व्रजमें बसनेवाले व वनों में विचरनेवाला ८८ ऐसे दोनों बालक मुझको निश्चय देखने हैं व व्रजवासियों के समीपमें जाके यहकहो कि कंसराजा धर्मयज्ञ करावेगा ८९ व सब व्रजवासी सुखपूर्वक समीप में बसेंगे व अमन्त्रित किये जनों के अर्थ सनमुख राजादेवेगा ९० तिसमें सब व्रजवासी आनके स्थित हों व दूध घृत दही मट्ठा येभी यथायोग्य पहुंचानी चाहिये ९१ व हे अक्रूर मेरी आज्ञासे तू जल्द गमनकर बलदेव व श्रीकृष्णको लेआ इस आश्चर्य को

देखने के अर्थ ६२ व तिन दोनों के इसजगह आगमन करने में प्रीति उपजे ऐसे करो व महावीर्यवाले तिन दोनोंको देखके जैसा हितहोगा तैसे करेंगे ६३ व जो मेरे नाम व वाक्यको सुनके दोनों नहीं आवेंगे तो मेरी आज्ञासे पकड़के ल्याने उचितहै ६४ परन्तु बालकों में प्रथम शांत्वन करनाही नीति है अर्थात् मधुर वचनोंसेही उन दोनोंको लाओ ६५ व हे अक्रूर जो तैंने वसुदेवका मन्त्रनहीं सुनाहै तो इस मेरी परम प्रीतिको कर ६६ अर्थात् जैसे वे आसकें तैसा उपाय कर ऐसे वसुदेवने कंसको बहुत भिड़का भी ६७ परन्तु समुद्र के समान आत्मा को वना क्षमाही करताभया अर्थात् बहुतसी खोटी वाणियों से कंसने वसुदेवको बिंधाभी ६८ परन्तु क्षमाकोधार वसुदेव उत्तर नहीं देताभया व उससभा में जो अनेकप्रकारसे दीप्तिमान् वसुदेवको देखतेभये ६९ वे सब नीचेको मुखकर हलवें हलवें धिक् धिक् ऐसा शब्द करनेलगे व महातेजवाला व दिव्यचक्षुसे जानने वाला १०० ऐसा अक्रूर व्रजको जाने के अर्थ प्रीतिमान् होताभया १०१ जैसे जल को देखके तिसाया तब तिसी मुहूर्त्त में अक्रूर श्रीकृष्ण के अर्थ मथुरा से निकसता भया १०२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्वेभाषायांअक्रूरप्रस्थानेऊनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहने लगे सब यादव कंस से भिड़के हुये वसुदेवजी को देख हाथों से कानोंको ढांके के आयुसे रहित कंसको मानते भये १ परन्तु उद्विग्न रूप मनसे रहित अन्धनाम यादव सभामें धैर्य्यता करके कंसके अर्थ कहने लगा २ हे पुत्र तैंने जो यह वाणी का परिश्रम किया है सो श्लाघा के योग्य नहीं है सत्पुरुषों के निंदाके योग्य है और बंधुओं में ऐसा वचन विशेष करके बुराहै ३ व जो तैंने प्रथम कहा कि मैं यादव नहीं हूं तो हे वीर ये सब यादव तेरे को बलसे यादव नहीं बनाते और हे प्रिय येसब लक्ष्मी श्लाघा के योग्य नहीं हैं क्योंकि जिन्हों को तू शिक्षा देनेवाला है और इक्ष्वाकुके वंशका राजा निश्चयहुआ ४ व जो तू भोज है व यादव है व कंस है अथवा जोन तोनहै जो तेराही यह शिर है तो जटाको धारणकर या मुण्ड मुड़ाले ५ व हमारे कुल में पासनरूप यह उग्रसेन शोचकरने के योग्यहै जिसने तुमसा पुत्र उत्पन्न किया ६

व हे पुत्र अपने गुणों को बुद्धिमान् नहीं कहाकरे हे क्योंकि दूसरे की वाणी से कहेहुये गुण गुणताको प्राप्तहोते हैं ७ सो इस पृथ्वी में यह यदुकुल राजाओं की निंदाकरने के योग्य है क्योंकि बालक और कुलका नाश करनेवाला व मूढ ऐसा तू जिन्होंका राजाहै ८ व असाधु कहेहुये वचनोंको तू साधु मानता है तैंने अपनी आत्मा विगाडलिया ९ व अपराधसे रहित व बडोंकामान्य ऐसे गुरुके क्षेपणको शुभ कौनमाने अर्थात् कोई भी नहीं मानता १० जैसे ब्राह्मण के मारने को और वृद्ध मनुष्य सब काल में मानने योग्य होते हैं जैसे अग्नि व तिन वृद्धोंका क्रोध अतर्गत लोकोंको भी दग्धकरदेताहै ११ इसवास्ते बुद्धिमान् और शात पुरुषको धर्मकीगति ढूंढनी चाहिये जैसे मच्छकीगति जल में १२ व तूतो गर्वकरके अग्निके समान रूपवाले वृद्धों को मर्म्म के विंधनेवाली वाणीकरके पीडितकरेहै जैसे मत्रकेविना आहुति १३ व पुत्रकेअर्थ इस वसुदेव की निन्दा तू करेहै यह तेरा मिथ्या विलापहै तेरे कृपणवचन को मै निन्दित करताहू १४ क्योंकि दारुणरूप पुत्रपै भी पिता दारुण नहीं होता व पुत्रों के अर्थ वहुतसे दु खोंको पिता प्राप्त होताहै १५ जो इस वसुदेवने अपनाबालक पुत्रदह को दिया व इसमें जो तू अकर्त्तव्य मानताहै तू अपने पिता उग्रसेनको पूछ १६ व वसुदेव व यदुवशीकी निंदा करनेवाले तैंने यादवों के वैरसे उपजनेवाला विष सचित करलिया १७ व जो वसुदेवने पुत्र विषयक अकर्त्तव्यही किया तो उग्रसेन ने तुझे बालही क्यों न मारदिया १८ सो पुन्नामनरक से जो पितरोंकी रक्षाकरे तिसको पुत्र कहते हैं १९ सो जन्मसेही कृष्ण व बलदेव यादवहैं व तिन्हों से तैंने वैरकिया २० व वसुदेव के झिडकने से व श्रीकृष्ण के कोपसे सब यादवों के हृदय विगड़ गये हैं व वसुदेवकी निंदाकरने से २१ श्रीकृष्णके सग तेरा उग्र वैर होगया व बुरे निमित्त भी तेरेको भयदेते हैं २२ अर्थात् रात्रि के अतभाग में सर्पोंकातीव्र दर्शन होताहै २३ व यह क्रूरग्रह आकाश में किरणों करके स्वाती को वेधन करताहै व मगलग्रह चित्रापै वक्र होगयाहै २४ व घोरतेजवाले बुध करके पश्चिम सन्ध्या व्याप्तहुई है व कृत्तिकानक्षत्र के मार्ग में शुक्रने अतिचार कियाहै २५ व केतुने भरणीआदि तेरहनक्षत्र निषिद्धये हैं सो चन्द्रमाकेसग नहीं चलते २६ व परिघमें ग्रस्तहुई प्राक्सन्ध्या सूर्यको पीडित करती है व श्मशान भूमिसे निकसीहुई शिवा अंगारोंको वरसाती है २७ व दोनों सन्ध्याओं में बहुत

पुकारतीहुई पुरी के सम्मुख नित्यप्रति आवतीहैं व बहुत से शब्दकरके उल्का भी आकाशसे पडती हैं २८ व पर्वरहित दिनमें भी पृथ्वी और पर्वतों के शिखर कांपते हैं व मृग व पक्षी शब्द करतेहुये प्रतिलोम गमन करते हैं २९ व राहुने सूर्य्य ग्रसलिया तिस करके दिनकी रात होगई व धूमारूप उत्पातों करके दिशा व्याप्त होगईं व सूखे वज्रकरके हत कियेहुये ३० व बहुत गर्जते हुये व बिजलियों को गिरानेहुये ऐसे बद्दल लोहू को भिराते हैं व अपने अपने स्थानों से देवते चलायमान होगये और वृक्षोंको पक्षी त्यागते हैं ३१ सो जिसको राज्य विनाश के अर्थ ज्योतिष् कहते हैं वे सब अशुभरूप निमित्त देखते हैं ३२ व अपने प्यारों से वैरकरनेवाला व राजधर्म से मुख फेरनेवाला और विना निमित्त क्रोधकरने वाला ऐसे तेरे को बहुतजल्द भय होनेवाला दीखता है ३३ व देवताओं के समान उपमावाला और वृद्ध ऐसे वसुदेव को हे दुर्बुद्धे तू खोटे वचन कहताभया कैसे तेरी शांतिहोगी ३४ व जो तेरे बीचमें हमारास्नेहथा तिसको हम त्यागते हैं व अहितरूप तेरेको हमनहीं सेवेंगे ३५ और अक्रूरजीको धन्यहै जो कमलके समान नेत्रोंवाले व वनमेंस्थित ऐसे श्रीकृष्णको देखेगा ३६ व यह यदुवोंकावंश मूलसे रहित तैंने कियाहै सो श्रीकृष्ण जब अपनी ज्ञातिमें प्राप्तहोंगे तब सबल बनेगा ३७ और इस बुद्धिमान् वसुदेव ने तेरे पै क्षमाकरी और अब जो तेरी इच्छाहो सो तू कह ३८ परन्तु हे कंस मेरे को तो अबभी यही रुचै है कि वसुदेव की सहायवाला तू होके जहां श्रीकृष्ण बसते हैं तहां जाके श्रीकृष्ण से प्रीति करले ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभाषायांविष्णुपर्वणिअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसे अन्धकके वचनको सुनके क्रोधसे लालनेत्रों वाला कंस कुछभी नहीं बोलताभया किन्तु अपने स्थानमें प्रवेशकरताभया १ तब सब यादव भी कंससे प्रीतिको त्याग अपने २ स्थानों में चलेगये २ व कंस की आज्ञासे अक्रूर भी कृष्ण के दर्शनकी वाञ्छाके अर्थ मनके समान वेगवाले रथमें स्थितहोके जाताभया ३ तब श्रीकृष्ण पै भी सुन्दर अङ्ग फरकनेलगे तब श्रीकृष्णने भी जाना कि आज पिता के समान मनुष्य से समागमहोगा ४ व

प्रथम केशी विषयक आख्यान कहाजाताहै कि उग्रसेनके पुत्र कंसने श्रीकृष्ण को मारनेके अर्थ केशी दैत्यके प्रति दूत भेजदिया ५ सो दूतके वचनको सुनके मनुष्योंको क्लेशके करनेवाला केशी वृन्दावनमें जाके गोपोंको पीड़ा देनेलगा ६ अर्थात् मनुष्यके मांसको खानेवाला और दुष्ट पराक्रमवाला व क्रोधमें पूर्ण और शांतिसेरहित और घोडाके शरीरको धारणेवाला ७ ऐसा केशीदैत्य गाय और गोपालों को मारके जहां वह वास करेथा तिसजगह ८ मनुष्यों के हाड़ों करके श्मशान भूमिके समान करताभया ९ सो खुरोंसे पृथ्वी को दारणकरे व वेगसे वृक्षोंको गेरदे और हिंसने से वायुकी स्पर्द्धाकरे और कूदने से आकाश को लघजावे १० सो अति बढाहुआ और मत्त व वनमें विचरनेवाला व कण्ठके वालों को कम्पानेवाला और कंसका मंत्री ११ और तिसपापी से वह वन बुरा विख्यातहोगया व जहां नित्यप्रति गोपोंको मारनेकी इच्छावाला १२ ऐसे तिस केशी दैत्यने वह वन दूषित करदिया अर्थात् तिस वनमें मनुष्य व गाय आदिकायें भी नहीं जासकें १३ और तिसने मार्गरोंकदिया और मनुष्यों के मांस को खानेलगा १४ सो कदाचित् काल धर्म्मसे प्रेरित वह दैत्य दिन निकसतेही गोपों के वासमें जाताभया १५ तब तिसको देखके गोप गोपियां बालक ये सब भागनेलगे और पुकारतेहुये जगत् के पति श्रीकृष्णको प्राप्तहुये १६ तब तिन गोप गोपियों आदिके रोवने को सुनके तिन्हों के अर्थ अभयदे श्रीकृष्ण केशी दैत्यके सम्मुख भाजताभया १७ और ऊपरको उठी ग्रीवावाला और प्रकाशमान दांत व नेत्रोंवाला और हिंसता हुआ और अति वेगवाला ऐसा केशीभी श्रीकृष्णके सम्मुख भागा १८ तब घोडाके रूपवाले केशीको आतेहुये देख श्रीकृष्ण बहुत जल्द प्राप्तहुये जैसे चंद्रमाको बद्दल १९ तब केशी के समीप में प्राप्त हुये श्रीकृष्णको देख मनुष्य बुद्धिवाले सब गोप हितकी इच्छाकरके श्रीकृष्ण को ऊंचे प्रकारसे कहनेलगे २० हे कृष्ण हे प्रिय तू वेगसे इसदैत्यके समीपमें मतजा क्योंकि तू बालक है और यह पापी २१ और कंसका बाहर विचरनेवाला प्राण और उत्तम घोडों के रूपको धारण करनेवाला दैत्य और युद्धमें अतिउग्र २२ और पराई सेनाको दुःखित करनेवाला और घोडोंमें महाबलवाला और सब प्राणियों से अवध्य और पापकर्म्म करनेवालों में प्रथम ऐसा केशी है २३ तब गोपोंके वचनको सुन श्रीकृष्ण केशीके संग युद्धकरने की इच्छा करतेभये २४

तब बायें और दाहने मेंडको भ्रमताहुआ केशी क्रोधकरके दोनों पैरों से वृक्षों
को तोडनेलगा २५ और मुख ग्रीवा कंध बालों से आवृतहुये अंग इन सबोंके
द्वारा केशीके क्रोधसे उपजा पानी बहनेलगा २६ और झागोंसे युक्त और रज
से आवृत ऐसापानी मुखसे बहनेलगा जैसे शीतल समयमें आकाशमें चंद्रमा
ओसके जलको छोडे तैसे २७ और वह दैत्य हिंसताहुआ डकार की बूंदों से
और मुख से निकसे झागों से कमल सरीखे कांतिवाले श्रीकृष्ण को भिगोने
लगा २८ और वह केशीदैत्य अपने खुरोंसे उछालीहुई रूक्षक सफेद वर्णवाली
धूलसे मस्तकके बालोंको २९ भरताभया और कूदताहुआ और अपने खुरोंसे
पृथ्वी को खोदताहुआ और अपने दांतों को चाबताहुआ ऐसा वह केशीदैत्य
श्रीकृष्णकेप्रति दौडनेलगा ३० व फिर वह दैत्य कृष्णको प्राप्तहोके पिछले पैरों
से छाती में मारताभया ३१ व वह बली दैत्य बारम्बार चारोंतरफ खुरोंको मारने
लगा और अतुल पराक्रमवाले श्रीकृष्णकेप्रति वह दैत्य ऐसे प्रहार करनेलगा
३२ कि अपने घोर मुखकी पैनी २ दाढोंसे श्रीकृष्णकी बाहुओंपै बुडका भर-
ताभया और क्रोधमें आताभया ३३ व लम्बेकेशोंवाला वह केशी दैत्य कृष्णके
संग ऐसा प्रकाशित होताभया जैसे मेघसे संयुक्त सूर्य सहित आकाश तैसे ३४
व वह दैत्य श्रीकृष्ण की छातीको अपनी छाती से मारने की इच्छाकरके और
क्रोधसे श्रीकृष्णसेभी दूनाबल बढायेहुये ३५ वेगसे श्रीकृष्णकेप्रति भाजताभया
फिर तिस आतेहुयेको अतुलपराक्रमवाले श्रीकृष्णदेव क्रोधमेंआ अपने हाथ
को उठाके तिसके मुखमें देदिया ३६ पश्चात् असमर्थहुआ वह दैत्य तिसके हाथ
को खानहीं सका और छेदनभी नहीं करसका और श्रीकृष्णके हाथ से टूटेहुये
दांतोंवाला वह दैत्य झागोंसमेत रुधिरका वमन करनेलगा ३७ व जब श्रीकृ-
ष्णने उसके ओष्ठ फाडदिये और कपोल फाडदिये तब विकृत चक्रके आकार
तिसके नेत्रहोगये शरीरके बन्धन मुक्तहोगये ३८ व ठोढी फटगई और रुधिरसे
नेत्रभरगये तब वह नष्ट चित्तवाला दैत्य कानोंको ऊपरको उठाके बारम्बार चेष्टा
करनेलगा ३९ व बारम्बार पैरोंको पटकनेलगा और लीद व मूत्र करनेलगा व
पश्चात पसीनाआके गीले रोमहोगये और थककर प्राप्तहुआ निर्बल चरण अ-
र्थात पैरोंको कुछ हिलाता न रहा ४० व केशी दैत्यके मुखमें श्रीकृष्णका हाथ
ऐसे शोभित होताभया कि जैसे वर्षाके समयमें चन्द्रमाकी आधी २ किरणोंसे

प्रथम केशी विषयक आख्यान कहाजाताहै कि उग्रसेनके पुत्र कंसने श्रीकृष्ण
को मारनेके अर्थ केशी दैत्यके प्रति दूत भेजदिया ५ सो दूतके वचनको सुनके
मनुष्योंको क्लेशके करनेवाला केशी वृन्दावनमें जाके गोपोंको पीड़ा देनेलगा
६ अर्थात् मनुष्यके मासको खानेवाला और दुष्ट पराक्रमवाला व क्रोधसे पूर्ण
और शांतिसेरहित और घोडाके शरीरको धारणेवाला ७ ऐसा केशीदैत्य गायों
और गोपालों को मारके जहा वह वास करेथा तिसजगह ८ मनुष्यों के हाड़
करके श्मशान भूमिके समान करताभया ९ सो खुरोंसे पृथ्वी को दारणकरे
वेगसे वृक्षोंको गेरदे और हिसने से वायुकी स्पर्द्धाकरे और कूदने से आकाश
को लघजावे १० सो अति वढाहुआ और मत्त व वनमें विचरनेवाला व कण्ठ
वालों को कम्पानेवाला और कसका मंत्री ११ और तिसपापी से वह वन दुःखी
विख्यातहोगया व जहा नित्यप्रति गोपोंको मारनेकी इच्छावाला १२ ऐसे तिस
केशी दैत्यने वह वन दूषित करदिया अर्थात् तिस वनमें मनुष्य व गाय आ-
दिकायें भी नहीं जासकें १३ और तिसने मार्गरोंकदिया और मनुष्यों के मास
को खानेलगा १४ सो कदाचित् काल धर्म्मसे प्रेरित वह दैत्य दिन निकसतेही
गोपों के वासमें जाताभया १५ तब तिसको देखके गोप गोपिया वालक ये सब
भागनेलगे और पुकारतेहुये जगत् के पति श्रीकृष्णको प्राप्तहुये १६ तब तिन
गोप गोपियों आदिके रोवने को सुनके तिन्हों के अर्थ अभयदे श्रीकृष्ण केशी
दैत्यके सम्मुख भाजताभया १७ और ऊपरको उठी ग्रीवावाला और प्रकाशमान
दात व नेत्रोंवाला और हिंसता हुआ और अति वेगवाला ऐसा केशीभी श्री-
कृष्णके सम्मुख भागा १८ तब घोडाके रूपवाले केशीको आतेहुये देख श्रीकृ-
ष्ण बहुत जल्द प्राप्तहुये जैसे चद्रमाको वद्दल १९ तब केशी के समीप में प्राप्त
हुये श्रीकृष्णको देख मनुष्य बुद्धिवाले सब गोप हितकी इच्छाकरके श्रीकृष्ण
को ऊचे प्रकारसे कहनेलगे २० हे कृष्ण हे प्रिय तू वेगसे इसदैत्यके समीपमें म-
तजा क्योंकि तू वालक है और यह पापी २१ और कंसका वाहर विचरनेवाला
प्राण और उत्तम घोडों के रूपको धारण करनेवाला दैत्य और युद्धमें अतिउग्र
२२ और पराई सेनाको दुःखित करनेवाला और घोडोंमें महाबलवाला और सब
प्राणियों से अवध्य और पापकर्म्म करनेवालों में प्रथम ऐसा केशी है २३ तब
गोपोंके वचनको सुन श्रीकृष्ण केशीके सग युद्धकरने की इच्छा करतेभये २४

तब बायें और दाहने मंडको भ्रमताहुआ केशी क्रोधकरके दोनों पैरों से वृक्षों को तोड़नेलगा २५ और मुख ग्रीवा कंध बालों से आवृतहुये अंग इन सबोंके द्वारा केशीके क्रोधसे उपजा पानी बहनेलगा २६ और झागोंसे युक्त और रज से आवृत ऐसापानी मुखसे बहनेलगा जैसे शीतल समयमें आकाशमें चंद्रमा ओसके जलको छोड़े तैसे २७ और वह दैत्य हिंसताहुआ ढकार की बूंदों से और मुख से निकसे झागों से कमल सरीखे कांतिवाले श्रीकृष्ण को भिगोने लगा २८ और वह केशीदैत्य अपने खुरोंसे उछालीहुई कछुक सफेद वर्णवाली धूलसे मस्तकके बालोंको २६ भरताभया और कूदताहुआ और अपने खुरोंसे पृथ्वी को खोदताहुआ और अपने दांतों को चाबताहुआ ऐसा वह केशीदैत्य श्रीकृष्णकेप्रति दौड़नेलगा ३० व फिर वह दैत्य कृष्णको प्राप्तहोके पिछले पैरों से छाती में मारताभया ३१ व वह बली दैत्य बारम्बार चारोंतरफ खुरोंको मारने लगा और अतुल पराक्रमवाले श्रीकृष्णकेप्रति वह दैत्य ऐसे प्रहार करनेलगा ३२ कि अपने घोर मुखकी पैनी २ दाढ़ोंसे श्रीकृष्णकी बाहुओंपै बुडका भरताभया और क्रोधमें आताभया ३३ व लम्बेकेशोंवाला वह केशी दैत्य कृष्णके संग ऐसा प्रकाशित होताभया जैसे मेघसे संयुक्त सूर्य सहित आकाश तैसे ३४ व वह दैत्य श्रीकृष्ण की छातीको अपनी छाती से मारने की इच्छाकरके और क्रोधसे श्रीकृष्णसेभी दूनाबल बढ़ायेहुये ३५ वेगसे श्रीकृष्णकेप्रति भाजताभया फिर तिस आतेहुयेको अतुलपराक्रमवाले श्रीकृष्णदेख क्रोधमेंआ अपने हाथ को उठाके तिसके मुखमें देदिया ३६ पश्चात् असमर्थहुआ वह दैत्य तिसके हाथ को खानहीं सका और छेदनभी नहीं करसका और श्रीकृष्णके हाथमें टूटेहुये दांतोंवाला वह दैत्य झागोंसमेत रुधिरका वमन करनेलगा ३७ व जब श्रीकृष्णने उसके ओष्ठ फाड़दिये और कपोल फाड़दिये तब विकृत चनके आकार तिसके नेत्रहोगये शरीरके बंधन मुक्तहोगये ३८ व ठोढ़ी फटगई और रुधिर से नेत्रभरगये तब वह नष्ट चित्तवाला दैत्य कानोंको ऊपरको उठाके बारम्बार चेष्टा करनेलगा ३९ व बारम्बार पैरोंको पटकनेलगा और लीद व मूत्र करनेलगा व पश्चात् पसीनाआके गीले रोमहोगये और खेदको प्राप्तहुआ निर्गत चरण अर्थात् पैरोंको कुछ हिलाता न रहा ४० व केशी दैत्यके मुखमें श्रीकृष्णका हाथ ऐसे शोभित होताभया कि जैसे वर्षाके समयमें चन्द्रमाकी आधी २ किरणोंसे

भी देखलिया और कसके मारने समय में फिर आऊंगा ७५ इसप्रकार वह ना
रदमुनि कहके आकाशमें चलागया फिर नारदमुनिके वचनको श्रीकृष्ण सु
के देवताओंकी योनिवाले ७६ गोपोंके सग इकट्ठेहुये व्रजमें आवतेभये ७७।

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायाकेशीवधेएकाशीतितमोऽध्याय ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं पीछे जब सूर्य अस्तहोगया और सन्ध्यासे आकाश रक्तहोगया और श्वेत मण्डलवाला चन्द्रमा होगया १ जब एक समय अपने घोंसलों में पक्षी बैठेहुये और श्रेष्ठ पुरुषोंने अग्नि प्रकट कररक्खी और सब दिशाओंमें कछुक अँधेराहोरहा २ व व्रजवासी सोनेकी तैयारीकररहे और गीदड़ बोलरहे और रात्री में विचरनेवाले और मासकी इच्छा करनेवाले ३ ऐसे जीव प्रसन्नहोरहे और तस्कर समीप लगरहे ऐसा प्रदोष समयहोरहा और गृहस्थ पुरुषों के ४ पाककरनेका वक्त होरहा और वनमें रहनेवाले मनुष्य अग्निको प्रज्वलित कररहे और इकट्ठीहुई गौओं को व्रजवासी दोहरहे ५ व जिनके बच्चे बँधरहे वे गौ बारम्बार रांभरहीं और अपने २ खूटों पै बँधीहुई गौबच्छोंको बुला रहीं ६ व गौओंको बाधतेहुये गोप रौलाकररहे और चारोंतरफ गोबरकी किस जलारक्खी ७ व काठके भारके लानेसे नयेहुये कन्धेवाले गोप अपने २ घरोंमें आरहे और कछुक चन्द्रचढ़रहा और मन्द २ किरणों से प्रकाशित होरहा ८ व कछु रात्री प्राप्त होरही और दिन व्यतीत होगया और दिनके व्यतीत होने में रात्रीका मुख प्राप्तहोरहा और सूर्य्यका तेज चलागया और चन्द्रमाका तेज प्रवृत्त होरहा ९ सौम्यचन्द्रमा प्रवृत्तहोने से अग्निहोत्र का समय प्रवृत्तहोरहा १० व अग्नि सोमात्मक सधिकाल प्रवृत्तहोरहा व पश्चिमकी तरह अग्निदीप्तहोरही व पूर्णकांति होरही ११ व आधादग्धहुआकी तरह आकाश होरहा व अपनी २ अवस्थावाले बंधुओं करके व्रजवासी युक्तहोरहे १२ ऐसे समयमें श्रेष्ठ रथमें बैठाहुआ अक्रूर तिस व्रजमें प्राप्तहोताभया १३ व व्रजमें प्रवेश होतेही वह अक्रूर श्रीकृष्ण व बलदेव व नदगोप इन्हों की सान्निध्य अर्थात् इन्हों के रहने की जगह बारम्बार पूछताभया १४ पश्चात् रथके मार्फ से नीचे उतरके वह महात्मवाला अक्रूर हर्षसे नेत्रों में जल लाताभया १५ व फिर दरवाजेमें प्रवेश होनेके समय

गौओंको दोहने की जगह श्रीकृष्णको देखनाभया और वे श्रीकृष्ण तहां ऐसे स्थितहोरहे कि जैसे गौके नीचे बच्छा खड़ाहो तैसे १६ फिर तिस कृष्णके प्रति हर्ष से युक्त गद्गद वाणीकरके वह धर्मको जाननेवाला अक्रूर ऐसे कहनेलगा कि हे पुत्र हे केशव तू आ इसप्रकार कहा १७ व श्रीकृष्णको सीधे सोतेहुये को देख व अच्छी शोभा से युक्त देख और तिसके अव्यक्त यौवन देख वह अक्रूर श्रीकृष्ण की प्रशंसा करनेलगा १८ व यह कहनेलगा कि कमल सरीखे नेत्रों वाला और सिंहशार्दूल इन्द्रों के समान पराक्रमवाला व जलसे भरा मेघके समान कांतिवाला व पर्वतके समान सुन्दर आकृतिवाला १६ व युद्धमें किसी से नहीं सहीजा ऐसी श्रीवत्स चिह्नवाली छातीवाला व वैरीकी मृत्यु करनेमें चतुर ऐसी भुजाओं से विभूषित २० व मूर्त्तिमान् व रहस्यात्मा व जगत्में श्रेष्ठ राजनरूप ऐसा यह विष्णुभगवान् गोप वेषको धारण कियेहुये विचर रहाहै २१ व मुकुटकामिस करके शिरपै छत्रको धारण किये है उत्तम कुण्डलों से युक्त कानों से विशेषकरके शोभित होरहाहै २२ व सुन्दर हारसे व पीले वस्त्रोंसे व बड़ी छाती से शोभित होरहाहै व बड़ी २ दोनों भुजाओं से अति शोभितहै २३ व हजारों स्त्रियों करके रमण करताहुआ और कामदेवरूपी शरीर को धारण कियेहुये व पीले वस्त्रों को पहिनेहुये ऐसा यह सनातन विष्णु है २४ व पृथ्वी के आश्रय भूतहुये चरणों करके वैरियोंको दमन करताहै और त्रिलोकीकी कांतिसेयुक्त इन पैरोंकरके पृथ्वी में व्यवस्थित होरहाहै २५ व इसका अति सुन्दर हाथ चक्र धारण करनेलायक दीखताहै और दूसरा हाथ उद्यतहुआ गदा धारणकरने की इच्छा करताहै २६ व देवताओं के भारको धारण करनेवाला यह कृष्ण इस पृथ्वीलोक में उतराहुआ अच्छेप्रकार शोभित होताहै २७ व भविष्य अर्थात् होनहार वस्तु के जाननेमें चतुर मनुष्योंको यह भविष्य दीखताहै कि यह गोपाल कृष्णभीण यादव वंशका विस्तारकरेगा २८ व सैकड़ों हजारों यादव इसके तेज करके वंश को पूर्ण करेंगे जैसे जलों के समूह समुद्रको पूर्णकरें तैसे २९ और इसी शिक्षा में सब जगत् स्थितहोवेगा जैसे सतयुगमें स्थितहुआ तैसे ३० व यह श्रीकृष्ण पृथ्वी में प्राप्तहुआ जगत्को वशमें करके राजाओं के ऊपर होजावेगा व आप राजा नहीं होवेगा ३१ व निश्चयहै कि जैसे पहले इसको तीन पैड़ों से सबलोक जीत के स्वर्ग में देवताओं का राजा इन्द्र करदियाथा तैसे ३२ पहले जीतीहुई

इस पृथ्वी को जीतके उग्रसेन को राज्य पै स्थितकरेगा इसमें सन्देह नहीं और यह वैरोंको बुझानेवालाहै ऐसे बहुतसे प्रश्नोंकरके हमने सुनाहै व ब्रह्मवादी ब्राह्मणों करके पुराण ऐसा गाया जाताहै ३३ इसप्रकार यह श्रीकृष्ण संसारको इच्छा करने लायक होगा और इसकी बुद्धि मनुष्यों के उपकार के वास्ते उपजी हुई है ३४ सो मैंतो अबसे लेके वासुकी जगहको यथाविधि से पूजूंगा व मन्त्रों का जाननेवाला मैं अपने मनसे विष्णु भावकरके पूजूंगा ३५ व जो मनुष्यों में प्रकट होनेसे इसकी जाती का परिज्ञान नहीं जानता और मैं तो इसको अमानुष्य अर्थात् देव मानताहूं और अन्यभी दिव्य चक्षुवाले पुरुष इसको इसी तरह जानते हैं ३६ और इस वास्ते विदितात्मा इस कृष्णके संग रात्री में सलाह करके इसके संग और अन्य गोपों के संग गमन करूंगा ३७ इसप्रकार वह अक्रूर श्रीकृष्णको बहुत विधिसे हेतुके कारणों से देख फिर तिसी कृष्ण के साथ नन्दगोपके घरमें प्रवेश होताभया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायामक्रूरागमनेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं—ऐसे वह अक्रूर कृष्णके संग नंदके घरमें प्रवेशहोके फिर वृद्ध गोपोंको इकट्ठेकर कहनेलगा १ और प्रसन्नहोके कृष्णको और बलदेव को कहनेलगा कि हे पुत्र कल्हहम मथुरापुरीको सुखकेवास्ते चलेंगे २ व व्रजके गोपभी चलेंगे और सबकुलकी भेटकोलेके चलेंगे क्योंकि तहां कंसको वर्षप्रति देनेकी कर को देवेंगे ३ सो हम तीनों रथमें बैठके चलेंगे और तहां मथुरापुरीमें कंसका महान् धनुरुत्सव होवेगा ४ सो तहां जाके दुःखका भाजन तिस अपने वसुदेव पिताको देखोगे और अपने स्वजनोंके संग मिलोगे ५ व दीन व पुत्रों के वधसेआर्त और अशुभ बुद्धिवाले कंससे निरन्तर पीड़ित ऐसे अपने पितासे तुम मिलोगे ६ और दशाके अन्तमें सुखायाहुआ वृद्ध और दुःखों से शिथिलता को प्राप्तहुआ और तुम्हारे बिना कंसके भयसे दुःखितहुआ ७ और भीतरलेमनमें उत्कण्ठा करके राति दिन जलताहै ऐसे अपने पिताको तुम देखोगे ८ और हे गोविन्द पुत्रोंकरके बिनाहुईहुई इन्द्रियोंवाली ९ व देवताओं के समान कान्तिवाली और शोचकरतीहुई व निहित कांतिवाली व पुत्रके शोकसे सखीहुई म

तेरे दर्शनमें तत्परहुई १० और वियोगके दुःससे तपतीहुई और वच्छाके विना गौकी तरहहुई और नेत्रोंसे दुःखित मालूम होतीहुई और दीन व मलिन वस्त्रों वाली ११ व राहुसे ग्रसाहुआ चन्द्रमाकी तरह कान्तिवाली और तेरे दर्शन में तत्पर और नित्य तेरे आगमनकी इच्छाकरनेवाली १२ व तेरेसे प्रवृत्तहुये शोक करके दुःखपातीहुई और तपस्विनी और तेरे बालकपने के प्रलापों में अकुशल और बालक अवस्था में तैंने वियोगकीहुई १३ और हे कृष्ण चन्द्रमा की कांति के समान तेरे रूपको नहीं जाननेवाली ऐसी तिस अपनी माता देवकीको तुम दोनों देखोगे १४ सो हे पुत्र यदि वह देवकी तेरेको जनके दुःखपावै है तो सन्तानमें उसका क्या सुख हुआ १५ इससे तो नहीं सन्तानहोनेही में सुख होना और नारियोंके यही एकशोकहै कि पुत्रनहीं होने फिर पुत्रवालीहोके वह नारी दुःखपावै तो उस पुत्रको धिक्कारहै १६ और तू तो इन्द्रके समान और गुणोंकरके सबसे भिन्न ऐसा उसके पुत्रहुआहै १७ सो अन्यों को भी सुख देनेवालाहै इस वास्ते उसको शोच नहीं होनाचाहिये और तेरे माता पिता अब वृद्धहुये पराये भृत्यहोरहे हैं १८ और खोटे दर्शनवाले कंससे तेरी कृत्योंके वास्ते नित्य भिड़के जाते हैं और तुझको देवकी मान्यहै क्योंकि पृथ्वी की तरह उसने तेरा आत्मा धारणकियाहै १९ इसवास्ते उसको शोकरूपी समुद्रसे तुम उतारने को योग्यहो और प्यारे पुत्रोंवाले और दुःखवाले ऐसे वृद्ध वसुदेवको २० तुम पुत्र योगकरके मिलके धर्मको प्राप्तहोगे और जैसे खोटे वृत्तान्तवाला नाग यमुनाके ह्रदमें दमन किया २१ और पर्वत उखाड़के धारण करलिया और अभिमान करनेवाला और बलवान् ऐसा अरिष्टनामक दैत्य मारदिया २२ और परपुरुषों के प्राणों को मारनेवाला और दुष्टात्मा ऐसा केशी दैत्य इसीतरह वे वृद्ध तेरे माता पिता दुःखितहैं उन्होंका भी उद्धारकर २३ और हे कृष्ण जिसतरह तू धर्मको प्राप्तहो वही प्रकार कर और हे कृष्ण जिनपुरुषों ने तेरा पिता कंसकी सभा में तिरस्कारको प्राप्तहुआ देखाहै २४ वे सब दुःखी हो नेत्रों से अश्रुपात लेआवेंगे और वह तेरी मातादिक गर्भ गावनेआदि कंसके वशमेंहुई अनेक दुःखोंको सहती हैं २५ और सबों को माता पितासे उपजा शरीरकरके २६ माता पिता का ऋण उतारना चाहिये सो हे कृष्ण इसप्रकार तेरे करने से माता पिताका अनुग्रह होनावेगा २७ और वे दोनों शोकको त्याग देवेंगे और तुझे अनुपम धर्म प्राप्तहोगा २८

वैशपायनजी कहनेलगे—इस प्रकार तेजवाला श्रीकृष्ण सब प्रयोजन को जान
के तिस अक्रूर के प्रति बोला कि यही तुम्हारा कहना ठीक है ऐसे बोला और
कुछ क्रोध नहीं करता भया २९ और नन्दगोप से आदि ले वे सब गोपभाके
अक्रूर के वचन सुन उसके कहने से चलने की तैयारी करते भये ३० व व्रज
वासी गमनके वास्ते सावधान होतेभये व सब वृद्धगोप भेंटलेके स्थित होतेभये
३१ व तिस कंसकी करके वास्ते वे गोप श्रेष्ठ बैल लेतेभये व घृत लेतेभये व
बोझाको लेके चलनेवाले भैंसों को लेतेभये ३२ व गोपों के जुदे २ समूह सब
जगह दूध व घृत लेतेभये ३३ व जिसदिन अक्रूर आयाथा वह रात्री अक्रूरकी
वार्त्ता सुनते हुये व बलदेव व कृष्णके जागतेहुये व्यतीत होगई ३४ व जब
प्रभातकालहुआ व पक्षी बोलनेलगे व चन्द्रमा की किरण मन्द होगई व रात्री
व्यतीत होचुकी ३५ व आकाशमें लाल सूर्यकी किरण फूटनेलगी व तारागण
अस्त होगये व प्रात कालकी वायुके चलने से पृथ्वी गीली होगई ३६ क्षीणहुये
के समान तारागण होगये व रात्रीकारूप अन्तर्द्धान होगया व सूर्य उदयभया
३७ व चन्द्रमा की किरण शांत होगई व प्रभासे रहित होगया व एक तो अ-
र्थात् चन्द्रमा तो अपने शरीर का नाश करनेलगा व एक अर्थात् सूर्य अपने
शरीरको बढानेलगा ३८ व गौओं करके युक्त व्रजकी भूमि विषे पूर्णदही की
मटुकियों के बिलोनेका शब्द होनेलगा ३९ व रस्सियों करके बँधेजवान बच्चों
विषे व गोपोंकरके पूर्ण व्रजकी सब गलियों से शब्द होनेलगे ४० ऐसे तिस
कालमें गाड़ों के विषे बहुतसे वर्त्तनोंको आरोपित करके व रथों में बैठके वे गोप
गमन करतेभये ४१ व कृष्ण बलदेव अक्रूर ये तीनों एक रथमें बैठके गमन
करतेभये जैसे त्रिलोकीके पतिहों तैसे ४२ व फिर इससे अनन्तर अक्रूर यमुना
के तीरपै प्राप्तहोके कृष्णके प्रति बोला कि हेपुत्र यहां रथको थांभदे और घोड़ों
विषे यत्न रखना ४३ व घोड़ों को इतने तृणचराना व दृढ़ यत्नको प्राप्तहुये यहां
क्षणभर ठहरो ४४ व मेरे को देखतेरहना मैं यहां यमुना के ह्रद में शेषनाग की
दिव्यभागवत मन्त्रोंकरके स्तुति करूंगा क्योंकि वह शेषनाग सर्वलोकों का ई
श्वरहै ४५ व शुभ ऐश्वर्य्यवाला देवहै और सब लोकोंका उपजानेवाला है और
शोभावाले व कल्याणदायक मस्तकोंवालाहै ऐसे शेषनागको मैं प्रणाम करूंगा
४६ व हजार शिरोंवाला व अनन्तदेव व नीले वस्त्रोंवाला ऐसे तिस धर्मदेवका

में दर्शन करूंगा ४७ व स्वस्तिकरूपी तिसके स्थानको देखके ४८ व दो जिह्वा से शोभा विभूषित देखके तहा सर्पों के समाज को देखके शांति होवेगी ४९ व तुम दोनों रथमें बैठेहुये मुझे देखतेहुये बैठेरहो ५० इतने में इस शेषनाग के उत्तम ह्रदसे आऊं ऐसे सुनके प्रसन्नहोके श्रीकृष्ण बोला हे धर्मिष्ठ जल्दजा देर मतकर ५१ व हम दोनों तेरे विना जानेको समर्थ नहीं हैं ऐसे आज्ञालेके वह अक्रूर यमुनाके ह्रदमें गोता लगाताभया ५२ फिर पाताललोकमें जाके नाग लोकको इसीलोककी तरह देखताभया और तहां मध्यमें हजारमुखोंवाला और सुवर्ण की ऊंची ध्वजावाला ५३ व हलसेयुक्त हाथोंवाला व मूसलके समान उदरवाला व नीलेवस्त्रोंवाला व पाण्डुर वर्णवाला व पाडुर आसनवाला ५४ व कुंडली धारण कियेहुये व मदवाला व सोताहुआ व कमलसरीखे नेत्रोंवाला व अपने सफेद शरीर से शोभित ५५ व अच्छीतरह बैठाहुआ व पृथ्वीको धारण करनेवाला व सुवर्ण के मुकुट को धारण किये हुये ५६ व चांदीसरीखे कमलों की मालाकरके ढकी हुई छातीवाला व लालचन्दन से लिप्त अंगवाला व बड़ी बाहुओंवाला व वैरीको मारनेवाला ५७ व सफेद बादलसरीखे वर्णवाला व अपने तेजसे युक्त व एकार्णव का ईश्वर ऐसे सर्पों के राजा शेषनाग को देखता भया ५८ व वासुकीआदि सर्पों से पूजितहोरहा व कंबल व अश्वतर नामवाले सर्प दोनों तरफ चवँर कररहे ५९ व देवरूप वह शेषनाग धर्म्मासन पै बैठा हुआ व तिस शेषनाग के समीप बैठाहुआ वासुकी सर्प शोभितहोरहा ६० व अन्य कर्कोटक आदि सर्पों से युक्त होरहा ऐसे तिस शेषनाग राजाको दिव्य कांचनके कलशों से ६१ व तिस एकार्णव जलसे वे अन्य सर्प स्नानकरारहे व तिस शेषनागकी गोदमें बैठाहुआ श्रीकृष्णको वह अक्रूर देखताभया ६२ व श्रीवत्स चिह्नोंसे आच्छादित छातीवाला व पीले वस्त्रोंको धारण करनेवाला और विष्णुरूपदेव ऐसा श्रीकृष्णदेखा ६३ व चन्द्रमाके समान कांतिवाला व दिव्य ऐसा बलदेव को आसनके विना बैठाहुआ देखताभया ६४ फिर तिस आश्चर्य को देख वह अक्रूर कृष्णके प्रति तहां बोलनेकी इच्छा करताभया ६५ तब श्रीकृष्णने अपने तेजसे तिसकी वाणीबंद करदी ऐसे तहां श्रीकृष्णको देख फिर वह अक्रूर जलसे बाहर निकला और विस्मित होगया और तिन दोनोंको फिर वहीं रथमें बैठेहुओं को देखनेलगा ६६ पश्चात् आपस में देखतेहुये व अद्भुतरूप

वाले ऐसे श्रीकृष्ण व बलदेवको देख फिर यमुनामें गोतालगाया ६७ फिर भी वहा अक्रूर आश्चर्य्य से तिसी शेषनाग की गोद में बैठाहुआ व नीले वस्त्रोंको धारण किये हुये ६८ व गौर वर्णवाला व पूजितहुआ ऐसा बलदेव को देखता भया और पूजितहुआ श्रीकृष्णको भी देखताभया व ऐसे देख फिर वह अक्रूर तिसीके मन्त्रको जपताहुआ ६९ जलसे बाहर निकला और तिसी मार्गकरके रथके समीप आताभया पश्चात् आयेहुये तिस अक्रूर को कृष्ण कहनेलगा ७० कि तुम इस उत्तम भागवत ह्रदमें नागलोकका कैसा वृत्तात देखा क्योंकि तुम ने गोते मारने में बहुतदेरकी ७१ व तेरा हृदाचञ्चल दीखताहै सो मुझे यह मालूम होताहै कि आपने कोई आश्चर्य्य देखाहो ७२ ऐसे सुनके अक्रूर यह प्रति वचन बोला कि हे कृष्ण तुम्हारे विना स्थावर व चरलोकों में क्या आश्चर्य है सो हे कृष्ण तहा मैंने ऐसा आश्चर्य देखा कि जो पृथ्वी में दुर्लभहै ७३ और हे कृष्ण जैसा मैंने वहा देखा सो यहा भी है और लोकोंको आश्चर्य देनेवाला तुम्हारे शरीर से मैं अब युक्तहू ७४ सो हे कृष्ण इस तेरे शरीरसे उपरात मैं कुछ आश्चर्य देखने की इच्छा नहीं करताहू इस वास्ते तुम आवो जल्द कसकी पुरी को चलें और सूर्यके अस्तहोनेके पहले हमको जानाचाहिये ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायामक्रूरस्यनागलोकदर्शने त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे—पश्चात् वह अक्रूर युक्तहुयेसे रथ में बैठ श्रीकृष्ण व बलदेव के समेत १ कंससे पालीहुई रमणीक मथुरापुरी में जिसवक्त लालसूर्य होगया ऐसी सन्ध्या समयमें वे तीनों प्रवेश होतेभये २ पश्चात् बुद्धिमान् और सूर्यके समान तेजवाले अक्रूरने वे दोनोंका अपने भवनमें प्रवेश करादिया ३ व श्रेष्ठवर्ण वाले तिन दोनों के प्रति अक्रूर भयभीतहुआ यह बोला कि हे पुत्र तुमको वसुदेवके घरजानेकी इच्छा त्यागदेनी चाहिये ४ क्योंकि तुम्हारीही छाति के वास्ते वह वृद्ध वसुदेव कसकरके नित्य निरादर कराजाता है और दिनराति भर्त्सनाजाताहै और यह भी कहताहै कि यहां तुझे नहीं ठहरना चाहिये ५ सो इस वास्ते तुमको अपने पिताके वास्ते सुख करनाचाहिये और जिसप्रकार यह

तेरापिता सुखपावै सो तुमको करनाचाहिये ६ ऐसे सुनके फिर तिसके प्रति श्री-
कृष्ण बोला कि हे अक्रूर हम दोनों अतर्कितहुये मथुरापुरी को देखतेहुये और
राजमार्गको देखतेहुये ७ तिस कंसही के घरजावेंगे तुम यहीमानो तो ८ वैश-
पायनजी कहनेलगे-इसप्रकार शिक्षा दियेहुये वे दोनों बलदेव और श्रीकृष्ण
शूरवीरों की तरह स्थितहुये और ब्रजको देखतेहुये विचरनेलगे जैसे पींजरा से
छूटेहुये युद्धकी इच्छा करतेहुये हस्ती विचरते हों तैसे ९ और फिर वे मार्ग में
विचरतेहुये दोनों वस्त्रों पै रंग आदिकी शोभा करनेवाला धोबी को देखते भये
और तिससे सुन्दर वस्त्रोंको मांगतेभये १० फिर वह रजक अर्थात् धोबी यहबोला
कि तुम वनमें विचरनेवाले कौनहो जो कि मूर्खपने से राजाके वस्त्रों को निर्भय
हुये मांगतेहो ११ और मैं अनेक देशोंमें उपजनेवाले और बहुत सुन्दर रंगवाले
ऐसे राजके वस्त्रोंको रँगताहूं १२ सो तुम किसके कौनहो और मृगोंके संग वन
में बैठेहो क्योंकि रँगेहुये इन वस्त्रोंको देख मांगनेलगे १३ और तुमने विशेषकर
के रक्तवस्त्र पहिने हैं १४ और तुमने अपना जीवन त्यागदिया क्योंकि यहां तुम
आगये व तुममूर्खहो व बालकोंकी तरह वस्त्र मांगने की इच्छा करतेहो १५ जब
ऐसे उसधोबीने वचनकहे तब थोड़ी बुद्धिवाले व प्राप्त अरिष्टवाले व मूर्ख व वाणी
से जहररचेहुये ऐसे तिस धोबीपै श्रीकृष्ण क्रोधकरतेभये १६ और वज्रके समान
हाथ करके तिसके मस्तक में मारतेभये पश्चात् वह रजक मरके पृथ्वी में पड़ता
भया व उसका मस्तक फटगया १७ तब तिसकी उस रजककी स्त्रियां देख विलाप
करतीभईं व क्रोधकरतीहुईं व बालोंको खिंडायेहुये इसप्रकार जल्द कंसके भवन
में गईं १८ और वे दोनों कृष्ण बलदेव तिन अच्छेवस्त्रोंको पहनके माली के घर
जातेभये व मालियोंकी गलीमें श्रेष्ठ गन्धको ग्रहण करनेलगे जैसे हस्ती विच-
रतेहों तैसे १९ फिर गुणकनामवाला माली प्रियवचन बोलताहुआ व बहुतसी
मालाओं को रखनेवाला व लक्ष्मीवान् व प्रियदर्शनवाला २० ऐसा वह गुणक
नामवाले माली को सुन्दरवाणी से मालाओं को देखो ऐसे श्रीकृष्णबोला २१
फिर वह प्रसन्नहोके बहुत सुन्दरमाला तिन्होंके अर्थ देताभया व यह बोला कि
मैं व यह सबकुल तुम्हाराही है २२ तब श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके तिस गुणकनामवाले
माली को कहतेभये कि हे सौम्य धनों के समूह करके तेरे बहुतसी लक्ष्मी मेरे
प्रभावसे हो २३ पश्चात् अनन्य चित्तवाला वह माली तिनेरो सुन्दर व तिस

वरको मस्तकसे ग्रहण करताभया व श्रीकृष्ण के पैरोंमें परता भया २४ व तिस वक्त अपने मनमें यहजाना कि ये दोनों कोई यक्ष हैं ऐसे वारम्वार भयमें युक्त होके कछु वोला नहीं २५ व पश्चात् वे दोनों वसुदेवके पुत्र राजमार्ग में गमन करतेभये व फिर तहा चन्दन के वरतनको लियेहुये कुब्जानारिको देखनेभये २६ पश्चात् श्रीकृष्ण कुब्जासे ऐसे वोला कि हे कुब्जे यह अनुलेपन किसकाहै और हे कमलसरीखे नेत्रोंवाली कहा जाती है यह तू जल्द वतला २७ पश्चात् ऐसे सुनके वह कुब्जा हँसतीहुई व देखतीहुई व विजलीकी तरह कुटिल गमन करती हुई इसप्रकार मेघसरीखे गम्भीर व कमलसरीखे नेत्रोंवाले ऐसे श्रीकृष्णके प्रति वोली २८ कि मैं राजाकेवास्ते इसचन्दनको लेके जाती हू सो तुमभी लेवो व मैं खड़ी हू आवो व तेरा कल्याणहो व तू मेराप्रियहै २९ हे सौम्य तू कहा से आया है जोकि महाराज कसकी स्त्रीको व अनुलेपन लानेवालीको तुम नहीं जानते हो ३० ऐसे सुनके हँसतीहुई तिस कुब्जाके प्रति श्रीकृष्णवोला कि हमारे शरीर के लायक अनुलेप देनाचाहिये ३१ क्योंकि हम विदेशसे आयेहुये अतिथिहैं और हे सुन्दर मुखवाली इस जगह हम धनुष्का उत्सव देखने को आये हैं ३२ पश्चात् ऐसे सुनके वह कुब्जा कृष्णके प्रति यह वोली कि तुम मेरे प्रियहो व राजाओंके योग्य इस अनुलेपनको ग्रहणकरो ३३ पश्चात् वे दोनों अनुलेपन को शरीरके लगातेभये व तिस अनुलेपसे शोभित होगये जैसे यमुनाके किनारे कीच से लिपेहुये वैलहोवें तैसे ३४ पश्चात् तिस कुब्जाको श्रीकृष्ण ठोढीकी जगहसे पकरके दो अगुलियों से शनैःशनैः ऊपरको उठातेभये ३५ और वह कुब्जा अच्छीतरह हँसतीहुई अपने शरीरको फैलानेलगी और ऊंचेस्तनोंवाली व कोमल वलसरीसी वह कुब्जा हँसतीभई ३६ व प्रणयकरके श्रीकृष्णके प्रति अपने मदको जनातीहुई वोली कि हे पति तुम कहां जातेहो मुझे रोकलिये व यहा ठहरो व मुझको ग्रहणकरो ३७ पश्चात् वे दोनों श्रीकृष्ण व वलदेव आपस में हँसतेहुये व हथेली वजातेहुये और तिस कुब्जाको देखतेहुये व उसके वचन सुनतेहुये हँसने लगगये ३८ व श्रीकृष्ण कामदेव से पीड़ित तिस कुब्जा को विसर्जन करतेभये पश्चात् कुब्जासे अलगहोके वे दोनों कसकी सभामें प्राप्त हो गये ३९ और पश्चात् गोप वेषसे विभूषितहुए वे दोनों गूढ चेष्टावाले और गूढ मुखवालेहोके राजाके भवनमें प्राप्तहोके ४० धनुष्शालामें चलेगये और वे दोनों

बालक अतर्कित हुये व चन्द्रमाकी तरह दीप्त होतेहुए व सिंहके समान कान्ति वाले ४१ तिस महान् धनुषको देखतेभये व पश्चात् शस्त्रों की रखवाली करनेवाले से पूछनेलगे ४२ कि हे कंसके धनुषों की रक्षाकरनेवाला पुरुष तू हमारा वचन सुन जिस धनुषका यह उत्सव प्रवृत्त होरहाहै वह धनुष कौनसाहै ४३ व कंससे योग कियाहुआ तिस धनुष को हमको दिखा हम देखनेकी इच्छा करते हैं ऐसे सुनके वह तिन्होंको थाम्भ सरीखे तिस धनुषको दिखाताभया ४४ व पश्चात् देवताओंको भी उठानेको अयोग्य व इन्द्रकोभी अयोग्य ऐसे तिसधनुषको उठाके पराक्रमवाले श्रीकृष्ण तोलते भये व कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण दैत्यों से पूजित तिस धनुषको तोलके ४५ पश्चात् तिसको रोपण करके हाथसे नवानेलगे फिर श्रीकृष्णसे नवायाहुआ व सर्पके समान ४६ ऐसा वह धनुष बीचसे टूटता भया व तिस धनुषको तोड के पश्चात् जल्द पराक्रमवाले श्रीकृष्ण ४७ व युवा अवस्थावाले बलदेव तिस धनुषशालामे निकसतेभये ४८ व तिस धनुषके टूटने के शब्दसे कंसके सब महल चलायमान होतेभये और दशों दिशा शब्द से पूर्णहोगई पश्चात् शस्त्रों की रखवाली करनेवाला वह पुरुष भयभीत हुआ ४९ जल्द कंसके समीप जाके ऊंचाश्वास से कहनेलगा कि हे महाराज मेरा वचन सुनो धनुषशाला में ५० जगत् को भ्रमकरानेवाला बडा आश्चर्य्यहुआ इसनक्र चोरीकरके बिरक्त बडे २ बालोंवाले दो मनुष्य आये हैं ५१ व नीले व पीले वस्त्रों को धारणकिये व पीले व सफेद चन्दनको धारणकिये ऐसे वे दोनों इच्छित वेष को धारण करके ५२ व देवताओंके पुत्रोंके समान उपमावाले व शूरवीर और बालक व अग्निके समान ऐसे धनुषशालामें आके स्थितहोगये व जैसे आकाश से आयेहों ५३ ऐसे मुझे दीखते हैं व सुन्दर वस्त्र व मालावाले हैं व तिन्हों में एकतो कमलसरीखे नेत्रोंवाला व काले वर्णवाला व पीलेवस्त्र व मालावाला है ५४ तिसको देवताओं से भी अग्राह्य वह धनुष ग्रहण करके बलसे तोलके यंत्र की तरह उठाके ५५ व वेगसे अपनी लीलाकरके वह धनुष आरोपणकर और बिनाही बाण बाहुओं से ५६ खींच व शब्दकरके तोड़दिया ऐसे तिस धनुषके तोड़ने से पृथ्वी चलायमान होगई व सूर्य्य भी अच्छी तरह नहीं दीखा ५७ व तिस धनुष के शब्दसे भ्रमतेहुये की तरह आकाश दीखताहै ऐसा यह आश्चर्य्य मैंने देखा ५८ सो तिस के भय से यहां तुम्हारे आगे सब हाल कहने

को मैं आयाहूं सो हे महाराज अमित पराक्रमवाले ये कौनहैं मैं नहीं जानता ५९ व एकतो कैलास पर्वत की तरह कांतिवालाहै व एक काले अञ्जनके पर्वत के समान कांतिवाला तिस धनुषको तोड़के चलागया जैसे थम्भको हाथी तोड़ देवे तैसे ६० व तिस धनुषके दोटुकड़े करके उस दूसरे के सङ्ग पवन सरीखे वेग से चलागया सो मैं नहीं जानता कहां चलागया ६१ ऐसे तिस धनुषका खंड विस्तार से कंस सुनके व तिस आयुधपाल को विसर्जन करके अपने घर प्रवेश करताभया ६२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिअन्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पच्चासीवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं भोजकुल को बढ़ानेवाला वह कंस चिन्तवन करके उदास मनवाला और बारम्बार दुःखीहोगया १ व यह विचार करनेलगा कि यह बालक निर्भयहुआ पुरुषों के देखतेहुये धनुषको तोड़के कैसे चलागया २ और इसके वास्ते लोक में निन्दित व दारुण ऐसा कर्म्म करके मैं अपनी बहिन के छः पुत्रों को भयभीत हुआ मारताभया ३ व पुरुषार्थ करके दैवके वर्जने में समर्थ नहीं हुआ व निश्चय नारद के कहेहुये वचन मेरे अर्थ उपस्थित होते हैं ४ ऐसे वह राजा चिन्तवन करके अपने घरसे निकस तिस मल्ल अखाड़े में जाताभया व तहां जाके मात्रों को देखनेलगा ५ पश्चात् वह कंस सब वस्तुओं से युक्त तिस स्थानको देख व बड़े बड़े पलँगों से लगीहुई शोभित पङ्क्तियों को देखताभया ६ व उत्तरकी तरफ की बड़भियों से शोभित व बड़ी २ कुटियों से विभूषित और एकएक थम्भ से शोभित ७ व चारोंतरफ से अच्छा विस्तारवाला ऐसे अखाड़े को कंस देखताभया व बड़े ऊंचे २ आकृष्ट और मिले हुये ऐसे तहां पलंग विछरहे ८ व जहां तिस कंसराजा का आसन विछरहा व बीच में जाने आने की सड़क छुटरही और बीचमें वेदिका बनरही ९ ऐसे तिस मल्ल अखाड़े को देखके वह बुद्धिमान् कंस अखाड़े में आज्ञा देताभया कि कल्ह के दिन विचित्र मालाओं करके व ध्वजाओं करके शोभित ऐसा यह मल्लागार बनाओ १० व इन पलँगों की शोभाकरनी कि इन्हों के ऊपर चान्दनीआदि सब तनवाओ व इस मल्ल अखाड़े में बहुतसा गोवरका सान गिरवाना ११

व घटातोरण इन्होंकी शोभाकरदेना व रूपके अनुसार यथायोग्य वलियुक्त करो १२ व अच्छीखाईं खोदीहुई व तिन्हों में जलकेघडे स्थापितकरो १३ व जलके भरेहुये सुवर्ण के कलश स्थापितकरो व वलि इकट्ठीकरो १४ व अनेकतरह के शरीरों में लगाने के वास्ते चन्दन आदिक तय्यारकरो व प्रश्नकरनेवाले पुरुषों को यहां बुलवाओ १५ व मल्लों को आज्ञा देदेवो व सभा में आनेवाले अन्य पुरुषों को भी आज्ञा देदेवो व इस सभामें माचोंकी शोभाकरनी चाहिये १६ व इसप्रकार वह कंस आज्ञादेके तिस सभाके मार्ग से निकसके अपने घरपै चला गया १७ पश्चात् यहां जाके चाणूर व मुष्टिक इनदोनों मल्लों को बुलावताभया १८ व महाबलवाले व बलवन्त बाहुओंवाले व प्रसन्नहुये ऐसे ये दोनों मल्ल कंसके समीप आतेभये १९ पश्चात् समीपमेंआयेहुये तिन मल्लोंको कंस देखके यह कहनेलगा २० कि तुम मेरे मल्ल विख्यातहो व शूरवीरों में तुम ध्वजाकी तरहहो व यथायोग्य पूजितहो व सत्कार करने के योग्य हो २१ सो यदि तुम मुझसे सत्कार चाहतेहो व सुकृत चाहतेहो तो तुम अपने तेजसे मेरा एक बडा कर्मकरो २२ कि जो मेरे व्रज में दो गोपाल बढ़ेहुये बलदेव व श्रीकृष्ण इन नामोंसे प्रसिद्ध व बालक अवस्थावाले श्रमसे रहित विचररहे हैं २३ तिन्हों के संग अखाड़े में युद्धकरो व वनमें विचरनेवाले तिन्हों को युद्धमें पटकके फिर जल्द मारदेने कछु संदेह नहीं करना २४ व ये दोनों बालक हैं व चपलहैं व कछु कर्तव्य नहीं जानते ऐसा विचार युद्ध समय नहीं करना किंतु युद्ध समय अपना यत्नकरना २५ व इसरंग अखाड़े में युद्धमें हारेहुये इन गोपालों करके मेरा कल्याण होगा २६ व इसप्रकार स्नेहसे युक्त राजाके वचनों को सुन प्रसन्नहुये व युद्धमें सम्मति कियेहुये वे दोनों चाणूर व मुष्टिक ऐसा कहनेलगे २७ कि हे महाराज जो वे गोप हमारे आगे स्थितहोवेंगे तो वे तपस्वी मरके मेतरूप हो जावेंगे २८ व अरिष्ट प्राप्त होनेसे वनमें रहनेवाले वे गोप यदि क्रोधसे युक्त हुये हमारेसे युद्ध करेंगे तो वे जरूर मरचुके २९ व इसप्रकार ये दोनों मल्ल आपनी वाणी में जहर को रखके राजासे आज्ञालेके अपने घरके प्रति चलेगये ३० पश्चात् वह कंस हस्तीको पालनेवाला महामात्र पीलवान को बुलाके कहनेलगा कि कुवलयापीड नामवाले हस्ती को सभाके दरवाजे आगे स्थापितकरो ३१ और श्रीमान् मदसे चपल नेत्रोंवाला चपल व मनुष्यों से रोकाजानेवाला व झटके

भिरने से उत्कट ऐसे तिस हस्तीको ३२ वनमें रहनेवाले व नीच ऐसे वसुदेव के पुत्रोंके सामने प्रेरकर ऐसाकरना कि जिससे वे मृत्युको प्राप्तहोजावें ३३ व जो इस हस्ती से वे गोपाल मारेजावेंगे तो मैं तिन मदवालोंको रंग अखाड़ेमें नहीं देखूंगा ३४ व फिर तिन्हों मरेहुयोंको वसुदेव देखके अपने बांधवों समेत कठीनता वाला व निराश्रय व अपनी स्त्रियोंसमेत मरजावेगा ३५ और ये जो मूर्ख यादव सब कृष्ण में तत्पर होरहे हैं ये सब छिन्नआशावाले होके और कृष्ण मरेहुयेको देख मरजावेंगे ३६ व इनदोनों गोपालोंको मैं हस्तीकरके अथवा मल्लों से मरवा के व मथुरापुरीको यादवों से रहितकरके सुखसे विचरूंगा ३७ व यादवोंको सुख देनेवाला पिताभी मैंने त्यागदियाहै व कृष्णकी पक्षवाले यादवभी त्यागदिये हैं ३८ व पुत्रकी इच्छावाले, अपनेपिता उग्रसेनसे मैं नहीं जन्मा हूं सो अल्पवीर्य वाले मनुष्यकी मैं सन्तान नहीं हू ऐसे मेरेसे नारदमुनि ने कहाहै ३९ महामात्र पीलवान कहनेलगा हे राजन् देवर्षि नारदने यह कैसेकहा यह आश्चर्य है सो हे वैरियोंको मारनेवाले राजन् तुमसे सुननेकी इच्छाकरताहू ४० सो हे राजन् उग्रसेन पिताके विना तुम अन्यसे कैसे पैदाहुये हो व तेरीमाताने ऐसा यह कर्म्म किस तरह किया ४१ और अन्यभी प्राकृतनारी नहींकरती हैं सो यह आश्चर्य्य मैं विस्तारसे सुनाचाहताहूं ४२ कंस कहताहै-जिसतरह महर्षि नारदविप्र कहागयाहै तैसेही जो तेरीसुननेकी मतिहै तौ मैं कहताहू एकसमय इन्द्रके भवनसे वह मुनि चन्द्रमाके समान सफेद वस्त्रोंको धारण कियेहुये और जटाधारणकिये ४३ और काली मृगछालाको धारणकिये और सुवर्णका यज्ञोपवीत धारणकिये और हाथ में दण्ड व कमण्डलु धारणकिये इसप्रकार दूसरेब्रह्माकी तरह ४४ और चारों वेदों का गानेवाला और विद्वान् और गन्धर्व्ववेदको जाननेवाला ऐसा वह नारद ब्रह्मलोक में विचरके आवताभया ४५ फिर आयेहुये तिसको मैं देखके यथाविधि से पूजनकर और पाद्य और आसन देके बैठावता भया ४६ पश्चात् सुखसे बैठा हुआ वह मुनि मेरी कुशल पूछके पश्चात् प्रसन्न मनसे मेरे प्रतिभावको जाननेवाला वह मुनि कहनेलगा ४७ कि हे वीर तैंने मेरी पूजाकरी इसवास्ते मेरा एक वचन सुन और पश्चात् ग्रहणकर ४८ मैं देवताओं के मकानोंवाला और सुवर्ण से युक्त ऐसे सुमेरु पर्व्वत पै गयाथा सो किसी समय सुमेरु पर्व्वतकी शिखर पै देवताओं की सभाको देखताभया ४९ और तहां सलाह करतेहुये देवताओंको

में सुनताभया सो तहां मनुष्यों सहित तेरे वधका दारुण उपायकररहेहैं ५० जो देवकी का आठवांगर्भ सबलोकों से पूजित विष्णुहोवेगा सो हे कंस वह तेरी मृत्युहोवेगा ५१ सो हे कंस वह देवताओं का सर्वस्वहै व स्वर्गकी गतिहै व देवताओं का परम रहस्यहै वह तेरी मृत्युकरेगा ५२ व हे कंस तू देवकीकेगर्भ मारने का यत्नकर व दुर्बलहो अथवा स्वजनहो परन्तु वैरीका भरोसा नहीं करना चाहिये ५३ व हे कंस यह उग्रसेन तेरा पिता नहीं है तेरापिता तो द्रुमिल नामवाला तेजस्वी सौभपति ऐसादानवहै ५४ ऐसे में नारदका वचनसुन के कलुष क्रोधमें युक्तहोके फिर पूछताभया कि हे ब्रह्मन् द्रुमिलनामवाला दानवके ५५ सङ्ग मेरी माताका संगम कैसेहोगया था हे तपोधन यह मैं विस्तार से सुना चाहताहूं ५६ नारद कहनेलगा हे राजन् सुन तुझको मैं बताऊंगा जिसतरह द्रुमिल नामदानवका समागम तेरी माताके संग हुआहै ५७ तेरी माता रजस्वला होके सुयामुन पर्वत के ऊपर स्त्रियोंके सङ्ग सैर करने को जातीभई ५८ सो तहां रमणीक व सुन्दर ऐसे पर्वत के शिखरों पै व नदियों के किनारों विषे ५९ किन्नरों करके मधुर मधुरगान सुनतीभई व श्रोत्र इन्द्रियको सुख देनेवाले तिस गानमें कामदेव उत्पन्नहोताभया व मयूरोंका शब्द सुनतीहुई ६० व पक्षियोंका वारम्वार बोलना सुनतीहुई भोग कराने की इच्छा करनेलगी ६१ व तिसवक्त वनमें पुष्पोंकी गंध सेयुक्त वायु चलनेलगी व कामदेवको उत्पन्न करनेलगी ६२ व भौंरों में युक्त कदंब अधिक गन्धको छोडनेलगे ६३ व केसर व पुष्पों के गिरने से कामदेव उत्पन्न होगया व नीपसञ्ज्ञक कदम्ब पुष्पों से दीपकों की तरह प्रकाशित होरहे ६४ व नवीन तृण से आच्छादित व तीज सञ्ज्ञक जीवों से विभूषित ऐसे पृथ्वी होरही कि जैसे नवीनयौवनवाली स्त्री आर्त्तव शरीरको धारण कररहीहो ६५ तैसे तिस कालमें सौभपति व लक्ष्मीवान् ऐसा द्रुमिल नामवाला दानव दैवयोग करके व विधाता करके तहां प्राप्त होताभया ६६ व इच्छित वेगवाले व तरुण सूर्य्यके समान तेजवाले रथमें बैठके तिस सुयामुन पर्वतको देखनेकी इच्छाकरके आवता भया ६७ व आकाश मार्गकरके मनसरीखे वेगवाले रथमेंयुक्त हुआ वह दानव पर्व्वतको प्राप्त होताभया पश्चात् रथको पर्व्वत के समीप स्थितकरके ६८ अपने सारथी के संग तिसी पर्व्वतके मस्तकपै विचरनेलगा ६९ फिर तहां सब ऋतुओं के गुणों में युक्त अनेक प्रकार के वनों को देखताभया जैसे नन्दनवन को देखे

तैसे ७० और वे दोनों पर्व्वत की शिखरों पै व नदियों विषे विचरनेलगे और अनेक प्रकारकी धातुओं से आच्छादित व बहुत से ऊँचे ऊँचे शिखरों से युक्त ७१ व विचित्र वर्णवाले काचन व अंजन सरीखे तेजवाले ऐसे पर्व्वत के शिखरों को देखताभया व अनेक प्रकारके पुष्पों की गन्धसेयुक्त व अनेक सत्त्वगुणों से युक्त ७२ व अनेक पक्षियों से शब्दित व अनेक प्रकार के पुष्प व फल व वृक्ष इन्हों से युक्त व अनेकप्रकार की औषधियों से युक्त व अनेक ऋषि व सिद्धों से सेवित ७३ ऐसे तिस पर्वत के शिखरों को देखताभया व विद्याधर व किन्नर व यक्ष व वानर व राक्षस व सिंह व व्याघ्र व शूकर व भैंसे व मूसे ७४ व अनेकप्रकारके मृग व हाथी यक्ष राक्षस इसप्रकार बहुतसे जीवोंको देखताहुआ वह दानव तिस पर्वतमें विचरनेलगा ७५ पश्चात् वह दैत्य दूरसे देवताकी पुत्री के समान तिस स्त्रीको देखताभया व सखियों के संग खेलतीहुई व पुष्पोंको सूँघतीहुई ७६ व बड़ी कुचोंवाली व सखियों से युक्त ऐसी तिसको देखके वह सौभपति दैत्य अपने सारथी के प्रति कहनेलगा ७७ कि हे सूत यह मृगनैनी के नेत्रोंवाली व वनमें विचरनेवाली व रूप औदार्य गुण इन्होंसे युक्त ऐसी यह स्त्री शोभित होरही है जैसे कामदेवकी रतिहो तैसे ७८ व इन्द्रकी स्त्री शचीकीतरह और तिलोत्तमा इन अप्सराओंकी तरह प्रतीत होती है व ऐसी मालूम होती है कि जैसे नारायणकी जांघको भेदनकरके कोई स्त्री पैदा हुई हो तैसे ७९ व यह पुरूरवाकी स्त्री है अथवा उर्वशी है अथवा क्षीरसमुद्रके मथने में देवताओंके समूह इकट्ठे होके ८० अमृतको निकालने भये तब तिस अमृत से लोकोंको उपजानेवाली लक्ष्मी पैदा होती भई ८१ सो वह नारायण के अंगको प्रिय ऐसी लक्ष्मी यहां विचर रही है कि जैसे नीले मेघके बीचमें बिजली चमक रहीहो तैसे ८२ व स्त्रियों के समूहमें अपने बदन को प्रकाशित करती हुई अति सुकुमार अंगवाली यह स्त्री चन्द्रमाके समान मुखवाली प्रतीतहोती है ८३ व इसके रूप को देख विभ्रातहुआ और व्याकुल इन्द्रियोंवाला ऐसा मैं कामदेवके वशमें प्राप्त होगया व मेरा मन चलायमान होरहाहै ८४ व मेरे अंग बारम्बार टूटते हैं और कामदेवके बाण मेरे हृदयको भेदनकर मेरे शरीरको जलाने की तरह होरहे हैं ८५ व जैसे घृतसे सींचाहुआ अग्नि बढ़ताहो ऐसा कामदेवरूपी अग्नि मेरे बढ़ताहै सो इस कामदेव रूपी अग्निकी शान्ति कैसे होवे ८६ व किस उपाय

करके यह मदवाली स्त्री मुझे मिले और मैं क्याकरूं ऐसे वह दानव बहुत वार चिन्तवनकर तिसको प्राप्तनहींहुआ ८७ व फिर अपने सारथीके प्रति यह बोला कि तू यहां ठहर मैं इस सुन्दरीको देखनेके वास्ते जाताहूं कि यह किसकी नारी है ८८ सो तू मैं आऊं इतने ठहर ऐसे तिसके वचनको सुन वह सारथी बोला कि ऐसाही करूंगा ८९ ऐसे वह दैत्य कहके गमन के वास्ते मन करताभया पश्चात् कामदेवसे युक्त हृदयवाला वह दैत्य सुन्दर नेत्रोंवाली तिसे देखके ९० हाथमें जल लेके और वह बलवान् ध्यानकर चिन्तवन करनेलगा पश्चात् एक मुहूर्ततक ध्यानकरके अपने ज्ञान बलसे यह जानताभया कि ९१ यह उग्रसेन की नारी है ऐसे जानके पश्चात् प्रसन्नहोके अपने रूपको त्याग और उग्रसेन का रूप बनालिया ९२ पश्चात् हठसे तिसको प्राप्तहोके हँसताहुआ शनैः शनैः ग्रहण करताभया ९३ ऐसे कंसके प्रति नारद कहरहाहै कि हे कंस उग्रसेनके रूप करके यह दैत्य तेरी माताको धर्षित करता हुआ और वह तेरी माता पति विषे प्रिय हृदयवाली भावसे तिसको प्राप्तहोगई ९४ व पश्चात् तिसकी कछु गौरवता देखके शङ्कितहोगई और भयभीतहुई खड़ीहोके तिसके प्रति बोली कि तू निश्चय मेरा पति नहीं है ९५ व तू खोटे आचरण करनेवाला कौनहै कि जिस तैंने मुझको मलिनकरदी और तूने मेरा एक पत्नीव्रत दूषित करदिया ९६ व मेरे पति का रूपकर इस नीच कर्म करके तुझने मेरे दोष लगादिया सो क्रोधित हुये बांधव कुलके दोष लगानेवाली मुझको क्या कहेंगे ९७ व पतिके पास से निरादर की हुई वसूंगी सो अज्ञान्तरूपी आत्मावाले व खोटे कुलवाले और कुत्सित इन्द्रियवाले ९८ व अविश्वासी व खोटा व परनारी के प्राप्त होनेवाला ऐसे तुझ को धिक्कार है ऐसे वह तेरी माता कहती भई पश्चात् वह दैत्य क्रोध करके कहनेलगा ९९ कि हे मूढ विषे पण्डितमाननेवाली नारी मैं द्रुमिल नामवाला दैत्य हूं और सौभदेश का पति हूं सो तू मुझको क्रोधकरके क्या चिन्ता करती है १०० व हे स्त्रीपने का अभिमान करनेवाली नारी मृत्युके वश में स्थित व नीच ऐसे मनुष्य पतिको प्राप्तहोके व्यभिचारने स्त्री दूषित नहीं होती है १०१ व इन स्त्रियों के बुद्धि स्थित नहीं रहती है व मानुषी स्त्रियों की बुद्धि तो विशेष करके निश्चल नहीं है व बहुतसी स्त्री व्यभिचार करनेवाली है १०२ व मर्त्यलोक में पति धर्म में स्थित हुई क्या बहुत से देवताओं के सदृश पुत्रोंको

जनती होंगी १०३ व अब तू शुद्धहुई व वालों को खिडाती हुई इच्छा से जो कुछ कहती है कि किस का तू है इसवास्ते हे मत्तप्रकाशिनी १०४ तेरे वैरियों को मारनेवाला कंसपुत्र होवेगा ऐसे सुनके फिर तेरी माता क्रोधकर और तिसके वरको निन्दनी हुई १०५ ब्रह्मवादी तिस दानवके प्रति बोली कि हे दुर्वृत्त इस तेरे वृत्तान्तको धिकारहै जोकि तू सब स्त्रियोंकी निन्दा करताहै १०६ और स्त्री नीच वृत्तान्तवाली भी हैं व पतिव्रता स्त्रीभी हैं जोकि एक पत्नी सुनीजाती हैं अरुंधती से आदिलेके १०७ व जिन्हों ने सब प्रजा धारणकरी है और लोक धारण किये हैं सो हे कुलाधम तुझको जो मेरे अर्थ कुलको नाश करनेवाला पुत्र दियाहै १०८ यह मेरा कुछ बहुत प्रिय नहीं है सुन मैं कहतीहूं यह पति वश में नीच पुरुष उत्पन्न होवेगा १०९ सो तेरा दिया यह पुत्र तेरी मृत्यु होवेगा इस प्रकार वह द्रुमिल दैत्य सुनके आकाशमें चलनेवाला तिस रथमें बैठके आकाश में गगन करतामया ११० और पश्चात् दीन वह तेरी माता उसीदिन मथुरापुरी में आवती भई १११ ऐसे वह कंस महामात्र पीलवानके प्रति कहताहै कि दीप्त होताहुआ और तपस्वी और वीर्यवान् साक्षात् अग्निकी तरह प्रकाशित होता हुआ ११२ सातस्वरों से मूर्च्छनादिवा के वीन बजाताहुआ ऐसा वह नारदमुनि गायन करताहुआ मेरे प्रति यह सब कहके ब्रह्मलोक में जाता भया ११३ सो हे महामात्र तू सुन मेरे वचनका बोधकर त्रिकालको जाननेवाला और बुद्धिमान् ऐसा नारदमुनि ने यह सत्य कहाहै ११४ सो मैं बलकरके व वीर्यकरके व मदकरके व नीति, प्रभाव, ऐश्वर्य्य, तेज, विक्रम ११५ सत्य, दान इन्हों करके मनुष्य नहींहूं ऐसे अपने आत्माको जानके मैं नारद के वचनों में श्रद्धा करता हू ११६ सो हे हस्तीपाल मैं उग्रसेनका क्षेत्रज पुत्रहू और माता पितासे त्यक्तहू और अपने तेजसे स्थितहू ११७ और माता पिता बांधव इन्होंका भी मैं वैरी हूं सो इनदोनों वनचरों को मारके इन बांधवों को भी मारूंगा ११८ सो तू जल्द हस्ती पै चढके और अंकुश लेके जा सभा के दरवाजे आगे खड़ाहोजा और देर मतकर ११९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशेश्रीविष्णुपर्वभाषायांकंसवाक्येपचासीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं जब वह दिन निवृत्त होगया और दूसरा दिन प्राप्त हुआ तब युद्ध देखने की इच्छावाले पुरके मनुष्यों करके वह रंग अखाड़ा पूर्ण होतामया १ और विचित्र आठ चरण और तीन चरणोंसे युक्त ऐसा अर्गलसहित द्वारबनरहा और वेदिका बनरही और अर्द्ध चन्द्रमाके आकार झरोखे लग रहे २ और पूर्व्व की तरफ अच्छीतरह पुष्पों से युक्त दरवाजे खुलरहे और जैसे शरदऋतुमें मेघोंकी शोभाहोवे ३ इसप्रकार से माचाओं के अखाडे की शोभा होरही और युद्धके वास्ते इकट्ठेहुये पुरुषों से तिस समाजकी ऐसी शोभा होती भई कि जैसे मेघोंके समूहसे समुद्रकी ४ व यथार्थ द्रव्योंसेयुक्त और ध्वजाओंसे युक्त और पक्षियोंके समूहसे वे माचे अतिसुंदर होतेभये ५ व अन्त पुरके भीतर कांचनसे युक्तहुये व रत्नोंसे युक्तहुये व पाखोंके ऊपर रत्न जडेहुये ऐसेमाचोंकी इस प्रकार शोभाहुई कि जैसे पाखोंमें आकाशमें पर्व्वत खड़ेहोगयेहों तैसे ६ व अच्छे हास्यसे और आभूषणोंके शब्दसे अति शोभित होतेभये व विचित्र मणियोंसे तिन पलँगोंकी विचित्र कांतिहोगई ७ व वेश्याओंके वास्ते अच्छे विस्तरसे आच्छादित जुदे माचे बिछगये और तिन्होंके ऊपर जब वेश्या नृत्यकरनेलगीं तब वे माचे विमानकी तरह शोभित होतेभये ८ व तिससभामें मुख्य मुख्य आसन बिछगये और सुवर्णके पलँग बिछगये और डाभोंके गुथेहुये व पुष्पोंके गुच्छों से युक्त ऐसे आसन बिछगये ९ व जल पीने के वास्ते सुवर्ण के कलशे धरेगये और वह जलपान करनेकी भूमि शोभित होगई और अच्छे अच्छे फलोंसेयुक्त पात्रभरेहुये रखदिये १० व अनेककाठके बनायेयुक्त सैकड़ों हजारों माचे बिछे हुये शोभित होतेभये ११ व सूक्ष्म सूक्ष्म झरोखोंवाले उत्तर की तरफ स्त्रियोंके प्रेक्षागार अर्थात् देखने के मकान इसप्रकार शोभित होतेभये कि जैसे आकाशमें राजहंस शोभितहोवें तैसे १२। १३ व पूर्व्वकीतरफ मुखवाला व सुमेरु पर्व्वत के शिखरके समान कान्तिवाला व सुवर्ण के पात्रकेसमान कान्तिवाला ऐसा प्र भम बीचमें शोभित होतागया १४ व तिस कंसका प्रेक्षागार अर्थात् स्त्रियोंका मकान पुष्पों के समूह करके युक्त हुआ अधिक शोभित होतामया १५ इसप्रकार तिस समाज के मार्गों में अनेक प्रकारके मनुष्य इकट्ठे होने से और तिन्होंका

शब्दहोने से ऐसे शोभा होतीभई कि जैसे कांपताहुआ समुद्र तैसे १६ व पश्चात् तिस समाजकेद्वारके आगे कुवलयापीड हाथी को स्थितकराके वह कंस अपने महलोंको आवताभया १७ फिर वह कंस सफेद वस्त्रोंको धारण कियेहुये व सफेद मुकुटको धारण कियेहुये व सफेदचवँर व बीजना को दुलवारहा ऐसा कंसके मस्तक पै तिस मुकुटकी ऐसी शोभाहुई कि जैसे सफेद पर्वत के ऊपर चन्द्रमाकी शोभाहोवे तैसे १८ व पश्चात् सुखपूर्व्वक सिंहासन पै बैठाहुआ तिस कंसदेख को देखके पुरके मनुष्य जयजय शब्द करनेलगे १९ व पश्चात् बाहुबन्ध व कछनी को पहन ऐसे मल्ल अखाडे में प्रवेश करतेभये २० व पश्चात् सुन्दर भेरी के बाजेसे प्रसन्नहोके वसुदेवके ये दोनोंपुत्र तिस समाजकेद्वारके समीप आते भये २१ फिर जल्द जल्द तिनके आवतेहुये रोकनेकेवास्ते मदोन्मत्त हाथी को वह पीलवान प्रेरनेलगा २२ और वह दुष्टात्माहस्ती प्रेरणहुआ तिन्होंके मारने के वास्ते उद्यतहोके अपनी सूंडको कुण्डलके आकारकर तिन्होंकेसामने आवता भया २३ पश्चात् तिस हस्ती से त्रास्यमान श्रीकृष्ण हँसनेलगे व दुरात्मा कंस तिस मनकी निन्दा करनेलगा २४ व यह विचारताभया कि निश्चय यह कंस धर्मरायके भुवनमें प्राप्त करना चाहिये क्योंकि जो मुझको इस मदवाले हाथीसे मरायाचाहता है २५ पश्चात् मेघकी तरह गर्जताहुआ वह हस्ती जब श्रीकृष्ण के समीप आया तब वह श्रीकृष्ण जल्द उछलके अपनी तालका शब्द करता भया २६ व ऊंचा शब्दकरके तिस हाथीके अगाडी खडाहोके तिसकी सूंडको पकड़ताभया व तिसके मस्तक पै अपनी छातीका जोरदेके पीछे हाथीके दांतों के अन्तर्गत होकर फिर पैरों के मध्यमें हो २७ वह श्रीकृष्ण तिस हाथीको ऐसे बाधाकरनेलगा कि जैसे वायु मेघको दूरकरदेहै २८ पश्चात् तिसकी सूंडको खींच के और तिसके मस्तकमें दूरहोके तिसके पैरोंसेयुक्त ऐसा कृष्ण हाथीकेसङ्ग युद्ध करताभया २९ पश्चात् नहीं कायामाता वह खिन्नहुआ व अपने गात्रोंविषे मर्दित हुआ ऐसा वह हाथी श्रीकृष्ण के मारने को समर्थ नहींहुआ ३० व कोप करने लगा पश्चात् गोडों के निशान पृथ्वी में गिरताभया व दांतोंकरके पीड़ा करनेलगा व जैसे ग्रीष्मऋतुके अन्तमें मेघवर्षताहै ऐसे अपने मदके जलको छोड़नेलगा ३१ पश्चात् श्रीकृष्ण बालकलीलासे तिस हाथीकेसङ्ग क्रीड़ा करके फिर प्रेम प्रति येके चित्त करके तिस हाथीको मारने की मति करताभया ३२ फिर तिसके

मुखमें पैर देके व हाथों से तिसके दातको उखाड के तिसी दांतसे उसके प्रहार करनेलगा ३३ पश्चात् वह हाथी वज्रकेसमान तिस अपने दातसे हन्यमानहुआ व पीडितहुआ विष्ठा और मूत्रको छोडताभया व रोष करनेलगा ३४ इसप्रकार श्रीकृष्ण से पीडित अङ्गवाले व दुःखित चित्तवाले तिस हाथीके कपोलों में वेग से बहुतसा रुधिर निकसताभया ३५ व पश्चात् बलदेव वेगकरके तिसकी पूछको पकड़के खींचताभया जैसे पर्वत पै बैठाहुआ सर्पको गरुडजी खींचतेहों तैसे ३६ व तिस हाथी के दातकरके श्रीकृष्ण हाथी को मारके फिर तिस महामात्र पीलवानको मारतेभये ३७ व तब वह हस्ती दात से रहितहुआ महान् शब्द करने लगा व जैसे वज्रसे टूटके पर्व्वत गिरपडे तैसे पृथ्वी में पीलवान समेत पडता भया ३८ पश्चात् रणमें कठोर वे दोनों कृष्ण व बलदेव तिस हाथी के अङ्गोंको ग्रहण कियेहुये तिस हाथीके पैरोंके कवच आदिकों को काटनेभये ३९ इसप्रकार तिस कुवलयापीड हाथीको मारके रङ्गसमाज में ऐसे प्राप्त होतेभये कि जैसे स्वर्ग से दोनों अश्विनीकुमार प्राप्तहुये हों तैसे ४० पश्चात् वनकीमाला धारण किये हुये व ऊचा शब्द करतेहुये और भुजाओं को फरकातेहुये ऐसे तिन दोनों को वृष्णि व अन्धक व भोजवंशी ये सब देखतेभये ४१ व सिंह कैसा शब्दवाली ताल बजाके मनुष्योंका दर्प करातेभये ऐसे तिन्हों को वृथा मतिवाला कंस देख के दुःखी होताभया ४२ ऐसे कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण हाथियों में श्रेष्ठ और गर्जताहुआ ऐसा तिस कुवलयापीड हस्तीको मारके तिस ४३ समुद्र के आकार के समान समाज में बलदेव के सग प्राप्त होतेभये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्वभाषायांकुवलयापीडवधेषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहने लगे कमल सरीखे नेत्रोंवाला व वायु से फरकते हुये वस्त्रोंवाला व बलदेवके संग १ व हाथीके दातको लियेहुये व अच्छी भुजावाला व अपनी लीलाकरके विचरताहुआ व रुधिरसे भराहुआ २ व सिंहकी तरह पराक्रमवाला व मेघके समान आननवाला व बाहु के शब्द के प्रहार से पृथ्वी को चलायमान करताहुआ ३ ऐसा देवकीका पुत्र श्रीकृष्णको उग्रसेनका पुत्र देख के क्रोधसे निस्तृत मुख करताभया ४ वह श्रीकृष्ण हाथमें लियेहुये हाथी के दात

से ऐसे शोभित होताभया कि जैसे आधा चन्द्रमाके बिम्बमें एक शिखरके पर्व्वत की शोभा होवे तैसे ५ व बहुत समाज जनों के समूहके शब्दमे नादितहुआ कृष्णके प्राप्तहोने के बाद पूर्ण हुये की तरह प्रकाशित होगया ६ और पश्चात् क्रोध से अति लाल नेत्रोंवाला परमकोप करनेवाला कंस,चाणूर मल्लको कृष्ण के संग युद्ध करनेकी आज्ञा देताभया ७ व अध्रमल्ल व निकृतिमल्ल व महाबल वाला व पर्व्वतके समान मुष्टिक मल्ल इन्होंको क्रोध से बलदेवके संग युद्धकरने की आज्ञा देताभया ८ पश्चात् कंस पहले चाणूर दैत्यको यह आज्ञा देताभया कि हे चाणूर तुझे यत्नकरके कृष्णके संग युद्धकरना चाहिये ९ ऐसे सुनके यह चाणूर मल्ल क्रोधसे कपैले नेत्रकरके युद्धके वास्ते आवताभया जैसे जलसेभरा बद्दल तैसे १० व तिस समाजमें सबके मौनहुये यादव पहले एक संग यह वचन बोले ११ कि यह युद्ध बाहुओंसे करना चाहिये इसीवास्ते किया बलजान के यह अशस्त्र युद्धरचा है १२ व काल के देखनेवाले पुरुषों ने हाराहुआ पुरुष को जल से छिड़कना भी चाहिये व गोबरके खात पै पड़ाहुआ मल्लको निरन्तर अपनी क्रिया करनी चाहिये १३ और पृथ्वी पै यथार्थ खड़े हुये के संग युद्ध करना चाहिये ऐसे प्रश्न करनेवालों को कहा है १४ व बालकहो अथवा मध्य अवस्थाहो अथवा कृशहो अथवा वृद्धहो परन्तु इस रङ्गसमाजमें कांखोंके समीप पकड़ के युद्ध करना चाहिये १५ व बलसे व क्रिया से इस युद्धमें बाहुओं की विधि करनी चाहिये और नीचे पटकने के बाद कदाचित् कछु भी नहीं करना चाहिये १६ सो यह युद्ध इस समाज में कृष्णका व इस अध्रवर्णी मल्ल का होता है सो कृष्ण तो बालक है व यह मल्लबड़ा है इस वास्ते यह विचार कैसे नहीं करना चाहिये १७ ऐसे कहनेके बाद तिससमाजमें किल २ शब्द होताभया व पश्चात् श्रीकृष्ण यह वचन बोले १८ कि मैं बालकहूं व यह मल्लशरीरकरके पर्व्वत समानहै परन्तु मेरेको इसके सङ्ग युद्धकरनेकी रुचि है १९ व मेरेसे युद्ध करता हुआ कोईभी उलटे प्रकार नहींहोवेगा व मैं बाहुओंसे युद्ध करनेवालोंको दूषित नहीं करूंगा २० यह मेरा मतहै सो यह गोबरकी क्रियोंका धर्म व अखाड़ामें होने वाला जलका धर्म और कषायका ममर्गकरना यह सब तर्कणा करिके करनी ठीकहै २१ व संयम,स्थिरता,शूरवीरपना,श्रमजय, श्रेष्ठपना धरने,यत्न करना इन्हों करके रङ्ग अखाड़े में सिद्धि प्राप्तहोती है यह युद्धके जाननेवालोंका मतहै २२ व

यह जो बाहुयुद्ध है सो तो वैर करनेके वास्ते है सो यहां मैं इसकी मृत्युकरके जगत् को प्रसन्न करूंगा २३ और करुषवंशमें उपजाहुआ व बाहुओंसे युद्ध करनेवाला ऐसा यह चाणूरनामवाला जो मल्लहै इसका चिंतवन करनाचाहिये २४ क्योंकि इसको बहुतसे युद्ध नीचे पटकनेके बाद मारदिये हैं व अखाड़ेमें प्रतापवान् होके इसको मल्लोंका मार्ग दूषित करदियाहै २५ व संग्राममें शस्त्रोंसे युद्धकरनेवालोंकी सिद्धि तो शस्त्रोंसेहै व मल्लोंकी सिद्धि बराबरके मल्लके पटकने से है २६ व रणमें विजयवालेकी निरन्तर कीर्त्तिहोती है व रणमें शस्त्रोंसे मरेहुयेकोभी स्वर्ग मिलता है सो इस प्रकार रणमें दोनोंतरह सिद्धिहै मरेहुयेकी भी सिद्धिहै व शत्रुको मारनेसेभी सिद्धिहै सो वह प्राणके अंतकरनेवाली यात्रा महान् साधुओंसे पूजित है २७ और यह रंग समाज का मार्ग बलसे व क्रियासे निषिद्धहै क्योंकि यहां रंगमें मरेहुयेको क्या स्वर्ग मिलताहै व क्या रती है २८ व जो कईक अपने दोष करके पतित माननीय इस राजाको अपने प्रताप दिखानेको आवते हैं उनमल्लों के मारनेका यह उपाय कररक्खाहै २९ ऐसे कहतेहुये श्रीकृष्णके उनदोनोंका घोर व दारुण युद्ध होनेलगा जैसे वनमें हाथियोंका होवे तैसे ३० व अच्छीतरह से पेचोंकरके युक्त व कष्टसे युक्त इसप्रकार अपनी २ बाहुओं से मथन करनेलगे ३१ वे दोनों आपस में मिलेहुये पर्वतकीतरह दीखतेभये व मुष्टियोंका फेंकना व शूकरके समान शब्दकरना ३२ व वज्रसरीखी कीलोंका मारना व शलाका व नख इन्होंका गलाना व दारुण प्रकार पैरोंका फड़कना ३३ व पत्थरके समान शब्द करतेहुये गोड़ोंका भिड़ाना व शिरोंका भिड़ाना इसप्रकार तिन्होंका बाहु युद्ध शस्त्रके विनाही महान् घोर होताभया ३४ व तिस समाज उत्सवके समीप तिन्हों के बाहुयुद्धसे सब मनुष्य चकित होतेभये ३५ व मांचोंपै बैठे हुये अन्य जन साधु साधु ऐसे कहते भये पश्चात् पसीने आयेहुये व कमल सरीखे नेत्रों वाला ३६ ऐसा कंस भेरीआदि बाजोंको अपने बायें हाथसे बंद करताभया जब मृदंग आदिक व भेरी आदिक बाजे बंदहोगये ३७ तब आकाश में देवताओं के भेरीआदिक अनेक बाजे बाजनेलगे व कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण के युद्धसमय ३८ भेरीआदिक सब बाजे आकाश में आपही बजनेलगे व देवते विमानोंमें बैठेहुये व अन्तर्द्धानहुये तहां प्राप्तहोगये ३९ व श्रीकृष्णकी जयकी इच्छा करनेवाले देवता विद्याधरों के संग विचरतेभये व सप्तऋषि आकाश में

स्थितहुये यह कहतेभये कि हे कृष्ण मल्लरूपी इस चाणूर दैत्यको तुम जीतो ४०
इसप्रकार देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण बहुत कालतक चाणूरकेसग क्रीड़ाकरके ४१
व क्रमको अपनाभाव दिखाके फिर अपना पराक्रम करनेलगे पश्चात् पृथ्वी च
लायमान होनेलगी व मात्रे घूमनेलगे ४२ व मणियों से जड़ाहुआ उत्तम क्रम
का मुकुट पृथ्वी में गिरताहुआ व तिसनक्त पूर्णजीवी तिस चाणूर दैत्यको श्री
कृष्ण हाथों से नवाके ४३ मस्तक में मुष्टिका प्रहारकरताभया व छाती में गोड़े
मारताभया व तिसनक्त तिसके नेत्रों से रुधिर सहित आणू निकसते भये ४४
व जैसे कालके ऊपर घटा लटकताहो इसप्रकार अधरउठाके तिसको अखाड़े के
बीचमें पटकताभया पश्चात् निकरे हुये नेत्रोंवाला व प्राणों से रहित ४५ ऐसा
चाणूर दैत्य पृथ्वीमें पडताभया व तिस मरेहुये चाणूरदैत्यके शरीरकरके ४६ वह
अखाडा इसप्रकार रुकगया कि जैसे पर्वत पड़ाहो व पश्चात् जब वह अभिमान
वाला चाणूर मल्लमरगया ४७ तब बलदेव अखाड़े में दुष्ट मुष्टिक मल्लको पकड़ता
भया व श्रीकृष्ण फिर तोसल दैत्यको पकड़ताभया ऐसे ये दोनों पकड़ेहुये मल्ल
क्रोधसे मूर्च्छितहोके ४८ कालके वशमें वर्त्तनेवाले श्रीकृष्ण व बलदेवके प्रति
तिस रग समाजमें मारनेको आवतेभये ४६ पश्चात् श्रीकृष्ण पर्वतके टुकड़े के
समान तिस तोसल दैत्य को उठाके व सैकड़ोंबार भ्रमाके पृथ्वीतलमें पटकता
भया ५० इसप्रकार कृष्णसे पीडितहुआ तिस बलवाले दैत्यके मुखसे बहुतसा
रुधिर निकसनेलगा तिसनक्त मृत्यु को प्राप्तहोगया ५१ व महाबलवाला बलदेव
तिस अन्ध्रमल्ल अर्थात् मुष्टिक मल्ल के सग युद्ध करनेलगा और तहा बलदेव
तिसको मण्डलकी तरह भ्रमाताभया ५२ और बलदेव वज्रके समान मुष्टिसे
तिसके शिरको हनन करताभया जैसे वज्रकरके महान्पर्वतको हननकरे तैसे ५३
व पश्चात् वह दैत्य पृथ्वी में पड़ताभया और खुलेहुये नेत्रोंसे युक्त मुखवाला वह
दैत्य जब पृथ्वी में गिरा तब महान्शब्द होताभया ५४ और वे दोनों कृष्ण व
बलदेव मुष्टिक और तोसल दैत्यको मारके क्रोधसे रक्तनेत्रकरे तिस अखाड़े में
विचरतेभये ५५ और भयङ्कर दर्शनवाला और अन्य मल्लसे रहित ऐसा समाज
होताभया और जब तोसल व मुष्टिक ये दोनों दैत्य मरिगये ५६ तब नन्दगोप
आदिक देखनेवाले गोप भयसे चञ्चल आकारवाले हुये सब वहाँ स्थितहुये ५७
और तिन्होंके नेत्रोंसे हर्षका जल निकसताभया व पालमीहुई गौरियोंसे पीडित

हुई देवकी और कांपतीहुई तिन्होंको देखतीभई ५८ और श्रीकृष्णके दर्शनोंसे आंशुओंसे आकुल नेत्रवाला वसुदेव वृद्धअवस्थाको त्यागके स्नेह से जवान की तरह आचरणकरने लगगया ५९ व तहां नृत्यकरनेके वास्ते जो वेश्याप्राप्त होरहीथीं वे सब कृष्णके कमलरूपी मुखको नेत्ररूपी भौंरोंकरके पीवतीभई ६० व कंसके मुखमें पसीना आवताभया व भृकुटी फरकतीभई और रोपसे कृष्णके दर्शनकरके प्रेराहुआ कसके शरीरमें पसेव प्राप्तहोगया ६१ व कृष्णरूपी लोहाके धूमाकरके और क्रोधरूपी श्वास करके व मनरूपी अग्निकरके तिस कसका हृदय भीतरसे जलताभया ६२ व प्रस्फुरित ओष्ठवाला और पसीनासे युक्त ऐसे कंसका शरीर क्रोधसे लालसूर्यकीतरह आचरण करनेलगा और क्रोधसे लाल मुखवाले तिस कसके मुखसे पसीनोंकी बिंदु इसप्रकार निकसती भईं कि जैसे सूर्यकी किरणों से स्पर्शहोके वृक्षसे ओसकी बिंदु निकसतीहोवें तैसे ६३ इस प्रकार क्रोधवाला वह कस बहुतसे पुरुषोंको यह आज्ञा देताभया कि ये दोनों वनमें विचरनेवाले जो गोपाल हैं इन्होंको इस समाजसे बाहर निकाल देवो ६४ और विकृत रूपवाले और पापदर्शी ऐसे इन गोपोंको मैं देखनेकी इच्छा नहीं करताहूं और मेरे राज्यमें कोईभी गोप ठहरने लायक नहीं है ६५ व खोटी बुद्धि वाला यह नंदगोप मेरे पापोंमें अभिरत रहताहै सो इसको लोहाकी बेड़ियों से बंदकरके पकड़लेवो ६६ और खोटे वृत्तान्तवाला और नित्य इस रंगसमाजमें विचरनेवाला ऐसा यह वसुदेव जवानों के समान दण्ड देनेलायक है अर्थात् इसको दारुण दण्डदेवो ६७ और ये जो दामोदरआदि अन्य गोपहैं इन्होंकी गो हरलेवो और धनभी हरलेवो ६८ इसप्रकार आज्ञा देताहुआ व कठोर वचन कहताहुआ ऐसे कंसको क्रोधसे युक्तहुये सत्य पराक्रमवाले श्रीकृष्ण देखनेभये ६९ और अपने पिताका तिरस्कार देखके और नंदगोपका तिरस्कार देख और अपने ज्ञाति बंधुओं का तिरस्कार देख और देवकी की बुरी मलादेख श्रीकृष्ण क्रोध करतेभये ७० पीछे सिंहके वेगकी तरह पराक्रमवाले कृष्ण कंसके नाशके वास्ते आरोहण करतेभये ७१ पश्चात् रंगसमाजके बीचमे उछलके श्रीकृष्ण कंस के मुखके समीप पहुँचतेभये और ऐसी शोभाहोतीभई कि जैसे पाण्डुरंगसे चलतेहुये मेघकी शोभाहोवे तैसे ७२ और निश्चय सब पुरवासी रंगसमाजमें बढ़ेहुये कंसकी पासके समीप गये श्रीकृष्णको देखके पकड़ेहुए नहीं मानतेभये ७३

स्थितहुये यह कहतेभये कि हे कृष्ण मल्लरूपी इस चाणूर दैत्यको तुम जीतो ४०
इसप्रकार देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण बहुत कालतक चाणूरके सग क्रीड़ाकरके ४१
व कसको अपनाभार दिखाके फिर अपना पराक्रम करनेलगे पश्चात् पृथ्वी च
लायमान होनेलगी व मानो घूमनेलगे ४२ व मणियों से जडाहुआ उत्तम क्स
का मुकुट पृथ्वी में गिरताहुआ व तिसवक्त पूर्णजीवी तिस चाणूर दैत्यको श्री
कृष्ण हाथों से नवाके ४३ मस्तक में मुष्टिका प्रहारकरताभया व छाती में गोड़े
मारताभया व तिसवक्त तिसके नेत्रों से रुधिर सहित आशू निकसते भये ४४
व जैसे कालके ऊपर घटा लटकताहो इसप्रकार अधरउठाके तिसको अखाड़े के
वीचमें पटकताभया पश्चात् निकरे हुये नेत्रोंवाला व प्राणों से रहित ४५ ऐसा
चाणूर दैत्य पृथ्वीमें पडताभया व तिस मरेहुये चाणूरदैत्यके शरीरकरके ४६ वह
अखाडा इसप्रकार रुकगया कि जैसे पर्वत पडाहो व पश्चात् जब वह अभिमान
वाला चाणूर मल्लमरगया ४७ तब वलदेव अखाडे में दुष्ट मुष्टिक मल्लको पकडता
भया व श्रीकृष्ण फिर तोसल दैत्यको पकडताभया ऐसे ये दोनों पकड़ेहुये मल्ल
क्रोधसे मूर्च्छितहोके ४८ कालके वशमें वर्त्तनेवाले श्रीकृष्ण व वलदेवके प्रति
तिस रग समाजमें मारनेको आवतेभये ४९ पश्चात् श्रीकृष्ण पर्वतके टुकड़े के
समान तिस तोसल दैत्य को उठाके व सैकडोंवार भ्रमाके पृथ्वीतलमें पटकता
भया ५० इसप्रकार कृष्णसे पीडितहुआ तिस वलवाले दैत्यके मुखसे वहुतसा
रुधिर निकसनेलगा तिसवक्त मृत्यु को प्राप्तहोगया ५१ व महावलवाला वलदेव
तिस अन्ध्रमल्ल अर्थात् मुष्टिक मल्ल के सग युद्ध करनेलगा और तहां वलदेव
तिसको मण्डलकी तरह भ्रमाताभया ५२ और वलदेव वज्रके समान मुष्टिकसे
तिसके शिरको हनन करताभया जैसे वज्रकरके महान्पर्वतको हननकरे तैसे ५३
व पश्चात् वह दैत्य पृथ्वी में पडताभया और खुलेहुये नेत्रोंसे युक्त मुखवाला वह
दैत्य जब पृथ्वी में गिरा तब महान्शब्द होताभया ५४ और वे दोनों कृष्ण व
वलदेव मुष्टिक और तोसल दैत्यको मारके क्रोधसे रक्तनेत्रकरे तिस अखाड़े में
विचरतेभये ५५ और भयङ्कर दर्शनवाला और अन्य मल्लसे रहित ऐसा समाज
होताभया और जब तोसल व मुष्टिक ये दोनों दैत्य मारेगये ५६ तब नन्दगोप
आदिक देखनेवाले गोप भयसे चञ्चल अङ्गोंवाले हुये सब वहीं स्थितरहे ५७
और तिन्होंके नेत्रोंसे हर्षका जल निकसताभया व पावसीहुई चूंचियोंसे पीड़ित

हुई देवकी और कांपतीहुई तिन्होंको देखतीभई ५८ और श्रीकृष्णके दर्शनोंसे आशुओं से व्याकुल नेत्रवाला वसुदेव वृद्धअवस्था को त्यागके स्नेह से जवान की तरह आचरणकरने लगगया ५९ व तहां नृत्यकरनेके वास्ते जो वेश्याप्राप्त होरहीथीं वे सब कृष्णके कमलरूपी मुखको नेत्ररूपी भौंरोंकरके पीवतीभई ६० व कंसके मुखमें पसीना आवताभया व भृकुटी फरकतीभई और रोषसे कृष्णके दर्शनकरके प्रेराहुआ कंसके शरीरमें पसेव प्राप्तहोगया ६१ व कृष्णरूपी लोहाके धूमाकरके और क्रोधरूपी स्वास करके व मनरूपी अग्निकरके तिस कंसका हृदय भीतरमे जलताभया ६२ व प्रस्फुरित ओष्ठवाला और पसीनासे युक्त ऐसे कंसका शरीर क्रोधमे लालसूर्यकीतरह आचरण करनेलगा और क्रोधसे लाल मुखवाले तिस कंसके मुखमे पसीनों की बिंदु इसप्रकार निकसती भई कि जैसे सूर्यकी किरणों से स्पर्शहोके वृक्षसे ओसकी बिंदु निकसतीहोवें तैसे ६३ इस प्रकार क्रोधवाला वह कंस बहुतसे पुरुषों को यह आज्ञा देताभया कि ये दोनों वनमें विचरनेवाले जो गोपाल हैं इन्होंको इस समाजसे बाहर निकाल देवो ६४ और विकृत रूपवाले और पापदर्शी ऐसे इन गोपोंको मैं देखनेकी इच्छा नहीं करताहूं और मेरे राज्यमें कोईभी गोप ठहरने लायक नहीं है ६५ व खोटी बुद्धि वाला यह नंदगोप मेरे पापोंमें अभिरत रहताहै सो इसको लोहाकी बेड़ियों से बंदकरके पकड़लेवो ६६ और खोटे वृत्तान्तवाला और नित्य इस रंगसमाजमें विचरनेवाला ऐसा यह वसुदेव जवानों के समान दण्ड देनेलायक है अर्थात् इसको दारुण दण्डदेवो ६७ और ये जो दामोदरआदि अन्य गोपहैं इन्हों की गौ हरलेवो और धनभी हरलेवो ६८ इसप्रकार आज्ञा देताहुआ व कठोर वचन कहताहुआ ऐसे कंसको क्रोधसे युक्तहुये महा पराक्रमवाले श्रीकृष्ण देखतेभये ६९ और अपने पिताका तिरस्कार देखके और नंदगोपका तिरस्कार देख और अपने ज्ञाति बंधुओं का तिरस्कार देख और देवकी की दुरी मनादेख श्रीकृष्ण क्रोध करतेभये ७० पीछे सिंहके वेगकी तरह पराक्रमवाले कृष्ण कंसके नाशके वास्ते आरोहण करतेभये ७१ पश्चात् रंगसमाजके बीचमे उछलके श्रीकृष्ण कंस के मुखके समीप पहुँचगये और ऐसी शोभाहोतीभई कि जैसे वायुके वेगसे चलते हुये मेघकी शोभाहोवे तैसे ७२ और तिसकाल सब पुरवासी रंगसमाजमें बैठे हुये कंसकी पासके समीप खड़े श्रीकृष्णको देखके कुछभी नहीं मानतेभये ७३

और वह कसभी समीप आये हुये प्रभु गोविंदको आकाशसे आये हुये काल की तरह मानताभया ७४ और पश्चात् श्रीकृष्ण मूसल के समान अपनी बाहु करके कसकी चोटीको पकड़तेभये ७५ और तिसकसका मुकुट सुवर्ण व हीरासे जटितहुआ श्रीकृष्णका हाथ शिरपै लागनेसे पृथ्वी में गिरताभया ७६ व पश्चात् जब श्रीकृष्णके हाथमें कसके बाल आगये तब निश्चेष्टहुआ व मूढहुआ विह्वल होताभया ७७ और बालों के पकड़ने से मरते हुंये की तरह श्वास लेनेलगा तब कस श्रीकृष्णके मुख देखनेको समर्थ नहीं हुआ ७८ और कुण्डलोंसे रहित कानोंवाला और हारवाला व बाहुओं को लम्बी पसारेहुये और गहनोंसे रहित अंगोंवाला ७९ और ओढनेके दुपट्टा आदि वस्त्रसेरहित ऐसा वह कंस एकबार चलायमान मुखवालाहोगया और श्रीकृष्णके तेजसे फेंकाहुआ वह कंस बारबार चेष्टा करनेलगा। ८० और पश्चात श्रीकृष्ण तिस कसको माचा से नीचे पटक अखाडे में गेरतेभये और बलमे तिसके बालों को पकडतेभये ८१ इसप्रकार वह महाकांतिवाला कंस श्रीकृष्ण से खींचा हुआ तिस समाज के मार्ग्ग में अपने शरीरको इसप्रकार फैलाताभया कि जैसे खाही होरहीहो ८२।८३ और श्रीकृष्ण तिस समाजमें कसके शरीरको खींचके और मारके दूरसे पृथ्वी में विसर्जन करते भये ८४ और तिसवक्त कसका देह पृथ्वीमें सुखसे सोताहुआ मालूम होनेलगा और विपरीत गिरनेसे तिसका शरीर कठोर होगया ८५ और कसका श्यामवर्ण शरीर मुकुटके विना और मिंचेहुये नेत्रोंसेयुक्त इसप्रकार पृथ्वी में पड़ा प्रकाशित नहीं होताभया जैसे पत्तों के विना कमलकी शोभा नहींहोती तैसे ८६ वह कस रणकेविना और बाणों के विना मराहुआ शूरवीरों के मार्गसे निंदित होताभया ८७ और तिसके शरीरमें श्रीकृष्णके नखों से करेहुये और जीवको नाशकरने वाले ऐसे मांसके छिद्रप्रकाशित होतेभये ८८ ऐसे कमल सरीखे नेत्रोंवाले श्री कृष्ण कसको मारके हर्षसे दूनी कांतिवाले होगये पश्चात् कपटकरहित श्रीकृष्ण बसुदेव के चरणों में गिरते भये ८९ और अपनी माताके चरणों में शिर नवा तेभये पश्चात् वह देवकी कृष्ण को आनन्द से निकले हुये अपनी चूंचियों के दूधसे सींचतीभई ९० और पीछेसे श्रीकृष्ण सब यादवोंकी अवस्थाके अनुसार कुशल पूछतेभये ९१ और धर्मात्मा बलदेवभी बढ़ेहुये सुनामा नामवाले कसके भाईको मारनेभये ९२ ऐसे वे दोनों कृष्ण और बलदेव वैरियों को मारके और

क्रोध को शान्त करके और प्रसन्न मनहोके अपने पिताके घर जाते भये ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकंसवधेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कंसकी सब स्त्रियां अपने पतिको मरेहुये देख चारोंतरफसे आतीभई १ व तिस राजाको पृथ्वी में सोताहुआ देख वे सब कंसकी नारी विलाप करनेलगीं जैसे हिरणी हिरणका विलाप करतीहों तैसे २ और यह कहनेलगीं कि हे महाबाहो हम मरगई और हमारी आशा भी हत होगई और हमारे बान्धव भी हत होगये क्योंकि तुम शूरवीर की हम स्त्रिया प्रियके तेरे हत होनेसे इस अवस्थाको प्राप्त होगई हैं ३ और यह तेरी पिछली गति हम देखती हैं सो हे राजशार्दूल हम बान्धवों समेत कृपणता से विलाप कररही हैं ४ और हमारी जड़कटगई क्योंकि तेरेसे त्याज्यहोगई और तू हमारानाथ मृत्युको प्राप्त होगया ५ सो हमारे भोगकी लालसा को कौन पूर्ण करेगा और हम बेल की तरह मुरझाई हुई शयनपै गिरा करेंगी ६ और हे सौम्य सुन्दरश्वास आनेवाले और कान्तिवाले ऐसे तेरे मुखको सूर्य्य दग्ध करताहै जैसे जलके विना कमल दग्ध होजावे तैसे ७ और ये तेरे कान कुण्डलोंके विना शून्यहुये शोभित नहीं लगते हैं ८ और पृथ्वी में लगाहुआ यह तेराशिर शोभित नहीं लगताहै और हे शूरवीर जो सब रत्नोंसे विभूषित तेरामुकुटथा वह कहा है जो कि तेरे शिरकी अति शोभा किया करता था और सूर्य्य के समान कान्तिवाला था ९ और हे शूरवीर यह तेरी दीनस्त्रिया अब तेरे मरने के बाद क्या करेंगी १० और स्त्री तो निश्चय पतिके भोगमें ठगीहुई है और स्त्री पतिको त्यागनी नहीं चाहिये सो तू हमको त्यागके किसतरह जाताहै ११ और आश्चर्यहै कि काल महापराक्रमवाला है क्योंकि जिस तूने वैरियोंका कालके समान तू जल्द हरलियाहै १२ व हम तेरेसे सुखमें बढीहुई अब दुःखों में युक्तहोगई हैं सो हे नाथ हम विरहाहुई और कृपणताको प्राप्तहुई कैसे वसेंगी १३ और चरित्रोंसे लोभितहोनेवाली स्त्रियोंकी परमगतिपतिहै सो तुही हमारी परमगति करके रुदनकरती १४ सो हम वैधव्य भावसे युक्तहुई शोक व सन्ताप मनवाली होरही हैं सो आश्चर्य है कि काल के वशमें सब जंतुओंको आनाहै १५ व तेरे विषे परवशहुई रोवती हुई हम तेरे विना

कहांजायँ और तेरे अंगविषे क्रीडा करताहुआ काल तेरे विषे चलागया १६ व
हम क्षणभरमें तेरेसे विहीनहोगईं सो मनुष्योंकी गति अनित्य है सो हे मान
देनेवाले पति तेरे मरनेसे हम विपत्तिको प्राप्तहोगई १७ व हम सब एक खोटेक
को करनेवाली वैधव्य लक्षणसेयुक्त होगई व रतिमें प्रिय हम स्वर्गसरीखे लक्षण
से तुझको लड़ाई है १८ व तेरे विषे हम सब कामको प्राप्तहैं सो तू हमको त्या
के कहाजाताहै और अनाथ जो हमहैं इन्होंका तू नाथहै १९ सो टिटिहिरी व
तरह इन्हों के विलाप करतेहुये हे जगत् के नाथ और हे मानके देनेवाले पं
तुम प्रति वाक्य अर्थात् जवाब देवो २० सो हे महाराज इसप्रकार हमारा विला
करतेहुये और बधुओं के समझातेहुये तेरागमन हमको दारुण दीखताहै २१
हे पति निश्चय परलोकमें सुंदरि स्त्रिया हैं क्योंकि जो तू इन घरके मनुष्यों क
त्यागके चलपड़ाहै २२ सो हे शूरवीर इन बहुत स्त्री अपनी स्त्रियों विषे क्यों ते
को दया नहीं आती है क्योंकि जो तू रोतीहुई इन स्त्रियों में बोध नहीं करताहै
२३ व आश्चर्य है क्या मनुष्योंकी मरजानेकी यात्रा दयासे रहितहै क्योंकि जो
अपनी स्त्रियोंको त्यागके निरपेक्षहुआ गमन करताहै २४ व स्त्रियों के पतिका
शूरवीर होना श्रेष्ठ नहीं है और स्वर्गकी स्त्रियोंको शूरवीर पति प्रियहैं और जि
न्होंको वे स्त्री भी प्यारी हैं २५ व रणमें प्रिय तू जल्द प्रारब्ध के वशमें मरगयाहै
और तुझने जरासंधका बल हरलिया व युद्धमें यक्ष जीतलिये ऐसा तू इस म
नुष्य मात्र से कैसेहत होगया २६ व इन्द्रके संग गंगाके किनारे बाणोंका युद्ध
करके तुझने इन्द्रको जीतलिया सो युद्धमें मनुष्योंसे नहींजीतनेलायक तू मनु
ष्यसे कैसे मरगया २७ व तेरे बाणों की वर्षाकरके समुद्र भी हार जाताहै और
कुबेरसे भी सब रत्न तुझने जीतके हरलिये २८ व जब इन्द्र मद वर्षा तब तैंने पुरी
के मनुष्यों के वास्ते बाणों से मेघ छेदन करके वर्षा करली २९ व तेरेप्रतापसे
नीचे दबेहुये सब राजे रहे हैं और श्रेष्ठरत्न और वस्त्रादिक तेरेप्रति भेंटके वास्ते
भेजते रहे हैं ३० सो देवताओं के समान पराक्रमवाला तेरा यह ऐसा प्राणोंका
अंत कैसे होगया और यह भय कहांसे आया ३१ व तेरे नाथके मरनेसे हमारे
विषे विधवा शब्द होगया व कालको हम मदसे रहित और निराकृतकरदी ३२
व हे नाथ जो तेरेको जानाही है और हमें विस्मृत करदीं तो अपनी वाणी से
यह कहदे कि मैं जाताहूं फिर क्या परिश्रमहै ३३ सो हे मथुराके पति हम भय

भीत होरही है और मस्तकसे तेरे पैरोंमें पडती हैं सो तू इस दूर प्रवाससे निवर्त्त होजा ३४ व हे शूरवीर तृण और धूल विषे तू कैसे सोताहै और पृथ्वीमें सोता हुआ तेरा शरीर कैसे नहीं कांपताहै ३५ व यह तेरे प्रति सोनेका प्रहार किसने किया व सब तेरी स्त्रियों विषे यह दारुण दुःख किसने दिया ३६ सो जीवतीहुई स्त्रियोंको यह रोवनेका दुःखहै व जो तेरे संग हमभी चलीजातीं तो हमभी क्यों रोतीं ३७ पश्चात् इसी कालके अन्तर गरीबिनी कंसकी माता कांपतीहुई आई और वारम्वार ऐसे रोवने लगी ३८ कि मेरा बच्चा कहां है और मेरापुत्र कहां है इसप्रकार कहती हुई वह प्रभा से रहित चन्द्रमा की तरह मरेहुये अपने पुत्र को देखती भई ३९ व अपने हृदयके पीटनेसे वारम्वार दुःखी होतीभई और पुत्रको देखतीहुई हाहा मैं मरगई ऐसे कहनेलगी और अपने बेटाकी तिन वहुओं का पीड़ित शब्द सुनके विलाप करनेलगी ४० व रोनेलगी व पुत्रकी इच्छावाली वह कंसकी माता शिथिलहुई तिस कंसके शरीर को अपनी गोदमें करके पीड़ित वाणीसे और करुणा से हे पुत्र हे पुत्र ऐसे विलाप करनेलगी ४१ व यह कहनेलगी कि हे पुत्र हे शूरवीर क्षतमें युक्त और बंधुओंको आनन्द बढ़ानेवाला हे बच्चा तू जल्दही यह प्रस्थान करचुका ४२ व हे पुत्र क्या नियमके बिना इस प्रकार तू पृथ्वी में सोगया औरहे बच्चा ऐसे तेरे सरीखे प्रकारवालोंको और लक्षणोंवालोंको पृथ्वी में सोना उचित नहीं है ४३ क्योंकि पहिले बलवाले रावण को संसारका और राक्षसों का समागममें श्रेष्ठोंका मानाहुआ यह श्लोक कहा है ४४ कि बलवाला व देवताओंको मारनेवाला ऐसा जो मैंहूं सो मेरेको बान्धवोंका दुर्निवार्यरूप भयहोगा ४५ व तैसेही जाति में लुब्धहुआ व बुद्धिमान् ऐसा इस मेरे पुत्रको भी शरीरके नाशका भयहुआ है ४६ ऐसे कहके वह कंस की माता वृद्ध व बिगड़ेहुये चित्तवाली ऐसे अपने पति उग्रसेन के प्रति रोती हुई वाक्य कहनेलगी जैसे बच्चों से रहित हरिणी होवे तैसे ४७ हे राजन् हे गु-डारमन् तू पछाओ व जनोंका ईश्वर अपने पुत्र पृथ्वी में सोतेहुयेको देख जैसे वज्रसे हत पर्वत पड़ाहो तैसे ४८ सो हे महाराज इसकी मृत्युसमयमें तिहारो तुमसे व यह प्रेमभावको प्राप्तहोगया व धर्मराज के स्थानमें चलागया ४९ व शूरवीरके भोगने लायक राज्य व हमसब पराजित होगये सो तू जल्दी कंस के सत्कारके वास्ते कृष्ण से विज्ञापनाकर ५० व मरने के अनन्तर भी शान्तहो-

जाते हैं व शान्तिहोजाती है सो प्रेतकार्य तो करनाही चाहिये क्योंकि मरेहुये ने क्या अपराध कियाहै ५१ ऐसे अपने पति उग्रसेन के प्रति कहके व अपने वालोंको खिंडाके पश्चात् अपने पुत्रके मुखको देखतीहुई वारम्बार विलाप करने लगी ५२ ऐसे कहनेलगी हे राजन् सुखसे बढ़ीहुई ये तेरी भार्या क्या कैसी व तुम्ह पतिको प्राप्तहोकें इन्हों के मनोरथ खण्डित होगये ५३ व यह तेरा वृद्धपिता कृष्णके वशमें हुआ जो हृदके जलकीतरह सूखेगा सो इसको मैं कैसे देखूंगी ५४ व हे पुत्र मैं तेरी माताहूं सो तू मुझसे क्यों नहीं बोलता व तू प्यारेजनोंको त्यागके इस दूरके मार्ग में प्राप्तहोगया ५५ व अहो हे शूरवीर मन्दभाग्यवाली जो मैंहू सो मेरा नीतिका जाननेवाला तुम्ह पुत्रको कालने उठालिया ५६ व हे कुलों के पालनेवाले दान मानको ग्रहण करनेवाले व तेरे गुणों करके युक्त ऐसे तेरे भृत्यों के कुल रोवते हैं ५७ सो हे नृपशार्दूल तू खड़ाहो व हे दीर्घबाहो हे महानल तू सब दीन मनुष्यों की रक्षाकर व इस महलके मनुष्यों की रक्षाकर ५८ इसप्रकार कंसकी स्त्रियों के विलाप करते हुये सूर्य्य अस्त होगया व सन्ध्या से रक्त अम्बर होगया ५९ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकंसस्त्रीविलापेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे पुत्रके शोकमे सन्तप्त उग्रसेन दुःखित हुआ श्रीकृष्णके समीप जाताभया जैसे जहरकोपिये दुःखसे जाताहो तैसे १ व फिर अपने घरमें यादवों मे युक्त व कंसके मारनेको पछिताता हुआ ऐसा श्रीकृष्णको देखताभया २ व तहां यादवों की सभामें कंसकी नारियों के प्रलापोंको व करुणा के वचनोंको वह श्रीकृष्ण सुनके अपनी आत्माको निन्दित करताभया ३ व यह कहनेलगा कि अहो अति बालक समझवाले मैंने नवीन रोष वर्त्ता के इस कंसकी कृतिकरके कंसकी हजारों स्त्रियों को वैधव्यभाव करदिया व निश्चय स्त्रियों के विषे प्राकृत पुरुषको भी ४ करुणा आजाती है व ऐसे दुःखसे रोतीहुई इन्हों में मेरे निश्चय शोक पैदाहोताहै ५ व कालधर्मको नहीं जाननेवाली इन स्त्रियों के करुणा का होना सम्भवही है ६ व श्रेष्ठपुरुषों को कँपाने वाला व पाप में रत ऐसे कंसकी मृत्युही होनी श्रेष्ठहै पर मैंने पहलेही निश्चयलियाथा ७ क्योंकि

समारमें पतित वृत्तान्तवाला व कठोर व अल्प बुद्धिवाला ऐसा कंसका तो मरनाही श्रेष्ठहै व द्वेष करनेवाले का जीवना ८ श्रेष्ठ नहीं है व पापमें रुचि रखने वाला यह कंस श्रेष्ठ पुरुषों का असम्मतहै व धिक्कार शब्द से पतितहुआ तिस कंसके क्या दयाहै ९ व तपकरनेवाले पुरुषोंका स्वर्ग में वास होताहै व पुण्यके कर्मोंका भी यही फलहै सो यहां इसलोकमें भी जो यश करके युक्तहै उसकी भी धारणा १० स्वर्गलोक सरीखी गिनीजाती है व जो निवृत्त मनुष्यहोवे व अपने कर्मों में तत्परहोवे व धर्म में तत्परहोवे तब राजाओं की अनीति नहीं छूसक्ती ११ व युद्धमें दुष्टवृत्तीवाले पुरुषों का वध दैव करदेताहै इसवास्ते अपने इष्टधर्म में युक्तहुये पुरुषों को पारलौकिक कर्म करना चाहिये १२ व धर्म में तत्पर मनुष्यकी देवता अग्नि रक्षाकरते हैं व संसार में खोटेकर्म के करनेवाले मनुष्य बहुत हैं १३ सो यह कंस जो मुझने मार दियाहै यह श्रेष्ठही किया है व इस विपरीत कर्म्म करनेवाले कंसकी जड़ छेदन मैंने करदी है १४ सो इस कंस की स्त्रिया आदिक जो शोकमें पीडित होरही हैं ये सब शान्त करनी चाहिये व इस पुरी के मनुष्य व इस पुरीकी सब प्रक्रिया मुझे शान्तकरनी चाहिये १५ इस प्रकार श्रीकृष्ण के कहतेहुये वह उग्रसेन नीचेको मुखकिये तिसस्थान में प्रवेश होता भया व पुत्रके पापसे शङ्कित हुआ १६ वह उग्रसेन यदुओं को ग्रहण कियेहुये श्रीकृष्णके समीप प्राप्तहुवा पश्चात् कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्णके प्रति तिस सभामें वाष्पसेयुक्त व दीन ऐसीवाणीसे वह उग्रसेन कहनेलगा १७ कि हेकृष्ण तैंने कोधरूप मेरा पुत्र मारके धर्मराजके स्थानमें प्राप्तकिया व अपने धर्म्म से पृथ्वी लोकमें तुमने कीर्त्तिडाली १८ व श्रेष्ठपुरुषोंमें अपना माहात्म्य बढ़ालिया व वैरी शङ्कित करदिये व यदुवंश स्थापित कर दिया व अपने प्यारे गर्वित कर दिये १९ व राजाओं के शासकरने से तेरा प्रताप प्रकाशित होगया व तेरे मित्र तुझको भजेंगे व राजा तेरे आश्रय होवेंगे २० व सब प्रजा तुझको प्राप्त होगी व ब्राह्मण आदिक तुम्हारी स्तुति करेंगे व प्यार करने व सेवकरनेवाले ऐसे अनेक मुख्य मंत्री तुमको प्राप्त होवेंगे २१ व हे कृष्ण हाथी अश्व रथ इन्होंसे युक्त सेना व प्यादे ऐसे सब तरह कंसकी सेना को तुम ग्रहण करो २२ व हे कृष्ण धन धान्य व रत्न आदिक व वस्त्र ये सब कंसके तुमको प्रदान करनेचाहिये और हे श्रीकृष्ण ये सब पुरुषभी तेरेही हैं २३ व स्त्रिया व सुवर्ण व अनशाले ये सब व

अन्य वस्तु सव तेरेही है व सो हे श्रीकृष्ण इसप्रकार सब विग्रह समाप्त होचुका २४ और पृथ्वी अच्छे प्रकार प्रतिष्ठित होगई सो हे यदुओं के शत्रुओंके मारने वाले श्रीकृष्ण व हे यदुनन्दन इन यदुओं की तूही गति व अगति है २५ और हे शूरवीर कहतेहुये इन कृपणों का यह वचन सुन कि तेरे कोपसे दग्धहुआ व खोटे कर्म्मको करनेवाला २६ ऐसा इस कंसका प्रेतकर्म्म तेरीही प्रसन्नतासे होना चाहिये व मरेहुये तिस राजा की और्ध्वदैहिक प्रेत क्रिया करके २७ पश्चात् पुत्रकी बहुओं के संग व अपनी स्त्रियोंके संगहुवा मृगोंके सगी विचरूंगा अर्थात् वनमें विचरूंगा सो हे श्रीकृष्ण प्रेतके सत्कारमात्र होनेसे व बान्धव कर्म्म होनेसे मैं इस लोक में २८ अऋण होजाऊंगा व इसकी पिछली अग्नि करके अर्थात् २९ चितामें दाहकरके व जलाञ्जलि देके मैं कंसका अऋण होजाऊंगा सो हे श्रीकृष्ण यह मेरा विज्ञापनहै ३० इसमें तुमको स्नेह करना चाहिये और इस क्रियाके करने से वह कृपण कंस श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होजावेगा ऐसे तिसके वचन सुनके श्रीकृष्ण परम विस्मित होगया ३१ व शान्तिके अनुसार उग्रसेन के प्रति यह वचन बोला कि हे तात यह तुमने कालके अनुसार कहाहै ३२ व हे राजशार्दूल खोटाकाल व्यतीत होने के बाद तुम जो ऐसा कहतेहो सो ठीक है ३३ व प्रेतभाव को भी प्राप्तहुवा वह कंस राजाओं के सत्कार को प्राप्तहोवेगा व हे तात तेरा जन्म महान् कुलमें है ऐसा तुझको जानना चाहिये ३४ व जानतेभीहो व हे तात स्थावर व जङ्गमजीवों की यह खोटी नीति तुमसे कैसे नहीं जानीजाती है ३५ व पूर्वजन्मका कियाहुवा कर्म्म कालकरके थोडेदिनमें परिपाकको प्राप्त होजाताहै व हे नृपसत्तम बहुतसा सुननेवाले व दान देनेवाले व प्रियदर्शनवाले ३६ व ब्रह्मण्य व नीतिमें सम्पन्न व दीनपुरुषपै अनुग्रह करनेवाले व लोकपालों के समान व महेन्द्रके समान पराक्रम करनेवाले ३७ ऐसेभी सब राजा कालके वशमें प्राप्तहोजाते हैं व धर्म्मको करनेवाले व सब भावको जानने वाले व प्रजाके पालनेवाले ३८ व क्षत्रधर्म्म में रत व शील स्वभाववाले ऐसेभी सब राजे मृत्युको प्राप्त होगये हैं व शुभ अथवा अशुभ जो कर्म्म करना है वह आपही कालकेवश प्राप्तहुवा ३९ सब देहधारियों को दीखना है ऐसी यह अन्तर्द्धान हुई देवमाया है सो यह देवताओं सेभी नहीं जानीजाती है ४० और जिस करके यह संसार मोहको प्राप्त होरहाहै और जिसी में कर्म्म और कारण है

सो हे तात यह कंस पूर्व्वकर्म्म से प्रेराहुआ कालकरके मरगया ४१ और इस में
मैं कारण नहीं हूं किन्तु काल व कर्म्म कारण हैं व हे तात यह सब स्थावर व
जङ्गम जगत् सूर्य्य व चन्द्रमय है ४२ व कालकरके यह जीव मृत्यु को प्राप्त
होजाता है और कालहीकरके सम्पूर्ण मनुष्य जन्मते हैं व कालहीकरके मरते हैं
व कालही सबभूतों के विग्रहमें व ग्रहणमें तत्परहै ४३ इसवास्ते सबजीव कालके
वशमें प्राप्तहोरहे हैं सो तेरापुत्र कंसभी अपने दोषकरके दग्धहोगया है ४४ सो
तहां मैं कारण नहीं हूं तहां कालही कारण है अथवा मैं कारणहूंगा इसमें संदेह
नहीं ४५ कालही तत्पर रहताहै फिर अकारण क्याकरे व हे राजन् कालही बल-
वान् है व तिसकीगति जानीनहीं जाती है ४६ व पारावार के विशेष को जानने
वाले समदर्शी मनुष्य व सिद्धपुरुष व मोक्षतत्त्व के जाननेवाले ऐसे महात्मा
पुरुष कालकी गतिको प्राप्तहोते हैं ४७ व हे तात मैं जो वचन कहताहूं उसको
तू सुन कि मेरा राज्यसे कार्यनहींहै ४८ व मैं राजाहोनेकी भी इच्छा नहीं रखता
हूं और मैंने कछु राज्यके लोभसे यह कंस नहींमारा है किन्तु यह तेरापुत्र मैंने
लोकके हितकेवास्ते व कीर्त्तिकेवास्ते मारा है ४९ व तुम्हारे कुलका व्यग्ररूप
वह कंस मुझने अनुचरों सहित मारदियाहै व मैं तो गोपोंकेसंग वनमें विचरने
वाला वही गोपहूं ५० व प्रसन्न हुआ वनमें हाथीकीतरह अपनी इच्छा पूर्व्वक
विचरूंगा यहीबात मैं सैकड़ोंबार कहूंहूं और यही सत्य है ५१ व मुझको कछु
राजाहोने से कार्यनहीं है यही तुमको जानना चाहिये व मेरेको तुम यदुओं के
अग्रणी व समर्थ ५२ ऐसे तुम राजामाने हो सो हे राजसत्तम जो तुमको मेरा
प्रिय करना व तुमको कछु व्यथानहीं है तो अपने राज्यमें तुम अभिषेचनकरो
५३ अर्थात् राजगद्दी पै बैठो और मेरे से संचित किये हुये इस राज्य को तुम
बहुतकालतक ग्रहणकरो ५४ वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसा वचन सुनके फिर
वह उग्रसेन कछु उत्तर नहींदेताभया पश्चात् लज्जासे नीचे मुखकिये बैठाहुआ
तिस राजाको यदुओंकी सभामें धर्म को जाननेवाला ५५ वह श्रीकृष्ण अभि-
षेक करताभया पश्चात् मुकुटको धारण कियेहुये वह उग्रसेन राजा ५६ कृष्णके
संगहुआ कंसकी प्रेतक्रिया करताभया और सब यादव कृष्णकी आज्ञासे उग्र-
सेन के पीछे २ उग्रपुरीमें गमनकरतेभये ५७ जैसे इन्द्रकेसंग देवता गमनकरते
होवें तैसे और पश्चात् जबरात्री व्यतीतहोगई और सूर्य उदय भया ५८ तब ते

सब यादव कसकी और्ध्वदैहिक क्रिया करनेलगे कि तिस कसके देहको यथा
क्रम से डोली में स्थापित करके ५६ नैष्ठिक विधानसे तिसकी सत्क्रिया करते भये
और उस राजाकेपुत्र कसको यमुनाजी के उत्तर के किनारे पै लैजातेभये ६० व
मृत्युसमयकी चिताकी अग्नि से उसका सत्कार करतेभये व कृष्ण के सगहुये
वे सबयादव मराहुआ सुनामा नामवाले कसके भाईका भी सत्कार करतेभये ६१
अर्थात् दाह देतेभये ऐसे इनदोनों को वृष्णि व अन्धक वंशी जो यादव दाहदेके
फिर दोनों के अर्थ जलाजली देतेभये ६२ व प्रेतों के अर्थ अक्षयहो ऐसेवाक्य
कहतेभये व पश्चात् वे यादव तिन्होंको जलदानदेके दीनमनवालेहुये ६३ उग्र
सेन को आगे करके तिस मथुरापुरी में प्रवेश होतेभये ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकंससत्कारे
उग्रसेनाभिषेकेएकऊननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे वह श्रीकृष्ण बलदेव के सग यादवों से आकीर्ण
हुई तिस मथुरापुरी में सुखसे बसतेभये १ व यवनके शरीरसेयुक्त और राजलक्ष्मी
से शोभित ऐसा वह श्रीकृष्ण रत्नोंके खजानोंसे भूपित तिस मथुरापुरी में विच
रताभया २ और किसी एक समय बलदेव व श्रीकृष्ण दोनों सगहुये सादीपन
नामवाले और काशीजी में पढाहुआ व उज्जैन नगरी में वासकरनेवाला ऐसे
गुरु के पास प्राप्तहोतेभये ३ व धनुर्वेद अर्थात् धनुर्बाण विद्या पढने की इच्छा
करतेभये और फिर वे दोनों अपना गोत्र अध्ययन तिस आचार्य्यके प्रतिवर्णन
करते भये ४ और पश्चात् तिस आश्चर्य से अलंकृत हुये वे दोनों कृष्ण और
बलदेव आनन्दपूर्व्वक अभिमान से रहित होकर अपने गुरु की टहल करने
लगे ५ और वह गुरु तिन्हों को ग्रहण करताभया और विद्या देनेलगा और
फिर वे शूरवीर कानों से सब विद्या सुनके ६४ दिनमें धनुष विद्या पढचुके ६ व
चतुष्पाद धनुर्वेद और शस्त्रविद्या और युद्धविद्या इन सब विद्याओंको वह गुरु
तिनको जल्दही पढाताभया ७ फिर वह गुरु तिन्होंको अति मानुषी बुद्धि चि-
तवनकरके तिन्होंको आयेहुये देवताओंकीतरह और चद्रमा सूर्य्यकीतरह मान-
ताभया ८ और उन दोनोंको पर्व्वणियों के विषे महादेवकी पूजा करतेहुयों को

वह गुरु देखताभया ९ और एक दिन तिस सांदीपन गुरुके प्रति श्रीकृष्ण कृत-
कृत्य होके यह कहनेलगा कि हे महाराज बलदेवके संग हुआ मैं तुम्हारी क्या
भेंट देऊं १० ऐसे सुन वह गुरु तिन्हों के प्रभावको जानके प्रसन्नहोके बोला कि
मेरापुत्र लवण समुद्रमें डूबगया है ११ सो मैं उसकी इच्छा करताहूं सो मेरे ए-
कही पुत्र हुआथा वही समुद्रमें मगरमच्छने खालिया सो तुम तीर्थयात्रा करके
फिर तिसीको ल्यादेवो १२ ऐसे वह श्रीकृष्ण सुनके बलदेवकी सम्मतिमें हुआ
यह बोला कि ऐसेही होवेगा पश्चात् तेजस्वी श्रीकृष्ण समुद्रके ऊपर जाके जल
के भीतर प्रवेश होताभया १३ फिर वह समुद्र अञ्जली बांधके अपना दर्शनदे-
ताभया फिर तिस समुद्रके प्रति श्रीकृष्ण बोला कि सांदीपनका पुत्र कहां है १४
तब समुद्र बोला कि पंचजन नामवाला महान् दैत्यहै सो उसने मगरमच्छरूप
धारणकिये वह बालक ग्रसलिया १५ ऐसे सुन के फिर श्रीकृष्ण तिस पंचजन
दैत्यको प्राप्तहोके फिर तिस दैत्यको मारताभया परन्तु तहां गुरुके पुत्र तिसबा-
लकको श्रीकृष्ण नहीं प्राप्तहोतेभये १६ और वह श्रीकृष्ण पंचजन दैत्यको मार
के तिस शंखको लेतेभये जो कि देवता और मनुष्यों में पांचजन्यनाम करके
प्रसिद्धहै १७ ऐसे तिस दैत्यको मारके फिर श्रीकृष्ण धर्मराज के पास जाता
भया पश्चात् धर्मराजभी श्रीकृष्णको प्राप्तहोके वंदना करनेलगा १८ और यह
कहनेलगा कि हे महाराज तुम्हारे आनेका क्या प्रयोजनहै और मैं क्याकरूं तब
श्रीकृष्ण बोले कि गुरुके पुत्रको देवो १९ ऐसा वचन कहा फिर धर्मराजको कछु
उत्तर नहीं दिया तब श्रीकृष्ण धर्मराज के संग युद्धकरता भया फिर धर्मराजको
जीतके २० बहुत कालमें मराहुआ गुरुके तिसपुत्रको लेके गुरुके समीपआवता
भया २१ पश्चात् सांदीपन गुरु का पुत्र बहुत काल में मराहुआ शरीर समेत
ल्याहुआको देखके तिस आश्चर्यमें सबमनुष्योंका विस्मयहोताभया २२।२३ और
वह श्रीकृष्ण गुरुके अर्थ तिस पुत्रको देताभया और गमन आदिकों से तहां
गुरुपास निवासके पांचजन्य शंख और बहुतसे रत्न लेआवताभया २४ व पश्चात्
गदा, परिघ इन्होंके युद्धमें और सब शस्त्रोंके युद्धमें तत्परहुये वे दोनों जल्दही
सबलोकमें प्रधानहोतेभये २५ और जब सांदीपन गुरुके अर्थ उदारबुद्धिवाले
श्रीकृष्णको रत्नों के सहित यह पुत्र देदिया २६ तब चिरकालमें नष्टहुये पुत्रको
प्राप्तहोके प्रसन्नहोगया और बलदेव और श्रीकृष्णको पूजित करताभया २७ प-

श्चात् वे दोनों शस्त्रविद्या पढ़के और गुरुसे आज्ञालेके फिर मथुरापुरी में आते भये २८ और फिर उग्रसेन आदिक सब यादव प्रसन्नमनसे युक्तहुये आवतेभये २९ और प्रजाकी पङ्क्तिया और मन्त्री व पुरोहित और बालक वृद्ध जवान सब स्त्रिया ये सब पुरी के बाहर आतेभये ३० और भेरी आदिक अनेक बाजे बाजते भये और श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगे व गली पताका इन्होंमें फूलोंकी माला युक्तहोगई और शोभाहोतीभई ३१ और श्रीकृष्णके आनेमें सब अतिप्रसन्नहोते भये कि जैसे इन्द्रके उत्सवमें होवें तैसे ३२ व प्रसन्नहुये गायकजन राजमार्गोंमें गायन करनेलगे और स्तुति आशीर्वाद करनेलगे और यादवों को प्रसन्नकरने लायक गाथा कहतेभये ३३ इसप्रकार श्रीकृष्ण और बलदेव दोनोंभाई लोकमें प्रसिद्धहुये अपने पुरमें निर्भयहुये सब बंधुओं के संग क्रीडाकरतेभये ३४ और तहा कोई दीननहीं रहा और कोई मलीन नहींरहा और कोई दुःखीचित्त नहीं रहा ऐसाप्रकाश श्रीकृष्णसे होताभया ३५ व श्रेष्ठवचनोंवाली सबकी अवस्था होतीभई व गो, अश्व, हाथी, मनुष्य, स्त्री ये सब अपने२ सुखको प्राप्तहोतीभई ३६ व श्रेष्ठवायु बहनेलगी व धूलसेरहित दशोंदिशा होतीभई व सब स्थानोंमें देवता प्रसन्न होतेभये ३७ व जो २ चिह्न संसार में सतयुग में प्रकाशित होतेभये वही सब चिह्न श्रीकृष्णको मथुरा में प्राप्तहोने से होतेभये ३८ व पश्चात् श्रेष्ठकाल में वह श्रीकृष्ण हरिनामवाले अश्वसे युक्त रथमें बैठके मथुरापुरीमें प्रवेश होतेभये ३९ व तिनके प्रवेश होतेहुये सब यदुओं के गण वैरियों के नाशक श्रीकृष्णके पीछे २ गमन करतेभये ४० पश्चात् वे यदुनन्दन प्रसन्नहुये वसुदेवके घरमें प्रवेश होतेभये जैसे चन्द्रमा व सूर्य अस्ताचल पर्वत में प्रवेश होवें तैसे ४१ व परं तेज से युक्त व चन्द्रमा व सूर्यसरीखे रूपवाले ऐसे अपने शस्त्रों को घर में रखके फिर इच्छापूर्वक विचरतेभये ४२ व फल पुष्प इन्हों से नयेहुये विचित्र बगीचोंमें ४३ वे यदुओं में श्रेष्ठ वसुदेवके पुत्र आनन्दसे विचरतेभये और वे दोनों महात्मा यादवों से युक्तहुये रेवानदी के समीप अनेक नदियों के किनारोंविषे विचरतेभये ४४ व कमलों के पत्तों से समृद्धिवाली व काकसरीखी चोंचवाले सारङ्गसंज्ञक जीवों से युक्त ऐसी तिन नदियों के विषे विचरते भये व एकसी रचनावाले व सुन्दर मुखवाले ४५ वे दोनों उग्रसेनके अनुचरहुये कछुककाल मथुरामें वासकरतेभये ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वभाषायांकृष्णमथुरागमनेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानबेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे बलदेवजी के साथ बलवाले श्रीकृष्ण यादवों से आकीर्ण मथुरापुरी में सुखपूर्वक बसतेभये १ पीछे यौवन देहको प्राप्तहोके प्रकाशित शोभासंयुक्त ऐसे श्रीकृष्ण वनआदि सयुक्त मथुगपुरी में विचरनेलगे २ तब कितनेकालमें राजाओं का राजा जरासध अपनी पुत्रियोंकेद्वारा कंसकी मृत्यु को सुनताभया ३ तब बहुतजल्द बहुतसी सडगसेना से युक्त प्रतापवाला जरासंध क्रोधको प्राप्तहो यादवों के मारने के अर्थ और कस का बदलालेने के अर्थ मथुरापुरी के समीप आवताभया ४ व हे जनमेजय पुष्टरूप कटि व चूचियों को धारण करनेवाली व अस्ति प्राप्ति इन नामों से विख्यात ५ ऐसी दो अपनी पुत्रियों को जरासंध राजा पहले कसकेअर्थ देताभया है तब उग्रसेन पिता को बधमें प्राप्तकर ६ व जरासंधके आश्रय से यादवोंका अनादर कर ७ इन पूर्वोक्त दोनों रानियों के संग आनंदित होताभया व वसुदेवजी ज्ञातिकार्यकी सिद्धिके अर्थ उग्रसेनके हितमें सदा रहा ८ तिसको कंस नहीं सहताभया पीछे रामकृष्ण के बलसे जब कंस मारागया ९ तब भोज वृष्णिअंधक इन सबोंकी सलाह से उग्रसेनराजा बनायागया १० पीछे प्रियरूप अपनी पुत्रियों से कसकी मृत्यु को श्रवणकर मथुरा के समीप में आके क्रोध से अग्निके समान जलताहुआ ११ ऐसा जरासंध उद्योग करनेलगा व प्रतापसे नम्रहुये बहुतसेराजे व मित्र व ज्ञाति के पुरुष १२ ये भी बहुतसी सेनाओंको लेकर जरासंधके सग मथुराके समीपमें प्राप्तहुये व महा वीर्य्यवाले व जरासंध के अर्थ प्यार करनेवाले १३ व कारूष दंतवक्र, अतिवीर्य्यवाला शिशुपाल व कलिंगदेश का पति पौंड्र १४ आहुति कौशिक व भीष्मकका पुत्र रुक्मी १५ वेणुदारी श्रुतवर्मा क्राथ अंशुमान् १६ अंगराज, बंगराज, कौशल्य, काशिराज, दशार्ण देश का राजा १७ सुह्द देश का राजा विक्रांत जनक मद्रराज त्रिगर्तराज १८ शाल्वराज विक्रांतदर प. वन देशकाराजा भगदत्त १९ सौवीरराज शैव्यबलवानों में उत्तम पांडराजा गांधारदेशका राजा सुबल नग्नजित् २० काश्मीरका राजा गोनर्द दरददेशका राजा व महाबलवाले व दुर्योधनआदि नामों से विख्यात ऐसे धृतराष्ट्रके पुत्र २१ ऐसे ये भी व अन्य भी बहुत से महारथी राजे श्रीकृष्ण से बैर करनेवाले २२

श्चात् वे दोनों शस्त्रविद्या पढ़के और गुरुसे श्याज्ञालेके फिर मथुरापुरी में आते भये २८ और फिर उग्रसेन आदिक सब यादव प्रसन्नमनसे युक्तहुये आवतेभये २९ और प्रजाकी प्रक्रियां और मन्त्री व पुरोहित और बालक वृद्ध जवान सब स्त्रिया ये सब पुरी के बाहर आतेभये ३० और भेरी आदिक अनेक बाजे बाजते भये और श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगे व गली पताका इन्होंमें फूलोंकी माला युक्तहोगई और शोभाहोतीभई ३१ और श्रीकृष्णके आनेमें सब अतिप्रसन्नहोते भये कि जैसे इन्द्रके उत्सवमें होवें तैसे ३२ व प्रसन्नहुये गायकजन राजमार्गोंमें गायन करनेलगे और स्तुति आशीर्वाद करनेलगे और यादवों को प्रसन्नकरने लायक गाथा कहतेभये ३३ इसप्रकार श्रीकृष्ण और बलदेव दोनोंभाई लोकमें प्रसिद्धहुये अपने पुरमें निर्भयहुये सब बधुओं के संग क्रीड़ाकरतेभये ३४ और तहां कोई दीननहीं रहा और कोई मलीन नहींरहा और कोई दुःखीचित्त नहीं रहा ऐसाप्रकाश श्रीकृष्णसे होताभया ३५ व श्रेष्ठवचनोंवाली सबकी अवस्था होतीभई व गो,अश्व,हाथी,मनुष्य, स्त्री ये सब अपने२ सुखको प्राप्तहोतीभई ३६ व श्रेष्ठवायु वहनेलगी व धूलसेरहित दशोंदिशा होतीभई व सब स्थानों में देवता प्रसन्न होतेभये ३७ व जो २ चिह्न संसार में सतयुग में प्रकाशित होतेभये वही सब चिह्न श्रीकृष्णको मथुरा में प्राप्तहोने से होतेभये ३८ व पश्चात् श्रेष्ठकाल में वह श्रीकृष्ण हरिनामवाले अश्वसे युक्त रथमें बैठके मथुरापुरीमें प्रवेश होतेभये ३९ व तिसके प्रवेश होतेहुये सब यदुओं के गण वैरियों के नाशक श्रीकृष्णके पीछे २ गमन करतेभये ४० पश्चात् वे यदुनन्दन प्रसन्नहुये वसुदेवके घरमें प्रवेश होतेभये जैसे चन्द्रमा व सूर्य अस्ताचल पर्वत में प्रवेश होवें तैसे ४१ व पर तेज से युक्त व चन्द्रमा व सूर्यसरीखे रूपवाले ऐसे अपने शस्त्रों को घरमें रखके फिर इच्छापूर्वक विचरतेभये ४२ व फल पुष्प इन्हों से नयेहुये विचित्र बगीचोंमें ४३ वे यदुओं में श्रेष्ठ वसुदेवके पुत्र आनन्दसे विचरतेभये और वे दोनों महात्मा यादवों से युक्तहुये रेवानदी के समीप अनेक नदियों के किनारोंविषे विचरतेभये ४४ व कमलों के पत्तों से समृद्धिवाली व काकसरीखी चोंचवाले कारंडसंज्ञक जीवों से युक्त ऐसी तिन नदियों के विषे विचरते भये व एकसी रचनावाले व सुन्दर मुखवाले ४५ वे दोनों उग्रसेनके अनुचरहुये कछुककाल मथुरामें वासकरतेभये ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकृष्णप्रत्यागमनेनमवतिमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवेवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे बलदेवजी के साथ बलवाले श्रीकृष्ण यादवों से आकीर्ण मथुरापुरी में सुखपूर्व्वक वसतेभये १ पीछे यौवन देहको प्राप्तहोके प्रकाशित शोभामेंयुक्त ऐसे श्रीकृष्ण वनआदि संयुक्त मथुरापुरी में विचरनेलगे २ तब कितनेकालमें राजाओं का राजा जरासंध अपनी पुत्रियोंकेद्वारा कंसकी मृत्यु को सुनताभया ३ तब बहुतजल्द बहुतसी सहगसेना से युक्त प्रतापवाला जरासंध क्रोधको प्राप्तहो यादवों के मारने के अर्थ और कंसका बदलालेने के अर्थ मथुरापुरी के समीप आवताभया ४ व हे जनमेजय पुष्टरूप कटि व चूचियों को धारण करनेवाली व अस्ति प्राप्ति इन नामों से विख्यात ५ ऐसी दो अपनी पुत्रियों को जरासंध राजा पहले कंसकेअर्थ देताभया है तब उग्रसेन पिता को वधमें प्राप्तकर ६ व जरासंधके आश्रय से यादवोंका अनादर कर ७ इन पूर्वोक्त दोनों रानियों के संग आनंदित होताभया व वसुदेवजी ज्ञातिकार्यकी सिद्धिके अर्थ उग्रसेनके हितमें सदा रहा ८ तिसको कंस नहीं सहताभया पीछे रामकृष्ण के बलसे जब कंस मारागया ९ तब भोज वृष्णिअंधक इन सबोंकी सलाह से उग्रसेनराजा बनायागया १० पीछे प्रियरूप अपनी पुत्रियों से कंसकी मृत्यु को श्रवणकर मथुरा के समीप में आके क्रोध से अग्निके समान जलताहुआ ११ ऐसा जरासंध उद्योग करनेलगा व प्रतापसे नम्रहुये बहुतसेराजे व मित्र व ज्ञाति के पुरुष १२ ये भी बहुतसी सेनाओंको लेकर जरासंधके संग मथुराके समीपमें प्राप्तहुये व महा वीर्य्यवाले व जरासंध के अर्थ प्यार करनेवाले १३ व कारूप दंतवक्र, अतिवीर्य्यवाला शिशुपाल व कलिंगदेश का पति पौंड्र १४ आहुनि कौशिक व भीष्मकका पुत्र रुक्मी १५ वेणुदारी श्रुतर्वा क्राथ अंशुमान् १६ अंगराज, वंगराज, कौशल्य, काशिराज, दशार्ण देशका राजा १७ सुह्म देश का राजा विक्रांत जनक मद्रराज त्रिगर्तकाराजा १८ शाल्वराज विक्रांतदरद पवन देशकाराजा भगदत्त १९ सौवीरराज शैब्यबलवालों में उत्तम पाण्ड्यराजा गांधारदेशका राजा सुबल नग्नजित् २० काश्मीरका राजा गोनर्द दरददेशका राजा व महाबलवाले व दुर्योधनआदि नामों से विख्यात ऐसे धृतराष्ट्रके पुत्र २१ ऐसे ये भी व अन्य भी बहुत से महारथी राजे श्रीकृष्ण से वैर करनेवाले २२

जरासधके अर्थ सहाय करने को अपनी अपनी सेनाको ले मथुरापुरी के समीप में प्राप्तहो मथुराको रोकतेभये २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामथुरोपरोधेजराधंयोद्यागेएकनवतितमोऽध्यायः॥

बानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे मथुराके समीप में प्राप्तहुये उन राजाओं को मानके सब वृष्णिवंशके मनुष्य श्रीकृष्ण को अगाडीकर देखतेभये १ तब प्रसन्न मन वाला श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहनेलगा कि देवताओंका प्रयोजन आपही आप जल्द बनता है इसमें संशय नहीं २ क्योंकि जरासध राजा समीप में प्राप्तहुआ और बायुके समान वेगवाले रथोंकीध्वजा दीखती है ३ व जीतनेकी इच्छावाले राजाओं के चन्द्रमाके समान श्वेतछत्र प्रकाशित होरहे हैं और बडे आश्चर्यकी बातहे ४ कि इन राजाओं के छत्रों की पंक्ति हमारे सम्मुख वर्तरही हैं जैसे आकाशमें हंसोंकी पंक्ति ५ व निश्चय समयपै जरासन्ध राजा हमारे से युद्ध करने के अर्थ प्राप्तहुआहे सो युद्धमें यह प्रथम अतिथि अर्थात् अभ्यागतहै ६ इसका युद्धकेही द्वारा सन्मान करना चाहिये और हे आर्य्य जब इन सब राजाओं ने इस जगह कृपाकरी तब युद्धका आरम्भ करना उचित है परन्तु प्रथम सेना को देखो ७ ऐसे कहके युद्धकी वाञ्छावाले श्रीकृष्ण जरासधके पास जानेकी इच्छा करके सेनाको देखनेलगे ८ तब श्रीकृष्ण सब राजाओंको देखताहुआ और मंत्र को जाननेवाला अपने आत्माहीसे आत्माके अर्थ हृदयमें वचन कहनेलगा ९ कि राजाओं के मार्ग में स्थित ये सब राजा युद्धकर्म में विनाशको प्राप्तहोवेंगे १० व मृत्युसे मोक्षित किये इन राजाओंको मैं मानताहूं और इन्होंके स्वर्ग में जाने के योग्य शरीर चमकते हैं ११ और इन राजाओंकी सेना समूहसे पीड़ितहुई व भारसे परिश्रांत ऐसी पृथ्वी स्वर्ग में गई थी १२ अब इन्हों के मरजाने से अल्प कालमें ही भारसे रहित पृथ्वीमण्डल होजावेगा १३ तब वैशम्पायन कहनेलगे सब राजाओंका स्वामीजरासन्ध बहुतसे राजाओंके दलोंके सङ्ग और उग्रयोद्धोंसे संयुक्त १४ सांग्रामिक रथों से और बडे२ घण्टोंवाले व बद्दलोंके समान और बडे२ पीलवानोंसे युक्त और युद्धमें कुशल ऐसे हाथियोंकरके १५ और मेघोंके समान कांतिवाले घोड़ोंकरके और तलवार और ढाल आदिको धारणकरनेवाले प्यादा

ओं से १६ ऐसे चारप्रकारकी सेनाओंसे संयुक्त और मेघोंकेशब्दके समान शब्द करतेहुये १७ रथों करके और मदसे भीजे हुये हाथियों करके और हिनहिनाते हुये घोड़ों करके और पुकारतेहुये प्यादोंकरके १८ सब दिशा पुरी वन इन्होंको शब्दायमान करताहुआ और समुद्रके आकार सेनावाला ऐसा जरासन्ध राजा दीखताभया १९ और गर्वायमान योद्धाओंसे युक्त और अति शब्दसयुक्त ऐसी राजाओंकी सेना मेघ के समान प्रकाशित होतीभई २० व पवनके समान वेग वाले रथोंकरके और मेघके समान हाथियों करके व अतिवेग सयुक्त घोड़ोंकरके और आकाशचारियों के समान प्यादोंकरके २१ मिलीहुई सब सेना प्रकाशित हुई २२ तब अतिबलवाले जरासन्ध आदि सब राजापुरी को घेरके भीतर प्रवेश करने के अर्थ २३ पराक्रम करनेलगे और जैसे शुक्लपक्षकी पूर्णमासी को जैसा समुद्रका रूप होताहै तैसे २४ तब प्रवेश करनेके अर्थ उस सेनाका हुआ और रात्रिमात्र व्यतीत होने पै सब राजा खड़े होके पुरी में प्रवेश होने के अर्थ प्राप्त हुये २५ व यमुना नदी के समीप में सलाह करनेलगे २६ तब सब राजाओंका ऐसा उग्रशब्द होनेलगा कि जैसे प्रलयकालमें समुद्रोंका २७ व वेतोंको हाथमें धारणकरनेवाले और सुन्दर पगडी आदिको धारण करनेवाले ऐसे वृद्ध मनुष्य राजाकी आज्ञामे मत शब्दकरो ऐसे कहतेहुये विचरनेलगे २८ तब शब्दसेरहित सम्पूर्ण सेना होतीभई २९ तब तिससमयमें बृहस्पतिके समान जरासन्ध महद्वाक्य कहनेलगा ३० कि जल्द राजाओंकी सेनापुरीके समीपमें प्राप्तहोनी चाहिये और चारोंतरफमे यह मथुरापुरी मनुष्यों के समूहों से रोकनीचाहिये ३१ व अस्त्रयन्त्रयुक्त करनेचाहिये व मुद्गर फेंकनेचाहिये ३२ और भाले ऊपरको फेंकने चाहिये और कसीकुदाल आदिसे इस मथुरापुरीको खोदके सब जगहसे पृथ्वी को एकसी करनेकी इच्छाकरो ३३ व युद्धमार्गको जाननेवाले राजा समीप में प्राप्तहों और अनमे लेकर मेरी सेनासे पुरी रोकीजावेगी ३४ जबतक गोपरूप वाले और वसुदेव के पुत्र व सङ्कर्षण कृष्ण इननामोंसे विख्यात इनदोनों को पैने बाणोंसे मै मारूं तबतक ३५ व ऐसे इसपुरी में टङ्कार शब्दकरो कि आकाश में भी जिसका बहुतसा शब्दहोवे व मेरेमे निश्चितकिये ३६ व मद्र कलिङ्ग देश का राजा चेकितान बाह्लीक ३७ व कश्मीरका राजा गोनर्द करूषदेशका राजा व किंपुरुषों का राजा द्रुम व पर्वतका राजा अनामय ३८ इन नामोंवाले राजे

इस मथुरापुरी के पश्चिमके द्वारको तत्काल रोको व पौरव, वेणुदारि, वैदर्भ, सो
मक ३९ व भोजदेशका मालिक रुक्मी व मालवदेशका राजा सूर्य्याक्ष व विंद
अनुविंद इन नामोंवाले उज्जैनकेराजे व अति वीर्यवाला दन्तवक्र ४० छागली
पुरुमित्र, विराटराजा, कौशाम्ब्य, मालव, शतधन्वा, विदूरथ ४१ भूरिश्रवा, त्रिगर्त
बाण, पञ्चनद इननामोंवाले व दुर्गको सहनेवाले ऐसेराजे इसपुरी के उत्तर द्वार
को रोको ४२ व उलूक, कैतवेय और अंशुमान् का पुत्रवीर ४३ एकलव्य बृ
हच्छत्र, क्षत्रधर्मा, जयद्रथ, उत्तमौजा, शैल्य, कैरव, सबकैकय ४४ वैदिश, वाम
देव, साकेत, सिनिपति इन नामोंवाले सब राजे पुरीके पूर्वले द्वारको रोको ४५
व शिशुपाल, दरद व मैं ये तीनों सावधानहुये मथुरापुरी के दक्षिण द्वारकी रक्षा
करेंगे ४६ ऐसे यह सेनाओं से सर्वेष्टितपुरी ४७ वज्रके पातकेसमान उग्रभयको
प्राप्त होवेगी व गदाधारी गदाओंसे व परिघधारी परिघों से ४८ व अनेकप्रकार
के शस्त्रधारी शस्त्रों से इस पुरीका दारणकरो और अवहीं समान भूमिसेसंयुक्त
राजाओं के हाथसे होजावेगी ४९ ऐसे चारप्रकार की सेनाको पुरीके चारोंतरफ
सावधान कर ५० सब राजाओं के संग क्रोधको प्राप्तहुआ जरासंध यादवों के
सम्मुख प्राप्तहुआ व अपनी सेनाओं से युक्त व प्रहार करने में चतुर ऐसे यादव
भी जरासन्ध के सम्मुख प्राप्तहुये ५१ तब थोड़ेसे यादवों का बहुत से राजाओं
के संग देवासुर-युद्धकेसमान घोरयुद्ध होनेलगा जिसमें बहुतसे रथ व हाथियों
का नाश होताभया ५२ तब मथुरापुरी से बाहर निकल बलदेव व श्रीकृष्ण वसु
आदिकों को पहन रथमें स्थितहो राजाओं की सेनामें विचरनेलगे जैसे समुद्र
में क्रोधितहुये दो २ मगरमच्छ ५३। ५४ तब युद्ध करनेके वक्त बलदेव व श्री
कृष्णजी की यह मति उपजी कि दिव्यरूप व पुराने जो हमारे शस्त्रहैं उन्होंको
हम ग्रहण करें ५५ तब उस युद्धमें सुन्दर व दिव्यरूप व प्रकाशित व दिव्यफूल
मालाओं को धारण करनेवाले ५६ व आकाश में विचरनेवालों को दुःख देने
वाले व राजाओं के मांसोंको खानेको तृषित ५७ ऐसे शस्त्र व संवर्त्तकनाम हल
व सौनन्दनाम मूसल व धनुषों में श्रेष्ठ शार्ङ्गनामवाला धनुष ५८ व कौमोदकी
नामवाली गदा ऐसे ये चार तेजरूप विष्णु के शस्त्र आकाश से पडे तब बल-
देवजी हल और मूसलको ग्रहण करतेभये ५९। ६० व श्रीकृष्ण बद्दलोंकेसमान
शब्दवाला शार्ङ्गधनुष व कौमोदकी गदा को धारण करतेभये ६१ ऐसे राम व

गोविन्द शत्रुओं के संग युद्धकरतेभये ६२ पीछे उन शस्त्रोंको ग्रहण करके शत्रुओं के अर्थ पराक्रम दिखातेहुये ६३ देवताओं के समान दोनों वसुदेवकेपुत्र विचरनेलगे ६४ पीछे बलदेवजी कोपित शेषनागके समान हलको उठाकेयुद्ध में विचरनेलगा जैसे शत्रुओं के अर्थ धर्मराज ६५ तब क्षत्रियों के रथों के समूह को ६६ व हाथियों को हलसे खेंचके मूसलके आक्षेपसे ताडनादेकर युद्धमें शत्रुओं को मथनेलगा ६७ तब बलदेवजी के हाथ से मरतेहुये क्षत्रियों के गण भयभीत होके युद्धसे जरासन्ध के समीप में प्राप्तहुये ६८ तब क्षत्रिय धर्म में व्यवस्थित जरासंध उनक्षत्रिय गणों से कहनेलगा तुम्हारी क्षत्रिय वृत्तीको धिक्कार है, व तुम युद्धमें कायरहो ६९ व यह लिखाहै कि युद्धमे भागनेवाले को व रथ से रहितहो भागनेवाले को भ्रूणहत्या लगती है ऐसे बुद्धिमान् कहते हैं ७० सो किससे भयभीत हुये तुम भागकेआये हो अब मेरे वाक्यसे प्रेरितकिये सब युद्ध के अर्थ गमनकरो ७१ अथवा रथमें बैठ देखो कि जबतक मैं इनदोनों गोपोंको यमक्षयको प्राप्तकरूं ७२ तबतक पीछे जरासंधसेप्रेरित सबक्षत्रिय प्रसन्नहोके बाणों को छोडतेहुये युद्धकरनेको व्यवस्थितहुये ७३ अर्थात् सोनेके मुकुटोंवाले घोड़ों से संयुक्त रथोंमें और बद्दलके समान शब्द करनेवाले और पीलवानोंसे प्रेरित ऐसे हाथियोंपै स्थितहोके ७४ कवच, पताका, शस्त्र, ध्वजा, धनुष, तूणीर, माला छत्र इन्हों के धारण करनेवाले और सुन्दर चवँरों से वीजित ऐसे राजे युद्ध में शोभायमान होनेलगे ७५ और बड़ीगदा और फेंकनेके मुद्गर इन्होंसे युद्ध करनेलगे ७६ इसी अन्तरमें देवताओंके आनन्दको बढ़ानेवाला श्रीकृष्ण गरुड़ध्वजसे संयुक्त रथमें स्थितहो ७७ जरासन्धके सम्मुख प्राप्तहोके आठबाणोंसे जरासंधको और पांच पैनेबाणोंसे सारथी ७८ और घोड़ोंको बेधताभया तब कष्टगत जरासन्ध को जानके चित्रसेन महारथी ७९ और सेनाकापति कैशिक तीन बाणोंसे कृष्णको और तीन बाणोंसे बलदेवजीको बेधताभया ८० तब बलदेव भाग्राकरके युद्धमें कैशिकके धनुषके दो टुकडेकरके पीछे वेगसे बाणोंकी वृष्टिकर शत्रुओंको मर्दन करनेलगा ८१ तब सावधान होके चित्रसेन नौ बाणों से बलदेवजी को बेधताभया ८२ और कैशिक पांचबाणों से बेधताभया और जरासंध सात बाणों से बेधताभया पीछे श्रीकृष्ण तीन२ बाणोंसे ८३। ८४ चित्रसेन कैशिक जरासंध इन्होंको भेदन करताभया और बलदेवजी इन तीनोंके

पाच पांच बाणोंसे वेधनकर चित्रसेनके रथके स्वामियोंको मारताभया ८५ और भालासे फिर चित्रसेनके धनुषको तोडताभया तब चित्रसेनने गदाको धारणकर ८६ बलदेवजीको मारनेके अर्थ भागा तब चित्रसेनको मारनेके अर्थ ८७ बाणों को छोडतेहुये बलदेवजी के धनुष को जरासध तोडके और गदासे बलदेवजी के घोड़ोंकोमार क्रोधसे ८८ बलदेवजी की तरफभागा तब मूसलको धारणकर बलदेवजी जरासंधकी तरफभागे ८६ तब आपसमें दोनोंका उग्रयुद्ध होनेलगा तब बलदेवजीके सग युद्ध करतेहुये जरासधको देख चित्रसेन ९० अन्य रथमें बैठ जरासध की सहाय करनेलगा तब बहुतसी सेना और बहुतसे हाथियों के समूह ९१ जरासध और बलदेवजी के बीचमें प्राप्तहोगये तब बहुतसी सेना से परिवृत जरासध ९२ रामकृष्णके अग्रभागमें स्थित भोजोंको पीडित करनेलगा तब क्षुभितरूप समुद्रके ९३ शब्द के समान दोनों सेनाओं में उग्र शब्द होने लगा और बासली भेरी मृदग शख येभी हजारहों दोनों सेनामें बजनेलगे ९४ और हाथी घोड़ाओं के खुरोंसे उठीहुई धूलिभी आकाश में चढतीभई तब महा शस्त्रोंवाले और धनुषों को धारण करनेवाले ९५ ऐसे शूरवीर आपसमें सम्मुख गर्जतेहुये तहा स्थितरहे और रथवाले औरसादी और हजारहोंप्यादे ९६ पर्वत के समान हाथी पै सब चारों तरफसे पडनेलगे ऐसे जरासधके पीछे प्राणों को त्यागनेलगे ९७ तब शिनि, अनाधृष्टि, बभ्रु, विपृथु, राहुक ९८ ये यादव बल देवजीको अगाडीकर और अपनी आधी सेनाकोले ९९ शिशुपाल और ज रासंध उतरके राजे शल्य, शाल्व इन आदिसेरक्षित दक्षिण पक्षको प्राप्तहुये १०० और शरोंकी वर्षा करतेहुये और जीवने को नहीं चाहतेहुये ऐसे अवगाह पृथु कक, शतद्युम्न, विदूरथ १०१ ये यादव श्रीकृष्णको अगाडीकर और आधी सेना को ले भीष्मक, रुक्मी १०२ देवक, मदेश्वर, प्राच्य और दाक्षिणात्य इन्हों से रक्षित पश्चिम पक्षको प्राप्तहुये १०३ तिन्होंका आपसमें शक्ति ऋष्टि प्रास बाण इन्होंको छोडतेहुये वज्रके समान शब्द होनेलगा १०४ और सात्यकि, चित्रक श्याम, युयुधान, राजाधिदेव, मृदर, स्वफल्क १०५ सत्राजित, चित्रसेन येभी यादव बहुतसी सेनाओंको लेके शत्रुके बायें पक्षको प्राप्तहुये १०६ इस पक्षको मृदर, वेणुदारि १०७ प्रतीच्य और धृतराष्ट्रके पुत्र ये सब उस बायें पक्षको जरा संधकी तरफसे पालतेभये १०८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायामथुरारोधेद्विनवतितमोऽध्याय ९२॥

तिरानबेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जरासंधकी आज्ञा माननेवाले राजोंकेसग वृष्णियोंके घोरयुद्ध होनेलगे १ सो रुक्मिके संग कृष्णका व भीष्मकके संग उग्रसेनका व क्राथके सग वसुदेवका व बभ्रुकेसंग कैशिकका २ व गदकेसंग शिशुपालका व शम्भुकेसग दन्तवक्रका ऐसे इन्होंका अन्यभी वृष्णिवीरोंका अन्य राजाओंके सग ३ सत्ताइस दिनोंतक दारुण युद्धरहा ४ अर्थात् हाथियोंसे हाथी व घोड़ों से घोडे और प्यादेंसे प्यादे और रथोंसे रथ और योद्धाओं से योद्धे ऐसे युद्ध करतेभये ५ और जरासन्धके सग बलदेवजी का समागम हुआ जैसे वृत्रासुर से इन्द्रका ६ पीछे श्रीकृष्ण रुक्मिणीकी तरफ ख्यालकर श्रीकृष्ण रुक्मको नहीं मारतेभये अर्थात् प्रकाशमान अग्नि और सूर्यके समान और सर्पोंके विषके समान ७ ऐसे बाणोंको शिक्षासे श्रीकृष्ण निवारण करतेभये ८ और बाकी दोनों सेनाओंका मांस लोहूकी कीचवाला परिक्षय हुआ और चारोंतरफ से बहुतसे कवन्ध अर्थात् शिरोंसे रहित योद्धे उठनेभये ९ और रथमें स्थित बल-देवजी सर्पोंके समान बाणोंको छोडतेहुये जरासन्धके सामने प्राप्तहुये १० और जल्दी चलनेवाले रथमें स्थित जरासन्ध राजा बलदेवजी के सम्मुख स्थितहुआ ११ तब ये दोनों आपस में अनेक प्रकारके अस्त्रोंसे विरनेहुये घोरशब्द करते भये और दोनोंके शस्त्र टूटगये और दोनोंके रथ टूटगये और दोनोंके घोडे व सारथी मरगये १२ तब दोनों अपनी अपनी गदा को ग्रहणकर आपस में स-म्मुख पृथ्वीको कँपातेहुये भागनेलगे १३ तब पर्वतके शिखरों के समान दिखाई दिये तब इन दोनोंको देखनेके अर्थ सब योद्धाओंके युद्ध शान्तहोगये १४ व ये दोनों गदायुद्ध में परम शिक्षित और समरमें विख्यात और महा बलवाले १५ उन्मत्त हस्तियोंकी तरह आपसमें युद्धकरतेभये तब देव, गन्धर्व, सिद्ध, म-हर्षि १६ अप्सराओं के गण ये हजारों चारों तरफसे प्राप्त होनेलगे अर्थात् देव यक्ष, गन्धर्व, महर्षि इन्होंसे अलंकृत १७ आकाश अधिक शोभायमान हुआ जैसे तारागणों से आकाश तब वामें मण्डल को प्राप्तहो बलदेवजी के सम्मुख महाबलवाला जरासन्ध प्राप्त होनेलगा १८ और दाहिने मण्डलको प्राप्तहो ज-रासन्धके बलदेव प्राप्तहुआ तब गदायुद्ध में चतुर दोनों दशों १९ दिशाओं में

दातोंकरके हाथियों के समान शब्द करनेलगे तब बलदेवजी की गदाका नि· पातमें वज्रकेसमान शब्द २० सुना और जरासन्धकी गदाके निपातमें पर्व्वतके फटने के समान शब्द सुना और जरासन्धके हाथसे मारीहुई गदा गदाको धा रण करनेवालों में श्रेष्ठ बलदेवजी को नहीं कम्पातीभई २१ और बलदेवजीकी गदाके वेगको धैर्य्यता से और शिक्षा से जरासन्ध सहता भया २२ ऐसे तिस युद्धमें महाबलवाले विचरतेहुये २३ अनेक प्रकारके मण्डलोंको करनेलगे पीछे बहुतकाल तक युद्धसे परिश्रान्तहुये दोनों अलग अलग स्थित होतेभये २४ पीछे एक मुहूर्त तक स्वस्थहोके फिर आपसमें युद्ध करनेलगे अर्थात् बहुतका लतक दोनों समान युद्धकरतेभये २५ और युद्धमें को ऐसाभी विमुख न हुआ तब वीर्य्यवाले बलदेवजी गदायुद्ध में विशेष शिक्षावाले जरासन्ध को देख २६ गदाको त्याग उत्तम मूशल को ग्रहण करतेभये तब घोररूप मूशल को उठाके क्रोधसे युद्धमें उद्योग करनेलगे २७ तब आकाशवाणी ऊंचे स्वरसे बलदेवजीके प्रतिबोलनेलगी २८ हेराम तेरे हाथसे मरनेलायक यह जरासंध नहीं है इसवास्ते खेदकरके जरासंधके अर्थ उद्योग मतकरो २९ इसको मारनेवाला मैंने रचदियाहै इसवास्ते अच्छीतरह शांतिकरो और थोडेसेही कालमें यह जरासन्ध माराजा वेगा ३० तब इसवचन को जरासन्ध सुनके अप्रसन्न होताभया तब बलदेवजी जरासन्धके अर्थ प्रहार नहीं करताभया ३१ ऐसे जरासन्ध बलदेव और सबराजे युद्धको त्यागतेभये तब दारुणरूप युद्ध शांतहुआ ३२ तब दीर्घकालमें पराजित किया जरासन्ध राजा अपने देशोंकोचला तब सूर्यके अस्तहोजाने पै महाबल वाले भी यादव जरासन्ध की गैल नहीं भागे ३३ किन्तु अपनी सेनाके संग प्रसन्नहुये और श्रीकृष्णसे रक्षित ऐसे यादव मथुरापुरी में प्रवेश करते भये और जितने आकाशसे हथियार वर्षे थे वे सब आपही आप अन्तर्हित होते भये ३४ तब ऐसे अप्रसन्नरूप जरासन्ध अपने पुर को गया व जरासन्ध के अर्थ प्रीति करनेवाले सब राजे अपने अपने देशों को जाते भये ३५ तब ऐसे जरासन्ध को जीत के सब यादव जरासन्ध को जीता हुआ नहीं मानते भये क्योंकि हे जनमेजय वह राजा जरासन्ध अति बलवाला था ३६ और अठारह वार बीस बीस अक्षौहिणी सेना को लेके यादवों के संग युद्ध करता भया ३७ परन्तु यादवों के महारथी उसको मारने को समर्थ नहीं होते भये ३८ परन्तु इस ज·

रामन्त राजा को जीत के वृष्णिकुल के महारथी सुखपूर्व्वक वसनेलगे २६ ॥
इतिमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायामथुरारोधजराशयापयानेत्रिनवतितमोऽध्याय ९३

चौरानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे बलदेवजी के सग अतिबलवाला श्रीकृष्ण यादवों से आकीर्ण मथुरापुरी में सुखपूर्वक वसताभया १ पीछे कितनेक कालमें प्रताप वाला जरासंध राजा गर्वहुये कंसको यादकर २ सत्रहबार मथुरामें प्राप्तहो युद्ध करताभया ३ परंतु यादवों के हाथ से मरा नहीं पीछे अठारहवींबार चारप्रकार की सेना से संयुक्त ४ जरासंध राजा युद्ध करने को आया कृष्ण को मारने के वास्ते तब इन्द्रके पराक्रम के समान पराक्रमवाला ५ जरासंध के आगमन को सुन जरासंधके भयसे पीडितहुये ६ सब यादव आपस में सलाह करनेलगे तब महातेजवाला और नीतिशास्त्र में कुशल ऐसा विकद्रु ७ उग्रसेनके सुनतेहुये कमल के पत्तों के समान नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण के अर्थ कहनेलगा हेगोविंद इस कुलकी उत्पत्ति को श्रवणकरो ८ और प्राप्तकालको मैं कहताहूं जो युक्तजानो तो मेरे वचनको करो ९ इस यादववंश की उत्पत्ति मेरेअर्थ पहले वेदव्यासजी ने कहीहै १० व मनुके वंश में इक्ष्वाकु का पुत्र व इन्द्रके समान पराक्रमवाला ऐसा हर्य्यश्व राजाहुआ ११ तिसके मधुदैत्यकी पुत्री मधुमती नामसे विख्यात ऐसी रानीहुई जैसे इन्द्रके इन्द्राणी १२ व यह रानी यौवन अवस्थामें संयुक्त व रूपमें अद्भुत व राजाको प्राणों से भी प्यारी १३ व कमल के समान नेत्रोंवाली व रति के समान भोगकरनेवाली व सुन्दर कटि तटवाली व पतिव्रता के मनको धारण करनेवाली १४ ऐसीरानी हर्य्यश्व राजाके संग भोग करतीभई जैसे आकाश में रोहिणी चन्द्रमाके संग सो एकसमय में ज्येष्ठभ्राताने १५ यह हर्य्यश्व राज्यमें अलगकरदिया अर्थात् अयोध्यापुरीको त्यागताभया तब अल्पपरिवार से सहित अपनी रानी के संग वनमें वसताभया १६ तब भ्राता में निकासे हुये हर्य्यश्व राजाको रानी कहनेलगी १७ हे नृपश्रेष्ठ राज्यसम्बन्धी वाञ्छा को त्यागो व मधुनामवाले मेरे पिताके स्थानको हम दोनों गमन करेंगे १८ तहां पुष्प फल वाले वृक्षों से युक्त व रमणीय मधुवनहै तहां स्वर्ग के समान रमण करेंगे १९ व मेरेपिता व माताको तू अतिप्रियहै व मेरे में नेह अतिप्यार होने से मेरे लवण

नामवाले भ्राता को तू अतिप्रिय है २० इसवास्ते तहां गमनकर नन्दनवन में अप्सराओं की तरह हम क्रीडा करेंगे २१ तेरे अभिमानी भ्राताको त्याग देवें गे २२ व हमारा वैरी राज्यमद से मत्त ऐसे तेरे भ्राता को व पराश्रय रूप इस गर्हित वासको धिक्कारहै २३ ऐसे कहने से रानीकावचन राजाको प्रियलगा तब कामिनीरूप २४ अपनी भार्या के संग कामीरूप राजा मधुपुरमें प्राप्तहुआ २५ तब दैत्योंका पति मधुने सन्मानपूर्व्वक राजाका सत्कार किया २६ व यह कहा कि हे हर्य्यश्व पुत्र आपका आगमन सफलहो व तेरे को देखके मैं प्रसन्नहुआ हूं व इस मधुवनके विना व मेरा सम्पूर्ण राज्य जो है सो तेरेअर्थ देताहूं २७ हे राजेन्द्र आप यहीं वासकरो व इस मधुवन में मेरापुत्र लवण तेरी सहाय करेगा २८ व तेरे शत्रुओं को ग्रहण करने में मदत करैगा इसवास्ते समुद्रके अनूपदेश आदि से भूषित २९ व गौओं से समृद्ध व आभीररूप मनुष्यों से विशेष करके युक्त व रत्नलक्ष्मी से युक्त ऐसे सुन्दर देशको पालनाकर व तहां वसने में महत् गिरिपुर तेराकिला होवेगा ३० व आनर्त्त नामसे विख्यात तेरादेश होवेगा और कालके अनुसार राजाके वृत्तको प्राप्तहोके वसतारह ३१ व ययाति का वंशभी तेरे यादववंशमें मिलजावेगा ३२ व सोमवंश के पीछे तेरावंश विख्यात होवेगा व इस देशको ३३ मैं तेरेको देके तपकेअर्थ वरुणके स्थानरूप समुद्रमें जाऊंगा व लवणकी सहायता से इस देशको ३४ अपने वंशकी वृद्धिके अर्थ तू पालता रह तब तिस पुरको हर्य्यश्व राजा प्रतिग्रहण करताभया ३५ तब मधुदैत्य तप करने को समुद्रमें गया और महातेजवाला हर्य्यश्वराजा दिव्यरूप तिस पर्व्वत में वसनेके अर्थ पुरमें प्रवेश करताभया ३६ तब गोधनसे युक्त और आनर्त्तनाम से विख्यात ऐसा वह समृद्धरूप देश अल्पही कालमें हुआ ३७ तब प्रजा को आनन्द देनेवाला हर्य्यश्वराजा राजधर्म्मरूप यशसे उस देश को पालने लगा और बढाने लगा ३८ तब राज्यवृत्तसे हर्य्यश्व राजा शोभित हुआ और अच्छे वर्ताव से और नम्रतासे हर्य्यश्व राजा ३९ अपने कुलके योग्य शोभा को प्राप्त हुआ ४० पीछे हर्य्यश्वके मधुमतीरानी में महायशवाला और महातेजवाला ४१ और नकारके समान शब्द करनेवाला और राजाओं के लक्षणों से संयुक्त और वैरियों से जीतमें नहीं आनेवाला और पृथ्वीका पति ऐसा यदु पुत्रहुआ ४२ व दशहजार वर्षतक राज्यकर हर्य्यश्वराजा धर्मकरके मृत्युको प्राप्तहो स्वर्ग में प्राप्त

हुआ ४३ तब दीनतासे रहित आत्मावाला और सूर्यके समान प्रकाशित ऐसा यदु पिताके मरने के बाद राज्यसिंहासन पै बैठा ४४ व चोरों के भयसे रहित इस पृथ्वीको इन्द्रके समान तेजवाला यदु शिक्षित करनेलगा ४५ जिस यदुके नाम से यादववंश कहाताहै पीछे एकसमयमें अपनी स्त्रियोंके संग समुद्रमें यह राजा जलक्रीडा करनेलगा ४६ जैसे तारोंके संग चन्द्रमा तब समुद्र के जलमें तिरने की इच्छाकरके वेगसे कूदनेलगा तब धूम्रवर्ण नामसे विख्यात ४७ सर्पराजने खैंच के अपने सर्प पुरमें प्राप्तकिया ४८ तब मणियों से जटित स्तम्भ और गृह द्वार जिसमें और मोतियों से विभूषित व शंखों के समूह से आकीर्ण व रत्नों के समूहों से विभूषित ४९ व मूंगाके समान अंकुरपत्र आदिसे संयुक्त वृक्षोंसे शोभित व सर्पोंकी नारियों के समूहसे व्याप्त ५० व सोना व चन्द्रमाके तेजके समान मध्यमें भासमान ऐसे सर्पराजके पुरको समुद्रमें यदुराजा देखताभया ५१ व उस पुरमें स्वस्थहोके प्रवेश करताभया ५२ तब मणियों से जटित व कमलरूप और आपही आप विस्तृत व अनेक प्रकारके लक्षणोंसे लक्षित ५३ ऐसे सुन्दर आसन पै यदुको बैठाके धूम्रवर्ण सर्प कहनेलगा ५४ कि तेजसे युक्त तेरेको उत्पन्नकर तेरापिता स्वर्गको प्राप्तहुआ ५५ व तेरेनामसे मङ्गलके अर्थ यादववंश तेरे पिताने स्थापित कियाहै ५६ व तेरे वंशमें देवताओं के पुत्र, ऋषियों के पुत्र दिव्यसर्पोंके पुत्र, मनुष्य शरीरसे युक्त उत्पन्न होवेंगे ५७ व हे राजन् यौवनाश्व की भगिनी में मेरे सकाशसे उत्तम रूपवाली ये पांच कन्या उपजी हैं सो इन्होंकी प्राजापत्य कर्मकरके ग्रहणकर व मैं तेरे अर्थे वरदान करूंगा क्योंकि तू वरको ग्रहण करनेके योग्य प्रतीत होताहै ५८ व भीम, कुकुर, भोज, अन्धक, यादव दाशार्ह, वृष्णी इन नामों से तेरे सातवंश विख्यात होवेंगे ५९ तब इन्द्रके समान यदुराजाके अर्थ धूम्रवर्ण सर्पराज अपनी पांचों कन्याओंको देताभया ६० और यदुके अर्थ कन्याओंको सुनाके वरदान भी करनेलगा ६१ हेराजन् इन मेरीपांच पुत्रियों में पिताके तेजसे संयुक्त व माताके आश्रय से संयुक्त ६२ और हमारे से समय करनेवाले व जलके भीतर विचरनेवाले ऐसे पृथ्वीके पति पुत्र होवेंगे ६३ तब वर और कन्याओं को ग्रहणकर यदुराजा वेग करके उछलताभया जैसे जल से चन्द्रमा ६४ व तिन पांच कन्याओं के मध्यमें स्थित यदुराजा भीतरसे मधुमत्पुर को देखताभया जैसे पांच तारों में से संयुक्त चन्द्रमा ६५ व विवाह सम्बन्धी वेष

को धारणकिये और दिव्य फूलोंकी माला और दिव्यचन्दन आदिको धार
किये ६६ यदुराजा उन पाचों स्त्रियोंको सङ्गले अपने पुरमें प्राप्तहुआ ६७ पी
प्रीतिकरके उन रानियों के सङ्ग भोगविलास करनेलगा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांविकद्रुवाक्येचतुर्नवतितमोऽध्याय ९४॥

पंचानबेवां अध्याय ॥

विकद्रुकहनेलगा कि बहुतकालमें यदुराजा तिनपाचों नागपुत्रियों में कु
के योग्य और पञ्चभूतों के सदृश १ और मुचुकुन्द, पद्मवर्ण, माधव, सार
हरित इन नामोंवाले २ पाचपुत्रोंको उत्पन्न करताभया व इन पाचपुत्रोंको दे
के राजा अति प्रसन्न होनेलगा ३ पीछे अवस्थाको प्राप्तहो बल व गर्वसे तेजि
व पाच पर्वतों के समान पाचोंस्थित ऐसे पाचोंपुत्र पिताके सामने कहनेलगे
कि हे पित: अवस्था व बलसे हम व्याप्तहुये सो आपकी आज्ञा को तत्का
चाहते हैं सो आपकी शिक्षासे हम क्याकरें ५ तब शार्दूल के समान वेगवा
तिन पाचपुत्रों से राजाओं में शार्दूलरूप यदुराजा प्रीति से कहनेलगा ६ कि
विंध्याचल व ऋक्षवत इन दो पर्वतों के समीपमें दो पुरी बनाके यत्नसे मेरा पु
मुचुकुन्द निवासकरो ७ व सह्य पर्वतके ऊपर दक्षिण दिशाको आश्रित पुरी
मेरापुत्र पद्मवर्ण तत्काल निवासकरो ८ व तहा चंपक भूषित कांतदेश में रम
णीकपुर बना मेरापुत्र सारस निवासकरो ९ व समुद्र के समीपमें सर्पराजके द्वी
को मेरापुत्र हरित पालना करो व धर्म्म को जाननेवाला मेरापुत्र माधव राज
होके अपने कदीमी पुरको पालेगा १० तब पितासे अभिषेचन किये व राजाओं
की शोभाको प्राप्त व पितासे शिक्षित व लोकपालों के समान उपमावाले ११
ऐसे पाचोंराजे अपने अपने बासके अर्थ पुरोंको ढूंढनेलगे १२ तब मुचुकुन्द
राजा विंध्य पर्व्वत के मध्यमें नर्मदा के तीरपै अपने स्थान को शोभित करके
प्रकट करनेलगा १३ अर्थात् बहुत से पानियों से भरी परिखा खुदानेलगा और
ऊंचे ऊंचे कोट बनवानेलगा १४ व देवताओं के मन्दिर स्थापित करनेलगा व
गली मुहल्ले सडक व चौपडकी तरह बाजार बगीचे इन्हों से संयुक्त अमरावती
पुरीकेसमान धनवाली १५ व गाय, धन, धान्य इन्होंसे पूर्ण व पताका व फूलों
की मालासे शोभित व अपने तेजसे रचीहुई १६ व अति मूल्यके पत्थरों के

स्थानों से संयुक्त १७ व माहिष्मती नामसे विख्यात ऐसी पुरी रचताभया और विंध्याचल व ऋक्षपर्वतके पादमें बहुतसे बगीचों से सयुक्त १८ व बहुतसे दूकान व चौपडों से सयुक्त इन्द्रकी पुरीकेसमान व पुरीके नामसे विख्यात ऐसी दूसरी पुरी रचताभया १६ ऐसे दो पुरियोंको रचके धर्मात्मा मुचुकुन्द राजा राजधर्मसे पालताभया २० व पद्मवर्ण राजा सह्यपर्व्वतके पृष्ठभागपै वृक्षोंकी लतासे व्याप्त वेणुवानदीके तीरपै देशकी अल्पताको जान २१ पद्मावत नाममे विख्यात देश और करवीर नामसे विख्यात २२ पुरको रचके प्रवेश करताभया व सारस राजा भी २३ चंपक, अशोक इनवृक्षोंसे व्याप्त व तांबेकेसमान माटीसे व्याप्त ऐसे वन-वासी तिस देशमें सब ऋतुओं के योग्य वृक्षोंसे २४ परिवृतरूप व रमणीक क्रौंच पुरकोरच तिसमें वसनेलगा २५ व हरितराजा रत्नो के समूहसे पूर्ण व नारियों के मनको हरनेवाला ऐसे समुद्र द्वीपको पालनेलगा और तिस राजाकेदाम मद्गुर नाम से विख्यात २६ समुद्र के जलमें गोतेमारनेवाले व समुद्र के भीतर विचरने वाले जो सब कालमें शङ्खोंको निकासनेलगे २७ व तिसराजाके शेषरहे दास-गण जलसे उपजेहुये मूगोंको जलमें ढूढ़ने के अर्थ २८ जहाजों में बैठ विचरने लगे और विशेषकरके सबकालमें मच्छके मांसको खानेवाले २६।३० व सबरत्नों को ग्रहणकरनेवाले और रत्नद्वीपमें वसनेवाले और रत्नोंके अर्थ वणिक्वृत्तिसे दूर गमन करनेवाले ३१ ऐसे सब दासगण हरित राजाको तृप्तकरनेलगे जैसे यक्ष कुबेरको ऐसे इक्ष्वाकुवंशसे यदुवंश निकसाहै ३२ पीछे यदुकेपुत्रोंने चारप्रकार से वंशकाभेद कियाहै पीछे यदुराजा अपने पुत्रमाधवको राज्यदेके ३३ देहको पृथ्वी में त्याग स्वर्गमें प्राप्तहुआ पीछे माधवके ३४ सत्त्ववृत्त और गुणोंसे सयुक्त और राजगुणमें स्थित और वीर्यवाला ऐसा सत्वतपुत्रहुआ पीछे सत्वतके भीम पुत्र हुआ ३५ जिस करके भीमनाम से विख्यात वंशहुआ और सत्वत के नामसे सात्वतवंश कहाया और रामचन्द्रके राज्यकरनेके समयमें ३६ शत्रुघ्नने लवणको मारमधुवनको कटवादिया व तिस मधुवनकी जगह मथुरापुरी बसादी ३७ जब रामचन्द्र भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न ये चारों वैष्णवपदको अर्थात् वैकुण्ठ में चलेगये ३८ तब यह मथुरापुरी राज्य सम्बन्धके कारणसे इस पूर्वोक्त भीमराजा ने अपने वंशमें स्थापित करलई ३९ पीछे जब रामचन्द्रका पुत्र कुश राज्यपै स्थितहुआ और लव युवराजहुआ ४० तब इस भीमका पुत्र अंधक इस मथुरापुरी में राज्य

करताथा पीछे अधकके रेवतनाम से विख्यात राजापुत्र हुआ ४१ पीछे रैव
रमणीकपर्वत में ऋक्षपुत्रहुआ पीछे ऋक्षके सागरकेसमीप में रैवतपुत्रहुआ
यही रैवत पृथ्वी में पर्वत विख्यातहुआ पीछे रैवतके महायशवाला और पृ
में विख्यात ऐसा विश्वगर्भ राजापुत्रहुआ ४३ पीछे विश्वगर्भके दिव्यरूपोंवा
तीनभार्य्याओं में ४४ लोकपालों के समान उपमावाले और वसु, बभ्रु, सु
सभाक्ष इन नामोंवाले चार पुत्रहुये ४५ तिन्होंसे यह यादववंश विस्तृतहुआ
पीछे वसुके वसुदेवपुत्र और पांडुराजाकी रानीकुन्ती ४७ और चन्देरीके रा
दमघोषकी रानी सुप्रभा ऐसी दोपुत्रीहुईं ४८ ऐसे हे कृष्ण वेदव्यासजीके
से तेरे वंशकी उत्पत्ति सुनी है ४९ और हे देव इसी वंशमें ब्रह्माजी के सम
तुमने जन्मलियाहै हमारे कल्याण और जयके अर्थ सो ५० आप देवताओं
गुप्तकार्य्यों कोभी जानते हैं और सर्वज्ञ हैं और हे विभो आप जरासंध राजा
मारने को समर्थ हैं ५१ और तुम्हारी बुद्धि केद्वारा हम सब व्रतमें स्थितहैं पर
अति बलवाला जरासन्ध सब राजाओं के मस्तकपै स्थित है ५२ और अमे
बलवालाहै और हम सब अल्प सामग्रीवाले हैं और अब यहपुरी एकदिनभी रो
को नहीं सहेगी ५३ और अन्न और इंधन आदिसेरहित और किलोंसेरहित औ
परिखाओं और यन्त्रों से रहित ५४ और वप्रकोट शस्त्रों के आगार और ईंटों
समूह इन्होंसेरहित ऐसीपुरी होरही है ५५ क्योंकि कंसके बलके प्रतापसे पहले
नुष्यों ने इसपुरीके कोटआदि नहीं बनाये हैं और कंसके नाशहोने से और हमा
नवीन ५६ राज्यहोनेसे यहपुरी रोधको नहींसहेगी ५७ और शत्रुओं से पीडि
यहदेश मनुष्योंकरके सहित निश्चय नष्ट होजावेगा ५८ और यादवों के विरो
करके बहुतसे राजे इसपुरीको तोडना चाहते हैं अब जो उत्तम और श्रेष्ठ जानं
सो करनाचाहिये ५९ और राजाओंके वचनोंको माननेवाले हम होजावेंगे ६
और जरासंधके भयसे भागनेकी इच्छावाले बहुतसे मनुष्य रोधको प्राप्तहो ऐ
कहेंगे ६१ कि यादवोंके विरोध करके हम नाशको प्राप्तहुये हैं हे कृष्ण यह मे
मतहै और विश्वाससे मैंने सबकहा ६२ और आप तो पहलेही जानते हैं फि
कहना क्या जरूरहै अब जिसमें हमारी कुशलताहो वह तत्काल अपनी इच्छा
से करो ६३ और इस सेनाके स्वामी आपहै और हम तुम्हारी आज्ञामें स्थितहैं
और केवल तेरेहीअर्थ यह विरोधहुआहै सो अपनेसहित हमारीभी रक्षाकरो६४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांविकद्रुवाक्येपचनवतोऽध्यायः ९५ ॥

छानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे विकद्रुके तिस वचनको सुनके प्रसन्नहुआ वसुदेव यह वचन कहताभया १ राज्यके छ गुणों को कहनेवाला और राज्यमन्त्रार्थके तत्त्व को जाननेवाला ऐसे विकद्रुने हे कृष्ण तत्त्व और हितका उपदेश किया है २ और राज्यधर्म और सत्यधर्म बहुत से कहे हैं ऐसे पिताके और विकद्रुके वचन को ३ सुनके श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हेतु से और कर्म्म से और न्याय से और शास्त्रसे देवको नहीं देखनेवाले ४ आपलोगों का वचनसुन तिसका उत्तरसुनो और सुनके ग्रहणकरो ५ राजा को नम्रता के द्वारा यथाक्रम से वर्तना चाहिये अर्थात् संधि विग्रह यान आसन ६ द्वैधीभाव संश्रय इन छ गुणों को सब काल में चिन्तवन करना चाहिये और बुद्धिमान्को बलवालेके समीप में नहीं स्थित रहना चाहिये ७ किन्तु समयको जान आप निर्बलहोवे तो भागना उचित है और सामर्थ्यहोवे तो युद्धकरे सो आदिमें इसप्रकाशित मुहूर्त्त में ८ शक्तिवाला भी मैं अशक्तके समानहोके बलदेवजीके संग जीतनेके अर्थ गमन करूंगा पीछे सह्याचलयुत अक्षयस्थान को बलदेवजीके संग जाऊंगा ९ पीछे करवीरपुर और रमणीक क्रौंचपुर १० इन्होंको हमदोनों देखेंगे पीछे गोमतपर्वतको देखेंगे हमारे गमनको सुनके अपनी जीतको माननेवाला जरासंध राजा ११ मथुरापुरी में प्रवेश नहीं करके गर्व से हमारे पीछे पीछे ढूंढने को गमन करेगा १२ पीछे महा वनमें जरासंध जाके हम दोनोंको ग्रहण करनेके अर्थ यत्न करेगा १३ ऐसे हमारी व कुलकी कल्याणकारी व पुरवासियों को व पुरी के व देशको सुख देनेवाली ऐसी यात्रा होवेगी १४ व शत्रुको मारे बिना जीतने की इच्छा करनेवाले १५ राजे पराये देशमें नहीं प्राप्तहुआ करते हैं ऐसे कहके कृष्ण व बलदेवजी १६ दक्षिणदिशा को भागतेभये व सैकड़ों देशोंमें विचरतेहुये दोनों १७ दक्षिणदिशा में प्राप्तहो सुखपूर्वक विचरनेलगे पीछे सह्यके पृष्ठभाग में रमणीय वनों में दोनों प्रसन्नहोके प्राप्तहुये १८ पीछे थोड़ेमे कालमें सह्य पर्वतने विभूषित १९ व अपने वंश के मनुष्यों से युक्त ऐसे करवीरपुर में प्राप्तहुये और तहां जाके वेणा नदी के तीरपै आश्रित २० पड़के हमके नीचे स्थितहुये तहां भृगुवंशमें उत्पन्न तपवाला २१ और कांधेपै फरसाको धारण करनेवाला व वृक्षोंकी जटा व वल्कलों को धारण

करनेवाला व यतीकी शिखाके आकार गौर वर्णवाला और सूर्य्य के समान ते
जस्वी २२ व क्षत्रियों के अतको करनेवाला व समुद्रके समान शरीरवाला और
कालके अनुसार द्रव्यको अग्निमें हवन करनेवाला २३ व बछडा सहित सफेद
रंगकी कामधेनु गायको दूहनेवाला २४ व परिश्रमसे रहित और अविनाशी व
भृगुवंश में उत्पन्न ऐसे परशुरामजी को २५ तिस वडके वृक्षके नीचे स्थितहुये
को देखतेभये २६ पीछे देखके पैरोंकी जडमें अजली बाध २७ दोनों वसुदेवके
पुत्र प्राप्तहुये और बोलनेवालों में उत्तमरूप श्रीकृष्ण तिस परशुरामजी से मधु
वाणी से कहनेलगे २८ हे भगवन् मुनियों में ऋषभ व क्षत्रियों के कुलको ना
शनेवाले २९ व जमदग्नि के पुत्र और परशुराम नामसे विख्यात ऐसे आपको
में जानताहूं ३० व तुमने वाणोंके वेगसे समुद्र फेंकदियाहै ३१ व वाणके वेगसे
आपने नगर उलटदिया है व आपने पिताकी मृत्यु को यादकर सहस्रवाहु की
हजारभुजा काटदी हैं ३२ व अबतक भी तुम्हारे फरसेके मारनेसे क्षत्रियोंके श
रीरसे निकसेहुए रुधिर करके भीगीहुई पृथ्वी दीखती है ३३ सो हे भार्गव आप
के सकाशसे कछुक आख्यान सुनने की इच्छा करें हैं ३४ व हम दोनों यमुना
के तीरपै मथुरापुरी के यादवहैं जो कभी आपने सुनेहों ३५ व हम दोनोंका व
सुदेव पिताहै और जन्मकालसे लगा प्रथम अवस्था तक व्रजमें वसते रहे हैं ३६
पीछे मथुरामें प्रवेशकर ३७ हम दोनों समाजमें अपने बलसे कसको मार और
कसके पिता उग्रसेनको राज्यपै स्थितकर ३८ गोपों के कार्यको फिर करनेलगे
तब हमारे पुरको जरासंध रोकताभया ३९ सो हमने वहुतसे युद्धोंमें हमारी जय
भी रही परन्तु अपने पुरकी और प्रजाकी रक्षाके वास्ते हे घृतव्रत ४० शस्त्र उ
द्योग कर्त्तव्य वलसाधन रथ छत्र आयुध इन्होंसे रहित ४१ हम दोनों प्यादे रूप
होके जरासधके भयकरके मथुराते निकस आपके समीप में प्राप्तहुये हैं ४२ सो
हमारी सलाहमात्रसे सतक्रिया करनेको आप योग्यहैं ऐसे अनंदितरूप दोनों
के वाक्यको परशुरामजी सुनके ४३ धर्म से सयुक्त प्रति वचन कहनेलगे हे प्रभो
हे कृष्ण आपके संग सलाह देनेके वास्ते ४४ शिष्योंकरके रहित मैं अकेला इस
जगह प्राप्तहुआहू और हे कमलके समान नेत्रोंवाले ४५ आपके व्रजमें वासको
मैं जानताहू और दैत्योंकी और दुरात्मा कंसकी मृत्युको भी मैं जानताहू और
भ्राता सहित तेरा जरासधके सग विग्रहको जानकर ४६ हे वरानन मैं इस जगह

प्राप्तहुआहूं हे कृष्ण तेरेको में जानताहूं तू जगत्का गोप्ताहै प्रभुहै तू अविनाशी है ४७ तू वृद्धहै और देवताओं के कार्य्य की सिद्धि के अर्थ तू बालक है व तेरे से तीनोंलोकों में अज्ञात कुछ भी नहीं है ४८ परन्तु भक्तिकरके में वचन कहता हूं आप सुनो हे गोविन्द ४९ यह करवीरपुर तेरे वंशके पूर्व्वलों ने वसाया है इस पुर में हे श्रीकृष्ण महा यशवाला ५० व शृगाल नाम से विख्यात और नित्य परम कोप करनेवाला ऐसा राजा वसताहै तिस राजाने हे गोविन्द अपने वंश में उत्पन्न होनेवाले बहुत से राजे ५१ मारदिये हैं और यह राजा अहंकारी है व अजितात्माहै व गर्व्वीहै ५२ व राज्यके ऐश्वर्य्यरूप मदसे संयुक्तहै व पुत्रों में भी दारुण कर्म्म करनेवाला है इस वास्ते हे नरोत्तम इस पार्थिवदूषित करवीर पुरमें आपका वसना उचित नहीं है ५३ और मैं कहताहूं आप श्रवणकरो ५४ जहां तुम दोनों अति बलवाले जरासन्ध को दुःखित करोगे अर्थात् इस वेणा नामवाली नदीके तीरके हम तीनों ५५ मिलके वासके अर्थ दुर्गम पर्व्वत को चलेंगे पीछे यज्ञ पर्व्वतको पीछे सह्य पर्व्वत को जाके ५६ पीछे जहां मांसको खानेवाले व घोर कर्म्म के करनेवाले चोरों का निवास है व नानाप्रकारके वृक्ष लता विचित्र पुष्पोंवाले वृक्षोंके समूहहैं ५७ तहां एकरात्रि वासकर खट्वांगीनाम नदीको तरिके ५८ तपस्वियों के वनसे भूपित तिसनदीके प्रतापको देखेंगे ५९ पीछे अनेक प्रकारके पर्व्वतों में जाके तप करनेवाले और शान्तिवाले बहुत से ब्राह्मणों को हम देखेंगे ६० पीछे क्रौंचपुरमें गमन करेंगे ६१ तिस पुरमें हे कृष्ण धर्म्मज्ञ और तेरे वंशमें उपजनेवाला महाकपी नामसे विख्यात और इस वनका पति ऐसा राजा राज्य करताहै ६२ तिस राजाको नहीं देखके एक दिन निवास कर आनडुहनामसे विख्यात सनातन तीर्थको गमन करेंगे ६३ पीछे सह्यवन के छिद्रमें अनेक शृङ्गोंसे विभूषित और पक्षियोंसेभी प्राप्त होने में दुर्गम ६४ व देवताओं का विश्रामभवन ६५ और स्वर्गकी पैड़ी व आकाश के समान ऊंचा और विमानोंका विरामस्थान ६६ और गोमन्तनाम से विख्यात और तिस प- र्व्वत के उत्तम महाशृङ्ग में उदयास्त के रूक सूर्य्य चन्द्रमा ६७ समुद्र इन्द्रों को देखतेहुये पर्व्वतके शिखरमें तुम दोनों विचरोगे ६८ पीछे उस पर्व्वतके वनों में विचरतेहुये तुम दोनों और दुर्ग युद्धमें बाधा देनेवाले तुम दोनों जरासन्ध को जीतोगे ६९ और पर्व्वत में प्राप्तहुये तुम दोनोंको जरासन्ध असमर्थ होजावे-

करनेवाला व यतीकी शिखाके आकार गौर वर्णवाला और सूर्य्य के समान ते
जस्वी २२ व क्षत्रियों के अंत को करनेवाला व समुद्र के समान शरीरवाला औ
कालके अनुसार द्रव्यको अग्निमें हवन करनेवाला २३ व बछड़ा सहित सफ़ेद
रंगकी कामधेनु गायको दुहनेवाला २४ व परिश्रमसे रहित और अविनाशी व
भृगुवंश में उत्पन्न ऐसे परशुरामजी को २५ तिस वडके वृक्षके नीचे स्थितहुये
को देखतेभये २६ पीछे देखके पैरोंकी जड़में अंजली बांध २७ दोनों वसुदेवके
पुत्र प्राप्तहुये और बोलनेवालों में उत्तमरूप श्रीकृष्ण तिस परशुरामजी से मधु
वाणी से कहनेलगे २८ हे भगवन् मुनियों में ऋषभ व क्षत्रियों के कुलको ना
शनेवाले २९ व जमदग्नि के पुत्र और परशुराम नामसे विख्यात ऐसे आपको
मैं जानताहूं ३० व तुमने बाणों के वेगसे समुद्र फेंकदियाहै ३१ व बाणके वेगसे
आपने नगर उलटदिया है व आपने पिताकी मृत्यु को यादकर सहस्रबाहु के
हज़ारभुजा काटदी हैं ३२ व अनतक भी तुम्हारे फरसेके मारनेसे क्षत्रियोंके श
रीरसे निकसेहुए रुधिर करके भीगीहुई पृथ्वी दीखती है ३३ सो हे भार्गव आ
के सकाशसे कछुक आख्यान सुननेकी इच्छा करें हैं ३४ व हम दोनों यमुन
के तीरपै मथुरापुरी के यादवहैं जो कभी आपने सुनेहों ३५ व हम दोनोंका व
सुदेव पिताहै और जन्मकालसे लगा प्रथम अवस्था तक व्रजमें बसते रहे हैं ३६
पीछे मथुरामें प्रवेशकर ३७ हम दोनों समाजमें अपने बलसे कंसको मार और
कंसके पिता उग्रसेनको राज्यपै स्थितकर ३८ गोपों के कार्यको फिर करनेलगे
तब हमारे पुरको जरासंध रोकताभया ३९ सो हमने बहुतसे युद्धोंमें हमारी जय
भी रही परन्तु अपने पुरकी और प्रजाकी रक्षाके वास्ते हे व्रतव्रत ४० शस्त्र उ
द्योग कर्त्तव्य बलसाधन रथ छत्र आयुध इन्होंसे रहित ४१ हम दोनों प्यादे रूप
होके जरासंधके भयकरके मथुरासे निकस आपके समीप में प्राप्तहुये हैं ४२ सो
हमारी सलाहमात्रसे सतक्रिया करनेको आप योग्यहैं ऐसे अनंदितरूप दोनों
के वाक्यको परशुरामजी सुनके ४३ धर्म से संयुक्त प्रति वचन कहनेलगे हे प्रभो
हे कृष्ण आपके संग सलाह देनेके वास्ते ४४ शिष्योंकरके रहित मैं अकेला इस
जगह प्राप्तहुआहूं और हे कमलके समान नेत्रोंवाले ४५ आपके व्रजमें वासको
मैं जानताहूं और दैत्योंकी और दुरात्मा कंसकी मृत्युको भी मैं जानताहूं और
भ्राता सहित तेरा जरासंधके संग विग्रहको जानकर ४६ हे वरानन मैं इस जगह

प्राप्तहुआहूं हे कृष्ण तेरेको मैं जानताहूं तू जगत्का गोप्ताहै प्रभुहै तू अविनाशी है ४७ तू वृद्धहै और देवताओं के कार्य्य की सिद्धिके अर्थ तू बालक है व तेरे से तीनोंलोकों में अज्ञात कुछ भी नहीं है ४८ परन्तु भक्तिकरके मैं वचन कहता हूं आप सुनो हे गोविन्द ४९ यह करवीरपुर तेरे बंशके पूर्वलों ने बसाया है इस पुर में हे श्रीकृष्ण महा यशवाला ५० व शृगाल नाम से विख्यात और नित्य परम कोप करनेवाला ऐसा राजा बसताहै तिस राजाने हे गोविन्द अपने वंश में उत्पन्न होनेवाले बहुत से राजे ५१ मारदिये हैं और यह राजा अहंकारी है व अजितात्माहै व गर्व्वीहै ५२ व राज्यके ऐश्वर्य्यरूप मदसे संयुक्तहै व पुत्रों में भी दारुण कर्म्म करनेवाला है इस वास्ते हे नरोत्तम इस पार्थिवदूषित करवीर पुरमें आपका बसना उचित नहीं है ५३ और मैं कहताहूं आप श्रवणकरो ५४ जहां तुम दोनों अति बलवाले जरासन्ध को दुःखित करोगे अर्थात् इस वेखवा नामवाली नदीके तीरके हम तीनों ५५ मिलके वासके अर्थ दुर्गम पर्व्वत को चलैंगे पीछे यज्ञ पर्व्वतको पीछे सह्य पर्व्वत को जाके ५६ पीछे जहां मासको खानेवाले व घोर कर्म्म के करनेवाले चोरों का निवास है व नानाप्रकारके वृक्ष लता विचित्र पुष्पोंवाले वृक्षोंके समूहहैं ५७ तहां एकरात्रि वासकर खट्वांगीनाम नदीको तरिके ५८ तपस्वियों के वनसे भूषित तिसनदीके प्रतापको देखेंगे ५९ पीछे अनेक प्रकारके पर्व्वतों में जाके तप करनेवाले और शान्तिवाले बहुत से ब्राह्मणों को हम देखेंगे ६० पीछे क्रौंचपुरमें गमन करेंगे ६१ तिस पुरमें हे कृष्ण धर्म्मज्ञ और तेरे वंशमें उपजनेवाला महाकपी नामसे विख्यात और इस वनका पति ऐसा राजा राज्य करताहै ६२ तिस राजाको नहीं देखके एक दिन निवासकर आनडुहनामसे विख्यात सनातन तीर्थको गमन करेंगे ६३ पीछे सह्यवन के छिद्रमें अनेक शृङ्गोंसे विभूषित और पक्षियोंसेभी प्राप्त होने में दुर्गम ६४ व देवताओं का विश्रामभून ६५ और स्वर्गकी पैंडी व आकाश के समान ऊंचा और विमानोंका विरामस्थान ६६ और गोमन्तनाम से विख्यात और तिस पर्व्वत के उत्तम महाशृङ्ग में उदयास्त के नक्त सूर्य्य चन्द्रमा ६७ समुद्र इन्हों को देखतेहुये पर्व्वतके शिखरमें तुम दोनों विचरोगे ६८ पीछे उस पर्व्वतके वनों में विचरतेहुये तुम दोनों और दुर्ग युद्धसे बाधा देनेवाले तुम दोनों जरासन्ध को जीतोगे ६९ और पर्व्वत में प्राप्तहुये तुम दोनोको जरासन्ध असमर्थ होजावे-

गा ७० और तुम दोनों के सग युद्ध होने के वक्त शस्त्रों सहित मैंभी तक्त
प्राप्त होके देखूंगा ७१ और हे कृष्ण देवताओं ने तहा उग्रयुद्ध होना पहले
कहदियाहै अर्थात् यादवों का और अन्य राजाओं का आपसमें उग्रयुद्ध हो
७२ और चक्रहल कौमोदकी गदा सौनन्द मूशल ये वैष्णव शस्त्र युद्धमें प्र
होवेंगे और राजाओं के रुधिर का पान करेंगे ७३ और हे कृष्ण चक्र मूश
नामसे विख्यात यह सग्राम देवताओं ने कहाहै ७४ और हे कृष्ण उस युद्ध
प्रकटरूप तेरे वैष्णवरूपको तेरे वैरी व देवते देखेंगे ७५ व हे कृष्ण तिस गदा
स्वचक्रको तू ग्रहणकर ७६ व हल और मूशल को वलदेवजी ग्रहण करेंगे ७
तव देवताओंकी जीतके अर्थ पृथ्वी में यह प्रथम संग्रामहोवेगा पीछे समयपा
दूसरा भारतनाम युद्ध होवेगा ७८ इसवास्ते हे कृष्ण पर्व्वतों में उत्तमरूप गो
मन्त पर्व्वतको गमनकर पीछे युद्धमें जरासन्धको जीतेगा ७९ और तहाँ स्थि
तहुये जरासन्धको आपही आप निमित्त शिक्षा देवेंगे और इस कामधेनु गा
का अमृतके समान दूधहै ८० इसको पानकर मेरे कहेहुये मार्गकेद्वारा गमन
कर मनोवांछित फलको प्राप्तहोवेगा ८१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपरशुरामवाक्येपण्णवतितमोऽध्यायः ९६॥

सत्तानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तिस कामधेनु गायके दूध को पानकर वल व गर्व्व
से युक्त वलदेव व श्रीकृष्ण परशुरामजी के सग १ गोमन्त पर्व्वतको देखने के
वास्ते परशुरामजीके वताये मार्गकेद्वारा गमन करतेभये २ व वलदेव व श्रीकृष्ण
परशुरामजी ये तीनों तीन अग्नियोंके समानहोके मार्गको शोभित करनेलगे
जैसे देवते स्वर्गको ३ पीछे मार्गकी विधिसे दिनोंके क्रमकरके गोमन्त पर्वतको
प्राप्तहुये जैसे देवते मन्दराचलको ४ व लताओंसे सुन्दर विचित्र व नानाप्रकार
के वृक्षोंसे विभूषित व चदन अगर आदिसे धूपित व मनोहररूप चित्रों से चि-
त्रित ५ व भौंरोंके गणसे संकीर्ण और शिला काटे वृक्ष इन्होंसे सयुक्त व मेघके
समान नाद करनेवाले व मत्तरूप ऐसे मोरोंके शब्दोंसे शब्दित ६ और आका-
शमें लगे हुये शिखर वाला और वद्दलों से मिलेहुये वृक्षों से संयुक्त और मद
वाले हाथियों के दांतों के अग्रभाग से विभेहुये पत्थरों से अंकित ७ व बोलते

हुये पक्षियों के समूह करके चारों तर्फ से प्रतिनादित व हरितरूप घास व पत्तों से आच्छादित ८ व नीले पत्थरके समान व आकाशके समान बहुतसे वर्णों वाला व धातुओं के निकसने से लिपेहुये अगोंवाला व जलके भिरने से विभूषित ९ व देवताओं के गणों से आकीर्ण व मैनाक पर्वतके समान मनोरथ को देनेवाला व ऊचा व सुन्दर अग्रभागवाला व जडसे पानीको भिरानेवाला १० व वन व गुफाआदि से स्थित व सचेत बद्दलों के गणों से विभूषित व पनस आवला आव बेत स्यदन चदन ११ तमाल इलायची इन्हों के वनों से युक्त व मिरच पीपल बेल चीता हींग गण इन्हों के वृक्षों से १२ सकुल व रालके वृक्षों करके चारोंतर्फ से शोभित व ऊचे शालवृक्षों के वनों से रक्षित व बहुतसे चित्र वनों से युक्त १३ व सरल नींव अर्जुन पाटली हिंताल पुन्नाग इन वृक्षों से शोभित १४ व जलके स्थानोंमें कमलोंसे आच्छादित व स्थलोंमें कमलनियोंसे आच्छादित व अनेक प्रकारके वृक्षों से चारोंतर्फ से भूषित १५ व जामन कद कैंदू चमेली अशोक बेलपत्र तेंदू १६ कुडा नागकेसर इन वृक्षों से उपशोभित व हाथियोंके समूहों से आकीर्ण व मृगों के समूहसे शोभित १७ व सिद्ध चारण राक्षस विद्याधर इन्हों के समूहसे सेवित १८ व सिंह शार्दूल इन्हों के शब्दों से प्रतिशब्दित व पानीकी धारासे सेवित १९ व देवते गधर्व अप्सरा इन्होंसे स्तुति किया व दिव्य वनस्पतियों के पुष्पों से अलकृत २० व इन्द्रके वज्रके प्रहारों को नहीं जाननेवाला व दावाग्निके भयसे रहित व देवताओंके सुखका आश्रय २१ व बहुतसी नदियों से उपशोभित २२ व बहुतसे वनों से युक्त व बहुतसी काता रूप गलियों से उपशोभित २३ और अनेक प्रकारके पत्थरों से मेघों की तरह विभूषित २४ व नई नई वनकी पङ्क्तियों से मडित व दरी सुदरी कदरी इन आदि से शोभित २५ व ओषधियों करके प्रकाशित शिखरवाला व वानप्रस्थों से सेवित २६ व सब पर्व्वतों में उत्तम ऐसे गोमत पर्वतमें २७ गरुडजी के समान पराक्रम वाले तीनों उत्तम शृगमें जाके वेगसे प्राप्तहुये जैसे देवते २८ व तहा मनसे रचे हुयेके समान सुन्दर स्थान बनातेभये ऐसे बलदेव व श्रीकृष्णको तिसस्थानमें प्राप्तहुयों को देख परशुरामजी २९ पूछके गमन करने की इच्छा करताभया हे कृष्ण हे विभो मैं शूरपारक नगरको गमन करूगा ३० व तुम दोनोंको युद्धमें दैत्य भी विमुख नहीं करसकते व आपके सग मार्ग में जो मैंने प्रीति प्राप्तकी

है ३१ वह इस मेरे शरीरको अनुग्रहित करेगी हे देवमुख्य हे वैकुण्ठमें वसनेवाले हे विष्णो हे देवस्तुत ३२ हे कृष्ण मेरे नैष्ठिक वचन को श्रवणकर हे गोविन्द मनुष्यों के कल्याणके वास्ते मनुष्य देहकरके जो आपने यह प्रस्तुत कर्म किया है ३३ तिसका प्रथमकल्प समयके द्वारा युक्तहुआ अर्थात् तुम दोनोंका यह युद्ध देवताओं ने पहलेही रचाहै ३४ और जब जरासंधके संग युद्ध उपस्थित होवेगा तब दिव्यशस्त्र दिव्यबल व दिव्यरूप इन्होंकी प्राप्ति तुम्हारे अर्थ होवेंगी ३५ व जब सुदर्शनचक्र व गदाको हाथमें लेके हे कृष्ण आठगुणे पुष्टकंधेवाले तेरेको युद्धमें देखकर इन्द्रभी भयमानेगा ३६ व अबतक तेरे संग मैंने स्वर्गोक्त यात्रा ३७ पृथ्वी में देवताओं के अर्थ व अपनी कीर्तिके अर्थ करी हैं व हे गोविन्द वाहन व ध्वजकर्म्म में गरुडजी का आह्वान जल्द करो ३८ व युद्धकी कामना वाले व रणरूप जीविकावाले व स्वर्गको जानेवाले ३९ ऐसे बहुतसे राजे धृत- राष्ट्रके पुत्र दुर्योधनके वशमें स्थितहैं व राजाओं की मृत्युको देखनेवाली और वैधव्यता से अधिवासित ४० ऐसी एक वेणीको धारण करनेवाली यह पृथ्वी तेरेको देखती है ४१ इसवास्ते हे कृष्ण दैत्यों के मारने के अर्थ व देवताओं के सुखके अर्थ व राजाओंके स्वर्ग वासके अर्थ व वेगसे कार्यकोकर ४२ व हे कृष्ण तैंने मुझे सत्कृत किया ४३ व तुम्हारे कार्यकी सिद्धिके अर्थ साधन करूंहूं ४४ और जहां सबकाल में आपका युद्धहोवे तहां मेरा स्मरण करना ऐसे कृष्ण से कहके ४५ और जयरूप आशीर्वादों से बढाके परशुरामजी वाञ्छित दिशाको गमन करते भये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांगोमन्तारोहणेसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब परशुरामजी गमन करतेभये तब श्रीकृष्ण व बल देवजी ये दोनों मनोवाञ्छितरूपको धारणकर गोमन्तपर्व्वतके रमणीक शिखरमें विचरनेलगे १ अर्थात् वनमालाओंको पहरनेवाले व नील पीत ऐसे वस्त्रोंको पह ननेवाले व श्वेत नील ऐसे रंगके शरीरोंवाले व आकाश में स्थित बद्दलों के समान २ व पर्वतकी धातुओं से लिपेहुये अंगोंवाले व जवान अवस्थामें स्थित व पर्वतके शिखर में प्राप्त व रमणकरने की वाञ्छावाले ३ व तारागणों में श्रेष्ठ व

प्रकाशमान ग्रहों में उत्तम ऐसे उदय होतेहुये चन्द्रमाको देखनेवाले ४ ऐसे बल-
देव श्रीकृष्ण प्रकाशित वनों में विचरनेलगे पीछे कृष्णसे रहित पर्वतके समान
कान्तिवाला व वीर्यवाला ऐसा बलदेव पर्वतके शिखरपै अकेला विचरनेलगा ५
तब फूलेहुये कदबकी छायामें स्थितहुआ तब मदगन्धसे युक्त वायुकरके वीज-
मान हुआ ६ तब तिस वायुके समूहको सेवनेसे मदिराके सस्पर्श से उपजा गन्ध
नासिका में प्राप्तहुआ ७ तब तृषा लगनेलगी व मुखसूखनेलगा तब दूसरेदिन
तिस पूर्वले व्रतको स्मरणकर तृषितहुआ मदिराकी गन्धको ढूढ़नेवाला बलदेव
तिस फूलेहुये कदबको देखताभया ८ व वर्षाऋतुमें फूलेहुये उस कदबके वद्दल
से गिरताहुआ जो पानी कोटरमें स्थितहोवे उसकी मनोहर मदिरा उपजै ९ सो
तृषितहुआ बलदेव तिस मदिराको वारम्बार पान करनेलगा तब मदसे चलाय-
मानहुआ १० अर्थात् बलदेवजीका चलायमान नेत्रों से संयुक्त मुख होनेलगा
व शरदकाल के चन्द्रमाकी समान कान्ति होनेलगी ११ ऐसे कदब के कोटर में
कादंबरी व वारुणीनाम से विख्यात मदिरा होती है १२ तब कादम्बरी मदिराके
मदसे विह्वलहुये १३ बलदेवजी को जानके वारुणी कान्तिश्री इन नामोंवाली
व अंजलियोंको बांधनेवाली और अनेकप्रकारके प्रियवचनोंको बोलनेवाली १४
ऐसी तीन देवताओंकी स्त्रियें बलदेवजी के समीपमें प्राप्तहुई तब प्रथम मदसे वि-
ह्वलहुये बलदेवजीको वारुणी वाञ्छित वचन कहनेलगी १५ कि हे बलदेव दैत्यों
की सेनाको जीत और मैं मेरी अतिप्यारी वारुणी स्त्री प्राप्तहुईहू १६ हे विमला-
नन शाश्वतरूप तेरेको वडवाके मुखमें अन्तर्द्धानहुये सुनके पुण्य से क्षीणहुई
मैं पृथ्वी में तेरे अर्थ आई हू १७ और पुष्पचक्र इन्होंसे लिपेहुये केशरों में मैंने
वासकिया पीछे अनेक प्रकारके फूलोंके गुच्छों में मैंने वासकिया १८ पीछे वर्षा
काल में इसपूर्वोक्त कदम्ब में मैंने वासकिया सो तृषितरूप तेरेको ढूढतीहुई मैं
अपने रूपकरके आच्छादित करतीभई १९ सो पूर्ण योग करके जैसे अमृतको
मथने के वक्त जैसी थी वैसीही हू सो हे अनघ मेरे पिता वरुणने तेरे समीप में
भेजी है २० सो जैसे समुद्र में थी तैसेही वडवामुख में तेरे सग भोग करने की
इच्छा करूहू मैंने अपने से वडा तुझे मानाहै २१ हे अनन्त जो तू मेरेको झि-
ड़केगा तब भी मैं तेरे को नहीं त्यागूगी और हे देव तेरे विना लोकोंको भी
सेवनेको मैं वाञ्छित नहीं करती २२ पीछे मदकरके गलित कटिवाली और क-

छक आघूर्णित नेत्रोंवाली और नम्ररूप और अंजलीको बांधनेवाली और जय
पूर्वक योगमे मन्द मुसकान सहित हँसनेकी इच्छा करनेवाली २३ ऐसी कांति
नामवाली नारी बलदेवजी के समीप में प्राप्तहोके कहनेलगी कि हे देव अपने
गुणों से अनुरक्त हुई में चन्द्रमा से भी ज्यादह आपको मानती हू जैसे मदिरा
मानती है वैसे २४ पीछे कमलमें है स्थान जिसका और विष्णु भगवान्के हृ
दयमें वसनेवाली ऐसी श्रीनामसे विख्यात लक्ष्मी २५ प्रकाशितरूप माला
ग्रहणकर और बलदेवकी छातीमें मालाके समान दर्शितहुई बलदेवजीसे क
हनेलगी २६ हे राम हे अभिराम तू वारुणीके सग और कान्ति के सग और मे
सग वास करनेके योग्यहै जैसे चन्द्रमा २७ और यह तेरी मौली समुद्रसे में
छतकर लाईहूं जो पहले हजार शिरोंके मध्यमें सूर्यके समान प्रकाशितथी
और जातरूपमय और हीराकी कणियों से भूषित ऐसे कानोंमें पहननेके योग्य
दिव्य कुण्डल यहहै २६ और हे भावन रेशमी और नीले ऐसे दिव्य वस्त्र ये
और समुद्रके भीतर रहनेवाले रत्नोंका हार यहहै ३० सो हे देव पुरानी इस भूषण
क्रिया को आप ग्रहणकरो ३१ तब तिन गहनों को पहनके शरदऋतुके पूर्ण
मासीके चन्द्रमाकीतरह बलदेव प्रकाशितहुआ और वे तीनों देवस्त्रीभी शोभि
तहुई ३२ पीछे जलसयुक्त बद्दल के तेजके समान तेजवाले श्रीकृष्णके समी
में प्राप्तहो अति शोभित आनन्दको बलदेव प्राप्तहुआ ३३ जैसे राहुके ग्रहणसे
छुटा चन्द्रमा ३४ और तिसीसमयमें संग्रामसे छुटाहुआ और तेजस्वी और दै
त्योंके प्रहारोंसे अंकित और देवताओंकी जयको चाहनेवाला ३५ और दिव्य
माला चन्दन आदि को धारण करनेवाला ऐसा गरुडभी वेगसे आकाशमार्ग
के द्वारा उडताभया ३६ अर्थात् एकसमय समुद्रमें शयन करतेहुये विष्णुके मु
कुटको विरोचनका पुत्र दैत्य हरलेगया ३७ तिसकी प्राप्तिके अर्थ समुद्रके मध्य
वासी दैत्योंके साथ गरुड ने युद्धकिया ३८ तब विष्णुके मुकुटको छुटाके दे
ताओं का आलयरूप आकाशको वेग से चढ़ा ३९ तब पर्वतपै कार्य्य के अर्थ
प्रकाश वेष इन आदिसे रहित और मनुष्यरूप और मुकुटरहित मनुष्य ४० ऐसे
विष्णु को देखके गरुड आकाशही में स्थितहुआ श्रीकृष्णके शिरपै मुकुट को
छोड़ताभया ४१ तब वह मुकुट श्रीकृष्णके शिरपै ऐसे पडा मानो पहनाया ग
याहै ४२ तब श्रीकृष्ण शोभायमान होनेलगा जैसे मेरुपर्वतके शिखरपै सूर्य्य

सूर्य्य ४३ पीछे गरुड़के प्रकाशसे प्राप्तहुये मुकुटको जान प्रसन्नहुये ४४ श्री-
ष्ण वलदेवजीसे वचन कहनेलगे कि देवताओंका प्रयोजन वेग कररहाहै इस
संशय नहीं ४५ क्योंकि इस शैलमें विचरते हुये हम दोनों को संग्रामरचना
स्थितहुई है समुद्रमें शयन करतेहुये मेरे मुकुटको इन्द्रके समान दिव्यरूपसे
युक्त ग्राहके शरीरको प्राप्तहो विरोचनका पुत्र हरलेगयाथा ४६ वह मुकुट अव
रुड़ने मेरे अर्थ प्राप्तकियाहै और प्रकटहै कि जरासंधराजा भी समीपमें प्राप्तहै
ौर पवनके समान वेगवाले रथोंके ध्वजाभी दीखते हैं ४७ और हे आर्य्य जी-
ने की इच्छावाले राजाओंके चन्द्रमाके समान श्वेतछत्रभी प्रकाशित होते हैं
८ यह वड़ा आश्चर्य्य है कि राजाओं के छत्रों की पंक्ति हमारे सम्मुख प्राप्त हैं
से आकाश में हंसों की पंक्ति ४९ और अति आश्चर्य है मलसे रहित प्रकाश
ाले शस्त्रोंकी सूर्य्यकी कांतिमें मिलीहुई कांति दशों दिशाओं को प्रकाशित
रही हैं ५० ये सव शस्त्र मेरे अर्थ राजाओंके हाथोंसे फेंकेहुये युद्धमें नाशहो-
गे ५१ और समयपै हमोंसे युद्ध करनेकी वांछावाला राजा जरासंध प्राप्तहुआ
सो यह युद्धमें प्रथम अतिथिहै ५२ अर्थात् युद्धकरने के योग्यहै इसवास्ते हे
आर्य्य युद्धका आरम्भ करना चाहिये और इसकी सेना देखनी चाहिये ५३ ऐसे
कहके युद्धकी वांछावाला श्रीकृष्ण जरासंधको मारने की इच्छा करता हुआ
सेनाको देखनेलगा ५४ व सव राजाओंको देखताहुआ श्रीकृष्ण अपनी आत्मा
से अपनी आत्माके अर्थ जो पहले स्वर्गमें गुप्त भाषणहुआथा वही कहताभया
५५ अर्थात् राजाओंके मार्ग में स्थितहुये ये सवराजे युद्धमें नाशको प्राप्तहोवेंगे
५६ क्योंकि मृत्युकरके प्रेरित हुये इन राजाओं को मैं जानता हूं व इन्हों के
शरीर भी स्वर्ग में गमन करनेके योग्य प्रकाशित होरहे हैं ५७ व इन राजाओं
की सेना के समूह से पीडितहुई व भारसे परिश्रान्त ऐसी यह पृथ्वी स्वर्ग में
गई थी ५८ सो अल्पकालमेंही वहुतसे ये सव मनुष्य पृथ्वीमण्डल से अलग
होजावेंगे ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांजरासंधाभिगमनेऽष्टनवतितमोऽध्याय ९८॥

निन्नानवेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तव सव राजाओं का राजा जरासन्ध वलवाले वहुत

से राजाओं को संगलेके प्राप्तहुआ १ अर्थात् अति बलवाले घोड़ों से संयु
साग्रामिक रथ २ और महाघण्टोंवाले हाथी व वायु के समान वेगवाले घोड़े
और तलवार ढाल आदि से सयुक्त प्यादे ऐसे चलतेहुये बद्दलों के समान ३
प्रकार की सेना से सयुक्त जरासन्ध राजा प्राप्तहुआ ४ पीछे नेमिके शब्दवा
रथों करके और मदवाले हाथियों करके और हिहनाते हुये घोड़ों करके और
बोलतेहुये प्यादों करके ५ सब दिशा व पर्व्वतकी गुफा में रहनेवाले जीवों के
शब्द करानेवाला और समुद्र के समान आकारवाला व बहुतसी सेनाओं से
सयुक्त ऐसा जरासन्ध फिर दीखताभया ६ और तिन राजाओंकी गर्वित योधों
समूहसे आकुल व अति प्रकारके शब्दों के बोलने से सयुक्त ऐसी सेना मेघों
की सेनाकी तरह प्रकाशित होनेलगी ७ व पवनके समान वेगवाले रथोंकरके
और बद्दलों के समान उपमावाले हाथियों करके व सफेद आकाशके समान
कान्तिवाले घोड़ों करके व कवच आदिसे दंशित प्यादों करके ८ ऐसे प्यादे
हाथी घोड़े रथ इन्होंसे व्याप्त सब सेना शोभित होनेलगी जैसे वर्षाऋतुमें स
मुद्रगत बद्दलोंके पटल ६ पीछे अतिबलवाले जरासन्ध आदि सब राजे गोमन्त
पर्व्वतको घेरके पर्व्वतमें प्रवेश करने के अर्थ उद्योग करनेलगे १० तब निवास
करनेके वक्त सेनाका रूप पौर्णमासी के दिन बढ़ेहुये समुद्रके समान होताभया
११ पीछे एकरात्रि व्यतीत होजानेपै युद्धकी वाञ्छावाले सब इकट्ठे होके पर्व्वतपै
चढ़नेके अर्थ सलाह करनेलगे १२ तब तिन राजाओं का उग्ररूप शब्द सुनने
लगा जैसे प्रलयकालमें समुद्रोंका १३ तब दुपट्टा पगड़ी आदिको धारण करने
वाले और बेतोंको हाथोंमें धारण करनेवाले और अवस्थामें वृद्ध ऐसे राजमन्त्री
राजाकी आज्ञा से शब्द मतकरो ऐसे कहतेहुये विचरनेलगे १४ तब सब सेना
शब्द करनेसे रहित होतीभई अर्थात् चुप होतीभई १५ तब बृहस्पतिकी तरह ज
रासन्ध राजा वाक्य कहनेलगा १६ कि राजाओंकी सेना जल्द कार्य्य को करो
अर्थात् यह पर्व्वत चारोंतर्फ सेनाके समूहसे घेराजावे १७ और अश्मयन्त्रयुक्त
कियेजावें और फेंकनेके योग्य मुद्गर प्रास भाले ऊपरको फेंकेजावें १८ व ऊपर
को फेंकने के योग्य दृढ़ और हलके अनेक प्रकारके शस्त्र शिल्पियों के हाथों
से बनायेजावें १६ व मदवाले युद्ध करतेहुये शूरवीरोंका आपसमें पातन होवे
ऐसी विधि तत्काल करनी चाहिये २० व टाकी कुदाल आदि शस्त्रोंसे यह गो

मन्त पर्वत दारुण कियाजावे और युद्ध मार्गको जाननेवाले सव राजे पर्व्वतके समीप में प्राप्त होजावो २१ व अवहीं मेरी सेनासे पर्व्वत का रोध कियाजावेगा जबतक वसुदेवके इन दोनों पुत्रोंको पर्वतसे नीचेगेरू तवतक २२ व इस पर्वत के वीचमें वसतेहुये पक्षियों कोभी मत निकसने दो और वाणोंके समूहसे आकाशकोभी आच्छादित करो २३ व मेरी आज्ञासे शिक्षितकिये सव राजे अपने अपने अवकाश देखके पर्वतपै जल्दचढो २४ व मद्र कलिङ्ग का राजा चेकितान वाह्लिक काश्मीरका राजा गोनर्द करूपदेशका राजा २५ किंपुरुषोंका राजा द्रुम और पर्वतके राजे मालवदेशके राजे ये सव पर्वतके परलेपार्श्वको आरोहणकरो २६ व पौरव वेणुदारी वैदर्भ सोमक भोजदेशका मालिक रुक्मी सूर्य्याक्ष मालव २७ पाञ्चालदेशका पति द्रुपद राजा विन्द अनुविन्द वीर्य्यवाला दन्तवक्र २८ छागली पुरुमित्र विराट राजा कौशाम्ब्य मालव शतधन्वा विदूरथ २९ भूरिश्रवा त्रिगर्त्त वाण पञ्चनद ये सव राजे पर्वतके उत्तर देशका आरोहणकरो ३० और उलूक कैतवेय अंशुमान्‌का पुत्र वीर ३१ एकलव्य दृढाक्ष क्षत्रधर्म्मा जयद्रथ उत्तमौजा शाल्व कैरलेय कौशिव ३२ वैदिश वामदेव सुकेतु ये राजे इस पर्वतके पूर्वकी तर्फसे आरोहणकर काटो ३३ पर्वतको काट धावाकरो ३४ व मैं जरासंध दरद शिशुपाल ये तीनों मिलके पर्वतको दक्षिणकी तर्फसे काट आरोहणकरेंगे ऐसे चारोंतर्फ सेनासे वेष्टित यह पर्व्वत अति पीडाको प्राप्तहो ३५ व गदावाले गदाओं से और परिघोंवाले परिघों से ३६ व शेष रहे नानाप्रकारके शस्त्रोंसे इस पर्वतको काटडारो ऐसे सवराजे मिलके इसपर्वतको पृथ्वीके समान एकसा करदो ३७ तव जरासंधके वचनको सुन सवराजे पर्वतको वेष्टित करतेभये जैसे पृथ्वीको समुद्र पीछे शिशुपाल राजा कहनेलगा ३८ इस गोमन्तपर्वत विषे युद्धकरने से हमारे को क्याहोगा व इसपै आरोहण करना वहुत मुश्किल है ३९ इस वास्ते वहुतसे काष्ठ तृणआदिसे चारोंतर्फ से लपेट इस पर्वतको अग्निसे जलादो अन्यकर्म से क्याहोगा ४० व युद्धमें वाणोंकेद्वारा लड़नेवाले ये सव क्षत्रिय पर्वत पै चढने को ठीक नहीं मानते ४१ व हे प्रिय काटने आदि कर्म्म से यह पर्व्वत देवताओं के वशमें भी नहीं आसक्ता ४२ इसलिये अग्निके जलाने से पर्व्वत पड़सक्ताहै और हम वहुतसे हैं यह उत्तमनीति नहीं है और अति वलवाले ४३ व देवताओं के समान कर्म्म करनेवाले और जिन्होंके वलका प्रमाण नहीं ऐसे-

और दुष्कर कर्म्म करनेवाले ऐसे ये दोनों बलदेव और श्रीकृष्ण
जीतने मुश्किलहैं ४४ इसवास्ते सूखे काठ और तृण आदिसे इस पर्वतको
ष्टितकर ४५ अग्निसे दोनोंको दग्ध करेंगे और जो दग्ध होतेहुये पर्वतसे नि-
कस हमारे समीपमें प्राप्तहोंगे ४६ तो हम सब मिलके उसी वक्त मार देवेंगे
यह वाक्य सेनासहित सब राजाओं के मनमें रुचताभया ४७ अर्थात् मा
हनेलगे शिशुपालका कहना ठीक है तब काष्ठ तृण वास सूखी शाखावाले
४८ इन्होंसे पर्वतको वेष्टितकर पीछे सब राजे चारोंतर्फ से पर्वतके आग
भये ४९ तब यथाक्रमसे वायुकी सहायतासे वह अग्नि पर्वतके चारोंतर्फ
को प्रविष्ट होनेलगा ५० अर्थात् धूमा और लटाके प्रकाशकरके आकाशको
पन करताहुआ और पवनकी सहायवाला और काष्ठके संचयरूप
ऐसा अग्नि गोमत पर्वतको जलानेलगा तब दग्ध होताहुआ पर्वत अने
कारकी शिलाओंको छोडनेलगा ५२ अर्थात् अग्निके लगने से पकनेलगी जो
धातु उन्होंकरके अनेक प्रकारके ५३ शब्द करनेलगा और अग्निसे दग्धहोता
हुआ पर्वत अनेकप्रकार की धातुओं को छोडनेलगा ५४ और जिस समय
पर्वतसे बद्दलके समान उल्काओंकी वृष्टि होनेलगी ५५ तब वह पर्वत प्रलय
अग्निके समान हतहुआ भस्मको प्राप्त होनेलगा और तिस पर्वतमें
हुये और विह्वलरूप ५६ व मोटे मस्तकोंवाले और क्रोध से भरे नेत्रोंवाले
सर्प निकसनेलगे अर्थात् आकाश को उड़के फिर नीचे को मुखहोके पृथ्वी में
पडनेलगे ५७ व सिंह व शार्दूल अग्निके भयसे उस पर्व्वत से निकसने लगे
और दाहसे उपजे जलको वृक्ष छोड़नेलगे और तिस समय ऊपरको फैलने
ली पवन चलनेलगी और धूमाकी छाया बद्दल के समान आकाश में फैलने
लगी ५८ और इन्द्रके वज्रसे दारित हुये के समान और चलायमान रूप ५९
ऐसा गोमंत पर्वत अनेक प्रकारके पत्थरोंको छोडताभया ऐसे इस गोमत पर्वत
को ६० वे सब क्षत्रिय जलाके अग्निसे पीडितहुये आधकोश दूर हटनेभये और
पर्वत जलनेलगा ६१ व वृक्ष पड़नेलगे व धूमासे कुछभी नहीं दीखनेलगा और
पर्वतकी जड़ शिथिल होनेलगी ६२ तब बलदेवजी श्रीकृष्णके अर्थ रोषसहित
वचन कहने लगे ६३ कि हे प्रिय मानुज शिखर वृक्ष आदि सहित यह पर्वत
हमारे वैरकरके वैरियोंने दग्ध करदियाहै ६४ सो हेकृष्ण अग्निकी उष्णता और

धूमासे पीडितहुये पक्षी उड़ते फिरते हैं ६५ इन्होंको तू देख और जो हमारे अर्थ यह गोमतपर्वत दग्ध कियागया यह हमारे कुलमें दाग लगाहै ६६ तिस दाग को दूर करनेके अर्थ इन क्षत्रियों को इन्हीं हाथोंसे मारेंगे ६७ और हे प्रिय इस पर्वतको जलाके कवचोंको पहनेहुये और रथमें स्थित और युद्धकी इच्छाकरने वाले ६८ ऐसे क्षत्रिय दीखते हैं ऐसे कहके बनकी मालाको धारण करनेवाले और जवान अवस्थामें स्थित ६६ व कादंबरी मदिरासे कछुक विह्वल और नील वस्त्रोंको पहनेहुये और श्वेतकांतिवाले और शरदऋतुकी पूर्णमासीके चन्द्रमा की समान कांतिवाले और वनकी मालासे अंकित उदरवाले ७० व कुंडल को धारण करनेवाले और सुंदर मुकुटको धारण करनेवाले और नीचेको मुख करने वाले ऐसे बलदेवजी गोमत पर्वतके शृंगसे तिन राजाओंके मध्य में कूदतेभये ७१ जब बलदेवजी कूद लिये तब काले बद्दलके समान उपमावाले ७२ व अमित पराक्रमवाले ऐसे श्रीकृष्ण पैरों से पर्व्वत को पीडनलगे ७३ तब पीडित किया पर्वत चारोंतर्फसे जलको फिरानेलगा तिस पानीसे तत्काल अग्नि शांत हुआ ७४ जैसे कल्पके अंतमें पानी की धारासे सूर्य्य पीछे सिंहके समान शब्द करनेवाले और पीतवस्त्रों को पहननेवाले ७५ व मेघके समान आकृतिवाले व मुकुट को मस्तक पै धारण करनेवाले और सौम्यरूप मुखवाले और कमल के समान नेत्रोंवाले ७६ व लक्ष्मी के चिह्न से युक्त छातीवाले और इन्द्रके समान प्रकाशवाले ऐसे श्रीकृष्ण भी पर्व्वतके शृंगसे कूदतेभये ७७ तब बलदेव और श्रीकृष्णके चरणों से पीडितहुआ पर्व्वत तीव्रअग्निको बुझाने के अर्थ पानी की धारा छोडनेलगा ७८ तिन पानियों की धाराओं को देखके राजे भयभीत होनेलगे ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांनवनवतितमोऽध्यायः ९९ ॥

सौका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे वसुदेव के दोनों पुत्र पर्वतसे कूदके क्षोभितहुई सेनाको देख १ भुजाओंके प्रहारोंसे सेना में विचरनेलगे जैसे दो मगरमच्छ २ जब युद्ध में दोनों का प्रवेशहुआ तब पुरातन दिव्य शस्त्रों को ग्रहणकरने की इच्छाहुई ३ तब आकाश से शस्त्र वर्षनेलगे ४ अर्थात् संवर्त्तकनाम हल और

सौनन्द नाम मूसल और सुदर्शननामचक्र और कौमोदकी नाम गदा ये चारों दिव्य शस्त्र आकाशसे वर्षे ५ तब हल और मूसल ये दोनों वलदेवजीने ग्रहण करे और सुदर्शनचक्र और कौमोदकी गदा ६ ये दोनों श्रीकृष्ण महाराज ने ग्रहणकरे तब शेषनाग के समान कोपितरूप हलको वलदेवजी उठाके युद्ध में विचरनेलगे ७ और रथोंके समूहको हलमेखेंच और हाथी घोडे इन्होंको हलसे खेंच मूसलकी ताडना देनेलगे ८ तब वलदेवजी के सकाशसे पीड़ितहुये क्षत्रिय रथोंसे अलगहोके जरासन्धके समीपमें प्राप्तहुये ९ तब क्षत्रधर्म्म में स्थित हुआ जरासन्ध उनकायररूप क्षत्रियोंसे कहनेलगा कि तुम्हारी इस क्षत्रवृत्तिको धिक्कारहै १० क्योंकि युद्धसे भागनेवाले को और रथ टूटनेके वाद भागनेवाले को भ्रूणहत्या लगती है ऐसे वुद्धिमान् कहते हैं ११ और प्यादेरूप एक गोपके अगाड़ी तुम ऐसे वलवान् कैसे भयभीत हुये सो जल्द उलटेजावो १२ अथवा रथमें स्थितहो प्रेक्षकवनो १३ जवतक इन दोनों गोपों को मैं धर्मराजके लोक में प्राप्तकरूं तवतक जरासंधके वचनसे प्रेरितकिये वे क्षत्रियराजे १४ प्रसन्नहोके वाणों को छोडतेहुये युद्ध में प्राप्तहुये और कांचनों के मुकुटवाले घोड़ों करके और चन्द्रमाके समान कांतिवाले रथोंकरके १५ और मेघोंके समान कांतिवाले और पीलवान आदिसे प्रेरित ऐसे हाथियों करके १६ और छत्रों के धारण से और शस्त्रधनुष तूणीर वाण इन्होंको धारण करनेसे और सुन्दर चँवरोंके डुलनेसे १७ वे सब राजे रथ में बैठेहुये जब युद्ध में प्राप्तहुये तब शोभित होनेलगे १८ और शस्त्रों को धारण करनेवाले और युद्धको चाहनेवाले ऐसे वलदेव श्रीकृष्णभी सम्मुख स्थितहुये १९ पीछे इन दोनोंका तिन राजाओंके संग युद्धहोनेलगा २० पीछे हजारहों वाणों को छोडनेवाले और गदा क्षेपणीय मुद्गर २१ इन्होंसे शत्रुओंको पीडा देनेवाले ऐसे दोनों कम्पायमान न हुये पीछे बद्दलके समान आकारवाला और शङ्ख चक्र गदा इन्होंको धारण करनेवाला २२ और तेजस्वी ऐसा श्रीकृष्ण बढनेलगा जैसे पवनसेयुक्त अग्नि तब सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित चक्र करके २३ युद्ध में मनुष्य हाथी घोड़े महारथी इन्हों को काटनेलगा तब गदाके निपातसे हतहुये और हलके खेंचने से नष्टप्राणोंवाले २४ ऐसे राजे युद्धमें स्थित होनेको समर्थ नहींरहे और चक्रकी धारासे कटेहुये और विचित्र प्रकारसे टूटेहुये २५ ऐसे रथोंके समूह युद्धमें चलनेको समर्थ नहीं

हुये और वलदेवजी के मूसलसे खण्डित और टूटेहुये दांतोंवाले और ६० वर्ष की अवस्थासे युक्त २६ ऐसे हाथी शब्द करनेलगे जैसे वर्षा के अन्त में बद्दल और चक्ररूप अग्निकी लटासे हतहुये सादी और प्यादे २७ प्राणोंको त्यागते हुये पृथ्वी में पडतेहुये जैसे वज्रसेहत वृक्ष और चक्र हल इन्होंसे दग्धहुई और दलीहुई २८ सब सेना प्रलयके समान हतहुईकीतरह पडतीभई और दिव्यरूप वाले वैष्णवशस्त्रोंके देखनेको २९ सनराजे वलको त्यागतेभये और कितनेक रथ टूटगये कितनेक रथोंमें राजे मरगये ३० कितनेक रथोंका एकचक्र टूटगया और उस घोर युद्धमें अनेक प्रकारके दारुण राक्षस पडनेलगे ३१ और उत्पात करनेलगे ऐसे राजाओंके पडनेसे व्याप्त और लोहूसेगीली ऐसी युद्धभूमि होतीभई ३२ अर्थात् मनुष्य प्यादे घोडे हाथी इन्होंके वाल हाड मज्जा आत लोहू इन्होंसे पृथ्वी आच्छादित होतीभई ३३ और बुरीतरहके शब्दों को पक्षी करने लगे ३४ और कक गीध इन आदि पक्षी भी पुकारनेलगे ३५ तव शत्रुओं को मारनेके वास्ते श्रीकृष्ण प्रलयके सूर्य्यके समान कांतिवाला चक्र और गदाको धारणकर युद्धमें विचरनेलगे ३६ पीछे शस्त्रोंको ग्रहणकर राजाओंसे श्रीकृष्ण कहनेलगे ३७ हाथी घोडा रथ इन्हों से युक्त तुम शूरवीर क्या युद्ध नहीं करते और किस वास्ते गमन करते हो और वलदेव सहित मैं एक प्यादा तुम्हारे सम्मुख स्थितहूं और जो तुम्हारी रक्षा करनेवाला जरासन्ध अव मेरे सामने क्यों नहीं आता ३८ ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुन अतिवीर्यवाला दरदनाम राजा हलवाले वलदेवजी के ३९ सम्मुख जाके कहनेलगा कि हे वलदेव तू मेरे संग युद्धकर ४० तव वलदेवजी और दरद राजा का आपस में युद्ध होनेलगा जैसे अतिवलवाले दो हाथियोंका ४१ पीछे वलदेवजीने अपने वलकरके एक मूसल दरद राजाके कंधेपै मारा ४२ तव उसीवक्त दरद राजा पृथ्वी में पडताभया जैसे कटाहुआ आधापर्व्वत ४३ ऐसे जव वलदेवजी के हाथ दरदराजा मरगया तव जरासंध का वलदेवजीके संग समागम हुआ ४४ जैसे वृत्रासुर का इन्द्रके संग तव दोनों दो गदाओंको ग्रहणकर आपस में सम्मुख दौडनेलगे ४५ अर्थात् पृथ्वीको कम्पावतेहुये और गदाओंको धारण करतेहुये ऐसे दो योद्धा दीखते भये जैसे शिखरोंसहित दोपर्व्वत ४६ तव देखनेवाले सव राजाओं के सव युद्ध शान्तहुये और गदायुद्ध में विश्रुत ४७ और अतिवलवाले और गदा विद्याके

उत्तम आचार्य ऐसे दोनों मदवाले दो हाथियों के समान आपसमें दौड़नेलगे ४८ तब देव गधर्व सिद्ध महर्षि यक्ष अप्सरा ये हजारहों प्राप्तहोनेलगे ४९ अर्थात् देव यक्ष गधर्व महर्षि इन्होंसे अलंकृत आकाश अधिक शोभित होनेलगा जैसे तारागणोंसे ५० पीछे जरासध बायें मण्डल से और बलदेव दाहिने मण्डल से चलतेहुये ५१ और हाथियोंके दाँतोंके भिड़नेसे जैसा शब्द होताहै तैसे शब्दों से दश दिशाओं को पूरित करनेलगे ५२ तब बलदेवजी की गदाके पातका शब्द वज्रके समान होनेलगा और जरासंधकी गदाके पातका शब्द फटतेहुये पर्व्वतके समान होनेलगा ५३ और जरासध के हाथसे छुटीहुई गदा बलदेवजी को नहीं कपावतीभई जैसे पवन विंध्याचलको ५४ और बलदेवजी की गदाके वेगको जरासन्ध बहुतसे धैर्य्यसे और शिक्षासे सहताभया ५५ तब ऊंचे स्वरसे मयुक्त आकाशवाणी हुई हे राम तुमको यह जरासन्ध मारना नहीं चाहिये अर्थात् इसपर क्रोध मतकरो ५६ इस जरासंधको मृत्यु करनेवाला मैंने रचदिया है इसवास्ते तू शान्तिको प्राप्तहो थोड़ेसेही कालमें यह जरासध प्राणोंको त्यागेगा ५७ इस वचनको जरासध सुनके अप्रसन्न होगया और जरासध के अर्थ बलदेवजी प्रहार नहीं करतेभये ५८ ऐसे पराजितरूप जरासन्ध राजाहोके भागने लगा ५९ तब अन्यभी सब राजे अपनी अपनी सेनाओंको लेके भयभीतहोके भागनेलगे ६० जैसे सिंहको सूंघ के मृग ऐसे भग्नगर्व वाले राजाओं से त्यक्त ६१ और बहुतसे मासको खानेवाले पक्षियों से व्याप्त और घोर ऐसी युद्धभूमि होतीभई जब सब राजे चलेगये तब चेदीका राजा ६२ दमघोष कारूषकी सेना और चदेरीकी सेनाको लेकर यादवोंके सग सम्बन्ध का स्मरणकर ६३ कृष्णके पासआया और कहनेलगा कि हे यादवनन्दन मैं तेरे पिताकी बहिनका पति हूं अर्थात् तेरा फूफाहूं ६४ सो अपनी सेनासे सयुक्त तेरे पास मैं प्राप्तहुआ हूंही मेरा परमप्यारा है और मैंने अल्पबुद्धिवाले जरासन्धसे भी कहदिया ६५ कि हे दुर्बुद्धे कृष्णके सग युद्धसे विरामकर जब मेरावचन उसने नहीं माना तब मैंने उसको त्याग दियाहै ६६ और तेरे करके भग्नकिया जरासध बहुतसे राजाओं के सग भागा जाताहै परंतु फिर भी तेरे अर्थ अपराध दिखावेगा ६७ और क्रव्यादगणोंसे सकीर्ण और मनुष्यरहित प्राणियों से सेवित और मरेहुये मनुष्यों से व्याप्त ऐसी इस युद्धमही को त्यागो ६८ और हम सेनाओं को लेके हे वीर

करवीर पुरको चलेंगे ६९ तहा वसुदेव का पुत्र शृगाल नाम से विख्यात ऐसा राजा बसता है तिसको देखेंगे ७० और उत्तम शस्त्रोंसे व्याप्त और जल्द चल-नेवाले घोडों से जोतेहुये ऐसे ये दोरथ तुम्हारे वास्ते मैंने पहलेही तय्यार कर-दिये हैं ७१ सो तेरा कल्याणहो बलदेवजी को सग लेके जल्द रथमें स्थितकरो ७२ ताके पीछे पूर्व्वोक्त राजाको देखनेके अर्थ वेगसेचलेंगे ७३ तव वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे चदेरीका राजा और पिताकी भग्नीके पतिकेकहे वाक्यको सुन प्रसन्नहुआ और जगत्का गुरु ऐसा श्रीकृष्ण वाक्य कहने लगा ७४ आश्चर्य है इसनक्रमें बाधव सम्बन्धी स्नेह करके वचनरूप पानी से हम सींचे ७५ और देशकालमे सयुक्त और हित और मधुर ऐसे वाक्यको ससारमें कहनेवाले दुर्ल-भहैं ७६ हे चेदिराज तेरे दर्शनसे हम सनाथभये और जिन्होंका तू ऐसा बधुहै तो हमारेको कुछ भी अप्राप्य नहीं है ७७ और जरासन्ध आदि सब राजाओं की मृत्युकरने को हे राजन् तेरी सहायतासे हम दोनों समर्थ हैं ७८ और सब राजाओंमें यदुकुलवालों का तूही प्रथम बन्धुहै अर्थात् प्यारा है और हे चेदिस-त्तम अबमे लगायत बहुतसे युद्धों को तू देखेगा ७९ और युद्ध की वृत्तिवाले राजे चक्र मौसल नामसे विख्यात इस युद्धको कहेंगे ८० और गोमत पर्व्वतके समीपहुये युद्धमें इन राजाओं के पराजय को श्रवण करनेसे व धारण करनेसे सब मनुष्य स्वर्गलोकमें वासकरेंगे ८१ और हे महाराज तेरे कहे मार्गके अनु-सार कल्याणके अर्थ करवीरपुरको गमन करते हैं ८२ तब पवनके वेगकेसमान घोडोंसे जुतेहुये रथोंमें बैठके चलतेभये जैसे मूर्त्तिवाले तीन ८३ अग्नीसो तीन राति मार्गमें वासकर करवीरपुरमें प्राप्तहुये ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांकरवीरपुराभिगमनेशततमोऽध्याय १०० ॥

एकसैएकका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तिन तीनोंको आतेहुयेजान और पुरकी प्रागल्भता को मान युद्धमेंदुर्मद और इन्द्रके समान पराक्रमवाला ऐसा शृगालराजा पुरसे निकसा १ पीछे सूर्य्यके समान वर्णवाला और प्रकाशित और युद्ध में चलने वाला और शस्त्रोंसे पूरित और नेमिके द्वारा शब्द करनेवाला २ और मदरा-चलके तुल्य और नानाप्रकारके गहनोंसे भूषित और श्रमरहित बाण और तू-

णोंसे पूरित और समुद्र के समान शब्द करनेवाला ३ और जल्द चलनेवाले हरित घोड़ोंसे संयुक्त और शिखरपै भी चलनेवाला और गरुड़के समान वेग वाला और दृढ पहिया ४ और धुरआदिसे शोभित और आकाशचारी इन्द्रके रथके समान ५ और वैरीके रथको नाशनेवाला और सूर्यकिरणों समान रश्मियोंसे खैंचाहुआ ६ ऐसे उत्तम रथ में शृगाल राजा स्थितहो ७ श्रीकृष्ण के सम्मुख प्राप्तहुआ जैसे अग्नि को पतंग पीछे धनुष तीक्ष्णबाण कवच सोना की माला सफेद पगड़ी इन्हों को धारण करनेवाला और अग्नि के समान नेत्रों वाला ८ और बारम्बार धनुषकी टंकार करनेवाला और अग्निकीलताके समान क्रोधकी वायुको मुखसे निकालताहुआ ९ और आभूषणों की पंक्तियों से मेरु पर्वतके समान प्रकाशित ऐसा शृगालराजा रथमें पर्वतके समान स्थितहो कृष्णको दीखताभया १० और रथकी नेमीके शब्द करके नवतीहुई पृथ्वी पहले कीतरह चलायमान होनेलगी ११ परन्तु मूर्तिमान् पर्वतके समान और लोकपालों के समान कीर्त्तिवाला ऐसे शृगाल राजा के आगमन को देख श्रीकृष्ण नहीं पीड़ित होतेभये १२ तब सावधानहुआ और जल्द चलनेवाले रथमें स्थितहुआ शृगाल राजा युद्ध करनेके अर्थ इच्छा करनेलगा १३ तब श्रीकृष्ण भी सन्नद्ध हँसके युद्ध के अर्थ स्थित हुये १४ तब दोनों का आपस में घोर युद्ध होने लगा १५ जैसे मदवाले दो हाथियों का तब युद्ध में स्थित श्रीकृष्ण से अतितेजवाला शृगाल कहनेलगा हे कृष्ण गोमन्त पर्वतके समीपमें जो युद्ध हुआ रहा १६ नारक रहित और मूर्ख ऐसे राजाओं का पराजय मैंने जान लिया १७ अब तू टहरमें पार्थिव पदमें स्थितहुआ १८ तेरे को युद्धफल दिखाऊंगा और मेरा रोकाहुआ तू कहां जावेगा और तेरेसे मैं अपनी सेनाके संग ले युद्ध नहीं कर सक्ता १९ अर्थात् एकही तू और एकही मैं दोनों आपस में युद्ध करेंगे २० जो मेरी मृत्यु होजावेगी तो तू एक समरमें वासुदेव नामसे विख्यात रहेगा २१ और जो तेरी मृत्युहोजावेगी तो मैं एक समरमें वासुदेव नामसे विख्यात रहूंगा २२ ऐसे शृगाल के वचन को सुन क्षमावाले २३ श्रीकृष्ण कहनेलगे कि तू इच्छासे प्रथम प्रहारकर ऐसे कहके श्रीकृष्ण चक्र को धारण करतेभये पीछे क्रोधसे मूर्च्छित शृगाल राजा श्रीकृष्णके अर्थ घोररूप बाणोंके समूह और मूसल आदि अनेक प्रकारके शस्त्र इन्होंको छोड़ने लगा २४। २५

परन्तु श्रीकृष्ण पर्व्वत के समान स्थितही होरहे पीछे अस्त्र प्रहारसे कछुक हत हुआ और कछुक क्रोधको प्राप्तहुआ २६ ऐसा श्रीकृष्ण चक्र को उठा शृगाल की छाती में मारता भया २७ तव वह चक्र रथमें स्थित और युद्ध दुर्म्मद और अति गर्ववाला और महावली और युद्ध करनेकी इच्छावाले ऐसे शृगालको मारके २८ फिर श्रीकृष्णके हाथमें प्राप्तहुआ ऐसे चक्रकी चोटसे फटीहुई छाती वाला २६ और लोहूको शरीर से भिरानेवाला ऐसा शृगाल प्राणों को त्याग पृथ्वीमें पडताभया तव वज्रपातसे पतितहुये पर्व्वतकी तरह ३० तिस राजाको पृथ्वीमें पडेहुये देख अप्रसन्न मनवाली सव सेना भागनेलगी अर्थात् तिस दुःखमें पीडितहुये नगरमें प्रवेशकर ३१ ऊंचे स्वरसे रोनेलगे और कितनेक अपने सुखोंको स्मरण करतेहुये और शोच करतेहुये पृथ्वी में पडे राजाको नहीं त्यागतेभये ३२ तव मेघके शब्द के समान शब्द करके सव मनुष्यों के अर्थ अभय देतेभये ३३ अर्थात् प्रकाशमान अंगुलियों से और चक्रसे संयुक्त हाथ करके डरोमत भय मतमानो ऐसे तिन सवोंके प्रति कहतेभये ३४ कि इसपापी के दोषकरके अन्य पुरुषोंको युद्धमें मैं नहीं मारूंगा ३५ क्योंकि शूरवीर का यह धर्म्म नहीं है तव आंशुओं से पूर्ण मुखवाले और दीन और अत्यन्त रोने वाले ३६ और भ्रष्ट मनवाले ऐसे प्रजा सहित राजमन्त्री चक्रसे कटीहुई छाती वाले राजाको पृथ्वीमें पडेहुये देख ३७ विलाप करतेभये ३८ तव नेत्रोंसे अश्रुपात वहानेवाली और शोकके वशमें प्राप्त और पुत्रोंवाली और रोवनेसे विगडे हुये ३६ मुखवाली ऐसी वहुतसी रानियें तिस राजाको पृथ्वी में पडे देख ४० अपने हाथके नखोंसे अपनी चूंचियों को खोरखोर के अति पीडितहुई विलाप करनेलगीं अर्थात् छाती चूंची शिरके अंग इन्हों को अत्यन्त पीटती हुई ४१ ऊंचे स्वरसे रोनेलगीं पीछे दुःखसे पीडित और गीले नेत्रोंवाली ४२ और ऊपर को हाथ करनेवाली ऐसी सव रानियें मरेहुये राजाकी छाती पै पड़नेलगीं जैसे जडसे रहित लता ४३ अर्थात् वेल और तिन रानियों के आंशुओं के पानी से कमलोंकी तरह नेत्र पूरित होतेभये ४४ पीछे हृदय में हाथों से पीटतीहुई सव रानिया रोवतेहुये ४५ और शक्रदेवनामसे विख्यात ऐसेपुत्रको पिताके समीपमें प्राप्तकर दूने प्रकार से रोनेलगीं ४६ और कहनेलगीं हे वीर यह तेरा वालक पुत्र तेरेसे रहित कैसे पिताके राजसिंहासन पै वैठेगा ४७ और सुखोंसे अतृप्तहुई हम

सब निरर्था क्या करें ४८ तब पद्मावती नामवाली रानी ४६ पुत्रका हाथ पकड़ श्रीकृष्ण के समीप में प्राप्तहुई और कहनेलगी हे वीर युद्धयुक्त कर्म करके जो तैने यह राजा मार दिया है ५० तिसका यह पुत्र तेरी शरण प्राप्तहुआ और जो हमारा भर्त्ता राजा तुम्हारे को नमस्कार करता व तुम्हारी शिक्षा मानता तो ५१ एक प्रहारसे क्यों मारा जाता और जो यह मूढ़ राजा तेरे संग बान्धव विरोध करता ५२ तो क्यों इस पृथ्वी को कृपण की तरह सेवता परन्तु अब मृत्युको प्राप्तहुये अपने इस भ्राताकी ५३ यह सन्तान अपने पुत्रकी तरह रक्षित करनी चाहिये अर्थात् इस राजाके पुत्रको अपने पुत्रकी तरह समझ ५४ ऐसे तिस रानी के वचन को सुनके ५५ कोमलता पूर्वक वचनको श्रीकृष्ण कहनेलगे हे राजपत्नि इस दुरात्मारूप राजा के संगही मेरा क्रोधगया ५६ और हम अपनी प्रकृति में स्थितहैं और हे देवि तेरे सुन्दर वचनों से शेषरूप भी क्रोध गेरागया ५७ जो यह शृगाल राजा का पुत्रहै सो मेरा पुत्र है इसमें संशय नहीं सो अभय और अभिषेक इसीनिक्त इसके अर्थ में दूंगा सो प्रजा के लोग पुरोहित मन्त्री ये सब बुलाये जाने चाहिये तब अभिषेक के अर्थ जहां वासुदेव और श्रीकृष्ण थे वहां सब प्रजा और पुरोहित और मन्त्रीजन प्राप्तहुये ५८। ५६। ६० तब राज्य सिंहासनपे तिस राजाके पुत्रको स्थितकर दिव्यरूप अभिषेकसे श्रीकृष्ण युक्त करते भये ६१ ऐसे करवीरपुरमें शृगालके पुत्रको राजाबना ६२। ६३ उसीदिन पूर्वोक्त शृगालके रथमें स्थितहो मथुराकी तरफ गमन करतेगये जैसे इन्द्र स्वर्गको। ६४ पीछे धर्मात्मारूप राजपुत्र और तिस की माता और सब प्रकार की प्रजा ६५ और राजमंत्री ये सब सलाह करके मरेहुये राजाको पीनस अर्थात् पालकी में स्थितकर पश्चिम के सम्मुखही चलेगये ६६ तहां जाके मृत्यु विधान करके सब क्रिया करनेलगे ६७ अर्थात् राजाका उद्देशकर हजारहों प्रकार के श्राद्धोंसे युक्त कर पीछे नाम गोत्र आदिके द्वारा जलदान करतेभये ६८ ऐसे उदक कर्मकरके पिताके मरने बाद शोकसे संविग्नमनवाला शक्रदेव राजा करवीरपुर में प्रवेश करताभया ६९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिभाषायांशृगालवधोनामशततमोऽध्यायः १०१॥

एकसौदोका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे थोडेही कालमें दोनों यादव पांचरात्रितक दमघोष राजाके संग वासकर पीछे एकरात्रि मार्गमें ठहर १ अति आनन्दसे युक्त दोनों मथुरानगरीमें प्राप्तभये २ जब इन दोनों के आगमनकी खबरभई तब सेना से सहित उग्रसेनराजा ३ सब प्रजा सबमन्त्री बालक और वृद्धों से सहित सब मथुरावासी सम्मुखगये ४ और अनेक प्रकारके बाजे बजनेलगे और बलदेव और श्रीकृष्णकी स्तुति होनेलगी ५ और मथुरापुरी की गली गली में ध्वजा और फूलों की मालासे शोभाहोनेलगी ६ और राजमार्गों में प्रसन्नहुये सब मनुष्य यादव वंशकी उत्तम कथाको गानेलगे ७ और न कोई दीन पुरुषरहा और न कोई मलीनरहा और न कोई दुःखितरहा ८ और प्रसन्नहुये सब मनुष्य आपस में सुन्दर वचनोंको बोलनेलगे ९ और गाय घोडे हाथी नर नारी ये सब मनमें फूलनेलगे और धूलीसे रहित पवन दशोंदिशाओं में चलनेलगे और सब मन्दिरोंमें देवताओंकी प्रतिमा प्रसन्न होनेलगीं १० और जितने कृतयुगमें चिह्न हुआ करते वे सब तिससमयमें होनेलगे ११ पीछे पवित्र और मंगलरूप समय में रथमें स्थितहुये बलदेव और श्रीकृष्ण मथुरापुरी में प्रवेश करनेलगे १२ तब पीछे पीछे सब यादवगण चलनेलगे जैसे इन्द्रके देवते १३ तब पिता वसुदेवके स्थानमें दोनों प्रवेश करतेभये जैसे चन्द्रमा और सूर्य्य पर्वतमें १४ पीछे दोनों वसुदेवके चरणों में नमस्कारकर और उग्रसेन राजा को नमस्कारकर और सब यादवों को यथायोग्य नमस्कारकर १५ और यादवोंसेभी यथायोग्य नमस्कृत किये ऐसे दोनों बलदेव और श्रीकृष्ण प्रसन्नमनवाले होके माता के स्थान में प्रवेश करते भये १६ तब उसजगह अपने शस्त्रों को स्थापितकर इच्छा पूर्वक विचरनेवाले दोनों वसुदेवकेपुत्र आनन्दितहुये १७ पीछे उग्रसेन की आज्ञाके अनुसार थोडेसे कालतक श्रीकृष्ण और बलदेव मथुरापुरीमें विचरतेभये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांमथुराप्रत्यागमनेद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे किसी काल में गोपों के प्यारका स्मरणकर कृष्णके

मतमें स्थित वलदेवजी व्रजकोगये १ तहांजाके अनेक प्रकारके रमणीकवन न-
लाय तिन्हों को देखतेभये २ पीछे वनके पदार्थों से अलकृत वेषवाले वलदेवजी
व्रजमें वेगसे प्रवेशकर सब गोपोंको विधिपूर्वक यथायोग्य और यथाअवस्था ३
पहलेकी तरह प्रीतिसे कहनेलगे और सब गोपों को आनंदित करके पीछे म-
धुररूप कथाओं से गोपियोंकोभी आनन्दित करतेभये ४ तब मधुर वचन बोल-
नेवाले वृद्ध गोप वलदेवजीसे कहनेलगे ५ हे यदुकुलनन्दन तुम्हारा आगमन
सुन्दर है हम तेरेको देखके अब प्रसन्न हुये हैं ६ व हे प्रिय तू तीन लोकों में श-
त्रुओं को भय देनेवाला रामनामसे विख्यात ऐसाहै और तेरेहीकरके हम वृद्धि
को प्राप्तहुये हैं ७ व हे अमलानन हम सब तेरेही प्रतापसे देवताओंकेभी मान-
ने योग्य हुये हैं ८ व हे प्रिय तेरे आगमनकी वाञ्छावाले हम सब तेरेआके देखे
यह अतिमङ्गल हुआ ९ व बहुतसे दुष्ट दैत्य और कंस मारदिया व उग्रसेनको
राज्यदिया यह बडी खुशीकी बातहै और समुद्रमें मच्छके सग तुम्हारा युद्धहु-
आ सुनाहै और गोमंत पर्वतमें क्षत्रियोंके सग युद्ध सुनाहै १० व दरद राजाकी
मृत्यु व जरासन्धका पराजयभी सुनाहै और दिव्य शस्त्रोंका आकाशमे तुम्हारे
अर्थ युद्ध में उतरना यह भी सुनाहै ११ व करवीरपुरमें शृगाल राजाको मारना
व तिसके पुत्रको राज्यदेना और करवीरपुरवासियोंको आश्वासन देना यहभी
सुनाहै १२ व देवताओं के कीर्तन करनेके योग्य मथुरामें प्रवेशभी हमोंने सुना
है १३ व तुम्होंने अच्छीतरह पृथ्वी स्थापित करदी व बहुतसे राजा वशमें कर
लिये १४ यह वडी खुशीकी बातहै व तेरे आगमनको देखके हम सब पहलेकी
तरह उत्तम भाग्यवाले हुये हैं १५ तुम्हों ने हमारेको बड़ा आनंदित किया तब
सब सम्मुख स्थितहुये गोपों से वलदेवजी कहनेलगे १६ कि हे प्यारे सब याद-
वों से भी ज्यादह तुम मेरे बान्धवहो यहीं हम दोनों भ्राताओंकी बाल्यावस्था
बीती है १७ व यहाहीं हम दोनों भ्राताओं ने रमण किया है व तुम्हारे प्रतापसे
ही वृद्धिको प्राप्त हुये हैं १८ ऐसे हम तुम्हारे से कैसे विकर्मको प्राप्तहोवें तुम्हारे
गृहोंमें हमोंने भोजन कियाहै और तुम्हारी गायोंकी रक्षाकरी है १९ इसवास्ते
तुम सब हमारे अतिप्रिय बान्धवहो व गोपोंके मध्यमें ऐसे वलदेवजी के कहनेसे
सब गोपिया प्रसन्न मुखवाली होतीभई २० पीछे अन्य वनमें महायत्नवाले वन-
देवजी प्राप्तहुये २१ व इसी अन्तरमें विदितात्मारूप वलदेवजी के अर्थ देशकाल

को जाननेवाले गोपोंने वारुणीमदिरा प्राप्तकरी २२ तब उन गोपोंसे परिवृतहुये वलदेव जी तिस मदिरा को पान करनेलगे २३ पीछे अनेकप्रकारके फूल फल मेध्यरूप नानाप्रकारके गन्ध व मनोहर भक्ष्य व तत्कालके तोडेहुये कमलों के फूलपै सब गोपोंने वलदेवजी के अर्थ प्राप्तकिये २४ तब सुन्दर वालोंवाले शिरपै सुन्दर मुकुटको बांध व सुन्दर कुण्डलको पहन और वनकी मालाओंको पहन वलदेवजी प्रकाशित होतेभये २५ जैसे कैलासकरके मदराचल पीछे सुन्दर ब॰ द्दलों के समान नीले कपड़ों को पहन वलदेव जी ऐसे शोभायमान हुये जैसे अँधेरेके समूहमें चन्द्रमा २६ पीछे हल व मूसलको ग्रहणकर मत्तहुये वलदेवजी शोभित हुये २७ पीछे वलदेवजी यमुनाजी से कहनेलगे हे महानदि मैं स्नान करनेकी इच्छाकरूंहूं २८ सो तू यहाँ प्राप्तहोजा तब वलदेवजीकी मदरूप वाणी का तिरस्कार कर स्त्रीस्वभावसे मोहित यमुना तिसदेशमें नहीं प्राप्तहुई २९ तब मदवाला व अतिवलवान् वलदेवजी क्रोधको प्राप्तहो खैंचनेके अर्थ हलके मुख को नीचरली तरफकर तिस हल के अग्रभागमें यमुनाको खैचने भये ३० तब विह्वल जलके स्रोतों से युक्त व हलके अनुसार गमन करनेवाली और भयभीत ऐसी यमुनानदी वेगसे टेढी वहनेवाली ३१ व वलदेवजी के भयसे त्रस्तभई की तरह आकुलताको प्राप्तहुई अर्थात् पुलिन श्रोणी विम्ब ऐसे ओष्ठोंवाली और तीरके अन्त में टेढी वहनेवाली ३२ व वेगके गम्भीर से टेढे अगोंवाली और दुःखितहुई मछलियों से विभूषित व हलसे खेंचीहुई ३३ ऐसी यमुनानदी टेढी होके वृन्दावन के मध्यमार्ग करके प्राप्तहुई ३४ और जलमें वसनेवाले पक्षियों करके रोरूयमान ऐसी यमुनानदी वृन्दावन में प्राप्तभई ३५ तब स्त्री के रूपको धारणकर यमुना वलदेवजी से कहनेलगी ३६ हे नाथ तू प्रसन्नहो तेरी आज्ञा के भगसे मैं भयभीत हू ३७ व विपरीतरूप व विपरीत जल मेरा होगयाहै ३८ और हे रोहिणी के पुत्र सब नदियों के मध्य में खैंचने से टेढी वहनेवाली ऐसी वुरी मैं करदी गई हू ३९ व समुद्र में प्राप्त होनेवाली मेरे को सब वेग से गर्वित सपत्नीरूप सब नदियें फेनरूप हासों से हँसेंगी ४० इस वास्ते हे वलदेव मैं तेरेसे याचना करती हू तू मेरे पै प्रसन्नहो और हे सुरोत्तम हलकेद्वारा खैंचने से मैं दुःखित हूं ४१ सो यह क्रोध दूरकरना चाहिये और हे लांगलायुध मैं अपने मस्तकको तेरे चरणों में प्राप्तकरूं हूं सो हे महाभुज तेरे कहेहुये मार्गकी इच्छा

करूहू सो मैं कहाजाऊं ४० तब प्रणाममें नम्रतहुई समुद्रकी वधू यमुनाको देख के बलदेवजी मदसे क्लान्तहुये वचनको कहतेभये ४३ हे प्रियदर्शने हलकेद्वारा प्राप्तहुये मार्गवाली तू पानीके देनेसे इस सम्पूर्ण देशको शुद्धकरेगी ४४ ऐसे तेरे अर्थ शिक्षा कहीहै शान्तिको प्राप्तहो और इच्छापूर्वक गमनकर और जब तक यह समार स्थितरहेगा तबतक मेरा यशरहेगा ४५ तब सब व्रजवासी ऐसे यमुनाजीके खैचनेको देख ठीकहै ठीकहै ऐसे कहके बलदेवजी के अर्थ प्रणाम करतेभये ४६ पीछे तिस यमुनानदी को और उन व्रजवासियों को वहीं छोड़के मन और बुद्धिसे चिन्तवनकर फिर बलदेवजी मथुरापुरी को प्राप्तभये ४७ ऐसे बलदेवजी मथुरामें जाके श्रीकृष्णको देखतेभये ४८ तब वनके पदार्थोंको वेषित कियेरूपको धारण करनेवाले और वनोंकी मालाओंको पहननेवाले ४९ और हलको धारण करनेवाले ऐसे बलदेवजी के आगमन को देख वेगसे श्रीकृष्ण उठके उत्तम आसन देतेभये जब बलदेवजी आसनमें स्थितहोगये ५० तब श्री कृष्ण व्रजमें और गोपों में और गायों में कुशलता पूछनेलगे तब श्रीकृष्णके अर्थ बलदेव कहनेलगा ५१ कि हे कृष्ण जिन्होंकी तू कुशल पूछनेकी इच्छा करताहै तहां सब जगह कुशलहै ५२ पीछे श्रीकृष्ण और बलदेवजी आपसमें वसुदेव के अगाड़ी पवित्र ५३ और विचित्र अर्थोंवाली ऐसी पुरानी कथाओं को कहतेभये ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वभाषायांयमुनाकर्षणेऽध्यायशतकोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौचारका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे—इसी अन्त में लोकपालके गृहको उपमाके समान श्रीकृष्णके स्थानमें लोकमें वार्त्ता को प्रवृत्त करनेवाले बहुतसे मनुष्य प्राप्तहुये १ तब उस जगह बहुतसे यादवोंकी सभा बैठीहुईथी तहां वे मार्त्तिकजन कह- नेलगे २ हे जनार्दन बहुतसे राजाओं का समागम कुण्डिनपुरमें होनेवाला है ऐसे बहुतसे मनुष्यों की वाणीसे कथासुनी है ३ अर्थात् भीष्मककी पुत्री और रुक्मीकी बहिन ऐसी रुक्मिणी नामसे विख्यात स्त्री है ४ जिसका स्वयम्बर होने वालाहै तहां प्राप्तहोनेके अर्थ बहुतसी सेनाओंसे युक्त सब राजे गमनकरते हैं ५ और त्रिलोकी में तिस रुक्मिणी के समान कोईभी स्वरूपवाली नहीं है ६ जिस

का आजसे तीसरेदिन स्वयम्वरहोगा तहां हाथी घोडा रथ इन्होंके द्वारा गमन करनेवाले राजाओं के सैकडों समूहों को देखेंगे ७ और अपनी २ जयके अर्थ अपनी २ सेनाओंसे संयुक्तगये हैं ८ और जो हम गमन नहीं करेंगे तो एकांत में विचरनेवाले और उत्साहसेरहित ऐसे सब होजावेंगे ९ तब हृदय में शल्यकी तरह प्राप्तहुये इस वचनको सुनके श्रीकृष्ण यादवों के संग उसस्थानसे निकसताभया १० तब सब यादव अपने अपने रथोंमें स्थितहोनेलगे ११ और सुदर्शनचक्र और गदाको धारणकर श्रीकृष्णभी प्राप्तहुआ १२ तब श्रीकृष्ण उग्रसेन राजासे कहने लगा १३ हे नृपशार्दूल बलदेवजी करके सहित तू यहींठहर क्योंकि जरासंधके वशमेंहुये बहुतसे राजे इस पुरीको शून्यकरना चाहते हैं १४ तब वैशम्पायन कहनेलगे तब श्रीकृष्णके वचनको सुनके उग्रसेन स्नेहसे विकुल और अमृतरूप ऐसे वचन को कहताभया १५ हे कृष्ण हे महाबाहो हे रिपुसूदन मैं कहताहूं तुम श्रवणकरो १६ तेरेसे रहित हम सुखपूर्वक बसनेको समर्थ नहीं हैं १७ जैसे पतिसेहीन भार्या और तेरे ही प्रतापसे इन्द्र सहित राजाओं से भी हम भय नहीं मानते १८ और हे यदुश्रेष्ठ विजयके अर्थ जहांजहां तू गमन करेगा तहांतहां तू हमारेको संगले गमनकियाकर १९ तब ऐसे उग्रसेनके वचन को सुन श्रीकृष्ण कहनेलगे २० जैसे तुम्हारे को वांछितहोगा वैसेही हमकरेंगे इसमें संशय नहीं २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामन्त्रोदाहरणेचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे श्रीकृष्ण कहके रथमें स्थितहो सूर्य्य अस्त होनेके समय कुण्डिनपुरमें प्राप्तहुये १ तहां अनेकप्रकारकी शिविरोंसे आकीर्ण तिस राजसमाज में सुन्दर रङ्गको देखके २ श्रीकृष्ण राजाओं को दुःख देनेके अर्थ व अपने यशको प्रकाश करने के अर्थ अपने मन में महाबलवाले ३ गरुडजीको चिन्तमन करनेलगे तब चिन्तमन करतेही गरुड़जी जानके तुरत मे चिह्नित शरीर को बना श्रीकृष्ण के समीपमें प्राप्तहुआ ४ तब पवनको भी भ्रम करनेवाले तिसगरुड़के पक्षके निपातसे बहुतसे मनुष्य पृथ्वी में मूंधेपडतेहुये ५ अर्थात् शिरोंके द्वारा पडके कांपनेलगे तिनमनुष्योंको पडतेहुये देख श्रीकृष्ण-

गरुडजी का आगमन जानता भया ६ पीछे दिव्यमाला व दिव्य चन्दन को धारण करनेवाला व पक्षकी पवनसे पृथ्वीको वारम्वार चलानेवाला ७ व सर्पों को पैरोंसे खैंचनेवाला और हेमके पत्तोंसे शोभित व अमृतको हरनेवाला और सर्पोंको नाशनेवाला ८ व दैत्योंके समूहको त्रासदेनेवाला व ध्वजा से लक्षित ऐसे गरुड़ को श्रीकृष्ण देखनेभये ६ तब सापरायिक अपना मंत्री और धैर्य वाला व समीपमें स्थितहुआ ऐसे गरुडजी को मधुर वाणी से श्रीकृष्ण कहने लगे १० हे खग श्रेष्ठ हे प्रिय हे शूरसेनारिमर्द्दन आपका आगमन सुन्दर हुआ हे रथ श्रेष्ठ जहां कैशिक का स्थान है ११ तहां हम को प्राप्तकर प्रथम हम तहां वासकर स्वयम्बर को देखेंगे अर्थात् अनेक प्रकारके राजाओं के समूहको देखेंगे १२ ऐसे महात्मारूप कैशिक की पुरी को श्रीकृष्ण प्राप्तहुये और जब गरुड़ के मित्र महारथी यादवों से परिवृत १३ ऐसे श्रीकृष्ण विदर्भ नगरी में प्राप्त होने लगे १४ तिसी समय में अनेक प्रकार के शस्त्रों को धारण करनेवाले १५ और वलशाली और प्रसन्नहुये ऐसे सब राजे निवासके अर्थ उद्योग करतेभये वैशम्पायन कहनेलगे १६ हे जनमेजय इसी कालको जाननेवाला कैशिक प्रसन्न हुये मनकरके उठ अर्घ्य और आचमनी से श्रीकृष्णका विधिपूर्व्वक सत्कारकर अपने पुरमें प्रवेश करताभया १७ पहलेही कैशिक ने श्रीकृष्णके वास्ते दिव्य मन्दिर वनवा दियाथा तिसमें सेना सहित श्रीकृष्ण निवास करतेभये १८ जैसे कैलासमें महादेव पीछे खान पान रत्नोंके समूह वहुतनाप्रकार स्नेहसे प्रीतिनिन १६ इन्हों करके पूजित श्रीकृष्ण तिसी स्थानमें सुखपूर्वक वसतेभये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयम्बरेसप्तात्रिंशतोऽध्यायः १०१

एकसौदोका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तब गरुडजी सहित कृष्ण के आगमन को देख सब राजे चिन्ता से संयुक्त होतेभये १ हे जनमेजय नीतिशास्त्र के अर्थ को जानने वालों में उत्तम और मन्त्र कर्म में चतुर और भीम पराक्रमवाले ऐसे सब राजे इकट्ठेहो सलाह करनेलगे २ अर्थात् भीष्मक की रमणीक सभा में जाके नाना प्रकारके विचित्र आसनों पै स्थितहुये ३ जैसे देव मामसे देवते तिन्होंके मध्यमें महावलवाला और महातेजवाला ऐसा जरासन्ध सब राजाओंसे कहनेलगा ४

जैसे देवताओंसे महादेव जरासन्ध कहनेलगा हे सब राजाओ और हे महामति भीष्मक मेरेवचनको सुनो जो वसुदेवका पुत्र और महावली ५ और कृष्णनाम से विख्यात गरुडजीको सगले और यादवोंसे परिवृत कुण्डिनपुरमें आयाहै यह रुक्मिणीके अर्थ निश्चय यत्नकरैहै जो यहा करना उचित है वह निश्चयकर सब राजेकरो ६ व महावीर्यवाले वसुदेवकेपुत्र दोष्यादे इस गरुडके विनाभी गोमन्त पर्वतमें जैसा घोरयुद्धको करतेभये हैं ७ तिसको तुम सव जानतेहो परतु आश्चर्य है कि यादव भोज अन्धक इन्होंके महारथों के सग और गरुड की सहायतासे जो यह श्रीकृष्ण युद्धकरेगा ८ तव कैसा विग्रहहोगा और कन्याके अर्थ यत्न करनेवाले और गरुडपै स्थित ९ ऐसे श्रीकृष्णके सामने देवताओंसहित इन्द्रभी नहीं युद्धमें स्थितहोसक्ता और मनुष्योंकी कौन कथाहै १० व पहले जब एकार्णव होगया तव सुनाहै कि यह पृथ्वी पातालतलमें प्राप्त होगईथी ११ तव वाराह जी के रूपको धारणकर विष्णुने वाहर निकास जलपै स्थापितकरी १२ व पीछे वाराहरूपसे ही दैत्यों का राजा हिरण्याक्ष भी मारदिया १३ व देवते दैत्य ऋषि गन्धर्व्व किन्नर यक्ष राक्षस सर्प इन्हों से नहीं मरने योग्य १४ व आकाश पृथ्वी रात्रि दिन सूखा आला इन्हों में भी नहीं मरनेके योग्य व त्रिलोकी में अवध्य व अपराजित १५ व दैत्यों का राजा ऐसा हिरण्यकशिपु भी नृसिंह के रूपकरके पहले विष्णुने मारदियाहै १६ व कश्यपकापुत्र व अदितिके गर्भसे उपजनेवाला व वामन नामसे विख्यात १७ ऐसे विष्णुने सत्यरूप रज्जुकी फासियों से बाध के राजा वलिको पातालमें प्राप्त करदियाहै १८ व कृतवीर्यका पुत्र व महावीर्य्य वाला व दत्तात्रेय के प्रतापसे हजार भुजाओंवाला १९ व वररूपी मदसेमत्त व सातद्वीपों का राजा ऐसा अर्ज्जुन भी जमदग्नि के पुत्र परशुरामजी के हाथसे मराहै २० व पहले इक्ष्वाकु कुलमें उत्पन्नहुये दशरथका पुत्र रामचन्द्र त्रिलोकी के जीतनेवाले रावणकोभी मारताहुआ २१ व पहले कृतयुगमें तारकामय युद्ध हुआ तव अष्टभुजी विष्णु गरुडपै स्थितहो वरदानसे दर्पित वहुत से दैत्यों को २२ और देवताओंको भय देनेवाले और कालनेमिनामसे विख्यात ऐसे दैत्येंद्र कोभी सुदर्शनचक्र से मारदियाहै २३ व महा योगवलकरके युद्धमें इसी विष्णु रूप श्रीकृष्णने भी वहुतसे दैत्य मारदिये हैं अर्थात् वनमें विचरनेवाले २४ महावल व पराक्रमवाले व प्रलम्ब अरिष्ट धेनुक शकुनी केशी यमलार्ज्जुन ऐसे २

बालक अवस्थाहीमें मार तोड़दिये हैं २५ व गोपके वेषकरके क्रीड़ा करताहुआ यही श्रीकृष्ण कुवलयापीड हाथी चाणूर मुष्टिक और कंससे सहित कंस इन्हों को मारताभया २६ इससे आदिलेके बहुतसे दिव्य और कपट से संयुक्त अनेक तरहके रूप मायाकरके इसी विष्णुने धारण किये हैं २७ इसीवास्ते तुम्हारे प्रति मैं कहताहूं और जलमें गमन करनेवाला और जगत्को रचनेवाला २८ और देवताओं में आदिरूप और दैत्यों को मारनेवाला व नारायण व त्रिजगद्योनि पुराणपुरुष ध्रुव सब भूतोंका महाव्यक्त २९ अव्यक्त सनातन मन भूतोंका अ धृष्ट सबलोक नमस्कृत व अनादि व मरण जन्मसे रहित क्षर ३० अक्षर अव्यय स्वयम्भू अज स्थाणु चर और अचरों से अजेय त्रिविक्रम और त्रिलोकेश ३१ और देवताओं के शत्रुओंको नाशनेवाला ऐसा यह श्रीकृष्ण मथुरापुरी में च क्रवर्ती राजाओं के कुलमें ३२ उत्पन्न हुआहै यह मेरी बुद्धिमें उपजता है नहीं तो अन्यपुरुषके साक्षात् गरुड़ कैसे वाहनहोसकें ३३ और विशेषकरके कन्याके अर्थ और गरुडजी पै स्थितहोके आयेहुये श्रीकृष्ण के अगाड़ी युद्धमें कौन स्थितहोगा ३४ इस स्वयम्वरमें साक्षात् विष्णु प्राप्तहोगया और विष्णुके आग- मन में महान् दोष कहाहै ३५ सो तुम सबोंको शोच विचारकरके कार्य्य करना चाहिये तब वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे कहनेहुये जरासन्धके वचनको सुन अतिबुद्धिमान् सुनीथ राजा कहनेलगा कि हे राजाओ जो कुछ जरासन्ध राजा ने कहाहै सो ठीकहै क्योंकि गोमन्त पर्वतमें बलदेव और श्रीकृष्णने दुष्कर कर्म किया है अर्थात् हाथी घोड़ा रथ प्यादे इन्हों से युक्त बड़ी सेना चक्र हलरूपी अग्नि से दग्धकरदी है जिसकरके यह जरासन्ध राजा उचित कहताहै व प्यादे रूप बलदेव और श्रीकृष्णने बहुतसी सेनाका नाश करदियाहै और हे राजाओ आप जानतेहीहो जिसवक्त गरुड़जी आये हैं तब पांखोंके वेगसे उपजेहुये पवन से उड़तेहुये बादल आकाश में भ्रमनेलगे और सब समुद्र क्षोभित होगये और पर्व्वतोंसहित पृथ्वी बारम्बार चलायमानहुई और इस सब उत्पातके भयकी शङ्का से ६ खिन्नहुये सो आश्चर्य्य है जिस गरुड़जी के ऊपर स्थितहोके जब श्रीकृष्ण युद्ध करनेलगेगा तब हमारे सरीखे राजा उस युद्धमें कैसे ठहरसकेंगे सो राजाओं को आनन्द का बढ़ानेवाला स्वयम्वर आप राजाओंने रचाहै परन्तु इस कुण्डि- नपुर में फिर बड़ा विग्रह होनेवाला दीखता है जो इस स्वयम्वर में भीष्मक की

पुत्री राजाओं के मध्य में किसी अन्य राजाओं को वरलेगी तव श्रीकृष्ण की भुजाओंके वीर्यको कौन सहेगा सो इस स्वयवररूप महोत्सव में दोष प्रकटहो-गया और जिसकार्यके वास्ते श्रीकृष्णआये हैं उसीकार्यके वास्ते हम सबआये हैं इसवास्ते श्रीकृष्णका आगमन और हम सब राजाओंका भी आगमन क-न्याके अर्थ निंदितहै सोई जरासधने प्रथम ठीक ठीक प्रकाशित करदिया ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायारुक्मिणीस्वयम्वरेसुनीथवाक्ये षड्धिकशतोऽध्याय १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे सुनीथके वचनको सुनके करुष देशका मालिक दंतवक्रराजा कहनेलगा कि हे राजाओ १ जो जरासधने और सुनीथने कहाहै सो ठीकहै परन्तु मेरा वचनभी हितकारी होगा २ सो न मैं द्वेषसे न अहकारसे और न मैं अपनी युद्धमें जीतनेकी इच्छाकरके अमृतरूप वचनोंसे दूषितकरू हू ३ और महागाधरूप और नीतिशास्त्र के अर्थ से पूरित ऐसे वाक्य को इस राजसभामें कौन कहनेको समर्थ है ४ परन्तु स्मरण करानेके अर्थ जो मैं कह-ताहू तिसको श्रवणकरो जो इस स्वयवरमें श्रीकृष्णजी आगये यह कौन आ-श्चर्य की वात है ५ जैसे हम सब आये हैं तैसेही श्रीकृष्णभी आया है सो इस कन्याकी प्राप्तिके अर्थ आनेमें कुछ दोष प्रतीत नहीं होता ६ और जो हम स-बोंने इकट्ठेहोके गोमन्त पर्वतका रोधनकिया तहा युद्धकृत दोषको कैसे आप मानते हैं ७ और वनवासमें स्थित दोनों वलदेव और श्रीकृष्ण नारदजीके व-चनमान ८ कंसने वुलाके प्रथम कुवलयापीड हाथी से मराने चाहे परन्तु कुव-लयापीड़ हाथी को मार पीछे अपने वीर्य्यसे श्रीकृष्ण और वलदेवने प्राणों से रहित स्थितहुयेकी तरह प्राप्त कसको रगसागरमें मारदिया ९ इसमें क्या दोषहै जिसके पीछे हम सब राजे मिलके युद्ध के अर्थ आये १० । ११ तव सेना का अतिवल को देख पीड़ितहुये वलदेव और श्रीकृष्णपुरी और अपनी सेना को त्याग गोमन्त पर्वतमें प्राप्तभये १२ तहा भी हमोंने जाके क्षत्रिय धर्म्मसे पर्वत जलादिया सो दावाग्नि के मुख में प्राप्तहो वो दोनों तपस्वी नहींमरे १३ और पीछे युद्ध करनेलगे यह कुछ अच्छी वातनहीं वल्कि श्रीकृष्णकी निन्दाहै १४

और जहां जहां हम गमन करेंगे तहां तहां युद्ध करेगा १५ । १६ इस वास्ते हे राजाओ श्रीकृष्ण के संग प्रीतिके अर्थ यत्न करना चाहिये और यह श्रीकृष्ण इस कुण्डिनपुर में कन्याके अर्थ आया है और युद्धके अर्थ नहीं १७ और इस मृत्युलोकमें यह पुरुषोंका इन्द्रहै और देवलोकमें देवताओं का इन्द्रहै १८ और देवताओंका कर्त्ताभी यही है और विशेषकरके संसारका कर्त्ताभी यही है और देवों में बालकों कैसी बुद्धी नहीं होती और ईर्षा मत्सरता १९ गर्व येभी देवमें नहीं होते किन्तु जो आपसे प्रीतिकरे तिसके दुःखको हरनेवाला देवहोताहै सो यह विष्णुदेव देवताओंकाभी देवताहै २० सो गरुड़पै स्थितहोके आयाहै और यह कृष्ण शत्रुओं के नाशके अर्थ सेनासहित नहीं आयाकरता है २१ केवल प्रीतिके अर्थ श्रीकृष्ण यादव और भोज वृष्णी अंधक इन्होंके संगआयाहै २२ सो अर्घ्य आचमनी आतिथ्य ये सब श्रीकृष्ण के अर्थ हमकरेंगे २३ ऐसे श्री कृष्ण के संग मिलापकर दुःख से रहित और भयसे रहित ऐसे होके वर्तेंगे २४ तब दन्तवक्रके वचनको सुन सब राजाओं के प्रति शाल्वराजा कहनेलगा २५ कि मिलाप करनेके कारणसे श्रीकृष्णके भयसे कम्पित हम सब शस्त्रोंको त्या- गदेवेंगे अर्थात् नहीं त्यागेंगे २६ और अपने बलकी निन्दाकरके पराई स्तुति करनेसे क्याकरनाहै यह क्षात्रधर्म में स्थित राजाओंका धर्मनहीं है २७ बड़े बड़े राजाओंके वंशोंमें उपजेहुये राजाओंकी ऐसी कायरबुद्धी कैसे होगई २८ और मैं आदिदेव सनातनप्रभु सब देवताओंका स्वामी और नारायण २९ और वैकुण्ठमें बसनेवाला और अजेय और चराचरका गुरु और देवकीके गर्भसे उत्पन्न और सब लोकोंकरके नमस्कृत ३० ऐसे श्रीकृष्ण को जानताहूं सो कंसराजाके मारनेके अर्थ और भारको उतारनेके अर्थ और हम सबोंका नाशके अर्थ और संसारकी रक्षाके अर्थ ३१ जो विष्णु भगवान् ने जन्म लियाहै येभी मैं जानता हूं ३२ और विष्णु भगवान के संग युद्धमें सुदर्शनचक्ररूप अग्नि से दग्धहुये हमसब धर्मराजके लोकमें जावेंगे यहभी मैजानताहूं और कालरूपके आधीन धाय होताहै ३३ और बिनाकाल के कोई मरतानहीं और कालपै कोई जीवता नहीं ऐसे निश्चयज्ञानके किसीका भी भयमानना उचितनहीं है ३४ और यह विष्णु भगवान् तपके क्षयको देखके कालके अनुसार दैत्यों को मारताहै ३५ व विरोचन के पुत्र बलि राजाको भी विष्णुनेही पातालमें वासदियाहै ३६ इसमें

आदिलेके बहुतसी चेष्टा विष्णुकी हैं तिससे विग्रहके अर्थ तुम्हारा विचार अ-
युक्तहै ३७ और युद्धकेहेतु कृष्णका आगमन नहींहै और जिसकिसीको कन्या
वरलेगी उसीकी वहरानी है ३८ फिर क्यों राजाओंका विग्रहहोगा बल्किन प्रीति
होगी तब वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे बुद्धिशाली राजाओं के कहतेहुये ३९
भीष्मक राजा पुत्रके कारसे कुछभी नहीं बोलताभया क्योंकि महावीर्य के मदसे
भीजाहुआ और भार्गवास्त्रसे अभिरक्षित और रणमें प्रचण्डरूप अतिरथ योद्धा
ऐसे पुत्रको चिंतवन करके ४० और बलसे गर्वित और युद्धमें अभिमानी और
किसीसे नहीं डरनेवाला ऐसा मेरापुत्र कृष्णको नहीं सहता ४१ कृष्णकी भुजा
के वीर्यसेही यह कन्या हरीजावेगी सो महापुरुष विग्रहसे युद्धहोवेगा ४२ और
वैरकरनेवाला व अभिमानी ऐसा मेरापुत्र कैसेजीवेगा अर्थात् कृष्णके सकाश
से मेरेपुत्रका जीवना मुश्किलहै ४३ सो कन्याके कारण पिता माताको आनन्द
का देनेवाला ज्येष्ठसुतका श्रीकृष्णके सग युद्ध कैसे कराऊ ४४ और यह मूढ़
भावके मदसे उन्मत्त युद्धमें नहीं भागनेवाला ऐसा मेरा रुक्मवान् पुत्रश्रीकृष्ण
को रुक्मिणीका वरनहींचाहता ४५ सो निश्चय भस्मरूप होजायगा जैसे रुईका
समूह अग्निमें क्योंकि करवीर पुरका शृगालनाम राजा इसी श्रीकृष्णने क्षण-
भरमें मारदिया ४६ और वृन्दावनमें यही श्रीकृष्ण एक हाथसे गोवर्द्धन पर्वत
को सात दिनतक धारण करताभया ४७ सो ऐसे दुष्कर कर्मका स्मरणकर मेरा
मन अत्यन्त शिथिलहोताहै तब देवताओं के सग इन्द्रआके ४८ श्रीकृष्ण का
अभिषेककर उपेंद्र इस नामसे विख्यात करताभया ४९ और यमुनाके ह्रदमें विष
रूपी अग्निसे प्रकाशमान और घोर और धर्मराजके समान कान्तिवाला ऐसा
कालीयसर्प इसी श्रीकृष्णने नाथदिया है ५० और महावीर्य्यवाला और देवता-
ओंसे अवध्य ऐसा केशी दैत्यभी इसी श्रीकृष्णने मारदियाहै और बहुतकालसे
सागर में नष्टहुये सांदीपन गुरुके पुत्रको ५१ पचजन दैत्यको मार धर्मराज के
नगरसे फिर ल्यावताभयाहै और गोमत पर्वतके समीपमें येदोनों भ्राता बहुतसे
राजाओंके सग उग्र युद्ध करतेभये ५२ अर्थात् हाथीसे हाथियोंको रथोंसे रथी
योद्धाओं को और अश्वयुद्धकरके अश्वों को और पैरोंकरके प्यादों को मारते
भये ५३ ऐसा घोरयुद्ध देवते राक्षस दैत्य गधर्व यक्ष सर्प पिशाच दैत्येंद्र नाग-
लोकवासी गुह्यक ये भी नहीं करसकते जो इन दोनोंने कियाहै ५४।५५ तिस

और जहां जहां हम गमन करेंगे तहां तहां युद्ध करेगा १५। १६ इस वास्ते हे राजाओ श्रीकृष्ण के संग प्रीतिके अर्थ यत्न करना चाहिये और यह श्रीकृष्ण इस कुण्डिनपुर में कन्याके अर्थ आया है और युद्धके अर्थ नहीं १७ और इस मृत्युलोकमें यह पुरुषोंका इन्द्रहै और देवलोकमें देवताओं का इन्द्रहै १८ और देवताओंका कर्त्ताभी यही है और विशेषकरके संसारका कर्त्ताभी यही है और देवों में बालकों कैसी बुद्धी नहीं होती और ईर्षा मत्सरता १९ गर्व ऐसी देवमें नहीं होते किन्तु जो आपसे प्रीतिकरे तिसके दुःखको हरनेवाला देवहोताहै सो यह विष्णुदेव देवताओंकाभी देवताहै २० सो गरुड़पै स्थितहोके आयाहै और यह कृष्ण शत्रुओं के नाशके अर्थ सेनासहित नहीं आयाकरता है २१ केवल प्रीतिके अर्थ श्रीकृष्ण यादव और भोज वृष्णी अंधक इन्होंके संगआयाहै २२ सो अर्घ्य आचमनी आतिथ्य ये सब श्रीकृष्ण के अर्थ हमकरेंगे २३ ऐसे श्रीकृष्ण के संग मिलापकर दुःख से रहित और भयसे रहित ऐसे होके बसेंगे २४ तब दन्तवक्रके वचनको सुन सब राजाओं के प्रति शाल्वराजा कहनेलगा २५ कि मिलाप करनेके कारणसे श्रीकृष्णके भयसे कम्पित हम सब शस्त्रोंको त्यागदेवेंगे अर्थात् नहीं त्यागेंगे २६ और अपने बलकी निन्दाकरके पराई स्तुति करनेसे क्याकरनाहै यह क्षात्रधर्म में स्थित राजाओंका धर्मनहीं है २७ बड़े बड़े राजाओंके वंशोंमें उपजेहुये राजाओंकी ऐसी कायरबुद्धी कैसे होगई २८ और मैं आदिदेव सनातनप्रभु सब देवताओंका स्वामी और नारायण २९ और वैकुंठमें बसनेवाला और अजेय और चराचरका गुरु और देवकीके गर्भसे उत्पन्न और सब लोकोंकरके नमस्कृत ३० ऐसे श्रीकृष्ण को जानताहूं सो कंसराजाके मारनेके अर्थ और भारको उतारनेके अर्थ और हम सबों का नाशके अर्थ और संसारकी रक्षाके अर्थ ३१ जो विष्णु भगवान् ने जन्म लियाहै येभी मैं जानता हूं ३२ और विष्णु भगवान् के संग युद्धमें सुदर्शनचक्ररूप अग्नि से दग्धहुये हमसब धर्मराजके लोकमें जावेंगे यहभी मैंजानताहूं और कालकरके आयुका क्षय होताहै ३३ और विनाकाल के कोई मरतानहीं और कालपै कोई जीवता नहीं ऐसे निश्चयजानके किसीका भी भयमानना उचितनहीं है ३४ और यह विष्णु भगवान् तपके क्षयको देखके कालके अनुसार दैत्यों को मारताहै ३५ व विरोचन के पुत्र बलि राजाको भी विष्णुनेही पातालमें वासदियाहै ३६ इससे

आदिलेके वहुतसी चेष्टा विष्णुकी हैं तिससे विग्रहके अर्थ तुम्हारा विचार अ-
युक्तहै ३७ और युद्धकेहेतु कृष्णका आगमन नहीं है और जिसकिसीको कन्या
वरलेगी उसीकी वहरानी है ३८ फिर क्यों राजाओंका विग्रहहोगा वल्किन प्रीति
होगी तव वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे वुद्धिशाली राजाओं के कहतेहुये ३९
भीष्मक राजा पुत्रके कारसे कुछभी नहीं वोलताभया क्योंकि महावीर्य के मदसे
भीजाहुआ और भार्गवास्त्रसे अभिरक्षित और रणमें प्रचण्डरूप अतिरथ योद्धा
ऐसे पुत्रको चिंतवन करके ४० और वलसे गर्वित और युद्धमें अभिमानी और
किसीसे नहीं डरनेवाला ऐसा मेरापुत्र कृष्णको नहीं सहता ४१ कृष्णकी भुजा
के वीर्यसेही यह कन्या हरीजावेगी सो महापुरुष विग्रहसे युद्धहोवेगा ४२ और
वैरकरनेवाला व अभिमानी ऐसा मेरापुत्र कैसेजीवेगा अर्थात् कृष्णके सकाश
से मेरेपुत्रका जीवना मुश्किलहै ४३ सो कन्याके कारण पिता माताको आनन्द
का देनेवाला ज्येष्ठसुतका श्रीकृष्णके सग युद्ध कैसे कराऊं ४४ और यह मूढ
भावके मदसे उन्मत्त युद्धमें नहीं भागनेवाला ऐसा मेरा रुक्मवान् पुत्रश्रीकृष्ण
को रुक्मिणीका वरनहींचाहता ४५ सो निश्चय भस्मरूप होजायगा जैसे रुईका
समूह अग्निमें क्योंकि करवीर पुरका शृगालनाम राजा इसी श्रीकृष्णने क्षण-
भरमें मारदिया ४६ और वृन्दावनमें यही श्रीकृष्ण एक हाथसे गोवर्द्धन पर्वत
को सात दिनतक धारण करताभया ४७ सो ऐसे दुष्कर कर्मका स्मरणकर मेरा
मन अत्यन्त शिथिलहोताहै तव देवताओं के सग इन्द्रआके ४८ श्रीकृष्ण का
अभिषेककर उपेंद्र इस नामसे विख्यात करताभया ४९ और यमुनाके ह्रदमें विष
रूपी अग्निसे प्रकाशमान और घोर और धर्मराजके समान कान्तिवाला ऐसा
कालीयसर्प इसी श्रीकृष्णने नाथदिया है ५० और महावीर्य्यवाला और देवता-
ओंसे अवध्य ऐसा केशी दैत्यभी इसी श्रीकृष्णने मारदियाहै और वहुतकालसे
सागर में नष्टहुये सांदीपन गुरुके पुत्रको ५१ पचजन दैत्यको मार धर्मराज के
नगरसे फिर ल्यावताभयाहै और गोमत पर्वतके समीपमें येदोनों भ्राता वहुतसे
राजाओंके सग उग्र युद्ध करतेभये ५२ अर्थात् हाथीसे हाथियोंको रथोंसे रथी
योद्धाओं को और अश्वयुद्धकरके अश्वों को और पैरोंकरके प्यादों को मारते
भये ५३ ऐसा घोरयुद्ध देवते राक्षस दैत्य गन्धर्व यक्ष सर्प पिशाच दैत्येंद्र नाग-
लोकवासी गुह्यक ये भी नहीं करसकते जो इन दोनोंने कियाहै ५४।५५ निम

युद्धका स्मरणकर मेरामन दुःखितहोताहै सो ऐसा मनुष्य न कहींसुना और न कहीं देखा जैसा श्रीकृष्णहै ५६ और अतिकीर्तिवाले दन्तवक्रने जो कहाहै वह ठीकहै श्रीकृष्णको प्रसन्नकरके जो कार्य करनाहै वही मङ्गलरूपहै ५७ तब वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे मनसे चिन्तवन कर श्रीकृष्ण को प्रसन्नकरने के अर्थ जानेको भीष्मक बुद्धी करताभया ५८ पश्चात् नयशाली सूत मागध वंदियोंने बोधित किया राजा ५९ और पीछे रात्रिके व्यतीतहोने पै प्रभातभया तब पूर्वाह्णिक क्रियाकरके सबराजे अपने अपने आसनों पै स्थितहुये तब जो रात्रि में शामिल नहीं थे तिन्होंके अर्थ भी श्रीकृष्णको प्रसन्नकरना सुनायागया ६० तब श्रीकृष्णके अभिषेक को सुन कितनेकराजे प्रसन्न कितनेक दीन और कितनेक भयभीत कितनेक उदासीनहुये ६१ ऐसे सेनाके तीनभागहोगये तब राजाओंके भेदको देख और दग्धहुये मनसे चिन्तवनकर राजाओं के समाज में कुछ जाननेके अर्थ प्राप्तहुआ ६२ । ६३ । ६४ । ६५ इसी अन्तर में कैशिकके समीप से शिरपै लेखको धारणकरनेवाले दूत उससभामें प्राप्तहुये ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरे सप्ताधिकशततोऽध्याय १०७ ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा महावीर्यवाले कंसको मारके राज्यपै नहीं अभिषिक्त कियाहुआ व राज्यगद्दी पै नहीं स्थितहुआ १ व कन्याके अर्थ आया हुआ व तहां भी नहीं पूजित किया ऐसा श्रीकृष्ण बहुत से अपमान को प्राप्तहो किस कारण से क्षमाकरताभया २ व महाबल पराक्रमवाला गरुडजी भी तिस समय में कैसे क्षमाकरताभया ३ सो हे भगवन् इस आश्चर्यरूप आख्यानको मेरे अर्थ कहो वैशंपायन कहनेलगे जब गरुडजी से सहित श्रीकृष्ण विदर्भनगरी में प्राप्त भये तब वासुदेव के अर्थ कैशिक मनसे चिन्तवन करनेलगा ४ कि श्रीकृष्ण को देखके हमारे पापोंका क्षयहोगा और श्रीकृष्ण से सिवाय उत्तमपात्र तीनों लोकोंमें नहीं है ५ । ६ व आतिथ्य के अर्थ श्रीकृष्णको हम क्या देवेंगे ७ ऐसे क्रथ और कैशिक दोनों भ्राता आपसमें चिन्तवनकर ८ अपने राज्य को देने की कामनावाले दोनों श्रीकृष्णकेसमीपमें जातेभये ९ तब शिरकरके श्रीकृष्ण

को नमस्कार कर दोनों भ्राता कहनेलगे अब हम दोनोंका जन्म सफलहुआ है और अब हमारा यश विख्यात हुआहै और अब हम दोनों के पितर तृप्तहुये हैं हे देव जब आपने हमारे स्थान पै आगमन किया १० व चँवर बीजना छत्र ध्वजा सिंहासन सेना बहुतसी खजानोंवाली नगरी और हमदोनों ये सब आप केहैं ११ व हे महाबाहो इन्द्रने तुम्हारा अभिषेचन किया तब उपेंद्रनाम तुम्हारा हुआ और अब हम दोनों इस राज्यमें तुम्हारा अभिषेचन करते हैं १२ व हमारे किये कार्य्य को जरासन्ध आदि कोई भी राजे अन्यथा नहीं करसकते १३ व राजाओं को अभयका देनेवाला और तेरा शत्रु व महाकीर्तिवाला ऐसा जरासंध कथा के अन्तमें कहताहै १४ कि सिंहासन पै नहीं बैठाहुआ व पुरसे रहित ऐसा श्रीकृष्ण इस राजसमाज में कैसे बैठाया जावेगा १५ व महावीर्यवाला व अभिमानी व महाकीर्तिवाला ऐसा श्रीकृष्ण इस स्वयवरमें कन्याके अर्थ नहीं आगमन करेगा १६ व सब राजे अपने २ सिंहासनोंपै स्थित होजावेंगे तब नीचा सिंहासन पै कैसे श्रीकृष्ण बैठेगा १७ ऐसे वचनों को भीष्मक राजा सुनके हम दोनों के सङ्ग सलाहकर युद्धकी शान्तिके अर्थ १८ आपके विश्रामकेवास्ते यह स्थान करा दियाहै और आप देवताओंके भी देवताहो और सब लोकों से नमस्कृतहो १९ व इस मनुष्यलोकमें आप राजाओं के स्वामीहो इसवास्ते राजाओं के समाजमें आसन का सङ्कट मतहो २० व इस विदर्भनगरमें सब राजाओं के इन्द्ररूप तुम होजाओ और कहू प्रभात में सफेद रूप आसन पै स्थितहो २१ व विनिदृष्ट कर्म्म करके आत्मा से आत्माको अधिवासन कराओ २२ व जैसे सब राजे गमनकरजावें तैसे आपकी शिक्षासे मैं करूगा ऐसेकहके दोनोंभ्राता अंजली बांध राजाओं से परिवृत्त रङ्गमें दूतों को भेजनेलगे और पत्रमें शिक्षा को लिखके कैशिक कहनेलगा २३। २४ हे राजाओ अतिथिरूप करके इस विदर्भनगरी में गरुड सहित श्रीकृष्ण आये हैं सो आप लोग जानतेही हैं और प्राप्तहुये श्रीकृष्णजी को देख राजा चिन्तवन करके उत्तमपात्र श्रीकृष्णके अर्थ धर्म्मके वास्ते राज्य देने को कहतेभये २५। २६ और मेरे भ्राताने यह भी कहा कि आप इस आसन पै स्थितहोजावो २७ तब शरीर से रहित आकाशचारी देवदूतने वाणीकही कि तेरे दियेहुये आसन पै श्रीकृष्ण स्थित होनेको योग्य नहीं है २८ किन्तु दिव्य और सब रत्नोंसे विभूपित और सुवर्णसे बनाहुआ और

सफेद और सिंहके लक्षणों से लक्षित और विश्वकर्माका रचाहुआ और वहाँ इन्द्रका भेजाहुआ ऐसे आसन पै २६ चराचर के नमस्कृत श्रीकृष्ण को स्थित कर जितने राजे कन्या के हेतु कुण्डिननगरमें आये हैं वे सब इस श्रीकृष्णको अभिषेककरो ३० व जो इस अभिषेकमें नहीं आवेगा उसको यह श्रीकृष्णमारेगा ३१ व कुबेरके खजानों के अंशोंसे उपजे और अक्षय्यरूप और दिव्य व रत्नों से युक्त ऐसे ये आठकलश अभिषेकके अर्थ हैं ३२।३३ यहइंद्रका सदेशा हे राजाओ मैंने तुमोंसे कहाहै इसके अनुसार सबराजाओंको बुलाके इसका अभिषेककरो ३४ तब कैशिक कहनेलगा आकाशमें स्थित होनेवाला देवदूत ऐसे कहके और बालक सूर्य्यकी सदृश कांतिवाले आसनको श्रीकृष्णके अर्थ देके वह देवदूत स्वर्गको गया ३५ इसवास्ते मैं तुमसबों से कहताहूं कि इन्द्रका कथन दुर्निवार्य है ३६ हे पुरुषाओ तुम्हारेको कृष्णचन्द्र के दर्शन करने योग्यहैं और अद्भुतहै पृथ्वीपर दुर्लभहै क्योंकि जिससे नभस्थलसे कलशाओं से आपही अभिषेचन होताहै ३७ हे राजाओ इस आश्चर्य को देखकर निश्चय हमारा सम्पूर्णपाप नष्ट होगया हे नृपश्रेष्ठो देवदेव और विष्णु ऐसे कृष्णचन्द्र के स्नान के वास्ते ३८ आओ और भय नहींकरो क्योंकि तुम्हारे वास्ते जनार्दन संधानं करताहै ३९ और हरिभगवान् सपूर्ण राजाओं के साथ वैरभाव नहीं कियाचाहते हमारे विषे दृष्ट तत्त्वमें विशुद्धभाव है ४० और जरासंधका वैर विशेष करके हृदय में न है जो यहां कारण और कार्य्य है तिसको आप चिंतवनकरो ४१ वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् शापभयसे व्याकुलहुये राजा चिंतवन करतेहुये फिर सुनते भये तब देवराजकी शासनासे मेघके से गम्भीर स्वरसे आकाशवाणी होतीभई ४२।४३ ऐसे सुन चित्रागद कहतेभये हे राजाओ त्रैलोक्य का अधिपति इन्द्र प्रजापालनके हेतु करके और तुम्हारे हितकी इच्छाकरके तुम्हारेपर आज्ञा करता है ४४ हे राजाओ यह वार्त्ता तुम्हारेयुक्त नहीं है कि कृष्णचन्द्रके साथ वैरकाना इसवास्ते आपसमें प्रीति उत्पन्नकरके अपने अपने पुरों में वसो ४५ और श्रीकृष्णचद्र शरणआयोंकी पीडा नष्ट करते हैं और शत्रुओंकी सेनाके नाश करने में अग्निरूपहैं इसवास्ते इसके साथ प्रीति करके और दुःखोंसे रहितहोकर आनंदकरो ४६ हे राजाओ मनुष्यों के देवता तो राजाहैं और राजाओं के देवता सुरहैं और सुरोंके देवता इन्द्रहैं और इन्द्रका देवता जनार्दन ४७ हे राजाओ यह

कृष्ण विष्णुहै समर्थ है देवहै और देवताओंका भी देवताहै मनुष्यलोक में यह नररूप करके यह केशव उत्पन्न भयाहै ४८ यह सपूर्ण लोकों में देव दानव मनुष्य इन्हों करके अजेयहै और स्वामिकार्त्तिकसहित महादेवजीसे भी अजेयहै ४९ ऐसे देवदेव केशव महात्माके अर्थ देवताओं सहित अभिषेचनकरो और इसके सिवाय हम क्या चाहते हैं और राजेंद्रका अभिषेचन में देवताओंको अधिकार नहीं ५० इसवास्ते सर्वलोकनमस्कृतको मैं नहीं अभिषेचन करूहू और राजेन्द्र कृष्णचन्द्रका अभिषेचनमें राजाओं को अधिकारहै इसवास्ते क्रथ और कैशिकसहित विदर्भोंको जाकर ५१ और विधिसे अभिषेचनकरो और यह प्रीति सधानकाले चिंतवन करके इन्द्रने मैं तुम्हारा ५२ बोधके वास्ते रचाहूं हे राजाओ सो विदर्भ नगरमें कृष्ण और तिसका अविराम तुम्हारेसे सुनादियाहै ५३ और राजेंद्रत्व अभिषेकके वास्ते क्रथ और कैशिकराजा कहदिये ५४ हे नृपश्रेष्ठाओ तिन्होंके साथ महान् उत्सवकरके और अभिषेक से सत्कार करके और अपनी दक्षिणा ग्रहणकरके प्रसन्नहुये फिर स्वयवरको चलेआओ और जरासध,सुनीथ, महारथ, रुक्मवान् ५५ सौभपति शाल्व ये चारराजाओं में श्रेष्ठ यहारहो क्योंकि रग शून्यहोना नहीं चाहिये ५६ वैशंपायनजी कहते भये कि हे राजन् सुरोंका ईश चित्रागदकी ऐसे कही आज्ञाको सुनकर संपूर्णराजा गमनके वास्ते बुद्धि करतेभये ५७ बुद्धिमान् जरासधके आज्ञा किये अपनी सेनाओं करके सहित भीष्मकको आगेकर चले ५८ व महाबाहु भीष्मकभी अपनी सेनाकरके सहित व राजाओं करके सहित पुत्रके दोषसे दह्यमान चित्तकरके जहा कृष्ण थे वहां जातेभये ५९ व दूरसे प्रकाशकरतीहुई और पताका ध्वजा माला इन्होंकरके संयुक्त ६० रमणीक दिव्य रत्नोंकरके युक्त दिव्य ध्वजाओं करके युक्त ६१ व दिव्य वस्त्र पताका दिव्य आभरण इन्होंकरके सयुक्त और दिव्य मालाओंकी लड़ियों करके युक्त व दिव्यगधसे सुगधित ६२ सयतवाले विमानोंकरके सयुक्त ऐसीसुंदर देवताओंकी सभा स्नानकेवास्ते आतीभई ६३ व दिव्यअप्सराओं के समूह चारोंतरफ नृत्य करतेभये और गधर्व मुनि किन्नर आकाशमें स्थितहुये ६४ भगवान् का [illegible] श गातेभये व सपूर्ण मुनि सिद्ध परमर्षि स्तुति करतेभये और देवताओं के नगारे बाजतेभये ६५ व स्वर्ग मे आपही उत्साह होताभया और आकाशमें स्थितहुये देवताओंकरके चारोंतरफ गेरेहुये चूर्णोंकी सुगन्धि होती

भई ६६ व देवताओं करके सहित इन्द इन्द्राणी सहित विमानमें बैठ प्रकाश क रताहुआ आकाश में स्थित होताभया ६७ व आठ लोकपाल अपने अपने दिक्‌भागों में स्थितहुये गावतेभये व नृत्यकरतेभये व स्तुति करतेभये ६८ प- श्चात् सम्पूर्ण नराधिप सुन्दर तुमुलनाद सुनके विस्मय से फूलेहुये नेत्रोंवाले राजा सुन्दर सभाको प्रविष्ट होतेभये ६९ व महातेजस्वी कैशिक राजाओं को प्राप्त होकर यथाविधि पूजनकरके तिन्होंका वास करातेभये ७० व पार्थिवों के समागममें जब सुरश्रेष्ठको निवेदन किया तब सर्व्वमंगलपूजित श्रीमान्‌हरि जा तेभये ७१ तिसके अनन्तर आकाश में स्थितहुये देवता वस्त्रहैं कंठों में जिन्हों के व सहकारकरकेयुक्त ऐसे दिव्य कलशोंकी वर्षा करतेभये ७२ व दिव्य कांचन व रत्न व दिव्यपुष्प व दिव्यगन्ध चूर्ण इन्होंकरके ७३ यथोक्त विधिपूर्वक जना- र्दनका अभिषेचनकरके व दीक्षादिवाके ७४ व दिव्य आभरण व विचित्रवस्त्र माला अनुलेपन इन्हों करके विधिपूर्वक राजाओं का सत्कारकरके ७५ स्नान के वास्ते आईहुई देवताओंकी सुन्दर सभामें यादव और विदर्भ राजाओं करके सहित बैठते भये ७६ व तहां बलवान् गरुड़ तो मनुष्यकी आकृति धारणकरके भगवान्‌की दहनी तरफ आसनपर बैठतेभये ७७ और क्रथ और कैशिक बाईं तरफ अपने आसनों पर बैठते भये ७८ और तैसेही बाईं तरफ वृष्णि अन्धक योद्धा व सात्यकी से आदि लेकर महारथ बैठते भये ७९ पश्चात् सूर्य्यकीसी कान्तिवाला व दिव्य बिछौना करके संयुक्त ऐसे दिव्य आसनपर ८० इन्द्र की तरह बैठेहुये कृष्णचन्द्रका पहले बैठेहुये मन्त्रियों के कहेहुये ऐसे राजा विधि पूर्व्वक पूजनकर ८१ फिर सुखपूर्व्वक अपने अपने आसनोंपर बैठते भये व स म्पूर्ण शास्त्रोंका जाननेवाला महाप्राज्ञ ऐसा कैशिक ८२ पूजनकरके न्यायके अनुसार वचन कहताभया हे प्रभो ज्ञानरहित ये सम्पूर्ण राजा आपको मनुष्य जानके वैर करतेभये ८३ हे देव सो अपराध आप क्षमाकरने के योग्यहो ऐसे सुन कृष्णचन्द्र कहतेभये कि हे कैशिक मेरे विषे वैर नहीं बसताहै क्योंकि मैं एकहूं ८४ व क्षात्रधर्म में स्थितहुये जो राजाहैं तिन्हों के साथ विशेष करके वैर नहीं हे राजाओ धर्मकरके युद्ध करना योग्यहै ८५ तिन्हों के हेतुसे तुमको कोप करना उचित नहीं जो वस्तुगई सो त्यागदई और जो मरगये सो स्वर्ग में च- लेगये ८६ हे राजाओ इस मनुष्य लोकमें यही धर्म है कि उत्पन्न होते हैं व मरते

हैं इसवास्ते मरेहुयों का शोचकरना उचित नहीं व हे राजाओ यह हमारा अपराध क्षमाकरो व बैरको त्यागो ८७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् कृष्णचन्द्र ऐसे राजाओं को कहकर व आश्वासन कराके तेजस्वी कृष्णचन्द्र कौशिक की तरफ देखकर चुप होतेभये ८८ व इसी कालमें नयको जाननेवाला भीष्मक विधिपूर्वक पूजनकरके न्यायपूर्वक वचन कहताभया ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरेनृपाश्वासनेऽष्टाधिकशततोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

भीष्मक कहतेभये कि हे भगवन् मेरापुत्र तो बालभाव करके अपनी बहन को स्वयंवर में राजाओं को देने की इच्छा करताहै और मैं नहीं करता १ सो तिसकी अत्यन्त मूर्खताहै एक कन्या तो एकको वरेगी इसमें संदेह नहीं २ इस वास्ते मैं तुमको प्रसन्न करूंगा सो हे देवेश कृपाकरो और क्षमाकरने के योग्य हो ३ ऐसे सुन के कृष्णचन्द्र वचन कहतेभये तेरापुत्र जब प्रौढ़होगा तब कैसा नम्रहोगा ४ एक राजा के आगे भी जो मोहसे असत्य कहदे सो इसलोक में नहीं ठहरता और दण्ड वह्नि करके दग्ध होजाताहै ५ हे प्रभो राजाओं का यह धर्म कहाहै और लोक धर्म्मको आगे करके पहले २ यह ब्रह्माको कहा है ६ हे राजन् कैसे तेरापुत्र राजाओंकी सभामें तिनके आगे असत्य कहने को योग्य है ऐसा अतुल रङ्ग तेरापुत्र करताहुआ तैंने कैसे नहीं जाना यह मेरे संदेहहै ७ हे राजन् अग्नि, सूर्य्य, चन्द्रमा इन कैसे तेजवाले आयेहुये राजाओंका पूजन करके आतिथ्य करताभया ८ हे राजन् यह हमारे विषादहै चतुरङ्ग सेनाके आवनेसे कैसे नहीं जानताभया यह मेरे सन्देहहै ९ हे राजन् मेराआना बहुत करके हितकारी नहींहै हे राजन् इसवास्ते अपात्रके अर्थ आतिथ्य नहीं करना हे राजन् इसवास्ते मेरेको त्यागकर १० पात्रके अर्थ कन्या देनी उचित है और मेरे आनेके दोष करके फिर कैसे कन्याको नहीं देगा ११ व कन्याके देनेमें जो विघ्न करते हैं सो नरकोंमें क्लेश पातेहैं १२ ऐसे धर्म्मके जाननेवाले मन्वादिकों ने कहाहै हे नरदेव इसवास्ते तेरे रङ्गमध्यमें मैं प्रविष्ट नहीं हुआ और आतिथ्य का अभाव जानके मैंने तेरे स्थानमें गमन नहीं किया १३ वैशम्पायनजी क-

हतेभये कि हे राजन् वाणीरूप वज्रसे घेराहुआ और ऐसे कहतेहुये कृष्णचन्द्रको सुन्दर वाणीरूप जलसे सेचन करके और शमित अग्निकी तरह प्रकाश करता हुआ १४ भीष्मक वचन कहताभया हे देव हे लोकों के ईश्वर हे मर्त्यलोक के ईश्वर प्रसन्नहो और मेरी रक्षाकरो हे भगवन् अज्ञानरूप अन्धमें प्रविष्टहुआ जो मैंहू मेरेको ज्ञानरूप नेत्रदो १५ हे भगवन् मनुष्य मास चक्षुवाला होनेसे अच्छी तरहसे नहीं जानसक्ता और हे भगवन् मनुष्यके विना विचारेकार्य्य करनेसे सिद्ध नहीं होते १६ हे भगवन् देवताओं के देवता जो तुमहो तुम्हारे को प्राप्त होकर मेरी दृष्टि शुद्धहोजावे और मेरी सम्पूर्ण क्रिया सिद्ध होजावें १७ हे भगवन् नयकरके युक्त असिद्ध क्रियाकोभी बुद्धिमान् मनुष्य फलवाली करदेते हैं जैसे महासेनापति १८ व हे भगवन् तुम शरणको प्राप्त होकर मेरेको अत्यन्त भय बाधा नहीं करता और हे भगवन् मेरा चिन्तवन आप सुनने के योग्यहो १९ हे भगवन् अपनी कन्याको मैं राजाओं को देने की इच्छा नहीं करताहू आप मेरे ऊपर प्रसन्न होजावो और कोपको दूरकरो २० ऐसे वचन सुन कृष्णचन्द्रने कहा हे बुद्धिमान् राजन् वचन कहने से क्या है अपनी कन्याको देगा अथवा नहीं देगा कहो यहा नेता कौनहै २१ हे राजन् मेरेको रुक्मिणी मतदे ऐसे भी मैं नहीं कहता और दे ऐसेभी नहीं कहता परन्तु रुक्मिणी दिव्यमूर्तित्वहोनी मेरे सम्बन्ध में कारण है २२ हे राजन् पहले मेरुकूट में देवता अपने अशों से इसको रच कहते भये कि हे श्रीपति करके सहित गच्छ २३ व कुण्डिननगर में राजा भीष्मक की स्त्री के उदर में प्रविष्टहोकर व जन्म लेकर केशव भगवान् को देख २४ हे राजन् तिससे मै युक्तवचन कहूगा तिसको सुन निश्चय करके जो तैंने कहाहै सोही करेगा २५ हे राजन् तेरीकन्या रुक्मिणी मानुषी नहीं है यह तो लक्ष्मी है ब्रह्माके वाक्यसे किसी हेतु करके यहा जन्मी है २६ सो हे राजन् यह राजाओं के स्वयंवरके योग्य नहीं व हे राजन् यह धर्मकी व्यवस्था है कि मुख्य कन्या तो मुख्यही वरकोदेनी उचितहै २७ सो हे राजन् इस लक्ष्मी को स्वयंवर में देना उचित नहीं धर्म से सदृश वरको देखकर कन्यादेनी उचित है २८ इसवास्ते विघ्नकारण के प्रयोजन से देवराज का प्रेराहुआ कुण्डिन नगर में गरुड़ आया २९ व राजाओं के महान् उत्सव के देखने वास्ते सुन्दरिलक्ष्मी रूप तेरी कन्याके देखनेकेवास्ते आया ३० व हे राजन् जो तुमनेकहा क्षमाकरनी

युक्तहै परन्तु दोषकेवास्ते मैं नहीं मानता ३१ हे राजन् मैंने तो पहलेही शान्ति करी है जिससे सौम्यरूप धारण करके तुम्हारे देशके विषे गमनकिया हे राजन् ३२ शानों में दोषोंको दूर करनेवाले गुण और क्षमारहती है सो हे राजन् हमारे सरीखों विषे कैसे दोष हृदयमें बसे ३३ हे राजन् अच्छेकुलमें उत्पन्नहुआ और धर्म्म का जाननेवाला व सत्यवादी ऐसे मेरे सरीखे मनुष्य के हृदयमें कैसे दोष बसे ३४ हे राजन् मैं क्षात्रहूं ऐसे तैं मानना और हे राजन् शत्रुओंकी सेनाको सेना सहित मैं नहीं प्राप्तहूंगा ३५ किन्तु गरुड़पर सवारहोकर और सूर्य कैसी कांतिवाले शस्त्र लेकर आऊंगा ३६ व हे राजन् तू हमारा पूज्यहै और आयुसे पिताकी तुल्य हो सो अपनी पुरीको पिताकीतरह पालनकर ३७ व हे राजेन्द्र दोष तो कुत्सित पुरुषों में बसते हैं और शुद्धभाव शूरवीरोंमें दोष कैसेबसे ३८ व हे राजन् मेरेको श्रेष्ठोंकेवस ऐसे जान जैसे पुत्रोंकेवस पिता और हे राजन् विदर्भ नगरके अधि-पति हमारे भी राजा हैं क्योंकि जिससे ३९ आतिथ्यकरने में हम को अपना राज्य देतेभये तिस दानके फलसे हे राजन् तिसके दशतो पहले कुलके स्वर्गमें गये ४० और पुत्रपौत्र दशोंसहित अगलेस्वर्ग में प्राप्तहोवेंगे ४१ और पश्चात् ये बहुत दिन पृथ्वीपर यथेच्छ राज्यभोगकर मोक्षके आनन्दको प्राप्तहोवेंगे ४२ व हे राजन् जो राजा अभिषेक के अर्थ आये हैं सोभी कालकरके देवलोक स्वर्ग को प्राप्तहोवेंगे ४३ व हे राजाओ तुम्हारा कल्याणहो गरुड़करके सहित अब मैं भोजराजकी पालीहुई रमणीक मथुरापुरीको प्राप्तहूंगा ४४ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय कृष्णचन्द्र ऐसे भीष्मक को कहकर और सम्पूर्ण रा-जाओंके विदर्भोंको आज्ञादेकर ४५। ४६ और सभासे निकस रथके समीपजाते भये ४७ तिसके अनन्तर राजर्षि भीष्मक और सपूर्ण राजे कृष्णचन्द्रको आद्यमें और स्वायम्भु सुर असुरोंसे नमस्कार कियाहुआ ४८ सहस्र चरणोंवाला सहस्रों नेत्रोंवाला सहस्रों भुजाओं वाला सहस्रों शिरोंवाला सहस्रों मुकुटोंवाला दिव्य माला वस्त्रों को धारण किये ४९ दिव्यगन्ध चन्दन धारण किये दिव्य अनेक शस्त्रोंको धारण किये ५० लाल नेत्रोंवाले और चन्द्र, सूर्य, अग्निके समान ते-जस्वी ऐसे कृष्णचन्द्रको सम्पूर्ण देख चकितहोतेभये और भीष्मक अञ्जलिबांध ५१ तन, मन, धनसे स्तुति करनेको आरम्भ करताभया ५२ हे देव आदि, अन्त करके रहित, नित्य, आदिदेव, नारायणपरायण, स्वयम्भु, विश्वरूप, स्थाणुरूप,

ब्रह्मरूप ५३ पद्मनाभ, जटा धारणकिये, दण्डधारणकिये, पिंगल हमकीसी कांति वाले, हंसरूप, चक्ररूप ५४।५५ वैकुंठ, अज, परमात्मा, सदसद्भावयुक्त पुराणपुरुष, पुरुषोत्तम ५६ मुक्तनिर्गुण, हे भगवन् ऐसे तुम्हारे स्वरूपों के अर्थ में नमस्कार करताहूं हे देवताओं में उत्तम भगवन् तुम्हारा भक्त मैं जोहूं मेरेको आप वरदो ५७ क्योंकि जिससे आपलोकों के नाथहो विष्णु सम्पूर्णोंकी आत्माके साक्षीहो वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् राजाओं के आगे स्थितहुआ भीष्मक ऐसे स्तुति करके ५८ अच्छे मोलकी मणि, मोती, हीरा, वैडूर्य्यमणि, सुवर्णका समूह ये कृष्णचन्द्रको देताभया ५९ और पश्चात् महाबली, गरुड़की स्तुति करताभया पक्षियों का राजा मन और पवनसे वेगवाला इच्छापूर्व्वक रूप धारण करनेवाला कश्यप के पुत्र ऐसे तुम्हारे स्वरूपों के अर्थ नमस्कारहै ६० वैशम्पायनजी कहते हैं ऐसे संक्षेपसे गरुडकी स्तुति करके और श्रेष्ठ आभूषणों से सत्कार करके तिसके अनन्तर लोकोंके नमस्कार कियेहुये कृष्णचन्द्रका विसर्जन करतेभये ६१ और नृपभी आवतेभये ऐसे कृष्णचन्द्र सत्कारको ग्रहणकरके और राजाओं को आज्ञादेके ६२ और पक्षियों में उत्तम सौम्यरूप ऐसे गरुड़को आगे करके ६३ रथसमूहों करके युक्त और भेरी, पटह, शंख इन्हों के शब्दसे युक्त ६४ हस्ती और घोड़ोंके शब्दोंसेयुक्त और शूरवीरों के शब्दसे युक्त और रथनेमिके शब्दसे युक्त ६५ दशोंदिशाओं को प्रकाश करतेहुये मथुराको जातेभये और तिससमयमें बड़े मेघशब्दकी तुल्य महान् तुमुल होताभया ६६ जब महावीर्य्य वाले कृष्णचन्द्र चलेगये तब देवता अपनी सभाको लेकर स्वर्गको जातेभये ६७ और चतुरङ्गिणी सेनासे युक्त राजा एककोश कृष्णचन्द्र को पहुँचायकर कृष्णचन्द्रके आज्ञादियेहुये फिर सम्पूर्ण स्वयंवर को जातेभये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांकृष्णाभिषेकेनवाधिकशततोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् जब वसुदेवके पुत्र कृष्णचन्द्र मथुरा को चलेगये तब भूषणोंकरके भूषितहैं अङ्ग जिन्हों के और गमनमें है उत्साह जिन्होंके ऐसे राजा प्रबोधनके वास्ते सभाको जातेभये १ पश्चात् चन्द्रमा, सूर्यकेसे प्रकाशवाले राजाओं को सभामें आये हुये और सुन्दर आसनोंपर बैठेहुओं को

देख सुन्दरनय और अर्थ का कहनेवाला सिंहरूप भीष्मक राजा वचन कहता भया २ कि हे राजाओ मैंने स्वयंवरकृत दोष जानलिया इसवास्ते दुर्नय और वृद्धका मेरा अपराध क्षमाकरना योग्यहै ३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे सम्पूर्ण राजाओं को सभाषण करके और विधिपूर्व्वक सत्कारकरके पश्चात् मध्यदेशके राजाओंको विसर्जन करतेभये ४ और ऐसेही पूर्व और पश्चिम और उत्तरके राजाओं को भी विसर्जन करताभया ५ ऐसे धनुष धारणकिये और प्रसन्न चित्तवाले और विधिपूर्व्वक पूजन कियेहुये राजा अपने २ देशोंको जाते भये और जरासन्ध,सुनीथ,वीर्यवान्, दंतवक्र ६ सौभपति शाल्व, महाकूर्म और क्रथ, कैशिकसे आदिलेकर और अच्छे राजा ७ और वेणुदारि राजर्षि काश्मीरदेशका राजा ये और इनसे आदिलेकर अन्य दक्षिणपथके बहुतराजा ८ एकान्त वाक्यसुननेकी इच्छाकरते थे भीष्मक के समीप स्थितहुये तब तिन्हों को बलवान् भीष्मक राजा ९ स्नेहपूर्ण मनकरके धर्म, अर्थ, कामकरके सहित और सुन्दर और छ गुणों करके अलंकृत और शुभदायक नयकरके युक्त १० स्निग्ध गभीर वाणीसे राजाओंको ऐसे वचन कहतेभये ११ हे राजाओ तुम्हारा नययुक्त वचनसुनके यह कार्य कियाहै सो श्रेष्ठतो आपही आपसे नित्य अपराधी हम क्षमाकरनेके योग्यहैं १२ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् नयका जाननेवाला भीष्मक ऐसे वचन कहकर पुत्रको उद्देशलेकर राजाओ की सभा में वचन कहताभया कि हे राजाओ १३ पुत्रकी चेष्टा को देखकर त्रासकरके व्याकुलचित्त हुआ यह मानताहू कि ये सम्पूर्ण लोक बालकहैं और सो एक कृष्ण प्रभुहैं अर्थात् समर्थ हैं १४ और कीर्तिवालों की कीर्ति हैं श्रेष्ठहैं और जिस कृष्णचन्द्र को इस मर्त्यलोकमें अपनी भुजाओं से इकट्ठाकिया बलस्थापन किया है १५ और स्त्रियों में श्रेष्ठ उस देवकी को भी धन्यहै जिसके त्रिभुवन में श्रेष्ठ केशव पुत्र होतेभये १६ और कमलके तुल्य नेत्रोंवाले, शोभाके पुंज, देवताओंके पूज्य ऐसे कृष्णचन्द्र के मुखारविन्दको स्नेहसे उत्पन्नहुई अश्रुओं करके युक्त नेत्रों में नित्य देखती है ऐसी देवकी को धन्य है १७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे राजसभा में कहताहुआ जो राजा भीष्मकहै तिसको महाद्युति शाल्वराजा सुंदरवाणी करके वचन कहतेभये १८ हे राजेन्द्र हे शत्रुओं के नाशकरनेवाले पुत्र के अर्थ कुपित मतहो क्योंकि हे राजन् क्षत्रियों की तो

ब्रह्मरूप ५३ पद्मनाभ, जटा धारणकिये, दण्डधारणकिये, पिंगल हेमकीसी कान्ति वाले, हंसरूप, चक्ररूप ५४।५५ वैकुंठ, अज, परमात्मा, सदसद्भावयुक्त पुराणपुरुष, पुरुषोत्तम ५६ मुक्तनिर्गुण, हे भगवन् ऐसे तुम्हारे स्वरूपों के अर्थ मैं नमस्कार करताहूं हे देवताओं में उत्तम भगवन् तुम्हारा भक्त मैं जोहूं मेरेको आप वरदो ५७ क्योंकि जिससे आपलोकों के नाथहो विष्णु सम्पूर्णोंकी आत्माके साक्षीहो वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् राजाओं के आगे स्थितहुआ भीष्मक ऐसे स्तुति करके ५८ अच्छे मोलकी मणि, मोती, हीरा, वैडूर्य्यमणि, सुवर्णका समूह ये कृष्णचन्द्रको देताभया ५९ और पश्चात् महावली गरुड़की स्तुति करताभया पक्षियों का राजा मन और पवनसे वेगवाला इच्छापूर्व्वक रूप धारण करनेवाला कश्यप के पुत्र ऐसे तुम्हारे स्वरूपों के अर्थ नमस्कारहै ६० वैशम्पायनजी कहतेहैं ऐसे संक्षेपसे गरुडकी स्तुति करके और श्रेष्ठ आभूषणों से सत्कार करके तिसके अनन्तर लोकोंके नमस्कार कियेहुये कृष्णचन्द्रका विसर्जन करतेभये ६१ और नृपभी आवतेभये ऐसे कृष्णचन्द्र सत्कारको ग्रहणकरके और राजाओं को आज्ञादेके ६२ और पक्षियों में उत्तम सौम्यरूप ऐसे गरुड़को आगे करके ६३ रथसमूहों करके युक्त और भेरी, पटह, शंख इन्हों के शब्दसे युक्त ६४ हस्ती और घोड़ोंके शब्दोंसेयुक्त और शूरवीरों के शब्दसे युक्त और रथनेमिके शब्दसे युक्त ६५ दशोंदिशाओं को प्रकाश करतेहुये मथुराको जातेभये और तिससमयमें वडे मेघशब्दकी तुल्य महान् तुमुल होताभया ६६ जब महावीर्य्य वाले कृष्णचन्द्र चलेगये तव देवता अपनी सभाको लेकर स्वर्गको जातेभये ६७ और चतुरङ्गिणी सेनासे युक्त राजा एककोश कृष्णचन्द्र को पहुँचायकर कृष्णचन्द्रके आज्ञादियेहुये फिर सम्पूर्ण स्वयंवर को जातेभये ६८ ॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकृष्णाभिषेकेनवाधिकशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौदशका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् जब वसुदेवके पुत्र कृष्णचन्द्र मथुरा को चलेगये तव भूषणोंकरके भूषितहैं अङ्ग जिन्हों के और गमनमें है उत्साह जिन्होंके ऐसे राजा प्रवोधनके वास्ते सभाको जातेभये १ पश्चात् चन्द्रमा, सूर्यकेसे प्रकाशवाले राजाओं को सभामें आये हुये और सुन्दर आसनोंपर बैठेहुयों को

देख सुन्दरनय और अर्थ का कहनेवाला सिंहरूप भीष्मक राजा वचन कहता भया २ कि हे राजाओ मैंने स्वयंवरकृत दोष जानलिया इसवास्ते दुर्नय और वृद्धका मेरा अपराध क्षमाकरना योग्यहै ३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे सम्पूर्ण राजाओं को सभाषण करके और विधिपूर्व्वक सत्कारकरके पश्चात् मध्यदेशके राजाओंको विसर्जन करतेभये ४ और ऐसेही पूर्व और पश्चिम और उत्तरके राजाओं को भी विसर्जन करताभया ५ ऐसे धनुष धारणकिये और प्रसन्न चित्तवाले और विधिपूर्व्वक पूजन कियेहुये राजा अपने २ देशोंको जाते भये और जरासन्ध,सुनीथ,वीर्यवान्, दन्तवक्र ६ सौभपति शाल्व, महाकूर्म और क्रथ, कैशिकसे आदिलेकर और अच्छे राजा ७ और वेणुदारि राजर्षि काश्मीरदेशका राजा ये और इनसे आदिलेकर अन्य दक्षिणपथके बहुतराजा ८ एकान्त वाक्यसुननेकी इच्छाकरते ये भीष्मक के समीप स्थितहुये तब तिन्हों को बलवान् भीष्मक राजा ९ स्नेहपूर्ण मनकरके धर्म, अर्थ, कामकरके सहित और सुन्दर और छ गुणों करके अलंकृत और शुभदायक नयकरके युक्त १० स्निग्ध गभीर वाणीसे राजाओंको ऐसे वचन कहतेभये ११ हे राजाओ तुम्हारा नययुक्त वचनसुनके यह कार्य कियाहै सो श्रेष्ठतो आपही आपसे नित्य अपराधी हम क्षमाकरनेके योग्यहैं १२ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् नयका जाननेवाला भीष्मक ऐसे वचन कहकर पुत्रको उद्देशलेकर राजाओं की सभा में वचन कहताभया कि हे राजाओ १३ पुत्रकी चेष्टा को देखकर त्रासकरके व्याकुलचित्त हुआ यह मानताहूं कि ये सम्पूर्ण लोक बालकहैं और सो एक कृष्ण प्रभुहैं अर्थात् समर्थ हैं १४ और कीर्तिवालों की कीर्ति हैं श्रेष्ठहैं और जिस कृष्णचन्द्र को इस मर्त्यलोकमें अपनी भुजाओं से इकट्ठाकिया बलस्थापन किया है १५ और स्त्रियों में श्रेष्ठ उस देवकी को भी धन्यहै जिसके त्रिभुवन में श्रेष्ठ केशव पुत्र होतेभये १६ और कमलके तुल्य नेत्रोंवाले, शोभाके पुंज, देवताओंके पूज्य ऐसे कृष्णचन्द्र के मुखारविन्दको स्नेहसे उत्पन्नहुई अश्रुओं करके युक्त नेत्रों में नित्य देखती है ऐसी देवकी को धन्य है १७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे राजसभा में कहताहुआ जो राजा भीष्मकहै तिसको महाद्युति शाल्वराजा सुंदरवाणी करके वचन कहतेभये १८ हे राजेन्द्र हे शत्रुओं के नाशकरनेवाले पुत्र के अर्थ कुपित मतहो क्योंकि हे राजन् क्षत्रियों की तो

रणमेंजीत और हार है १९ मनुष्यों की यही नियत गतिहै और यही सनातन धर्म है हे राजन् बलदेव और कृष्ण से अन्य कौन तीसरा पुरुष रणभूमि में तेरे पुत्रके साथ युद्धकरनेको समर्थ है २० क्योंकि जिससे यह अकेलाही रणभूमिहै रथ अतिरथोंके समूह कोवन्दकर देताहै २१ हे राजन् और दुरासद महारौद्र ऐसे भार्गवास्त्र को छोड़ताहुआ कि इसके पराक्रमको कौन सहसक्राहै २२ और यह कृष्णचन्द्र तो ईश्वर है जन्म मरण से रहित है २३ और तिसको तो इसलोक में आप शूल धारणकिये महादेवजीभी जीतनेको समर्थ नहीं औरकी क्या कहैं व हे राजन् भीष्मक तेरापुत्र बहुत बुद्धिमान्है व सम्पूर्ण शास्त्रार्थ के तत्त्वोंको जाननेवालाहै २४ सो इसवास्ते केशव देव ईश्वरके साथ यह युद्ध नहीं करावे है और यवनोंका अधिपति कालयवन रणमें तिसका जीतनेवालाहै २५ और सो कालयवन केशव से अवध्य है क्योंकि इसका पिता घोर दारुण तपकरके २६ महादेवजी को प्रसन्न करताभया जब देनेलगे तबइसने यह वरदानमागा कि हे भगवन् ऐसापुत्र दो जो मथुरा में होनेवालोंसे नहीं मरे २७ महादेवजी यही वरदान देतेभये २८ ऐसे गार्ग्यका पुत्र रुद्रके वरसे उत्पन्नहुआ मथुराके होनेवाले यादवों से अवध्यहै व मथुरामें तो विशेष करके अवध्यहै २९ व यह कृष्ण भी बलवान् मथुराही में उत्पन्न भया है इसवास्ते सो कालयवन मथुरा में प्राप्तहुआ कृष्णको रणमेंजीतेगा ३० हे राजाओ जो मेरी युक्तवाणी को मानोहो तो यवनेंद्र के पुरमें दूतभेजो ३१ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् सम्पूर्ण राजा ऐसे शाल्व के वचन सुनकर व प्रसन्नहुये ऐसेही करेंगे यह महाबल शाल्वराजा के प्रति कहतेभये ३२ व जरासन्ध तो तिन्हों के वचनों को सुनकर और ब्रह्मा के वचनको स्मरण करताहुआ अविमनाहोकर वचन कहताभया ३३ अहोराजाओं के भयसे पीड़ित हुये नृप मेरेको आश्रय होकर व भृत्य बल वाहनसहित राज्य को प्राप्तहोतेभये ३४ व यहां राजाओं को कालयवन के आश्रयहो ऐसे प्रेरण क्रिया अपने पतिसे वैरकरके जैसे अन्यकी कन्या ३५ अहो बड़े आश्चर्य की बातहै इसबलवान् भाग्यको कोई भी दूरकरने को समर्थ नहीं है क्योंकि जिससे कृष्णसे डराहुआ मैं अधिक बलवाले अन्यके आश्रय होताहूं ३६ और हे राजा मैं योगसे विहीनहुआ पराश्रय कराऊंगा और हे राजा मेरा मरना तो श्रेष्ठहै व अन्य राजाके आश्रयहोना श्रेष्ठ नहीं ३७ हे राजा हे कृष्ण अथवा हे बलदेव

अथवा और हे मनुष्य मैं तो ब्रह्माका प्रेराहुआ मारतेहुये के साथ युद्ध करता हूं ३८ हे राजा यह मेरी बुद्धिका निश्चयहै और यह मेरा पुरुष व्रतहै इसवास्ते और प्रकारसे परका आश्रय करनेको मैं समर्थ नहीं ३९ परन्तु श्रेष्ठ वृत्तान्तवालो के तुम्हारे कृष्ण पीड़ा न करे इसवास्ते राजाओं की रक्षाके वास्ते में दूत भेजूं-गा ४० हे राजा चिंतवनकरके ऐसे भेजो कि जातेहुयेको कृष्णपीडा न करे इस वास्ते आकाशमार्ग्ग करके जाना श्रेष्ठ है ४१ व यह चन्द्रमा सूर्य अग्निकीसी कांतिवाला राजाशाल्व आदित्यकीसी कांतिवाला रथमें बैठ अपने पुरको प्राप्त हो ४२ व यवनेंद्र जैसे राजाओ के समागमको प्राप्तहो और दूत्यसे जैसे हमारा वचनहोवे ४३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् फिर जरासंध सौभके पति शाल्व कोही वचन कहताभया कि हे मानके देनेवाले शाल्व तू जा और संपूर्ण राजाओं की सहायताकर ४४ हे शाल्व जैसे यवनेंद्र आवे और कृष्ण को जीते और जैसे हम प्रसन्नहोवें तैसेही तुमको करना योग्यहै ४५ ऐसे सपूर्णों को स-देशा देकर और धर्म्म से राजा भीष्मकका पूजनकर सेना करके सहित अपने पुरको जाताभया ४६ और राजाओं में श्रेष्ठ बलवान् शाल्व राजा भी तिन सं-पूर्ण राजाओंका पूजनकरके पवनकीसी वेगवाले रथमें बैठ आकाशमार्गकरके कालयवन के पास जाताभया ४७ और भी दक्षिणदिशा में होनेवाले सम्पूर्ण राजा थोड़ी दूर जरासंधके साथ चलकर अपने २ नगरों में जातेभये ४८ और पुत्रकरके सहित भीष्मक राजा इस दुर्जयको चिन्तवनकर और दीनहुये कृष्ण हीको चिंतवन करतेहुये अपने घरो में प्रविष्ट होतेभये ४९ और श्रेष्ठ रुक्मिणी जो है ऐसे अपने स्वयंवरको निवृत्त जानके और कृष्णके आने में राजाओंका दोष दर्शन जानके ५० और सखियों के मध्य में प्राप्तहोकर लज्जित हुई ऐसा वचन कहतीभई हे सखियाओ मैं और राजाओंकी स्त्री होनेको नहीं योग्यहूं ५१ कमल सरीखे नेत्रोंवाले एक कृष्णचन्द्रके बिना ये मेरे वचन सत्यहैं ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वेभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरे दशाधिकशततमोऽध्याय ११०॥

एकसौग्यारहका अध्याय॥

वैशम्पायनजीने कहा कि हे राजन् यवनों में अति बलवान् और धर्मसे पुरकी

रणमेंजीत और हार है १९ मनुष्यों की यही नियत गतिहै और यही सनातन धर्म है हे राजन् वलदेव और कृष्ण से अन्य कौन तीसरा पुरुष रणभूमि में तेरे पुत्रके साथ युद्धकरनेको समर्थ है २० क्योंकि जिससे यह अकेलाही रणभूमिहै रथ अतिरथोंके समूह कोवन्दकर देताहै २१ हे राजन् और दुरासद महारौद्र ऐसे भार्गवास्त्र को छोडताहुआ कि इसके पराक्रम को कौन सहसक्ताहै २२ और यह कृष्णचन्द्र तो ईश्वर है जन्म मरण से रहित है २३ और तिसको तो इसलोक में आप शूल धारणकिये महादेवजीभी जीतनेको समर्थ नहीं औरकी क्या कहें व हे राजन् भीष्मक तेरापुत्र वहुत बुद्धिमान्है व सम्पूर्ण शास्त्रार्थ के तत्त्वोंको जाननेवालाहै २४ सो इसवास्ते केशव देव ईश्वरके साथ यह युद्ध नहीं कराते हैं और यवनोंका अधिपति कालयवन रणमें तिसका जीतनेवालाहै २५ और सो कालयवन केशव से अवध्य है क्योंकि इसका पिता घोर दारुण तपकरके २६ महादेवजी को प्रसन्न करताभया जब देनेलगे तवइसने यह वरदानमागा कि हे भगवन् ऐसापुत्र दो जो मथुरा में होनेवालोंसे नहीं मरे २७ महादेवजी यही वरदान देतेभये २८ ऐसे गार्ग्यका पुत्र रुद्रके वरसे उत्पन्नहुआ मथुराके होनेवाले यादवों से अवध्यहै व मथुरामें तो विशेष करके अवध्यहै २९ व यह कृष्ण भी वलवान् मथुराही में उत्पन्न भया है इसवास्ते सो कालयवन मथुरा में प्राप्तहुआ कृष्णको रणमेंजीतेगा ३० हे राजाओ जो मेरी युक्तवाणी को मानोहो तो यवनेंद्र के पुरमें दूतभेजो ३१ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् सम्पूर्ण राजा ऐसे शाल्व के वचन सुनकर व प्रसन्नहुये ऐसेही करेंगे यह महावल शाल्वराजा के प्रति कहतेभये ३२ व जरासन्ध तो तिन्हों के वचनों को सुनकर और ब्रह्मा के वचनको स्मरण करताहुआ अविमनाहोकर वचन कहताभया ३३ अहोराजाओं के भयसे पीडित हुये नृप मेरेको आश्रय होकर व भृत्य वल वाहनसहित राज्य को प्राप्तहोतेभये ३४ व यहा राजाओं को कालयवन के आश्रयहो ऐसे प्रेरण किया अपने पतिसे वैरकरके जैसे अन्यकी कन्या ३५ अहो वडे आश्चर्य की वातहै इसवलवान् भाग्यको कोई भी दूरकरने को समर्थ नहीं है क्योंकि जिससे कृष्णसे डराहुआ मैं अधिक वलवाले अन्यके आश्रय होताहूं ३६ और हे राजा मैं योगसे विहीनहुआ पराश्रय कराऊंगा और हे राजा मेरा मरना तो श्रेष्ठहै व अन्य राजाके आश्रयहोना श्रेष्ठ नहीं ३७ हे राजा हे कृष्ण अथवा हे वलदेव

अथवा और हे मनुष्य मैं तो ब्रह्माका प्रेराहुआ मारतेहुये के साथ युद्ध करता हूं ३८ हे राजा यह मेरी बुद्धिका निश्चयहे और यह मेरा पुरुष व्रतहै इसवास्ते और प्रकारसे परका आश्रय करनेको मैं समर्थ नहीं ३९ परन्तु श्रेष्ठ वृत्तांतवालों के तुम्हारे कृष्ण पीडा न करे इसवास्ते राजाओं की रक्षाके वास्ते मैं दूत भेजूं-गा ४० हे राजा चिंतवनकरके ऐसे भेजो कि जातेहुयेको कृष्णपीडा न करे इस वास्ते आकाशमार्ग करके जाना श्रेष्ठ है ४१ न यह चन्द्रमा सूर्य अग्निकीसी कांतिवाला राजाशाल्व आदित्यकीसी कांतिवाला रथमें बैठ अपने पुरको प्राप्त हो ४२ व यवनेंद्र जैसे राजाओं के समागमको प्राप्तहो और दूरसे जैसे हमारा वचनहोवे ४३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् फिर जरासंध सौभके पति शाल्व कोही वचन कहताभया कि हे मानके देनेवाले शाल्व तू जा और संपूर्ण राजाओं की सहायताकर ४४ हे शाल्व जैसे यवनेंद्र आवे और कृष्णको जीते और जैसे हम प्रसन्नहोवें तैसेही तुमको करना योग्यहै ४५ ऐसे संपूर्णों को सं-देशा देकर और धर्म्म से राजा भीष्मकका पूजनकर सेना करके सहित अपने पुरको जाताभया ४६ और राजाओं में श्रेष्ठ बलवान् शाल्व राजा भी तिन सं-पूर्ण राजाओंका पूजन करके पवनकीसी वेगवाले रथमें बैठ आकाशमार्गकरके कालयवन के पास जाताभया ४७ और भी दक्षिणदिशा में होनेवाले सम्पूर्ण राजा थोड़ी दूर जरासंधके साथ चलकर अपने २ नगरों में जातेभये ४८ और पुत्रकरके सहित भीष्मक राजा इस दुर्जयको चिन्तवनकर और दीनहुये कृष्ण हीको चिंतवन करतेहुये अपने घरों में प्रविष्ट होतेभये ४९ और श्रेष्ठ रुक्मिणी जो है ऐसे अपने स्वयंवरको निवृत्त जानके और कृष्णके आने में राजाओंका दोष दर्शन जानके ५० और सखियों के मध्य में प्राप्तहोकर लज्जित हुई ऐसा वचन कहतीभई हे सखियाओ मैं और राजाओंकी स्त्री होनेको नहीं योग्यहूं ५१ कमल सरीखे नेत्रोंवाले एक कृष्णचन्द्रके बिना ये मेरे वचन सत्यहैं ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरे दशाधिकशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजीने कहा कि हे राजन् यवनों में अति बलवान् और धर्ममें पुरकी

रणमेंजीत और हार है १९ मनुष्यों की यही नियत गतिहै और यही सनातन धर्म है हे राजन् बलदेव और कृष्ण से अन्य कौन तीसरा पुरुष रणभूमि में तेरे पुत्रके साथ युद्धकरनेको समर्थ है २० क्योंकि जिससे यह अकेलाही रणभूमिहै रथ अतिरथोंके समूह कोवन्दकर देताहै २१ हे राजन् और दुरासद महारौद्र ऐसे भार्गवास्त्र को छोड़ताहुआ कि इसके पराक्रम को कौन सहसक्ताहै २२ और यह कृष्णचन्द्र तो ईश्वर है जन्म मरण से रहित है २३ और तिसको तो इसलोक में आप शूल धारणकिये महादेवजीभी जीतनेको समर्थ नहीं औरकी क्या कहैं व हे राजन् भीष्मक तेरापुत्र वहुत बुद्धिमान्है व सम्पूर्ण शास्त्रार्थ के तत्त्वोंको जाननेवालाहै २४ सो इसवास्ते केशव देव ईश्वरके साथ यह युद्ध नहीं करते है और यवनोंका अधिपति कालयवन रणमें तिसका जीतनेवालाहै २५ और सो कालयवन केशव से अवध्य है क्योंकि इसका पिता घोर दारुण तपकरके २६ महादेवजी को प्रसन्न करताभया जब देनेलगे तबइसने यह वरदानमागा कि हे भगवन् ऐसापुत्र दो जो मथुरा में हानेवालोंसे नहीं मरे २७ महादेवजी यही वरदान देतेभये २८ ऐसे गार्ग्यका पुत्र रुद्रके वरसे उत्पन्नहुआ मथुराके होनेवाले यादवों से अवध्यहै व मथुरामें तो विशेष करके अवध्यहै २९ व यह कृष्ण भी बलवान् मथुराही में उत्पन्न भया है इसवास्ते सो कालयवन मथुरा में प्राप्तहुआ कृष्णको रणमेंजीतेगा ३० हे राजाओ जो मेरी युक्तवाणी को मानोहो तो यवनेंद्र के पुरमें दूतभेजो ३१ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् सम्पूर्ण राजा ऐसे शाल्व के वचन सुनकर व प्रसन्नहुये ऐसेही करेंगे यह महाबल शाल्वराजा के प्रति कहतेभये ३२ व जरासन्ध तो तिन्हों के वचनों को सुनकर और ब्रह्मा के वचनको स्मरण करताहुआ अविमनाहोकर वचन कहताभया ३३ अहोराजाओं के भयसे पीड़ित हुये नृप मेरेको आश्रय होकर व भृत्य बल वाहनसहित राज्य को प्राप्तहोतेभये ३४ व यहां राजाओं को कालयवन के आश्रयहो ऐसे प्रेरण किया अपने पतिसे वैरकरके जैसे अन्यकी कन्या ३५ अहो बड़े आश्चर्य की बातहै इसबलवान् भाग्यको कोई भी दूरकरने को समर्थ नहीं है क्योंकि जिससे कृष्णसे डराहुआ मैं अधिक बलवाले अन्यके आश्रय होताहूं ३६ और हे राजा मैं योगमें विहीनहुआ पराश्रय कराऊंगा और हे राजा मेरा मरना तो श्रेष्ठहै व अन्य राजाके आश्रयहोना श्रेष्ठ नहीं ३७ हे राजा हे कृष्ण अथवा हे बलदेव

प्रकटा जिससे मेरे पास आप भेजेगये और प्रभु जरासन्ध के सत्यवचन को क्याफरमाते हैं २० तिनके वचनको मानूगा और तिनके दुष्कर कर्मको भी करूगा २१ हे राजन् जनमेजय इतनी सुन शाल्व राजा वचन कहनेलगा हे यवनों के पति मगधदेशके राजा जरासंध ने जैसे कहाहै सो मैं कहूहू २२ आपसुनो हे यवनेंद्र यह परमदुर्जय कृष्ण जगत्को बाधा करनेवाला जन्माहै सो मैं इसको दुर्वृत्त जानके मारनेके वास्ते उद्योग किया २३ बहुतसे राजा और सम्पूर्ण बल वाहन ऐसे बहुत सेनाओं करके गोमान् पर्व्वतको रोकताभया २४ जब ये दोनों तिसपर्व्वत में डरके बडगये तब मैं शिशुपाल का वचन श्रेष्ठजानके तिन्हों के नाशकेवास्ते तिसमे अग्नि लगाताभया २५ जब इस पर्व्वतसे हजारहालुक निकसनेलगीं तब इस प्रलयकीसी अग्निको देख बलदेव तिस पर्वतकी शिखर से कूद २६ और समुद्ररूप महासेनामें पड मनुष्य,हस्ती,घोडा, रथ इन्होंको मारने लगा २७ और वासुकि की तरह सरपटता हुआ हलको खैच और नर हस्ती अश्व रथ इनके समूहों को मूसलसे ताडन करनेलगा २८ और हस्ती से हस्ती मारदिया और रथसे रथ तोडदिया और योधासे योधा मारदिया घोडासे घोडा और प्यादासे प्यादा २९ और बडातेजस्वी बलदेव युद्धमें अनेक प्रकारके मार्गोंसे विचरनेलगा जैसे सायकालमें सूर्य ३० और इस बलदेवके अनन्तर कृष्ण सूर्यकीसी कांतिवाला सेनाको ऐसे पकडताभया जैसे क्षुद्र मृगको सिंह ३१। ३२ पश्चात् यह तिस पर्व्वत में दौडके प्रतापवान् यदुवीर दग्धहोते पर्व्वतसे शत्रुओंकी सेनामें कूद चक्रसे बहुत सेनाको मारनेलगा ३३ पश्चात् चक्रको फेंक कर गदासे मारनेलगा और पश्चात् मूसलसे सेनाको चूर्ण करनेलगा ३४ और क्रोधरूप पवनसे दीप्तहुआ जो चक्र लागलरूप ३५ अग्नि सो सूर्यरूप राजाओं की पालीहुई बहुतसेना को नष्टकरताभया जब इन बलदेव कृष्ण पदातियों ने सेनाछेदनकरदी ३६ तब मैं सेनाको व्याकुल देख बहुतसे रथोंकरके सहित तिस सेनाकी रक्षाकर और कृष्णका भ्राता बलवान् बलदेव के साथ युद्ध करनेलगा ३७ तब यह शूरवीर गदा और हलको हाथोंमें लेकर मेरे आगे स्थितहुआ पश्चात् बारह अक्षौहिणियों को सिंहकी तरह मारताभया पश्चात् सौनन्द हलको गेरके और गदासे मेरेको ताडताभया ३८ पश्चात् वज्रकीसी गदाको मेरेऊपर गेरी और जब फिर मारनेको वैशाख स्थानसे ऐसे पृथ्वीको स्थितहुआ३९जैसे

रक्षा करनेवाला १ त्रिवर्ग विदितका जाननेवाला और षट्गुणोंका आजीवन करनेवाला और व्यसनों का त्यागनेवाला गुणों से रमण करनेवाला २ और श्रुतिमान् धर्मशील सत्यवादी जितेंद्रिय युद्धविधिका जाननेवाला ३ और शूरवीर श्रेष्ठ मत्रियोंका सेवनेवाला और मत्रियों सहित रमणीक सभामें बैठाहुआ ४ और बुद्धिमान् यवनोंकरके उपास्यमान और आपसमें अनेक प्रकारकी कथा कहतेहुये ५ ऐसे कालयवन के बैठेहुए सुन्दर सुगन्धवाला पवन वहताभया ६ तिससमयमें सम्पूर्ण सभामें बैठनेवाले कहतेभये कि यह सुगन्ध कहासे आई ७ ऐसे कहके सम्पूर्ण सभा में बैठनेवाले और राजा सूर्य्यकीसी कांतिवाला और सुवर्ण के पहियों से शोभित ८ और दिव्य रत्नोंकरके सयुक्त और सुन्दर पताका से सयुक्त और मन पवनकीसी वेगवाले घोड़ों से सयुक्त ९ और शत्रुओं को त्रास देनेवाला मित्रोंको प्रीति वढानेवाला ऐसे विचित्र रथको देख और तिसमें बैठाहुआ १० सौभपति शाल्वको देखकर और अर्घ्यपाद्य ल्यावो ऐसे यवनेन्द्र का मत्री वारवार कहताभया ११ और तिससमय में आप यवनेंद्र आसनसे उठ और अर्घ्य पाद्य लेकर रथ उतरनेकी जगह स्थित होताभया १२ व महातेजस्वी शाल्वभी आयेहुये राजा को देखकर व अर्घ्यादिकों मे उद्यमयुक्त देखकर मधुर वाणी से वचन कहताभया कि हे बुद्धिमान् राजन् में १३ अर्घ्यादिकों के योग्य नहीं क्योंकि जिससे दूतहूं सम्पूर्ण राजाओं के पासमे जरासन्ध बुद्धिमान् का भेजा हू इस वास्ते राजाओं में अर्घ्य के योग्य नहीं १४ इतनी सुन कालयवन कहताभया हे महावाहो राजाओं के हित के वास्ते और मागध का भेजाहुआ ऐसे दूतको तेरे को मैं जानताहू इसीवास्ते हे राजन् विशेष करके मैं पूजन करताहूं १५ अर्घ्य पाद्यादिकों करके और आसनोंकरके क्योंकि जिससे तेरा एकका पूजनहोनेमे सम्पूर्ण राजाओं का पूजन होजायगा १६ और तेरे सत्कारसे सम्पूर्णोंका सत्कार होजायगा और हे राजन् दिव्य सिंहासन के विषे मेरी वरावर में बैठ १७ वैशम्पायनजी कहतेभये कि हे राजन् जनमेजय कालयवन शाल्व राजाको ऐसे कह और हाथ मिला कुशल पूछके और दिव्य सिंहासनपर बैठे दोनों शोभाको प्राप्तहोतेभये १८ पश्चात् कालयवन कहनेलगा हे राजन् शाल्व जिसकी भुजाओं के वलके आश्रय होकर हम सम्पूर्ण राजे ऐसे सुखसे वसते हैं जैसे इन्द्रके आश्रय देवता १९ तिस जरासन्धके ऐसा कौन कार्य

प्रकटा जिससे मेरे पास आप भेजेगये और प्रभु जरासन्ध के सत्यवचन को क्याफरमाते हैं २० तिनके वचनको मानूगा और तिनके दुष्कर कर्मको भी करूंगा २१ हे राजन् जनमेजय इतनी सुन शाल्व राजा वचन कहनेलगा हे यवनों के पति मगधदेशके राजा जरासध ने जैसे कहाहै सो मैं कहूहू २२ आपसुनो हे यवनेंद्र यह परमदुर्जय कृष्ण जगत्को वाधा करनेवाला जन्माहै सो मैं इसकी दुर्वृत्त जानके मारनेके वास्ते उद्योग किया २३ वहुतसे राजा और सम्पूर्ण वल वाहन ऐसे वहुत सेनाओं करके गोमान् पर्व्वतको रोकताभया २४ जव ये दोनों तिसपर्व्वत में डरके वडगये तव मैं शिशुपाल का वचन श्रेष्ठजानके तिन्हों के नाशकेवास्ते तिसमें अग्नि लगाताभया २५ जव इस पर्व्वतसे हजारहालुक निकसनेलगीं तव इस प्रलयकीसी अग्निको देख वलदेव तिस पर्वतकी शिखर से कूद २६ और समुद्ररूप महासेनामें पड मनुष्य,हस्ती,घोडा, रथ इन्होंको मारने लगा २७ और वासुकि की तरह सरपटता हुआ हलको खैच और नर हस्ती अश्वरथ इनके समूहों को मूसलसे ताडन करनेलगा २८ और हस्ती से हस्ती मारदिया और रथसे रथ तोडदिया और योधासे योधा मारदिया घोडासे घोडा और प्यादासे प्यादा २९ और वडातेजस्वी वलदेव युद्धमें अनेक प्रकारके मार्गोंसे विचरनेलगा जैसे सायकालमें सूर्य ३० और इस वलदेवके अनन्तर कृष्ण सूर्यकीसी कांतिवाला सेनाको ऐसे पकडताभया जैसे क्षुद्र मृगको सिंह ३१।३२ पश्चात् यह तिस पर्व्वत में दौडके प्रतापवान् यदुवीर दग्धहोते पर्व्वतसे शत्रुओंकी सेनामे कूद चक्रमे वहुत सेनाको मारनेलगा ३३ पश्चात् चक्रको फेंक कर गदासे मारनेलगा और पश्चात् मूसलसे सेनाको चूर्ण करनेलगा ३४ और क्रोधरूप पवनसे दीप्तहुआ जो चक्र लागलरूप ३५ अग्नि सो सूर्यरूप राजाओं की पालीहुई वहुतसेना को नष्टकरताभया जव इन वलदेव कृष्ण पदातियों ने सेनाछेदनकरदी ३६ तव मैं सेनाको व्याकुल देख वहुतसे रथोंकरके सहित तिस सेनाकी रक्षाकर और कृष्णका भ्राता वलवान् वलदेव के साथ युद्ध करनेलगा ३७ तव यह शूरवीर गदा और हलको हाथोंमें लेकर मेरे आगे स्थितहुआ पश्चात् वारह अक्षौहिणियों को सिंहकी तरह मारताभया पश्चात् सौनद हलको गेरके और गदासे मेरेको ताडताभया ३८ पश्चात् वज्रकीसी गदाको मेरे ऊपर गेरी और जव फिर मारनेको वैशाख स्थानसे ऐसे पृथ्वीको स्थितहुआ ३९ जैसे

वैशाख स्थानको प्राप्तहोकर स्वामिकार्तिक क्रौञ्चको निदारण करताभया पश्चात् दग्ध करतेहुयेकी तरह दीर्घ नेत्रोंसे देखनेलगा ४० हे राजेंद्र रणभूमिमें ऐसे बलदेवके रूपको देखके कौन आगेठहरे ४१ पश्चात् यह भयानक गदालेकर कालदण्डकी तरह मेरे मारनेको आगे स्थितहुआ ४२ तब मेघके शब्दकीतरह आकाश को पूर्ती हुई आकाशवाणीहुई ४३ कि हे बलदेव हे अनघ यह तुमवे नहीं मारना योग्यहै क्योंकि इसकावध औरहीमे इसवास्ते हे हलायुध दूरहटो ४४ तिस वाक्यको सुन निवृत्तहोगया और यह चिन्ता करनेलगा कि अहो सम्पूर्ण के प्राण हरनेवाले ब्रह्माको यह आपकही ४५ इसवास्ते तुम्हारे सम्पूर्ण राजाओं के हितकी वाञ्छा करके जो मैं कहू हे राजेन्द्र तिस मेरे वचनको सुनके आप करनेके योग्यहो गार्ग्यमुनि ४६ बहुत तपकरके महादेवजीको प्रसन्नकरके मथुरा के जनोंसे अवध्य पुत्रवर प्राप्त होता भया ४७ तिससे तू उत्पन्नभयाहैइसवास्ते कृष्ण तेरेको प्राप्तहोकर ऐसे नष्ट होजायगा जैसे सूर्यकी किरणोंसे हिम ४८ इसवास्ते राजाओंका घेराहुआ तू यत्नकर और केशव के जीतनेके वास्ते गमन कर और मथुरापुरीको सेनासेमथ और कृष्णको मारके अपने यशको विख्यातकर ४९ इसवास्ते बलदेव और कृष्ण दोनों माथुरहैं इसवास्ते मथुराको जाके संग्राममें दोनोंको जीतले ५० ऐसे जरासंधके संदेशेकह और शाल्व कहताभया कि हे राजेंद्र राजाओंमें सूर्य रूप जरासंधके वचन राजाओंके हितकारी तुमसे कहे हैं तिनको मंत्रियों सहित विचारके जो युक्तहों तो करने योग्यहै ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशाल्ववाक्येएकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय राजाओं की आज्ञासे ऐसे कहतेहुये शाल्वराजाको परम प्रसन्नहुआ यवनोंका अधिपति कालयवन वचन कहता भया १ हे शाल्व मैं धन्यहू और तुमने अनुग्रह किया और आज मेरा जीना सफलहुआ क्योंकि जिससे कृष्णके विग्रहसे बहुत राजोंने यादकिया २ हे शाल्व कृष्ण तीनोंलोकों में सुर और असुरोंसे दुर्जय है और तिसके जीतने में जो मैं राजाओंको निश्चयकियाहू ३ सो यह मेरे भी निश्चयहै कि तिन्होंकी वाणीरूप जलकी वर्षासे मेरीजयहोगी ४ और हे शाल्व मेरे वास्ते जो तिन्होंने

वचन कहे हैं सो मै निश्चय करूगा और हे राजेन्द्र जो ऐसा होगा कि मेरा परा-
जयभी होगया तो वहभी जयकी तुल्य है ५ सो हे राजन् आजही तिथि नक्षत्र
मुहूर्त्त कर्ण शुभहै इसवास्ते आजही रणमें केशवके जीतनेको मथुरामें प्राप्तहूगा
६ वैशम्पायनजी कहै हैं कि हे राजन् सौभपति शाल्वसे ऐसे कहकर और बहुत
मोलके मणि भूपणोंसे न्यायपूर्व्वक तिसका सत्कारकर ७ और ब्राह्मण, सिद्ध,
देशपुरोहित इन्होंको बहुतसा धन देताभया ८ और अग्निमें विधिपूर्वक हवन
कराके और अनेक प्रकारके उत्साह मगल करके और जनार्दनको जीतने की
इच्छाकरके प्रस्थान करताभया ९ और हे भरतश्रेष्ठ शाल्वराजा भी प्रसन्नमन
हुआ और कृतार्थ हुआ यवनेंद्रसे मिलके अपने पुरमें जाताभया १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायाकालयमनागमनेद्वादशाधिक
शतोऽध्याय ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

जनमेजय पूछते हैं कि हे भगवन् इन्द्रकी तुल्यें पराक्रमवाले गरुड़ जब विदर्भ
नगरसे चलेगये पश्चात् किसवास्ते गरुड़ प्राप्तकिया और वह प्राप्तहुआ गरुड़
क्या कर्म्म करताभया १ और महाबल गरुडपै भगवान् क्योंनहीं आरूढ होते
भये हे महामुने हे ब्रह्मन् इस मेरे संदेहको आपदूरकरो २ और यथार्थ तत्त्वकहो
ऐसे सुन वैशम्पायनजी ने कहा हे राजन् जो मनुष्यसे नहीं होसके ऐसे किये
गरुडके कर्मोंको सुनो ३ जब विदर्भ नगरसे महाद्युति गरुड़ चलेगये और भ-
गवान् जब मथुरामें नहीं प्राप्तहुए तब महामति गरुड मनसे चितवन करनेलगा
४ और हे राजन् राजाओं के आगे जो देवदेवने कहा कि भोजराजकी पाली
हुई मथुरापुरी में जाऊगा ऐसे तिसके वचनके अन्त में जाऊगा। ऐसे चिन्तवन
करताहुआ ५ नमस्कार करके यह वचन कहताभया ६ हे देव रैवत की नगरी
कुशस्थली को मैं प्राप्तहूगा ७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् देवेश
जनार्दनको ऐसेजनायके और प्रणामकरके पश्चिमकीतर्फ मुखकरके जाताभया
८ और कृष्णचन्द्र यादवोंके साथ मथुरा में प्रवेश होताभया और उग्रसेन और
नगरके मनुष्य उलटे आनके कृष्णचन्द्रका पूजन करतेभये ९ जनमेजयने कहा
कि हे भगवन् बहुत राजाओं करके अभिषिक्त राजेन्द्र को देखकर और इन्द्रको

सधान एक २ भाग राजाओंको देतेभये १० व राजेन्द्रोंको अर्चुदिया ११ व दश मनुष्योंको दिया जो तहा अभिषेचनमें आये सो खाली नहींगये १२ ऐसेसजनों के पति देवताओं करके श्लाघा करेहुये अधिक जनों की वहुतसी पूजा करते भये १३ व देवताओं के स्थानों में वहुतसी पूजा कराते भये व वसुदेवजी के भवन के चारों तर्फ तोरण वाधते भये १४ व नटोंका नृत्य, गाना, व नाना चारों तर्फ होताभया १५ व पताका ध्वजा माला इन्हों करके युक्त पुरीको राजा कराता भया १६ व कंसराजाकी सुन्दर सभा कराते भये व तोरण पुरके दरवाजे इन्हों के अमृत की कीचका लेपन कराते भये १७ व हे राजेन्द्र राजेन्द्रके आसनोंका सुन्दर स्थान कराते भये १८ और पताका वनमाला इन्हों करके युक्त पूर्ण कुम्भ स्थापन करते भये व राजमार्गोंको चन्दन व जलसे सेचन करातेभये १९ और पृथ्वी में जगह२ वस्त्रोंका आस्तरण कराते भये व जगह२ धूप, चन्दन, अगर, गूगल, राल इन्हों की सुगन्धि होती भई २० व वृद्ध स्त्रियों के समूह मगल गाते भये व स्त्री अपने२ स्थानों में स्थितहुई मगलाचार देखती भई २१ हे राजन् बुद्धिमान् उग्रसेन राजा ऐसे पुरमें आनंद करवाके व वसुदेवजी के घरमें जाके व प्रिय आख्यान निवेदन करके २२ व बलदेवजी के साथ सलाह करके रथके समीप प्राप्तहुआ व तिसीकालमें हे राजन् महान् शखध्वनि होती भई २३ पश्चात् मथुरापुरवासीजन पाचजन्य शखकी ध्वनि सुन के व स्त्री, बालक, वृद्ध, सूत, मागध, वदी २४ ये वहुतसी सेनाको व बलदेवजीको आगे लेकर निकसते भये २५ पश्चात् उग्रसेन अर्घ्यपाद्यको आगे करके व दृष्टिमार्ग को प्राप्त होकर व रथसे उतरकर पाद मार्गकरके चलतेभये २६ पश्चात् सुन्दर भूषित रथमें दिव्य रत्नों की कातिमे युक्त वनमालाको धारणकिये सूर्यकी तरह प्रकाश करताहुआ २७ व चमर, व्यजन, छत्र गरुडकी ध्वजा इन्हों करके भूपित २८ व राजलक्षण सम्पन्न देवेश ऐसे हरिको देख २९ गद्गद वाणी से शत्रु बलको नाश करने वाले बलदेवजीको वचन कहतेभये ३० रथ करके मेरा चलना युक्तनहीं है महाभाग तू रथकरके चल ३१ व यहा प्रकाशित देवेश नृपरूप समुद्रमें सम्पूर्ण भाव में केशवकी स्तुति करनेकी इच्छा करताहूं ३२ महातेजस्वी राजाके प्रति वचन कहताभया ३३ हे राजन् जातेहुये देवसत्तम की स्तुति करनेको योग्य नहीं ३४ व हे राजन् जनार्दन तो विनाही स्तुतिकिये तेरे ऊपर प्रसन्नहैं ३५ हे राजन् प्र

सन्न के स्तुतिकरके क्याहै तेरे दर्शनही करके स्तुति होचुकी ३६ हे राजेन्द्र तू प्राप्तहोकर पश्चात् दिव्यस्तोत्रों से स्तुति करनी उचितहै ३७ पश्चात् ऐसे कहते हुये दोनों केशव के समीप प्राप्तहुआ तब उग्रसेन के हाथमें अर्घ्यादि देखकर ३८ व तिसको सुन्दर रथमें चढ़ाते भये व उग्रसेन के प्रति वचन कहते भये हे राजन् जो मैंने ऐसा अभिषेक कियाहै कि तू मथुराका ईश्वरहो ३६ सो उसको आप अन्यथा करने को युक्तनहीं सो इसवास्ते आप अर्घ्य आचमन देनेको योग्यनहीं ४० हे राजन् मेरे मनको तो यह प्रियहै व हे राजन् तेरे अभिप्रायको जानके मैं वचन कहताहू ४१ हे राजन् मथुराका राजा तूही है सो अन्यथा करनेको योग्यनहीं ४२ व हे राजन् स्थानभाग व दक्षिणा तेरेको दूंगा व दक्षिणा दूंगा जैसे सम्पूर्ण राजाओं के आगे सौ अथवा सहस्र भाग वस्त्राभरणसे वर्जित हे मथुराके ईश्वर सुवर्ण के सुन्दर रथमें बैठ ४३ व छत्र, चामर, व्यजन, ध्वज, दिव्य आभूषण, सूर्यकीसी कान्तिवाला मुकुट इन सम्पूर्णों को धारणकर ४४ व इस मथुरापुरी की पालनाकर व पुत्र पौत्रों करके प्रवृत्तहुआ मथुराकी पालना कर ४५ व हे राजन् शत्रुओं के समूहको जीतकर व भोजवंशको वढाय ४६ व हे राजन् देवदेव व अनन्त ऐसे वलदेवजी के वास्ते देवराजने सुन्दर आभूषण दिये हैं ४७ व सम्पूर्ण मथुरावासियों के वास्ते दीनार के दशभाग द्रव्य भेजा है ४८ व सूत, मागध, वन्दीजनों के वास्ते एक एक हजार रुपये भेजे हैं ४६ व वृद्धस्त्रियों के वास्ते व वेश्याओं के वास्ते सौ सौ रुपये भेजे हैं ५० व जो राजा के साथ ठहरते हैं विकद्रुसे आदि लेकर तिन्हों के दशहजार भाग दिये हैं ५१ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् उत्तम द्रव्यों से ऐसे उग्रसेन को पूजनकर ५२ व बड़े आनन्दयुक्त व दिव्य आभूषण माला इन्होंकरके भूषित और सुन्दर वस्त्रलेपनों से भूषित ५३ और भेरी, पटह, शंख, दुन्दुभी इनके शब्दोंमें युक्त और हस्ती घोडाके शब्दसे संयुक्त ५४ और शूरवीरों का शब्दरथके शब्दसे संयुक्त और मेघशब्दकी तुल्य तुमुलकरकेयुक्त ५५ और वादियोंकरके स्तुति कियेहुये व प्रजाते नमस्कार कियेहुये ऐसे कृष्णचन्द्र शोभित मथुराको प्राप्तहोनेभये ५६ व मथुराके जन पदपदपर यह स्तुति करतेभये कि हे पुरुषाओ यह कृष्णचन्द्र साक्षात् नारायणहै और हे पुरुषाओ यह कृष्ण देवताओं सेभी दुर्जय ५७। ५८ महावीर्य्य वलिको वाधकर और इन्द्रको त्रिलोकी का राज्यदेताभया ५६ ...

ये कृष्णचन्द्र सम्पूर्ण दैत्योंको मारके और शूरवीर कंसको मारके भोजराजाको मथुरा देतेभये ६० और केशी को नष्टकरतेभये और देखो यह कृष्ण आप राज सिंहासन पर नहीं बैठे ६१ और राजेन्द्रत्वकी नहीं वाञ्छा करतेहुये मथुराकी पालना करताभया ६२ ऐसे पुरवासियोंका आपस में संभाषण सुनके सूत,मागध, वंदीजनों के समूह वाणी कहतेभये ६३ कि हे भगवन् गुणोंके समुद्र जो तुमहो तुम्हारे प्रभाव उत्साह से उत्पन्नहुये गुणों के कहने में हम कैसे समर्थ हैं क्योंकि जिससे एक जिह्वा वाले हैं और मनुष्यहैं ६४ हे भगवन् सहस्र फणोंवाला नागोंका इन्द्र बुद्धिमान् ऐसा वासुकि तो किसी समयमें दोसहस्र जिह्वाओं से वर्णन करमीदेवे ६५ और हे भगवन् यह पृथ्वीलोक में राजाओं में अद्भुतहै कि इन्द्रसे नतो किसी के आसन आया और न आवेगा ६६ और हे भगवन् देवताओंकी सभा और कलसापैभी किसीके वास्ते नहीं आया सुना और न देखे हैं ६७ हे भगवन् आपके यह हम अद्भुतही मानते हैं ६८ और हे भगवन् स्त्रियों में श्रेष्ठ महाभाग देवकीको धन्यहै कि जो देवताओंमें श्रेष्ठ तुम केशवको गर्भकरके धारण करतीभई ६९ और देवताओं से पूजित शोभाका पुंज कमलकेसे नेत्रोंवाला ऐसे भगवान् के मुखको नेत्रों से पानकरतेभये ७० ऐसे कहतेहुये सम्पूर्णोंका पृथक्२ सुनतेहुये बलदेव कृष्ण उग्रसेनको आगेकर किलाके दरवाजा पर प्राप्त होतेभये और तहां अर्घ्य आचमनीय से पूजन होताभया ७१ पश्चात् बुद्धिमान् उग्रसेन भगवान् के प्रणामकरके रथमें बैठे ७२ महाराज कृष्णचन्द्रके आगे २ ऐसे सुवर्ण की वर्षा करतेभये जैसे जलकी वर्षा मेघ ७३ ऐसे वर्षा के होते पिताके स्थानमें पहुंचतेभये ७४ पश्चात् मथुराके अधिपति श्रीमान्कृष्णचन्द्र कहनेलगे यह वार्तायुक्तहै कि राजेन्द्रत्व को प्राप्तहोकर देवराज के दिव्य सिंहासन को पिताके स्थानमें स्थापन करना ७५ और मथुराकी प्रजाका प्रसन्न करना यह मेरेचित्तहै ७६ हे राजन् जनमेजय जब पिताकेस्थानमें प्राप्तहुये तब देवकी और वसुदेव और रोहिणी ये आनन्द से मोहितहुये कुछभी करने को नहीं समर्थ होतीभई ७७ और हे राजन् तिसके अनन्तर कंसकी माता भगवान् का पूजन करतीभई ७८ और अनेकदेश और दिशाओं से ल्यायेहुये रत्न के धनको देशकालको देखकर महाराज कृष्णके चरणारविंद में निवेदन करतीभई ७९ और कृष्णचन्द्र उग्रसेन को बुलाकर मधुरवाणी से वचन कहतेभये ८० हे

राजन् न तो मेरे मथुराकी वाञ्छा और न मेरे द्रव्यकी वांछाहै ८१ और न मैंने तुम्हारे पुत्र मारे हैं वेतो काल करके मारेहुये मृत्युको प्राप्तहुये हैं ८२ । ८३ इस वास्ते हे राजन् शोकमतकरो अनेक प्रकारके यज्ञकरो और दानदेवो ८४ और मेरे भुजाओं के आश्रय होकर शत्रुओं को जीतो और कंस के नाशसे उत्पन्न हुये संताप और भयको त्यागो ८५ और हे राजन् मेरे ल्याये हुये द्रव्यों का खजाना संचित कर ८६ हे जनमेजय ऐसे उग्रसेन को आश्वासन कराके और वलदेवजी करके सहित कृष्णचंद्र ८७ माता पिताके पास जाते भये आनन्द से परिपूर्ण है हृदय जिन्हों के ऐसे वलदेव कृष्ण नम्रहुये माता पिता के चरणों को नमस्कार करते भये ८८ पश्चात् तिस मुहूर्त्त में मथुरा ऐसी भूषित होती भई ८९ कि मानों यहमथुरा नहीं है स्वर्ग को छोडकर इंद्रकी पुरीही यहां आगई है ९० और पुरवासीजन वसुदेव के भवन को देखकर यह मनमें चिंतवन करते भये कि यह भूतल नहीं है किंतु देवलोक है ९१ पश्चात् पटरानी के सहित उग्रसेन राजाको छोडकर वलदेवके सहित वसुदेवके भवन को प्राप्तहोता भया ९२ व भवनमें प्रवेशहोकर और शस्त्रोंको धरके दोनों शूरवीर स्थितहोते भये ९३ पश्चात् अपना नित्य नियमक करके कथामें सुखपूर्वक स्थित होतेभये ९४ पश्चात् इतनेही कालमें महान् उत्पात होताभया ९५ व घनाकाशमें तारागण भ्रमतेभये और पृथ्वी और पर्वत चलतेहुये और समुद्र क्षुभित होताभया ९६ ऐसे उत्पातों को देखकर संपूर्ण यादव कांपते भये और मूर्छे पड़ते भये पश्चात् ऐसे इकट्ठेहुये यादवों को देखकर रामकृष्ण निश्चल होते भये ९७ पश्चात् पक्षोंके पवनों से पक्षियों में उत्तम दिव्यमाला चंदनकरके युक्त गरुडको देखना भया ९८ पश्चात् शिरसे वलदेव कृष्णको प्रणाम करके पश्चात् द्युतिमान् और मंत्री ऐसे गरुड़को मधुसूदन भगवान् वचन कहतेभये ९९ हे सुरसेनाके शत्रुओंको मर्दन करनेवाले पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड तुम्हारा आना अच्छाहुआ १०० पश्चात् कृष्णचन्द्र स्थितहुये गरुडको वचन कहतेभये हे गरुड़ भोजके अंत पुर को प्राप्तहोवेंगे और तहां जाकर मनकी वातकी सलाह करेंगे १०१ वैशम्पायन जी कहते हैं कि हे राजन् महावीर्य वलदेव जनार्दन और तीसरा गरुड ये तहां प्राप्तहोकर गुप्त सलाह करते भये १०२ कि जरासन्ध की सेना को हम सौ वर्षों करके भी जीतनेको समर्थ नहीं १०३ इसवास्ते हे वैनतेय मथुरा में हमारे वसते

हुये कल्याण न होवेगा यह हमारी बुद्धिहै १०४ ऐसे वचनसुन गरुड देवदेवको नमस्कार करके कहनेलगा कि हे भगवन् वासके वास्ते कुशस्थली भूमिको देखनेके वास्ते जाऊंगा १०५ व हे भगवन् चारों तरफमें फिरके व आकाशमें स्थित होकर और पुरलक्षण पूजित भूमिको देखकर १०६ समुद्रके बीचमें देवताओं करके अभेद्य और सपूर्ण रत्नोंकी खानवाली और सपूर्ण कामफलके वृक्षोंवाली १०७ सपूर्ण ऋतुके फूलोंकरके व्याप्त चारों तर्फ से बहुत सुंदर सम्पूर्ण आश्रमों के स्थानोंवाली १०८ सपूर्ण कामनाके गुणोंकरके युक्त नर नारियों के समूह से व्याप्त नित्य आनद को बढानेवाली १०९ खाई और किलासेयुक्त और पुर दरवाजे और अटालिकाओं से युक्त, विचित्र आगनोंसे युक्त ११० ध्वजा तोरणों से युक्त और सुवर्णके किलासे भूषित और नर, हस्ति, अश्व इन्होंसे व्याप्त और रथके शब्दोंसे व्याप्त और ऊचे २ भवनों से व्याप्त और रिपुओं को भय करने वाली मित्रोंको आनद करनेवाली १११ राजाके वासोंसे भूषित ऐसे पुरको रचवाके और पर्वतों में श्रेष्ठ रैवत पर्वतको नदनवाग सरीखा और पुरद्वारका आभूषण देवस्थान करके हे सुरोत्तम तहा संपूर्ण जनोंको वासकरावो ११२। ११३ हे राजन् गरुड कहे हैं कि हे भगवन् यह द्वारावती नामपुरी तीनों लोकों में विख्यात होवेगी। ११४ व इन्द्रकी अमरावती पुरीकी तरह यह रमणीक पुरीहोगी और हे भगवन् जो थोड़ी पृथ्वीहोगी तो समुद्र और देदेगा ११५ व तहा इच्छा पूर्वक विश्वकर्मा इसको रचदेगा और हे भगवन् मणि, मोती, मूंगा, हीरा, वैडूर्य इन रत्नों करके और अनेक प्रकारकी द्रव्य वस्तुओं करके ११६ दिव्य स्तंभोंसे व्याप्त और देवसभाके समान सुवर्ण से जटित संपूर्ण रत्नोंसे भूषित दिव्य ध्वजा पताकासे युक्त और देव किन्नरों से पालित चद्र सूर्यकी कातिसे युक्त ऐसे दिव्य महल बनवावो ११७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे भगवान् के प्रति वचन कहके और प्रणाम करके स्थित होताभया ११८ पश्चात् वलदेवजी करके सहित कृष्णचन्द्र इस गरुड़के कथनको हित समझके ११९ व वस्त्र आभूषणों से गरुड़का सत्कार भेजकर ऐसे आनन्द करनेलगे जैसे देवलोक में देवता १२० पश्चात् महायश भोजराज उग्रसेन तिसका वचन सुनकर स्नेह से कृष्णचन्द्र के प्रति अमृतरूप वचन कहताभया १२१ हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे यादवों को आनदबढानेवाले हे रिपुओंको नाशकरनेवाले मेरे वचनको आप सुनो। १२२

हे भगवन् तुम्हारे बिना इस पुर में सुखपूर्वक वसनेको हम समर्थ नहीं पतिकरके हीन जैसे स्त्री १२३ व हे भगवन् तुम्हारे करकेही हम सनाथ कहावते हैं और तुम्हारी भुजाओं के आश्रयहुये राजा और इन्द्रोंसेभी हम नहीं डरते हैं १२४ और हे यदुश्रेष्ठ जहाजहा जीतने के वास्ते जाओ वहा हमको साथ लेजाओ १२५ हे राजन् देवकी के पुत्र भगवान् ऐसे वचन सुन के हँसते हुये कहने लगे कि तुम्हारा यथेच्छही होगा इसमें सन्देह नहीं १२६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरेमन्त्रोदाहरणे त्रयोदशाधिकशततोऽध्याय ११३ ॥

एकसौचौदहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् किसीकालमें यादवोंकी सभामें कमलसरीखे नेत्रोंवाले कृष्णचन्द्र सभों के प्रति हेतुवाले उत्तम वचन कहतेभये १ यादवोंको यह मथुराकी भूमिराष्ट्रके बधानेवाली है और हमभी मथुराही में जन्मे हैं और व्रजमें बढे हैं २ सो अब तो दुःखगया होगया और शत्रुभी जीतलिये और राजाओं के विषे वैर उत्पन्न करादिया ३ और जरासन्ध के साथ विग्रह होगया और वाहन हमारे बहुत हैं और पदातिभी अनन्त हैं और रत्न विचित्रहैं और मित्र बहुत से हैं ४ परन्तु यह मथुराभूमि अल्प है और शत्रु से गम्य है ५ और वृद्धि हमारे बहुत होगई है एक करोड बालकहैं और पदातियों के समूह इन्हों के वसने में मैं यहा दुःखदेखूहू ६ इसवास्ते हे यादवों में श्रेष्ठो मेरेको वास और जगह अच्छालगै है इसवास्ते पुरीको और जगह प्राप्तकरूंगा सो यह मेरा अपराध क्षमाकरनेको योग्यहो ७ हे यादवोहो जो ये मेरे वचन अनुकूलहै तो तुम को करने योग्यहैं ८ हे जनमेजय ऐसे वचनसुनके सम्पूर्ण यादव कृष्णचन्द्रके प्रति वचन कहते भये ९ तिस के अनन्तर सम्पूर्ण यादव सलाह करनेलगे कि यह राजा अवध्य है और सेनाभी अवध्य है १० और बहुतसी सेनाका क्षयभी होगया फिर सौवर्षमें भी जीतनेको समर्थ नहीं ११ हे राजन् ऐसे विचारके तिन की वहासे गमन में बुद्धिहोतीभई और इसी अन्तरमें कालयवन राजा वैसीही सेनालेकर मथुराको चारोंतरफ से रोकताभया १२ पश्चात् दुर्निवार जरासन्धके बलको और कालयवन को सुनके यह सलाह करते भये और केशव भगवान्

फिर यादवोंको कहतेभये १३।१४ हे यादवोहो आजही पवित्र दिन है इसवास्ते अपने २ नौकर चाकरोंसहित यहांसे निकसो १५ ऐसे सुनके हे राजन् कृष्णकी आज्ञासे सम्पूर्ण निकसतेभये समुद्रके वेगकीतरह १६ और बलकेसमूहसे प्रतिनादित वसुदेवजी से आदिलेकर सम्पूर्ण स्त्रियों को लेकर और कसेहुये गज, अश्व, रथ इन्होंपर सवारहोकर १७ और धन, ज्ञाति, बान्धवों करके सहित ऐसे सम्पूर्ण यादव नगारे बजाकर और मथुराको छोडकर निकसते भये १८ पश्चात् सुवर्णके रथ और मदोन्मत्त हस्ती चाबुकसे कूदतेहुये अश्व इन्हों करके अपनी२ सेना के अग्रभाग को शोभित करतेहुये सम्पूर्ण यादव प्रसन्नहुये पश्चिमाभिमुख होतेभये १९ ऐसे वसुदेवसे आदि लेकर मुख्ययादव अपनी सेनाको खैंचतेहुये चले अनेक प्रकारकी बेलोंसे चित्र और नारियलवनसे युक्त २० नागरपानोंसे युक्त केतकी समूहसे मंडित पुन्नागतालीसे युक्त २१ दाखके वनोंसे युक्त ऐसे सुन्दर सिन्धुराजके अनूपको सम्पूर्ण यादव प्राप्तहोतेभये २२ हे राजन् जनमेजय तहां प्राप्तहुये यादव सुन्दर विषयों में ऐसे आनन्द करतेभये जैसे स्वर्ग में प्राप्तहुये देवता २३ शत्रुओंको मारनेवाले कृष्णचन्द्र पुरवास्तु को देखतेहुये सागर का अनूप शोभित विपुल देशको देखतेभये २४ जहां घोडे हाथियों के वास्ते तो सुन्दर ताम्र मृत्तिका और पुर लक्षणों से सम्पन्न सागरकी पवनसे सेवित २५ और सागरके जलसे सेवित समुद्रकादेश पुरलक्षणों से शोभित ऐसा सुन्दर देशको देखताभया २६ तहां रैवतकनाम पर्वत समीप और अच्छी शिखरवाला मन्दराचल चारोंतरफ शोभित तहां वासकरता भया २७ पश्चात् बहुत पुरुषोंसे युक्त कृष्णचन्द्र राजाकी विहारभूमि रचतेभये २८ और द्वारावती तिसका नामरक्खा तहां भगवान्ने पुरीके वास्ते निवेशकिया २९ ऐसे सम्पूर्ण सेनाकाल निवास करतेभये और यादवोंकरके सहित कृष्णचन्द्र तहां वासकरते भये ३० तिसदेशके पुरनिवेशके वास्ते अनेकनाम रखतेभये ३१ और पुरुषोंमें श्रेष्ठ और यादवों में उत्तम ऐसे भगवान् मनकरकेही वस्तुओंको रचतेभये ३२ ऐसे द्वारावती पुरीको प्राप्तहोकर सम्पूर्ण बांधव सुखपूर्वक वसतेभये जैसे स्वर्ग में देवताओंके गण ३३।३४ केशीको मारनेवाले कृष्णचन्द्रभी कालयवनको जानके और जरासन्धके भयसे द्वारावती पुरीको जातेभये ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वभाषायांद्वारावतीनिर्माणेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४

एकसौपन्द्रहका अध्याय॥

जनमेजय कहताहै कि हे तपोधन यदुवों में श्रेष्ठ जो बुद्धिमान् वासुदेव हैं तिनके चरित विस्तार से सुनने की इच्छा करताहू १ हे द्विजसत्तम मध्यदेश मे वाम और लक्ष्मीका केवल धाम पृथ्वीका शृंग बहुतधन धान्यवाली श्रेष्ठपुरुषों का अधिष्ठान ऐसी मथुराको विनाही युद्ध भगवान् क्यों छोडतेभये २। ३ और हे भगवन् कालयवनराजा कृष्णचन्द्र से क्यों वैर करताभया ४ और उदारचित्त महाबाहु महायोगी ऐसे कृष्णचन्द्र द्वारका को प्राप्तहोकर क्या करतेभये ५ और हे भगवन्-कालयवन के क्या पराक्रमथा और किससे उत्पन्न हुआथा क्योंकि जिस असह्यको देखकर जनार्दन भगवान्भागे ६ ऐसे राजाके प्रश्नसुन वैशंपायनजी कहतेभये कि हे राजन् अंधक और वृष्णियोंका गुरु महातपस्वी गार्ग्य होताभया ७ सो पहले ब्रह्मचारी होके स्त्री को नहीं अभिगमन करताभया ऐसे वर्त्तते हुये इस ऊर्द्धरेता को साला हँसनेलगा कि गार्ग्य नपुंसक है ८ ऐसे यह कुपित हुआ जाकर पुत्रकी वाञ्छा से दारुण तपकरताभया ९ और बारहवर्षतक लोहेका चूर्ण भोजन करताहुआ त्रिशूलहै हाथमें जिन्हों के और अचिन्त्य ऐसे महादेवजीका आराधन करताभया १० पश्चात् महादेवजी प्रसन्नहोकर व वृष्णी और अन्धकों को युद्धमें जीतनेवाला और सर्व तेजमय ऐसा समर्थपुत्र वरदान देते भये ११ पश्चात् पुत्र से रहित और पुत्रकी वाञ्छावाला ऐसा यमनाधिपति तिस वरदान को सुनके और सो राजा तिस गार्ग्यको अपने स्थानमें ल्यावता भया १२ पश्चात् तिस द्विजर्षभको सातनाकराके पश्चात् राजाकी बताईहुई १३ व गोपस्त्रीका रूप धारणकरे गोपाली अप्सरा दुर्धर गार्ग्य के गर्भ को धारणकरती भई १४ पश्चात् महादेवजी के वरदान से तिसमें कालयवन नाम शूरवीर उत्पन्न होताभया १५ पश्चात् अपुत्र तिस राजाके रनवासमें कालयवन वृद्धिको प्राप्तहोगया १६ हे राजन् जब तिस राजा की मृत्युहोगई तब कालयवन राजाहोगया १७ पश्चात् युद्धकी वाञ्छा करके ब्राह्मणों को पूछने लगा कि मेरीसमान कौनहै किससे युद्धकरू तब नारदमुनिने वृष्णि अंधक यादवोंका कुल इसके आगे कहा १८ और उधर भगवान्के आगे इसका सब वृत्तांत नारदमुनिने कहदिया पश्चात् भगवान् इसको यवनों में बढते-को देखतेहुये स्थिररहे जब यह महाबल यवनों

का राजा बढगया तब म्लेच्छ आके इसके आश्रय होतेभये १९ शक, सार, दरद, पारद, तगण, खस पल्हव ये और अन्य सैकडोंम्लेच्छों करके ऐसे युक्तहुआ २० जैसे चोर और टीडियों करकेयुक्त राजा और अनेक प्रकारके वेष और आयुधों सहित मथुरा को रोकतेभये २१ और हस्ती, अश्व, खर, उष्ट्र इन्हों के दशहजार अर्बुदों करके और बहुतसी सेनाकरके पृथ्वी को कपावते भये २२ और हे राजन् धूलिकरके सूर्य्य आच्छादन करदिया और सेनाके विष्ठा मूत्रसे नदीचलगई २३ और अश्व, उष्ट्रों के विष्ठाका समूह पड़ताभया इसवास्ते अश्व शकृत् नामहोता भया २४ तिस आईहुई बहुत सेनाको वृष्णिक अधकोंमें मुख्य वसुदेव जातियों को बुलाके यह वचन कहनेलगे कि २५ अहोअधक वृष्णियो यह बडाघोर भय प्राप्तहुआ और महादेवजी के वरदानसे शत्रु भी यह अवध्यहै २६ और सामादिक उपाय इसके यादहैं इसवास्ते यह मत्तहुआ मद और बलकरके युद्धही करने की इच्छा करताहै २७ और नारदमुनिने हमारा इतनाही वास कहा है और यह शत्रु साम उपाययुक्तहै २८ और जरासध राजा हमको नित्य सहताही नहीं है और तैसेही यादवों की सेना करके दुःखित किये और राजा और कितनेक कसके मरने से कुपित हुये राजा ये जरासध के आश्रय होके हमारे मारने की इच्छा करते हैं २९।३० और राजाओंने बहुतसे यादवों के बंधु मारदिये और हम तिसकी सेनाके मारने को समर्थ नहीं ३१ कृष्णचन्द भी ऐसे निकसनकी मति करके कालयवनके पास दूतको भेजते भये ३२ अजनकेसा स्याहसर्प घड़ा में रोंककर और दूतके शिरपर धरकर कालयवनके पासभेजा ३३ यहबात दिखाई कि हे कालयवन जैसा यह सर्प्प क्रूरहै ऐसे शत्रुओंके वास्ते मैं हूं ३४ ऐसे घड़े को कालयवन देखकर समझगया ३५ पश्चात् कालयवनने बहुत तेज चींटियों से घडाभर दिया और उन्होंनेसर्प मारदिया ३६ तामके कृष्णचन्दके पासभेजा और यह दिखाया कि हम बहुत हैं ऐसे मारदेंगे ३७ कृष्णचन्द्रभी इस अभिप्रायको समझगये और वसुदेव तो तिस वृत्तान्तको देखकर और मथुराको छोड़ द्वारकाको जाताभया ३८ और महायशस्वी कृष्णचन्द द्वारकाको जाकर और यादवोंको आश्वासन करातेभये ३९ पुरुषोंमें व्याघ्ररूप कृष्णचद्र पैरोंसेही मथुरा को आतेभये ४० और कालयवन कृष्णचद्रको देखकर और प्रसन्नता और क्रोधयुक्तहुआ सेनासे निकसताभया ४१ पश्चात् कृष्णचन्द्र तो आगे और काल-

यवनपीछे यहवांछारही कि पकडलूं परंतु योग धर्मवाले कृष्णचन्द्रको नहींछूता भया ४२ सो हे राजन् मान्धाताका पुत्र महायशी मुचुकुंद पहले असुर देवताओं के युद्धमें देवताओंकी जीतकराके ४३ और प्रसन्नहुये देवताओंसे निद्राका वरदान मागके और थातकी तिसकी यह वाणी निकसी कि देवताओ जो मेरे को वीचमें जगादे तो वह क्रोधसे दीप्त मेरे नेत्र से भस्महोजाय ४४। ४५ देवताओं सहित इन्द्रने कहा कि ऐसेही होगा ऐसे देवताओं से आज्ञादिया हुआ यह मानुष लोकमेंआया आदिराज पर्वतकी किसी गुफामें श्रम करके पीडित इतने कृष्णचन्द्रके दर्शनहोवें इतने सोताभया ४६। ४७ यह सम्पूर्ण वृत्तान्त नारदमुनिने भगवान्के आगे कहदियाथा कि यह वरदानहै और ऐसा इसका तेजहै ४८ कृष्णचन्द्र भागतेहुए तिसम्लेच्छ शत्रुको जहा मुचुकुंद थे तिसगुफामें प्रवेश करतेभये ४९ पश्चात् बुद्धिमानों मे श्रेष्ठ कृष्णचन्द्र तो मुचुकुंदके शिरकी तरफ लुकगये ५० और यह कालयवन राजाको देख और महामूर्ख भगवान् मानके और अपने नाशके वास्ते लात मारनेलगा जैसे पतङ्ग अग्निमें अपने नाशके वास्ते प्राप्तहोताहै ५१। ५२ ऐसे पश्चात् मुचुकुन्द राजर्षि जागके पैरकेस्पर्श और निद्राके विच्छेदसे क्रोधसे क्रोधयुक्त होताभया ५३ और देवताओंके वरको यादकरके देखने मात्रसेही कालयवन को ऐसे भस्मकरते भये जैसे सूखे वृक्षको अग्नि ५४।५५ जब राजाका तेज हटगया तब कराहै कार्य जिन्होंने ऐसे बुद्धिमान् कृष्ण बहुतदिन सोतेहुये राजासे यह वचन कहनेलगे ५६।५७ हे राजन् तू बहुत दिनसे सोयाहै नारदमुनि ने मेरे आगे सब वृत्तांत कहदियाथा और मेरा कार्य्य यह तैंने करदिया इसवास्ते तेरा कल्याणहो ५८ और मैंजाताहूं पश्चात् राजा भगवान् को छोटास्वरूप देखके बहुत काल से बदलाहुआ युग मानता भया और हे जनमेजय राजा मुचुकुन्द गोविन्दसे कहनेलगा कि तुम कौनहो और कहा से आयेहो और किस काल में मैं सोयाथा और अब कौन काल है जो जानतेहो तो कहो ५९ ऐसे सुन भगवान् कहनेलगे हे राजन् सोमवंश में नहुषका पुत्र तो ययातिहुआ और इसके चारपुत्रहुए तिन्हों में यदु बडा ६० और तीन छोटे सो यदुके वंशमें उत्पन्नहुआ वसुदेव का पुत्र वासुदेव मेरेको जानो और हे राजन् मैंने नारदसे सुनाथा त्रेतायुग में तुम सोयेथे और अब कलियुग प्राप्त होरहाहै ६१।६२ हे राजन् और फरमाओ क्या आज्ञाहै और हे राजन् जो यह

कालयवन हमाराशत्रु दग्धकिया सो अच्छी बातहुई क्योंकि इस से यह अव ध्यथा क्योंकि महादेवजीके वरसे उत्पन्नहुआथा ६३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे कह राजा गुफामे निकसता भया और पश्चात् अपना कार्य किये बुद्धिमान् कृष्णचन्द्र निकसे ६४ मुचुकुन्द राजा थोडे उत्साहवाले और थोड़े वीर्य पराक्रमवाले ऐसे छोटे छोटे मनुष्यों से व्याप्त पृथ्वी को देखकर ६५ और अपनाराज्य शत्रुओंसे दबाहुआ देखकर पश्चात् प्रीतिसे भगवान् की स्तुतिकर और परिक्रमाकर महावनमें प्रवेशहोकर तपके वास्ते हिमवान् पर्वतमें गया ६६ तहां तपमें स्थितहोके और कलेवरको त्यागके ६७ शुभकर्मों से प्राप्तहुआ स्वर्गमें आनन्द करताभया ६८ और उदारचित्तवाले धर्मात्मा ऐसे भगवान् भी उपायसे अपने शत्रुको मारके कालयवन की सेनाको प्राप्तहोते भये ६९ और वहुत से रथ घोडे हस्ती वर्म शस्त्र आयुध सेना लेकर उग्रसेन राजा को अर्पण करतेभये और ऐसे पूर्णचित्तहुये भगवान् तिस द्रव्य करके द्वारका में शोभाको प्राप्तहोते भये ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांकालयवनवधेपंचदशाधिकशतोऽध्यायः ११५॥

एकसौ सोरहका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि हे राजन् तिसके अनन्तर कृष्णचन्द्र प्रात काल नित्य नियम करके जलके समीप बैठतेभये १ और तहां किला बनानेकी इच्छा करके पृथ्वी को नापने लगे तब कुलमें जो मुख्य यादवथे सो भी भगवान् के पासगये २ और श्रेष्ठ रोहिणी नक्षत्रमें ब्राह्मणोंके पास स्वस्तिवाचन कराके और सुन्दर पुण्याह घोषों से किलाका प्रारम्भ करनेलगे ३ तब कमल सरीखे नेत्रोंवाले कृष्णचन्द्र यादवों को ऐसे वचन कहनेलगे जैसे देवताओंको इन्द्र ४ हे यादवो देखो यह भूमि देवस्थानकी तरह कल्पितकी है और इस पुरीका नाम पृथ्वीपर ऐसे विख्यातहोगा जैसे इन्द्रकी पुरी अमरावती ५ और हे यादवो अमरावती सरीखे चिह्न और स्थान चौपड़के बाजार राजमार्ग अन्तःपुर ये सब इन द्वारकामें करावेंगे और इस पुरीमें आप ऐसे आनन्द करो जैसे अमरावती में देवता ६ व हे यादवो उग्रसेनसे आदि लेकर तुम सब उग्रशत्रुओं को बाधतेहुये ७ गृहवास्तुओं को ग्रहणकरो और चौपट के बाजार कराओ ८ और राजमार्गोंको नापो

और किलावनाओ ६ और शिल्पिकर्म में मुख्य कारीगरों को ल्यावो और अ-
हलकारों को भेजो १० गृह सग्रह में तत्पर ऐसे कहेहुये यादव प्रसन्नहुये वास्तु
परिग्रह अर्थात् सामग्री इकट्ठी करतेभये ११ और सूत्रहाथमें लेकर यादवोंमें श्रेष्ठ
जन पुरका प्रमाण करतेभये और हे राजन् जनमेजय पवित्र दिनमें ब्राह्मणों का
पूजनकरके १२ विधिसे वास्तु दैवत कर्मकराते भये पश्चात् महामति गोविंदकारु
अर्थात् शिल्पीको कहतेभये कि १३ हे कारो हमारे वास्ते सुन्दर मन्दिर बनाओ
और सुन्दर चौपटका बाजार बनाओ और सुन्दर इष्टदेवताओंका मंदिरबनाओ
१४ ऐसे सुनके सम्पूर्ण शिल्पी कृष्णचन्द्रसे कहनेलगे कि हे भगवन् जैसे आप
कहोगे वैसेही होजायगा १५ पश्चात् सम्पूर्ण सामान लेकर विधिपूर्व्वक किला
और दरवाजे और स्थान ब्रह्मादि देवताओं के मंदिर सम्पूर्ण क्रमसे रचनेलगे
१६ और जल, अग्नि, इन्द्र द्रुपदोलूखल इनचारों के चार दरवाजेरचे १७ और
शुद्धाक्ष ऐंद्र भल्लाट पुष्पदन्त इन्हों के मकान यादवोंके मकनों में रचतेभये १८
पश्चात् पुरी॰ प्रवेश के अर्थ भगवान् चिंतवन करके कहनेलगे कि यादवों को
आनन्द देनेवाली पुरीको १९ प्रजापतिका पुत्र और देवताओंका कारीगर ऐसा
विश्वकर्मा अपनी बुद्धिसे स्थापन करेगा २० ऐसे भगवान् कहके और मनकर-
के ध्यान करतेहुये विश्वकर्मा के आनेके कारणसे एकांतमें देवताओंके सम्मुख
हुये २१ तब उसीकाल में शिल्पों के आचार्य बड़ी बुद्धिवाले ऐसे विश्वकर्मा
आके और भगवान् के आगे स्थितहो अंजलिबांधके वचन कहनेलगा २२ हे
विष्णो हे व्रतको धारण करनेवाले इन्द्रने आपके पास मुझे भेजाहै सो मेरेको
अपना किंकर जानके आज्ञा फरमावो २३ मैं क्याकरूं जैसे देवेश महादेवजी
मान्यहैं हे भगवन् ऐसेही तुम मान्यहो २४ हे भगवन् हेमहाभुज मेरेऊपर आप
प्रसन्नहोकर जो फरमावो वह मैं आपका किंकर वैसेही करूंगा २५ केशव भग-
वान् ऐसे विश्वकर्मा के वचन सुनके कंस के शत्रु और यादवों में श्रेष्ठ अतुल
वचन कहतेभये २६ कि हे सुरोत्तम यहां मेरा मकानबनाओ और अपनी कारी-
गरी के प्रकाशके वास्ते हे सुव्रत मेरे प्रभावके गृहोंवाली पुरी रच २७ हे विश्व-
कर्मन् जैसे स्वर्ग में अमरावती है तैसेही यहि पृथ्वीपर द्वारकापुरी रचनी योग्यहै
२८ और सभास्थान यह तुमको रचनी योग्यहै और मनुष्य मेरी लक्ष्मीको देखो
और यदुकुलकी पुरीको देखो २९।३० ऐसे कहेहुये बुद्धिमान् विश्वकर्मा देवों

के नाश करनेवाले कृष्णचन्द्रसे कहनेलगा ३१ कि हे भगवन् जैसे आपने कहा वैसेही करूंगा और हेभगवन् यह पुरी जनों से व्याप्तहोगी ३२ और विस्तारभी इसका बहुत होवेगा और वृद्धि इसकी सुन्दरहोगी और चार सागर यहां रूप धारण करके विचरेंगे ३३ हे पुरुषोत्तम यह जलोंका राजा कुछदेश छोडदेगा तो सर्वगुणोंवाली पुरी होजायगी ३४ ऐसे कहाहुआ कृष्णकृत निश्चय हुआ नदियोंके नाथ समुद्रको वचन कहनेलगे ३५ हे समुद्र जो मेरेको मानताहै तो बारह योजन पृथ्वी मेरेको और दे ३६ जब तू अवकाश देदेगा तब मेरी सेना सुखसे वासकरेगी ३७ हे राजन् जनमेजय नद और नदियोंका पति समुद्र ऐसे कृष्णचन्द्रके वचन सुनकर पवनका वेगकरके जलाशय देशको छोड़ता भया ३८ तिसके अनन्तर विश्वकर्मा प्रसन्न होकर और पुरीके वास्तुको देखकर और सागरसे गोविन्दका सत्कार देखके ३९ विश्वकर्मा यदुनन्दन कृष्णचन्द्रसे वचन कहनेलगा हे गोविन्द आजहीसे इस में वासकरो ४० तुमने मनसेही यह पुरी रचदईहै इसवास्ते हे भगवन थोडेही काल में गृहोंवाली होजायगी ४१ सुन्दर दरवाजा, सुन्दर तोरण, ऊंची सुन्दर अटारी, आपके अंत पुर इन्होंकरके सहित अच्छीपुरी रचूंगा ४२ तिसके अनन्तर मनकेही यत्नसे विश्वकर्माने यह वैष्णवी पुरी अच्छी प्रकारसे भूपित रची ४३ खाई से रक्षित और अष्टप्रकार तोरणों से युक्त ४४ सुन्दर स्त्री, पुरुष वणिक इन्हों से भूपित अनेकप्रकार की दुकानों से युक्त ४५ अनेक पोशाय सुन्दर जलोंके कुण्ड बाग इन्हों से युक्त स्त्रीकीतरह भूपित ४६ सुन्दर चौपटोंवाली उत्तम गृहोंसेयुक्त हजारहों गलियोंसेयुक्त ४७ चांदीकी सड़कोंसे भूपित समुद्रको ऐसे भूपित करतीहुई जैसे स्वर्गको अमरावती ४८ पृथ्वीपरके विषे सम्पूर्ण रत्नोंका खजानारूप देवताओं का सुन्दर सेन चमत्कृत्तियोंके क्षोभ करनेवाली और अप्रकाश आकाशको महलोंसे प्रकाश करती हुई ४९।५० जनोंके शब्दोंसे नादित समुद्रके जलसे ठंढी ५१ पवनकरके सेवित सुन्दर अनूप उपवन इन्होंकरके भूपित जनोंकरके भूपित ताराओं से आकाश जैसेहो तैसे भूपित ५२ सूर्य्यकेसी कांतिवाला सुवर्ण केमे क्लिासे युक्त भन्दे शब्दवाले सुवर्ण सम्पूर्ण घरों से शोभित ५३ सफेद मेघकेसी कांतिवाले राजद्वारोंसे शोभित बड़े २ मार्गोंसे भूपित ५४ ऐसी उत्तमपुरी को विश्वकर्मा रचके भगवान् के अर्पण करतेभये ५५ ऐसी पुरीको प्रकाश करतेहुये कृष्णचन्द्र गये

वास करतेभये जैसे आकाशको प्रकाश करताहुआ चन्द्रमा इन्द्रकी पुरीकीतरह विश्वकर्मा द्वारका को रचके गोविन्द का पूजाहुआ स्वर्ग में जाताभया ५६ पश्चात् कृष्णचन्द्र की यह बुद्धिहुई कि इनजनों को धनोंके समूह से तृप्तकरूंगा ५७ ऐसे कहके शंखको बुलातेभये ५८ सो खजानोंका पति शंखगुह्यक केशव का बुलाना जानके द्वारकाके पति कृष्णचन्द्रके समीपआ ५९ और अंजलि बांध के नम्रहुआ कृष्णचन्द्र को ऐसे विज्ञापन करताभया जैसे कुबेर को ६० हे भगवन् देवताओं के मालिकको मुझे क्याकरना उचितहै फरमाओ और हे भगवन् जो कार्य मुझे करना चाहिये तिसमें योजनकरो ६१ ऐसे सुनके भगवान् शंखगुह्यक को कहनेलगे कि हे गुह्यक इसपुरी में जितने निर्धनहैं तिन्हों को धनसों पूर्ण कर ६२ क्योंकि भूखा दुबला मलिन ऐसे पुरुषों को मैं देखने की इच्छा नहीं करता और जो निर्धन मनुष्य इसनगरी में देहदेह ऐसा वचन कहते हुयों की इच्छा नहीं करता ६३ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् खजानों का अधिपति शंख नाम गुह्यक ऐसी भगवान्की आज्ञाको शिरसे ग्रहणकरके और द्वारावती में खजानों को बुलाकर यह आज्ञादई कि द्वारका में घरघर ६४ धनकी वर्षाकरो हे जनमेजय यह सुन निधियों ने ऐसी वर्षाकरी कि कोई भाग्यहीन जन नहीं रहा ६५ ऐसे द्वारावती में मलिन और निर्धन नहीं रहा ६६ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् वायुको बुलाते भये तब वायु आनके एकान्तमें बैठे हुये भगवान्को ६७ प्रणाम करके कहनेलगा कि हे भगवन् जैसे देवताओंका दूतहूं तैसे तुम्हाराहूं फरमावो मुझे क्या करना उचित है ६८ ऐसे पवनके वचन सुन पुरुषोत्तम कृष्णचन्द्र जगत्के प्राणरूप आगे स्थितहुये मारुत को कहने लगे ६९। ७० हे मारुत तू इन्द्रादि देवताओं से मान्य है इस वास्ते जा और देवताओं से सुधर्मानाम सभा ला ७१ हे अनघ अर्थात् पाप रहित ये हजारहों धार्मिक यादव तिससभा में प्रवेश होवेंगे परन्तु कृत्रिमही होवे ७२ वह अक्षय रमणीक यथेच्छ चलनेवाली कामरूपिणी ऐसी सभा यादवों को ऐसे धारण करेगी जैसे सम्पूर्ण देवताओं को धारण करती है ७३ कृष्ण चन्द्रके ऐसे वचन ग्रहणकर अपनेही कैसी है गति जिसकी ऐसा मारुत स्वर्ग में प्राप्तहुआ ७४ तहां सम्पूर्ण देवताओं का सत्कार और कृष्णचन्द्र का वचन निवेदनकर और सुधर्मा सभाको लेकर फिर पृथ्वीपर आकर ७५ पश्चात् शोभन धर्मवाले कृ-

पणचन्द को सुधर्मानाम देवताओं की सभा देकर वायु अन्तर्द्धान होगया ७६ व केशवने यह द्वारकाके मध्यमें स्थापन करदई और यदुसे आदिलेकर सम्पूर्ण यादव तिससभा में ऐसे स्थित हुये जैसे स्वर्ग में देवता ७७ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् स्वर्ग और भूमि और जल इन्हीं के द्रव्यों से भगवान् द्वारकाको ऐसे भूषित करते भये जैसे स्त्रीको भूषित करते हैं ७८ पश्चात् कृष्णचन्द्र मर्यादा श्रेणी सेनापति इन्होंको भिन्न भिन्न बनाते भये ७९ तहां उग्रसेन राजा बनाया और काश्यपुरोहित बनाया और अनाधृष्टि सेनाका पति बनाया और तहां विकद्रुमंत्री बनाया ८० व दशवृद्धोंको यादवों का रक्षक स्थापन करते भये और दारुक को सारथि बनाया ८१ व योधावों में श्रेष्ठ सात्यकि को योधा बनाया ८२ ऐसे अपने २ अधिकारों में स्थापनकरके तिसपुरी में यादवों सहित सर्व्वलोकों का रचनेवाला कृष्णचन्द्र पृथ्वीतलपर आनंद करतेभये ८३ पश्चात् रेवतराजाकी कन्या शीलसे युक्त रेवतीको बलदेवजी व्याहतेभये ८४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांद्वारकानिर्माणेषोडशाधिकशततमोऽध्यायः॥११६॥

एकसौ सत्रहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इसी समयमें प्रतापवान् जरासन्ध शिशुपाल के प्यारकी इच्छा करके १ रुक्मिणी के साथ शिशुपाल का व्याह हो ऐसे कहके युद्ध में इन्द्रके समान सैकड़ों २ मायाका जाननेवाला ऐसे दन्तवक्रका पुत्र सुवल्क वासुदेव पौंड्रकका महाबलपुत्र सुदेव एकलव्यका पुत्र वीर्यवान् पाण्डव राजा का पुत्र वेणुदारि अंशुमान् क्राथ श्रुतकौथावी का पति पट्टुस और काशीका अधिपति पद्दुम इन सम्पूर्ण राजाओंको जरासन्ध भेजता गया ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ ऐसे सुन जनमेजय ने प्रश्न किया कि हे भगवन् वेदके जाननेवालों में श्रेष्ठ रुक्मी राजा किस देशमें हुआ और किसके वंशमें हुआ यह वर्णनकरो ९ ऐसे सुन वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजन् राजर्षि यादवका पुत्र विदर्भहुआ सो विन्ध्यके दक्षिण पसवाड़े में विदर्भदेशोंको बसाता गया १० और तिस महात्माके वीर्य्य से सम्पन्न और पृथक् वंशका धारण करनेवाले ऐसे क्रथ कैशिकने आदिलेकर पुत्रहुए ११ हे राजन् भीमके वंशमें तो वृष्णिहुआ और क्रथके वंशमें अंशुमान्हुआ और कैशिकके भीष्मकहुआ १२

तिसको हिरण्यरोमा कहते हैं सो भीष्मक कुण्डिनपुर में स्थित हुआ दक्षिण दिशाको शिक्षा करताभया १३ व हे राजन् तिसके रुक्मी पुत्रहुआ और रुक्मिणी पुत्रीहुई जो महाबल रुक्मी कल्पवृक्षसे दिव्य अस्त्रोंको प्राप्तहुआ १४ और जमदग्निके पुत्र परशुराम से ब्रह्मास्त्रको प्राप्त होताभया और जो रुक्मी अद्भुत कर्म्मवाले कृष्णचन्द्रके साथ वैर करताभया १५ व भीष्मक के अतिरूपवती रुक्मिणी नाम कन्या होतीभई और तिस रुक्मिणी के गुण सुनने से बुद्धिमान् कृष्णचन्द्र रुक्मिणी की वाञ्छा करतेभये १६ व रुक्मिणी कृष्णचन्द्रके गुणों को सुनके कृष्णचन्द्रकी वाञ्छा करतीभई १७ व रुक्मी अपनीबहन रुक्मिणीको कंस के वैरको याद करताहुआ मागतेहुए कृष्णचन्द्रको नहीं देताभया १८ जरासन्ध महाबल सुनीथ चैद्यके वास्ते भीष्मकसे रुक्मिणीको मागताभया १९ चेदिराज वसुके बृहद्रथ हुआ जिसने पहले मगधमें गिरिव्रजरचा २० व तिसके वंशमें जरासधहुआ और वसुही के वंशमें चेदिराज दमघोष हुआ २१ और दमघोष के बड़े पराक्रमवाले पांच पुत्र वसुदेवकी बहन श्रुतश्रवा में जन्मतेभये २२ व शिशुपाल दशग्रीव रैभ्य उपदिशवली ये पांचों अस्त्रविद्यामें कुशल व महापराक्रमी होतेभये २३ सुनीथ अपने पुत्रको जरासन्धको देताभया और जरासन्ध इसको पुत्रकी तरह पालताभया २४ व जब जरासन्ध का जमाई कंस युद्धमें कृष्ण ने मारदिया तब कृष्णकेसाथ और यादवों के साथ जरासन्ध का महावैर होगया जब ऐसे वैरहोगया २५। २६ तब जरासध शिशुपालकेवास्ते भीष्मक से रुक्मिणी को मागनेलगा २७ तब भीष्मक ने देना अङ्गीकार करलिया २८ पश्चात् महाबल जरासन्ध शिशुपाल को लेकर और दन्तवक्र मिथ्या वासुदेव अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग देशकाराजा इन राजाओं सहित विदर्भदेशमें कुण्डिनपुर के समीप जब पहुंचे २९ तब रुक्मी राजाओं के सम्मुख जाके और पूजन करके पुरीमें प्रवेश करातेभये ३० व भूवाके प्यारकेवास्ते बलदेव कृष्ण और यादव भी रथ सेना लेकर जातेभये ३१ तब इन्हों को क्रथ कैशिक भर्त्ता यथाविधि पूजन करके पुर से बाहर वास कारादिया ३२ जब अगले दिन विवाहकी आदि में मङ्गलाचरण करके बहुत सेनासेयुक्त रथमें बैठ इन्द्रके मन्दिर में इन्द्राणी का पूजन करने को चली ३३। ३४ तब कृष्णचन्द्र साक्षात् लक्ष्मीस्वरूप रूपसे सम्पन्न ३५ अग्नि की शिखारूप पृथ्वी को प्राप्तहुई माया पृथ्वी कीसी गम्भीर ३६ चन्द्रमाकी कि-

रणों कीसी सौम्य लक्ष्मी की तरह मुख्य देवांगनाओं से श्रेष्ठ ३७ श्याम और स्वच्छ सुन्दर मोटे नेत्रोंवाली, लाल होठोंवाली, पूर्ण चन्द्रमाकीसी मुखवाली, लाल और ऊंचे नखोंवाली ३८ सुन्दर भ्रुकुटीवाली, नीला और वलदार केशोंवाली ३९ अत्यन्त सुन्दर मोटे श्रोणि और स्तनोंवाली और पैने सुपेद बराबर ऐसे दांतों से भूषित ४० व रूप यश शोभासे सबमें मुख्य पीले रेशमी वस्त्रोंको धारण किये ऐसी रुक्मिणी को देखकर कृष्णचन्द्र के काम बढा और रुक्मिणी में मन ऐसे लगताभया साकल्य से अग्निकी शिखा ४१ पश्चात् महाबल कृष्णचन्द्र वलदेवजी और यादव इन्हों से सलाह करके रुक्मिणी के हरने में बुद्धि करतेभये ४२ पश्चात् जब पूजन करके रुक्मिणी भवन से निकसी तब कृष्णचन्द्र इसको फुरती से रथ में बैठाय रथको दौड़ालेगये ४३ व कोई शत्रु जो पश्चात् दौडे तिन्हों को वलदेवजी वृक्ष उपाड २ मारनेलगे इतनेही में अनेक प्रकारके ध्वजाओंवाले रथ ४४ हस्ती घोडा इन्होंकरके सहित सपूर्ण यादव वलदेवजीके चारों तर्फ आगये ४५ व कृष्णचन्द्र रुक्मिणी को लेकर पुरी में प्राप्तहोगया और युद्धका सम्पूर्णभार युयुधान ४६ अक्रूर, निपृथि, गद, कृतवर्म्मा, चक्रदेव, सुदेव सारण ४७। ४८ विकात, भंगकार, विदूरथ, उग्रसेन का पुत्र कंक, शतद्युम्न ४९ राजाधिदेव, मृदर, प्रसेन, चित्रक, अरिदात, वृहद्दुर्ग, श्वफल्क, सत्यक, पृथु ५० इन सम्पूर्ण यादवोंपर और मुख्य यादवोंपर छोड़ द्वारकामें जातेभये ५१ पश्चात् दंतवक्र जरासन्ध शिशुपाल ये कवच धारणकरके क्रोधहुये कृष्णचन्द्र को मारने की इच्छाकरके पुरसे निकसतेभये ५२ व अङ्ग वङ्ग कलिंग इन्होंसमेत और पौंड्र और शूरवीर भ्राताओं करके सहित शिशुपाल आया ५३ इन्होंको देखकर शूरवीर यादव भी वलदेवजी आगे लेकर ऐसे आये जैसे इन्द्र को आगे करके मारुत ५४ पश्चात् वेगसे आतेहुये जरासन्ध को युयुधान छःबाणों से बींधता भया ५५ और दंतवक्र को अक्रूर नौबाणों से बींधताभया पश्चात् दशबाणों से दंतवक्र अक्रूरको बींधताभया ५६ व विपृथु शिशुपाल को सातबाणों से बींधता भया और प्रतापवान् शिशुपाल आठबाणों से निपृथुको बींधतागया ५७ और गवेषण चैद्यको छः बाणों से बींधताभया और अनिदृत को आठबाणों से वृहद् दुर्ग को पांचबाणों से ५८ और शिशुपाल इन तीनहों को पांचपांच बाणों से बींधता भया और नाराचों से विपृथु के चारघोड़ों को मारताभया ५९ पश्चात्

बृहद्दुर्ग का भाला से शिर छेदन करताभया गवेषण के सारथि को धर्मराज की पुरी में भेजताभया ६० पश्चात् महावल विपृथु जव अपने रथके घोडों को मरा देखताहुआ तव बृहद्दुर्ग के रथपर सवार होताभया ६१ पश्चात् विपृथु के सारथि को और गवेषण के रथको वेगसे रोकताभया ६२ पश्चात् यादव कुपित होकर शिशुपाल पर शरोंकी वर्षाकरतेभये ६३ चक्रदेव एकवाणसे दन्तवक्रके हृदयमें बींधतेभये और पटुसको पाचवाणों से बींधताभया ६४ पश्चात् शिशुपाल और पटुस दशवाणों से विपृथु को भेदन करता भया पश्चात् विपृथु दूरसे विदूरथको पाच वाणों से भेदन करताभया और विदूरथ भी छ• वाणों से विपृथु को भेदन करताभया ६५। ६६ पश्चात् तीस वाणों से विपृथु फिर तिस महावल विदूरथ को भेदन करता भया पश्चात् कृतवर्मा राजपुत्र को तीन शरों से भेदन करके ६७ और तिस सारथि को और ऊची ध्वजा को छेदन करता भया और पौण्ड्र कुपित होके छ वाणोंसे छेदन करताभया ६८ कृतवर्माको भेदन करताभया और भालासे कृतवर्माके धनुषको छेदन करताभया और निर्वृत्तशत्रु कालिङ्ग को नवशरों से बींधताभया ६९ और कलिंगज तोमर शस्त्रसे निर्वृत्त शत्रु के कायामें भेदन करताभया पश्चात् वीर्यवान् कक्क हस्तीपर सवार होकर पश्चात् अंगराजाके हस्तीको प्राप्तहोकर तोमरसे अङ्गको भेदन करताभया ७० पश्चात् अङ्ग शरों से कक्को भेदन करताभया और चित्रक श्वफल्क महावल सत्यक ये संम्पूर्ण कलिंगकी सेनाको तीक्ष्णवाणों से भेदन करतेभये ७१ पश्चात् वलदेवजी वृक्षसे वंगराजके हस्तीको मारके और वगराजको मारतेभये ७२ पश्चात् वीर्यवान् वलदेवजी धनुषलेकर और पैनेवाणोंसे वहुतसे कैशिकोंको मारतेभये ७३ पश्चात् छ वाणोंसे शिशुपालके योधाओं को मारके जरासधके सौपुरुषोंको मारताभया ७४ और इन्होंको मारके जरासंधके सम्मुख प्राप्तहुआ तव जरासध ने आतेहुये वलदेवजी को देखकर तीनवाण मारे ७५ पश्चात् क्रोधहुये वलदेवजी ने आठवाणोंसे जरासंधको भेदन करदिया और भालासे सुवर्णकीध्वजा छेदन करदी ७६ हे जनमेजय तिन्हों का देवता और असुरों की तुल्य घोरयुद्ध होता भया आपसमें शरोंकी वर्षा छोड़तेभये ७७ और सहार करतेहुये हजारहों हाथियोंवाले तो हाथियोंवालों के साथ और रथ रथों के साथ सवार सवारोंके साथ ७८ प्यादे प्यादोंके साथ ये सम्पूर्ण आपसमें अङ्गों को छेदन करतेहुये युद्ध में

विचरतेहुये ७६ और कवचोंपर गेरीहुई तलवारोंका महान् शब्द होताभया और पड़तेहुये शरोंका ऐसा शब्द होताभया जैसे पड़तेहुये पक्षियोंका शब्द ८० व तिस युद्धमें भेरी शङ्ख मृदंग वेणु इन्होंकी ध्वनिको शूरवीरोंके शस्त्रोंका शब्द और धनुषकी ज्याका शब्द आच्छादन करताभया ८१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणि विष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीहरणेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौअठारह का अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय पश्चात् रुक्मी जोहैं कृष्णचन्द्र की हरीहुई रुक्मिणी को सुनके और क्रुद्धहुआ भीष्मक राजा आगे ऐसे प्रतिज्ञा करताभया १ कि हे पिता जो गोविंद को नहीं मारके और रुक्मिणीको नहीं लेआऊंगा तो कुंडिनपुरमें प्रवेश नहीं होऊंगा २ ऐसे कहके शूरवीर रुक्मी रथमें बैठ और शस्त्रलेकर और बहुत सेनालेकर वेगसे जाताभया ३ और तिस के पीछे दक्षिणपथवासी क्राथ, अंशुमान्, श्रुतर्वा, वीर्यवान् वेणुदारि ये ४ और भीष्मकके पुत्र रथों में बैठ २ जातेभये और क्रथ कैशिक से आदिलेकर सम्पूर्ण महारथ जातेगये ५ ये सम्पूर्ण दूर नर्मदानदीपर जाके और क्रुद्धहुये रुक्मिणी सहित भगवान् को देखतेभये ६ पश्चात मद करके युक्त रुक्मी सेनाको स्थापन कर दैरथ युद्धकी लालसा करताहुआ भगवान्के सम्मुखगया ७ और चौंसठ ती क्ष्णवाणों से गोविंद को वींधताभया और जनार्दन भगवान् सत्तवाणोंसे रुक्मी को वींधतेभये ८ और महाबल भगवान् इसकी ध्वजा काटके और इसके सारथि का शिर काटतेभये ९ पश्चात् ऐसे रुक्मी को कष्टमें प्राप्तहुआ जानके और सम्पूर्ण दाक्षिणात्यराजा मारनेकी इच्छासे कृष्णचन्द्रके चारोंतर्फ होगये १० और अंशुमान् तो नौशरोंसे कृष्णचन्द्र को वींधताभया और श्रुतर्वापांचों से और वेणुदारि सातोंसे ११ पश्चात् कृष्णचन्द्रने अंशुमान्का हृदय भेदन करदिया तब यह पीड़ित होकर रथमें बैठगया १२ पश्चात् चार शरों से श्रुतर्वा के अश्वभेदन करदिये पश्चात् कृष्णचन्द्र वेणुदारि की भुजाको छेदनकरके और इसकी दाहनी भुजाको तोड़ताभया १३ और तैसेही सात शरोंसे श्रुतर्वाको भेदन करदिया तब यह व्याकुल होकर बैठगया १४ पश्चात् क्रथकैशिकों में मुख्य रथों में बैठ २ शरों की वर्षा करतेहुये कृष्णचन्द्रके सम्मुख जातेभये १५ तब जनार्दन भगवान् को

युद्धमें वाणोंसे वाणकाट और तिनको मारतेभये १६ पश्चात् महावल कृष्णचन्द्र और क्रोधसे आयेहुये चौंसठ जनोंको मारतेभये १७ पश्चात् रुक्मी अपनी सेना को व्याकुल देख और क्रोधके वशहुआ तीक्ष्ण पांचवाणों करके केशवके हृदय को भेदन करताभया १८ और तीनशरों से सारथिको भेदन करदिया और एक वाणसे ध्वज छेदन करदी १९ पश्चात् केशव भगवान् भी क्रुद्धहोकर साठिवाणों से रुक्मीको वींधतेभये और इसके धनुष को छेदन करतेभये २० इसके अनतर रुक्मी और धनुषको लेकर कृष्णचन्द्र के मारनेकी इच्छाकरके दिव्यशस्त्रों को निकासताभया २१ फिर महावल कृष्णचन्द्र अस्त्रों से अस्त्र निवारण करके फिर तिसके धनुषको छेदन करतेभये २२ पश्चात् यह शूरवीर रुक्मी छिन्नहुआहै धनुषरथ जिसका ऐसाहुआ खड्ग लेकर रथसे ऐसेपडा जैसे गरुड २३ पश्चात् ऐसे आयेहुये रुक्मी को भगवान् देखकर तिसके खड्गको छेदनकर और कुपितहुये तीन वाणोंसे इसके हृदयको भेदन करतेभये २४ और सो महाबाहु सञ्ज्ञा से रहित और मूर्च्छित हुआ पृथ्वी पर शब्द करताहुआ ऐसे पडताभया जैसे वज्रसेहता पर्व्वत २५ पश्चात् कृष्णचन्द्र सम्पूर्ण राजाओं को फिर भेदन करता भया पश्चात् ये सम्पूर्ण राजा रुक्मीको व्यथित देखकर दौड़गये २६ और रुक्मिणी पृथ्वीपर पडेहुये भ्राताको व्याकुल देख भ्राताके जीने की इच्छा करतीहुई भर्त्ता कृष्णचन्द्रके पैरों में गिरगई २७ पश्चात् भगवान् तिसको उठाय और मिलके आश्वना कराताभया तिसके अनन्तर रुक्मीको अभयदेकर अपनी पुरी में जातेभये २८ और यादव भी जरासंधको और अन्य राजाओं को जीतकर बलदेवजी को आगे कर प्रसन्नहुये द्वारकाको जातेभये २९ जब भगवान् चलेगये तब श्रुतर्वा युद्धभूमि में प्राप्तहोके और रुक्मीको अपने रथमें बैठाय अपने पुरमें जाताभया ३० पश्चात् वीर्य मदसेयुक्त रुक्मी बहिनको नहीं लाकर हीन प्रतिज्ञा वालाहुआ कुंडिनपुरमें प्रवेशहोने की इच्छा नहीं करताभया ३१ पश्चात् विदर्भ देशों में यह रुक्मी बसने के वास्ते और पुर रचताभया सो पृथ्वी पर भोजकट नाम से विख्यात हुआ ३२ और भीष्मक राजा कुंडिनपुरमें बसताभया ३३ पश्चात् यादवों की सेना सहित कृष्णचन्द्र द्वारकामें प्राप्तहोकर विधिपूर्वक रुक्मिणी से विवाह करतेभये ३४ और पश्चात् तिस रुक्मिणी के साथ कृष्णचन्द्र ऐसे रमण करतेभये जैसे रामचन्द्रजी सीता के साथ और इन्द्र इन्द्राणी के साथ ३५

पश्चात् रूपशील गुणों से युक्त और पतिव्रता ऐसी रुक्मिणी भगवान् की बड़ी प्यारी ३६ और तिसमें भगवान् इन महारथ दशपुत्र उत्पन्न करतेभये चारुदेष्ण, सुदेष्ण, प्रद्युम्न ३७ सुषेण, चारुगुप्त, चारुबाहु, चारुविंद, सुचारु, भद्रचारु ३८ चारु ये पुत्र उत्पन्नकिये हैं और चारुमती नाम कन्या उत्पन्नकी ३६ और इससे अन्य सम्पूर्ण गुणोंवाली और भी सात पटरानी व्याहते भये तिनको गिनाते हैं ४० कालिंदी, मित्रविंदा, सत्या, नाग्नजिती, जाम्बवान् की पुत्री रोहिणी ४१ मद्रराजकीकन्या भद्रलोचना और शैब्यकी पुत्री लक्ष्मणा ४२ और अद्भुत पराक्रम वाले कृष्णचन्द्र और भी सोलह हजार स्त्रियों को विवाहते भये और तिन सम्पूर्णों को वरारु भेजताभया ४३ और सम्पूर्ण वस्त्र आभूषण भोग इन्होंसे युक्त जो स्त्री हैं तिन्हों के विषे सम्पूर्ण शस्त्र अस्त्रों में कुशल महारथ बलवान् यज्ञ करनेवाले पुण्यकर्मवाले महाभाग ऐसे हजारहों पुत्र उत्पन्नकरतेभये ४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीहरणेप्रद्युम्नादिगणोत्पत्तिकथनोऽध्यायः ११८

एकसौउन्नीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे जनमेजय जब बहुतसा काल व्यतीत हो गया तब शत्रुओं को नाश करनेवाला रुक्मी पुत्री का स्वयम्वर करताभया १ तहां रुक्मी के बुलायेहुये राजा और राजाओं के पुत्र अपनी २ सम्पत् लेकर अनेक दिशाओं से आतेभये २ तहां और कुमारों में युक्त प्रद्युम्नभी आया सो तिसको कन्या देखके वरने की वांछा करती भई ३ और तिस सुन्दर नेत्रोंवाली कन्याकी वांछा प्रद्युम्न करताभया सो रुक्मी की कन्या विदर्भ में होनेवाली शुभांगी नामसे विख्यात होती भई ४ स्वयम्वरमें अपने २ सिंहासनोंपर जब सब राजा बैठगये तब यह वैदर्भी शत्रुओं को नाश करनेवाले प्रद्युम्नको वरतीभई ५ सो हे राजन् यह प्रद्युम्न सम्पूर्ण अस्त्रों में कुशल सिंहके से शरीरवाला जवान अत्यन्त रूपवाला ऐसा कृष्णचन्द्रका पुत्र होताभया ६ और वय रूप गुणों से युक्त वह राजपुत्री प्रद्युम्नपर आसक्त होतीभई ७ जब स्वयम्वर होलिया तब सम्पूर्ण राजा तो अपने २ पुरों गे जाते भये और प्रद्युम्न वैदर्भीको लेकर द्वारका में जाताभया ८ और नलकी तरह रमण करताहुआ प्रद्युम्न तिस शुभांगी वधू में कर्मों में सम्पूर्णोंसे प्रधान और अनिरुद्ध नामसे विख्यात ऐसे पुत्रको उत्पन्न

करताभया हे राजन् जब यह अनिरुद्ध धनुर्वेद और वेद इनका जाननेवाला ९ । १० और वयसे युक्त अर्थात् जवान ऐसा हुआ तब इस रुक्मीकी पोती सुवर्णकीसी कान्तिवाली रुक्मवतीको स्त्री के वास्ते मागता भया ११ पश्चात् हे राजन् यह बुद्धिमान् रुक्मी गुणों सहित अनिरुद्ध को जानके और प्रद्युम्न रुक्मिणी के प्यारकी इच्छाकरके कृष्णचन्द्रके वैरको त्याग और प्रसन्नहोकर कहनेलगा कि कन्यादूंगा १२ । १३ पश्चात् रुक्मिणीके सहित और पुत्र और बलदेवजी और अनेक यादव इनके साथ भगवान् विदर्भ देशों को जाते भये १४ और अनेक रुक्मिणीकी जातिवाले और मित्र येभी सम्पूर्ण आतेभये १५ पश्चात् हे राजन् शुभतिथि और शुभनक्षत्रमें परम उत्साहवाला अनिरुद्धका विवाह होताभया १६ हे राजन् जनमेजय जब वैदर्भी के साथ अनिरुद्धका विवाह होगया तब सम्पूर्ण वैदर्भ और यादवोंके परम उत्साह होताभया १७ और तहां विदर्भ पूज्यमान वृष्णि ऐसे रमण करतेभये जैसे स्वर्ग में देवता पश्चात् अश्मक देशोंका अधिपति उदार बुद्धिवाला वेणुदारि १८ और आर्क्ष, श्रुतर्वा, चाणूर, क्राथ, अंशुमान् और कलिंगोंका अधिपति जयत्सेन १९ और ऋषिकका अधिपति पाण्ड्यराजा ये सम्पूर्ण राजा और दाक्षिणात्यराजा ये सम्पूर्ण सलाहकरके २० और एकातमें प्रभु रुक्मी को वचन कहते भये कि हे राजन् तुम पाशों में कुशलहो और हमभी खेलनेकी इच्छा करते हैं और इस बलदेवको भी जूवा प्याराहै और निपुण है नहीं इसवास्ते तुम्हारेको आगे करके हम इसके जीतने की इच्छा करते हैं ऐसे राजाओंके वचनसुन रुक्मी भी मानताभया २१ । २२ पश्चात् सुवर्णके थम्भोंवाली और फूलोंसे भूषित और चन्दनके जलसे छिडकी हुई ऐसी सुन्दर सभामें सम्पूर्ण शृङ्गार कियेहुये और जीतनेकी इच्छा करतेहुये ऐसे राजा प्रवेशहो अपने २ आसनोंपर बैठतेभये २३ । २४ पश्चात् जब इनकपटियोंसे बलदेवजी बुलायाहुआ प्रसन्नहुआ कहनेलगा अच्छा खेलेंगे २५ तब छलसे जीतनेकी वाञ्छा करतेहुये दाक्षिणात्य राजा हजारहों मणिमोती सुवर्ण लातेभये २६ और तिन्होंकी रतिका नाश करनेवाला और असत्य और घोरदुर्मतियों के नाशका करनेवाला ऐसा जूवा प्रवृत्त होताभया २७ जब आदि में रुक्मी और बलदेवजीका जूवाहुआ तब बलदेवजी ने सुवर्णका दशहजार निष्क लगाया २८ तब रुक्मी ने बलदेवजी को जीतलिया फिरभी बलदेवजी ने उत-

नाही सुवर्ण लगाया सोभी रुक्मीने जीतलिया.२९ पश्चात् वलदेवजी एककोटि सुवर्ण रुक्मीसे जीतताभया ३० और जीतलिया ऐसे कहताहुआ और हँसता हुआ वलदेवजी के हल मूसलकी निन्दा करताभया. ३१ .पश्चात् भविष्यद्वंश श्रीमान् वलदेव जीतलिया.ऐसे झूठेही रुक्मी ने कहदिया ३२ पश्चात् कलिङ्ग राजभी यह वार्त्ता सुनकर और दांतों को दिखाताहुआ हँसताभया ३३ तीक्ष्ण वचनों से वींधेहुये पराजय निमित्त के वचन सुनकर धर्म्म को जाननेवाले और क्रोध को जीतनेवाले ऐसे वलदेवजी क्रोधमें भरगये ३४ पश्चात् धीरजसेमन को रोककर वचन कहनेलगे कि हे राजन् दशकोटि हजार का मेरा एक जूवा है इसको ग्रहणकर और पाशोंकोगेर ३५ ऐसे रुक्मी से वचन कहनेलगे पश्चात् कुछ भी वचन नहीं कहता हुआ और प्रसन्न हुआ रुक्मी पाशोंको गेरताभया ३६ । ३७ जब वारवार पाशेगेरलिये तब वलदेवजीने कहा कि राजा जीतलिया तब रुक्मी ने वलदेवजी से कहा कि नहींजीता ,३८ पश्चात् वलदेवजी मन को रोककर कुछ भी नहीं वोले पश्चात् हँसताहुआ रुक्मीने फिर वलदेवजी से कहा कि जीतलिया है ३९ पश्चात् वलदेवजी राजासे ऐसा कुटिल वचन सुनके फिर क्रोधमें प्रविष्टहो कुछ भी नहीं कहतेभये ४० तिसके अनन्तर महात्मा वलदेव जी के क्रोध उत्पन्न करती हुई आकाशवाणी कहनेलगी कि यह श्रीमान् वल-देवजी सत्य कहतेहैं कि धर्म्म से रुक्मी जीतलिया ऐसे आकाश से सुभाषित वचन सुनिके ४१ सुवर्णकी सी ऊरुओं से रुक्मी को ताड़ना करनेलगा ४२ व पृथ्वीपर पीसनेलगा पश्चात् कुपितहुआ वलदेवजी ने क्रोधमें कलिंगदेश के राजाका दांत तोड़दिया ४३ । ४४ व तोड़के सिंहकीसी नाद करताभया पश्चात् खड्ग लेकर सम्पूर्ण राजाओं को त्रास करताभया पश्चात् सुवर्ण के स्तंभ सभासे उपाड़कर और गजेन्द्रकी तरह जहां तहां खैंचता हुआ सभासे निकसताभया ४५ । ४६ पश्चात् क्रथ कैशिक और रुक्मी इन्होंको मारके और शत्रुओं को ऐसे त्रास देताभया जैसे मृगोंको सिंह ४७ पश्चात् जनोंसेयुक्त सेनास्थान में जायके सम्पूर्ण वृत्तांत कृष्णचन्द्र के आगे कहताभया ४८ कृष्णचन्द्र यह सुनके कुछभी नहीं कहनेलगे ४९ और रुक्मिणी प्रियभ्राताको मराहुआ सुनके और क्रोधमें आत्मा को रोंक आसूगेरनीगई ५० । ५१ और शोच करनेलगी कि अहो भग-वान् ने भी यह नहींमारा और जुआरी वलदेव ने आक्रोशकर मारदिया ५२ जब

यह महावीर्य्यवाला भीष्मकका पुत्र राजा मारदिया तब सम्पूर्ण वृष्णि अन्धक विमना होतेभये ५३ हे भरतर्षभ यह रुक्मी का मरना तेरे आगे कहदिया और वृष्णियों के साथ वैर कहदिया है ५४ और हे महाराज पश्चात् ये वृष्णि संपूर्ण धन लेकर और वलदेव कृष्णको प्राप्तकर द्वारावती पुरीमें जातेभये ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायारुक्मिवधे
ऊनविंशत्यधिकशतोऽध्याय ११९ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन फिर जनमेजयने पूछा कि हे विप्रर्षे पृथ्वीको धारण करनेवाले शेष जी अवतार १ ऐसे बुद्धिमान् वलदेवजी के और माहात्म्य सुनने की इच्छाकरूं हूं पुराण को जाननेवाले महात्मा तिस वलदेवजी को तेजकी राशि कहते हैं २ ऐसे सुन वैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् पुराणों में यह वलदेव नागराजा कहा है ३ और धरणीधर तेज के खजाना पुरुषोत्तम योग के आचार्य महावीर्य वेदमत्र में मुख्य जो ऐसे अनन्त भगवान् गदायुद्धमें जरासन्धको जीतते भये और मारते न भये ४।५ और हे राजन् और बहुत से राजा जरासन्ध के साथ जिसने रणमें जीतलिये ६ और जिस वलदेवजी ने दशहजार हस्तियों के सा पराक्रमवाले भीमसेन वारम्बार वाहुयुद्ध में जीतलिया ७ हे राजन् हस्तिनापुर में जांववतीका पुत्र सांब जब दुर्य्योधनकी कन्या को हरनेलगा तब राजाओं ने चारोंतर्फ से घेरलिया तब सांबको रुकेहुयेको वलदेवजी परन्तु आयाहुआ वलदेव सांबको नहीं प्राप्तहोताभया ८।९ तब क्रोधहोकर यह वलवान् बहुत अद्भुत करताभया १० सो अद्भुतही कहते हैं ब्रह्मदण्ड से अभिमन्त्रित लांगलास्त्रको वलवान् वलदेवजी किला के नीचे लगाके और खैंचके कौरव के नगरको गङ्गा जी में गेरने की इच्छा करनेलगे ११।१२ पश्चात् दुर्य्योधन राजा पुरको घूर्णित देखके और भार्या सहित सांबको पुरसे निकालताभया १३ जबहीं से हे राजन् गङ्गाजी के सम्मुख अबभी झुकाहुआ दीखताहै १४ हे राजन् ऐसे अद्भुत कर्म्म पृथ्वीपर वलदेवजी के विख्यात हैं १५ और भंडीरवनमें जो किये हैं सो कहे हैं वलदेवजी एकमूकेसे प्रलबको मारताभया १६ व महाकाय धेनुकको वृक्षपर मारते भये तब गर्दभरूप दैत्य पृथ्वीपर पड़ताभया १७ व रमण करतेहुये वलदेवजी ने

जब यमुना बुलाई नहीं आई तब हलसे खैंचताभया १८ हे राजन् बलदेवजीका यह माहात्म्य पुराणविस्तारसे कहाहै १९ । २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिगविष्णुपर्वभाषायांबलदेवमाहात्म्येविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२०

एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन फिर जनमेजय कहनेलगा हे महामुने जब रुक्मी मरगया तब भगवान् वीर्यवान् द्वारका को प्राप्तहोकर जो चरित्र करतेभये सो कहो १ ऐसे सुन वैशम्पायनजीने कहा कि हे राजन् सो कृष्ण तिन यादवों के साथ पुरीमें प्राप्त होकर और बहुतमे रत्नोंको प्राप्तहोनाभया २ और जो दैत्य दानव युद्ध करतेथे तिन सम्पूर्णोंको मारतेभये ३ और इन्द्रका शत्रु देवताओं को त्रास करनेवाला नरकनाम दानव युद्ध करताभया ४ और सम्पूर्ण देवताओंको बाधाकरनेवाला मनुष्य और ऋषियों को प्रतीप करनेलगा ५ । ६ पश्चात् यह भौमासुर त्वष्टाकी पुत्री कसेरु को गजरूप से पकडताभया ७ और इसको मथके नरकासुर बचन कहनेलगा ८ कि देव मनुष्यों में जितना रत्नहै और सागरों में जितना रत्नहै ९ आजसेलेकर दैत्य दानव गन्धर्व सम्पूर्ण रत्न मेरे को प्राप्त करेंगे १० ऐसे कहके भौमासुर अनेक प्रकारकेरत्न और वस्त्रोंको हरताभया ११ और गंधर्व देव मनुष्य इन्द्रोंकी कन्या अप्सराओं के समूह १२ ऐसे चौदहहजार और इक्कीसस्त्रियों को रोककर तिन्होंकापुर कराताभया १३ और मुरको रक्षामें छोडताभया और मुरके दशपुत्र रक्षामें रहतेभये और नैर्ऋत में मुख्य इसकी उपासना करतेभये १४ पश्चात् वरदियाहुआ यह महासुर सम्पूर्ण असुरों करके जो कर्म करते भये सो कहते हैं १५ और यह महासुर अदिति के कुण्डलों को खोसताभया १६ और जिस नरकासुरको पृथ्वी जनतीभई और जिसका प्राग्ज्योतिषपुरहै १७ तिसके बड़े दुर्मद चार द्वारपाल होनेभये हयग्रीव निसुन्दवीर पञ्चनद ये होतेभये १८ और वरदियाहुआ महासुर हजारहा पुत्रों करके देवयान से लेकर मार्गों को स्थितहोतेभये १९ और विरूप राक्षसों सहित सुकृतियों को त्रास करतेभये २० तिसकी बाधाके अर्थ शंख चक्र गदा खड्ग को धारणकिये महाबाहु जनार्दन वासुदेवसे उत्पन्नहोकर २१ सो तेजस्वी कृष्णचन्द्र समुद्र और पर्वतों से शोभित ऐसी द्वारका में वास करतेभये २२ और एकसमयमें काञ्चन तोरणोंसेयुक्त देव-

सभामें वलदेव कृष्णसे आदिलेकर वैठेथे २३ तिस समयमें दिव्य सुगन्धवाला वायुचला और पुष्पोंकी वर्षाहुई और पश्चात् दोघडी किलकिलाशब्द आकाश में हुआ २४ । २५ पश्चात् पृथ्वीपर देखें तो सम्पूर्ण देवताओंसेयुक्त और श्वेत हस्तीपर सवार ऐसे इन्द्रको देखतेभये २६ । २७ पश्चात् वलदेव और कृष्ण से युक्त सम्पूर्ण यादव महात्मा इन्द्र का सत्कार करतेहुये सम्मुखचले २८ पश्चात् इन्द्र हस्ती से उतरके पहले भगवान्से मिलकर पश्चात् वलदेव और उग्रसेनराजा से मिलताभया २९ पश्चात् काल और वयकेअनुसार अन्य यादवों से मिलकर पश्चात् वलदेव कृष्ण का पूजाहुआ इन्द्र सुदर सभामें प्रवेश होताभया ३० पश्चात् वैठाहुआ इन्द्र तिस सभाको भूपित करके और अर्घ्यादिकोंको यथाविधि ग्रहण करताभया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायानरकवधेएकविंशत्यधिकशततोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय पश्चात् यह महातेजस्वीइन्द्र सांत्वपूर्व्वक हाथसे अपने मुखको स्पर्शकर और भगवान् के प्रति वचन कहने लगा १ कि हे देवकीके पुत्र हे मधुसूदन मेरे वचनसुनो जिस कार्य के वास्ते मैं अब तुम्हारेको प्राप्तहुआहू २ हे शत्रुओंको नाश करनेवाले कृष्ण यह दितिका पुत्र नरकनाम असुर ब्रह्माके वरसे गर्व्वितहुआ अदिति के कुण्डलोंको हरता भया ३ और हे भगवन् यह ऋषि और देवताओंको नित्य दुःखदेता है इसवास्ते अवसर देखके इस पापपुरुषको मारो ४ और यह अत्यन्त तेजस्वी विनिताका पुत्र यथेच्छ चलनेवाला गरुड़ तुम्हारेको प्राप्तकरदेगा ५ और वह पृथ्वीकापुत्र नरकासुर सम्पूर्ण भूतों से अवध्य है इसवास्ते उसको जल्द मारके चलेआवो ६ ऐसे इन्द्रसे कहेहुये केशव भगवान् भौमासुरके मारने की प्रतिज्ञा करते भये ७ पश्चात् शंख चक्र गदा खड्ग इन्हों को धारण किये कृष्णचन्द्र इन्द्रको साथलेकर और सत्यभामा सहित गरुडपर सवारहोकर प्रस्थान करते भये ८ पश्चात् इन्द्र मारुतोंके सात स्कंधोंको भेदनकरके आक्रमण करताभया ९ पश्चात् हस्ती पर सवारहुये इन्द्र और गरुड पर सवारहुये भगवान् सूर्य्य चन्द्रमा की तरह प्रकाश करतेभये १० पश्चात् आकाश में स्थितहुआ गंधर्व्व अप्सराओं से स्तुति

कियेहुये इन्द्र अन्तर्द्धान होतेभये ११ पश्चात् देवताओंके राजा इन्द्र तो अपने भवनमें जातेभये और कृष्णचन्द्र नरकासुरको मारनेकेलिये प्राग्ज्योतिषपुर को जातेभये १२ और तिससमय में गरुड़के पक्षों से उलटा वायु चलताभया और भयानक शब्दसे और मेघोंसे गगनेचर भ्रमताभया १३ ऐसे क्षणमात्रमें गरुड़ के भगवान् पहुंचे दूरसे तिन मुरके पुत्रोंको देखके जहां वे स्थितथे वहांगये १४ और पहुंचकर पर्वताले दरवाजेपर पाश लियेहुये छः हजार मुरके पुत्रों को देखते भये १५ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् श्रीमान् शंख चक्र गदा खड्गको धारण करनेवाले नीलमेघकेसे आकारवाले पीताम्बर धारणकिये चार भुजा धारणकिये १६ वनमालासे भूषित हृदयवाले श्रीवत्ससे भूषित मुकुट धारणकिये सूर्य्य सदृश कान्तिवाले बिजली चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले १७ ऐसे कृष्णचन्द्र तहां प्राप्तहोकर जब धनुषकी ज्याका शब्दकिया तब वज्रसरीसे शब्द को सुनकर और आयेहुये विष्णु को जानकर १८ क्रोध से रक्तनेत्रवाला और कालान्तकके समान मुरनामा महासुर शक्तिको ग्रहण करके सम्मुख आया १९ और ध्यानके वज्रकाचन से भूषित महाशक्ति को फेंकताभया पश्चात् भगवान् आनीहुई शक्तिको देख २० सुवर्णकी पुंखवाले बाणको धनुष में चढ़ाकर शक्ति के दोटुकड़े करतेभये २१ पश्चात् बिजलीके समूहकेसा प्रकाश करताहुआ और क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला ऐसा मुरनामा असुर फिर महागदाको ग्रहणकरके २२ ऐसे छोड़ताभया जैसे इन्द्रका वज्र पश्चात् फिर भगवान् तिस रुक्म भूषित गदा को छेदनकरके २३ फिर भालासे रणमें तिस दानवका शिर काटतेभये २४ पश्चात् मुरको बान्धवों सहितमार और पाशों को छेदनकर नरकासुरके महाबल सम्पूर्ण राक्षसोंकोमार पश्चात् २५ देवकीकेपुत्र भगवान् पर्वतपर चढ़के दानवों की सेनाको और महाबल निसुंद को २६ और हयग्रीव को और अनेक चित्र योधाओं को देखताभया और अपनी सेनाकरके तिन्होंके मार्ग को रोकताभया २७ पश्चात् बलियों में श्रेष्ठ निसुंद रथमें बैठ और सुवर्णकी पीठवाले दिव्य धनुषको ग्रहण करताभया २८ और पश्चात् दशबाण निसुंद भगवान्को भेदन करनेके वास्ते जब छोड़ताभया तब वीरहीसे इन बाणोंको भगवान् सत्तर बाणों से भेदन करताभया २९ पश्चात् सम्पूर्ण सेना भगवान्के चारोंतर्फ फिरके और बाणोंसे छेदन करतेगये ३० पश्चात् क्रोधमेंभरे भगवान् तीन दानवोंको देखकर

पार्जन्य दिव्य अस्त्रसे बहुत शरोंकी वर्षाकरके तिस सेनाको निवारण करतेभये ३१ पश्चात् एक एक वार पांचपांच शरोंको चढाके और पार्जन्य प्रभावसे सम्पूर्ण योधाओंके मर्मों में ताडना करताभया ३२ और रणमें भग्नहुये दानव भागतेभये पश्चात् निसुद अपनी सेनाको भागतीहुई देखकर फिर युद्ध में आताभया ३३ और शरोंकी वर्षा से भगवान् को आच्छादन करताभया और उससमय में रण विषे सूर्य्य और आकाश और दशोंदिक् नहीं भानहोतीभई ३४ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् सावित्रनाम दिव्यअस्त्रको ग्रहणकर ३५ तिसकरके वाणों को छेदन करताभया पश्चात् महावल कृष्णचन्द्र ऐसे वाणोंसे वाणों को छेदन करके ३६ एकवाणसे छत्रभंग करदिया और तीन वाणोंसे रथेशको और चार वाणोंसे चार अश्वोंको ३७ और सारथिको पांचवाणों से और एकशरसे ध्वजाको इनको छेदनकरके एकशरसे निसुदको फिर भेदनकर ३८ पश्चात् भालासे सुरोत्तम कृष्णचन्द्र तिस निसुदका शिरकाटतेभये कि जौनसा निसुद एक हजारवर्ष देवताओं से युद्ध करताभया ३९ पश्चात् प्रतापवान् हयग्रीव निसुदको पडाहुआ देखके वहुतभारी शिलालेके तोलताभया ४० और पश्चात् तिसको कृष्णचन्द्रकी तरफ फेंकताभया पश्चात् अस्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ कृष्णचंद्र दिव्यपार्जन्य ग्रहण करके सातप्रकार से शिलाको भेदन करताभया ४१ और तिसको विदारणकरके पृथ्वी में गेरताभया ४२ हे राजन् जैसा देव असुरोंका युद्धहुआ ऐसा घोरयुद्ध होताभया ४३ पश्चात् महाबाहु कृष्णचन्द्र गरुड़पर सवारहोकर महासुरों को भेदन करताभया ४४ और शरखड्गसे निपातन किया दानव नष्ट होतेभये और कितनेक दानव तो अग्नि से दग्धहोकर आकाशते पडते भये ४५ कितनेक असुरों की आकृति विगडगई और कितनेक असुर मेघोंकी तरह शरोंकी वर्षा करतेभये ४६ और कृष्णचन्द्र के वाणोंसे पीडित असुर रुधिरसे ऐसे भान होते भये मानो फूलेहुये केसू और सम्पूर्ण दानवयोधा भग्नहुये भागतेभये ४७ पश्चात् क्रोधसे रक्तनेत्रोंवाला दानव वेगसेवृक्षको उपाड और कृष्णचन्द्रके पश्चात् दौडताभया ४८ और जब यह वेगसे वृक्षको फेंकताभया तब कृष्णचन्द्र हजार वाणोंसे छेदन करताभया ४९ पश्चात् एकवाण से कृष्णचन्द्र हयग्रीवको हृदयमें भेदन करताभया ५० जो हजार वर्ष पर्यंत अकेला हयग्रीव देवताओं के साथ युद्ध करताभया ५१ तिस महाबल और महावीर हयग्रीव को भेदन करताभया

कियेहुये इन्द्र अन्तर्द्धान होतेभये ११ पश्चात् देवताओंके राजा इन्द्र तो अपने भवनमें जातेभये और कृष्णचन्द्र नरकासुरको मारनेकेलिये प्राग्ज्योतिषपुर को जातेभये १२ और तिससमय में गरुडके पक्षों से उलटा वायु चलताभया और भयानक शब्दसे और मेघोंसे गगनेचर भ्रमताभया १३ ऐसे क्षणमात्रमें गरुड करके भगवान् पहुचे दूरसे तिन मुरके पुत्रोंको देखके जहा वे स्थितथे वहागये १४ और पहुंचकर पर्व्ववाले दरवाजेपर पाम लियेहुये छ हजार मुरके पुत्रों को देखते भये १५ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् श्रीमान् शंख चक्र गदा खड्गको धारण करनेवाले नीलमेघकेसे आकारवाले पीताम्बर धारणकिये चारभुजा धारणकिये १६ वनमालासे भूपित हृदयवाले श्रीवत्ससे भूपित मुकुट धारणकिये सूर्य्य सदृश कान्तिवाले बिजली चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले १७ ऐसे कृष्णचन्द्र तहा प्राप्तहोकर जब धनुपकी ज्याका शब्दकिया तब वज्रसरीखे शब्द को सुनकर और आयेहुये विष्णु को जानकर १८ क्रोध से रक्तनेत्रवाला और कालातकके समान मुरनामा महासुर शक्तिको ग्रहण करके सम्मुख आया १६ और आनके वज्रकाचन से भूपित महाशक्ति को फेंकताभया पश्चात् भगवान् आतीहुई शक्तिको देख २० सुवर्णकी पुंखवाले बाणको धनुप में चढाकर शक्ति के दोटुकडे करतेभये २१ पश्चात् बिजलीके समूहकेसा प्रकाश करताहुआ और क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला ऐसा मुरनामा असुर फिर महागदाको ग्रहणकरके २२ ऐसे छोडताभया जैसे इन्द्रका वज्र पश्चात फिर भगवान् तिस रुक्म भूपित गदा को छेदनकरके २३ फिर भालासे रणमें तिस दानवका शिर काटतेभये २४ पश्चात् मुरको बांधवों सहितमार और पाशों को छेदनकर नरकासुरके महाबल सम्पूर्ण राक्षसोंकोमार पश्चात् २५ देवकीकेपुत्र भगवान् पर्वतपर चढके दानवों की सेनाको और महाबल निसुंद को २६ और हयग्रीव को और अनेक चित्र योधाओं को देखताभया और अपनी सेनाकरके तिन्होंके मार्ग को रोकताभया २७ पश्चात् बलियों में श्रेष्ठ निसुद रथमें बैठ और सुवर्णकी पीठवाले दिव्य धनुपको ग्रहण करताभया २८ और परचात् दशबाण निसुद भगवान्को भेदन करनेके वास्ते जब छोडताभया तब बीचहीमें इन बाणोंको भगवान् सत्तर बाणों से भेदन करताभया २६ पश्चात् सम्पूर्ण सेना भगवान्के चारोंतर्फ फिरके और बाणोंसे छेदन करतेभये ३० पश्चात् क्रोधमेंभरे भगवान् दीन दानवोंको देखकर

पार्जन्य दिव्य अस्त्रसे वहुत शरोंकी वर्षाकरके तिस सेनाको निवारण करतेभये ३१ पश्चात् एक एक वार पाचपाच शरोंको चढाके और पार्जन्य प्रभावसे संपूर्ण योधाओंके मर्मों में ताडना करताभया ३२ और रणमें भग्नहुये दानव भागतेभये पश्चात् निसुद अपनी सेनाको भागतीहुई देखकर फिर युद्ध में आताभया ३३ और शरोंकी वर्षा से भगवान् को आच्छादन करताभया और उससमय में रण विषे सूर्य्य और आकाश और दशोंदिक् नहीं भानहोतीभई ३४ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् सावित्रनाम दिव्यअस्त्रको ग्रहणकर ३५ तिसकरके वाणो को छेदन करताभया पश्चात् महावल कृष्णचन्द्र ऐसे वाणोंसे वाणों को छेदन करके ३६ एकवाणसे छत्रभग करदिया और तीन वाणोंसे रथेशको और चार वाणोंसे चार अश्वोंको ३७ और सारथिको पांचवाणों से और एकशरसे ध्वजाको इन को छेदनकरके एकशरसे निसुदको फिर भेदनकर ३८ पश्चात् भालासे सुरोत्तम कृष्णचन्द्र तिस निसुदका शिरकाटतेभये कि जौनसा निसुद एक हजारवर्ष देवताओं से युद्ध करताभया ३९ पश्चात् प्रतापवान् हयग्रीव निसुदको पडाहुआ देखके वहुतभारी शिलालेके तोलताभया ४० और पश्चात् तिसको कृष्णचन्द्रकी तरफ फेंकताभया पश्चात् अस्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ कृष्णचंद्र दिव्यपार्जन्य ग्रहण करके सातप्रकार से शिलाको भेदन करताभया ४१ और तिसको विदारणकरके पृथ्वी में गेरताभया ४२ हे राजन् जैसा देव असुरोंका युद्धहुआ ऐसा घोरयुद्ध होताभया ४३ पश्चात् महावाहु कृष्णचन्द्र गरुडपर सवारहोकर महासुरों को भेदन करताभया ४४ और शरखड्गसे निपातन किया दानव नष्ट होतेभये और कितनेक दानव तो अग्नि से दग्धहोकर आकाशते पडते भये ४५ कितनेक आसुरों की आकृति विगडगई और कितनेक असुर मेघोंकी तरह शरोंकी वर्षा करतेभये ४६ और कृष्णचन्द्र के वाणोंसे पीड़ित असुर रुधिरसे ऐसे भान होते भये मानो फूलेहुये केसू और सम्पूर्ण दानवयोधा भग्नहुये भागतेभये ४७ पश्चात् क्रोधसे रक्तनेत्रोंवाला दानव वेगसेवृक्षको उपाड और कृष्णचन्द्रके पश्चात् दौडताभया ४८ और जव यह वेगसे वृक्षको फेंकताभया तव कृष्णचन्द्र हजार वाणोंसे छेदन करताभया ४९ पश्चात् एकवाण से कृष्णचन्द्र हयग्रीवको हृदयमें भेदन करताभया ५० जो हजार वर्ष पर्यंत अकेला हयग्रीव देवताओं के साथ युद्ध करताभया ५१ तिस महावल और महावीर हयग्रीव को भेदन करताभया

पश्चात् आठसौ हज्जार दानवोंको मारके प्राग्ज्योतिपपुरको प्राप्त होतेभये ५२ और नरकासुर के पञ्चनदको मारके और पुरमें प्रवेश होकर तहा महायुद्ध होताभया ५३ पश्चात् भगवान् पाचजन्य को ऐसे धमतेभये जैसे प्रलयका शब्द ५४ इस शब्द को सुनके क्रोधसे रक्तहुआ नरकासुर ५५ सुवर्ण के विचित्र रथको देखकर और तिसरथमें विराजमान भगवान्को देखकर धूम्रवर्ण महाकाय लालनेत्रोंवाले बुरे मुखवाले कवचको धारणकिये ५६ ऐसे दैत्य दानव राक्षस खड्ग चर्मको धारण किये तूणीरको धारण किये शूल धारण किये ऐसे राक्षस और दैत्य दानव गज अश्वरथ इन्होंके समूहसे मेदिनीको चलातेहुये ५७ नगर से निकसते भये और कालके समान दैत्योंसे आवृत्त नरकासुर निकसताभया और हज्जारहाभेरी शख मृदङ्ग पणव वाजते भये ५८ और नरकासुर इन वाजोंको सुन प्रसन्नहुआ सम्पूर्ण सेना करके सहित कृष्णचन्द्रके पास जाकर ५९ इकट्ठेहुये गरुडके चारों तरफहोके युद्धकरनेलगे सेनापति बहुत शरोंकी वर्षासे आच्छादन करतेभये ६० और शक्ति शूल गदा भाला तोमर वाण इन हजारहा शस्त्रोंको छोडतेहुये आकाशको छादन करतेभये ६१ पश्चात् नीलमेघकेसा रूपवाले कृष्णचन्द्रभी अपने शार्ङ्गधनुप को ग्रहणकर पश्चात् मेघकेसे शब्दवाले इस धनुपको टकोर ६२ दानवोंके ऊपर भगवान् शरोंकी वर्षा करनेलगे और तिसवर्षा करके इस महारण से सम्पूर्ण सेना भागगई ६३ और इस घोरयुद्धमें भगवान् के वाणों से समूहके समूह भग्न होतेभये ६४ कितनेक असुरों की तो भुजा टूटगई और कितनेकों के ग्रीवा शिर मुख ये अग छेदन होगये और कितनेक चक्रसे भेदन करदिये कितनेक वाणोंसे ६५ कितनेक शक्तिसे कितनेक कौमोदकी गदासे कितनेक शख शक्तिसे ६६ ऐसे गज अश्व रथवाली सम्पूर्ण सेना भग्न करदई पश्चात् हे राजन् जनमेजय जो नरकासुरके साथ घोरयुद्ध होताभया ६७ तिसको सक्षेपसे कहते हैं सुनो हे राजन् देवताओं के समूह को त्रास करनेवाला तेजस्वी नरकासुर जव मधुदैत्यकी तरह भगवान् से युद्ध करनेलगा ६८ तव क्रोध में भरा यह शूरवीर इन्द्र केसे ऊचे धनुप को ग्रहण करताभया और भगवान् भी सूर्य्य केसी कान्तिवाले वाणों को ग्रहण करतेभये ६९ और तिस युद्धमें दिव्य अस्त्र से रथको पूर्ण करतेभये पश्चात् नरकासुर वली भी महापात उत्तमास्त्र छोड़ता भया ७० पश्चात् वज्रकेसे आतेहुये अस्त्रको भगवान् देख अपने चक्रसे इसको

छेदन करतेभये ७१ पश्चात् एक शरसे सारथि छेदन करदिया और दशशरोंसे रथ और अश्व और ध्वज ये छेदन करदिया ७२ और एक शरसे कवच तोड़ दिया जब कवच टूटगया पश्चात् सर्पकी तरह कवचसे ७३ पश्चात् ऐसाहुआ यह दानव इन्द्रके वज्रके समान और दृढ विमल कांतिवाला ऐसे त्रिशूलको प्रहार के वास्ते फेंकताभया ७४ तव कृष्णचन्द्र आतेहुये त्रिशूलको देख पैने चक्रसे दो टुकड़े करतेभये ७५ हे राजन् ऐसे घोररूप राक्षससे घोर युद्ध होताभया ७६ व मधुसूदन भगवान् इसके साथ एकमुहूर्त्त युद्ध करतेभये ७७ पश्चात् प्रदीप्त उत्तम चक्रवाले भगवान् अपने चक्रसे इसके दोटुकडे करतेभये पश्चात् छिन्नहुआ यह नरकासुर का शरीर ऐसे पृथ्वीपर पडताभया ७८ जैसे करौंतसेकतरा पर्वत का शृंग और तिसकी ज्योति भगवान् में ऐसे लीन होगई जैसे अस्ताचलमें सूर्य ७९ और भगवान्के चक्रसे हतहुआ नरकासुर रणभूमिमें ऐसे भान होताभया जैसे वज्रसे भेदन किया गेरूका पर्व्वत ८० पश्चात् नरकासुरकी माता भूमि में ऐसे पडे पुत्रको देख आदितिके कुण्डलोंको लेकर गोविंदके पास स्थितहो यह वचन कहनेलगी ८१ हे गोबिंद तुमनेही यह दियाथा और तुमनेही मारदिया और हे भगवन् यह तुम्हारी ऐसी क्रीडा है जैसे खेलनों से बालक ८२ और हे भगवन् ये तुम्हारे कुण्डलहैं लो और प्रजाकी पालनाकरो ८३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायानरकवधेद्वाविंशत्य धिकशततोऽध्याय १२२ ॥

एकसौ तेईसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे पृथ्वी के पुत्र नरकासुर को मारके नरकासुर के स्थानको देखतेभये १ पश्चात् भगवान् खजानों के स्थानों में जाकर तहा अपार धन और अनेक प्रकारके रत्नोंको देखताभया २ मणि मोती मूगा वैदूर्य इन्होंका संचय देखा और हीराओं का समूह देखा और दीप्त अग्नि केसी कांतिवाले ३ व सूर्य्यकेसी कांतिवाले शयन और सिंहासन और चन्द्रमाकेसी कांतिवाला सुन्दर सुवर्णका दंड ४ इन सम्पूर्णोंको भगवान् देखते भये पश्चात् हे राजन् मेघकी तरह हजारहा धाराओं का वर्षात स्वच्छ चादी के छत्रको देखतेभये हे राजन् इस छत्रको नरकासुर वरुणसे लाताभया ५ हे राजन्

जितनाद्रव्य नरकासुर के मकानमें भगवान्ने देखा ६ सो कुवेर और इन्द्र अं
धर्मराज ने न तो देखा और न सुना ७ पश्चात जब भगवान् ने भौमासुर अं
निसुन्द और हयग्रीव ये दानव मारदिये तब खजानाकी रक्षा करनेवाले वा
दैत्य सम्पूर्ण अन्त पुर और रत्न इन्होंको भगवान् की भेंट करतेभये ८। ९ अं
जो भगवान् के योग्य वस्तुथी सो भी अर्पणकरके दैत्य ऐसे कहनेलगे १०।
हे भगवन् ये मणिरत्न और अनेकप्रकारके खजाने और मूंगाके अकुशोंसहि
मदोन्मत्त हस्ती और चालीसहजार हस्तिनी ११ और आठ हजार देशी घो
इन सम्पूर्णोंको भगवान् के अर्पणकर कहनेलगे कि हे भगवन् जितनी गौ
की वाञ्छाहो उतनी गौस्थानपर पहुँचादें १२ और छोटे भेड़ोंके वच्चे शय्या आ
सन प्रिय दर्शनवाले सुन्दरपक्षी १३ व चन्दन अगरु हे भगवन् ये और इन्हों
अन्यवस्तु जो त्रिलोकी में स्थितहैं १४। १५ सो सम्पूर्ण वृष्णि और अन्धक
निवेश में प्राप्त करदेंगे १६ और हे भगवन् देव गन्धर्व्वों के रत्न और पन्नगों
रत्न और द्रव्य जितनेक हैं सो सम्पूर्ण यहा नरकासुरके स्थानमें हैं १७ सो प
हुँचादेंगे वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ये सम्पूर्ण पदार्थ ग्रहणकरके
परीक्षाकरके शीघ्रही दानवोंकरके द्वारकामें भेजतेभये १८ और हिरण्यवर्षना
वरुण के छत्रको भगवान् आपलेकर गरुडपर सवार होतेभये १९ और पश्चा
पर्व्वतों में श्रेष्ठ मणियों के पर्व्वत को देखतेभये २० तहा सुन्दरपवन चलतीभ
और सूर्य से भी अधिक तहां मणियोंकी कांतिहोतीभई २१ तहा भगवान् वैडू
मणियों को देखतेभये और तहा तोरण पताकाओं सहित दरवाजे २२ व पर्व
की और मणिपर्व्वत की शिखर ऐसी शोभित होतीभई जैसे विजलियों सहि
मेघ और सुवर्ण के सुन्दर वितानों करके और महलों करके भूषित देखा २३
तिसजगह भगवान् गन्धर्व्व असुर इन्होंकी स्त्री और सुन्दर कन्याओंको देख
भये २४ और ये सम्पूर्ण नरकासुर की ल्याई हुई स्त्री स्वर्ग सरीखे देशमें ऐसे
स्थित होतीभई जैसे कामवर्जित देवी २५। २६ येसम्पूर्ण कन्या इंद्रियोंको जीते
हुये व गेरूमें रँगे कपड़ोंको धारणकिये व व्रत उपवासों से कृश अङ्गवाली २७
और कृष्ण के दर्शन की वाञ्छा करती हुई ऐसी ये सम्पूर्ण स्त्री अञ्जलि बांधके
यादवों में सिंहरूप भगवान् के चारोंतरफ फिरतीभई २८ और ये सम्पूर्ण महा
सुर नरकासुरको मरासुनके और मुर हयग्रीव निसुन्द इन सम्पूर्णों को मरासुन-

के बहुत प्रसन्न होतीभई २९ और इन्हों के रक्षक उमरमें अधिक दानव अञ्जलि बांधके भगवान् को प्रणाम करतेभये ३० और ये सम्पूर्ण कन्या सुंदर नेत्रोंवाले कृष्णचन्द्रको देखके सम्पूर्णों का पतिभावसे सङ्कल्प होताभया ३१ और चन्द्रमा केसा भगवान्का मुख देखकर आनंदित हुई यह वचन कहनेलगीं ३२ हे भगवन् जो वायुने हमारे प्रति वचन कहा था और सम्पूर्ण भूतों को जाननेवाले देवर्षि नारदने जो पहले कहाथा ३३ कि शङ्ख चक्र गदा खड्गको धारण करनेवाले विष्णु भगवान् हैं सो भौमासुरको मारके शीघ्रही तुम्हारे भर्त्ता होवेंगे ३४ हे भगवन् सो वचन सत्यहुये इसवास्ते बहुत दिनसे सुनेहुये और शत्रुओं को नाशकरनेवालों को तुमको बहुत प्रिय देखे हैं और हे भगवन् तुम्हारे महात्माओं के दर्शनसे आज हम कृतार्थ होगई हैं ३५ पश्चात् भगवान् तिन्हों के ऐसे वचन सुनके और आश्वासना कराके कमलकेसे नेत्रोंवाली प्रसन्न सम्पूर्ण स्त्रियों से अनेकप्रकारका सम्भाषण करतेभये ३६ पश्चात् किंकरों संयुक्त यानों से तिन्हों को द्वारका में पहुँचातेभये ३७ और पवनकेसा वेगवाले हजारहा राक्षस जब पालकियोंको लेकर चले तब उन्होंका बहुत अत्यन्त शब्द होताभया ३८ और तिसपर्वतमें बहुतश्रेष्ठ निर्मल सूर्यकेसीकांतिवाला और मणि कांचनोंकी तोरणवाला ३९ और पक्षिगण हस्ती सर्प मृग वृक्ष इन्होंसेयुक्त वानरोंसेयुक्त बड़ी २ और न्यकु वराह रुरु इन्हों से सेवित और सुंदर प्रपात् ४० और शिखरोंसेयुक्त और मृगोंकी शिखरोंसेयुक्त और अत्यन्त अद्भुत और अचिंत्य और मृगसमूह से व्याप्त और चकोरों के समूहसे व्याप्त ४१।४२ और मयूरों से नादित ऐसेसुंदर मणि पर्व्वतकी शिखर को अत्यन्त बलवान् भगवान् उपाडके और पक्षियों में श्रेष्ठ जो गरुड़है ४३ तिसके ऊपररख सत्यभामासहित गरुडपर सवारहो लातेभये और इन सम्पूर्णोंको लीलासेही वहताहुआ जो हिमाद्रिकी शिखरकेतुल्य गरुड़है तिसकी पखोंका दिशाओंका अत्यन्त शब्द होताभया ४४। ४५ और ऐसे पर्वतोंकी शिखरोंको पवनसे पीड़ित करताहुआ और वृक्षोंको फेंकताहुआ और वेगसे घटाओंको उड़ाताहुआ ४६ ऐसे पवनकेसे वेगवाला गरुड़ चंद्रमा सूर्यके देशोंको उल्लंघकर जाताभया ४७ पश्चात् देव गंधर्वों से सेवित मेरुपर्वतको प्राप्तहोकर भगवान् तहां देवताओंके मकान देखतेभये ४८ हे राजन् विश्वेदेवा मरुत साध्य अश्विनीकुमार इन्हों से प्रकाशित मन्दिरों को देखते भये ४९ पश्चात्

पुण्यतम लोकों को प्राप्तहोकर देवलोक अर्थात् स्वर्ग में प्राप्तहोकर तहां इन्द्रके भवनको प्राप्तहोतेभये ५० पश्चात् तहा गरुडसे उतर इन्द्रको देखतेभये और देव. राज इन्द्र प्रसन्नहुआ भगवान्की श्लाघा करताभया ५१ पश्चात् अच्युत भग. वान् इन्द्रको दिव्य कुडलदेकर सत्यभामा सहित भगवान् इन्द्रको प्रणाम करते भये ५२ पश्चात् इद्रने रत्नोंसे भगवान्का पूजनकिया और इन्द्राणी ने सत्यभामा का पूजनकिया ५३ पश्चात् भगवान् और इंद्र दोनों बडी सम्पत्तिवाले देवमात अदितिके भवनमेंगये ५४ तहां अप्सराओंसे सेवितकरी और तपसे युक्त महा भागा ऐसी अदितिको दोनों देखतेभये ५५ और दितिका पुत्र इन्द माता को कुण्डलदेकर प्रणाम करताभया ५६ और यह इन्द्र भगवान्को आगे करके गुण वर्णन करने लगा तब अदिति दोनों पुत्रोंसे मिलके ५७ अनुकूल आशीर्वाद देतीभई और इन्द्राणी और सत्यभामा ये दोनों परमप्रसन्नहुई ५८ अदिति के चरणोंको पकडतीभई और यह देवताप्रेमसे जैसे भगवान्को कहतीभई ५६ कि हे कृष्ण तू सपूर्ण भूतों में अवध्यहोगा और अधृष्टाहोगा ६० ऐसेही सत्यभामा को आशीर्वाददिया कि हेकृष्ण यहसत्यभामा प्रियदर्शन सम्पूर्णलोकोंमें वि- ख्यात ६१ स्थिर यौवनवाली सुभगा और स्त्रियोंमें उत्तम ऐसी सत्यभामा होगी ६२ और हेकृष्ण जैसे तेरेको वृद्धावस्था नहीं प्राप्तहोती ऐसे सत्यभामा को भी नहीं बाधेगी ऐसेदेवमाताने पूजितकिये महाबल भगवान् ६३ और रत्नोंसे इंद्रने पूजनकिये और सुरर्षियों से पूजितहुये सत्यभामा सहित गरुड़पर सवार होकर ६४ देवताओंके नंदनवनको प्राप्तहोकर इंद्रके भवनको प्राप्त होतेभये ६५ पश्चात् तहा देवोंसे पूजित नित्यपुष्पोंको धारणकिये पवित्र गंधवाला वाञ्छितको सिद्ध करनेवाला देवताओं से रक्षित ६६ ऐसे दिव्य कल्पवृक्षको हठसे उपाड़कर गरुड़ पररख अप्सराओं के समूहको देखतेहुये सत्यभामा करके सहित वायुजुष्ट मार्ग से द्वारकाको आतेभये ६७।६८ पश्चात् इन्द्र भगवान्के कर्मको सुनके शूरवीर मानताभया ऐसे देवताओं से पूजित और महर्षियों से स्तुतिकिये भगवान् देव- लोक से द्वारका में प्राप्तहुये ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायां रकृष्णेन्द्रयोर्विशाधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

एकसौ चौवीसकी अध्याय ॥

ऐसे सुन फिर जनमेजयने प्रश्नकिया हे मुनिश्रेष्ठ मथुरामें भगवान् प्राप्तहुए जो शुभ चरित करतेभये तिन भगवान् के चरितोंको सुनताहुआ तृप्तिको नहीं प्राप्त होताहूं १ और हे भगवन् द्वारकामें वसते हुए कृष्णचन्द्र के छ गुणोंवाले चरित कहो क्योंकि आपके सम्पूर्ण यथार्थ जानेहुए है २ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे भारत किये हैं विवाह जिन्होंने ऐसे कृष्णचन्द्र के अतिविचित्र चरित्र सुनो ३ हे राजन् तेजस्वी प्रतापवान् कृष्णचन्द्र रुक्मिणी सहित रैवत पर्वत को जातेभये ४ तहा रुक्मिणीको उपवासकराके ब्राह्मणों को तृप्तकर भगवान् द्वारकामेंआके ५ पश्चात् नारदमुनिकी आज्ञासे कुमार भ्राता पुत्र इन्होंको भेजते भये ६ पश्चात् परमऋद्धिसेयुक्त सोलहहजार स्त्री जातीभई पश्चात् द्विजाति अभ्यागत धर्मनित्य वंदि इष्टवादी ७ । ८ कल्याणरूप पुण्यकर्म और यौनश्रौत मौख इन सस्कारों से शुद्ध भगवान् इन सम्पूर्णोंको वहुतसा दान देतेभये ६ ऐसे श्रेष्ठहरि द्विजातियों को तृप्तकरके पश्चात् धर्मवत्सल भगवान् जातियों को तृप्त करतेभये १० ऐसे भगवान् उपवास करके पश्चात् विशेपकरके भीष्मककी पुत्री रुक्मिणीको वहुत प्रिय मानतेभये ११ पश्चात् अमित पराक्रमवाले और स्त्रियों से सहित ऐसे कृष्णचन्द्र रुक्मिणी के स्थान में वैठेथे तव नारदमुनि आये १२ मुनि को आयेहुए देखके भगवान् शास्त्रदृष्ट विधिसे पूजन करते भये १३ ऐसे भगवान् से पूजाहुआ नारदमुनि कल्पवृक्ष का पुष्प भगवान् को देताभया १४ और भगवान्ने वह पुष्प रुक्मिणी को देदिया तव यह दिव्यरूपवाली १५ रुक्मिणी पुष्पको ग्रहणकर शिरमें धारण करतीभई १६ और तिसको धारण करके रुक्मिणी दुगुणी शोभाको प्राप्त होतीभई १७ पश्चात् नारदमुनि रुक्मिणी से कहनेलगे कि हे पतिव्रते यह पुष्प तेरेही योग्यहै १८ और हे देवि यह पुष्प तेरे करमें भूषित होगयाहै और इसके योग्य तूही है १९ हे कल्याणगुण सपन्ने हे भर्तृवत्सले अर्थात् भर्ताकी प्यारी यह पुष्प सदा खिला रहताहै २० हे कालके जाननेवाली वर्ष दिन पर्यंत ईप्सित गंधको देताहै २१ और हे देवि ठण्ढ गरम कालमें वाञ्छित सुगंध देताहै और मनवाञ्छित रसोंको देताहै २२ और सौभाग्य देताहै और प्रीतिको वढानेवाली वाञ्छित गंधोंको देताहै २३ और हे देवि जो

और पुष्पों की यात्राकरे तो वेभी इसमे प्राप्तहोते हैं २४ और हे शुभे यह पुष्प भाग्यको बढ़ाताहै और धर्मका देनेवालाहै और शुद्धबुद्धिको करदेताहै २५ व इसके धारणसे जैसे २ सूक्ष्म और स्थूलकी वाञ्छाकरताहै वैसेहीरूपको धारणकर लेताहै २६ और हे कमलकेसे नेत्रोंवाली यह पुष्प अनिष्टगन्धको हरताहै और श्रेष्ठगन्धको बढ़ाताहै और रात्रिको प्रकाशकरताहै २७ और सन्तान माला वस्त्र पुष्प पुष्पोंका मण्डप इन सम्पूर्णों को चितवन करतेही प्राप्तकरताहै २८ और भूख प्यास ग्लानि वृद्धावस्था बाधानहीं करते हैं २९ और इसके धारणकरने से अनेकप्रकार के गीत और बाजे इन विद्याओं को प्राप्तहोताहै ३० और हे देवि जब वर्षपूरा होजायगा तब यह तेरे समीपसे कल्पवृक्षको चलाजायगा ३१ और हे सुव्रते कल्पवृक्षकी यह प्रकृति स्वभावसेही है कि देवताओं के शत्रुओं का नाशकरता है ३२ और हे देवि हिमाचलकी पुत्री सती उमा नित्य इनपुष्पोंको धारण करती हैं ३३ और अदिति इन्द्राणी वेदकी माता सावित्री लक्ष्मी ३४ देवपत्नी देवता वसुदेवता ये सम्पूर्ण कल्पवृक्ष के पुष्पोंको धारणकरते हैं परन्तु सम्पूर्णों के पुष्पोंकी एकवर्षकी मर्यादाहै ३५ हे देवि सोलहहजार स्त्रियोंके मध्य में तू श्रेष्ठहै ३६ और हे कृष्णचन्द्रकी प्यारी हे सम्पूर्ण गुणोंवाली तैने तिरस्कार से सब सौकणोंका अवमेक करदिया ३७ हे भाविनी अब मैं तेरा प्रकाश और सौभाग्य और यश उत्तमदेखूंहूं क्योंकि जिससे भगवान्ने तेरे को पुष्पदिया३८ और हे रुक्मिणी सत्यभामा आपको सौभाग्या जानती है और अन्य स्त्रीभी सौभाग्यकी वाञ्छा करती हैं ३९ और हे देवि तेरा सौभाग्य बहुत उत्तमहै और हजारहा मनोरथों से भी दुर्जयहै और हे शोभने अब मैं तेरेको कृष्णचन्द्रका दूसरा आत्मा समझताहूं ४० और हे हरिकी प्यारी भगवान्ने तेरेको त्रिलोकी के रत्न दियेहैं हे रुक्मिणि तेरा जीवनामफलहै ४१ हे राजन् ऐसेकहेहुये नारदमुनि के वचनों को सत्यभामाकी भेजीहुई बांदीसुन ४२ । ४३ और सौकोंकी बांदी सुनके अन्त पुरमें कहतीभई ४४ । ४५ तहां रुक्मिणी के गुणको सुनके कहने लगीं कि हे सखियाहो यह रुक्मिणी योग्यहै ४६ वेटावाली है बहुतसी भगवान की स्त्रीतो यह कहतीभई ४७ और रूप यौवनमे संयुक्त सौभाग्यसे गर्वित भगवान्की प्यारी अभिमानवाली ईर्षाके वशहुई ऐसी सत्यभामा सौकण रुक्मिणी के गुणोंको नहीं सहतीभई ४८ । ४९ पश्चात् क्रोधके वशहोके सत्यभामा ने गुणों

हुये फूलगेरदिये केसरवोगेरी ५० और क्रोधसे सफेदवस्त्र धारण करलिये अग्नि शिखाकी तरह जलनेलगगई ५१ और शोकके भवनमें ऐसे गिरगई जैसे घटा को तारा ५२, पश्चात् मस्तकमें सफेदवस्त्र लपेटलिया और लालचन्दन मस्तक में लीपलिया और क्रोधकी वार्ताओंको यादकर २ शिर कंपानेलगी और नीचे को मुखकरके ५३ श्वास लेलेकर कमलकेफूलको नखोंसे चूथनेलगी और दासी भी साथही विलाप करतीभई ५४। ५५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेचतुर्विंशत्यधिकशततोऽध्यायः १२४॥

एकसौपच्चीस का अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् केशव भगवान् रुक्मिणी के पास नारद मुनिको छोडकर तहांसे निकसके १ विश्वकर्मा का रचाहुआ दिव्य सत्यभामा के घरगये पश्चात् प्राणोंसे प्यारी सत्यभामा को रूसीहुई जानके २ स्नेहसे डरते हुये भगवान् शनै शनै तहांगये ३। ४ और दारुक सारथीको दरवाजेपर छोड दिया और नारदमुनि के उपचार में प्रद्युम्नको छोडदिया ५ पश्चात् दूरसे क्रोधा- गारमें प्राप्तहुई और दासियों के मध्यमें विलाप करती हुई और ऊंचेश्वास लेती हुई ६ और वायें हाथपर मुखपङ्कजको धरे शोचकरतीहुई और शयनमे वारम्वार पडतीहुई ७ सत्यभामा के ऐसे विलापको हरि देखतेभये ८ पश्चात् दासियों से सैनकर अर्थात् वताना नहीं यहकह सत्यभामा के पासगये ९। १० तहां स्थित होकर पंखेको ग्रहणकर शनै शनै हँसतेहुये पवन करनेलगे ११। १२ पश्चात् म- नुष्यों को दुर्लभ ऐसे कल्पवृक्षकी सुगन्धसे वासित भगवान्‌की सुगन्ध जो आई तिससे १३ सत्यभामा आश्चर्ययुक्त होकर मुखफेरके पीठपीछे भगवान् को नहीं देखके कहनेलगी यह सुगन्ध कहांसे आतीहै १४ हे राजन् जव सत्यभामा ने ऐसे कहा तव सम्पूर्णदासी अञ्जलिवांधिके खडीहोगई १५ और कुछभी नहींकहा ऐसे चारोंतरफ सुगन्धको देखतीहुई १६ पीठ पीछे भगवान्‌को देखतीभई, पश्चात् युक्तहै ऐसे कहके नेत्रों में आंशू आगये और क्रोधप्रणय से युक्तहुई और होठ फरकने लगगये १७ और नीचेको मुखकरके श्वासलेने लगगई एकमुहूर्त्त ऐसे स्थित रहके १८ पश्चात् भृकुटी चढाके वामनेत्रसे देख और मुखको हाथपर रख अव शोभाको प्राप्तहोताहै ऐसे हरि भगवान् को कहतीभई १९, और हे राजन्

प्रणय और कोपसे उत्पन्नहुआ जल तिमके नेत्रों से ऐसे आगूपड़ते भये जैसे कमलपत्रसे ओसका जल २० पश्चात् पड़तेहुये जलको देखकर भगवान् तिम को अपनी छातीपर धरतेभये २१ जब छातीपरभी जलपड़नेलगा तब भगवान् ने वचन कहा हे भामिनि २२ हे कमल सरीखे नेत्रोंवाली यह क्याबात तेरेनेत्रों से यह ऐसे जल क्योंपड़ता है जैसे कमल से जल और हे सुंदरि तेरामुख तो चंद्रमाकी तरह और कमलकीतरह २३ । २७ प्रकाश कियाकरता आज क्या हुआ और हे प्रिये किसवास्ते केमरधोगेरी २८ और क्यों सफेदवस्त्र धारणकिये हे प्रिये अच्छे कुसुंभेवस्त्र धारणकर और हे सुंदरि देवपूजने से पश्चात् श्वेत वस्त्र तेरे को धारणकरने नहीं योग्य है २९ और हे वरवर्णिनी हे देवि देवपूजन से उपरांत तेरेको सफेदवस्त्र अभीष्ट है ३० आभूषण क्यों नहीं धारण करती और विचित्रस्थान तैंने किसवास्ते छोड़े हैं ३१ और हे प्यारे दर्शनवाली किसवास्ते माथे में श्वेतकपड़ा बाधाहै और किसवास्ते चन्दन लगायाहै ३२ हे प्रिये इसरूप से मेरे को अत्यन्त ग्लानि करती है और पत्रलेखा नहीं सुंदरलगता ३३ और रत्नोंसे रहित तेरीजंघा नहीं शोभाको प्राप्तहोती हे सुंदरि कमलकेसी सुगंधवाले मुख से क्यों नहीं बोलती ३४ आधेभी नेत्रसे मेरे को क्यों नहीं देखती और श्वास करके सहिजल क्यों छोड़ती है हे उदारचित्तवाली बस बहुत होलिया अब मतरोवे ३५ और हे देवि अञ्जनमे बिगड़ाजलको गेरके मुखकी शोभा मत बिगाड़ क्यासंदेहहुआ मैंतो जगत्में तेराही किंकर विख्यातहूं ३६ और हे प्रिये पहलेकी तरह मेरे से क्यों नहीं बोलती मैंने तेरा क्या निप्रिय कियाहै हे सुंदरि जिस बातसे तू दुःखपाती है सो मेरेको कह मन और कर्म्म और वचन से तिस सम्पूर्ण को सिद्ध करूंगा यह मैं सत्य कहताहूं ३७ हे प्रिये स्नेह और बहुमान तेरे बिना और स्त्रियोंमें मेरे नहीं है ३८ हे देवताओं की पुत्रियों के तुल्य यह मेरे निश्चयहै और हे प्यारी मन वचन कर्म्मसे तेरा दासहूं ३९ और हे शोभने तेरे समान और कोई प्यारी नहीं है ४० हे वाले पृथ्वीविषे जो क्षमा और गन्ध है और शब्दसे आदि लेकर जो अम्बरमे गुणहै ऐसेतेरे में मेरीप्रीतिहै ४१ और कमलकेसी कांतिवाली अग्निमें जैसी कांति है और सूर्य मे जैसे प्रभाहै और चन्द्रमामें जैसे नित्यकांतिहै तैसेही तेरे में मेरास्नेह है ४२ ऐसे कहतेहुये प्यारे कृष्णको नेत्रोंमे जलपूर्वक शनै शनै वचन कहतीभई ४३ कि हे प्रभो मेरा तो

नित्यमन यहीथा कि तुम मेरेहो परन्तु आज जानी कि साधारणही स्नेहहै ४४ हे प्रिये क्या वहुत कहनेसे है आपके हृदयको मैं जानतीहू हे भगवन् आपके बाणीमात्रही माधुर्य्य है ४५ हे पुरुषोत्तम मेरे विषे स्नेहकपटकाहै और जगह अच्छाहै ४६ और हे भगवन् कोमल स्वभाववाली और भक्त ऐसी का मेरा तिरस्कार किया ४७ हे प्रिय जो तू मेरे पर अनुग्रह करती है तो यह आज्ञा दो कि मैं निश्चयकरके तप करोंगी ४८ हे भगवन् जो भर्त्ताकी आज्ञासे तपहै और व्रतहै सो तो फलदायकहै ४६ और भर्त्ताकी आज्ञाविना व्रतादिहैं सो निष्फल हैं क्योंकि पति स्त्रीको परमदेवहै ५० ऐसे कहके फिर सुदरिने नेत्रोंसे जलछोड दिया और मुखपर वस्त्र गेर लोटगई ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेपंचविंशत्यधिकशततोऽध्याय १२५॥

एकसौ छब्बीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे अभिमानवाली क्रोध हुई सत्यभामाको फिर वचन कहतेभये १ हे कमलकेसे नेत्रोंवाली यह तेरा शोक मेरे अंगको दग्ध करताहै हे प्रिये जिस करके तू अत्यन्त व्याकुल होरही है २ तिस कारण मेरे आगे कह हे प्रिये मेरे प्राणोंकी तेरेको सौगन्दहै जो मेरे सुन नेके योग्यहै तो कहो ३ तिसके अनन्तर सत्यव्रतमें स्थितहुये भगवान्‌को सत्य भामा वचन कहनेलगी ४ गद्गद तो वाणी होगई और नीचेको मुख करलिया हे कमलकेसे नेत्रोंवाले मेरा सौभाग्य तैंनेही जगत् में विख्यातकियाहै ५ हे देव इसवास्ते गर्वितहुई मैं तिसको शिरसे कहहू और हे भगवन् आजतक सम्पूर्ण स्त्रियोंमें मानीहुईथी परंतु आज मैंने वादियोंके मुखसे सुना कि मेरी तोसोंहँसी करती है ६ सो क्योंनहीं हँसे जो नारदमुनिने तुमको कल्पवृक्षका फूल दियाथा सो अपनी प्यारी रुक्मिणी को देदिया ७ और मैं ठगलई हे भगवन् रत्नके अ- त्यन्त देनेसे तिसमें तेरा अत्यन्त स्नेह और बहुत मानहै ८ और नारदमुनि जो तुम्हारे आगे रुक्मिणी की वडाई करते थे सो तिस को प्रसन्नहुये आप सुनते भये ९ हे भगवन् मैं तो दुर्भगाहू क्यों वातवनाते हो क्योंकि पहले रसदेकर और पीछे अनुताप देतेहो १० इसवास्ते मेरे ऊपर प्रसन्नहोकर मेरेको तो तप करने को आज्ञादेतेहो ११ हे कमल सरीखे नेत्रवाले मैं स्वप्नमे भी देखती और श्रद्धा

प्रणय और कोपसे उत्पन्नहुआ जल तिसके नेत्रों से ऐसे आंशूपडते भये जैसे कमलपत्रसे ओसका जल २० पश्चात् पड़तेहुये जलको देखकर भगवान् तिस को अपनी छातीपर धरतेभये २१ जब छातीपरभी जलपडनेलगा तब भगवान् ने वचन कहा हे भामिनि २२ हे कमल सरीखे नेत्रोंवाली यह क्याबात तेरेनेत्रों से यह ऐसे जल क्योंपडता है जैसे कमल से जल और हे सुदरि तेरामुख तो चद्रमाकी तरह और कमलकीतरह २३ । २७ प्रकाश कियाकरता आज क्या हुआ और हे प्रिये किसवास्ते केसरधोगेरी २८ और क्यों सफेदवस्त्र धारणकिये हे प्रिये अच्छे कुसुभेवस्त्र धारणकर और हे सुदरि देवपूजने से पश्चात् श्वेत वस्त्र तेरे को धारणकरने नहीं योग्य हैं २९ और हे वरवर्णिनी हे देवि देवपूजन से उपरात तेरेको सफेदवस्त्र अभीष्ट हे ३० आभूषण क्यों नहीं धारण करती और विचित्रस्थान तैंने किसवास्ते छोड़े हैं ३१ और हे प्यारे दर्शनवाली किसवास्ते माथे में श्वेतकपडा बाधाहै और किसवास्ते चन्दन लगायाहै ३२ हे प्रिये इसरूप से मेरे को अत्यन्त ग्लानि करती है और पत्रलेखा नहीं सुदरलगता ३३ और रत्नोंसे रहित तेरीजंघा नहीं शोभाको प्राप्तहोती हे सुदरि कमलकेसी सुगधवाले मुख से क्यों नही बोलती ३४ आधेभी नेत्रसे मेरे को क्यों नहीं देखती और श्वास करके सहिजल क्यों छोडती है हे उदारचित्तवाली बस बहुत होलिया अब मतरोवे ३५ और हे देवि अञ्जनसे बिगडाजलको गेरके मुखकी शोभा मत बिगाड़े क्या सदेहहुआ मैंतो जगत्में तेराही किंकर चिरपातहू ३६ और हे प्रिये पहलेकी तरह मेरे से क्यों नहीं बोलती मैंने तेरा क्या निप्रिय कियाहै हे सुदरि जिसे बातसे तू दुःखपाती है सो मेरेको कह मन और कर्म्म और वचन से तिस सम्पूर्ण को सिद्ध करूगा यह मैं सत्य कहताहू ३७ हे प्रिये स्नेह और बहुमान तेरे बिना और स्त्रियोंमें मेरे नहीं है ३८ हे देवताओं की पुत्रियों के तुल्य यह मेरे निश्चयहै और हे प्यारी मन वचन कर्म्मसे तेरा दासहू ३९ और हे शोभने तेरे समान और कोई प्यारी नहीं है ४० हे बाले पृथ्वीविषे जो क्षमा और गन्ध है और शब्दसे आदि लेकर जो अम्बरमें गुणहै ऐसेतेरे में मेरीप्रीतिहै ४१ और कमलकेसी कांतिवाली अग्निमे जैसी काति है और सूर्य्य मे जैसे प्रभाहै और चन्द्रमामें जैसे नित्यकातिहै तैसेही तेरे में मेरास्नेह है ४२ ऐसे कहतेहुये प्यारे कृष्णको नेत्रोंसे जलपूछके शनैः शनैः वचन कहतीभई ४३ कि हे प्रभो मेरा तो

नित्यमन यहीथा कि तुम मेरेहो परन्तु आज जानी कि साधारणही स्नेहहै ४४ हे प्रिये क्या वहुत कहनेसे है आपके हृदयको मैं जानतीहू हे भगवन् आपके वाणीमात्रही माधुर्य्य है ४५ हे पुरुषोत्तम मेरे विषे स्नेहकपटकाहै और जगह अच्छाहै ४६ और हे भगवन् कोमल स्वभाववाली और भक्त ऐसी का मेरा तिरस्कार किया ४७ हे प्रिय जो तू मेरे पर अनुग्रह करती है तो यह आज्ञा दो कि मैं निश्चयकरके तप करोंगी ४८ हे भगवन् जो भर्त्ताकी आज्ञासे तपहै और व्रतहै सो तो फलदायकहै ४९ और भर्त्ताकी आज्ञाविना व्रतादिहैं सो निष्फल हैं क्योंकि पति स्त्रीको परमदेवहै ५० ऐसे कहके फिर सुदरिने नेत्रोंसे जलछोड दिया और मुखपर वस्त्र गेर लोटगई ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायापारिजातहरणेपञ्चविंशत्यधिकशततोऽध्याय १२५॥

एकसौ छब्बीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे अभिमानवाली क्रोध हुई सत्यभामाको फिर वचन कहतेभये १ हे कमलकेसे नेत्रोंवाली यह तेरा शोक मेरे अंगको दग्ध करताहै हे प्रिये जिस करके तू अत्यन्त व्याकुल होरही है २ तिस कारण मेरे आगे कह हे प्रिये मेरे प्राणोंकी तेरेको सौगन्दहै जो मेरे सुन नेके योग्यहै तो कहो ३ तिसके अनन्तर सत्यव्रतमें स्थितहुये भगवान्को सत्य भामा वचन कहनेलगी ४ गद्गद तो वाणी होगई और नीचेको मुख करलिया हे कमलकेसे नेत्रोंवाले मेरा सौभाग्य तैंनेही जगत् में विख्यातकियाहै ५ हे देव इसवास्ते गर्वितहुई मैं तिसको शिरसे कहूहू और हे भगवन् आजतक सम्पूर्ण स्त्रियोंमें मानीहुईथी परन्तु आज मैंने वादियोंके मुखसे सुना कि मेरी तोमों हँसी करती है ६ सो क्योंनहीं हँसे जो नारदमुनिने तुमको कल्पवृक्षका फूल दियाथा सो अपनी प्यारी रुक्मिणी को देदिया ७ और मैं ठगलई हे भगवन् रत्नके अत्यन्त देनेसे तिसमें तेरा अत्यन्त स्नेह और वहुत मानहै ८ और नारदमुनि जो तुम्हारे आगे रुक्मिणी की वडाई करते थे सो तिस को प्रसन्नहुये आप सुनते भये ९ हे भगवन् मैं तो दुर्भगाहू क्यों वातवनाते हो क्योंकि पहले रसदेकर और पीछे अनुताप देतेहो १० इसवास्ते मेरे ऊपर प्रसन्नहोकर मेरेको तो तप करने को आज्ञादेतेहो ११ हे कमल सरीखे नेत्रवाले मैं स्वप्नमें भी देखती और श्रद्धा

करतीनहीं क्योंकि तुम्हारे देखतेहुये और आनन्द देखताभया १२।१३ हे भगवन् तिस मुनिके यथेच्छ वचनसुनो और हे भगवन् मेरे तो तुम्हारे समीप में क्रोध क्योंकि माननहीं १४ इसवास्ते तप करोंगी हे भगवन् श्रेष्ठों के ये वचनहैं कि मानकेवास्ते सब जीते हैं सो मानवर्जित जीवने की इच्छानहीं करतीहू १५ अहो बड़े कष्टकी बातहै जिससे मेरी रक्षाहोती उसीसे अब भयहोगया १६ हे विभो बड़े कष्टकी बातहै तुम्हारी त्यागीहुई किसगतिको प्राप्तहोंगी १७ हे मानके देनेवाले मोहसे ईश्वरका मैं क्या अप्रिय करतीभई जिससे तुम्हारी प्यारी होकर और अब वैरनहोगई १८ हे विभो वसन्तको फूलोंसे चित्र रैवतगिरिको तुम्हारी प्यारीहुई देखके और अब वैरनहुई कैसे देखूं १९ हे भगवन् कोयलके शब्दों से मिश्रित और पुष्पोंकी सुगंधको बहनेवाला और पवित्र ऐसे वायुको मैं दुर्भगा हुई कैसे सेवनकरूं २० और हे प्रिय तुम्हारी गोदमें स्थितहुई समुद्रमें क्रीड़ा करके पश्चात् दौर्भाग्य को प्राप्तहुई मैं कैसे समुद्रको देखूं २१ हे भगवन् जो आप पहले कहतेभये कि हे सत्राजिति तेरे सिवाय और मेरेको प्यारी नहीं है सो वचन कहागये अथवा कौन मेरेको यादकरेगा २२ हे विभो जो मेरी सासु मेरेको बहुत मानसे देखती भई सोही अब तेरेकरके तिरस्कारकरी दौर्भाग्यको मेरेको देखेगी २३ हे मानके देनेवाले तेरा स्निग्धभी मूढप्रेमसे क्याहै क्योंकि जिससे जनों के समान मेरेको नित्य नहीं देखता २४ हे शत्रुओंको नाशकरनेवाले पहले मैं धूर्त कपटीको तेरेको मैं नहीं जानती भई अब जाना कि रुक्मिणी को चाहताहै और अन्य जनोंको ठगनेवालाहै २५ स्वर और वर्ण और चेष्टित और आकार इनसे गूढ़ोंसे आज बड़ेयत्नसे तू चोर जानाहै मैं जानतीहू कि औरोंकी पक्षमें है और वाणीमात्रसे मधुरहै २६ और शठहै हे राजन् जनमेजय ऐसे ईर्षा के वशहुई और मानवाली ऐसी सत्यभामाको भगवान् शांति करातेहुये वचन कहनेलगे २७ कि हे प्रिये हे मेरी ईश्वरी हे कमलकेसे नेत्रोंवाली ऐसे मतकह बहुत कहनेसे क्याहै मेरेको अपनाही प्याराजान २८ हे देवि सो कल्पवृक्ष का फूल मेरा प्यार करताहुआ नारदमुनि तिस रुक्मिणीको देताभया २९ हे सुंदर हासवाली तू प्रसन्नहो और मेरे अपराध को सह ३० हे अतिकोपवाली जोतू कल्पवृक्षके फूलकी वांछाकरैहै तो मैं निश्चयदूंगा सत्यकहताहूं ३१ और क्याकहूं स्वर्गसे कल्पवृक्ष लाके जबतक तू चाहेगी तेरे भवनमें स्थापन करूंगा ३२ जब

ऐसे भगवान् ने कहा तब हे राजन् हरिकी प्यारी वह सत्यभामा कहनेलगी कि हे भगवन् ऐसेहै तो लादो ३३ हे भगवन् यह क्रोध दूरकिया और इसके लानेसे वहुतगुण होजायँगे और सम्पूर्ण स्त्रियोंमें मैं मुख्य होजाऊंगी ३४ ऐसेसुन जगत्की उत्पत्ति प्रलय करनेवाले भगवान् ३५ तथास्तु ऐसे कहतेभये पश्चात् कंस के नाशकरनेवाले भगवान् की प्यारी सत्यभामा यह वचन सुनके वहुत प्रसन्न हुई ३६ पश्चात् जगन्नाथ सर्वात्मा सर्व्वभावन सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवाले ऐसे कृष्णचन्द्र स्नानकरके आवश्यक कर्म करतेभये ३७ पश्चात् हे राजन् भगवान्ने नारदमुनिका ध्यान किया उसीसमयमें नारदमुनि समुद्र में स्नानकरके आतेभये ३८ हे राजन् पश्चात् आयेहुये नारदमुनिको देखके धर्मके जाननेवाले भगवान् सत्यभामा सहित विधिपूर्वक पूजन करतेभये ३९ और सत्यभामा आप नारदमुनि के चरण धोतीभई और भगवान् आप झारी करके जल देतेभये ४० पश्चात् जगत्गुरु सावधान आत्मा भगवान् सुखपूर्वक बैठेहुये मुनिको परमअन्न देनेभये ४१ पश्चात् लोकोंके ईश्वर कृष्णचन्द्रका सत्कार किया उदार चित्त मुनि परमश्रद्धासे भोजन करताभया ४२ पश्चात् तृप्तहुआ मुनि आचमनकरके प्रभुको आशीर्वाददेताभया तिन आशीर्वादोंको प्रसन्नचित्त भगवान् ग्रहणकरतेभये ४३ पश्चात् नम्रहुई सत्यभामाको दहने हाथमें जललेकर नारदमुनि कहनेलगे ४४ कि हे देवि जैसे तू अव पतिव्रताहै इससे विशेष मेरे तप के वलसे हो ४५ हे राजन् मुनियों में मुख्य नारदमुनिने ऐसे कही हुई सत्यभामा वहुत आनद से खडीहुई ४६ पश्चात् हे कौरव्य जनमेजय अमित पराक्रमवाले और बुद्धिमान् ऐसे कृष्णचन्द नारद से आज्ञा लेकर भोजन करतेभये ४७ पश्चात् हे भारत सत्यभामा भी अपना आवश्यक करके भर्ता कृष्णचन्द्र की आज्ञा से मुदितहुई दिव्य मकानों को प्रवेश होतीभई ४८ पश्चात् एक मुहूर्त नारदमुनि बैठके कृष्ण चन्द्र को कहनेलगे ४९ कि हे अधोक्षज मैं आपसे पूछता हूं कि इन्द्रलोक में जाऊंगा ५० क्योंकि वहा महीना के महीने इन्द्रके भवन में आदिदेव महादेव जी को नमस्कार करके और महादेवजी की पूजाकेवास्ते देव गन्धर्व्व अप्सराओं के समूह गाते हैं और नृत्यकरते हैं ५१।५२ और देवदेव सोमविभु तहा अन्तर्द्धान हुआ तिस इन्द्र के कराये उत्साह को देखताहै ५३ और हे भगवन् मैं भी पहलेदिन निमन्त्रित कियाहूं ५४ परन्तु यह वृक्षोंका राजा कल्पवृक्षका पुष्प

आपके देनेकेवास्ते लायाहूं भगवन् यह पुष्प देवताओं के भोगके योग्यहै ५५ और हे कृष्ण यह वृक्ष इन्द्राणी को अत्यन्त प्याराहै और यह नित्य पूजनकिया सौभाग्य देताहै ५६ तिससमयमें पवित्र करने को यह कल्पवृक्ष महात्मा कश्यप जी ने रचाहै कि एकसमय में पहले अदिति ने सेवासे मुनि प्रसन्न करदिये ५७ तब महातेजस्वी मारीच कश्यपमुनिने बरका लोभदिया तब अदिति कहनेलगी ५८ कि हे मुनियों में श्रेष्ठ जिसकरके मैं सुभगा रहूं और यथेच्छ सम्पूर्ण गहनों से भूषितरहूं और हे तपोधन वाञ्छित नृत्यगीत जैसेहोवें और जैसे नित्यकुमारी और रज रहित शोक रहित पतिभक्तिवाली धर्मशीला ऐसी जैसे होजाऊं सो वरदान दो ५६। ६० यह सुन कश्यपजी प्रियाकी वाञ्छाकरके यह विरज और शोकरहित और पतिभक्तिवाली और धर्मशीला ऐसी होजावो ६१ इसवास्ते सम्पूर्ण कामना के देनेवाले पुष्पों से आवृत और दिव्य गन्धसेयुक्त ६२ तीन शाखाओं से युक्त सम्पूर्ण कालों में दृश्य सम्पूर्ण भूतोंको मनोहर ऐसा कल्प-वृक्ष रचा ६३ हे सत्यभामे यह इसप्रकार के और अन्यप्रकार के पुष्पोंको धारण करताहै ६४ और मन्दराचल और वृक्ष इन्हों में सारलेकर कश्यपजी ने यह रचा है ६५ पश्चात् सौभाग्यके वास्ते इन्द्राणीको इन्द्रने दिया और रोहिणीको चन्द्रमा ६६ और ऋद्धिको कुबेर ऐसे सौभाग्यका देनेवाला यह कल्पवृक्षहै इस में सन्देह नहीं ६७ और इस कल्पवृक्षको गंगाजी के पारिमें होने से पारिजात कहते हैं ६८ और मदारके पुष्पों से युक्तहै इसवास्ते मन्दार कहते हैं ६६ और नहीं जानते हुये मनुष्य इसको कोई दारु अर्थात् वृक्ष है इसवास्ते कोविदार कहते हैं ७० नारद मुनि कहते हैं कि हे भगवन् सो दिव्यवृक्ष जानिये हैं जिसका यह पुष्प है ७१। ७२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायापारिजातहरणेषड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२६

एकसौसत्ताईस का अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् तिसके अनन्तर जानेकी इच्छाकरते हुये नारदमुनिको अमित पराक्रमवाले विष्णुवचन कहनेलगे १ हे महर्षे हे धर्म तत्त्व के जाननेवाले तुम स्वर्ग जाके और तहां महादेवजी के सदस्यों को देख कर २ और मेरे वचनसे इन्द्रको मेरा भ्रातापन वर्णनकरो क्योंकि जिससे पुराणों

में कहा भ्रातृपनको तुम जानतेहो ३ पश्चात् यह कहो कि हे इन्द्र धर्मका जानने वाला और मुनियों में श्रेष्ठ ऐसे कश्यप भगवान् जो अदिति के प्यारकेवास्ते पहले कल्पवृक्ष रचतेभये ४ सो अति श्रेष्ठहै सौभाग्यका देनेवाला है और हे मुने ऐसा यह कल्पवृक्ष पुण्यकेवास्ते ५ और दान धर्म के वास्ते और मेरी प्रीति के वास्ते महाद्रुम कल्पवृक्ष द्वारका को ल्यावो ६।७ और जब यह महातरु दान वाञ्छित देदेगा तब फिर स्वर्ग में पहुचादेंगे ८ हे मुनिवर भगवान् इन्द्रसे ऐसे कहना जैसे इन्द्र कल्पवृक्षदेदे तैसे तैसे तुमको यत्नकरना योग्य है ९ हे तपोधन मैं तुम्हारे संपूर्णगुण देखूंहू हे मुने यह सपूर्ण कार्यों की संपत् तुमको देने योग्य है १० वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् भगवान्से ऐसे कहेहुये नारदमुनि केशीको मारनेवाले भगवान्से यह वचन कहनेलगे ११ कि हे यदुमुख्य निश्चय इन्द्रको ऐसेही कहूंगा परंतु इन्द्र किसी प्रकारसे भी देगा नहीं १२ क्योंकि जिस से पहले दानव और देवता पर्वतों में श्रेष्ठ मंदराचलको समुद्रमें गेर इस कल्पवृक्षको निकालतेभये १३ हे भगवन् पहले लोकों के करनेवाले महादेवजी ने मंदराचलमें लगानेको कल्पवृक्षके वास्ते हमें भेजाथा सो नटगया १४ पश्चात् महादेवजी बोले अच्छा मतलावो वहीं रहने दो १५ व इन्द्र पश्चात् जाके महादेवजी से कहनेलगा कि हे भगवन् वह तो नदनवन में इन्द्राणी की क्रीडा का वृक्षहै १६ आप बख्श दो ऐसे कहे हुये महादेवजी ने तथास्तु ऐसे वरदान दे दिया पश्चात् महादेवजी पार्वती के प्यारके वास्ते मदराचल में दोसौ कोश की प्रमाण से कल्पवृक्षों का वन रचतेभये १७।१८ हे कृष्ण तिस पर्व्वत में न तो सूर्य्य की किरण पडती हैं न चद्रमाकी प्रभा और न वायु प्रवेशहोता १९ और तहा शीत उष्ण वाञ्छा करतेहुये पुरुषके पर्वतकी पुत्रीसे प्राप्त होते हैं २० व महादेवजी के तेज करके यह वन आप प्रकाशित है और हे यदुवर्द्धन अर्थात् यादवोंको बढानेवाले गणोंसहित महादेवजी और में तिस दिव्य वनमें जाते हैं और कोई भी किसीप्रकार से नहीं जाता २१ हे वार्ष्णेय अर्थात् वृष्णि वश में होनेवाले तहा चारोंतरफको वाञ्छित मुख्य रत्नोंको कल्पवृक्ष भिरते हैं २२ हे केशव देवदेव और लोकनाथ ऐसे महादेवजी की आज्ञा से श्रेष्ठ महात्माओं के गण तिन्होंको भोगते हैं २३ व पारिजात से भी जियादह गुणवाले तिन्हों के फूलहैं २४ व मूर्तियोंको धारणकरे वृक्ष श्रेष्ठ मुनियों सहित चंद्रमा देवताको

पासना करते हैं २५ व हे भगवन् महादेवजीके तेज से सेवित और दुःखहीन व सुखोंके सहित मंदराचल में ऐसे वृक्ष स्थितहैं सो पार्वती के बड़े प्रियहैं २६ व हे भगवन् महाबल घोर वरदानसे दर्पित पापसे निश्चयवाला सम्पूर्ण भूतोंसे अवध्य और वृत्रासुरसे दशगुणा बली ऐसा अधक नाम दैत्य तहां प्रवेश होगया था सो शत्रुओंके मारनेवाले महादेवजीने मार दिया २७। २८ हे कमलकेसे नेत्रों वाले इसवास्ते इन्द्र बड़े दुःख से कल्पवृक्ष को देगा यह मैं सत्य कहता हूं २९ क्योंकि जिससे इन्द्राणी और इन्द्रको यह कल्पवृक्ष हितकारी है और सम्पूर्ण कामनाओं का देनेवालाहै ३० ऐसे नारदमुनिके वचन सुन भगवान् कहनेलगे हे मुने बुद्धिमान् महादेवजी ने अच्छाकिया जो इन्द्राणी के वास्ते कल्पतरु छोड़ दिया ३१ क्योंकि जिससे महादेवजी सम्पूर्ण प्राणियों में बड़े हैं लोकों के रचनेवाले हैं परावरके रचनेवाले हैं यह मेरी बुद्धिहै ३२ व हेमुने मैं छोटाहूं और सर्वथा बलघाती इन्द्रको ऐसे लाडना योग्यहूं जैसे जयन्तपुत्र ३३ व हे तपोधन तुम संपूर्ण प्रकारों से और बहुतसे उपायों से मेरी प्रीतिके वास्ते यत्न करने को समर्थहो ३४ हे मुने मैंने सत्यभामाके साथ यह प्रतिज्ञा करलई है कि स्वर्ग से कल्पवृक्ष तुझे लादूंगा ३५ सो हे तपोधन तिस वचनको मैं असत्य कैसे करदूं क्योंकि पहलेभी किसीकाल में मैंने असत्य नहीं कहा ३६ हे मुने जब मेरीप्रतिज्ञा भंगहोजायगी तब लोकों का प्रलयहोजायगा हे मुनि श्रेष्ठ धर्मगुणों से युक्त सम्पूर्ण लोकों को धारण करनेवाला मैं कैसे असत्य बोलूं ३७ हे महामुने देव और गंधर्वगण और राक्षस और असुर और यक्ष और पन्नग जो ये सम्पूर्ण मेरी प्रतिज्ञाको भंग करने में उद्यतहोवें तो ये सम्पूर्ण बहुतकाल पर्यंत नहींजीवें ३८ व हे मुने जो तुम्हारा याचना किया इन्द्र कल्पवृक्षको नहींदेगा तो इन्द्राणी करके अनुलेपन किये हृदय में गदामारूंगा ३९ हे मुने ऐसे सामपूर्व्वक कहा हुआ इन्द्र जो कल्पवृक्ष नहीं देगा तो मैं निश्चय तहां जाऊंगा और आप भी मेरे गमनके वास्ते निश्चय करना ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेसप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७

एकसौ अट्ठाईसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् पश्चात् नारदमुनि इन्द्रके भवनमें जाके

तिस रात्रिको वहां वसताभया और उत्साह देखताभया १ और तहां अदितिके पुत्र महात्मा देवता और इन्द्र और शुभकर्मों से गयेहुये राजर्षि और विद्वान् व नाग यक्ष सिद्ध चारण ब्रह्मर्षि सैकडों देवर्षि मनुमहात्मा २ सुपर्ण महाबल मरुत सैकडों देवताओं के समूह और इन सम्पूर्णोंके ऊपर और हजारहा कल्पांतरमें भी जिनकानाश नहीं ऐसे देवर्षि मुनियोंकरके सहित महेश्वर देव अपने गणोंकरके सहित स्थित होताभया ३ और जिनको महादेवजी के तुल्य देवता पूजन करते हैं और आत्मज्ञ सत्यवादी धर्म्म मार्ग में स्थित ऐसे रुद्र और देवता ये सम्पूर्ण महादेवजी की उपासना करते भये और स्कन्द गंगाजी अर्चिष्मान् तुम्बरु और भारिये और इन्होंसे अन्यदेव देवताओंके नेता ये सम्पूर्ण तहां आतेभये ४ और हे राजन् जो धर्म्म में स्थितहुये और तपमें स्थितहुये जो मनुष्य शुभकी वाञ्छा करतेहुये जो देवताओं को पूजते हैं ५ तिन्होको देवता पूजते हैं और हे राजन् जो पितरोंके कर्मों में स्थितहैं और जो सन्यास और देवताओंके कर्मों में स्थितहैं और हे कौरव्य जो वेदकापाठ करते हैं और जो नित्य ब्रह्मचारी हैं सो सम्पूर्ण तहा आते हुये ६ । ७ और तिस सभामें गन्धर्व्वों का अधिपति चित्ररथ पुत्रकरके सहित प्रसन्नहुआ देवताओं के बाजे बजाताभया ८ और ऊर्णायु चित्रसेन हाहा हूहू उम्बर तुंबरु येसम्पूर्ण गातेभये ९ और उर्वशी पूर्वचित्ति हेमारम्भा हेमदत्ता घृताची सहजन्या ये सम्पूर्ण गातेभये १० आत्मवान् भगवान् महादेव जी तिस उपस्थान को सेवन करताभया ११ और पश्चात् इन्द्रके तिस वृत्तांतसे प्रसन्नहुये महादेवजी कैलासमें जातेभये १२ जब भूतपति महादेवजी चलेगये तब सम्पूर्ण राजा जैसे आयेथे वैसेही चलेगये १३ और इन्द्रके पूजित सम्पूर्ण देवताभी अपने अपने स्थानोंमें जातेभये १४ जब सम्पूर्ण चलेगये तब सुख पूर्व्वक सभ्योंसहित बैठेहुये इन्द्रको नारदमुनि प्राप्तहुआ १५ मुनिको देखकर इन्द्र उठके तिस तपोधन मुनिका पूजन करताभया १६ और कुशहैं गर्भ में जिसके ऐसे अपने आसनके समान आसन देताभया १७ पश्चात् महातेजस्वी नारदमुनि इन्द्रकी प्रति यह वचन कहताभया हे देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र मेरे को अतुल तेजवाले विष्णुका दूतजान १८ किसी कार्य्यको आगे करके महात्माने आपके पास भेजाहै १९ ऐसे सुन प्रसन्नहुआ इन्द्र कहनेलगा हे मुने पुरुष श्रेष्ठ भगवान् मेरेको क्या कहते थे जल्दीकहो २० हे धर्म्म जाननेवालों में श्रेष्ठ मुने

महात्मा कृष्णने मुझे बहुतदिनों में यादकिया तिन्होंके सुन्दर प्रिय वाक्यकहो २१ ऐसे सुन नारदमुनि कहनेलगे कि हे इन्द्र पुरुषों में श्रेष्ठ देवताओं में यश करनेवाले ऐसे तुम्हारे भाई के देखने को मैं द्वारकामें गयाथा २२ सो तिन्होंको रैवतकमें रुक्मिणी के साथ ऐसे देखताभया जैसे पार्वतीजी करके महादेव जी सो २३ हे देवेश पत्नियों के मध्यमें बहुत तेजवाले कृष्णचन्द्र को आश्चर्य्य के वास्ते मैंने पुष्प दिया २४ हे मानके देनेवाले बहुत कामनाओंका देनेवाला व वृक्षराज से उत्पन्नहुआ ऐसे पुष्पको वे पत्नी देखकर परम आश्चर्य्यको प्राप्तहोती भई २५ हे देवेश मैंने तिस कल्पवृक्ष के गुणकहे और तेजस्वी कश्यप ऋषिसे उत्पत्यकही २६ हे इन्द्र जब मैंने इसके सम्पूर्ण गुणकहे तब तुम्हारे छोटेभ्राता कृष्णचन्द्रकी सत्यभामानाम पटरानी तिसकेवास्ते श्रम करतीभई २७ हे देवगणों के ईश्वर पश्चात् तिस सत्यभामाने याचनाकिया तुम्हारा भ्राता धर्म्मात्मा कृष्ण प्रतिज्ञा करताभया २८ पश्चात् बलवानों में श्रेष्ठ विष्णु मुझको जो कहताभया हे सुरमुख्येश तिसको यथार्थसुनो २९ प्रणामकरके अच्युतने यह कहाहै कि छोटा भ्राता लड़ाना योग्यहै ३० इस वास्ते हे सुरश्रेष्ठ इस श्रेष्ठ कल्पवृक्ष को भेजवाओ क्योंकि जिससे हे असुरों के नाश करनेवाले तुम्हारी वधूका मनोरथ सफलहो ३१ और तिसकी विशेषसे धर्म्म कृत्यहो हे लोकगणों के ईश्वर यह दुर्लभ कल्याणवाला लोकहै सो मेरे प्रभावसे मनुष्य देवताओंके कल्याण को देखो ३२ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् महेन्द्र ऐसे नारद के कहे वासुदेव भगवान् के वचन सुन पश्चात् मुनि को ऐसे वचन कहताभया ३३ हे द्विजश्रेष्ठ तुम्हारा कहा मैंने सुनलिया अपने आसनपर बैठो ३४ और अतुलतेज विष्णुको प्रति सदेशा दूंगा ३५ जब नारदमुनि अपने असनपर बैठगये तब नारदमुनि से आज्ञालेकर आपभी तिसके समान आसनपर बैठगये ३६ पश्चात् वृत्रासुरको नाशकरनेवाला इन्द्र अपने बल और वीर्य्य और पार्षद इन्द्रोंको देखकर नारद मुनिसे वचन कहतेभये ३७ हे महर्षे हे धर्म्मज्ञ पहले मेरी तरफसे कुशल पूछके पश्चात् सम्पूर्ण भूतों का सुख देनेवाले जनार्दन से यह कहना ३८ हे भगवन् मेरेसे अन्य तू जगत्का ईश्वरहै सो हे अच्युत तुम्हाराही यह कल्पवृक्ष है ३९ और रत्नभी तुम्हारेही हैं हे देव तुमतो भार दूरकरने को पृथ्वी पर गयेहो और कार्य्य की सिद्धिके वास्ते मानुषत्वको स्थितहोरहे हो ४० और जब प्रतिज्ञा पूर्ण

होलेगी तब फिर स्वर्ग में प्राप्त होवोगे हे अधोक्षज तेरी वधुओंकी इष्ट कामना पूर्ण करदूगा और हे अच्युत तुमको अल्पकामके वास्ते स्वर्ग के रत्न मनुष्य लोक में प्राप्तकरने नहीं योग्य हैं ४१ यह पूर्वकृत स्थिति है और हे महाबल हे प्रभो जो स्थितिको उल्लघनकरके वरतू तो प्रजापतियों के समूह मेरेको क्या करेंगे ४२ हे भगवन् पुत्र और पौत्रों सहित महात्मा ब्रह्माने जगत् के सम्पूर्ण कृत्यों के नियम स्थापन करदिये हैं हे भगवन् प्रजापतियों के मार्गको त्याग के चलतेहुये को मेरे से सुन बुद्धिमान् और प्रभु अर्थात् समर्त्थ ऐसा प्रजापति शापदेदेगा ४३ और जो हमहीं मर्यादारूप सेतुबन्धन को तोडदेंगे तो शङ्कित हुये दैत्य और दैत्यों के पक्षकी अन्यमर्यादाको भेदन करदेंगे ४४ और हेमान के देनेवाले जो स्त्री के वास्ते यहा स्वर्ग से कल्पवृक्ष लेजाओगे तो स्वर्गवासी विमना होजावेंगे ४५ और मनुष्यों के वास्ते जो ब्रह्माने उपभोग रचे हैं हे नारदमुने तिन्होंकरके मेराभ्राता प्रसन्नहोजाओ ४६ यहा स्वर्ग में भी जो मेरे परिग्रहहै तिसको यहा स्वर्ग में भी स्थितहोकर कृष्ण भोगनेको योग्यहै ४७ हे मुने अत्यन्त बडे जो भोग हैं तिन्हों को क्या जनार्दन नहीं जानता है ४८ जिससे धर्मको त्यागके और पापमें वर्त्ते और कृष्ण महात्माके स्त्री वश्यता जो जगत्में विख्यात होनेगी ४९ तो अपयश होवेगा मेरीतो यह बुद्धिहै ५० और हे नारद जो मनुष्यभावको प्राप्तहुआ मधुसूदन मेरे ज्येष्ठभ्राताके साथ हठकरेंगे तो इस स्वर्गरत्नके लोपसे मेरानिरादर होवेगा और जातिसे विशेष करके निंदाहोवेगी ५१ और यह मधुसूदन ब्रह्माके स्थापन किये श्रेष्ठों के धर्मोंको और धर्म्म अर्त्थ काम क्रमसे इन्होंको सेवन करताहै ५२ और जो कल्पवृक्षको में पृथ्वी में प्राप्त भी करदूगा तो इन्द्राणीसे आदि लेकर कौन मेरेको बडामानेगा ५३ और हेमुने मनुष्य पृथ्वीपर कल्पवृक्ष को और स्वर्गकाफल पृथ्वीपर देख स्वर्ग के वास्ते उद्यम नहीं करेंगे ५४ हे नारद जो कल्पवृक्षके गुणों को मनुष्य सेवन करेंगे तो देवता और मनुष्यों में क्या विशेषहोगा ५५ हे मुने जो तहा कर्म्म करते हैं सो यहा स्वर्ग में आके भोगेंगे ५६ और जब कल्पवृक्ष के गुणों से युक्त मनुष्य होजायँगे तब स्वर्गके वास्ते यत्न न करेंगे ५७ और पृथ्वी में स्वर्गकाफल प्राप्त होके मनुष्य यज्ञ नहीं करेंगे ५८ और देवताओंके समानहुये पूर्तआदि न करेंगे ५९ और हे तपोधन श्रद्धापूर्वक स्वर्गकी इच्छा करतेहुये मनुष्य यज्ञ जप्य

आह्निककर्म इन्होंकरके हमारेको तृप्त करते हैं ६० पश्चात् कल्पवृक्षके गुणसेयुक्त जन ये सम्पूर्ण नहीं करेंगे और तिन्हों करके हीन हम तेजसे रहित होजायँगे और यहा से जो हम वर्षाकरते हैं तिससे खेतीहोकर पृथ्वीपर मनुष्य जीते हैं ६१ और दान यज्ञोंकरके हमारी तृप्ति करते हैं और हे भगवन् क्षुधा प्यासरोग जरा मृत्यु रति दौर्गंध्य और कर्म से उत्पन्नहुई ६२ जब कल्पवृक्षके गुणों से मनुष्यों के ये नहीं रहेंगे ६३ तो किसवास्ते स्वर्गका उद्योग करेंगे हे विप्र आक्लिष्ट कर्म के करनेवाले विष्णु को यह कहना उचितहै ६४ कि सम्पूर्ण प्रकारकरके स्वर्ग से पृथ्वी में कल्पवृक्ष का भेजना योग्य नहीं ६५ हे ऋषियों में श्रेष्ठ जैसे २ मेरा भ्राता प्रसन्नहोवे तैसेही तैसे मेरे प्यारकी इच्छा करके करनायोग्य है ६६ और हारमणियोंके रत्न और चन्दन और अगुरु और अनेकप्रकारके वस्त्र ये सम्पूर्ण वधुओंकेवास्ते द्वारकामें पहुचाओ ६७ और मनुष्यलोकोंके हितकारी जो योग्य वस्तु हैं सो पहुँचावो और स्वर्गकी चोरी करनी केशवके योग्य नहीं है ६८ हे मुने मैं वाञ्छित रत्नभी देदूगा और वहुतसे अनेक प्रकारके आभूपण भी देदूगा परन्तु स्वर्गवासियों को प्यारे कल्पवृक्षको मैं कभी नहींदूंगा ६९ । ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपारिजातहरणेइन्द्रवाक्येऽष्टाविंशत्यधिकशतोऽध्यायः १२८ ॥

एकसौ उन्तीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय नारदमुनि ऐसे देवराज के वचन सुनके वाक्य का जाननेवाला और धर्म्म का जाननेवाला और महात्मा ऐसा नारदमुनि इन्द्रको वचन कहताभया १ और हे वलिनिपूदन हे महाबाहो निश्चय तुम्हाराहित कहना उचितहै जिससे तेरे विषे मेरा वहुतमानहै २ हे देवेश तुम्हारे मतको जानताहुआ मैंने भगवान्से ऐसे भी कहेथे कि जिससे महादेवजी को कल्पवृक्ष तुमने नहीं दिया था ३ हे इन्द्र सामान्यसे तिसके हेतु मैंने सम्पूर्ण दिखादिया परन्तु वासुदेव नहीं मानताभया यह मैं सत्य कहताहू ४ हे देवेश पश्चात् कमल केसे नेत्रोंवालेने यह कहा कि मैं उपेन्द्रहूं और इन्द्रको लड़ाने योग्यहू ५ हे वृत्रासुर के नाशक वारम्वार मैंने वहुत हेतु दिखादिये परन्तु तिस कृष्णचन्द्रकी वुद्धि वढी नहीं ६ और हे इन्द मधुसूदन और पुरुषों में श्रेष्ठ

ऐसे भगवान् वाक्यके अन्तमें क्रोधकी तरहभी कहतेभये ७ हे इन्द्र मेरे से ऐसे कहनेलगे हे मुने देव गन्धर्व्वगण राक्षस असुर पन्नग येभी सम्पूर्ण मेरी प्रतिज्ञा को दूर करने को समर्थ नहीं ८ व यह कहाहै कि याचित किया इन्द्र जो कल्पवृक्ष नहीं देगा इन्द्राणीने लगायाहै लेपन जिसमें ऐसे हृदयको गदासे भेदन करूंगा ९ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे जनमेजय फिर नारदमुनि कहने लगे कि हे महेन्द्र तेरे भ्राता उपेन्द्रका यह परम निश्चयहै यहा जो न्याय मानो सो विचारकेकरो १० हे देवेश मेरीसुनो तत्त्व और हित तो यही है कि कल्पवृक्ष का द्वारकामें भेजना मेरेको यह रुचताहै ११ ऐसे नारदमुनि को कहाहुआ देवताओं का राजा इन्द्र क्रोधयुक्त होकर यह वचन कहताभया १२ हे तपोधन जो केशव अपराध रहित मेरे भ्राता में ऐसे करेगा तो क्या करनेको समर्थ है १३ हेमुने पहलेही वहुत प्रतिकूल मेरे विषे करताभया सो सम्पूर्ण भ्राताहैं ऐसे जान के मैंने सहे हैं १४ देखो पहले इन्द्रका रथ वहताहुआने तो खांडववन अग्निको देदिया और जव अग्नि बुझानेको मेघआये तव येभी निवारण करदिये १५ व देखो गोवर्द्धन धारण करताहुआ ने भी हमारा कुप्यार किया और वृत्रासुर के मारने में सहायता के वास्तेकही तव यह कहा कि मैंतो सम्पूर्ण भूतों को समान हूं १६ पश्चात् अपनीही भुजाओं के वलके आश्रयहोकर मैंने वृत्रासुर मारा १७ और हे नारदमुने पश्चात् जव देवता और असुरोंका युद्ध होनेलगा तव अपनी इच्छासे कृष्णचन्द्रने युद्धकिया १८ इस वातको तुम भी तो जानतेहो इसवास्ते वहुत कहनेसे क्याहै अच्छीवातहै कृष्णयुद्धमें प्रवृत्तहो परन्तु हमेंतो ज्ञाति भेद करना उचित नहीं १९ हे मुने तुम साक्षीहो और जो मेरे हृदय में गदामारनेको केशव उद्यम करनेलगा तो देखें क्या गुणदीखे २० और अदिति करके सहित उदास में प्राप्तहुआ जो मेरे पिता कश्यपहैं तिन्होंको भी कहो २१ और हे मुने मेरेभ्रातासे आत्मानहीं जीतागयाहै और रजोगुण तमोगुणसे व्याप्त हैं क्योंकि जिससे स्त्रीके वाक्यसे कामदेवके वशहुआ वड़े को मेरेको यह कहताभया २२ हे विप्र सम्पूर्ण प्रकारसे स्त्रीको धिक्कारहै और रजोगुण तमोगुणको भी धिक्कार है क्योंकि जिससे हे द्विज स्त्री का जीताहुआ विष्णु मेरेको यह आक्षेप करता भया २३ हे महामुने कामके वशहुये कृष्णने न तो कश्यपका कुल देखा और न मेरी माताके दक्षका कुलदेखा जिसमें मेरीउत्पत्ति है २४ और वड़ापन राजा

पन देवताओं का मानाहुआ इनको भी नहीं देखताभया २५ हे पापरहित मुने ब्रह्मा पहले मुझसे यह कहताभया कि तेराभ्राता हजारहों पुत्र स्त्रियोंकरके श्रेष्ठ है और सद्वृत्तहै ज्ञानसे सम्पन्नहै २६ और भ्राताके समान इतरजन बन्धु नहीं है ऐसे मेरेको माता पिताभी कहतेभये २७ और हे मुनिसत्तम माता पिता मेरे को क्या कहैंगे पहिले विष्णुका शरीर स्नेहसे मैंने धारणकिया था और हे मुने ऐंद्र वैष्णवभाग भी मैं इसीको देताभया २८ हे नारद छोटेभाई कृष्णको मैं प्रेमसे देखताहू और सग्राममें तिसने पहले प्रहारकरना २९ व धर्मका जाननेवाला भक्तिके आश्रयहुये केशवकी मैं यत्नसे रक्षाकरूगा हे मुने ऐसे अपमान मैंने पीछे करके और यह केशव लड़ाना योग्य है और बालक है ऐसे जाना ३० व यह मेरा पुत्रहै बालकहै छोटाहै ऐसे माता पिताने भी तिरस्कार नहीं किया ३१ व माताको विशेषकरके यह प्रियरक्खा और अब हम वैरी होगये ३२ व हे मुने केशव सर्वज्ञहै बलवान्है शूरवीरहै मान्यको माननेवालाहै ३३ यह हमारा सम्पूर्ण ध्यान असत्य होगया सो नारद अब तूजा और केशवको यह कह कि मैं बुलायाहुआ युद्धसे नहीं निवृत्तहूगा ३४ व यह कहना हे स्त्रीकरके जीताहुआ कृष्ण जो इच्छा करताहै तोजा और जो तू बाधाकरताहै सो सही है ३५ हे जनार्दन चक्रसे अथवा शार्ङ्गधनुष् से अथवा गदासे अथवा नन्दक खड्गसे इन शस्त्रोंसे दृढ़हुआ गरुडपर चढ पहले प्रहारकर ३६ व जब तू प्रहार करलेगा पश्चात् यथाशक्ति मैं प्रहार करूंगा अहो धिक्कारहै मेरेको जो स्नेह को खण्डित नहीं करेगा ३७ तो और हे मुनिसत्तम इतने सग्राममें प्राप्तहुये मेरेको कृष्ण नहीं जीतलेगा तबतक मैं कल्पवृक्ष नहीं दूंगा ३८ हे मुने बडे भ्राताको जो यह छोटा तिरस्कार करताहै सो इस स्त्रीजित हरिको मैं कैसेसहूगा ३९ हे भगवन् द्वारकामें अभी जा और विवाद में स्थितहुये अच्युत को यह कह कि हे कृष्ण कल्पवृक्ष का आधापत्र भी युद्ध किये बिना नहींदेगा ४० व हे मुने पश्चात् मेरेप्यारे के वास्ते निश्शंक यह कहना कि कल्पवृक्ष को मायाकरके हरनेको तू योग्य नहीं है युद्धही करना उचितहै और तेरी कुटिलता को धिक्कारहै ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेइन्द्रवाक्ये ऊनत्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १२० ॥

एकसौ तीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय कहनेवालों में श्रेष्ठ ऐसे नारदमुनि महेंद्र के वचन सुनके और एकान्तमें तिस देवराज इन्द्रसे यह वचन कहतेभये १ हे भगवन् राजाओं को यथेच्छ प्रियवचन कहने योग्यहैं और जब काल प्राप्त होजाय तब हित और अप्रियवचन भी कहने योग्य हैं २ लोकगति और तत्त्वका जाननेवाला और नयविज्ञानका जाननेवाला ऐसा भी है तू ३ परन्तु जब कार्य अकार्य प्राप्त होते हैं तब मेरेको पूछताहै इसवास्ते मैं कहूंगा जो तुमको अच्छालगे तो ग्रहणकरो ४ कि प्राप्तकाल और पराभव इसकी नहीं इच्छाकरता हुआ पुरुषको और नहीं भी पूछाहुआ सुहृदको जानताहुआ को हितकारी वचन कहना उचितहै और न्यायकहना उचितहै ५ हे इन्द्र श्रेष्ठ पुरुषों को सर्वथा हितकारी वचन कहना उचितहै अप्रियवेश कहो स्नेहका आनृण्य तो यही है ६ असत्यमें धर्म नष्ट होजाताहै और शुश्रूषाकी वाञ्छाभी नहीं रहती है इसवास्ते श्रेष्ठ पुरुषोंको प्रिय और हितवचन कहने उचित हैं ७ हे सुननेवालों में श्रेष्ठ इन्द्र और सुनो हे सर्वज्ञ मेरे वचन कल्याणकारी हैं ८ सो सुनके ऐसेही करो हे बल के नाश करनेवाले भ्राता और सुहृद् इन्हों के वैरकरतेहुये आपसमें भेद होजाताहै और तिस भेदसे आनद का नाशहोजाताहै ९ इसमें संदेह नहीं हे सुरेश्वर हित और अनुबन्धु सहित कार्य्यजानना उचित है और जो विपरीत है १० सो बुद्धिमानों को पश्चात्ताप करताहै और जो पश्चात्ताप करनेवाला कार्य है तिसका बुद्धिमान् प्रारम्भ नहींकरे ११ यही बुद्धिमानों के नय हैं हे देव इस कार्य के फलको मैं सुन्दर नहीं देखूं हे देवताओं के अधिप इसमें कारण सुनो १२ जौनसा यह एकहरि विश्वमें स्थित है और जगत्का प्रधानहै और सम्पूर्ण बुध प्रकृति से तिसको क्षेत्रज्ञ कहते हैं १३ व तिस अव्यक्त का जो प्रकट कार्य्य है हिरण्यगर्भादि जो है सो सम्पूर्ण संसारका बीजहै और वही विष्णु जतुमात्र परमदेव का आत्मा है १४ और प्रकृति का प्रथम भाग यशवाली उमा देवी है और संपूर्ण भोग्यवस्तु संज्ञक है व्यक्त है सर्वमय है लोकको प्रेरणेवाला है १५ सो कृष्णनारायण है महातेजस्वी है और संपूर्ण लोकों को प्रेरणेवाला है १६ सोही भोक्ताहै महेश्वर देवहै और कर्त्ता है साक्षात् विष्णुहै १७ न

ने ब्रह्मा और देवगण पश्चात् रचे हैं और तिस महान् देवताने प्रजापतियों के गणभी पश्चात् रचे हैं १८ व सोही कृष्ण वेदों में पुराणपुरुष विष्णु ऐसा गाइये हैं और वह अचिंत्यहै अप्रमेयहै गुणों से परेहै १९ व सोही महात्मा विष्णु पहले अदिति ने आराधन किया था जब प्रसन्नहुये तब कहा वरमागो तब नमस्कार करके व नारायण जानके अदिति कहनेलगी २० सुरोत्तम तुम्हारे सदृश पुत्रकीवाञ्छा करूहू तब भगवान्ने कहा कि २१ हे अदिते मेरेसमान तो भुवनमें और मनुष्य नहीं है सो निश्चय अंशकरके तेरापुत्र मैं हूंगा २२ । २३ हे सुरेश्वर सो सम्पूर्णों का करनेवाला नारायण महातेजस्वी ऐसा यह तेराभ्राता उत्पन्न हुआ जिसको उपेंद्र कहते हैं २४ ऐसे यह हरिदेव काश्यपत्व को प्राप्तहुआ भूतों का भव्य और भव और अप्यय करताहै २५ हे इन्द्र जगतोंका नाथ और कर्त्ता और हर्त्ता ऐसा यह देव केशव जगत्के हितकी कामना करके मथुरा में प्रकट हुआहै २६ व हे मानके देनेवाले जैसे मासकापिंड चिकनाई से व्याप्तहै ऐसे यह सम्पूर्ण जगत् प्रभविष्णु विष्णु से व्याप्तहै २७ गुणों से रहित वैकुंठ सम्पूर्णों को प्रेरणेवाला ब्रह्मण्यदेव सर्व्वात्मा ऐसा यह भगवान् तिन भावोंकरके जगत् में विकारको प्राप्तहोताहै २८ इसवास्ते यह केशव सम्पूर्ण देवताओंका पूज्यहै और यही पद्मनाभ भगवान् विभु प्रजाकी रचना करताहै २९ व यह अनत धारणा के वास्ते महान् यशको धारण करता है और वेदवादी श्रेष्ठोंने वही यज्ञकही है ३० व यहीदेव सतयुगमें श्वेतवर्णहै व त्रेतायुग में रक्तवर्ण धारणकिया व द्वापर में पीतरूप धारणकियाहै और कलियुग में कृष्णवर्ण धारणकियाहै ३१ व यही केशव दिव्यरूप वराह धारणकरके हिरण्याक्षको मारतेभये व पृथ्वीको लातेभये ३२ व नरसिंहरूप धारणकरके हिरण्यकशिपु को जगत् के हितकेवास्ते मारते भये ३३ व यही विष्णु वामनरूप धारणकरके पृथ्वीको जीततेभये और पन्नग बन्धनों से श्रीमान् देवबलि को बांधतेभये ३४ व उदार व अमित पराक्रमवाले विष्णु पहले देव दानवोंकी श्रीको तुम्हारे वाञ्छा करतेभये ३५ व धर्मनित्य श्रेष्ठों की गति ऐसागोविंद तेरे प्यारकेवास्ते देवताओं के शत्रु मुख्य दानवोंको मारतेभये ३६ । ३७ व रामचन्द्र अवतार धारणकरके रावण को मारतेभये और कामगुणहोके हरिभगवान् हस्तीको मारतेभये ३८ व अब सम्पूर्ण भूतों में उत्तम व जगत् का नाथ ऐसा उपेंद्र अब जगत् के हितकेवास्ते मनुष्यलोक में बसता

है ३६ और जटाधारण किये कृष्ण चर्म धारणकिये दंडधारण किये ऐसे हरि मैं ने दैत्यों में विचरताहुआ देखाहै जैसे २ तृणोंके विषे अग्नि ४० व हे इन्द्र जगत् के हितकी वाञ्छाकेवास्ते जो गोविंद जगत् को दानवों से हीन करताभया इस वास्ते हे देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र निश्चय कल्पवृक्ष तुमको जनार्दन को देनायोग्य है ४१ ये वचन मैं असत्य नहीं कहता हूं हे इन्द्र भ्राता के स्नेह के वशहुआ तू कृष्ण विषे प्रहार नहीं करेगा ४२ व कृष्णचन्द्र तेरे ज्येष्ठभ्राता विषे प्रहार नहीं करेगा ४३ व हे देव जो मेरे कहे हुये को किसीप्रकार से नहीं सुने तो नीति धर्म के जाननेवाले जो तेरे हितकारी मंत्री हैं तिन्होंको पूछ ४४ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे नारदमुनि से कहाहुआ ईश इन्द्र जगद्गुरु के प्रति यह वचन कहताभया ४५ कि हे मुने हे द्विज जैसे प्रभाववाला कृष्ण-चन्द्र तैंने कहाहै ऐसाही मैंने पहले वहुत सुनाहै ४६ जो ऐसा कृष्णहै तो मैंभी श्रेष्ठों के धर्मको स्मरण करताहुआ तिसको कल्पवृक्ष न दूंगा ४७ हे मुने महा प्रभाववाला विष्णु अल्पकार्य्य के वास्ते नहीं रूसेगा इसवातको चिंतवन करता हुआ मैं स्थितहू ४८ हे मुने सम्पूर्ण गुण कृष्णके कहदिये इसवास्ते तेराकल्याण हो हे मुने महाप्रभाववाले निरन्तर सहनेवाले होते हैं ४९ व ज्ञानरूप नेत्रोंवाले वृद्धों के श्रोताहोते हैं हे मुने धर्म्म के जाननेवालों में श्रेष्ठ महात्मा धर्म्मज्ञ ऐसे कृष्ण थोडे कारणसे वडेभ्राताके साथ विरोध करनेको नहीं योग्यहै ५० हे मुने अधोक्षज भगवान् जैसे मेरी माताको वरदेता भया तैसेही तिसके पुत्रों की भी ज्येष्ठता सहनेको योग्यहै ५१ और हे मुने जैसे आप इच्छा करताहुआ जना-र्दन उपेंद्रता को प्राप्तहुआ तैसेही भ्राता इन्द्रका सन्मान करनेको योग्यहो ५२ और पहले ज्येष्ठभावको नहीं प्राप्तहुये सो मधुसूदन अव ज्येष्ठ होजावो पश्चात् इन्द्रका विसर्जनकिया और धर्मका जाननेवाला और तपोधन ऐसे नारदमुनि ५३ सुनिश्चित वलरिपु को देखके पश्चात् कृष्णचद्र से पालित जो द्वारकापुरी तिसको प्राप्तहोतेभये ५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेत्रिंशदधिकशततमोऽध्याय १३० ॥

एकसौइकतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् इसके अनन्तर मुनियों में श्रेष्ठ नारद

मुनि रमणीक द्वारकापुरी को प्राप्तहोकर पुरुषश्रेष्ठ और शत्रुओं को नाशकरने वाले और सत्यभामा सहित अपने स्थान में बैठेहुये और सम्पूर्ण तेजसे अति तेजवाले शरीरसे विराजमान और तिस नारदमुनिकोही चिंतवन करतेहुये वाक्यमात्रसे सत्यभामाको समझातेहुये ऐसे नारायणको नारदमुनि देखतेभये १। २।३ और अधोक्षज भगवान् भी नारदमुनि को देखकर सम्मुख उठतेभये और पश्चात् विधिदृष्ट कर्मसे पूजन करतेभये ४ पश्चात् सुखपूर्वक बैठेहुये और परिश्रमसे रहितहुये ऐसे नारदमुनिको हँसके मधुसूदनभगवान् कल्पवृक्षका वृत्तांत पूछतेभये ५ पश्चात् हे जनमेजय नारदमुनि विस्तारसे इन्द्रके सम्पूर्ण वाक्योंको वर्णन करताभया ६ पश्चात् कृष्णचन्द्र तिन सम्पूर्ण वाक्योंको सुनके नारदमुनि के प्रति वचन कहताभया हे धर्म्मधारण करनेवालों में श्रेष्ठ कल मैं अमरावती पुरीको जाऊंगा ७ ऐसे कहके नारदकेसहित सागरमें जातेभये और तहां एकांत में हरि नारदको संदेशा देतेभये ८ हे तपोधन इन्द्रके भवन में जाके और मेरी तरफ से महात्मा इन्द्रको प्रणामकर यह कहना कि ९ हे प्रभो युद्धमें मेरे आगे ठहरनेको तू योग्यनहीं है और कल्पवृक्षके लानेमें तू मेरेको समर्थजान १० जब कृष्णचन्द्रने ऐसे कहा तब नारदस्वर्ग में गया और कृष्णके कहे वचनों को अमित पराक्रमवाले देवेंद्रको कहताभया ११ तिसके अनन्तर इन्द्र बृहस्पतिजी को कहताभया हे जनमेजय बृहस्पति सुनके यह वचन कहताभया १२ हे इन्द्रअहो ब्रह्मसदनको धिक्कारहै क्योंकि मेरेजानेसे यह दारुणमन्त्र भेद प्रवृत्त करदिया१३ और हे भुवनेश्वर मेरेको नहीं कहकर किसी हेतुसे यह कार्य आरम्भ करदिया १४ अथवा यह भाविहै हे वृत्रासुर के नाशक इसको निवृत्तकरने को समर्थ नहीं १५ हे इन्द्र तत्काल कार्य्यका आरम्भ करना श्रेष्ठनहीं इसवास्ते यह कार्य्य कुछ हलकापनही करेगा १६ और ऐसे सुन महेन्द्र महात्मा बृहस्पतिको कहताभया हे गुरो जो इस समय में हमको कार्य्य कर्तव्यहै सो कहो १७ उदार बुद्धिवाला और धर्मात्मा और गत अनागत तत्त्वका जाननेवाला ऐसे बृहस्पतिजी नीचेको मुखकर और तिस इन्द्रको यह वचन कहते भये १८ हे इन्द्र पुत्रकरके सहित तू यत्नकर और जनार्दन के साथ युद्धकर और जैसे न्यायहोगा वैसेही करूंगा १९ बृहस्पति ऐसे कहके क्षीरसागर में गया और तहां जाके महात्मा कश्यपमुनिको सम्पूर्ण वृत्तांत कहतेभये २० तिसको सुनके क्रोधभरे कश्यपजी

बृहस्पतिजी को कहतेभये भो सर्वथा ऐसेही यह भाति है इसमें सन्देह नहीं २१ महर्षि देवशर्मा से समानभार्या को यह मागताभया सो इन्द्रके यह अध्यापन कृत दोषहै २२ हे मुने इसदोषकी शांतिके अर्थ मैंने यह जलमें वासकियाथा सो दारुण दोष प्राप्तहोगया २३ इसवास्ते हे तपोधन अदितिके साथ मैं वहांजाऊंगा सो दैव अनुकूल होगा तो निवारण करदूंगा २४ पश्चात् बृहस्पतिजी कश्यपको कहते भये हे तपोधन प्राप्तकाल तुमको निवारण करना योग्य है २५ तथेति अर्थात् तैसेही करूंगा ऐसे कश्यप जी वचन कहकर और बृहस्पति जी को स्थापनकर भूतगणों के ईश्वर रुद्रदेव के पूजनके वास्ते जातेभये २६ और तहां वरके वास्ते अदिति सहित बुद्धिमान् कश्यप महात्मा महादेवजी का पूजन करता भया २७ और वेदोक्त और स्वस्वकृत स्तोत्रों से तिस जगद्गुरु की ऐसे स्तुति करताभया २८ हे भगवन् उरुक्रम सम्पूर्णों के रचनेवाले जगत् के रचने वाले ईश्वर धर्म्म वृषध्वजेश पार्वती सहित द्युतिमद्धाम ऐसे तुमको महादेवजी मैं स्तुति करताहूं २९ व जो ईश्वर देवताओंका अधिप है और पापोंका हर्ता है और जिसने जगत् रचाहै और जल जिसके गर्भ में है ऐसे विश्वेश्वर शरणरूप को मैं प्राप्तहोता हूं ३० व अन्त करण में विचरनेवाला और रोचन और सुन्दर भुजाओंवाला महाबल धर्मकानेता ईड्य सहस्रनेत्र शतवर्मा उग्र विश्वको रचने वाला ऐसे महादेवजी को नमस्कार करताहूं ३१ व शुचि शम्भु भूतनाथ धुरंधर चन्द्र चिह्न ऐसे महादेवजीको मस्तकसे नमस्कार करताहूं ३२ आशुव्रतको धारण करनेवाला शूलको धारण करने वा धर्म को धारण करनेवाला ऐसे महादेवजी के शरण प्राप्तहोताहूं ३३ व देवताओं के देवता और पवित्रों के पवित्र कृतियों के मध्यमें कृति गोपतियों के मध्यमें पति ऐसे महादेवजी की शरणको मैं प्राप्त होताहूं ३४ ऐसे अत्यन्त स्तुतिसे प्रसन्नहुए धर्मात्मा महादेवजी कश्यप मुनिको दर्शन देतेभये ३५ व प्रसन्नहोकर यह कहनेलगे कि हे प्रजापते तू जिस वास्ते स्तुति करताहै सो मैंने जानलिया महात्मा इन्द्र और उपेंद्र प्रकृतिको प्राप्त होगा ३६ व धर्मात्मा जनार्दन कल्पवृक्ष को लेजायगा क्योंकि देवशर्मा मुनिने यह इंद्र उपध्याता करदियाहै जिससे ३७ हे कश्यप तपमेंदीप्त इसकी भार्याको ग्रहण करने की वाञ्छा करताभया ३८ हे धर्मके जाननेवाले कश्यप तुम अदिति करके सहित इन्द्रके भवनमें जाओ तिसमें निश्चय तुम्हारे पुत्रों का कल्याण होगा ३९

ब्रह्माकेपुत्र और अमित पराक्रमवाले विद्वान् ऐसे कश्यपजी हरके वचन सुनके और देवताओं के गुरु रुद्रको प्रणाम करके स्वर्ग में जातेभये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेमहादेवस्तवने एकत्रिंशदधिकशततोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौ बत्तीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इसके अनन्तर महातेज विष्णु दो घडी दिनचढे शिकार के मिससे रैवतपर्वत को जाते भये १ पश्चात् एकरथमें सारथिको आरोपण करके और पश्चात् जा ऐसे प्रद्युम्नको कहके और रैवतपर्वतमें जाके तहां दारुकसारथि को वचन कहतेभये २।३ कि हे दारुक हे सौम्य इस मेरे रथको घोड़ों को प्रेरताहुआ आधे दिन हे सारथियों में श्रेष्ठ रथ करके द्वारकाको प्राप्तहूंगा ४ पश्चात् जीतकेवास्ते उद्यम युक्तहुये महाराज कृष्ण ऐसे सन्देशादेकर गरुड़पर सवार होतेभये ५ व अमित पराक्रमवाले बुद्धिमान् सात्यकि और शत्रुओं को नाश करनेवाले प्रद्युम्न ये दोनों आकाशगामी रथ करके कृष्णचन्द्रके पाछे जातेभये ६ पश्चात् एक निमेषमात्रही के अतरसे बुद्धिमान् वासुदेव कल्पवृक्ष हरने की वाञ्छाकरके इन्द्रके नन्दनबागमें जातेभये ७ व तिन देवताओं के देखतेहुये यह महाबल भगवान् कल्पवृक्षको उपाड के गरुड़पर रखतेभये और कल्पवृक्ष पक्षिराज गरुडको और केशव भगवान्को विनाही यत्न प्राप्त होगया ८।९।१० व विग्रहसे भयकरनेलगा तब भगवान्ने आश्वासना कराई और कहनेलगे ११ कि हे पश्चात् प्रस्थित तिस कल्पवृक्षको देखकर तिसके अनन्तर श्रेष्ठ अमरावतीपुरीकी परिक्रमा करतेभये १२ पश्चात् नन्दनबन की रक्षा करनेवाले पारिजात वृक्षको हरताहै ऐसे इन्द्रको कह पश्चात् इन्द्र ऐरावतपर सवार होकर जाताभया १३ व पश्चात् रथमें बैठके जयन्त भी आताभया पश्चात् १४ पहले आये शत्रुओं को नाश करनेवाले केशवको देखके इन्द्र कहने लगे कि हे मधुसूदन ऐसे क्यों प्रवृत्तहुआ है १५ गरुड़पर सवार हुये भगवान् प्रणाम करके इन्द्र को वचन कहते भये हे भ्राता तेरी वधू के पुण्यके वास्ते यह कल्पवृक्ष लिया है १६ ऐसे सुनके इन्द्र ने वचनकहा हे कमलकेसे नेत्रोंवाले कृष्ण ऐसे मतकर युद्ध किये विना कल्पवृक्ष नहीं लेजानेदूंगा १७ हे महा

चाहो मेरे साथ युद्धकर और कौमोदकी गदाको मेरे विषेगेर जिससे तुम्हारी प्रतिज्ञा सफलहो १८ हे भारत तिसके अनन्तर कृष्णचन्द्र हँसतेहुयेकी तरह तीक्ष्ण बाणोंसे इन्द्रके हस्ती को भेदन करनेलगे १९ और इन्द्र श्रेष्ठशरों से गरुड को बींधनेलगा पश्चात् इन्द्र अपने बाणोंसे बडे वेगवाले कृष्णचन्द्रके बाणोंको बींधताभया २० और जिन२ बाणोंको इन्द्र छोडताभया तिनतिनको माधव छेदन करताभया २१ और माधवके बाणो को इन्द्र छेदन करताभया पश्चात् हे कुरुनन्दन इन्द्रके धनुष के शब्दसे और कृष्णचन्द्रके शार्ङ्गधनुष के शब्दसे सम्पूर्ण स्वर्गवासी मोहको प्राप्तहोतेभये २२ तिन्होंका संग्रामहोतेहुये गरुडपर स्थितहुये कल्पवृक्षके हरनेको महाबली जयत दौडताभया २३ तब कंसको मारनेवाले कृष्णचन्द्र अरे इसको निवारणकर निवारणकर ऐसे कहनेलगे २४ तब प्रतापवाले रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न जयतको निवारण करतेभये जीतनेवालों में श्रेष्ठ जयत और ये रथमें बैठेहुये जयत हँसकर बाणोंसे प्रद्युम्नके अंगोंको भेदन करताभया २५ और कमल केसे नेत्रोंवाले प्रद्युम्न सर्पके समान बाणों से जयत को भेदन करतेभये २६ हे कुरुनन्दन ऐसे जयत और प्रद्युम्न का बडा घोरयुद्ध होताभया २७ और अस्त्र धारणकरनेवालों में श्रेष्ठ महेंद्र और उपेंद्रके पुत्र जयंत और प्रद्युम्नकृत और प्रतिकृत करतेभये २८ और इस महाघोर संग्राम को देवता और मुनि और सिद्ध चारण ये सम्पूर्ण आश्चर्य युक्तहुये देखतेभये २९ और पश्चात् हे कुरुनन्दन देवराजका सखा और दूत ब्रह्माके वरदान से अवध्य और अस्त्र विद्याका जाननेवाला ऐसे प्रवरनामसे विख्यात देवकादूत फिर कल्पवृक्षके हरने की इच्छा करनेलगा ३० तिस आतेहुये को देख कृष्णचन्द्र सात्यकिको वचन कहतेभये हे सात्यके यहीं स्थितहुआ इस प्रवरको निवारणकर ३१ और हे सात्यके महानिर्दय बाण नहीं छोडने क्योंकि इस ब्राह्मणकी चपलता तो सर्व्वथा सहनीही योग्यहै ३२ पश्चात् यह द्विज साठबाणों से रथमें स्थितहुये सारथि को और गरुडपर स्थितहुए कृष्णचन्द्र को भेदन करताभया ३३ पश्चात् शिनीका नप्ता जब धनुषको लेकर बाणों को छोडनेलगा तब पुरुषों में सिंहरूप भगवान् तिसके बाणोंको काटके यह वचन कहतेभये ३४ हे शिने अपने मार्गमें ठहर २ ब्राह्मण नहीं मारना योग्यहै अपराधवाले ब्राह्मण भी यादवोंको नहीं मारनेयोग्यहैं ३५ पश्चात् हे कुरुनन्दन प्रवर हस केशनीको यह वचन कहता भया ३६

ब्रह्माकेपुत्र और अमित पराक्रमवाले विद्वान् ऐसे कश्यपजी हरके वचन सुनके और देवताओं के गुरु रुद्रको प्रणाम करके स्वर्ग में जातेभये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेमहादेवस्तवने एकत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौ बत्तीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इसके अनन्तर महातेज विष्णु दो घडी दिनचढे शिकार के मिससे रैवतपर्वत को जाते भये १ पश्चात् एकरथमें सारथिको आरोपण करके और पश्चात् जा ऐसे प्रद्युम्नको कहके और रैवतपर्वतमें जाके तहां दारुकसारथि को वचन कहतेभये २।३ कि हे दारुक हे सौम्य इस मेरे रथको घोडों को प्रेरताहुआ आधे दिन हे सारथियों में श्रेष्ठ रथ करके द्वारकाको प्राप्तहूगा ४ पश्चात् जीतकेवास्ते उद्यम युक्तहुये महाराज कृष्ण ऐसे सन्देशादेकर गरुडपर सवार होतेभये ५ व अमित पराक्रमवाले बुद्धिमान् सात्यकि और शत्रुओं को नाश करनेवाले प्रद्युम्न ये दोनों आकाशगामी रथ करके कृष्णचन्द्रके पाछे जातेभये ६ पश्चात् एक निमेषमात्रही के अंतरसे बुद्धिमान् वासुदेव कल्पवृक्ष हरने की वाञ्छाकरके इन्द्रके नन्दनवागमें जातेभये ७ व तिन देवताओं के देखतेहुये यह महाबल भगवान् कल्पवृक्षको उपाड़ के गरुड़ पर रखतेभये और कल्पवृक्ष पक्षिराज गरुडको और केशव भगवान्को विनाही यत्न प्राप्त होगया ८।९।१० व निग्रहसे भयकरनेलगा तव भगवान्ने आश्वासना कराई और कहनेलगे ११ कि हे पश्चात् प्रस्थित तिस कल्पवृक्षको देखकर तिसके अनन्तर श्रेष्ठ अमरावतीपुरीकी परिक्रमा करतेभये १२ पश्चात् नन्दनवन की रक्षा करनेवाले पारिजात वृक्षको हरताहै ऐसे इन्द्रको कह पश्चात् इन्द्र ऐरावतपर सवार होकर जाताभया १३ व पश्चात् रथमें बैठके जयन्त भी आताभया पश्चात् १४ पहले आये शत्रुओं को नाश करनेवाले केशवको देखके इन्द्र कहने लगे कि हे मधुसूदन ऐसे क्यों प्रवृत्तहुआ है १५ गरुड़पर सवार हुये भगवान् प्रणाम करके इन्द्र को वचन कहते भये हे भ्राता तेरी वधू के पुण्यके वास्ते यह कल्पवृक्ष लिया है १६ ऐसे सुनके इन्द्र ने वचनकहा हे कमलकेसे नेत्रोंवाले कृष्ण ऐसे मतकर युद्ध किये विना कल्पवृक्ष नहीं लेजानेदूगा १७ हे महा-

वाहो मेरे साथ युद्धकर और कौमोदकी गदाको मेरे विषेगेर जिससे तुम्हारी प्रतिज्ञा सफलहो १८ हे भारत तिसके अनन्तर कृष्णचन्द्र हँसतेहुयेकी तरह तीक्ष्ण वाणोंसे इन्द्रके हस्ती को भेदन करनेलगे १६ और इन्द्र श्रेष्ठशरों से गरुड को वींधनेलगा पश्चात् इन्द्र अपने वाणोंसे वडे वेगवाले कृष्णचन्द्रके वाणोंको वींधताभया २० और जिन२ वाणोंको इन्द्र छोडताभया तिनतिनको माधव छेदन करताभया २१ और माधवके वाणों को इन्द्र छेदन करताभया पश्चात् हे कुरुनन्दन इन्द्रके धनुष के शब्दसे और कृष्णचन्द्रके शार्ङ्गधनुष के शब्दसे सम्पूर्ण स्वर्गवासी मोहको प्राप्तहोतेभये २२ तिन्होंका संग्रामहोतेहुये गरुडपर स्थितहुये कल्पवृक्षके हरनेको महावली जयंत दौडताभया २३ तव कंसको मारनेवाले कृष्णचन्द्र अरे इसको निवारणकर निवारणकर ऐसे कहनेलगे २४ तव प्रतापवाले रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न जयंतको निवारण करतेभये जीतनेवालों में श्रेष्ठ जयंत और ये रथमें वैठेहुये जयंत हँसकर वाणोंसे प्रद्युम्नके अंगोंको भेदन करताभया २५ और कमल केसे नेत्रोंवाले प्रद्युम्न सर्पके समान वाणों से जयंत को भेदन करतेभये २६ हे कुरुनन्दन ऐसे जयंत और प्रद्युम्न का वडा घोरयुद्ध होताभया २७ और अस्त्र धारणकरनेवालों में श्रेष्ठ महेंद्र और उपेंद्रके पुत्र जयंत और प्रद्युम्नकृत और प्रतिकृत करतेभये २८ और इस महाघोर संग्राम को देवता और मुनि और सिद्ध चारण ये सम्पूर्ण आश्चर्य युक्तहुये देखतेभये २६ और पश्चात् हे कुरुनन्दन देवराजका सखा और दूत ब्रह्माके वरदान से अवध्य और अस्त्र विद्याका जाननेवाला ऐसे प्रवरनामसे विख्यात देवकादूत फिर कल्पवृक्षके हरने की इच्छा करनेलगा ३० तिस आतेहुये को देख कृष्णचन्द्र सात्यकिको वचन कहतेभये हे सात्यके यहीं स्थितहुआ इस प्रवरको निवारणकर ३१ और हे सात्यके महानिर्दय वाण नहीं छोडने क्योंकि इस ब्राह्मणकी चपलता तो सर्व्वथा सहनीही योग्यहै ३२ पश्चात् यह द्विज साठवाणों से रथमें स्थितहुये सारथि को और गरुडपर स्थितहुए कृष्णचन्द्र को भेदन करताभया ३३ पश्चात् शिनीका नप्ता जव धनुषको लेकर वाणों को छोडनेलगा तव पुरुषों में सिंहरूप भगवान् तिसके वाणोंको काटके यह वचन कहतेभये ३४ हे शिने अपने मार्गमें ठहर २ ब्राह्मण नहीं मारना योग्यहै अपराधवाले ब्राह्मण भी यादवोंको नहीं मारनेयोग्यहैं ३५ पश्चात् हे कुरुनन्दन प्रवर हंस केशनीको यह वचन कहता भया ३६

हे शूरवीर शांतिसे परिपूर्ण हुआ सम्पूर्ण प्रकारसे रणमें युद्धकर ३७ हे यादव मैं भी जमदग्निके पुत्र परशुरामजीका शिष्यहूं और प्रवर मेरानामहै और बुद्धि-मान् इन्द्रका मैं मित्रहूं हे माधव मेरेको मानतेहुये देवता भी युद्धकी इच्छा नहीं करतेहैं ३८ हे माधव सौहृदको आनृण्यको में आजप्राप्तहूंगा हे राजन् ऐसे शैनेयका और द्विजमुख्य का दिव्य अस्त्रों से बड़ा घोरसग्राम वढताभया ३९ हे राजन् तिन महात्माओं के सग्रामका प्रारम्भहोते पृथ्वी चलतीभई और हजारहा तारागण चलते भये और अत्यन्त घोर युद्ध में प्रद्युम्न तो जयत को और जयन्त प्रद्युम्नको ऐसे कहतेहुए परस्पर में युद्ध करतेभये ४० हे शूरवीर शस्त्रको पकड और छोड और इसके अनन्तर जिससमय में प्रद्युम्न को संभाषण करके जयत अस्त्र मारनेको फेंकताभया ४१ उसीसमयमें आतेहुए अस्त्रको देख तीक्ष्ण वाणों का जालबाध के तिसको रोकताभया सो बड़ा आश्चर्य होताभया ४२ और हे कौरव्य तिसके अनन्तर रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्नका तो दानवों को मर्दन करनेवाला घोर अस्त्र रणके मस्तकमें पडताभया ४३ और तिसअस्त्रसे महात्मा प्रद्युम्नका रथ दग्धहोगया और सो प्रद्युम्नको तो नहीं भस्म करताभया क्योंकि दग्धहोते रथ से प्रद्युम्न भागताभया ४४ इसके अनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ नारायण का पुत्र प्रद्युम्न रथसेरहित होकर और धनुष लेकर आकाशमें स्थितहुआ जयंत को यह वचन कहताभया ४५ हे महेंद्रके पुत्र जो दिव्यअस्त्र तू छोड़ताभया ऐसे तो मैं सौशस्त्रों से भी नहीं हननहोऊं ४६ हे अमरनन्दन प्रयत्नकर और शिक्षा-ओंका यत्न अब मेरेको दिखा युद्धमें मेरे तू कुछ अतिशय करनेवाला नहीं है ४७ और हे जयत आदि में शस्त्र धारणकिये तेरेको रथमें बैठा देखके मेरे भय होता भया और अब तो बलाबल देखकर मैं नहीं डरता हूं ४८ और हे जयन्त यह कल्पवृक्ष तुझे मनसे स्पर्श करना योग्य है और हाथोंसे छूनेको तो तू इस को समर्थ नहीं ४९ और अस्त्रके तेजसे जो रथ दग्ध करदिया ऐसे हजार रथों को मैं मायासे रचने को समर्थ हूं ५० ऐसे कहाहुआ महाबल जयत तपके तेज से उत्पादन किये अस्त्रको छोडताभया ५१ पश्चात् तिस महावेगवाले अस्त्रको शरजालों करके निवारण करताभया पश्चात् चारोंदिशाओं में चार अस्त्र और छोड़ताभया ५२ तिनको भी प्रद्युम्न रोकताभया पश्चात् पांचवा रुक्मी के प्रति और छोड़ा सो भी छेदन करदिया ५३ व मुराड़ के समान प्रकाश करते हुये

जिनवाणों को और अस्त्रों को जयत प्रद्युम्नके प्रति छोड़ताभया तिन सम्पूर्णों को प्रद्युम्न वाणोंसे निवारण करतेभये ५४ पश्चात् जयंत फिर जब तीक्ष्ण वाणों से प्रद्युम्नको भेदन करताभया तब पुण्यकर्मवाले स्वर्गवासी एकवार शब्दकरते भये ५५ व प्रद्युम्न महात्माके स्थैर्य और शौर्य्यको देखकर आश्चर्य करतेभये ५६ व प्रवरके धनुष् को जब शूरवीर शिनिपुंगव भेदन करताभया तब यह प्रवर व बड़ेशब्दवाले इन्द्रकेदिये धनुष् को ग्रहण करताभया ५७ तिस उत्तम धनुष् से यह शूरवीर प्रवर सूर्यकीसी कांतिवाले उत्तम वाणोंको छोड़ताभया और अमित पराक्रमवाले शैनेयके धनुष् को छेदन करताभया और वाणों से सात्यकि को बींधताभया ५८ तत्पश्चात् हे कुरुनन्दन बुद्धिमान् शैनेय बहुत दृढ़ धनुष्लेकर रणमें प्रवरको बींधताभया ५९ और ये दोनों आपसमें मर्म के भेदन करनेवाले तीक्ष्ण वाणोंसे कवचों को तोड़तेभये ६० व शरीरों से मासको भेदन करतेभये पश्चात् शूरवीर प्रवर और वाणसे फिर प्रद्युम्न के धनुष् को छेदन करताभया ६१ व तीनवाणों से प्रद्युम्न को भेदन करताभया जब यह और धनुष् लेने को मन करताभया तब यह प्रवर फुरतीकरके गदासे ताडना करताभया ६२ पश्चात् यह गदासे ताड़नकिया सात्यकि हँसताहुआ खड्ग और ढाल को ग्रहण करताभया और यह बुद्धिमान् धनुष् को धारण नही करताभया ६३ पश्चात् यह प्रवर सात्यकि यदुनन्दन को हँसताहुआ जानके सौवाणों को एकवार छोड़ताभया पश्चात् प्रद्युम्न निर्मल कांतिवाला खड्ग इसको देताभया ६४ और प्रवर इस खड्गको भाले से छेदन करताभया और हँसताहुआ यह प्रवर खड्गकी मुष्टि को तोड़ताभया ६५ व सीधे सीधे वाणों से वर्मको भेदन करतेभये और शक्तिसे यह प्रवर हृदय में ताड़ना करताभया और नाद करताभया ६६ पश्चात् तिसको विकल जानके पश्चात् कल्पवृक्ष के हरनेकी इच्छाकरके यह प्रवर गरुड के पास स्थित होताभया ६७ तब यह गरुड इस प्रवरको रथसहित दो कोशपर फेंकताभया तब इसका रथ टूटगया और प्रवर मोहको प्राप्तहोगया ६८ पश्चात् जयत अपने रथ से उतरके और तिस प्रवर को अपने रथमें आरोपण करताभया ६९ और वारम्वार पडतेहुये और मोह को प्राप्तहोतेहुये शैनेय को प्रद्युम्न आश्वासन करता भया और पितृव्य से मिलताभया ७० पश्चात् तिस शैनेय को भगवान् हाथ से स्पर्श करतेभये सो स्पर्श करतेही फिर वैसाही शरीर होगया ७१ पश्चात्

चतुर प्रद्युम्न तो कल्पवृक्ष के दहनेतरफ स्थित हुआ और शिनिपुगंव बायेंतरफ स्थित होताभया ७२ पश्चात् हे भारत जयत और प्रवर एक रथमें स्थित होकर जब सम्मुख पडनेलगे तब हँसके महात्माइन्द्र कहनेलगे ७३ कि हे पुत्र हे प्रवर गरुडके पास कभी नहीं जाना यह विनताका पुत्र बडाबलवान्है और पक्षियोंका राजा है ७४ व शस्त्रधारण करके मेरेबायें और दहनेतरफ स्थित होजाओ ७५ व स्थितहुये मेरेको युद्धकरतेहुये को देखो ऐसे कहेहुये ये दोनों शूरवीर इन्द्रके पसवाड़ों में स्थितहुये देवराज और जनार्दन के युद्धको देखतेभये ७६ पश्चात् महाअस्त्रोंसे उत्पन्नहुये और वज्रकेसा शब्दवाले ऐसे तीक्ष्णबाणों से इन्द्र गरुड को भेदन करताभया ७७ पश्चात् शूरवीर प्रतापवान् ऐसागरुड़ तिन बाणों को नहीं गिनताहुआ इन्द्रके हस्ती के सम्मुख दौडताभया ७८ हे राजन् पश्चात् ये दोनों बलवान् गज और गरुड आपसमें घोरयुद्ध करनेलगे पश्चात् शब्दकरता हुआ ऐरावत गजपति दातों से और सूंडसे और शिरसे गरुडको हनन करता भया ७९ व तैसेही बलोत्कट गरुड़ बड़े तीक्ष्ण नखरूप अकुशोंसे और पंखोंके गेरनेसे इन्द्रके हस्तीको ताडना देतेभये ८० ऐसे हस्ती और गरुड़का एकमुहूर्त्त जगत्को आश्चर्य करानेवाला और देखनेवालोंको भयका देनेवाला ऐसा घोर युद्ध होताभया और हे भारत पश्चात् अकुशकेसे तीक्ष्ण चरणोंसे महाबल गरुड ऐरावत हस्तीको ताडना करताभया ८१ पश्चात् प्रहारोंसे दुःखितहुआ हस्ती स्वर्ग से इसी द्वीपमें पारिपात्र श्रेष्ठ पर्वतपर पडताभया ८२ और कारुण्यसे और सौहार्द से तिस पड़तेहुये हस्तीको भी इन्द्र नहीं छोडताभया और पारिजातकरके सहित महाबल कृष्णचन्द्र भी पश्चात् चलताभया ८३ इन्द्र पारिपात्र पर्व्वत पर स्थित होगया जब ऐरावतको चेतहुआ तब फिर युद्ध होनेलगा ८४ हे कुरुशार्दूल जनमेजय वडे तीक्ष्ण और अस्त्रों से योजनकर सर्प के समान शरोंसे इन्द्र और केशव का आपसमें महान् युद्ध होताभया ८५ हे राजन् पश्चात् इन्द्र वज्र और अशनिको वारम्वार ऐरावतके शत्रु गरुडपर छोड़ताभया ८६ पश्चात् गरुड़ इन्द्रके वज्र और अशनिके पडनों को सहताभया क्योंकि तपके बलमें यह बलियों में श्रेष्ठ गरुड सम्पूर्णो से अवध्यहै ८७ परन्तु वज्रको मानताहुआ अपने एक पक्षको गेरताभया पश्चात् देवराज इन्द्रका फेंकाहुआ वज्र ८८ पर्वतमें लगताभया तिसको कृष्णचन्द्र भी देखतेभये पश्चात् गरुड़करके आकाशमें स्थित

हुये ८६ भगवान् पश्चात् प्रद्युम्नसे कहतेभये ९० हे पुत्र द्वारवती में जाके जल्दी रथ ल्यावो और सारथिभी ल्याओ और बलदेवजी को और उग्रसेनसे यह कह दो कि कल इन्द्रको जीतके द्वारकापुरी में प्राप्तहोवेंगे ९१ पश्चात् धर्म्मात्मा प्रद्युम्न पिताकी आज्ञा को अङ्गीकार करके और एक घड़ीमात्रसे द्वारका में पहुँचकर और सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर रथ में बैठ दारुक सारथि सहित उसीजगह आते भये ९२।९३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वेभाषायांपारिजातहरणेद्वात्रिंशदधिकशततोऽध्याय १३२॥

एकसौतैंतीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय भगवान् तिस रथमें बैठकर और जहां सुरपति इन्द्र ऐरावतपर सवार होकर स्थितथे तहां पारिपात्र पर्व्वत में जातेभये १ पश्चात् पर्वतों में श्रेष्ठ पारिपात्र आयेहुये जनार्दन को देखके शाण के समान होकर भगवान्के प्यारके वास्ते पृथ्वी में प्रवेश होताभया २ हे राजन् तब भगवान् इस पर्वतपर बहुत प्रसन्न होतेभये पश्चात् युद्धके वास्ते गयेहुये भगवान् को जानके और कल्पवृक्ष सहित गरुड़ पीछे जाताभया ३ और प्रद्युम्न और सात्यकि ये दोनों महाबल गरुडपर स्थितहोकर कल्पवृक्षकी रक्षाके वास्ते जातेभये ४।५ पश्चात् हे राजन् सूर्य तो अस्तहोगया और रात्रि प्रवृत्तहुई तब फिर भगवान् और इन्द्रका युद्ध होनेलगा ६ पश्चात् प्रहारोंसे हतहुये हस्ती को भगवान् देखकर इन्द्रसे कहनेलगे ७ कि हे महाबाहो गरुडके प्रहारों से हतहुये ऐरावतकी सामर्थ्य नहीं है इस वास्ते विश्रामकरो ८ प्रातःकाल फिर युद्धमें प्रवृत्त होजाओ ऐसे सुन इन्द्र भी भगवान् के वचनों को अगीकार करताभया ९ हे राजन् धर्मात्मा इन्द्र तिस पर्वतमेंही कमलों के समीप वास करते भये १० पश्चात् तहां ब्रह्माजी और महाऋषि कश्यप और अदिति और सम्पूर्ण देवता मुनि ११ साध्य विश्वेदेवा और अश्विनीकुमार और आदित्य और रुद्र और वसु ये सम्पूर्ण तिस पर्व्वत में आतेभये १२ और प्रद्युम्नपुत्र और सात्यकि इन्हों करके सहित नारायण भी तिस रमणीक पर्व्वत में वास करते भये १३ और हे राजन् भगवान् की भक्ति से जो पारिपात्र शाण प्रमाण से होताभया तिस को भगवान् यह वरदान देते भये कि हे महागिरे तू प्रमाण में शाणपाद

नाम से विख्यातहोगा और हिमवान् से भी पवित्र होगा १४ । १५ और हे पर्व्वतों में श्रेष्ठ इसीप्रकार से बहुत चित्र मृगों से युक्तहुआ और सुमेरु के साथ स्पर्द्धा करताहुआ ऐसेही पृथ्वी में स्थितरह १६ पश्चात् केशव ऐसे पर्व्वत को वरदान देकर और महादेवजी को नमस्कार करके श्रीगंगाजी का ध्यान करते भये १७ पश्चात् कृष्ण की यादकरी गंगाजी तहां आतीभई उसी समय में भगवान् इसका पूजन करके स्नान करते भये १८ पश्चात् सर्व्व ईश्वरों के ईश्वर महादेवजी का ध्यान किया व बिल्वपत्र का ध्यानकिया १६ तब बिल्वपत्रसहित महादेवजी आये तब भगवान् गंगाजल व बिल्वपत्र व कल्पवृक्ष के पुष्प इन्हों से महादेवजीका पूजनकर २० व मधुरवाणियों से कृष्णचन्द्र महादेवजी की ऐसे स्तुति करते भये २१ हे रुद्र तू रुदन करने से व रुदन कराने से रुद्रकहाताहै सो भगवन् भक्तोंका भक्त व वत्सलोंका वत्सल मेरे को ऐसा जानके कीर्त्ति से युक्तकरो अर्थात् मेरी जीतिकरो मैं तुम्हारे शरण में प्राप्तहुआहूं २२ व हे अत्यन्त धीर अव्यक्त तेरे सें यह जगत् उत्पन्नहुआहै इसवास्ते सम्पूर्णों के ईश्वर व अत्यन्त उदार ऐसे तेरे को भव कहते हैं २३ व हे देवदेव जीतेहुये सम्पूर्ण देवता व असुर व भूत इन्हों ने तेरा पूजन कियाहै इसवास्ते विश्वके रचनेवाले तेरे को महेश्वर कहते हैं २४ व हे भगवन् कल्याण की इच्छा करनेवाले देवताओं से जो तू सम्पूर्ण कालमें पूजनीय है इसवास्ते तेरे को देवदेव कहते हैं २५ । २६ व सम्पूर्ण शत्रुओंको शिक्षासे व सम्पूर्ण व्यापी होनेसे व कल्याणकारी होनेसे तेरे को शर्व कहते हैं २७ व हे सर्वनाथ सम्पूर्ण शत्रुओं को शान्त करताहै इसवास्ते श्रेष्ठ धर्मात्मा तेरे को शङ्कर कहते हैं २८ व हे भगवन् पहले इन्द्रने वज्रका परिहारकिया इसवास्ते तेरेको नीलकंठ कहते हैं २६ व हे भगवन् जगत् स्वरूप जो तू है व हे देवदेव मैं व ब्रह्मा व कपिल व ब्रह्मा के सम्पूर्ण पुत्र हे भगवन् ये सम्पूर्ण तेरे से उत्पन्न हुये हैं इसवास्ते तू सम्पूर्णों का ईश्वरहै ३० व कारणहै व आत्माहै व ईश्वहै वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् ऐसे स्तुति किया भगवान् महादेवजी दाहिने हाथको पसारके गोविन्द से यह वचन कहता भया कि हे सुरोत्तम तेरे को विचारे हुये अर्थों की प्राप्ति होगी व तू पारिजात को निश्चय हरेगा व तेरे मनको पीड़ामतहो ३१ हे प्रभो मैनाकपर्वत के आश्रय होकर जब तू तप करता भया हे कृष्ण तब दिये हुये वरदान को तू यादकर व

पश्चात् स्थिरताको प्राप्तहो ३२ हे कृष्ण जो मैं कहताभया कि तेरे को मारनेवाला कोई नहीं है व जीतनेवाला नहीं है व तू शूरवीरहै ये मेरे वचन असत्य नहीं हैं ३३ व हे धर्मज्ञ व हे देवताओं में श्रेष्ठ इस तेरे स्तोत्रकरके जो कोई पुरुष मेरी स्तुतिकरेगा सो धर्मको भजनेवाला होगा ३४ व हे अनघ अर्थात् पापरहित इस युद्धमें जय व पूजाको मैं प्राप्तहोकर बिल्वोदकेश्वर मेरानाम होगा ३५ व हे केशव इस देशमें स्थापन किया मैं भक्तिमान् व विद्वानोंका पोषण करूंगा ३६ व इस देशमें यह अविन्ध्या नाम गंगाजी होगी व तीनही रात्रिमें यह वाञ्छितलोकोंको प्राप्तहोगी ३७ व हे जनार्दन गङ्गास्नान के समान और स्नान नहीं होगा व षट्पुर नाम दानवोंका नगर होगा व हे भगवन् इस देशमें महाबल ३८ व हिंसाकरनेवाले जगत् में कण्टकरूप व ब्रह्माके वरकरके देव दानवों से अवध्य हे गोविन्द ऐसे दानव इस महागिरिकी शिखरमें वसे हैं तिनको तुममारो ३९ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय महादेवजी ऐसे कहके व महात्मा वासुदेवजी से मिलकर पश्चात् अन्तर्द्धान होतेभये ४० तिस रात्रि में गोविन्द फिर पर्वत से कहता भया कि हे पर्वत श्रेष्ठ तेरे नीचे यहा महासुर वसते हैं सो जगत् के हितके वास्ते मैंने यहा रोके हैं ४१ सो मेरे रोकेहुये ये महाबल नहीं निकसैंगे व दरवाजा रोकने से यहीं नष्ट होजावेंगे ४२ व हे महागिरे तेरे विषे मैं सदा सन्निहित रहूंगा व हे पर्वत घोर सत्त्वों को मारता हुआ वसूंगा ४३ व हे पर्वतों में श्रेष्ठ जो पुरुष ऊपरको भुजाकरके तेरेपर तपकरेगा सो हजार गौवों के फलको प्राप्तहोगा ४४ व हे पर्वत जो तेरे पत्थरकी मूर्त्तिबनाकर भक्ति से पूजन करेगा सो मेरीगतिको प्राप्तहोगा ४५ ऐसे वरके देनेवाले कृष्णचन्द्र तिस पर्वत पर अनुग्रह करते भये ४६ हे राजन् तिस दिनसे लेकर हरि नित्य तहा स्थित रहते हैं व विष्णुलोक की वाञ्छावाले कृतात्मा तहा पाषाणों की मूर्त्तिबनाकर पूजन करते हैं ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेत्रयस्त्रिंशदधिकशततोऽध्यायः १३३

एकसौचौंतीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् पश्चात् उदार चित्तवाले कृष्णचन्द्र श्रेष्ठ रथमें सवारहोकर और बिल्वोदकेश्वर महादेवजीको नमस्कार करके जातेभये १

पश्चात् रथमें स्थितहुये मधुसूदन सम्पूर्ण देवताओं करके स्थितहुये इन्द्रको बुला-
तेभये २ तिसके अनन्तर इन्द्र और जयन्त घोडों से भूषित सुन्दर रथमें बैठ ३ हे
राजन् कल्पवृक्षकेवास्ते तिन दोनों देवोंका देवयोगसे युद्धहोताभया ४ पश्चात्
हे राजन् शत्रुओं को नाश करनेवाले विष्णु तीक्ष्णबाणोंवाले ज़ालोंसे इन्द्रकी
सेनाको बाँधतेभये ५ पश्चात् दोनों शूरवीर समर्थ भी हैं परन्तु कृष्णको तो इन्द्र
नहीं ताडना देतेभये और इन्द्रको कृष्ण ६ पश्चात् जनार्दन बडे तीक्ष्णदशबाणों
से एक एक घोडेको छेदन करताभया ७ व इन्द्र अस्त्रोंसे अभिमन्त्रित घोरबाणों
से सेनान्यको छेदन करताभया ८ पश्चात् कृष्णचन्द हजारहों बाणों से गजको
आच्छादन करतेभये और महातेजस्वी इन्द्र गरुड़को आच्छादन करतेभये ६
पश्चात् तिसदिन महात्मा नारायण और इन्द्र रथोंको पृथ्वी में स्थित करके युद्ध
करतेभये १० व हे भारत तब पृथ्वी ऐसे कांपतीभई जैसे जलमें नौका और दि-
शाओं के दाहहोनेसे चारों तरफ दिग्देशहोताभया ११ व तिस समय में पर्व्वत
कांपतेभये और सैकडों वृक्ष पड़तेभये और धर्म्म गुणोंसे युक्त मनुष्य पृथ्वी पर
पडतेभये १२ व हे राजन् सैकड़ोंवज्र पडतेभये और नदी उलटी बहतीभई १३ व
चारों तरफ के पवन चलतेभये और अङ्गार पडतेभये १४ व आकाश में चारों
तरफ से ग्रहोंकेसाथ ग्रह युद्ध करतेभये १५ व स्वर्ग से सैकड़ोंतारा पृथ्वीपर पड़ते
भये और दिशाओं के हस्ती सक्षुभित होगये १६ व पृथ्वीतलमें नाग सक्षुभित
होगये और कठोर शब्दों से गर्जतेहुये और अङ्गार शोणितकी वर्षा करनेवाले
व लालगर्दभकेसे आकारवाले ऐसे मेघोंसे आकाश आवृतहोताभया १७। १८
व हे राजन् जब ये दोनों रणभूमिमें स्थितहुये तब पृथ्वी स्वर्ग आकाश सम्पूर्ण
व्याकुल होगया और तिसकाल में जगत् के हितकी इच्छा करतेहुये मुनिगण
तो मंत्र जपतेभये व महात्मा ब्राह्मण तिन्हों के पास स्थित होतेभये १९ व तिस
के अनन्तर महातेजस्वी ब्रह्मा कश्यपजीको वचन कहतेभये हेमुने बहूकरके स-
हित जा और पुत्रों को निवारणकर २० पश्चात् कश्यपजी ब्रह्माके वचन मानके
और रथमें स्थित होकर भगवान् के पास जातेभये २१ पश्चात् इन्द्र और कृष्ण-
चन्द ये दोनों महाबलवान् कश्यपजी और अदिति को देखकर रथ से उतरते
भये २२ व शत्रुओं के नाश करनेवाले ये दोनों शूरवीर शस्त्रोंको धरके पश्चात्
सम्पूर्ण भूतोंके हितकारी और धर्मतत्त्वके जाननेवाले ऐसे माता व पिताओंके

प्रणाम करतेभये २३ पश्चात् हाथों से इन दोनोंको पकड़के अदिति वचन कहने लगी हे पुत्रो थोड़े कार्यको आगे करके तुम दोनों भ्राता क्यों आपसमें मारने की इच्छा करते हो २४ व हे पुत्रो तुम्हारे समान मैं और को नहीं देखतीहू २५ पश्चात् कहनेलगी हे पुत्रो जो मेरे और अपने पिताके वचनों को मानोहो तो शस्त्रों को धरदो २६ ऐसे सुनके दोनों देव अच्छा हे मात' तुम्हारे वचन को मानते हैं ऐसी अङ्गीकार करके और दोनों स्नान करने के वास्ते गङ्गाजी को जातेभये २७ व ऐसे वार्त्ता भी करतेभये इन्द्र कहनेलगे कि हे कृष्ण तू प्रभु है अर्थात् समर्थ है और लोकोंकी राज्यपर तैनेहीं मुझे स्थापन कियाहै सो राज्य पर स्थापन करके अव मेरा किसवास्ते निरादर करते हो २८ व हे कमल केसे नेत्रोंवाले भ्रातृभावसे और ज्येष्ठभावसे पूजन करके कैसे मारनेकी इच्छा करते हो २९ हे राजन् ऐसे कहते हुये गङ्गाजी में स्नान करके फिर आते भये ३० पश्चात् तिसदेशको मुनिप्रिय सङ्गम नाम से वोलते हैं जहां कमलकेसे नेत्रों-वाले दोनों माता पितासे मिलके स्थितहुये तिसके अनन्तर इन्द्र को वाणी से अभय देकर पश्चात् जहा सम्पूर्ण देवता थे तहॉ विमानों में वैठकर जाते भये हैं ३१।३२ पश्चात् परम ऋद्धि से सयुक्त कश्यपजी और अदिति और इन्द्र और जनार्दन ये सम्पूर्ण एक विमानमें वैठकर स्वर्गमें जातेभये ३३ पश्चात् इन्द्रके भवन में प्राप्तहोकर तहा सम्पूर्ण एक रात्रिवास करतेभये ३४। ३५ और इन्द्राणी अ-दिति सहित धर्मात्मा कश्यपजी को देखकर पूजन करती भई जव प्रभातहुआ तव सम्पूर्ण भूतोंके हितके वास्ते अदिति वचन कहनेलगी ३६ हे उपेंद्र तू द्वा-रकामें जा और कल्पवृक्षको लेजा और पुण्यकके वास्ते वधूको वाञ्छित यह क-ल्पवृक्ष जाकरदे ३७। ३८ और जव वधू सत्यभामा पुण्यक को प्राप्तहोजाय तव फिर नन्दनवन में स्थापन करजाइयो ३९ पश्चात् हे राजन् धर्मात्मा नारदमुनिके वचनों से धर्मगुणों से युक्त देवमाता अदितिके वचनोंको कृष्णचन्द्र अङ्गीकार करते भये ४० पश्चात् जनार्दन माता पिता और इन्द्र व इन्द्राणी इन सवको प्रणाम करके द्वारकाको जातेभये ४१ और इन्द्राणीके दियेहुये रत्न और कल्प-वृक्ष सम्पूर्ण लेकर देवताओं से पूजित किये भगवान् सात्यकि ४२ और प्रद्युम्न करके सहित रैवत पर्वतमें पहुँचतेभये तहां पर्वतमें कल्पवृक्षको स्थापनकर भग-वान् द्वारकामें सात्यकिको भेजतेभये ४३। ४४ और यह कहतेभये कि हे महा-

वाहो द्वारकामें जाकर यह कहो कि कृष्णचन्द्र इन्द्रके भवनसे कल्पवृक्षलायेहैं ४५
और अब द्वारकामें आवेंगे सो सुन्दर शोभा बनाओ ४६ ऐसे तहां द्वारका में
सात्यकि कहके पश्चात् शाव आदि वालकों सहित फिर आताभया ४७। ४८
पश्चात् आगे प्रद्युम्नको कर और कल्पवृक्षको गरुड़पर स्थापनकर द्वारकामें जा-
तेभये ४९। ५० और तिसके पीछे भगवान् रथमें बैठ और तिसके पीछे शाव
सात्यकि ५१ ये रथमें बैठ तिन्होंके पीछे और यादव सवारियों में बैठ इसविधिसे
प्रसन्नहुये द्वारका में जातेभये ५२ और नगरवासीजन सात्यकि से भगवान् के
कर्मोंको सुनसुन आश्चर्यको प्राप्तहोतेभये ५३ और दिव्यपुष्पवाले वृक्षोंमें उत्तम
हे राजन् ऐसे कल्पवृक्षको पुरवासी देख देखकर बहुत प्रसन्नहोते भये ५४ और
तहां कल्पवृक्षके देखने से पुरुषों की वृद्धावस्था जातीभई ५५ और तिसकी सु-
गन्धिसे अन्धों के नेत्र खुलगये और रोगियों के रोग चलेगये ५६ और मर्त्य-
लोक में वास करनेवाले जन सुगन्धि लेतेहुये सफेद कोकिलोंको सुनके जना-
र्दन भगवान् को सराहतेभये और प्रसन्न चित्तहोकर जनार्दन की स्तुति करते
भये ५७ और तिसवृक्षके समीप सुन्दर बाजा और मधुरगीत सुनतेभये ५८ प
श्चात् जो मनुष्य जैसी सुगन्धकी वाञ्छा करताभया सोही कल्पवृक्षके पास आ
कर सुगन्ध लेताभया ५९ पश्चात् यदुनन्दन भगवान् द्वारकामें जाकर महात्मा
वसुदेवजी और देवकीको देखतेभये ६० पश्चात् देवताओंके समान जो उग्रसेन
और भ्राता बलदेव और वृद्धयादव भगवान् यथाविधि इन सबका पूजन करके
६१ पश्चात् अपने भवनमें प्राप्तहोतेभये और तहां सत्यभामा सहित वास करते
भये ६२ पश्चात् सत्यभामा श्रेष्ठ कल्पवृक्षको देखके प्रसन्नहुई कृष्णचन्द्रका पूजन
करके कल्पवृक्ष को ग्रहण करतीभई ६३ पश्चात् हे भारत भगवान् की महिमासे
किसी समयमें विचाराहुआ तो बहुत छोटाहोजाय और किसी समयमें सम्पूर्ण
द्वारकापर छाजाय और किसीसमयमें अंगुष्ठके प्रमाण हाथमें लेनेके योग्यहोजाय
६४। ६५। ६६ ऐसे कल्पवृक्ष को देखकर द्वारकावासियोंको बड़ा आश्चर्य होता
भया और हे कौरव्य प्राप्तहुआ है मनोरथ जिसका ऐसी सत्यभामा बहुत प्र-
सन्न होतीभई और पुण्यकके वास्ते सामग्री इकट्ठी करनेको तैयार होतीभई ६७
और जम्बूद्वीप में जितने द्रव्यहैं सो सम्पूर्ण महात्मा कृष्णचन्द्र लातेभये ६८ प-
श्चात् नारदमुनिकरके उपदेश किये कृष्णचन्द्र सत्यभामासहित सम्पूर्ण गुणोंके

उदय करनेवाले नारदमुनि को व्रतके प्रतिग्रहके वास्ते स्मरण करतेभये ६६ ॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेचतुस्त्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३४

एकसौ पैंतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय तिसके अनन्तर मुनियोंमें श्रेष्ठ तपोधन नारदमुनि ध्यान करतेही तहां प्राप्त होते भये १ भगवान् तिन को विधिपूर्व्वक पूजनकरके और प्रतिग्रहके वास्ते नारदमुनिसे सलाह करतेभये २ और हे भारत जब काल प्राप्तहुआ तब स्नानकिये महामुनिका माल्य और गन्धादिकों से पूजन करके भोजन करातेभये ३ और पश्चात् सम्पूर्ण भूतोंके रखने वाले भगवान् सत्यभामासहित प्रसन्न चित्तसे सर्वकामिक अन्न भोजनकराके ४ पुष्पोंकी लड़ी बनाके नारदमुनिके और कृष्णचन्द्रके कण्ठमें घालती भई और कल्पवृक्षके बाधती भई ५ पश्चात् नारदमुनि को जल देतेभये पश्चात् हज़ार गौ सुवर्णका पर्वत ६ और मणि रत्न सोना चादी व तिल मिश्रधान्य देतेभये ७ पश्चात् नारदमुनि इन सबको ग्रहणकरके प्रसन्नहुये भगवान्से वचन कहतेभये ८ हे केशव मैं प्रसन्नहुआ आप मेरेको आज्ञादें और जो व्रत मैंने तुम्हारेप्रति कहाहै सो सुनो ६ तब जनार्दन नारदमुनिके पश्चात् जातेभये १० तिसके पीछे मुनिवर नारदमुनि अनेकप्रकारके परिहास करके कहनेलगे कि हे कृष्ण ठहरो मैं जाताहूं ११ पश्चात् कण्ठसे पुष्पोंकी मालाको दूरकर कहनेलगे कि हे कृष्ण बछड़े वाली कपिला गौ दीजिये १२ व तिल मृगचर्म्म सुवर्ण का छाज ये सब मेरेको दीजिये महादेवजी ने यह विधि मेरे प्रति वर्णन की है १३ पश्चात् कृष्णचन्द्र अंगीकार करके हँसतेहुये मुनिसे कहतेभये १४ हे धर्मज्ञ नारद वाञ्छित वरमागो मैं दूगा क्योंकि जिससे मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुआहूं १५ ऐसे सुन नारद मुनि कहनेलगे कि हे विष्णो हे सनातन सदा ऐसाही मेरे ऊपर प्रसन्नरहो और हे महामते तुम्हारे प्रभावसे मैं सालोक्यको प्राप्तहोजाऊं १६ और हे नारायण मैं अयोनिज होजाऊँ और अन्य जातियों में भी ब्राह्मणहूं १७ हे राजन् पश्चात् विष्णुने कहा कि ऐसेहीहोगा ऐसेसुनके बुद्धिमान् नारदमुनि बहुत प्रसन्नहोते भये १८ हे कौरव्य पश्चात् सत्यभामाने कृष्णचन्द्रकी सोलहहजार स्त्री सपत्नियों को निमन्त्रण किया १९ और जो इन्द्राणी ने आभूषण वस्त्र दियेथे सो स-

म्पूर्ण तिन्होंको देतीभई २० पश्चात् वासुदेवकी आज्ञासे तहा वसताहुआ कल्प वृक्ष प्रवृत्त होताभया २१ पश्चात् केशवके निमंत्रितकिये आतेभये और मानके कल्पवृक्षकी विभूतिको देखतेभये २२ पश्चात् पाण्डव और द्रौपदी व सुभद्रा २३ व पुत्री करके सहित श्रुतश्रवा और पुत्र करके सहित भीष्मक इन्होंको बुलाके और अन्यमित्र सम्बन्धियोंको बुलाके २४ तहा अन्त पुर करके सहित परमऋद्धिसे जनार्दन भगवान् अर्जुन के साथ रमण करतेभये २५ पश्चात् देवताओंके समान कांतिवाले कृष्णचन्द्र ऐसे वर्ष दिन तक तहा रमणकरके और कल्पवृक्षको स्वर्ग में पहुँचातेभये २६ पश्चात् तहा कश्यपजी और अदितिको इन्द्रसहित भगवान् प्रणाम करते भये २७ पश्चात् नम्रहुये इन्द्र और भगवान् से अदिति वचन कहनेलगी कि हे अमरसत्तम तुम्हारा सौभ्रातृ नित्य बनारहे २८ पश्चात् अदिति कहनेलगी कि हे जनार्दन मेरा मनोरथ पूर्णकरो ऐसे सुनके कृष्णचन्द्र मातासे कहतेभये कि तथास्तु अर्थात् मनोरथ पूर्णहोगा २९ पश्चात् माता पिता को सम्बोधन करके महातेजस्वी वासुदेव कालके अनुसार वचन कहते भये ३० हे मानके देनेवाले नीचे पृथ्वीतलमें अवध्य असुरोंके मारनेके प्रति मेरेको महादेवजी ने उपदेश किया है ३१ सो इनको दशरात्रियों करके मैं मारूंगा सो महारम। प्रवरने और जयतनेभी दानवों के मारने की इच्छाकरके ऊपर से स्थित होना योग्यहै ३२ । ३३ हे इन्द्र ये दानव देवताओं से अवध्यहैं क्योंकि इनको ब्रह्मासे वरदान होरहाहै इस वास्ते मानुषत्वको प्राप्तहुआ मैं मारूंगा ३४ हे जनमेजय ऐसेइन्द्र सुनके कृष्णचन्द्रके वचनको अंगीकार करतेभये पश्चात् प्रसन्न हुये इन्द्र कृष्णचन्द्रको अमृतसे उत्पन्नहुआ किरीट देतेभये और हे कुरुशार्दूल दोकुण्डल देतेभये पश्चात् प्रसन्नहुए आपसमें मिलतेभये ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेपंचत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३५

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

जनमेजय प्रश्नकरते हैं कि हे भगवन् पुण्यकों की उत्पत्ति कृपाकरके कहो क्योंकि जिससे व्यासजीकी कृपासे सम्पूर्ण तुमको विदित है १ ऐसे सुन वैशम्पायनजी ने कहा हे धर्म के जाननेवालों में श्रेष्ठ जनमेजय पार्वतीजी ने जो पुण्यकी विधि कही है सो मैं तुमसे कहताहूं २ हे राजन् जब कृष्णचन्द्रने स्वर्ग

से कल्पवृक्ष द्वारकामें प्राप्त करदिया तब नारदमुनि भी जातेभये ३ व तब देवता व असुरोंका घोरयुद्ध हुआ व महादेवजी की आज्ञासे षट्पुरका वधहुआ ४ हे राजन् कृष्णचन्द्र के साथ बैठे हुये मुनि से भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी पूछती भई ५ तिसके अनन्तर जाम्बवती सत्यभामा योगयोक्त गान्धारराज की पुत्री ६ व कुल शील गुणोंकरके युक्त कृष्णचन्द्रकी अन्यरानी ये सम्पूर्ण नारदमुनिसे कहतीभई ७ प्रथम रुक्मिणी कहनेलगी कि हे मुने तुम धर्म्म जाननेवालों में श्रेष्ठ और सर्वज्ञहो हे सुन्दर व्रतवाले इसवास्ते पुण्यकोंकी उत्पत्ति वर्णनकरो ८ हे मुने विधिफल योगदान काल ये भी सम्पूर्ण कहो हे भगवन् हमारे बडाआनन्दहै इस संदेह को दूरकरो ९ हे राजन् ऐसे सुन नारदमुनि कहनेलगे कि हे धर्म्म के जाननेवाली रुक्मिणी सपत्नियोंकरके सहित पुण्यकों की विधि सुनो जैसे पहले पार्वतीजीने वर्णनकरी है हे रुक्मिणि पार्वती जो है पुण्यकके वास्ते व्रत धारण करतीभई १० और व्रतके अन्तमें सपूर्ण सखियोंका निमंत्रणकिया ११ पश्चात् अदिति से आदिलेकर सम्पूर्ण दक्षकी पुत्री और पतिव्रता इन्द्राणी १२ व सोमकी स्त्री रोहिणी और हे राजन् फाल्गुनी पूर्वा रेवती १३ शतभिषा मघा ये सम्पूर्ण आईं और पार्वतीका आराधन किया १४ व गंगा सरस्वती वैतरणी गढकी हे जनमेजय ये नदी और अन्य रमणिकनदी आईं और सत्य सम्पूर्ण आये १५ व लोपामुद्रा और सुन्दर पर्व्वतोंकी पुत्री अग्निकीपुत्री और स्वाहा सावित्री १६ कुवेरकी स्त्री ऋद्धि वरुणकी स्त्री और धर्मराजकी स्त्री और वसुकी स्त्री १७। १८ और श्री ह्री धृति कीर्ति आशा मेधा सुव्रता प्रीति मति ख्याति सन्नति १९ सत्य और देवि इन सबों को बुलाय के और व्रतके अत में पूजन करतीभई २० व तिलों के पर्वत में सतनजे की तरह रत्नमिलाकर दानदेतीभई और अनेकप्रकार के मुख्य वस्त्र और आभूषण देतीभई २१ पश्चात् ये सम्पूर्ण उमाकी पूजाको ग्रहणकरके विचित्र कथा कहतीहुई स्थित होतीभई २२ पश्चात् पुण्यकके वास्ते यह उत्तम कथा पूछतीभई तब पार्वती पुण्यकोंकी विधि तिनके प्रति वर्णन करतीभई २३ नारदमुनि कहते हैं कि हे रुक्मिणी मैं भी उस समय में सुनताभया २४ और हे वैदर्भि रत्नपर्व्वत उमाने मेरेकोही दियाथा सो मैंने लेकर ब्राह्मणों को देदिया २५ और हे वैदर्भि उस समयमें पार्वती अरुन्धती से यह वचन कहतीभई कि हे देवि सबों सहित तू श्रवणकर २६। २७ क्रमसे पुण्य-

कों की विधि में तुम से कहती हूं हे शुभे जैसी विधि मैंने पहले देखी है २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेपुण्यक-
विधौपट्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौ सैंतीसका अध्याय ॥

नारदमुनि वेदमिसे कहते हैं कि हे मैथिम पश्चात् उमा अरुन्धतिके प्रति कहने लगी कि हे सुन्दरहासवाली जिससमय में भर्त्ताकी कृपासे में सर्वज्ञा होगई तब पुण्यकोंकी विधि मैंने पहले देखी है १ हे सति तें ऐसे जानना कि पुण्यकोंकी विधि सनातन है और महादेवजी की कृपासे मैंने देखी है २ हे देवि भगवान् भर्त्ताकी आज्ञासे मैं इन्हों को जानती भई ३ जिस स्त्री के सतीत्व और धर्म्मका आचरण नित्य अखंडितहै तिसकेवास्ते पुण्यकोंकी विधि पुराणोंमें कही है ४ और हे शुभे असती स्त्रियों के दान उपवास सुकृत पुण्यक ये सम्पूर्ण निष्फल होजाते हैं ५ व जो स्त्री भर्त्ताको ठगती हैं व अन्यपुरुषों से गमन करती हैं तिन्हों को पुण्यफल नहीं प्राप्तहोताहै और नरकमें प्राप्तहोती हैं ६ और हे देवि श्रेष्ठमार्ग में स्थितहुई साध्वी और सुशील व धर्ममें सावधानपतिको देवता मानतीहुई जगतका उद्धार करदेती है ७ व मधुरवाणीवाली शुद्धिसेयुक्त और धृति धारण किये शुभव्रत धारणकिये श्रेष्ठवचन कहनेवाली ऐसी स्त्री जगत्को धारणकरती है ८ हे शुभे यह स्त्रियोंका सनातनधर्म है कि व्याधिवाले व जातिसे पतित व दीन ऐसे भी पति को स्त्रियों करके नहीं त्यागना योग्य है ९ व हे सुन्दरमुखवाली अकार्य कारण व पतित व निर्गुण ऐसे पतिका तथा आत्माका सतीस्त्री उद्धार करदेती है १० व वेदमें भी वाग्दुष्टका प्रायश्चित्त कहाहै व योनि दुष्टका नहीं कहा ११ व हे धन्ये अच्छीगतिकी वाञ्छाकरतीहुई स्त्रीको सम्पूर्ण कालमें भर्त्ताकी आज्ञा से व्रत व उपवास करनेयोग्यहै १२ व जो स्त्री अन्यों से रमणकरती है सो हजारहों कल्पों में भी मोक्षको प्राप्त नहीं होती व तिरछी योनियोंमें प्राप्तहोती है १३ व जो जार स्त्री मनुष्योंको भी प्राप्तहोगी तो चाण्डालयोनि में खोटी बुद्धिवाली व कुत्तोंको खानेवाली होतीहै १४ हे तपोधने श्रेष्ठ पुरुषों ने स्त्रीका देवता सम्पूर्ण कालमें भर्त्ताकहाहै हे प्रिये जिसस्त्रीके ऊपर भर्त्ता प्रसन्नहोगया सोही स्त्री सती है और धर्मको जाननेवाली है १५ व जिन स्त्रियोंका मन भर्त्ता में स्थितहै तिन स्त्रियों

को आनन्दवाला लोक अच्छा नहीं लगता १६ व हे सौम्ये कर्म करके वचन करके और वाणीकरके जो पतिकी उपासना नहीं करती हैं तिन्हों के पुण्यका फल राक्षसों ने कहाहै १७ हे शोभने अब सम्पूर्ण पुण्यकोंकी विधि कहतीहू जो मैंने तपकरके देखी है सो सबोंकरके सहित तू जान १८ हे धृतव्रते स्त्री प्रातःकाल स्नानकरके पश्चात् उपवास अथवा व्रतके वास्ते पतिको पूछे १९ पश्चात् सासु और श्वशुरके चरणोंको स्पर्शकरे पश्चात् अक्षतोंसहित गूलरका पात्रलेकर २० दहना गौका सींगसींचे फिर वोही जल भर्त्ताकोदेके और अपने शिरपर धारण करे २१ त्रैलोक्यमें सम्पूर्ण तीर्थोंके समान यह स्नान कहाहै हे भाविनि स्त्री और पुरुषों को उपवास और व्रतमें यह सामान्य से स्नान कहाहै २२।२३ हे अरुन्धति यह महादेवजी के तेजसे मैंने देखाहै कि अशल्यविद्धशयन और तैसाही आसन २४ व शरीरका घना सँवारना आशुओंका पडना क्रोध कलह इन सम्पूर्णों के उत्पन्न होनेसे स्त्रीका उपवास और व्रत नष्टहोजाताहै २५ व उपवास में शुक्लवस्त्र धारणकरने और अन्तर्वस्त्र धारण करने योग्यहैं २६ व पृथ्वी में शयन करना उपवासमें यहविधि वर्णनकरी है २७ व शृङ्गारकरना अंजनघालना पुष्पोंकी सुगन्धि ये वस्तु व्रतमें और उपवास में अवश्य वर्जितहैं २८ व दन्तों से काष्ठका सयोग शिरका स्नान उवटना मलना येभी सम्पूर्ण वर्जितहैं २९ व विल्व आवलोंका फल इन्हों से शुद्ध स्नान आचरणकरे और मृत्तिका मिश्रित जलसे प्रक्षालन शिरकाकरे ३० व स्नेह करकेयुक्त वस्तुओं से मालिश नहीं करे ऐसी स्थिति कही है ३१ व गोयान उष्ट्रकायान और खरयान ये सम्पूर्ण वर्जित हैं और हे अरुन्धति नग्नस्नान उपवास में नहीं करना ३२ व नदी के जलमें उपवास में स्नान श्रेष्ठ कहाहै और कमलों से युक्त सुन्दर तड़ाग और वापी में स्नानकरना उचितहै ३३ तडागादिकों में गमनकरके स्नान शुद्ध कहाहै और ये नहीं होवें तो घटसे स्नानकरे ३४ अथवा नवीन कुम्भोंसे स्नानकरे यह सनातन विधि कही है हे अरुन्धति तपोबलसे मैंने ऐसे निर्णय कियाहै ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतेविष्णुपर्वणिभाषायांपारिजातहरणेपुण्यकविधौसप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३७॥

एकसौ अरतीसका अध्याय॥

हे राजन् जनमेजय भर्त्ता हैं देवता जिन्होंका ऐसी स्त्रियोंकरके सम्पूर्ण विधि से एकवर्ष तक अथवा छःमहीनातक एक महीनातक यह ऐसे व्रतकरना उचित है १ पश्चात् एकादश स्त्रियोंका विधिसे पूजन करना उचितहै २ व विवाहकी विधि के पुण्यकर्मे सम्पूर्ण विधि वर्णनकरी है ३ और पुण्यक में मण्डनमालाओं का धारण कुम्भों से स्नानकरना ये सम्पूर्ण पुण्यके वास्ते विधिकही है ४ पश्चात् मन और वाणी से भर्त्ताको प्रणाम करके पश्चात् ऐसे स्तुतिकरै ५ हे आप अर्थात् जल तुम ऋषियों के देवहो और विश्वको धारण करतेहो प्रकाश स्वरूपवाले ऐसे जो तुमहो सो मेरे कल्याणकेवास्ते रसों सहित मेरा सेवनकरो ६ व हे जल देवता मैं सपत्नियों में अधिक सुन्दरपुत्रवाली सुभगा सपत्तिवाली दरिद्र रहित तुम्हारी कृपासे ऐसी होजाऊं ७ व हे जलदेवता मेरापति प्रसन्न रहे और नित्य भक्तरहे ८ व मेरी बुद्धि बढ़े और चकवा चकवीकी सी हमारी प्रीतिरहे ९ व मन में विराग मतहोवे तुम्हारी दयासे ये सम्पूर्ण होजावें तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै १० इन सम्पूर्ण मन्त्रोंसे सर्वद्रव्यों का अभिमन्त्रणकरे और सम्पूर्ण यह विधिपुराणों में वर्णनकरी है ११ पश्चात् हे शुभे स्नानकरके नवीन वस्त्रोंको धारणकरे १२ पश्चात् इन्द्रियों को रोकनेवाला ज्ञान विज्ञानका जाननेवाला और पवित्र ऐसे ब्राह्मणों को भर्त्तासहित यथाशक्ति पूजनकरे १३ पश्चात् हे तपोधने वस्त्र शय्या यान गृह धान्य दासी दास आभूषण रत्नका पर्य्यंत १४ व सम्पूर्णधान्य तिल सुन्दर वस्त्र इन्होंसेयुक्त दान करकेदेवे और हस्ती अश्व गो इन्होंका दानकरे १५ व लवण की प्रतिमा माखन गुड़ मधु सुवर्ण सम्पूर्ण गंधोंकारस और फूलोंका रस और दधि दूध इन सम्पूर्णों का दान यथाविधि करे १६ हे अनिंदिते दानों के करनेसे सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त होजानाहै १७ हे राजन् देवदेव वृषध्वज के कहे व्रत को उमा ऐसे वर्णन करतीभई १८ पार्वतीजी कहती हैं कि हे सौम्य हे अरुन्धति मेरे प्यारकेवास्ते महादेवजी ऐसे कहतेभये १९ व व्रतकरके पश्चात् स्त्रियोंको सुंदर भोजनकरावे २० हे देवि पश्चात् ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित अन्नदेना और पायस ब्राह्मणों को देनी उचितहै २१ व इस व्रतमें प्राणियों का वध नहीं करना उचितहै हे शुभे अब दूसरे व्रतकी विधि कहती हूं जो महादेवजी की कृपासे मैं

विधि देखतीभई २२ हेशुभे ज्येष्ठ आषाढमें यह पहलेकही विधिकरनी उचितहै २३ पश्चात् जब अथवा कोपसा एक महीनामें व्रतकरे पश्चात् पात्रभर भरके घृत दूध दधि शहद इन्होंका दानकरे २४ व ज्ञानसेवृद्ध और सुन्दर व्रतवाले आत्माको जीतनेवाले ऐसे द्विजको दानदेवे २५ ऐसे पुत्रके उत्पन्न करने के वास्ते ये दान कहे हैं २६ व जो पुत्री की इच्छाहोवे तो वांछित द्रव्यका दानकरे तो पुत्री को प्राप्तहोय २७ पश्चात् गौ सुवर्ण इन्होंका दानदेवे और ब्राह्मण को वस्त्रदेवे और यज्ञोपवीत देवे २८ हे शुभे पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाले व्रतकी विद्वानोंने यहविधि कही है २९ अपत्याख्यान के योगसे वर्षदिन पर्यन्त यह व्रतकहाहै ३० हे अरुन्धति भर्ताकी आज्ञा से सम्पूर्ण विधिकरे और यज्ञोपवीत सुवर्ण दक्षिणा इन्हों का शक्ति पूर्वक दान देतीहुई स्त्री सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त होजाती है ३१ व इतने यह व्रतकरे इतने स्त्री नवीन अन्न और नवीन फल नहीं भोजनकरे व एकबार आप भोजनकरे ३२ व प्रथम ब्राह्मण को भोजनदेवे पश्चात् भर्ताको ३३ तत्पश्चात् आप भोजनकरे ऐसे वर्षदिन तक व्रतकरे तो सुभगा व रूपवती व धन से युक्त ऐसी स्त्री होजाती है ३४ व यह स्त्री वर्षदिनतक बैंगन भोजन नहींकरे व ऐसे स्त्रीव्रतकरे तो पुत्रके नाशको नहीं देखती है ३५ और सूसे व मृगकामांस भोजन नहींकरे व घीया कचनार ये भोजन नहींकरे व जब व्रतको एकवर्ष पूरा होजाय तब एक २ शाकलेकर दानकरे ३६ हे अरुंधति जो ऐसे करती है तिन्हों के पुत्र जियाकरें हैं ३७ व वह सम्पूर्ण स्त्रियों के मध्यमें मुख्यहुआ करती है व जब वर्षदिन होजाय तब उत्तम सोनेकी सूर्यकी मूर्तिबना यशस्वी दरिद्र ब्राह्मण को देवे ३८ व फल पुष्प भक्ष्य इन सपूर्णों का दानकरे अथवा दिनमें भोजन नहींकरे तो चन्द्रमा और नक्षत्रों से पवित्रहुआ रात्रिको भोजनकरे ३९ व सोने का चन्द्रमा सूर्य नक्षत्र वस्त्र लक्षण इन्होंका दान ब्राह्मणको देवे ४० ऐसे करने से स्त्रीका चन्द्रमा के समान शीतल शरीर होजाता है और सुभगा पुत्रवाली दर्शनके योग्य ऐसी होजाती है ४१ पश्चात् पूर्णमासी के दिन चन्द्रमाके उदयमें स्त्री पुष्प अक्षत कुश इन्होंका चंद्रमाको अर्घदेवे व दधिकरके सहित मोदनभोग की बलिदेवे ४२ हे अरुंधति जो ऐसे नित्य करती है सोस्त्री सम्पूर्ण कामनाओं को पूर करती है ४३ व जो स्त्री घटाओं में अथवा और दिन जो सूर्य्यके दर्शन बिना भोजन नहीं करती है ४४ सो इष्ट कामनाओं को प्राप्त होजाती है पश्चात्

हे अरुन्धति यथाशक्ति ब्राह्मण को सुवर्णदेवे ऐसे करे तो सुभगा और दर्शन के योग्य स्त्री होजाती है ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपारिजातहरणेपुण्यकविधौ अष्टात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौ उन्तालीसका अध्याय ॥

नारदमुनि कहते हैं कि हे वैदर्भि पश्चात् पार्वती कहनेलगीं कि हे अरुन्धति जिन पवित्र व्रतोंकरके शरीर उत्तमहोजाय तिन्हों को वर्णनकरते हैं एकाग्र चित्त से सुनो १ हे अरुन्धति कृष्णपक्षकी अष्टमी के दिन मूलफल को भोजन करके ब्राह्मणको दानदे २ पश्चात् शुक्ल वस्त्र धारणकरके और शुभ आचार से गुरुदेवताओं का पूजनकरके ऐसे वर्ष दिनतक व्रत करके पश्चात् ब्राह्मणों को दान दे ३ पश्चात् गोदान चमर ध्वज इन सम्पूर्णोंको दानदेवे पश्चात् पूर्णमासी में चन्द्रमाके उदयमें बलिदेवे ४ पश्चात् ऐसे व्रत करतेहुये जब एकवर्ष होजाय तब रूपेका चन्द्रमा बनवाके और कमल के फूलमें रख ब्राह्मणके पास स्वस्तिवाचन कराके दानदेवे ५ पश्चात् चन्द्रमा के सम्मुख और तृणराजके फलके से समान कुचोंको प्राप्तहोती है ६ पश्चात् वाणीको रोंकेहुये भोजनकरे जब एक वर्ष पूरा होजाय तब सुवर्णके दो बिल्वबनाकर दक्षिणा सहितदेवे ऐसे करे तो उत्तम सौभाग्यको और बहुतपुत्रों को प्राप्तहोती है ७ ऐसा करनेसे सम्पूर्ण कालमें उन्नत स्तन रहते हैं और सूक्ष्म उदरकी इच्छाकरे तो एक अन्न भोजनकरे और पञ्चमी को नहीं भोजनकरे और वर्षके अन्तमें फूलों सहित जूहीकी बेल और दक्षिणा देवे ८ और जो स्त्री उत्तम हस्तों की वांछा करे तो द्वादशीको व्रतकरे और एक वर्ष में सुवर्ण के फूलबनाकर दानकरे ९ और हे सुन्दर व्रतवाली जो उत्तम जंघाओंकी इच्छाकरे तोभी ऐसेही दानकरे १० और त्रयोदशी में एकवक्त भोजन करके वर्षके अन्तमें लवणका दानकरे ११ और प्रजापतिके मुखके समान सुवर्ण का दानकरे और रत्नों से पूर्ण रक्तवस्त्रों का दानकरे ऐसे दानकरे तो भी उत्तम जंघाओंको प्राप्तहोय १२ और जो मधुर वाणीकी इच्छाकरे तो एक वर्ष अथवा एक महीना लवणको त्यागदेवे पश्चात् दक्षिणा सहित लवणका दानकरे तो मधुरवाणी को प्राप्तहोय १३ और टकना शिर पैर इनके सुन्दरहोनेकी इच्छाकरे

ती छठ तिथिको एकवार भोजनकरे और अग्नि ब्राह्मणको पैरसे स्पर्श नहींकरे और जो स्पर्शभी करलेवे तो तिन्हों की स्तुतिकरे १४ और पैरसे पैरको नहीं धोवे और इन व्रतोंसे युक्त सुवर्ण के दो कछुवे वनाय और घृतके पात्र स्थितकरके दानकरे १५ और रत्नसुवर्ण इन्होंका भी दानकरे और जिसस्त्री को सम्पूर्ण अङ्ग अच्छे करनेकी इच्छाहोवे तो पुष्प समयमें तीन रात्रि पर्यंत अशुद्ध रहके स्नान आदि शुद्धकरके अभ्यागत को घृतदानकरे १६ और ब्राह्मणको लवण का दानकरे और घरका सम्मार्जनकरे लेपकरे और देवताओं को वलिदेवे ऐसे व्रत नियमकरे तो सम्पूर्ण स्त्रियोंमें अधिक होजाती है १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेव्रतविधौ ऊनचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३९ ॥

एकसौ चालीसका अध्याय॥

पार्व्वतीजी कहती हैं कि हे अरुंधति एकवार भोजन करनेवाली स्त्री नित्य सप्तमीको गुणवान् ब्राह्मणोंको भोजन करावे १ तिसके अनन्तर वर्षके अन्तमें सुवर्णका वृक्षवनाय दक्षिणा करके सहित ब्राह्मणको देवे ऐसे करनेसे स्त्री वहुत बंधुओंवाली होजाती है २ और हे स्त्रियोंमें श्रेष्ठ अरुंधति जो स्त्री वर्ष पर्यंतकरंजुवामें दीपकवारे है और वर्षके अन्त में सुवर्णका दीपकदान करे है स्त्री सुन्दर और भर्ता को प्यारी और पुत्रवाली सपत्नियों में श्रेष्ठ ऐसी होजाती है ३ और दीपककी तरह प्रकाशकरती है और हे अरुंधति जो स्त्री सब से पश्चात् भोजन करती है और जो कठोर वचन नहीं कहती और जिसको व्यसन नहीं ४ और पतिही जिसके देवताहै और जो शुद्धि से युक्तहै और जो रूक्षवचन नहीं कहती और जो सासु श्वशुरकी टहलकरे है ५ और जो सत्यधर्म्म और गुण इन्हों से युक्तहै ऐसी स्त्रीके उपवास और व्रतोंसे कुछ भी प्रयोजन नहीं ६ और हे देवि जो दैवयोगसे विधवा है तिसका पुराणोक्त धर्म्म कहे हैं हे अरुंधति विधवा स्त्री चित्रामकी अथवा मिट्टीकी पतिकी मूर्त्तिवनाके तिसकी नित्यपूजाकरे ७ और धर्म्मका अनुस्मरण करे पश्चात् तिसकी आज्ञा नित्यभागके कामकरे और व्रत उपवास भोजन येभी तिसकी आज्ञासेही करे ८।९ ऐसे जो स्त्री करेहै सो भर्ता के लोकमें प्राप्तहोती है और हे देवि जो स्त्री इसप्रकारसे पतिकी आज्ञामें रहती

हैं सो सूर्यकी तरह प्रकाशित होजाती हैं १० । ११ और इन्होंमे आदिलेकर जो पुराणों में विधिकही हैं सो सम्पूर्ण देवताओं की स्त्री जानती हैं १२ और हे अरुन्धति धर्मात्मा नारदमुनि भी व्रतकी और उपवासोंकी पुराणोंमें कही सम्पूर्ण विधिको जानते हैं १३ और अदिति इन्द्राणी और हे सोम सुते तू ये तुम पुण्यक व्रतोंको विख्यात करनेमें कीर्त्तिको प्राप्तहोवेगी १४ और महात्मा विष्णुकीभार्या भी सम्पूर्ण उपवास व्रत पुण्यक इन्होंकी विधिजानतीहैं १५ और हे देवि स्त्रीके धर्मों में स्त्रीके ये विशेष धर्म कहेहैं १६ कि पतिकी भक्ति और मधुर वचन को मलस्वभाव ये स्त्रियोंके परमधर्म कहेहैं १७ इसीको नारदमुनि रुक्मिणीसे कहे हैं कि हे वैदर्भि ऐसे कहीहुई सम्पूर्ण महादेवी प्रसन्नहुई पार्वतीजी को प्रणाम करके अपने अपने स्थान में जातीभई १८ और हे रुक्मिणि जो धर्मचारिणी अदिति व्रत करतीभई सोही तुम्हें करना योग्यहै १९ उमाकी कहीहुई जो विधि है सो सम्पूर्ण अदिति करती भई और अदिति नामक व्रत सत्यभामा ने दिया पश्चात् वही व्रत सावित्री ने किया २० ऐसे जो स्त्री सावित्री व्रत करै हैं और जो अदिति व्रत करैहै सो भर्ताके कुलको और पिताके कुलको और अपने आत्माको तार देतीहै २१ और जो इन्द्राणी का व्रतकरै हैं और जो पार्वतीजी का यथा विधि व्रतकरै हैं सो सम्पूर्ण सम्पत्को प्राप्तहोती है २२ और हे यशके करने वाली एक अहोरात्र उपवास करके पश्चात् सौ कुम्भोंका दानकरै २३ । २४ और माघके महीने में जो गंगाजी का स्नानहै तिसको गंगाव्रत कहतेहैं २५।२६ सो सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवालाहै और गंगाके व्रतमें हजार कुम्भों का दानकरै २७ और धर्मराजकी भार्या या मखनाम व्रत करतीभई इसप्रकारकी यह व्रतकी विधिकही है २८ पार्वतीजी ने अरुन्धतिके प्रति ये सम्पूर्ण विधिकही हैं ये सम्पूर्ण व्रत कल्याणगुण से युक्तहैं और पवित्रहैं शुभके देनेवाले हैं २९ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय दिव्य चक्षुसे और उमाके वरदान से ऐसे व्रतोंके विस्तारको देखकर रुक्मिणी व्रतकरतीभई ३० और जाम्बवतीभी इस उमाके व्रत को करके सुन्दर रत्नका वृक्षदेतीभई और सत्यभामा व्रतकरके पीतवस्त्रदेतीभई ३१ और रोहिणी फाल्गुणी मघा इन्होंके व्रतभी रुक्मिणी करतीभई ३२ और शतभिषा भी ऐसेही व्रत करतीभई जिससे नक्षत्रोंकी मुख्यताको प्राप्तहोतीभई ३३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिभाषायांपारिजातहरणेउमाव्रतकथने द्वात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३२ ॥

एकसौ इकतालीसका अध्याय॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा कि हे व्यासजी के शिष्य हे तपोधन पारिजात के हरणे में दारुण असुरों का निवास जो षट्पुरकहे तिन्हों का वध वर्णनकरो और हे मुनि श्रेष्ठ अन्धक का वध वर्णनकरो ऐसे सुन १ वैशम्पायनजी कहने लगे कि हे राजन् जब महादेवजीने त्रिपुरका वध करदिया तब शस्त्रलिये बहुत से असुर महादेवजी ने शरसे दग्धकर दिये २ तब साठहजार असुर ज्ञातियों के वध से व्याकुलहुए महर्षिगणोंसे सेवित जबू मार्ग में सूर्यकी तरफ मुख करके सौ हजार वर्ष तप करते भये ३ और वायुकाही भक्षण करते हुये ब्रह्माजी की स्तुति करतेभये ४ तिन्होंका एक समूह तो गूलरके आश्रयहोके घोर तप करते भये और कितनेक असुर कैथके वृक्षके आश्रयहोके तप करतेभये ५ और कितनेक असुर शृगालनाटी के आश्रयहोके तप करतेभये और कितनेक वड़के आश्रयहोके वेदको अध्ययनकरतेहुये तप करतेभये ६ पश्चात् हे राजन् इन्होंका ऐसा घोरतप ब्रह्मादेखके प्रसन्न होतेभये पश्चात् वरदेने के वास्ते इन्होंको वरम्ब्रूहि ऐसे कहतेभये ७ तब महादेवजी के साथवैर करतेहुये दानव महादेवजीसे बन्धु मारने का बदला लेनेकी इच्छा करतेभये तब हे राजन् सर्वज्ञ ब्रह्मा तिन्होंसे वचन कहते भये कि हे दैत्यो विश्वको रचनेवाले और संहार करनेवाले ऐसे महात्मा महादेव जी से बदलालेने को कौन समर्थ है ८ यह तुम्हारा परिश्रम वृथाहै और हे असुरो नहीं है आदि मध्य अन्त जिसके ऐसे महादेवजीकी स्तुतिनहींकरके स्वर्गके वमनेकी इच्छाकरतेभये ९ और कितनेक नहीं इच्छाकरतेभये और कितनेक दुरात्मा राक्षसोंसे ब्रह्माकहतेभये कि हे असुरो रुद्रक्रोधके बिना वरमागो १० ऐसे सुन दैत्य कहनेलगे कि हे विभो सम्पूर्ण देवताओं से हम अवध्यहोजावें और हमारे पृथ्वीतलमें षट्पुरहो और तिन्होंमें हमारे सम्पूर्ण सम्पतहो ११ हे ब्रह्मन् तिसपुरमें सुखपूर्वक हम वासकरें और हे तपके निधि जिस महादेवजीने हमारे ज्ञातीमारे हैं तिससे हमारेको उग्र भय नहींहोवे १२ क्योंकि त्रिपुरको हन देखके हम निस रुद्रसे डरते हैं ऐसे सुन ब्रह्माजी ने कहा कि हे असुरो तुम देवताओंसे महादेव जी से अवध्य होजावोगे १३ जो श्रेष्ठ मार्ग में स्थितहुये ब्राह्मण और सज्जन को पीडा नहींदोगे तो और हे असुरो जो किसीप्रकारसे भी मोदकरके ब्राह्मणों

हैं सो सूर्यकी तरह प्रकाशित होजाती हैं १० । ११ और इन्होंसे आदिलेकर जो पुराणों में विधिकही हैं सो सम्पूर्ण देवताओं की स्त्री जानती है १२ और हे अरुंधति धर्मात्मा नारदमुनि भी व्रतकी और उपवासोंकी पुराणोंमें कही सम्पूर्ण विधिको जानते हैं १३ और अदिति इन्द्राणी और हे सोम सुते तू ये तुम पुण्यक व्रतोंको विख्यात करनेमें कीर्त्तिको प्राप्तहोवेगी १४ और महात्मा विष्णुकीभार्या भी सम्पूर्ण उपवास व्रत पुण्यक इन्होंकी विधिजानती हैं १५ और हे देवि स्त्रीके धर्मों में स्त्रीके ये विशेष धर्म कहेहैं १६ कि पतिकी भक्ति और मधुर वचन को मलस्वभाव ये स्त्रियोंके परमधर्म कहेहैं १७ इसीको नारदमुनि रुक्मिणीसे कहे हैं कि हे वैदर्भि ऐसे कहीहुई सम्पूर्ण महादेवी प्रसन्नहुई पार्वतीजी को प्रणाम करके अपने अपने स्थान में जातीभई १८ और हे रुक्मिणि जो धर्मचारिणी अदिति व्रत करतीभई सोही तुम्हें करना योग्यहै १९ उमाकी कहीहुई जो विधि है सो सम्पूर्ण अदिति करती भई और अदिति नामक व्रत सत्यभामा ने दिया पश्चात् वही व्रत सावित्री ने किया २० ऐसे जो स्त्री सावित्री व्रत करें हैं और जो अदिति व्रत करें हैं सो भर्ताके कुलको और पिताके कुलको और अपने आत्माको तार देती हैं २१ और जो इन्द्राणी का व्रतकरें हैं और जो पार्वतीजी का यथा विधि व्रतकरें हैं सो सम्पूर्ण सम्पत्को प्राप्तहोती हैं २२ और हे यशके करने वाली एक अहोरात्र उपवास करके पश्चात् सौ कुंभोंका दानकरै २३ । २४ और माघके महीने में जो गंगाजी का स्नानहै तिसको गंगाव्रत कहते हैं २५ । २६ सो सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवालाहै और गंगाके व्रतमें हज़ार कुंभों का दानकरै २७ और धर्मराजकी भार्या या मखनाम व्रत करतीभई इसप्रकारकी यह व्रतकी विधिकही है २८ पार्वतीजी ने अरुन्धतिके प्रति ये सम्पूर्ण विधिकही हैं ये सम्पूर्ण व्रत कल्याणगुण से युक्तहैं और पवित्रहैं शुभके देनेवाले हैं २९ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय दिव्य चक्षुषे और उमाके वरदान से ऐसे व्रतोंके विस्तारको देखकर रुक्मिणी व्रतकरतीभई ३० और जाम्बवतीभी इस उमाके व्रत को करके सुन्दर रत्नका वृक्षदेतीभई और सत्यभामा व्रतकरके पीतवस्त्रदेतीभई ३१ और रोहिणी फाल्गुणी मघा इन्होंके व्रतभी रुक्मिणी करतीभई ३२ और शतभिषा भी ऐसेही व्रत करतीभई जिससे नक्षत्रोंकी मुख्यताको प्राप्तहोतीभई ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेउमामतंकेच
त्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः १४० ॥

एकसौ इकतालीसका अध्याय॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा कि हे व्यासजी के शिष्य हे तपोधन पारिजात के हरणे में दारुण असुरों का निवास जो षट्पुरकहे तिन्हों का वध वर्णनकरो और हे मुनि श्रेष्ठ अन्धक का वध वर्णनकरो ऐसे सुन १ वैशम्पायनजी कहने लगे कि हे राजन् जब महादेवजीने त्रिपुरका वध करदिया तब शस्त्रलिये बहुत से असुर महादेवजी ने शरसे दग्धकर दिये २ तब साठहजार असुर ज्ञातियों के वध से व्याकुलहुए महर्षिगणोंसे सेवित जबू मार्ग में सूर्यकी तरफ मुख करके सौ हजार वर्ष तप करते भये ३ और वायुकाही भक्षण करते हुये ब्रह्माजी की स्तुति करतेभये ४ तिन्होंका एक समूह तो गूलरके आश्रयहोके घोर तप करते भये और कितनेक असुर कैथके वृक्षके आश्रयहोके तप करतेभये ५ और कितनेक असुर शृगालनाटी के आश्रयहोके तप करतेभये और कितनेक वडके आश्रयहोके वेदको अध्ययनकरतेहुये तप करतेभये ६ पश्चात् हे राजन् इन्होका ऐसा घोरतप ब्रह्मादेखके प्रसन्न होतेभये पश्चात् वरदेने के वास्ते इन्होंको वरम्ब्रूहि ऐसे कहनेभये ७ तब महादेवजी के साथवैर करतेहुये दानव महादेवजीसे बन्धु मारने का बदला लेनेकी इच्छा करतेभये तब हे राजन् सर्वज्ञ ब्रह्मा तिन्होंसे वचन कहते भये कि हे दैत्यो विश्वको रचनेवाले और संहार करनेवाले ऐसे महात्मा महादेव जी से बदलालेने को कौन समर्थ है ८ यह तुम्हारा परिश्रम वृथाहै और हे असुरो नहीं हे आदि मध्य अन्त जिसके ऐसे महादेवजीकी स्तुतिनहींकरके स्वर्गके वमनेकी इच्छाकरतेभये ९ और कितनेक नहीं इच्छाकरतेभये और कितनेक दुरात्मा राक्षसोंसे ब्रह्माकहते भये कि हे असुरो रुद्रक्रोधके विना वरमांगो १० ऐसे सुन दैत्य कहनेलगे कि हे विभो सम्पूर्ण देवताओं से हम अवध्यहोजावें और हमारे पृथ्वीतलमें षट्पुरहो और तिन्होंमें हमारे सम्पूर्ण सम्पत्हो ११ हे ब्रह्मन् तिसपुरमें सुखपूर्वक हम वासकरें और हे तपके निधि जिस महादेवजीने हमारे ज्ञातीमारे हैं तिससे हमारेको उग्र भय नहींहोवे १२ क्योंकि त्रिपुरको हत देखके हम नित्य रुद्रसे डरते हैं ऐसे सुन ब्रह्माजी ने कहा कि हे असुरो तुम देवताओंसे महादेव जी से अवध्य होजावोगे १३ जो श्रेष्ठ मार्ग में स्थितहुये ब्राह्मण और सज्जन को पीडा नहींदोगे तो और हे असुरो जो किसीप्रकारसे भी मोहकरके ब्राह्मणों

का उपघातकरोगे तो नाशको प्राप्त होजाओगे १४ क्योंकि जिससे ब्राह्मण जगत् की परमगति हैं और ब्राह्मणों के साथ वैर करने से नारायण से भयहोगा क्योंकि जिससे नारायण सम्पूर्णों के हितकारी हैं १५ ऐसे ब्रह्माके आज्ञा किये दैत्य जातेभये और जो दैत्य महादेवजी के भक्तथे तिन्होंको त्रिपुरके नाश करने वाले महादेवजी दर्शन देतेभये १६ व श्वेत वृषभपर आरूढहोकर श्रेष्ठोंकी गति महादेवजी असुरों से यह वचन कहतेभये हे असुरों में श्रेष्ठो तुम वैर और दम्भ और हिंसा इन्होंको त्यागके जो मेरे आश्रयहुए १७ इस वास्ते श्रेष्ठवर तुमको दूंगा हे दैत्यो जिन मुनियों ने दीक्षादई है तिन्हों समेत स्वर्ग में जावो १८ मैं तुम्हारे कर्म्मोंसे प्रसन्नहुआ और जो यहा वसैंगे तिन्होंको भी जैसे मेरे लोकमें सुखहै वैसाही प्राप्तहोगा १९ व यहा कैथ के वृक्षके पास मासके अन्त और पक्ष के अन्तमें पूजाकरेगा सो हजार वर्ष में तप सिद्धको प्राप्तहोगा और जो पुरुष विधिपूर्व्वक तीन रात्रि पूजनकरेगा सो वाञ्छित गतिको प्राप्तहोगा २० और जो श्वेतवाहन नामका मेरा पूजन करैगा सो मेरी गतिको प्राप्तहोगा २१ और जो पुरुष औदुम्बर और वाट मूल और कापित्थक और शृगालवादी ये ब्राह्मण व धर्मात्मा व दृढव्रत व ब्रह्मवादीय मुनि जो इन ऋषियोंका पूजनकरैहैं सो वाञ्छित गतिको प्राप्तहोवैं २२ श्वेतवाहन महादेवजी ऐसेकहके और तिन्होंकरके सहित स्वर्गलोकमें जातेभये और जो पुरुष ऐसे कहताहै कि मैं जम्बूमार्ग को जाऊँगा और जम्बूमार्ग में वसूगा ऐसे सङ्कल्प करताहुआ पुरुष भी स्वर्गलोक में वसताहै २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांपद्पुरवर्णनेएकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१ ॥

एकसौबयालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् इसीकालमें चतुर्वेद और षडङ्गका जाननेवाला और याज्ञवल्क्यका शिष्य और धर्मगुणोंसे युक्त और वाजसनेयियों में मुख्य १ ऐसा ब्रह्मदत्तनाम ब्राह्मणहोता भया तिसने बुद्धिमान् वासुदेव की यज्ञकरी २ सो आवर्ताके शुभतीरमें और पट्पुरालयमें सांवत्सर दीक्षामें दीक्षितहुआ ३ और सो ब्रह्मदत्त द्विजोत्तम वसुदेवका सहाध्यायी होताभया ४ और

देवकी करके सहित तहां वसुदेवगया पद्पुरमें स्थितहुये यजमान को ऐसे प्राप्त होताभया जैसे वृहस्पति को इन्द्र ५ और बहुत अन्नवाली और बहुत दक्षिणा वाली ऐसी ब्रह्मदत्तकी यज्ञको ये महात्मा मुनियों में श्रेष्ठ उपासना करतेभये ६ वेदव्यास और वैशम्पायनजी कहे हैं कि मैं और याज्ञवल्क्य और सुमन्तु और जैमिनि और धृतिमान् जाजलि और देवल ये ऋषि तहां आतेभये ७ व तहां वसुदेव और देवकी की वाञ्छित कामनाओं को देतेभये ८ व वासुदेव के प्रभाव से जब यह यज्ञहोनेलगी तब गर्वसे दर्पितहुये ९ निकुंभ से आदि लेकर दैत्य आनके कहनेलगे कि हमारा भागकरो और हम अमृत पीवेंगे और ब्रह्मदत्त यजमान हमारे को कन्यादेवो १० क्योंकि हमने सुनी है कि इस के रूपवाली बहुत कन्याहैं तिनको लाके हमारे को दो ११ व जो इसको उत्तम रत्नहैं सो दो और नहीं तो मत यज्ञकरो हम हुकुम फरमाते हैं १२ ऐसे ब्रह्मदत्त सुनके तिन से वचन कहताभया कि हे असुर सत्तमो पुराणमें तुम्हारा यज्ञभाग और सोमपान नहीं विधानकराहै १३ सो मैं कैसेदूं इन वेदभाष्यके जाननेवाले मुनियोंसे पूछलो १४ व हे असुरो जो मुझे कन्यादेनीथी सो पहलेही सकल्पकरदिया १५ और रत्न तो मैं देदूंगा परन्तु सान्त्वनासे दूंगा और देवकीपुत्र कृष्णके आश्रय होके बलसे मैं नहीं दूंगा १६ ऐसे सुनके निकुम्भसे आदि लेकर पद्पुर में रहनेवाले पापी असुर कुपितहोगये पश्चात् ब्रह्मदत्तकी यज्ञवाटको लोपतेभये व कन्याओं को हरतेभये १७ पश्चात् वसुदेवजी तिस खोटे वृत्तातको देखकर महात्मा कृष्णचन्द्र और बलदेवजी और गद इन्होंका ध्यान करताभया १८ इस वृत्तान्तको कृष्णचन्द्र जानके प्रद्युम्नसे यह वचन कहतेभये हेपुत्र तू जल्दी ब्रह्मदत्तकी यज्ञमें जा और अपनी मायाकरके कन्याओं की रक्षाकर १९ इतने यादवों की सेना सहित मैं पद्पुर में प्राप्त हूं ऐसे सुन पिताकी आज्ञा करनेवाला प्रद्युम्न एक क्षणमात्रमें तहां पहुंचा २० और पहुंच के महाबल यह बुद्धिमान् रुक्मिणी का पुत्र मायामयी कन्या तो तहां स्थापन करताभया और तिन कन्याओं को मायासे हरताभया २१। २२ व यह धर्मात्मा देवकी से कहताभया कि भयमतकरो पश्चात् हे राजन् ये दुरासद दैत्य मायामयी कन्याओंको हरके प्रसन्न हुये पद्पुरको प्रवेश होतेभये २३ पश्चात् हे राजन् विशिष्ट कर्मसे यह यज्ञबहुत गुणवाला होताभया २४ पश्चात् निमन्त्रितकिये बुद्धिमान् ब्रह्मदत्तकी यज्ञमें ये

सम्पूर्ण राजाआते २५ जरासन्ध दन्तवक्र शिशुपाल पाण्डव और धार्तराष्ट्र व मालवा व तङ्गण २६ व रुक्मी व आन्हृति व नील व नेमंद व विन्दानुविन्द अवन्ती के राजा और शल्य व शकुनि ये सम्पूर्ण राजा आतेभये २७ व दृढ आयुध महात्मा और शूरवीर ऐसे औरभी राजा आतेभये और आनके षट्पुरके समीप वासकरतेभये २८ पश्चात् श्रीमान् नारदमुनि तिन्होंको देखके यह चिंतवन करताभया कि क्षत्रियों का श्रौर यादवों का यहां समागम होगा २९ सो यह युद्धका हेतुहै सो यहा जतनकरूगा नारदमुनि ऐसे चिंतवन करके निकुम्भ राक्षस के स्थानमें मुनिगया ३० तहां निकुम्भने व अन्य दानवों ने पूजनकिया पश्चात् तहां बैठे नारदमुनि निकुम्भ के प्रति यह वचन कहतेभये ३१ कि हे निकुम्भ तू यादवोंकेसाथ विरोध करके कैसे स्वस्थ रहेगा हे निकुम्भ जो ब्रह्मदत्तहै तिसको तू कृष्णजान क्योंकि विभु कृष्णचन्द्र इसका सखा है ३२ हे निकुम्भ बुद्धिमान् ब्रह्मदत्तके पाचसौ स्त्री हैं सो ब्रह्मदत्तने वसुदेव के पुत्रके प्यारकी इच्छा करके आनी हैं ३३ तिन्हों में दो सौ ब्राह्मणों की हैं श्रौर सौ क्षत्रियोंकी औरसौ वैश्यों की और सौ शूद्रोंकी ३४ व हे राजन् पुण्यकर्मा दुर्वासामुनिने तिन्होंको यह वरदान दियाहै कि तुम्हारे एक एक तो पुत्रहोगा और एक एक कन्या ३५ दुर्वासाके वरदानसे रूपसे ये वहुत अधिकहैं हे असुर तिसके वहुतसी कन्याहैं और वे कन्या सुन्दर अङ्गवाली हैं ३६ व भर्त्ताओंके सगममें सम्पूर्ण पुष्पोंकी सुगंध को भिरे हैं और सपूर्ण कालमें ये यौवनमें स्थितरहती हैं ३७ व पतिव्रताहैं अप्सराओंके तुल्यहैं और क्रमसे अपने अपने धर्ममें स्थितहैं वहुतकरके ये कन्या गेंम मुख्योंने दईहैं ३८ व जो उनमें अवशेषथीं तिन्होंको तू लायाहै सो तिनकन्याओंके वास्ते सम्पूर्ण प्रकारसे यादव युद्धकरेंगे ३९ सो सहायताके वास्ते राजाओंको वरले श्रौर ब्रह्मदत्तकी पुत्रियोंकेवास्ते और सहायताके वास्ते अनेकप्रकार के रत्न राजाओं को दे ४० और जो और राजाआवें तिन्होंका आतिथ्यकर जब नारदमुनि ने यह कहा तव अत्यन्त प्रसन्नहुये असुर वैसेही करतेभये ४१ और पश्चात् पाचसौ कन्या और अनेक प्रकारके रत्न इन्होंको लेकर पाण्डवोंके विना क्योंकि ये नारदमुनि ने पहले वर्ज दिये अन्य राजाओंका पूजन करतेभये ४२ जब राजा प्रसन्नहुये तव कहनेलगे कि हे निकुंभ किसवास्ते हमारा पूजनकिया क्योंकि जिससे पहले कभी नहीं पूजन किया ४३ तव यह देवताओंका शत्रु

कुम्भ प्रसन्नहोकर कहनेलगा कि हे शूरवीरो तुम्हारे ताईं धन्यहै ४४ हे राजाओ श्रेष्ठो हमारा शत्रुओं के साथ युद्धहोगा सो तुमको वहां सहायता देनी योग्यहै ४५ वैशम्पायनजी कहतेहैं कि हे जनमेजय क्षीणहोगये हैं पाप जिन्होंके ऐसे पाण्डवों के विना अन्य क्षत्रिय तिन्होंको कहतेभये ४६ कि हे निकुम्भ ऐसाही होजायगा और हे कुरुनन्दन पश्चात् वे क्षत्रिय युद्धके वास्ते सावधान होतेभये ४७ पश्चात् आहुक राजाको द्वारकामें स्थापन करके और महादेवजी के वचन को यादकरतेहुये कृष्णचन्द्रभी सेनासहित षट्पुर में प्राप्तहोतेभये ४८ पश्चात् वसुदेव के प्रेरे हुये भगवान् यज्ञवाटके समीप सुन्दर देशमें पुरवासियों के हितके वास्ते सेनासहित वासकरतेभये ४९ और तिस सेनाकी रक्षाकेवास्ते श्रीमान् प्रद्युम्नको योजन करतेभये ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वणिभाषायांषट्पुरवधेद्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४२ ॥

एकसौतेंतालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय जब एक मुहूर्त्त सूर्य उदय होगया और जनों के नेत्र जब निर्मल होगये तब बलदेव और कृष्णचन्द्र और सात्यकि ये तीनों प्रसन्नहुये गरुडपर सवारहोतेभये १ पश्चात् युद्धकी वाञ्छाकरके शस्त्र अस्त्रोंसे सावधानहुये बिल्वोदकेश्वर महादेवजी को नमस्कार करके और महादेवजीके वाक्यसे पवित्रहुई २ आवर्तगंगा में स्नानकरके युद्धकी वांछाकरतेभये पश्चात् प्रद्युम्नको आकाशमें रक्षाकेवास्ते स्थित करतेभये ३ और यज्ञवाट की रक्षाकेवास्ते पाण्डवोंको योजनकरके पश्चात् और बाकीकी सेनाको गुफाके दरवाजेपर योजन करके पश्चात् कृष्णचन्द्र जयतको और प्रवरको स्मरण करतेभये ४ पश्चात् ये दोनों आके सम्मुख खड़ेहुये जब कृष्णचन्द्र इनको भी प्रद्युम्न कीतरह योजन करतेभये ५।६ तिसके पश्चात् कृष्णचन्द्र की आज्ञामें रणदुन्दुभि को बजातेभये और मुरज और अनेकप्रकारके बाजे बजातेभये ७ पश्चात् शाम्ब और गदने सेनाका युद्धके वास्ते गरुडव्यूह रचा और शारण उद्धव भोज और वैतरण ८ और अनाधृष्टि और विपृथु और पृथु और कृतवर्मा और सुदंष्ट्र और विपृथु और मर्दन ९ और धर्मात्मा सनत्कुमार और चारु देष्ण इन यादवोंकी

सेना व्यूह के मध्यमें स्थितहोती भई और अनिरुद्ध और जयन्त और प्रवर ये सेनाकी पछाडी की रक्षाकरतेभये १० और रथ, अश्व, नर, हस्ती ये एक भाग में स्थितहोते भये पश्चात् कितनेक युद्धमें दुर्मद दानव तो मेघकेसे शब्दवाले ११ गर्दभ और हस्ती और मकर और शिशुमार और घोडे और महिष और गैंडा और ऊट और कछुआ इनपर सवार होकर आतेभये १२। १३ और कितनेक अनेक प्रकारके शस्त्र लेकर रथों में बैठकर आतेभये और कितनेक मुकुट और पीठ और मुकुट और बाजूबन्द इन्हों से भूपित ऐसे दानव षट्पुरसे निकसे १४ और तुरी और नेमिस्वन और शख इन्होंके शब्दों करके सहित १५ और असुरों की बहुतसी सेना करके सहित निकुम्भ सब से आगे निकसता भया जैसे देवताओं के मध्य में इन्द्र १६ पश्चात् ये ऐसे बलोत्कट दानव पृथ्वी और स्वर्गको कपातेभये और अनेक प्रकारका शब्द करते भये और बारम्बार सिंहनाद करतेभये १७ हे राजन् पश्चात् शिशुपाल से आदि लेकर राजाओंकी सेना भी असुरों की सहायता के वास्ते सावधान हुये इकट्ठे होतेभये १८ पश्चात् दुर्य्योधन के सौभ्राता ये सम्पूर्ण अनेक प्रकार के रथों में स्थित होकर युद्ध के वास्ते आतेभये १९ व कठिन और नादी और द्रुपद स्यंदन ये सम्पूर्ण युद्धके वास्ते स्थित होतेभये और रुक्मी और आव्हृति ये भी रणभूमिमें स्थित होतेभये और तालके वृक्षकीनरह धनुषको कम्पातेहुये २० शल्य और शकुनि और भगदत्त और जरासन्ध और त्रिगर्त और विराट् और सहोत्तर ये सपूर्ण युद्धकेवास्ते स्थित होतेभये २१ व निकुभसे आदि लेकर सम्पूर्ण जीतनेकी इच्छाकरतेभये २२ और ये महाअसुर यादवोंकेसाथ देवताओं की तरह युद्ध करने की इच्छा करते भये २३ पश्चात् निकुंभ सर्पोंकेसे बाणों से तिस युद्धमें भीम है दर्शन जिसका ऐसी भैमोंकी सेनाको ताडना करताभया २४ पश्चात् सेनापति अनाधृष्टि यादव तिसको नहींसहताभया तिसके पश्चात् यह अनाधृष्टि चित्रपुंखवाले और शिला से पैनाये ऐसे महाघोर बाणोंसे निकुम्भके रथ और घोडोंको आच्छादन करता भया २५ व ध्वज निकुभ सम्पूर्ण वस्तु आच्छादन करतीभई २६ पश्चात् मायीयों में श्रेष्ठ यह निकुम्भ तिस मायाको दूरकर पश्चात् भैमों में श्रेष्ठ अनाधृष्टि को थांभताभया २७ व पश्चात् तिसको षट्पुर संज्ञित गुफामें रोकताभया पश्चात् तिस शूरवीर को निकुम्भ रोककर २८ पश्चात् कृतवर्म्मा, चारुदेष्ण, भोज,

वैतरण व सनत्कुमार व निशठ व उल्मुक इन सम्पूर्णों को और अन्योंको गुफा में रोकताभया २९। ३० व हे जनमेजय मायाके आश्रयहुआ आप नहीं दीखताभया पश्चात् ऐसी गुफामें यादवोंको प्राप्त करतेहुये निकुंभ को देखके और भैमों को घोररुदन जानके ३१ पश्चात् कृष्णचन्द्र वलदेवजी और सात्यकि व काम व शाव अनिरुद्ध ये और अन्य वहुतसे भैम ये सम्पूर्ण कुपित होतेभये ३२ पश्चात् कृष्णचन्द्र अपने शार्ङ्गधनुप को चढाकर प्रवृत्तहुये दानवों में ऐसे व्याप्त होतेभये जैसे तृणमें अग्नि ३३ पश्चात् तिस ईश्वरको देखके ये सम्पूर्ण दानव ऐसे सम्मुख दौडतेभये जैसे कालपाश में वँधे दीप्त अग्निके सम्मुख पतङ्ग ३४ पश्चात् ये दानव ऊंचेपर चढके हजारहों शतघ्नी और लोहके मूसल व अग्नि केसे तेजवाले शूल ३५ और प्रदीप्त फरसा और पर्व्वतों के शृङ्ग और वृक्ष और भारीशिला इन्होंको सम्मुख फेंकके पश्चात् मदोन्मत्त हस्ती और घोडे और रथ इन्होंको फेंकतेभये ३६ पश्चात् इन सम्पूर्णों को हँसतेहुयेकी तरह नारायणरूप अग्नि वाणोंसे भस्म करताभया ३७ पश्चात् जगत्के हित करनेवाले कृष्णचन्द्र को वाणों से आच्छादन करतेभये ३८ और नारायणके वाणों को असुर ऐसे नहीं सहतेभये जैसे वर्षाको वालूकापुल ३९ और हे भारत कृष्णचन्द्रके सम्मुख असुर ऐसे नहीं ठहरतेभये जैसे मुखफाडेहुये सिंहके आगे वृषभ ४० पश्चात् वध्यमान ये असुर नारायणके भयसे पीडितहुये जीवनेकी आशाकरके आकाशमें जातेभये ४१ तिन्होंको देखके इन्द्रका पुत्र जयन्त और प्रवर ये दोनों अग्निके समान घोर वाणों से हनन करतेभये ४२ पश्चात् कटेहुये असुरोंके शिर पृथ्वीपर ऐसे पडतेभये जैसे शिखरसे छूटे तृणराजके फल ४३ व कटीहुई दैत्यों की भुजा पृथ्वी पर ऐसे पड़तीभई जैसे पाच मुखोंवाले सर्प ४४ पश्चात् प्रद्युम्न मायामयी गुफाको रचके तिसमें क्षत्रियोंको गेरनेके वास्ते गद और शारण व शठ व शाम्ब इन्हों करके सहित निकसता भया ४५। ४६ पश्चात् रण में यत्न करतेहुये कर्णको गयके प्रद्युम्न तिसको पकडतेभये पश्चात् यहप्रद्युम्न शब्द करके पश्चात् दुर्योधन और विराट और द्रुपद ४७। ४८ व शकुनि व शल्य व नील व भीष्मजी व विन्द व अनविन्द और जरासन्ध ४९ व त्रिगर्त मालव और वामात्य ये सम्पूर्ण राजा और महावलवान् धृष्टद्युम्नसे आदि लेकर और पाञ्चाल के राजा ५० और आन्हृति और गामाक्ष्मी व शिशुपाल और भगदत्त इन

सम्पूर्ण राजाओंको घोर गुफामें रोकके यहवचन कहनेलगा ५१ कि हेराजाओ इसवास्ते तुमको गुफामें गेरूहूं ५२ कि विल्वोदकेश्वर महादेवजी ने यह आज्ञा मेरे को दईहै कि राजाओंको गुफामें गेरदो ५३ पश्चात् प्रद्युम्न कहनेलगा कि निकुम्भके रोकेहुये यादवोंको मैं छुटाऊगा पश्चात् राजसेनापति शिशुपाल घोर शरों से भैमोंको व प्रद्युम्न को आच्छादन करताभया ५४ । ५५ पश्चात् प्रद्युम्न विल्वोदकेश्वरको नमस्कार करके और महाबल शिशुपालको बाधनेका मनोरथ करताभया ५६ पश्चात् हजारहों पाश पकडने के वास्ते महादेवजी देतेभये ५७ और महादेवजीने कहा कि हे प्रद्युम्न इन रत्नके लोभी राजाओंको बांधलो ५८ और कृष्णचन्द्र भगदत्त इनको भी ऐसेही कहदो पश्चात् प्रद्युम्न जोहै शिशुपाल और रुक्मी और आव्हृति इन्हों को व अन्य राजाओंको महादेवजी की दई उत्तम पाशसे बाधताभया ५९ व बाधके मायामयी गुफामें ऐसे प्राप्त करताभया जैसे बिनाश्वास के सर्प्पोंको प्राप्तकरते हैं ६० व अपने पुत्र अनिरुद्ध को तिन्हों की रक्षामें छोडताभया पश्चात् तिन सपूर्णों को बाधके पश्चात् सेनापति और खजानाके पति और हस्ती अश्वरथ इन्होंके समूह इन सम्पूर्णोंको अपने आधीन करताभया ६१ पश्चात् सावधानहुआ असुरोंको मारनेके वास्ते उद्योग करनेलगा और कवचबाधे ब्रह्मदत्त द्विज से कहनेलगा कि हे ब्रह्मदत्त भय मत करै ६२ व अच्छीतरह यज्ञको समाप्तकर और देख यहअर्जुन तेरारक्षकहै क्योंकि ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्रह्मदत्त जिन के पाण्डव सहायहै तिन्होंको देवता और असुर और मनुष्यआदि किसीसे भयनहीं होता ६३ और हे द्विज तेरीपुत्री राक्षसोंने तेजसे भी नहीं छुईहै देख यज्ञवाट में मैंने मायासे स्थापन कररक्खी हैं ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांषट्पुरवधेत्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४३॥

एकसौचवालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय जब नौकरों सहित राजा बांध लिये तब असुरोंको बहुतकष्ट प्राप्तहोताभया १ व बलदेव व कृष्णसे आदिलेकर यादवोंके बाणों से वींधेहुये दिशाओंमें दौडतेभये २ पश्चात् दानवों में श्रेष्ठ निकुम्भ क्रोधितहोकर तिन्होंसे वचन कहनेलगा कि हे असुरो प्रतिज्ञाको भेदनकर के भयसे विह्वल हुये कहा जातेहो ३ अरे यह भी जानो हीन प्रतिज्ञावाले और

युद्धमें भागेहुये नीचेलोकों को जाया करते हैं अरे निश्चय करके ज्ञातियों को वदलादो ४ व युद्धमें कठोर शत्रुओंको जीतके फलभोगो व युद्धमें सम्मुख मृत्यु होवैहै सो भी स्वर्ग में वसे है ५ व भागके घरगये हुये क्या मुखदेखोगे व स्त्रियों से जाके क्याकहोगे अरे तुम्हारे जीवनोंको धिक्कारहै २। ६ हे दैत्यो तुमको लज्जा क्यों नहीं आती है ऐसे कहेहुये असुर लज्जितहोकर आतेभये व आनके द्विगुण वेगसे लड़तेभये ७ व जो यज्ञवाट में जाताभया तिसको अर्ज्जुन मारता भया व नकुल सहदेव भीमसेन युधिष्ठिर ये भी यज्ञप्राप्त हुयोंको मारतेभये ८ व आकाशमें गयेहुये असुरोंको द्विजों में उत्तम प्रवर और जयन्त दोनों मारतेभये९ पश्चात् असुरों के रुधिरसे वालहैं शिवाल जिसमें व चक्रहै कछुवा जिसमें और रथहै भँवर जिसमें व हस्ती हैं पर्व्वत जिसमें १० व ध्वजामाला वृक्षरूपों से आच्छादित व शूरवीरोंके शब्दसे शब्दवाली और गोविन्दरूप शैलसे उत्पन्नहोने वाली व भयानकोंके चित्तको मथनेवाली व रुधिरके वुद्बुदोंसे व्याप्त व तरवार रूप तरङ्गोंसे व्याप्त ऐसीनदी रणसे भिरतीभई मानों वर्षाऋतुमें जलकीनदी ११ १२ पश्चात् निकुम्भ जो है शत्रुओंको वढेहुए देखकर व सहायों को हत देखकर वीर्यसेती ऊपरको उछलताभया १३ तव यह निकुम्भको जयतने व प्रवरने निवारण करदिया पश्चात् वज्रकेसे शरोंसे व लोहेके मूसलसे क्रोधसेहोठोंको फरकाके रणकरकश १४ यह निकुम्भ प्रवरको ताडित करताभया जव यह प्रवर पृथ्वीपर गिरगया १५ तव जयन्त इसपडेहुयेसे भुजाओं करके मिलताभया पश्चात् इसको प्राणों सहित जानके व सम्मुखआये असुरको मारके १६ व निकुभ की तरफ दौड़ा और इस निकुम्भको खड्गसे मारताहुआ और यह निकुम्भ मूसलसे जयन्तको ताडना करताभया १७ पश्चात् निकुम्भ व जयतके युद्धमें यह वध्यमान महासुर चिंतवन करताभया १८ कि ज्ञातिको गारनेवाला कृष्णचन्द्रकेसाथ युद्ध करुगा व तिस कृष्णको हराऊगा इस इन्द्रके पुत्रके युद्धसे क्याहै १९ ऐसे निश्चय करके यह अन्तर्द्धान होगया व जहा कृष्णचन्द्रथे उस जगह युद्धके वास्ते जाताभया २० पश्चात् ऐरावतके स्कधपर स्थितहुआ इन्द्र देवताओंकरके सहित युद्ध देखनेके वास्ते आताभया २१ पश्चात् पुत्र जयत से साधु साधु ऐसे सराह के मिलताभया और यह धर्मात्मा इन्द्र मोहवर्जित प्रवरसे भी मिलताभया २२ पश्चात् रण में दुर्जय जयन्त को जीताहुआ देखकर इन्द्र की आज्ञा से स्वर्ग

में नगारे बजातेभये २३ व पश्चात् निकुम्भ जो है भगवान्को रणमें दुर्जय देख ताभया व अर्जुनको यज्ञवाटके नजदीक देखकर पश्चात् यह निकुम्भ बहुतसा शब्द करके पक्षिराज को ताडना करताभया व घोर परिघसे बलदेवजी व सा त्यकी २४ । २५ व नारायण व अर्जुन व भीम व युधिष्ठिर व नकुल व सहदेव व शाव व प्रद्युम्न इन सम्पूर्णों के साथ २६ यह शीघ्रकारी दैत्य युद्ध करनेलगा व इनसम्पूर्ण शस्त्रोंके जाननेवालोंको यह नहीं दीखताभया २७ जब यह नहीं दीखा तब हृषीकेश भगवान् प्रथम गणोंके ईश्वर बिल्वोदकेश्वर को नमस्कार करके ध्यान करतेभये २८ पश्चात् महादेवजी के तेजके प्रभावसे ये सम्पूर्ण इस मायावी निकुम्भको देखतेभये २९ पश्चात् अर्ज्जुन जो हैं कैलासकी शिखरके आकारवाला व आकाशको ग्रसताहुआ और जातिको नाशकरनेवाला व वैरी कृष्णको रणमें देखताहुआ ३० ऐसे निकुम्भको अर्जुन देखकर व गाण्डीव धनुष को चढा बाणों करके तिसके परिघको व गात्रोंको बारम्बार बींधताभया ३१ व ये शिलापर पैनायेबाण तिसके अगों में और परिघ में लगकर गुठेहुए सम्पूर्ण पृथ्वीपर पड़तेभये ३२ पश्चात् हे राजन् अस्त्रयुक्त इन बाणोंको अर्ज्जुन विफल देखकर भगवान् से पूछताभया कि हे भगवन् यह क्या कारणहै ३३ वज्रकेसे मेरे बाण पर्वतोंको भी भेदन करदें और इसके नहीं लगते हे भगवन् यह मेरे को बडा आश्चर्य्य है ३४ पश्चात् हे भारत हँसतेहुए भगवान् तिस अर्ज्जुन से यह वचन कहतेभये कि हे कौंतेय यह निकुम्भ महद्भुतहै इसको विस्तार से सु न ३५ हे अर्जुन पहले यह देवशत्रु और दुरासद व महाबल ऐसा निकुम्भ उत्तर कुरुवों को जाके सौहजार वर्ष घोरतप करताभया ३६ पश्चात् महादेवजी प्रसन्न होकर वरका लोभ देतेभये तब यह तीन रूपोंको सुर असुरों से अवध्य मांगता भया तब वृषभध्वज भगवान् महादेवजी तिससे कहतेभये कि हे निकुम्भ जब तू मेरा और ब्राह्मणों का व विष्णुका अप्रिय करेगा ३७ । ३८ तब हे महासुर तेरे को हरि मारेंगे व नहीं हे निकुम्भ मैं और विष्णु ब्राह्मणों पर दया करनेवाले हैं व ब्राह्मण हमारी परमगति हैं ३९ कृष्णचन्द्र कहे हैं कि हे पाण्डुनन्दन यह वरदिया हुआ दानव सम्पूर्ण शस्त्रों से अवध्यहै व यह त्रिदेह है व अति मायावी है ४० और हे अर्जुन भानुमतिके अपहरणमें इसका एक देह मेरेको हता व इस दुरा त्माका यह षट्पुर देह अवध्यहै ४१ और तपकरके युक्त एक तो इसकादेह दिति

की शुश्रूषाकरै है और दूसरा जो इसका देहहै तिसकरके पट्पुरमें वसै है ४२ हे अर्जुन यह निकुभके सम्पूर्ण चरित्र मैंने तेरे आगे कहे हैं और हे शूरवीर इसके वधमें कथा पश्चात् होगी ४३ पश्चात् अर्जुन व कृष्णचन्द्रके ऐसे कहतेहुये यह रणदुर्जय असुर पट्पुर सज्ञक गुफाको प्रवेश होताभया ४४ और मधुसूदन भगवान् भी तिस घोरदशाको प्रवृष्टहोकर तहा तिन राजाओं को देखतेभये ४५ और हे जनमेजय घोरनिकुभ के साथ युद्ध करतेभये और वलदेवजी से आदि लेकर सम्पूर्ण यादव और महात्मा पाण्डव ये भी प्राप्तहुये पश्चात् प्रवेश होकर कृष्णचन्द के मतसे सम्पूर्ण युद्धकरतेभये ४६ और कृष्णचन्द्र का प्रेराहुआ प्रद्युम्न भी तिसके साथ युद्ध करताभया ४७ पश्चात् जिन वाधव यादवों को यह पहले लाताभया ४८ तिन सम्पूर्णों को प्रद्युम्न छुटाताभया पश्चात् निकुभ के वधकी इच्छा करतेहुये ४९।५० सम्पूर्ण राजा प्रसन्नहोकर प्रद्युम्न से यह कहतेभये ५१ कि हे शूरवीर हमें छुटा पश्चात् प्रतापवान् प्रद्युम्न इन सपूर्णों को छोड़ताभया ५२ और ये सम्पूर्ण राजे नीचेको मुख किये और मौन धारण किये लज्जा से व्याप्त होकर स्थित होतेभये ५३ और गोविन्द भगवान् जयके प्रति यत्न करता हुआ और अपना शत्रु ऐसे घोर निकुम्भ को भगवान् युद्ध करातेभये ५४ पश्चात् हे राजन् लोहके मूसलसे निकुम्भ कृष्णचन्द्र को मारता भया और गदाकरके कृष्णचन्द्र निकुम्भको मारताभया ५५ पश्चात् वहुतप्रहारों से हतेहुये ये दोनों मोहको प्राप्तहोगये तिसके अनन्तर मुनियों के समूह पाण्डव और यादवों को पीडित देखकर ५६ व कृष्णके हितके वास्ते जप करते भये और वेदोक्त स्तोत्रोंसे भगवान्की स्तुति करतेभये ५७ पश्चात् केशव भगवान्के प्राण वाहडे और दानव के भी प्राण वाहडे तब फिर ये दोनों युद्ध करनेलगे ५८ और वृषभ और गजकी नाईं शब्द करतेभये और श्वानों की तरह क्रोधभरे प्रहार करनेलगे ५९ पश्चात् हे जनमेजय कृष्णचन्द से आकाशवाणी कहतीभई कि हे कृष्ण देवता और ब्राह्मणों के कण्टकरूप इसको चक्रसे मारो ६० और बिल्वोदकेश्वर महादेवजी भी यह कहतेभये कि हे महाबल कृष्णचन्द्र व हुत से धर्म्म और यशको तू प्राप्तहो ६१ पश्चात् कृष्णचन्द्र इसको अङ्गीकार करके और लोकनाथ महादेवजीको नमस्कारकरके पश्चात् दैत्य कुलका नाश करनेवाले सुदर्शनचक्र को छोड़तेभये ६२ और निमकरके श्रेष्ठ कुण्डलोंसहित

निकुम्भके शिरको छेदन करतेभये और नारायणकी भुजासे काटाहुआ सूर्यके मण्डलकीसी कान्तिवाला ६३ शिर ऐसे पृथ्वीपर पडा जैसे पर्वतके शृगसे पृथ्वी पर मत्तमयूर ६४ हे नरो में शार्दूल जनमेजय जगत् को त्रासकरने वाला यह निकुम्भ जब मारदिया तब विल्वोदकेश्वर महादेवजी प्रसन्न होतेभये ६५ और आकाशसे इन्द्रकी छोडीहुई पुष्पोंकी वर्षा होतीभई और हे राजन् आकाश में नगारे बजे ६६ और सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न हुआ और मुनि विशेषकरके आनन्दितहुए और भगवान् कृष्णचन्द्र यादवों को सैकडों दैत्यों की कन्या देतेभये ६७ व क्षत्रियों की बारबार भगवान् सातना कराके पश्चात् अनेक प्रकारके रत्न व श्रेष्ठ वस्त्र देतेभये ६८ भगवान् कृष्णचन्द्र बडे उत्तम घोड़े जोडके छ हजाररथ तो पाण्डवोंको देतेभये ६९ व पुरको बढानेवाले भगवान् सो श्रेष्ठ षट्पुर ब्रह्मदत्त ब्राह्मणको देतेभये ७० पश्चात् जब यज्ञ समाप्त होगया तब महाबल भगवान् शङ्ख चक्र गदाको धारण किये क्षत्रियों का व पाण्डवों का विसर्जन करके ७१ पश्चात् विल्वोदकेश्वर महादेवजी के समाज करतेभये व मास दाल इन्हों करके सहित बहुतसे अन्नबनाये व व्यञ्जन बहुतसे बनाये ७२ पश्चात् मल्लहैं प्यारे जिन्हों के ऐसे भगवान् उत्तम मल्लोंकी कुस्ती कराके पश्चात् तिन्होंको बहुतसा द्रव्य व वस्त्र देतेभये ७३ पश्चात् माता पिताओं करके सहित व सम्पूर्ण यादवों करके सहित महाबल भगवान् ब्रह्मदत्त को नमस्कार करके द्वारका में जातेभये ७४ पश्चात् हृष्ट पुष्ट जनोंसे व्याप्त व पुष्पों से विचित्र मार्गवाली ऐसी पुरीको प्राप्त होतेभये ७५ यह षट्पुर का वध व भगवान् की जय जो है इसको सुनते हैं अथवा पढते हैं सो युद्ध में जयको प्राप्त होतेहै ७६ व व्याधि से व रोगसे व बन्धनसे छूटजाते हैं ७७ व यह पुंसवन व गर्भाधानका करनेवालाहै व श्राद्धमें पढाहुआ तिसको अक्षयगुणा करदेताहै ७८ हे भारत यह महात्मा अमरवरका जय जो निरन्तर पढतेहैं सो सुन्दरगति को प्राप्त होते हैं ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वेभाषायांषट्पुरवधेचतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४

एकसौपैंतालीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजय ने प्रश्नकिया कि हे मुनिवरों में श्रेष्ठ वैशम्पायनजी मैंने रमणीक यह षट्पुरका वध तो सुना अब पहले कहा अन्धकका वध कहो १

और हे मुने भानुमती का हरना और निकुम्भका वध विशेषकरके वर्णनकरो हे भगवन् इसके सुनने में मेरेको प्रीति उपजती है २ ऐसे सुन वैशम्पायनजी कहने लगे कि हे राजन् जो जो दैत्य विष्णु भगवान्ने मारे हैं तिनके मारनेमें दितिने तपसे कश्यपका आराधन कियाहै ३ हे राजन् एकसमयमें तपसे और कालयुक्त शुश्रूषासे और अनुकूलता से मधुरवचन से दितिने जब कश्यप का आराधन किया ४ तब कश्यपजी प्रसन्नहोकर दितिसे कहनेलगे कि हेभद्रे हे सुव्रते मैं तेरे ऊपर प्रसन्नहुआ तू वर माग ५ ऐसे सुन दिति कहनेलगी कि हे भगवन् हे धर्मको धारण करनेवाले देवताओं ने मेरेपुत्र मार दिये इसवास्ते देवताओं से अवध्य और अमित पराक्रमवाला ऐसे पुत्रकी इच्छाकरती हूं ६ ऐसे सुन कश्यपजीने कहा कि हे दक्षकी पुत्री हे देवि तेरे देवताओंसे अवध्य पुत्र होगा हे कमललोचने इसमें कुछ सन्देहनहीं ७ परन्तु देवदेव रुद्रके विना क्योंकि तिमसे मैं समर्थ नहीं हे प्रिये तिस पुत्रकरके तुझको अपना आत्मा सर्वथा रक्षाकरना योग्यहै ८ पश्चात् सत्यवाक् कश्यपजी तिसको शुभ देशमें प्राप्तहोतेभये तिसके अनन्तर हजार भुजाओंवाला और हजार शिरोंवाला और दोहजार नेत्रोंवाला और दो हजार चरणोंवाला ऐसे पुत्रको दिति जनतीभई ९। १० और हे भारत यह नहीं अन्धा भी अन्धे की तरह चलताभया इसवास्ते मनुष्य तिसको अन्धक नामसे विख्यात करतेभये ११ और हे भारत यह अन्धक मैं अवध्यहूं ऐसे जानके सपूर्ण लोकोंको बाधाकरनेलगा और अपने बलसे रत्नोंको हरनेलगा १२ और अप्सराओं के गणको पकड़ पकड़ गर्भ ठहराताभया और अपने स्थानमें यह ऊर्जित हुआ सम्पूर्ण लोकोंको भयदेताभया १३ और यह पाप निश्चय अन्धक मोहसे दूसरों की स्त्रियोंको हरनेलगा और रत्नोंको हरनेलगा १४ पश्चात् हे भारत बडे महाबल जो सम्पूर्ण असुर हैं तिन्होंकी सहायता करके त्रिलोकी के जीतने को उद्यम करनेलगा १५ तिसको भगवान् इन्द्र सुनके पिता कश्यपसे वचन कहता भया कि हे मुनिसत्तम अन्धकने यह ऐसे जयका आरम्भ कियाहै १६ हे मुने हमारेको आज्ञा फरमावो छोटा जो यह अन्धकहै इसके अपराधको मैं कैसे सहूं १७ और हे विभो इस इष्टपुत्रके विषय में कैसे नहीं प्रहारकरूंगा चाहे मारे पश्चात् मेरेऊपर आप क्रोधितभी हों १८ ऐसे देवेंद्रके वचन सुनके कश्यपमुनि वचनकहनेलगे हे देवेंद्र तिसको मैं निवारण करदूंगा तेरा सर्वथा कल्याणहो १९ पश्चात्

दितिकरके सहित कश्यपजी अन्धक को त्रैलोक्य के विजयसे कष्टसे निवारण करतेभये २० परन्तु निवारणकिया भी यह दुष्टात्मा स्वर्गवासियों को बाधाकरता भया २१ और तिन तिन उपायों से यह दुष्टात्मा पीडाकरके पश्चात् खोटी बुद्धि वाला अन्धक नन्दनवनके वृक्षोंको उखाडताभया और उच्चै श्रवाकी औलादके अश्वोंको स्वर्गसे लाताभया २२ और उत्तम हस्तियोंको भी लाताभया और तप करके देवताओं की यज्ञको विध्वंस करताभया २३ और हे राजन् तब यज्ञों में अन्धकके विघ्नके भयसे २४ तीनों वर्णोंने यज्ञकरना छोडदिया २५ और तपकरना छोडदिया और हे राजन् तिसके भयसे वायु चलनेलगा और सूर्यभी भय से तपनेलगा और नक्षत्रों सहित चन्द्रमा भी इच्छाही से दीखताभया २६ और बलसे गर्वित और महाघोर ऐसे अत्यन्त घोर अन्धक के भयसे आकाशमें विमान नहीं चलतेभये २७ व हे कुरुकुलको वहनेवाला तिस अत्यन्त घोर अन्धक के भयसे ओंकार रहित जगत् में वषट्कार होताभया २८ व यह पापी उत्तरकुरुओंको भयसे भगाताभया और भद्राश्व केतुमाल जम्बूद्वीप इन्हों को प्राप्तहोता भया २९ व सम्पूर्ण देवता और दानव भयसे तिसको माननेलगे और समर्थ भी तिसको माननेलगे ३० और हे राजन् वध्यमान सम्पूर्ण ब्रह्मवादी ऋषि इकट्ठेहोकर अन्धकके वधको चिन्तवन करतेभये ३१ और तिन्होंके मध्यमें बुद्धिमान् बृहस्पतिजी यह वचन कहतेभये कि हे ऋषियो रुद्रकेविना और से इसकी मृत्यु नहीं है ३२ क्योंकि जब कश्यपने दितिको वरदानदिया तब यह कहदिया था कि रुद्रसे रक्षाकरनेको तो मैं समर्थ नहीं ३३ इसवास्ते वह उपाय चिंतवनकरें जिसकरके सनातन महादेवजी सम्पूर्ण भूतोंको अंधकसे पीड्यमान जानें ३४ व जगत्का प्रभु भगवान् महादेवजी जब तुम्हारे अर्थको जानलेगा तब अवश्य यह सतागतिदेव तुम्हारे अश्रुओंको पोंछेगा ३५ क्योंकि देवताओं के देवता और जगत्के गुरु ऐसे महादेवजी का यह सकल्पहै कि दुष्टों से सन्तोंकी रक्षाकरनी और ब्राह्मण तो विशेषकरके तिन्होंको रक्षितव्यहै ३६ इसवास्ते हमसंपूर्ण नारद मुनिके शरण प्राप्तहोवेंगे सो हमरेको उपाय बतावेंगे क्योंकि जिससे नारदमुनि महादेवजीके मित्रहैं ३७ ऐसे सम्पूर्ण ऋषि बृहस्पतिके वचनसुनके रक्षाकेवास्ते नारदमुनि से कहतेभये ३८ व विधिपूर्वकमुनिका पूजनकरके देवता कहनेलगे कि हे साधो शीघ्र कैलासमें जावो ३९ व यह नारदमुनि भी तिसको अङ्गीकार

करके अन्धक के वधको महादेवजीको विज्ञापन करताभया४०पश्चात् जब ऋषि चलेगये तब तिस कार्य्यको मनसे नारदमुनि विचार के पश्चात् ऐसे करना यह देखताभया ४१ पश्चात् मंदारवनके मध्यमें जहा देवदेव महादेवजी रहतेथे तिन के देखने के वास्ते नारदमुनिगये ४२ पश्चात् महादेवजी के मित्र और मुनियों में श्रेष्ठ ऐसे नारदमुनि एकरात्रि तिस रमणीकवनमें वासकर ४३ पश्चात् महादेव जी से आज्ञालेकर कल्पवृक्षके पुष्पों की माला पहर फिर स्वर्ग में आतेभये ४४ पश्चात् अन्धक भी तहा स्वर्गमेंआया और नारदमुनिके कण्ठमें बहुत विचित्र और सुगन्धवाली ४५ ऐसी मालाको यह दुरात्मादेख और सुगंधि लेकर कहने लगा कि हे महामुने हे तपोधन ४६ यह ऐसी सुन्दर पुष्पजाति कहा है अनेक प्रकार की गन्धको व वर्ण वारम्वार उत्पन्न करते है ४७। ४८ हे मुने स्वर्ग के कल्पवृक्षोंसे भी सिवायहै व हे मुने जहा ये ऐसे पुष्पहै तिस देशका कौन मा- लिकहै व कौन तहासे लानेको समर्थ है यह कहो और हमारे ऊपर अनुग्रहकरो हे भारत जनमेजय ४९ ऐसे सुन नारद मुनि हँसतेहुये की तरह वचन कहते भये ५० हे शूरवीर पर्वतों में श्रेष्ठ मन्दराचलहै तहा कामगवनहै सो महादेवजी ने रचरक्खाहै तहा ऐसे पुष्पहैं ५१ परन्तु तिसवनमें महादेवजी की आज्ञाविना कोई नहीं जा सकताहै ५२ क्योंकि तहा अनेक प्रकार के शस्त्रलिये व घोररूप धारणकिये और दुसराद व सम्पूर्ण भूतोंसे अवध्य व महादेवजी से रक्षित ऐसे महादेवजीकेगण तिसकी रक्षामें रहते हैं ५३ व सर्वात्मा व सर्वभावन गणों सहित ऐसे महादेवजी तहा नित्य क्रीडाकरते हैं ५४ इसवास्ते हे कश्यपकेपुत्र तपों से तिस त्रिभुवनेश्वर महादेवजी का आराधन करके पश्चात् कल्पवृक्षके पुष्पों को प्राप्तहोनेको समर्थहै ५५ व हे अन्धक स्त्री रत्न व मणिरत्न व अन्यरत्न जिन जिन की पुरुष वाञ्छाकरते हैं सो सम्पूर्ण वस्तु वे महादेवजीके प्यारे वृक्षफलते हैं ५६ व हे अतुल पराक्रमवाले अन्धक तहा सूर्य व चन्द्रमा भी नहीं तपैहै किन्तु अपनी ही कान्तिसे वह वन प्रकाशित है ५७ व दुःख से वर्जितहै व तहा कितनेक वृक्ष तो सुगन्धको भिरे हैं व कितनेक वस्त्रोंको उत्पन्न करते हैं ५८ व कितनेक तरु भक्ष्य व भोज्य व पेय व लेह्य व चोष्य इन्होंको उत्पन्न करते हैं व तिन तरुओं से अनेक प्रकारकी वाञ्छितवस्तु उत्पन्न होती है ५९ व प्यास भूख ग्लानि चिंता दुःख उस कल्पवृक्ष के वनमें नहींहोते ६० व हे शूरवीर कहांतक कहैं सो वन

करके भी तिसके गुण नहीं वर्णन करसकें व हे अन्धक जो स्वर्गमें गुणहैं तिम से भी अधिक गुण तिस वनमें हैं ६१ व जो एक दिनभी तहां वास करले सो महेन्द्र सहित सम्पूर्ण लोकोंको जीतले ६२ व मेरा मन तो ऐसेकहै है कि वह वन स्वर्गका भी स्वर्गहै व सुखोंका भी सुखहै ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामन्धकवधेपञ्चचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४५॥

एकसौछियालीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् अन्धक महासुर ऐसे तत्त्वसे नारदमुनि के वचन सुनकर व मन्दराचलके जानेको मन करताभया १ सो बड़ा तेजस्वी व महाबल यह ऐसा अंधक असुरोंको बुलाके व क्रोधितहुआ महादेवजीके स्थान मन्दराचलको जाताभया २ पश्चात् बड़े मेघोंसे आच्छादित और महौषधियों से व्याप्त और अनेकसिद्धोंसे व्याप्त और महर्षिगणोंसे सेवित ३ व चन्दन व अगुरु इनके वृक्षोंसे युक्त व सरल के वृक्षों से व्याप्त व किन्नरों के गीतों से रमणीक व बहुत से हस्तियों से व्याप्त ४ व पवन से कँपाये हुये फूले वृक्षों से कहीं नृत्य करतेहुये की तरह व भिरतेहुये धातुओं से कहीं विलिप्तकी तरह ५ व पक्षियों के मधुरशब्दसे कहीं बोलते हुयेकी तरह व जहां तहां पड़तेहुये ६ सुन्दर पैरों वाले हंसों से व्याप्त व दैत्यों को नाशकरनेवाले व महाबलवान् ऐसे चरते हुये झोटों से युक्त ७ व चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले सुफेद सिंहोंसे भूपित व सुवर्ण से भूषित व सिंहों से व्याप्त ८ व मृग समूहों से युक्त रूप धारण किये ऐसे मन्दर पर्वतको बलसे दर्पित यह अन्धक वचन कहनेलगा ९ कि रे मन्दराचल जैसे पिता कश्यपजी के वरदान से मैं अवध्यहूं इसबातको तूभी जानताहै या नहीं १० व हे गिरे यह सम्पूर्ण चराचर त्रैलोक्य मेरे वशमें है व मेरे भयमे कोई स-म्मुखयुद्ध करनेको समर्थ नहीं ११ सो हे महागिरे तेरी शिखरमें कल्पवृक्षका वन है सो सम्पूर्ण कामना के देनेवाले पुष्पों से भूपितहै १२ व उत्तम रत्नहैं तेरी शि-खर में उत्पन्नहुये तिस वनको बता मैं भोगूंगा १३ व मेरा मन सम्भ्रम को प्राप्त होताहै कि जो तू क्रोधितभी होगा मेरा क्याकरेगा तेरेको मारूंगा तो कोई रक्षा करनेवालाभी नहींहै १४ ऐसे कहाहुआ मंदराचल तहां अन्तर्द्धान होगया १५ व पश्चात् अन्धक वरसे गर्वित हुआ अत्यन्त क्रोधितहोकर पश्चात् घोरशब्द

छोड़ताभया यह वचन कहनेलगा १६ कि रे पर्वत मैंने तो तूसे याचा और फिर भी मेरा वचन नहीं माना इसवास्ते अब मेरे बलको देख तेरा चूर्ण करताहूं १७ ऐसे कहके पर्वत की शिखर उखाड तिसको बहुत योजनपर दूसरी तिसही की शिखरपर फेंकताभया १८ ऐसे तिन असुरोंसहित विघ्न करनेलगा पश्चात् तिस महागिरिको ऐसे भज्यमान जान भगवान् रुद्र जानकर तिसपर अनुग्रह करते भये १९ जैसा पहलेथा वैसाही बनादिया और हे भारत पश्चात् महादेवजी के प्रभावसे फेंकाहुआ शृङ्ग असुरोंको नष्ट करताभया २० और जो असुर नहीं मरे थे और अच्छीतरह से खडेथे तिन्हों को देखके और मर्दन सेना को देख क्रुद्ध होकर महानाद को छोड़कर पश्चात् यह वचन कहताभया २१ कि रे पर्वत तेरे से युद्ध करने से क्याहै जिसका यह बनहै सो युद्धके वास्ते आवै २२ जिसने रणमें कपटमे ये मारेहैं जब अन्धकने ऐसा वचन कहा तब महादेव जी बैलपर सवारहोकर और त्रिशूलको लेकर अन्धक के मारने की इच्छाकरके आये २३ पश्चात् और प्रमथगण और भूतगण ये भी सम्पूर्ण साथआये पश्चात् भूतगणों का ईश्वर महादेव जी जब कुपित होगया २४ तब सम्पूर्ण त्रिलोकी कांपतीभई और सिंधु उलटे बहनेलगे २५ व महादेवजी के तेजसे दिशाओं से अग्निदाह होताभया २६ और हे राजन् विपरीतहुये सम्पूर्ण ग्रह युद्ध करनेलगे २७ और हे राजन् तिस समय में पर्व्वत चलनेलगे और धूमा और अङ्गारों सहित वर्षा होनेलगी २८ और तब चन्द्रमा गरम कांतिवाला होगया और सूर्य्य ठंढीकांति वाला होगया और ब्रह्मा और वेदवादी मुनि ये कुछ भी नहीं जानते भये २९ व घोडी बछडे जननेलगीं और गौ अश्वों को जनती भई और भस्महुये और विनाकटेहुये वृक्ष पृथ्वीपर पडतेभये ३० और वृषभ गौवों को मारतेभये और गौ बैलोंको मारतीभई और राक्षस यातुधान पिशाच इन्होंको और जगत्को महादेवजी विपरीत देखकर ३१ पश्चात् अग्नि कीसी कान्तिवाला दीप्त त्रिशूल को छोड़तेभये ३२ सो दुर्द्धर त्रिशूल अन्धककी छातीपर पडा और साधुओंका कंटकरूप अन्धकको भस्म करताभया ३३ पश्चात् जब यह जगत्का शत्रु मारदिया तब देवता और मुनि और तपस्वी महादेवजी की स्तुति करनेलगे ३४ व आकाशमें नगारे बाजे और पुष्पों की वर्षाहुई और हे जनमेजय तीनलोक आनंदितहोगये ३५ व सम्पूर्णोंका दुःख दूरहोगया और देव गन्धर्व गानेलगे व अप्सरा

नृत्य करनेलगीं और ब्राह्मण जप करनेलगे और यज्ञ करनेलगे ३६ और ग्रह अपनी प्रकृति को प्राप्त होगये और नदी पहले की तरह बहनेलगीं और जल स्वच्छ होगये सम्पूर्ण दिशा प्रसन्न होगईं ३७ और पर्व्वतों में श्रेष्ठ मन्दराचल पहले की तरह शोभित होगया और पारिजात वन में ३८ महादेवजी रमण करनेलगे और इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता प्रसन्न होगये ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामन्धकवधेपञ्चचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४५

एकसौ छैतालिसका अध्याय॥

ऐसे सुन जनमेजय ने कहा कि हे भगवन् यह अन्धकका वध मैंने सुना व जैसे तीनों लोकोंकी शान्ति महादेवजी ने करी सोभी सुनी १ परन्तु अब यह वर्णनकरो कि भगवान्ने जैसे निकुम्भका दूसरा शरीर हतकिया व जिसकार्य्य के वास्ते हतकिया सो कहो २ ऐसे सुन वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजर्षे अमित पराक्रमवाले भगवान्के उत्तमचरित्र तेरे से कहूहूं ३ हे राजन् द्वारका में वसतेहुये एककाल में पिंडारकी यात्रा प्राप्तहुई ४ तब उग्रसेन और वसुदेव तो नगरकी रक्षाकेवास्ते छोड़े और बाकी सम्पूर्ण चले ५ व पृथक् सेना निकसी व बालक पृथक् निकसे और हजारहोंवेश्या निकसीं पश्चात् आभूषित सम्पूर्ण यादवों सहित दैत्यों के अविनासको जीतकर तहां वेश्या वसादईं ६। ७। ८ और राजाओं ने भयसे स्त्रीकावेष धारण करलिया ९ पश्चात् स्त्रियोंके निमित्त यादवों का वैर मतहो इस हेतुसे प्रतापवान् और यादवों में श्रेष्ठ ऐसे बलदेवजी इकल्ली रेवतीसहित सागरके जलमें क्रीडा करनेलगे १० व सम्पूर्णोंका द्रष्टा और कमल केसे नेत्रोंवाले ऐसे गोविंदजी सोलहहजार स्त्रियों से रमण करातेभये ११। १२ और हे राजन् वे सम्पूर्ण स्त्री अलग अलग यह मानतीभई कि मैं भगवान् की प्यारी और केशव जलमें मेरेहीसाथ क्रीड़ा करै हैं १३ व परिजन में मैं प्यारी हूं मैं प्यारीहूं ऐसे कहतीहुई नारायण सहित अतिआनन्द को प्राप्तहोती भई १४ व वे उत्तम नेत्रोंवाली अङ्गना नख व दातों के चिह्न कुच व होठोंपर दर्पणों में देखकर अतिआनन्दको प्राप्त होतीभई १५ व नेत्रोंसे कमलकेसा मुखको पीती हुई भगवान् का गोत्र कहके भगवान् के गुणोंको गातीभई १६ व हे जनमेजय कृष्णचन्द्र के अर्पण कियाहै मन व दृष्टि जिन्होंने ऐसी नारायण की मनोहर स्त्री

एक निश्चयवाली न होतीभई १७ व सम्पूर्ण सुरतवद्ध अंगोंवाली व मैथुन से तृप्तहुई बहुतसे मानको वहतीभई १८ व कृष्णचन्द्रमें है दृष्टि और मन जिन्होंके ऐसी तृप्त मनोरथवाली अगना आपसमें ईर्षा नहीं करती भई १९ व केशवरूप वल्लभता को शिर करके गर्व्व को वहती हुई व आत्मवान् हरि तिन सम्पूर्णों करके सहित समुद्र के विमल जल में क्रीडा करते भये २० व हे राजन् भगवान् की शिक्षासे वह समुद्र सम्पूर्ण गन्धयुक्त और स्वच्छ व मिष्ट ऐसे जलको वहता भया २१ और वह समुद्र कहीं टकने के प्रमाण व कहीं गोडेके प्रमाण व कहीं जंघा के प्रमाण व कहीं स्तनके प्रमाण ऐसे वाञ्छित जलको धारण करताभया २२ व ये सम्पूर्ण पत्नी केशवको ऐसे सींचती भई जैसे धारा समुद्रको २३ और गोविंद भी तिन्होंको ऐसे सींचतेभये जैसे फूलीहुई वेलोंकोमेघ २४ व हरिणकेसे नेत्रोंवाली कितनीक स्त्री महाराजको कण्ठमें पकड के ऐसे कहतीभई कि हेवीर मैं पडतीहूं मेरे को थांभ २५ व कितनीक सुन्दर अगोंवाली स्त्री क्रौंच व मयूर व हस्ती इन्होंकेसे आकारवाले प्लवोंसे तहा तिरतीभई २६ व कितनीक मगर मच्छ कीसी आकृतिवाले प्लवों से तिरतीभई २७ व कितनीक मच्छीकेसा आकारवाले प्लवों से तिरतीभई और कितनीक और स्त्री वहुत रूपवाले प्लवों से तिरती और तिससमुद्रके जलमें जनार्दनको प्रसन्न करनेके वास्ते स्तनरूप कुभों से कुभोंकी तरह तिरतीभई २८ व तिम जलमें रुक्मिणी सहित भगवान् क्रीडा करतेभये व जिसकार्य्य के योगमे इन्द्र जैसे रमण करताहै वैसेही नारायण की स्त्री सम्पूर्ण आनन्द करतीभई २९ और अन्य कितनीक स्त्री वारीकवस्त्र धारण करके लीला करतीभई व कमलकेसे नेत्रोंवाली स्त्रियोंसे वासुदेव भगवान रमण करतेभये ३० व जिसस्त्रीका जो भावथा उसीभावसे भगवान् तिन्होंके साथ रमण करतेभये व देशकाल करके स्त्रियोंके वशहुये भगवान्को ऐसे माननीभई ३१ कि यह कुल शीलक कर्मो से हमारे योग्यहै और देशरूपके अनुराग वर्नतेहुये कृष्णचन्द्रका बहुतसा भाव करती भई ३२ पश्चात् बहुतसी अप्सराओं को बुला कर कहतेभये कि हे अप्सराओ यादवोंको रमणकरावो व एकान्तमें नृत्य गीतों सहित सम्पूर्ण गुणदिखावो ३३ व मनके भावोंसे व वाजोंमे चित्त प्रसन्नकरो जब ऐसे प्रसन्नकरदोगी तब तुम्हारे को वांछित अर्थ प्राप्तहोगा हे अप्सराओ ये स- पर्ण मेरे समानहैं पश्चात् ये सम्पूर्ण तिस हरिकी आज्ञाको शिरमें ग्रहणकरके वे

सम्पूर्ण क्रीडायुवति भैमोंको प्राप्तहुई ३४ जब ये प्रवेशहुई तब वह महार्णव प्रका-शित होताभया व वे सम्पूर्ण ऐसे प्रकाश करतीभई जैसे मेघ में बिजुली ३५ व वे सम्पूर्ण जलमें ऐसे स्थित होतीभई जैसे स्थलमें व तहां स्थितहोके जलबाजा बजाती भई ३६ व वे सम्पूर्ण अंगना स्वर्गवासकी तरह अभिनय करतीभई व गंधमाला दिव्यवस्त्र इन्हों करके व क्रीडाओं करके हास्यभावों करके भैमों के मनको हरतीभई ३७ व कटाक्ष व चेष्टित व हास्य व केलि व रोष व प्रसाद और अन्य मनोऽनुकूल वस्तुवों से तिन भैमों के मनों को हरतीभई ३८ व मदिरा के वशहुये भैमों को वे वरांगणा बहुतसी क्रीड़ा करतीभई व प्रभु कृष्णचन्द्र भी तिन्होंकी प्रीति के वास्ते आकाशमें सोलहहजार स्त्रियों करके विहार करतेभये ३९ व कृष्णचन्द्रके प्रभावके जाननेवाले बीर भैमपरमगाम्भीर्य को स्थितहुये आश्चर्य को नहीं प्राप्त होतेभये ४० व हे भारत कितनेक रैवतको जाकर फिर आतेभये व हे शत्रुकर्षण कृष्णचन्द्र के प्रभावसे गृह व वन वांछित होतेभये ४१ व तिस समयमें अपेय सागर पीनेके योग्य होताभया और कमलसरीखे नेत्रोंवाली स्त्री अतुल तेजवाले लोकोंके नाथ ऐसे भगवान्की आज्ञासे जलमें भी सम्पूर्ण स्त्री स्थलकी तरह दौड़ती भई ४२ और भक्ष्य, भोज्य, पेय, लेह्य, चोष्य इनपदार्थों का ध्यान करतेही सम्पूर्ण पदार्थ आतेभये ४३ व खिलेहुये पुष्पों की मालाओं को धारणकिये तिन अनिंदितों को ऐसे एकांत में रमण करातीभई जैसे स्वर्ग में देवताओं को ४४ व अंधक व वृष्णि नहीं थकेहुये गृहसरीखी नौकासे रमण करतेभये व सायंकालमें स्नानकरके व चंदनलगाके क्रीड़ाकरतेभये ४५ पश्चात् चकूटा व गोल ऐसे विश्वकर्मा ने नौकामें महलरचे व किसीके वास्ते कैलास व किसीकेवास्ते मंदराचल व किसीकेवास्ते सुमेरु ऐसे स्थानरचके ४६ पश्चात् वैदूर्य तोरण व विचित्रमणि इन्होंसे भूषित करतेभये व कितनेक यादव अनेकप्रकारके पक्षियों से क्रीड़ाकरतेभये ४७ पश्चात् कर्णधारों से धारणकरी ये नौका सुवर्णकी तरह प्रकाश करतीहुई बड़ी ऊर्मियोंवाले तिस सागरके जलको भूषित करतीभई ४८ और बड़ी ऊंची २ व छोटी २ नौकाओंसे व यानपात्रों से और नावकाओं से वह वरुणालय शोभाको प्राप्तहोताभया ४९ व आकाशमें विचरनेवाले गंधर्वों के पुर जहांतहां भ्रमतेभये और सागरके जलमें भैमोंकेयान भ्रमतेभये ५० व तिन यानपात्रों में विश्वकर्मा ने नंदनवनके समान बगीचा रचदिया व उद्यान सभा

वृक्ष रचदिये व वैसेही सम्पूर्ण जगह शिल्पी वसादिये ५१ व नारायणकी आज्ञा से विश्वकर्मा सम्पूर्ण स्वर्ग के भोग रचताभया और तिस वनमें पक्षी मधुरशब्द करनेलगे ५२ व अत्यन्त तेजवाले भैमों को वह अत्यन्त मनोहर होताभया व देवलोक में होनेवाली सफेदकोयल तहा मधुर व विचित्र व यादवों को वाञ्छित ऐसा शब्द करतीभई ५३ व चन्द्रमाकीसी कांतिवाले सफेद महलोंपर शिखंडि-यों से सहित और मधुरशब्दवाले ऐसे मयूर नृत्य करतेभये ५४ व स्रग्दामकी सु-गंधि के लोभी भ्रमरोंसे गायेहुये वृक्ष नारायणकी आज्ञासे पुष्पोंको छोडतेभये ५५ व तव ऋतु अनुकूल होतीभई व उससमयमें रतिका हरनेवाला व सुखदायक ऐसा पवन चलताभया ५६ व पुष्पोंकी रजसे व मलयागिरि चन्दनसे अत्यन्त शीतल पवन यादवोंको अतिसुखदेताभया ५७ व हे जनमेजय भगवान् के प्र-भावसे तिस समयमें भैमोंको क्षुधा व प्यास व ग्लानि व चिन्ता व शोक ये नहीं प्रवेश होतेभये ५८ पश्चात् वडेऊंचे शब्दोंवाले वाजों करके भूषित और नृत्य गीतोंकरके भूषित अत्यंत तेजवाले भैमोंकी सागर क्रीडा होतीभई ५९ और वहुत योजनके विस्तारवाला जो जलरूप समुद्र तिसको रोकके इन्दुकीसी का-न्तिवाले कृष्णाभिरक्षि भैम क्रीडाकरतेभये ६० और सम्पूर्ण सामग्रियों सहित महात्मा नारायणदेव का विश्वकर्मा विचित्र यानपात्र रचताभया ६१ और हे जनमेजय जो श्रेष्ठ रत्न त्रिलोकी में थे सो सम्पूर्ण अत्यन्त तेजवाले कृष्णचन्द्र के यानपात्र में विश्वकर्मा ने लगाये ६२ और हे भारत कृष्णचन्द्र की स्त्रियों के अलग अलग निवास रचे और वैदूर्य्यमणियों से विचित्र और सुवर्ण से भूषित ६३ और सम्पूर्ण ऋतुओं के पुष्पोंमे व्याप्त और सम्पूर्ण गन्धों से सेवित और स्वर्गके शुभ शकुनों से सेवित ऐसे यदुसिंह अति शोभाको प्राप्तहोतेभये ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्व्वेभाषायामानुमतीहरणे सप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४७॥

एकसौ अड़तालीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे जनमेजय चन्दन मे लिप्त और कादम्बरी के पानसे मधुर शब्दवाला और अत्यन्त शोभावाला रक्त नेत्रोंवाला और लम्बी भुजाओंवाला और स्खलित वीर्य्यवाला ऐसे वलदेवजी रेवतीके आश्रय होकर

रमण करतेभये १ और हे राजन् नीलमेघ केसे वस्त्र धारण किये और चन्द्रमा की किरण केसे गौररूपवाले और मदिरामे घूमतेहुये नेत्रोंवाले ऐसे भगवान् वलदेवजी समुद्रके मध्यमें ऐसी शोभाको प्राप्तहुये जैसे सम्पूर्ण विंववाला आकाशमें चन्दमा २ और वामा एक कानमें निर्मल कुण्डल की शोभावाले और मन्दहास से भूषित और सुन्दर कमलके आभूषणों से भूषित व तिरछे कटाक्षों वाले और रेवती के सुन्दर मुख को देखतेहुये ऐसे वलदेव जी प्यारी रेवती के साथ आनन्द करतेभये ३ इसके अनन्तर कंस और निकुम्भ इन्होंके शत्रु कृष्णचन्द्रकी आज्ञासे वह अत्यन्त रूपवाला अप्सरोंका समूह आनन्दितहुआ रेवती के देखनेको स्वर्गकीसी समृद्धिवाले वलदेवजी के स्थानको जाताभया४ और पश्चात ये सम्पूर्ण श्रेष्ठ अङ्गोंवाली अप्सरा तहा रेवती और वलदेवजीको नमस्कार करके पश्चात् चारोंतरफ नेवाजोंके अनुरूप ये सुन्दर अङ्गोंवाली अप्सरा नृत्य करतीभई और अच्छीतरहसे गान करतीभई ५ और पश्चात् ये अप्सरा यथावत् अर्थयुक्त प्रियको लब्धहोके पश्चात् रेवतराज की पुत्रीकी आज्ञाके भावोंकरके वलदेवजीका हृदयानुकूल करतीभई ६ और कितनीक अप्सरा देश भाषा और आकृति और वेश इन्हों से युक्तहुई कला करती भई और कितनीक श्रेष्ठ लीला सहित सुन्दर ताल वजातीभई और तहा कितनीक अङ्गना वलदेव जी और कृष्णके आनन्द करनेवाले और मंगलके देनेवाले ऐसे गीत गाती भई ७ और तिस रङ्गभूमि में कंसका वध और प्रलम्बासुरका वध और रमणीक चाणूरका वध इन सम्पूर्णों को गातीभई ८ और यशोदा करके दामोदर भगवान्को ऊखलमें बांधना और अरिष्ट और धेनुकासुरका वध और व्रजमें वसना और शकुनीका वध ९ और यमलार्जुनका तोड़ना और वृकाव्रों की सृष्टि इन सम्पूर्णों को गातीभई और यमुनाके कुण्डमें कृष्णचन्द्र करके दुरात्मा कालिय नागपतिका नाथना १० और कुण्डसे शङ्खासुरका मारना और भगवान् करके कमलोंका निकासना और जनार्दन भगवान् करके गौओंकेवास्ते गोवर्द्धनका उठाना ११ व चन्दनको पीसनेवाली कुब्जाको सीधी करना व श्लाघाके योग्य कृष्णचन्द्र जैसे वामनरूप धारण करतेभये इनसम्पूर्ण चरित्रोंको अप्सरागातीभई १२ व सौभका मथना व हलायुधत्व व देवशत्रु का वध व गान्धार कन्याओं के लानेमें राजाओं का जीतना १३ व सुभद्राके हरणे में युद्धमें जीतना व युद्धमें

राजाओंको जीतके रत्नोंका लाना १४ हे जनमेजय ये जो वलदेव कृष्णके आनन्द करनेवाले चरित्रहैं व अन्यजो विचित्र चरित्रहैं तिन सम्पूर्णोंको वे अङ्गना गातीभई १५ पश्चात् उत्तम शोभावाले और कादम्बरीके पानसे मदोत्कटहुये ऐसे वलदेवजी रेवती भार्यासहित और मधुर ताल करके सहित क्रीडा करतेभये १६ पश्चात् क्रीड़ा करतेहुये वलदेवजी को देखकर और वलदेवजी के हर्षके वास्ते सत्यभामा सहित भगवान्भी क्रीडा करनेलगे और हर्षकरकेसहित वे अंगनाभी क्रीडाकरनेलगीं १७ और समुद्र यात्राके वास्ते आयाहुआ नरलोक में शूरवीर मुदितहुआ अर्जुन भी कृष्णचन्द्र सहित और सुभद्रा सहित क्रीडा करतेभये १८ और बुद्धिमान् गद और सारण और प्रद्युम्न और साम्ब और सात्यकि और उदार वीर्य्यवाला सत्राजिती का पुत्र अर्थात् सत्यभामा का पुत्र और सुन्दर रूप वाला चारुदेष्ण येभी सम्पूर्ण क्रीडा करतेभये १९ और वलदेवजीका पुत्र शूरवीर निशठ और उल्मुक ये दोनोंभी क्रीडाकरतेभये और अक्रूर और सेनापति व शङ्कु इन्हों से आदि लेकर यादव और अन्य यादव सम्पूर्ण क्रीडा करतेभये और हे उदार कीर्त्तिवाले जनमेजय ऐसे भैममुख्य राजाओं के क्रीडा करतेहुये २० पूर्यमाण जो वह यानपात्रहै सो कृष्णचन्द्रके प्रभावसे वढताभया २१ और हे राजन् देवताओं कैसा प्रकाशवाले और क्रीडामें आसक्त ऐसे जो यादव तिन्हों करके आनन्दयुक्त सम्पूर्ण जगत् होताभया २२ और तहां भगवत्की कृपासे पापरहित होतेभये और देवताओंका अतिथि और जटाकलापसे एकदेशहै गलित जिसका ऐसा नारदमुनि भगवान्के प्यारके वास्ते यादवोंके मध्यमे क्रीडा करता भया २३ व हे राजपुत्र रासके करनेवाले तहां अप्रमेय कृष्णचन्द्र क्रीडा विकारों करके व निडवित अङ्गोंकरके तिन स्त्रियोंके मध्यमें फिर क्रीडा करनेलगे २४ व पश्चात् बुद्धिमान् वलदेवजी सत्यभामा व केशव व सुभद्रा व रेवती इन सम्पूर्णों को देख देख हँसतेभये २५ पश्चात् तहां कृष्णचन्द्रकी आज्ञा से सम्पूर्ण स्त्रीरूप के योग्य वहुतसे रत्न व वस्त्र स्वर्ग में होनेवाली वहुनसीमाला और कल्पवृक्षकी माला व मोतियोंकी माला इन सम्पूर्णोंका दान करतेभये २६ पश्चात् अञ्जलि बांधे आगेखडे समुद्र से प्रसन्नहुये कृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे समुद्र तेराजल सुगन्धवाला व मीठा और सुन्दर होजावे व तू ग्राहों करके रहित होजावे २७ व हे समुद्र तेराजल पीने के योग्य व सम्पूर्णजनोंके मनके अनुकूल व तेरेविषे

मत्स्य मोती मणि सुवर्ण इन्हों से विचित्र होजावे २८ व अच्छी सुगन्धवाले
व अच्छेरसवाले भौरों से सेवित व रक्तवर्ण से सयुक्त ऐसे विचित्र कमलोंको धा
रणकर २६ व हे समुद्र गौडी औ माध्वी व पैष्टी इन मदिराओंके कलशोंके जल
ऊपर स्थापनकर व पीने के वास्ते सोनेकेपात्र स्थापनकर ३० व तिस मदिराको
भैमोंको तू दे व वे यथेच्छ पानकरें व हे समुद्र व पुष्पों के समूहसे सुगन्धिवाला
व ठंढेजलवालाहो और तू अप्रमत्तहो ३१ व हे समुद्र जैसे स्त्रियों करके सहित
यादवों को दुःख नहीं होवे सोही यत्नसे तू कर ३२ पश्चात् हे राजन् जनमेजय
भगवान् समुद्रको ऐसे कहके पश्चात् अर्जुन करके सहित क्रीडा करनेलगे ३३
व पश्चात् सत्यभामा पहले नारदमुनिको सेचन करके पश्चात् कृष्णचन्द्रको से-
चन करतीभई ३४ पश्चात् मदकरके वर्जित सुन्दर देहवाले बलदेवजी रेवती के
हाथको पकड जलमें क्रीड़ा करनेलगे ३५ व भैमसे आदिलेकर जो कृष्णचन्द्र
के पुत्रथे सो अनेक प्रकारके आभूषण व वस्त्र धारणकरके आनन्दयुक्तहुये म-
दिरापीके बलदेवजीके पश्चात् समुद्रमें कूदतेभये ३६ और पठोल्मुकसे आदिलेकर
बाकीरहे भैम विचित्रवस्त्र धारणकिये कल्पवृक्ष के पुष्पोंकी मालापहरे व अनेक
प्रकारके चिह्न धारणकिये कृष्णचन्द्रके साथ जलक्रीड़ा करतेभये ३७ और बड़े
मनोहर अनेकप्रकार के गायन करतेभये व तिनके पश्चात् अनेकप्रकारके प्रिय
जलके बाजे बजाते भये ३८ व पश्चात् अप्सरा व स्वर्गवासी इन्हों सहित कृष्ण-
चन्द्रकी आज्ञासे सैकडोंवधू आकाश गंगाके जलकेबाजे जलदर्दुरनाम बजाती
भई ३९ व प्रसन्नहुये तिन बाजाओं के अनुरूप गायन भी करतेभये पश्चात् हे
राजन् जनमेजय कलाकरके सहित स्त्रियों के मुखरूप चन्द्रमाओं से समुद्र ऐसा
शोभित होताभया जैसे हजारहों चन्द्रमाओं से व्याप्त आकाश ४० पश्चात् हे
राजन् समुद्र स्त्रियोंसे ऐसेशोभित होताभया जैसे बिजलियोंसे शोभित आकाश
में मेघ ४१ व पश्चात् नारदमुनिसहित कृष्णचन्द्र बलदेवजीको सेचनकरतेभये
व पश्चात् जलयन्त्रसे प्रसन्नहुये अत्यन्त रमण करनेलगे ४२ पश्चात् नारदमुनि
व अर्जुनसहित कृष्णचन्द्र बाजाओंसे निवृत्त होकर पश्चात् नृत्यकरनेलगे ४३
और स्त्री भी प्रसन्नहुई नृत्यकरनेलगीं पश्चात् नृत्यके अंतमें प्रसन्नहुये कृष्णचंद्र
नारद मुनिको अनुलेप देतेभये ४४ और पश्चात् ये सम्पूर्ण कृष्णचन्द्रकी आज्ञासे
पानभूमिको प्राप्त होकर पश्चात् प्रसन्नहुये अनेक प्रकारका भोजन करतेभये ४५

और अनुकूल पान करतेभये और तहां स्थित होकर अनेक प्रकारके उत्तम मांस परोसकर भोजन करनेलगे ४६ व अनेक प्रकारके मदिरा पान करनेलगे पश्चात् प्रसन्नहुये अनेक प्रकारका गान करनेलगे और सुननेलगे ४७ पश्चात् हल्लीसकनाम बाजाको बजानेलगे और मृदङ्गसे आदिलेकर सम्पूर्ण अप्सराभी बाजा बजानेलगीं ४८ पश्चात् रम्भानाम अप्सरा बाजेको उठाके बाजा बजाने लगी इसको देखके बलदेवजी और कृष्णचन्द्र बहुत प्रसन्नहुये ४९ व हे राजन् पश्चात् कमल कैसे नेत्रोंवाली उर्वशी और हेमा व मिश्रकेशी और तिलोत्तमा और मेनका ये सम्पूर्ण अप्सरा और इन्होंसे अन्य हरि भगवान्के प्यारकेवास्ते गातीभई ५० व मनके अनुकूल सुन्दर भाव बताती भई पश्चात् हे राजन् भगवान्भी तिन्होंपर आसक्त होकर सुन्दर ताम्बूल आदिकोंकरके सत्कार करतेभये ५१ व यह भगवत्का चरित्र शुभदायकहै और बुद्धिको बढ़ाताहै यशको बढ़ाताहै पवित्रहै व प्रतापको बढ़ाताहै ५२ व यह चरित्र खोटे स्वप्नका और भयका नाश करताहै और सम्पूर्ण पापोंको नष्ट करताहै ५३ पश्चात् ऐसे क्रीडा करके अप्सराओं के समूह तो स्वर्गमेंगये व सम्पूर्ण यादव अत्यन्त प्रसन्नहोगये ५४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामानुमतीहरणेसप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४७ ॥

एकसौ अड़तालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय जब पुण्यकर्मवाले ये सम्पूर्ण यादव क्रीडामें आसक्त हुये तब खोटी बुद्धिवाला व देवताओं का शत्रु और दुरासद व अपने मरनेकी इच्छा करनेवाला ऐसा निकुम्भ नाम दानव १ इस अवकाशको देखकर भानुकी पुत्री जो भानुमती है तिसको हरताभया २ और अन्तर्द्धान होकर यादवोंकी स्त्रियोंको मोह कराताभया ३ और वज्रनाभ भ्राता की कन्या प्रद्युम्नने हरी और वज्रनाभकाभी वधकिया ४ और जब भानुआगमन में बसाया तब यह अवकाश को जाननेवाला दानवों में अधम निकुम्भ कन्या पुरमें प्राप्तहुआ ५ तब कन्यापुरमें बड़ा घोर नादहुआ तिस शब्दको सुनके वसुदेव व आहुक दोनों कवच धारण करके निकसे और कन्यापुरके महानादको सुनके तिस निकुम्भको दृष्टिगोचर करतेभये ६। ७ व पश्चात् महाबली कृष्णचन्द्र

भी तिन्हों को प्राप्तहुये देखकर अर्जुन करके सहित अपने विमान गरुड़ पर सवार होकर और प्रद्युम्न को रथमें बैठाके पश्चात् आनेकी आज्ञादे कर पश्चात् कश्यपकेपुत्र गरुड़से यह कहनेलगे ८ कि हे गरुड़ शीघ्रचल पश्चात् नभनाभ पर्व्वतोंको प्राप्तहुये रणमें दुर्जय निकुम्भ को अर्जुन और कृष्णचन्द्र प्राप्तहोतेभये ९ व मायावियोंमें श्रेष्ठ बड़ेतेजवाला प्रद्युम्नभी प्राप्तहुआ पश्चात् निकुम्भ इन्हीं को देखकर निकुम्भने भी तीनरूप धारणकरे १० पश्चात् देवताओंकेसे पराक्रम वाला निकुम्भ कांटोंवाली भारीगदाकरके सम्पूर्णों के साथ युद्ध करनेलगा ११ १२ वामहाथसे भानुमती कन्याको पकड़ दाहिनेहाथसे युद्धकरनेलगा १३। १४ पश्चात् कन्याके वास्ते अर्जुन और कृष्णचन्द्र भी युद्धकरनेलगे पश्चात् अर्जुन तीक्ष्णवाणों से युद्ध में अनेक प्रकारके दानवों को मारताभया। १५ पश्चात् यह निकुम्भदानव कन्याकरके सहित अन्तर्द्धान होगया और आसुरीमायामें आश्रित हुये को कोई भी नहीं जानताभया १६ पश्चात् अर्जुन और कृष्णचन्द्र और प्रद्युम्न तिसके पीछे जातेभये व तब यह महासुर हारित मृग होकर स्थित होगया पश्चात् फिर अर्जुन कन्याकी रक्षा करताहुआ वाणोंसे तिसको ताड़ना भया १७ पश्चात्भयसे यह महासात द्वीपोंवाली सम्पूर्ण पृथ्वीपर भ्रमकर पश्चात् जहां महादेवजी के तेजसे देवता व असुर नहींजाते गोकर्ण पर्वत के ऊपर गंगाके पुलिन पर कन्या सहित पड़ा १८ व इसी अवसरमें प्रद्युम्नभी प्राप्तहुआ व वेगसे प्रद्युम्नने भानुमती कन्या ग्रहणकरली १९ पश्चात् अर्जुन व कृष्णचन्द्र के वाणों से यह बींधाहुआ असुर उत्तर गोकर्ण को त्यागकर दक्षिण दिशाको प्राप्तहुआ २० व अर्जुन व कृष्णचन्द्रभी तिसके पश्चात् प्राप्तहुये पश्चात् यह निकुम्भ अपनी जातिवालोंके स्थानमें प्राप्तहोगया २१ व अर्जुन व कृष्णचन्द्र तिस गुफाके दरवाजे बैठगये व रुक्मिणीका पुत्र प्रद्युम्न द्वारकामें प्राप्तहोगया २२ पश्चात् यह दानव मायासे भानुकी पुत्री को षट्पुर में प्राप्त करके पश्चात् गुफाके दरवाजेपर अर्जुन और कृष्णचन्द्रको देखताभया २३ व तिसके अनन्तर प्रद्युम्न को भी देखा पश्चात् यह अतिबलवान् दानव युद्धकी वाञ्छा करके निकला २४ पश्चात् वाणों से चारोंतरफको इसका रास्ता रोंकदिया और यह निकुम्भी बहुत कांटोंवाली गदाको लेकर अर्जुन के शिरमें भेदन करताभया २५ तब गदा के मारने से अर्जुन व्याकुलहोके रुधिरकी उलटी करनेलगा पश्चात् निकुम्भ ऐसे

अर्जुन को देख प्रसन्न हुआ हँसके प्रद्युम्नको ताडना करताभया २६ सो प्रद्युम्न भी मोहको प्राप्तहोगया पश्चात् कृष्णचन्द्र इन दोनोंको मोहित देखकर क्रोधसे मूर्च्छितहुये कौमोदकी गदाको लेकर निकुम्भकी तरफ दौड़े २७ व दोनों गर्जतेहुये परस्परमें युद्ध करनेलगे पश्चात् तिस घोरयुद्धके देखने के वास्ते सम्पूर्ण देवताओं करके सहित ऐरावतपर सवारहोके इन्द्र भी आया २८ पश्चात् कृष्णचन्द्र देवताओंको देखकर और देवताओंके हितकी वाञ्छाकरके विचित्र युद्धों से इस दानव के मारने की इच्छा करतेभये २९ पश्चात् युद्धमें चतुर कृष्णचन्द्र कौमोदकी गदाको लडातेहुये अनेकप्रकारके मंडल दिखानेलगे ३० व तैसेही यह निकुम्भभी तिस बहुत कांटोंवाली गदाको लेकर शिक्षासे भ्रमाताहुआ मंडल करनेलगा ३१ पश्चात् ये दोनों साडोंकी तरह और हस्तियों की तरह गर्जने लगे पश्चात् यह दानव भयानक शब्दकरके कृष्णचन्द्रके गदा मारताभया ३२ व पश्चात् तिसीकालमें कृष्णचन्द्रभी अपनीगदाको भ्रमाकर निकुम्भके मस्तक पर गेरते भये ३३ पश्चात् यह कृष्णचन्द्र कौमोदकी गदाको लेकर मोहित हुये पृथ्वीपर पडे जब कृष्णचन्द्र मूर्च्छितहोगये तब सम्पूर्ण जगत्में हाहाकार शब्द होताभया ३४ पश्चात् आकाशगङ्गा ठण्ढे जलसे और सुगन्धि से आप कृष्णचन्द्रका सेचन करनेलगी ३५ हे जनमेजय भगवान् कृष्णचन्द्र अपनीही इच्छा से मोहित होगये और नहीं तो हरिभगवान्को युद्धमें कौन मोह करानेको समर्थ है ३६ पश्चात् हे भारत तब भगवान्की मूर्च्छा दूरहुई तब चक्रको लेकर इस दुरात्मासे कहनेलगे कि रेनिकुम्भ अब गदाको गेर तेरे पश्चात् अति मायावी निकुम्भ भी उछलकर तिस शरीरको त्यागताभया ३७ पश्चात् जनार्दन इसको मारनेकी इच्छा करताहै अथवा मरगया ऐसे मानके वीर व्रतको स्मरण करता हुआ इसकी रक्षा करताभया ३८ पश्चात् उसी समयमें जब चेत लब्धहुआ तब प्रद्युम्न और अर्जुन भी आतेभये और निकुम्भके वधको निश्चयकरके नारायणके समीप स्थित होतेभये ३९ पश्चात् अत्यन्तमायावी कृष्णचन्द्रसे यह कहनेलगा कि हे तात खोटी बुद्धिवाला निकुम्भ यहा नहीं है जब ऐसे प्रद्युम्नने कहा तब भगवान् तिस शरीरका नाश करतेभये ४० और अर्जुन करके सहित भगवान् हँसतेभये पश्चात् हे राजन् ये पृथ्वी व स्वर्गमें चारोंतरफ दशहजार देत्यों को देखतेभये ४१ पश्चात् युद्ध करनेलगे और अर्जुनभी लाखों रूपों को धारण

करताभया ४२ पश्चात् कृष्णचन्द्र और प्रद्युम्न अर्जुनके स्वरूपोंको छोड़कर सं
पूर्ण निकुम्भोंको भेदन करताभया ४३ पश्चात् तत्त्वज्ञानसे भगवान् मायाके रचने
वाले पश्चात् असुरोंको नाश करनेवाले भगवान् सम्पूर्ण भूतोंके देखनेहुये चक्र
से इस निकुम्भके शिरको छेदन करतेभये ४४ पश्चात् हे राजन् जब इसका शिर
कटगया तब यह निकुम्भ अर्जुन को छोडकर ऐसे पडा जैसे जड़कटे पश्चात्
वृक्ष ४५ पश्चात् आकाशमे पड़तेहुये अर्जुन को कृष्णचन्द्र के वाक्यसे प्रद्युम्न
ग्रहणकरके धनंजय को आश्वासना कराता भया ४६ ऐसे निकुम्भ राक्षसको
मारके अर्जुन और प्रद्युम्न करके सहित भगवान् द्वारकामें जातेभये ४७ पश्चात्
यदुनन्दन महात्मा नारदमुनिको प्रणाम करतेभये पश्चात् नारदमुनि भानु या-
दवके प्रति कहतेभये ४८ और जब ये क्रोधमें आया तब नारदमुनि कहनेलगा
कि हे भैमनन्दन क्रोध मतकरे पहले इस कन्याने दुर्वासा को कुपित करादिया
था जब दुर्वासाने यह शापही दे दियाथा कि ऐसे शत्रुके हाथ में चलीजायगी
४९ और पश्चात् प्रसन्नहोकर वरदान देतेभये कि दोष करके रहितहुई भर्त्ता को
प्राप्तहोवेगी और बहुत धन और पुत्र व सुहाग इन्होंको प्राप्त होवेगी ५० और
अच्छी सुगंध को धारण करेगी और शोकको नहीं धारणकरेगी ऐसे दुर्वासा ने
वरदानदिया ५१ इसवास्ते हे शूरवीर भानुमतीको सहदेवको देदे क्योंकि जिस
से सहदेव शूरवीर है और धर्म्मशील पाण्डव है ५२ पश्चात् नारदमुनिके वचन
को स्मरणकरता हुआ भानु भानुमती कन्याको माद्रीकेपुत्र सहदेवको देताभया
५३ पश्चात् सहदेव विवाह करके भार्या सहित अपनी पुरी में प्राप्तहोगये ५४
इस कृष्णके विजय को जो पुरुष सुनते हैं अथवा पढते हैं तिन्हों की सम्पूर्ण
कार्योंमें जयहुआ करती है ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायां भानुमतीहरणनामाष्टचत्वारिंश
दधिकशततमोऽध्यायः १४८ ॥

एकसौ उञ्चासका अध्याय ॥

जनमेजय कहताहै कि हे भगवन् भानुमतीका हरना और भगवान्की जय
और देवलोकसे पारिजातका लाना १ और सागरमें दिव्य यादवों की क्रीड़ा
हे मुने ये सम्पूर्ण चरित्र मैंने सुने २ परन्तु निकुम्भके वधमें जो वज्रनाभका वध

कहा है सुने तिसको तुम्हारे से सुनने को मेरेको वडा आनन्द है ३ ऐसे सुन वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजन् वज्रनाभका वध और काम और साम्ब का विजय तेरे को कहूगा ४ हे राजन् युद्धको जीतनेवाला यह वज्रनाभ सुमेरु की शिखरमें तप करनेलगा ५ जब तेजस्वी ब्रह्मा तिसपर प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि वरब्रूहि अर्थात् वरमाग ६ ऐसेसुन वज्रनाभ कहनेलगा कि सपूर्ण देवताओंसे मैं अवध्यहोजाऊ ऐसे ब्रह्मासे वरलेकर पश्चात् रत्नमय वज्रपुरको प्राप्तहोकर वसताभया ७ और नगरके चारोंतरफ अनेक शाखा नगर वसाये पश्चात् यह वज्रनाभ दुष्टात्मा वरदान करके गर्वितहुआ अपने पुरको और जगत् को बाधा करनेलगा ८ और हे राजन् स्वर्गको हरके यह वज्रनाभ कहनेलगा कि हे इन्द्र त्रैलोक्य को तो मैं शिक्षा करूगा ९ और स्वर्ग को नहींदेहै तो हे इन्द्र मेरेको युद्धदे क्योंकि देवता और दानवोंको सम्पूर्ण जगत् सामान्यही है १० ऐसे सुन इन्द्र बृहस्पतिजी के साथ सलाहकरके वज्रनाभसे वचन कहनेलगे ११ कि हे सौम्य हमारा पिता कश्यपमुनि यज्ञ में दीक्षित है सो जब यज्ञ निवृत्त होजायगा तब जैसा न्यायहोगा वैसा वे करदेंगे १२ ऐसे इन्द्रके वचनसुन पिता कश्यपजीके पास जाकर कहनेलगा स्वर्गका राज्य मेरेको दो ऐसे सुन जैसे इन्द्र से कहा था वैसेही कहनेलगे १३ कि हे पुत्र तू वज्र पुरमें जा यज्ञके अन्तमें जो न्यायहोगा सो होजावेगा जब कश्यपजीने ऐसे कहा तब वज्रनाभ आपही नगरको चलागया १४ और महेंद्र द्वारकाको चलागया तहा वज्रनाभका वृत्तांत भगवान्के आगे कहताभया १५ भगवान् इन्द्रके वचनसुन कहनेलगा कि हे इन्द्र अब तो यह अश्वमेध यज्ञ उपस्थितहै पश्चात् वज्रनाभको मैं मारूंगा १६ ऐसे सुन इन्द्रने कहा कि हे भगवन् तहा तो वायुका भी प्रवेश नहीं है फिर कैसे तिस का वधहोगा १७ ऐसे कह भगवान् कृष्णचन्द्र को प्रणामकरके स्वर्ग में गया पश्चात् जब यज्ञ समाप्तहोगया तब दोनों सुरोत्तम प्रवेशहोनेका चिन्तवन करते भये १८ पश्चात् यज्ञमें भद्रनामा नृत्यकरके ऋषियोंको प्रसन्न करताभया पश्चात् प्रसन्नहुये ऋषियोंसे देवताओंके तुल्य वरदान मागताभया १९ पश्चात् वरदान लेकर देवताओं के तुल्यहुआ सारी पृथ्वीपर विचरनेलगा पश्चात् सम्पूर्ण देशों में विचरताहुआ यह इन्द्रके पास आया २० इन्द्रने कहा कि हे मित्र एक वज्रनाभका पुरहै जिसमें कन्यारूप रत्नहै सो तहा प्रवेशकरा तिस वज्रनाभके चंद्रगा

करताभया ४२ पश्चात् कृष्णचन्द्र और प्रद्युम्न अर्जुनके स्वरूपोंको छोडकर सम्पूर्ण निकुंभोंको भेदन करताभया ४३ पश्चात् तत्त्वज्ञानसे भगवान् मायाके रचनेवाले पश्चात् असुरोंको नाश करनेवाले भगवान् सम्पूर्ण भूतोंके देखतेहुये चक्रसे इस निकुम्भके शिरको छेदन करतेभये ४४ पश्चात् हे राजन् जब इसका शिर कटगया तब यह निकुम्भ अर्जुन को छोडकर ऐसे पड़ा जैसे जड़कटे पश्चात् वृत्त ४५ पश्चात् आकाशसे पडतेहुये अर्जुन को कृष्णचन्द्र के वाक्यसे प्रद्युम्न ग्रहणकरके धनजय को आश्वासना कराता भया ४६ ऐसे निकुम्भ राक्षसको मारके अर्जुन और प्रद्युम्न करके सहित भगवान् द्वारकामें जातेभये ४७ पश्चात् यदुनन्दन महात्मा नारदमुनिको प्रणाम करतेभये पश्चात् नारदमुनि भानु यादवके प्रति कहतेभये ४८ और जब ये क्रोधमें आया तब नारदमुनि कहनेलगा कि हे भैमनन्दन क्रोध मतकरे पहले इस कन्याने दुर्वासा को कुपित करादिया था जब दुर्वासाने यह शापही दे दियाथा कि ऐसे शत्रुके हाथ में चलीजायगी ४६ और पश्चात् प्रसन्नहोकर वरदान देतेभये कि दोष करके रहितहुई भर्त्ता को प्राप्तहोवेगी और बहुत धन और पुत्र व सुहाग इन्होंको प्राप्त होवेगी ५० और अच्छी सुगंध को धारणकरेगी और शोकको नहीं धारणकरेगी ऐसे दुर्वासा ने वरदानदिया ५१ इसवास्ते हे शूरवीर भानुमतीको सहदेवको देदे क्योंकि जिससे सहदेव शूरवीर है और धर्मशील पाण्डव है ५२ पश्चात् नारदमुनिके वचन को स्मरणकरता हुआ भानु भानुमती कन्याको माद्रीकेपुत्र सहदेवको देताभया ५३ पश्चात् सहदेव विवाह करके भार्या सहित अपनी पुरी में प्राप्तहोगये ५४ इस कृष्णके विजय को जो पुरुष सुनते हैं अथवा पढते हैं तिन्हों की सम्पूर्ण कृत्योंमें जयहुआ करती है ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायाभानुमतीहरणनामाष्टचत्वारिंश दधिकशततोऽध्यायः १४८ ॥

एकसौ उञ्चासका अध्याय ॥

जनमेजय कहताहै कि हे भगवन् भानुमतीका हरना और भगवान्की जय और देवलोकसे छालिक्यका लाना १ और सागरमें दिव्य यादवोंकी क्रीड़ा हे मुने ये सम्पूर्ण चरित्र मैंने सुने २ परन्तु निकुम्भके वधमें जो वज्रनाभका वध

कहा है सुने तिसको तुम्हारे से सुनने को मेरेको वडा आनन्द है ३ ऐसे सुन वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजन् वज्रनाभका वध और काम और साम्ब का विजय तेरे को कहूंगा ४ हे राजन् युद्धको जीतनेवाला यह वज्रनाभ सुमेरु की शिखरमें तप करनेलगा ५ जब तेजस्वी ब्रह्मा तिसपर प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि वरब्रूहि अर्थात् वरमाग ६ ऐसेसुन वज्रनाभ कहनेलगा कि सपूर्ण देवताओंसे मैं अवध्यहोजाऊं ऐसे ब्रह्मासे वरलेकर पश्चात् रत्नमय वज्रपुरको प्राप्तहोकर वसताभया ७ और नगरके चारोंतरफ अनेक शाखा नगर वसाये पश्चात् यह वज्रनाभ दुष्टात्मा वरदान करके गर्वितहुआ अपने पुरको और जगत् को वाधा करनेलगा ८ और हे राजन् स्वर्गको हरके यह वज्रनाभ कहनेलगा कि हे इन्द्र त्रैलोक्य को तो मैं शिक्षा करूंगा ९ और स्वर्ग को नहींदेहै तो हे इन्द्र मेरेको युद्धदे क्योंकि देवता और दानवोंको सम्पूर्ण जगत् सामान्यही है १० ऐसे सुन इन्द्र बृहस्पतिजी के साथ सलाहकरके वज्रनाभसे वचन कहनेलगे ११ कि हे सौम्य हमारा पिता कश्यपमुनि यज्ञ में दीक्षित है सो जब यज्ञ निवृत्त होजायगा तब जैसा न्यायहोगा वैसा वे करदेंगे १२ ऐसे इन्द्रके वचनसुन पिता कश्यपजीके पास जाकर कहनेलगा स्वर्गका राज्य मेरेको दो ऐसे सुन जैसे इन्द्र से कहा था वैसेही कहनेलगे १३ कि हे पुत्र तू वज्रपुरमें जा यज्ञके अन्तमें जो न्यायहोगा सो होजावेगा जब कश्यपजीने ऐसे कहा तब वज्रनाभ आपही नगरको चलागया १४ और महेंद्र द्वारकाको चलागया तहां वज्रनाभका वृत्तांत भगवान्के आगे कहताभया १५ भगवान् इन्द्रके वचनसुन कहनेलगा कि हे इन्द्र अब तो यह अश्वमेध यज्ञ उपस्थितहै पश्चात् वज्रनाभको मैं मारूंगा १६ ऐसे सुन इन्द्रने कहा कि हे भगवन् तहां तो वायुका भी प्रवेश नहीं है फिर कैसे तिस का वधहोगा १७ ऐसे कह भगवान् कृष्णचन्द्र को प्रणामकरके स्वर्ग में गया पश्चात् जब यज्ञ समाप्तहोगया तब दोनों सुरोत्तम प्रवेशहोनेका चिन्तवन करते भये १८ पश्चात् यज्ञमें भद्रनामा नृत्यकरके ऋषियोंको प्रसन्न करताभया पश्चात् प्रसन्नहुये ऋषियोंसे देवताओंके तुल्य वरदान मागताभया १९ पश्चात् वरदान लेकर देवताओं के तुल्यहुआ सारी पृथ्वीपर विचरनेलगा पश्चात् सम्पूर्ण क्षेत्रों में विचरताहुआ यह इन्द्रके पास आया २० इन्द्रने कहा कि हे मित्र एक वज्रनाभका पुरहै जिसमें कन्यारूप रत्नहै सो तहां प्रवेशकरा तिस वज्रनाभके चरगा

कीसी कान्तिवाली प्रभावती नाम कन्याहै २१ व सो अपनी इच्छासे पतिको वरनेकी इच्छा करती है व प्रद्युम्न भी गुणोंसे अधिकहै २२ सो हे भद्र तहां जाके प्रद्युम्नके सम्पूर्ण गुण वर्णन कर २३ वरदिया हुआ नटवर तहा जाके सम्पूर्ण वृत्तान्त कहता भया २४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायावज्रनाभप्रद्युम्नोत्तरेशतो परिनवचत्वारिंशोऽध्याय १४९॥

एकसौ पचासका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् हंस ऐसे सुनकर वज्रपुरमें प्राप्तहुये व कमलों में जाके क्रीडा करनेलगे १ पश्चात् मधुरशब्द तहा भाषण करते भये पश्चात् वज्रनाभके अन्त पुरमें शब्द करनेलगे २ तव वज्रनाभने बहुत प्रियवचन कहे व सत्कार करके कहा कि हे हंसो तुम निर्भय मेरे स्थान में वासकरो ३ यह मेराघर तुम्हाराही है ऐसे वज्रनाभके वचनसुन दानवेन्द्रके मकान में वास करनेलगे ४ तहा वे मनुष्यकी वाणी से अनेकप्रकारकी कथा कहतेभये व तहा दैत्यों की वृद्धस्त्री अनेकप्रकार की कथा सुनतीहुई रमणकरती भई ५ पश्चात् जहा तहा विचरतेहुये हंस सुन्दर हासवाली प्रभावती नाम वज्रनाभ की पुत्री को देखते भये ६ पश्चात् तिस सखीको प्रसन्नकरके हंसमुखी करते भये पश्चात् वज्रनाभकी पुत्रीको अनेकप्रकारके आख्यान कहते भये ७ व कहनेलगे कि हे सुदरि हे प्रभावति रूप व शीलकरके हम तेरेको त्रैलोक्यमें विचित्रदेखें हैं ८ व हे भीरु तेरा यौवन चलाहुआ जाताहै व गयाहुआ फिर हाथ आता नहीं ९ व हे देवि कामोपभोगके तुल्य और सुखइससंसारमें नहीं १० व हे शोभने तेरे पिता ने स्वयम्बर स्थापन करदियाहै सो तू किसीभी देवता व असुरको नहीं वरती है ११ क्योंकि वे तेरे रूप शीलकेसमान नहीं हैं इसवास्ते लज्जितहुये जाते हैं हे प्रभावति तेरे समान तो रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्नहै १२ परन्तु वह किसवास्ते यहा आवे जिस प्रद्युम्नके समान इस त्रिलोकी में नहीं व कुलमें नहीं व सुन्दर अङ्गवाला प्रद्युम्न देवताओं में देवताहै १३ व दानवों में दानव व मनुष्यों में महावल धर्मात्मा मनुष्यहै हे देवि जिसको देखके स्त्रियों की जंघा ऐसे भिरती हैं जैसे गौवों की ओहंडी १४ व नदियों के श्रोत व जिसका पूर्ण चन्द्रमा के

समान मुखहै व कमलकेसे नेत्रहैं १५ व सिंहकीसी कटिवाला है शुभे जगत्माह से सारसार निकासके विष्णुभगवान् ने यह पुत्र उत्पन्नकराहै १६ व यह शम्बर ने हरलियाथा सो पापी भी इसने मारदिया व हे शोभने तू प्रद्युम्नको वरके जिन जिन बातोंको विचारेगी १७ सो सम्पूर्ण पूर्ण होजावेंगी प्रद्युम्नके समान तीनों लोकों में कोई नहीं १८ जिस प्रद्युम्नकी कान्ति अग्निकीसी है व क्षमा पृथ्वी कीसी है व तेज सूर्यकेसाहै व गाम्भीर्य कुण्डकेसा १९ हे राजन् जनमेजय प्रभावती ऐसे सुनके हँसतीहुई वचन कहनेलगी कि हे सौम्याहो मनुष्यलोक में विष्णु तो मैंने बहुत बार सुनाहै २० अपने पिताके मुखसे व बुद्धिमान् नारद मुनि के मुखसे सो दैत्योंका नाशकरनेवालाहै २१ व प्रदीप्त चक्र व शार्ङ्गधनुष व गदा इन्हों से शाखा नगरमें बसनेवाले दैत्योंका संहार करनेवालाहै २२ तिसका पुत्र प्रद्युम्न ऐसे प्रभाववालाहै कि त्रिलोकी में तिसके समान कोई नहीं ऐसे सुन प्रभावती कहनेलगी कि मेरापति तो वृष्णिकुलमें होनेवाला प्रद्युम्नहोने को योग्यहै २३ व दैत्योंको नाशकरनेवाला हरि व प्रद्युम्न असुरोंकी वृद्धस्त्रियोंसे भी बहुत सुनाहै व प्रद्युम्नका जन्म व बलवान् शम्बरका वधभी सुनाहै २४ हेसखि प्रद्युम्न मेरे हृदयमें नित्यबसै है व हे सखि तिसके समागममें कोई कारण नहीं दीखता २५ हे सखि मैं तेरी दासीहूं व तू चतुरहै तिससे मेरा समागमकरा सखी ऐसे वचन सुनके सान्त्वना करावे हँसतीहुई ऐसे वचन कहनेलगी २६ कि हे शोभन हासवाली तेरी दूती मैं तहां जाऊँगी व इस तेरी उदारभक्तिको तिस सुन्दरके आगे कहूंगी। २७ और वह प्रिय जैसे तेरे समीप आजावे वैसेही करूंगी ऐसे कह संपूर्ण वृत्तान्त दानवेन्द्रको कहनेलगी। २८ पश्चात् दानवेन्द्र सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुन कहनेलगा सिद्ध चारणोंकेपास वह नटोंमें श्रेष्ठ मैंनेभी सुनाहै परन्तु यह खबर नहीं कि कहां बसे हैं २९ हे राजन् ऐसे दानवेंद्र के वचन सुन हंसी कहनेलगी कि हे महासुर वह दितिका पुत्र नट सातोंद्वीपों में विचरता है जिसदिन तुम्हारे गुणका विस्तार सुनेगा तब तुम्हारे पुरमें भी प्राप्तहोगा ३० ऐसे सुन वज्रनाभने वे हंस कार्य्यकेवास्ते भेजदिये पश्चात् ये आनके इन्द्र व कृष्णकेवास्ते सम्पूर्ण वृत्तान्त कहतेभये ३१ पश्चात् वृत्तान्त सुनके तिस कर्म में भगवान् ने प्रद्युम्नको युक्त किया कि प्रभावती के साथ समागमकर ३२ व वज्रनाभ का वधकर देवी माया के आश्रय होकर प्रद्युम्न का नटवेष बनाया ३३ व भैमोंका नटवेष बना

दिया पश्चात् प्रद्युम्न तिन्होंका नायक बनादिया व साम्ब विदूषकबनाया व पास में गद और अनेकभैम स्थापनकरे ३४ व सम्पूर्ण बारमुख्या नटीबनाई व तैसेही भद्रक के सहायक बनाये पश्चात् ये सम्पूर्ण अति सुन्दर विमानमें बैठकर देवताओं के कार्यकेवास्ते जातेभये ३५ ये सम्पूर्ण एकसा रूपवाले वज्रनगरका जो शाखा नगर था तिसको प्राप्तहुये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वभाषायांवज्रनाभप्रद्युम्नोपाख्यानेशतोपरिपञ्चाशोऽध्यायः॥ १५०॥

एकसौइक्यावनका अध्याय॥

हे राजन् जनमेजय तिसके अनन्तर सबने यह जाना कि पहले सुनाहुआ भद्रनामा नटही आगया इन्होंको देखके वज्रनाभ आज्ञा देताभया कि इन्होंको उत्तम घरदो १ व भेट रत्नों से खूब आतिथ्यकरो और विचित्र वस्त्रलेकर अच्छी शय्या बनाओ २ ऐसे भर्ताकी आज्ञाको सुनके तैसेही करतेभये व पहले सुना था कि वह नटप्राप्त होगया यह सुन सबके बडा आनन्दहुआ ३ व पश्चात् संपूर्ण दैत्य आनन्द युक्तहोकर तिसको बहुतसा रत्न देतेभये ४ व पश्चात् वरदिया हुआ यह नटवर पुरवासियों के आनन्द के वास्ते नृत्य करनेलगा ५ पश्चात् रामायण का सम्पूर्ण नाटक तिन्हों के पश्चात् इस नृत्यको देखकर राक्षस बडे प्रसन्नहुये ६ व कङ्कण और हार व वैडूर्य मणिदई ७ व यह नट है ऐसे जानके वज्रनाभ ने हुक्मदिया कि इन्होंको वज्रपुरमें लेचलो ८ ऐसे दानवेन्द्र के वचन सुनके शाखा नगरवासियों ने नटवेष यादव वज्रपुरमें प्राप्त करदिये ९ व विश्वकर्माका रचाहुआ बहुत अच्छा आवास दिया १० इसके अनन्तर वज्रनाभ ने कालोत्सव कराया पश्चात् महाबल वज्रनाभ तिन्हों को बहुत से रत्नदेकर प्रेक्षाके वास्ते प्रेरताभया ११ पश्चात् अन्तःपुरको आच्छादन कराके तहां नृत्य कराया पश्चात् नटवेषको धारणकरे ये नृत्यकेवास्ते आरम्भ करतेहुये और अनेक प्रकार के बाजे बाजनेलगे १२ व अनेक प्रकारके गायन गान करनेलगे व अनेकप्रकार के गानोंसे हे भारत तिन असुरों को प्रसन्न करताभया १३ व प्रद्युम्न गद व वीर्य सपन्न गद ये नन्दीनाम बाजेको बजातेभये १४ व गायन गान करतेभये और रम्भाभिसार नाटक करतेभये और प्रद्युम्न तो नलकूबरहुआ १५ व साम्ब विदूषक हुआ और पश्चात यदुनन्दनोंने कैलास निरूपणकिया १६ व क्रोधहोके दुरात्मा

रावणको शापदिया पश्चात् पापोद्धार नृत्यकरतेभये १७ व पश्चात् नारदमुनिका नृत्य करताभया पश्चात् वस्त्र रत्न आभूषण हार तिन्होंको अनेक प्रकारके देतेभये १८ व विमान रथ हस्ती वहुतसे देतेभये और दिव्य चन्दन सुगंध, अगर देते भये १९ पश्चात् प्रभावती हंसीको कहनेलगी कि हे अनिंदिते अब में द्वारका में प्राप्तहोंगी क्योंकि मैंने प्रद्युम्न आज स्वप्नमें देखा २० व सम्बन्धकिया यह मैं तेरेको असत्य नहीं कहती २१ व मेरेको कहनेलगे कि हे सुन्दरि इस मेरे स्थान में वस हंसी ऐसे सुनके कहनेलगी कि हे कमललोचने ऐसाही होजायगा २२ पश्चात् यह अनेक प्रकारका विलाप करनेलगी कि हे सखि चन्द्रमा मेरेको दग्ध करताहै और शीतलपवन भी तत्काल दग्ध करताहै २३ ॥

इतिमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांवज्रनाभमप्रद्युम्नोनरेपकपचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५०

एकसौवावनका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् प्रद्युम्नकरके प्रसन्न चित्तवाली हुई प्रभावती यह कहनेलगी कि हे प्रिय तू भ्रमरहोके भौंरोंकेसाथ मेरीमालामें आजा १ ऐसे कहके यह सुन्दर रूपवाली अपने रूपको दिखाती भई और चन्द्रमा के किरणकेसे अङ्गोंको प्रकाश करतीभई २ पश्चात् प्रभावती के तिस रूपको देख प्रद्युम्नके ऐसे कामसागर वढा जैसे चन्द्रमाको देखकर समुद्र ३ पश्चात् प्रभावती ने इसको देख लज्जावती होके नीचेको मुख करलिया पश्चात् रोमाञ्चित अङ्ग वाला प्रद्युम्न पूछके तिस सुन्दर भूषणोंवाली प्रभावती को वचन कहनेलगे ४ कि हे प्रिये सैकडों मनोरथों से लब्धहुआ यह पूर्णमासी के चन्द्रमाकेसा मुख किसवास्ते नीचेको करती है ५ कुछ तो वचन कह हे सुन्दर मुखवाली प्रभाका उपमर्दन मतकरे ६ व भयको त्यागदे और यह मैं अञ्जलि वांधके तेरेको याचना करताहूं कि गन्धर्व्व विवाह करके मेरेऊपर अनुग्रह कर ७ क्योंकि देश कालके अनुरूपसे रूपकरके तू सतीकी प्रतिमा है ऐसे कहके तिस प्रभावतीका सुन्दर हाथ प्रद्युम्नको ग्रहण करलिया ८ व पश्चात् मणि में स्थितहुए अग्निकी परिक्रमा करली पश्चात् यदुनन्दन हंसीको कहनेलगे ९ कि रक्षाकेवास्ते द्वारपर ठहर पश्चात् तिस प्रभावती का सुन्दरहाथ पकडके शय्यापर प्राप्तकरतेभये १० व ऊपर बैठके वारम्वार मानिनाकरके शुभे शुभे ऐसा कहके मुख चुम्बन किया और

करनेवाला चन्द्रमा दीखताहै तब जन ऐसे प्रसन्न होते हैं जैसे प्रवाससे निवृत्त हुआ कांताको देखके नायक २० और हे भीरु जब प्रियहीन स्त्रियोंके विलापका साक्षी चन्द्रमा उदयहोताहै तब ऐसे नेत्रोंको आनन्द होताहै जैसे कांतको देख के प्रोषित कामुकाओंको २१ और हे प्रिये प्रवासीका आना कांत समागतोंको जैसे उत्साह करताहै और प्रियहीनोंको जैसे दावाग्नि तुल्यहै तैसेही वरांगना ओंको चन्द्रमाभी प्रिय औ विप्रियहै २२ और हे कांते तेरे पिताके भवनमें चंद्रमा की किरण नहीं पडती है इसवास्ते चन्द्रमाके गुण और दोषको तू नहीं जान ती २३ इस वास्ते मैं तेरे आगे वर्णनकरूंगा और हे प्रिये जो सम्पूर्णों में उत्तम वंशहै तिसमें तू वधूहै २४ और गुणोंका पात्रहै इस वास्ते हे बाले सम्पूर्ण लोकों को ईश्वर नारायणको तेरे श्वशुरको प्रणामकर २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांत्रिपञ्चाशदधिकशतोऽध्यायः॥ १५३॥

एकसौ चौवनका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय अति तेजस्वी कश्यपमुनि के यज्ञके अन्तमें सम्पूर्ण देवता और असुर अपने २ स्थानों में जातेभये १ और यज्ञ निवृत्त होतेही त्रैलोक्यके जीतनेकी इच्छा करताहुआ वज्रनाभ भी कश्यप जी के पास जाताभया २ पश्चात् कश्यपजीसे वचन कहनेलगा कि वज्रनाभ तू समझकर और हे पुत्र अपने स्वजनोंकरके सहित वज्रपुरमें वस व हे पुत्र इन्द्र तो तपसे भी अधिकहै व स्वभावसे भी समर्थ है व हे पुत्र ब्रह्मण्यहै व कृतज्ञहै ३।४ व ज्येष्ठहै व गुणों करके श्रेष्ठहै व सम्पूर्ण जगत्का पात्र शूरहै व सतांगति है व हे पुत्र इन्द्र सम्पूर्ण लोकों के राज्यको प्राप्तहै ५ हितमें स्थितहै व हे वज्रनाभ इन्द्र को तू जीतने को समर्थ नहीं है व जो तू मरने की इच्छा करताहै तो युद्धकर ६ हे भारत ऐसे कश्यपमुनि के वाक्य सुन कालपाश से व्याप्तहुआ वज्रनाभ तिन्होंको ऐसे नहीं सराहता भया जैसे मरनेकी वाञ्छा करनेवाला रोगी ७ औषधि को हे जनमेजय पश्चात् यह दुर्बुद्धि लोकभावन कश्यपजी को प्रणाम करके ८ पश्चात् त्रैलोक्य के विजयके आरम्भमें मति करताभया ९ हे राजन् पश्चात् वज्रनाभ बहुतसे जाति योधाओं को व बहुतसे मित्रोंको बुलाके व स्वर्ग के जीतने के वास्ते अग्रे प्रस्थान करता भया १० पश्चात् इसी कालमें कृष्णचन्द्र व इन्द्र

दोनों महाबल वज्रनाभके वधके प्रति हंसों को भेजते भये ११ पश्चात् यदु मुख्य महाबल यादव आयेहुये हंसों को सुनके व सलाह करके अत्यन्त चिन्ताको प्राप्त हुये १२ व कहनेलगे कि वज्रनाभ तो प्रद्युम्नसे मरेगा ऐसे सलाह करके वे महाबल हंसों को कहते भये १३ कि यह सम्पूर्ण वृत्तान्त इन्द्र व केशवको कहो ऐसे सुनके सम्पूर्ण वृत्तान्त यथार्थ कहते भये १४ पश्चात् इन्द्र व भगवान् ने फिर हंस भेजे व कहा कि यहकहो हे यादवाओ तुम्हारे कामकेसा रूपवाले व गुणोंकरके श्लाघ्य व अगोंसहित वेदोंको पढनेवाले व अनेक शास्त्रोंको विचारनेवाले १५ ऐसे पण्डित पुत्रहोवेंगे व तत्कालही जवान होजायँगे १६ हंस ऐसे कहके फिर वज्रपुर में गये व तहां इन्द्र व केशवका सम्पूर्ण कथन भैमों से कहते भये १७ पश्चात् प्रभावती प्रद्युम्नकेही समान श्रेष्ठपुत्र को जनती भई पश्चात् हे भारत यह तत्कालही सर्वज्ञत्व व यौवन को प्राप्त होगया १८ व हे भारत एक महीने में पिता के समान चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले पुत्रको चन्द्रवती जनतीभई १९ सो यह भी तत्काल यौवन और सर्वज्ञत्वको प्राप्तहोताभया २० और ऐसेही अनिंदित गुणवतीभी सर्व्वशास्त्रों के जाननेवाले गुणवान् और युवन पुत्रको जनती भई २१ और इन्द्र और उपेन्द्र के प्रसाद करके बढे पश्चात् एक दिन महलकी पृष्ठ पर वर्द्धमान सम्पूर्ण यादव देखे २२ और कहनेलगे कि इन्द्र और उपेन्द्रकी इच्छा से यह वार्त्ता है यह निश्चय जानो ऐसे विचार भ्रमयुक्तहुये दानव स्वर्गके जीतने की इच्छा करनेवाले शूरवीर वज्रनाभका सम्पूर्ण वृत्तात कहतेभये २३ वज्रनाभ तिस वृत्तान्तको सुनके कहनेलगा किपकडलो ये सम्पूर्ण मेरे कुलके धर्षक हैं २४ ऐसेकह सम्पूर्ण सेनाको आज्ञादई कि चारोंतरफसे दिशाओंको घेरलो और पकडलो और मारो २५ तिस असुरेन्द्र की आज्ञासे असुरों ने वैसाही किया पश्चात् पुत्रहैं प्यारे जिन्हों के ऐसी प्रभावती आदि माता रुदन करनेलगीं २६ इन्हों को दुःखित देखके हँसता हुआ प्रद्युम्न वचन कहनेलगा कि हे अबलाओ हमारे जीवतेहुये तुम भय मतकरो २७ व दैत्य हमारा क्याकरेंगे सर्वथा तुम्हारा कल्याणहो ऐसे कहके पश्चात् प्रद्युम्न निकुवहुई प्रभावती को कहनेलगा २८ कि हे प्रिये देख हाथमें गदालिये तेरा पिता स्थितहै और ये तेरे पितृव्य स्थित हैं और हे देवि ये तेरे भ्राताओर ज्ञाति के स्थितहैं २९ सो हे प्रिये ये तेरेवास्ते सम्पूर्ण मेरे पूज्यहैं और मान्यहैं सो तू अपनी बहनों को पूछ यह बडा दारुण

कालहै क्योंकि सम्पूर्ण दानवेन्द्र हमारे वधकी इच्छा करते हैं ३० हे प्रिये तेरी आज्ञामें स्थितहुये जो हमहैं हमको यहां क्या करना योग्यहै ऐसे सुनके रोतीहुई प्रभावती प्रद्युम्नको ऐसे वचन कहनेलगी ३१।३२ व शिरके ऊपर अंजलि धरके गोड़ों करके पृथ्वी में गिरगई और कहनेलगी कि हे प्रिय हे शत्रु निवर्हण शस्त्र ग्रहणकर और अपने आत्माकी रक्षाकर ३३ क्योंकि जिससे हे यदुनन्दन तुम तो जीवतेहुये हैं पुत्र जिन्हों के ऐसे स्त्रियों को देखनेवाले होना ३४ व हे नृपवर श्रेष्ठ वैदर्भीको और अनिरुद्धको यादकरके हे अरिमर्दन इस व्यसनसे छुटाओ और हे भगवन् बुद्धिमान् दुर्वासाने मेरेको बरदानभी दियाहै ३५ कि हे प्रभावति तू वैधव्यरहिता और जीवपुत्रा होवेगी यह मेरे हृदयको आश्वासहै कि सूर्य और अग्निकेसे तेजवाले मुनिकेवाक्य अन्यथा नहींहोते ३६ हे राजन् प्रभावती ऐसे कहके व खड्गको लेकर औरखूबमाजकर यह मनस्विनी प्रभावती प्रद्युम्नको देती भई और यहभी कहतीभई कि हे शूरवीर तू जयकर ३७ ऐसे कहतीभई पश्चात् यह धर्मात्मा आनन्दयुक्त आत्मासे भक्तियुक्त प्रियाके दियेहुये खड्गको प्रणाम करके तिस खड्गको ग्रहणकरताभया ३८ पश्चात् चन्द्रवती आनन्दयुक्तहुई गद को खड्ग देतीभई और गुणवती महात्मा साम्बको खड्ग देतीभई ३९ इसके अनन्तर प्रभु प्रद्युम्न प्रणत हंसकेतु को कहता भया कि हे हंसकेतो तू साम्ब और यादवों के सहित यहीं युद्धकर ४० व हे अरिंदम में सम्पूर्ण दिशाओं में और आकाश में युद्ध करूंगा ऐसे कहके पश्चात् मायावियों में श्रेष्ठ यह प्रद्युम्न माया करके रथको रचताभया ४१ व पश्चात् हे कौरव्य सम्पूर्ण नागोत्तमों में उत्तम व अनन्त भोगवाला और हजार शिरोंवाला और ऐसे नाग को अपना सारथि बनाताभया ४२ पश्चात् तिस मुख्य रथकरके प्रभावती को आनन्द युक्त करतेहुये असुरों की सेनामें ऐसे विचरनेलगे कि जैसे तृणोंकेविषे अग्नि ४३ पश्चात् सर्प के समान और अर्द्धचन्द्रमाकीसी कांतिवाले और भेदन करनेवाले ऐसे बाणोंसे दितिकेपुत्रोंको भेदन करताभया ४४ पश्चात् रणमेंमत्तहुये असुर प्रद्युम्नके शस्त्रों से व्याकुलहुये और निश्चय को स्थितहुये कमलकेसे नेत्रवाले प्रद्युम्न को भेदन करतेभये ४५ पश्चात् प्रद्युम्न कितनेकोंकी तो बाजूबंद और कंकणों से भूषित भुजाओं को छेदन करताभया और कितनेक असुरों के कुण्डलों सहित शिरों को छेदन करताभया ४६ व अत्यन्त तेजवाले प्रद्युम्नके शस्त्रोंसे काटेहुये असुरों

के शिर और शरीरके टुकड़े इन्हों करके पृथ्वी व्याप्तहोगई ४७ पश्चात् देवगणों से सहित युद्धको जीतनेवाला ऐसा आनन्द युक्तहुआ इन्द्र भैमोंकेसाथ असुरों के युद्धको देखताभया ४८ पश्चात् जो दैत्य गद और साम्ब के सम्मुख जातेभये सो सम्पूर्ण ऐसे मृत्युको प्राप्त होतेभये कि जैसे महोदधिमें जलजन्तु ४९ पश्चात् देवताओं का पति इन्द्र युद्धको विषम देखके पश्चात् अपने रथको गदके अर्थ भेजताभया ५० और मातलिनाम सूतको भेजताभया और सांबके अर्थ ऐरावत हस्तीको भेजताभया ५१ व विभु इन्द्र जयन्तको प्रद्युम्नका सहायक भेजताभया और ऐरावत के प्रेरने के वास्ते प्रवरको युक्त करताभया ५२ ऐसे सुराध्यक्ष ब्रह्मा को जनाके पश्चात् अमित पराक्रमवाले जयन्त और प्रवर और मातलि सारथि और ऐरावत इन सम्पूर्णों को विधि का जाननेवाला इन्द्र श्रेष्ठ कर्म्मों में योजन करताभया ५३।५४ पश्चात् महाबल प्रद्युम्न और जयत दोनों हर्म्यको प्राप्तहुये और शरजालोंके समूह से असुरो का नाश करतेभये ५५ पश्चात् रणदुर्जय प्रद्युम्न गदको कहताभया कि हे उपेंद्रानुज इन्द्रने तेरेवास्ते ये घोडे जोडके रथ भेजाहै ५६।५७ व यह मातलि महाबल सारथि भेजाहै और साम्बकेवास्ते प्रवर चढ़ाके ऐरावत हस्ती भेजा है ५८ व हे अच्युत के छोटेभ्राता आज तो द्वारका में रुद्रकी महापूजा है और पूजाके पश्चात् कल भगवान्ही यहा आवेंगे ५९ तब तिन्होंकी आज्ञा से बाधवों सहित वज्रनाभको मारेंगे और स्वर्ग के जयकेप्रति अभ्युत्थान कृत पाप मेरेको लगेगा ६० व कलही यह वज्रनाभ पुत्र सहित इन्द्र को भी जीतेगा और अप्रमाद यह करना योग्यहै ६१ व हे गद बुद्धिमान् नरको सम्पूर्ण उपायों से स्त्रियोंकी रक्षा करनी योग्यहै क्योंकि स्त्रियोंका धर्षण लोकमें मरणसें भी अधिक कहाहै ६२ पश्चात् सो महाबल प्रद्युम्न गद और साम्बको ऐसे कहके पश्चात् अपनी दिव्यरूप मायाकरके एक करोड अपने स्वरूप प्रद्युम्नोंको रचताभया ६३ व दैत्यों का रचाहुआ दुरासद तमको नष्ट करताभया ऐसे निम रिपुमर्दन प्रद्युम्नको इन्द्र देखकर बहुत प्रसन्नहुआ ६४ व सपूर्ण भूत सपूर्ण शत्रुओं में वर्ततेहुये प्रद्युम्नको ऐसे देखतेभये कि जैसे आत्मामें वर्तताहुआ क्षेत्रज्ञ६५ ऐसे प्रद्युम्नके युद्ध करतेहुये रात्रि व्यतीतहोगई और प्रद्युम्नने अति तेजसे असुरों के तीनभाग मारदिये ६६ व रणभूमिमें इतने प्रद्युम्न युद्ध करताभया इतने गंगाजीके जलमें जयंतने संध्योपासन कर्म किया ६७ और इतने महाबल न-

पत युद्धकरताभया इतने आकाशगगामें प्रद्युम्नने सध्योपासन कर्मकिया ६८॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामद्युम्नदैत्ययुद्धेशतापरिचतु पचाशत्तमोऽध्यायः॥

एकसौपचपनका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय जब जगत्का चक्षुरूप सूर्य उदयहुआ तब सर्पोंका शत्रु गरुडकरके हरिदेव प्रकट होताभया १ और हे कुरुनदन हस और वायु और मनकेसा बेगवाला गरुड आकाश में इन्द्रके पास आन के खडाहुआ २ और पश्चात् इन्द्रके सन्निद्धमें दैत्यों को भय करनेवाले पाचजन्य को हरिभगवान् बजातेभये ३ पश्चात् प्रद्युम्न तिस शखके शब्दको सुन भगवान्के समीप आये ४ और भगवान्ने देखतेही कहा कि हे पुत्र जल्द जा और वज्रनाभको मार ५ और फिर भगवान् कहनेलगे कि हे पुत्र गरुडपर चढके जा ऐसेसुन यह शूरवीर दोनों सुरोत्तमोंको प्रणामकर तैसेही करताभया ६ और हे राजन् पश्चात् मनकेसा बेगवाले गरुडपर सवार होकर शीघ्रही दुरत युद्धवाले वज्रनाभके पास जातेभये ७ तिसके अनतर सम्पूर्ण अस्त्रोंका जानने वाला गरुड रणभूमि मे स्थितहुआ वज्रनाभको पीडाकरताभया पश्चात् गरुड करके प्राप्तहुआ प्रद्युम्न गदा करके हृदयमें तिसको मारताभया ८ पश्चात् मोह के वशहुआ यह दैत्य प्रद्युम्नने जब मारा तब मुखसे बहुतसा रुधिर गेरनेलगा और मरेहुयेकी तरह गिरगया ९ पश्चात् रणदुर्जय प्रद्युम्न तिसको कहनेलगा कि होशकर पश्चात् जब सज्ञा लब्धहोगई तब यह शूरवीर वज्रनाभ प्रद्युम्नको यह वचन कहताभया १० कि हे यादव यह तैंने श्रेष्ठ काम किया और तू वीर्य करके मेरा श्लाघ्य रिपुहै इसवास्ते हे महाबल यह प्रहार कालहै इसवास्ते मेरे आगे स्थिरहो ११ पश्चात् वज्रनाभ ऐसे कहके और सैकड़ों मेघोंकेसे शब्दको छोड़के पश्चात् घटाकरके सहित बहुत काटोंवाली गदाको छोडता भया १२ व हे राजन् तिस गदाकरके मस्तकमें हननकिया यदुनन्दन प्रद्युम्न रुधिर गेरता हुआ मोहको प्राप्तहोताभया १३ पश्चात् पुत्रके शत्रुको नाश करनेवाला भगवान् कृष्णचन्द्र ऐसे तिस प्रद्युम्नको देखकर आश्वासना करानेवाला पाचजन्य शखको बजातेभये १४ पश्चात् पाचजन्यके शब्द से महाबल प्रद्युम्नको सचेत देखकर सपूर्ण लोक मुदितहोगये और इन्द्र और केशव तो विशेषकरके प्रसन्न

होगये १५ हे भारत पश्चात् तिस प्रद्युम्नके हाथ में जो तीक्ष्ण नेमिवाला और हजार आरोंवाला और दैत्य सहके कुलका अंत करनेवाला जो ऐसा चक्रथा १६ तिसको सुरेंद्र और महात्मा कृष्णको नमस्कारकर वज्रनाभके नाशके वास्ते प्रद्युम्न छोड़तेभये १७ पश्चात् प्रद्युम्नका छोड़ाहुआ वह चक्र दैत्योंके देखतेहुये वज्रनाभके शरीर से शिरको दूर करताभया १८ और रण के आगनमें रणदक्ष और भयानक और यत्न करताहुआ ऐसे सुनाभ दैत्यको गद मारताभया १९ और शत्रुओंको नाश करनेवाला सात युद्धमें स्थितहुये दैत्योंको तीक्ष्णवाणोंसे प्रेताधिपके स्थान को प्राप्त करताभया २० पश्चात् जब वज्रनाभ मारदिया तब शूरवीर निकुंभभी नारायणके भयसे अर्दितहुआ शूरवीर निकुंभ षट्पुरको जाता भया २१ पश्चात् जब वज्रनाभ देवरिपु निवर्हण होगया तब महेन्द्र और केशव वज्रपुरमें अवतीर्णहुये २२ पश्चात् लब्धहुये शत्रु पराजयका दुःखापनोदन करते भये २३ और भयसे अर्दितहुये बाल वृद्धको आश्वासना करातेभये २४ पश्चात् महात्मा इन्द्र और उपेंद्र सलाहकारके और बृहस्पतिके मतको प्राप्तहोके भूतकाल में और वर्त्तमानकालमें हे राजन् वज्रनाभके राज्यके चारभागकरतेभये २५ जिस में चौथाभाग तो जयतके पुत्र विजयकोदिया और चौथाभाग रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्नको दिया और हे जनेश्वर चौथाभाग चन्द्रप्रभको देताभया २६ पश्चात् कुछेक अधिक चारकरोड़ ग्रामों में व्याप्त जो वज्रपुरकी तरह शाखापुर सहस्र तिन्होंको प्रसन्नहुये इन्द्र व केशव चारभाग करतेभये २७ व हे शूरवीर कंबल व मृगचर्म व वस्त्र व अनेकप्रकारके रत्न इनसपूर्णोंका चारभाग करतेभये २८ तिसके अनन्तर वे शूरवीर इन्द्रकी आज्ञासे अभिषिक्त करदिये देव दुन्दुभिके बाजाओं करके २९ व गंगाजी के जलकरके आप बुद्धिमान् केशवने और इन्द्रने ये माधव नंदन राजा बनादिये व महात्मा माधवोंमें मातृज गुणकरके बुद्धिमान् विजयकी गति तो आकाशमें प्रसिद्धही होतीभई ३० व संगिर्तिजय भगवान् इन्द्र जयन्तको अभिषेचनकराके कहनेलगा ३१ । ३२ कि हे वीर ये राजा तेरेको गनिन्धर्व्हे मेरे वशका करनेवाला एक और केशव वगका करनेवाला तीन मेरी आज्ञासे तुम संपूर्ण भूतोंसे अवध्यहोवोगे ३३ व स्वर्गमें तुम्हारा जाना आना सिद्धहोगा और आकाशमें व भेमागिरस्थित सुंदर द्वारकामें आना जाना श्रेष्ठहोगा ३४ व दिशा गजहस्तियों के बच्चोंको व उच्चैःश्रवा अश्वोंके व तथा कल रथोंके दानरत व

साव व गदको ऐरावत के पुत्र शत्रुजय व रिपुजयकोदे ३५ और आकाश करके भैम रक्षित द्वारकाको जावो ३६ व भैमनन्दनआवो पश्चात् देवताओं का राजा भगवान् इन्द्र ३७ ऐसे आज्ञादेकर स्वर्ग में जाताभया व केशव भगवान् द्वारका में जातेभये ३८ व पश्चात् छ महीना पर्यन्त गद व प्रद्युम्न और साव ये तीनों वसतेभये और जव राज्य जमगया तव ये महाबल द्वारकाको प्राप्तहोतेभये ३९ हे देवताओं के समान जनमेजय अव भी वे राज्य उत्तर में सुमेरुके पास स्थितहैं व इतने जगत् रहेगा इतने स्थितरहैंगे ४० व हे विभो मूसल युद्ध होलिया और सम्पूर्ण यादव स्वर्ग को चलेगये तव गद व प्रद्युम्न व सांव ये तीनों वज्रपुर को जातेभये ४१ हे जनमेजय पश्चात् तहां वसके फिर स्वर्ग में प्राप्त करनेवाले शुभ कर्म्मों करके लोककर्त्ता कृष्णचन्द्र के प्रसादसे स्वर्ग में जायँगे ४२ हे नृदेव यह प्रद्युम्नोत्तर मैंने तेरेआगे कहाहै यह धन व यश आयुको वढाताहै व शत्रुओं का नाश करताहै ४३ व पुत्र पौत्र व आरोग्य व धन व सपत्ति इन्होंको वढाता है व विपुलयशको प्राप्त करताहै जैसे व्यासजी के वचन ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांवज्रनाभवधोनामशतोपरिपंचपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इसके अनन्तर गरुड़परस्थित हुआ कृष्णचन्द्र चारोंतरफ से प्रतिनादित व देवसद्मों से प्रकाशित ऐसीद्वारका को देखतेभये १ व तैसेही मणि पर्वतके यन्त्र व क्रीड़ागृह और उद्यान वनमुख्य वल भी व आगण इन्हों को भी देखताभया २ व देवकी के पुत्र कृष्णचन्द्र जब पुरीको प्राप्तहुये तव देवराज इन्द्र विश्वकर्म्मा बुला के यह कहनेलगा ३ कि हे शिल्पियोंमें श्रेष्ठ जो तू मेरे प्यारकी [illegible] है [illegible] चन्द्र के प्यारकेवास्ते मनोहर ४ व उद्यान शतोंसे सहि[illegible] के सम[illegible] [illegible] व हे विबुधश्रेष्ठ मेरी पुरी कैसीसुन्दर रच[illegible] विश्व[illegible] [illegible] रत्नरूप वस्तुहैं सो सम्पूर्ण [illegible] द्वारावतीमें [illegible] चन्द्र सम्पूर्ण सुर का[illegible] [illegible]उये घोर [illegible] को [illegible] विश्वकर्मा तहा[illegible] [illegible]तरफसे [illegible] की पुरी अमर[illegible] [illegible]गरुड़ध[illegible]

प्रायों करके अलंकृत तिस पुरीको देखतेभये ८ पश्चात् प्रभुनारायण तिस द्वारका को देखके सर्वार्थ सम्पन्नहुये व प्रसन्नहुये प्रवेश होने को मन करतेभये ९ व विश्वकर्मा के रचेहुये दृष्टिको मनोहर वृक्ष खडोंको देखनेभये १० व कमलोंके समूह व हंस सेवित जलकरके शोभित ऐसी पुरी को देखतेभये ११ व सुवर्ण व चांदी के प्रकारसे वेष्टित देखतेभये व अट्टालकाओंकर ऐसे शोभाहोतीभई जैसे मेघों करके आकाशकी १२ और चैत्ररथ और नन्दन केसे बागों करके द्वारका ऐसे भूषित होती भई जैसे कि मेघों करके स्वर्ग १३ व पूर्वदिशा में मणि कांचन तोरणवाला और रमणीक सानु और गुफाओंवाला रैवतक शैल शोभाको प्राप्त होताभया १४ व द्वारका के दक्षिण दिशामें लताओं से वेष्टित पञ्चवर्ण शोभा देताभया और पश्चिम दिशामें इन्द्रकेतुकेसी शोभावाला क्षय शोभाको प्राप्तहोताभया १५ व उत्तर दिशा में मन्दराचल पर्वतके समान वेणुमान् और रैवतके प्रति १६ चित्रक पञ्चवर्ण पाञ्चजन्य सर्वर्तुक ये वन शोभाको प्राप्तहोतेभये १७ व लताओं से वेष्टित मेरुप्रभवन शोभाको प्राप्तहोतेभये और भानुवन और पुष्पक महावन शोभा को प्राप्त होतेभये १८ व अक्षक और बीजक और मन्दार इन्हों करके शतावर्तनाम भूषित होताभया १९ व तैसेही चारोंतरफ को चैत्ररथ और नन्दनबन और रमणभवन ये शोभाको प्राप्त होतेभये २० व हे भारत वैदूर्य केसे पत्रोंवाले कमलों करके मन्दाकिनी नदी पूर्वदिशामें शोभाको प्राप्त होतीभई २१ व विश्वकर्मा करके प्रेरेहुये देवगन्धर्वों करके पर्वतोंकी सानुभूषित होतीभई २२ व महानदी पचास महामुखों करके चारोंतरफ करके भिगोतीहुई द्वारकाको प्रवेश करती भई २३ व अप्रमेय व बहुतऊंची व अगाध खाईकरके युक्त और श्रेष्ठ प्राकार करके युक्त व सुधापाण्डुरमेयुक्त २४ व तीक्ष्णयन्त्र शतघ्नी करके युक्त व हेमके जालों से भूषित व महाचक्र आयसों करके भूषित ऐसी द्वारकापुरीको भगवान् देखने भये २५ व आठहजार रथ व छोटे घुघुरुओंवाले नर्त्तक इन्हों करके द्वारका भूषित होतीभई व ऊंची ऊंची पताकाओं करके ऐसी शोभा होतीभई जैसे देवपुरीकी शोभा होतीहै २६ व आठयोजन विस्तृत व अचल व बारह योजन लम्बी व दुगुना उपनिवेशवाली ऐसी पुरीको देखने भये २७ व अष्टमार्ग वाली व महारथ्या व महापोडश चत्वरोंवाली व एक मार्ग परिक्षिप्त व साक्षात् उशनाकी रचीहुई ऐसी द्वारकाको देखने भये २८ व तिस द्वारकामें श्रीभी पुष्ट

करतीभई व यादवों का तो क्या कहनाहै व तिस द्वारकामें सात महायूथ सेनाके होतेभये २६ व तिसी जगह विश्वकर्मा ने अनेक प्रकारके यादवों के मकान रचे ३० व काञ्चनमणि सोपानों करके युक्त तिन भवनों को देखकर भगवान् वहुत प्रसन्न होतेभये ३१ व भीमघोष व महाघोष व प्रासाद वरचत्वरों करके व ऊंचीर पताकाओंकरके व प्रकाशकरतीहुई ३२ कांचनाग्र महलोंके शिखरोंकरके व रमणीय गृहोंकरके ३३ व सफेद२ शृङ्गों करके व सुवर्ण के कलशों करके पुरी की ऐसी शोभा होतीभई जैसे रमणीय विचित्र शिखरों करके पर्वत ३४ व पुष्प वृष्टि के समान पाचप्रकारके सुवर्ण के पुष्पों करके व मेघके समान गूंजनेवाले नानारूपवाले पर्वतों करके ३५ व विश्वकर्मा के रचेहुये चन्द्रमा सूर्यकेसी कांति वाले आकाशको छूतेहुये भवनों करके अत्यन्त शोभा होतीभई ३६ व श्रेष्ठवन द्रुमों करके व वासुदेव व इन्द्रके गृहमेघों करके अत्यन्त भूपित होतीभई ३७ इन्हीं करके ऐसे भूपित सुन्दर द्वारका को देखतेभये जैसे कि मेघों करके व्याप्त आकाश ३८ व भगवान् वासुदेवका मकान चारयोजन लम्बा व चारयोजन चौड़ा व महाधनवाला विश्वकर्मा ने रचा ३९ व इन्द्रका प्रेरित त्वष्टा सुन्दर महलों से व पर्वतों से भूपित जो मन्दिर रचतेभये ४० सो सम्पूर्ण भूतों के मनको हरनेवाला सुवर्णका मन्दिर ऊंचा मेरुशृङ्गकीतरह शोभित होताभया ४१ व सम्पूर्ण प्रकारके प्रासादों से भूपित पश्चात् रुक्मिणी का श्रेष्ठवास विश्वकर्मा ने रचा पश्चात् वहुत सुन्दर सत्यभामाका मदिररचा ४२ व विमल आकाशके समान पताकाओं करके अलङ्कृत व सभा मकानों से भूपित ऐसा मुख्य प्रासाद जाम्बवतीका रचा४२।४४ व यह प्रासाद तिन सम्पूर्णोंको अपनी कान्तिकरके तिरस्कार करताहुआ मध्य में ऐसे प्रकाश करताभया जैसे कि उदय होताहुआ सूर्य प्रकाश करता है ४५ विश्वकर्मा का रचाहुआ व कैलासके शिखरके समान व सुवर्ण और अग्निके तुल्य दीप्त ऐसा प्रासाद अत्यन्त शोभित होताभया ४६ और मेरुनाम प्रासाद नाग्नजितीका रचा तिसमें भगवान् ने नाग्नजिती को प्रवेशकिया ४७ और पद्मकेसी कान्तिवाला पद्मकूलनाम प्रासाद भामाकेवास्ते रचतेभये ४८ व सपूर्ण गुणोंसेयुक्त सूर्यप्रभनाम प्रासादलक्ष्मणाके वास्ते रचा और वैदूर्य के समान कान्तिवाला हरित प्रासाद मित्रविंदाकेवास्ते वनवातेभये ४९ व तिन सपूर्ण प्रासादों में यह प्रासाद विश्वकर्म्माने श्रेष्ठ रचाहै ५० और अत्यन्त रमणीय पर्व्वतकी-

तरह अधिष्ठित सुवार्ता महिषी का केतुमान्नाम भवनरचा ५१ व सम्पूर्ण रत्नों से जटित व एकयोजन विस्तारवाला और शोभायुक्त केशव भगवान् का मन्दिर तहां रचा ५२ व तिन सम्पूर्ण भवनोंमें भगवान्की क्रीड़ाकेवास्ते भवन पृथक्रचे ५३।५४ व वैजयन्त महान्पर्वत और प्रद्युम्न सरकेप्रति हंसकूटका शृंग साठताल ऊंचा और तीसताल विस्तृत और किन्नर महानागोंकरकेयुक्त ऐसापर्व्वत सम्पूर्ण भूतोंके देखतेहुए तहां प्राप्त करादिया ५५ व जो आदित्य मार्ग में स्थित उत्तम कमलों से व्याप्त और सुवर्णमय विमानोंसे व्याप्त तीनों लोकों में विख्यात ऐसा मेरुशिखरभी तहां प्राप्तकरादिया ५६ और तहां पारिजातवृक्ष आप भगवान् लाते भये और जब भगवान् कल्पवृक्षको लेकरचले तब रक्षा करनेवाले देवताओं के साथ अद्भुत युद्धहोताभया ५७ व वासुदेवकेवास्ते रत्न पुष्प फलोंवाले वृक्षरचे ५८ और कमलोंके समूह और जलोंसे युक्त और रत्न सौगन्धिक कमलोंवाली और मणिहेम प्लवोंकरके व्याप्त ऐसी नदी और सर रचे ५९ और तिन नदियों के किनारे अनेकप्रकार की शाला और ताल व कदम्ब और रौहिणेय शोभा को प्राप्त होतेभये ६० और जो हिमवान् में वृक्षथे और जो सुमेरु में थे सम्पूर्ण भगवान् के वास्ते तहां विश्वकर्म्मा ने रचदिये ६१ और तिन वनों की सन्धियों में लाल और पीले व श्याम व श्वेत ऐसे पुष्पोंवाले वृक्ष तहां रचदिये ६२ और तिस श्रेष्ठ पुरमें समकूल जलकरके युक्त और शान्त शर्करा वालुकोंवाली और प्रसन्न जलोंवाली ऐसीनदी रची ६३ और मत्तमयूर और सदामद कोकिल शब्द करतेभये और तहां गोपुरों में गो और महिषोंका निवास बनादिया ६४ व तिस रमणीय पुरी में वराह मृग पक्षियोंका निवास बनादिया ६५ और तिसपुरी का सौहाथ ऊंचा विश्वकर्म्मा ने दुर्ग रचदिया और वह दुर्ग अत्यन्त सौम्य पर्व्वतकी तरह वेष्टित होताभया ६६ और तहां विश्वकर्म्माने मुख्य मुख्य पर्व्वत और नदी व सरोवर व वन व उपवन रचदिये ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांद्वारकानिवेशनिर्माणनामएको परिषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५६॥

एकसौ सत्तावनका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे द्वारका को देखतेहुए

भगवान् पश्चात् सैकड़ों प्रासादों से भूपित अपने गृहको देखतेभये १ और रत्न काचनों वाली वेदियों करके भूपित भगवान् का प्रासाद अत्यन्त शोभा करता भया २ व मणि हेमोंके समान और रत्न सोपानोंकरके भूपित और मत्तमयूरोंसे सेवित और कोकिलोंसे सेवित और खिलेहुए कमलोंवाली ऐसीवापी अत्यन्त शोभा देतीभई ३।४ और विश्वकर्म्मा ने तिस भवनके पत्थर का प्राकार रच दिया ५ और खाई चारोंतरफको करदी ऐसा उत्तम विश्वकर्म्माने श्रीकृष्णचन्द्र का भवन रचा ६ और आधायोजन चारों तरफसे महेंद्रके भवनके समानरचा तहा मकानके ऊपर भगवान् स्थितहोकर शत्रुओंके रोमोंको उठानेवाला शङ्ख बजाया ७ पश्चात् तिस शङ्खके शब्द करके समुद्र तो क्षोभको प्राप्त होताभया और सम्पूर्ण आकाश प्रतिशब्द करताभया ८ और कुकुर व अन्धक पाचजन्यके शब्दको सुनके व गरुड़के दर्शनसे विशोकहुए तहां प्राप्तहुए ९ व शङ्ख चक्र गदा पद्म इन्होंको हाथमें लिये और गरुड़के ऊपर स्थित और सूर्य्यके समान तेजवाले भगवान् को देखकर सम्पूर्ण पुरवासी प्रसन्न होतेभये १० तिसके अनन्तर तूर्य और प्रणाद और भेरी इन्होंका महान् शब्द होताभया ११ और सम्पूर्ण पुरवासियों के सिंहनाद उत्पन्न होताभया पश्चात् सम्पूर्ण दाशार्ह, कुकुर और अन्धक प्रसन्नहुए मधुसूदन को देखकर आतेभये १२ पश्चात् उग्रसेन वासुदेव भगवान् को आगे करके और शख तूर्य बजातेहुए वसुदेव के स्थान को जातेभये १३ तहा अपने स्थानों विषे आनंदिनी देवकी और रोहिणी व यशोदा और आहुककी स्त्री विचरतीभई और तिसके अनन्तर गरुड़ करके भगवान् अपने स्थान में जातेभये १४ और इन्द्रादिक हैं अनुचर जिन्हों के ऐसे हरि भगवान् यथोद्देश विचरतेभये १५ पश्चात यादवों में श्रेष्ठ यदुनन्दन कृष्णचन्द्र गृहद्वारपर आकर यथायोग्य यादवों का पूजन करतेभये १६ और बलदेव जी और आहुक व गद व अक्रूर और प्रद्युम्न इन्हों करके पूजितहुए भगवान् मणि पर्वतको लेकर अपने भवनमें जातेभये १७ पश्चात् रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न इन्द्रको प्यारा महाद्रुम कल्पवृक्षको भगवान्के गृहमें स्थित करताभया १८ पश्चात् वे सम्पूर्ण शूरवीर अमानुषदेह बंधुओं को देखतेभये और पारिजात के प्रभावकरके जन आनन्द युक्त होतेभये १९ पश्चात् प्रसन्नहुए यादव मुख्योंकरके स्तुति कियेगये भगवान् विश्वकर्मा के रचेहुए श्रीमान् गृहमें प्रवेश करतेभये २०

पश्चात् वृष्णियों करके सहित अमेयात्मा अच्युत भृगसहित मणि पर्वत को अंत पुरमें स्थापन करतेभये २१ पश्चात् शत्रुओंको जीतनेवाले कृष्णचन्द्र तिस द्रुमश्रेष्ठ कल्पवृक्षका पूजनकरके इष्टदेशमें स्थापन करतेभये २२ पश्चात् पर वीरों को मारनेवाले केशव अपने ज्ञातियों को आज्ञादेकर जिन स्त्रियोंको नरकासुर ने हराथा तिनका पूजन करतेभये २३ वस्त्र, आभूषण, दिव्यदासी, धनसञ्चय और चन्द्रमाकी किरणों केसे हार व महाप्रभावाली मणियों करके तिन स्त्रियों का पहले वसुदेव ने पूजन किया २४ व देवकी, रोहिणी, रेवती और आहुक इन्होंने भी पूजनकिया २५ व तिन स्त्रियों के मध्यमें सौभाग्य करके सत्यभामा उत्तम होती भई २६ और भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी कुटुम्ब की ईश्वरी होती भई और तिन्होंको कृष्णचन्द्र हर्म्य २७ और प्रासाद, शिखर,गृह यथायोग्य देते भये व बहुतसा पारिबर्ह देतेभये २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५७ ॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय पश्चात् वासुदेव भगवान् गरुड़का पूजन करके और इसको मानसे मित्रकी तरह ग्रहणकर गृह के प्रति आज्ञा देतेभये १ व सो अनुज्ञा कियाहुआ गरुड जनार्दन भगवान्‌का सत्कार करके और प्रणाम करके ऊपरको ऐसे उछलताभया जैसे कि यथेष्ट गगनेचर२ वह गरुड़ मकरों के स्थानरूप समुद्रको पक्षवात से सक्षुभित कर अत्यन्त वेगसे पूर्व महोदधिको जाताभया ३ कृत्यकालमें समीप प्राप्तहूंगा ऐसे भगवान्‌से कह के गरुडगये पश्चात् श्रीकृष्णजी वृद्धआनक दुंदुभि पिताको देखतेभये ४ और राजाउग्रसेन, बलदेवजी, सात्यकि, काश्य, सांदीपनी गुरु और ब्राह्मणों में मुख्य ५ व अन्य वृद्धवृष्णियों को और भोज व अंधकों को व दाशार्हों को इन सम्पूर्णों को वीर्यसे लब्धहुये मुख्य रत्नों करके पूजन करतेभये ६ और ब्रह्मदिष्ट् सम्पूर्ण मारदिये व सम्पूर्ण अन्धक व वृष्णि जीतादिये ७ व पश्चात् नहीं घायल हुआ मधुसूदन भगवान् रणभूमिमें निवृत्तहोगया ८ पश्चात् सुन्दर पूजनकिया उज्ज्वल कुपदलोंवाला चाक्रिक पुरुष द्वारकावतीके चौगड़े व गलियों में ऐसा घोष करताभया ९ पश्चात् विनययुक्त जनार्दन पहले सांदीपनी को प्राप्तहोकर

नमस्कार करतेभये १० पश्चात् यादवों के राजा आहुक को पश्चात् बलदेवजी करके सहित कृष्णचन्द्र तैसेही आनन्दागत चेतसवाले और परिपूर्ण नेत्रोंवाले ऐसे पिताको प्रणाम करतेभये ११ पश्चात् भगवान् सम्पूर्णोंको प्राप्तहोकर और यथायोग्य सत्कार करके पश्चात् सम्पूर्ण दाशार्हों के नामको ग्रहण करतेभये १२ पश्चात् उपेंद्रसे आदिलेकर सर्वरत्नमय दिव्य आसनों पर सम्पूर्ण बैठते भये १३ तिसके अनन्तर जो अक्षय्यधन किंकरों को प्राप्तकराथा तिस कृष्णकी आज्ञासे पुरुष सभामें लातेभये १४ तिसके अनन्तर जनार्दन यदूत्तम दुन्दुभि शब्दकरके तिन सम्पूर्ण दाशार्हों को पूजन करने के वास्ते लातेभये १५ पश्चात् कृष्णचन्द्र की सेनासे वे सम्पूर्ण दाशार्ह मणि मूंगाके तोरणोंवाली सभाको प्राप्त होतेभये १६ पश्चात् हे भरतर्षभ वह सभा पुरुष सिंह यादवों से चारोंतरफसे व्याप्त होगई १७ व सम्पूर्ण अर्थ और गुणोंसे सम्पन्नहोगई तिन्होंकरके वह सभा ऐसी शोभा को प्राप्त होतीभई कि जैसे सिंहों करके गुफा १८ व भोजवृष्णियों के आगे प्राप्त हुआ कृष्णचन्द्र उग्रसेन को आगेकरके पश्चात् बलदेवजी करके सहित सुवर्ण के आसनपर स्थित होताभया १९ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् तहां स्थित होकर व यथाप्रीति यथावत् यदु श्रेष्ठोंको सम्बोधनकरके यह वचन कहतेभये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांसभाप्रवेशननामशतोपरिअष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः

एकसौ उनसठ का अध्याय ॥

हे राजन् जनमेजय तुम्हारे पुण्य कीर्तिवालों के तपोबल समाधियों करके व अपध्यानसे पृथ्वीका पुत्र नरकासुर मैंने मारदिया १ व गुप्त व उत्तम कन्यात पुर भी बंधनसे छुटादिया व मणिपर्वत व शिखर ये भी यहां प्राप्तकरदिये २ और यह सुन्दर धनका समूह मेरे किंकरोंने प्राप्त करदिया सो इसवास्ते इस द्रव्य के आप मालिकहैं ३ हे राजन् ऐसे कृष्णचन्द्र कहके चुपके होतेभये पश्चात् भोज व वृष्णि व अन्धक ऐसे भगवान्के वचन को सुनके व अतिप्रसन्न होके जनार्दनका पूजन करतेहुये ४ वे राजा अंजलिपुट को बांधके इस कृष्ण को वचन कहनेलगे ५ कि हे महाबाहो देवकीनन्दन मैं तेरे में यह कुछ विचित्र नहीं मानता जो कि देवताओंको भी दुरासद दुष्कर कर्मको करके पश्चात् आप इकट्ठे किये रत्न भोगोंकरके अपने जनों को लुटातेहो ६ । ७ तिसके अनन्तर सम्पूर्ण

दाशार्हों की स्त्री व राजाउग्रसेन की स्त्री प्रसन्नहुई भगवान्‌को देखनेको आती भईं ८ और देवकी और सुभायना रोहिणी भी बैठेहुये महाभुज कृष्णचन्द्र और बलदेवजी को देखतीभईं ९ पश्चात राम केशव क्रमको त्यागके पहले रोहिणीको प्रणाम करके पश्चात् देवी देवकी को प्रणाम करतेभये १० सो अम्बिका देवकी तिन कमल नेत्रोंवाले पुत्रोंकरके ऐसे शोभा को प्राप्त होतीभई जैसे मित्र और वरुणकरके देवमाता ११ अदिति पश्चात् जिस कामरूपिणी को मनुष्य एका व अनशा कहते हैं सो यशोदाकी पुत्री तिन नरोंके प्रति और जिस कन्या करके तिसीक्षण व मुहूर्त्त में सुरेश्वर भगवान् जन्मतेभये १२ व जिसके वास्ते पुरुषोत्तम भगवान् गणसहित कंसको मारतेभये सो कन्या पूजितहुई तहां वृष्णिके भवन में बढतीभई व वासुदेवकी आज्ञाकरके पुत्रकीतरह पाल्यमान होतीभई १३ तिस उत्पन्नहुई को पृथ्वीपर मनुष्य एका व अनशा कहते हैं १४ और सम्पूर्ण यादव सुन्दर मनवालेहुए तिसदुराधर्ष योगकन्याका केशवकी रक्षाकेवास्ते पूजन करते भये पश्चात् तिस योगकन्याने देवताओं की तरह दिव्य पुरुष व कृष्णचन्द्र की रक्षाकिया १५ पश्चात् माधव भगवान् तिस वरुणको प्रियाकीतरह प्राप्तहोकर तिस को दहनेहाथसे ग्रहणकरतेभये १६ व तैसेही अत्यत बलवान् बलदेवजीभी तिस भाविनीको खूब मिलकर व मस्तकविषे सूंघकर सव्य हाथसे ग्रहणकरते भये १७ पश्चात् सुवर्णकेसा कमलको हाथमें लिये तिस राम कृष्णकी भगिनी को मध्य में वे स्त्री ऐसे देखतीभईं कि जैसे पद्मालया लक्ष्मी को १८ पश्चात् अक्षतों की महावृष्टिसे व अनेक प्रकारके पुष्प और लाजाओं से वे स्त्री तिन्हों पर वर्षाकरके अपने२ स्थानों को जातीभईं १९ पश्चात् वे सम्पूर्ण यादव भगवान्‌को सराहते हुए और तिसअद्भुत कर्मको सराहतेहुए प्रसन्नहोकर कृष्णचन्द्रकेसमीप प्राप्तहुये २० पश्चात् पुरवासियों की प्रीति बढाताहुआ व पूजाहुआ महाबाहु कृष्णचन्द्र तिन्हों करके ऐसी शोभाको प्राप्तहोतेभये कि जैसे देवताओं करके इन्द्र २१ पश्चात् देवता औरइन्द्रके नियोगसे सम्पूर्ण यादवोंके बैठेहुए नारदमुनि सभाको प्राप्तहोता भया २२ व सो नारद शूरवीर यदुपुंगवों करके पूजाहुआ हरि भगवान् के हाथसे छूके परम आसनपर बैठताभया २३ पश्चात् सुखपूर्वक बैठाहुआ नारदमुनिजी तिन बैठे हुये वृष्णियों को वचन कहनेलगे कि हे पुरुष श्रेष्ठो मेरे को इन्द्रके वचनसे प्राप्तहुआ जानो २४ हे राजशार्दूलो। इस कृष्णचन्द्र के प-

राक्रमको मेरे से सुनो बाल्यावस्था से लेकर केशव जौनसे कर्मों को करते भये तिन सम्पूर्णों को सुनो २५ हे नृपो उग्रसेनका पुत्र दुर्बुद्धि कंस सम्पूर्ण यादवों को मथके उग्रसेन पिताको बाध के राज्यको ग्रहण करताभया २६ व यह कुल पासन कंस जरासन्ध ससुरके आश्रयहोकर पश्चात् भोज वृष्णि अन्धक सम्पूर्ण यादवोंका अपमान करताभया २७ व जाति के कार्य करने की इच्छा करता हुआ वसुदेव प्रतापवान् उग्रसेन की रक्षाकेवास्ते अपने पुत्रकी रक्षा करताभया २८ व धर्मात्मा मधुसूदन भगवान् गोपोंकरके सहित मथुराके उपवन में स्थित हुये अत्यन्त अद्भुत कर्म करतेभये २९ व एक अन्य भी महाअद्भुत कर्म सुनिये कि शूरसेनों के प्रत्यक्ष शकट के अन्तर ३० चेष्टाकरतेहुये कृष्णचन्द्र ने रौद्र व शकुनी वेषधारनेवाली व घोरा व बडे शरीरवाली व महाबला ऐसी पूतनानाम राक्षसी जनार्दनको विष लिपटाहुआ स्तन देतीहुई भगवान् ने मारी तिस मारी हुई राक्षसी को सम्पूर्ण वनगोचर देखते भये ३१ । ३२ व भगवान् को सम्पूर्ण यह कहतेभये कि इस कृष्णचन्द्रका फिर जन्महुआहै और अत्यन्त यह अद्भुत होताभया ३३ कि बालकही पुरुषोत्तमने क्रीडा करतेहुयेने पैरके अंगूठे से गाडे को बगातेहुये व जब रस्सी से ऊखलमें बांधदिये तब बालकोंकी तरह क्रीड़ा करतेहुये दामोदर भगवान् ३४ विख्यात् अर्जुन वृक्षों को भजन करतेभये ३५ पश्चात् दुराधर्ष व महाबल ऐसा महानागकालिय क्रीडा करते हुये भगवान् ने यमुना के ह्रदमें जीतलिया ३६ व नागों करके पूजाहुआ भगवान् दिव्य शरीर को धार व शीतवात से पीडित गौवों को ३७ भगवान् देखके सातदिन पर्यन्त गोवर्द्धनपर्वत को धारण करते भये ३८ व तैसेही दुष्ट उक्षा व अतिबल व बडे शरीरवाला व नरों के अन्तकरनेवाला ऐसे अरिष्टासुरको भगवान् मारते भये ३९ व गौवों की रक्षाकेवास्ते वासुदेव भगवान् ने महाकाय व महाबल ऐसा धेनुक दानवमारा ४० व शत्रुओं को मारनेवाले भगवान् सम्पूर्ण सेनाके आगे प्राप्त हुये सुनामाको वृक्षों करके दौड़ाते भये ४१ व गोपवेष धारणकिये वनमें विचरते हुये बलदेवजी ने अन्यभी दैत्यमारे ४२ व तैसेही व्रजमें प्राप्तहुये कंसके सहायक केशीको भगवान् मारतेभये ४३ व हेराजन् कंसके मंत्री प्रलम्बदानवको एकही मूकासे बुद्धिमान् बलदेवजी ने मारदिया ४४ व हे राजाओ गार्ग्यऋषि के संस्कारकिये वसुदेवके महावीर्य पुत्र देवताओं के पुत्रों के समानहैं ४५ व जन्मसे

आदि लेकर परमर्षि गार्ग्य ने इन्हों का यथावत् संस्कार प्रतिपादन कराहै ४६ व जब ये नरश्रेष्ठ यौवन में आये तब सिंहके बच्चों की तरह व हस्तियों के बच्चों की तरह स्थितहुये ४७ पश्चात् जवानहुये भगवान् गोपियों के मनको हरतेहुये व देवपुत्रों केसी कान्तिवाले व व्रजमें श्रेष्ठ ऐसे भगवान् व्रजमें स्थितहोतेभये ४८ व इन दोनों को नन्दगोप के गोपाल जयमें व युद्धमें व और अनेकप्रकार की क्रीडाओं में देखनेको भी नहीं समर्थ होतेभये ४९ व व्यूढोरस्क व महाबाहु व शालस्कन्ध ऐसे बलदेव कृष्णको मन्त्रियों सहित कंस सुनके अत्यन्त व्यथित होताभया ५० व जिससमयमें कंस बलदेव कृष्णको ग्रहण करनेको नहीं समर्थ होतेभये तब क्रोधसे बान्धवों सहित वसुदेवको ग्रहण करताभया ५१ व वसुदेव उग्रसेन करके सहित अत्यन्त कष्ट से बहुत कालतक बन्धनस्थान में बासकरते भये ५२ ततपश्चात् कंस अपने पिता उग्रसेनको बाधके जरासन्ध तथा आव्हृति भीष्मक के आश्रय होके बहुतेक शूरवीर यादवों को हनन करता भया ५३ ततपश्चात् एक समय में मथुरापुरी में महादेवजी का उद्देश लेकर कंस परम उत्साह करताभया ५४ सो हे राजन् तहा अनेक देशों के मल्ल नृत्य कर्म में कुशल अनेक नृत्य व गान करनेवाले आये ५५ तिसके अनन्तर महातेजा कंस कुशल शिल्पियोंकरके महाधन रंगवाट कराताभया ५६ तिसरंगवाटमें पौर जानपदजनों करके व्याप्त हजारहों मंच ऐसे भानहोतेभये जैसे आकाशमें तारागण ५७ तिसके पश्चात् भोजराज कंस श्रीकरके सेवित ऋद्धिवाला रंगवाट को ऐसे आरूढ होताभया कि जैसे सुकृतीजन विमान को ५८ और वीर्य्यवान् राजाकंस रंगवाटमें मदोन्मत्त कुवलयापीडको स्थापन करताभया ५९ और हे राजन् महातेजा कंस जब पुरुष व्याघ्र और चन्द्रमा सूर्य्यकेसे तेजवाले ऐसे बलदेव कृष्ण को आये हुये सुनके ६० रक्षाके प्रति यत्न करताभया और बलदेव कृष्णको चिंतवन करताहुआ सुखसे रात्रिको नहीं सोताभया ६१ और बलदेव जी और कृष्णचन्द्र ये उत्तम समाजको सुनकर और दोनों शूरवीर तिस समाज को ऐसे प्रविष्ट होतेभये कि जैसे गौवोंके समूहको दोशार्दूल ६२ पश्चात् ये पुरुषर्षभ अरिन्दम रक्षियोंसे प्रवेशमें रोकेहुये मदागेंमदित कुवलयापीडको मारके तिस रंगमें प्रवेश होतेभये ६३ और बलदेवजी ने और कृष्णचन्द्रने चाणूर और अंध्रको पीसतेभये ६४ और कृष्णचन्द्रने दुरात्मा उग्रसेनका पुत्र कंस मनुजों

करके सहित मारदिया सोकर्म्म देवताओंसे भी दुष्करहै ६५ हे राजन् तिसकर्म को केशवसे अन्य करनेको कौन समर्थ है क्योंकि जिससे प्रह्लाद और बलि व शवर इन्होंको भी अधिकार नहींहुआ ६६ और नारदमुनि कहते हैं कि सुरदैत्य को और पञ्चजनको आक्रमणकरके हे राजाओ तुम्हारेवास्ते यह द्रव्य केशवने प्राप्त कियाहै ६७ और पर्व्वतके शृङ्गकेसी कांतिवाला निसुन्द दैत्यगणों सहित तिसने माराहै और हे राजाओ पृथ्वी का पुत्र भौमासुर माराहै और अदिति के सुन्दर कुंडल लादिये ६८ व स्वर्ग में देवताओं के विषे केशवको महायश प्राप्त हुआ है ६९ और तुम सम्पूर्ण शोकभय और बाधासे रहितहुये और कृष्ण की भुजाओं के बलके आश्रयहुये अनेकप्रकारके यज्ञोंकरके भगवान्का यजनकरो हे राजाओ देवताओंके ऐसे ऐसे बड़े कार्य्य महात्मा कृष्णचन्द्रने करे हैं ७० व हे यदुश्रेष्ठो जो प्रियहै तिसको मैं तुम्हारे आगेकहूंहू तुम्हारा कल्याणहो जो तुम्हारे को इष्टहै सोही मैं करूंगा ७१ और यह कृष्णचन्द्र सम्पूर्ण जगह स्थितहै ऐसेवचन कहताहुआ इन्द्र वचन कहताभया ७२ हे राजाओ धी और श्री और सन्नति ये सम्पूर्ण महात्मा कृष्णचन्द्रमें स्थितहैं ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांनारदवाक्यनामशतोपरिनव पञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५९ ॥

एकसौ साठिका अध्याय ॥

हे राजन् नारदमुनि कहते हैं कि मुरके पाशभी भगवान्ने काट दिये और निसुन्द और नरकासुर भी मारदिये और प्राग्ज्योतिषपुर के प्रतिक्षेमवाला मार्ग करदिया १ और हे राजाओ कृष्णचन्द्रने रणभूमिमें वैर करनेवाले राजाओं को धनुषके शब्दकरके और पाञ्चजन्यके शब्दकरके त्रासकरदी २ और दाक्षिणात्य सेनाओं करके रक्षित महाबल पराक्रमवाला रुक्मी को युद्धमें जीतके ३ व तत्काल रुक्मिणीको हरतेभये तिसके अनन्तर मेघकेसा शब्दवाला और सूर्य्य केसा प्रकाशवाला ऐसा रथ करके ४ रुक्मिणी को प्राप्तहोकर पश्चात् शङ्ख चक्र गदा खड्ग इन शस्त्रोंको भगवान् धारण करके पश्चात् आह्वृति और क्राथ, व शिशुपाल ५ इन राजाओंको जीततेभये और दन्तवक्र और सेनाकरके सहित शतधन्वा येभी जीतलिया और इन्द्रद्युम्न और यवन और कसेरुमान् ये सम्पूर्ण

मारदिये ६ और दृढधनुपकरके श्रीमान् सौभपति शाल्व भी मारदिया व हजारहा पर्वतोंको वखेरके ७ पुरुषोत्तम भगवान् द्युमत्सेनको पीड़ाकरतेभये व पुरुष व्याघ्र कृष्णचंद्र महेंद्रकीशिखरमें और इरावतीपुरी में ८ अग्नि सूर्यकेसमान रावणाके किंकरोंको मारतेभये व इरावती में अग्नि सूर्यकेसम युद्धमें महाभोज मारे ९ और शार्ङ्गधन्वा भगवान्ने गोपति व तालकेतु मारे व चक्रके विक्षेपमात्रसेही अनुगों सहित डिंभ व हंस इन दोनों दानवों का वधकिया १० व हे राजाओ महात्मा केशवने काशीपुरी दग्धकरी व राष्ट्र व बांधवों सहित काशी का राजा भी मारदिया व अद्भुत कर्मवाले कृष्णचन्द्र उत्तम बाणों से युद्धमें यमको जीतके इन्द्रसेनीको लातेभये ११ व उत्तम शरोंसे युद्धमें धर्मराजको जीतके पश्चात् अद्भुत कर्मवाले कृष्णचन्द्र इंद्रसेनी को लाये १२ व महाबल कृष्णचन्द्र लोहित कूटको प्राप्तहोकर जलजीवों सहित वरुण देवताको जीततेभये १३ व महेंद्र भवन में प्राप्तहुआ कृष्णचन्द्र इन्द्रका भय नहीं करके महात्मा देवताओं करके रक्षित कल्पवृक्ष हरते भये १४ व पाण्डव और पौंड्र कलिंग मात्स्य इन सम्पूर्ण राजाओंको मारतेभये और बगराजको भी मारतेभये १५ व हे राजाओ यह महात्मा कृष्णचन्द्र एकसौ एक राजाओंको रणभूमिमें मारके पश्चात् प्यारे दर्शनोंवाली पटरानी गांधारी को लातेभये १६ व कुंतीके देखतेहुये क्रीडा करतेहुये भरत श्रेष्ठ अर्जुनको जितवातेभये १७ व हे राजाओ पुरुषोत्तम भगवान् द्रोणाचार्य व अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य व कर्ण व भीष्म व दुर्योधन इन सम्पूर्णों को रणभूमिमें जीततेभये १८ व हे नृपो नकुलके प्यारकी इच्छा करतेहुये भगवान् शंख चक्र गदा और खड्ग इन्होंको धारणकरके व हठसे सौवीर राजकी कन्याको हरतेभये १९ व पुरुषोत्तम भगवान् वेणुदारि के वास्ते अश्व रथ हस्ती इन्हों सहित सम्पूर्ण पृथ्वीको यत्नसे जीततेभये २० व हे राजाओ यह हरि पूर्व देहमें बल वीर्य और ओज इन्हों को प्राप्तहोकर बलिसे त्रिभुवनको हरतेभये २१ व हे नृपो प्राग्ज्योतिषपुर में वज्र व अशनि व गदा व खड्ग इन शस्त्रों से त्रास करातेहुये दानवों करके जिस कृष्णचन्द्र के समीप भी मृत्यु नहीं प्राप्तहुआ २२ व गणों करके सहित व महाबल व महावीर्यवाला अत्यन्त क्रूरवाला ऐसा बलिका पुत्र बाणासुरको भी कृष्णचन्द्र ने तिरस्कृत करदिया २३ व महाबाहु व महाबल ऐसे जनार्दन कंसके अमात्य जनार्दनको और पैठिक अमिलोमाको

मारते भये २४ व बड़े यशवाले कृष्णचन्द्र जृम्भ और ऐरावण और विरूप इन दैत्यों को मारतेभये २५ व तैसेही यमुनाजी के जल में बड़े तेजवाले नागपति कालियको कमल केसे नेत्रोंवाले भगवान् जीतके सागरमें भेजतेभये २६ औ हे नृपो पुरुषों में व्याघ्ररूप यह हरि धर्मराजको जीतके और सादीपनि गुरु के मरे पुत्रको जिवातेभये व यही महाबाहु कृष्णचन्द्र जो दुरात्मा देवता व ब्राह्मणोंके साथ वैर करते हैं तिन्होंको शिक्षा करनेवालाहै २७.२८ और इन्द्रके प्रियके वास्ते पृथ्वीके पुत्र भौमासुरको मारके व मणि जटित कुंडलों को हरके देवमाता अदितिको देतेभये २९ व सम्पूर्ण लोकोंका रचनेवाला समर्थ यह कृष्णचन्द्र ऐसे देवताओंको अभय करताहै और दैत्योंको भय करताहै ३० व हे नृपो यह कृष्णचन्द्र बहुतसी दक्षिणाओंवाली यज्ञसे यजन करके व मनुष्योंमें धर्मका स्थापन करके और देवताओंका प्रयोजन करके पश्चात् फिर वैकुण्ठधाममें जायँगे ३१ व महायशवाला कृष्णचन्द्र भोगोंवाली रमणीय द्वारकाको अपने वशमें करके पश्चात् समुद्रको प्राप्तकरेंगे ३२ व पश्चात् रत्नों से व्याप्त और सैकड़ों चैत्य और यूपों से व्याप्त ऐसी वनों सहित द्वारकाको वरुणके स्थान में प्राप्तकरैंगे ३३ पश्चात् भगवान्की रचीहुई तिस सूर्यकेसी कांतिवाली द्वारकाको समुद्र डुबोदेगा ३४ पश्चात् सुर और असुर और मनुष्य इनमें ऐसा कोई नतोहुआ न होगा कि जो मधुसूदन से अन्य इस पुरी में बसे ३५ हे राजाओ ऐसे दाशार्हों के उत्तम विधि विधानकरके पश्चात् कृष्णचन्द्र सोम और सूर्यहोगा ३६ और यह कृष्णचन्द्र अप्रमेयहै और अचिंत्य है और यथेच्छ विचरनेवालाहै और यह सम्पूर्ण कालमें भूतोंकरके ऐसे क्रीडन करताहै कि जैसे खेलनोंकरके बालक ३७ और हे नृपो इस मधुसूदनका प्रमाण करनेको कोई समर्थ नहीं क्योंकि इस विश्वरूप से अन्य कुछभी नहीं ३८ व यह वार्ता मैंने सैकड़ों और हजारहोंवार सुनीहै कि इसके कर्मोंका अंत किसीने भी नहीं देखा ३९ हे नृपो बलदेवजी करके सहित यह कमलकेसे नेत्रोंवाला भगवान् शिशुभाव में प्राप्तहुआ इन कर्मोंको करता भया ४० व महायोगी व महाबुद्धि और सम्पूर्णोंको प्रत्यक्ष देखनेवाले ऐसे व्यासजी पहले तपोवीर्य चक्षुकरके यह पूर्वकथा कहतेभये ४१ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् महेन्द्रके वचनसे नारदमुनि ऐसे गोविन्दकी स्तुतिकरके पश्चात् सम्पूर्ण यादवोंकरके पूजाहुआ नारद स्वर्गमें जाताभया ४२ पश्चात् पुंडरीकाक्ष

मधुसूदन भगवान् विधिपूर्वक यथायोग्य तिस धनको अन्धक वृष्णियों को देने
भये ४३ पश्चात् सम्पूर्णयादव तिस धनको प्राप्तहोके और पश्चात् महात्मायादव
बहुत दक्षिणाओंवाले यज्ञोंसे यजन करके द्वारकापुरी में बसतेभये ४४ ॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायानारदवाक्यनामशतोपरिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौइकसठका अध्याय ॥

ऐसे सुने जनमेजय कहनेलगे कि मुने हजारहा स्त्रियों में जो भगवान् की आठपटरानी कही तिन्हों की संतान कहने को योग्यहो १ ऐसे सुन वैशम्पायन जी कहनेलगे कि हे राजन् भगवान् की आठ पटरानी पुत्रवाली होतीभई सो सम्पूर्ण शूरवीरों को जनतीभई तिन्होंको सुनो २ हे जनमेजय रुक्मिणी १ और सत्यभामा २ व नाग्नजिती ३ व सुदत्ता शैव्या ४ व लक्ष्मणा ५ व चारुहासिनी ६ । ३ व मित्रविन्दा ७ व कालिंदी व जाम्बवती व पौरवी और सुभीमा माद्री ये भगवान् की पटरानी होतीभई ४ हे राजन् तिन्हों में रुक्मिणी के पुत्रों को सुन प्रथम तो शंबरका नाश करनेवाला प्रद्युम्नहुआ व दूसरा महारथ ५ चारुदेष्ण हुआ व पश्चात् चारुभद्र व चारुगर्भ व सुदेष्ण व द्रुम व सुषेण और चारुदेष्ण व चारुविंद ६ व छोटा चारु ये तो रुक्मिणी के पुत्रहुये व चारुमती कन्याहुई पश्चात् सत्यभामा के भानु व भीमरथ ७ व रोहित व दीप्तिमान् व ताम्रजाक्ष और जलांतक ये तो पुत्रहुये व भानु व भीमनिका व ताम्रपर्णी व जलधमा ये चार कन्या होतीभईं ८ व जाम्बवती के युद्धको शोभन करनेवाला साम्बहुआ है ९ व पश्चात् मित्रवान् मित्रविन्द मित्रबाहु सुनीथ ये पुत्र होतेभये व मित्रवती कन्या होतीभई व नाग्नजितीके १० भद्रकार और भद्रविन्द येतो पुत्रहुये और भद्रवती कन्याहुई व सुदत्ता शैव्या में संग्रामजित हुआ ११ व पश्चात् सत्यजित व सेनजित व सपत्नजित ये पुत्रहुये व सुभीमा माद्री के वृकाश्व व वृकनिर्वृति १२ व वृकदीप्ति ये हुये व लक्ष्मणाके गात्रवान् व गात्रगुप्त व गात्रविंद ये पुत्रजन्मे व गात्रवती व जया कन्या जन्मी १३ और कालिंदी के श्रुतमें मानाहुआ अश्रुत नाम पुत्रजन्मा हे राजन् तिस अश्रुतको मधुसूदन भगवान् श्रुतसेनाको देतेभये १४ व तिसको देके पश्चात् मुदितहुये केशव तिस भार्याके प्रति वचन कहतेभये कि दोनोंका पुत्रहै सो सैकड़ोंवर्ष जीवो १५ व शैव्याके अगद व कुमुद व श्वेत

ये पुत्रहुये १६ व श्वेतापुत्रीहुई व अवगाह सुमित्र व शुचि व चित्ररथ ये सुदेव के पुत्र होतेभये १७ व चित्रावती कन्याहुई व वन और स्तम्ब व स्तम्बवन ये पुत्रहुये १८ व स्तम्बवती कन्याहुई व उपसन्न व शकु व वज्रांशु व क्षिप्र ये कौशिकी विषेहुये १९ और श्रुतसोमा यौधिष्ठिरीविषे युधिष्ठिरहुआ और चित्रयोर्ध कापाली में व गरुडहुआ २० हे राजन् इन्हों से आदिलेकर हजारहां पुत्रजान ऐसे वासुदेव के एकलक्षपुत्र होतेभये २१ तिन्हों में अस्सी हजार तो शूरवीर व रणके जाननेवाले होतेभये हे राजन् यह जनार्दनका प्रसव तेरेसे कहाहै २२ व हे राजसत्तम वैदर्भीसे प्रद्युम्नके अनिरुद्ध पुत्रजन्मा सो सिंहरूप युद्धमें किसीसे नहीं रुकताभया २३ व रेवतीसे वलदेवजी के निशठ व उल्मुक नाम पुत्रजन्मा व ये दोनों भ्राता देवताओं केसी कांतिवाले होतेभये २४ और सुतनु व सुतारा यह शौरिका परिग्रह होताभया व पौंड्रक व कपिल वसुदेव के पुत्रहुये २५ सो कपिल तो तारासे पैदा होताभया व सुतनुसे पौंड्र तिन दोनों में पौंड्र तो राजा हुआ व कपिल वनको गया २६ व चौथी शूद्री में वसुदेव से महाबल वीरवाला जरानाम होताभया सो यह निषादों में समर्थ हुआहै व सम्पूर्ण धनुर्द्धारियों में भी श्रेष्ठकहाहै २७ व काशी विषे साम्बसे सुपार्श्व पुत्रहुआ व सानुसे अनिरुद्ध के वज्रनाम पुत्रहुआ २८ व वज्रसे प्रतिरथहुआ व प्रतिरथसे सुचारु व अनिमित्त छोटा वृष्णिनन्दन से शिनि उत्पन्नहुआ २९ व शिनिके सत्यवाक् व सत्यकहुआ व सत्यकका पुत्र युयुधान हुआ ३० व युयुधान के प्रसग हुआ व तिसके मणिहुआ व मणिके युगन्धरहुआ ऐसे वंश होताभया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांवंशानुकीर्त्तनेशतोपरिएकषष्टितमोऽध्यायः १६१॥

एकसौबासठका अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजय पूछनेलगा कि हे भगवन् जो तुमने प्रद्युम्न शम्बरका मारनेवाला कैसे हुआ व कैसे उत्पन्नहुआ सो कहो १ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय लक्ष्मी रुक्मिणी के विषे वासुदेव भगवान्का पुत्र काम दर्शन व शम्बरका अन्तकरनेवाला ऐसा प्रद्युम्न उत्पन्न होताभया २ जिस प्रद्युम्नको पुराणों में सनत्कुमार कहते हैं तिस प्रद्युम्नको सात रात्रिपीछे कालशम्बरदैत्य सूतिका गृह से हरताभया ३ व देवमायानुवर्त्ती कृष्णचन्द्र को जानते

हुये भी तिस युद्धदुर्मद दानवको नहीं ग्रहण करतेभये ४ पश्चात् यह शम्बर तिस बालकको लेकर अपने नगरमें गया व तिसके रूप व गुणवाली व सन्तानरहित व शुभदर्शना ऐसी मायावती नाम भार्य्याथी तिसको पुत्रकीतरह प्रद्युम्नको देता भया ५ पश्चात् मायावती तिस प्रद्युम्नको देखकर बहुत प्रसन्नहुई व बहुत हर्ष से युक्तहुई तिस बालकको वारम्वार देखतीभई ६ पश्चात् देखतीहुई तिस मायावती के स्मृति उत्पन्नहुई कि अहो यह तो मेरा कान्तहोगा ७ ऐसे स्मरण करके पश्चात् चिन्तवन करती भई अहो यह तो वह मेरा कान्त स्वामी है ८। ९ कि जिसके वास्ते रात दिन चिन्ता शोकरूप समुद्रमें डूबीहुई सुखको कहीं नहीं प्राप्त होती १० व यहपहले खेदित देवदेव महादेवजीने अनग व अदृष्ट करदियाथा ११ सो मैं जानतीहुई मातृभाव करके कैसे इसको स्तनदूंगी व इस भर्त्ता की मैं भार्य्याहोके कैसे पुत्र कहूंगी १२ ऐसे मनमें चिन्तवनकर सो प्रद्युम्न धाहको सौंपदिया पश्चात् रसायनों के प्रयोगों से यह शीघ्रही बढ़ताभया १३ पश्चात् यह रुक्मिणीका पुत्र प्रद्युम्न धाहके मुखसे मायावती को माता सुनता हुआ विना ज्ञानसे इस मायावतीकोही माता मानताभया १४ पश्चात् कमलकेसे नेत्रोंवाले प्रद्युम्नको यह बढ़ाती भई व कामदेवसे मोहितहुई सम्पूर्ण दानवी मायाभी इस को देती भई १५ पश्चात् जब यह कामदर्शन प्रद्युम्न यौवन में स्थितहुआ तब स्त्रियों के चिकीर्षितको जाननेवाला व सम्पूर्ण अस्त्रविधिको जाननेवाला होताभया १६ पश्चात् मायावती कामिनी तिस कान्तकी वाञ्छा करतीहुई चेष्टितों से देखती हुई व मन्द मन्द हँसतीहुई लोभ कराती भई १७ पश्चात् सुन्दर हासवाली तिस देवीको युक्तहोतीहुई को देखकर प्रद्युम्न वचन कहनेलगे हे मायावति मातृभावको त्यागके ऐसे अन्यथा कैसे वर्त्तती है १८ अहो तू दुष्ट स्वभाववाली है स्त्री भावमें तेरा चपल मनहै हे सौम्ये जोनसी तू पुत्रभावको त्यागके व मेरे विषे लोभसे प्रवृत्तहोती है १९ इसवास्ते मैं तेरा पुत्र नहींहूं यह कौन विपरीत शीलहै हे देवि मैं तत्त्वके सुननेकी इच्छाकरताहूं इसवास्ते यह कौन विधिहै तू कह २० अहो निश्चयकरके स्त्रियोंका स्वभाव बिजलीकी तरह चञ्चलहै सो यह क्या तेरा चिकीर्षितहै इसको कह २१ हे राजन् ऐसे कहीहुई वह काम पीड़ित भीरु केशवकेपुत्र अपने प्रियसे एकान्तमें वचन कहतीभई २२ हे कान्त न तो तू मेरापुत्र है व शम्बर तेरा पिताहै २३ तूतो रूपवान् जानिये वृष्णिकुल।पुत्रहै व हरि ग्रोमें

भी रुक्मिणी के आनन्द बढानेवाला वासुदेवका पुत्रहै २४ सो तू जन्माहुआही बालक सातवेंदिन ऊंची शय्यापर सूतेहुए तेरेको २५ सूतिका स्थानमें यह मेरा भर्त्ता शम्बर वल वीर्यसे तेरे पिता वासुदेवके घरको धर्षकरके हरताभया २६ पश्चात् तेरी माता करुणकी तरह शोच करतीभई सो हे शूरवीर तेरी माता ऐसे दुःखपा- रही है जैसे वछडा रहित गौ २७ व तैसेही गरुडध्वज तेरे पिताको भी अत्यन्त चिन्ताहै क्योंकि बालकही प्राप्तकरे तेरेको यहा वे नहीं जानते हैं २८ व हे कात तू वृष्णिका कुमारहै और शम्बर का पुत्र नही है २९ हे शूरवीर दानव इसप्रकार के पुत्रों को नहीं जन्माते हैं इसवास्ते मैं तेरी वाञ्छा करती हू ३० व मोहिं से तू नहीं जनाहै और हे सौम्य तेरेरूप को देखतीहुई हृदय में क्लेश पाती हू और हे कात जो मेरे निश्चितहै सो मेरे हृदयमें वर्त्तताहै ३१ व हे वाष्णेय तिस निश्चित को प्रतिसधान करने को योग्य है यह सम्पूर्ण वृत्तात तेरे आगे कहाहै और जो तेरे में मेरा सद्भावहै सो भी कहाहै ३२ व जैसे तू मेरा पुत्र नहीं है और शम्बरका पुत्र नहीं है सोभी कहाहै हे राजन् जनमेजय ऐसे मायावती के सम्पूर्ण भाषितको भगवान् का पुत्र प्रद्युम्न सुनके ३३ पश्चात् क्रुद्धहुआ शवरको युद्धकेवास्ते बुला- ताभया और सम्पूर्ण मायाओंका जाननेवाला अपने नामको सुनाताभया ३४ अहो वडे आश्चर्यकी वार्ता है हे दानव तू दुष्टात्मा केशवकेपुत्र मेरे को हरके तू निर्भयहुआ है इसवास्ते अब मैं तेरेको भयकरूंगा ३५ कैसे क्रोधको प्राप्तहो और कैसे मैं तेरे को मारू और कैसे यमको प्राप्तहोगा पहले मैं क्याकरूं जिससे यह मदबुद्धि कुपितहोवे ३६ ऐसे विचारके फिर कहनेलगा कि इसके सिंहकेतु अर्पित विचित्र ध्वजाहै सो तोरणको प्राप्तहोकर औरभी मेरुशृंगकी तरह ऊचाहै ३७ सो इसको मथके तीक्ष्ण भालासे गिराऊंगा पश्चात् ध्वजको टूटाहुआ जानके यह शवर निकसके शीघ्रही आवेगा ३८ पश्चात् युद्धसे इसको मारके द्वारकामें चला जाऊंगा हे राजन् ऐसे कहके प्रद्युम्न शर सहित धनुषको सज्जी करताभया ३९ पश्चात् यह महाभुज प्रद्युम्न शम्बरके ध्वज रत्नको छेदन करताभया ४० पश्चात् महात्मा प्रद्युम्न करके ध्वजच्छेद जानके और क्रुद्धहुआ काल शम्बर पुत्रों को आज्ञा करताभया और ये महावीर बहुत वेग से प्रद्युम्नको मारनेकी इच्छा करते भये ४१ व शवर कहनेलगा कि रे इस प्यार करनेवाले को मैं देखा नहीं चाहताहू ऐसे शवरके वचन सुनके तिसके पुत्र कवच धारणकरके प्रद्युम्नके मारनेकेवास्ते

निकसतेभये ४२ व चित्रसेन और अतिसेन और विष्वक्सेन और गद ४३ व श्रुतसेन और सुखेण और सोमसेन और मन और सेनानी और सैन्यहंता और सेनाह और सैनिक ४४ व सेनस्कन्ध और सेन व सेनक और जनक और सकाल और विकल और शान्त और शांतातकर ४५ और कुम्भकेतु और सुदष्ट्र और केशरि ये सम्पूर्ण और इन्हों से आदि लेकर अन्य ये चक्र और तोमर और शूल और पट्टिश और परश्वध इन शस्त्रोंको ४६ लेकर और प्रसन्न हुये व परम क्रोध से व्याप्तहुये ऐसे योधा शत्रुको बुलाते हुये निकसे और निकल के संग्राम के मस्तकमें स्थितहुये ४७ व महाबाहु प्रद्युम्न धनुष को लेके और रथमें बैठ पश्चात् शीघ्रही संग्रामके सम्मुखगये ४८ तिसके अनन्तर शम्बरके पुत्रोंका और केशव के पुत्रका रोमहर्षण तुमुल युद्धहोताभया ४९ पश्चात् देवता और गन्धर्व व महोरग चारण ये सम्पूर्ण इन्द्रको आगे करके विमानों में बैठकेआये ५० व नारद व तुम्बुरु और हाहा व हूहू ये देवताओं के गन्धर्व भी अप्सराओं सहित आये ५१ व देवराज का द्वारपाल गन्धर्व वज्री देवराजके अर्थ ऐसे कभी नहीं हुआ ऐसा आश्चर्य निचेष्टित इन्द्र से कहतेभये ५२ जनमेजय कहते हैं कि हे मुने शम्बरके तो सौपुत्र व कृष्णचन्द्रका एकपुत्र सो युद्ध करतेहुये कैसे विजयको प्राप्तहुआ ५३ तिसका ऐसा भाषित सुनके और पश्चात् वज्रसूदन इन्द्र हँसके वचन कहने लगे कि इसके पराक्रम सुनो ५४ हे भाई यह पहले कामदेवथा और महादेवजी ने क्रोधरूप अग्निसे मारदिया जब कामदेवकी स्त्री रतिको महादेवजीने प्रसन्न किया ५५ तब इसको यह वरदान दिया कि हे रते द्वारका में मानुष देह विष्णु होगा ५६ सो यह काम तिसके पुत्र भावको प्राप्तहोगा इसमें सन्देह नहीं व यह महायशा त्रैलोक्यमें अनंग ऐसा विख्यात होगा ५७ व तहां उत्पन्नहुआ यह महातेजा शंबरको मारेगा और रुक्मिणीमे जन्म होतेही सातदिनके को शंबर अपनी मायासे प्रद्युम्नको लेजायगा ५८ यह महादेवजी ने कहा इसवास्ते हे रते तू शंबरके घरजा और मायावतीहो ५९ और मायारूपमे प्रतिच्छन्नहुई शंबरको मोह प्राप्त होवेगा हे रते तहां तू अपने कान्तको बालरूपको पढ़ा ६० और वह तेराकान्त यौवनको प्राप्तहोके शंबरको मारेगा पश्चात तेरेसहित वह अनंग द्वारका को प्राप्तहोगा ६१ और हे रते तेरे साथ ऐसे रमण करेगा कि जैसे शैलपुत्री के साथमें करताहूं देवेश पुरुषोत्तम महादेवजी ऐसे आज्ञादेकर ६२ पश्चात् सिद्ध

चारणों से सेवित व सुमेरुकेसी कांतिवाला ऐसे कैलासको जातेभये ६३ और कामपत्नी रतिभी उमाकेपति महादेवजी को नमस्कार करके कालके अन्त को देखतीहुई शम्बरके घरको जातीभई और ऐसे विचारतीभई कि यह महाबाहु ऐसे शम्बरको मारेगा और प्रद्युम्न पुत्र सहित तिस दुरात्माको मारेगा ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशम्बरवधेशतोपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२ ॥

एकसौतिरसठका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय तिसके अनन्तर तिन शम्बर के पुत्रों का व रुक्मिणी के पुत्रका रोमहर्षण तुमुल युद्ध वढा १ पश्चात् क्रोध हुये महादैत्य शर व शक्ति व फरसा व चक्र व तोमर व कुंत व भुशुण्डी व मुसल इन सम्पूर्ण शस्त्रोंको २ प्रद्युम्नके ऊपर एकबार गेरतेभये तब यह प्रद्युम्न क्रुद्धहुआ एक एकको ३ पांच पांच बाणों से छेदन करताभया व पश्चात् कृतनिश्चय वे असुर फिर क्रुद्धहुये ४ और प्रद्युम्नके मारनेकी इच्छाकरके शरजालोंकी वर्षा करनेलगे तिसके अनन्तर अनंग कुपितहोकर और धनुष को लेकर शीघ्रही ५ बडे पराक्रमी शम्बरके दशपुत्रोंको मारताभया और पश्चात् कुपितहुआ केशव का पुत्र प्रद्युम्न भालासे तत्काल ६ चित्रसेनके शिरको छेदन करताभया तिस के अनन्तर हतशेष दानव इकट्ठे होकर युद्ध करतेभये ७ व प्रद्युम्न के मारने की इच्छा करतेहुये शरोंकी वर्षाकरतेहुये सम्मुखदौडे ८ पश्चात् क्रीड़ा करताहुआही महातेजस्वी प्रद्युम्न दानवोंके शिरोंको छेदनकरताभया ९ ऐसे तिसयुद्धमें धन्वियों के मध्यमें सौ दानवों को मारके व फिर युद्धकी वाञ्छा करताहुआ प्रद्युम्न संग्राम के बीचमें स्थित होताभया १० पश्चात् शम्बर दैत्य सौ पुत्रोंको हतजानके और सारथिको प्रेरताभया कि हे सारथे मेरे रथको जोड सारथि ऐसे राजाके वचनको सुन और शिरसे पृथ्वी विषे प्रणाम करके पश्चात् सुसमाहित ११ व सहस्र मृग विशेषों से युक्त और सेनाकरके भूषित व सर्पराजकी ध्वजासे भूषित १२ और शार्दूल चर्म्म से वेष्टित और किंकिणी जालों की मालावाला व भेडाओं करके सहित १३ और दश ऊपर २ कोठोंसे भूषित व ताराचक्रों से भूषित चक्रोंवाला १४।१५ व नक्षत्रमालासे पिहित व सुवर्ण दण्डसे समाहित व श्रीमान् व अति विराजमान ऐसे रथको सारथि जोड़के पश्चात् शम्बर को बैठाय रथको प्रेरताभ-

या १६ पश्चात् चित्रसन्नाह कांचन धनुपको लेकर व तैसेही शरोंको ग्रहणकरके मृत्युसे प्रेरित किया युद्धकी वाञ्छा करताहुआ शम्बर स्थितहुआ १७ और चार मन्त्रियों करके सहित व बहुतसी सेनाकरके युक्त ऐसे स्थितहुआ इन अमात्यों सहित युद्धकी वाञ्छा करताहुआ यह शम्बर रणमें स्थितहुआ १८ व दशहजार हस्ती व दोसौ रथ और आठहजार घोडे १६ व दशलक्ष पदाति इतनी सेनासे परिवृतहुआ शम्बर युद्धके वास्ते निकसताभया २० व पश्चात् शम्बरके संग्राममें उत्पात उठे उस समयमें आकाश गृध्र व चक्रोंसे व्याप्त होगया व सन्ध्यासमय केसे मेघोंका शब्दहुआ २१ व वज्रोंसहित मेघ कठोरशब्द करनेलगे व गादडी अमंगल शब्द करतीभई २२ व तिससमयमें दानवों का रुधिरकी वाञ्छा करते हुये गृध्र ध्वजाके शिरपर पडतेभये और तब रथके आगे पड़ा पृथ्वी में शम्बर का कबंध दीखताभया २३ व शम्बर के रथपर चीवी कूची ऐसे शब्द करतेहुये पक्षी वास करतेभये और स्वर्भानुग्रस्त तब आदित्य होगया और मुसलोंसे वेष्टितहुआ २४ व इस शम्बरके भय निवेदन करनेवाला वामनेत्र फरकताभया व बाईं भुजा फरकती भई और रथके घोडे आखलते भये २५ व देवशत्रु शंबरके मस्तकपर काग बैठनाभया और तब इन्द्र देवता शर्करा और उद्गार इन्हों सहित रुधिरकी वर्षा करताभया २६ व रणमें हजारहों मुण्ड पडतेभये और सारथि के हाथसे घोड़ोंका चाबुक पडताभया २७ प्राप्तहुये उत्पातोंको यह शम्बर नहीं गिनकर प्रद्युम्नके मारनेके वास्ते क्रोधहुआ शंबर जाताभया २८ व भेरी मृदंग और शंख व पणव और ढफ और दुन्दुभि इन्होंका एकवार शब्द होनेसे पृथ्वी कांपती भई २६ व तिस अत्यन्त शब्द करके त्रासको प्राप्तहुए मृग पक्षी चारों तरफ दौड़तेभये ३० व रणके मध्यमें स्थितहुआ प्रद्युम्न शत्रुकी मृत्युको विचारताभया व असंख्य सेना से परिवृतहुआ युद्धके वास्ते तैयारहुआ ३१ पश्चात् क्रुद्धहुआ यह शंबर हजार बाणों से प्रद्युम्नको ताड़ना करताभया ३२ व प्रद्युम्न धनुपको लेकर तिसके बाणों को काट पश्चात् शरों की वर्षा करताभया पश्चात् तिस सेनामें ऐसे प्रद्युम्नने कोई नहीं छोडा कि जो शरसे नहीं बींधदिया ३३ व प्रद्युम्नके बाणों के पडनेसे वह सेना विमुखहोगई और डरके सेना शंबरके पास खड़ी होगई ३४ पश्चात् क्रोधमें मूर्च्छितहुआ शंबर अपनी सेना को भागीहुई देख यह दानवेश्वर मन्त्रियोंको आज्ञा देताभया ३५ कि हे मन्त्रियो तुमजावो

और शत्रुके पुत्रको मारो और हे मन्त्रियो शत्रु उपेक्षा करना योग्य नहीं शीघ्र मारो ३६ यह शत्रु व्याधिकी तरह उपेक्षित किया निश्चय शरीरका नाश कर देताहै इस वास्ते मेरे प्रियकी इच्छा करके इस दुर्मति पापीको मारो ३७ हे जनमेजय तिसके अनन्तर वे मन्त्री तिस आज्ञा को शिरसे ग्रहणकर और क्रोध हुए शरोंकी वर्षा करतेहुए रथोंको प्रेरतेभये ३८ क्रोधहुआ प्रद्युम्न तिन्होंको युद्ध में दौडताहुआ देखकर और धनुष लेकर यह बली आगे स्थितहुआ ३९ और पचीस शरों करके इन्हों को भेदन करताभया और महातेजस्वी प्रद्युम्न तिरसठ वाणों से केतुमालीको भेदन करताभया ४० व सत्तरवाणों से शत्रुहताको और बयासी वाणोंसे प्रमर्दनको भेदन करताभया पश्चात् वे मन्त्री क्रुद्धहोकर प्रद्युम्न को शरोंकी वर्षासे आच्छादित करतेभये ४१ व एक एक मंत्री साठ साठ वाणों से प्रद्युम्नको भेदन करताभया ४२ पश्चात् प्रद्युम्न प्राप्तहुए तिन वाणोंको वाणों करके छेदन करताभया ४३ पश्चात् सम्पूर्ण राजाओं के देखतेहुए और सैनिक के देखतेहुए प्रद्युम्न सुन्दरःपोरियोंवाले चार वाणों से ४४ चार अश्वोंको भेदन करताभया और एक वाणसे छत्र भेदन करदिया और एक वाणसे सुन्दर ध्वज ४५ व साठ वाणों से प्रद्युम्न रथके चक्र और धुरा को तोड़ताभया पश्चात् बहुत तीक्ष्ण एक और वाण लेकर छोडा ४६ तिस अल्पजीवी शत्रुके हृदयमें वाण लगतेही शोभा और प्राण और सत्य और प्रभा ये सम्पूर्ण विगतहोगये ४७ व पश्चात् रथसे ऐसे पडताभया कि जैसे क्षीण पुण्यहुआ ग्रह जब यह दुर्द्धर शूर वीर दानव मारदिया तब दानवेश्वर ४८ केतुमाली शरके समूहों करके कृष्णके पुत्र प्रद्युम्नके सम्मुख दौड़ा व यह केतुमाली भ्रुकुटी से भयानक ४९ मुखकिये ठहर ठहर ऐसे कहताहुआ दौडा पश्चात् यह प्रद्युम्न क्रोधयुक्त होकर तिसपर शरों की ऐसे वर्षा करताभया ५० कि जैसे वर्षाऋतु में मेघ पर्वतपर वर्षा करताहै पश्चात् धनुषवाले प्रद्युम्न करके वींधाहुआ यह दानवका मन्त्री ५१ चक्रलेकर प्रद्युम्नके मारनेकी वांछाकरके चक्रको छोड़ताभया ५२ पश्चात् सम्पूर्णों के देखते हुए यह चक्र प्रद्युम्न पर पडने लगा तब यह उछलकर चक्र को पकड तिस से उलटा केतुमालकाही शिर छेदन करताभया ५३ प्रद्युम्नके इस उत्तम कर्म्मको देवताओं सहित इन्द्र देखकर परमआश्चर्य को प्राप्त होताभया ५४ पश्चात् केतुमालको मराहुआ देखकर गधर्व और अप्सरा पुष्पोंकी वर्षा करतेभये व शङ्ख

हन्ता प्रमर्दन बहुतसी सेना के समूहसे प्रद्युम्न को प्राप्त होताभया ५५ पश्चात् हे राजन् वे सम्पूर्ण दैत्य गदा व मुसल व चक्र व प्रास व तोमर व बाण व भिं-दिपाल व कुहाडा व मुद्गर ५६ इन दीप्त शस्त्रोंको प्रद्युम्नके वधके वास्ते एकबार ऊपर गेरताभया व प्रद्युम्न भी तिन शस्त्रजालोंको हस्तलाघव दिखाता हुआ अनेकप्रकार के शस्त्रजालों से ५७ तिसको छेदन करताभया और क्रुद्धहुआ प्रद्युम्न हजारहों हस्तियों को व हस्तियों के सवारों को भेदन करता भया ५८ व रथ व सारथि व अश्व इन्होंका मर्दन करताहुआ और शरोंके समूहोंसे शत्रु-ओं को गिराताहुआ आप अविद्धरहा ५६ ऐसे सम्पूर्ण सैन्यको प्रद्युम्न मंथ-ताभया व घोरहाथोंके तरङ्गोंवाली ६० व वसा व मेद व अस्थि इनरूप कीचवाली व केशरूप सिवालसे व्याप्त ६१ व श्रोणिसूत्ररूप कमलकी नालवाली व सुन्दर मुखरूप कमलोंवाली ६२ व हंस चामरों से वीजित व शिररूप तिमिजीवों से व्याप्त ६३ व रुधिरके समूहको प्रवर्त्त करनेवाली ऐसी दुस्तरण घोरनदी प्रद्युम्न ने प्रवृत्तकरी ६४। ६५ व दुर्भेद्य व दुर्गम व रौद्र और हीनतेजों को दुस्तर और शस्त्ररूप ग्राहोंवाली और यमराष्ट्र को बढ़ानेवाली ऐसी नदी को रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्नधन्वा निलोताभया व पश्चात् शत्रुहता फिर क्रुद्धहोकर उत्तम शरको छोडताभया ६६ और वह शर प्रद्युम्न के हृदयपर पडताभया परन्तु तिस बाण से बींधाहुआ प्रद्युम्न नहीं कम्पता भया ६७। ६८ व पश्चात् मरने की इच्छा करनेवाले शत्रुहन्ता के अर्थ शक्ति को ग्रहण करताभया पश्चात् वह प्रद्युम्नकी गेरी हुई शक्ति पडती भई व हृदयको भेदन करके इन्द्र के वज्र के समान शब्द करतीभई ६९ व पश्चात् वह शत्रुहता भिन्नहृदय और स्सफाग व रुधिरका वमन करताहुआ ऐसा वह महावल पडा ७० पश्चात् शत्रुहन्ताको गिराहुआ देखकर प्रमर्दन स्थितहुआ और मुसलको ग्रहणकरके यह वचन कहताभया ७१ कि हे रणप्रिय ठहर इन्होंके मारनेसे क्याहै हे दुर्बुद्धे मेरेसे युद्धकर जिसमे तेरा नाश हो ७२ व हमारा शत्रु तेरापिता वृष्णिकुलमें उत्पन्न हुआहै तिसके पुत्रको तेरे को जब मारहूंगा तब उसकी आप मृत्यु होजायगी ७३ और हे दुर्बुद्धे तिसके मरनेसे देवताओंका क्षय होजायगा और जब देवताओंका क्षय होजायगा तब दैत्य व दानव हत शत्रुहुए आनन्द करेंगे ७४ व जब तू मेरे अस्त्रोंमे मृत्युको प्राप्त होजायगा तब तेरे रुधिरसे शम्बर के पुत्रोंकी श्रेष्ठकिया करूंगा ७५ और

भीष्मककी पुत्री अब विलाप करेगी और यौवनस्थ तेरे को मराहुआ ७६ तेरा पिता सुनके चक्र धारणकिये भी निष्फल आशावाला होजायगा व तेरे को हत जानके वह मदधी प्राणोंको भी त्यागदेगा ७७ ऐसे कहके प्रमर्दन मुसलसे रुक्मिणी के पुत्रको ताड़ना करताभया पश्चात् ताड़ित हुआ प्रतापवान् प्रद्युम्न ७८ तिसकेरथको भुजाओं से उठा चूर्ण करताभया व पश्चात् सो प्रमर्दन रथसे उतर पदाति स्थित होगया ७९ और गदालेकर प्रद्युम्नकी तरफ दौड़ा पश्चात् तिसीकी गदाको प्रद्युम्न ग्रहणकर प्रमर्दनको ताड़ना करताभया ८० पश्चात् प्रमर्दन को सम्पूर्ण दैत्य मराहुआ देखकर भागगये व सम्मुख स्थितहोने को ऐसे नहीं समर्थ होतेभये जैसे सिंहकी त्राससे हस्ती ८१ व कुत्तेको देखकर जैसे भेड़ी भागजाती है ऐसे प्रद्युम्नको देखकर सेनाभागगई ८२ व घायलहुई व रुधिरसे व्याप्त वस्त्रोंवाली व केशखोले ऐसे रजस्वला स्त्रीकी तरह शोभा रहित होतीभई ८३ व प्रद्युम्न के शरोंसे भिन्न व युवति समान वेषवाली व निर्दय धनुषोंसे पीड्यमान व युद्धको नहीं देखतीहुई व ऊचाश्वास लेतीहुई ऐसी सेना घरको जानेकी इच्छा करतीभई तहां स्थित होनेकी इच्छा नहीं करतीभई ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वभाषायांशम्बरसैन्यभंगोनामशतोपरित्रिषष्टितमोऽध्यायः १६३

एकसौचौंसठका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय तिसके अनन्तर क्रुद्धहुआ शम्बर सारथिसे कहताभया कि हे सारथे मेरे रथको शत्रुके मुखके आगे स्थापन कर १ इतने इस प्रद्युम्न का नाशकरूं ऐसे भर्त्ता के वचन सुन प्रिय करनेवाला सारथि २ सुवर्ण भूषित रथको प्रेरताभया पश्चात् फुल्ललोचन प्रद्युम्न इस रथको आयाहुआ देख ३ धनुषको लेकर सुवर्ण भूषित बाणको चढ़ातेभये और तिस बाणको शम्बर की तरफ छोड़के क्रोध करातेभये ४ पश्चात् तिस करके पीड़ित हुआ देवशत्रु रथ शक्तिके आश्रय होकर विचेतन हुआ स्थितहुआ ५ पश्चात् शम्बर चेतना को प्राप्त होकर और धनुष लेकर तीक्ष्ण सातबाणों से प्रद्युम्न को भेदन करताभया ६ पश्चात् नहीं प्राप्तहुये तिन घोरबाणों को सातबाणों से छेदन करताभया व पश्चात् तीक्ष्ण सत्तरबाणों से शम्बर को हनन करताभया ७ पश्चात् फिर कंकनहिं पक्षोंवाले हजार बाणों से क्रोधकरके शम्बरको ऐसे हनन

करताभया कि जैसे धाराओं करके पर्व्वत ८ व शरोंकी धारा दिशा औ विदिशाओं को आच्छादन करतीभई ९ व तिन बाणों से आकाश अन्धकार युक्त होगया और सूर्य्य भी नहीं दीखा पश्चात् वैद्युत अस्त्रसे शम्बर तिस अन्धकार को दूर करके १० पश्चात् प्रद्युम्न के रथपर शरोंकी वर्षा करताभया व प्रद्युम्न भी तिस अस्त्रजालको सुन्दर बाणों से छेदन करताभया ११ पश्चात् प्रद्युम्न ने जब शरोंकी महावर्षा नष्टकरदी तब हस्तलाघव दिखाताहुआ बहुत प्रकार से छेदन करताभया १२ पश्चात् कालशम्बर मायाकरके वृक्षोंकी वर्षा करनेलगा व वृक्षों की अति वर्षाको प्रद्युम्न देख क्रोधसे मूर्च्छित होगया १३ व पश्चात् आग्नेयास्त्र को छोड़के प्रद्युम्न तिन वृक्षोंका नाश करताभया पश्चात् जब उन्होंकी भस्महोगई तब शिलाओं के समूह की वर्षाकरी १४ प्रद्युम्न शिलाओं को भी वायव्य अस्त्रों से नष्टकरताभया पश्चात् देवशत्रु प्रतापवान् और मायाको रचताभया १५ पश्चात् हे राजन् सिंह और व्याघ्र व वराह व तरक्षु व रीछ व वानर व हस्ती व अश्व व उष्ट्र १६ इन जीवोंको छोड़ताभया व पश्चात् शम्बर धनुषको लेकर प्रद्युम्नके रथकेऊपर छोड़ताभया १७ तिन सम्पूर्णोंको प्रद्युम्न गन्धर्व अस्त्रसे छेदन करताभया पश्चात् प्रद्युम्न ने वह सम्पूर्णमाया नष्टकरदी शम्बर तिसको नष्ट देख क्रोधसे मूर्च्छितहुआ और मायाको छोड़ताभया १८ भिन्न मदनवाले और जवान साठ साठ वर्षोंवाले फीलवानों से युक्त और रण में चतुर ऐसे हस्तियों को छोड़ताभया १९ और प्रद्युम्न तिस आतीहुई मायाको देख पश्चात् सैंही मायाके छोड़नेको चित्तमें विचारताभया २० जब प्रद्युम्नने यह सिंह मायारची तब नागवतीमाया ऐसे नष्टहोगई कि जैसे सूर्य्य करके रात्रि २१ पश्चात् वह दानवोत्तम तिस मायाको नष्ट देख फिर प्रमोहिनी मायाको रचताभया २२ व तिस मायाको प्रद्युम्न देखके सज्ञास्त्रसे नष्ट करताभया २३ पश्चात् शम्बर तिस मायाको नष्टदेख सैंही माया रचताभया २४ पश्चात् प्रद्युम्न सिंहोंको आतेहुए देख और गान्धर्व्व अस्त्रलेकर शरभोंको रचताभया २५ वे आठ आठ पैरोंवाले शरभ नख और दंष्ट्राओं से युद्ध करतेहुए सिंहों को ऐसे दौड़ातेभये कि जैसे मेघोंको वायु पश्चात् मायाके अष्टापदों से सिंहोंको दौड़ेहुए देख २६ शम्बर यह चिंतवन करताभया कि इसको कैसे मारूंगा और अहो मैं बड़ा मूर्ख स्वभाववालाहूं क्योंकि जिसने बालकही यह नहीं मारदिया २७ और अब यह यौवनपने प्राप्तहोगया अब भा-

चन्द्रका कुमारहै १७ यह मेरा बिचार असत्य नहीं मैंने चिह्नो करके जानलिया
क्योंकि तेरामुख और केश और केशांत सम्पूर्ण नारायणकी तरह हैं १८ औ
ऊरु व वक्ष व भुज से सम्पूर्ण बलदेवजी के समानहैं ऐसा तू कौनहै सम्पूर्ण वृ
ष्णिकुलको शरीरसे भूषित करताहुआ स्थितहै १९ क्योंकि जिससे नारायणके
शरीर केसी दिव्य कांतिको धारणकरताहै पश्चात् शंवरके वधके प्रति नारदमुनि
के वचन भगवान् सुनके तिसीसमय में प्राप्तहुये २० पश्चात् जनार्दन भगवान
कामदेवके लक्षणों से सिद्ध तिस ज्येष्ठपुत्रको देख और मायावती पुत्रवधूको देख
हे राजन् कृष्णचन्द्र वचन कहनेलगे २१ हे रुक्मिणि देख धनुषको धारणकिये
यह तेरा पुत्र प्राप्तहोगयाहै २२ व हे देवि इस तेरे पुत्रने मायाओंको जाननेवाला
शंवर मारदियाहै और जिन मायाओं से देवताओंको पीड़ा करताभया वे सब
मारदी हैं २३ व सती व साध्वी व शुभा ऐसी यह मायावती तेरे पुत्रकी भार्या
है यह शंवरके घरमें बसेथी २४ व यह व्यथा तेरे मतहो कि यह शंवरकी स्त्री है
जब मन्मथ नाशको प्राप्तहोगया व अनंगताको प्राप्तहोगया २५ तब यह माया
रूप करके तिस शंवर दैत्यको मोहतीभई व यह कौमार भावमें भी वशमें स्थित
रहतीभई २६ अपने आत्माको मायामय करके शंवरके रूपको प्राप्त होतीभई २७
सो यह मेरे पुत्रकी पत्नी है और हे रुक्मिणि मेरी और तेरी स्नुषा पुत्रवधूहै २८
यह मनोमय लोकका साहाय्यकरेगी सो इस मेरी स्नुषाको प्रविष्टकर २९ औ
चिरकालसे नष्टहुये पुत्रको फिर भज ३० वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे राजन्
जनमेजय देवी रुक्मिणी ऐसा कृष्णचन्द्रका वचन सुनके रुक्मिणी अतुल हर्ष
को प्राप्तहोकर यह वचन कहतीभई ३१ अहो वीर पुत्रके समागमसे मेरेको धन्य
है और मेराकाम व मनोरथ आज पूर्णहुआ ३२ क्योंकि जिससे चिरकालसे
नष्टहुआ पुत्रका प्रिया सहित दर्शनहुआ ३३ हे राजन् ऐसे विचार कहनेलगी
कि हे पुत्र आओ और भार्या सहित भवन को प्राप्तहो ३४ तिसके अनन्तर
प्रद्युम्न गोविंद और माताके चरणों को प्रणामकरके बलदेवजी का पूजन कर
केशव भगवान् प्रद्युम्नको उठाकर मस्तक विषे सूंघतेभये ३६ व रुक्म भूषणा
रुक्मिणी देवी पुत्रवधू को उठा के मिलती भई और स्नेह युक्त रुक्मिणी पत्नी
सहित सुवनको ऐसे प्राप्तहुई जैसे इन्द्राणी ३७ और इन्द्रको प्राप्त होके अदिति
आये पुत्रका ऐसे प्रवेश करातीभई ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वमायावतीपरिग्रहो नामैकोनपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १४९॥

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० ऐपिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मौसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढ़ेहुये मनुष्यों कोभी भलीभांति समझमें आती है इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) वन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) द्रोण, (८) कर्ण, (९) शल्य, (१०) गदा,(११) स्त्री, (१२) स्वर्गारोहण, (१३) शान्तिपर्व, (१४) अश्वमेध, (१५) सौप्तिक, (१६) ऐपिक ॥

ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्व मिलेंगे छापेजावेंगे जिन महाशयों को मिलसके हैं कृपाकरके भेजदेवें तो छापेजावें ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसका तर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगया है और आदिपर्व्व से लेके हरिवंश पर्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगये हैं ॥

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता लोग अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासक्के तव मन्दबुद्धि जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जानसक्के हैं और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पंडित उमादत्तजी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिमे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थके भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृत भाष्य भाषा के साथ इस ग्रन्थ के टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवै इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजी के शंकरभाष्य का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहैं ॥



महाभारत भाषा

हरिवंश पर्व द्वितीय भाग

जिसमें

एकसौएकसठ से तीनसौछब्बीस अध्याय पृष्ठ १ से ३५८ तक की कथा ऊषा चरित्र, कृष्ण से मधुदैत्य का वध, वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा, घण्टाकर्णमोक्ष, पौण्ड्रक, एकलव्य वध, श्रीकृष्णजी का पुष्करागमन, त्रिशिरवध, हंस बलदेव और सात्यकि डिम्भकयुद्ध, हिडिम्बवध, श्रीकृष्ण का वैष्णवयज्ञयाग, हंसडिम्भकवध बलदेव कृष्णनन्दादि गमागम, कृष्णजी का द्वारका में आगमन, सर्व पर्वानुकीर्तन, त्रिपुरवध, हरिवंश वृत्तान्तसंग्रह, हरिवंश श्रवण फलकीर्तनादि कथा वर्णित है ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने जिला रोहतक बेरीग्रामनिवासी पण्डित गणेशदत्त से अत्यन्त परिश्रम से देवनागरी भाषामें उल्था रचना किया है ॥

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

जुलाई सन १८९८ ई० ॥

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सा-ख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विन-योदार्य्य सत्यसगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार ससार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता लोग अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासके तब मन्दबुद्धि जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सा-मर्थ्यहै वह कब इसके अन्तरभिप्राय को जानसक्ते हैं और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसीपुस्तक अथवा किसीवस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पडित उमादत्तजी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशङ्क-राचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार सस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय न-वलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थके भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृत भाष्य भाषा के साथ इस ग्रन्थ के टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजी के शंकरभाष्य का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहै ॥



महाभारत भाषा

हरिवंश पर्व्व द्वितीय भाग

जिसमें

एकसौइकसठ से तीनसौछब्बीस अध्याय पृष्ठ १ से ३५८ तक की कथा कृष्ण चरित्र, कृष्ण से मधुदैत्य का वध, वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा घण्टाकर्णमोक्ष, पौण्ड्रक, एकलव्य वध, श्रीकृष्णजी का पुष्करागमन, विचित्रवध, एवं बलदेव और सात्यकि डिम्भकयुद्ध, हिडिम्बवध, श्रीकृष्ण का वैष्णवास्त्रत्याग, हंसडिम्भकवध, बलदेव कृष्णनन्दादि समागम, कृष्णजी का द्वारका में आगमन, सर्व्व पर्व्वानुकीर्त्तन, त्रिपुरवध, हरिवंश वृत्तान्तसंग्रह, हरिवंश श्रवण फलकीर्त्तनादि कथा वर्णित है ॥

जिसको

श्रीमार्गववंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के आज्ञानुसार जिला शाहजहांपुर रेरीग्रामनिवासी पण्डित रविदत्त वैद्यने अत्यन्त परिश्रम से देवनागरी भाषामें उल्था रचना किया है ॥

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई ई) के छापेखाने में छपा

जुलाई सन् १८८८ ई० ॥

भूमिका ॥

प्रकटहो कि महाभारतके अन्तमें हरिवंशपर्व्व जिसको हरिवंशपर्व भी कहते हैं, श्लोक संख्या १७५०० करके श्री महाराज व्यासजी ने वर्णन किया है इस पर्व्वका माहात्म्य इतर पर्व्वोंसे विशेषतरहै—जब श्रीमहाभारतका आरम्भहोकर समाप्ती होतीहै तो अन्तमें निवारणार्थ इसीपर्वका पारायण कियाजाताहै और बहुधा वंशवृद्धि सन्तानोत्पत्ति के लिये इसीपर्वका श्रवण स्त्री पुरुषआदि संसारिक जन करते हैं—श्रीमद्वेदव्यासजी महाराजने अन्तको मूलतत्त्व इसीपर्व्व में वर्णन किया है—क्योंकि श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द वृन्दावनविहारी श्रीकृष्णचन्द्रके वंशका वर्णन विस्तारपूर्वक इसी एक पर्व्व में किया है और महाभारतके युद्धके विघ्नों के निवारणार्थ कियागयाहै अन्यत्र किसी पुस्तकमें मनोरञ्जन पुण्यदाता ऐसा चरित्र नहीं है जोकि संस्कृतमें यह पुस्तक अतीवक्लिष्टहै और बहुधा संस्कृत का प्रचार न्यून होगया है इस कारण श्रीमन्महाराजाधिराज बैकुण्ठनिवासि काशिनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंहजी की आज्ञानुसार रघुनाथ गोकुलनाथ गोपीनाथादि कवीश्वरों ने संस्कृतसे अनेक छन्द प्रबन्धों में उल्थाकिया—जिसको कि अतीवकालहुआ और दोबार इस यन्त्रालय में छपी इन महान् कवीश्वरों ने ऐसे प्रकार के छन्द प्रबन्ध में इस महाभारत का उल्था किया कि संस्कृत तो नहीं है परन्तु बहुधा शब्द विशेषतर क्लिष्ट हैं और कठिन छन्द हैं इस कारण अनेक पुरुषों की इच्छाहुई कि यह सम्पूर्ण पुराणोंका सार महाभारत इतिहास सरलभाषा वार्तिकमें उल्थाकिया जावे तो विशेषतर देशहितैषी होगा जब बहुधा सहस्रों पुरुषोंकी ऐसी आकांक्षाहुई तो इस यंत्रालयाधीश ने वार्तिक सरलभाषा में रचना करनेकी आज्ञादी और ईश्वरकी कृपासे आदिपर्व्व से ले हरिवंशपर्व्व तक सब पर्व्व छपगये हैं ॥

आशाहै कि विद्वज्जन ग्रहण करेंगे जिससे और कार्य्यों के करनेका विशेष साहस मिलेगा—जिन महाशयों को इन पर्व्वों व अन्यपुस्तकोंकी आवश्यकता हो—मुन्शीनवलकिशोरके छापाखाना लखनऊ हजरतगंज व कानपुर सरसैयाघाटसे मँगवालेवें —

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ हजरतगंज

अथ हरिवंश पर्व भाषा द्वितीयभागका सूचीपत्र।

इति



महाभारतहरिवंशपर्व ॥

दूसरा भाग ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे यज्ञ करनेवालों में श्रेष्ठ तिससमयमें काल-रूपी शम्बर दैत्यकोमार द्वारकामें प्रद्युम्न आये तब उसकी रक्षाके अर्थ आश्चर्य रूप एक आह्निकस्तोत्र बलदेवजी ने कहाहै १ सो तिस स्तोत्रको मनुष्य मा-यङ्कालमें जपताहुआ देहकी शुद्धिको प्राप्त होजाताहै और यह स्तोत्र बलदेव जी व विष्णुभगवान् और धर्म्म कामनाकी इच्छा करतेहुए ऋषि इन्होंने वर्णन कियाहै २ और एकदिन अपने घर बलदेवजी के सङ्ग बैठेहुये प्रद्युम्न हाथ जोड़ बलदेवजी से बोले ३ प्रद्युम्न कहते हैं कि हे कृष्णके बड़ेभाई हेमहाभाग हे रोहि-णी के पुत्र ऐसा कोई स्तोत्र मेरेप्रति कहो जिसके जपनेसे मैं निर्भय होजाऊं बलदेवजी वर्णन करते हैं कि सुर असुर और सम्पूर्ण जगत् इन्होंका पति ब्रह्मा मेरी रक्षाकरो और ओंकार और वषट्कार और सावित्री और अपूर्व विधि व नियम विधि और सत्याविधि ४ । ५ और ऋग् यजु साम अथर्व ऐसे चारोंवेदों के अभिमानी देवता ६ और पुराण व इतिहासमें खिल और अखिल ऐसे अङ्ग और उपअङ्ग ये सम्पूर्ण मेरी रक्षाकरो ७ और पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नि येपाचों तत्त्व और इन्द्रिय मन बुद्धि सत्त्व रज तम ऐसे तीनों गुण ८ व्यान उदान समान प्राण अपान ऐसे पाचों प्राण और जिनमें सम्पूर्ण जगत् व्याप्तहै ऐसे सातो पवन ९ और मरीचि अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु भृगु वशिष्ठ ऐसे महर्षि १० व कश्यपसे आदिले चौदह मुनि और दशों दिशा और गणों

सहित नरनारायण ये सम्पूर्ण मेरी रक्षाकरो ११ और एकादश रुद्र और द्वादश आदित्य व आठोंवसु व दोनों अश्विनीकुमार १२ और ह्री श्री लक्ष्मी स्वधा मेधा तुष्टि पुष्टि स्मृति धृति ये सम्पूर्ण और अदिति दिति दनु सिंहिका ऐसी दैत्यों की माता १३ और हिमवान् हेमकूट निषध श्वेत पर्व्वत ऋषभ पारिपात्र विन्ध्य वैदूर्य्य पर्व्वत १४ सह्योदय मलयमेरु मन्दर दर्दुर क्रौञ्च कैलास और मैनाक य ये सम्पूर्ण पर्व्वत मेरी रक्षाकरो १५ व शेष व वासुकि व विशालाक्ष और तक्षक और एलापत्र और शुक्लवर्ण और कम्बल और अश्वतर १६ और हस्तिभद्र और पिटरक और कर्कोटक और धनजय और पूरणक और करवीरक १७ और सुमनास्य और उदधिमुख और शृंगार पिण्डक और तीनों लोकों में विख्यात ऐसा मणिनाग १८ और नागोंका राजा अधिकरण और हारिद्रक और इन्होंसे आदिले और भी अन्य ऐसे नाग मेरीरक्षाकरो १९ व चा और चारों दिशाओं का चार समुद्र और नदियों में श्रेष्ठ गंगा २० और सरस्वति और चन्द्रभागा और शतद्रु और देविका व शिवा व इरावती व विपासा व सरयू व यमुना २१ व कलमापी व रथोष्णा व बाहुदा व हिरण्यदा और प्लक्षा व इक्षुमती व वृहद्रथा २२ व विख्यात चर्मण्वती और धूसरा व इन्हों से आदिले और भी अन्य नदी २३ उत्तरदिशा के रास्ते गमन करनेवाली ऐसी नदी मेरेको जलों से स्नानकराओ और वेणी व गोदावरी व सीता व कावेरी और कौंकणावती २४ कृष्णा और वेणा व शुक्तिमती और तमसा व पुष्पवाहिनी व ताम्रपर्णी व ज्योतिरथा और उत्पला और उदुम्बरावती २५ व वैतरणी और विदर्भा और नर्म्मदा और वितस्ता और भीमरथ्या और रोला २६ और कालिन्दी और गोमती और शोणनद ये सम्पूर्ण व अन्य नदी २७ दक्षिणदिशाके रास्ते बहनेवाली मेरेको जलों से स्नान कराओ व क्षिप्रा व चर्मण्वती व पुण्यमही व शुभ्रवती २८ व सिन्धु व वेत्रवती व भोजात्रा व वनमालिका व पूर्वभद्रा व परामद्रा व उर्मिला बहुमा २९ व वेत्रवती व मरुधावती व कुण्डनदी व पुण्य सरस्वती ३० व विपाशी व इन्दुमा व मधुमती व उमा व गुरुनदी व तापी व विमला ३१ निर्मलोदा व गत्तगगा व पयस्वनी ये सम्पूर्ण व अन्य नदी ३२ पश्चिमदिशा में बहनेवाली मेरेको स्नानकराओ व पूर्वदिशा में आश्रित व महादेव ने धारणकी हुई ३३ ऐसी पुण्य जलोंवाली भागीरथी नदी मेरे पापों को दहनकरो व प्रभास व प्र-

याग व नैमिष व पुष्कर ३४ व गंगातीर्थ व कुरुक्षेत्र व श्रीकंठ व गौतमका आश्रम ३५ व रामह्रद व विनशन व रामतीर्थ व गङ्गाद्वार व कनखल ३६ व कपाल तीर्थ व जम्बूमार्ग व सुवर्णबिन्दु व कनकपिङ्गल ३७ व दशाश्वमेधिक और नर नारायणका बदरिकाश्रम ३८ व फल्गूतीर्थ व चन्द्रवट व कोकामुख और गंगासागर ३९ व मगधदेशों में तपोद और गङ्गोद्भेद ये दो तीर्थ ४० व सूकर और योगमार्ग व श्वेतद्वीप व ब्रह्मतीर्थ व रामतीर्थ व वाजिमेध शतोपम ४१ व किल्बिषनाशिनी गंगा और वैकुण्ठ केदार और सूकरोद्भेदन ४२ व शापमोचन व ये सम्पूर्ण तीर्थ मेरेको पापों से पवित्रकरो और धर्म अर्थ काम इन्होंका विषय और यशकी प्राप्ति व सम दम ४३ व वरुणेश व कुबेर व यम व नियम व काल और नय व सन्नति व क्रोध व मोह व क्षमा व धृति ४४ व विद्युत् व मेघ व औषधि और प्रमाद व उन्माद ४५ व यक्ष और पिशाच व गन्धर्व व किन्नर और सिद्ध व चारण व रात्रि में विचरनेवाले और खेचर व जाड़ोंवाले व प्यार में विग्रह करनेवाले ४६ व लम्बे उदरोंवाले और पीले नेत्रोंवाले और पवनों सहित मेघ व कला व त्रुटि व लव और क्षण ४७ व नक्षत्र व ग्रह और शिशिर से आदिले ऋतु व मास व रात्रि दिन और सूर्य चन्द्रमा ४८ व अमोद व प्रमोद व प्रहर्ष व शोक व रज व तम व तप व सत्य व शुद्धि व बुद्धि और धृति और श्रुति ४९ व रुद्राणी व भद्रकाली व भद्रा व ज्येष्ठा व वारुणी व भासी व अलिका व शाण्डिली ५० व आर्या और कुहू व सिनी वाली व भामा व चित्ररथी व रति व एकनशा व कूष्माण्डी व कात्यायनी देवी ५१ व आजनमाता लोहिता व देवकन्या व देवताओं की स्त्री गोनन्दा ये सम्पूर्ण बान्धवोंसहित मेरीरक्षा करो ५२ व अनेकप्रकार के वेषोंवाले व अनेक प्रकारके रूपों से अङ्कित मुखोंवाले व अनेकप्रकारके विषयों के विचार करनेवाले व अनेक शस्त्रों से शोभित ५३ व मेद मज्जा मांस वसा मदिरा इन्होंको खानेवाले व बिलाव व गेंडाके समान मुखोंवाले व हस्ती व सिंहों केसे मुखोंवाले ५४ व कंक वायस गृध्र क्रौंच इन्हों के तुल्य मुखोंवाले और सर्पों के यज्ञोपवीतोंवाले और चर्म के आच्छादनोंवाले ५५ व खर और भेरी इन्हों की नाई शब्दोंवाले व और ईर्षाकरनेवाले और महाक्रोधी और प्रासाद व सुदग्स्थान वाले व मत्त व उन्मत्त व प्रमत्त व प्रहार करनेवाले व पीत नेत्रोंवाले व पीत केशोंवाले और छेदित केशोंवाले ५६ । ५७ व खड़े रो-

शोंवाली व काले केशोंवाली व सफ़ेद केशोंवाली व दशहज़ार हाथी के तुल्य पराक्रमोंवाले और वायुके तुल्य वेगवाले ५८ व एक हाथवाले व एक पैरवाले व एक नेत्रवाले व बहुतपुत्र व अल्पपुत्रोंवाले ५९ व मुखमण्डी व विडाली व पूतना और गंधपूतना व शीतवातोष्णवेताली व रेवती व ग्रहसज्ञावाली ६० व प्रियहास्या व प्रियक्रोधा व प्रियावासा व प्रियंवदा व सुखप्रदा व असुखदा और सदा ब्राह्मणों से प्यारकरनेवाली ६१ व नक्तंचरा और सुखोदकी और पर्वकाल में सदा दारुण रूपवाली व मातृ ये सम्पूर्ण माताओं की तुल्य मेरी नित्य रक्षा करो ६२ व ब्रह्माके मुखमे उत्पन्न होनेवाले और रुद्रके अंग से उत्पन्न होनेवाले ऐसे रुद्र और सनकादिकों के पदिनेमे उत्पन्न होनेवाले वैष्णवादि ज्वर ६३ व महाभीम व महावीर्यवाले व गर्ववाले व महाबलवंत व क्रोधवाले और वे क्रोधवाले व स्वभाववाले व देवताओं से विग्रह करनेवाले ६४ व रात्रिमें विचरनेवाले व सिंह व जाडोंवाले व मित्रोंसे विग्रह करनेवाले पिंगनेत्रोंवाले व विश्वमें फैले हुये रूपवाले ६५ व शक्ति ऋष्टि त्रिशूल परिघ प्रास ढाल खड्ग इन्होंको हाथों में धारण करनेवाले व पिनाक व वज्र व मुसल व ब्रह्मदण्ड इन आयुधोंमें प्रीतिवाले ६६ व दण्डोंवाले और कुण्डलोंवाले व शूरवीर व जटा व मुकुटोंको धारण करनेवाले व वेद वेदान्तमें कुशल और नित्य यज्ञोपवीत धारण करनेवाले ६७ व सर्पोंके मुकुटोंवाले व कुण्डलोंवाले व बाजुओंको धारण करनेवाले और अनेक प्रकारके वस्त्रोंवाले व चित्र विचित्र चन्दनादिकों के लगानेवाले ६८ और हस्ती घोडा ऊंट ऋच्छ बिलाव सिंह व्याघ्र इन्हों के तुल्य मुखोंवाले व बगह उलू गीदड मृग भैंसा इन्होंके तुल्य मुखोंवाले ६९ व वामन व कुवड़ा व भयानकरूप वाले और छेदित केशोंवाले औरभी सैकडों हजारहों व एकहज़ार जटाओंको धारण करनेवाले ७० व सफेद वर्णवाले व कैलासपर्व्वत के तुल्य आकारवाले व कोइक सूर्य्य कांतिवाले व कोइक मेघकेसे वर्णोंवाले व नीलपर्व्वत की तुल्य उपमावाले ७१ व एकपैर व दो पैरोंवाले व दो शिरोंवाले व मांसगत शरीरवाले व बड़ी जंघाओंवाले व मुखों को फाड़ते हुये बड़े भयानक रूपोंवाले ७२ और बावड़ी कूवा तलाव समुद्र नदी श्मशान पर्व्वत वृक्ष शून्यस्थान इन्हों में बसनेवाले ७३ और ये सम्पूर्ण ग्रह मेरी सोते रक्षाकरो और महागणोंका पति नंदीश्वर ७४ और लोकको भयदेनेवाले ऐसे महादेव और विष्णुके ज्वर ७५ और

ग्रामणी व गोपाल व गणोंका ईश्वर भृगरीटि व देव व वामदेव व घण्टाकर्ण व करंधम ७६ व श्वेतमोद व कपाली व जम्भक व शत्रुतापन व मज्जन और उन्मज्जन व सन्तापन और विलापन ७७ व निजघास व घस व स्थूणाकर्ण और प्रशोपण व उल्कामाली व धम व ज्वालामाली और प्रमर्दन ७८ और सघटन व सकुटन व काष्ठभूत शिवकर और कूष्माण्ड व कुभमूर्द्धा व चरीचन व वैकृत ७९। ८० व अनिकेत व सुरारिघ्न शिव और अशिव व क्षेमक और पिसताशी व सुरारी व हरिलोचन ८१ व भीमक व ग्राहक व अग्रमय व उपग्रह व अर्य्यक व स्कन्दग्रह ८२ व चपल व समवेताल व तामस व सुमहाकपि व हृदयोद्वर्त्तन व एड व ककणप्रिय व कुण्डाशी व हरिश्मश्रु व बोझवाले व मन,व पवनकेसे वेगवाले व सैकड़ों हजारहों पार्वतीके रोपसे उत्पन्न होनेवाले ८३ व शक्तिवाले व कान्तिवाले व ब्राह्मणों की भक्तिवाले व सत्यके युद्ध करनेवाले और युद्ध में शत्रुओंके सम्पूर्ण कामनाओंके हरनेवाले ८४ व रात्रिदिन और किला इन्हों में सम्पूर्ण गुणों से कीर्त्तन कियेहुये व सम्पूर्ण गणों के पति मेरी रक्षाकरो ८५ व नारद व पर्व्वत व गन्धर्व्व व अप्सराओं के गण व पितर व कारण व कार्य्य व आधि व व्याधि ८६ व अगस्त्य व गालव व गार्ग्य व शक्ति व धौम्य व पराशर और कृष्णात्रेय व असित व देवल व वल ८७ व बृहस्पति व उतथ्य व मार्कण्डेय व श्रुत श्रवा व द्वैपायन व विदर्भ व जैमिनि व माठर व कठ ८८ व विश्वामित्र व वशिष्ठ व लोमश व उतक व रैभ्य व पौलोम व द्वित व त्रित ८९ व कालवृक्षीय व मेधातिथि व सारस्वत और यवक्रीति व कुशिक व गौतम ९० व संवर्त और ऋष्यशृंग व स्वस्ती आत्रेय व विभाण्डक व ऋचीक व जमदग्नि और और्व ९१ व भरद्वाज और स्थूलशिरा और कश्यप और पुलह और क्रतु और बृहदग्नि व हरिश्मश्रु व विजय व कण्व व वैनण्डी व दीर्घतापा व वेदगाय व अंशुमान व शिव व अष्टावक्र व दधीचि व श्वेतकेतु ९२ उद्दालक व क्षारपाणि व शृङ्गी व गौमुख व अग्निवेश्य व शमीक व प्रमुच व मुमुच ९३ व ये सम्पूर्ण कहेहुये व अन्य विनाकहेहुये ९४ स्नान कियेहुये व शान्तरूप ये सम्पूर्ण मेरी रक्षाकरो व तीनों अग्नि व तीनों वेद व त्रयविद्या व कौस्तुभमणि ९५ व उच्चैःश्रवा घोड़ा व धन्वन्तरि वैद्य व हरि व अमृत व गो व सुवर्ण व दधि व गौर सर्षप ९६ व सफेदपुष्प व कन्या व श्वेत छत्र व वर असन व दूर्वा व सुवर्ण व

वोले कि हे भगवन् नारदजी के गुह्य मन्त्रको हम नहीं जानते २५ इनने दक्षिणा सहित आश्चर्य व धन्य यह क्या वचन कहा २६ सो इस परम मन्त्रको हम क्यों नहीं जानते हे भगवन् यह मन्त्र सुनानेके योग्यहो तो हमको सुनाओ हम सुननेकी इच्छा करते हैं २७ तब तिन श्रेष्ठ राजाओं के प्रति श्रीकृष्ण वोले कि हे राजाओ में नारदके प्रति वर्णन करताहूं यह तुम्हारे अगाडी कहेंगे २८ ऐसे कह श्रीकृष्ण नारदमुनिसे वोले कि हे नारदमुनि ये सम्पूर्ण राजा सुनने की इच्छा करते हैं सो इन्हों के प्रति तुम तत्वार्थ वर्णनकरो २९ ऐसे सुन नारदमुनि सुवर्ण के आसनपै वैठेहुये श्रीकृष्णके प्रभाव कहनेको प्रवर्तहुये ३० नारदमुनि कहने लगे कि हे राजाओ इन श्रीकृष्ण का जितना प्रभाव मैं जानताहू उसको तुम जितने राजा सभामें वैठेहो वे सब मेरे मुखसे सुनो ३१ मैं एकदिन प्रातःकाल गंगाजी के तीरपै स्नान करनेको प्राप्तहुआ सो एककोस चौडा और दो कोस लंबा ३२ पर्वतके शिखर कैसे आकारवाला और दो कपालोंवाला ३३ चारपैरों से श्लिष्ट गीला मेरी वीणाके समान आकृतवाला हाथीके चर्म के समूहके समान उपमावाला ३४ ऐसे जीवको मैं देखताभया सो उस जलचारी जीव को अपने हाथमे स्पर्शकर मैं वोला कि हे कूर्म तू आश्चर्यरूप शरीरवालाहै व धन्य है ३५ क्योंकि तू अभेद्यरूप दोनों कपालों से आवृतहुआ निःसंदेह इस जलमें विचरताहै ३६ तब वह कछुवा मनुष्यकी नाईं वाणीसे वोला कि हे मुने मेरे में क्या आश्चर्य है और मैं कैसे धन्यहूं ३७ धन्यतो ये गंगाजी है क्योंकि इन गंगाजीमें मेरे सरीखे अयुतजीव विचरते हैं ३८ ऐसेसुन मैं आश्चर्यसे युक्तहुआ गंगामें जाके प्राप्तहुआ और गंगा से मैं वोला कि हे गंगे तू धन्य है और नित्य आश्चर्यसे भूषितहै ३९ क्योंकि तू वडी २ देहवाले जीवों से शोभितहै और तपस्वियों के आश्रमों की रक्षा करतीहुई समुद्रमें जाती है ४० तब ऐसे सभाषणकी हुई गंगा नारद से वोली ४१ कि हे देवताओं के गंधर्व व हे कलहप्रिय मेरेको ऐसे मत कहे क्योंकि मैं धन्य नहीं हूं और आश्चर्य से भी शोभित नहीं हूं ४२ हे द्विज सम्पूर्ण आश्चर्यों को करनेवाला और धन्यरूप इसलोकमें समुद्र है ४३ क्योंकि मेरे सरीखे विस्तारवाली सैकडों नदी जिस में जाके प्राप्तहोती हैं ऐसे गंगा के वाक्यको सुन मैं समुद्र पै जाके प्राप्त होताभया ४४ और वोला कि हे समुद्र तू लोक में धन्यरूप है और आश्चर्य्य रूप है इससे तू सम्पूर्ण जलोंकी

योनी है और ईश्वरहै ४५ और जलोंको वहानेवाली लोकोंको पवित्र करनेवाली व लोकोंको नमस्कार कीहुई ऐसी नदीरूप स्त्री तेरेको जाके प्राप्तहोती हैं ४६ ऐसे सुन समुद्र मेरे प्रति बोला कि हे देव गन्धर्व्व मेरेको ऐसे मत कहो ४७ मैं आश्चर्य्यरूप नहींहूं हेमुने यह पृथ्वीधन्यहै जिसके ऊपर मैं स्थित हू ४८ व इस लोकमें पृथ्वीसे उपरान्त आश्चर्य्य क्याहै ऐसे सुन मैं समुद्रके वाक्यसे पृथ्वीतलमें पृथ्वी पै स्थित होताभया ४९ व आश्चर्यसेयुक्तहुआ पृथ्वीसे बोला कि हे धरित्रि और हे देहधारियोंकी योनि और हे शोभने तू धन्यहै ५० तेरे करके मनुष्यों में आश्चर्यहै और मनुष्यों के तू अरणिरूपहै ५१ तेरेहीसे भूतोंके क्षमा उत्पन्नहोती है व सामयुक्त स्तुतिरूपीवचनोंसे क्षोभकीहुई पृथ्वी ५२ अपनी धीर्यताको त्याग मेरेप्रति बोली कि हे देवगन्धर्व हे कलहप्रिय ५३ मेरेको ऐसे मतकहो कि मैंधन्य और आश्चर्यरूप नहींहू हे द्विजोंमेंश्रेष्ठ ये सम्पूर्णपर्वत धन्यहैं जो मेरेको धारण करते हैं ५४ सो मैं धरणी के वाक्यसे पर्वतों पै जाके प्राप्तहुआ ५५ व पर्वतों से मैं बोला कि हेपर्वताओ तुम धन्य और आश्चर्यरूप दीखतेहो और सुवर्ण रत्न व सपूर्ण धातु ५६ इन्होंकी खानोंवालेहो और स्थावरों में श्रेष्ठ वनों से शोभित ऐसे पर्वत मेरे वचनको सुन ५७ शान्तियुक्त वचनबोले कि हे ब्रह्मर्षे हम धन्यनहीं हैं और हमारे आश्चर्यभी नहीं है ५८ किंतु प्रजाकापति ब्रह्मा धन्यहै और सम्पूर्ण देवताओं में आश्चर्यरूपहै ५९ ऐसे सुन सपूर्ण जगत्का उत्पन्न करनेवाला अव्यय ६० ऐसे ब्रह्माके पासजाके शिरको नवाकर स्तुति करताभया ६१ व अपने वाक्य की पूर्णताके अर्थ में ब्रह्माको सुनानेलगा कि इस जगत्के गुरुहो और तुमहीं आश्चर्य व धन्यरूपहो ६२ व हे भगवन् इस उत्पन्नहुए जगतको तुमसे धन्य मैं नहीं देखता सो यह स्थावर और जंगम ६३ ऐसा दोप्रकार का जगत् तुमसेही उत्पन्न हुआहै व देवता व दानव व मनुष्य व सम्पूर्ण जगत् ये सब तुम्हारी दृष्टी से उत्पन्न होते हैं ६४ ऐसे सुन सम्पूर्णलोकों के पितामह ब्रह्मा मेरे प्रतिबोले कि हे नारद आश्चर्य व धन्य ऐसे वाक्यों से मेरेप्रति क्या कहताहै ६५ हे नारद आश्चर्य व धन्यरूपतो वेदहैं क्योंकि लोकोंको तत्त्व अर्थधारण करातेहैं ६६ और ऋग् साम यजु अथर्व इनचारों वेदों में मेरेको तन्मय जान ६७ व तिन वेदोंने मुझे धारणकर रक्खाहै व मैंने वे वेद धारणकर रक्खे हैं ६८ ऐसे ब्रह्माके वचनसे प्रेरण कियाहुआ वेदोंकेपास जाताभया व मन्त्रों सहित चारों वेदोंसे कहनेलगा ६९

बोले कि हे भगवन् नारदजी के गुह्य मत्रको हम नहीं जानते २५ इनने दक्षिणा सहित आश्चर्य व धन्य यह क्या वचन कहा २६ सो इस परम मत्रको हम क्यों नहीं जानते हे भगवन् यह मत्र सुनानेके योग्यहो तो हमको सुनाओ हम सुननेकी इच्छा करते हैं २७ तब तिन श्रेष्ठ राजाओं के प्रति श्रीकृष्ण बोले कि हे राजाओ मैं नारदके प्रति वर्णन करताहूं यह तुम्हारे अगाडी कहेंगे २८ ऐसे कह श्रीकृष्ण नारदमुनिसे बोले कि हे नारदमुनि ये सम्पूर्ण राजा सुनने की इच्छा करते हैं सो इन्हों के प्रति तुम तत्वार्थ वर्णनकरो २९ ऐसे सुन नारदमुनि सुवर्ण के आसनपै बैठेहुये श्रीकृष्णके प्रभाव कहनेको प्रवर्तहुये ३० नारदमुनि कहने लगे कि हे राजाओ इन श्रीकृष्ण का जितना प्रभाव मैं जानताहू उसको तुम जितने राजा सभामें बैठेहो वे सब मेरे मुखसे सुनो ३१ मैं एकदिन प्रातःकाल गंगाजी के तीरपै स्नान करनेको प्राप्तहुआ सो एककोस चौड़ा और दो कोस लंबा ३२ पर्वतके शिखर केसे आकारवाला और दो कपालोंवाला ३३ चारपैरों से श्लिष्ट गीला मेरी वीणाके समान आकृतवाला हाथीके चर्म के समूहके समान उपमावाला ३४ ऐसे जीवको मैं देखताभया सो उस जलचारी जीव को अपने हाथसे स्पर्शकर मैं बोला कि हे कूर्म तू आश्चर्यरूप शरीरवालाहै व धन्य है ३५ क्योंकि तू अभेद्यरूप दोनों कपालोंसे आवृतहुआ निःसंदेह इस जलमें विचरताहै ३६ तब वह कछुवा मनुष्यकी नाईं वाणीसे बोला कि हे मुने मेरे में क्या आश्चर्य है और मैं कैसे धन्यहू ३७ धन्यतो ये गंगाजी हैं क्योंकि इन गंगा जीमें मेरे सरीखे अयुतजीव विचरते हैं ३८ ऐसेसुन मैं आश्चर्यसे युक्तहुआ गंगामें जाके प्राप्तहुआ और गंगा से मैं बोला कि हे गंगे तू धन्य है और नित्य आश्चर्यसे भूषितहै ३९ क्योंकि तू बडी २ देहवाले जीवों से शोभितहै और तपस्वियोंके आश्रमों की रक्षा करतीहुई समुद्रमें जाती है ४० तब ऐसे सभाषणकी हुई गंगा नारद से बोलीं ४१ कि हे देवताओं के गंधर्व व हे कलहप्रिय मेरेको ऐसे मत कहै क्योंकि मैं धन्य नहींहू और आश्चर्य से भी शोभित नहीं हू ४२ हे द्विज सम्पूर्ण आश्चर्योंको करनेवाला और धन्यरूप इसलोकमें समुद्र है ४३ क्योंकि मेरे सरीखे विस्तारवाली सैकडों नदी तिस में जाके प्राप्तहोती हैं ऐसे गंगा के वाक्यको सुन मैं समुद्र पै जाके प्राप्त होताभया ४४ और बोला कि हे समुद्र तू लोक में धन्यरूप है और आश्चर्य्य रूप है इससे तू सम्पूर्ण जलोंकी

योनी है और ईश्वरहै ४५ और जलोंको वहानेवाली लोकोंको पवित्र करनेवाली व लोकोंको नमस्कार कीहुई ऐसी नदीरूप स्त्री तेरेको जाके प्राप्तहोती हैं ४६ ऐसे सुन समुद्र मेरे प्रति बोला कि हे देव गन्धर्व्व मेरेको ऐसे मत कहो ४७ मैं आश्चर्यरूप नहींहूं हेमुने यह पृथ्वीधन्यहै जिसके ऊपर मैं स्थित हू ४= व इस लोकमें पृथ्वीसे उपरान्त आश्चर्य क्याहै ऐसे सुन मैं समुद्रके वाक्यसे पृथ्वीतलमें पृथ्वी पै स्थित होताभया ४६ व आश्चर्यसेयुक्तहुआ पृथ्वीसे बोला कि हे धरित्रि और हे देहधारियोंकी योनि और हे शोभने तू धन्यहै ५० तेरे करके मनुष्यों में आश्चर्य है और मनुष्यों के तू अरणिरूपहै ५१ तेरेहीसे भूतोंके क्षमा उत्पन्नहोती है व सामयुक्त स्तुतिरूपीवचनोंसे क्षोभकीहुई पृथ्वी ५२ अपनी धीर्यताको त्याग मेरेप्रति बोली कि हे देवगन्धर्व हे कलहप्रिय ५३ मेरेको ऐसे मतकहो कि मैंधन्य और आश्चर्यरूप नहींहूं हे द्विजोंमेंश्रेष्ठ ये सम्पूर्णपर्वत धन्यहैं जो मेरेको धारण करते हैं ५४ सो मैं धरणी के वाक्यसे पर्वतों पै जाके प्राप्तहुआ ५५ व पर्वतों से मैं बोला कि हेपर्वताओ तुम धन्य और आश्चर्यरूप दीखतेहो और सुवर्ण रत्न व सपूर्ण धातु ५६ इन्होंकी खानोंवालेहो और स्थानरों में श्रेष्ठ वनों से शोभित ऐसे पर्वत मेरे वचनको सुन ५७ शान्तियुक्त वचनवोले कि हे ब्रह्मर्षे हम धन्यनहीं हैं और हमारे आश्चर्यभी नहीं है ५८ किंतु प्रजाकापति ब्रह्मा धन्यहै और सम्पूर्ण देवताओं में आश्चर्यरूपहै ५६ ऐसे सुन संपूर्ण जगत्का उत्पन्न करनेवाला अव्यय ६० ऐसे ब्रह्माके पासजाके शिरको नवाकर स्तुति करताभया ६१ व अपने वाक्य की पूर्णताके अर्थ मैं ब्रह्माको सुनानेलगा कि इस जगत्के गुरुहो और तुमही आश्चर्य व धन्यरूपहो ६२ व हे भगवन् इस उत्पन्नहुए जगत्को तुमसे धन्य मैं नहीं देखता सो यह स्थावर और जंगम ६३ ऐसा दोप्रकार का जगत् तुमसेही उत्पन्न हुआहै व देवता व दानव व मनुष्य व सम्पूर्ण जगत् ये सब तुम्हारी दृष्टी से उत्पन्न होते हैं ६४ ऐसे सुन सम्पूर्णलोकों के पितामह ब्रह्मा मेरे प्रतिबोले कि हे नारद आश्चर्य व धन्य ऐसे वाक्यों से मेरेप्रति क्या कहताहै ६५ हे नारद आश्चर्य व धन्यरूपतो वेदहैं क्योंकि लोकोंको तत्त्व अर्थधारणकरानेवाले हैं ६६ और ऋग् साम यजु अथर्व इनचारों वेदों में मेरेको तन्मय जान ६७ व तिन वेदोंने मुझे धारणकर रक्खाहै व मैंने वे वेद धारणकर रक्खे हैं ६= ऐसे ब्रह्माके वचनसे प्रेरण कियाहुआ वेदोंकेपास जाताभया व मन्त्रों सहित चारों वेदोंने पढनेलगा ··

कि हे वेदो तुम धन्यहो पवित्रहो व आश्चर्य से भूषितहो ब्राह्मणों के आधारहो ऐसे ब्रह्माने कहाहै ७० और वे वेद ऐसेसुन अगाडी स्थितहुये मेरे से बोले कि आश्चर्य व धन्यरूप तो परमेश्वरसम्बन्धी यज्ञहैं क्योंकि यज्ञों के अर्थ हम ब्रह्माके रचे हैं यासे हमसे श्रेष्ठ यज्ञहै व यज्ञोंसे श्रेष्ठ हमनहीं हैं ७१ ब्रह्मासे श्रेष्ठ वेद और वेदोंसे श्रेष्ठ यज्ञ ऐसे वेदोंके वचनको सुन मैं गम्भीरवाणियोंसे यज्ञोंसे बोला ७२ कि हे यज्ञाओ तुम्हारेमें परमतेज दीखताहै क्योंकि ब्रह्माके कहेहुये वाक्य वेदों ने मेरेसे प्रकट किये हैं ७३ सो इसलोकमें तुमसे अन्य आश्चर्य और किसी में नहीं दीखता है ब्राह्मणों के कुल में उत्पन्न होनेवाले तुम धन्यहो ७४ क्योंकि तुम्हारे तृप्तकियेहुये होमोंसे अग्नि व भागोंसे देवता व मन्त्रोंसे महर्षि ७५ तृप्तिको प्राप्त होते हैं ऐसे कहनेके अनन्तर यूप व ध्वजाओं सहित अग्निष्टोमादि यज्ञ मेरे प्रति कहनेलगे ७६ कि हे मुने आश्चर्य व धन्य शब्द हमारे में नहीं है आश्चर्यरूप तो एक विष्णु भगवान् है सो वे हमारी परमगती रूपहैं ७७ व अग्नि में होमेहुये घृतको जो हम भोजन करते हैं उस सम्पूर्णको लोकमूर्त्ति विष्णु भगवान् प्राप्त कर देते हैं ७८ ऐसे यज्ञोंके वचनको सुन विष्णुके प्राप्तिकी इच्छा करताहुआ पृथ्वीपै प्राप्त होताभया और तुमसे युक्तहुआ ये श्रीकृष्णको मैंने देखा ७९ और आश्चर्य और धन्यरूप हे श्रीकृष्ण तुमहो ऐसे जो मैंने कहाथा सो हे राजाओ वह आश्चर्य और धन्यरूप तुम्हारेमें स्थितहुये ये श्रीकृष्ण हैं ८० व दक्षिणा सहित सम्पूर्ण यज्ञोंकी गति विष्णुभगवान् हैं ८१ व दक्षिणासहित आश्चर्य और धन्य यह जो मेरा प्रश्नथा सो समाप्तहुआ ८२ व जो प्रश्न तुम्हों ने मेरेसे पूछा सो तिसका निर्णय तुम्हारे अगाडी कहचुका ८३ ऐसे कह नारदमुनि स्वर्गको गये और सेना और वाहनोंसहित सम्पूर्ण राजा भी अपने २ देशोंको गये ८४ व अग्नि की तुल्य उपमावाले यादवोंसहित श्रीकृष्ण भी अपने भवनमें प्राप्त हुये ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामेकोनसप्ततितमोऽध्यायः १६८ ॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे वैशम्पायन वडी भुजाओंवाले और जगत् के पति ऐसे श्रीकृष्णका परम माहात्म्य सुननेकी मैं फिर इच्छा करताहूं १ क्योंकि महात्मा और पुराणपुरुष ऐसे श्रीकृष्ण के कर्मों के अनुक्रम को सुनते मेरे

को तृप्ति नहीं होती है ऐसेसुन वैशम्पायन जी कहनेलगे कि हे जनमेजय ३ श्रीकृष्णके प्रभावका अन्त कहनेको सौवर्षोंतक भी मनुष्य नहीं समर्थ होताहै परन्तु किंचित् अद्भुत प्रभावको मैं वर्णन करताहूं सो तू सुन ४ शरशय्यापै सोते हुये भीष्मजी से प्रेरण कियाहुआ अर्ज्जुन ५ राजाओं के मध्यमें बैठेहुये बड़े भाई युधिष्ठिरके प्रति श्रीकृष्णके माहात्म्यको वर्णन करनेलगा ६ अर्जुन कहने लगे कि हे भ्राता सम्बन्धियों के देखने के अर्थ द्वारकामें गयाहुआ भोज वृष्णि अन्धक ऐसे उत्तम यादवोंसे पूजन कियाहुआ वास करताभया ७ सो महाबाहु और धर्मात्मा ऐसे श्रीकृष्ण एकदिनकेवास्ते कर्मकरनेको दीक्षित होतेभये ८ व दीक्षावाले आसनपै बैठेहुये ऐसे श्रीकृष्ण को एक ब्राह्मण प्राप्तहो कहनेलगा कि हे भगवन् तुम मेरी रक्षाकरो तुम्हारे रक्षाकरने में अधिकारहै रक्षाकरनेवाला पुरुष धर्म के चतुर्थांश फलको प्राप्तहोताहै ९ ऐसे सुन श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे ब्राह्मण तू डरेमत मैं तेरी रक्षाकरूंगा और बड़े दुःखसे भी होनेवाला कृत्य है सो उसको मेरे प्रति तत्त्व से वर्णनकर १० तेरा कल्याणहो ऐसे सुन वह ब्राह्मण कहनेलगा कि हे महाबाहो मेरे पुत्र हो होके मृत्यु को प्राप्तहोते हैं इसप्रकार से मेरे तीनपुत्र मरचुके और हे कृष्ण अब मेरे चौथे पुत्रकी रक्षाकरनेको तुम योग्य हो ११ हे जनार्दन अब ब्राह्मणी के पुत्र होने का समयहै सो जैसे मेरे पुत्रकी मृत्यु न होवै तैसे तुम विधान करो १२ अर्जुन कहते हैं कि वे श्रीकृष्ण ब्राह्मण के वचन को ऐसे सुन मेरे प्रति बोले कि हे अर्जुन मैं यज्ञ में दीक्षित हूं और ब्राह्मणोंकी रक्षा तो वृद्धावस्थावाले पुरुषोंको भी करनी उचितहै १३ सो हे नराधिप ऐसे श्रीकृष्णके वचनको सुन मैं बोला कि हे गोविन्द मेरेको आज्ञादो मैं ब्राह्मण को भयसे रक्षाकरूंगा १४ ऐसे कहेहुये श्रीकृष्ण मन्द मुसकानकर ऐसे बोले कि हे अर्जुन तू रक्षा करने में असमर्थ है तब मैं लज्जित होताभया १५ और वे श्रीकृष्ण मेरेको लज्जितहुआजान फिर ऐसे बोले कि हे कौरवों में श्रेष्ठ जो तू रक्षाकरने में समर्थहै तो गमनकर १६ और बलदेव प्रद्युम्न इन्हों के बिना और वृष्णि अन्धक इन्हों में श्रेष्ठ महारथी और तेरे अगाड़ी चलतेहुये ये भी सम्पूर्ण रक्षाकरो १७ और ब्राह्मण को अगाड़ीकर सम्पूर्ण यादवों की सेनाको सगले मैं ब्राह्मणके स्थानको जाताभया १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपुराणेभाषायांद्वारकाप्रवेशोनामाध्यायः १५७ ॥

एकसौसत्तरका अध्याय ॥

अर्जुन कहनेलगे कि हे भरतर्षभ एकमुहूर्त्त में हम सेनासहित तिस ग्राम में जाके प्राप्तहुए १ व प्रकाशकरतेहुये पक्षी और क्रूर २ वचनोंको बोलतेहुए मृग ये सम्पूर्ण जलतीहुई दिशा में वसतेहुए मेरेको भय निवेदन करतेभये २ और सध्याकावर्ण जयाके पुष्पकीतुल्य पीला होताभया सूर्यकांति से रहित होताभया उल्कापात होनेलगा पृथ्वी कँपनेलगी ३ और दारुण लोमहर्षों को उपजाने वाले ऐसे महान् उत्पातोंको देख इच्छा करतेहुये मनुष्योंको मैं आज्ञा देताभया ४ सात्यकि आदि वृष्णि अन्धक ऐसे यादव और मैं अपने २ रथों में बैठ हथियारोंको साध स्थित होतेभये ५ व अर्द्धरात्रिके समयमें भयसे व्याकुलहुआ ब्राह्मण उहाआके हमसे कहनेलगा ६ कि मेरी ब्राह्मणी के पुत्र होने का समय अब प्राप्तहुआहै सो जैसे पुत्रकी रक्षाहो वैसेही तैयारहो और रक्षाकरो ७ ऐसे कह ब्राह्मण अपने घरगया तब एक मुहूर्तमात्र में हीं ब्राह्मणके भवनमें हरलिया २ ऐसा रोदनसहित शब्दको मैं सुनताभया ८ व हरेहुये बालककी आकाश में उँह २ ऐसी वाणीभी मैंने सुनी और आकाशमें किसी राक्षसको भी नहीं देखताभया ९ व तिसविक्त हमने बाणोंकी वर्षा से सम्पूर्ण दिशा आच्छादितकी परन्तु वह बालक हरहीलिया १० और वह ब्राह्मण बड़ा आर्तशब्दको करताहुआ व मेरेको बड़ी कठोर२ वाणी सुनानेलगा ११ कि मैं बालककी रक्षाकरूंगा ऐसे प्रतिज्ञाकर नहीं रक्षा करताभया सो हे दुर्म्मते तू रक्षा करने के योग्य नहीं है १२ क्योंकि तू अतुल बुद्धिवाले श्रीकृष्णके संग ईर्षा करताहै और जो यहां श्रीकृष्ण होते तो क्या हमारा पुत्र यहां से जाता १३ जैसे धर्म्म की रक्षा करनेवाला पुरुष धर्म्मके चतुर्थभागको प्राप्त होताहै वैसेही हे मूढ पापके चतुर्थांशको बिना रक्षा करनेवाला प्राप्त होताहै १४ व मैं रक्षाकरूंगा ऐसे तैंने कहाथा और रक्षाकी नहीं सो तेरा गाण्डीवधनुष व पराक्रम व यश ये सम्पूर्ण वृथाही हैं १५ और मैं ऐसे ब्राह्मणका वचन सुन सम्पूर्ण यादवोंको सगले द्वारकापुरीको प्रस्थानकरता भया १६ और द्वारकापुरी में प्राप्तहो श्रीकृष्णको देख लज्जा और शोकको प्राप्त होताभया १७ व वह ब्राह्मण मेरेको लज्जायमान देख श्रीकृष्णके समीप निंदा करताहुआ बोला कि मेरी मूढ़ताको देखो मैं हिजडाके वचन में श्रद्धा करता

भया १८ क्योंकि प्रद्युम्न और अनिरुद्ध बलदेव श्रीकृष्ण इन्होंसे अन्य मृत्यु से रक्षा करने में कौन राजा समर्थ है १९ सो वृथा बोलनेवाला व अपने आत्माकी श्लाघा करनेवाला ऐसे अर्जुनको और इसके धनुषको धिक्कारहै २० ऐसे ब्राह्मण के मुखसे निन्दाको सुन व वैष्णवी विद्याको प्राप्तहो धर्म्मराजकी संयमनी पुरी को जाताभया २१ व तिसपुरी में ब्राह्मणका पुत्र नहींदीखा तब अग्नि निर्ऋति सोम कुबेर और वरुण इन्हों की पुरियों में जाताभया २२ पीछे रसातल स्वर्ग आदिस्थानों में जाके ढूढनेलगा परन्तु कहींभी ब्राह्मणका पुत्रमिला नहीं २३ तब अपनी प्रतिज्ञाको भ्रष्टमान फिर अग्निमें जलनेकी इच्छा करताहुआ मेरे को श्रीकृष्ण व प्रद्युम्न ये दोनों निवारण करतेभये २४ व श्रीकृष्ण बोले कि मैं ब्राह्मणके पुत्रको तुझेदेऊगा और तू अपना तिरस्कार मतमान व तेरीकीर्तिको सम्पूर्ण मनुष्य पृथ्वीपर स्थापित करेंगे २५ ऐसे श्रीकृष्ण मेरेको धीर्य्यता दे व स्नेहपूर्व्वक संभाषणकर तिस ब्राह्मण को शान्तकर दारुक सारथी से बोले कि सुग्रीव व सैन्य व मेघपुष्प व बलाहक २६ इन चारों घोडाओं को रथमें जल्द युक्तकर ऐसेसुन दारुकरथको तय्यार करताभया व तिस रथ में ब्राह्मण व दारुक को बैठा २७ मेरेसे बोले कि तू घोडाओंको हाक तब श्रीकृष्ण और मैं व ब्राह्मण व दारुक ये चारों २८ रथमें स्थितहो हे युधिष्ठिर सौम्यरूप उत्तर दिशाको गमन करतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांशततमोपरिसप्ततितमोऽध्याय १७० ॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय ॥

अर्जुन कहनेलगे कि हे युधिष्ठिर पर्व्वत व नदी व वन इन्होंको अतिक्रमण कर समुद्र में प्राप्त होतेभये १ व वह समुद्र पूजा सामग्री को ग्रहणकर हाथों को जोड़ता हुआ बोला कि हे श्रीकृष्ण मेरे को आज्ञा दो मैं तुम्हारी अब क्या खातिरीकरूं २ व भगवान् ऐसे सुन पूजा सामग्री को ग्रहणकर समुद्र से बोले कि हे नदीपते मैं रथ के मार्ग की इच्छा करताहूं सो मेरे को रस्ता दे ३ ऐसे सुन वह समुद्र हाथजोड़ श्रीकृष्ण से बोला कि हे भगवन् तुम ऐसे मत नहीं करो क्योंकि तुम्हारे से अन्य पुरुषभी मेरे ऊपर से उतरने लगजावेंगे ४ सो हे जनार्दन तुमसेही पहिले मैं अगाध स्थापित कियागया सो तुम्हारे मार्ग से मैं ल-

घृणाको प्राप्त होजाऊंगा ५ सो हे गोविन्द ऐसे विचार जैसे योग्यहो वैसेही तुम करो ६ श्रीकृष्ण बोले कि हे समुद्र ब्राह्मण और मेरे अर्थ मेरे वचनको पूराकर और मेरे से अन्य और कोई पुरुष तेरा तिरस्कार नहीं करेगा ७ ऐसे सुन शाप के भयसे फिर समुद्र श्रीकृष्ण से बोला कि हे भगवन् मैं मार्ग दूंगा ८ और हे कृष्ण रथमें बैठ जिसरस्ते आपजाओगे उस जलको मैं शोषण करूंगा ९ ऐसे सुन श्रीकृष्ण बोले कि अनेकप्रकारके रत्नों के समूहों को मनुष्य नहीं जानें १० इसलिये तू शोपताको प्राप्तनहीं होगा यहवर मैंने पहिले दियाहै ११ सो हे समुद्र तू जलको रोक जैसे मैं सुखसे चलाजाऊं और तेरे रत्नों के प्रमाणको कोई पुरुष नहीं जानेगा १२ ऐसेसुन समुद्र रास्ता देताभया और मणियों से प्रकाशमान रस्ताको प्राप्तहो १३ ऐसे समुद्र और कुरु और उत्तरान्वय और गन्धमादन इन्हों को अतिक्रमण कर १४ सात पर्वतों को जाके प्राप्तहुआ और जयन्त और बैजयन्त और नील और रजत पर्वत १५ व महामेरु और कैलास इन्द्रकूट ये सातों पर्वत पूजा सामग्रीको ग्रहणकर १६ हाथजोडके भगवान् की स्तुतिकर बोले कि हे श्रीकृष्ण हमको आज्ञादो अबहम तुम्हारा क्याकरें १७ ऐसेसुन भगवान् बोले कि हे पर्वताओ मेरे रथको मार्गदो १८ सो हे भरतर्षभ वे पर्वत श्रीकृष्ण के वचनको सुन जातेहुये श्रीकृष्णको इच्छापूर्वक मार्ग देतेभये १९ व समुद्रोंसहित सातों द्वीप और द्वीपों के प्रति सात२ पर्वत और लोकालोक पर्वत इन्हों को उल्लंघनकर महाअन्धकार में जाके प्राप्तहुये २० व तिस पङ्कयुक्त अन्धकार में वे घोडा बड़े दुःखसे रथको वहनेलगे २१ व पर्वतरूप अन्धकारको प्राप्तहो यत्नरहित वे घोडा स्थितहोते भये २२ तब श्रीकृष्ण अपने चक्र से अन्धकार को दूरकर रथके मार्ग के उनमान माफिक आकाश को दिखाते भये २३ व आकाश को देख तिस अन्धकार से निकस अब जियाहूं ऐसे ज्ञानको प्राप्तहो निर्भय होता भया २४ व तेज से प्रकाशमान सम्पूर्ण लोकोंको धारण करताहुआ ऐसे एक पुरुष को आकाश में देखता भया २५ रथ और ब्राह्मण और मुझे उहां छोड़ प्रकाशमान तेजका खजानारूप ऐसे भगवान् के शरीर में श्रीकृष्ण प्राप्त होते भये २६ व ब्राह्मण के चारों पुत्रोंको ग्रहणकर एक मुहूर्त में वहां से निकला २७ व ब्राह्मण की गोदमें उन बालकों को देतेभये २८ व वह ब्राह्मण पुत्रों को देख खुशीको प्राप्तहुआ और मैंभी प्रसन्नहुआ आश्चर्य को प्राप्तहोता भया २९ व ब्रा-

-ह्मण के पुत्र और हमसब जिस मार्ग गयेथे उसी मार्ग उलटे आतेभये ३० व हे नृपसत्तम,ध्यान से पहिलेही एक क्षणभर में द्वारकापुरी में प्राप्तहोते भये ३१ व पुत्रोंसहित ब्राह्मण को श्रीकृष्ण भोजन करवाय और बहुत से धन से तृप्तकर उसके घरमें प्राप्त करतेभये ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायाद्वाेपर्यैकसप्ततितमोऽध्याय १७१ ॥

एकसौ बहत्तरका अध्याय ॥

अर्जुन कहनेलगे कि ऋषियों में श्रेष्ठ ऐसे सौ ब्राह्मणों को भोजनकरवा वे श्रीकृष्ण कृतकृत्य होतेभये १ व हे भारत में और वृष्णि और भोज ऐसे यादवों के सग भोजनकर चित्रविचित्र अनेकप्रकार की दिव्यकथा वर्णन करनेलगे २ व तिन कथाओं के अन्तमें मैंने जो वृत्तान्त देखाथा सो वृत्तान्त श्रीकृष्ण से पूछनेलगा ३ कि हे कमलेक्षण ऐसा अगाध समुद्र तुमने कैसे तुच्छ करदिया और पर्वतों में रस्ता कैसे किया ४ व ऐसा घोर अन्धकार चक्रसे कैसे उत्पाटन किया और बड़े परम तेजमें तुम प्रविष्ट कैसे होतेभये ५ व हे प्रभो उसने वे बालक किसवास्ते हरणकिये ६ व ऐसे दीर्घमार्ग में जाके उलटा जल्द कैसे प्राप्त होताभया सो हे केशव यह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे प्रति तुम वर्णन करो ७ श्रीकृष्ण वर्णन करनेलगे कि मेरे दर्शनके अर्थ तिस महात्माने वे बालक हरण किये और जिसको मैं देखताभया ८ वह महान् तेजरूपब्रह्महै ९ और हे भरतश्रेष्ठ मैं उसीकारूपहू और वह सनातन मेरा तेजहै और वह मेरी प्रकृति हकारादिकों से परहै और व्यक्तहै और अव्यक्तहै और सनातनी है १० और जिस प्रकृतिको प्राप्तहो महाज्ञानी मुक्तिको प्राप्तहोजाते हैं ११ और सांख्ययोगके जाननेवाले व तपस्वी इन्होंकी गतिरूपहै और हे अर्जुन जिसजगह सपूर्णजगत् विभाग को प्राप्तहोताहै वह सम्पूर्ण परमब्रह्महै १२ और मेरेको तू उसीका तेज जानने को योग्यहै और स्तब्धजलवाला वह समुद्र १३ और रुकनेवाला जल भी मैंही हूं और जो अनेकप्रकारके सातपर्वत तैंने देखेथे वे १४ और घनरूप अन्धकारभी मैंहीहू और अन्धकार का फाड़नेवाला मैंहीहूं १५ और सम्पूर्ण भूतों का काल और सनातन धर्म और चन्द्रमा आदित्य और महापर्वत और नदी और तालाव १६ और चारों दिशा और चारों वर्ण और चारों आश्रम १७ ये सम्पूर्ण हैं अ-

र्जुन मेराही रूपजानों १८ अर्जुन कहनेलगे कि हे भगवन् हे भूतोंकेईश मैं तेरे जाननेकी इच्छा करताहूं सो हे पुरुषोत्तम मेरे प्रति तुम वर्णनकरो और तेरे को नमस्कार है १९ श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे पाण्डव ब्रह्म और ब्राह्मण और तप और सत्य २० और उग्र और बृहत् और अन्धकार इन सम्पूर्णोंकी मेरेहीसे उत्पत्ती है और हे महावाहो मैं तेरा प्याराहूं और तू मेरा प्रिय है २१ इससे मैं तेरे अगाड़ी कहूंगा और अन्यके प्रति कहने को मैं उत्साह नहीं करता और यजु साम ऋग् अथर्व ये चारों वेद और ऋषि और देवता और यज्ञ और पृथिवी वायु आकाश जल अग्नि ये पांचोंतत्त्व २२ और चन्द्रमा सूर्य और दिन रात्रि और पक्ष मास ऋतु और मुहूर्त और कला और क्षण और संवत्सर २३ और अनेक प्रकारके मन्त्र और शास्त्र और विद्या और जाननेवाली वस्तु ये सम्पूर्ण मेरेसेही उत्पन्न होते हैं २४ और हे कुन्तीके पुत्र क्षय और उत्पत्ति यह मेराहीरूप है और सत् असत् यह भी मेराही आत्माहै २५ अर्जुन कहनेलगे कि प्रसन्नहुए श्रीकृष्णने मेरे प्रति ऐसे कहा तब मेरामन श्रीकृष्ण में निश्चल होताभया २६ और हे राजन् जो तुम मेरे प्रति पूछतेहो वह श्रीकृष्णका माहात्म्य मैंने सुनाभी और देखाभी २७ वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जन्मेजय वह कुरुओंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर धर्मात्मा ऐसे सुन श्रीकृष्णकी पूजनकरतेभये २८ और सभामें स्थित राजा और भ्राताओं सहित आश्चर्यको प्राप्त होतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्यायः १७२ ॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे वैशम्पायन यादवों में सिंहरूप और बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्ण के अपरिमेय कर्म्मों की मैं फिर सुनने की इच्छा करताहूं १ और अनेक प्रकारके और अद्भुत और असंख्येय और दिव्य प्रकृत ऐसे २ श्रीकृष्ण के कर्मोंको सुन मैं वहुत प्रसन्न होताहूं सो हे तात मेरे प्रति वर्णनकरो ३ वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे महावाहो वहुतसे आश्चर्यरूप श्रीकृष्ण के चरित्र मैंने तेरे प्रति वर्णन किये परन्तु कुछ कर्मोंका अन्त नहीं आता ४ तथापि लेशमात्रसे मैं वर्णन करूहूं ५ सो तू एकाग्रमनकर सुन ६ द्वारकापुरीमें वसतेहुये यादवोंमें सिंहरूप ऐसे श्रीकृष्ण वहुतसे राजाओंके राज्योंको शोभितकरतेभये ७

और प्राग्ज्योतिषपुर में प्राप्तहो विचक्रनाम दैत्यको मारते भये ८ और समुद्र में नरकासुरको मार और रणमें इन्द्रको जीत पारिजात वृक्षको हरतेभये ६ और तालावमें वरुण भगवान्को जीततेभये और करुपकापुत्र और दक्षिणका राजा ऐसे दन्तवक्रको हनन करतेभये १० और एकसौएक अपराध करनेके वाद शिशुपालको मारतेभये और शोणितपुरमें जाके महा पराक्रमवाला और एकहजार भुजाओंवाला महादेवजी से रक्षाकियाहुआ ऐसा वलिकापुत्र वाणासुरको महा युद्धमें भुजाछेदनकर जीवताही छोडतेभये ११ व पर्वनमें अग्निको जीततेभये व रण में शाल्व व भौमासुर को मारतेभये १२ व समुद्रको क्षोभकरवा और पाचजन्य दैत्यको वशकरतेभये व हयग्रीव व वहुत से महावली राजाओं को हनन करतेभये १३ व जरासन्ध को वधकर वहुत से राजाओं को छुटातेभये व रथमें वैठ वहुत से राजाओंको जीत गाधार राजाकी पुत्री को हरतेभये १४ व भ्रष्टहोगया है राज्य जिन्होंका ऐसे शोकसे आर्तहुये पाण्डवों की रक्षाकरतेभये और इन्द्र के खाडव वनको जलातेभये १५ व अग्नि का दियाहुआ गाण्डीव धनुष अर्जुन को सपादन करतेभये व हे जनमेजय १६ घोर महायुद्धमें पाण्डवों का सारथीपना करतेभये १७ व इन श्रीकृष्ण सेही यादवोंकाकुल वृद्धिको प्राप्तहोता भया व भारतयुद्धके अन्तमें तेरेपुत्रों को मैं उलटाल्याऊंगा ऐसी कुंती के अगाडीकीहुई प्रतिज्ञाको पूरी करतेभये १८ व नृगराजाको दारुण शापसे छुटाते भये १६ व युद्धमें यवन दैत्यको व गेंद और द्विविद ऐसे वानरोंको २० व जाम्बवान् को जीततेभये व सादीपिनि गुरूकापुत्र व तेरापिता २१ ऐसे धर्म्मराज के गयेहुयों को जिवातेभये और सग्राममें प्राप्तहो वहुत से राजा मृत्युको प्राप्तहोते भये २२ व अद्भुत जयको वहुतसे राजाओंको हनन करतेभये और हे जनमेजय जो तैंने श्रीकृष्ण का चरित्र पूछाया सो मैंने तेरे अगाडी वर्णन किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिसर्गेणविष्णुपर्वेभाषायाग्रन्थेपारीक्षितसप्ततिशमोऽध्याय १७१ ॥

एकसौबहत्तरका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे वैशम्पायन यादवों में सिद्धरूप और बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्ण के अपरिमित कर्म मैंने तुम्हारे मुखसे फिर सुने १ व तुमने पूर्व वाणासुर वर्णन कियाहै २ सो हे तपोधन उसकी कथा विस्तार पूर्वक सुनने की

इच्छा करताहूं और देवताओंके भी देवता ऐसे महादेवकेपुत्र भावको वह महासुर कैसे प्राप्तहोताभया ३ कि गणोंसहित तिस महात्मा महादेवने तिसकी रक्षा की ४ व सौभाइयों में बड़ा और दिव्य अस्त्रोंको धारण करनेवाले ५ ऐसा एक हजार भुजाओं से युक्त बडे शरीरोंवाला और असंख्य ऐसे सैकडों सेनाओं से युक्त ऐसा वाणासुर तिसे श्रीकृष्णने युद्धमें कैसे जीतलिया ६ व संरब्ध व युद्ध की इच्छा करताहुआ ऐसा वाणासुर तिसे जीताही कैसे छोड़दिया वैशम्पायन जी कहनेलगे कि हे जनमेजय तू सावधान होके सुन ७ अमित तेजवाले श्रीकृष्णका और वाणासुरका जैसे महाविग्रह होताभया और जैसे तिस रणमें श्रीकृष्णकेसंग रुद्रका युद्धहोताभया ८ व जैसे रणमें जीतेहुये वाणासुरको छोड़ते भये और जैसे महादेवने वाणासुर को वरदिया है ९ व जैसे रुद्रकेपुत्र भावको वाणासुर प्राप्त होताभया ऐसे यह सम्पूर्ण वृत्तांत हे जनमेजय तू सुन १० एक दिन खेलतेहुये स्वामिकार्तिक को वाणासुर देख आश्चर्य को प्राप्तहोताभया ११ व रुद्रको प्रसन्नकर तिनके पुत्रभावको प्राप्त हो ऐसे तिसकी बुद्धि बडे घोर तप करने को प्रवृत्त होतीभई कि कोईतरह से मैं भी महादेव का पुत्रहोजाऊं १२ व वाणासुरके तपसे पार्वती सहित महादेव प्रसन्न होतेभये १३ व महादेव प्रसन्नहो वाणासुर से बोले कि तेरा कल्याण हो और हे वाणासुर तू इच्छापूर्वक वरमाग १४ तब वाणासुर बोला कि हे त्रिलोचन तेरा दियाहुआ मैं पार्वती का पुत्रहोने की इच्छा करताहूं १५ तब महादेव तिसकोवरदे और पार्वती से बोले कि हे पार्वती तू इस वाणासुरको स्वामिकार्तिक से छोटापुत्र ग्रहणकर १६ व तिस शोणितपुरमें स्वामिकार्तिक उत्पन्न हुआ है वही इसकापुर होवेगा १७ व मेरी रक्षा कियाहुआ वाणासुरको कोई योद्धा नहीं सहसकेगा १८ शोणितपुरमें स्थितहो और देवताओं को क्षोभकरताहुआ नित्य राज्यकरेगा १९ ऐसे महादेवसे वाको प्राप्तहो व एक हजार भुजाओंको धारण करताहुआ व मदसे सींचाहुआ ऐसा वाणासुर देवताओंको विद्रवत् करताहुआ युद्धकी इच्छाकरनेलगा २० व तिस पै खुशीहुये स्वामिकार्तिक अग्निकेसे तेजवालीध्वजा और मयूरवाहन इन्होंको देतेभये २१ व देवता व गन्धर्व व यक्ष व पन्नग ये सम्पूर्ण वाणासुरके युद्धमें महादेवके तेजसे नहीं स्थित होतेभये २२ व महादेवसे रक्षा कियाहुआ और मदसे सींचाहुआ वह वाणासुर युद्धको टोहताहुआ महादेवके पासजाताभया २३ व

महादेव के पास प्राप्तहो और दण्डवत्कर पूछनेलगा २४ कि हे भगवन् साध्य और मरुद्गणों सहित सम्पूर्ण देवताओंको मैं वारम्वार जीतताभया २५ सो मैं अव युद्धसे निराशहुआ जीवनेकी इच्छा नहीं करताहू २६ व युद्धके विनामेरे इन भुजाओंका धारणकरना वृथाही है सो हे महादेव तुमकहो कव मेरेको युद्ध प्राप्तहोवेगा २७ और हेदेव विनायुद्धके मेरी प्रसन्नता नहीं होती है २८ सो तुम मेरेपै प्रसन्नहो युद्धदेवो ऐसे सुन महादेव हँसके वोले २९ कि हे वाणासुर तेरे स्थान में स्थापित कीहुई ध्वजाका जिस समयमें भंग होवेगा ३० तव तेरे को युद्ध प्राप्त होवेगा ३१ ऐसे सुन हँसताहुआ व प्रसन्न मुखको धारण करताहुआ महादेवके चरणोंमें लोटताहुआ वोला ३२ कि हे भगवन् मेरी एकहजार भुजाओंका धारणकरना अव सफल हुआहै ३३ व यह वड़ी कल्याणकी वार्त्ताहुई है कि इन्द्रको अव मैं फिर युद्धमें जीतूंगा ३४ ऐसे कहके और आनन्दरूपी आशुओंसे नेत्रोंको पूर्णकरताहुआ ३५ अञ्जलियोंसे महादेवका पूजनकर चरणों में लोटताभया ३६ महादेव कहनेलगे कि हे शूरवीर तू उठ ? व तेरी भुजाओं के और कुलके समान युद्ध तुझको निश्चय प्राप्त होवेगा ३७ वैशम्पायन कहते हैं कि वाणासुर आनन्दसे महादेवको नमस्कारकर और ध्वजाके स्थानसे शोभायमान अपने स्थानको जाताभया ३८ व अपने स्थानमें प्राप्तहुआ वाणासुर कुम्भाण्ड से वोला कि आज एक वडा खुशी का वृत्तान्त सुनाऊंगा ३९ ऐसे कहाहुआ कुम्भाण्ड हँसताहुआ वाणासुरसे वोला कि हे राजन् आज क्याप्रिय वात सुनावोगे कि जिस आश्चर्य्यसे उत्फुल्ल नेत्रोंको धारण किये ऐसे हर्षितहुये वोलतेहो सो तुमसे सुननेकी मैं इच्छा करताहू ४० तुम कैसेके उत्तमवरको प्राप्त हुयेहो मैं पूछताहू कि तुमको महादेवने त्रिलोकीका राज्य दियाहै जिससे ऐसे प्रसन्नहुये वोलतेहो ४१ प्रश्नहै कि इस ईश्वरके चक्रके भयसे त्रस्तहुये दैत्य समुद्रमें वसते हैं ४२ व प्रश्नहै कि तेरे भयसे इन्द्र पातालको कव प्राप्तहोवेगा और कव दैत्य विष्णुके परित्रास को छोडेंगे ४३ व प्रश्न है कि तेरे वलके आश्रय से पातालको छोड के यहां दैत्य कव आवेंगे ४४ व विष्णुकरके जीताहुआ और वांधाहुआ तेरा पिता समुद्रसे निकस के फिर कव राज्यको प्राप्तहोवेगा ४५ और दिव्यमाला वस्त्र चंदन इन्द्रोंको धारणकरनेवाले तेरेपिताको हम कव देखेंगे ४६ व विष्णुके तीन पैरों से हरेहुये त्रिलोकी के राज्य को देवताओं को जीत फिर

हम कब प्राप्तहोवेंगे ४७ क्या युद्धमें सावधानरूप विष्णुको हम जीतलेवेंगे ४८ क्या तेरे पै महादेव अतिप्रसन्न हुये हैं जिस करके तेरे हृदय का कापना व आनन्द के अश्रुपात पडरहे हैं ४६ व क्या महादेव स्वामिकार्तिक इन्द्रों की प्रसन्नता से हमको सर्व्वस्व राज्य प्राप्त होगया ५० ऐसे कुम्भाण्ड दीवान के वचनों से प्रेरित कियाहुआ बाणासुर श्रेष्ठवाणी से बोला ५१ हे कुम्भाण्ड मेरेको बहुत दिनोंसे युद्ध नहीं प्राप्तहुआ था सो मैंने अब महादेव से ऐसे पूछाहै ५२ कि हे भगवन् मेरे को युद्ध करने की बडी इच्छा होरही है सो तृप्ति करनेवाले युद्धको मैं कब प्राप्त होऊंगा ५३ तब महादेवजी मेरेसे बोले ५४ कि हे बाणासुर जब तेरी मयूर ध्वजाका भग होवेगा तब तू अप्रतिम महान् युद्धको प्राप्त होवेगा ५५ तब मैं अत्यन्त प्रसन्नहो व वृषध्वज महादेवको ५६ शिरसे दण्डवत् कर अब मैं तेरे पास आया ऐसे कहाहुआ कुम्भाण्डराजा बोला ५७ कि हे राजन् ऐसे वचन तू कहै है सो तेरेको शुभदायक नहीं है ऐसे राजा और दीवान के परस्पर में कहतेहुये ५८ वेगसे टूटके ध्वजा पृथ्वी में गिरतीभई व पृथ्वीमें गिरी हुई ध्वजाको बाणासुर देख के ५६ अत्यन्त आनन्द को प्राप्त होताभया और युद्ध भी प्राप्त होवेगा ऐसा मानताभया फिर पृथ्वी भी कापने लगी ६० और पृथ्वी में अन्तर्हितहुये बिलाव शब्दोंको करतेहुये गर्जनेलगे और शोणितपुर में इन्द्र रुधिरकी वर्षा करनेलगा ६१ व सूर्यको भेदन करतीहुई उल्का पृथ्वी में गिरनेलगी ६२ व कृत्तिकोपरि उदयहुआ सूर्य्य भरणी को पीडादेनेलगा और ग्रामसूचक वृक्षों में से हजारहों रुधिर की धारा गिरनेलगीं ६३ व आकाश से तारा टूट२ गिरनेलगे ६४ व पर्व के बिना राहु सूर्य को ग्रसनेलगा और प्रलय कालके सम वज्र पड़नेलगा ६५ व दक्षिणदिशामें धूमकेतु स्थितहोताभया और बडा दारुणवायु चलनेलगा ६६ व श्वेत व रक्त ऐसे वर्णों से व्याप्त और काली ग्रीवावाला व बिजली की तुल्य कान्तिवाला ऐसा सूर्य तीनप्रकार के मण्डलों से सन्ध्या रातको आच्छादित करताभया ६७ व बाणासुरके जन्मनक्षत्र रोहिणी परसे भौर वक्रीहोके कृत्तिकापै आताभया ६८ व ग्रामकेसूचक और अनेक शा खाओंवाले ऐसे बडे२ वृक्ष गिरनेभये ६६ ऐसे अनेकप्रकार के उत्पातों से वह बाणासुर दानवों की कन्याओं से पूजन कियाहुआ मदोन्मत्त हुआ अपने ति- रस्कार के निश्चयको नहीं प्राप्तहोता भया ७० बुद्धिमान् व तत्त्वका देखनेवाला

ऐसा बाणासुरका मन्त्री कुम्भाण्डनाम अशुभको कीर्तन करताहुआ विचेत होताभया ७१ व कहनेलगा कि अशुभको कथन करतेहुये ये सम्पूर्ण उत्पात यहां दीखते हैं सो तेरे राज्यको निश्चय ये नष्टकरेंगे ७२ व मैं और अन्य मन्त्री और भृत्य ये सम्पूर्ण राजाके अन्याय से नाशको प्राप्तहोंगे ७३ व जैसे ग्रामसूचक वृक्षका पतनहुआहै तैसेही युद्धकी इच्छा करताहुआ व गर्जताहुआ ७४ ऐसे अभिमानसे तुम्हारा पतन होवेगा ७५ व महादेव के प्रसाद से तू त्रिलोकी के जयको प्राप्त होताभया व युद्धकी इच्छा करता हुआ गर्जताहै ७६ ऐसे अभिमानसे अब तेरा नाश दीखताहै ऐसे कुम्भाण्ड के वचनको सुन व प्रसन्नहुआ बाणासुर दैत्य व स्त्रियों के संग उत्तम पानको करताभया ७७ व चिन्तामें युक्त हुआ कुम्भाण्ड तिन उत्पातों के दर्शन से तत्त्वको चिन्तवन करताहुआ ७८ तिससमय राजाके स्थानमें गमन करताभया व जयकी इच्छा करताहुआ और दुर्बुद्धि व प्रमादी ऐसा बाणासुर मद से युद्धकीही वाञ्छा करताहै व दोषोंको नहीं मानता ७९ व यह महान् उत्पातोंका भय मिथ्यानहीं होवेगा ८० व महादेव व स्वामिकार्तिक ये दोनों यहां स्थितहैं यासे मिथ्याही होजावे तोभी कुत्सिक तो हमारा तिरस्कार होवेगा ८१ व उत्पन्नहुये दोषों से यह महाक्षय होवेगा क्योंकि मेरी बुद्धि यह निश्चय करती है कि दोषोंका नाशनहीं हुआ करता ८२ व राजाके दुरात्मापनेसे यह दोषही फलीभूत होवेगा क्योंकि ये सब दानव दोषरूप होते हैं ८३ परन्तु देव दानव सबोंकाकर्त्ता व त्रिलोकी में प्रभु ऐसा स्वामिकार्तिक इस शोणितपुरको करताभया ८४ व महादेव को स्वामिकार्तिक व बाणासुर ये दोनों प्राणों से भी प्रियहै व बाणासुर विशेष करके प्रियहै ८५ व गर्वसे अपने नाशके अर्थ शिवजी से युद्ध मांगताभया सो वह वर अतिबुरा है ८६ व जो विष्णु व इन्द्रादि देवोंका आगमन होगा तो आश्चर्यही है ८७ महादेव व स्वामिकार्तिक निश्चय बाणासुरकी सहाय करेंगे ८८ व महादेवका वचन मिथ्या कभीभी नहीं होगा इसवास्ते सब दैत्योंका नाशरूप युद्धहोवेगा ८९ ऐसे तत्त्वका देखनेवाला कुम्भाण्ड चिन्तायुक्त हुआ कल्याणयुक्त बुद्धि को धारण करताभया फिर यह बोला ९० कि जो पुण्यकर्म वाले देवताओं के संग विरोध करते हैं जैसे बलि सम्पूर्ण राज्य हरलियाहै तैसे वे नाशको प्राप्त होजाते हैं ९१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिबाणासुरयुद्धेकुम्भाण्डचिन्तावर्णनंनामचतुस्सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७४ ॥

एकसौपछत्तरका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय एक समय में महादेव पार्वती के संग क्रीडा करतेहुये रमणीय और शोभायमान ऐसे नदी के तीरपै स्थित होतेभये १ व सैकडों अप्सरा व गन्धर्व्वपति तिस रमणीय सर्व्वर्तुक वनमें क्रीड़ा करतेभये २ और पारिजात और सन्तानक इन्होंके पुष्पोंसे नदीकातीर और आकाश सुगन्धयुक्त होताभया ३ वेणु और वीणा और मृदंग और हजारहों पणव इन्हों के बाजोंसे युक्त अप्सराओंके गीत सुननेलगा ४ और सूत मागधोंके तुल्य अप्सराओंकेगण देवताओंका भी देव और सुन्दर शरीरवाला और माला और रक्तवस्त्रोंको धारणकरताहुआ ५ ऐसे श्रीमनोहर महादेवका पूजन करतेभये और फिर देवीकारूप धारणकर चित्रलेखानाम अप्सरा महादेवको प्रसन्न करतीभई ६ और तिसको देख पार्वती और अप्सराओंकेगण हँसनेलगे ७ और अनेकरूपोंवाले और महान् पराक्रमोंवाले ऐसे महादेवके पार्षद पार्वतीकी आज्ञासे जहां तहां विचरनेलगे ८ और चतुर और वृषध्वजादि चिह्नोंसेयुक्त और देवी के रूप को धारण करते हुये ऐसे महादेव के पार्षद और अप्सरा ये सम्पूर्ण एकान्त में क्रीडा करनेलगे ९ और देवीका स्वरूप और लीला और मुख इन्होंको धारण करतेहुये अप्सराओंकेगण और पार्वती ये सब चित्रलेखा का मन भंगकरने के अर्थ हँसतेभये १० और किलकिला शब्दको सुन महादेव आनन्दको प्राप्तहोतेभये और बाणासुर की पुत्री ऊषा ११ बारह आदित्यों की तुल्य तेजवाले और प्रकाशमान ऐसे महादेवको नदीके तीरपै पार्व्वतीके संग क्रीडा करतेहुये देख १२ और पार्वतीके प्यारकी इच्छा करतीहुई और अनेकरूपोंसे शरीरको धारण करतीहुई पार्वतीके समीप ऐसे मनोरथ करतीभई १३ कि तिन स्त्रियोंको धन्यहै जे अपने भर्त्ताके संग एकान्तमें रमण करती हैं १४ ऐसे ऊषाके मनोरथको जानके पार्वती ऊषासे बोलीं १५ कि हे ऊषे जैसे शत्रुओंके नाश करनेवाले महादेव मेरे संग रमण करते हैं तैसेही तू भी अपने भर्त्ताके संग जल्दही रमणकरेगी १६ तब पार्वती के वचनको सुन ऊषा विचारनेलगी कि पतिके संग में कब रमण करूंगी १७ तब पार्व्वती हँसके बोलीं हे ऊषे जब तेरे को पतिका संयोग होगा तिसको तू सुन १८ कि वैशाखमास में और द्वादशी की रात्रिमें अपनी

हवेली में स्थितहुई स्वप्न में जिसके संग रमण करेगी वह तेरा भर्ताहोवेगा १६ ऐसे सुन अनेक कन्याओंसे युक्तहुई और सुख पूर्वक विचरतीहुई ऊषा आनद से उलटी सुलटी विचरनेलगी पीछे सखियों के सग हँसतीहुई और आनन्द से फूलेहुए नेत्रोंवाली तालोंकेसे निपातसे आपस में खेलती भई २० और किन्नरी और यक्षकन्या और दैत्यकन्या और अप्सरा ये सम्पूर्ण ऊषाकी सखीहोतीभई २१ और वे सखी कहनेलगीं कि हे वरानने जो पार्व्वतीने कहाहै सो तेरा भर्ता शीघ्रहोवेगा २२ क्योंकि पार्व्वतीका वचन कभी मिथ्या नहीं होताहै इस वास्ते रूप और अच्छे कुलवाला पति तेरा कल्पित किया गयाहै २३ ऐसे सुन और सखियोंके वचनको आदरदे और पार्वतीके मनोरथकी भावना करतीहुई स्थित होतीभई २४ और पहले दिन पार्व्वतीके सग क्रीड़ा विहारका अनुभवकर फिर दूसरे दिन वे सम्पूर्ण स्त्री २५ अपने २ स्थानों को जाती भई कोइक घोड़ोंपर कोइक पालकियों में कोइक हस्तियों और कोइक रथोंमें २६ और कोइक आकाश मार्गोंमें होके ऐसे अपने २ पुरोंमें प्राप्तहोतीभई और पार्व्वती भी तहांहीं अन्तर्द्धान होती भई और उसी दिनसे वह ऊषा कामदेव के वशहो २७ और पार्व्वतीके वचनको स्मरण करतीहुई रात्रिमें निद्रा और दिन में भोजनको प्राप्त नहीं होतीभई २८ और पतिको याद करतीहुई और स्वर्गमें चन्द्रमाको निंदित करतीहुई और चन्दनको नहीं सेवन करतीहुई ऐसे ऊषा विलाप करनेलगी २६ और ज्वररहित भी है परंच कामदेवके ज्वरसे पीड़ित हुई ऊषाको सम्पूर्ण सखी सेवन करनेलगीं ३० और चन्दनसे लेपित किया हुआ हृदय तपनेलगा और कपोलों पर पीला चिह्न होताभया और नेत्रोंसे जल आनेलगा ३१ और जभाई और निद्रा शरीरमें वर्तनेलगी ऐसे देख सम्पूर्ण सखी कामदेव से पीड़ित हृदय को शीतल पद्मिनी और कंदचूर्ण इन्होंसे सींचनेलगीं ३२ और व्यजनोंसे पवन करतीहुई ऊषासे वारम्वार पूछनेलगीं ३३ कि हे ऊषे तेरे क्या व्यथाहै और तेरा शरीर ऐसा क्योंहोरहाहै और तेरे को कौनसीवस्तु अच्छीलगती है सो हे वरानने तू हमारे प्रति वर्णनकर ३४ और हे मनोरमे यह दुःख तेरे कहांसे उत्पन्न हुआहै और तू देख ये मैना तेरे मनके अनुसार वाक्य बोलती हैं ३५ और हरे पंखोंवाले तोते मनुष्योंकी नाईं पठनकरतेहैं सो हे शुभ्रू हमारे आनन्दकी उपजानेवाली मानय तू मुझसे क्यों नहीं बोलती ३६ व हे वरवर्णिनि तेरापिता बड़ा गम्भीरहै

व देवताओंको भी दुर्जयहै व पृथ्वीभर में तिसके युद्धके अगाडी कोई भी नहीं स्थितहोता है ३७ व बलिकापुत्र बाणासुर बडा महावीर अमरावती पुरी व शोणितपुर इन्होंको जीत स्थित होताभया ३८ व शोणितपुरमें त्रिशूलको धारण करतेहुये महादेव एकदिन पार्वती से बोले कि हे पार्वती इस बाणासुरको तू अपना पुत्रजान ३९ सो हे ऊषे तू सुन तेरी नासिका का अग्रभाग शोभाको प्राप्त होरहा है व तेरे मुखमें क्याव्यथाहै जिससे तू बोलती नहीं ४० व तेरामुख ऐसा शोभाको प्राप्त होताहै कि जैसे शरदऋतुमें कमल पै नीहारकी बूंद और जैसे बद्दलमें चन्द्रमा ४१ सो हे ऊषे तू किस अर्थ शोभा को नहीं प्राप्तहोती व ऊंचे श्वासों को छोडती है व प्रीतिको प्राप्त नहीं होती इसका कारणकह ४२ व दिव्य भोजनको ग्रहण नहीं करती व ताम्बूलमें हमेशह तेरी रुचि रहा करती थी सो तू ताम्बूलको भी क्योंनहीं ग्रहण करती ४३ व अन्य जनोंको दुर्लभ ऐसीमिष्ट वस्तुओंको तू ग्रहणकर व उठ अपने शरीर की पीडाको कह ४४ ऐसे ऊषाके स्थान में कोलाहलको सुन सपूर्णदासी ऊषाकी मातासे जाके कहनेलगीं ४५ कि जब से राजपुत्री स्थानमें आई है तब से गूगीकीतरह प्रतीत होती है ४६ इसवास्ते हम सब दासीगण तुमसे कहती हैं कि मोह व मौन स्वाप व म्लानता ये दुख ऊषा के कैसे हो रहे हैं ४७ सो हे देवि इस ऊषाको वैद्योंको दिखा यह सिरसके पुष्प की समान कोमल ४८ यह ऊषाका शरीर व्याधि के भारको कैसे सहेगा और हंसकेसे गमनवाली ऊषाकी माता ऐसे सुन और ऊषाकेपास प्राप्तहो ४९ पल्लव की तुल्य कोमल हाथमे ऊषाके कोमल हाथकोपकड ५० व ऊषाको हलातीभई और कहनेलगी कि हे ऊषे तेरे शरीर में क्या व्यथाहै ५१ ये आयेहुए वैद्य तेरे को पूछते हैं वैद्य कहनेलगे कि यह राजपुत्री सखियों को संगले जलक्रीडाको प्राप्त हुई है सो तहां पार्वती के सग जलक्रीड़ा से परिश्रम उत्पन्न हुआ है ५२ सो तिस परिश्रमसे ग्लानि व जृम्भण व स्वाप ये उत्पन्न होते हैं सो तू भयमत करे ५३ ऊषाकी माता कहनेलगी कि हे वैद्यो ऊषाके हृदय में लेपकियाहुआ शीतल चन्दन शीघ्रही बुदबुदाओंकी नाईं आचरण करताहै ५४ सो यह क्या कारण है व हृदय में दाहकादी महान् खेदहै और किस कारण भूख इसके नहीं है सो शास्त्रसे निश्चय करके कहो इसके क्या रोगहै ५५ वैद्य कहनेलगे कि हे देवि महादेव के समीप क्रीडा विहार में ऊषाको बहुतसी स्त्री मिली हैं सो यह

राजपुत्री ऊषा बहुत रूपवती है इससे उन स्त्रियोंने दृष्टिपातकियाहै तिससे ऊषा के पीडा उत्पन्न हुई है सो मन्त्र और पीत सिरसम इन्होंसे ऊषाको रक्षा विधान करो ५६ व पानीसे अभिषेचनकरो ऐसे शान्तिहोवेगी ऐसे सम्पूर्ण वैद्यकहके ५७ व कामदेव से उपजी हुई पीडाको जानतेहुए राजाके स्थान से जातेभये ५८ व फिर पूछतीहुई लज्जा करतीहुई और अत्यन्त रोतीहुई ऊषा माता से बोली कि हे माता सभाषण और भोजन मेरे को अच्छा नहीं लगता ५९ व मेरा हृदय उत्साहको नहीं प्राप्तहोता ऐसे कह ऊषा मौन होतीभई ६० तब सम्पूर्ण स्त्री तिस के मुखको देख व कहनेलगीं कि लताकेसी उपमावाली स्त्रियोंका यौवनही ऐसा होता है ६१ व यह राजकन्या भर्त्ता को प्राप्तहोने के योग्य है सो माता पिताके प्रसाद से यह कन्या सदृश वरको प्राप्तहो ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामुषोपरिपवर्णनाविनमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय तदा स्थितहुई व चित्रकरके अद्भुत ऐसी नारियां स्थितथीं वैशाखमासके १ शुक्लपक्षकी द्वादशी तिथिकी रात्रिमें स- खियोंसेयुक्त और अपनी हवेली में सोतीहुई ऐसी शोभायमान ऊषाके सग वह पार्वतीका कहाहुआ पुरुष स्वप्नमें रमण करतागया २ व स्वप्नमें रमणकीहुई व स्त्री भावको प्राप्तकीहुई जागी तब वहपुरुष नहीं दीखा ३ वह ऊषा स्वप्नके अन्तमें रक्त नेत्रोंको कर रोतीहुई रात्रि में जल्दसे उठतीभई रोतीहुई और भयसेयुक्त ऐसीऊषा को देख ४ चित्ररेखा कोमल वचनसे बोली कि हे ऊषे तू डरेगन और रोतीहुई ऐसे क्यों परितापको प्राप्तहोती है ५ व बाणासुरकी पुत्रीहोके क्यों भय करती है सो हे सुभ्रु इसलोक में तेरेको भय प्राप्त नहीं है ६ व हे वामोरु देवताओंकानाश करनेवाला तेरा पिताही भय रहितहै और हे शुभे तू उठ और विषाद मनकरे ७ क्योंकि तेरे पिताका मर्दनकियाहुआ इन्द्र अपने नगर में नहीं प्राप्तहोता है ८ यह तेरापिता देवताओंके समूहको भय देनेवालाहै ९ व महासुरों में श्रेष्ठ और श्रीमान् ऐसा बलिकापुत्र महाबली है ऐसे चित्ररेखासे कहीहुई ऊषा १० अपने स्वप्नको चित्ररेखाके प्रति निवेदन करतीभई ११ हे चित्ररेखे ऐसे दुर्गतिको प्राप्त हुई मैं कैसे जीवने को उत्साह करती हूं और इस बड़ासा मरणरूप पिताको मैं क्या

कहूंगी सो मेरा मरनाही श्रेष्ठहै और अब जीना श्रेष्ठ नहीं है १२ क्योंकि वाञ्छित पुरुष मेरेसे मिलापकरके चलागया अब जागने में मेरी यह अवस्थाहुई १३ सो कुलमें गंगारूपवाली मैं कन्या कैसे जीऊंगी १४ ऐसे कहके और नेत्रों से आशुओंको गेरतीहुई ऐसी कमलकेसे नेत्रोंवाली ऊषा विलाप करनेलगी १५ और रोतीहुई और आंशुओं से व्याप्तनेत्रोंवाली ऐसे ऊषाको विचेतहुई सम्पूर्णसखी बोलीं १६ कि हे देवि जो कोई दुष्टमन से शुभ और अशुभकरे है उसीको पाप और पुण्य लगताहै सो हे सुभ्रु तेरामन दुष्ट नहीं है १७ सो हे भामिनि हठकरके जो तू दैवयोग से पुरुष को भोगली है तो हे कल्याणि स्वप्नमें भोगसे व्रतकाभंग नहीं होताहै १८ और हे देवि अभिचारसे तैंने भोग नहीं कियाहै सो हे सुन्दरि मर्त्यलोक में स्वप्नका कियाहुआ दोष नहीं लगताहै १९ और हे देवि मन और वाणी और शरीर इन्हों से कियाहुआ कर्म लगता है ऐसे धर्मज्ञ कहते हैं २० व जो इन तीन प्रकारके कर्मों से पाप करती है सो वह स्त्री पापयुक्त होती है और हे भीरु तेरामन कभी भी चलायमान नहीं दीखता २१ सो हे ऊषे तू दोषमें युक्त नहीं है क्योंकि नित्य ब्रह्मचारिणी है जो तू सोतीहुई थी और शुद्धभाव से युक्त थी २२ तो तेरे धर्मकालोप नहीं हुआहै और जिस स्त्रीकामन दुष्ट होताहै वह स्त्री कुलटा होती है २३ सो हे ऊषे काल प्रभु बडा वली है उसने तुझे इस अवस्थाको प्राप्तकिया २४ ऐसे रोतीहुई ऊषाको देख चित्ररेखा बोली २५ कि हे विशालाक्षि तू शोकको त्याग और पापरहितहै २६ और हे ऊषे भर्त्ताको स्मरण करतीहुई तेरेको पार्वतीने वचन कहाथा सो तू सुन २७ कि वैशाखमासके शुक्लपक्षकी द्वादशी की रात्रि के स्वप्न में जिस पुरुष के संग विहार करेगी वह तेरा भर्त्ता होवेगा २८ व शत्रुओंको मारनेवाला और शूरवीर ऐसा तेरापति होवेगा २९ सो यह पार्वती का वचन झूठ नहीं होनेवाला है ३० सो तू क्यों अत्यन्त रोदन करती है ऐसे चित्ररेखा को सभाषणकी हुई ऊषा पार्व्वती के वचन को स्मरणकर ३१ शोकसेरहित होतीभई और ऊषा कहनेलगी कि हे सखि मैं पार्वती के वचनको यादकरतीहू कि जो कहाथा यह सम्पूर्ण तुझे हवेली में प्राप्तहुआ ३२ सो हे चित्ररेखे यह मेराभर्त्ता जैसे जानाजावे वैसे तू इस कार्यका विधानकर ३३ व चित्ररेखा ऐसे सुन बोली कि हे ऊषे तिस पुरुषका कुल और कीर्ति और पराक्रम इन्हों को कोई जानता है ३४ सो तू क्यों मोह को प्राप्त होरही है विना

देखाहुआ और बिना सुनाहुआ ऐसे पुरुषको तू स्वप्नमें देखतीभई ३५ सो उस रतिके चोरको मैं कैसे जानसकूंहूं ३६ और हे सखि अन्त पुरमें जिसने तूको हठसे भोगी है वह कोई मनुष्य नहीं है ३७ क्योंकि आदित्य,वसु, रुद्र और अश्विनी कुमारादि देवता भी ३८ महापराक्रमी तिस शोणितपुर में प्राप्तहोनेको समर्थ नहीं हैं ३९ सो यह शत्रुओंको मारनेवाला देवताओंमें सौगुणा पराक्रमीबाणा-सुरके मस्तक में स्थितहोकर यह पुरमें प्राप्त हुआहै सो हे ऊषे जिस स्त्री के ऐसा युद्धका जाननेवाला भर्त्ता नहीं है ४० उस स्त्री को भोगों से क्या अर्थ सिद्ध होताहै सो तू धन्यहै व अनुग्रहीतहै ४१ जिस तेरेको ऐसा पार्वतीका दियाहुआ व कामदेव के तुल्य पति प्राप्तहुआ व इसका कौनकुलहै ४२ व क्या नामहै व किसका पुत्रहै ऐसे तू निश्चयकर ४३ तब ऊषाबोली कि हे सखि मैं कैसे जानूं तूही निश्चयकर व मेरे को उत्तर मतदे ४४ ऐसे रोतीहुई ऊषासे फिर कुभाडकी पुत्रीबोली ४५ कि हे सखि संधि व विग्रहमें कुशल ४६ ऐसी चित्ररेखा अप्सरा है उसको तू आज्ञादे वह सम्पूर्ण त्रिलोकी को जानती है ४७ ऐसे सुन व ऊषा चित्ररेखाको बुला ४८ व हाथ जोड़ सम्पूर्ण वृत्तान्त कहनेलगी ४६ तब स-म्पूर्ण वृत्तान्त को सुन चित्ररेखा अप्सरा ऊषाको धीर्यताकराके कहती भई ५० व आश्चर्ययुक्त हुई ऊषा फिर चित्ररेखा अप्सरासे एक कठोरवचन कहनेलगी ५१ कि हे भामिनि कमलके पत्रकी समान नेत्रोंवाले और मतवाले हस्ती के तुल्य गमन करनेवाले ऐसे पतिको तू नहीं ल्यावैगी तो मैं प्राणों को त्यागदूंगी ५२ तब ऊषाको आनन्द कराती हुई चित्ररेखा बोली कि हे भामिनि ५३ कुल और वर्ण व शील व रूप व देश ऐसे साक्षात् तिस पुरुषके मैं नहीं जान सकती ५४ किन्तु अपनी बुद्धि के अनुसार जो करने को मैं समर्थहूं उसको तू सुन ५५ व अपनी कामनाको प्राप्तहो व हे सखि देवता व दानव व यक्ष व गन्धर्व व सर्प व राक्षस व मनुष्य इन्होंमें जो रूप व प्रभाव व अभिजन ५६ इन गुणोंमें जो वि-ख्यातहैं उन्हों को मैं लिखतीहूं ५७ व तिन सबको सात रातमें लिखादूंगी और काठकी पटी पै लिखेहुए को देख भर्त्ता के प्रति प्राप्त होजावेगी ५८ ऐसे सुन ऊषा चित्ररेखा सखीसे बोली कि ऐसेही कर ५६ ऐसे कहीहुई चित्ररेखा सातरा-त्रि भीतर तिन सबोंको चित्र विचित्र पट्टी पै लिखकर ल्यातीभई ६० और पट्टी को फैलाके ऊषा व सम्पूर्ण सखियों को दिखातीभई कि ये देवताओं में मुख्य हैं

व ये दानवों में मुख्यहैं ६१ व ये किन्नरों में मुख्यहैं व ये उरगों में मुख्यहैं व यक्ष व राक्षस व गंधर्व व असुर व दैत्य ६२ व मनुष्य ऐसे ये भी सम्पूर्ण मुख्य मुख्य जानके व हे सखि तेरा भर्त्ता मैंने लिखाहै व जो तैंने स्वप्नमें देखा है उसको तू निश्चयकर ६३ ऐसे सुन वह ऊषा क्रमसे सम्पूर्ण देवता व दानव व गंधर्व और विद्याधर ६४ व इन्हों को देख व सम्पूर्ण यादवोंको देखतीहुई ६५ व श्रीकृष्णको देखतीभई व तहां अनिरुद्ध को देख और आनन्दसे नेत्रोंको फुलातीहुई बोली कि हे चित्ररेखे वह चोर यहहै ६६ व हथेली में स्थितहुई स्वप्नमें इससे मैं छलित कीहूं सो यह रतिका चोर अब कहां है ६७ व हे शोभने तत्त्वसे इसका कुल और शील और नाम तू मेरे प्रति वर्णन कर ६८ फिर पीछे मैं इस कार्य्यका निश्चय विधान करूंगी ६९ ऐसे सुन चित्ररेखा बोली कि त्रिलोकीकानाथ व बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्ण का पौत्रहै व प्रद्युम्नकापुत्रहै व अनिरुद्ध इसका नामहै ७० और पराक्रम में इसके तुल्य कोई त्रिलोकी में नहीं है ७१ व यह पर्व्वतों को उपाड़ व भिड़ाके फोड़डारता है सो तू धन्यहै तेरा अनिरुद्ध पतिहुआ ७२ । ७३ ऐसे सुन ऊषाबोली कि हे वरानने तेरे से अन्य और कोई मेरीगति नहीं है ७४ व तू आकाशमें विचरनेवाली व कामरूपिणी व योगिनी ७५ व इस उपायमें कुशल ऐसी जो तू है सो शीघ्र मेरे प्यारेकोल्या ७६ और हे सुंदरि अर्थ के सिद्धकरे विना आना उचित नहीं है व जो विपत्काल में मित्रकाम आताहै वही पंडितों ने मित्रकहाहै ७७ व हे सुश्रोणि मैं बहुत कामार्त्तहूं व देवताओं की तुल्य उपमा वाला ७८ मेरे पति को जो तू शीघ्र नहीं ल्यावेगी तो मैं प्राणों को त्यागदूंगी ऐसे सुन चित्ररेखा बोली ७९ कि हे कल्याणि तू मेरा वचन सुननेके योग्यहै कि जैसे बाणासुर की नगरी रक्षाकीहुई है ८० वैसेही द्वारकापुरी देवताओं को भी दुर्द्धर्ष है ८१ व लोहेसे प्रतिछन्नहै व यादवों के कुमारों से रक्षाकी हुई है ८२ और चारोंतरफ जलसे व्याप्तहै व ब्रह्माकी आज्ञासे घोर पुरुषोंसे रक्षाकीहुई ८३ और पर्वतका कोट व खाईसेयुक्त व दुर्गमार्गों से प्रवेश होनेवाली व सात कोटोंसे रची हुई ८४ ऐसी द्वारकापुरी अजान पुरुषोंको प्रवेशहोने में समर्थ नहीं है ८५ सो हे ऊषे मैं और तू और तेरापिता इनतीनोंकी रक्षाकर ८६ ऐसेसुन ऊषाबोली कि हे सखि उसद्वारकापुरी में योगके बलसे तुमामहोनेको समर्थहै और हे सखि मेरे बहुत विलाप से क्याहै इसमेंतू एक कारणसुन ८७ पूर्ण चन्द्रमाकेसमान अनि

रुद्धके मुखकोजोमें नहीं देखूँगीतो धर्मराजके पुरमें पहुच जाऊंगी ८८ और हे भामिनि दूतसेही कार्यकी सिद्धिहोतीहै और जो तू मेरे जीनेकी इच्छाकरती है तो शीघ्र गमनकर ८९ और जो मेरे को तूअपनी सखीजाने है तो शीघ्र मेरे पतिकोल्या और मै तेरे शरणागतहू ९० और जीवताहीको सदेह होता है और कामदेव से आर्त और मदसे व्याकुल ऐसी स्त्री अपना जीवना और कुलका नाश इन्होंको नहीं देखतीहै ९१ और हे सखि कार्यमें यत्न करना यह शास्त्रकी आज्ञा है सो हेभीरु तूद्वारका जाने में समर्थ है ९२ ऐसे सुन चित्रेरखाबोली कि हे ऊषे अमृत रूपी वचनों से तैंने मेरी बहुतस्तुति की ९३। ९४ यासे मै शीघ्र द्वारकामें जाऊंगी और द्वारकापुरीमें जाके बड़ीभुजाओं वाला और वृष्णिकुल में उत्पन्न होनेवाला ९५ ऐसे अनिरुद्धको मैं शीघ्र ल्याऊंगी ऐसे कह चित्ररेखा अंतर्द्धान होतीभई ९६ और अपनी सखियों सहित ऊषा चिंताकरतीहुई स्थित-होती भई ९७ और तीसरे मुहूर्तमें बाणासुरके पुरसे चली हुई और सखीके प्यार की इच्छा करतीहुई और ऋषियोंका पूजन करतीहुई और एकक्षणभरमें कृष्ण की पालनाकीहुई ९८ औ कैलासके शिखरों के समान घरोंमे शोभायमान ९९ ऐसीद्वारकामें प्राप्तहो और ऐसे शोभायमान देखती भई कि जैसे आकाश में तारा १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिषट्सप्ततितमोऽध्यायः १७६ ॥

एकसौसतहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय वहचित्ररेखा द्वारका पुरी में भवन के समीप स्थितहो अनिरुद्धके हरनेका उपाय चिंतवन करतीभई १ ऐसे चिंतवन व ध्यानकरती हुई नारदमुनिको देखती। २ व आनन्दसे खिलेहुये नेत्रोंको धारण करतीहुई नारदमुनि के समीपजा व नीचेको मुखकर स्थितहोतीभई ३ व नारद मुनि आशीर्वाददे चित्ररेखासे बोले कि तू यहां किसअर्थआई है ऐसे पूछनाहू ४ हाथ जोड़तीहुई चित्ररेखा देवताओं के ऋषि व लोकपूजित ऐसे नारदमुनि से बोली ५ कि हे भगवन् दूतकार्य करनेको मैं इहां आईहूं व अनिरुद्धको लेजा-ऊंगी ऐसेसुन ६ व हे मुने शोणितनाम पुरमें बाणासुर नाम करके एक महासुर है जिसकी पुत्री सुन्दर जाघोंवाली ऊषानामसे विख्यातहै ७ व वह अनिरुद्धमें

वैशम्पायन कहते हैं ४६ तब वह चित्ररेखा अनिरुद्धके मनोरथ को जान के प्र- सन्न होके बोली कि हे प्रिय तथास्तु मैं तैसेही करूंगी ५० तब ऐसे कह के स्त्रियों के मध्यमें बैठेहुये अनिरुद्ध को अन्तर्द्धानकर और ग्रहणकर ऊपरको उछलती भई ५१ और जिसको सिद्ध चारण सेवन करते हैं ऐसे रास्ताको प्राप्तहो और वह मनके से वेगवाली चित्ररेखा शीघ्रही शोणितपुर को प्राप्तहोती भई ५२ और चित्रविचित्र आभूषणों से भूषित और चित्रविचित्र वस्त्रोंको धारण करने वाले और देवताओंकेसे रूपवाले ५३ ऐसे अनिरुद्ध को एकान्त में ऊषाको दिखातीभई और दोनोंको एक स्थानमें प्राप्त करतीभई ५४ और प्रियाको देख हर्षसे नेत्रों को फुलाती हुई ऊषा तहां अनिरुद्ध का पूजन करतीभई ५५ और चित्ररेखा को छातीसे लगा और सम्पूर्ण आख्यान को पूछती हुई और भयसे आर्त्तहुई शीघ्रही चित्ररेखासे बोली ५६ कि हे कार्यों के जाननेवाली तैंने यह गोप्यकार्य्य कैसे किया सो इसको छिपाके रखने में मेरा कल्याण है और इसके देखने में मेरी मृत्युहै ५७ ऐसे कह वह ऊषा डरतीहुई अपने कान्तसहित एका- न्तमें स्थित होतीभई ५८ और चित्ररेखा बोली कि हे सखि तू मेरा एक निश्चय सुन पुरुषार्थ के किये को दैव नाशता है ५९ जो देवी का प्रसाद तेरे अनुकूल होवेगा तो मायासे गोप्य किया हुआ इस पुरुष को कोई भी नहीं जानसकेगा ६० ऐसे सखीके वचनको सुन ऐसेही होजाओ यह कहतीभई ६१ और ऐसेसुन ऊषा अनिरुद्धसे बोली कि यह बड़ी अच्छी मेरे कल्याणकी वार्त्ताहुई कि स्वप्न में प्राप्तहुआ चौररूपपति मैंने देखा और दुर्लभ प्यारेकी इच्छा करतीहुई प्रियके अर्थ में बहुत दुःखित होतीभई ६२ और हे महाबाहो तेरी कुशलहै क्योंकि स्त्रि- योंका कोमल हृदय होताहै जिससे मैं पूछतीहूं ६३ ऐसा ऊषाका कोमल और अर्थवाला वचन सुनकर अनिरुद्धभी हँसकरबोला ६४ कि हे मितभाषिणि और हे सुन्दर जाँघोंवाली मेरी सम्पूर्ण कुशलहै ६५ और हे सुदर्शने तेरे ही प्रसादसे मैंने यह अदृष्टदेश देखा ६६ और हे भीरु रात्रि में स्वप्न मैंने जैसा देखाथा वै- साही तेरे पास प्राप्तहुआ हूं ६७ क्योंकि पार्व्वती का वचन मिथ्या नहीं होता और हे भामिनि पार्व्वती और तेरी दोनोंकी प्रीति जान और तेरे प्यारके अर्थ में आयाहूं ६८ सो मेरे ऊपर तू प्रसन्नहो ऐसे प्रेरणाकी हुई ऊषा अपने अलं- कारों को धारण करतीहुई ६९ और अपने कान्तको सगलेतीहुई और भयकर

तीहुई एकान्तमें स्थित होती भई और गान्धर्व विवाहकर ७० दोनों परस्पर में ऐसे रमण करतेभये कि जैसे दिन में चकवा चकवी ७१ और दिव्य पुष्प और वस्त्र और माला और चन्दन इन्होंको धारण करतेहुये ऐसे अनिरुद्धको ऊषाके स्थान में कोई भी नहीं जानताभया पीछे दिव्य माला आदि को धारण करने वाले अनिरुद्ध को ७२ वाणासुरके द्वारपालों ने देखलिया ७३ और कन्या के अतिक्रमको वाणासुरके प्रति निवेदन करतेभये ७४ ऐसे सुन वाणासुरने अपनीसेना को आज्ञादी ७५ कि जल्द उस दुर्मतिका हननकरो ७६ क्योंकि तिस दुष्टात्मा ने हमारा चरित्र और कुलदूषित किया है ७७ और वह विना दीहुई कन्याको आपही ग्रहणकर और दूषित करताभया ७८ और इस दुर्मतिका वीर्य और धैर्य्य और धूर्त्तता यह आश्चर्य्यरूप है ७९ कि जिससे यह शठ हमारे पुर और भवन में प्राप्तहुआ ८० ऐसे कह वाणासुर अपने किङ्करों को फिर प्रेरणा करताभया ८१ और वे किङ्कर वाणासुर की आज्ञा को ग्रहणकर अपने स्थानसे निकसतेभये ८२ और अनिरुद्धके समीपमें जानेलगे ८३ और हाथों में अनेक प्रकारके अस्त्रोंको धारण करतेहुये और अनेक प्रकारके भयकर रूपोंवाले और अनिरुद्धको मारनेकी इच्छा करतेहुए और क्रोधहोतेहुए ऐसे महावली दानव अनिरुद्ध के समीप प्राप्त होतेभये ८४ तब ऐसी सेनाको देख नेत्रोंमे आशुओं को गेरतीहुई और अनिरुद्धके वधसे डरतीहुई ऐसी वाणासुरकी पुत्री ऊंचेस्वर से रोनेलगी ८५ पीछे मृगकेसे नेत्रोंवाली और हा कान्त २ पुकारती हुई ऐसे रोतीहुई ऊषाको देख अनिरुद्ध बोला ८६ कि हे सुश्रोणि तू भयको दूरकर और मैं यहा स्थितहूं यासे तू भय नहीं करे और तेरेको अव आनन्दका समय प्राप्त हुआहै और इस में कोई भयका कारण नहींहै ८७ और हे यशस्विनि जो वाणासुर के नौकरों का सम्पूर्ण समूह भी यहा चला आवे तो भी मेरे को कुछ चिन्ता नहीं है और हे भीरु अव तू मेरे पराक्रमों को देख ८८ ऐसे कह और आतीहुई सेनाके शब्द को सुन और वह श्रीमान् अनिरुद्ध यह क्या है ऐसे कहकर वेग से उठा ८९ और अनेक प्रकारके प्रहारों से उदय होती हुई और स्थानके चारोंतरफ स्थितहुई ९० ऐसी सेनाको देख और वेगसे तिसके सम्मुख जाताभया और अपने वलको धारणकर और क्रोधहुआ दांतोंसे होठोंको चावताभया ९१ तव वाण चलनेलगे तव चित्ररेखा वाणासुरकी सेनाके युद्ध को

वैशम्पायन कहते हैं ४६ तब वह चित्ररेखा अनिरुद्धके मनोरथ को जान व प्र
सन्न होके बोली कि हे प्रिय तथास्तु मैं तैसेही करूंगी ५० तब ऐसे कह व स्त्रियों
के मध्यमें बैठेहुये अनिरुद्ध को अन्तर्द्धानकर और ग्रहणकर ऊपरको उछलती
भई ५१ और जिसको सिद्ध चारण सेवन करते हैं ऐसे रास्ताको प्राप्तहो और
वह मनके से वेगवाली चित्ररेखा शीघ्रही शोणितपुर को प्राप्तहोती भई ५२
और चित्रविचित्र आभूषणों से भूषित और चित्रविचित्र वस्त्रोंको धारण करने
वाले और देवताओंकेसे रूपवाले ५३ ऐसे अनिरुद्ध को एकान्त में ऊषाको
दिखातीभई और दोनोंको एक स्थानमें प्राप्त करतीभई ५४ और प्रियाको देख
हर्षसे नेत्रों को फुलाती हुई ऊषा तहां अनिरुद्ध का पूजन करतीभई ५५ और
चित्ररेखा को छातीसे लगा और सम्पूर्ण आख्यान को पूछती हुई और भयसे
आर्त्तहुई शीघ्रही चित्ररेखासे बोली ५६ कि हे कार्यों के जाननेवाली तैंने यह
गोप्यकार्य्य कैसे किया सो इसको छिपाके रखने में मेरा कल्याण है और इसके
देखने में मेरी मृत्युहै ५७ ऐसे कह वह ऊषा डरतीहुई अपने कान्तसहित एका
न्तमें स्थित होतीभई ५८ और चित्ररेखा बोली कि हे सखि तू मेरा एक निश्चय
सुन पुरुषार्थ के किये को दैव नाशता है ५६ जो देवी का प्रसाद तेरे अनुकूल
होवेगा तो मायासे गोप्य किया हुआ इस पुरुष को कोई भी नहीं जानसकेगा
६० ऐसे सखीके वचनको सुन ऐसेही होजाओ यह कहतीभई ६१ और ऐसेसुन
ऊषा अनिरुद्धसे बोली कि यह बड़ी अच्छी मेरे कल्याणकी वार्त्ताहुई कि स्वप्न
में प्राप्तहुआ चोररूपपति मैंने देखा और दुर्लभ प्यारेकी इच्छा करतीहुई प्रियके
अर्थ में बहुत दुःखित होतीभई ६२ और हे महाबाहो तेरी कुशलहै क्योंकि स्त्रि-
योंका कोमल हृदय होताहै जिससे मैं पूंछतीहूं ६३ ऐसा ऊषाका कोमल और
अर्थवाला वचन सुनकर अनिरुद्धभी हँसकरबोला ६४ कि हे मितभाषिणि और
हे सुन्दर जाँघोंवाली मेरी सम्पूर्ण कुशलहै ६५ और हे सुदर्शने तेरेही प्रसादसे
मैंने यह अदृष्टदेश देखा ६६ और हे भीरु रात्रि में स्वप्न मैंने जैसा देखाथा वै-
साही तेरे पास प्राप्तहुआ हूं ६७ क्योंकि पार्व्वती का वचन मिथ्या नहीं होता
और हे भामिनि पार्व्वती और तेरी दोनोंकी प्रीति जान और तेरे प्यारके अर्थ
में आयाहूं ६८ सो मेरे ऊपर तू प्रसन्नहो ऐसे मेरणाकी हुई ऊषा अपने अलं
कारों को धारण करतीहुई ६६ और अपने कान्तको संगलेतीहुई और भयकर

तीहुई एकान्तमें स्थित होती भई और गान्धर्व विवाहकर ७० दोनों परस्पर में ऐसे रमण करतेभये कि जैसे दिन में चकवा चकवी ७१ और दिव्य पुष्प और वस्त्र और माला और चन्दन इन्होंको धारण करनेहुये ऐसे अनिरुद्धको ऊषाके स्थान में कोई भी नहीं जानताभया पीछे दिव्य माला आदि को धारण करने वाले अनिरुद्ध को ७२ बाणासुरके द्वारपालों ने देखलिया ७३ और कन्या के अतिक्रमको बाणासुरके प्रति निवेदन करतेभये ७४ ऐसे सुन बाणासुरने अपनीसेना को आज्ञादी ७५ कि जल्द उस दुर्मतिका हननकरो ७६ क्योंकि तिस दुष्टात्मा ने हमारा चरित्र और कुलदूषित किया है ७७ और वह विना दीहुई कन्याको आपही ग्रहणकर और दूषित करताभया ७८ और इस दुर्मतिका वीर्य और धैर्य्य और धूर्त्तता यह आश्चर्य्यरूप है ७९ कि जिससे यह शठ हमारे पुर और भवन में प्राप्तहुआ ८० ऐसे कह बाणासुर अपने किङ्करों को फिर प्रेरणा करताभया ८१ और वे किङ्कर बाणासुर की आज्ञा को ग्रहणकर अपने स्थानसे निकसतेभये ८२ और अनिरुद्धके समीपमें जानेलगे ८३ और हाथों में अनेक प्रकारके अस्त्रोंको धारण करतेहुये और अनेक प्रकारके भयकर रूपोंवाले और अनिरुद्धको मारनेकी इच्छा करतेहुए और क्रोध होतेहुए ऐसे महाबली दानव अनिरुद्ध के समीप प्राप्त होतेभये ८४ तब ऐसी सेनाको देख नेत्रोंसे आंशुओं को गेरतीहुई और अनिरुद्धके वधसे डरतीहुई ऐसी बाणासुरकी पुत्री ऊंचेस्वर से रोनेलगी ८५ पीछे मृगकेसे नेत्रोंवाली और हा कान्त २ पुकारती हुई ऐसे रोतीहुई ऊषाको देख अनिरुद्ध बोला ८६ कि हे सुश्रोणि तू भयको दूरकर और मैं यहां स्थितहूं यातें तू भय नहीं करे और तेरे को अब आनन्दका समय प्राप्त हुआहै और इस में कोई भयका कारण नहीं है ८७ और हे यशस्विनि जो बाणासुर के नौकरों का सम्पूर्ण समूह भी यहां चला आवे तो भी मेरे को कुछ चिन्ता नहीं है और हे भीरु अब तू मेरे पराक्रमों को देख ८८ ऐसे कह और आतीहुई सेनाके शब्द को सुन और वह श्रीमान् अनिरुद्ध यह क्या है ऐसे कहकर वेग से उठा ८९ और अनेक प्रकारके प्रहारों से उदय होती हुई और स्थानके चारोंतरफ स्थितहुई ९० ऐसी सेनाको देख और वेगसे तिसके सम्मुख जाताभया और अपने बलको धारणकर और क्रोधहुआ दांतोंसे होठोंको चाबताभया ९१ तब बाण चलनेलगे तब चित्ररेखा बाणासुरकी सेनाके युद्ध को

देख देवदर्शन नारदमुनिको स्मरण करतीभई ९२ चित्ररेखाके स्मरण कियेहुये नारदमुनि एक क्षणमात्र में शोणितपुरमें प्राप्तहोतेभये ९३ व आकाशमें स्थित हुये नारदमुनि अनिरुद्धसे बोले कि तू भयमतकरे में अभी तेरे पुरमें प्राप्तहो ताहूं ९४ तब वह अनिरुद्ध नारदमुनिसे अभिवादनकर और खुशीमनहुये यु द्धके अर्थ प्रवृत्तहोतेभये ९५ और तिन गर्जतेहुये सम्पूर्णोंके शब्दको सुन और वेगसे ऐसे उठे कि जैसे अंकुशका वेधन कियाहुआ हस्ती ९६ व बड़ी भुजाओं वाले व होठोंको चाबतेहुये व हथेली पै आरोपण करते हुये ऐसे अनिरुद्ध को देख और भयभीत हुये वे दैत्य हवेलीसे दौड़तेभये ९७ और अन्तःपुरके द्वारपै स्थापित कियेहुये अतोल परिघको ग्रहणकर वह अनिरुद्ध दैत्योंके वधके अर्थ क्षेपण करतेभये ९८ और वे दैत्य बाण व गदा मुशल व खड्ग व शक्ति व त्रिशूल इन्होंसे अनिरुद्धको हनन करतेभये ९९ और शस्त्रोंको जाननेवाले और युद्ध में क्रोधहुये ऐसे दानवोंने बाण और परिघोंसे हनन कियेहुये १०० वह संपूर्ण भूतोंके आत्मा और उष्णकाल के मेघकी तुल्य गर्जतेहुये ऐसा अनिरुद्ध क्षो भको प्राप्त नहीं होतेभये और परिघको ग्रहणकर दैत्यों के मध्य में ऐसे स्थित होतेभये कि जैसे आकाशमें विचरतेहुये मेघोंके मध्यमें सूर्य ऐसे देख दृढ और कालेमृगके चामको धारण करतेहुये और सराहते हुये नारदमुनि अनिरुद्ध से बोले १०१ कि हे अनिरुद्ध अमित पराक्रमवाले और भयानक ऐसे परिघसे ह नन कियेहुये १०२ दैत्य भयसे ऐसे दौडतेभये कि जैसे पवनसे प्रेरण कियेहुये मेघ और रणमें सम्पूर्ण दानवोंको भगातेहुये और खुशी होतेहुये १०३ अनि रुद्ध रणमें सिंहकी नाईं गर्जतेभये १०४ और अनिरुद्धके हनन कियेहुये १०५ और युद्धसे पराङ्मुख हुये सम्पूर्ण दैत्य बाणासुरके पास जातेभये और रुधिरसे व्याप्तहुये और ऊंचे २ श्वासोंको छोंडतेहुये १०६ और भयसे व्याकुलहुये ऐसे दैत्य बाणासुरके समीप स्थितहुये शांतिको प्राप्त नहीं होतेभये तब बाणासुर क हनेलगा कि हे दैत्यो भय मतकरो १०७ और त्रासको त्याग और एक जगह स्थितहुये युद्धकरो १०८ और सम्पूर्ण लोकमें विख्यातहुये यशको त्याग और हिजड़ोंकी नाईं क्यों व्याकुलता को प्राप्तहोतेहो १०९ और विख्यात कुलोंवाले व अनेकप्रकार के युद्धोंको जाननेवाले ऐसे अनेक दैत्य जिसके भयसे दौड़ते हो सो यह कौन पुरुष है ११० व तुम मेरी सहायता अब नहींको व दौड़जाओ

और नाशको प्राप्तहो १११ ऐसे तिन दैत्योंको क्रूरवचनोंसे त्रास देताहुआ म-
हाबली वाणासुर ११२ फिर अन्य दशहजार शूरवीरों को आज्ञा देताभया ११३
व कोइक शूरवीर हस्तियों की तुल्य शब्दों को करतेहुये पृथ्वी में स्थित होते
भये ११४ व कोइक आकाशमें ऐसे शोभाको प्राप्तहोतेभये कि जैसे वर्षाऋतुमें
मेघ ११५ और ऐसी सेना चलीहुई कि सम्पूर्ण दिशाओं में तिष्ठ२ ऐसी वाणी
सुननेलगी ११६ और वह शूरवीर अनिरुद्ध आश्चर्य को उपजाता हुआ फिर
अनेक दैत्योंकेसग युद्धकरनेलगा ११७ व तिन्होंके परिघ और तोमरोंको ग्रहण
कर ११८ और उन्हीं से दैत्योंको हनन करताभया और फिर परिघको ग्रहणकर
और रणके मध्यमें अकेलाही युद्धके मार्गोंको करनेलगा कैसे कि भ्रात व उद्भ्रात
व अविद्ध व आप्लुत व प्लुत ११९ ऐसे बत्तीसप्रकार के मार्गों को विचरता हुआ
युद्ध में नहीं दीखताभया और एककोही हजारहोंकी नाईं युद्धमें क्रीडा करता
हुआ ऐसे देखतेभये १२० कि जैसे मुखको फाड़ताहुआ अन्तक और फिर अ-
निरुद्धसे सन्तापको प्राप्तकियेहुये और रुधिरसे व्याप्तहुये १२१ ऐसे दैत्य भग्न
हुये फिर वाणासुरके पासजातेभये और हस्ती घोड़ा रथ इन्हों पै स्थितहुये १२२
और आर्तशब्दको करतेहुये और नष्ट पराक्रमवाले और भयसे पीडितहुये १२३
और रुधिर का वमन करते हुये ऐसे दैत्य दशों दिशाओं में दौडते भये और
कहनेलगे कि पहिले भी देवताओं के सग युद्धमें ऐसा भय नहीं उत्पन्न हुआ
था १२४ कि जैसा अनिरुद्धके सग युद्धमें हुआ है १२५ व पर्वतके शिखरकी
तुल्य कांतिवाले और गदा त्रिशूल खड्ग इन्हों को हाथों में धारण करतेहुये ऐसे
दानव १२६ रणमें वाणासुरको त्याग और भयभीतहुये आकाश में दौडतेभये
और तब भग्नहुई अपनी सम्पूर्ण सेनाको देख १२७ वाणासुर ऐसे जलताभया
कि जैसे यज्ञमें होमहुआ अग्नि जलताहै तब आकाशमार्ग में प्राप्तहोके साधु
साधु ऐसे कहतेहुये १२८ और प्रसन्न होतेहुये ऐसे नारदमुनि अनिरुद्धके युद्ध
में नृत्य करनेलगे और इतनेही कालमें अत्यन्त कोपहुआ १२९ और महाबली
ऐसा वाणासुर अपने रथमें स्थितहो और खड्गको उठाताहुआ और रथमें स्थित
हुआ ऐसा अनिरुद्ध के पास जाताभया १३० व पट्टिश और खड्ग और गदा
और त्रिशूल और फरसा इन्होंको उठाताहुआ एकहजार भुजाओंसे ऐसे शो-
भायमान होताभया कि जैसे सौ ध्वजाओं से इन्द्र होताहै १३१ व यहां २ भुजा-

ओंवाला और अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे युक्त ऐसा बाणासुर गोधा और अगुलि त्राणयुक्त भुजाओंसे शोभाको प्राप्तहोताभया १२२ व सिंहके तुल्य गर्जताहुआ और धनुषको टंकोरताहुआ और क्रोधसे रक्त नेत्रोंको धारण करताहुआ ऐसा बाणासुर तिष्ठ २ ऐसे अनिरुद्ध को कहनेलगा १२३ तब अनिरुद्ध बाणासुर के वचनको सुन और युद्धमें तिसके मुखको देख हँसनेलगे १२४ व सो घुंघुरुओंसे शब्दायमान और रक्त ध्वजा और पताकाओंवाला और ऋष्य संज्ञक मृगों के चर्मों से मढ़ाहुआ १२५ व चारहजार हाथ विस्तारवाला और पहिले देवता व असुरोंके युद्धमें जैसे हिरण्यकशिपुका रथ युक्तहुआ वैसेही एकहजार घोड़ाओं से युक्त १२६ ऐसे बाणासुर के रथको अनिरुद्ध देखतेभये १२७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभाषायांबाणानिरुद्धयुद्धनामसप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः॥

एकसौअठत्तरिका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि तिस आवतेहुये दानवोंको देखके प्रसन्नहुये अनिरुद्धजी युद्धमें तेजसे पूरित होनेलगे १ अर्थात् तलवार ढालको धारण करने वाले और बीर व सग्रामर्में लालसावाले ऐसे अनिरुद्ध उससमय होतेभये जैसे हिरण्यकशिपु दैत्यको मारनेके समय नृसिंहजी उद्यतहुये तैसे २ पीछे तलवार चाम आदि को धारण करनेवाले व प्यादे ऐसे अनिरुद्धको आवतेहुये देख ३ अनिरुद्धको मारने के अर्थ बाणासुर अति प्रसन्नताको प्राप्तहुआ व कवचकरके रहित व हाथमें तलवारवाले ऐसे अनिरुद्धको जानके जितकाशी व अति बल वाला ४ ऐसा बाणासुर क्रोधको प्राप्तहो कहनेलगा कि इसको ग्रहणकरो और मारो ऐसी वाणीको सुन युद्धमें क्रोधको प्राप्तहुये ५ अनिरुद्ध हँसके रोवतीहुई व भयसे दुःखित ऐसी ऊषाकी ओरको देखनेलगे पीछे हँस के व ऊषाको आश्वासदे स्थितहुये पीछे बाणासुर अनिरुद्धको मारनेके अर्थ ६ बहुतसे बाणोंको युद्धमें छोडनेलगा व अनिरुद्ध बाणासुरके पराजयको चाहतेहुये बाणोंको काटतेभये ७ पीछे बाणासुर अनिरुद्धको मारने के अर्थ अनिरुद्ध के शिरपर बाणों के जालोंको बरसाताभया ८ पीछे अनिरुद्ध अपनी ढाल पै हजारों बाणों को ओढके बाणासुर के सम्मुख स्थितहुये जैसे प्रभातमें सूर्य ६ ऐसे स्थितहुये अनिरुद्धको मर्मभेदी बाणों के समूहों से बाणासुर बींधनेलगा १० तब बाणों से हन

हुये व खड्ग चर्म्म को धारण करनेवाले ऐसे अनिरुद्ध पृथ्वी में पड़नेलगे तब पड़तेहुये अनिरुद्धको फिर बाणासुर ११ पैने पैने बाणों से बींधनेलगे सो बाणों के बींधने से १२ क्रोधको प्राप्तहुये अनिरुद्ध दुष्कर कर्म करनेके अर्थ बाणासुरके रथके समीपमेंगये तब तलवार मूसल शूल पट्टिश भाले बाणों के समूह इन्हों से पीडितकिये भी अनिरुद्ध कम्पायमान न हुये १३ और क्रोधको प्राप्तहो वेगमे रथपै तलवार मार पीछे बाणासुरके घोड़ोंको तलवारसे काटनेभये १४ पीछे युद्ध मार्ग में चतुर बाणासुर बाणोंकी वर्षा पट्टिश भाले इन्होंकरके अनिरुद्धको आच्छादित करनेलगा १५ तब मानों अनिरुद्ध मरगये ऐसेजानके राक्षसोंके गण शब्द करनेलगे १६ परन्तु उसीसमय बाणोंके जालोंको काटके बाणासुरके रथ के समीपमें स्थितहुआ १७ तब घोररूपवाली और भयानक और प्रकाशित व घंटोंके समूहसे व्याप्त और अग्नि १८ और सूर्य्य के समान प्रकाशवाली और धर्म्मराज के समान उग्रदर्शनवाली और महाउल्का के समान ज्वलित ऐसी शक्तिको बाणासुर ग्रहण करताभया १९ तब आवतीहुई शक्तिको देख पुरुषों में उत्तम अनिरुद्ध कूदके शक्तिको ग्रहणकर २० उलटी बाणासुरके अर्थ बलसेमारतेभये तब वह शक्ति बाणासुरके देहका भेदनकर पृथ्वीतलमें प्राप्त भई २१ और तब अति वेधन किया और दुःखितहुआ और पीड़ित हुआ बाणासुर ध्वजा पट्टिश के आश्रित रहा पीछे मूर्च्छित रूपहुये बाणासुरसे कुभाण्ड कहनेलगा २२ कि हे दानवेंद्र ऐसे उद्यतहुये शत्रुको आप कैसे छोड़तेहैं और विकारों से रहित और लब्धलक्षवाला ऐसा यह वीर प्रतीतहोताहै २३ इसवास्ते मायाका आसरा लेके युद्धकर अन्यथा यह नहीं मरेगा और आपकी और मेरी कृपाकर रक्षाकर २४ और यह इसीसमय मारना चाहिये नहीं तो हम सबोंको यह मार और सैकड़ों हमारे मित्रों को मारके ऊषा को ग्रहणकर गमनकरेगा २५ ऐसे कुम्भाण्ड के वचनों से प्रेरित किया बाणासुर क्रोधको प्राप्तहो रूखी वाणी कहनेलगा २६ कि इसके प्राणोंको हरनेवाले मृत्युको अब मैं रचताहूं अर्थात् इसको मैं मारूंगा जैसे सर्पोंको गरुड़जी मारते हैं २७ ऐसे कहके रथध्वजा अश्व वसारथी इन्हों करके सहित बाणासुर गंधर्व नगरकी तरह दीखनेसे वेअग्रहा २८ पीछे मायाको धारण करनेवाला बाणासुर बाणोंकी वर्षा करनेलगा पीछे अन्तर्द्धानहुये बाणासुरको जानके अपराजितरूप अनिरुद्ध २९ अपने पुरुषार्थ करके दशोंदिशा-

ओंको जीतनेलगे पीछे तामसी विद्याको प्राप्तहुआ ३० बाणासुर पैने बाणोंको छोड़नेलगा तब सर्परूपी बाणोंसे चारों तरफसे बँधाहुआ ३१ और वेष्टितहुआ और प्रयत्नसे रहित और अग्निके समान मुखोंवाले सर्पोंके शरीरों से विवेष्टित और मैनाक पर्वतकी तरह स्थितहै ३२ परन्तु सर्परूप बाणों से परिवेष्टित ऐसा हुआ कि कुछकर न सका ३३ परन्तु कछु पीडा को प्राप्त न भया ३४ तब बाणासुर समीपमें प्राप्तहोके उग्रवाणीसे कहनेलगा कि हे कुम्भाण्ड यह दुष्ट जल्द मारने योग्यहै ३५ इसने मेरा चरित्र दूषित करदियाहै ऐसे बाणासुरके वचनको सुन कुम्भाण्ड कहनेलगा ३६ हे राजन् कुछ मैं कहताहूं जो इच्छाहो तो श्रवण कर यह जानना चाहिये किसका तो पुत्रहै और कहा से आयाहै और किसने यहां लाके प्राप्त कियाहै और इन्द्रके समान पराक्रम करनेवाला ३७ और युद्ध में देव पुत्रके समान क्रीडाकरनेवाला और बलवान् और सब शास्त्रों में चतुर ३८ ऐसा यह हे दैत्यसत्तम मारनेके योग्य नहीं है और गान्धर्व विवाह करके तेरी कन्याका इससे संयोग हुआहै ३९ इसवास्ते अन्यपुरुषके अर्थ देनेके योग्य और अन्य पुरुषके ग्रहण करनेके योग्य ऐसी तेरी कन्या नहीं रही है इसवास्ते चिन्तवनकर इसका वधकरना न चाहिये अर्थात् वधकरनेके योग्य नहीं है और इसको जानके तू इसकी पूजाकरेगा ४० और इसके मारनेमें महान् दोषहै और इसकी पूजाकरनेमें महान् गुणहै इसवास्ते यह पुरुष सब कालमें मानके योग्यहै ४१ और चारोंओरसे सर्पोंकरके वेष्टित शरीरवाला भी होके पीड़ाको प्राप्त नहीं होताहै और बड़े बड़े योद्धाओंसे भी युद्धकरके पीड़ित नहीं होताहै ४२ ऐसे इस पुरुषको तू देख व नरको प्राप्तहुआ भी यह हमसबोंको नहीं गिनताहै ४३ और जो मायाके प्रभावसे नहीं वशमें कियाजाता तो सबदैत्यगणोंके सगभी अकेला युद्धकरसक्ताहै ४४ और सबसंग्रामके मार्गोंको जाननेवाला व तेरेवीर्यसे अधिक वीर्य्यवाला और बहतेहुये लोहूसे भीजेहुये अंगोंवाला व सर्पोंसे वेष्टित ४५ ऐसा भी यह त्रिशिखावाली भृकुटीको चढाकर हमसबों से चिंता नहीं करताहै और इस अवस्थासे प्राप्तहुआ और अपने बाहुबलसे आश्रित ऐसा यह ४६ हे राजन् तेरेको चिन्तवन नहीं करताहै और हजार बाहुवाले तेरे सम्मुख दो २ बाहुओं वाला ४७ व वीर्य मदसेयुक्त तेरे वीर्यको चिन्तवनहीं करताहै ४८ सो हे राजन् जो उचितजानो तो वीर्यबलसे समन्वित यह जानना योग्यहै व यह इसप्रेरणाप

सगकरनेवाली तेरी कन्या अन्यके पास नहीं जायगी ४९ व जो महात्माओं के वशमें उपजनेवाला यह वीरहो तौ तेरेसे पूजापाने योग्य है ५० इसवास्ते इसकी रक्षाकर ऐसे कुम्भाण्डके वचनको सुन व अङ्गीकारकर बाणासुर ५१ अनिरुद्धकी रक्षाकेवास्ते दैत्यों को स्थितकर ५२ अपने स्थान में प्राप्तहुआ पीछे मायाकरके बँधेहुये अनिरुद्ध को देख ५३ नारदमुनि आकाशमार्ग करके द्वारकापुरी को गमन करतेभये जब नारदमुनि गमन करतेभये ५४ तब अनिरुद्ध चिन्तवन करनेलगे कि यह बाणासुरदैत्य युद्धमें प्राप्तहो नष्टहोगा इसमें संशय नहीं ५५ क्योंकि यह नारदमुनि द्वारकामें जायके इस वृत्तान्तको श्रीकृष्ण के अर्थ प्रकाशित करेंगे ५६ पीछे नागों से विचेष्टित व आतुर ऐसे अनिरुद्ध को देख आंशुओं से रुगगये हैं नेत्र जिसके ऐसी ऊषा रोनेलगी तब रोतीहुई ऊषा से अनिरुद्ध कहनेलगे ५७ कि हे भीरु किसवास्ते तू रोदनकरती है तू भयको मत प्राप्तहो हे मृगलोचने मेरे अर्थ प्राप्तहुये श्रीकृष्णको जल्द तू देख ५८ व जिसके शङ्खके शब्दको व बाहुके शब्दको व बलके शब्दको सुनके सब दैत्य व दैत्यों की स्त्रियों के गर्भ नाशको प्राप्तहोजावेंगे ५९ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे अनिरुद्धके वचनकोसुन निश्रम्भको प्राप्तहो ऊषा नृशसरूप पिताको शोचनेलगी ६०॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांबाणानिरुद्धयुद्धेऽष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥

एकसौउन्नासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब बाणासुर के पुरमें ऊषाके संग अनिरुद्ध बलिके पुत्र बाणासुर ने रोंकदिया १ तब कोटवती देवी के रक्षाके अर्थ शरणागत हुये अनिरुद्ध ने जो स्तोत्रपढाहै तिस स्तोत्र को सुन२ अब वही स्तोत्र प्रकाशित कियाजाताहै ॥ अनन्तमक्षयदिव्यमादिदेवसनातनम् ॥ नारायणंनमस्कृत्यंप्र वरजगताप्रभुम् ३ चण्डींकात्यायनींदेवीमार्यांलोकनमस्कृताम् ॥ वरदांकीर्तिपि ण्यामिनागर्भिर्हरिसंस्तुते ४ ऋषिभिर्देवतैश्चैव वाग्भुण्यैरर्चिताशुभाम् ॥ तादेवीं सर्वदेहस्था सर्वदेवनमस्कृताम् ५ अनिरुद्धउवाच॥ महेन्द्रविष्णुभगिनींनमस्या मिदितायते ॥ मनसाभावशुद्धेन शुचि स्तोपेकृताजलि ६ गोनर्मक्सभयदा य शोदानन्दवर्द्धिनीम् ॥ मेघ्यागोकुलसम्भूता नन्दगोपस्यनन्दिनीम् ७ भ्रातां दशाशिवासौम्या दनुपुत्रविमर्दनीम् ॥ तादेवींसर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृताम् ८

ओंको जीतनेलगे पीछे तामसी विद्याको प्राप्तहुआ ३० बाणासुर पैने बाणोंको छोड़नेलगा तब सर्परूपी बाणोंसे चारों तरफसे बँधाहुआ ३१ और वेष्टितहुआ और प्रयत्नसे रहित और अग्निके समान मुखोंवाले सर्पोंके शरीरोंसे विचेष्टित और मैनाक पर्वतकी तरह स्थितहै ३२ परन्तु सर्परूप बाणों से परिवेष्टित ऐसा हुआ कि कुछकर न सका ३३ परन्तु कछु पीडा को प्राप्त न भया ३४ तब बाणासुर समीपमें प्राप्तहोके उग्रवाणीसे कहनेलगा कि हे कुम्भाण्ड यह दुष्ट जल्द मारने योग्यहै ३५ इसने मेरा चरित्र दूषित करदियाहै ऐसे बाणासुरके वचनको सुन कुम्भाण्ड कहनेलगा ३६ हे राजन् कुछ मैं कहताहूं जो इच्छाहो तो श्रवण कर यह जानना चाहिये किसका तो पुत्रहै और कहा से आयाहै और किसने यहा लाके प्राप्त कियाहै और इन्द्रके समान पराक्रम करनेवाला ३७ और युद्ध में देव पुत्रके समान क्रीडाकरनेवाला और बलवान् और सब शास्त्रों में चतुर ३८ ऐसा यह हे दैत्यसत्तम मारनेके योग्य नहींहै और गांधर्व्व विवाह करके तेरी कन्याका इससे संयोग हुआहै ३९ इसवास्ते अन्यपुरुषके अर्थ देनेके योग्य और अन्य पुरुषके ग्रहण करनेके योग्य ऐसी तेरी कन्या नहीं रही है इसवास्ते चिन्तवनकर इसका वधकरना न चाहिये अर्थात् वधकरनेके योग्य नहीं है और इसको जानके तू इसकी पूजाकरेगा ४० और इसके मारनेमें महान् दोषहै और इसकी पूजाकरनेमें महान् गुणहै इसवास्ते यह पुरुष सब कालमें मानके योग्यहै ४१ और चारोंओरसे सर्प्पोंकरके वेष्टित शरीरवाला भी होके पीडाको प्राप्त नहीं होताहै और बडे बड़े योद्धाओंसे भी युद्धकरके पीडित नहीं होताहै ४२ ऐसे इस पुरुषको तू देख व बधको प्राप्तहुआ भी यह हमसबों को नहीं गिनताहै ४३ और जो मायाके प्रभावसे नहीं वशमें कियाजाता तो सब दैत्यगणोंके संगभी अकेला युद्धकरसक्ताहै ४४ और सबसंग्रामके मार्गोंको जाननेवाला व तेरेवीर्यमें अधिक वीर्य्यवाला और बहतेहुये लोहूसे भीजेहुये अंगोंवाला व सर्पोंसे वेष्टित ४५ ऐसा भी यह त्रिशिखावाली भृकुटीको चढाकर हमसबों से चिंता नहीं कर्ता है और इस अवस्थासे प्राप्तहुआ और अपने बाहुबलसे आश्रित ऐसा यह ४६ हे राजन् तेरेको चिन्तवन नहीं करताहै और हजार बाहुवाले तेरे सम्मुख दो २ बाहुओं वाला ४७ व वीर्य मदसेयुक्त तेरे वीर्यको चिन्तवनही करताहै ४८ सो हे राजन् जो उचितजानो तो वीर्यबलसे समन्वित यह जानना योग्यहै व यह इसकेसाथ

सगकरनेवाली तेरी कन्या अन्यके पास नहीं जायगी ४९ व जो महात्माओं के वशमें उपजनेवाला यह वीरहो तो तेरेसे पूजापाने योग्य है ५० इसवास्ते इसकी रक्षाकर ऐसे कुम्भाण्डके वचनको सुन व अङ्गीकारकर वाणासुर ५१ अनिरुद्धकी रक्षाकेवास्ते दैत्यों को स्थितकर ५२ अपने स्थान में प्राप्तहुआ पीछे मायाकरके बँधेहुये अनिरुद्ध को देख ५३ नारदमुनि आकाशमार्ग करके द्वारकापुरी को गमन करतेभये जब नारदमुनि गमन करतेभये ५४ तब अनिरुद्ध चिन्तवन करनेलगे कि यह वाणासुरदैत्य युद्धमें प्राप्तहो नष्टहोगा इसमें संशय नहीं ५५ क्योंकि यह नारदमुनि द्वारकामें जायके इस वृत्तान्तको श्रीकृष्ण के अर्थ प्रकाशित करेंगे ५६ पीछे नागों से विचेष्टित व आतुर ऐसे अनिरुद्ध को देख आंशुओं से रुगगये हैं नेत्र जिसके ऐसी ऊषा रोनेलगी तब रोतीहुई ऊषा से अनिरुद्ध कहनेलगे ५७ कि हे भीरु किसवास्ते तू रोदनकरती है तू भयको मत प्राप्तहो हे मृगलोचने मेरे अर्थ प्राप्तहुये श्रीकृष्णको जल्द तू देख ५८ व जिसके शङ्खके शब्दको व वाहुके शब्दको व वलके शब्दको सुनके सब दैत्य व दैत्यों की स्त्रियों के गर्भ नाशको प्राप्तहोजावेंगे ५९ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे अनिरुद्धके वचनकोसुन निश्रम्भको प्राप्तहो ऊषा नृशंसरूप पिताको शोचनेलगी६०॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांबाणानिरुद्धयुद्धेऽष्टसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः ॥

एकसौउन्नासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब वाणासुर के पुरमें ऊषाके संग अनिरुद्ध वलिके पुत्र वाणासुर ने रोंकदिया १ तब कोटवती देवी के रक्षाके अर्थ शरणागत हुये अनिरुद्ध ने जो स्तोत्रपढ़ाहै तिस स्तोत्र को सुन२ अब वही स्तोत्र प्रकाशित कियाजाताहै ॥ अनन्तमक्षयदिव्यमादिदेवसनातनम् ॥ नारायणनमस्कृत्यंप्रवरंजगताम्प्रभुम् ३ चण्डींकात्यायनींदेवीमार्यांलोकनमस्कृताम् ॥ वरदांकीर्तयिष्यामिनामभिर्हरिसंस्तुते ४ ऋषिभिर्देवतैश्चैव वाक्पुष्पैरर्चिताशुभाम् ॥ तांदेवीं सर्वदेहस्थां सर्वदेवनमस्कृताम् ५ अनिरुद्धउवाच ॥ महेन्द्रविष्णुभगिनींनमस्यामिदितायतें ॥ मनसाभावशुद्धेन शुचि स्तोष्येकृताञ्जलि ६ गौतमींकंसभयदां यशोदानन्दवर्द्धिनीम् ॥ मेध्यांगोकुलसम्भूतां नन्दगोपस्यनन्दिनीम् ७ प्राज्ञां दक्षांशिवांसौम्यां दनुपुत्रविमर्दनीम् ॥ तांदेवींसर्वदेहस्थां सर्वभूतनमस्कृताम् ८

दर्शिनींपूरर्णींमायां वह्निसूर्य्यशशिप्रभाम् ।। शान्तिध्रुवाचजननीं मोहनींशोस
र्णींतथा ६ सेव्यादेवै सर्पिगणै सर्वदेवनमस्कृताम् ।। कालींकात्यायनींदेवींभय
दाभयनाशिनीम् १० कालरात्रिंकामगमात्रिनेत्राब्रह्मचारिणीम् ११ सौदामिनीं
मेघवरा वेतालींविपुलाननाम् ।। यूथस्याद्यामहाभागा शकुनींरेवतींतथा १२ ति
थीनापञ्चमींषष्ठीं पूर्णमासींचतुर्दशीम् ।। सप्तविंशतिऋक्षाणिनद्य सर्वादिशोदश
१३ नगरोपवनोद्यानद्वाराट्टालकवासिनीम् ।। ह्रींश्रींगङ्गाचगन्धर्वी योगिनींयो
गदासताम् १४ कीर्तिमायादिशस्पर्शा नमस्यामिसरस्वतीम् ।। वेदानामातरचैव
सावित्रींभक्तवत्सलाम् १५ तपस्विनींशान्तिकरीमेकानंशासनातनीम् ।। कौटि
र्यांमदिरात्रण्डामिलामलयवासिनीम् १६ भूतधात्रींभयंकरींकूष्माण्डींकुसुमप्रि
याम् ।। दारुणींमदिरावासा विन्ध्यकैलासवासिनीम् १७ वरागनासिंहरथींबहुरू
पाबृषध्वजाम् ।। दुर्लभांदुर्जयांदुर्गांनिशुम्भभयदर्शिनीम् १८ सुरप्रियासुरान्देवीं
वज्रगाररयनुजाशिवाम् ।। किरातींचीरवसना चौरसेनानमस्कृताम् १९ आज्यपां
सोमपांसौम्या सर्वपर्वतवासिनीम् ।। निशुम्भशुम्भमथिनीं गजकुम्भोपमस्तनी
म् २० जननींसिद्धसेनस्य सिद्धचारणसेविताम् ।। त्रराकुमारप्रभवा पार्वतींपर्व
तात्मजाम् २१ पञ्चाशदेवकन्यानां पत्न्योदेवगणस्यत्वं २२ कद्रूपुत्रसहस्रस्य पु
त्रपौत्रवरस्त्रिय ।। मातापिताजगन्मान्या दिविदेवाप्सरोगणे २३ ऋषिपत्नीगणा
नाचयक्षगन्धर्वयोषिताम् ।। विद्याधराणानारीषु साध्वीषुमनुजासुच २४ एवमेतासु
नारीसु सर्वभूताश्रयाह्यसि ।।नमस्कृतासित्रैलोक्ये किन्नरोद्रिलसेविते २५ अचिंत्या
ह्यप्रमेयासि पासिसासिनमोस्तुते ।। एभिर्नामभिरन्यैश्चकीर्तिताह्यसिगौतमि २६
त्वत्प्रसादादविघ्नेनक्षिप्रंमुच्येयवधनात्।।अवेक्षस्वविशालाक्षिपादौतेशरणंव्रजे २७
सर्वेषामेवभूतानामोक्षणकर्तुमर्हसि।।ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चचन्द्रसूर्याग्निमारुता २८ अ
श्विनौवसवश्चैव धाताभूमिर्दिशोदश।।मारुतासहपर्जन्योधाताभूमिर्दिशोदश २९
गारोनक्षत्रवशाश्चग्रहानद्योहृदास्तथा।।सरित सागराश्चैवनाना।विद्याधरोरगा ३०
तथानागासुपर्वाणो गन्धर्वाप्सरसागणा ।।कृत्स्नजगदिदप्रोक्तं देव्यानामानुकीर्त
नात् ३१ देव्यास्तवमिदंपुण्यय पठेत्सुसमाहित ।।सातस्मैसप्तमेमासिवरमन्यप्रय
च्छति ३२ अष्टादशभुजादेवीदिव्याभरणभूषिता ।। हारशोभितसर्वांगी मुकुटोज्व
लभूषणा ३२ कात्यायनीस्तूयसेत्वंवरमग्र्यंप्रयच्छसि ।। अतस्तवंमितादेवीं वरदे
वामलोचने ३४ नमोस्तुतेमहादेवि सुप्रीतामेसदाभव।।प्रयच्छत्वंवरह्यायु पुष्टिंचैव

क्षमाद्यतिम् ३५ बधनस्थोविमुच्येयसत्यमेतद्ब्रवेदिति ॥ ऐसे अपने बन्धु छुटाने के अर्थ अनिरुद्धने देवीकी स्तुतिकरी ३६ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि महा दुर्ग पराक्रमवाली देवीकी जब स्तुतिकरी ३७ तब अनिरुद्ध के समीपमे हितके अर्थ शरण वत्सला ३८ देवी बाणपुर में बँधेहुये अनिरुद्ध को छुटाती भई और सान्त्वन भी करातीभई ३९ व अमित प्रतापवाला वह अनिरुद्ध भी देवी की पूजा करताभया ४० व नागपाशसे बंधाहुआ और ऊपाकरके हृतचित्तवाला ऐसे अनिरुद्धके वज्रके समान पंजरको हाथके अग्रभागसे स्फोटनकर ४१ पीछे सम्मुख स्थितहुई अनिरुद्धसे कहतीभई ४२ श्रीदेवीजी कहनेलगी कि हे अनिरुद्ध श्री कृष्ण भगवान् यहां आके बाणासुर की हजार बाहुओं का छेदनकर और इस बंधनसे तेरेको छुटा द्वारकापुरीमें प्राप्त करेगा ४३ तब प्रसन्नहुआ और चन्द्रमाके समान मुखवाला अनिरुद्ध फिर देवीजी की स्तुति करनेलगा ४४ हे वरके देने वाली देवी तेरे अर्थ नमस्कार है और हे दैत्यों को नाशनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै ४५ व हे कामना को पूर्ण करनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे सबोंकेहित और प्यारके करनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कार है और हे शत्रुओं के भयको दूरकरनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे बन्धनसे छुटाने वाली देवी तेरेअर्थ नमस्कारहै ४६ व हे ब्रह्माणी हे इन्द्राणी हे रुद्राणी हे भूतभव्य भवे हे शिवे हे नारायणि सबप्रकारके भयोंसे मेरी रक्षा कर तेरे अर्थ नमस्कारहै ४७ व हे जगत् के नायरूप तेरे अर्थ नमस्कार हैं हे प्रिये हे दाते हे महाव्रते हे भक्ति प्रिये हे जगन्मात हे शैलपुत्रि हे वसुन्धरे ४८ मेरी रक्षाकर व हे विशालाक्षि हे नरायणि तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे दैत्योंको भयकरनेवाली सब दुःखोंसे मेरी रक्षाकर ४९ व हे रुद्रकी प्यारी हे महाभागवाली हे भक्तोंके दुःखको नाशनेवाली देवी तेरेको शिरसे मैं प्रणाम करताहूं क्योंकि बंधनमें स्थितहुए मेरेको तैंने छुटा दियाहै ५० वैशम्पायन कहनेलगे कि सावधानहोके जो मनुष्य इस देवीके स्तोत्र को पढ़ेगा वह सब पापोंसे रहितहोके विष्णुलोकमें जावेगा ५१ व बंधनमें स्थित हुआ मनुष्य इसके पाठसे छुटसक्ता है यह सत्य है जैसे व्यासजीका वचन ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामनिरुद्धकृतार्यास्तवेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः १७० ॥

एकसौअस्सीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब अनिरुद्ध गृहमें नहीं दीखा तब मृगियों के समूह के समान अनिरुद्ध के गृहमें सबस्त्रिया रोदन करनेलगीं १ आश्चर्य है धिक्कार है हे नाथ नाथरूप कृष्णके स्थितहुये अनाथों की तरह भयसेपीडित हम रोवती हैं २ व इन्द्र आदि सब देवते जिसकी बाहुका आश्रयले स्वर्ग में बसते हैं ३ तिसको इस लोकमें महाभय उपजाहै अर्थात् जिस श्रीकृष्ण का पौत्र अनिरुद्ध किसने हरलिया ४ आश्चर्य है तिस अनिरुद्धको भयनहीं है परन्तु वह श्रीकृष्ण के दुस्सहरूप क्रोधको उत्पन्न करेगा ५ अर्थात् जो श्रीकृष्णके सम्मुख वैरीप्राप्त होताहै वह मृत्युकी दंष्ट्रा के अग्रभागमें स्थितहै ६ व इस प्रकारके विप्रिय वचनों को श्रीकृष्णके अर्थ कहतीभई और ईश श्रीकृष्णके सम्मुख युद्धमें इन्द्र भी नहीं जीसक्ता ७ व हृत हुआहै नाथ जिन्होंका व अनिरुद्ध के वियोग से हम सब मृत्युके वशमें प्राप्त होवेंगी ८ ऐसे कहतीहुई और वारवार रोदन करती हुई बहुतसी स्त्रियां नेत्रोंसे जलकी वर्षा करनेलगीं ९ अर्थात् तिन स्त्रियों के आंशुओं से पूरितनेत्र प्रकाशित होनेलगे जैसे वर्षाकालमें जलसे व्याप्त कमल १० व तिन्होंके हस्तोंके रुधिरसे गीले पलक और लोहूसे गीले नेत्र होतेभये ११ व अनिरुद्धकी हवेली में स्थितहुई रोदन करनेवाली हजारहों स्त्रियों का महा शब्द होनेलगा १२ तब अपूर्व भयके समान प्राप्तहुये तिस शब्दको सुनके अपने अपने गृहों से वेगसे भागकर पुरुष प्राप्तहोनेलगे १३ व कहनेलगे किस कारणसे अनिरुद्धके घरमें यह महाशब्द होताहै व कृष्णसे रक्षित रूप हमारेको यह भय कहासे प्राप्तहुआ १४ ऐसे स्नेह व विक्रमसे गद्गदरूप हुये सब पुरुष आपसमें कहतेभये जैसे गुहासे निकसे धैर्य्य से रहित सिंह १५ व जो श्रीकृष्ण के गृहों पे नकारे व नौबतखाने बजाकरते थे भी बंद होरहे हैं १६ ऐसे देख के आपसमें पूछतेहुये व आपस में वृत्तान्तको कहतेहुये १७ व आंशुओं से पूरित नेत्रोंवाले व क्रोधसे लालनेत्रोंवाले और सब कहतेहुये व युद्धमें दुर्मद ऐसे यादव पुरुष स्थितहुये १८ जब सब चुपहोगये तब वारवार रोदन करतेहुये और सुबकतेहुये श्रीकृष्णको विपृथु कहनेलगा १९ कि हे पुरुषेंद्र तू चिंतासे व्याप्तहुआ यह क्या है तेरे बाहुके बलके आश्रितहो सब यादव जीवते हैं २० व तेरे आ-

श्रितहुये हम सब अलग अलग वसते हैं व तेरे विषे जय पराजय को स्थितकर बलवाला २१ व शंकासे रहित ऐसा इन्द्र सुखपूर्वक शयन करताहै सो ऐसे तुम कैसे चिंतामें व्याप्तगये २२ व सब तेरी ज्ञातिके मनुष्य शोकरूपी समुद्रमें डूबने हैं तिन डूबनेहुओं का हे महाभुज तू अकेला उद्धारकर २३ व चितासे व्याप्त हुआ तू कुछभी नहीं बोलताहै यह क्या है और हे देव तू वृथा चिंताकरने को योग्य नहीं है ऐसे विप्रथुके वचन को सुनके व बहुत कालतक रोदन करके २४ वाक्यको जाननेवाला श्रीकृष्ण बृहस्पतिजीकी तरह आप वचन कहनेलगा २५ कि हे विप्रथो चिंतासे आविष्टहुआ मैं इस कार्य्यको चिंतवन करताभया परन्तु इस कार्य्यकी गतिको मैं नहीं जानता भया और आपने बहुतसा मेरे अर्थ कहा भी परंतु मैंने कछुभी उत्तर नहीं किया २६ अब मैं सब यादवों के मध्यमें अर्थ वाली वाणीको कहता हूं सो हे यादवो जैसे मैं चिन्ता से अन्वित हूं तैसे तुम सुनो २७ जब अनिरुद्ध हरागया तब पृथ्वी में सब राजे हम सबों को असमर्थ मानेंगे २८ पहले शाल्वराजाने हमारा राजा उग्रसेन जब हरलियाथा तब हम सबोंने दारुण युद्धकर फिर लाके प्राप्तकिया २९ व जब बालक प्रद्युम्न शम्बरदैत्य ने हरलिया तब समयपै शम्बरको मार प्रद्युम्न यहां प्राप्तहुआ ३० परतु यह बडा कष्टहै कि अनिरुद्ध कहांगया ऐसा मैं नहीं स्मरण करसक्ता ३१ व जिसने भस्म से अवगुंठित किया पैर मेरे मस्तकपै प्राप्तकिया है तिसके मित्रों सहित जीवित को रणमें मैं हरूंगा ३२ ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुनके सात्यकि कहनेलगा कि हे कृष्ण अनिरुद्धको ढूढने के अर्थ ३३ पर्व्वत वन आदि मार्गों से व्याप्त पृथ्वी में चर अर्थात् चाकर भेजने चाहिये ३४ तब इसवचनको उत्तम मानि श्रीकृष्ण उग्रसेनसे कहनेलगे ३५ हे राजन् अभ्यन्तर चर और बाह्य चर अर्थात् मनुष्योंको ढूढने के वास्ते आज्ञादेनी चाहिये ३६ तब वैशम्पायन कहने लगे कि ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुनके वेगसे कहताहुआ उग्रसेन राजा अनिरुद्धके ढूढने के अर्थ मनुष्योंको शिक्षा देताभया ३७ पीछे राजाकी आज्ञाने निश्चित किये मनुष्य अश्वरथ ३८ ये सब अभ्यन्तर विधिने और बाह्यविधि ने ३९ अर्थात् कितनेक गुफाओंके और कितनेक मन्दराचल वेणुमान् तना वैदेवत्त सुसवान् इन पर्व्वतों में ४० अश्वों पै चढ़के मनुष्य अनिरुद्ध को ढूढो और एक एक उद्यान वन इन्हों में ढूढो और सब मनुष्य उद्यानोंमें गमनकरो ४१ और

हजारहों घोड़े और बहुतसे रथ इन्हों पै चढ़के जल्द अनिरुद्ध को ढूंढ़ो पीछे सेनापति अनाधृष्टि अक्लिष्ट कर्म्म करनेवाले श्रीकृष्ण से भयभीत होके वचन कहनेलगा ४२ हे कृष्ण मेरे वचनको सुनो जो मेरे रुचता है बहुतकालसे मैं तुम्हारे प्रति कहनेको होरहाहूं ४३ सो असिलोमा पुलोमा निसुन्द नरक शाल्व मैंद द्विविद ४४ हयग्रीव ये सब दैत्य और योद्धे देवताओंके अर्थ तुम्हीं ने मारे हैं और युद्धमें ये सबकर्म्म हे गोविन्द तुम्हींने किये हैं ४५ परन्तु कहीं भी तुम्हारी मदत किसी देवने नहींकरी ४६ पीछे तुम्हींने कल्पवृक्ष के हरने में दुष्कर कर्मकियाहै ४७ अर्थात् ऐरावतहस्ती पै चढ़ाहुआ इन्द्र तैंने अपनी बाहुके बलसे जीतलियाहै ४८ इसकरके तेरेसङ्ग इन्द्र वैर कररहाहै इसमें संशयनहीं ४९ सो आप इन्द्रनेआके अनिरुद्ध हरलियाहै और किसीकी शक्ति ऐसे कामकरनेकी नहींहै ५० ऐसे वचनको सुनके सर्पकी तरह श्वासलेतेहुये श्रीकृष्ण महाबलवाले अनाधृष्टि के अर्थ वचन कहतेभये ५१ हे सेनानी हे प्रिय ऐसा वचन तू मतकहै क्योंकि देवते क्षुद्रकर्म करनेवाले नहीं हैं और अकृतकर्मको करनेवाले भी देवते नहीं हैं और गर्वितभी देवते नहीं हैं व बालकोंकी तरह भी कर्मकरनेवाले देवते नहीं हैं ५२ व देवताओंके अर्थ दैत्योंको नाश करनेको मैंने बहुत यत्न किये हैं और देवताओंके प्यारके अर्थ गर्वित और महाबलवाले दैत्योंको मैं मारताहूं ५३ और देवताओं में तत्पर व देवताओं में मनवाला व देवताओं का भक्त व देवताओं के प्यारमें रत ऐसे मेरेको जानके कैसे देवते पापकरेंगे ५४ और क्षुद्रतासे रहित व सत्यवाले और नित्यप्रति भक्तों पै दयाकरनेवाले ऐसे देवताओंसे पाप नहीं होसक्ता तू बालकपनेसे ऐसे कहताहै ५५ और देवते व इन्द्रसे ऐसा कर्म्म नहीं बनसकता परन्तु यह मालूम होताहै कि किसी पुंश्चली स्त्रीने अनिरुद्धहरा है ५६ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे चिंतवन करनेवाले और अद्भुत कर्मवाले ऐसे श्रीकृष्णके वचनको सुन पीछे अक्रूर मधुर वाणीसे वचन कहनेलगा ५७ कि हे प्रभो जो इन्द्रका कार्य है सो निश्चय हमारा कार्य है ५८ और जो हमाराकार्य है सो निश्चय इन्द्रका कार्यहै और देवते हमारी रक्षाकरतेहैं और हम देवताओं की रक्षाकरते हैं ५९ व देवताओं के अर्थ हमोंने मनुष्यके शरीर धारणकिये हैं ६० ऐसे अक्रूर के वचनोंसे प्रेरित किया श्रीकृष्ण स्निग्ध और गम्भीरवाणी से फिर कहनेलगा ६१ कि देवते गन्धर्व यक्ष राक्षस इन्होंने हर्गिज अनिरुद्ध नहीं

हराहै किन्तु किसीपुंश्चली स्त्रीने हराहै ६२ अर्थात् मायासे विदग्ध और पुंश्चली ऐसी दैत्य और दानवकी स्त्रियें होती हैं तिन्होंने अनिरुद्ध हराहै अन्य नहींहर सक्ता ६३ वैशम्पायन कहनेलगा कि ऐसे जब श्रीकृष्ण ने वचन कहा ६४ तब तिसी समयमें देश देशान्तरों से आयेहुये चाकर सात्वके द्वारपै प्राप्तहोके शनैः शनैः गद्गदवाणी से यह वचन कहनेलगे ६५ कि सब उद्यान गुहापर्व्वत सभा नदी सर इन्होंमेंसे एक एक जगह तलाश कियागया परन्तु कहींभी अनिरुद्ध नहीं मिला ६६ व अन्य चाकर आके कहनेलगे कि हमोंने सब देश देशान्तर ढूंढ़लिया परन्तु कहींभी अनिरुद्ध नहीं दीखा ६७ हे यदुनन्दन जो अन्य कृतु विधान करने के योग्यहो अनिरुद्धको ढूंढने के अर्थ सो हमारे प्रति आज्ञा कीजिये ६८ तब दीनमनवाले व आशुओंसे आकुल नेत्रोंवाले ऐसे द्वारका वासी आपसमें कहनेलगे कि अब क्या करना उचितहै ६९ व कितनेक सदष्टरूप ओष्ठपुटोंवाले और कितनेक आशुओंमे व्याप्त नेत्रोंवाले और कितनेक भृकुटियों को चढ़ानेवाले ऐसे ये सब अर्थकी सिद्धिके अर्थ चिन्तवन करनेलगे ७० ऐसे चिन्तवन करनेवाले और बहुतसे अर्थोंको कहनेवाले ऐसे यादवोंके अनिरुद्ध कहागया यह महासभ्रम हुआ ७१ तब आपसमें देखनेवाले व प्राप्तहुआहै क्रोध जिन्होंके ऐसे और बिगड़गयाहै मन जिन्होंका ऐसे सब यादव कहनेलगे ७२ कि अनिरुद्ध हरागया अब कैसे हम इसरात्रिको व्यतीतकरें ७३ ऐसे कहतेहुये यादवों के प्रभात होगया तब नकारों के शब्दमे और शङ्खों के शब्द से ७४ श्रीकृष्णका प्रबोधन करतेभये ७५ जब प्रभातमें सूर्य प्रकटहुआ तब हँसतेहुये नारद यादवोंकी सभामें प्राप्तहुआ ७६ पीछे कृष्णके संग प्राप्तहुये सब यादवों को देखके नारदमुनि जय शब्द करके प्रथम श्रीकृष्णसे पूजाहुआ नारद फिर श्रीकृष्ण को पूजताभया ७७ पीछे बिगड़ाहुआ है मन जिसका और युद्ध में दुर्जय ऐसा श्रीकृष्ण अभ्युत्थानकर मधुपर्क और सुन्दर वाणी नारदके अर्थ देताभया ७८ पीछे सब प्रकारके आस्तरणोंसे सवृत्त और श्वेत आसन पै सुख पूर्व्वक और यथायोग्य नारदजी स्थितहो प्रयोजन सयुक्त वचन को कहनेलगे ७९ कि चिन्तामें व्याप्त और सभासे रहित और बिगड़ेहुये मनवाले और उत्साहसे हीन ऐसे सब यादव द्विजड़ों की तरह बैंगे बैठेहो ८० ऐसे नारदके वचन को सुन श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे भगवन् आप सुनिये ८१ हे प्रभन् रात्रि में

किसीने अनिरुद्ध को हरलिया तिसके अर्थ हम सब चिन्तासे युक्तहोरहे हैं ८२
जो यह वृत्तान्त तुम्होंने कहीं सुनाहो व कहीं अनिरुद्धको देखाहो तो हे भग
वन् आप कथनकीजिये वह आख्यान हमको अति प्रियहै ८३ ऐसे श्रीकृष्णके
वचनको सुन हँसतेहुये नारदमुनि कहनेलगे कि हे मधुसूदन आप श्रवण की-
जिये ८४ देवासुर युद्धके समान युद्ध बाणासुरके संग अनिरुद्धका हुआ ८५
और बलवाले बाणासुरके ऊषा नामवाली कन्याहै तिसकेअर्थ चित्ररेखा अप्सरा
अनिरुद्ध को हरके लेजाती भई ८६ तहां अनिरुद्ध और बाणासुरका आपसमें
दारुणरूप महायुद्ध हुआ जैसे किसी समय में बलि और इन्द्रका ८७ यह अ
द्भुतरूप युद्ध हमोंने भी देखा जब बाणासुर के वशमें अनिरुद्ध नहीं हुआ ८८
तब बाणासुर ने मायाकरके नागोंसे अनिरुद्ध को बांधलिया और मारनेको भी
चाहा ८९ परन्तु बाणासुरका कुभाण्डनामवाला मंत्री मारनेसे निवारण करता
भया ९० ऐसे मायाको प्राप्तहुये बाणासुर ने सर्पोंसे अनिरुद्ध बांधरक्खा है सो
तुम बहुत जल्द यशके अर्थ और विजयके अर्थ उत्थानकरो ९१ और जयकी
इच्छावालों में प्राणोंकी रक्षाके अर्थ यह काल उत्तम नहीं है और वह अनिरुद्ध
वीर बहुत पीड़ितहै परन्तु धैर्य्यतासे प्राणोंको बचारहाहै ९२ वैशम्पायन कहने
लगे ऐसे नारदजीके वचनोंको सुनके श्रीकृष्ण यात्रासम्बंधी सभारोंकी आज्ञा
देतेभये ९३ तब चन्दन और धानकीखील इन्हों को बखेरते हुये श्रीकृष्ण उस
सभासे निकसे ९४ तब नारदमुनि कहनेलगे कि हे माधव गरुडजीका स्मरण
करने को आपको योग्य है क्योंकि अन्यकरके वह मार्ग्ग गमन करनेके योग्य
नहीं है ९५ यहांसे ग्यारह हजार योजनदूर शोणितपुर है ९६ जहां अब अनि
रुद्ध स्थित है इसवास्ते मनके समान वेगवाला और महावीर्य और प्रतापवाला
ऐसा गरुडहै ९७ तिसको तू बुला हे गोविन्द वह तेरे को एक मुहूर्त्त में प्राप्तकर
बाणासुर को दिखावेगा ९८ वैशम्पायन कहनेलगे नारदजी के वचनको सुन
श्रीकृष्ण गरुडका स्मरण करनेलगे तब श्रीकृष्णके समीप में प्राप्तहो और अं-
जली बांधके गरुड़ स्थितहुआ ९९ और महाबलवाला गरुड श्रीकृष्णको नम
स्कारकर मधुरवाणीसे कहनेलगा १०० कि हे पद्मनाभ हे महाबाहो किसवास्ते मेरा
स्मरणकिया जो तुम्हारा कार्यहै तिसको मैं सुननेकी इच्छा करूंहूं १०१ और हे
प्रभो अपने पाखोंके परिक्षेपसे किसकी पुरीका नाशकरूं और हे गोविन्द तुम्हारे

प्रभाव से मेरेबल को कौन नहीं जानता है १०२ व तेरी गदाके वेग को और अग्निरूप चक्रको कौन नहीं जानके मूढात्मा गर्व से नाशको प्राप्तहोवेगा१०३ व सिंहकेसमान मुखवाले हलको बलदेवजी किसकेअर्थ नियुक्त करेंगे और निर्भिन्न किया किसका देह पृथ्वी में प्राप्त नहीं होवेगा १०४ व शङ्ख के शब्दोंकरके किसके प्राणोंको मोहित करोगे और अपने कुटम्बकरके सहित कौन धर्मराज के लोकको प्राप्तहोवेगा १०५ ऐसे जब गरुडने वचनकहे तब श्रीकृष्ण कहने लागे हे कहनेवालों में श्रेष्ठ तू सुन १०६ बलिके पुत्र बाणासुरने अपराजितरूप अनिरुद्ध शोणितपुरमें ऊषाके अर्थ बांधाहै १०७ अर्थात् कामसे पीडित अनिरुद्धको अधिक विषवाले सर्प्पों से बांधरक्खाहै सो हे पतगेश्वर तिसको छुटाने के अर्थ मैंने तेरा आह्वानकियाहै १०८ तेरेसमान वेगमें कोईभी नहीं है और पक्षियों में उत्तम तू है और अन्य किसीसे वह मार्ग गमनकरनेको अशक्यहै इसवास्ते हे काश्यप १०९ जहां अनिरुद्ध बसैहै तहां तू मेरेको बहुतजल्द प्राप्तकर और हे वीर यह तेरे पुत्रकी वधू व अपने पुत्रसे मिलनेकी इच्छावाली ऐसी प्रद्युम्नकी स्त्री वैदर्भी रोवती है ११० तेरे प्रसादसे यह पुत्रवाली होवेगी और हे पन्नगनाशन तैंने पहले अमृत हरलियाहै १११ व मेरे संग समागमकर तिसकालमें तू मेरा ध्वज होताभयाहै और ये सब वृष्णिवंशके मनुष्य तेरे भक्तहैं हे पतगेश्वर ११२ तू मेरी मित्रता और भक्तिको अवमान तेरे वेगके समान कोई भी नहीं है और अन्य पक्षीभी तेरे समान नहीं है इसवास्ते हे सुपर्ण सुकृतकरके मैं तेरेको कहता हूं ११३ व दासी भावको प्राप्तहुई माता तैंने अकेले पहले छुटाई है और क्षेप और विक्षेपको आश्रितहोके पहले तैंने पीडा भी नाशी है ११४ व सब देवताओं के गणोंको अपने पृष्ठभागपै प्राप्तकर मेरे अगमरूप देशों को प्राप्तहो और तेरे आश्रयसे विजयहै ११५ व भारेपनमे तू मेरुपर्वत के समानहै और हलकेपनेसे तू वायुके समानहै और पराक्रममें तेरे तुल्य तीनोंकालों में कोई भी नहीं है ११६ इसवास्ते हे सत्यसन्ध हे महाभाग हे वैनतेय हे महाकीर्त्तिवाले अनिरुद्ध के देखने के अर्थ अब मेरी सहायता कर ११७ गरुडजी कहनेलगे हे कृष्ण हे महाभुज तुम्हारे वाक्य अति अद्भुत हैं और हे महाभुज तुम्हारे प्रसाद से सबजगत् विजय होताहै ११८ व हे मधुसूदन तुम्हारे स्तुति करने से मैं धन्यहूं और अनुगृहीतहूं और मेरे करके तुम स्तुति करने के योग्यहो और हे महाभुज

तुम मेरी स्तुति कैसे करतेहो ११६ व वेदों के अध्यक्ष और देवताओं के अध्य
व सब कामनाओं को देनेवाले और अमोघ दर्शनवाले व वरकी इच्छावाले
को वरके देनेवाले ऐसे तुम हो १२० और चार भुजाओंवाले और चारमूर्ति
वाले व चारप्रकारके यज्ञ सम्बन्धी कर्मोंवाले और चार आश्रमोंवाले और होत
और चार पुरुषार्थों का नेता और महाकवि १२१ और धनुष व चक्र शङ्ख इन्ह
को धारण करनेवाले ऐसे तुमहो व हे प्रभो पहले देहों में भूमिको धारण करने
वाले भी तुम्हींहो १२२ और लागली मुसली चक्री इन नामोंवाले और चाणूर
दैत्यको मथनेवाले और गायों से प्यार करनेवाले और कंसको मारनेवाले ऐसे
तुमहीं हो १२३ व गोवर्द्धनको धारण करनेवाले व मल्लों के शत्रु व मल्लभाव
मल्लप्रिय महामल्ल महापुरुष इन नामोंवाले १२४ व ब्राह्मणों से प्यार करनेवाले
और ब्राह्मणों पै हित करनेवाले और ब्राह्मणों को जाननेवाले और विप्रभाव
ब्रह्मण्य वरेण्य दामोदर इन नामोंवाले १२५ और प्रलम्ब को मथनेवाले और
केशीको मारनेवाले १२६ और अशिलोमा दैत्य को मारनेवाले ऐसे भी तुम्हीं
हो और रावणको नाशनेवाले और विभीषणको राज्य देनेवाले और वालिको
नाशनेवाले १२७ और सुग्रीव को राज्य देनेवाले और बलिराजा के राज्य को
हरनेवाले और रत्नोंको हरनेवाले और महारत्न १२८ और धन्वंतरी और ब्रह्मण्य
ऐसे भी तुम्हींहो और खड्गको धारण करनेवाले और शार्ङ्गधनुष को धारण क
रनेवाले १२९ व दाशार्ह नामसे विख्यात और महाधन्वा व धनु प्रिय गोविन्द
इन नामोंवाले और समुद्र ऐसे भी तुम्हींहो १३० और आकाश और तप और
समुद्र को मथनेवाले ऐसे भी तुम्हींहो और स्वर्ग और बहुत फलदेनेवाले और
स्वर्गमें विचरनेवाले १३१ और महामेव और बीजकी निष्पत्ति और त्रिलोकी
में गमन करनेवाले और क्रोध लोभ रूप मनोरथवाले १३२ और कामना को
देनेवाले और कामरूप और सब प्रकारके धनुषोंको धारण करनेवाले व प्रलय
और निलय और महान् ऐसे तुम्हींहो १३३ व हिरण्यगर्भ रूपको जाननेवाला
और रूपवाला और मधुसूदन और ईश और असंख्येय गुणों से अन्वित ऐसे
भी तुम्हींहो १३४ और हे देव स्तुतिके योग्य तुमहो और मेरेको स्तुति करनेकी
इच्छा करतेहो और जो तैंने नेत्रोंसे घोररूप प्राणी देखे हैं १३५ वे सब यमदण्ड
करके हतहुये तिरछे प्रकार से नरकमें गमन करते हैं और जिन्हों को तुम प्रीति

से देखतेहो १३६ वे इसलोक से मरके स्वर्गमें गमन करते हैं व हे महावाहो में तेरे वशमें और आज्ञामें स्थितहू १३७ तब जयजय शब्दकरके गरुड श्रीकृष्णसे कहनेलगा हे महाबल मैं यहा स्थितहुआ तू मेरे पै सवारहो १३८ तव श्रीकृष्ण गरुडजी के कण्ठमें वाहुडाल मिलापकर कहनेलगे हे मित्र शत्रुओं के नाशके अर्थ यह अर्घ ग्रहण कीजिये १३९ ऐसे अर्घ देके शङ्ख चक्र गदा तलवार इन्होंको धारण करनेवाले श्रीकृष्ण गरुडजीपै चढ़तेभये १४० व कृष्ण के पास में आनन्द से वलदेवजी भी स्थितहुये व सबोंको जीतनेवाले व कृष्ण वर्णवाले १४१ व चारदष्ट्रावाले व चार वाहुओंवाले व चार वेद व छ अगों के जाननेवाले व श्रीवत्स से अङ्कित व कमल के समान नेत्रोंवाले व ऊर्ध्वगत रोमोंवाले व कोमल त्वचावाले १४२ व समान अंगुलियोंवाले व समान नखों वाले व अगुली व नखोंके लाल अन्तरवाले स्निग्ध व गम्भीर ऐसा शब्दवाले उत्तम भुजावाले १४३ व गोडोंतक भुजावाले तांवेके समान मुखवाले व सिंह के समान स्पष्ट विक्रमवाले और हजार सूर्य्योंके समान प्रकाशित १४४ व निःश्वात्मा व भूतोंके भावन व जिसको आठप्रकार का ऐश्वर्य्य प्रसन्नहुये ब्रह्माजी देतेभये ऐसे १४५ व प्रजापति साध्य देवते इन्होंके ऐश्वर्य्यकोभी प्राप्तहोनेवाले व सूत मागध वन्दी १४६ वेद वेदाङ्गको जाननेवाले ऋषि इन्हों से यथायोग्य रूपवान् ऐसे श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी की रक्षाके वास्ते आज्ञा देके १४७ गमनके अर्थ मति करतेभये प्रथम गरुड़पै श्रीकृष्ण स्थितहुये तिसके पीछे वलदेव जी भी स्थितहुये १४८ औरके पीछे शत्रुओं को जीतनेवाला प्रद्युम्न स्थित हुआ व हे महावाहो युद्धमें वाणासुर को जीत १४९ तेरे सम्मुख युद्धमें कोईभी स्थित होनेको समर्थ नहीं है व तेरे प्रसादसे स्थित निश्चय लक्ष्मी है व तेरे पराक्रमसे विजयहै १५० इसवास्ते सेना सहित वाणासुर दैत्येन्द्र को युद्धमें तू जीतेगा व सिद्ध चारण महर्षि इन्होंकी ऐसी वाणियों को १५१ श्रवण करतेहुये श्रीकृष्ण गमन करतेभये १५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वणिभाषायांकृष्णप्रयाणंनामाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८० ॥

एकसौ इक्यासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे नगारों के शब्दोंसे व शङ्खोंके महा शब्दों से

व वन्दी मागध सूत इन्होंकी स्तुतिसे १ व मनुष्यों के जप व आशीर्वादसे रू
पवान् श्रीकृष्ण चन्द्रमा सूर्य्य शुक्र इन्होंके समान रूपको धारण करतेभये २
गरुडजी के उडने से व श्रीकृष्णके तेजसे सहित ऐसा आकाश अति शोभित
होनेलगा ३ व आठ बाहुओंवाला व पर्वतके आकार कान्तिवाला व कमलके
समान नेत्रोंवाला व वाणासुर के संग युद्ध की आकांक्षावाला ऐसा श्रीकृष्ण
भी शोभित होनेलगा ४ व तलवार चक्र गदा वाण ये सब श्रीकृष्ण ने अपनी
दाहिनी तर्फ स्थितकिये व कवच शार्ङ्ग धनुष व साधारण धनुषव शङ्ख ये वायें
तर्फ स्थितकिये ५ व श्रीकृष्णने हजार शिर धारणकिये ६ वलदेवजी ने हजार
शरीर धारण किये ७ व प्रद्युम्नजी ने सनत्कुमार का शरीर धारण किया ८ व
ऐसे जब पाखों के वलके विक्षेपों से वहुतसे पर्व्वतों को कँपाताहुआ गरुड ग-
मन करनेलगा व पीछे पवनकी गतिको प्राप्तहो गरुड गमन करनेलगा ९ तब
सिद्ध चारण इन आदिके मार्गको उल्लघन करताभया १० पीछे वलदेवजी क-
हनेलगे हे कृष्ण अपनी कान्तिसे हीन हम कैसे होगये ११ सब हम सोना के
समान कान्तिवाले होगये हैं क्या हम सुमेरु पर्वत के समीपमें प्राप्त भये यह तू
वर्णन कर १२ जब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे अरिन्दम वाणासुरके नगर के
समीप में हम आगये हैं तिस की रक्षाके वास्ते प्रकाशमान स्थित हुआ यह
अग्नि निकसा है१३ व आह्वनीय जो यह अग्नि है इसकी कान्ति से हम सब
दग्ध होते हैं इसकरके हमारे वर्ण विगडगये हैं १४ तब वलदेव जी कहनेलगे
कि वाणासुर की पुरीके समीपमें आगये हैं व अपनी कान्तिसे रहित होगये हैं
तो जो कुछ यहां हितहो वह करना चाहिये १५ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे
गरुड यहां जैसे होना उचित है वह कार्य्य तू कर जब तू विधान करलेगा तब
उत्तमकार्य्य मैं करूंगा १६ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे श्रीकृष्णके वचनको सुन
महाबलवाले गरुडजी हजारमुखों को धारण करतेभये १७ तब जल्द गंगाजी
में प्राप्तहो अर्थात् आकाश गंगामें स्नानकर और वहुत से जलका पानकर
१८ आकाश में स्थितहुआ तिसजलकी वर्षा करनेलगा ऐसे अग्नि गरुडजी
ने शांतकिया १९ ऐसे आकाश गंगाके जलसे शांतहुआ हवनीय अग्निको
देखके २० आश्चर्य्य को प्राप्तहुआ गरुड कहनेलगा कि प्रलयकाल में यही
अग्निदग्ध करताहै २१ परन्तु कृष्ण वलदेव प्रद्युम्न ये तीनों तीनलोकों को भी

दग्ध करनेको समर्थ हैं. २२ पीछे जब अग्नि शान्तहोगया तब गरुडजी अपनी पाक्ववेगके विक्षेपसे महाशब्दको करताहुआ चला २३ पीछे नानाप्रकार के रूपोंको धारण करनेवाले इन तीनोंको देखके महादेव के अनुचर अग्नि कहनेलगे २४ कि किसवास्ते ये तीनों इस जगह प्राप्तहुये हैं और कौन येहैं और निश्चयको वे अग्निनहीं प्राप्तहुये २५ तब तीनोंयादवोंके संग संग्राम प्रवृत्तहुआ जब युद्धहोनेलगा तब महाशब्द प्रकटहुआ २६ तिस शब्दको सुनके अंगिरा नामवाला अग्नि अपने पुरुषको भेजनेलगा २७ कि जहा यह युद्धहोताहै तहा तू गमनकर देर मतकर २८ और देखके तू यहा जल्दआके प्राप्तहो ऐसे कहा हुआ वह पुरुष वेगसेजाके युद्धको देख कहनेलगा कि सब अग्नियोंका श्रीकृष्णके संग युद्धहोरहाहै २९ अर्थात कल्माष कुसुम दहन शोषण तपन इननामों वाले पाचअग्नि ३० स्वाहाकारके विषयमें विख्यात स्थित होरहेहैं ३१ और पिठर पतंग स्वर्ण स्वगाध भ्राज ये स्वधाकारके आश्रितहुये पाचअग्नि अपनी अपनी सेनाओं को लिये युद्ध कररहेहैं ३२ व ज्योतिष्टोम व विभाग इननामों वाले और वषट्कारके आश्रितहुये दोनोंअग्नि युद्ध कररहेहैं ३३ ऐसे भेजेहुये पुरुष के वचनको सुन अग्निरूप रथमें स्थितहो और प्रकाशितरूप बाणको उठा ज्योतिष्टोम और विभाग इनदोनों अग्नियों के मध्यमें अंगिरा अग्निभी आके प्राप्तहुआ ३४ तब पैनेबाणोंको छोडताहुआ अंगिरा अग्निसे क्रोधको प्राप्तहुआ श्रीकृष्ण विस्मय करानेकी तरह वारम्बार कहनेलगा ३५ कि सब अग्नि यहां स्थितरहो अब मैं तुम्हारेको भयदेताहूं मेरे अस्त्रके तेजसे दग्धहुये तुम दिशा व विदिशामें भागकेजाओगे ३६ तब प्रकाशित त्रिशूलको हाथमें धारणकरनेवाला व क्रोधसे कृष्णके प्राणोंको हरनेवाला ऐसा अंगिराअग्नि वेगसे युद्धमें श्रीकृष्णके सम्मुख भागा ३७ तब अर्द्धचन्द्र व पैने व सूर्य व अग्निकेसमान कान्तिवाले ऐसे बाणोंसे कृष्ण अंगिरा अग्निके प्रकाशितरूप त्रिशूलको काटके ३८ पीछे स्वर्णवर्ण रूप और प्रकाशित ऐसे बाण करके अंगिराअग्निकी छातीको वेधते भये ३९ तब लोहूके समूहसे भीजेहुये गात्रों करके विरूप अंगोंवाला अंगिरा अग्नि विह्वलकी तरह वेगसे पृथ्वी में पड़ा ४० और शेष सब अग्नि और चारों ब्रह्माके पुत्र रूप अग्नि तब युद्धसे भागके बाणासुर के पुरमें जाके प्राप्तहुये ४१ पीछे जहा बाणासुरका पुरथा तहा श्रीकृष्णभी आके प्राप्तभये पीछे बाणासुरके

पुरको देख दूरसे नारदमुनि बोला ४२ कि हे महाभुज यह शोणितपुरहै जिसको
तू देख यहा महातेजवाला महादेव पार्वतीके संग वसताहै ४३ और इस बाणा
सुरकी रक्षाके अर्थ निरन्तरस्वामिकार्तिकभी वसताहै ऐसे नारदके वचनकोसुनके
श्रीकृष्ण कहनेलगे ४४ कि एक क्षण चिन्तवनकरो परन्तु हे महामुने सुन जो
बाणासुरकी रक्षाके अर्थ महादेवजी आवैंगे तो ४५ अपनी शक्तिके अनुसार हम
भी महादेवजीके संग युद्धकरैंगे ऐसे कृष्ण और नारदके कहतेहुये ४६ बाणासुर
के पुर पर आयपहुँचे तब अपने शङ्खको मुखमें धारणकर श्रीकृष्ण बजाके ४७
व दैत्यों को भयकी उत्पत्ति करके अद्भुतकर्म्म करनेवाले ४८ बाणासुरके पुरमें
प्रवेश करतेभये तहा शङ्खके शब्द और नकारों के शब्द तिन्होंकरके ४९ अ-
नेक प्रकारके शब्द होरहे हैं और तहा भयसे युद्धमें किंकरोंकी सेनाको आज्ञा
दीगई है ५० और बहुत से किरोड़हा दीप्त प्रहारोंवाले योद्धाखडे हैं व संख्यासे
रहित और बडे बड़े बद्दलोंके समान कांतिवाले ५१ और नीलेपर्व्वतके समान
और अविनाशी व अप्रमेय और दीप्त प्रहारोंवाले ऐसे दैत्य दानव राक्षस ५२
प्रमाथगण ये श्रीकृष्ण से युद्धकरनेलगे और चारोंतरफसे प्रकाशित मुखोंवाले
यक्षराक्षस किन्नर लतावाली अग्नियों की तरह होके ५३ कृष्णआदि चारों के
रुधिरको पीनेकेअर्थ युद्धमें स्थितहुये तब महाबलवाले बलदेवजी कहनेलगे कि
हे कृष्ण हमारे बलका नाशहोताहै ५४ इसको तू देख हे कृष्ण हे कृष्ण हे महा-
बाहो इन्हों को तू बड़ाभय प्राप्तकर ऐसे बलदेवजीने प्रेरित किया श्रीकृष्ण ५५
तिन्हों के नाशकेअर्थ आग्नेय अस्त्रको ग्रहणकर ५६ जहा जहा वह सेनादीखे
तहां तहा वेगसे छोड़नेलगा ५७ अर्थात् शूल पट्टिश शक्ति रिष्टि धनुष परिघ
इन्हों से युक्त ५८ व प्रमाथों के गणों से विशेषकरके युक्त ऐसी सेना पृथ्वी में
पड़नेलगी पीछे पर्वत और मेघकेसमान कांतिवाले ५९ व नानाप्रकारके रूपों-
वाले और भयानक ऐसे वाहनों पै स्थितहुये बहुतसे योद्धा युद्धमें प्राप्तहोनेलगे
६० तब वायुसे फेंकेहुये बद्दलों की तरह और दृढधनुष ६१ मूसल तलवार गदा
परिघ इन्होंकरके पीड़ादेनवाले स्थित होनेलगे ६२ जब ऐसी सेना को देखके
बलदेवजी श्रीकृष्णसे कहनेलगे ६३ हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो यह जो सेना
दीखती है इसकेसग युद्धकरने को मैं इच्छाकरताहूं ६४ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे
कि हे प्रिय इन योद्धाओं के संग युद्ध करनेकी मेरी इच्छाहै ६५ सो युद्धकरने

के वक्र पूर्वको मुखकरनेवाले मेरे अगाडी गरुडजी रहेगा और बायेंतरफ प्रद्युम्न स्थित रहेगा और दाहनेतरफ आपस्थितरहो ६६ ऐसे आपसमें इस घोरयुद्ध में रक्षाकरो ६७ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे आपस में कहतेहुये गदा मूसल हल इन्होंकरके युद्धकरनेवाला ६८ बलदेवजीका भयानकरूप हुआ जैसे प्रलयकाल में सब प्राणियोंको दग्धकरनेवाले कालका ६९ पीछे हलसे सेनाको खैंच और मूसलसे मार मार युद्धमार्ग में चतुर बलदेवजी विचरनेलगा ७० और युद्धकरते हुये दैत्योंको महाबलवाला प्रद्युम्न बाणोंसे चारोंतरफ बींधनेलगा ७१ व स्निग्ध अंजनके समान कांतिवाला और शंख चक्र गदा इन्हों को धारण करनेवाला ऐसा श्रीकृष्ण बहुत प्रकारसे शंखको बजाके युद्धकरनेलगा ७२ व गरुडजीने अपने पाखोंके प्रहारसे और नख और मुखसे दारितकिये बहुतसे योद्धा धर्मराज के पुरमें प्राप्तकरदिये ७३ तिन्होंकरके हन्यमान दैत्योंकीसेना बाणोंकी वर्षा से मरनेलगी ७४ जब सेना मरनेलगी तब रक्षाकरनेके अर्थ तीन पैरोंवाला व तीन शिरोंवाला व छः भुजाओंवाला व नौ नेत्रोंवाला ७५ व भस्म का प्रहारकरनेवाला व भयानक व काल प्रभुके समान उपमावाला व हजार मेघों के समान शब्द करनेवाला ७६ व ऊंचे श्वास लेनेवाला व जभाई लेनेवाला व अति निद्रासे अन्वितशरीरवाला और नेत्रों से आकुलरूप मुखको वारम्बार करनेवाला ७७ व वारम्बार भ्रमणेवाला व सहृष्टरूप रोमोंवाला व ग्लानरूप नेत्रोंवाला व भग्नचित्तकी तरह श्वास लेनेवाला व क्रोध को प्राप्तहुआ ऐसा ज्वर बलदेव जी से साक्षेप वचन कहनेलगा ७८ कि ऐसा बलसे मत्तहुआहै कि युद्धमें मेरेको नहीं देखता स्थितहो स्थितहो इसयुद्ध में मेरे से तू जीवता नहीं छूटेगा ७९ ऐसे कहके हँसताहुआ और प्रलयकालकी अग्निकेसमान घोररूप भयको जनाता हुआ ऐसा ज्वर बलदेवके सम्मुखभया ८० व युद्धमें हजारहा प्रकारके मंडलों को करनेवाले बलदेवजी के समीपमें प्राप्तभया और अतिबलवाले ज्वरने बलदेवजी के शरीरपै ८१ भस्मका प्रहारकिया तब शीघ्रतासे पर्वतके समान शरीर वाले बलदेवजीकी छाती पै भस्मपडा ८२ सो तिसकी छातीसे वह भस्म मेरुके शिखरतक प्राप्तहुआ व प्रकाशितहुआ पर्वतके शिखरको दारण करताभया ८३ व शेष भस्मसे बलदेवजी जलनेलगे तब भग्नहुये व मूर्च्छितहुये बलदेवजी ८४ श्रीकृष्ण से कहनेलगे हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो मैं जलताहूं मेरेको अभय

दो ८५ व हे प्रिय मैं चारोंतरफ से दग्ध होताहूं कैसे मेरी शांतिहोगी ऐसे व
देवजी के वचन को सुनके प्रहार करनेवालों में ८६ उत्तमरूप श्रीकृष्ण हां
वचन कहने लगा कि हे प्रिय डरेमत भयमतमाने ऐसे कहके बलदेवजी से
कृष्ण कोलीभरके मिलनेलगे ८७ तब स्नेह से बलदेवजी का दाह शांतहु
ऐसे बलदेवजी को दाहसे छुटाके ८८ क्रोधको प्राप्तहुये श्रीकृष्ण ज्वरसे कह
लगे कि हे ज्वर तू यहाआ व जो तेरे में शक्तिहोतो अपनी शक्ति के अनुस
मेरेसे युद्धकर ८९ व जो तेरा पौरुषहो वह भी मेरे अर्थदिखा ऐसे दाहने औ
बायें दोनोंभुजाओंको फरकाके श्रीकृष्ण कहनेलगा ९० तब महा बलवाला
ज्वाला गर्भरूप भस्म को श्रीकृष्ण के ऊपर गेरताभया तब एक मुहूर्त तक
श्रीकृष्णका शरीर जलके ९१ पीछे अग्नी शान्तहुआ जब अग्नि शान्तहुअ
तब सर्पोंके आकारवाले बाहुओंसे ९२ ज्वरने एकमुक्का श्रीकृष्णकी ग्रीवापैमा
९३ व श्रीकृष्ण ने ज्वरकी छातीमें एक मुक्कामारा ऐसे दोनों सिंहरूप पुरुषों
प्रहारहुआ ९४ पीछे आपस में प्रहार करने से पर्वतमें पड़तेहुये वज्र के समा
शब्द होनेलगा तब दोनों के मुक्कों के घातों से उग्रयुद्ध होनेलगा व ऐसे प्रह
करना नहीं उचितहै ऐसे कहतेहुये ९५ दोनों का आपसमें एक मुहूर्त्तक यु
हुआ पीछे आकाशमें विचरनेवाले ज्वरको तिस युद्धमें सोनाके विचित्र भूषण
से भूषित भुजासे जगत्का क्षय करनेवाले व शरीरको धारण करनेवाले ऐसे
ईश्वररूप श्रीकृष्ण तिस ज्वरको पीड़ित करतेभये ९६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकृष्णज्वरयुद्धेणकाशीतयधिकशततोऽध्यायः १८१

एकसौबयासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे मृतप्रायज्वरको जानके शत्रुओंको सूदनकरने
वाला श्रीकृष्ण हाथों के बलसे ज्वरको पृथ्वी में फेंकनेलगा १ तब छूटे हैं गा
जिसके ऐसा ज्वर अति बलवाले श्रीकृष्णके शरीरमें प्रवेश करगया २ तब अति
बलवाले ज्वर से आविष्टहुआ श्रीकृष्ण वारम्वार चलायमान होतेहुये की तरह
पृथ्वीमें अत्यन्त भ्रमनेलगा ३ कभी जभाईलेवे कभी स्वासलेवे कभी बुरी चेष्टा
करे व कभी रोमावली खड़ाहोके निद्रासे व्याप्तहोवे ऐसे विकारों को प्राप्तहुआ
४ व वारम्वार जंभाईको लेताहुआ श्रीकृष्ण ५ ज्वरसे अभिभूत आपेको जान

के पूर्वज्वरका नाश करनेवाला ६ व घोर व वैष्णव तेजसे रचाहुआ व अतिउग्र व सब प्राणियों को भय देनेवाला व भीम पराक्रमवाला ऐसे ज्वरको श्रीकृष्ण रचताभया ७ पीछे श्रीकृष्णसे रचाहुआ ज्वर तिस पूर्व्वोक्त ज्वरको अपने बलसे ग्रहणकर श्रीकृष्ण के अर्थ देताभया पीछे तिसको श्रीकृष्ण ग्रहण करतेभये ८ अर्थात् महाबलवाले और अति क्रोधको प्राप्त होनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण अपने शरीर से तिस पूर्वोक्त ज्वरको अपने ज्वरके सङ्ग निकालतेभये ९ व तिस पूर्वोक्त ज्वरको पकड़ के पृथ्वीमें सौ १०० टुकडे करने को श्रीकृष्ण उद्यतहुये तब ज्वर कहनेलगा कि हे भगवन् तुम मेरी रक्षा करने के योग्यहो १० व जब श्रीकृष्ण ने तिस ज्वरको कडा पकडा तब शरीर से रहित आकाशवाणी बोली ११ कि हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे यादवों को आनन्दके देनेवाले इस ज्वरको तुम मत मारो हे अनघ तेरे को यह रक्षा करने के योग्यहै १२ ऐसे आकाशवाणी को सुनके त्रिकालको जाननेवाले व जगत्के गुरु ऐसे श्रीकृष्ण ज्वरको छोडते भये १३ तब कृष्णके चरणारविंदों में मस्तकसे नमस्कारकर शरणागतहो ज्वर कहनेलगा १४ हे गोविन्द मेरे वचन को सुन व कछु आज्ञाकर और जो मेरा मनोरथहै तिसको हे देव तू कर १५ व हे तात मैं एक ज्वरहू व इसलोक में दूसरा ज्वर न रहे तेरे प्रसाद से हे देवेश यह वरमागताहूं १६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे हे ज्वर जो तू चाहताहै सो तेरा मनोरथ पूर्णहोगा क्योंकि मैं वर मागनेवालों को वरदेताहू व तू तो मेरी शरणहोगया १७ इसवास्ते एकही पहले के तरह तू ज्वररह व मेरा रचाहुआ जो ज्वरहै व मेरेही विषे लीनहोजाओ १८ वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे ज्वरके अर्थ वचन कहके महा यशवाले व प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ ऐसे श्रीकृष्ण फिर वचन कहनेलगे १९ कि हे ज्वर मेरी शिक्षाको सुन जैसे तू इसलोक में विचरेगा और सब जातियों में व स्थावरजगम में विश्राम कर २० अर्थात् जो मेरे प्यारकी इच्छाकरै है तो अपनी आत्माके तीन विभाग कर एक भाग से चौपायों को और दूसरे भाग से स्थावरों को पीड़ित कर २१ और तीसरे भागसे मनुष्योंको पीडितकर और तीसरे भागके चौथे हिस्सेकरके पक्षियों को पीड़ित कर २२ व एकान्तर तृतीयक चातुर्थीक इन भेदोंसे विभाग कर २३ मनुष्यों में बस व सब जातियों में बसनेके योग्यहै सो तू सुन २४ वृक्षों में कीटरूपकरके तथा सकुचित पत्तोंवाला तथा पीलेरगके पत्तोंवाला ऐसा होके

तू वस और फलों में एक प्रदेश गतजालसे संकोचित हुआ तू वस २५ और
जलमें तू काईरूप होके वस और मयूरके शरीर में शिखाके दुभेदरूप करके तू
वस और कमलिनी में हेमरूप होके तू वस और पृथ्वी में ऊपररूपहोके वस २६
और पर्वतों में गेरू रूपहोके तू वस और गायों में अपस्मारक और खुरोंकारोग
होके तू वस २७ ऐसे तू बहुतरूपों करके पृथ्वीतलमें मेरे प्रसादसे होवेगा व तू
दर्शनसे व स्पर्शनसे प्राणियोंको मारेगा २८ व देव व मनुष्योंके बिना तेरेको
अन्य कोई नहीं सहसकेगा २९ वैशम्पायन कहनेलगे कृष्णके वचनको सुनके
प्रसन्नहुआ ३० ज्वर नमस्कारकर व अजलिको बाँध कछुक कहने लगा कि हे
माधव सब जातिका स्वामी मुझको तुमने किया इससे मेरेको धन्य है ३१ सो
हे पुरुषोत्तम फिर तेरे वचनको करने की मेरी इच्छा है हे गोविन्द इसवास्ते मेरे
को आज्ञादे मैं क्याकरू ३२ व दैत्योंके कुलको नाशने वाले व त्रिपुरासुर को
मारनेवाले ऐसे महादेवजीने मुझे रचाया व युद्धमें तैने जीतलिया इसवास्ते तू
मेरा स्वामी है और मैं तेरा किङ्करहूं ३३ व मैं धन्यहूं व अनुगृहीतहू व जो तैने
मेरेसे प्यारकिया है इसवास्ते हे चक्रायुध मेरेको आज्ञादे जो तेरेको प्रियहो सो
मैं करूं ३४ वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे ज्वरके वचनको सुनके श्रीकृष्ण क-
हनेलगे कि जो मेरेसे प्यार चाहताहै तो मेरे कहनेको कर ३५ श्रीकृष्ण कहने
लगे कि जो मनुष्य महा युद्धमें जो तेरा व इस पराक्रमरूप आख्यानको पढ़ेगा
व मेरे को एकान्त में मनकरके नमस्कार करके वह मनुष्य ज्वरसे छूटजावेगा
३६ व तीन पैरोंवाला व भस्मरूप प्रहार करनेवाला व तीन शिरोंवाला व नौने-
त्रोंवाला व सब रोगोंका पति ऐसा ज्वर प्रसन्नहुआ मेरे अर्थ सुखदेओ ३७ व
आद्यतवाले व कवि व पुराण व सूक्ष्म व बडे व शिक्षा देनेवाले ऐसे अनिरुद्ध
प्रद्युम्न बलदेव श्रीकृष्ण ३८ ये चारों मेरे ज्वरों का नाशकरो ऐसे जो मनुष्य
प्रार्थना करेगा उसकेभी ज्वर दूरहोजाना चाहिये ३९ वैशम्पायन कहनेलगे कि
ऐसे महात्मारूप श्रीकृष्णने ज्वरसे कहा तब ज्वर श्रीकृष्ण के अर्थ कहनेलगा
कि महाराज ऐसेही होजावेगा ४० ऐसे श्रीकृष्ण से वरको प्राप्तहो और प्रतिज्ञा
को कर व श्रीकृष्ण को शिरसे नमस्कारकर और प्रसन्नहुआ ज्वर तिस युद्धसे
भागताभया ४१ । ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांज्वरकृष्णसंवादेद्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८२

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे वे तीनों अग्निके समान प्रकाशितहुये गरुड़जीपै चढ़के रणमें युद्धकरतेभये १ तब बाणोंकी वर्षासे सब सेनाओंको पीड़ित करतेहुये और अतिशब्द करतेहुये शोभितहोनेलगे २ पीछे चक्रहल वायुबाणों कीवर्षा इन्होंसे पीड़ितहुई दैत्योंकी सेनाको पकरनेलगी ३ तब जैसे सूखेकाष्ठमें अग्नि पड़तेही बढके प्रकाशकरती है तैसे श्रीकृष्णके बाणोंसे उपजाहुआ अग्निबढ़के ४ प्रलयकी अग्नि के समान युद्धमें दैत्यों की सेनाको दग्धकरता हुआ शोभितहोनेलगा ५ ऐसे नानाप्रकारके प्रहारोंसे पीडित और जलतीहुई ऐसी सेनाको प्राप्तहो बाणासुर भागतेहुयोंके प्रति वचन कहनेलगा ६ इसलाघवको प्राप्तहोके भयसे निकृष्ट व दैत्यवशमें उत्पन्न होनेवाले ऐसे तुम इस महा युद्धसे कैसे भागतेहो ७ व कवच तलवार गदा प्राश ढाल फरसा इन्होंको त्याग त्यागके आकाशचारी भी होके कैसे तुम भागतेहो ८ व अपना वास व अपनी जाती और महादेवजी का ससर्ग इन्होंके माननेवालों को भागना उचित नहीं है अबमें युद्धमें स्थितहूं ९ ऐसे बाणासुरके वचनको सुनके भयसे मोहित दैत्य फिर उलटे युद्धमें प्राप्तहोतेभये १० व प्रमाथ गणोंकी सेना स्थितरही और जो उन्होंमें अवशेष रहा सोई युद्धके अर्थ मन करताभया ११ व बाणासुर का मित्र व मन्त्री व अतिवीर्यवाला ऐसा कुभाड अपनी सेनाको कटतीहुई देख यह वचन कहनेलगा कि युद्धमें यह बाणासुर स्थितहोरहाहै और ये महादेवजी स्थित होरहे हैं व ये स्वामिकार्त्तिकजी स्थितहोरहेहैं सो बलको त्याग मोहितहुये तुम कहां जातेहो १२ ऐसे कुभाडके वचनको सुनतेहुये और भयसे विह्वलहुये बहुत से दैत्य दशोंदिशाओं को एकान्त में प्राप्तहुये १३ ऐसे कृष्णके सकाश से कटतीहुई सेनाको देख लालनेत्रोंवाले महादेव युद्ध करनेको स्थितहुये १४ पीछे बाणासुर की रक्षाकरनेके अर्थ अग्निके समान रथमें स्वामिकार्त्तिकजी स्थितहोके १५ और नंदीश्वरसे युक्त रथमें वीर्यवाले और ओष्ठके पुटको दशनेवाले ऐसे महादेवजी जहां श्रीकृष्ण स्थितथे वहांगये १६ व मानो आकाशका पान करतेहुये और पौर्णमासीमें चहलसे युक्त चन्द्रमा होताहै तैसे १७ महादेवजीका रथ प्रकाशितहुआ पीछे नानाप्रकार के रूपोंवाले व भयदेनेवाले व नानाप्रकार

के शब्दोंको करनेवाले ऐसे हजारहों गणोंसेयुक्त रथ दशोंदिशाओंको शोभित करनेलगा। १८ व कितनेक सिंह सरीखे मुखोंवाले और कितनेक भगेराके मुखके समान मुखवाले और कितनेक सर्प अश्व ऊंट हाथी इन्होंके मुखोंके समान मुख वाले १९ व कितनेक सर्परूप यज्ञोपवीतों वाले व कितनेक खरोंके समान मुखों वाले व कितनेक अति वलवाले व कितनेक अश्वकी ग्रीवाके समान ग्रीवावाले २० व कितनेक वकरा मेढा विलाव इन्होंके मुखोंके समान मुखवाले व कितनेक चीरोंको धारण करनेवाले व कितनेक चोटियोंवाले व कितनेक जटाको धारण करनेवाले व कितनेक ऊर्ध्वगत वालोंवाले २१ व कितनेक शङ्ख नकारे इन्होंके शब्द करके आपसमें सशक्तहुये व कितनेक सौम्य मुखवाले व कितनेक दिव्य शस्त्रोंसे अलकृत २२ व कितनेक नानाप्रकारके पुष्पोंसे गुथेहुये मुकुट व नाना प्रकारके प्रहार करनेके योग्य हथियारोंको धारणकरनेवाले व कितनेक वामने व कितनेक विकट व कितनेक रुधिरसे भीजेहुये मुखोंकरके सिंह व भगेराके परि च्छेदवाले २३ व कितनेक महादष्ट्रोंवाले व कितनेक वलिको देखके प्यार करने वाले ऐसे सग्रामके सम्मुख अनेकप्रकारकी लीलाकरतेहुये महादेवजीके चारों तरफ स्थितहुये २४ पीछे अक्लिष्टकर्म्म करनेवाले महादेवजी के दिव्य रथ को देखके २५ गरुड पै चढे श्रीकृष्ण रुद्रकेसग युद्ध करनेको प्राप्तभये २६ तव गरुड पै स्थितहुये व वाणोंको छोड़नेवाले व अग्रणी श्रीकृष्णको आवतेहुये देख २७ कुपितहुये महादेव सौ १०० वाणोंसे श्रीकृष्णको वींधतेभये २८। २९ तव महा देवके शरोंसे पीडितहुआ श्रीकृष्ण कोपको प्राप्तहो पार्जन्य अस्त्रको ग्रहणक रताभया तव पृथ्वी कम्पनेलगी ३० व ऊर्ध्वमुखवाले सर्प चलायमान होनेलगे और जलोंकी धारासे डूवतेहुये पर्वत चलायमान होनेलगे ३१ व कितनेक पर्वत अपने शिखरोंको छोड़नेलगे और दिशा विदिशा पृथ्वी आकाश ३२ ये सव महादेव व कृष्णके समागम में प्रकाशितकी तरह दीखनेलगे व वज्रपात पृथ्वी पै पड़नेलगे ३३ व भयानक दर्शनोंवाले जीव अच्छीतरहके व घुरे शब्द करनेलगे व इन्द्र घोर शब्द व रुधिरकी वर्षा करनेलगा ३४ व वाणासुरकी सेना पै पुच्छसे विस्तृतहो उल्कास्थितहुई व पवन चलनेलगा व सव तारागण आकुलताको प्राप्त होनेलगे ३५ व सव ओषधियें प्रभासे हीन होतीभई व आकाशमें विचरनेवाले सव होगये और सव देवताओं करके सहित ब्रह्माजी उद्यतभये ३६ महादेवजी को

जानके समीपमें प्राप्तभये व गन्धर्व अप्सरा यक्ष विद्याधर ३७ सिद्धचारण इन्हों के समूह युद्धको देखनेके अर्थ आकाशमें स्थितहुये तब विष्णुने महादेवके अर्थ पार्जन्यास्त्रफेंका ३८ जहा रुद्रका अर्थ स्थितथा तहा प्रकाशितहुआ अस्त्र प्राप्त पीछे हजारहा पैनेवाण सब दिशाओंसे पडनेलगे ३९ पीछे अस्त्रविद्या,जानने वालोंमें उत्तम महादेवजी उग्ररूप आग्नेयास्त्रको छोडतेभये ४० तब अद्भुतकी तरह होताभया अर्थात् कटगई है देह जिन्होंकी ऐसे गरुड श्रीकृष्ण बलदेव प्रद्युम्नये चारों४१अग्निमे दग्धहोतेहुयेव शरोंसे आच्छादितहुये नहीं दीखनेभये तब सबदैत्य सिंहके समान शब्द करनेलगे ४२ व आग्नेयास्त्रसे यह श्रीकृष्ण मारागया ऐसे सबदैत्य जानतेभये ४३ पीछे अस्त्रोंको जाननेवालोंमें श्रेष्ठरूप श्री कृष्णजी हँसके वारुणास्त्रको ग्रहणकर जब छोडनेलगे ४४ तब आग्नेयास्त्र शात होगया ४५ पीछे महादेवजी प्रलयकी अग्निके समान पैशाच राक्षस रौद्र आंगिरस इननामोंवाले चार अस्त्रों को छोड़तेभये ४६ पीछे श्रीकृष्ण भी वायव्य सावित्र वासव मोहन इननामोंवाले चार अस्त्रों से महादेवजी के अस्त्रोंको निवारण करने के अर्थ छोडतेभये ४७ ऐसे चार अस्त्रों से महादेवजी के अस्त्रोंका निवारण कर पीछे श्रीकृष्ण विस्तृत मुखवाले कालप्रभु के समान उपमावाले वैष्णवास्त्रको छोडतेभये ४८ जब वैष्णवास्त्र छोडागया तब भूत यक्ष वाणासुरकी सब सेना। ४९ भय व मोहसे विक्लवहुये सब दिशाओं को भागनेलगे ५० तब युद्ध करने के अर्थ भयानक प्रहारोंवाले व घोर व महाबलवाले व महारथी ऐसे दैत्यों से परिवृत वाणासुर वेगसे युद्ध के अर्थ सम्मुख प्राप्तहुआ जैसे देवताओं के गणोंसेयुक्त इन्द्र ५१ वैशम्पायन कहनेलगे कि जप होम ओषधि इन्होंकरके ब्राह्मण वाणासुर का स्वस्तिवाचन करातेभये व पीछे वस्त्र सुन्दरगाय फल पुष्प सोनेरी अशरफी ५२ इन्होंको ब्राह्मणों के अर्थ दान देताहुआ वाणासुर प्रकाशित हुआ जैसे कुबेर पीछे हजार सूर्योवाला व बहुतसे राजाओं से संयुक्त व अनमोले रत्न व सोनासे चित्रित ५३ व हजारहा चन्द्रमा व तारागणों से युक्त व महा अग्निकेसमान प्रकाशित व बड़ी ध्वजावाला ऐसे रथमें धनुषको धारण करनेवाला वाणासुर स्थितहोके ५४ यादवों के अर्थ भयानकरूप को धारणकर सागर रूप दैत्योंकी सेनाको ले युद्धमें प्राप्तभया ५५ जैसे वात से बढ़ाहुआ व तरंगोंसे व्याप्त संसार नाश करनेकेलिये समुद्र बढ़ताहै ५६ उसीप्रकारसे सेना व

रूपको धारणकर ५७ अपने स्थानसे युद्ध करने के अर्थ बाणासुर निकला ५८॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वेभाषायांरुद्रकृष्णयुद्धेत्र्यशीत्यधिकशततमोऽध्याय १८३॥

एकसौचौरासीका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब अन्धकार रूप संसारहुआ व यदोगण व रथ व महादेव ये तीनों नहीं दीखतेभये तब क्रोधकरके व बलकरके दुगुने दीप्तहुए १ ब्रह्माजीसे सहित महादेवजी बाणासुरको ग्रहणकर धनुषपै चढ़ाय जब फेंकनेकी इच्छा करनेलगे २।३ तब श्रीकृष्णने जानके जृंभणनाम अस्त्रछोड़ा वह महादेवजी को जृंभित करताभया ४ तब देवते व राक्षसों को जीतनेवाला महादेव संज्ञाको प्राप्तनहीं हुआ ५ तब बलसे उन्मत्तहुआ बाणासुर बारम्बार महादेवजी को उद्यत करताहुआ स्निग्ध व गभीररूप वाणीकरके शब्द करनेलगा ६ तब श्रीकृष्णभी पाञ्चजन्य शङ्खको व शार्ङ्गधनुको बजानेलगे ७ पीछे विजृंभित रूप महादेवजी को देखकर सबप्राणी उद्वेगको प्राप्तहुये व इसी अन्तरमें महादेवजी के पार्षद ८ मायायुद्धके आश्रयहो प्रद्युम्नजी के चारोंतर्फको प्राप्तहुये तब प्रद्युम्नजी शत्रुओंको निद्राकेवशमें प्राप्तकर ९ बाणोंके जालसे दैत्य व पार्षद गणोंको नाशताभया १० पीछे अक्लिष्ट कर्म करनेवाले महादेवजी जब जँभाई लेनेलगे तब महादेवजीके मुखसे दशदिशाओंको दग्ध करतीभई ज्वाला प्रकटभई ११ पीछे बड़ीबड़ी आत्मावालोंसे पीड़ित पृथ्वी कांपतीहुई ब्रह्माजीके समीपमें गई १२ व कहनेलगी हे देवदेव हे महाबाहो परम बलसे मैं पीड़ित हूं कृष्ण व महादेवके भारसे आक्रान्त होरही हूं १३ व हे पितामह यह भार असह्यहै इसलिये जैसे मैं हलकीहोके इस चराचरको धारण करूं तैसे तू चिंतवनकर १४ तब ब्रह्माजी पृथ्वी से कहनेलगे कि एक मुहूर्ततक आत्माको धारणकर तू जल्द हलकी होजावेगी १५ वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे देखके ब्रह्माजी महादेवजीसे कहनेलगे कि आपही ने महादैत्योंका वध रचाहै फिर कैसे रक्षाकरतेहो १६ व हे महाबाहो कृष्णके साथ तेरा युद्धकरना उचित नहीं है व अपनाही दूसरे आत्मारूप श्रीकृष्ण को क्या तुम नहीं जानतेहो १७ पीछे महादेवजी वरोंका चिंतवनकर और जो द्वारावती में कहागया था तिसका स्मरणकर १८ महादेवजी कुछ भी उत्तर नहीं देतेभये १९ अर्थात् श्रीकृष्ण को अपनी आत्मारूप जानके युद्ध मे

निकृस अपनी प्रतिज्ञाको छोड़तेभये २० पीछे ब्रह्माजीसे महादेवजी कहनेलगे कि हे भगवन् कृष्ण के संग में युद्ध नहीं करूगा यह पृथ्वी हलकी होजावै २१ तब कृष्ण और महादेव आपस में मिलके परमप्रीति को प्राप्तहो युद्धसे अलग होतेभये २२ तिन दोनोंको एकरूप देखतेहुये ब्रह्माजी उद्देशकर समीपमें स्थित २३ व दीर्घदर्शी ऐसे नारदसहित मार्कंडेयजी को जानके पूछतेभये २४ व ब्रह्मा जी कहनेलगे हे ब्रह्मन् मदराचलके समीपमें नलिनी विषे रात्रि में स्वप्नान्तरमें शिव और कृष्ण मैंने देखे २५ अर्थात् शख चक्र गदा इन्होंको हाथ में धारण करनेवाला और पीलेवस्त्रोंको धारण करनेवाला २६ गरुड़पैस्थित ऐसा महादेव देखा व त्रिशूल पट्टिश व्याघ्रचर्म इन्होंको धारणकरनेवाला व बैलपै चढ़ाहुआ ऐसा श्रीकृष्ण मैंने देखा २७ इस परमाद्भुत को देखके हे ब्रह्मन् मेरेको आश्चर्य हुआहै इसवास्ते हे भगवन् तुम यथार्थ से वर्णनकरो २८ तब मार्कंडेयजी कहने लगे कि शिव विष्णुरूपहैं विष्णु शिवरूपहै इनदोनों में अन्तर नहीं है इसवास्ते शिव व विष्णु मेरेअर्थ कल्याणदेवो २९ व नहीं है आदि मध्य अंत जिसके व अक्षर व अविनाशी ऐसे हरिहरात्मक रूपको तेरेअर्थ कहताहू ३० व जो विष्णु है वह रुद्र है जो रुद्र है वह ब्रह्मा है ऐसे एक मूर्त्ति हैं व महादेव विष्णु ब्रह्मा ये तीन देव है ३१ व वरके देनेवाले व लोकके कर्त्ता ३२ व लोकके स्वामी व आ- पही उत्पन्न होनेवाले ऐसे ये तीनों देव हैं जैसे जलमें गेराहुआ जल जलरूप होजाताहै ३३ तैसे महादेव में प्रवेशहुआ विष्णु महादेवरूप होजाताहै ३४ व जैसे अग्नि में मिला अग्निरूप होजाता है तैसे विष्णु में मिलाहुआ महादेव विष्णुरूप होजाताहै ३५ व अग्निरूप महादेव है व सोमरूप विष्णु है इसवास्ते यह स्थावर जगम जगत् अग्नि सोमात्मकहै ३६ व स्थावर व जङ्गमरूप जगत् के कर्त्ता हर्त्ता ३७ व जगत्के शुभकर्त्ता व प्रभु विष्णु व महेश्वर कर्त्ता व कारण के कर्त्ता ३८ व भूत भव्य भव इन्होंको जाननेवाले ऐसे ये दोनों विष्णु व शिव हैं व ये तीनों ब्रह्मा विष्णु शिव मेघरूपकरके वर्षते हैं व वायुरूपकरके विचरते है व सूर्यरूपकरके प्रकाश करते हैं ३९ यह अनिगूढ्य तेरेअर्थ कहाहै जो इसका नित्यप्रति पाठ करताहै व जो नित्यप्रति इसको सुनताहै ४० वह विष्णु व महा देव के प्रसाद से उत्तम स्थान में प्राप्तहोताहै इसवास्ते मैभीजी सहित विष्णु व शिव इनदोनों देवताओंकी स्तुति करताहूं ४१ ये दोनों देव जगत्की उत्पत्ति हैं

और अविनाशी हैं और महादेवके परमरूप विष्णु हैं व विष्णुके परमरूप शिव हैं
४२ व एक आत्मा द्विधाभूतहुआ लोकमें विचरताहै इसवास्ते महादेव के विना
विष्णु नहीं हैं व विष्णुके विना महादेव नहीं है ४३ इसवास्ते विष्णु और शिव
एकही हैं अब हरिहरात्मक स्तोत्रवर्णन कियाजाताहै ॥ नमोरुद्रायकृष्णायनम
सहतचारिणे ४४ नम षडर्द्धनेत्रायसद्विनेत्रायवैनमः नम पिंगलनेत्रायपद्मने
त्रायवैनम ४५ नम कुमारगुरवेप्रद्युम्नगुरवेनम नमोधरणीधरायगंगाधरायवैनमः
४६ नमोमयूरपिञ्छायनम केयूरधारिणे नम कपालमालायवनमालायवैनम ४७
नमस्त्रिशूलहस्तायचक्रहस्तायवैनम नम कनकदण्डायनमस्तेब्रह्मदण्डिने ४८
नमश्चर्मनिवासायनमस्तेपीतवाससे नमोस्तुलक्ष्मीपतयेउमायाःपतयेनम ४९
नमःखट्वांगधारायनमोमुशलधारिणेनमोभस्मांगरागायनमःकृष्णांगधारिणे ५०
नम श्मशानवासायनम सागरवासिने नमोवृषभवाहायनमोगरुडवाहिने ५१ न-
मस्त्वनेकरूपायबहुरूपायवैनम नम प्रलयकर्त्रेचनमस्त्रैलोक्यधारिणे ५२ नमो
स्तुसौम्यरूपायनमोभैरवरूपिणे विरूपाक्षायदेवायनम सौम्येक्षणायच ५३ दक्षय-
ज्ञविनाशायबलेर्नियमनायच नम पर्वतवासायनम सागरवासिने ५४ नम सुरारि
घ्नायत्रिपुरघ्नायवैनम नमोस्तुनरकघ्नायनम कामांगनाशिने ५५ नमस्त्वंध
कनाशायनम कैटभनाशिने नम सहस्रहस्तायनमोसंख्येयबाहवे ५६ नम सह
स्रशीर्षायबहुशीर्षायवैनमःदामोदरायदेवायमुञ्जमेखलिनेनमः ५७ नमस्तेभगव
न्विष्णोनमस्तेभगवन्शिव नमस्तेभवतेदेवनमस्तेदेवपूजित ५८ नमस्तेकर्मणां
कर्मनमोमितपराक्रमहृषीकेशनमस्तेस्तुस्वर्णकेशनमोस्तुते ५९ इसरुद्रकेऔरवि-
ष्णुके इसस्तोत्रको जो मनुष्यपढ़े और सब ऋषियोंकरके स्तुतिकिये विष्णु और
शिव इन दोनोंकी स्तुतिकरे ६० और वेदको जाननेवाले वेदव्यासने व नारदने
व भारद्वाजने व गर्गने व विश्वामित्रने ६१ व अगस्त्यने व पुलस्त्यने व धौम्यने
स्तुतिकिये दोनोंदेवोंको जो स्तवन करे और जो इस हरिहरात्मक स्तोत्रका नि-
त्यप्रति पाठकरे ६२ वह मनुष्य रोगसे रहित और बलवान् ऐसा होजाताहै इस
में सशय नहीं व नित्यप्रति लक्ष्मीको प्राप्त होताहै व स्वर्गसे निवृत्त नहीं होता
६३ व अपुत्र पुत्रको प्राप्त होताहै व कन्या सत्पतिको प्राप्त होती है व गर्भवाली
स्त्री इस स्तोत्रका पाठसुने तो उत्तम पुत्रको जनती है ६४ और राक्षस पिशाच
विघ्न विनायक ये सब भय नहीं करते हैं जहां इस स्तोत्र का पाठहोवे ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वेभाषायांहरिहरात्मकस्तवनचतुरशीतितमोऽध्यायः ॥

एकसौपच्चासीका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे जब श्रीकृष्ण और महादेवजी युद्धसे अलग अलग होगये तब फिर किन्हों का युद्ध होताभया १ वैशम्पायन कहनेलगे कि कुभाडसे सग्रहीतरश्मिये रथमें स्थितहुआ स्वामिकार्तिक श्रीकृष्ण बलदेव प्रद्युम्न इनतीनों के सम्मुख दौडनेलगा २ पीछे उग्ररूप सैकडों बाणों से क्रोधको प्राप्तहुआ अश्विनीकुमार तीनों को बींधताभया ३ पीछे बाणकरके कटेहुये गात्रोंवाले और तीन अग्नियों के समान प्रकाशवाले व लोहूके समूह से भीजेहुये गात्रोंवाले ऐसे तीनों स्वामिकार्त्तिकके सग युद्ध करतेभये पीछे युद्धमार्ग को जाननेवाले तीनों वायव्यास्त्र आग्नेयास्त्र पार्जन्यास्त्र इन्हों करके भेदन करनेलगे ४। ५ पीछे शैल वारुण सावित्र इन नामोंवाले अस्त्रोंसे स्वामिकार्तिक उन तीनों को भेदन करनेलगा जब प्रकाशित बाणों के समूहवाला और प्रकाशित धनुष को धारण करनेवाला ६ ऐसे स्वामिकार्त्तिकके बाणोंके समूहको अस्त्रमाया करके तीनों ग्रसनेलगे तब क्रोधको प्राप्तहुआ व तेजसे प्रज्वलित ऐसा स्वामिकार्तिक ७ ब्रह्मशर नामवाले अस्त्रको ग्रहणकर छोडनेलगा जब सूर्यके समान कांतिवाला ८ व उग्र व परम दुर्द्धर्ष व लोकके क्षयको करनेवाला ऐसा ब्रह्मशर अस्त्र को युक्त किया ९ तब हाहाकार करतेहुये सब योद्धा भागनेलगे और केशिको मथनेवाला श्रीकृष्ण १० सब अस्त्रोंके वीर्यको वारण व घातन करनेवाला सुदर्शन चक्रको ग्रहण करताभया तिस चक्रने अपने बलकरके ब्रह्मशरअस्त्र प्रभा से रहित करदिया जैसे वर्षाऋतु में बादलों से सूर्यका मण्डल ११ जब अतिबल वाला ब्रह्मशर अस्त्र प्रभा व वीर्यसे रहित होगया तब क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला स्वामिकार्तिक १२ अतिशयकरके ज्वलितहुआ जैसे घृत मे पडाहुआ अग्नी तब शत्रुओं को नाशनेवाली १३ प्रकाशित व दिव्यसोनासे बनीहुई व महा उल्काके समान प्रकाशवाली व प्रलयकी अग्नी के समान कान्तिवाली व घण्टाकी मालाओं से आकुल ऐसी शक्तिको कुपितहुआ स्वामिकार्त्तिक छोड़नेलगा १४ व शत्रुओंको भयदेनेवाला उग्र शब्द करनेलगा तब महागण और महात्मारूप स्वामिकार्त्तिकने शक्तिछोडी १५ तब प्रदीप्तमुखवाली व आकाशमें फैलीहुई व कृष्णके वधनेकी आकांक्षा करनेवाली ऐसी शक्ति भागनेलगी १६ तब गिरहुआ

व सब दैत्योंके गणोंसे परिवृत ऐसा इन्द्र प्रज्वलित शक्तिको देखके कृष्णदग्ध हुआ ऐसे कहताभया १७ व समीपमें प्राप्तहुई शक्तिको महाकार शब्दसे झिड़क के श्रीकृष्ण पृथ्वीतलमें गिराताभया। १८ जब महाशक्ति गिरपड़ी तब सब तरफ से साधुसाधु ऐसे कहतेहुये इन्द्र आदि सब देवते सिंहके समान शब्दको करते भये १९ पीछे जब सब देवते अच्छीतरह शब्द करनेलगे तब अति प्रतापवाला श्रीकृष्ण दैत्यों को नाशनेके योग्य सुदर्शनचक्रको फिर ग्रहणकर छोड़ने को तय्यारहुआ २० जब श्रीकृष्णने चक्र छोड़नेकी तय्यारीकरी तब स्वामिकार्त्तिक की रक्षाके अर्थ सुन्दर शरीर को धारण करनेवाली २१ व कपड़ोंसे नगी और देवके वचनोंसे प्रनिष्ट और कोटवी और लवमाना व महाभागा व पार्वतीजी के अष्टम भागसे उपजीहुई २२ व चित्रा ऐसी बाणासुर की माता नग्नहोके बीच में प्राप्तहुई पीछे स्वामिकार्त्तिक के और श्रीकृष्ण के बीचमें स्थितहुई २३ तब स्वामिकार्त्तिक की रक्षा करनेवाली तिस नगी देवीको देख परको मुखवाले श्रीकृष्ण वाक्य कहनेलगे २४ कि हे देवि परे हटजा परे हटजा तेरेको धिक्कारहै कि निश्चित किये के वधके प्रति ऐसे विघ्न क्यों करतीहै २५ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुन कोटवीदेवी स्वामिकार्त्तिक की रक्षाके अर्थ वस्त्रों को नहीं धारणकरतीभई २६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि स्वामिकार्त्तिकको त्याग के जल्द युद्धसे अलगहोजा और मेरे संग युद्धकरनेसे इसका कल्याण होगा २७ जबवह देवी नहींहटी और स्थितहीरही तब युद्धमें श्रीकृष्ण अपने चक्रको हरतेभये २८ ऐसे जब श्रीकृष्णसे स्वामिकार्त्तिक की रक्षाकर व युद्धसे अलग कर महादेवजी के समीपमें प्राप्तभई २९ इसअन्तरमें महाभय उत्पन्नहुआ और देवीने स्वामिकार्त्तिककी रक्षाकरी ३० और स्वामिकार्त्तिक युद्धसे भागगया तब बाणासुर चिंतवन करनेलगा कि अब श्रीकृष्णके संग में आप युद्धकरूंगा ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांबाणयुद्धगुहापयानेपंचाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः॥

एकसौ छियासीका अध्याय॥

तब वैशम्पायन कहनेलगे भूत यक्षों के समूह और बाणासुर की बहुतसी सेना ये सब भयसे मोहित नेत्रोंवाले होके दिशाओंके प्रति भागनेलगे १ और महादेवजी के पार्षदोंकी सेना जब कटनेलगी तब वेगसे युद्धके अर्थ अभिमुख

हुआ वाणासुर घरसे निकला २ व भीम प्रहार करनेवाले और घोर व महारथी व महाबलवाले और महावीर ऐसे दैत्येंद्रोंको सगलेके वाणासुर युद्ध करने को तय्यारहुआ ३ जैसे देवतों को लेके इन्द्र तब शत्रु के बधको कहतेहुये पुरोहित और श्रुतिशीलसे बढ़ेहुये अन्य ब्राह्मण ये जप मंत्र औषधि इन्होंकरके वाणासुरका स्वस्तिवाचन करानेभये ४ पीछे नक्कारके शब्दों करके और भय्योंके महाशब्दों करके और दैत्यों के सिंहके समान शब्द करके वाणासुर श्रीकृष्णके सम्मुखचला ५ युद्धकरने के अर्थ आवतेहुये वाणासुर को देखके श्रीकृष्ण भी गरुड़पै चढ़ वाणासुर के सम्मुखचले ६ पीछे गरुड़पै चढ़े श्रीकृष्ण को आवते हुये देख ७ वाणासुर क्रोधको प्राप्तहो वचन कहनेलगा ८ स्थितहो२ मेरेसे अब तू जीवता उलटा गमननहीं करेगा और द्वारकापुरी को व द्वारकावासी मित्रों को हर्गिज नहीं देखेगा ९ और हे माधव मेरेसे अभिभूत और युद्धमें मरनेकी इच्छावाला और कालसे प्रेरित ऐसा तू अभिलोनाके वर्णवाले वृक्षके अग्रभागों को तू देखेगा १० हे गरुड़ध्वज अब हजार बाहुओं वाले मेरे संग तू कैसे युद्ध करेगा ११ और बान्धवों सहित तू अब मेरे करके युद्धमें जीताहुआ इस शोणित पुरमें मरने के वक्त द्वारका का स्मरण करेगा और नानाप्रकारके प्रहारों से युक्त और नानाप्रकार के बाजुबन्धों से भूषित ऐसे मेरे हजार बाहुओं को अब तू किरोड़ संख्यासे युत देख १२ । १३ व गर्जतेहुये वाणासुर के वाक्यों के समूह ऐसे निकसनेलगे जैसे महाघोर व वायुसे उद्धत और तरङ्गोंवाले जलके समूह समुद्रमे १४ व क्रोध से आकुलहुये दोनोंनेत्र वाणासुरके ऐसे हुये जैसे जगत् को दग्ध करनेवाला महासूर्य आकाशमें उदित होताहै तैसे १५ पीछे वाणासुर के गर्वित वचनको सुनके आकाशको भेदन करनेकी तरह नारदजी हसतेभये १६ जो योगबलको प्राप्तहो युद्धदेखने के अर्थ आकाशमें स्थित होरहे हैं और आश्चर्य करानेके वास्ते विचरते रहते हैं १७ तब श्रीकृष्ण कहनेलगा हे वाणासुर मोहसे क्यों गर्जताहै शूरवीरों का गर्जना अच्छा नहीं है १८ व यहांआके युद्धकर तेरे इस वृथा गर्जने से क्याहै हे दैत्य जो वचनोंहीं से युद्ध सिद्धहोने होवें तो तू भी नित्यप्रति असम्भावित वचनोंको कहताहै १९ इससे हे वाणासुर यहांआके मेरेको जीत अथवा मेरेसे जीताहुआ वर्जनेको सुननेवाला व दीन व पतितहुआ ऐसा तू दैत्यों के संग गमन करेगा २० ऐसे वाणासुरको कहके

मरमको भेदन करनेवाले व शीघ्र चलनेवाले व अमोघ ऐसे बाणों से बाणासुर को श्रीकृष्ण बाँधतेभये २१ जब पैने बाणोंसे श्रीकृष्णने बाणासुरको बाँधा तब आश्चर्य्य मानताहुआ बाणासुर भी श्रीकृष्ण पै बाणोंकी वर्षाकरके २२ पीछे परिघ निस्त्रिंश गदा भाला शक्ति २३ मूसलपट्टिश इन शस्त्रों से आच्छादित करताभया और हजार बाहुओं से गर्वित बाणासुर २४ दोबाहुवाले श्रीकृष्णसे युद्धकरनेलगा पीछे श्रीकृष्णके लाघव से क्रोधको प्राप्तहुआ बाणासुर २५ परम दिव्य व तपसे रचाहुआ व युद्धमें अप्रतिहत व सब शत्रुओं को नाशनेवाला २६ व साक्षात् ब्रह्माजी से रचाहुआ ऐसे अस्त्रको बाणासुर छोड़ताभया तब सब दिशा अँधेरा से व्याप्त होगईं २७ व हजारहा घोररूप जीव प्रकट होगये और अँधेरा से आच्छादित संसारमें कुछ भी नहीं दीखताभया २८ और साधु साधु ऐसे कहके बाणासुरको दैत्यपूजते भये व हाहा धिक् धिक् ऐसे देवताओं की बानी सुनतीभई पीछे अस्त्रके बलके वेगकरके दारुण व घोररूप ऐसी बाणोंकी वर्षा होनेलगी २९ न पवनचले न बद्दलचले और बाणासुर के अस्त्रकरके जब श्रीकृष्ण दग्ध होनेलगे ३० तब महा वेगवाले व काल प्रभुके समान कान्तिवाले ऐसे पार्जन्य अस्त्र को भगवान् ग्रहण करतेभये ३१ जब अँधेरा का नाशहोके अग्नि शान्तहोगया व दैत्योंका रूप बिगड़गया ३२ फिर बाणासुर गरुड़ पै स्थितहुये श्रीकृष्णको ३३ मूसलपट्टिश इन्होंकरके आच्छादित करताभया तब बाणासुरकी बाणवृष्टिको ३४ हँसताहुआ श्रीकृष्ण निवारण करताभया ३५ व शार्ङ्ग धनुषपै चढ़ाके छोड़ेहुये बाणों से श्रीकृष्ण बाणासुर के रथ ध्वजा घोड़े पताका ३६ कवच मुकुट धनुष और हाथका धनुष इन्होंके टुकड़े टुकड़े करता भया ३७ और एकबाण बाणासुरकी छातीमें मारताभया तब मर्मसे च्युतहुआ बाणासुर युद्धमें मूर्च्छितहुआ ३८ तबप्रहार से पीड़ित और मूर्च्छित ऐसे बा णासुर को देखके ऊंचे महल की शिखरी पै स्थितहुआ ३९ और अपने कामों को बजानेवाला व नचो को बजानेवाला ऐसा नारदमुनि मंगलहुआ मंगल हुआ ऐसेकहके फिर कहनेलगा ४० कि आश्चर्य है मेरा जन्म अब सफलहुआ मेरा जीवन अब सफलहुआ जो मैंने यह चित्ररूप श्रीकृष्णका पराक्रम अब देखा ४१ और हे महाबाहो देवताओं का वैरी व दितिके वंशमें उपजने वाला ऐसे बाणासुर को तू जीत जिसके अर्थ तैंने अवतार लिया है तिस कर्म को तू

सफलकर ४२ ऐसे श्रीकृष्णकी स्तुतिकर और जहा से पडते हुये बाणों करके आकाश को प्रकाशित करता हुआ नारदमुनि युद्धमें विचरने लगा ४३ पीछे वाणासुरका वाहन मयूर और श्रीकृष्णका वाहन गरुड ये दोनों पक्ष तुण्ड पैर नख ४४ इन्हों के प्रहारों करके आपस में युद्ध करने लगे ४५ पीछे क्रोध को प्राप्तहुआ गरुड दीप्त तेजवाले मयूरको ४६ शिर विषे ग्रहणकर और तुंडसे पतन करताहुआ और पांखोंसे फेंकके ४७ और पैर व पांसुओंके अभिघातसे अनेक प्रकार की चोट मार और खैंच ४८ ऐसे सज्ञासे रहित मयूरको आकाश से गिराता भया जैसे आकाशसे सूर्य्य जब मयूर पडता भया ४९ तब अति बलवाला वाणासुर भी अपने कार्यका चिंतवनकर पृथ्वी में पड़ता भया और कहनेलगा कि बलके मदसे मैंने मित्रों का वचन नहीं माना ५० सो देवते व दैत्यों के देखते हुये मैं उग्र आपद को प्राप्तहुआ हूं तब दीन मन वाला व युद्ध में विक्षत ऐसे वाणासुरको जानके ५१ वाणासुरकी रक्षाके अर्थ चिंतवन करतेहुये महादेव फिर गंभीर वाणीसे नंदिकेश्वर से कहनेलगे ५२ कि हे प्रिय जहा वाणासुर युद्धमें स्थितहै तहा दिव्य व सिंहोंसे युक्त और प्रकाशित ऐसे रथकरके वाणासुरको युद्ध के अर्थ प्राप्तकर ५३ व मैं प्रमथगणों के मध्य में अस्थित हूं मेरामन ठीकनहीं है ५४ इसवास्ते वाणासुर की रक्षाके अर्थ जल्द गमनकर ५५ ऐसे महादेवके वचनको ग्रहणकर नंदिकेश्वर रथकरके ५६ जहा वाणासुर स्थित था तहाजाके धीरेधीरे कहनेलगा हे दैत्य हे महाबल इसरथमें स्थितहोके जल्द प्राप्तहो ५७ पीछे दैत्योंके नाशकरनेवाले श्रीकृष्णसे युद्धकर तब महादेवके रथमें वाणासुर स्थितहो ५८ पीछे सब अस्त्रोंका घातकरनेवाला व महाघोर ऐसे ब्रह्मशिरनामवाले अस्त्रको प्रकटकरताभया ५९ जब ब्रह्मशिर अस्त्र छोडागया तब सब लोकक्षोभको प्राप्तभये व जो लोककीरक्षाके अर्थ चक्र रक्खागयाहै ६० तिसकरके श्रीकृष्ण महाशत्रु अस्त्रको काट पीछे संसारमें विख्यात पराक्रमवाला व युद्धमें कुशल व वेगमें कुशल ६१ ऐसे वाणासुर से श्रीकृष्ण कहनेलगा कि हे वाण जो तैंने पहिले वचनकहेथे वे अब फिर क्यों नहीं कहता अब मैं युद्धमें स्थित होगयाहूं तू पुरुषहोके मेरेसंग युद्धकर ६२ व हजार बाहु वाला व महाबली ऐसा कार्त्तवीर्यार्जुन ६३ पहले परशुरामजी ने युद्धमें दोभागहुआ था तैसे तेरे भी बाहुओंके वीर्यसे उपजा गर्वहै ६४ सो इसमेरे गर्वको मानि इसयुद्धमें मैं करता

हुई व तब [illegible] देवी [illegible]
युद्धमें ऐसा नहीं [illegible]
[illegible]
[illegible] महादेवजीके [illegible]
वाला सुदर्शनचक्रको [illegible] बाणासुरके नाशके अर्थ [illegible] पीछे [illegible]
[illegible] तेज व [illegible] तेज व इन्द्रका तेज [illegible]
[illegible] तेज व [illegible] तेज व [illegible]
स्थितका ७० पवित्रता स्त्रियोंका तेज [illegible] ७१ [illegible]
गर्व अपना [illegible] तेज ७२ व [illegible]
सुदर्शनचक्रमें स्थापित [illegible] व [illegible]
७३ व [illegible] ऐसा चक्र बाणासुरके [illegible]
स्थित किया ७४ तब अप्रमेय और [illegible] नहीं जाय ऐसा और ति-
लोकी मे अजय अर्थात् जीतनेके योग्य नहीं ऐसा चक्र जब श्रीकृष्णने धारण
किया ७५ तब लंबाकी महादेवजीसे कहनेलगी हे देव जब तक यह चक्र नहीं
छूटे तब तक तू बाणासुरकी रक्षाकर ७६ पीछे महादेवके वचनको सुन लंबदेवी
मैं करनेलगी हूं लबे बालकी रक्षाके अर्थ जल्द प्राप्तहो ७७ तब पार्वती भी योग
सों प्राप्तहो अकेले कृष्णको अपने रूपको दिखानेवाली व अन्योंसे अदृश्यहो-
कै श्रीकृष्णके समीपमें प्राप्तहुई ७८ फिर चक्रको हाथमें धारण करनेवाले श्री-
कृष्णको युद्धमें देखके तब अंतर्द्धानको प्राप्तहो अपने कपड़ोंको त्याग बाणा-
सुरकी रक्षाके अर्थ ७९ अपने कपड़ोंको फिर त्याग श्रीकृष्ण के सम्मुख स्थित
हुई तब फिर प्राप्तहुई रुद्रकी मानीहुई देवीको ८० व दूसरी लंबाको स्थितहुई देख
श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे देवी ८१ फिर तू बाणासुरकी रक्षाके अर्थ कपड़ों
त्यागके युद्धमें मेरे सम्मुख स्थितहुई मैं इस बाणासुरके [illegible] इस में [illegible]
नहीं ऐसे श्रीकृष्णके वचन को सुनके बाणासुर की र[illegible] देवी
वाणी मे श्रीकृष्ण को कहनेलगी [illegible] व लोकों [illegible]
पांच उत्तम और महाभाग महादेव[illegible] नै [illegible]
हृषीकेश लोकों की आदिमें [illegible]

हो इस वाणासुरको अभय दानकरो और मैंने वाणासुरकी माताके अर्थ यह वरदिया है कि तेरा पुत्र सदा जीता रहेगा ८५ इस वास्ते फिर मैं रक्षा करती हूं सो हे माधव मेरे उद्योगको मिथ्या करनेके अर्थ तुम योग्य नहीं हो ऐसे देवी के वचनको सुन क्रोध को प्राप्तहुये ८६ श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे भामिनी तू सत्य वचनको सुन हजार वाहुओं करके गर्वितहुआ वाणासुर शब्द करता है ८७ इस वास्ते इसकी वाहुओंका छेदन करना आवश्यकहै परन्तु दो वाहुओं वाले वाणासुर करके तू जीवित पुत्रिणी होवेगी ८८ व दैत्यपनेके गर्वको प्राप्त हो यह मेरा आश्रय नहीं लेवेगा ऐसे कृष्णके वचनको सुन देवी कहनेलगी ८६ कि हे देव देव यह वाणासुर तेरे आश्रित रहेगा पीछे पार्वतीजी को भी ऐसेही श्रीकृष्ण कहके ९० क्रोधको प्राप्तहो वाणासुरसे कहनेलगा युद्धकर युद्धकर कोटवी देवी स्थित होरही है ९१ असमर्थों की नाईं हे वाणासुर तेरे पौरुषको धिक्कारहै ऐसे कहके नेत्रोंको मूद श्रीकृष्ण चक्रको छोड़तेभये ९२ जिसके छोड़ने से स्थावर जंगमलोक मोहको प्राप्तहोते हैं ९३ व मांसोंको खानेवाले प्राणी युद्धमें तृप्तहोते हैं ९४ तिस चक्र करके वाणासुरकी वाहुओं को काटनेलगा ९५ व जलतेहुये काष्ठकी तरह जल्द भ्रमताहुआ व मानो दूसरा सूर्य ९६ ऐसा विष्णुका चक्र भ्रमनेलगा जिसकी शीघ्रतासे रूप भी नहीं दीखा ९७ तब वाणासुरकी वाहुओंको काट ९८ व दो वाहुओंवाला व कटीहुई शाखाओंवाला वृक्ष की तरह स्थित ऐसा वाणासुर होगया तब सुदर्शन चक्र फिर श्रीकृष्णके हाथ में प्राप्तभया ९९ वैशम्पायन कहनेलगे कि जब सुदर्शनचक्र कृष्ण के हाथ में प्राप्तभया और वहतेहुये लोहूके समूहसे भीगताहुआ १०० व पर्व्वतके आकार व छिन्न वाहुओंवाला और महावली और लोहू समेत और वद्दलकी तरह अनेक प्रकारके शब्दोंको करनेवाला ऐसा वाणासुर हुआ १०१ तब वाणासुरके शब्द से क्रोधको प्राप्तहुये श्रीकृष्ण फिर वाणासुर के नाशके अर्थ सुदर्शनचक्र को छोड़नेलगे १०२ तब स्वामिकार्त्तिक सहित महादेवजी आके कहनेलगे १०३ महादेव कहते हैं हे कृष्ण हे कृष्ण हे महावाहो हे पुरुषोत्तम हे मधुकैटभको मारनेवाले हे देव देव हे सनातन तेरेको मैं जानता हूं १०४ व हे देव लोकोंकी तू गति है और तेरेसे यह जगत् रचागयाहै व देवते दैत्य सर्प इन तीन प्रकारके प्राणियों से तू जीतनेमें नहीं आसक्ता १०५ इस वास्ते दिव्य और उद्यतरूप इस

सुदर्शनचक्र को मतछोडे १०६ व हे केशिनिसूदन इस बाणासुर के अर्थ मैंने अभयदियाहै १०७ सो मेरा मिथ्यावाक्य नहीं होजावे इस वास्ते तेरेको मैं क्षमा कराताहूं १०८ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे हे देव यह बाणासुर जीवता रहे यह चक्र मैंने निवृत्तकिया और देवताओं के देवताओंका और दैत्योंका तू मान्यहै१०९ सो तेरे अर्थ नमस्कारहै जो मेरा कार्य है तिसके अर्थ में गमन करूहूं इस वास्ते आप मेरेको आज्ञादीजिये ११० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांबाणयुद्धेबाणभुजच्छेदेषडशीत्यधिकशततमो ध्याय १८६ ॥

एकसौ सत्तासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे महादेवजीको कहके गरुड़जीके संग श्रीकृष्ण जहां बाणोंसे संयुक्त अनिरुद्ध स्थितथा तहां जाके श्रीकृष्ण प्राप्तभये १ जब श्रीकृष्ण चलेगये तब नन्दीश्वर बाणासुरसे कहनेलगा हे बाण ऐसेही महादेवजी के अगाडी स्थितहो २ तब नन्दीश्वरके वचनको सुनके बाणासुर जल्द चलने को तय्यारहुआ तब कटीहुई बाहुओंवाले बाणासुर को ३ रथमें स्थितकर जहां महादेवजी स्थितथे तहां जाके प्राप्तकिया पीछे नन्दीश्वर बाणासुरसे फिर कहने लगा ४ कि हे बाण महादेवजी के अगाड़ी नृत्यकर इसमें तेरा कल्याण होगा यह देव तेरेपर प्रसन्न होवेगा ५ तब लोहू के समूह से भीजेहुये अङ्गोंवाला व नन्दीश्वरके वाक्यसे प्रेरित व जीवनेको चाहनेवाला ६ व भयसे संविग्न व बिगड़गयाहै मन जिसका ऐसा व कृपण अवस्थाको प्राप्तहुआ व भयसे निकलत नेत्रोंवाला व भयसे संविग्न ऐसा बाणासुर महादेवजी के सम्मुख नाचनेलगा ७ तब भय से उद्विग्न व नृत्य करताहुआ व नन्दीश्वरके वाक्यसे वेगवाला ऐसे बाणासुरके प्रति भक्तोंपै अनुग्रह करनेवाले व दयासे सम्पन्न ऐसेमहादेवजी कहनेलगे हे बाण जो तेरे मनमेंहो सो वरमांग मैं तेरेपै प्रसाद करनेवालाहूं यह प्रेमका काल प्राप्तहुआ है ८ तब बाणासुर कहने लगा कि हे विभो जो आप मानो तो अजर व अमर ऐसा मैं होजाऊं प्रथम यह वरदान करो ९ तब महादेव कहने लगे कि हे बाण तू देवताओं के समान है तेरी मृत्यु नहीं है अन्य वरको मांग मेरेसे तू अनुग्रह पानेके योग्य है १० तब बाणासुर कहनेलगा कि

जैसे लोहूसे भीजाहुआ व अतिपीडित व घाओंसे दुःखित ऐसा जो मैं नाचता हू जो ऐसे भक्तजन तेरे अगाडी नृत्यकरें तिन्हों के पुत्रकी उत्पत्ति होजावे ११ तब महादेव कहनेलगे भोजनको त्यागनेवाले व क्षमासे सयुक्त सत्य व आर्जव में परायण ऐसे मेरे भक्त जो नृत्य करेंगे तिन्होंके पुत्रकी उत्पत्ति निश्चय होजावेगी १२ फिर महादेवजी कहनेलगे हे बाण जो तेरे हृदयमें स्थितहो सो तीसरे वरको मेरे से माग हे पुत्र तेरे अर्थ मैं दूगा व तू सफल होजावेगा १३ तब बाणासुर कहनेलगा कि हे शिव जो मेरे चक्रके लगनेसे घोर व तीव्रपीडा होरही है यह शात होजावे तीसरा वर मैंने यह मागा १४ तब महादेवजी कहनेलगे कि हे दैत्यसत्तम सुदर्शनचक्र के काटने से जो घोररूपपीडा तेरे उपजी है वह तेरे शरीरमें नहीं रहेगी व तू वज्रवान् होजावेगा १५ फिर महादेवजी कहनेलगे हे असुर मनोवाछित चौथेवरको तेरे अर्थ मैं देताहू सो तू माग मैं तेरे से विमुख नहीं हू १६ तब बाणासुर कहनेलगा कि हे विभो प्रमथगण के वशमें महाकाल नामसे विख्यात प्रथम मैं बहुत से वर्षोंतक प्राप्तहू १७ वैशम्पायन कहनेलगे कि महादेवजी यह भी वरदान बाणासुरको देतेभये और फिर महादेवजी कहनेलगे कि मेरे आश्रयसे इन अगोंकरके दिव्यरूपवाला और पीडासे रहित १८ और सब प्रकारके भयोंसे रहित और अति कीर्त्तिवाला ऐसा तू होजायगा १९ परन्तु फिर भी मैं तेरेको वरदेताहू तू माग अर्थात् जो तेरे मनमें वाछितहो सो तू माग २० तब बाणासुर कहनेलगा कि हे देव सत्तम मेरे अगोंकी विरूपता मतरहे व दोबाहु होने पैभी अवरूपसे रहित मेरादेह मतरहे अर्थात् सुन्दररूपवाली देह होजावे २१ तब महादेवजी कहनेलगे हे दैत्यराज जो तू वाछित करताहे वह सम्पूर्ण तेरा होजावेगा व तू मेरा भक्तहै व मेरे को भक्तोंके अर्थ सर्वस्वदेना उचितहै २२ वैशम्पायन कहनेलगे पीछे समीपमें स्थितहुये बाणासुरको महादेवजी कहनेलगे जो मैंने कहाहै वह सम्पूर्ण तेरा सत्य होजावेगा २३ ऐसे कहके अपने गणोंमें सयुक्त महादेव सब प्राणियोंके देखतेहुये तिसजगह अन्तर्द्धानहोगये २४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरि०वंशपर्वणिवाणासुरवरप्रदानोनामैकसप्ताशीतितमोऽध्याय १८७॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे बहुतसे वरोंको प्राप्तहो प्रसन्नहुआ बाणासुर महा

कालत्व को प्राप्तहुआ महादेव के सग गमनकरताभया १ और युद्ध से निवृत्त हुआ श्रीकृष्ण भी नारदसे पूछनेलगा हे भगवन् नागोंसे बधाहुआ अनिरुद्ध कहा स्थितहै २ यह सुननेकी मेरी इच्छाहै व स्नेहसे गीला मेरामन होरहाहै व जबसे अनिरुद्ध हरागयाहै तबसे द्वारकावासी दुःखितहोरहे हैं ३ अब जिस अनिरुद्ध को जल्द छुटावेंगे जिसके अर्थ हम प्राप्तहुये हैं और अब नष्टशत्रुवाले अनिरुद्धको देखने की हम इच्छाकरते हैं ४ सो जहा वह अनिरुद्ध स्थितहै उस देशको तुम जानतेहो ऐसे श्रीकृष्णके वचनकोसुन नारदजी बोले ५ हे माधव नागों से बधाहुआ अनिरुद्ध कन्यापुरमें स्थितहै इसी अन्तरमें चित्रलेखा भी आके प्राप्तहुई ६ व कहनेलगी हे देव उत्तम पराक्रमवाला व दैत्योंका इन्द्र पेरो वाणासुरका यह अन्त पुरहै इसमें तुम सुखपूर्वक प्रवेशकरो ७ तब अनिरुद्धको छुटानेके अर्थ बलदेव गरुड़जी श्रीकृष्ण प्रद्युम्न नारद ये भीतर प्रवेश करतेभये ८ तब गरुड़जी को देखके जो अनिरुद्ध के शरीरको जो शररूप महासर्प वेष्टित कर रहेथे ९ वे सब देहसे निकस पृथ्वीके भीतर बड़तेभये व शर प्रकृतिमें स्थित रहे १० तब श्रीकृष्णने अनिरुद्धको देखा व स्पर्शकिया तब प्रसन्नहोके अञ्जली बाध अनिरुद्ध कहनेलगा ११ हे देव देव सदा युद्धमें तुम जीतनेवालेहो तुम्हारे सम्मुख इन्द्र भी युद्धमें स्थित होनेको समर्थ नहीं है १२ श्रीकृष्ण कहनेलगे हे अनिरुद्ध जल्द गरुड़पैचढ द्वारकापुरीको गमनकरें ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुन १३ ऊषाके सग स्थितहुआ अनिरुद्ध पराजित हुये वाणासुर को जानके बलदेवजीको व श्रीकृष्णको और गरुड़जी को १४ व चित्रवाणों को धारणकरने वाले पिताको वारम्बार प्रणाम करताभया १५ पीछे सखियों के गणों से परिवृत ऊषा अतिबलवाले बलदेवजी को व चार भुजावाले श्रीकृष्ण को १६ व असंख्यात गतिवाले गरुड़जी को प्रणामकर पीछे प्रद्युम्नजी को लज्जितहुई ऊषा प्रद्युम्नको प्रणाम करती भई १७ पीछे इन्द्रके वचनसे परम प्रकाशवाला व श्रीकृष्ण के समीप में स्थित ऐसे नारदमुनि हँसतेहुये फिर आके प्राप्तहो १८ शत्रुओं को जीतनेवाले गोविन्द की बड़ाई करतेभये व कहनेलगे कि हे गोविन्द अनिरुद्ध के समागमसे तू वृद्धि को प्राप्तहुआ यह बड़ी मंगलकी बातहै १९ पीछे अनिरुद्ध सहित चारों नारदमुनि को प्रणाम करते भये पीछे आशीर्वादों से चारोंको बढ़ाके नारदमुनि श्रीकृष्ण से कहनेलगे कि हे विभो वीर्याख्यनाम से

विख्यात विवाह अनिरुद्धका करो व विवाहके अनन्तर वरपक्षीय स्त्रियोंके परस्पर व्योहारको देखने की मेरी इच्छा होरही है २० पीछे नारद के वचनों को सुनके सब हँसनेलगे व श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे भगवन् आप जल्दकीजिये देरमत करो २१ पीछे इसी अन्तर में विवाह सम्बन्धी सब सामग्रियों को ग्रहणकर व श्रीकृष्णको नमस्कारकर कुभाण्ड प्राप्तहुआ २२ व कुभाण्ड कहनेलगा कि हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो तू अभयका देनेवालाहो व हे देव मैं तेरी शरणहुआहूं इसवास्ते प्रसन्नहो व यह तेरे अर्थ अजली है २३ सो नारद के वचन को सुन पहलेही श्रीकृष्ण कुम्भाण्ड के अर्थ अभय देतेभये २४ व कहनेलगे हे मन्त्रियों में श्रेष्ठ कुम्भाण्ड तेरे पै मैं प्रसन्नहुआ व तेरे सुकृतको मैं जानताहूं व जब बाणासुर शिवलोक को चलागया इसवास्ते इस देशका पति तू रहा २५ व तू बाणासुरका मन्त्री व ज्ञाति का पुरुष है इसवास्ते तेरे अर्थ मैं राज्यदिया सो मेरे आश्रयसे तू चिरकालतक जीवतारहो २६ ऐसे कुम्भाण्ड के अर्थ अभयदानकर ऊषाके संग अनिरुद्धका विवाह करानेलगे तब पीछे साक्षात् अग्निदेवभी आपही से अनिरुद्ध के विवाह में प्राप्तहुआ २७ व नक्षत्र भी शुभहोताभया और अप्सराओं के गणभी तहां आश्चर्य करने को प्राप्तभये २८ पीछे सुन्दर जल से स्नान व गहनों से अलकृत ऐसा अनिरुद्ध ऊषा भार्या के संग स्थितहुआ तब स्निग्ध और शुभ वाक्यों करके गन्धर्व और विद्याधरों के गण विवाह में शोभा करने के अर्थ गान करते भये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिविष्णुपर्व्वभाषायामनिरुद्धविवाहेऽष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८८॥

एकसौ नवासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी ने कहा कि हे शत्रुओं के जीतनेवाले जनमेजय अनिरुद्ध को विवाहकर १ पश्चात् अनिरुद्धिवाले व सब देवताओं में परिहृत व शत्रुओं के पुरोंको जीतनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण २ वरके देनेवाले महादेवजी को व पार्वतीजी और स्वामिकार्तिकजी इन्हों से आज्ञा लेकर शोणितपुर से गमन करने को चित्त धरतेभये पीछे द्वारका पुरी को चलतेहुये ३ शत्रुनाशक श्रीकृष्णजी को जान कर प्रीतिवर्द्धक कुम्भाण्ड वचन कहनेलगा ४ कि हे कमलनयन मधुसूदन कछु आज्ञा कीजिये परन्तु विनय है ५ बाणासुरकी बहुतसीगायें वरुणजी के

समीप में स्थित हैं हे माधव वे गायें अमृत के समान दूध देती हैं जिस दूध के पीनेसे अतिबलवान् और दुर्ज्जय ऐसा पुरुष होजाताहै ६ । ७ ऐसे कुम्भाड के वचनकोसुन श्रीकृष्णजी आनन्दितहो गमन करनेकी मनसाकर सबोंको गमन करनेवास्ते आज्ञा देतेभये ८ तब ब्रह्मलोक के वासियों सहित भगवान् ब्रह्माजी श्रीकृष्ण को वरब्रूहि ऐसे कहकर ब्रह्मलोकको जातेभये ९ व मरुद्गणों से संयुक्त इन्द्रभी श्रीकृष्णको प्यार देनेवास्ते व श्रीकृष्णजी के संग द्वारकाके सम्मुख गमन करनेलगे १० व अपनी माता से प्यारकर और सखी गणों से परिवृत ऊषा भी मयूर वाहनपर चढ़ द्वारकाको गमन करतीभई ११ पीछे बलदेवजी श्रीकृष्णजी प्रद्युम्नजी अनिरुद्ध जी ये चारों गरुड़ वाहनपर सवार होतेभये १२ तब सब प- क्षियों में श्रेष्ठ और अति तेजवाला गरुड़ १३ रास्ते के वृक्षोंको गिराताहुआ व पृथ्वीको कँपाताहुआ और सब दिशाओंको व्याकुल करताहुआ चलनेलगा तब धूली से आकाश में अँधेरा भया १४ व अल्प तेजवाला सूर्य भी होगया ऐसे बहुत दूर गमन करतेहुये १५ चारों पुरुष पश्चिमदिशा में जाके १६ सुंदर दूधको देनेवाली गायोंको देखतेभये १७ व कुम्भाडके वचन के अनुसार जानके तब प्रहरण करनेवालों में उत्तम और तत्त्वसे अर्थको जाननेवाले १८ श्रीकृष्ण जी बाणासुरकी गायों को सुन ग्रहण करनेको मनकर गरुड़ पे स्थितहुये और सब लोकके आदि और अविनाशी १९ ऐसे श्रीकृष्ण गरुड़से कहनेलगे कि हे गरुड़ जहां बाणासुरकी गायों का समूहहै तहां गमनकरो २० क्योंकि सत्यभामा ने मेरेसे बाणगाय मांगी है तिसको तुम लाओ २१ क्योंकि इन बाणगायों के दूधको पीनेसे असुर वृद्धापाको प्राप्त नहीं होते हैं २२ व इस दूधके पीने से ज्वर पीड़ित मनुष्य अर्थात् प्राणी तत्काल ज्वरसे रहित होजाते हैं इसवास्ते उनगा- योंको प्राप्तकर अगर कार्य्यका लोप नहीं होवे तो २३ व जो कार्य्यका लोपहोना मालूमपड़े तो गायोंके लाने में चित्तको मतधर ऐसे मेरेको सत्यभामाने कहाहै सो वे गायें मैंने जानी हैं २४ तब गरुड़ने कहा कि हे स्वामिन् ये सब गायें मेरे को देखके वरुणके लोकमें प्राप्तहोती हैं इसवास्ते जल्द कार्यकरना उचितहै २५ ऐसे गरुड़जी कहकर अपने पंखकी हवासे समुद्रको क्षोभितकर वरुणके स्थान में प्रवेश करताभया २६ तब वेगसे आतेहुये गरुड़जीको वरुणके स्थान में देख वरुणलोक में बसनेवाले गण भ्रमको प्राप्तहो चलनेलगे २७ पश्चात् वरुण की

समस्तसेना अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहणकर २८ श्री कृष्ण के सम्मुख आये तब श्रीकृष्णके सामने उससेना का और गरुडजीका युद्ध होनेलगा २६ और युद्धमें स्थितहुये वरुण गणों में से हजारहोंके शिर श्रीकृष्णजीने काट दिये ३० तब ऐसे प्रहतहुये सेनागण वरुणालय में प्राप्तहोनेलगी अर्थात् ६६००० हजार रथोंमें अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहण करेहुये वरुणलोक वासियोंकी सेना ३१ श्रीकृष्णके वाणों से चारोंतर्फ पीडित और भग्न होतीहुई कहीं भी रक्षाको प्राप्त नहीं हुई ३२ पीछे अति बलवाले और शूरवीर ऐसे बलदेवजी श्रीकृष्ण प्रद्युम्न अनिरुद्ध गरुड इन्होंने अनेकप्रकारके तीक्ष्णवाणों से बहुतसी सेनाका नाश किया ३३ तब अक्लिष्ट कर्मवाले श्रीकृष्णके हाथ से अपनी सेनाका नाश देख ३४ सभ्रात हुआ वरुणदेव जहा श्रीकृष्ण स्थित थे तहां गमन करनेलगा ३५ और ऋषि देव गधर्व अप्सराओंके गण इन्होंसे बहुत प्रकार स्तुतिको प्राप्तहोता हुआ ३६ व अति प्रियमान और तेज सयुक्त व रगमें सफेद व पानीके किणकों को झिरानाहुआ ३७ ऐसे छत्रको धारण करेहुये और धनुषको हाथमें धारणकर और अपने बेटे और पोतोंकी सेनासे सयुक्तहो ३८ व अति क्रोधको धारणकरताहुआ ऐसा वरुण सावधानहोके ३६ धनुषको टंकार कर युद्धके अर्थ बलदेव श्रीकृष्ण आदिको बुलाताभया ४० व शखध्वनिकर शत्रुओंके सम्मुख दौड ४१ वाणों के जालों मे आच्छादित करनेलगा जैसे श्रीकृष्णको महादेवजी तैसे ४२ पश्चात् पाचजन्य शखको बजाके श्रीकृष्णजी भी हस्तलाघवतासे वाणों के जालोंकर सबदिशाओं को आच्छादित करनेलगे ४३ पश्चात् अनेकप्रकारों के वाणों मे युद्धमें पीडितहुआ वरुण श्रीकृष्णको आश्चर्य दिखाताहुआ संग युद्ध करताभया ४४ पश्चात् युद्धमें स्थित श्रीकृष्णजी घोररूप वैष्णवास्त्रको अभिमन्त्रितकर उत्तम बुद्धिवाले वरुणजी के सम्मुख कहनेलगे ४५ कि यह महाघोररूप और शत्रुओं को मर्दन करनेवाला ऐसा वैष्णवास्त्र तेरे वधकरने को मैंने तय्यार कियाहै अब तू ठहर ४६ व स्थिरभावको प्राप्तहो ऐसेसुन वरुण भी वारुणास्त्र मे वैष्णवास्त्रको सयुक्तकर अति शब्द करनेलगा ४७ सो हे युद्धको जीतनेवाले जनमेजय ऐसे रचेहुये वारुणास्त्र मे झिरतेहुये जल वैष्णवास्त्र की अग्निको शान्त करनेलगे ४८ परन्तु वैष्णवास्त्र की अग्नि शान्त नहींहुई बल्कि वरुणलोक के वासी सब दग्धहोने लगे ४६ सबदिशाओं में दौडनेलगे तब प्र-

समीप में स्थित हैं हे माधव वे गायें अमृत के समान दूध देती हैं जिस दूध के पीनेसे अतिवलवान् और दुर्ज्जय ऐसा पुरुष होजाताहै ६। ७ ऐसे कुम्भाड के वचनकोसुन श्रीकृष्णजी आनन्दितहो गमन करनेकी मनसाकर सबोंको गमन करनेवास्ते आज्ञा देतेभये ८ तब ब्रह्मलोक के वासियों सहित भगवान् ब्रह्माजी श्रीकृष्ण को वरब्रूहि ऐसे कहकर ब्रह्मलोकको जातेभये ९ व मरुद्गणों से संयुक्त इन्द्रभी श्रीकृष्णको प्यार देनेवास्ते व श्रीकृष्णजी के संग द्वारकाकेसम्मुख गमन करनेलगे १० व अपनी माता से प्यारकर और सखी गणों से परिवृत ऊषा भी मयूर वाहनपर चढ द्वारकाको गमन करतीभई ११ पीछे वलदेवजी श्रीकृष्णजी प्रद्युम्नजी अनिरुद्ध जी ये चारों गरुड़ वाहनपर सवार होतेभये १२ तब सब पक्षियों में श्रेष्ठ और अति तेजवाला गरुड़ १३ रास्ते के वृक्षोंको गिराताहुआ व पृथ्वीको कँपाताहुआ और सब दिशाओंको व्याकुल करताहुआ चलनेलगा तब धूली से आकाश में अँधेरा भया १४ व अल्प तेजवाला सूर्य भी होगया ऐसे बहुत दूर गमन करतेहुये १५ चारों पुरुष पश्चिमदिशा में जाके १६ सुंदर दूधको देनेवाली गायोंको देखतेभये १७ व कुम्भाडके वचन के अनुसार जानके तब प्रहरण करनेवालों में उत्तम और तत्त्वसे अर्थको जाननेवाले १८ श्रीकृष्ण जी वाणासुरकी गायों को सुन ग्रहण करनेको मनकर गरुड़ पै स्थितहुये और सब लोकके आदि और अविनाशी १९ ऐसे श्रीकृष्ण गरुड़से कहनेलगे कि हे गरुड़ जहा वाणासुरकी गायों का समूहहै तहा गमनकरो २० क्योंकि सत्यभामा ने मेरेसे वाणगाय मागी है तिसको तुम लाओ २१ क्योंकि इन वाणगायों के दूधको पीनेसे असुर बुढापाको प्राप्त नहीं होते हैं २२ व इस दूधके पीने से ज्वर पीडित मनुष्य अर्थात् प्राणी तत्काल ज्वरसे रहित होजाते हैं इसवास्ते उनगायोंको प्राप्तकर अगर कार्य्यका लोप नहीं होवै तो २३ व जो कार्य्यका लोपहोता मालूमपड़े तो गायोंके लाने में चित्तको मतधर ऐसे मेरेको सत्यभामाने कहाहै सो वे गायें मैंने जानी हैं २४ तब गरुडने कहा कि हे स्वामिन् ये सब गायें मेरे को देखके वरुणके लोकमें प्राप्तहोती हैं इसवास्ते जल्द कार्यकरना उचितहै २५ ऐसे गरुडजी कहकर अपने पखकी हवासे समुद्रको क्षोभितकरा वरुणके स्थान में प्रवेश करताभया २६ तब वेगसे आतेहुये गरुड़जीको वरुणके स्थानमें देख वरुणलोक में बसनेवाले गण भ्रमको प्राप्तहो चलनेलगे २७ पश्चात् वरुण की

समस्तसेना अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहणकर २८ श्री कृष्ण के सम्मुख आये तब श्रीकृष्णके सामने उससेना का और गरुडजीका युद्ध होनेलगा २६ और युद्धमें स्थितहुये वरुण गणों में से हजारहोंके शिर श्रीकृष्णजीने काट दिये ३० तब ऐसे महतहुये सेनागण वरुणालय में प्राप्तहोनेलगी अर्थात् ६६००० हजार रथोंमें अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहण करेहुये वरुणलोक वासियोंकी सेना ३१ श्रीकृष्णके वाणों से चारोंतर्फ पीडित और भग्न होतीहुई कहीं भी रक्षाको प्राप्त नहीं हुई ३२ पीछे अति वलवाले और शूरवीर ऐसे वलदेवजी श्रीकृष्ण प्रद्युम्न अनिरुद्ध गरुड इन्होंने अनेकप्रकारके तीक्ष्णवाणों से वहुतसी सेनाका नाश किया ३३ तब अक्लिष्ट कर्मवाले श्रीकृष्णके हाथसे अपनी सेनाका नाश देख ३४ सम्भ्रांत हुआ वरुणदेव जहा श्रीकृष्ण स्थित थे तहां गमन करनेलगा ३५ और ऋषि देव गन्धर्व अप्सराओंके गण इन्होंसे वहुत प्रकार स्तुतिको प्राप्तहोता हुआ ३६ व अति प्रियमान और तेज सयुक्त व रंगमें सफेद व पानीके किणकों को भिगताहुआ ३७ ऐसे छत्रको धारण करेहुये और धनुषको हाथमें धारणकर और अपने वेटे और पोतोंकी सेनासे सयुक्तहो ३८ व अति क्रोधको धारणक- रताहुआ ऐसा वरुण सावधानहोके ३६ धनुषको टंकार कर युद्धके अर्थ वलदेव श्रीकृष्ण आदिको वुलाताभया ४० व शखध्वनिकर शत्रुओंके सम्मुख दौड ४१ वाणों के जालों से आच्छादित करनेलगा जैसे श्रीकृष्णको महादेवजी तैसे ४२ पश्चात् पांचजन्य शखको वजाके श्रीकृष्णजी भी हस्तलाघवतासे वाणों के जा- लोंकर सवदिशाओं को आच्छादित करनेलगे ४३ पश्चात् अनेकप्रकारों के गणों से युद्धमें पीड़ितहुआ वरुण श्रीकृष्णको आश्चर्य दिखाताहुआ सग युद्ध करताभया ४४ पश्चात् युद्धमें स्थित श्रीकृष्णजी घोररूप वैष्णवास्त्रको अभि मन्त्रितकर उग्र वुद्धिवाले वरुणजी के सम्मुख कहनेलगे ४५ कि यह महा- घोररूप और शत्रुओं को मर्दन करनेवाला ऐसा वैष्णवास्त्र तेरे वधकरने को मैंने तय्यार कियाहै अव तू ठहर ४६ व स्थिरभावको प्राप्तहो ऐसेसुन वरुण भी वारुणास्त्र से वैष्णवास्त्रको सयुक्तकर अति शब्द करनेलगा ४७ सो हे युद्धको जीतनेवाले जनमेजय ऐसे रचेहुये वारुणास्त्र से भिगतेहुये जल वैष्णवास्त्र की अग्निको शान्तकरनेलगे ४८ परन्तु वैष्णवास्त्र की अग्नि शान्त नहींहुई वरिक वरुणलोक के वासी सव दग्धहोने हुये ४६ सवदिशाओं में दौड़नेलगे तव प्र-

समीप में स्थित हैं हे माधव वे गायें अमृत के समान दूध देती हैं जिस दूध के पीनेसे अतिवलवान् और दुर्ज्जय ऐसा पुरुष होजाताहै ६। ७ ऐसे कुम्भाड के वचनकोसुन श्रीकृष्णजी आनन्दितहो गमन करनेकी मनसाकर सबोंको गमन करनेवास्ते आज्ञा देतेभये ८ तब ब्रह्मलोक के वासियों सहित भगवान् ब्रह्माजी श्रीकृष्ण को वरब्रूहि ऐसे कहकर ब्रह्मलोकको जातेभये ९ व मरुद्गणों से संयुक्त इन्द्रभी श्रीकृष्णको प्यार देनेवास्ते व श्रीकृष्णजी के संग द्वारकाकेसम्मुख गमन करनेलगे १० व अपनी माता से प्यारकर और सखी गणों से परिवृत ऊषा भी मयूर वाहनपर चढ़ द्वारकाको गमन करतीभई ११ पीछे वलदेवजी श्रीकृष्णजी प्रद्युम्नजी अनिरुद्ध जी ये चारों गरुड़ वाहनपर सवार होतेभये १२ तब सब पक्षियों में श्रेष्ठ और अति तेजवाला गरुड़ १३ रास्ते के वृक्षोंको गिराताहुआ व पृथ्वीको कँपाताहुआ और सब दिशाओंको व्याकुल करताहुआ चलनेलगा तब धूली से आकाश में अँधेरा भया १४ व अल्प तेजवाला सूर्य भी होगया ऐसे बहुत दूर गमन करतेहुये १५ चारों पुरुष पश्चिमदिशा में जाके १६ सुंदर दूधको देनेवाली गायोंको देखतेभये १७ व कुम्भांडके वचन के अनुसार जानके तब ग्रहण करनेवालों में उत्तम और तत्त्वसे अर्थको जाननेवाले १८ श्रीकृष्ण जी वाणासुरकी गायों को सुन ग्रहण करनेको मनकर गरुड पै स्थितहुये और सब लोकके आदि और अविनाशी १९ ऐसे श्रीकृष्ण गरुड़से कहनेलगे कि हे गरुड़ जहां वाणासुरकी गायों का समूहहै तहां गमनकरो २० क्योंकि सत्यभामा ने मेरेसे वाणगाय मांगी है तिसको तुम लाओ २१ क्योंकि इन वाणगायों के दूधको पीनेसे असुर वृद्धापाको प्राप्त नहीं होते हैं २२ व इस दूधके पीने से ज्वर पीडित मनुष्य अर्थात् प्राणी तत्काल ज्वरसे रहित होजाते हैं इसवास्ते उनगायोंको प्राप्तकर अगर कार्य्यका लोप नहीं होवे तो २३ व जो कार्य्यका लोपहोता मालूमपड़े तो गायोंके लाने में चित्तको मतधर ऐसे मेरेको सत्यभामाने कहाहै सो वे गायें मैंने जानी हैं २४ तब गरुडने कहा कि हे स्वामिन् ये सब गायें मेरेको देखके वरुणके लोकमें प्राप्तहोती हैं इसवास्ते जल्द कार्य करना उचितहै २५ ऐसे गरुड़जी कहकर अपने पक्षकी हवासे समुद्रको क्षोभितकरा वरुणके स्थान में प्रवेश करताभया २६ तब वेगसे आतेहुये गरुड़जीको वरुणके स्थानमें देख वरुणलोक में वसनेवाले गण भ्रमको प्राप्तहो चलनेलगे २७ पश्चात् वरुण की

समस्तसेना अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहणकर २८ श्री कृष्ण के सम्मुख आये तब श्रीकृष्णके सामने उससेना का और गरुडजीका युद्ध होनेलगा २९ और युद्धमें स्थितहुये वरुण गणों में से हजारहोंके शिर श्रीकृष्णजीने काट दिये ३० तब ऐसे मृतहुये सेनागण वरुणालय में प्राप्तहोनेलगी अर्थात् ६६००० हजार रथोंमें अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहण करेहुये वरुणलोक वासियोंकी सेना ३१ श्रीकृष्णके बाणों से चारोंतर्फ पीडित और भग्न होतीहुई कहीं भी रक्षाको प्राप्त नहीं हुई ३२ पीछे अति बलवाले और शूरवीर ऐसे बलदेवजी श्रीकृष्ण प्रद्युम्न अनिरुद्ध गरुड़ इन्होंने अनेकप्रकारके तीक्ष्णबाणों से बहुतसी सेनाका नाश किया ३३ तब अक्लिष्ट कर्मवाले श्रीकृष्णके हाथ से अपनी सेनाका नाश देख ३४ सभ्रात हुआ वरुणदेव जहा श्रीकृष्ण स्थित थे तहा गमन करनेलगा ३५ और ऋषि देव गन्धर्व अप्सराओंके गण इन्होंसे बहुत प्रकार स्तुतिको प्राप्तहोता हुआ ३६ व अति प्रियमान और तेज सयुक्त व रगमें सफेद व पानीके किणकों को झिरताहुआ ३७ ऐसे छत्रको धारण करेहुये और धनुषको हाथमें धारणकर और अपने बेटे और पोतोंकी सेनासे सयुक्तहो ३८ व अति क्रोधको धारणकरताहुआ ऐसा वरुण सावधानहोके ३९ धनुषको टंकार कर युद्धके अर्थ बलदेव श्रीकृष्ण आदिको बुलाताभया ४० व शखध्वनिकर शत्रुओंके सम्मुख दौड़ ४१ बाणों के जालों से आच्छादित करनेलगा जैसे श्रीकृष्णको महादेवजी तैसे ४२ पश्चात् पाचजन्य शखको बजाके श्रीकृष्णजी भी हस्तलाघवतासे बाणों के जालोंकर सबदिशाओं को आच्छादित करनेलगे ४३ पश्चात् अनेकप्रकारों के बाणों से युद्धमें पीडितहुआ वरुण श्रीकृष्णको आश्चर्य दिखाताहुआ सग युद्ध करताभया ४४ पश्चात् युद्धमें स्थित श्रीकृष्णजी घोररूप वैष्णवास्त्रको अभिमन्त्रितकर उत्तम बुद्धिवाले वरुणजी के सम्मुख कहनेलगे ४५ कि यह महाघोररूप और शत्रुओं को मर्दन करनेवाला ऐसा वैष्णवास्त्र तेरे वधकरने को मैंने तय्यार कियाहै अब तू ठहर ४६ व स्थिरभावको प्राप्तहो ऐसेसुन वरुण भी वारुणास्त्र से वैष्णवास्त्रको सयुक्तकर अति शब्द करनेलगा ४७ सो हे युद्धको जीतनेवाले जनमेजय ऐसे रचेहुये वारुणास्त्र से झिरतेहुये जल वैष्णवास्त्र की अग्निको शान्तकरनेलगे ४८ परन्तु वैष्णवास्त्र की अग्नि शान्त नहींहुई वल्कि वरुणलोक के वासी सब दग्धहोते हुये ४९ सबदिशाओं में दौड़नेलगे तब प्र-

ज्वलितरूप वैष्णवास्त्रको देख वरुण श्रीकृष्णजी से ऐसे कहनेलगा ५० कि हे
महाभाग अव्यक्तरूप और व्यक्त लक्षणोंवाली अपनी पूर्वकी प्रकृतिका स्मरण
करो और तमोगुणको दूरकरो और आप तमोगुणसे कैसे मोहित होते हैं ५१
व सत्त्वगुण में स्थितहो हे योगेश्वर महामते आप निरन्तर आशीर्वाद रूप हैं
इसवास्ते पञ्चमहाभूतोंसे उपजे दोषोंको और अहंकारको त्यागो ५२ और यह
जो आपकी वैष्णवीमूर्त्ति है इससे हे विभो मैं ज्येष्ठहों अतएव बड़के भाव से
मानकरने लायक मुझको कैसे दग्धकरनेकी इच्छा करतेहो ५३ व अग्नि अग्नि
के प्रति पराक्रम नहीं करताहै इसवास्ते हे योद्धाओं में श्रेष्ठ आप कोपको त्यागो
और तेरे विषे हम प्रभु अर्थात् समर्थ नहीं हैं क्योंकि तुम चराचर जगत् के
उत्पत्ति स्थानहो अर्थात् आपसे सबजगत् उपजाहै ५४ व पहलेही आपने बीज
धर्मवाली और पूर्वधर्म के आश्रयभूत और विकारवाली ऐसी प्रकृति रची है ५५
व आदि में स्वभाव से अग्नि गुण संयुक्त और सौम्य गुण संयुक्त सब जगत्
आपने रचाहै इसवास्ते मेरे विषे कैसे आप मोहको प्राप्तहोते हैं ५६ और आप
अजेय अर्थात् जीतने में नहीं आते हैं और निरन्तररूप हैं व आप दिव्यस्व
रूपहैं व स्वत होनेवाले हैं व प्राणियों को उपजानेवाले हैं आप अविनाशी हैं
व अक्षयरूपहैं व भावरूपहैं व अभावरूपहैं ५७ इसवास्ते हे महाप्रकाशवाले मेरी
रक्षाकरो हे अनघ मैं आपके रक्षाकरने के योग्यहूं व आपको मेरा प्रणामहो व
लोकों के आप आदिकर्त्ताहो आपने यह बहुत कुछकियाहै ५८ सो हे महादेव
आप यह बालकों की तरह क्या क्रीडाकरते हैं और मैं आपका प्रकृति से वैरी
नहींहूं और प्रकृतिको दूषित करनेवाला भी नहींहूं ५९ व जो प्रकृति विकारोंको
उपजाती है हे पुरुषर्षभ तिन विकारों को शान्त करनेके वास्ते यथार्थकर आप
वर्त्ततेहो ६० व हे अनघ आपके विकार भी विकारके अर्थ नहीं हैं क्योंकि अ-
धर्मको जाननेवाले और मन्द ऐसे भावोंको निकारित करतेहो ६१ व जब यह
प्रकृति रजोगुण से रचीहुई और तमोगुण से संयुक्त होती है तब मोह उपजता
है ६२ व आप परावरके जाननेवाले, सर्वज्ञ व ईश्वरहो इसमें प्रजापतिकी तरह
हमको कैसे मोहित करतेहो ऐसे वरुण के वचनों को सुन लोक रक्षक, भावों के
ज्ञाता, सर्वज्ञ और धीर ऐसे श्रीकृष्णजी प्रसन्नहो ६३ हँसतेहुये कहनेलगे कि
हे देव हे भीमविक्रम शान्ति के वास्ते मेरेको गायों को दीजिये ६४ ऐसे कृष्ण

के वचनको सुन बोलने में अति कुशल वरुण फिर कहनेलगा कि हे मधुसूदन मेरे वचन को सुनो ६५ वरुण कहते हैं हे देव पहले मैंने बाणासुर के साथ प्रतिज्ञाकी है सो उस प्रतिज्ञा को कैसे मिथ्याकरूं ६६ व आप सबनरहभी प्रतिज्ञा के भेदोंको जानतेहो कि प्रतिज्ञाकी हानि सत्पुरुषों को अच्छी नहीं है ६७ व प्रतिज्ञाको छोडनेवाला मनुष्य धर्मों से रहितहोके हे मधुसूदन उत्तम लोकोंको प्राप्तनहीं होताहै किन्तु महापापी होजाताहै ६८ इसवास्ते हे मधुसूदन मेरे पर प्रसन्नहो और मेरे धर्मका लोप नहीं हो और हे माधव प्रतिज्ञाकी हानि करानेके वास्ते मेरेको युक्त करने योग्य आप नहीं हो ६९ व हे वृषभेक्षण जीवताहुआ मैं गाय नहीं दूंगा किंतु मेरेको मारकर गायोंको लेजाओ ऐसी प्रतिज्ञा मैंने पहले करी है ७० सो हे मधुसूदन ऐसे समय आपके प्रति मैंने कही है हे महाबाहो यह सत्य रहनी चाहिये हे सुरेश्वर मिथ्या नहीं होगी ७१ व हे मधुसूदन जो मेरे पै अनुग्रहकरो तो मेरी रक्षाकरो अगर गायों के लेजानेकी इच्छाहो तो हे महाभुज मेरेको मारकर लेजाओ ७२ वैशम्पायन कहते हैं कि ऐसे वरुणके वचनको सुन श्रीकृष्णजी गाय सम्बन्धी वादको दूर करतेभये ७३ व हँसके ऐसे कहनेलगे कि हे वरुण जो आपने बाणासुरके संग प्रतिज्ञाकी है ७४ इसवास्ते आप छोडजाते हो और अनेक प्रकारके प्रियरूप वचन आपने कहे तिन्हों से आनंदित हुआ मैं हे वरुण हे मित्रो तेरेसंग कैसे बुरापन करूं ७५ इसवास्ते हे वरुण अपने स्थानपै जाओ व आप सत्यवादी हो ७६ व तेरे प्यारके अर्थ मैंने बाण गाय भी छोडी है इसमें संशय नहीं पश्चात् तुरही भेरी आदिको बजवाता हुआ वरुण ७७ अर्घ ग्रहणकर श्रीकृष्णकी पूजा करनेलगा तब वरुणके दिये हुये अर्घ को ग्रहणकर ७८ श्रीकृष्णजी बलदेवजी की पूजा करनेलगे पश्चात् वरुणको अर्घ अभय देकर ७९ अति प्रतापवाले व इन्द्रकी सहायतामें युक्त ऐसे श्रीकृष्णजी द्वारकापुरी के सम्मुख गमन करतेभये व तहां देव मरुद्गण साध्य सिद्ध चारण ८० गन्धर्व अप्सरा किन्नर ये सब आकाशमार्ग से श्रीकृष्णजी के संग चलतेभये ८१ व आदित्य संज्ञक देवते सबवसु सरुद्र अग्निनीकुमार यक्ष राक्षस विद्याधरों के गण व शेष रहे सिद्धचारण येभी ८२ सब श्रीकृष्णजी के संग आकाशमार्गसे चलतेभये ८३ व यशको तथा विज्ञानको प्रकाश करनेवाले व महाभाग ऐसे नारदजी भी द्वारका के प्रति गमन करतेभये ८४ व बाणासुर

का जीतना और वरुणके संग प्यारका करना इससे वहुत प्रसन्नहोतेभये ८५ व
कैलासके शिखरके समान सुन्दर व ऊचे स्थानों से संयुक्त द्वारकाको देख ८६
दूरसेही श्रीकृष्णजी पाचजन्य शखको वजानेलगे क्योंकि द्वारकापुरी वासियों
को संज्ञा उपजानेके अर्थ ८७ व देवताओं का आगमन तथा पाचजन्य शखके
शब्दको सुन द्वारकापुरी में अति आनन्द होनेलगा ८८ व पूर्णकलश धानकी
खील अनेक प्रकारके फूलोंकी माला इन्होंसे द्वारकापुरी के दरवाजे सजाये गये
८९ व पुरीकी सवगलियों में पानीका छिड़काव करायागया और शोभायमान
वहुत प्रकारके रत्नोंसे द्वारकापुरी शोभितकी गई व द्वारकापुरी में प्रवेश करतेहुये
श्रीकृष्णजीके अर्थ उत्तम कुलके ब्राह्मण अर्घको ग्रहणकर ९० अनेक प्रकारके
जयशब्दों से गरुड़जी पैं स्थित नीलेपर्व्वत के समान कातिवाले श्रीकृष्णजी
को पूजनेलगे ९१ और प्रणाम करनेलगे पश्चात् क्रमसे तीनों वर्णके मनुष्यभी
श्रीकृष्णजी को पूजतेभये ९२ व ऋषि देवगण गधर्व चारण ये सव द्वारकापुरी
के समीपमें स्थित ९३ श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगे तव सव यदुवशी मनुष्य इस
आश्चर्यको देख ९४ तथा अति वलवाले वाणासुर को जीतके आतेहुये श्रीकृ
ष्णजीको देख अति आनन्दित होतेभये ९५ व द्वारकावासियों के मुखोंसे अ-
नेकप्रकारकी वाणी निकसनेलगी ९६ कि वहुत दूरगमनकर गरुडजी पैं चढ़ेहुये
श्रीकृष्णजी को आतेहुये देख ऐसे कहनेलगे हमारेको धन्यहै और अति अनु
गृहीतहै जिन्होंका स्वामी ९७ व रक्षिता व दीर्घवाहु व महावलवन्त ऐसे श्री-
कृष्णजी दुर्जयरूप वाणासुरको जीतकर गरुडपर सवारहो ९८ हमारे मनोंको
आनन्दित करतेहुये प्राप्तहुये उत्तम कुशलताकी वातहै ऐसे वचन वोलतेहुये
द्वारका वासियों के महारथों के समूह ९९ श्रीकृष्णजी के मकान में प्रवेश कर-
नेलगे तव गरुड़ पर से श्रीकृष्ण वलदेव १०० प्रद्युम्न अनिरुद्ध ये सव उतर अ-
पने अपने गृहमें प्रवेश करतेभये पश्चात् आकाशमार्ग में विचरते हुये देवतों
के १०१ नानारूप वाले व हंस ऋषभ मृग हाथी घोड़ा सारस मोर १०२ इन्होंसे
युक्त वा प्रकाशमान ऐसे हजारहों विमान आकाशमें स्थित दीखतेभये १०३ तव
श्रीकृष्णजी हजारहों द्वारकापुरी के वालकोंको व प्रद्युम्नादि सवोंको प्रियवाणी
से कहनेलगे १०४ कि सव रुद्र और सव आदित्य और सव वसु अश्विनीकुमार
साध्यदेवता इनआदि सव ये हैं इन्होंको यथाक्रमसे प्रणामकरो १०५ व हजार नेत्रों

वाले और महाभाग्यवाले व दैत्योंको भय देनेवाले व हाथी पै सवार होनेवाले और अपने गणों से सहित ऐसे इन्द्रजी को भी प्रणामकरो १०६ व महाभाग्य वाले और महात्मा ऐसे भृगु अंगिरा आदि सात ऋषियों को भी यथाक्रमसे प्रणामकरो १०७ व चक्रको धारण करनेवाले ये सब स्थितहैं इन्हों को भी प्रणाम करो और सब समुद्र सब ह्रद दिशा और विदिशा मेरे प्यारके वास्ते जो प्राप्तहुये हैं इनसबों को दिशा और विदिशाको भी प्रणामकरो १०८ व अति बलवाले वासुकीसे आदिले सब सर्प्प १०९ व सबप्रकार की गायें मेरे प्यारके वास्ते प्राप्त हुई हैं इनसबोंको भी प्रणामकरो और सत्ताईस नक्षत्रोंकरके सहित सबप्रकारके तारागण और यक्ष राक्षस किन्नर ११० ये सब मेरे प्रातके वास्ते जो प्राप्तहुये हैं इनसबों को भी प्रणामकरो १११ ऐसे श्रीकृष्णजी के वचनको सुनके विनयमें स्थित सब बालक यथाक्रमसे सब देवताओंको नमस्कार करतेभये ११२ व सब देवताओंको देखकर सब द्वारकावासी आश्चर्य्य में प्राप्तहो पूजाके अर्थ सब सामग्रीको इकट्ठीकर तत्काल प्राप्तहोते भये और ऐसे कहनेलगे बड़ा आश्चर्य्य है ११३। ११४ कि श्रीकृष्णके सकाशते सब देवताओंके दर्शन प्राप्तहुये इसवाणी को कहके पीछे चन्दनका बुरादा फूलों की गन्ध इन्हों से द्वारकावासी सब देवताओंको पूजनेलगे ११५ व धानकी खील और नमस्कार धूपवाणी बुद्धि नियम इन्होंसेभी देवताओंको पूजनेलगे ११६ पश्चात् आहुक वसुदेव साम्ब सात्यकी उल्मुख विपृथु श्रीकृष्ण बलदेवजी अक्रूर निशठ इनसबों से मिलकर ११७ तथा इन सबोंके मस्तकको सूंघकर तथा ऐसेही अंधक यादवका सम्मानकर सब यादवों के प्रति इन्द्र ऐसे कहनेलगा ११८ कि यह श्रीकृष्ण क्षणभर में अपने पौरुषसे यशको बढ़ातेहुये महादेवजी तथा स्वामिकार्त्तिकके सम्मुख ११९ बाणासुरको जीतके और उस राक्षसकी हजार बाहुओं को काट दोबाहु अवशेष रख द्वारकापुरीमें प्राप्तहुये हैं १२० और जिसकार्य के वास्ते मनुष्यों में महात्मा श्रीकृष्णजी का जन्महै सो सबको विदितहै १२१ इससे हम सबोंके शोक नष्टहोगये इसवास्ते माध्वीक मदिराको पानकर सब मनुष्य प्रीतिपूर्व्वक रमणकरो १२२ व विषयोंमें आसक्तहो कालका निर्वाहकरो और इसमहात्मा श्रीकृष्णजीके प्रताप से १२३ हम सब देवताभी सुखपूर्व्वक रमणकरेंगे ऐसे दैत्यों को नाश करनेवाले श्रीकृष्णजीकी स्तुति करके १२४ इन्द्र पीछे सब देवगणों से परिवृत और महा-

भाग ऐसे श्रीकृष्णजी को पूछ और लोकों से नमस्कृतरूप श्रीकृष्णजी से मिलापकर १२५ देवते और मरुद्गणोंसे सहित इन्द्रभी स्वर्गलोक को गमन करते भये १२६ पश्चात् महात्मारूप सब ऋषिभी जयरूप आशीर्वाद देकर अपने २ स्थानोंको गमन करतेभये पीछे यक्ष राक्षस किन्नर ये भी अपने अपने स्थानोंमें गमन करतेभये १२७ जब इन्द्र स्वर्गलोकको चलेगये तब अतिबलवत श्रीकृष्णजी सबों से कुशलता पूछकर १२८ पीछे द्वारकापुरी में सब कामार्थ से और शोभा से संयुक्त १२९ श्रीकृष्णजी सब यादवों के संग रमण करतेभये १३० ॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेखिलेषुहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायामऊननवत्यधिकशततमोऽध्यायः १८९ ॥

एकसौनब्बेका अध्याय ॥

वैशम्पायनने कहा कि पीछे महाबाहु और आनन्द मे उत्फुल्लनयनवाला ऐसा आहुक महाद्युतिवाले श्रीकृष्णजी से कहनेलगा कि हे यदुनन्दन श्रवण करो १ अब अनिरुद्धके विवाहका उत्सव करो क्योंकि सब प्रियों से सहित अनिरुद्धजी का आगमन कुशलतासे भया है २ और महा भाग्यवाली ऊषाभी अपनी सखियोंसे परिवारितहुई अनिरुद्धके संग प्रीतिसे रमणकरो ३ और कुम्भाण्डकी पुत्री रामाको ऊषाके सखीमंडलमें प्रवेशकरो ४ तथा यही रामा साम्बके अर्थ दीजावे व शेषरहीं सबकन्या सब कुमारों के अर्थ यथाक्रमसे देनीचाहिये ५ व अनिरुद्ध के स्थान में तथा श्रीप्रद्युम्नके स्थानमें उत्सव का आरंभकरो ६ व इसपुरमें सबमदवाली नारी बाजा बजावो और अप्सरा नृत्यकरो और शेषरहीं अप्सरा गानकरो ७ व कोईक प्रसन्नहुई आपस में प्रिय वचनकहो और कितनीक स्त्री माला और सुन्दर वस्त्रोंको धारण करके क्रीडा करतीहुई ८ आपसमें सम्मुखहोतीरहो और कितनीकस्त्री मदकेवशहुई आपही क्रीड़ा करतीरहो और कितनीकस्त्री हर्ष से फूलेहुए नेत्रोंसे संयुक्तहो ९ पासोंसे चौसरखेलो और निज सखियों से परिवृत और देवीजी की प्रेषित की ऐसी ऊषामयूरों के रथमें स्थितहो जाओ १० व कुलमें श्लाघारूप और ऊषा इसनाम से विख्यात और बाणासुर की पुत्री ११ ऐसी बधूको हे रुक्मिणि ग्रहणकरो ऐसे उत्तम स्त्रीकहो १२ व ऐसे ग्रहणकरो और मंगलाचारसे स्त्रियोंकेद्वारा प्रवेशितकरी ऊषा अनिरुद्धके स्थान में बसो १३ व देवकी रेवती रुक्मिणी अनिरुद्ध को देखकर स्नेहके आनन्द

से संयुक्त अश्रुपातकाढो १४ पीछे अच्छेबाजों के शब्दोंसे शुभमुखवाली उत्तम नारियें क्रियाका आरम्भकरो और अपने स्थान में प्राप्तहुई ऊपा भी क्रियाका आरम्भ करो १५ पीछे सुन्दर महल में यथायोग्य उपभोगोंसे अनिरुद्ध के संग रमणकरो १६ व सुन्दर कटिवाली और अप्सराके रूपको धारण करनेवाली १७ ऐसी चित्रलेखा सखियों के गणकी और ऊषाकी आज्ञालेकर स्वर्ग मे प्राप्तहोती भई १८ व जब सब सखिया चलीजावें तब मायावती प्रद्युम्नकी स्त्री निमन्त्रणदे ऊषाको अपने स्थानमें प्राप्तकर १९ पीछे वरी प्रद्युम्नकी स्त्री पुत्रकी वधूको देख कर वस्त्र अन्नपान इन्होंकरके ऊषाकी पूजाकरती भई २० पीछे सब यदुकुल की स्त्रिया क्रमसे आचारको देखतीहुई अपने अपने धर्मोको करतीभई २१ तब वैशंपायन ने कहा हे जनमेजय यह सब तेरे प्रति मैंनेकहा जैसे बाणासुरको युद्धमें श्रीकृष्णने जीता और केवल जीवन्मात्र छोडदिया २२ पीछे द्वारकापुरी में यादवों के समूहसे परिवृत श्रीकृष्ण रमणकरतेभये और परमशोभासे संयुक्तहो२३ सम्पूर्ण पृथ्वीभरमें शिक्षा देतेभये ऐसे हे राजन् पृथ्वीमण्डलमें यदुवंशमें वासुदेव इसनाम से विख्यात विष्णु अवतार लेतेभये २४ व इन कारणों से वसुदेवके सकाश से देवकी में विष्णु उपजेहैं जिनके जन्मको मेरे से आप पूछते हैं २५ व नारदजी के प्रश्नोंकी निवृत्तिकेपीछे जो मैंने विस्तार से कहा है सो हे जनमेजय आपने विस्तारसे सुना २६ व विष्णुके माथुरकल्पमें जो बड़ा संशयहो वह सब मैंने कहदिया है २७ व अन्य कुछ आश्चर्य नहीं है किन्तु श्रीकृष्णही आश्चर्य रूप हैं और सब आश्चर्य कल्पों में विष्णुसे रहित आश्चर्य नहीं है २८ और धन्य पदार्थों में धन्य और धन्य के करनेवाले और धन्य के भावन ऐसे विष्णुहैं देवतों में व दैत्यों में विष्णु से उत्तम अन्य नहीहै २९ व सब आदित्य सबवसु सबरुद्र दोनों अश्विनीकुमार सब मरुद्गण आकाश पृथ्वी दिशा जल अग्नि ये सबविष्णु के रूपहैं ३० व यही विष्णुधाताहै और विधाताहै और संहर्ता हैं व कालहै व सत्यहै व धर्म्म है व तपहै व सनातन ब्रह्माभी यही है ३१ व सर्पों में शेषनागहै और रुद्रों में महादेव हैं और स्थावर जंगम सब जगत् नारायण से उपजाहै ३२ इसलिये सबजगत् इन श्रीकृष्ण से उत्पन्न हुआ है ऐसे विष्णु को हे जनमेजय प्रणामकरो ३३ व सब देवों के सनातन रूप ये पुरुषहैं ऐसे बाणासुरका युद्ध व विष्णुका माहात्म्य तेरे प्रतिकहा ३४ व इसके श्रवण से श्रीकृष्णजी

अति प्रतिष्ठा को मनुष्य प्राप्तहोवेंगे और इस बाणासुर युद्धको और विष्णु के माहात्म्यको धारणकरेंगे ३५ तिन्होंको पापलगेगा नहीं ऐसे हे राजन् मैंने विष्णु की कथा तेरेप्रति कही है ३६ व इस आश्चर्य्यरूप पर्वको जो मनुष्य धारण करेंगे वे सब पापोंसे रहितहोके विष्णुलोक में प्राप्त होजावेंगे ३७ व जो मनुष्य सावधानहोके प्रभात में उठ नित्य इसका कीर्तन करेंगे ३८ उन्हों को इस लोक व परलोकमें कोईभी पाप नहीं रहेगा व इसके कीर्त्तनसे सब वेदोंको जाननेवाला विप्र होजावेगा क्षत्रिय विजयको प्राप्तहोवेगा ३९ व अतिधनवान् वैश्य होजावेगा व शूद्र सद्गतिको प्राप्तहोवेगा व मनुष्यको अशुभताकी प्राप्ति नहीं होगी व आयु की वृद्धि होजावेगी ४० अब सूतजी ने कहा कि हे शौनक ऐसे जनमेजयराजा वैशम्पायनजी के वचनों से कहे हरिवंशको सुन प्रसन्न मनवाला होताभया सो हे द्विजोत्तम ४१ ऐसे विस्तारपूर्वक सब वंश तेरे प्रति प्रकाशितकिये अब फिर क्या सुननेकी इच्छाहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायानवत्यधिकशतोऽध्यायः १०० ॥

यहां विष्णुपर्व्व समाप्तहुआ ॥

एकसौइक्यानवेका अध्याय ॥

अथ भविष्यपर्व ॥

शौनक कहनेलगे कि हे सर्वज्ञ सूतजी जनमेजयराजाके कितने पुत्रभये और महात्मारूप पाण्डवोंका वंश किसमें प्रतिष्ठितहुआ १ यह कथा सुननेकी इच्छा करूंहूं और आपको मैं सर्वज्ञ जानताहूं २ तब सूतजी कहनेलगे कि जनमेजय राजाके काश्यारानी में दो२ पुत्रहोते भये तिन्हों में चन्द्रापीड़ राजाहुआ और सूर्य्यापीड मोक्षको जाननेवाला हुआ ३ पीछे चन्द्रापीड़के उत्तम धनुर्विद्यावाले सो पुत्र होतेभये ऐसे पृथ्वी में जनमेजय नामसे क्षत्रिय वंश विख्यात हुआ ४ तिन्हों में महाबाहु और यज्ञका करनेवाला और बहुत दक्षिणा देनेवाला और सत्यकर्ण नामसे विख्यात ऐसा ज्येष्ठपुत्र हस्तिनापुर में राजाहुआ ५ पीछे सत्यकर्ण के प्रतापवाला श्वेतकर्ण पुत्रहुआ यह पुत्रकी सन्तान से रहित और धर्मात्माहोके तपोवन में प्रवेश करताभया ६ पीछे वनमें वास करतेहुये इसीसे यदुवंशमें उत्पन्न होनेवाली और सुचारुकी पुत्री मालिनी नामसे विख्यात ऐसी

रानी गर्भको प्राप्त होतीभई ७ पीछे गर्भ के जन्महोने से पहले यही श्वेतकर्ण राजा पूर्वराजाओं की रीति से महाप्रस्थान करताभया ८ तब इस राजाको चलतेहुये देख मालिनी रानी भी राजा के पीछे पीछे गमन करतीभई तब मार्ग में कमल के समान नेत्रोंवाले बालक को जनती भई ९ पीछे उस बालक को त्याग वह रानी पतिके पीछे पीछे गमन करती भई जैसे पतियों के संग पहले द्रौपदी तैसे १० पीछे वह कुमारनामवाला बालक पर्वतकी कुञ्ज में रोदन करने लगा तब तिसकी पुष्टि के अर्थ मेघ प्रकट होतेभये ११ पीछे श्रविष्ठा के पैपिल्यादि और कौशिक इन नामों से प्रसिद्ध दो दो पुत्र उस बालकको देख दया भाव में प्राप्तहो ग्रहणकर पानी में प्रक्षालन कराते भये १२ तब तिस बालक के रुधिरसे युक्त दोनों पसली शिलापर १३ घिसने से अर्जुनवृक्ष के समान श्याम पसलिया होगईं इसलिये वे दोनों पुरुष इस बालकका अजपार्श्व ऐसानाम धरते भये १४ पीछे वह बालक उन दोनों ब्राह्मणों ने वेमककी शालामें रक्षा से बढाया १५ पीछे वेमककी स्त्री उस बालकको पुत्रके कारणसे विवाहती भई इसलिये वह वेमकका पुत्र कहाया और वे दोनों ब्राह्मण इसके दीवानरहे १६ पीछे तिन्हों के एक कालमें जीवन करनेवाले पुत्र और पौत्र बहुत से होतेभये ऐसे पाण्डवोंका पौरव वंश प्रतिष्ठित हुआहै १७ इस विषयमें वृद्धावस्था के बदलने से प्रसन्नहुये नहुष के पुत्र ययाति ने एक श्लोक भी कहा है १८ कि जबतक चन्द्रमा सूर्य ग्रह पृथ्वी ये बनेरहेंगे तबतक यह पौरववंश बनारहेगा १९ व किसी कालमें भी पौरववंशसे रहित पृथ्वी नहीं होवेगी २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांभविष्यपर्वणिएकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९१ ॥

एकसौबानवे का अध्याय ॥

शौनकजी कहनेलगे कि जैसे बुद्धिमान् वैशम्पायनजी ने वर्णन कियेथे तैसे आपने हरिवंश और सब पर्व कहे हैं १ सो आपका अप्रमित और इतिहाससे संयुक्त ऐसा कथन हमारेको अमृत के समान तृप्तकरताहै और सबपापों को नाशकरताहै २ व हे वीर सुखपूर्वक सुनने में हमारे मनको आनन्दित करे है और हे सूतपुत्र इस उत्तम आख्यान को सुन ३ जनमेजयराजा सर्पयज्ञ के पश्चात् क्या करताभया ४ तब सूतजी कहनेलगे कि जनमेजयराजा इस आ-

देवताओं में व ब्राह्मणों में उत्पन्नहोताहै जैसे तेजसे अभ्याहत तेज अग्निमें ठहरताहै ४० तैसे और औद्भिजमन्नक अर्थात् पृथ्वीको खोदने से कोइक योगी उत्पन्नहोगा सो वह कोइक सेनाका पति व ब्राह्मण व कश्यपनाम से विख्यात होगा वह कलियुगमें फिर अश्वमेध यज्ञको समाप्तकरेगा ४१ और तिसकेपीछे तिसी कुलमें उपजापुरुष राजसूययज्ञ को भी रचेगा जैसे श्वेतग्रहको प्रलयकाल ४२ व वही बलके अनुसार क्रिया करनेवालों को फल देवेगा और ऋषियों से संवृत युगांत में द्वाररूप विचरेगा ४३ तबसे लगायत मनुष्योंके प्राण पूर्वकर्तव्य को त्याग देवेंगे और वृत्तान्तोंको आवर्त संसार निवर्त्त नहींहोगा ४४ तब सूक्ष्म और अति तेजवाला व दुस्तर व दानरूपी मूलसे संयुक्त और चार आश्रमों से शिथिलरूप ऐसाधर्म प्रकाशित होवेगा ४५ तब थोड़ेसे तपकरके मनुष्य सिद्धि को प्राप्तहोजावेंगे और हे जनमेजय युगके अन्तमें जो मनुष्य धर्मका आचरण करेंगे वे सब अति धर्मात्मा और धन्य कहावेंगे ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्विनवत्यधिकशतोऽध्यायः १९२ ॥

एकसौतिरानबेका अध्याय ॥

जनमेजय ने कहा आसन्न और विप्रकृष्ट ऐसेरूप कालको जो हम नहींजानतेहैं तब द्वापरपर्य्यंत युगांतमें वाञ्छाकरेहैं १ इस धर्मतृष्णाकरके तिसकाल को हम प्राप्तहुये इसलिये अल्पकर्म करके सुखपूर्वक परमधर्म को प्राप्तहोवेंगे २ शौनक ने प्रश्नकिया कि हे धर्म्मज्ञ प्रजाको उद्वेग करनेवाला और धर्म्मोंका नाश करनेवाला ऐसा जो युगान्त उपस्थित हुआहै तिसको निमित्तों करके आप कहनेको योग्यहो ३ तब सूतजीने कहा ऐसेप्रकार भविष्यकी गतिके अर्थ पूंछेहुये वेदव्यासजी तत्त्वकरके चिन्तवन करतेहुये तिससमय में कहतेभये ४ सो वही विस्तारपूर्वक युगांतधर्म वेदव्यासजी कहते हैं प्रजाकी रक्षाकरने से रहित और बलिभागको ग्रहण करनेवाले और अपनी रक्षामें निपुण ऐसे राजा युगांत में उत्पन्न होवेंगे ५ व क्षत्रिय वंश से रहित राजाहोवेंगे और शूद्रके सकाशमें आजीवन करनेवाले ब्राह्मण होवेंगे और ब्राह्मणों के समान आचार धारण करनेवाले शूद्रहोवेंगे ऐसेयुगांत में व्यवस्थाहोवेगी ६ व वेदपाठी ब्राह्मण शस्त्रोंको ग्रहण करेंगे व हे जनमेजय उसी युगांतमें क्रियारहित द्रव्योंको एकपंक्तिमें बैठके सब

वर्ण भोजन करेंगे ७ व हे जनमेजय युगान्तमें शिल्प विद्याको जाननेवाले व मिथ्या बोलनेमें कुशल मदिरा व मासमें प्यारकरनेवाले व मित्रकी भार्यासे भोग करनेवाले ऐसे मनुष्य होजावेंगे ८ व राजकार्योंमें स्थित चोर रहेंगे और राजा लोग चोरोंसे प्यारकरेंगे व नौकर मालिकके द्रव्यको चोरके भोजन करेंगे ९ व धनकी श्लाघाहोवेगी व सत्पुरुषों के अनकी पूजानहीं करेंगे व पतित मनुष्यकी निन्दा नहीं होवेगी १० व नष्टचेष्टावाले और छूटेहुये केशोंवाले व चौलकर्म्म से रहित ऐसे मनुष्य सोलहवर्षसे पहलेही आपसमें मैथुनकर सन्तानों को उपजावेंगे ११ व सब देशोंके मनुष्य अन्न वेंचनेवाले होजावेंगे और वेदके वेंचनेवाले ब्राह्मण होजावेंगे व योनिको वेंचनेवाली स्त्रिया होजावेंगी १२।१३ व सब मनुष्य वेदको पढ़ेंगे व सब वाजनेयिसहिता को पढ़ेंगे व भो अर्थात् हे भगवन् ऐसा संबोधन आपसमें शूद्र बोलनेलगि जावेंगे १४ व तप यज्ञ फल इन्होंको वेंचने वाले ब्राह्मण होजावेंगे और विपरीतभाव से वर्तनेवाले सब ऋतु होजावेंगे १५ व सफेद दाँतोंवाले अचित नेत्रोंवाले व शिर आदिका मुण्डन करवाये हुये व गेरू आदि से रँगेहुये कपड़ों को धारण करनेवाले ऐसे शूद्र धर्मको आचरण करेंगे व शाक्यबुद्ध इनमतोंमें प्राप्तहोके सब मनुष्य आजीवन करने लगेंगे १६ व श्वापदसञ्ज्ञक पशुओं की वृद्धि होवेगी व गायों का क्षय होजावेगा। व स्वादु पदार्थों की निवृत्ति होजावेगी १७ व अत्यजाति के मनुष्य ग्रामके मध्यमें वसेंगे व मध्यमें बसने के योग्य अतमें बसेंगे व सब प्रजा नित्यप्रति नीचेहीको प्राप्तहोवेगी। १८ व दोवर्षके बछड़ोंको वधिया व नाथ घालि देवेंगे और खेती करने वाले किसान छोटी २ जो हड़ियों को बाह लेवेंगे व चित्रवर्ण करनेवाले मेघहो जावेंगे १९ व सब चोरोंके कुलमें जन्मेहुये आपस में चोरीही करेंगे व अल्पही धनके मिलने में अतिधनवान् आपेको मानलेवेंगे २० व सब मनुष्य धर्म का आचरण नहीं करेंगे व ऊषररूप अर्थात् रणों मे सयुक्त पृथिवी होजावेगी व चोरोंसे आवृत सब मार्ग होजावेंगे ऐसी व्यवस्था युगात में होवेगी। २१ व सब मनुष्य कलियुग में व्यवहार करेंगे व पिताके दियेहुये द्रव्यका पुत्र विभाग करेंगे २२ व लोभ से दूसरेके धनको हरनेकी इच्छा करेंगे व सबकालमें मिथ्याबोलने रहेंगे २३ व सब अवस्थाओं में स्त्रिया केशोंको धारण करती रहेंगी। २४ व सब प्रकारके गृहस्थी मनुष्योंको भार्याके समानप्रिय अन्य नहीं कोई होगा अर्थात्

सब कार्योंमें भार्याही की सलाहलिया करेंगे २५ व शील स्वभाव से रहित पुरुष होजावें व बहुतसे अनार्य पुरुष होजावें व मिथ्या रूपों को धारण करनेलगें व पुरुषों की अल्पता होजावेगी व स्त्रियों की वृद्धिहोवे तब जानो युगात उपजाहै २६ व तिस युगात में बहुत याचना करने वाले मनुष्य होजावेंगे व आपसमें कोईभी किसी को दाननहीं देवेगा व विना विचार से हीन जातिसे भी दान को ग्रहण करेंगे २७ व राजा चोर अग्नि दंड इन्हों से पीडित मनुष्य नाशको प्राप्त होवेंगे व फलरहित खेतीकी उत्पत्ति होवेगी व तरुण मनुष्य वृद्धों के समान कार्य करेंगे २८ व इच्छाही से सब मनुष्य आपेही को सुखी मानलेवेंगे २९ व वैश्योंकी तरह क्षत्रिय होजावेंगे व धन धान्यको भोगनेवाले ब्राह्मण होजावेंगे ३० वर्षा समयमें कठोर व ओलों के गेरनेवाले ऐसे पवन चलनेलगेंगे व सदेह युक्त परलोक होजावेगा ३१ व विनाकहे कसम और नियमों को धारण करेंगे और करजाके लेने देनेमें अनेक प्रकारके विपाद उपजेंगे ३२ व फलसे रहित आनन्द होजावेगा और फलसे सहित क्रोधहोजावेगा व दूध के वास्ते सब बकरियों को धारणकरेंगे ३३ व शास्त्रोंको कोई जानेगा नहीं और ऐसे कहेंगे कि हम सब शास्त्रके अनुसार कर्म करते हैं ३४ चिरसठी आदिसे जटित गहनों को स्त्रिया धारण करेंगी और सब वर्ण आपही आप सब व्यवस्थाओं को जानने लगेंगे व वृद्धोंकी कोई भी सेवानहीं करेगा ३५ व कोई भी कवितासे रहित नहीं होगा व बुरेकर्मोंमें स्थित होनेवाले ब्राह्मण नक्षत्रोंके द्वारा जीविका करेंगे ३६ व चोरोंसे प्यार करनेवाले राजा होजावेंगे ३७ व कुत्सित प्रकारोंसे उपजेहुये व मदिरा पीनेवाले ऐसे वेद शास्त्रको पढ़के हे जनमेजय युगातमें अश्वमेध यज्ञ करेंगे ३८ व धनकी तृष्णासे पीड़ितहुये ब्राह्मण यज्ञ करने से अयोग्यको यज्ञ करावेंगे ३९ व अभक्ष्य भोजन करेंगे व कोई भी पढ़ेगा नहीं ४० व आपस में हे भगवन् ऐसे कहके बोलेंगे ४१ व नक्षत्रोंके वर्ण बदल जावेंगे व सब वर्णोंकी स्त्रियोंकी व्यवस्था एकसी होजावेगी व दिशाओंकी विपरीतता होजावेगी ४२ व संध्याकालमें पीलापना व दिग्दाहभी होनेलगेंगे व पुत्र पिता आदिसे काम करावेंगे व वधू श्वश्रू आदिसे कामकरावेंगी नीचजातिकी स्त्रियोंसे सब वर्ण भोग करेंगे ४३ व शिष्य वाणीरूप बाणसे गुरुओं को झिड़केंगे ४४ व प्रमत्त पुरुष स्त्रीके मुख में भी भोगकरेंगे ४५ व अग्निहोत्री भी पुरुष अतिथि को अर्थात्

अभ्यागत को अन्न नहीं देके भोजन करेंगे और सब पुरुष न किसीको भिक्षा और न किसी को बलि देवेंगे ४६ किन्तु आपही भोजन करेंगे और स्त्रियां शयन करते हुये पतियों को छोडकर अन्य पुरुषों से रमण करेंगी और पुरुष शयन करती हुई स्त्रियों को छोडकर अन्य स्त्रियों से रमण करेंगे ४७ और व्याधि से रहित कोई नहीं रहैगा और शूलसे रहित कोई नहीं रहैगा और सब पुरुष आपस में निन्दा करनेलगेंगे और सब कृतघ्नी होजावेंगे ऐसी युगान्त में व्यवस्था होवेगी ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांत्रिनवत्यधिकशततोऽध्यायः १९३ ॥

एकसौ चौरानबेका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि ऐसे चञ्चल हुये लोक में किसकरके पालित और कैसे आचारवाले और कैसे आहार विहारवाले बसेंगे १ व क्या कर्म करेंगे और क्या चेष्टा करेंगे और क्या प्रमाण मानेंगे और कितनी उमरवाले होंगे और किस दिशा को प्राप्तहोके कृतयुग में प्राप्तहोंगे २ तब व्यासजी ने कहा इससमय से उपरान्त धर्म की हानि होनेपै गुणहीन प्रजा होजावेगी और शील व्यसनको प्राप्तहोके आयुकी हानि को प्राप्तहोवेंगे ३ व आयुकी हानि से बलकी ग्लानि होवेगी और बलकी ग्लानि से वर्ण बिगड जावेंगे और वर्ण बिगडजाने से व्याधिरूप पीड़ा उपजेगी और व्याधिरूप पीड़ामें दुःख उपजेंगे ४ और दुःख से आत्मा का बोध उपजेगा और आत्मबोधसे धर्मशीलता उपजेगी ऐसे परम दिशा को प्राप्तहोके कृतयुगको प्राप्तहोवेंगे ५ और कितनेक पुरुष उद्देशसे धर्मशील होवेंगे ६ और कितनेक मध्यस्थताको प्राप्त होवेंगे और कितनेक हेतुवाद में आश्चर्य करनेवाले ईर्षाशील होवेंगे और प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण को निश्चय करनेवाले अथवा प्रत्यक्षही प्रमाण को अंगीकार करेंगे और आपको पण्डित मानतेहुये सबबातों में नास्तिकही रहेंगे ७ व कितनेक जन वेदोक्तको भी अप्रमाण मानेंगे तब बहुतसी स्त्रियां योनि के द्वारा आजीवन करनेवाली होजावेंगी ८ व बहुतसे नास्तिक होजावेंगे और कितनेक धर्मनाशक होजावेंगे और मन्द और मूढ़ मनुष्य आपेको पण्डित मान लेंगे ९ और अन्तरज्ञान श्रद्धावाले शास्त्रज्ञान से रहित और वादकरने में कुशल ऐसे दाम्भिक मनुष्य

पाखण्डी पुरुष होजावेंगे १० ऐसे चलायमान धर्म होनेपै दान मत्सरसे अन्वित पुरुष शुभकर्मोंका आचरण करेंगे ११ व सबपदार्थों को खानेवाला अपनी रक्षा करनेवाला दया और लज्जासे रहित ऐसा लोक होजावेगा तब कषायका लक्षणहै १२ व ब्राह्मणों की शाश्वती आजीविका को जब शूद्र करनेलगि जावेंगे तब कषायका लक्षणजानो १३ व कषाय से संयुक्त और ज्ञानविद्याका नाश करनेवाला ऐसे काल में अल्पकाल करि सिद्धिको प्राप्त मनुष्य होजावेंगे १४ व जब महायुद्ध महावात महावर्षा महाभय ये युगान्तमें होवेंगे तब कषायका लक्षणजानो १५ व ब्राह्मणरूप को धारनेवाले राक्षस और कर्मको जाननेवाले राजा युगांतमें पृथ्वीको भोगेंगे १६ और स्वाध्याय वषट्कारसे रहित व अन्याय करनेवाले और अभिमानी व मासखानेवाले व सर्वभक्षी व वृथा व्रतको धारणकरनेवाले १७ मूर्ख और स्वार्थी व लोभी व क्षुद्र और उत्तम व्यवहारसे व शाश्वत धर्मसे रहित १८ व पररत्नोंको हरनेवाले और परस्त्रीगामी और कामी व दुरात्मा व साहसमें प्यार करनेवाले ऐसे ब्राह्मण युगातमें उत्पन्नहोवेंगे १९ व ऐसेउत्पन्न होनेपै बहुतरूपों को धारण करनेवाले मुनिजन भी जन्मलेवेंगे २० तब कथाके संयोगसे सब मनुष्य उन्होंकी पूजाकरेंगे जब कल्कि आनन्द होवेगा २१ और खेतीकी चोरी करनेवाले व वस्त्रकी चोरी करनेवाले व भक्ष्यभोज्यकी चोरी करनेवाले और करण्ड अर्थात् स्नान सामग्रीके वंशमय पात्रकी चोरी करनेवाले ऐसे मनुष्य युगातमें होजावेंगे २२ व चोरोंकेभी चोरी करनेवाले व मारनेवालों के भी मारनेवाले ऐसे मनुष्यहोजावेंगे और चोरों करके चारोंकातय होनेपै कुशलता होवेगी २३ और सारसे रहित और क्षुधित और क्रियारहित ऐसे लोक के होनेपर करभारसे पीडित मनुष्य वनमें प्रवेशकरेंगे २४ और पुत्र सवप्रकारसे पिता आदि को आज्ञा करावेंगे और वधू श्वश्रूआदि को आज्ञा करावेंगी २५ और शिष्य गुरुओं को वाणीरूप वाणोंसे पीडितकरेंगे यज्ञोंके नहीं होनेमे राक्षसश्वापद २६ कीट मूषा सांप ये सब मनुष्योंको पीडित करेंगे और क्षेम सुभिक्ष आरोग्य और बन्धुओंमें स्नेह २७ ये सब हे राजन् उद्वेगसे होवेंगे २८ आपही पालना करनेवाले और आपही चोरी करनेवाले और युगसंभारको धारण करनेवाले ऐसे मनुष्य देश देशमें मण्डलोंकरके सहित अलग अलग विचरेंगे २९ व सारसे रहित व बन्धुओंसे रहित ऐसे सब मनुष्य अपने देशोंको त्यागके ३०

पीछे भयसे अपने बालकोंको अपने अपने कन्धेपरचढ़ा क्षुधारूपी भयसे पीड़ित हुये कोशिकीनदी को तिरके ३१ अङ्ग वंग कलिंग काश्मीर मेकल ऋषिकान्त गिरिद्रोणी इन देशोंका आश्रयलेवेंगे ३२ व हिमालय के सम्पूर्ण पार्श्व में व खार समुद्रके समीपमें व अनेक प्रकारके वनोंमें म्लेच्छगणों के संग वसेंगे ३३ व न तो शून्यरूप न शून्यसे रहित रूप ऐसी पृथ्वी होजावेगी व रक्षाकरनेवाले व विना रक्षा करनेवाले सब शस्त्रोंका धारण करेंगे ३४ व मृग मछली पक्षी श्वा-पद पशु सर्पकीट मधुशाक फल मूल इन्होंको सब मनुष्य भोजन करेंगे ३५ व फटेहुये चीर पत्ते मृगछाला वृक्षों के वक्कल इन सबोंको धारण करेंगे जैसे मुनि-जन ३६ व झीलोंमें हलकेद्वारा बीजोंको बोनेकीचेष्टा करेंगे व बकरी भेड़ गधा ऊंट इन्होंको भी यत्नसे पालना करेंगे ३७ व तटमें आश्रितहुई नदियोंके स्रोत बन्दहोजावेंगे व पकान्नके व्यवहारसे तथा वृक्षोंके मूलफलसे आपसमें व्यवहार करनेलगेंगे ३८ व शुद्धिसे रहित और कुलके लक्षणोंसे वर्जित ऐसी बहुतसी सन्तानों से संयुक्त मनुष्य होजावेंगे ३९ व हीनसे भी हीन कर्मको प्रजाकरेंगी ४० व मनुष्योंकी परमआयु तीसवर्षकी होवेगी व दुर्बल व विषयोंसे क्षीण रजो-गुणसे आलुप्त ऐसे मनुष्य होवेंगे ४१ पीछे तिन्होंकी इन्द्रियोंका संक्षय रोगोंके द्वारा होनेलगेगा व आयुके नाशहोनेसे हिंसा कर्मको न करेंगे ४२ और सत् पुरुषों की टहल करनेवाले व साधुओं के दर्शनोंमें तत्पर ऐसे मनुष्य होजावेंगे व व्यवहारों की निवृत्ति होनेसे सत्य वचनको बोलने लगेंगे ४३ और कामोंके अलाभसे वृद्धोंके समान शीलता करने लगेंगे और अपने पक्षके क्षयसे पीड़ित हुये सब मनुष्य सङ्कोच करेंगे ४४ व दान सत्य प्राणों की रक्षा इन्होंमें शुश्रूषा करनेवाले होंगे तब तिन पुरुषोंको चार पैरवाला धर्म श्रेयकारी होवेगा ४५ तब वे सब मनुष्य इससंसारमें स्वादुक्याहै ऐसे जानके वर्ण कोही स्वादु मानेंगे ४६ व जैसे धर्मकी हानिहुईहै तैसेही वृद्धिहोने से कृतयुग प्रवृत्तहोवेगा ४७ व कृत-युग में सुंदर वृत्तिहोती है व युगान्तमें हानिहोती है व काल तो एकही है परन्तु जैसे हीनवर्ण चन्द्रमा होताहै तैसे ४८ व जैसे अँधेरे में दकाहुआ चन्द्रमाहोताहै तैसे कलियुगको जानो व जैसे अँधेरे से रहित और पूर्णचन्द्रमाहै तैसे कृतयुग में कालहोताहै ४९ व अर्थवाद परब्रह्महै ऐसे वेदों में गाताहै व निर्णयसे रहित व विनाजाने ऐसे दायभाग को सबलोग ग्रहण करेंगे ५० व तपहीहै शांति

सब पुरुष मानेंगे व सत्य बोलने से गुण प्राप्तहोवेंगे व गुणोंसे आनंद प्राप्तहोगा ५१ और देशकालके अनुसार वर्तनेवाली आशीर्वाद पुरुषको देख यथाकाल मुनिजनोंने कही हैं ५२ व धर्म अर्थ काम देवता इन्होंकी प्रतिक्रिया व आशीर्वाद ये युग युग में वर्तती रहेंगी ५३ ऐसे ब्रह्मा के स्वभाव से वर्तते आते हैं व नाश तथा उदयके बिना क्षणमात्र भी जीवलोक नहीं ठहरेगा ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुर्नवत्यधिकशततोऽध्यायः १९४ ॥

एकसौपंचानवेका अध्याय ॥

सूतजी कहनेलगे ऐसे जनमेजय राजाको आश्वास देनेवाले वेदव्यास के अतीतानागतरूप वाक्यको सभाके पुरुष सुनतेभये १ तब वेदव्यासजीके वाणी रूप रससे सब पुरुषों के कर्णेन्द्रिय अमृतके समान तृप्त होनीभई २ अर्थात् धर्म्म काम अर्थ इन्होंसे सयुक्त व दयारूप और वीरोंको आनन्द देनेवाला व रमणीय ऐसे सम्पूर्ण आख्यानको सभाके पुरुष सुनके ३ कितनेक रोदन करनेलगे और कितनेक ध्यान करनेलगे ऐसे वेदव्यासजी के इतिहासको चिंतवन करनेलगे ४ पीछे सभापतियों से आज्ञालेके व अपने से सभोंको दाहिनीतरफ करके फिर मैं तुम सबोंको देखूंगा ऐसे कहकर भगवान् वेदव्यास गमन करतेभये ५ पीछे संसार में वर्णन करनेवालों में श्रेष्ठ वेदव्यासजी के पीछे २ सब सभा के पुरुष गमन करतेभये फिर ६ जब भगवान् वेदव्यासजी चलेगये तब वेही सब सभा के मनुष्य अर्थात् ब्राह्मण महर्षि ऋत्विक् राजा ये सब उसीस्थानमें प्राप्तहुये ७ ऐसे घोररूप सर्प्पों के वैरका बदला लेकर क्रोधको त्याग जनमेजय भी गमन करनेलगा जैसे विषको त्यागके सर्प ८ पीछे हवनकी अग्निके समान दीप्त शिर वाले तक्षक सर्प्पकी रक्षाकर आस्तिकमुनि भी अपने स्थानको जातेभये ९ व राजा जनमेजयभी अपने मनुष्योंसे सयुक्त होके हस्तिनापुरमें प्रवेश करतेभये तब आप आनन्दितरूप प्रजाको शिक्षा करनेलगे १० फिर कितनेक काल में जनमेजय राजा विधिपूर्व्वक बहुतसी दक्षिणा दान देकर अश्वमेध यज्ञके अर्थ दीक्षित हुआ ११ पीछे सुन्दर रूपवाली काशीके राजाकी पुत्री व वपुष्टमा इस नामसे विख्यात प्रेमी जनमेजयकी रानी सज्ञसरूप अर्थात मारित अश्वके समीपमें विधिदृष्टकर्म्म से बैठने लगी १२ तब सुन्दररूपवाली उस रानी को इन्द्र

वाञ्छा करके संज्ञप्तरूप अश्वमें प्रवेशकरि तिस रानी के सग मिलताभया अर्थात् मैथुन करताभया १३ तब ऐसा विकार उपजनेके बाद तत्त्वसे जानके राजा अधर्म्म से कहनेलगा कि अश्व संज्ञप्त नहींहुआ इसवास्ते ध्वंस करनेके योग्य है १४ तब जाननेवाला अध्वर्यु इन्द्रकी विचेष्टाको जनमेजयके अर्थ कहताभया तब राजा इन्द्रको शाप देताभया १५ जनमेजयजी कहनेलगा प्रजाकी रक्षा से जो मेरातप व यज्ञका फलहै तिस सम्पूर्ण फल करके कहता हूं यह श्रवण करो १६ अबसे लगाके अजितेन्द्रिय व स्थिर ऐसे इन्द्र को अश्वमेध यज्ञसे क्षत्रिय नहीं पूजेंगे १७ सूतजी कहते हैं हे शौनक ऐसे क्रोधित हुआ जनमेजय राजा ऋत्विजों के प्रति कहनेलगा जोकि यह मेरे यज्ञमें विघ्न हुआहै यह आप की दुर्बलतासे हुआहै १८ इसलिये मेरे देशमें बसने के लायक तुम नहींहो व अपने बान्धवों करके सहित गमनकरो ऐसे कहने से उत्पन्न हुआहै क्रोध जिन्हों को ऐसे ब्राह्मण राजाको त्यागतेभये १९ व क्रोधसे पत्नीशालामें प्राप्तहुईं स्त्रियों को परमधर्मज्ञ राजा जनमेजय कहनेलगा २० कि बुरेकर्म करनेवाली वपुष्टमा रानी को मेरे घरसे बाहरकरो क्योंकि जिसने धूलि से गुण्ठित दोनों चरण मेरे मस्तक पै प्राप्त करदिये २१ व जिसने मेरा माहात्म्य खण्डित करदिया व संसार में फैलनेवाले यशका नाश कर दिया व मान दूषित किया ऐसी वपुष्टमा रानी को देखने की इच्छा नहीं करता जैसे क्लेश देनेवाली मालाको २२ व जो परपुरुष से मर्दितकी भार्याको पश्चात् ग्रहण करै वह स्वादु पदार्थ को भोजन नहीं करै व एकान्तमें शयन करतारहै अर्थात् किसी कामके लायकरहै नहीं २३ व जैसे कुत्ताके जूँठे पदार्थ को विद्वान् ग्रहण नहीं करते हैं तैसे २४ ऐसे ऊँचे प्रकारसे कहतेहुये व क्रोधसे भरे ऐसे जनमेजय राजासे गन्धर्वराज विश्वावसु यह वचन कहनेलगा २५ हेराजन् तीनसौ यज्ञोंके करनेवाले तेरेको इन्द्र नहीं सहता है इसलिये इन्द्रने अप्सरा तेरीपत्नी बनादी २६ व रम्भा नामवाली व काशीराज की पुत्री व देवी वपुष्टमा नामसे विख्यात ऐसी यह तेरी पत्नी करीगई सो जिस को तू त्यागने की इच्छा करता है २७ पीछे तेरे यज्ञमें छिद्र देखके इन्द्रने विघ्न किया इसवास्ते हे कुरुश्रेष्ठ तू यज्ञका करनेवालाहै व समृद्धिमें इन्द्रके समानहै २८ इसलिये तेरे यज्ञोंके फलसे इन्द्र डरताहै इससे हे प्रभो तेरा यज्ञ इन्द्रने आवर्तित किया २९ व यज्ञमें छिद्रको प्राप्तहो सनत्स्वरूप घोड़े को देख ३० जो वपुष्टमा मे

सब पुरुष मानेंगे व सत्य बोलने से गुण प्राप्तहोवेंगे व गुणोंसे आनद प्राप्तहोगा ५१ और देशकालके अनुसार वर्तनेवाली आशीर्वाद पुरुषको देख यथाकाल मुनिजनोंने कही है ५२ व धर्म अर्थ काम देवता इन्होंकी प्रतिक्रिया व आशीर्वाद ये युग युग में वर्तती रहेंगी ५३ ऐसे ब्रह्मा के स्वभाव से वर्तते आते हैं व नाश तथा उदयके बिना क्षणमात्र भी जीवलोक नहीं ठहरेगा ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुर्नवत्यधिकशततोऽध्यायः १९४ ॥

एकसौपंचानवेका अध्याय ॥

सूतजी कहनेलगे ऐसे जनमेजय राजाको आश्वास देनेवाले वेदव्यास के अतीतानागतरूप वाक्यको सभाके पुरुष सुनतेभये १ तब वेदव्यासजीके वाणीरूप रससे सब पुरुषों के कर्णेन्द्रिय अमृतके समान तृप्त होतीभईं २ अर्थात् धर्म काम अर्थ इन्होंसे संयुक्त व दयारूप और वीरोंको आनन्द देनेवाला व रमणीय ऐसे सम्पूर्ण आख्यानको सभाके पुरुष सुनके ३ कितनेक रोदन करनेलगे और कितनेक ध्यान करनेलगे ऐसे वेदव्यासजी के इतिहासको चिंतवन करनेलगे ४ पीछे सभापतियों से आज्ञालेके व अपने से सभोंको दाहिनीतरफ करके फिर मैं तुम सबोंको देखूंगा ऐसे कहकर भगवान् वेदव्यास गमन करतेभये ५ पीछे संसार में वर्णन करनेवाले में श्रेष्ठ वेदव्यासजी के पीछे २ सब सभा के पुरुष गमन करतेभये फिर ६ जब भगवान् वेदव्यासजी चलेगये तब वेही सब सभा के मनुष्य अर्थात् ब्राह्मण महर्षि ऋत्विक् राजा ये सब उसीस्थानमें प्राप्तहुये ७ ऐसे घोररूप सर्पों के वैरका बदला लेकर क्रोधको त्याग जनमेजय भी गमन करनेलगा जैसे विषको त्यागके सर्प ८ पीछे हवनकी अग्निके समान दीप्त शिरवाले तक्षक सर्पकी रक्षाकर आस्तिकमुनि भी अपने स्थानको जातेभये ९ व राजा जनमेजयभी अपने मनुष्योंसे संयुक्त होके हस्तिनापुरमें प्रवेश करतेभये तब आप आनन्दितरूप प्रजाको शिक्षा करनेलगे १० फिर कितनेक काल में जनमेजय राजा विधिपूर्व्वक बहुतसी दक्षिणा दान देकर अश्वमेध यज्ञके अर्थ दीक्षित हुआ ११ पीछे सुन्दर रूपवाली काशीके राजाकी पुत्री व वपुष्टमा इस नामसे विख्यात ऐसी जनमेजयकी रानी संज्ञप्तरूप अर्थात् मारेव अश्वके समीपमें विधिदृष्टकर्म्म से बैठने लगी १२ तब सुन्दररूपवाली उस रानी की इन्द्र

वाञ्छा करके यज्ञरूप अश्वमें प्रवेशकरि तिस रानी के संग मिलताभया अ-
र्थात् मैथुन करताभया १३ तब ऐसा विकार उपजनेके बाद तत्त्वसे जानके राजा
अधर्म्म से कहनेलगा कि अश्व संज्ञप्त नहींहुआ इसवास्ते ध्वंस करनेके योग्य
है १४ तब जाननेवाला अध्वर्यु इन्द्रकी विचेष्टाको जनमेजयके अर्थ कहताभया
तब राजा इन्द्रको शाप देताभया १५ जनमेजयजी कहनेलगा प्रजाकी रक्षा मे
जो मेरातप व यज्ञका फलहै तिस सम्पूर्ण फल करके कहता हूं यह श्रवण करो
१६ अबसे लगाके अजितेन्द्रिय व स्थिर ऐसे इन्द्र को अश्वमेध यज्ञसे क्षत्रिय
नहीं पूजेंगे १७ सूतजी कहते हैं हे शौनक ऐसे क्रोधित हुआ जनमेजय राजा
ऋत्विकों के प्रति कहनेलगा जोकि यह मेरे यज्ञमें विघ्न हुआहै यह आप की
दुर्बलतासे हुआहै १८ इसलिये मेरे देशमें वसने के लायक तुम नहींहो व अ-
पने बान्धवों करके सहित गमनकरो ऐसे कहने से उत्पन्न हुआहै क्रोध जिन्हों
को ऐसे ब्राह्मण राजाको त्यागतेभये १९ व क्रोधसे पर्णशालामें प्राप्तहुई स्त्रियों
को परमधर्मज्ञ राजा जनमेजय कहनेलगा २० कि बुरेकर्म करनेवाली वपुष्टमा
रानी को मेरे घरसे बाहरकरो क्योंकि जिसने धूलि से गुण्ठित दोनों चरण मेरे
मस्तक पै प्राप्त करदिये २१ व जिसने मेरा माहात्म्य खण्डित करदिया व संसार
में फैलनेवाले यशका नाश कर दिया व मान दूषित किया ऐसी वपुष्टमा रानी
को देखने की इच्छा नहीं करता जैसे क्लेश देनेवाली मालाको २२ व जो पर-
पुरुष से मर्दितकी भार्याको पश्चात् ग्रहण करै वह स्वादु पदार्थ को भोजन नहीं
करै व एकान्तमें शयन करतारहै अर्थात् किसी कामके लायकरहै नहीं २३ व
जैसे कुत्ताके जूँठे पदार्थ को विद्वान् ग्रहण नहीं करते हैं तैसे २४ ऐसे ऊँचे प्र-
कारसे कहतेहुये व क्रोधसे भरे ऐसे जनमेजय राजासे गन्धर्वराज विश्वावसु यह
वचन कहनेलगा २५ हेराजन् तीनसौ यज्ञोंके करनेवाले तेरेको इन्द्र नहीं सहता
है इसलिये इन्द्रने अप्सरा तेरीपत्नी बनादी २६ व रम्भा नामवाली व काशीराज
की पुत्री व देवी वपुष्टमा नामसे विख्यात ऐसी यह तेरी पत्नी करीगई सो जिस
को तू त्यागने की इच्छा करता है २७ पीछे तेरे यज्ञमें छिद्र देखके इन्द्रने विघ्न
किया इसवास्ते हे कुरुश्रेष्ठ तू यज्ञका करनेवालाहै व समृद्धिमें इन्द्रके समानहै२८
इसलिये तेरे यज्ञोंके फलसे इन्द्र डरताहै इससे हे प्रभो तेरा यज्ञ इन्द्रने आवर्तित
किया २९ व यज्ञमें छिद्रको प्राप्तहो यज्ञरूप घोड़े को देख ३० जो वपुष्टमा में

सुनने की इच्छा करतेहो अब मैं तुम्हारे प्रति अन्य क्या वर्णन करूं १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांषण्णवत्यधिकशततमोऽध्याय १०६॥

एकसौसत्तानवेका अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया कि हे वैशम्पायन पद्मनाभके प्रभावको और समुद्रमें शयन करताहुआ परमेश्वरकी नाभिकमलमें जैसे ऋषि देवताओंके समूह उत्पन्न होतेभये १ इस सम्पूर्ण आख्यानको मेरे अगाडी वर्णनकरो सोई परमेश्वर की कीर्तिको सुनके मेरी तृप्ति नहीं होती है २ व वह पुरुषोत्तम कितने काल को व्यतीत करके सोता है व कालका सभव रूप ईश्वर किसवास्ते काल में शयन करताहै ३ व कितने कालमें सोके उठताहै व शयनसे उठके संपूर्णजगत्को कैसे रचताहै ४ व उस जगत्में पहिले कौन कौनसे प्रजापति हुये हैं व हे वैशपायन वह सनातन भगवान् इस विचित्रलोक को कैसे रचताभया ५ व नष्टहोगये हैं स्थावर तथा जगम जिसमें व नष्टहोगये हैं देवता तथा असुरोंके गण जिसमें व नष्टहोगये हैं सर्पतथा राक्षस जिस में ६ व नष्टहोगये हैं अग्नि तथावायु और लोक जिस में व नष्टहोगये हैं आकाश तथा पृथ्वी जिसमें व केवल गम्हरीभूत पंचमहाभूतोंकाहै नाश जिसमें ७ ऐसे एक समुद्र रूप महाघोर प्रलय में महाभूतोंका पति व महान् तेजवाला व महान् विस्तारवाला व देवताओंका भी देवता वह भगवान् किस नियति को ग्रहण कर स्थित होताभया ८ सो हे ब्रह्मन् मैं शरणागत रूप मेरेसे सशयरहित नारायण यश को तुम कहने को योग्य हो ९ व धर्मरूप भगवान्कायश व भगवान्की प्रकटता व श्रद्धावालोंकी विधि यह आख्यान मेरे प्रति वर्णन करनेको योग्यहो १० वैशंपायनजी राजाजनमेजय के प्रति वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय जो नारायण के यशरूपी ज्ञानमें आपकी इच्छाहै सो तेरे वंशमें उचितहै इसवास्ते यज्ञोंके द्वारा तो परमेश्वर का पूजनरूप कार्य को करो ११ व हे जनमेजय जैसे पुराणोंसे व देवताओंसे और वर्णन करतेहुये ब्राह्मण के मुखसे मैंने सुनाहै वैसेही आपसुनो १२ व बृहस्पति के तुल्य कांतिवाला गुरु मैंने तपसे देखा पीछेवही पराशर ऋषिके पुत्र वेदव्यासजी मेरेअर्थ जैसे वर्णन करतेभये १३ व मैंभी शक्तिपूर्वक जैसासुनाहै वैसाही आपके प्रतिवर्णन करूंगा क्योंकि वेदव्यासजीके सपूर्णअर्थ जाननेको मैं समर्थ

नहींहै १४ नारायण के परम तत्त्व को अन्यपुरुष कौन जानता है यासे ब्रह्माभी सपूर्ण तत्त्वको नहींजानताहै १५ सोई मैंने सुनाहै कि विश्वेदेवों व महर्षियोंका वह तत्त्वरहस्यहै व सपूर्ण यज्ञोंका वह इज्यहै व तत्त्ववेदियोंका वह तत्त्वहै १६ व ज्ञानियोंका वह चिंत्यरूपहै व कर्मनिष्ठियोंका वह कारणहै वही देव अधिदेव सज्ञित है१७ व जो भूत तथा अधिभूत व जो महर्षियों का परम व सत्य व देवदृष्ट वेदवक्ता ऋषि जिसको कहते हैं १८ व जगतका कर्ता तथा कारक व बुद्धि तथा मन तथा क्षेत्रज्ञ व प्रधान तथा पुरुष तथा शस्ता तथा शब्दरूप १९ व कालरूप ईश्वरको शयन करनेवाला समय रूपकाल तथा द्रष्टा व स्वाधीन तथा पञ्चप्रकारका प्राण तथा ध्रुव तथा अक्षय २० यह सपूर्ण भावों करके कहाहुआ भगवान् का रूपहै सो वह भगवान् जगत् को नानाप्रकारसे रचता है व वही विकारको प्राप्तकरता है २१ व वह हम ऋषिलोगों को कर्म कराताहै व हमतिस परमेश्वरके वशीभूतहुये यज्ञों करके परमेश्वरको पूजते हैं व उसीकी इच्छा करते हैं २२ व जो वक्ता तथा वक्तव्य व मैं कहनेवाला तथा कल्याण और अकल्याणरूप २३ । २४ व कथा तथा गह्वर वेद में वर्तती हुई श्रुति तथा विश्व व विश्वपति तथा देवता ये सब नारायणमय हैं २५ व सत्य तथा अनृत और आदि तथा अक्षर व भूत तथा वर्तमान और भविष्यत् व चर तथा अचर और अव्यय यह कहाहुआ सम्पूर्ण भगवान् का रूप है २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायापुष्करप्रादुर्भावेवपसनवत्यधिकशततमोऽध्याय १०७

एकसौअट्ठानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् जनमेजय देवताओं के मानसे चारहजार वर्षों करके सतयुग का प्रमाण कहते हैं और आठसौ वर्ष परिमित सख्या होतीहै १ व सतयुग में धर्मके चार पैर तथा अधर्म का एकपैरहै व मनुष्य अपने धर्म में युक्तहुये परमेश्वरको पूजतेहैं २ व ब्राह्मण अपने धर्म में व क्षत्रिय अपनी राजवृत्तिमें व वैश्य कृषिकर्म में व शूद्र तीनों वर्णोंकी शुश्रूषा में ऐसेचारों वर्ण अपने अपने धर्मोंमें युक्तहोते हैं ३ व सदा सत्य व तप तथा धर्म इन्होंकी वृद्धि होतीहै व श्रेष्ठपुरुष उत्तम कर्मको करतेहैं और वर्णन करतेहैं ४ हे राजन् सतयुग में नीच योनिवाले भी पुण्य धर्म बुद्धि करके युक्तहोतेहैं व सम्पूर्णप्राणी

इस शुभकर्म को करतेहैं ५ व तीनहजार दिव्य वर्षोंकरके त्रेतायुग का प्रमाण कहतेहैं व त्र सौ दिव्य वर्षके प्रमाणसे त्रेतायुगकी सन्ध्या वर्णनकरी है ६ त्रेता युगमें दो पैरोंमे अधर्म व तीन पैरोंसे धर्म स्थितहै और सतयुगमें सत्य तथा सत्त्वगुण ये दोनों सम्पूर्णता से वर्तते हैं ७ व त्रेतायुगमें चारोंवर्ण धर्मकी सब-लता व दुर्बलतासे विकारको प्राप्तहोते हैं ८ हे राजन् यह त्रेतायुगकी विधि आपके प्रति मैंने वर्णनकी और द्वापरयुगकी चेष्टाकी आपसुनो ९ और हे कुरु सत्तम अर्थात् कुरुओं में श्रेष्ठ दो हजार दिव्य वर्षोंके मानसे द्वापरयुग की स्थितिहै व चारसौ दिव्यवर्षों के मानसे द्वापरयुगकी सन्ध्या वर्णनकी है १० व द्वापरयुगमें ब्राह्मण धनकी प्राप्तिकरने में तत्पर होजाते हैं व ज्ञानी रजोगुणसे युक्तहोजाते हैं और शठलोग शठताको धारण करतेहैं व तुच्छजीव पैदाहोजाते हैं ११ व तहां दो पैरोंसे धर्म तथा तीनपैरोंसे अधर्म स्थितहै व सतयुगके बांधेहुये धर्मके पुल शनै शनै अधर्म से युक्तहोजाते हैं १२ व ब्रह्मण्यता तथा आस्तिकता तथा व्रत व उपवास ये सम्पूर्ण द्वापरके अन्तमें नष्टहोजाते हैं १३ व तैसेही दिव्य एकहजार वर्षोंके मानसे कलियुगकी स्थितिहै और दिव्य दोसौ वर्षकी सन्ध्या वर्णनकरी है और यह कलियुग क्रूरतावालाहै १४ व तहां चार पैरोंवाला अधर्म तथा एक पैरवाला धर्म्म स्थितहै व तमोगुणसे युक्तहुये कामीपुरुष पैदाहोते हैं १५ व व्रतों का करनेवाला तथा साधु तथा सत्य बोलनेवाला और आस्तिक तथा ब्रह्मका वक्ता ऐसे मनुष्य कलियुगमें पैदा नहीं होते हैं १६ व अहङ्कारसे युक्त तथा क्षीण स्नेहवाले बांधव व ब्राह्मण शूद्रोंकी समान आचारवाले और शूद्र आचार में तत्पर १७ व आश्रमों को दोष लगानेवाले व वर्णोंका संकर अर्थात् मिलाप व अगम्य स्त्रियोंसे गमन करनेवाले ऐसे कलियुग में मनुष्य होतेहैं १८ और ऐसे दिव्य बारहहजार का एक युगहोताहै पीछे यही इकहत्तर गुण कियाजावे तिसको मन्वतर कहते हैं १९ युगके अन्तमें मनुष्यों को कर्त्तव्य में सन्देह नहीं होताहै और ऐसे देवताओं के बारहहजार वर्षों के मानसे चारोंयुगों का प्रमाण है २० व इससे हजारगुणा काल में ब्रह्माका एक दिन व्यतीत होताहै २१ सो ब्रह्माके एक दिनमें चौदह मनु राजकरतेहैं और जब ब्रह्माका दिन पूराहोताहै तब संहारकी इच्छा करताहुआ महादेव सम्पूर्ण प्राणियों के देहकी निवृत्ति कर देताहै २२ व देवता तथा ब्राह्मण व दैत्य तथा दानव व किन्नर व यक्ष व राक्षस२३

व देवर्षि व ब्रह्मर्षि व राजर्षि व गन्धर्व व अप्सरा और नाग २४ तथा पर्व्वत व नदी व पशु व तिर्य्यक् योनिवाले पशु और मृग तथा पक्षी इनसबों के पंचभौतिक देहका नाश करदेताहै २५ सूर्य्यरूपहोके चक्षु इन्द्रीको हरताहै और वायु होके सम्पूर्ण प्राणियोंको संहार करता है और अग्नि होके सब लोकों को दग्ध करताहै व मेघहोके फिर वर्षताहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांपौष्करप्रादुर्भावेअष्टनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १६८

एकसौ निन्नानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वह महादेवजी सप्तमूर्ति अग्नि रूपहोके अपनी किरणों करके सम्पूर्ण समुद्रोंको शोष लेताहै १ व समुद्र और नदी व कूप व पर्वत इन सबोंके जलको पीके २ फिर पृथ्वीको हजार जगह से भेदनकर रसातल में प्राप्त होके रसातलके सम्पूर्ण उत्तम रसको पीलेताहै ३ व जल में गीलापन तथा अन्यवस्तु जो प्राणियों के निमित्त रचीथीं उन सब वस्तुओं को भगवान् ग्रहण करलेता है ४ व बलवान् हुआ वायु सब जगत् को विधूनकर पीछे देवतों के प्राणों का उदय ईश्वर वायुमे करता है व देवता तथा प्राणियों के इन्द्रियगण ५ जिमसे उत्पन्न हुयेथे वे उन्हीं में लीन होजाते हैं जैसे पूय व घ्राण व शरीर ये गुण पृथ्वीमें प्राप्तहोते हैं ६ व जिह्वा तथा रस व रुधिर ये गुण जलमें प्राप्त होते हैं व रूप चक्षु तथा विपाक ये गुण अग्निमें प्राप्त होते हैं ७ व स्पर्श तथा प्राण व चेष्टा ये गुण वायु में प्राप्त होते हैं व फिर ये सम्पूर्ण गुण परस्परमें मिलके ईश्वरके शरीरमें प्राप्त होते हैं ८ व फिर अन्तर्यामी कर्त्ता करके मिलेहुये व सूक्ष्म वृत्तियों करके प्रेरेहुये इन्द्रियों के गण आदि व वायुमे क्रूयमाणहुये होते हैं पश्चात् इन्होंके संघ रससे उत्पन्नहुआ अग्नि सौमकाग्मे जलने लगजाताहै फिर वह संवर्त्तक नाम अग्नि सम्पूर्ण लोक ६ । १० और पर्व्वत तथा वृक्ष व गुल्म तथा लता और वल्ली तथा तृण व देवताओं के पुरातन और दिव्य विमान व अनेक प्रकारके पुर ११ व पवित्र आश्रम व देवताओंके स्थान व जो स्थित होनेके योग्य स्थान इन सबको वह संवर्त्तक नाम अग्नि भस्मकर देता है १२ व भगवान् दग्धहुये लोकोंको फिर जलमे सेचन करते हैं १३ और पश्चात् महातेज भगवान इन्द्ररूप होके पुनः भी नुतन दिव्य जलमे पृथ्वीको तृप्त

करताहै १४ पश्चात् स्वच्छ व अमृतरूप व स्वादु व कल्याणरूप व पवित्र ऐसे परम जलसे वह पृथ्वी निर्वाण अर्थात् दूसरे शरीर को प्राप्त होजाती है १५ व वह पृथ्वी कल्याणरूप पवित्र अत्यन्त जल करके नाश को प्राप्त होजाती है व जनोंसे रहित तथा एक समुद्ररूप वह पृथ्वी होजाती है १६ तब पञ्चमहाभूत परमेश्वर में प्राप्त होजाते हैं व सूर्य व पवन तथा आकाश ये जिसमें नष्ट होगये हैं ऐसे जन रहित सूक्ष्म प्रलयमें विषयोंमें ज्ञानका नाशकरके १७ फिर देहकी कल्पना करके पुराण पुरुषरूप होके अकेले बसते हैं १८ व वे भगवान् एकार्णव जलमें दशहजार वर्षों के हजारहा सैकडा कालपर्यंत योगीहुए योगकी उपासना करते हैं व उस अव्यक्त व व्यक्तरूप भगवान् को कोई पुरुष जानने को समर्थ नहीं है १९ जनमेजय प्रश्न करते हैं कि हे वैशम्पायनजी वह एकार्णवनिधि कौनसी है व उस पुरुषका कौन नाम है व कौन योग है व कौन योगवाला है २० ऐसे सुन वैशम्पायनजी वर्णनकरतेभये कि हे राजन् सातहों समुद्रों के मिलाप को एकार्णव निधि कहते हैं उस निधिमें जितने कालपर्यन्त भगवान् जो कार्य्य करताहै उसकार्यको कोई पुरुष नहीं जानसक्ता २१ क्योंकिउससमयमें भगवान् के विना अन्य कोई पुरुष द्रष्टा व गमिता व ज्ञाता व कोई पासमें नहीं है २२ व आकाश तथा पृथ्वी पवन और प्रजापति व भुवनपति व सुरेश्वर व श्रुतियोंका स्थान पितामह इन्हों को प्रकाश करता हुआ महोदधि में वह प्रभु अपने शयन स्थानको प्रकाश करताहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांपौष्करप्रादुर्भावेनवनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९९

दोसौका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् जब लोकोंका एकार्णव होजाता है तब कांतिवाले भगवान् उस जलको आच्छादन करके सोजाते हैं अर्थात् शुद्ध चिन्मात्र रूपमें स्थित होजाते हैं १ और रजोगुणरूपी महार्णवमें मग्नहुये जिस ब्रह्मरूप व निर्गुण भगवान्को वेदवेत्ता ब्राह्मण जानते हैं २ वह महत्रूप परमात्मा भगवान् निर्यङ् मनोरथरूप आत्माकरके आच्छादितहुये और आत्मरूपसे प्रकाशितहुये व भूत भविष्य वर्तमान इनकालों के लोकोंसे अधिष्ठित होके सोजाते हैं ३ और यज्ञरूप व पाररूप व अन्य वस्तुरूप व पुरुषरूप ऐसे वह

सम्पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का रूपहै ४ और यज्ञों में तत्पर व ऋत्विज् संज्ञक ऐसे ब्राह्मण परमेश्वर से यज्ञोंके अर्थ उत्पन्न होते हैं ५ ब्रह्मा और उद्गाता और होता इन्होंको मुखसे व अध्वर्युको भुजाओंसे प्रभु उत्पन्न करतेभये ६ व ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मवेत्ताको व प्रस्तारको व मित्रावरुण को ब्रह्मत्वसे व प्रतिष्ठाता ७ व प्रतिहर्त्ता सञ्ज्ञक होता इन्होंको उदर से व अध्यापकको जाघों से व नेष्ठा ८ तथा अग्नीध्र व ब्रह्मण्य तथा यज्ञिय व ग्रावाण इन्होंको हाथों से और सुनेता तथा याज्ञिक इन्होंको भुजाओं से ९ ऐसे सम्पूर्ण यज्ञोंकेवक्ता ऋत्विज् सञ्ज्ञक सोलह ब्राह्मणों को भगवान् अपने अगोंसे उत्पन्न करताभया १० व यह भगवान् यज्ञमय व वेदसञ्ज्ञकहै व यह सम्पूर्ण वेद उपनिषद् व क्रियाओं से सहित भगवान् का रूपहै ११ और वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं हे राजन् सोतेहुये भगवान् के शरीर में मार्कण्डेयजी पैदाहोतेभये ऐसा आश्चर्य्यरूप वृत्तान्त सुनाजाता है १२ और वह महामुनि बहुत हजार वर्षोंकी उमरको धारणकरके जीर्ण होगया १३ व तीर्थोंके अर्थ भगवान् की कुक्षिमें विचरनेलगा तब सम्पूर्ण आश्रम व तीर्थ व आयतन १४ व देश व राज व नानाप्रकारके पुर इन्होंको विचरताहुआ और जप व होम व क्षांति व घोरतप इन्होंको धारण करताहुआ १५ शनैः शनैः मार्कण्डेयऋषि भगवान् के मुखसे निकला व परमेश्वरकी मायाके बलसे व अपने आत्माको मुखसे निकलाहुआ नहीं जानताभया १६ व मुखसे बाहर निकलके मार्कण्डेयजी सम्पूर्ण समुद्रको अन्धकारसे युक्त देखताभया १७ फिर अन्धकार को देखके मार्कण्डेयजीको अपने जीने में संशय व अत्यन्त भय उपजा और परमेश्वरकी कुक्षिमें पृथ्वीके विचरनेसे आश्चर्यको प्राप्तहोताभया १८ व समुद्रमें स्थितहोके मार्कण्डेयजी विचार करनेलगे कि यह कोई मेरेको चिन्ताहुई अथवा कोई मोह पैदाहुआ अथवा कोई स्वप्नहुआ १९ यासे देखीहुई वस्तु मेरेको अन्यथा दीखती है क्योंकि अयोग्य व असक्लिष्ट ऐसी वस्तु सत्यनहीं होती है २० व चन्द्रमा व सूर्य्य तथा पवन व पर्व्वत व पृथ्वी इन्होंसे रहित ऐसा यह लोक कौनहै २१ ऐसी चिंतामें मार्कण्डेयजी स्थित होतेभये व मेघकी तुल्य और पर्वत की सदृश व समुद्र में मग्न सोतेहुये भगवान् को भी देखताभया २२ व तेजसे तपताहुआ व कान्तिसे प्रकाश होताहुआ व गम्भीरतासे जागताहुआ व सर्प की तरह स्वास लेताहुआ २३ ऐसे भगवान् के प्रति मार्कण्डेयजी आश्चर्य से

प्रश्न करताभया फिर प्रश्न किये प्रश्न को सुन के भगवान् फिर वैसेही मुनि को अपनी कुक्षिमें प्रवेश करतेभये २४ फिर वह मुनि कुक्षिमें प्राप्तहोके सुनिश्चित हुआ और स्वप्न जानताहुआ वैसेही पृथ्वी पै विचरनेलगा २५ जैसे पहले पृथ्वी पै विचराथा उसीप्रकार विचरनेलगा व स्वर्ग व पृथ्वीतल २६ व तीर्थ व पुण्य स्थान इन्हींको देखताभया व यज्ञोंकरके सहित यजमान इनसब सैकड़ों क्षत्रिय ब्राह्मणों को देखताभया २७ व श्रेष्ठ ब्राह्मण व उत्तम व्रतोंको धारण करनेवाले ब्राह्मणों से आदिलेके चारोंवर्ण व ब्रह्मचर्य से आदिले चारों आश्रम ऐसे कुक्षि में स्थितहुये इनसबको देखताभया २८ और सम्पूर्ण पृथ्वीको विचरताहुआ तब वह मुनि कुक्षिके अन्तको नहीं प्राप्तहुआ २९ और वह मार्कण्डेय ऋषि कभी एक समय फिर कुक्षिमे बाहिर निकसा तब वटकीशाखापै सोताहुआ एक बालकको देखताभया ३० फिर वहमुनि सम्पूर्ण प्राणियों से रहित व अव्यक्त भयानकरूप ऐसे एकार्णवरूपी जलमें ३१ अज्ञानसे आश्चर्ययुक्त व आनन्दयुक्तहुआ सूर्य के किरणोंके समान प्रकाश करताहुआ बालकके पास जानेको समर्थ नहीं हुआ ३२ फिर जलके समीप स्थितहोके विचार करनेलगा कि यह रूप मैंने पहिले देखाथा या नहीं देखाथा ऐसे शंकायुक्त होताभया ३३ फिर वह मुनि भयानकरूप अगाध जलमें भगवान् को कूद कूदके पकड़ताहुआ व भय तथा परिश्रमसे विह्वल हुआ शांतिको प्राप्त नहीं भया ३४ ऐसे वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वे भगवान् योगके बलसे बालभावको प्राप्तहुए व मेघकी तुल्य मीठी २ वाणीसे मार्कण्डेयऋषिके प्रति बोले ३५ कि हे मार्कण्डेय हे वत्स अर्थात् हे पुत्र तू बालकहै और परिश्रमसे पीड़ितहै सो अब डरमत जल्द मेरे पासआ ३६ ऐसे सुन मार्कंडेयजी बोले कि ऐसा यह कौन पुरुषहै जो मेरा तप और बहुत हजार वर्षोंकी आयु इन्होंका तिरस्कार करताहुआ मेरे नामको लेके बोलताहै ३७ सो ऐसा व्यवहार तो देवताओंमें भी नहीं है क्योंकि वह विश्वका स्वामी ब्रह्माभी मेरे प्रति हे दीर्घायु ऐसे कहिके बोलताहै ३८ सो मैं बहुत घोर तपवालाहूं और मेरे प्रति हे मार्कण्डेय ऐसा नीच संबोधन देताहुआ यह कौन पुरुषहै यह मृत्युके देखनेकी इच्छा करता है ३९ वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं हे राजन् तू क्रोधके वशहुआ मार्कण्डेय ऋषि ऐसे भगवानके प्रतिबोले ४० फिर ऐसे मुनिके वचनको सुनके भगवान् फिर बोले हे वत्स अर्थात् हे पुत्र मैं इन्द्रियों

का स्वामीहूं व तेराउत्पन्न करनेवालाहूं व पोषकहूं व गुरुहूं व आयुका देनेवाला हूं व पुराणपुरुषहूं सो तू किस अर्थ मेरे पास नहीं आताहै ४१ व तेरा पिता अङ्गिराऋषि अत्यन्त तपको धारण करताहुआ पुत्रकी कामना से मेरा आराधन करताभया ४२ तब मैं प्रसन्न होके अङ्गिरामुनि को अमित आयुवाला व अग्नि की तुल्य तेजवाला और घोरतपवाला ऐसे गुणोंवाला तुझ पुत्र को देताभया ४३ सो तिस एकार्णवमें योगको धारणकर क्रीडा करताहुआ मेरेको उसपुत्रसे अन्य और कोई प्राप्त नहीं होसक्ता ४४ वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वह मार्कण्डेय ऋषि महात्मा और दीर्घायु और लोकपूजित ऐसे नाम और गोत्ररूपी परमेश्वरके वचनको सुनके और हर्षित मुख और आश्चर्य्य से खिले हुये नेत्र इन्हों को धारणकर ४५ व दोनों हाथों से मस्तकपै अंजली बांध और शिरको पृथ्वी में नवाके परमेश्वरको नमस्कार करताभया और मार्कण्डेय मुनि परमेश्वरसे बोले कि हे भगवन् अपनी मायाके बलसे एकार्णव जल में बालक का रूप धारणकर सोतेहो सो सम्पूर्णता से उस माया को जानने की इच्छा मैं करताहूं ४६। ४७ व हे प्रभो कौन सञ्ज्ञावाला व कौनसा भगवान् इस लोक में विख्यातहो यासे मैं तर्कना करताहूं कि आप महाभूतहो क्योंकि और कोई भूत इसप्रलय में स्थित नहीं है ४८ फिर भगवान् बोले कि हे मार्कण्डेय मैं नारायण रूप ब्रह्माहूं और सम्पूर्ण भूतोंको उत्पन्न व नाशकरने वालाहूं ४९ व ऐन्द्रपदमें इन्द्र और ऋतुओं में वत्सर अर्थात् वर्षहूं और युगोंमें युगक्ष और युगोंका आवर्त्त रूपहूं ५० व सम्पूर्ण प्राणी और सम्पूर्ण देवता और नागों में शेष और पक्षियों में गरुडहूं ५१ व हजार शिर और हजार पैरोंवाला जीव और सूर्य्य व यज्ञपुरुष और हव्य व अग्नि और जलोंका पति समुद्रहूं ५२ और अपने धर्म में शुद्धचित्त वाले ब्राह्मणों में जो ब्रह्मवित् सन्यासी कहिये हैं वह निरुद्धात्मा ब्राह्मण मैंहूं ५३ व आत्मामें जगत्को देखनेवाला ज्ञानी और योगियों में योग का जाननेवाला व सम्पूर्ण भूतों में कृतान्त अर्थात् दैवरूप व निग्रहके ईश्वरों में काल सञ्ज्ञक ऐसा मैंहूं ५४ व सम्पूर्ण प्राणियोंमें कर्मक्रिया करनेवाला जीव व सम्पूर्ण जीवों में निष्क्रिय ५५ व प्रधानपुरुष व सब आश्रमधारियों का धर्म तथा तप ऐसा मैंहूं ५६ व क्षीरोदधि समुद्रमें हयग्रीव व ऋतु अर्थात् सुन्दरवाणी व सत्य व प्रजापति इन सबोंका रूप एक मैं हूं ५७ व सांख्य व योग व परमपद

व यज्ञ व मन्त्र और विद्याधिप येभी सब मैंहूं ५८ और ज्योति व वायु व भूमि व आकाश व जल व समुद्र व नक्षत्र व दशों दिशा व वर्ष व सोम मेघ सूर्य्य ये भी मेरेही रूपहें ५९ व क्षीरोद सागर हूं और बडवानलहूं सम्वर्तक नाम अग्नि होके फिर सूर्यरूप हुआ मैं जलका शोषण करताहूं ६० व श्रेष्ठ पुराण और भूत भविष्यत वर्तमान इनकालों की उत्पत्ति करनेवाला ऐसा मैं हूं ६१ व जो कोई वस्तु दीखनेमें आती है व जो कोई वस्तु सुनी जाती है और जिसका अनुभव होताहै यह सम्पूर्ण कहाहुआ मेराही रूपहै ६२ व हेमार्कण्डेय मैंने पहिले जैसा विश्वरचाथा वैसाही अबमें रचताहूं और अब तू मेरेको देख और मैं युग २ प्रति संपूर्ण जगत्को रचूंगा ६३ और हे मार्कण्डेय पूर्व कहाहुआ सम्पूर्ण वृत्तान्त को निश्चय करके शुश्रूषा और धर्मकी इच्छा करताहुआ मेरी कुक्षि में विचर और सुखको प्राप्तहो ६४ व मेरी कुक्षिमें ब्रह्मा तथा ऋषि व देवता ये सम्पूर्ण स्थितहैं यासे जयरूप और व्यक्त तथा अव्यक्तयोग ऐसा मुझको तू प्राप्तहो ६५ व एक अक्षरवाला व तीन अक्षरोंवाला व तीन पदोंवाला ऐसा धर्म अर्थ काम इन्हों को देनेवाला परममन्त्र मैंहूं ६६ वैशम्पायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् इसी वृत्तान्त को वेदव्यासजी महामुनि मार्कण्डेयजी के प्रति वेदान्तसूचक पुराणों में वर्णन करतेभये और परमेश्वर मार्कण्डेयजी को अपनी कुक्षि में प्रवेश करते भये ६७ फिर भगवान् की कुक्षि में प्रविष्टहुआ महामुनि हंसरूपी भगवान् की सेवा करता हुआ सुखपूर्वक रमण करताभया ६८ और नाश से रहित नाना प्रकारसे शरीरको धारणकर और चन्द्रमा तथा सूर्य्य से रहित महार्णव में शनैः शनैः विचरताहुआ हंस साक्षिक भगवान् प्रलय के अन्त में जगत् को रचता हुआ विचरताहै ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांमार्कण्डेयदर्शनेद्विशततमोऽध्यायः २००

दोसौ एकका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् अपने कुम्भसे उत्पन्नहुआ अपने शरीरको समष्टि अभिमानवाले अपनेही शरीर से आच्छादनकर तपको करने लगा १ फिर तपसे अनिर्वचनवान् हुआ वह इंसावतार वशिष्ठमुनिकी तरह होके लोककी रचनामें बुद्धिको लगा और पञ्चमहाभूतों को चिन्तवन करताभया २

और तपकरके भावितात्मावाले हसानतार जब चिन्तवन करनेलगा तब जलमें स्थितहो आकाशसे रहित व जलरूप व सूक्ष्म ३ ऐसे जगत्के लीनहोनेमें चिदात्मा अधिष्ठान में स्थित हुआ ईषत् संक्षोभ अर्थात् समष्टि अहङ्कारवाला में ईश्वरहूं ऐसी मति करताहै फिर संकल्परूपी उर्मीकरके आकाशाख्य सूक्ष्म छिद्र होताहै अर्थात् संकल्प करके सूक्ष्म इन्द्रियादि से ग्रहण करने के योग्य व छिद्र आकाशरूप होताहै ४ पीछे वह ईश्वर फिर अन्य संकल्पों से तिस आकाशमें शब्दरूप करके गतिवाला होके व पवनरूप क्रमसे उत्पन्न होके पीछे वही ईश्वर आकाशको प्राप्तहोके नहीं प्राप्तहुयेकी तरह क्षोभसे रहित वायुरूप होके बढ़ता भया ५ पीछे तिस बढ़तेहुये और बलवाले वायुने चिदात्मारूप समुद्र संक्षोभित किया तब आपसके वेगोंसे अभिहतहुये संकल्परूप तरङ्ग चिदात्मारूप समुद्रको मथने अर्थात् व्याकुल करनेलगे ६ पीछे जब क्षोभको प्राप्तहुये बड़े समुद्रकाजल व्याकुलहोनेलगा अर्थात् मथनरूपभया तब प्रभु व कृष्णमार्गवाला व अतिप्रकाशवाला ऐसा अग्नि प्रकटहुआ ७ तब वह अग्नि बहुतसे पानीको शोषताभया तब समुद्रके क्षयहोनेसे छिद्रहोके पूर्वोक्त आकाश निकसा ८ व आत्माके तेजसे उत्पन्नहुये और पवित्र व अमृतके रसके समान उपमावाले ऐसे जलहैं व छिद्र से आकाश उपजाहै और आकाश से वायु उपजा ९ व जलसे अग्नि उपजा व अग्निसे जल व जलसे पृथ्वी उपजी पीछे महाभूतादि को उत्पन्नकरनेवाला ईश्वर पंचमहाभूतों को देख प्रसन्नहोके १० फिर लोकसृष्टि के अर्थ के तत्त्वको जाननेवाला ईश्वर ब्रह्माके जन्मको ढूंढ़नेलगा ११ और चारयुगों की सत्यासि हजारयुगों पर्य्यंत जो पृथ्वी में तपकरके भावितात्मावाले १२ व बहुतजन्मों में निरुद्ध आत्मावाले और यति ऐसे उन पूर्वोक्त ब्राह्मणोंके मध्यमें उत्तम ब्राह्मण और ज्ञानवान् विश्वरूप का उपासक योगियों के योगका जाननेवाला १३ योगवान् सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य रूप विक्रमवाला ऐसे पुरुषको ईश्वर लोकके अर्थ ब्रह्मा बनानेके अर्थ नियुक्त करताहै १४ पीछे तिस जलमें शयन करताहुआ नानाप्रकारकी क्रीड़ा करताहुआ ब्रह्माण्ड का पति होके ईश्वर आनन्दित रहताहै १५ पीछे हजार पत्तोंवाला रजसे रहित चारों तरफ से प्रकाशित मनोहर ऐसे एक कमल को अपनी नाभी में उत्पन्न करताभया १६ पीछे अग्निका प्रकाशित शिखाकी कांति के समान कांतिवाला रूप औ विषयादिकों के स्वादसे रहित

शरदृऋतुमें मलसे रहित जो सूर्य तिसके समान तेजवाला उदार प्रकाशवाला हृसावतारके शरीरमें उपजा ऐसा कमल प्रकाशित हुआ १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायामेकाधिकद्विशतोऽध्याय २०१ ॥

दोसौदोका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे पीछे योगके जाननेवालों में श्रेष्ठ सब भूतोंके मनों से युक्त सब भूतों को रचनेवाले चारोंतर्फ को मुखवाले १ ऐसे ब्रह्माजी को पूर्वोक्त अति विस्तारवाले पार्थिवादि गुणों से लक्षित ऐसे कमल में वह पूर्वोक्त ईश्वर नियुक्त करतामया २ व ऋषिजन औ पुराणके जाननेवाले मनुष्य जिस कमल को पृथ्वीरुह नारायणके अगसे उपजा कहते हैं ३ व उस कमलका जो आसनहै तिसको पृथ्वी कहते हैं और जो उस कमलके अंकुरहैं तिन्होंको दिव्य पर्वत कहते हैं ४ व हिमवान् मेरु नील निषध कैलास मुंजवान् गंधमादन पवित्र शिखर मंदराचल उदयाचल कंदर विंध्य अस्ताचल ५।६ ये सब कामोंसेयुत पर्वत देवते सिद्ध पुण्यात्मा इन्होंके आश्रम कहे हैं ७ व इन पर्वतों से इतर जो देश है उसको जंबूद्वीप कहते हैं जहां मुनिजन यज्ञ करतेभये वह कर्मभूमि कहाती है ८ और जो गर्भसे देवताओं के अमृतके रसकी उपमाके समान उपमावाला जल झिरता है वह दिव्य नदी कहाती है ९ व जो कमलके चारोंतर्फ केशर हैं वे इस विश्व में असंख्यात धातुरूप पर्वतहैं १० व तिस कमलके उपरले जो पत्रहैं वे दुर्गम पर्वतों से व्याप्त ऐसे म्लेच्छ देश कहे हैं ११ व जो उस कमल के नीचेके पत्ते हैं वे दैत्य सर्प इन्हों के निवासके अर्थ पातालसंज्ञक कहाते हैं १२ व तिस कमलका जो नीचला भाग है वह जलरूप है जहां महापातक करने वाले जन डूबते हैं १३ व जो कमलमें जल होताहै वह चारोंदिशाओं में विख्यात चारसमुद्रहैं १४ ऐसे नारायण के शरीरमे उपजे कमलकी उत्पत्ति है सो यह भगवान्से पुष्कर अर्थात् कमलका मगन हुआहै १५ व इसीकारण से ईश्वरके जाननेवाले यज्ञिय और पुरातन ऐसे परमऋषियों ने यज्ञमें भगवान्का नाम पद्मनिचीकराहै अर्थात् पद्मरूप इष्टिकाओं से भगवान् का चिंतन करा है व ऐसेही भगवान् को पद्मके विषे संसारकी परमविधि रची है व पर्वत नदी देवता आदि उपजे हैं १६ । १७ व सामर्थ्यवाला औ अति प्रभाववाला महात्मा आपही तप:

जनेवाला। ऐसा ईश्वर शयनके समयमें समुद्रके बीच अपनी नाभी से इस जगन्मय कमलको रचताभया १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्वयधिकद्विशततमोऽध्यायः २०२ ॥

दोसौतीनका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि प्रलयकाल के अन्त में तमोगुण से उत्पन्न हुआ मधुनामवाला महान् असुर उत्पन्न होताभया १ और रजोगुणसे उत्पन्न हुआ कैटभ नामवाला दैत्य होताभया फिर रजोगुण और तमोगुण से आविष्ट २ एकार्णवके जलको क्षोभित करनेवाले कृष्ण और लालवस्त्रोंको धारण करनेवाले श्वेत दीप्तरूप उग्रदष्ट्रावाले ३ मद से उन्मत्त केयूर वलयसे प्रज्वलित महाविकराल ताम्र सरीखे नेत्रोंवाले भारीछाती महाभुजावाले ४ बड़े शिरको हलाने वाले व चलनेवाले पर्वतों के समान नीले मेघों की कांतिके समान कांतिवाले सूर्य्य के समान प्रतिमा और मुखवाले ५ विजली और बद्दल इन्हों के समान लालनेत्रों वाले हाथोंकरके भयानक पैरोंके वेग करके समुद्र के जलको फेंकते हुये ६ कमल में चारमुखोंवाले शत्रुओं को मारनेवाले और शयन करनेवाले ऐसे विष्णुको कँपातेहुये ऐसे वे दोनों दैत्य ७ योगियों में श्रेष्ठ नारायण की आज्ञासे प्रजा को रचने और देवता विश्वेदेवा और ऋषिजन इन्हों को रचने के अर्थ उत्पन्नहुये ऐसे ब्रह्माजी को देखके ८ कहनेलगे कि हे पुरुष कमलकेमध्य में स्थित गर्वित और युद्धकी इच्छा करनेवाले क्रोधको प्राप्तहुये क्रोधसे लाल नेत्रोंवाले ऐसे वे दोनों दैत्य ६ सफेद पगड़ी को धारण करने वाला चारमुखों वाला मोहसे हमारेको नहीं गिननेवाला व सब दुःखोंसे रहित ऐसा तू कौन है १० और हे कमलोद्भव यहां आके हम दोनों के संग बाहुयुद्धकर हम दोनोंके अगाडी स्थितहोने को तू समर्थ नहीं है ११ और तू कौन है तेरा उत्पन्न करने वाला कौनहै किसका तू यहां प्रेरित किया है और कौन तेरेको रचने वाला है कौन तेरी रक्षा करनेवालाहै किस नामसे तू विख्यातहै १२ ब्रह्माजी कहने लगे जो संसारमें ब्रह्मानामसे विख्यात और योगसे उत्पन्न होनेवाला हजारहों नाम से नहीं जानाजावे तिससे उत्पन्नहुआ ऐसे मेरे को क्या तुम नहीं जानते १३ तब मधु कैटभ दैत्य कहने लगे कि हे महामते हम दोनों से यहां इस संसार में

तब उत्पन्नहुआ पुत्र ब्रह्माजी से कहनेलगा कि मैं तेरी क्या सहायकरूं १६ तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि कपिल और नारायण इन दोनों से पूछ जो ये कहें सोकर तब उनदोनोंके कहनेसे भागवती गतिकोप्राप्तहो परमस्थानमें प्राप्तहोताभया १७ पीछे ब्रह्माजी भूर्भुव नामवाला व मोक्षके उपायमें चतुर ऐसे तीसरेपुत्रको रचता भया १८ पीछे यह पुत्रभी दोनों पूर्वोक्त पुत्रोंकी तरह मद्गति को प्राप्तभया ऐसे तीनपुत्र परमगतिको प्राप्तभये १९ व इनपुत्रोंको ग्रहणकर नारायण और कपिल मुनिभी अपनी गतिकोप्राप्तभये २० व जबतक नारायण और कपिल मुक्तहुये तब तक ब्रह्माभी अति तीव्र घोरतप करतारहा २१ पीछे ब्रह्माजी तपकरताहुआ रति को नहीं प्राप्तहुआ तब अपने आधे शरीरसे शुभ भार्याको रचताभया २२ अर्थात् तप तेज नियम इन्होंकरके लोकके रचने में समर्थ व आपके सदृश ऐसी भार्याको रचताभया २३ पीछे तिस भार्याकेसंग तपोमय ब्रह्मा रमण करनेलगा और सबप्रजापतियोंको रचताभया समुद्र व नदियोंको रचताभया २४ पीछे तीन पदोंवाली वेदकीमाता ऐसी गायत्रीको ब्रह्माजी रचताभया व गायत्री से उपजे हुये चारवेदोंको भी ब्रह्मा करताभया २५ व अपने अर्थ ब्रह्माजी लोकको रचने वाले पुत्रोंकोभी रचताहुआ जिन्होंसे ये लोक प्राप्तहुये हैं २६ व ब्रह्माजी विश्वेशनामवाला महातपवाला सब आश्रमोंमें तत्पर ऐसे प्रथम पुत्रको रचताभया व पवित्ररूप व धर्मनामसे विख्यात ऐसे दूसरे पुत्रको रचताभया २७ व दक्ष मरीचि मित्र पुलस्त्य पुलह क्रतु वशिष्ठ गौतम भृगु अंगिरा मनु २८ इननामोंवाले ब्रह्मर्षिरूप पुत्रोंको ब्रह्मा रचताभया और इन तेरह ऋषियों के वंशोंसे यह संसार उपजाहै २९ व अदिति दिति दनु काला अनायु सिंहिका मुनि प्रक्रोधा सुरसा क्रोधा विनता कद्रू ३० ये बारह कन्याहुईं और सत्ताइस नक्षत्रों के नामोंवाली सत्ताइस कन्या दक्षप्रजापतिजी के हुईं ३१ और मरीचऋषि के तपसे निर्मित कश्यप पुत्र उपजा जिसके अर्थ अदिति आदि बारह कन्या दक्षप्रजापति देता भया ३२ व रोहिणी आदि नामोंवाली सत्ताइस कन्याओं को दक्षप्रजापति चन्द्रमा के अर्थ देतागया ३३ व लक्ष्मी कीर्ति साध्या विश्वा कामा मरुत्वति ये ब्रह्माजी की स्त्रीहुई पांचों कन्या ३४ धर्म के देखनेवाले ब्रह्माजी ने धर्मनाम वाले पुत्रके अर्थदीं ३५ व जो ब्रह्माजी ने अपने आधे शरीर से भार्या रचीथी वह कामरूपिणी भार्या गौ बनके ब्रह्माके समीप में स्थितभई ३६ तब मैथुन के

समयमें लोकपूजित ब्रह्मा गौओं के हितके वास्ते तिसके सग भोग करताभया
३७ पीछे लोककी सृष्टी के अर्थ ब्रह्मासे तिमविषे विपुल धर्मवाले अग्निके स-
मान तेजवाले ऐसे ग्यारह पुत्रहुये ३८ वे रोतेहुये भागतेहुये ब्रह्माजीको प्राप्तहुये
फिर इसवास्ते वे निरृति सर्प एकपात मृगव्याध पिनाकी दहन ईश्वर ३९ । ४०
अहिर्बुध्न्य कपाली सेनानी अपराजित् इन नामोंवाले ग्यारह रुद्र कहाते हैं ४१
पीछे तिस गायमें गाय और बैल और माप सिक्काण्णी अक्षत ४२ अजा एक
वशमें उपजनेवाले पशु अमृत उत्तम औषधि येभी सब उस गायसे उत्पन्नभये
४३ व विषय कामधर्म नामवाले पुत्रसे लक्ष्मी की उत्पत्तिहुई और साध्यसञ्ज्ञक
देवते उत्पन्न हुये और भव प्रभव ईशान सुरभी ४४ अरुन्धती आरुणी वि-
श्वावसु बल ध्रुव महीप तनूज विज्ञान मत्सर विभूति ये सब ब्रह्माजी के सकाश
से गायमें उत्पन्नहुये और सुपर्वत वृष नग इनसब पुत्रोंको लोकों से पूजित ऐसी
साध्या जनतीभई और यह देवी आगेकहे इनपुत्रोंको भी जनती भई जैसे धर
ध्रुव ४५ । ४७ तीसरा विश्वावसु चौथा ईश्वररूप सोम पाचवां पर्वत योगेन्द्र ४८
वायु आठवा निरति वसु येभी सब धर्म के सकाश से साध्यामें उपजे ४९ व सब
विश्वेदेवता धर्म के सकाशसे विश्वामें उपजे और सुधर्मा महाबाहु शङ्खपात ५०
वपुष्मान अनन्त महीरण विश्वावसु सुपर्वा विष्कुम्भ ५१ व सूर्य्य के समान
कान्तिवाला रुद्र दक्ष यज्ञवसु उक्थ ये सब विश्वेदेवा कहाते हैं ५२ व धर्म के स-
काश से मरुत्वति में विश्वेदेवा उत्पन्न होतेभये ५३ व अग्निचक्षु हविर्ज्योति
सावित्र मित्र अमरशार वृष्टि महान् भुजावाला शक्षय ५४ विरजा शुक विश्वा-
वसु विभावसु अरमत चित्ररश्मि निष्कुषित ५५ नहुष आहुति चारित्र ब्रह्मपन्नग
वृहन्त वृहद्रूप परतापन इन नामोंवाले मरुतदेवते उत्पन्नहुये ५६ व कश्यपजी
के सकाशसे अदिति विषे इन्द्र विष्णु भग त्वष्टा वरुण अंश अर्य्यमा सूर्य ५७
पूषा मित्र मनु पर्जन्य इन नामोंवाले बारह सूर्य्य उपजे ५८ व सूर्य के सरस्वती
में रूपश्रेष्ठ बलश्रेष्ठ इन नामोंवाले दो पुत्र उपजे ५९ व अदिति में देवते उपजे
व दिति में दैत्यउपजे व दनुमें दानव व सुरसामें सर्प और कला में कालकेय
सञ्ज्ञक असुर व राक्षस ये सब उपजे ६० व अनायुषामें आधि व व्याधि व सिं-
हिकामें राहु व मुनी में गन्धर्व ६१ प्रवोधा में अप्सरागण और क्रोधा में सब
प्राणि पिशाच पक्षिगण ६२ गुह्यक गाय बैलसे रहित सब चौपाये दे सब क्रो-

धानामराली में उपजे ६३ व विनता में अरुण व गरुड़ व कद्रू में सब पृथ्वी को धारण करनेवाले बड़े सर्प ये सब उपजे ६४ ऐसे ये सब दक्षकी बारह पुत्रियों में उत्पन्न हुये हैं ६५ ऐसे इस ससागरों मनलोक आपसमें वृद्धिको प्राप्त भये हैं ऐसे मैंने वेदव्यासजी के सकाशसे सुनाहै सो आनुपूर्व से तेरे अगाड़ी वर्णनकिया ६६। ६७ जो मनुष्य इस उत्तम आख्यान का श्रवण करेगा वह सबकामों को प्राप्तहो और शोकसे रहितहो स्वर्ग के फलोंको भोगेगा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिउत्तरभविष्यपर्वेभाषायांपौष्करेसवैभूतोत्पत्तौनगुरांपिकदिशतोऽध्यायः ॥

दोसौपांचका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् दिव्य व्यासके संयोग से उत्पन्न हुआ बहुत गुणोंसे पूजित १ वृत्तवाले छन्दों विस्तारवाले मगागों करके और लघुरूप मधुरवाणियों और पदोंके विग्रहों करके ग्रथित २ धर्म अर्थ काम इन्होंकरके संपन्न शरीरके अन्तर निरचनेवाली इच्छासे ग्रथित ३ ब्राह्मणोंके प्रभाव योद्धाओं के पराक्रम वैरका निर्पातन और प्रतिज्ञा के पारको प्राप्त होनेवाले ४ वैरी की स्तुति करने में संपन्न ऐसा मैंने अपने वंशका चरित्र सुना ५ व कौरव पाण्डव वंशके मनुष्यों के नाशके अर्थ दुर्योधनकेसंग जो युद्धहुआ तहां जितने थे मरगये तिन्होंकेपुत्र अपने अपने राज्योंको प्राप्तहोतेभये और राजायुधिष्ठिर श्रीकृष्णकी आज्ञाको माननेवाला हुआ यहभी जाना ६ व तीनों वर्णोंके धर्म भी बहुत प्रकार से कहे और शूरोंका भी स्वर्गका हेतुकहा ७ व प्राणियों के हितके वास्ते तुमने चारों वर्णोंके पृथक् पृथक् धर्मभी कहे ८ व गर्भनाम को प्राप्त होने वाले मनुष्यों को योनरूप भी कहा और क्षीण पुण्य होजावे तब देवमचार भी कहा ९ व दानकी विधिभी बहुतप्रकार से कही ऐसे सबप्रकार मेरेप्रति आपने वर्णन किया १० सो यह बड़ा भारका अध्ययन एकदिन करके दिव्यचनु करके भी मेरेसे कहा नहीं जाता इसवास्ते ब्रह्माजीके दिनका विस्तार श्रवण करने की इच्छाहै हे भगवन् यह अति आश्चर्य है ११। १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिउत्तरभविष्यपर्वेभाषायांजनमेजयप्रश्नवर्णनांपिकद्विशतोऽध्यायः २०५ ॥

दोसौछाका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् पांचों इन्द्रियों ने मारवान होके यु धिष्ठिर

रहित चित्तसे कहनेवाले मेरेसे कथाको सुन १ हेराजन् जो वेद मूलकत्त्व करके मवद्धहै औरओर जो कर्मोकरके भी अवद्धहै और ब्रह्मके जाननेवाले पुरुषोंको प्राक्सिद्धहै २ व अव्यक्तहै और जो नित्यहै जो सदसदात्मक है जो निष्कल है तिस ब्रह्मको तू सुन ऐसे ब्रह्मसे अहङ्कारसेयुक्त ब्रह्मही उत्पन्न हुआ है ३ व दिव्य व दिव्य शरीरवाला सबभूतोंका पति अचिंत्य अविनाशि युगोंकी उत्पत्ति करनेवाला ४ अभूत अर्थात् कालत्रयमें भी प्रसिद्ध अजन्मा सब जगहसे समताको प्राप्तहोनेवाला अव्यक्तसेपरे जिसको नारायणके जाननेवाले तत्रूप कहते हैं चारोंतर्फ हाथ व पैरोंवाला चारोंतर्फ से नेत्र शिर कान मुख इन्होंवाला सब संसारको आच्छादित करनेवाला ५।६ सत् असत्का कारणअव्यक्त व्यक्त रूप में स्थित विचरताहुआ भी दृष्टि में नहीं आनेवाला ७ व विकार पुरुष व व्यक्त व रूपसे रहित रूपकेआश्रित सर्वोमें अचिंत्यरूप होके विचरनेवाला जैसे काष्ठमेंस्थित अग्नि तैसे ८ भूत और भव्यका उत्पन्न करनेवाला सबका स्वामी परमाकाशमें स्थितहोनेवाला सब लोकका प्रभु ९ ऐसे ईश्वरमें अहकार उपजा और अहंकार से युक्तहुआ वह ब्रह्म अव्यक्त और व्यक्तिको प्राप्त स्थावर जंगम जगत्का स्वामी ऐसा ब्रह्मारूप उत्पन्नहुआ १० तिसको ब्रह्मके भावकरके जानो वह ब्रह्म स्थावर, जंगम जगत्का पतिहै ११ सो वह ब्रह्म मैं ईश्वरहूं ऐसा अहंकारसे युक्तहुआ मैं प्रजारचूंगा ऐसा विचारता है और जिसी ब्रह्म से यह प्रजा ततुरूप होरही है १२ तब अनेक प्रकार का चिन्तवन करनेवाला ब्रह्म शरीरको प्राप्तहो स्वभाव से जलको रचताभया जिससे यह सपूर्ण जगत् विस्तृतहुआ है १३ सर्वव्यापी निरालम्ब अग्राह्य अजय ध्रुव ऐसे ब्रह्मरूप में ब्रह्मशब्दों से शब्दित १४ अव्यक्तरूप पांचतत्त्वोंके लक्षणों करके व्यक्तिको प्राप्तहुआ अनेक प्रकारके चिंतवनकर अनेक वस्तुओं को गर्भधारण करताहै १५ जिस ब्रह्म से यह सब संसार विस्तृतहै तिसके स्वभावसे पैदाहुआ ब्रह्मा जलको रचताभया १६ व जलकी दृष्टिसे पहले वायुको देख मरीचि आदि ऋषियों में सप्तम लोक में संकेतित धातु शब्दको धारण करताभया १७ ऐसे वायुसे उपजा सम्पूर्ण जगत् समुद्रमें स्थित रहाहै १८ तब पृथ्वी शब्दकी इच्छा करनेवाले परमेश्वरने जलसे पृथ्वी अलग करी १९ व जलमें प्राप्तहुआ पृथ्वीरूप देवता चारोंतर्फ को वाणी से पूरनाहुआ २० व पृथ्वी कहनेलगी कि जलके ऊपर स्थित होने की इच्छा

रहूं और गभीर रूप जलमें दुःखित होरहीहूं २१ और शरीरको धारण करने वाली सब भूतों को उपजानेवाली सब जगह स्थानकी इच्छा करनेवाली २२ ऐसी पृथ्वी के कहेहुये शब्दको सुनके वराहरूपको धारणकर नारायण महासमुद्र में प्राप्तहो २३ पृथ्वीको उठाके दुष्कर कर्मकर जलपै स्थापितकर पीछे आप अन्तर्हित होगया २४ व जो ब्रह्ममय ज्योतिरूप आकाश संज्ञासे विख्यात ऐसा पृथ्वीका उद्धार करनेवाला विष्णुहै तिसके सकाशसे सब प्राणियोंका पितामह ब्रह्मा उत्पन्न हुआ २५ व अभी शेष कच्छप आदिरूप करके ज्ञानयोग के द्वारा प्रजाका हित करनेके अर्थ पृथ्वी को धारणकर रहाहै २६ व पृथ्वी के मध्य भाग को भेदनकर उत्पन्न होनेवाला सूर्य अपनी किरणों से जलको खैंचताहुआ उत्पन्न होताभया और सूर्य के मंडलसे चंद्रमंडल निकसा है ये सनातन ब्राह्मणों का राजा कहाताहै २७।२८व सोम मंडलसे वर्णात्मक ज्योति और तेजवर्के बढ़ानेवाला ऐसा पवन अर्थात् निश्वास उत्पन्न हुआहै २९ व वह सूर्य मंडलान अधिदैवक अर्थोंका स्रष्टा सोमाख्य ईश्वरसे वेदको प्राप्तहो योगमय ज्ञानसे सनातन ब्रह्मयोनि और दिव्य ऐसे पुरुषको रचना है ३० जो द्रवरूप है वह जल जानो जो घनरूप है वह पृथ्वीजानो छिद्ररूप आकाश जानो जो नेत्र है वह अग्नि जानो ३१ और अग्निमें उपजा वायुजानो और तिस देहमें सनातनरूप भूतात्मा पंच महाभूतमय होके बसताहै ३२ और ऐसा वह सनातनरूप ब्रह्महै सो वह बुद्धिरूप गुहाके विषय ज्ञानरूप विचारा जाताहै ३३ और जो प्राणियों के शरीरमें अग्नि बसता है वह सूर्यकाहीरूप है शरीरमें नित्य धातुओंके संग युक्तरहताहै ३४ सो स्वभावसेही नाशहोजाता है स्वभावसेही भयको प्राप्तहोता है स्वभावसेही शांतिको प्राप्तहोताहै और स्वभावसेही नहीं शांतिको प्राप्तहोता है ३५ और ब्रह्मके पदमें मोहित हुआ इन्द्रियों करके अति मूढ़ात्मा ऐसा प्राणी जन्म और मृत्युके कर्मोंकरके प्राप्तहोताहै ३६ और जबतक तत्त्वसे आनन्द रूप ब्रह्मको नहीं प्राप्तहोता तबतक जन्मोंको बारंबार प्राप्तहोताहै ३७ और जब इन्द्रियोंसे अतिभिन्नहुआ योगवेत्ता ब्रह्मभावको प्राप्तहोके इन्द्रियादिकोंमें स्वरूपानन्द प्रतिष्ठाको प्राप्तहोताहै ३८ और तत्त्ववेत्ता मनुष्य इस निपिद्ध लोकको और नरक लोकको नहीं प्राप्तहोता ३९ और गर्भ प्रवेश और मरण दुःखोंको देखे हुये प्राणियों से जानलेता है और आप दुःखोंको नहीं प्राप्तहोता ४० और ब्रह्म

को जाननेवाला कर्म्म की निवृत्तिमे पहले मुक्तिके उपायोंको अतीत अनागत आदि विषयों को जानताहै ४१ और कामादिकके लोभसे भिन्नहुई पूर्वयातना मनकरके चित्तकी ग्रंथियोंको रोकती है और भेदन करती है जैसे वायु समुद्रको भेदन करताहै तैसे ४२ और वासनाको रोकनेमे ज्ञान नेत्रकरके हृदय शुद्धहोताहै जैसे ब्रह्मसे देह बंधनों से युक्त जीव आत्मा ४३ और तेज की मूर्त्तिवाला योगी विद्याकरके उत्तम लोकको रचताहै और इस लोकको भी रचलेताहै ४४ और तिर्यक् योनियों में प्राप्तहुओंको भी ब्रह्मयुक्त चित कर्मोंको लुटादेताहै ४५ और मोक्ष और भोग दो हैं तिन्हेंमें भोग कर्मोंमे प्राप्तहोता है और मोक्ष कर्म्म की निवृत्तिमे प्राप्तहोताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांषडधिकद्विशतोऽध्यायः २०६ ॥

दोसौ सातका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि बढ़तेहुये सूर्यने जब पृथ्वी में छिद्रकिया तदा स्वभावसे रचाहुआ मैनाक पर्व्वत स्थित कियागयाहै १ और पर्वोंकरके पर्व्वत नामको प्राप्तहुआहै और नहीं चलनेसे अचल नामको प्राप्तहुआ है स्वभाव से ऐसा मेरुपर्वतहै २ और तिसपर्व्वतके पृष्ठ भागमें महा ऋद्धियोंवाला ज्योतिमे उत्पन्न स्वभावमे परमात्मा करके रचाहुआ ऐसा पुरुषमें है ३ और जो ब्रह्ममय तेजहै वह तिसके शिरके भीतर निहतकिया गयाहै ऐसा ज्योतिमय और दीप्त पुरुषरूप शरीरवाला ४ मुखमे निकसाहुआ तेजमे प्रकाशित चारमुख चारभुजाओं से युक्त ऐसा ब्रह्म उत्पन्न होताभया ५ वही फिर महा भूतभाव को प्राप्त हुआ और तिस देवका वेदमे उपजा मुखहै औ तिन वेदोंको धारण करनेवाले ब्राह्मणों में मुख्यहै ६ और जिसने पहलेही समुद्रमे पृथ्वीका उद्धार कियाहै ऐसे अलोक रूपहोके भी शोभताको प्राप्तहुआहै ७ और पैरोंकी सन्धिमें मेरुका पृष्ठ मध्यलोकहै अर्थात् मुक्तिस्थानहै और करोड़ही योजन ऊंचा और विस्तारवाला है ८ व इस प्रमाणसे भी चौगुना प्रमाण गिना जाताहै अथवा किसी प्राणी से सख्याकरने में नहीं आसक्ता ऐसाहै ९ व जिस पर्वत में सौ सौ योजनवाली चार शिलाहैं सो तिन विस्तारवाली चार शिलाओं से युक्तहै १० व जहां ब्रह्मवादी योगी सिद्धजन परायण ये सब वर्तमानहैं सिन्त होरहेहैं ११ मङ्गलदेव

इंद्र ग्यारहरुद्र आठवसु बारहसूर्य विश्वेदेवा इन्होंकरके सहित पृथ्वी के राजाओं की रक्षा की जातीहै १२ व पृथ्वीकी भी विष्णुके सगहुआ वह पर्वत रक्षाहोता है व सूर्य व वरुण करके सब जगह तेजका संघात है १३ व ब्रह्मरूप शरीररूप ब्रह्मरूप विष्णुमय तेज सर्वत्र समताको प्राप्तहुआहै और जो वेदको जाननेवाले नियमों को धारण करनेवाले सत्यव्रत में परायण ऐसे ब्राह्मणों ने ब्रह्म कहाहै १४ । १५ ऐसेही ये तीनोंलोक ब्रह्माके दिनमें स्थित रहते हैं और जिस दिनमें अव्यक्तरूप जो ब्रह्म प्रतिष्ठित है वह उपाधि में जीवरूप करके प्रकट होताहै १६ व ईश्वर के प्रभावकरके निश्वसितमात्र वेदकेद्वारा प्रेरित किया जो नित्यकर्म है वह नियतकर्म्म करने से श्रेष्ठवादी पुरुष अपने कर्मको उपजाता है १७ इस वास्ते वेदोक्तकर्म सब कालमें करना उचितहै ऐसे ब्रह्मवादियों ने यह ठीक कहा है १८ व बहुत होने से सत्यव्रत में तत्पररूप ब्राह्मणों ने विश्वशब्द युक्त किया है १९ व विश्वरूप मनोरूप बुद्धिरूप ऐसे मानकेपहले जोड़ाको रचताभया २० और वही सनातन ईश्वर देवी के साथ नानाप्रकारके भोगोंको करके पीछे अनुचरों सहित विचरताहै २१ व निर्वाणपदको प्राप्तहोनेवाले व अकिंचन मार्गकी इच्छाकरनेवाले इन्होंका ब्रह्मविदों में श्रेष्ठ ब्रह्मा यही है २२ व स्वर्ग से छूटीहुई जलधारारूप मूर्त्तिवाले परमेश्वरसे चन्द्रमा उत्पन्नहुआ है जिस धाराने शर्वोका स्वामिभावको महेश्वर प्राप्तकिया है २३ व महादेवजीका अभिषेचनकर कर्मों के स्वभावसे शब्दको करतीहै इसीवास्ते नदी कहाती है २४ पीछे मार्गको रोकनेवाले पर्वतोंका तिरस्कारकर आकाशसे पृथ्वीमें प्राप्तभई इसीवास्ते गंगा कहाती है २५ व यही सात प्रकारसे समुद्रके सगम में गोदावरी रूपसे होगई है और हे जनमेजय हजार प्रकारोंसे बारबार इसअविद्याप्रभव लोकको बढ़ाती रहती है २६ व जिसीसे सब प्राणी बढ़ते हैं महासुर भी बढ़ते हैं और बुद्धिमानों के सब क्रिया भी प्रवृत्त होती हैं २७ व जिस देवके चारमुखों करके वेदरूप करके निकसीहुई जो अक्षरमयी सिद्धिहै वह उपदेशमात्रको प्राप्तहोती है २८ व जिस देवके ज्ञानमय औचित्यमय और पुण्यकेकारण ऐसे चार पैरोंको धारण कियेहुये यह ईश्वर वृषहै २९ और सत्य उदारता शौच अभय ये चारों पैर हैं और सनातन धर्मका अनुष्ठाता ऐसा ब्रह्म शुद्ध ब्रह्मरूपहै और जो धर्म के चार पैर हैं जिन्होंकरके यह जगत् धारण कियाजाता है अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम धर्मका एक पादहै ३०

गृहस्थाश्रम धर्मका दूसरा पादहै वानप्रस्थ आश्रम तीसरा पादहै सन्यस्त चौथा पादहै ऐसे धर्म के चारपैर स्वर्ग के कारणकहेहैं ३१ व न्यायसे व गुप्तधर्म से ब्रह्माहमें यद्याधिष्ठित यह मन बढ़ताहै और वेदमेंही प्रमाणित योगसे शाश्वतवेद निवृत्तहोते हैं ३२ व पूर्वोक्त प्रकारसे योगको जाननेवाले गृहस्थियों को देखके पितर तृप्तहोते हैं और पर्वतके शिरपै स्थितहुये ऋषिभी धर्म मे प्रसन्नहोते हैं ३३ व तिस मेरुपर्वत के शिखरको देखके ऋषियों ने पैरों से वृषणों को पीडितकर विचार कियाहै ३४ अर्थात् ग्रीवाका निग्रहकर और पृष्ठभागकी निवाय और हसनेकी तरह नाभी देशमें दोनों हाथोंको स्थितकर और चारोंतर्फ से अंगोंका संकोचकर ३५ व मस्तकमें ब्रह्मको प्राप्तकर ऐसा फिर वह ब्रह्मा अधिकारी गन करके विश्वरूप विष्णुको रचताहै ३६ तब इन्द्रियोंसे रहित और विम्बसे विम्बकी तरह उद्धत और तेजकी मूर्त्तिको धारणकरनेवाला और आकाशमें उदितहुआ चन्द्रमाकीतरह प्रकट होजाताहै ३७ व ब्रह्मयोग करके मानो आकाश के मध्य में अतुल प्रभाव करके प्रकाशित दूसरा सूर्य है ऐसे प्रकाशित होताहै ३८ और मूढ़ों के प्रत्यक्ष शाश्वत ब्रह्म नहीं प्राप्तहोता और ललाट के मध्यमे स्थित और क्रियाके प्रति नियम्य और नियामकरूप करके स्थित ३९ व नेत्रोंको प्रकाशित करनेवाला ज्योति सूर्य और चन्द्रमाको प्रकाशित करनेवाला ऐसे ईश्वरको ४० सत्यव्रतमें परायण वेदको जाननेवाले अध्यात्मविद्यामें रत ऐसे ब्राह्मण देखते हैं और जो अध्यात्मको नहीं जानते हैं वे उस साक्षात्कार ईश्वरको कदाचित्भी नहीं देखसकते हैं ४१ अर्थात् जो पृथ्वी में योगी प्राणियों की निग्रह अनुग्रह करनेको समर्थहोवे और ऐश्वर्य्यसे उपजेहुये मोहमें प्राप्तहुये चित्तकरके अयोगात्माहुआ ४२ और सबके प्राणोंको दुःखदेने करके अयोगात्मा योगीसाक्षात् ईश्वरको नहीं देखसकते और सब प्राणियोंको मारनेकी इच्छावाले मनुष्यों के कुत्सित कर्मोंकरके योगको प्राप्तहो अपने भोगोंके अर्थ वेभी साक्षात्कार ईश्वर को नहीं देखसक्ते ४३ और सावधान मनवाला मोक्ष प्राप्तहेतु करके ब्रह्ममें प्राप्तहो चन्द्रमण्डल सस्थानसे मनको वशमेंकर ४४ हृदयमें प्रवेशकर सगुण ब्रह्म के नेत्रों के भीतर गर्भ से उपजनेवाला अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा इन्हों करके चार प्रकारवाला ब्रह्म ४५ तेजसे संयुक्त शाश्वत व अविनाशि इन्द्रियों से अयुक्त तेजरूप गुणसेयुक्त ४६ चन्द्रमा की किरणों से शुद्ध प्रकाशित ऐसे देव

नेत्रोंमे ऋग्वेद यजुर्वेदको उपजाताभया ४७ जिह्वाके अग्रभाग मे सामवेद को उपजानाभया शिरसे अथर्वण वेदको उपजाताभया उत्पन्न होतेही चारोंवेद अपने अपने क्षेत्रको प्राप्त होतेभये ४८ जो ये वेद ईश्वरके पदको जानते हैं इस वास्ते ये वेद भारको प्राप्तभये ये चारोंवेद शुद्धिकी उपाधिना को प्राप्तहो अपने अपने गुणोंमे विशिष्टरूप करके ४६ दिव्य रूपवाला सनातन ब्रह्म ऐसेपुरुषको रचते हैं अर्थात् उस ईश्वरकी उत्पत्तिको कहते हैं अथर्ववेद यज्ञका शिर कहाहै ५० और ग्रीवा और बाहुओंका अन्तर यह ऋग्भाग कहाहै हृदय और पगली यह सामभागकहा है ५१ बस्ति स्थान कटी देश जघा ऊरू पैर यह यजुर्भाग कहाहै ५२ व दिव्य रूपवाला देवस्थानसे उत्पन्न ऐसा पुरुष अर्थात् ईश्वर कहाहै ५३ व सर्व्वदेवमय सबभूतों को सुखकादेनेवाला सनातन हिंसासे वर्जित ऐसा यज्ञ दोनों लोकोंके अर्थ श्रेष्ठहै ५४ व योगसे आरंभवाला कर्मोंसे साध्य सनातन सबभूतोंको उत्पन्न करनेवाला ब्रह्मचर्य रूप ऐसे ईश्वरको जाने वही वेदवित् कहाताहै ५५ और वही सिद्ध वही सब पापोंसेमुक्त वेदको जाननेवाले मुनियोंने कहाहै ५६ और वेदको जाननेवाले वेद और उपनिषद इन्होंमें श्रान ऐसे ब्राह्मण वैष्णव सम्बंधी यज्ञकारूप ईश्वरहीहै ऐसे कहते हैं ५७ जनमेजय कहनेलगे मनमे ग्रहणकरनेके योग्य चित्तकी कामनासे उपलंभहोताहै सोइस के कारणको सुनने की इच्छाकरता हूं हे विप्र जैसे तू मानता है ५८ वैशम्पायन कहनेलगे हे भारत इसका कारण कुछ भी बाह्य नहीं है किन्तु शरीर और मानस भेदकरके अन्तर्गतही कारणहै ५६ जिस करके संशित व्रतवाले ब्राह्मण वेद्य कहते हैं और कर्मोंकरके अवेद्यरूप भी जानानहीं जाता ६० और विनीत ब्रह्म को सेवनेवाला सब कालमें विदित तत्त्ववाला ऐसे ब्राह्मण का सिद्धि का हेतु यही है ६१ अर्थात् सबकाल में पवित्रहोके वेदकर्म्म से नियतहुआ गुरुके अर्थ अंजली बांधके ब्राह्मण स्थितहोवे ६२ और सायंकाल और प्रातःकाल में ब्रह्मभाव करके विनीत समाहित बुद्धिवाला तत्त्वको जाननेवाला ऐसा मुनि ब्रह्मभावको जानके मोक्ष कर्मोंको करै ६३ व मन करके उत्तमरूप वैष्णव पद को प्राप्तहोवे और समाहित बुद्धिवाला ब्राह्मण ध्यान करताहुआ प्रसन्न रहै ६४ योगभावको जाननेवाला सब पदार्थों की ममता से रहित ऐसा ब्राह्मण विकार रहित चित्तकरके परब्रह्मको प्राप्तहोताहै ६५ जो पुरुष निर्विकार चित्तकरके ई-

श्वर का ध्यान करताहै जन्म के प्रभाव को जानताहै बंधनरूप ममता से रहित रहता वह परम्ब्रह्म को प्राप्तहोताहै ६६ जो ह्रासआदि से रहित है वही सनातन ब्रह्महै वहीकर्म योग करके विद्याकरके दिखाया गयाहै ६७ वैष्णव पदमें विनीत सवप्रकारके द्रव्यों से रिक्त कामयोग को त्यागनेवाले ६८ फिर जन्म की इच्छा नहीं करनेवाले कर्म कर्म में फलको नहीं चाहनेवाले ऐसे ब्राह्मणोंको मोक्ष मिलताहै ६९ अर्थात् कर्म के फलको ग्रहण करनेसे प्राणी बंध जाताहै कर्म के फल को नहीं ग्रहण करनेसे छुटजाता है पूर्वजन्म के संस्कारसे हे राजन् ब्राह्मणों के अर्थ क्रियाओंकी प्राप्ति होतीहै ७० इन्द्रियोंके वधसे छूटाहुआ परमपदको प्राप्त ऐसा मनुष्य फिर वारम्वार इस मनुष्य देहको प्राप्त नहीं होताहै ७१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वेभाषायांसप्ताधिकद्विशततमोऽध्यायः २०७ ॥

दोसौआठका अध्याय ॥

जनमेजय ने कहा कि उपसर्ग योग और ध्यान करनेके योग्य पद इन्हों के प्रतापसे मनुष्य देहको फिर नहीं प्राप्त होसक्ताहै १ वैशम्पायन कहनेलगे ब्रह्मादिकों के अनेक प्रकारों को वुद्धिकरके युक्त मन से जैसे पूछता है तैसे विस्तार पूर्वक सुन २ पंचसिद्धि अर्थात् दूर श्रवणादि जो है तिन्हों के शब्दादिक गुणों को त्यागकर योगयुक्त मनसे पचेंद्रिय निवासी ब्रह्मको चिंतवन करनेसे ३ सनातन वहुरूप ऐसा ब्रह्मयज्ञ प्राप्तहोताहै और वैराग्य वलके अभावमे ब्रह्मयज्ञ निरोध को प्राप्त होताहै ४ पांच इन्द्रियोंवाला नौ दरवाजोंवाला काम क्रोध लोभ इन्होंकी मेधासे रुकाहुआ ५ ऐसे ग्रामरूप शरीरके अनैश्वर्य्य से योग रुकजाता है और भृकुटी और नासिका के मध्य में निहित किये तेजकरके नेत्रों के प्रणिधानकरके चित्तको संयुक्तकर स्थितहुये योगी के धूमारूप जल अर्थात् ओसकी तरह वहुत सा निकसता है और नील तथा लोहित वर्ण के समान कान्तिवाले पीत तथा श्वेत धातु ६ मजीठके रंगके समान कांतिवाले कबूतर के सदृश व शुद्ध वैडूर्य्य के वर्ण के समान कांतिवाले व कमलके वर्ण व पत्ताके समान कान्तिवाले ७ स्फटिकरूप मणी के वर्ण के समान कान्तिवाले नागेन्द्रों के सदृश इन्द्रगोप कीड़ाके अर्थात् लाल रंगवाले तीजसञ्ज्ञक जीवके वर्ण के समान कान्तिवाले चन्द्रमा की किरणों के पानी के समान कान्तिवाले ८ वहुत वर्णोंवाले

इन्द्रके धनुषके समान कांतिवाले मेघों की तरह समागममें पड़नेवाले ६ पांखों वाले पर्वतों की तरह आकाश को रोकनेवाले ऐसे घूमें बद्दलों में वसुधा तल में प्रवेश करते हैं १० और शिरमें परमयोगसे युक्त सैकड़ों लटाओं से आवृत ऐसा मनसे उपजनेवाला महान् अग्नि स्थितहै ११ और तिसका प्रकाश लाखों किरण- के युगाग्निके समान प्रकाशित सब अंगोंसे भड़ते हैं १२ जितने वर्ष और राष्ट्र हैं तितनेही अग्निकी लटा कही हैं और जलकी धाराओंकी तरह निष्पातहैं १३ श्वेत लोहित वर्णोंकरके दिव्यसिद्ध गुणों से उत्पन्न सूक्ष्म प्राणको बढ़ानेवाला १४ वेगवाला भयानक शब्दवाला बलवान् प्राणगोचर अग्निके संचारसे धा- तुओं मे सगत ऐसा वायु अति चलताहै १५ व हजारहा अलग २ मूर्तिको कर अग्नि वायु जल पृथिवी धातु ये ब्रह्मसे प्रेरितहुये १६ संशय भावको प्राप्तहो बीजसूनहोके सर्ववेग करके संघात को प्राप्तहुये धातु कार्य कारण भावको प्राप्त होतेभये १७ दोनों नेत्रोंके मध्यमें सूक्ष्म पुरुष व विराट् ऐसा जो ब्रह्महै वहसूक्ष्म और विराट् के बहुतसे सूक्ष्मोंको रचता है १८ वही भगवान् व्यक्त व अव्यक्त सनातन सब विद्याओं का आधार प्रलयमें प्रलय के अंतको करनेवाला ऐसा विष्णु वही है १९ धातुओं से बँधेहुये तिस विष्णु में सुख दुःख के ज्ञाता ब्रह्मसे प्रेरित ऐसे सब पुरुष प्रवेश करते हैं २० चेष्टाकरने को आरंभ करनेवाले ब्रह्मसे समित ऐसीमूर्त्ति पृथ्वीको भेदन करके दशदिशाओं में प्राप्तहोती हैं २१ ये सब गजे सबत्रपि तहां प्रलयको प्राप्तहुये पृथ्वीतलको प्राप्त होजाते हैं २२ कर्म के क्षयसे छूटजातेहैं कर्मक्षयसे छूटने से और इन्द्रियों के बन्धन से छूटने के बाद २३ पश्चात् जिस कर्मके अनुसार संसारमें उत्पन्न होजातेहैं व अग्निहोत्र आदि कर्म करनेवाले मनुष्य तपोमयी अर्थात् कृच्छ्र चान्द्रायण आदि कर्म करनेवाले होते हैं २४ धूमसे बद्दल उपजते हैं बद्दलों से निर्मल जल उपजताहै २५ जलमें पृ- थिवी पृथिवी से फल फलसे रस रससे शरीरधारियोंके प्राण उपजते हैं २६ व यज्ञ में जो सनातन ब्रह्महै तन्मय ब्रह्म चैतन्यरूप स्मृहै बहुतसे कारणों करके तप जपमें परायण तपसे श्रान्त ऐसे ब्राह्मणोंने प्रधान भूत ब्रह्मकहाहै २७ अपा- य अपने भावकरके व्यक्त भावको प्राप्त सबभूतोंके भीतर स्थित विद्याके सग वि चरनेवाला २८ धर्मकर्त्ता इस विषय में अनेक प्रकार से स्थित ऐसा ब्रह्म तपकर के दग्ध पापोंवालों को नेत्रोंसे नहीं प्राप्तहोताहै २९ ब्रह्मको जाननेवाले ज्ञानियों

करके नेत्रोंसे प्राप्त होता है दोनों भृकुटियों के मध्यमे निकसाहुआ ईश्वर ऐसे प्रत्यक्ष होताहै जैसे मेघसे छुटाहुआ सूर्य ३० पक्षियों की तरह लोक में विचरने वाले द्वन्द्व परिग्रहसे रहित ऐसे मनुष्यों ने योगधर्म करके हे जनमेजय निश्चय फलकी प्राप्ति होती है ३१ व भूतोंमे उत्पन्नहुये प्राणी के उत्पत्ति नाश ऐश्वर्य सैकड़ों प्रकार से ब्रह्मा रचता है ३२ कर्मों के कर्मयोगको जाननेवाला ब्रह्माका लोक के अविनाशके अर्थ धर्मकी पुष्टीके अर्थ ३३ तेरह हजार युगोंसे परिमाणित कालयुगों में प्रथमयुग रूप ब्रह्मयुग कहाताहै ३४ सहस्र युगोंके अन्तमे संहार प्रलय के अन्तको करनेवाला लोकों का निर्विकार अचेतन ऐसा सूक्ष्म होताहै ३५ जैसे कारणरूप गुणोंकरके सूक्ष्म ब्रह्म प्राप्तहोताहै तैसे यह सनातन जगत् प्रलयको प्राप्त होताहै ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायामष्टाधिकद्विशततोऽध्यायः २०८॥

दोसौनवका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे महामुने सगुण ब्रह्मको जाननेवाले का और आद्ययुगोंका विस्तारकरके प्राग्वंश को सुनने की इच्छाकरूं हूं १ वैशम्पायन कहनेलगे कि दैवके निश्चयको सिद्ध करनेवाले बुद्धिसे उपपन्न ऐसे मनकरके जो मेरेको पूछताहै वह विस्तारपूर्व्वक सुन २ वृद्धिको प्राप्तहुआ योगात्मा ब्रह्मसे उत्पन्नहुआ प्रभु ऐसा ईश्वर प्राणियोंके बहुलभावको करताभया ३ और वेगसे विप्रिसरूप ब्रह्मासनपै स्थितहुआ ऐसा ब्रह्मा स्थाणुभूत अचलभावकरके ४ मोक्ष विषयमें ज्ञानमय पदमें रतहै जिससे हजारहा पद उपजते हैं स्थिरहै ५ सबकाल में वेदात्मक ब्रह्मयज्ञको करताहै और ब्रह्माको विपुलज्ञान ऐश्वर्य प्रवृत्तहोताहै ६ पीछे गतभूत प्राणियोंपै हितकी इच्छा करनेवाला ऐसे ब्रह्माने प्रथम ऐश्वर्य प्रवृत्तकियाहै ७ निर्विकार कर्मकरके ब्रह्मभूत ब्रह्माके ऐश्वर्यरूप आकाश प्रवृत्त होताहै ८ तब निर्मल आकाशरूप अविनाशी ऐसा ब्रह्म प्राप्तहोताहै सबभूतोंका संहार ऐश्वर्य योगवाले मनुष्योंका शरीरवाले जीवका संहारहोताहै ९ आकाश रूप ऐश्वर्यसे उपजा मधुयुगमें ब्रह्मवादी निमकरके प्रवर्त्तमान ऐश्वर्य वायुभावको करताहै और बहुतसे विकारोंकरके पढनेहुये महाबलोंकरके मंत्र निरूपण १० इन विकारोंकरके निश्चय ऐश्वर्यको प्राप्तहुआ ब्राह्मण सिद्ध होताहै ११ शरीरसे

निकर आकाशकरके भागताहै जैसे निगलाहुआ मनुष्य व्यान आदिकों के
१२ ऐश्वर्ययुक्त जो मुक्तहोताहै वह आकाश में विचरताहुआ इन्द्रकेसमान लोकों
के नेत्रोंकरके नहीं दीखता है १३ और जो उत्तम ब्राह्मण मनकरके ॐकार का
अध्ययन करते हैं वे इन कर्मों से सिद्धहुये जिसको योगी देखते हैं तिस ईश्व
को प्राप्त होजाते हैं १४ बुद्धिमान् ब्राह्मणों का यह परब्रह्म है यह प्राणियों के
भीतर बुद्धिकरके सहित विचरता है १५ महाशब्दवाला पुरातन ब्रह्मसे उत्पन्न
होनेवाला वायुसे उत्पन्न अक्षरभावको प्राप्त ऐसेही शब्दको ब्राह्मण कहते हैं १६
रूपसेरहित गेरूवर्णात्मकरूपसे सपन्न धातुओं से संगत स्वतन्त्र इच्छावाला भय
से रहित ऐसा यह ॐकार प्राणियों के भीतर विचरताहै १७ पहले इस ॐकार
को मनकरके ध्यानतेहुये वेदात्मक यज्ञको चिंतवन करनेवाले १८ पवित्र दान
ब्रह्मलोककी आकांक्षावाले ऐसे ब्राह्मण वैष्णवपदको प्राप्तभये हैं १९ पदके अर्थ
विगत ज्वररूप मनुष्य सब क्रियाओंको करते हैं वे जन्ममरण निमित्तक संसार
को नहीं चाहते २० जो विश्व तैजस प्राज्ञ इन तीनोंको समर्पण करनेवाले जो
माल्य उपहार आदि करके सत्य पराक्रमवाले परमात्मा ऐसे विष्णु को वेदोक्त
वचनों करके यजन करते हैं २१ वे साक्षात् वैष्णव तेजमें सयुक्तहोके ब्रह्म को
प्राप्त होजाते हैं हे नृप वेदोक्त वचनों करके ब्रह्म भी वैष्णव तेजहै २२ वेदको
जाननेवाले ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मवादी कर्मों से निर्मुक्त २३ सत्यव्रत में परायण पवित्र
ऐसे ब्राह्मणों को परमात्मा अन्छेप्रकार से दीखता है २४ यही परब्रह्म ब्रह्म
वैष्णवतेज रसात्मक ऐश्वर्य ऐसा विचारके अनंत दीखताहै २५ योगरूप विकार
महात्माओं को दूषित करते हैं और अत्यन्त जलकरके आच्छादित नाभी से
क्षुभित निश्चेतन ऐसाजीव शीत उष्णरूप तरंगों से आच्छादित किया जाताहै
२६ महासमुद्रमें गतजीव दग्ध होताहै और मग्नहुई महानदी जलमेंही दृष्ट
होती है २७ जड़में सोदमान आमन आच्छादन से छुटाहुआ विचेतन २८
ऐसा जीव शीतसे गिराया जाताहै और सुन्दर वदन में प्राप्तहुआ जलरेखा
सींचाजाता है शुक्लवर्णवाले घोनों से छिपेहुये नारायण से २९ ऊर्ध्वयोनि
शुक्लभारसे पीत वासित होताहै जैसे वायु से पूरित अर्थात् जलमें पूरित विच
रियों से ३० इन सूक्ष्म निरुद्धरूप क्रियाओं करके ऐश्वर्य को प्राप्तहो ब्राह्मण
सिद्ध होजाता है ३१ व रसात्मक ऐश्वर्य तत्साध्य प्रसाद से निश्चयहुआ

हजारहों धारावाला विस्तृत ऐसा होके मेघभावको प्राप्त होताहै ३२ सब भूतों के योग प्राप्त हेतुकरके धातुके अर्थ योगसे सिद्धहुआ ईश्वर नानाप्रकारके रसोंको रचताहै ३३ तेजके रूपवाला ऐश्वर्य्य आत्माको विघ्न करनेवाला होके विकारों के साथ बढता है और ब्राह्मण कारण में स्वस्थहै ३४ उग्ररूपवाले विरूपवाले दंडको हाथ में लेनेवाले घोररूप अति गभीर पिंगरूप नेत्रोंवाले ऐसे मनुष्यों करके ३५ भयानक नेत्रका उद्धार करताहुआ अगों से कटता है और बारम्बार जृम्भमाण ३६ एकबारमें नादकरते हैं फिर बहुत रूपवाले होके नाचतेहुये गाते हैं और विशेष करके तृप्त करते हैं ३७ त्रिभूतहोके युक्तहुये बहुत रूपों करके विघ्नों से लोभ देनेवाले ऐसेही के कंठ विषे लटकते हैं ३८ मधुर अभिधानों से भीत पुरुषकीतरह नहीं बोलते मस्तकोंकरके सब एककालमें पैरों में पडते हैं ३९ योगके प्रमादकी आकांक्षा करनेवाले योगके भीतरके बहुत प्रकारों को कहने वाले नाचते हैं और तिरजाते हैं ४० इसप्रकार अनेक प्रकारके विकारों के चारों तरफ रोकनेसे रहितहुआ ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्य्यको प्राप्तहोके सिद्धिको प्राप्त होताहै ४१ तहां वे जलकी बिन्दु सूर्यकी किरणों की तरह तेजरूप ऐश्वर्य्य को प्राप्तहोती हैं ४२ वही जल मेघरूपहोके आकाशमें प्राप्तहोके चंद्र सूर्यात्मक ज्योतिरूप होजाताहै ४३ ऐसे चंद्र सूर्यात्मक दिव्य ज्योतिवाला उत्तम बनरूप यह कालचक्र इस संसारमें प्रकाशित होरहाहै ४४ और पक्ष मास ऋतु संवत्सर क्षण लव मुहूर्त्त कला काष्ठा ४५ अहोरात्र निमेष उन्मेष तारागणोंकी गति और विशेषकरके ग्रहोंकीगति ४६ यह कालचक्र कहाहै और विकारोंके स्वीकारसे उपजाहुआ पार्थिव ऐश्वर्य्य को अभिग्रस्तहुये योगी अतुलरूप आसनसे गिरते हैं ४७ अलोभमें ऐश्वर्य्य छेदितहोताहै विभ्रमें भी योगीकांपता है पृथ्वीमें बारंबार भेदनहुआ निंदा को प्राप्तहोता है ४८ प्राणियोंके बहुतरूपों करके अन्यलोक वासियों करके विषयों से जल्द युक्त होताहै और मध्यपसे रुकजाताहै ४९ पीछे पार्थिव ऐश्वर्यको चारोंतरफमें सेवनेवाला योगीमूर्तिवाले धातुओंसे माराजाता है ५० अर्थात् शक्ति भाला निस्त्रिंश गदा तलवार हजारहा कुल्हार ५१ मर्मको भेदन करनेवाले पैनेबाण इन्होंकरके काटाजाता है इन विकारोंकरके चारोंतरफ रुकाहुआ ५२ ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्य्य को प्राप्तहोके सिद्धिको प्राप्त होजाता है पार्थिव ऐश्वर्यसे युक्त योगी ५३ समाधिसे नागमें प्राप्तहोके दिव्य गरको सूंघ

दिव्य अर्थों को सुनताहै ५४ दिव्यरूप पुरुषोंकरके छेदित भेदित नहीं सुकृतियोंके लोकमें प्राप्त होजाताहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांद्विशतोऽध्याय २०१ ॥

दोसौदशका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे अन्य धारणाको अर्थात् ब्रह्मसर्ग समागमको प्राप्तहो १ मनकरके सर्वांग धारणाकोकर निर्गुणरूप अन्तरात्मारूप ब्रह्मयोग करके ब्रह्मामनमें प्रजाको रचताहै २ अर्थात् नेत्रकरके रूपसे सम्पन्न अप्सराओं को रचताहै नासिकाके अग्रभागमें चित्ररत्नोंवाले ३ नृत्यवादित्र सामगीत इन्हों में कुशल तुंबरु आदि नामोंसे विख्यात ऐसे लाखोंगंधर्वों को रचताहै ४ योग के जाननेवाले ब्रह्मा ब्रह्मयोगकरके सुन्दरनेत्र केश भृकुटी मुखवाली ५ सौ पत्तों वाले कमलसे शोभित पवित्र वाणीवाली सेवनेके योग्य मूर्त्तिवाली ऐसीब्राह्मी लक्ष्मी को ६ सब प्राणियों का भूतात्मा ब्रह्मा सम्यक् चित्त भाव योग औ मन करके रचताभया ७ नेत्रोंसे रूप सम्पन्न अप्सराओं को नासिकाके अग्रभागसे गंधर्वोंको और बाजे बजानेवालों को रचताभया ८ गंधर्वोंकेवास्ते गानविद्याको और ब्राह्मणोंके वास्ते साम आदि वेदोंकेगानेको मन आदिकोंसे रचताभया ९ पैरों करके गतिवाले जीव नर किन्नर यक्ष पिशाच सर्प राक्षस १० हाथी सिंह व्याघ्र मृग इन आदि हजारहों जातियोंको और तृण आदिकोंको बहुतसे चतुष्पद जीवोंको ब्रह्मा रचताभया ११ जो प्राणी हाथोंमेंलेके भोजनकरते हैं तिन्होंको कर्म्म हेतुकरके ब्रह्मा अपने हाथों मनकरके रचताभया १२ प्राण आदि रूपोंकरके ऐसे अनेकप्रकार रचके फिर सब इंद्रियों की समाधिसे स्थिर युक्तहुआ ब्रह्मा रहता है १३ हृदयसे ब्रह्मा गायों को बाहुओं से पक्षियोंको जलमें उपजने वाले सत्त्वों को अर्थात् जीवों को अनेक प्रकारके भेदोंसे अलग अलग रचता भया १४ प्रज्वलित तेजवाले सूर्यवंशको करनेवाले दिव्य इन्द्रियोंको वशमें करनेवाले ऐसे अंगिराऋषि को १५ योगेश्वर ब्रह्मा भृकुटियों के मध्यसे उत्पन्न करता भया पीछे ब्रह्मवंश को करनेवाला दिव्य गुरु परम धार्मिक १६ प्यारा है विग्रह जिसको ऐसे नारदको ब्रह्मा अपने मस्तकके मध्यसे रचताभया सनत्कुमारजी को अपने शिरसे रचताभया १७ अभिमित ब्राह्मणोंका मानी निर्मल गतिवाला

स्वामी ऐसे चंद्रमाको ब्रह्माजी युवराज बनातेभये १८ अति तपकरकेयुक्त ग्रहों में मुख्य ऐसा चंद्रमा अपनी कांतिकरके आकाशके मध्यमें विचरताभया १९ योगसे गात्र मनकेद्वारा सिद्धिको प्राप्तहुआ ब्रह्मा स्थावर चररूप सब जगत्को रचताभया २० तहां प्राणियों के स्थान नानाप्रकार के योग इन्हों को ब्रह्मायुक्त करताभया २१ यह ब्रह्ममय यज्ञ योग सांख्य विज्ञान स्वभाव क्षेत्र क्षेत्रज्ञ २२ एकत्व पृथक्त्व संभव निधन काल कालक्षय इन्होंकारूप यही ब्रह्मा है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांदशाधिकद्विशतोऽध्यायः २१० ॥

दोसौग्यारहका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे युगोंमें प्रथमरूप ब्रह्मयुग मैंने सुना और हे ब्रह्मन् १ अब संक्षेपसे विस्तारवाला बहुतसे नियमोंसेयुक्त उपाय यज्ञोंसे कथित कर्त्तव्यों से शोभित क्षत्रयुगको श्रवण करने की इच्छाकरूं हूं २ वैशम्पायन कहनेलगे कि यज्ञकर्मोंसे अर्चित दान धर्म नानाप्रकार की प्रजासे उपशोभित ऐसे क्षत्रयुगको तेरे अर्थ कहताहूं ३ सूर्यकी किरणों से अर्दितहुये अंगुष्ठमात्र मुनिगौण प्राप्त विधिकरके प्रलयको प्राप्तहो ४ यज्ञादिकोंमें औ शमादिकोंमें प्रवृत्त ब्रह्मपरायण अर्थात् एक वेदकी शरणहुये वेदोक्त कर्म्मोंमें तत्पर ५ वित्तमें संपन्न श्री सज्ञक साम यजुर्वेदों की ऋचाओं औ ब्रह्मज्ञानसे संपन्न ऐसे ब्राह्मण पीछे हजारहों युगोंके अन्तमें वित्तसे संपन्न ज्ञानसे सिद्ध समाहित ऐसे वे ब्राह्मण अग्रिम अर्थात् अगिलेकल्पमें वेही ज्ञानरूप ब्राह्मण उत्पन्नहुये हैं तिन्होंमेंसे व्यतिरिक्त इन्द्रियोंवाला योगात्मा ब्रह्मासे उत्पन्न हुआ ऐसा दशप्रजापतियोंके नाना प्रकारकी प्रजाओंको रचताहै शुद्ध सत्त्ववाले ब्रह्मसे सौम्यरूप ब्राह्मणहुये सत्त्व औ रजोगुणवाले ब्रह्मसे क्षत्रियहुये रजोगुणरूप ब्रह्म से वैश्यहुये तमोगुणरूप ब्रह्मसे शूद्रहुये ६।९ ऐसे सतोगुण रजोगुण तमोगुणरूप इन गुणोंकरके ईश्वरके चिंतवनसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र १० इन जातियोंमें विख्यात चारवर्ण पैदाहुये हैं सो ये चारवर्ण कहाते हैं ११ एक चिह्नवाले पृथक् धर्मोंवाले दो पैरोंवाले कर्मफलके भोगके अर्थ संपन्न सबकर्म्मोंमें गतिको जाननेवाले १२ ऐसे ये मनुष्य वर्णभावको प्राप्तहुये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णोंको वेदोक्तक्रियामें अधिकार कहा १३ कर्मोंमें अनुगतहुआ दशप्रजापति रूप ऐसा विष्णु भगवान् ये

दिव्य अर्थों को सुनताहै ५४ दिव्यरूप पुरुषोंकरके छेदित भेदित नहीं सुकृतियोंके लोकमें प्राप्त होजाताहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायानवाधिकद्विशतोऽध्याय २०० ॥

दोसौदशका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे अन्य धारणाको अर्थात् ब्रह्मकर्म्म समारम्भको प्राप्तहो १ मनकरके सर्वांग धारणाकोकर निर्मुक्तरूप अन्तरात्मारूप ब्रह्मयोग करके ब्रह्मामनमें प्रजाको रचताहै २ अर्थात् नेत्रकरके रूपसे सपन्न अप्सराओं को रचताहै नासिकाके अग्रभागसे चित्रवर्णोंवाले ३ नृत्यवादित्र सामगीत इन्हों में कुशल तुंबरु आदि नामोंसे विख्यात ऐसे लाखोंगंधर्वों को रचताहै ४ योग के जाननेवाले ब्रह्मा ब्रह्मयोगकरके सुंदरनेत्र केश भृकुटी मुखवाली५ सौ पत्तों वाले कमलसे शोभित पवित्र वाणीवाली सेवनेके योग्य मूर्तिवाली ऐसीब्राह्मी लक्ष्मी को ६ सब प्राणियों का भूतात्मा ब्रह्मा सम्यक् चित्त भाव योग औ मन करके रचताभया ७ नेत्रोंसे रूप सपन्न अप्सराओं को नासिकाके अग्रभागसे गंधर्वोंको और बाजे बजानेवालों को रचताभया ८ गंधर्वोंकेवास्ते गानविद्याको और ब्राह्मणोंके वास्ते साम आदि वेदोंकेगानेको मन आदिकोंसे रचताभया ९ पैरों करके गतिवाले जीव नर किन्नर यक्ष पिशाच सर्प राक्षस १० हाथी सिंह व्याघ्र मृग इन आदि हजारहों जातियोंको और तृण आदिकोंको बहुतसे चतुष्पद जीवोंको ब्रह्मा रचताभया ११ जो प्राणी हाथोंमेंलेके भोजनकरते हैं तिन्होंको कर्म्म हेतुकरके ब्रह्मा अपने हाथों मनकरके रचताभया १२ प्राण आदि रूपोंकरके ऐसे अनेकप्रकार रचके फिर पचेंद्रियों की समाधिमें स्थित मुक्तहुआ ब्रह्मा रहता है १३ हृदयसे ब्रह्मा गायों को बाहुओं से पक्षियोंको जलमें उपजनेवाले सत्त्वों को अर्थात् जीवोंको अनेक प्रकारके भेदोंमें अलग अलग रचताभया १४ प्रज्वलित तेजवाले ब्रह्मवंशको करनेवाले दिव्य इन्द्रियोंको वशमें करनेवाले ऐसे अंगिराऋषि को १५ योगेश्वर ब्रह्मा भृकुटियों के मध्यमें जन्माताभया पीछे ब्रह्मवंश को करनेवाला दिव्य गुरु परमधार्मिक १६ प्यारा है विग्रह जिसको ऐसे नारदको ब्रह्मा अपने मस्तकके मध्यसे रचताभया सनत्कुमारजी को अपने शिरमे रचताभया १७ अभिसिक्त ब्राह्मणोंका गण निरंतर रात्रिका

स्वामी ऐसे चंद्रमाको ब्रह्माजी युवराज बनातेभये १८ अति तपकरकेयुक्त ग्रहों में मुख्य ऐसा चंद्रमा अपनी कान्तिकरके आकाशके मध्यमें विचरताभया १९ योगसे गात्र मनकेद्वारा सिद्धिको प्राप्तहुआ ब्रह्मा स्थावर चररूप सब जगत्को रचताभया २० तहां प्राणियों के स्थान नानाप्रकार के योग इन्हों को ब्रह्मायुक्त करताभया २१ यह ब्रह्ममय यज्ञ योग सांख्य विज्ञान स्वभाव क्षेत्र क्षेत्रज्ञ २२ एकत्त्व पृथक्त्व संभव निधन काल कालक्षय इन्होंकारूप यही ब्रह्मा है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांदशाधिकाद्विशतोऽध्यायः २१० ॥

दोसौग्यारहका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे युगोंमें प्रथमरूप ब्रह्मयुग मैंने सुना और हे ब्रह्मन् १ अब संक्षेपसे विस्तारवाला बहुतसे नियमोंसेयुक्त उपाय यज्ञोंसे कथित कर्त्तव्यों से शोभित क्षत्रयुगको श्रवण करने की इच्छाकरूं हूं २ वैशम्पायन कहनेलगे कि यज्ञकर्मोंसे अर्चित दान धर्म नानाप्रकार की प्रजासे उपशोभित ऐसे क्षत्र-युगको तेरे अर्थ कहताहू ३ सूर्यकी किरणों से अर्दितहुये अंगुष्ठमात्र मुनिमोक्ष प्राप्त विधिकरके प्रलयको प्राप्तहो ४ यज्ञादिकोंमें औ शमादिकोंमें प्रवृत्त ब्रह्मपरा-यण अर्थात् एक वेदकी शरणहुये वेदोक्त कर्म्मोंमें तत्पर ५ चित्तमें संपन्न श्री संज्ञक साम यजुर्वेदों की ऋचाओं औ ब्रह्मज्ञानसे संपन्न ऐसे ब्राह्मण पीछे ह-जारहों युगोंके अन्तमें चित्तसे संपन्न ज्ञानसे सिद्ध समाहित ऐसे वे ब्राह्मण अ-ग्रिम अर्थात् अगिलेजन्मरूपमें वेही ज्ञानरूप ब्राह्मण उत्पन्नहुयेहैं तिन्होंमेंसे व्यति-रिक्त इन्द्रियोंवाला योगात्मा ब्रह्मासे उत्पन्न हुआ ऐसा दक्षप्रजापतिहोके नाना प्रकारकी प्रजाओंको रचताहै शुद्ध सत्त्ववाले ब्रह्मसे सौम्यरूप ब्राह्मणहुये सत्त्व औ रजोगुणवाले ब्रह्मसे क्षत्रियहुये रजोगुणरूप ब्रह्म से वैश्यहुये तमोगुणरूप ब्रह्मसे शूद्रहुये ६।९ ऐसे सतोगुण रजोगुण तमोगुणका इन गुणोंकरके ईश्वरके चिंतवनसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र १० इन जातियोंमें निरूपात चारवर्ण पैदाहु-ये हैं सो ये चारवर्ण कहाते हैं ११ एक चिह्नवाले पृथक् धर्मोंवाले दो पैरोंवाले कर्मफलके भोगके अर्थ संपन्न सबकर्म्मोंमें गतिको जाननेवाले १२ ऐसे ये मनुष्य वर्णभावको प्राप्तहुये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णोंको वेदोक्तनियमोंमें अधि-कार रहा १३ कर्मों में अनुगतहुआ दक्षप्रजापति रूप ऐसा विष्णु भगवान् ने

करनेवाले क्रोधको त्यागनेवाले इन्द्रियोंको जीतनेवाले ऐसे मुनिजन १ पर्वतां
तरोंसे ससिद्ध वहुतसे वृक्षोंसेआच्छादित धातुसे रंगीहुई शिलाओंवाली समान
तृण औ कांटों से रहित ऐसी पृथ्वी में स्थित होते हैं २ और तीन वेदों के पत्र
स्वरों से विराजित ऐसे मेरुपृष्ठपै सावधान होके मत्रयज्ञ को विचारने के अर्थ
स्थितहुये नित्यव्रतमें रतरहते हैं ३ पीछे सब ब्राह्मण एक अग्निको मत्र विषयों
करके तीनप्रकार से भेदित करतेभये ४ इसीवास्ते एकही प्राणाग्नी प्राणायाम
के अभ्यास करनेवाले के द्रव्यकरके प्रवृत्त होताहै ५ मत्रों के कार्यकी सिद्धि के
अर्थ स्वधाकारसे प्रवृत्त होताहै ६ तहां प्राणियों से सत्कृत सूत्रात्मा सब ऐश्वर्यों
से सपन्न सबोंको रचनेवाला सब प्राणियों का पितामह ऐसा ब्रह्मा प्राप्तहुआ ७
दड ढाल वाण खड्ग इन्होंको धारण करनेवाला शिखि और कमलके समान
मुखवाला संतापसे रहित क्रोधको त्यागनेवाला इन्द्रियको जीतनेवाला ८ ऐसा
ब्रह्मा मेधाकेसाथ सगत हुआ आत्मतीर्थ में यज्ञ करताहै तहां इन्द्रके कहेहुये
सामों को ब्रह्मवादी गाते हैं ९ घृत दूध यव ब्रीही सुन्दर उत्तमघृत यज्ञ में प्राप्त
किया ब्रह्मपद में प्राप्त होताहै १० शमी गर्भ से उठीहुई आग्नेयी अरणीको मथ
के ब्रह्मा तिसमें अग्निके क्रोधको प्राप्तकरताहै ११ जैसे यज्ञकर्म में अग्नि विधान
किया जाताहै तैसे अल्पद्रव्य करके तहा अनेक प्रकार के द्रव्यों को फलों को
ब्रह्मवादी मुनि यज्ञमें प्रयुक्त करते हैं १२।१३ औ तहा छः महीनोंतक चारोंवेदोंको
बृहस्पतिजी पढतेभये तब वह यज्ञ मानों दूसरा ब्रह्मलोकहै ऐसे प्रकट होनेलगा
१४ फिर सरस्वतीको प्राप्तहुई विद्या बृहस्पति के सब शिष्यों को प्राप्तहोगई १५
फिर ब्रह्मासे कहा जिस ब्रह्मज्ञान करके वह यज्ञ ब्रह्मलोक की तरह भान होती है
१६ यह यज्ञ ब्रह्माके मुखसे निकसी है और अनामय ब्रह्मशब्दोंको कहतेहुयेकी
तरह बढती है १७ समिध जलके कलशपात्र यव ब्रीही घृत और पूर्णजल के
पात्र १८ कर्म में प्राप्तहोने के योग्य पशू दूधको देनेवाली गायें कोमलरूप वास
इन्होंसे युक्त १९ ब्रह्मसे बढाहुआ तपसे वृद्ध ब्रह्मज्ञानमय विद्याकेसाथ संगत २०
मरुद्गणों के सहित ऐसे ब्रह्मा अरणीसे निकासीहुई अग्निके द्वारा यज्ञ करने
लगा २१ तेजमूर्ति को धा[illegible] करनेवाले [illegible] के कर्म में युक्त ऐसे ब्रह्माजी
वेदप्रोक्त विधिसे २२ [illegible] अग्नि [illegible] कर विधिसे यज्ञकर्म करते हैं
२३ जिस यज्ञमें सदस्य [illegible] क्रिया करते

हैं २४ तहां कर्म और तप इन्हों से युक्त वेदवेदागके पारको जाननेवाले सूर्य्य चद्रमाके सदृश ऐसे मुनिजनों से युक्त वह यज्ञ प्रकाशित होनेलगा २५ वेदके घोपकरके मानो दूसरा ब्रह्मलोक के समान प्रतीत होनेलगा २६ वेदवेदाग को जाननेवाले विनीत ब्रह्मवादी तपस्वी इन्होंकरके वहयज्ञ मनुष्यलोकमें पूजित होताहै २७ प्रकाशितरूप तीनविप्र और यज्ञमें तीनअग्नियोंकी तरह वह यज्ञ ब्रह्म लोकके समान प्रकाशितहै २८ तिसयज्ञमें इद्रके कहे सामवेद यजुर्वेदको गाते हैं २९ तपसे शात ब्रह्ममें तत्पर सत्यव्रतमें समाहित ऐसे मुनि तहा प्राप्तहोतेभये ३० तिस यज्ञमें मूर्ति भेद करके होता और ब्रह्मा बृहस्पति होतेभये सब धर्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ पुरातन ब्रह्म से उत्पन्न होनेवाला ३१ ऐसा यजमान यज्ञके अंत में पूजाको विष्णुके अर्थ समर्पण करताभया ३२ नहीं जन्मनेवाला अर्थात् कर्म्म प्राप्तब्रह्म ब्रह्मान्वित निर्द्वंद्व निष्परिग्रह जिससे हजारों इन्द्र आदि पद हुये और होते हैं तिस वैष्णव परमपदको प्राप्तहोताहै ३३ अव्यय अप्रमेय कर्मों से व्यतिरिक्त ऐसापरमपद है तिस ब्रह्मके सब मुनिजन आत्मा कहे हैं ३४ रूपआदि सब विषय रागादि दोपोंसे कल्पितहुये एक कालमें बलसे मनको आच्छादित करते हैं ३५ इन्द्रिय ग्राम विषय में विचरते हुये मुनिजन परिग्रह को अविद्या लक्षण कहतेभये ३६ हे राजन् जो मुनि शब्दकरके ब्रह्मवादियों से ग्रहण किया जाताहै तब विद्यालक्षणके संयोगसे मन आच्छादित नहीं होता ३७ वेदविद्याव्रत इन्हों से स्नातरूप मुनियों करके आकाशमें लोक प्रतीत होते हैं ३८ जटा हव्यसे पुष्टहुये देवते क्षयभावको नहीं प्राप्तहोते अपने भोगोंकरके ३९ दुःख से रहितहुआ यजमान अपनी पत्नियों के संग आनंदित होताहै यज्ञ के अन्त में दिव्य देहको सब भूतों पै दयाके अर्थ विष्णु ब्राह्मणों के अर्थ देताभया ४० तिस दिव्य देहको सब उद्यमोंकरके भी विभाग करनेको नहीं प्राप्तहोते भये ४१ तब सब ब्राह्मणगण परिश्रम से अभिहत और वर्ण से रहित ४२ मुखवाले होके पृथ्वीमें स्थितहुये तब वह सद्गुरु सब ब्राह्मणोंको मधुरवाणी से कहनेलगा ४३ कि हे प्रियो आपसमें विरोध करनेवाले तुम्हों से वनकरके इसका भेदन दिव्य सोनपों करके भी नहीं होसका ४४ जब अविरोध करके एकभिन्नहुये तुम सब समाहित होजाओगे तब इसका विभाग करसकोगे ४५ राग और दोषों से संयुक्त बल घटता रहताहै राग और दोषों से विमुक्त बल सदा बढ़ताहै ४६ जब मैं

स्वर्ग को भेदन करनेवाले शिलाओं से फेंकेहुये चलनेवाले धातु गिरनेवाले शिखर इन्होंकरके भेदन करूंगा ४७ विशीर्णरूप छिद्रोंकरके गलितरूप नागों करके वहुतसे सर्पोंकरके प्रेरितहुआ मेंहू ४८ ऐसे तिसके वचनको ग्रहणकर वे सव ब्राह्मण मौनको धारण करतेभये ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रयोदशाधिकद्विशततोऽध्यायः २१३ ॥

दोसौचौदहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि तवसे लगायत तिन ब्रह्मविदोंके ब्रह्मवादियों करके कर्म भूतलमें १ वलि और होम और देवताकी पूजा नित्यप्रति वढ़तीरहती है २ तृण कटक आदिसे रहित ऐसे ब्रह्मसदन में इन्धन और तृण आदिसे विस्तृत विंध्यपर्वतके समीपमें ३ भगवत्की क्रियाको देख तपकी इच्छा करनेवाले महाभाग ब्रह्मचर्य व्रतमें स्थित ४ ऐसे मुनिजन वसते हैं गृहस्थधर्म में रत क्रोध को जीतनेवाले ५ वनके कर्म्म फलों में रत अग्निहोत्र व्रत में युक्त समाहित ६ और देवकर्म करके युक्त चीर वकल को धारण करनेवाले जितेन्द्रिय ७ व्रत को धारणकर ब्रह्मचर्यको करनेवाले ऐसे यती परब्रह्मकी आकांक्षा करते हैं इसविधि करके हे राजन् पूर्वले ब्रह्मवादियों करके ८ आचरित सत्कारको प्राप्तहुये हैं और वेदको नहीं जाननेवाला गृहस्थधर्मको नहीं प्राप्तहोसक्ताहै ९ गृहस्थधर्मके विना सन्यस्तको धारण नहीं करसके और त्यागकरके गृहस्थधर्म को नहींत्यागे १० वेदके सचयको प्राप्तहुये विना स्थानको नहीं प्राप्तहोवे ११ पुत्रवालाहोके गृहस्थ धर्म में सदा रहनाचाहिये तपमें शांत ब्राह्मणोंको गुरुकी परिचर्या में रहनाचाहिये १२ जिसने हे राजन् वेदनहीं सुना हितनहीं किया ऐसे ब्राह्मणको धार्मिक राजा शूद्र कर्म करावे १३ जो प्रथमही ब्राह्मण ब्रह्मचर्य व वेदका आदर नहीं करे उस को राजा शूद्रही वनादेवे १४ भूतिसेसपन्न अपनी भूतिकी इच्छा करनेवाला ऐसा ब्राह्मण वेद पूर्वक मंत्र इन्द्रियों के आरम्भोंको सम्यक्प्रकारसे आचरणकरै १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुर्दशाधिकद्विशततोऽध्यायः २१४ ॥

दोसौपंद्रहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे वे नारद आदि गन्धर्व व ऋषि वेद प्रमाण माणी व ब्राह्मण और रजकी प्रकृतिवाले ऐसे ब्राह्मण १ अमावास्या और पूर्णमासी को

अगाडीकर ब्राह्मण व देवते ऋषि इन्होंको दक्षिणाओं करके पूजतेहुये यज्ञमें २ ब्राह्मणकी पूजाके क्रमकरके ब्रह्माजीको भी पूजतेभये पीछे सब भूतोंको हितके देनेवाले पाचों इन्द्रियोंको निश्चलकरनेवाले सबभूतों से प्यार करनवाले ३ ऐसे वचनोंसे स्तूयमान ब्रह्मा भद्रहै ऐसे कश्यपको कहके ४ फिर कहताभया कि हे पुत्र तूभी पुत्रोंकरके पृथ्वीतलमें पूजाको प्राप्तहोवेगा ५ वरदक्षिणाओंवाले यज्ञोंकरके दैत्य और देवते आपस में पहले हम यज्ञकरें पिताको पूजें ऐसे कहतेहुये ६ वलसे गर्वित आपसमें जयकी इच्छा करनेवाले ऐसे देवते ७ व दैत्य बडीबडी भुजाओंको धारण करेहुये युद्धकरनेलगे ८ तपकरके दग्धपापोंवाले वेद वेदाग के पार को जानेवाले ऐसे ऋषियों ने निवारण भी किये ९ परन्तु देवते और दैत्य इस विषयमें युद्ध करनेलगे जैसे गोकुलमें बैल पीछे युद्धमे सक्तहुये १० जीतके चाहनेवाले ऐसेहोके सब प्राणियों के देखतेहुये मृत्युके विषयमे प्राप्तहुये पीछे अति शब्दकरके महावलवाले ११ वाहुओं करके रोकतेभये तब पृथ्वी चलायमान होनेलगी १२ जैसे घनेपुरुषों से आक्रांत नाव जलमें तैसे और जैसे हस्ती शब्द करतेहों तैसे पर्वत फूटनेलगे १३ पवनसे ताडित सवनदी क्षोभको प्राप्त होनेलगीं पीछे मधुदैत्यका और विष्णुका आपसमें १४ प्रलयकी तरह घोर सवप्राणियों को भयका करनेवाला ऐसायुद्धहोनेलगा तब विष्णु बलवाले दैत्य को मथताभया १५ जैसे प्रकाशित अग्नि जलमे शांतहोजाताहै तैसे विष्णुसे मधुदैत्य शांतहोनेलगा १६॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांपंचदशाधिकद्विशतोऽध्यायः २१५॥

दोसौसोलहका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि पीछे भीमपराक्रमवाला अति बलवाला मधुदैत्य फासोंकरके पर्वत के वीचमें महेन्द्रको बाधताभया १ प्रह्लाद के वचन से भविष्य रूप इन्द्रके ऐश्वर्यको आनाना करताहुआ लक्षणों को जाननेवाला ऐसा मधु दैत्य २ मर्म भेदन करनेवाली फासी से भिन्न फांसियों से लोहमे युक्तोंसे इन्द्रको बांध ३ अगणीहोके विष्णु और महादेवको कालके बगहुआ बुलानाभया ४ पीछे इकट्ठेभूतहुये काश्यपके मधुके बगमें प्राप्तहो नानाप्रकार की गजाओं को ग्रहणकर युद्धके अर्थ भागनेलगे ५ गीत वाद्यमें कुशलरूप गंधर्व किन्नर ना-

चनेलगे गानेलगे और हँसनेलगे ६ मधुरवाणीसे युद्ध करतेहुये मधुके मनको कँपानेलगे ७ मधुदैत्यके विकारकेवास्ते ब्रह्माजी के नियोग से सत्यवादी गन्धर्व इन विकारों को करते हैं ८ तब तिस गान्धर्वविद्यामें मधुदैत्यका मन शक्तहोगया और सब दानव अत्यन्त नादकरतेभये ६ पीछे मधुकेमनको प्राप्तहो योगरूप नेत्र करके देखतेहुये विष्णु अंतर्हित होगये जैसेकाष्ठमें अग्नि १० ब्रह्माजी को अगाड़ीकर कछुक दुःखित मनवाले ऋषिजनभी क्षणभरमें अंतर्हित होगये ११ तब मधुके समान नेत्रोंवाला मधु विष्णुको मुक्कासे शंखदेशके समीपमें मारताभया परंतु कछुभी विष्णु कंपायमान नहींहुआ १२ तब विष्णु हाथके अग्रभाग करके दैत्यके अस्तनोंके बीचमें मारताभया तबगोड़ोंसे दैत्य पृथ्वीमें पड़ा रुधिरको थूकनेलगा १३ तब बाहुयुद्धके समयको माननेवाला विष्णु पतितहुये दैत्यको फिर नहीं मारताहुआ १४ पीछे क्रोधसेयुक्त नेत्रसे दग्ध करतेहुयेकी तरह मधु गोड़ों के द्वारा महीतलसे इन्द्रध्वजकी तरह उठ १५ कठोरवाणी से गर्जनेलगा तब फिर दोनों दैत्य और विष्णु गर्जतेहुये दृढ प्रहारोंकरके आपस में बाहुयुद्ध के द्वारा शोभित होतेभये १६ दोनों बाहुबलवाले दोनों युद्धमें विशारद दोनों तपसे शान्तरूप दोनों सत्य पराक्रमवाले १७ व दृढ़ प्रहारवाले शूरवीर आपसमें खींचतेहुये जैसे पखोंवाले पर्वत युद्ध करतेहों तैसे १८ आपसमें पृथ्वी में खींचते हुये वमन करतेहुये हाथियों के दांतके मारने की तरह नखाग्र भाग करके युद्ध करते भये १६ पश्चात् व्रणोंके द्वारा बहुतसा रुधिर तिन्हों के शरीरसे निकसताभया जैसे वर्षा समयमें जलमें पर्वतमें से धातु बहके आवतीहो २० शरीरसे झिरतेहुये लोहूसे भीजेहुये दोनों पैरों के अग्रभाग से पृथ्वीको विदारण करनेलगे २१ पीछे आपसमें अनेकप्रकारसे प्रहारकर मांसके अर्थ जैसे दोपक्षी लड़ते हैं तैसे युद्ध करतेभये २२ तब आकाशमें सबभूत सिद्धोंके मुखसे कहीहुई उत्तमवर्णकी सम्पदा सेयुक्त २३ ऐसी स्तुतिको सुनतेभये धातुसे संयुक्त शरीर चेतनासे संयुक्त २४ ब्रह्मतेजोभूत सनातन ऐसे ब्रह्मको सबप्राणी स्थितहोते हैं २५ फिर सूक्ष्मरूप और अनेकरूप भाव सब भूतोंमें उपजताहै तीनोंलोकों में कामनाका देनेवाला २६ स्वरूप ऐसाईश्वर बहुतरूपवाले लोकोंमें बर्मीहोके विचरताहै मनुष्यके शरीरको प्राप्तहो बहुतसे कारणोंकरके २७ योगात्मा पीछे शेषनागरूप होकरके पृथ्वीको धारण करताहै ब्रह्मरूप परमरूप ईश्वर २८ वेदमयरूप करके ब्राह्मणोंको प्राप्तहो

वसताहै युद्धमयरूप करके क्षत्रियों को प्राप्तहो वसताहै प्रदानकर्म्म करके वैश्यों को प्राप्तहो वसताहै परिचार कर्मकरके शूद्रोंको प्राप्तहो वसताहै २६ दूधके देनेकरके गायोंको प्राप्तहो वसताहै यज्ञोंमें प्रोक्षण कर्मकेद्वारा अस्त्रोंमें वसताहै भोजन के गरमभागमें प्राप्तहो पितरोंके अर्थ वसताहै देहभाग करके देवताओं के अर्थ वसताहै ३० चार व्यतिरिक्त अङ्गवाले तीन अन्य अर्थात् मनो वाक् प्राण और सात अन्य पितर इन्होंकरके नित्य त्रिलोकी की रक्षाकरतेहो ३१ और तद्रूपहुये नित्य चन्द्र सूर्यात्मकहो प्रकाश और अप्रकाशको अपने तेजकरके रखतेहो ३२ तीन पितर नित्यप्रति सूर्यको बढातेहैं चार पितरों से मण्डलमें चन्द्रमा बढताहै ३३ तीन पितर नित्य पिण्डों को ग्रहणकरतेहैं चार अन्यपितर और पाच पितर अर्थात् पाचइन्द्रियों के विषय ये सब आत्मताकरके देहादिकों की प्राप्तिकरतेहैं ३४ सो ईश्वरके प्रति कहतेहैं कि हे विभो तुमहीं तिन पाच धर्म्मोंके रूपहो जैसे सुवर्णके कुण्डलादिक होवें शाश्वतहो ब्रह्मसम्भवहो ३५ इसवास्ते तिसतेजको ग्रहणकरते हो सबप्रकार करके अग्नि और वायुरूप भी तुमहो आदित्यरूपभी तुम्हींहो ३६ अपनी किरणोंकरके जगत्को दग्ध करतेहुयेकी तरह युगान्तकाल में परम सिद्धिको प्राप्तहुआ है ३७ पक्षकी संधिमें अमावास्या में सूर्य्य चन्द्रमा वसु इन्होंके संग गूढात्माहोके मानुष लोकमें विचरताहै ३८ फलसहित कर्मको करताहुआ यज्ञवालोंकी पुष्टीको बढानेवाला ऐसा कर्म विपर्यय हेतुओंके विकारके अर्थ मतहो ३९ वनस्पति और ओषधियों को एक कालमें प्राप्तहोताहै बालभारके अर्थ पृथ्वी विषे पक्षपक्षमें तेरी उत्पत्तिहै ४० पृथ्वीमें भूतोंके होनेके अर्थ जो कुछ द्रव्यहै वह सब सर्व तत्त्वमय है ४१ तूही नानाप्रकार के शाश्वत धर्महै तूही देवयज्ञहै तूही मन्त्रवाक्य है तूही आत्मयज्ञहै तूही मनुष्य यज्ञहै ४२ और दोप्रकारका स्वर्गमार्ग्ग भी तूही है सूर्य्य चन्द्रमाभी तूही है पितृयान और देवयान भी तूहीहै ४३ वसुधामें चक्र सीमाकरके विश्वमें विचरनेवाला भी तूही है ४४ सबगणों को एकीकार कर परलोक में फेंक पुराण पुरुष विराट् अचर अप्रमेय कामचार करवभी ४५ इन नामोंवाला अकेला तूही है और तेजमें प्रकाश करनेवाला तूही है आकाशचारी वायु भी तूहीहै सानन्दोंकरके नित्यप्रति आच्छादिन भी तूहीहै ४६ माधव निर्माण मराग मलय धारण कान इन्हों में सत्यवादी ४७ और जितेंद्रिय और विगत पातकवाले ऐसे मुनिगणों से सेव्य-

मान तूही है ४८ नानाप्रकारकी स्तुतियोंसे स्तूयमान हयग्रीव रूप तू अपने देह का स्मरण करताभया ४९ तव वेदमयरूप हुआ सर्वदेवमय शरीरहुआ शिरके मध्यमें महादेव हृदयमें ब्रह्मा ५० सूर्य्यकी किरणवालाहुये सूर्य चन्द्रमा नेत्रहुये वसु और साध्य जंघाहुये सब सन्धियों में देवते स्थितहुये ५१ अग्निदेव जीभ हुआ सत्यादेवी वाणीहुई मरुत और वरुण जानुदेश में स्थितहुये ५२ ऐसे अद्भुत रूपको कर क्रोधसे लालनेत्रोंवाला तू मधुदैत्यको पीडित करताभया ५३ तव मधुदैत्यके मेदसे पूरितहुई पृथिवी दीखतीभई ५४ तभीसे इस पृथ्वीका मेदिनी नामहुआ इसपृथ्वीका मेदिनीनाम हजारहों दैत्यों में प्रतिष्ठितकियाहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांषोडशाधिकद्विशततोऽध्यायः २१६ ॥

दोसौसत्रहका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे मधु के निपातको देख सवप्राणी कमल में प्रवेश कर गाने और नाचने लगे १ वह पूर्वोक्त सुन्दर पार्श्ववाला गिरि मुख्य अर्थात् दिव्यदेहभी वहुतसी धातुओं और शिखरों से प्रकाशित होताभया २ धातुओंके रंगेहुये पर्वतभी शिखरके अग्रभागों करके शोभित होनेलगे जैसे बिजलियों से बद्दल ३ पक्षवायु से उठीहुई धूली चून्ना और वालुरेत से मिलके पर्वत के अग्रभागको अच्छादित करताहुआ महामेघकी तरह प्रकाशित होनेलगा ४ मेघसे मिलेहुये शिखरोंवाले पक्षसे फेंकेहुये वृक्षोंवाले कांचनके उद्भेद से वहुलित ऐसे पर्वत आकाशमें स्थितहोतेभये ५ पंखवाले शिखरोंवाले सोनाकी धातुओंकरके चिह्नित पवन करके उद्धत ६ स्फटिक और मणियों करके व्याप्त सूर्यकांत चन्द्रकांत मणियोंसे निर्मल ७ ऐसे पर्वत पक्षियोंको त्रासित करनेलगे श्वेतधातुओं करके व्याप्त कांचन शिखर और प्रकाशमान ८ मणि और तांबाके समान रंग वाले शिखर अपने तेजसे दीप्यमान शिखर इन्हों करके व्याप्तहुआ हिमवान् पर्वत शोभित होनेलगा ९ उग्र शिखरवाला स्फटिक और मणियों से व्याप्त हीरा की खानिवाला ऐसामंदराचल स्वर्ग के समानरूपहोके प्रकाशित होताभया १० हजार शृंगोंवाला शिला धातुओं से प्रकाशित तोरण निविड वृन्दी वृक्ष इन्होंसे व्याप्त ११ वजानेवाले गंधर्व गानेवाले किन्नर और अप्सराओं के कटाक्ष इन्हों करके अतिशोभित होताभया १२ मधुररूप वाद्य गीत नृत्य अभिनय शृंगार

और सप्रहार इन्होंकरके कैलासभी शोभितहोनेलगा १३ सूर्यकीकांतिसे भासितहुये भिन्नांजनके संचयसमान शृंगोंकरके युक्त नील बद्दलकीतरह श्याम ऐसा विन्ध्य पर्वत भी शोभित होताभया १४ मेरुपृष्ठ पै स्थितहुये सब प्राणी नानाप्रकार के पानीको उगलतेभये जैसे मेघ और बहुत चित्ररूप शिलाओंकरके १५ बहुत रूपोंवाली धातुओं करके झिरतेहुये गुहाद्वारों से स्फटिकके समान कांतिवाला जल होताभया १६ वर्षाकालमें वायु से आच्छादित बिजली सहित बादलहोते हैं तैसे चित्र फूलों करके वृक्षों के गण शोभित होनेलगे १७ सोने के विचित्र आभूषणों की तरह भूषित हाथी पक्षियों की कांतिकरके लीनहुये लतावृक्षों में समाश्रित होनेलगे १८ ललित वायुसे हिलतेहुये फूलोंवाले ऐसे वृक्ष वैशाखमास की तरह फूलों के समूहको छोडनेलगे १९ बलवाले पुष्टशाखा और स्कंध को धारण करनेवाले अनेक वर्णोंवाले ऐसे वृक्षोंकरके पृथ्वी शोभित होनेलगी २० मधुको प्यार करनेवाले मधुसेमत्त ऐसे पक्षी कामदेव के आगमन के समय को गावतेहुये झिंगार देनेलगे २१ मधुको मारनेवाला विष्णु बहुत जलवाली अंगार वर्ण के समान बालुरेतवाली मधु तीर्थनाम से विख्यात २२ मनोरम विमल रूप पानियोंसे पूरित फूलों के संचयको बहानेवाली ऐसी नदीको करतेभये २३ सो वह नदी ब्रह्मवादी ऋषि ब्रह्मा इन्हों के वचनसे प्रेरित पुष्करमें प्रवेश करती भई २४ धातृ कपिलागाय वनके ब्रह्माके वाक्यसे प्रेरितहुई तिस यज्ञमें मधुदूध को झिरानेलगी २५ फिर वह पृथ्वी कुटस्थ वस्तुको धारण करने में समर्थ भी अपने उपादान जलकेप्रति प्राप्तहोके गतवती होगई तब योगी ब्रह्मानिर्विकल्प समाधि करके आत्माको भजताहै २६ वेदवाणी से समुद्भूत ज्ञानमात्र और अज्ञान विरोधी ऐसा जो ब्रह्म सो सर्व्वदाही आकाश में स्थितहै अर्थात् आकाश भी उसके आश्रयही है २७ और अत्यन्त सुन्दर रूपवाली धर्मको जाननेवाली प्रजारूपकरके आच्छादित करनेवाली तपसे युक्त नित्तकरके २८ ऐसी वह नदी सन्मात्र लेशसे युक्त अर्थात् अहंकारादिकों से जाग्रत् अवस्थामें सबकी तरह भान ऐसा महान् पर्व्वत शाश्वतरूप सिद्धजनों से सेवितहै २९ सोनेके वर्णके समान रूपको साक्षात्कार करनेलगी और चित्ररूप वेदिकाओं करके पांचप्रकारकी धातुओं करके आवृत ऐसा वह पर्वतहै ३० जिस पर्वतका रूप पांचधातुओंसे युक्तहै चेतनासे सफलरूप करके अद्भुत दर्शनवाला है ३१ मनकरके में

ऐसे करूंगा ऐसे धर्मचारी नानाप्रकारके रूप पार्थिवी चेतना इन्हीं करके ३२ पांचधातु लक्षण अर्थात् इन्द्रियादिकों करके तीनलोकों में प्राप्तहूंगा छद्मन करके धर्मचारी विद्या अर्थात् मायारचीजाती है ३३ सर्गोंमें भाव मोहकरके सब सर्गोंसे विमुक्तहुये मेरेको देखेंगे ३४ कामरूप मनवाले मुझको मनकरके कोई जानेगा नहीं क्योंकि पंचधातु अर्थात् पंचेन्द्रियों करके अनेक प्रकार की प्रेरणाओं से बँधरहे हैं ३५ जो अनेकप्रकार से विष्णुका ध्यानकरेंगे वे तप करके दग्ध पातकोंवाले प्राणी मेरेको देखेंगे ३६ धर्म्म मार्ग में स्थितहुये जो मेरे विषे प्राप्त होवेंगे वे स्वर्गको जीतके ग्लानिसे रहित होके मेरेको स्वर्ग में देखेंगे ३७ जो मेरुपृष्ठपे प्रांशुरूप पर्वतहै तिसपैचढ़ युद्धकरो और प्राणोंके त्याग में निर्मम हो ३८ अप्सराओं से समागमकर मनरूपी वेगसे नन्दनवन व काम्पक वनको प्राप्तहो ३६ इस विद्याको प्राप्तहुये मेरेभक्त अनेकप्रकारके व्रतोंसे शरीरको छोड़ देवेंगे ४० सिद्धिको प्राप्तहो बहुतप्रकारके कामोंकरके इसलोकमें और परलोकमें सुखपूर्वक प्राप्तहोवेंगे ४१ समाहित योगीजन तपके वृत्तान्तसे प्रभावको दिखाते हैं गौरी अर्थात् पराब्रह्मविद्या तीनोंलोकों में सिद्धहै ४२ वे योगीजन ज्ञानवृत्तिमें रहने से धातु निर्मुक्त अर्थात् तिन्होंका बन्ध छूटजाता है और वे ज्ञान होने से निरालम्भ हैं ४३ जैसे हजारगुणीकरदेके राजाकी प्रीति होनेसे बन्धसे छुटजाते हैं तैसेही ब्राह्मणोंके शुद्धमन अर्थात् कामरहित मनकरके फिर दान कर्म्म करनेसे छूटजाते हैं ४४ सर्वज्ञ धर्मज्ञ पुरुष अत्यन्त दुःखहारी परमेश्वरकी प्रीति से सबमें उत्तम फल को प्राप्तहोते हैं ४५ ब्राह्मण करके यज्ञ करानेवाले यजमानादिक और वे ब्राह्मण भी पूर्वोक्त फलको प्राप्तहोते हैं ४६ तदपि दान यज्ञमें गौरी अर्थात् ब्रह्मविद्यामें भेदहै क्योंकि वह मानस होनेसे अनन्ताहै ४७ अविद्याको दूरकर ज्ञानका उपजाना यह सत्यरूप धर्म कहाहै इसमें संशय नहीं ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिनारायणभविष्यपर्वभाषायांसप्तदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१७ ॥

दोसौअठारहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे मोक्ष अवस्थाको प्राप्तहोनेवाला धातु निश्चयरूप शरीरमें और पर्वत रोध अर्थात् नासिकाका मूल भृकुटियों की सन्धिमें १ परम परमात्मा विष्णु एक पैरसे स्थितहुआ दशहजार वर्षोंतक आत्मामें २ आत्माको

तपमे स्थापितकर मोक्षके अर्थ चेष्टा करता है ३ भस्मसे अङ्गों को आच्छादित कर प्रकाशित हुआ सोम नवहजार वर्षोंतक अपने तजकरके ४ तारागणों को प्रकाश करते हुये जगत् पालते हुये आकाश के बीचमें वे योगात्मा भगवान् स्थित होतेहैं ५ सोमके अर्थात् चन्द्रमाके विषय का अधिकारकरके मनसे मन को धारणकर योगात्मा परमधर्मात्मा वृत्रकी सिद्धिको उपागत होताहै ६ फिर सोमात्मक होनेसे नानाप्रकारके रसों में प्राप्तहो पृथ्वीमें और आकाशमें कर्म्म प्रकाश वन्हिरूप स्थित रहताहै ७ अति गूढात्मा वह भगवान् शिवरूप होके वृषरूप अर्थात् धर्मरूपसे स्थित रहताहै और निष्काम जपादिक पादको आगे कर वायुको भक्षण करताहुआ समाहित अर्थात् स्थिररहताहै ८ ब्रह्मसभव वह महादेव नियम करके नवहजार वर्षतक नियमसे समाहित रहताहै ९ अब योगज धर्मसे विश्वको द्योतन करतेहुये वृषरूप शङ्करसे मेघकी उत्पत्ति कहतेहैं पश्चात् लिंग शिवजी के अन्तर घनीभूत अर्थात् निपीडित रुईकी तरह कठिनीभूत हुआ वायु होताहै तब फेनीभूत वायुको मुखसे बाहिर निकालतेहैं १० तब प्राणसे उद्गारित वायुकरके अन्यरूप निर्यास अर्थात् वृत मद होके गिरताभया और वह गीलाभी नहीं और पार्थिव अर्थात् पाषाणादिकों की तरह शुष्कभी नहीं ११ फिर शिवके मुखसे निकसाफेन अर्थात् चर्म कोशाकार जलको ग्रहण कर आकाशमें विचरताभया और कुछगीला नहीं कुछशुष्कभी नहीं ऐसा वायु का संघात प्राप्तहोगया १२ पश्चात् वायुजलके सहित फेनको उत्तिष्य अर्थात् उडाके आश्रय से रहित आकाश में प्राप्तकरताहै फिर वे बादल होजाते हैं १३ फिर अपनेही रूपकरके घनत्व को प्राप्तहुये नीलवर्ण को प्राप्तहुये वे मेघ सृष्टि करके घनीभूत जलवाले होतेहैं १४ पश्चात् स्वस्थ मन जगत् विचरनेवाला वायु ब्राह्मण शरीरको धारणकर एक हजार वर्षतक विपुलतप करताभया १५ अग्नि बहुत जटाओं को वल्कलोंको धारणकर आहारसे रहितहुआ मौनको धारणकिये हुये आकाशमें तप करताभया १६ चारहजार वर्षोंतक यत्नसे तिस अग्निके तप करतेहुये तिनके तेजसे महान् अग्नि प्रवर्त्त होताभया १७ स्वर्ग में चारनेवाला प्रकाश करनेवाला ब्राह्मणके रूपको धारण कर तप करताभया १८ सो हे राजेंद्र तिस अग्निका तप अर्थात् ध्रुवा पृथ्वी में मनुष्यों में स्थितहै तिस तेजका संहार अर्थात् समूहरूप उत्कृष्ट तमसूर्यहै १९ हे राजन् सूर्यका तेज अग्निसेही

सव मनुष्यों में वर्तेहै इसप्रकार ब्राह्मणके निरन्तर नहीं वर्तताहै २० वह उत्तमूर्य तिस तम अर्त्थात् धुराको रात्रिमें नाशकरताहै अदय पदको प्राप्त करानेवाला दिन उपासको लब्धहोताहै स्वस्थ कुवेर यक्ष आकाशमें स्थितहुआ तपकरताहै २१ शिवजी के शिरसे जितनी जलकी धारा पृथ्वीमें आती हैं वे सव शरीरोंको प्राप्तहो पृथ्वी में प्रकाशमान होती हैं २२ वह कुवेर पृथ्वी में गोडोंसे पतितहुआ अर्त्थात् सूर्य्यको नमस्कार करताहुआ हजार वर्षतक आकाश में दीखताहुआ नेत्रोंके खोलने मीचनेकरके तहा जगत्को देखताभया २३ जव सूर्य मध्यमेंप्राप्त होता तव सूर्य्यकी किरणों करके अनेक नेत्र तिसके प्रकाशमान होतेभये २४ वे नेत्रोंकी कांति सूर्य्य के मण्डल से इसप्रकार प्रकाशमान होतीभई कि जैसे यज्ञमें ऋत्विजों करके अग्नि प्रकाशमान होरही तैसे २५ और वह कुवेर नेत्रके समीपभागसे अग्निके किणके छोडताहुआ सूर्य्य को प्राप्तहोताभया वह कुवेर देहारम्भ कर्मके क्षयहोने पीछे अथवा प्रलयकालमें ऐसा तप करताभया २६ वह कुवेर युगांतमें ऐसे वहुतापरूप होके किरणोंके विषे ऐसे दारुण तप करताभया २७ सव इन्द्रियोंको निगृहीत अर्थात् वशमें कर अप्सराओं के संग रमण करता भया सुमेरु पर्व्वतके शिखरपै प्राप्तहोके कामकरके रसों को सींचताभया २८ वह नरवाहन कुवेर तिस तपमें विष्णुही का रूपहै यह जानो २९ क्योंकि विष्णुके विना ऐसा पुरुष कोई नहीं है कि जो इसप्रकार तपकरै किन्तु वह कुवेर विष्णु-हीका अंशहै ३० वहुत शिरोंवाला वासुकी सर्प मौनको प्राप्तहो तप करनेलगा ३१ सत्यको धारण करनेवाला शेषनाग वृक्षको प्राप्तहो नीचे को मुखकर तप करनेलगा ३२ अपनी जीभों से अङ्गको चाटताहुआ शरीर के विषको छोड़ता हुआ हजार वर्षोंतक निराहार हुआ सम्पूर्ण तपकरताभया ३३ सो वह विष का-लकूटस्थ नामसे प्रसिद्धहै इस विषसे अभिग्रस्तहुआ जन नहीं जीताहै ३४ यह तीक्ष्ण विष सव सर्पों में अनुगत है जङ्गम स्थावर सव विषयों में अनुगतहै ३५ परस्पर वढ़ाहुआ यह विष तीक्ष्णतासे अङ्गोंको नाशकरदेताहै ३६ पीछे ब्रह्माजी संसार के कल्याणके अर्थ अहिंसकरूप मन्त्र को रचताभया ३७ अव वही मंत्र प्रकाशित कियाजाताहै गरुत्मान्वितते पर्वतेसाग्रेसतसलिलमहीम् समासहर्तन-पूर्णंचन्नाग्रेणायलविना ३८ पर्णभौरंगनिकचैर्विस्तीर्णैर्वसुधातले रराजनसुधा चैव पर्णैर्हरिनिचित्रिते ३९ अथन्यास ॥ ओंवागरुत्मान्हृदयायनमः अंगुष्ठयो

ॐवींगरुत्मान्शिरसेस्वाहा तर्जन्यो ४० ॐव्रूगरुत्मान्शिखायैवषट् मध्यमयो ॐवैंगरुत्मान्कवचायहुं अनामिकयो ४१ ॐवौंगरुत्मान्नेत्रत्रयायवौषट्कानिष्ठयो ॐव गरुत्मान्अस्त्रायफट्करतलकरपृष्ठयो ४२ ॐवलाहुवपट् इति ब्रह्मऋषिर्गायत्रीछंद गरुत्मान्देवता वबीजम् शक्ति लंकीलकविपनाशने विनियोग ४३ इस मत्रकरके सर्पके विपका नाशहोता हैं इसमें संशय नहीं इसीमत्र करके इसलोकमें देवलोकमें सबप्राणी जीवते हैं ४४ पीछे सुतलको प्राप्तहो प्रांशुदेहवाली पृथ्वीको प्राप्तहो दाहिनेवाहुको उठा वायुका भक्षणकर ग्यारहमो वर्प तक अगाधात्मा परमात्मा विष्णु भगवान् तप करनेलगा ४५ दिन में तो अर्थात् विद्यामें विवेकलभ्य रात्रि अर्थात् अविद्यामें स्थिरहुआ सत्यमें युक्त धर्मात्मारूप ऐसा विष्णु भगवान् लीलाके सृष्टि की प्रवृत्ति करता है ४६ इस विष्णु भगवान्के भक्तोंके उद्धारके वास्ते उठायाहुआ जो हाथहै सो उद्धारकत्व होनेसे पृथ्वीके समहै अविद्याविपे तपन अर्थात् प्रकाश विवेक देनेवालाहै ४७ सो वह धर्मरूप चन्द्रा अर्थात् मनके विपयों के बन्धको नाश करताहै ग्रहादिक अर्थात् चक्षुरादिक इन्द्रियों की गतिको शांत करताहै ऐसा शमदमरूप धर्म है ४८ वह धर्म अविद्यारूप रात्रीको शिथिलकरताहै पृथ्वीविपे दक्षिण हस्तहै चित्तकी शुद्धिको देनेवालाहै ४९ वह अविद्यारूप रात्री निर्वचनीयत्वसे वेद प्रमाणसे शून्यहुई मरीचिका जलकीतरह अपचयशून्यहै ५० अब पृथ्वीके चन्द्ररूपहोनेका प्रकार कहते हैं सब अंगोंको इकट्ठेकर तीर्थस्नानकर फिर यह पृथ्वीतपमें स्थित होतीभई ५१ जलघनीभावरूप चन्द्रीभूता पृथ्वी सूर्य के अभावमें गंगारूपहुई यह कहते हैं कि सूर्य्यकी किरणोंमे पीयमान पृथ्वी सूर्य्यमें मिलतीभई ५२ सूर्य की किरणोंकरके प्रकाशमान होतीभई मणि धातु सुवर्ण इन्होंसे युक्तहुई पृथ्वी महानदीरूप दीखनी भई ५३ सूर्य्य की किरणों करके ग्रस्तहुई यही पृथ्वी नहीं दीखतीभई ५४ फिर सूर्य्यकी किरणोंसे उतरके जलरूप आत्मा यह पृथ्वी वेगसे बहतीभई तब विपुलजलके शरीरों करके आकाशगंगा कहातीभई ५५ शीतल छायावाले वृक्षोंकरके सुगन्धवाली बेलोंकरके अनेक प्रकारके पक्षीकरके पृथ्वी शोभितहोती भई ५६ सुवर्णके मुकुटवाली मणियोंकी मेखलावाली पर्वतों रेणु से पीलीहुई चकवा चकवी बोलरहे ५७ नीलगर्भ केशोंवाली पुष्पोंके समूहमें सकुल ऐसी गंगाजी बहतीहुई शोभित होतीभई ५८ ऐसी यह पृथ्वी गंगारूप

हुई सुन्दर तपको करतीहुई तपको प्राप्तहोती भई अर्थात् सर्वोत्तम पतिव्रता को प्राप्तहोती भई ५६ फिर वह पृथ्वी गंगारूपहोके सरस्वतीरूपहोके अकार उकार मकार इन्हों को कहनी है व्यक्तस्वरों करके वेदों को कहती है मदराख्य अर्थात् नासा भृकुटीस्थान में स्थित होती है ६० चारपदों से आवृत ऐसे ऋङ्मय चार वेदोंको शिक्षाकरके कहती है ६१ स्थूल शरीररूपी पर्वतके एक देशमें भ्रूनासा में ब्रह्मरूपको ऋषियोंकरके पगेद्धारहोताहै ६२ यह सरस्वती का शब्द अर्थात् नाद नियमोंकरके नहीं सुननाहै मदराग्र अर्थात् स्थूल प्रपचके आगे जो शब्द होताहै वह ब्रह्मनाद इन्द्रियोंकरके अग्राह्यहै ६३ सब प्राणी चुपहुये निगमनियम को प्राप्तहोजाते हैं तब वह सरस्वती नियमसे कुछ नहीं कहती है ६४ सबप्राणी चुपकेहुये बलकरके ब्रह्मके अभिधान कहनेको समर्थ नहीं हैं ६५ वह सरस्वती मनकरके योग का विभागकर सब भूतों में अनुग्रहके वास्ते महास्वन अर्थात् ब्रह्मका ज्ञान करादेती है ६६ देहधारी जीव सरस्वती को प्राप्त होके शिक्षा को ग्रहणकरते हैं तिसी की शिक्षाकरके आत्मा का गायन करते हैं ६७ आदित्य, वसु, मरुद्गण, अश्विनीकुमार ये सब जटाको धारणकियेहुये पुरातन वस्त्रोंको धारणकिये मूंजकी मेखलाको धारणकियेहुये ६८ गन्धर्व किन्नर नाग वरुण ये सब गानकरनेलगे तपको करनेवाले मुनि ६९ कीट पतंग सर्प ये सब शरीरों को खोलनेलगे ७० विष्णुभाव को प्राप्तहुआ विष्णु अन्य अवतारको प्राप्तहो तिन सब सहचारियों की रक्षा करताहै ७१ पुष्कर अर्थात् सर्वकार्यात्मक जगत् में विष्णु नरनारायण रूपहोके लोकशिक्षाके वास्ते आदि लीला करता है ७२ फिर वह विष्णु अग्नि अर्थात् मनकल्पित गार्हपत्यादि रूप होके पृथिव्यभिमानी देहाभी इच्छा करता है फिर अग्निहोत्री आदिकों को निमरूप कर्मरूप होके गति को देताहै ७३ देहात्मवादी जिस विष्णु की सामर्थ्य से मोहादिक दग्ध होजाते हैं अग्नि अर्थात् विष्णु दीप्त रहताहै ७४ विष्णुरूप में रत विप यागक जो हैं ते विष्णुलिंग अर्थात् ब्रह्मादिक रूपोंके उलघने में समर्थ नहीं हैं जैसे सूर्यको उलघनेको कोई समर्थ नहीं है ७५ सो विष्णु विपुल प्रकाश करके द्रव्य देवतादिकों को अनेक प्रकार करके स्थिर हुआ ऋत्विजों करके अनेक प्रकारसे कियाजाता है ७६ सो वहां रनमें द्रव्य देवतादिक रूपसे प्रकाशमान हो निर्धूम अग्निरूपी निग्रह स्थिर रहताहै अर्थात् विष्णुयज्ञ में तद्गतव्रह्म रूप

है ७७ रक्षाकरके स्थित रहताहै विष्णुही शतशरीरीहोके मेघ विषे स्थितहोताहै अर्थात् यज्ञकाफल वृष्टिरूप भी विष्णुहै ७८ आत्मससृष्ट अर्थात् जठराग्निरूप विष्णुहोके भूतोंके हितकेवास्ते ज्ञानरूप वर्षा करताहै ७६ तिस पुष्करमें उपजी हुई अपनीरची उग्रअग्नी को आप मेघरूपहोके पानी से शांत करतेभये ८० पीछे सिद्धगणों से युक्त विष्णु अपनेमन करके आत्मा का सहारकर तपकरने लगा ८१ पैरआदि अंगोंको सकोचकर मनको शिरमें धारणकर अचलस्थान को प्राप्तहो विष्णु मौनको धारण करताभया ८२ निरुपाधि स्वभावसिद्ध भगवान् धर्मरूपहै यहां और परलोकमें सब भूतोंको हितदायकहै ८३ पीछे दानहुये दैत्य अपने अपने शस्त्रों को ग्रहणकर मायासे प्राप्त अनेकप्रकार के नगरों से आच्छादित हुये ८४ प्राप्तहोके तिस प्रकाशित विष्णु को पर्वतों के अग्रभाग करके बुझानेलगे ८५ मायाकरके मेघीभूत हुये बलसे दर्पितहुये दैत्य तिस समूहमें महाबल करतेभये ८६ परन्तु तिसकी लताओंसे दग्धहुये लाखोंदैत्य अग्नि को बुझाने के अर्थ समर्थ नहीं होतेभये ८७ वे दैत्य अग्निके बुझाने में समर्थ नहीं होतेभये जैसे सूर्योदय में आकाश दीप्तहोताहै ऐसे वह अग्नि दीप्त होती भई ८८ पीछे उद्यमों से रहितहुये दैत्य गंधमादन पर्वतके शिखर पे प्राप्त होतेभये ८९ तब वैष्णव तेजों से सयुक्त वह अग्नि आकाशचारी दैत्यों को दग्ध करताहुआ विचरनेलगा ९० तब आपही विष्णु जो यज्ञसे वृष्टिरूप होताहै तिस रूपको धारणकर मेघकी तरह पृथ्वी में वर्षा करतेभये ९१ मन्त्रोंकरके प्रेरहुआ वृष्ट्यधिष्ठात्री देवता मेघोंके समूहोंको छोड़ताहै ९२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायामष्टादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१८ ॥

दोसौउन्नीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे तपसे सयुक्तहुये देवने पीछे क्या करतेभये ऐसा लोक में कोई भी पदार्थ नहीं है जो तपसे नहीं लब्ध होताहै १ वैशम्पायन कहनेलगे कि तब सब विष्णुमय गण दीक्षाको प्राप्तहो पुष्करसे अग्निका उत्पादनकर यथाविधि ग्रहणकर २ मन्त्रोंकरके प्रेरेहुये ब्राह्मण यथाविधि से मन्त्रपूत द्रव्यकरके हवन करतेभये ३ तब सबतेज से बढ़ाहुआ तेजों से बहुत्नीगिन ४ मधुदंड इस नामसे विख्यात शरीरवृत्तकेदग्ध करनेकीतरह दिव्यरूपको धारणकरनेवाला ५

खड्ग ढाल धनुष गदा लांगल चक्र बाण फरसा शूल वज्र शक्ति इन्हों को धारण करनेवाला अग्निप्रकाशित हुआ चक्र तलवार मूशल हल इन्होंको विष्णु धारण करताभया ६ इन्द्र वज्रको धारण करताभया महादेव शूल पिनाक धनुषको धारण करताभया ७ धर्मराज दण्डको वरुणपाश को कालशक्तिको त्वष्टा फरसा को कुबेर प्राशको ऐसे अनेकप्रकारके शस्त्रोंको धारण करतेभये ८ विश्वकर्मा और त्वष्टा शस्त्रोंको बनातेभये ९ विष्णु इन्द्र सूर्य्य रुद्र इनकेअर्थ रथ देताभया १० वेदोंकीरीति से त्वष्टा सेना बनाताभया विश्वकर्मा अनेक प्रकारों के विमानों को रचताभया ११ सत्य पराक्रमवाला विष्णु अपने अंशसे सेनाको रचताभया १२ सूर्य और नक्षत्रों की स्थिति के अर्थ विष्णु बाणसे आकाश को रचताभया १३ इन्द्रने असुरों के अर्थ छोड़ा जो दण्ड तिसको अन्तर्हित हुआ ब्रह्मा ग्रहण करताभया १४ तब अपने अपने प्रभावों से ऐन्द्रास्त्र आग्नेयास्त्र वायव्यास्त्र रौद्रास्त्र ऐसे ये चार होतेभये १५ इन विकारोंकरके संयुक्त महाबलवाले दिति के पुत्र तप शिक्षा अस्त्रप्रहार १६ चतुरङ्ग सेना वीर्य इन्हों से युक्त अप्रधृष्य सगर्व होतेभये और पर्वतों में विचरनेलगे १७ पश्चात् वे सब मन्दराचल पर्वत में विचरतेभये व सब देवताओं को जीततेभये १८ तब महायोगी विष्णु दैत्यों की चतुरङ्ग सेना का संहारकर पृथ्वीतल में विचरता भया १९ तब देवते और ब्राह्मणों के सग फिर दैत्य तप करनेलगे २० पश्चात् सब देवते चर्मचीरा अर्थात् मृगछालाको धारणकर अन्य महान् तप ब्रह्माके समेत सब करतेभये २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वतिर्गतभविष्यपर्वभाषायामूनविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २१९ ॥

दोसौबीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे हे ब्रह्मन् मर्यादासे रहित लोहाके शङ्कुके तुल्य अविनाश समयमें कैसे प्रजा होतीभई १ वैशम्पायन कहनेलगे प्रजाधर्म में परायण ब्रह्मा पहिले ऋषियोंके संग वेनके पुत्र पृथु राजाको राज्यके अर्थ अभिषेचित करताभया २ यह हमारा परम राजा वृत्तिका देनेवाला विप्रोंकी रक्षाकरनेवाला ३ सब भूतोंको रचनेवाला सत्य प्राप्तकर्म्म करके यही है ऐसे आपसमें ऋषिजन कहतेभये ४ पीछे इसी अन्तरमें गन्धमादन पर्वतकी गुफाओं में बहुतसे नियमों से देवते श्रान्त और दुःखितहुये प्राप्तहो फिर ५ वैशाखके महीने में चातुर्मास्य के

गन्धको सूंघके प्रसन्न मनवाले हुये और दैत्य भी तिस पार्थिव गन्धको सूंघके प्रसन्न मनवाले होते भये ६ तब गन्धसे गर्वित हुये देवते और दैत्य किञ्चित् आश्चर्यित प्रसन्न मनवाले परम सुख को प्राप्तहो ७ फिर तिस गंधसे अभिमान में युक्तहो यह कहतेभये कि पुष्पमात्रकी गंधका क्या फलहै ८ सो देहधारी प्राणियों को विविध प्रकारके कर्म बुद्धि अनुमानसे जानना चाहिये और बुद्धिके प्रमाणसे शुभाशुभ विचारना ९।१० इसवास्ते हम आपसमें मिलके समुद्रमें सब औषधिया गेर मंदराचलसे समुद्रको मथेंगे ११ तहाजलसे उपजा अमृत निकसेगा तिसको पानकर आनन्दपूर्वक स्थितरहेंगे १२ हम सबोंमें अग्रणी विष्णु रहेगा ऐसे स्वर्गको और पृथ्वीको भोगेंगे तब बलवाले दैत्यों ने विचारकिया कि हम अकेले इस कर्मको करेंगे तब मूल पत्र शाखा पुष्प फल वृक्ष इन आदि सबप्रकार की औषधियों को १३।१४ पर्व्वतोंसे ल्याके समुद्रमें गेरनेलगे और मंदराचल को उठानेके अर्थ सब दैत्य बतलाके तिस पर्वतको उठानेके वास्ते १५ भाजते भये और पृथ्वीको अपनी २ बाहुओंमे कम्पातेभये १६ अपनी अपनी बाहुओं से बलभी करतेभये परन्तु मंदराचलको उठाने में समर्थ नहींहुये और गोडों के तान तिस पर्वतमें गिरतेभये १७ पश्चात् तपसे दग्ध पापोंवाले देवते और दैत्य तब ब्रह्माजी के समीपमें जाके पैरों में शिर देतेभये १८ तब तिन्हों के मनोरथको जाननेवाला ब्रह्मा बहुतप्रकारकी वाक्योंकरके वाणीका उच्चारण करताभया १९ और शरीरस्थ ब्रह्मा अशरीरा अर्थात् आकाशवाणी को सब लोकों के हितके वास्ते कहने लगा २० कि हे दैत्यो सब आदित्य वसु रुद्र मरुद्गण और सब देवते यक्ष गन्धर्व किन्नर इन्होंके सहित २१ तुमहोके धातुओं से रञ्जितहुये मंदराचल का उद्धार करसक्तेहो २२ और तुम सब देवते और दैत्य इस पर्व्वत को उखाडिके बेलों के रसोंसे युक्त इस पर्व्वतको हाथमें लवोगे २३ फिर ऐसा सुनके सबके समीप दैत्य मनसे और वचनोंमे इकट्ठे होतेभये २४ फिर क्रीडा करतेहुये बहुतप्रकारों से तिस समुद्रमें पुष्कर अर्थात् मथनके दण्डके समीप में प्राप्त होते भये २५ तब सब देवते और दैत्य आपसमें मिलके मन्दराचलको उठा समुद्रमें गेर वासुकीसर्पका नेतावना मथनेलगे २६ फिर हजार वर्षतक वह जल औषधियोंसेयुक्त मथा तब दूधरूपहोके तिसमें अमृत पैदाहोतागया २७ तब जो अमृत निकसा तिसको लोभने प्रसितहुये दैत्य हरतेभये पीछे धन्वन्तरि मदिरा लक्ष्मी

खड्ग ढाल धनुष गदा लांगल चक्र वाण फरसा शूल वज्र शक्ति इन्हों को धारण करनेवाला अग्निप्रकाशित हुआ चक्र तलवार मूशल हल इन्होंको विष्णु धारण करताभया ६ इन्द्र वज्रको धारण करताभया महादेव शूल पिनाक धनुषको धारण करताभया ७ धर्मराज दंडको वरुणपाश को कालशक्तिको त्वष्टा फरसा को कुबेर प्राशको ऐसे अनेकप्रकारके शस्त्रोंको धारण करनेभये ८ विश्वकर्म्मा और त्वष्टा शस्त्रोंको बनातेभये ६ विष्णु इन्द्र सूर्य्य रुद्र इनकेअर्थ रथ देताभया १० वेदोंकीरीतिसे त्वष्टा सेना बनाताभया विश्वकर्मा अनेक प्रकारों के विमानों को रचताभया ११ सत्य पराक्रमवाला विष्णु अपने अंशसे सेनाको रचताभया १२ सूर्य और नक्षत्रों की स्थिति के अर्थ विष्णु बाणसे आकाश को रचताभया १३ इन्द्रने असुरों के अर्थ छोड़ा जो दण्ड तिसको अन्तर्हित हुआ ब्रह्मा ग्रहण करताभया १४ तब अपने अपने प्रभावों से ऐन्द्रास्त्र आग्नेयास्त्र वायव्यास्त्र रौद्रास्त्र ऐसे ये चार होतेभये १५ इन विकारोंकरके संयुक्त महाबलवाले दिति के पुत्र तप शिक्षा अस्त्रप्रहार १६ चतुरङ्ग सेना वीर्य इन्हों से युक्त अप्रधृष्य सम्पन्न होतेभये और पर्वतों में विचरनेलगे १७ पश्चात् वे सब मन्दराचल पर्वत में विचरतेभये व सब देवताओं को जीततेभये १८ तब महायोगी विष्णु दैत्यों की चतुरङ्ग सेना का संहारकर पृथ्वीतल में विचरता भया १९ तब देवते और ब्राह्मणों के संग फिर दैत्य तप करनेलगे २० पश्चात् सब देवते चर्मचीरा अर्थात् मृगछालाको धारणकर अन्य महान् तप ब्रह्माके समेत सब करतेभये २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायामूनविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २१९ ॥

दोसौबीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे हे ब्रह्मन् मर्यादासे रहित लोहाके शंकुके तुल्य अविनाश समयमें कैसे प्रजा होतीभई १ वैशम्पायन कहनेलगे प्रजाधर्म में परायण ब्रह्मा पहिले ऋषियोंके संग वेनके पुत्र पृथु राजाको राज्यके अर्थ अभिषेचित करताभया २ यह हमारा परम राजा वृत्तिका देनेवाला विप्रोंकी रक्षाकरनेवाला ३ सब भूतोंको रचनेवाला सत्य प्राप्तकर्म करके यही है ऐसे आपसमें ऋषिजन कहनेभये ४ पीछे इसी अन्तरमें गन्धमादन पर्वतकी गुफाओं में रहनेवाले विप्रों से देवते श्रान्त और दुःखितहुये प्राप्तहो फिर ५ वैशाखके महीने में कार्त्तिक के

गन्धको सूघके प्रसन्न मनवाले हुये और दैत्य भी तिस पार्थिव गन्धको सूघके प्रसन्न मनवाले होते भये ६ तब गन्धसे गर्वित हुये देवते और दैत्य किञ्चित् आश्चर्यित प्रसन्न मनवाले परम सुख को प्राप्तहो ७ फिर तिस गधसे अभिमान में युक्तहो यह कहतेभये कि पुष्पमात्रकी गधका क्या फलहै ८ सो देहधारी प्राणियों को विविध प्रकारके कर्म बुद्धि अनुमानसे जानना चाहिये और बुद्धिके प्रमाणसे शुभाशुभ विचारना ९।१० इसवास्ते हम आपसमें मिलके समुद्रमें सब औषधिया गेर मदराचलसे समुद्रको मथेंगे ११ तहाजलसे उपजा अमृत निकसेगा तिसको पानकर आनन्दपूर्वक स्थितरहेंगे १२ हम सबोंमें अग्रणी विष्णु रहेगा ऐसे स्वर्गको और पृथ्वीको भोगेंगे तब बलवाले दैत्यों ने विचारकिया कि हम अकेले इस कर्मको करेंगे तब मूल पत्र शाखा पुष्प फल वृक्ष इन आदि सबप्रकार की औषधियों को १३।१४ पर्व्वतोंसे ल्याके समुद्रमें गेरनेलगे और मदराचल को उठानेके अर्थ सब दैत्य बतलाके तिस पर्वतको उठानेके वास्ते १५ भाजते भये और पृथ्वीको अपनी २ बाहुओंसे कम्पातेभये १६ अपनी अपनी बाहुओं से बलभी करतेभये परन्तु मंदराचलको उठाने में समर्थ नहींहुये और गोडों के तान तिस पर्वतमें गिरतेभये १७ पश्चात् तपसे दग्ध पापोंवाले देवते और दैत्य तब ब्रह्माजी के समीपमें जाके पैरों में शिर देतेभये १८ तब तिन्हों के मनोरथको जाननेवाला ब्रह्मा बहुतप्रकारकी वाक्योंकरके वाणीका उच्चारण करताभया १९ और शरीरस्थ ब्रह्मा अशरीरा अर्थात् आकाशवाणी को सब लोकों के हितके वास्ते कहने लगा २० कि हे दैत्यो सब आदित्य वसु रुद्र मरुद्गण और सब देवते यक्ष गन्धर्व किन्नर इन्द्रों के सहित २१ तुमहोके धातुओं से रजितहुये मदराचल का उद्धार करसक्तेहो २२ और तुम सब देवते और दैत्य इस पर्व्वत को उखाडिके बेलों के रसोसे युक्त इस पर्व्वतको हाथमें लेवोगे २३ फिर ऐसा सुनके सबके समीप दैत्य मनसे और वचनोंसे इकट्ठे होतेभये २४ फिर क्रीडा करतेहुये बहुतप्रकारों से तिस समुद्रमें पुष्कर अर्थात् मथनके दण्डके समीप में प्राप्त होते भये २५ तब सब देवते और दैत्य आपसमें मिलके मन्दराचलको वडा समुद्रमें गेर वासुकीसर्पका नेताबना मथनेलगे २६ फिर हजार वर्षनक वह जल औषधियोंसेयुक्त मथा तब दूधरूपहोके तिसमें अमृत पैदाहोनाभया २७ तब जो अमृत निकसा तिसको लोभसे प्रक्षितहुये दैत्य हरतेभये पीछे धन्वन्तरि मदिरा लक्ष्मी

कौस्तुभमणि २८ चन्द्रमा उच्चैःश्रवा घोड़ा ये निकसलिये तब निकसेहुये अमृतको ग्रहणकर मोहनीरूपमें स्थितहुये विष्णु २९ देवतों को अमृत व दैत्योंको मदिरा देनेलगे तब देवनाके रूपको धारणकिये देवताओं की पंक्तिमें स्थितहुये राहुको ३० देवता विष्णुके अर्थ प्रकट करतेभये तब विष्णुराहुके शिरको काटते भये ३१ तब अमृतसे ब्रह्मके वाक्यसे प्रचोदितहुई पृथ्वीभी इन्द्रके हाथमें परमप्रसन्नभये अमृतको ग्रहणकर ब्रह्माके शिष्यभावको प्राप्तभई ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२० ॥

दोसौइक्कीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे विष्णुके पराक्रमसे मोक्षकरके रहितहुये दैत्य और दानव क्या करतेभये १ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि महापराक्रम और महाबलवाले दैत्य राज्यकी इच्छा करनेलगे सत्यस्वरूप पराक्रमवाले देवता तपकी इच्छा करनेलगे २ जनमेजय कहनेलगे ऐश्वर्य्य से संयुक्त और कामनाका देनेवाला ऐसा हिरण्यकशिपु अर्थात् बलिराजा कैसे महाक्षेत्रमें यज्ञ करताभया ३ तब वैशम्पायन कहनेलगे कि बहुत सुवर्णसे संयुक्त राजसूय यज्ञकरके महाबलवाला बलि पृथ्वी में यज्ञ करताभया ४ और गंगा यमुनाके मध्यमें जहां उत्तम क्षेत्रहै तहां बलिराजाकी यज्ञमें ५ वेदको जाननेवाले और महाव्रतों में परायण ऐसे ब्राह्मण और यति व सिद्ध योगी ६ मुनि बालखिल्यमुनि और धर्मोंमें परायण अनेक प्रकारके ब्राह्मण ७ और ब्राह्मणोंसे पूजित और महाभाग हजारोंप्रकारके ऋषि तहां प्राप्तभये ८ तब अपने पुत्रकरके सहितशुक्राचार्य्य बलिराजा की यज्ञको करानेलगे ९ तब बलिराजा कहनेलगा कि मैं अपनी इच्छासे वर देताहूं कोई माँगो १० तब वामनरूपकरके विष्णु बलिराजासे तीनपैर प्रमाण पृथ्वीरूप भिक्षाको ग्रहणकरतेभये ११ तब विष्णुने अपने शरीरको बड़ा तीनपैरों में तीन लोक मापलिये १२ तब दैत्यका राज्य छीनागया तब सेनाआदि गणोंसे संयुक्त दैत्य पाताल लोकमें स्थितभये १३ पीछे प्राश तलवार शाला यन लाठी पताका रथध्वज ढाल कवच कोश १४ इन आदि हथियारोंवाले इन्द्र आदि सब देवता उत्पत्तिसहित संसारमें १५ स्वधारूप अमृतसे पितरोंको और हव्यकरके देवताओंको प्रसन्नकरतेभये और इन्द्रके अर्थ राज्यदियागया १६ तब ब्रह्माआदि सब देवता

तहा वैरियोंके रोमों को हर्षण अर्थात् खड़ाकरदेवे ऐसे शखको बजातेभये १७ तिस शखके शब्दको सुनके सावधानहुये तीनोंलोक परम निवृत्तिको प्राप्तभये १८ और सब विषयोंको हरलेवें ऐसी इन्द्रिय और मदाराग्र अर्थात् स्थूल देहमें सयुक्त ऐसे तीनोंलोक परमसुखको प्राप्तहोतेभये १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामेकविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२१ ॥

दोसौबाइसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे इस वृत्तातके पश्चात् जब देवताओं का स्थित राज्य हुआ तब देवता और मनुष्यों का सहवास होताभया १ और एकही जगह पठन व शब्दहोनेलगा और यज्ञकर्म्म में अपने अपने भागको सब देवता ग्रहण करनेलगे २ व एक समयमें प्रचेताके पुत्र दक्षको ऋषियोंसे परिवारित बृहस्पति अश्वमेधयज्ञ करानेलगे ३ तहा भागके अर्थ नंदिगण करके सहित रुद्र दक्षप्रजापतिकोही ४ पशुरूप जानके मारतेभये और तहा अच्छे रूपवाले व बुरेरूप वाले ५ कितनेक बुरे नेत्रोंवाले व कितनेक घड़ाके समान उदरवाले व कितनेक ऊपरको नेत्रोंवाले ६ कितनेक बड़े शरीरोंवाले व कितनेक निकट व कितनेक बावने ७ व कितनेक ऊंची चोटीवाले व कितनेक जटाओंवाले व कितनेक तीननेत्रोंवाले ८ व कितनेक शकुके समान कानोंवाले व कितनेक चीर व चर्मों को धारण करनेवाले व कितनेक मुद्गरको हाथोंमें लेनेवाले व कितनेक घण्टाको धारण करनेवाले ६ व कितनेक मुजकी मेखलाको धारण करनेवाले और कितनेक सोनाके कुडलोंको धारणकरनेवाले व कितनेक डमरु भेरी मृदङ्ग बासुरी १० इन्होंको बजानेवाले इन्होंसे परिवृत और शख मृदग त्रिशूल पिनाक धनुष इन्होंको धारण करनेवाले महादेव ११ तिस यज्ञमें प्राप्तभये और जगत्को दग्ध करनेवाले अग्निकीतरह प्रकाशित हुये महादेव और नदिगण यज्ञका विध्वस करतेभये १२ जैसे प्रलयकालमें अग्नि और कितनेक राक्षसोंकेगण यज्ञकेस्तभ को उखाडके भाजतेभये १३ और कितनेक चीर और चर्मोंको धारण करनेवाले राक्षस मुनिजनों को दुःखित करतेभये १४ और कितनेक नागके समान नेत्रोंवाले राक्षस यज्ञमें स्थित घृतका पान करतेभये और कितनेक जीभोंसे चाटनेवाले राक्षस १५ यज्ञमें पशुओंको भक्षण करतेभये और कितनेक परम पानीसे

यज्ञकी अग्निको बुझाते भये १६ और कितनेकराक्षस यज्ञके जलको हरते भये और कितनेक राक्षस हाथोंसे डाभोंको काटते भये १७ और कितनेकराक्षस यज्ञोंके स्तम्भोंके अग्रभागों को तोडतेभये और कितनेक कलशोंको फेंकतेभये ग कितनेकराक्षस शोभाके अर्थ रचेहुये कांचन वृक्षोंको काटतेभये १८ और कितनेकराक्षस यज्ञके पात्रोंको फोड़ते भये और कितनेकराक्षस अरणियों को मथते भये १६ और कितनेक राक्षस प्राग्वंशको तोडते भये और कितनेकराक्षस पुरोडाशों को खातेभये २० ऐसे दिन और रात्रि मिद्यमानहुआ महायज्ञ पुकारने लगा जैसे मिद्यमान समुद्र पुकारताहै २१ पीछे ब्रह्माके दियेहुये धनुषपै वाणों को चढा महायज्ञके जानु भाग से स्थितहोके महादेव मारते भये २२ तब विद्ध हुआ यज्ञ ऊपर को उछलताहुआ मृगहोके नष्टगानहुआ ब्रह्माजीके समीप में भागनेलगा २३ क्योंकि वाणकरके अभिहतहुआ यज्ञ पृथ्वीभरमें कहींभी सुख को प्राप्त नहीं हुआ २४ तब ब्रह्माकी शरण में गया तिस मृगरूप यज्ञसे ब्रह्मा कहनेलगे २५ कि इसीरूपसे तू महामृग होके आकाश में रहेगा क्योंकि रुद्रके बाण से जीताहुआ तू २६ नक्षत्रोंके शिरपै रुद्रको नक्षत्रके संग नित्य सर्व्वदा स्थितहोता हुआ २७ पीछे अनिनागिरूप चन्द्रमाके साथ संयुक्तहो और तारा गणों से मिलाहुआ तू विचरेगा २८ ऐसे तारागणों का और ध्रुवताराका भी प्रकाश करनेवाला तू रहेगा और जो तेरे कटेहुये शरीरसे दिव्य रुधिर निकला हुआ २६ वेगकरके भाजने से आकाश में पतितहुआ है यह बहुत वर्णोंवाला और मडलसञ्ज्ञक क्षेत्र ३० और भूतोंका निमित्तभूत और वर्षाकाल में वृष्टिका देनेवाला ३१ और देखने करके प्राणियों को सुख दुःखका देनेवाला और इन्द्र धनुष इसनामसे विख्यात ऐसा इन्द्र धनुष होवेगा तिसको मनुष्यकेनेत्र आश्चर्य से देखेंगे और यह रात्रिमें नहीं दीखेगा ३२।३३ पीछे दक्षप्रजापतिके सेवकभी भय जहां तहां भाजतेभये तब महादेवजीके ३४ आपेशरीरसे उपजाहुआ नंदीगण युगांतकालमें ज्वलितरूप ब्रह्मदण्डकी तरह स्थितरहा ३५ तब एकहाथमें शार्ङ्गधनुष और दूसरे हाथमें सुदर्शनचक्र और तीसरे हाथ में घण्टासहित गदा और चौथे हाथ में तलवार ऐसे धारणकर महादेव के सम्मुख विष्णु प्राप्तहुये ३६ तब शंखको बजाते हुये और बाणों को धारण करनेवाले ऐसे विष्णु स्थितहुये ३७ फिर शृङ्गभागसे उत्पन्नहुआ शार्ङ्गधनुषका अधिष्ठानी देवता ऐसे मानहो-

ताभया कि जैसे चन्द्रमा सहित मेघकी शोभाहोवे तैसे ३८ फिर वह देवता विपुल अर्थात् वडे धनुषको धारणकर और पैने वाणों को धारण करताभया ३९ तव सब आदित्य सब वसु ये विष्णुके चारोंओर स्थित हुये ४० और मरुद्गण और विश्वेदेवा ये रुद्रके चारोंओर स्थितहुये तब गन्धर्व्व किन्नर नाग यक्ष सर्प ४१ ऋषि ये दोनोंके पक्षोंमें हितको चाहनेवाले लोकोंके हितके अर्थ ४२ शांति का जाप करनेलगे तब अग्रणीरूप महादेव शरकरके विष्णुके हृदय और सब अंगोंकी संधियों में वींधतेभये ४३ परन्तु क्रोध आदिको जीतनेवाले और सर्वात्मा ऐसे विष्णु कम्पायमान न हुये ४४ पीछे विष्णुभी धनुष को नवाय तिसपै वाण को संयुक्तकर महादेव की नाडके जोते में मारते भये ४५ तब महादेवभी कम्पायमान नहींहुये तब विष्णु कूदके सनातनरूप रुद्रके कण्ठको ग्रहण करते भये ४६ तब फिर हठसे कूदके प्रहार करनेसे वह महादेव नीलकण्ठ होगये पीछे आदि अन्तसे रहित और देव ४७ और सब भूतों के आगमाचार्य्य मेरे और कर्म्मोंको कर्त्ता और विकर्त्ता और सब प्राणियों में उत्तम ४८ व अंतर्यामि रूप करके आपही कर्म्मों को करनेवाले कर्त्ता और कारयिता से अन्य ४९ ऐसे तू क्षमाकर सो तू है सो हे सनातन तेरे अर्थ नमस्कार हो ५० ऐसी सिद्धोंके मुख से कही और अद्भुतवाणी आकाशसे सुननेलगी ५१ पीछे रुद्रमे उपजेहुये नंदीगण क्रोधको प्राप्तहो धनुषको खेंच विष्णुके मस्तकमें वाण मारतेभये ५२ तब नंदीको देख हँसतेहुये विष्णु नंदीको थामनेभये ५३ पीछे ब्रह्माके समान तेजसे प्रकाशित क्षमासे संयुक्त पर्व्वत की तरह अचल ५४ अचिंत्य अप्रमेय अजेय और शत्रुओं के दमनेवाले प्रलय अग्नि के समान शान्तात्मा ५५ कर्मरूपी फांसियों को हरनेवाले और अविनाशि ५६ ऐसे विष्णु प्रसन्नहोके महादेव के अर्थ भागकी कल्पना करतेभये ५७ ऐसे विष्णुने वह यज्ञ फिर प्रवृत्त किया ऐसे यह यज्ञलोक में प्रतिष्ठितहै ५८ सो हे राजेन्द्र ऐसे यज्ञ सनातन कराहै पीछे दक्षप्रजापति भी यज्ञकेफलको प्राप्तहुये ५९ जो बुद्धिमान् इस कही हुई दिव्य कथा को विप्रों के अर्थ सुनावे ६० वह देवलोकमें आत्मभावमें प्राप्त होताहै ऐसे पौष्कर प्रादुर्भाव मैंने व्यासजीके ६१ मुखसे सुनाहै सो क्रमपूर्वक कहा जो इस उत्तम आख्यानको सब कालमें सुनेगा ६२ वह सब कामोंको प्राप्तहो इसलोक और परलोकमें स्वर्ग फलोंको भोगेगा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिपौष्करप्रादुर्भावे [illegible] ॥

दोसौतेईसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगे कि हे विप्र पुराणों में अमित तेजवाले विष्णुका वाराह अवतार सत्पुरुषों से सुना १ परंतु तिसका चरित्रविधि विस्तार कर्म गुण संतानहेतु वाञ्छित इन्हों को मैं नहीं जानता २ किस आत्मावाला वाराह हुआ जिसने कैसाशरीर धारणकिया और जिस मूर्तिका कौन देवताहुआ और किस आचारवाला किस प्रभाववाला और तिसने पहले क्याकिया ३ यह विस्तारपूर्वक वाराह आख्यान यज्ञके अर्थ इकट्ठेहुये ब्राह्मणों के अर्थ और मेरे अर्थ वर्णनकर ४ तब वैशम्पायन कहनेलगे वेदकेसमान और नानाप्रकारकी श्रुतियों से युक्त और व्यासजी के मुखसे कहा ऐसा महा वाराह चरित्र तेरे अर्थ कहूंगा ५ जैसे नारायण वाराह शरीर को प्राप्तहो समुद्र में स्थितहुई पृथ्वीको ६ अपनी जाडपैंधरके श्रुतियों से अलंकृत बाहर निकासतेभये इस आख्यान को पवित्र और मौनरूपहोके हे जनमेजय तू सुन ७ पवित्र परम वेदों के सम्मत नानाप्रकार की श्रुतियों से युक्त ८ सांख्य और योगसे युक्त ऐसा यह पुराणरूप आख्यान नास्तिकके अर्थ कहना उचित नहीं है ९ जो इसके अर्थको समग्रविधि करके जानेगा वही योगी और ज्ञानी है और विश्वेदेवा साध्य १० । ११ सब रुद्र सब आदित्य दोनों अश्विनीकुमार सब प्रजापति सप्तमहर्षि मनके सङ्कल्प से उपजे ऋषि पूर्वजऋषि १२ सब वसु सब अप्सरा गंधर्व यक्ष राक्षस दैत्य पिशाच सर्प नानाप्रकारके प्राणी १३ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र म्लेक्षआदि प्राणी चार पांववाले प्राणी तिरछीयोनिवाले प्राणी १४ जङ्गमरूप प्राणी और अन्यभीजीव जन्तु ये सब युगसहस्रके अंतमें जब ब्रह्माकादिन पूराहोजाय पदे १५ तब साक्षात् महादेवरूप अपनी शिखाओं से लोकोंको कपातेहुये १६ सब प्राणियोंको गोपने हैं तब तिसके तेजकी किरणों से दह्यमानहुये १७ बिगड़ेहुये वर्णवाले दग्ध अङ्गोंवाले सब वेदाङ्ग उपनिषद वेद इतिहास १८ सब विद्या क्रिया सत्य धर्म इन आदि सब चारमुखवाले ब्रह्माको अगाड़ीकर १९ सब देवते ब्रह्माकेदिनकी पूर्ति में हंसावतार नारायणमें प्रवेश करते हैं २० तब मन्वपरी उत्पत्ति होजाती है जैसे सूर्यका नित्यप्रति उदय २१ और अस्त होताहै तैसे युगसहस्र के अंतमें प्रलय भी होजाताहै २२ जहां जीवमात्र नहीं उहरसकता ऐसे सब लोकोंको अपने गर्भ में

स्थितकर अकेले ईश्वर वसते हैं २३ पीछे ऐसेही कल्पके अंतमें वारवार सवभूतों को रचते हैं और जब सूर्यकी किरण व चन्द्रमाकी किरण नष्ट होगई है २४ व धूमा अग्नि पवन यज्ञ तपक्रिया इन्होंका नाश होगयाहै पक्षीआदि सब प्राणी कोईभी नहींरहाहै २५ मर्यादासे आकुल भयानक चारोंओरसे अँधेरेसे आवृत व नहीं दीखनेके योग्य ऐसे सबलोक होजाते हैं सब कर्म्मोंका अभाव होजाता है २६ और वैर आदिका नाश होजाताहै तब पीत वस्त्रोंवाले और लाल नेत्रों वाले और कृष्णबद्दलके समान कान्तिवाले २७ ऐसे ईश्वर हजारहों शिखारूप जटाके भारोंको धारण कियेहुये और लक्ष्मी के चिह्न व लाल चन्दनसे रूपित २८ छातीको धारण कियेहुये और जिसकी पत्नी लक्ष्मी आप देहको आवृत्य होके २९ स्थित होती है और हजारहों कमलों की मालाको धारण करनेवाले ईश्वर शयन करने लगेहैं ३० तब निद्रा योगको प्राप्तहोते हैं पीछे हजारहोंवर्षों में आपही जागते हैं ३१ तब फिर संसारमें सृष्टि को रचनेकी आपही चिन्तवन करके इच्छा करैहैं ३२ तब पितर देवते दैत्य मनुष्य इन्होंको पारमेष्ठ्य कर्मकरके चिन्तवन करते हैं ३३ सब लोकके सम्भव वाणीकेपति कर्त्ता विकर्त्ता संहर्त्ता प्रजापति ३४ धाता विधाता संयम नियम यम ऐसे नारायणहैं सो सब वेदभी नारायणमें तत्परहैं सब क्रियाभी नारायणमें तत्परहैं ३५ यज्ञभी नारायणमें तत्परहै श्रुतिभी नारायणमें तत्परहै मोक्षभी नारायणमेंतत्परहै गतिभी नारायणमें तत्पर है ३६ धर्मभी नारायणमें तत्परहै यज्ञभी नारायणमें तत्परहै ज्ञानभी नारायण में तत्परहै तपभी नारायणमें तत्परहै ३७ सत्यभी नारायणमें तत्परहै परमभी नारायणमें तत्परहै नारायणसे परे देव न हुआ न होगा ३८ वही आप उत्पन्न होते है वही लोकोंके स्वामी ब्रह्माहैं वही वायुहै वही यज्ञहै वही प्रजापतिहै ३९ सत् असत्भी वही है वही सर्वज्ञहै वही प्रजाको रचनेवाले हैं वही देवतोंमेभी नहीं जानेजाते है ४० जिसके अन्तको प्रजापति महर्षि और देवता भी नहीं जान सकते ४१ इस वास्ते वही अनन्त है और जो इसका परमरूपहै जिसको देवता नहीं देखसक्ते ४२ अर्थात् अवतारलिये ईश्वर को देखना पूजने और देखने है जिसको यह नहीं दिखातेभये तिसको कौन ढूंढ़ सक्ता है ४३ वही सबभूतों के स्वामी हैं अग्नि और पवनकी गतिभी वही है ४४ तेजतप अमृत इन्होंके निधानभी वही है चारों वर्णों के ईशभी वही हैं चातुर होत्रके फलको भोगनेवाले

भी यही हैं ४५ चारों समुद्रों पर्यन्त चतुर्युग के निवर्त्तक भी यही हैं आपने गर्भ में स्थित जगत्कोकर ४६ हजारहों वर्षोंतक धारणकर यही अण्डको छोड़नेवाले हैं ४७ देवता दैत्य पक्षी सर्प अप्सरागण वृक्ष औषधी पृथ्वी पर्वत यक्ष गुह्यक प्राणी इन आदि जगत्को रचनेवाले प्रजापतिभी यही हैं ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वाणिगर्भविष्णुपर्व्वभाषायांवाराहैश्वादुर्भावे त्रयोविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२३ ॥

दोसौचौबीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे प्रजापतिकी मूर्तिमय यह जगत्रूपी अण्ड सम्पूर्ण सुवर्णमय होताभया ऐसे वेद कहते हैं १ पीछे हजारहों वर्षके अन्त में लोककी उत्पत्तिके हेतुको जाननेवाले ईश्वर ऊर्ध्वमुख २ और अधोमुख ऐसे अण्ड को भेदन करतेभये पीछे आठप्रकार से भेदन करतेभये ३ जिसमें जगत्का विभाग करदियाहै व जो छिद्ररूप ऊर्ध्व आकाशहै वह सुकृतीजनोंकी परमगतिहै व जो अधोमुख भागहै वह रसातलहै ४ और जो पहले देवलोक रचनेकी इच्छासेके अण्ड रचताभया तिसके सबओर आठछिद्र करतेभये और शेषरूप आठप्रकार छिद्रहैं दिशा और विदिशा बनादिये हैं ५।६ नानाप्रकारकेराग और विरागवाले अण्डके टुकड़े हैं वे सब अनेक वर्णोंको धारण करनेवाले बद्दलहैं ७ और जो अण्डका मध्यभागसे द्रवरूप निकसा है वह समुद्ररूप होके चारोंओर से पृथ्वीको आच्छादित कररहे हैं ८ और जो ऊर्ध्वमुख अण्ड है उसमें जो जल निकला है वह काञ्चनका पर्वतहै और तिसी जलकरके आवृतहुये दिशा और विदिशाहैं आकाश और स्वर्ग व अन्यत् कहुरु अन्तरहै ९ तहां तहां कन्दरूप जलकरके पर्वत उदितहुआ है ऐसे बहुत योजन विस्तारवाले पर्व्वतोंके समूहसे १० यह पृथ्वी विषमरूप हुईहै तब बोझसे पीड़ितहुई पृथ्वी हिरण्यमय तेजको त्यागके धारणकरने नहीं समर्थहुई नीचेको प्रवेश करतीहुई ११ तब नीचेको प्रवेश करने वाली पृथ्वीकोदेख लोकोंके हितकी कामना करके भगवान् उद्धारकरनेके अर्थ मन करतेभये १२ भगवान् कहनेलगे यह मेरे तेजमें वीर्यको प्राप्तहो तपस्विनी पृथ्वी पाताल में प्रवेश करतीहै जैसे कीच में दुर्बल गाय १३ पृथ्वी कहनेलगी त्रिविक्रम अग्नि विक्रमवाले महानृसिंह चतुर्भुज शार्ङ्गचक्र धारणवाले गदाधरो

को धारण करनेवाले और मनोवाञ्छितवर को देनेवाले ऐसे जो तुमहो आपके अर्थ नमस्कारहो १४ हे देव आप आत्मा धारणकिये हैं आप जगत्को धारण करते है और आप भूतोंको धारण करते हैं आप ससारको पोषते हैं १५ आपके धारणकिये को मैं धारण करतीहूं १६ आपसे नहीं धारण कियेको मैं नहीं धारण करती और ऐसा कोई भी नहीं है जिसको आप धारण नहीं कररहे हैं १७ और हे नारायण जगत्के हितकी कामना करके आप मेरे भारको उतारते हैं १८ दैत्योंके तेजसे आक्रांत और रसातलमें प्राप्तहुई ऐसी मेरी तू रक्षाकर १९ क्योंकि हे सुरश्रेष्ठ मैं तेरी शरणहुईहूं दैत्य और राक्षसोंसे पीडितहुई मैं सदा तेरी शरण होतीहू २० और जबतक मुझको भयहै तब तक तेरी शरणको मैं नहीं होती २१ भगवान् कहनेलगे हे पृथ्वी भयमतकरे सावधानहोके शान्ति को प्राप्तहो और मनोवाञ्छित स्थान में तेरेको मैं प्राप्त करता हूं २२ वैशम्पायन कहने लगे पीछे महात्मा ईश्वर मनकरके दिव्यरूपको चिंतवन करनेलगे कि किसरूपको धारण कर जलमें डूबीहुई इस पृथ्वीका मैं उद्धारकरूं २३ ऐसे विचारके विष्णु जलक्रीडा में रुचिवाले वाराह शरीरका स्मरण करतेभये २४ और जब पृथ्वीके उद्धार करनेमें युक्तहुये तभी भूमिधृक् इनका नामहुआ २५ पीछे सब प्राणियोंसे अधृष्य वाङ्मय ब्रह्मसंज्ञक चालीसकोश विस्तारवाले चारसैकोश ऊंचे २६ नीलबद्दल के समान कांतिवाले मेघके गर्जनेके समान शब्दवाले पर्वतोंको संहनन करने वाले भीम श्वेत और दीप्त ऐसी उग्रदंष्ट्रावाले २७ बिजली और अग्निके समान प्रकाशित नेत्रोंवाले सूर्य्यके समान तेजवाले पुष्ट और गोलरूप विस्तृत स्कन्धोंवाले गर्वित शार्दूलके समान पराक्रमवाले २८ पीन और उन्नतकटि देश वाले बैलके लक्षणों से लक्षित ऐसे वाराहरूपको धारणकर २९ विष्णु पृथ्वीके उद्धारके अर्थ रसातलमें प्रवेशकरतेभये और चारवेदोंरूप पैरोंवाले यज्ञस्तम्भरूप दंष्ट्रावाले ३० यज्ञरूप हाथोंवाले चितिरूप मुखवाले अग्निरूप जिह्वावाले डाभ रूप रोमोंवाले ब्रह्मरूप शिरवाले महातपको धारण करनेवाले ३१ दिन रात्रिरूप नेत्रोंवाले वेदांगरूप श्रुतियों से भूषित घृतरूप नासिकावाले स्रुवरूप तुण्डवाले सामवेदके घोषरूप वाणीवाले सत्य धर्म क्रम विक्रम इन्द्रोंसे सत्कृत ३२ क्रिया और यमरूप घोणवाले यज्ञ पशुरूप गोडोंवाले महायज्ञरूप आकृतिवाले उद्गातारूप आतोंवाले होमरूप लिङ्गवाले बीज और औषधरूप महाफलवाले ३३

वायुरूप अन्तरात्मावाले मंत्ररूप फीचवाले विक्रम और सोमरूप लोहूवालेवेदी रूप स्कन्धवाले हव्यरूप गन्धवाले हव्य और कव्यरूप अतिवेगवाले ३४ प्राग्वंशरूप शरीरवाले और कीर्त्तिवाले नानाप्रकारकी दीक्षाओंसे अन्वित और दक्षिणारूप हृदयवाले योगी व महासत्रमय महान् ३५ और उपाकर्मरूप ओंठों से रुचक प्रवर्ग्यरूप आवर्त भूषणोंवाले और नानाप्रकारके छन्दरूप गतिमार्गवाले गुह्य और उपनिषद्रूप आसनवाले ३६ छायापत्निरूप सहायवाले व मणिशृङ्ग के समान उच्छ्रित ऐसे यज्ञवाराह होके नीचेको प्रवेशकरतेभये ३७ और पानीसे आच्छादितहुई रसातलमें प्राप्तहुई ऐसी पृथ्वीको रसातल में जाके ३८ लोकके हितके अर्थ दंष्ट्राके अग्रभाग पै स्थापितकर अपने स्थानपै आके पृथ्वीको छोड़तेभये ३९ तब पृथ्वी तिसदेव के अर्थ नमस्कार करतीभई तब उद्धतहुई पृथ्वी पहलेकीतरह स्थापित होगई पीछे पृथ्वीका उद्धारकर जगत्को स्थापन की इच्छा करके ४० यज्ञ भगवान् विभागके अर्थ मन करतेभये तब रसातलमें गई पृथ्वीको ४१ अति पराक्रमवाले वाराहजी लोकके हितके अर्थ ऐसे स्थापितकरतेभये ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वणिभाषायांवाराहप्रादुर्भावेचतुर्विंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२४ ॥

दोसौपचीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि तिस जलके समुद्र के ऊपर बड़े जहाजकी तरह स्थापितकरके और विस्तृतवाली होनेसे पृथ्वी जल में डूबी नहीं १ पीछे विष्णु विभागको चिन्तवन करनेलगे तब सब पर्व्वतों के चारोंओरसे समुच्चय २ निलेखन प्रमाण गति प्रमाण इन्होंका और नदियों का माहात्म्य और विशेषको चिन्तवन करतेभये ३ महा समुद्रों से वेष्टित चौकूटी ऐसी पृथ्वीको कर और पृथ्वी के मध्यभागमें ४ चारसौकोश विस्तारवाले और चारहजारकोश ऊंचे अतिसुंदर और सूर्य्य की कान्ति के समान ५ शृङ्गों से शोभित आत्मतेज और गुणों से संयुक्त नानाप्रकारके सुवर्णमय स्फटिकोंवाले ६ और निरंतर पुष्पफलों से युक्त ऐसे वृक्षोंकरके शोभित ऐसे मेरुपर्व्वतको करतेभये और पूर्वदिशामें जाके ७ चारसौ कोश विस्तारवाले और अठसैकोश ऊंचे ऐसे उदयपर्व्वतको करतेभये ८ और नानाप्रकारके हजारों वृक्षोंकरके संयुक्त व बहुत प्राणोंवाली वेदिकाओं से संयुक्त

सध्यासमय के बद्दलों के समान कांतिवाले ६ नानाप्रकारकी मणियों से सयुक्त और वृक्षोंके वनसे संयुक्त चारसेकोश ऊंचे १० और हजारहों शृंगोंवाले ऐसे सौमनस पर्वतको वह विश्वकर्मा प्रजापति अपनास्थान करतेभये ११ और तुषारके समूहके समान कांतिवाले दुर्गमनों से सयुक्त और कदरके अंतरों से मंडित १२ ऐसे शैशिर पर्वतको करतेभये शैशिरसे उत्पन्नहुई पक्षियोंके गणोंसे आकुल १३ और पुलिन से सयुक्त ऐसी वसुधाराको करतेभये यह नदी अमृतके समान सैकडों मुखों से सयुक्तहुई शोभित होनेलगी १४ नित्य पुष्प फलों से सयुक्त आच्छादित करनेवाले और तीरपै उपजनेवाले ऐसे वृक्षों करके अधिक भूषितहुई नदी शोभित होनेलगी १५ ऐसे पूर्वदिशाका विभागकरके पीछे दक्षिणदिशामें यज्ञभगवान् आधाचादीका और आधासोनेका ऐसे रम्य पर्वतको करतेभये १६ तब एकओरसे सुईकेसमान कांतिवाला और एकओरसे चद्रमाकेसमान कांतिवाला ऐसे दोवर्णोंको धारणकरनेवाला पर्वत १७ अतिशोभित होनेलगा चद्रमा और सूर्य के तेजकरके एक कालमें व्याप्त और उत्तम शरीरवाले ऐसे भानुमत पर्वतको करतेभये १८ दिव्य और मनोहर सब कामके फलवाले वृक्षोंकरके परिवृत हाथी के समान आकृतिवाले ऐसे कुंजरपर्वत को करतेभये १९ और चारों ओरसे सुवर्ण की गुफावाले बहुतसे योजनों से विस्तृत और बैलके समान प्रतिमावाले ऐसे ऋषभ पर्वत को करतेभये २० और पीले चदनके वृक्षों से युक्त पुष्पसहाम पर्वतको करतेभये और चारसैकोश ऊंचे २१ अनेकप्रकारके भृङ्गों से संयुक्त और पुष्पित वृक्षों से व्याप्त ऐसे महेंद्रपर्वत को करतेभये २२ और नानाप्रकारके रत्नोंसे आकीर्ण सूर्य और चद्रमाके समान कांतिवाले और चित्रपुष्पोंवाले वृक्षों से सयुक्त ऐसे मलय पर्वतको करतेभये २३ और शिलाजालसे आकुल और निरुआरवाले ऐसे मैनाक पर्वतको करतेभये २४ और हजार शिखरोंवाले और नानाप्रकारके वृक्ष और लतासे आवृत ऐसे विंध्यपर्वत को करतेभये २५ और विपुलरूप आवर्तवाली पुलिनरूप श्रोणिसे भूषित दूधके समान जलवाली रमणीक और विचित्र २६ दिव्यरूप सैकडों तीर्थोंसे सयुक्त और दक्षिण दिशाको जलसे पवित्रकरनेवाली ऐसी पयोधारा नदीको करतेभये २७ ऐसे दक्षिण दिशाको भी स्थापित कर पीछे पश्चिमदिशामें यज्ञ भगवान् जाके चारसै कोशऊंचे २८ चित्ररूप शिखरोंसे शोभित सुवर्णरूप शिला और गुफाओंसे

शुचिन २६ सूर्यके समान प्रकाशित शाल और तालवृक्षों से आकुल ऐसे पर्व्वत में साठहजार पर्व्वतों को प्रवेशित करतेभये ३० और हजारहों जलधाराओं से संयुक्त मेरुपर्व्वतके समान कान्तिवाले ३१ पवित्ररूप तीर्थ के गुणोंसे युक्त साठ योजन विस्तारवाले और साठ योजन ऊंचे ३२ ऐसे आत्माके रूपके समान वाराह पर्व्वतको करतेभये और तहां वैडूर्य्य पर्व्वतको करतेभये ३३ व चक्रके सदृश चक्रवान् पर्व्वतको करतेभये ३४ और सहस्रकूट पर्व्वतको करतेभये और शङ्ख के समान रूपवाले और नादोंसे संयुक्त ३५ सफेद वृक्षोंसे आकीर्ण ऐसे शङ्खपर्व्वत को स्थापित करतेभये सुवर्ण व रत्नोंसे संयुक्त और पारिजात महावृक्षों से संयुक्त ऐसे ३६ पुष्पहास पर्व्वतको स्थापित करतेभये और अतिरसवाली पवित्र और घृतवाग नामसे विख्यात ३७ ऐसी नदीको करतेभये ऐसे पश्चिमदिशामें सृष्टि को कर उत्तरदिशामें यज्ञ भगवान् जाके कांचनके समान प्रकाशित ३८ गुणोत्तर पर्व्वतको करतेभये पीछे आकाशके प्रमाणसे और सोमरूप धातुओंसे प्रतिच्छन्न सूर्य्यके समान कान्तिवाले ऐसे ३९ सौम्यपर्व्वतको करतेभये जिसके तेजसे सूर्यके विना भी देश प्रकाशित रहताहै ४० व जैसे तपतेहुये सूर्यकी शोभा होती है तिससेभी अधिक शोभाहोती है और सूक्ष्म रूप करके सूर्य्य तपतेहुये की तरह मालूम होते हैं ४१ और हजारहों शिखरोंवाले और नानाप्रकार के तीर्थो से संयुक्त और रत्नों से संकीर्ण ऐसे अस्ताचलनाम से विख्यात पर्व्वत को करतेभये ४२ और मनोहर गुणोंसे संयुक्त मंदर पर्व्वतको करतेभये और पुष्पोंकी गंधोंसे संयुक्तरूप गंधमादन पर्व्वतको करतेभये ४३ और जिसके शृंगों में सुवर्णके रससे उत्पन्न और अत्यन्त अद्भुतरूप दर्शनवाली ऐसी जम्बूको रचतेभये ४४ और त्रिशिखर पर्व्वतको रचतेभये और पुष्कर पर्व्वतको करतेभये श्वेत और पांडुर मेघके समान कान्तिवाले व पर्व्वतोंमें उत्तम ऐसे कैलाश पर्व्वतको स्थापित करतेभये ४५ और दिव्यधातुओंसे विभूषित ऐसे हिमवान् पर्व्वतको वाराह शरीरको प्राप्तहुये हरि स्थापित करतेभये ४६ और सब गुणोंसे संयुक्त दिव्य और सैकड़ों सर्पोंसे आकुल ऐसी महाधाराको करतेभये ४७ ऐसे पर्व्वतवाले और इक्षाकुवंश चितरनेवाले सात पर्व्वत यज्ञ वाराहनेकिये हैं ४८ ऐसे पृथ्वीका विभागकरके देवता और दैत्योंकी उत्पत्तिके अर्थ बुद्धिको करतेभये ४९ ऐसे सब दिशाओंमें नाना प्रकारके पर्व्वतों और जलसे युक्त नदियोंको लोकके हितके करतेभये ५० ॥

इतिश्रीहरिवंशभाषाटीकायां हरिवंशपर्व्वणि वाराहप्रादुर्भावे पर्व्वतादिनिर्माणं नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥

दोसौछव्वीसका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि जगत्को रचनेवाले विष्णु चिंतवन करनेलगे तब तिनके मुखसे एकपुरुष निकला १ तब वह विष्णुसे कहनेलगा कि मैं क्याकरूं तबविष्णु कहनेलगे २ कि आत्माका विभागकर ऐसे कहके ईश्वर अंतर्हित हो गये तब तिस देवकी कही वाणीको चिंतवन करताहुआ अकेला ३ आपही प्रजा-पतिरूपकरके स्थितरहा ४ और जो वेदोंमे स्तुतिक्रिया हिरण्यगर्भ भगवान्है वह पहले एक प्रजापतिरूपरहा तब तिसकी प्रभृतिसे यज्ञभाग होताभया ५ तब प्रजा-पति कहनेलगा तिस महात्माने मुझे आत्माके विभागके अर्थवचनकहा सो कैसे आत्माका विभाग करना योग्यहै यहा मुझे अतिसशयहै ६ ऐसे चिंतवन करते हुये ब्रह्माके ॐ ऐसा स्वर पृथ्वी आकाश व स्वर्ग में शब्द करतागया ७ पीछे तिस ॐकारका अभ्यास करनेवाले ब्रह्माके हृदयसे वषट्कार सम्यक् प्रकार से उठा ८ फिर भूर्भुवः स्वः ये तीन व्याहृती उत्पन्नहुईं पीछे वेदों में श्रेष्ठदेवी और चौबीस अक्षरोंवाली ऐसी गायत्रीको ईश्वर करतेभये फिर ऋक् साम अथर्व यजु इन चार वेदोंको करतेभये ९। १० पीछे तिसके मनमें सन सनक सनातन स-नन्दन सनत्कुमार ११ रुद्र ये छः महर्षि मनसे उत्पन्न होतेभये और ब्रह्म और कपिलभी होतेभये १२ इसप्रकार उन ब्रह्मयोगियों को रचतेभये कि जिन्हों की यतिजन योगतन्त्रों में स्तुतिकरते हैं १३ पीछे मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु अंगिरा मनु प्रजापति १४ सब भूतों और देवता दैत्य राक्षस इन्होंके पितर और आठ महर्षि इन्हों को रुद्र रचतेभये १५ ऐसे युगसहस्र के अन्तमें जो प्रजा रची जाती है फिर कल्पके अन्तमें प्रलय होजाता है १६ और पश्चात् हजारवर्षों के पीछे इन्हीं देवताओंकी और प्रजाके कारणरूप योगियोंकी उत्पत्तिहोती है १७ और किन्तु धर्मविशेष करके तो देवताओंकी उत्पत्ति युगयुग में होती है और युगके विपर्य्यय अर्थात् प्रलयके अन्तमें नामविशेष होते हैं १८ तिसी ईश्वर के दाहिने अँगूठेसे दक्ष उत्पन्नहुआ और बायें अँगूठे से दक्षकी भार्या उत्पन्नहुई १९ फिर दक्षप्रजापतिसे भार्यामें बहुतसी कन्या उत्पन्नहुईं जिन्होंकी सन्तानों से ये लोक व्याप्तहुये हैं २० और अदिति दिति दनु माया मुनि पमा अनायुषा ? ? निनता सुरभी २१ इन ? ? ? ? ? ? ? ? ?

भूपित २६ सूर्यके समान प्रकाशित शाल और तालवृक्षों से आकुल ऐसे पर्वत में साठहजार पर्व्वतों को प्रवेशित करतेभये ३० और हजारहों जलधाराओं से संयुक्त मेरुपर्वतके समान कान्तिवाले ३१ पवित्ररूप तीर्थ के गुणोंसे युक्त साठ योजन विस्तारवाले और साठ योजन ऊंचे ३२ ऐसे आत्माके रूपके समान ना राह पर्वतको करतेभये और तहा वैडूर्य्य पर्वतको करतेभये ३३ व चक्रके सदृश चक्रवान् पर्वतको करतेभये ३४ और सहस्रकूट पर्वतको करतेभये और शङ्ख के समान रूपवाले और चादीसे संयुक्त ३५ सफेद वृक्षोंसे आकीर्ण ऐसे शङ्खपर्वत को स्थापित करतेभये सुवर्ण व रत्नोंसे संयुक्त और पारिजात महावृक्षों से संयुक्त ऐसे ३६ पुष्पहास पर्व्वतको स्थापित करतेभये और अतिरसवाली पवित्र और घृतधारा नामसे विख्यात ३७ ऐसी नदीको करतेभये ऐसे पश्चिमदिशामें कार्य्य को कर उत्तरदिशामें यज्ञ भगवान् जाके कांचनके समान प्रकाशित ३८ गुणो त्तर पर्वतको करतेभये पीछे आकाशके प्रमाणसे और सोमरूप धातुओंसे प्रति· च्छन्न सूर्य्यके समान कांतिवाले ऐसे ३९ सौम्यपर्वतको करतेभये जिसके तेजसे सूर्यके विना भी देश प्रकाशित रहताहै ४० व जैसे तपतेहुये सूर्यकी शोभा होती है तिससेभी अधिक शोभाहोती है और सूक्ष्म रूप करके सूर्य्य तपतेहुये की त रह मालूम होते हैं ४१ और हजारहों शिखरोंवाले और नानाप्रकार के तीर्थों से संयुक्त और रत्नों से संकीर्ण ऐसे अस्ताचलनाम से विख्यात पर्व्वत को करते भये ४२ और मनोहर गुणोंसे संयुक्त मंदर पर्वतको करतेभये और पुष्पोंकी ग· न्धोंसे संयुक्तरूप गंधमादन पर्वतको करतेभये ४३ और तिसके शृगों में सुवर्णके रससे उत्पन्न और अत्यंत अद्भुतरूप दर्शनवाली ऐसी जंबूको रचतेभये ४४ और त्रिशिखर पर्वतको रचतेभये और पुष्कर पर्वतको करतेभये श्वेत और पांडुर मेघके समान कांतिवाले व पर्वतोंमें उत्तम ऐसे कैलास पर्वतको स्थापित करते भये ४५ और दिव्यधातुओंसे विभूषित ऐसे हिमवान् पर्वतको वाराह शरीरको प्राप्तहुये हरि स्थापित करतेभये ४६ और सब गुणोंसे संयुक्त दिव्य और सैकड़ों गुणोंसे आकुल ऐसी मधुधाराको करतेभये ४७ ऐसे पारोंवाले और इच्छापूर्वक विचरनेवाले सब पर्वत यज्ञ वराहनेकिये हैं ४८ ऐसे पृथ्वीका विभागकरके देवता और दैत्योंकी उत्पत्तिके अर्थ वुद्धिको करतेभये ४९ ऐसे सब दिशाओंमें नाना प्रकारके पर्वतों और जलसे युक्त नदियोंको लोकके हितके करतेभये ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वमापायांवाराहप्रादुर्भावेपंचविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥

दोसौछब्बीसका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि जगत्को रचनेवाले विष्णु चिंतवन करनेलगे तब तिनके मुखसे एकपुरुष निकला १ तब वह विष्णुसे कहनेलगा कि मैं क्याकरूं तबविष्णु कहनेलगे २ कि आत्माका विभागकर ऐसे कहके ईश्वर अंतर्हित होगये तब तिस देवकी कही वाणीको चिंतवन करताहुआ अकेला ३ आपही प्रजापतिरूपकरके स्थितरहा ४ और जो वेदोंमे स्तुतिकिया हिरण्यगर्भ भगवान्है वह पहले एक प्रजापतिरूपरहा तब तिसकी प्रभृतिमे यज्ञभाग होताभया ५ तब प्रजापति कहनेलगा तिस महात्माने मुझे आत्माके विभागके अर्थवचनकहा सो कैसे आत्माका विभाग करना योग्यहै यहा मुझे अतिसशयहै ६ ऐसे चिंतवन करते हुये ब्रह्माके ॐ ऐसा स्वर पृथ्वी आकाश व स्वर्ग में शब्द करतागया ७ पीछे तिस ॐकारका अभ्यास करनेवाले ब्रह्माके हृदयसे वषट्कार सम्यक् प्रकारसे उठा ८ फिर भूर्भुवः स्व ये तीन व्याहृती उत्पन्नहुईं पीछे वेदों में श्रेष्ठदेवी और चौबीस अक्षरोंवाली ऐसी गायत्रीको ईश्वर करतेभये फिर ऋक् साम अथर्व यजु इन चार वेदोंको करतेभये ९। १० पीछे तिसके मनमें सन सनक सनातन सनन्दन सनत्कुमार ११ रुद्र ये छः महर्षि मनसे उत्पन्न होतेभये और ब्रह्म और कपिलभी होतेभये १२ इसप्रकार उन ब्रह्मयोगियों को रचतेभये कि जिन्हों की यतिजन योगतन्त्रों में स्तुतिकरते हैं १३ पीछे मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु अंगिरा मनु प्रजापति १४ सब भूतों और देवता दैत्य राक्षस इन्होंके पितर और आठ महर्षि इन्हों को रुद्र रचतेभये १५ ऐसे युगसहस्र के अन्तमें जो प्रजा रची जाती है फिर कल्पके अन्तमें प्रलय होजाता है १६ और पश्चात् हजारसर्पों के पीछे इन्हीं देवताओंकी और प्रजाके कारणरूप योगियोंकी उत्पत्तिहोती है १७ और किन्तु कर्म्मविशेष करके तो देवताओंकी उत्पत्ति युगयुग में होती है और युगके विपर्य्यय अर्थात् प्रलयके अन्तमें नामविशेष होते हैं १८ फिर ईश्वर के दाहिने अँगूठेसे दक्ष उत्पन्नहुआ और बायें अँगूठे से दक्षकी भार्य्या उत्पन्नहुई १९ फिर दक्षप्रजापतिसे भार्य्यामें बहुतसी कन्या उत्पन्नहुईं जिन्होंकी सन्तानों से ये लोक व्याप्तहुये हैं २० और अदिति दिति दनु काष्ठा मुनि क्रमा अनायुषा व इष्टविनता सुरभी २१ इरा क्रोधवशा सुरसा ये तेरहकन्या दक्षप्रजापतिने कन्याके

वास्ते दी २२ और गतिके जाननेवाले अन्तरात्मा भगवान् मनकरके प्रजाका चिंतवनकर अरुंधती वसु यामी लम्बा भानु मरुत्वति २३ सकल्पा सुहूर्त्ता साध्या विश्वा इन दश कन्याओंको दक्ष ब्रह्माके पुत्र मनुके अर्थ देतेभये २४ पीछे कमलके समान नेत्रोंवाली पूर्णचन्द्रके समान मुखवाली दिव्य और गंधवाली मनोरम २५ ऐसी और कीर्त्ति लक्ष्मी धृति तुष्टि बुद्धि मेधा क्रिया मति पुष्टि लज्जा इन दशनामोंवाली कन्याओंको दक्ष धर्मके अर्थ देतेभये २६ और रोहिणी आदि सत्ताईस नामोंवाली कन्याओंको दक्ष अत्रिके पुत्र चन्द्रमाके अर्थ देतेभये २७ सो कश्यपके सकाशसे अदितिमें सूर्य्य वरुण मित्र पूषा धाता इन्द्र त्वष्टा भग अंश अर्य्यमा पर्जन्य इन आदि नामोंवाले देवता उत्पन्नहुये २८ व कश्यपजी से दितिमें अतिपराक्रमवाले कश्यपके समान उपमावाले ऐसे हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष ये दो पुत्रहुये २९ और हिरण्यकशिपु के प्रह्लाद संह्लाद अनुह्लाद ह्लाद अनुह्लाद इन नामोंवाले पांचपुत्रहुये ३० और प्रह्लाद के विरोचन जंभ कुजंभ ऐसे नामोंवाले तीन पुत्रहुये ३१ और विरोचनके बलिपुत्रहुआ और बलिके अकेला बाण नाम पुत्रहुआ ३२ और बाणके इन्द्रदमन पुत्रहुआ और दनुके महाबलवाले बहुतसे पुत्रहुये ३३ तिन्हों में प्रथम राजा विप्रचित्ति हुआ और गणनामक क्रोधाके लिये अनेकपुत्र पौत्रों को उपजाताभया ३४ और क्रोधाके क्रोधके वशीभूत और क्रूरकर्मवाले ऐसे रौद्रगण उत्पन्न हुये ३५ और सिंहिकाके चन्द्रमा सूर्य्यको मर्दन करनेवाला राहुग्रह उत्पन्नहुआ और कालाके कालेयगण उत्पन्न हुये ३६ और कद्रूके शेषनाग वासुकी तक्षक इन आदि नामोंवाले बहुतसे सर्प उत्पन्नहुये ३७ और धर्मात्मा और वेदको जाननेवाले और सबकालमें प्राणियोंके हितमें रत ३८ और वरको देनेवाले और कामदेव रूपवाले और तार्क्ष्य आरिष्टनेमि गरुड ३९ अरुण आरुणी ऐसे नामोंवाले विनताके पुत्रहुये और ये सब नानाप्रकारकी ४० और अलम्बुषा मिश्रकेशी पुण्डरीका तिलोत्तमा ४१।४२ सुरूपा लक्ष्मणा क्षेमा रंभा मनोरमा असिता सुबाहू सुव्रता सुमुखी ४३ सुप्रिया सुगंधा सुरसा प्रमाथिनी काम्या शारद्वती विश्वावसु और भरण्य गंधर्व ४४ इन नामोंवाली अप्सरा और गन्धर्व प्राधाके उत्पन्नहुये और मेनका सहजन्या परिणिनी पुंजिकस्थला ४५ घृतस्थला घृताची विश्वाची उर्वशी अनुम्लोचा प्रम्लोचा मनोवती ४६ इन नामोंवाली अप्सरा

प्रजापतिके सङ्कल्पसे उत्पन्न हुई हैं और जगत्में प्रियरूपशाली हैं ४७ व अमृत ब्राह्मण गाय और रुद्र ये सुरभी में उत्पन्नहुये हैं ४८ ऐसे कश्यपजीकी सतान हुई अब सक्षेपसे मनुकेवंशको जान ४९ विश्वाके विश्वेदेवा और साध्याकेसाध्य और मरुत्वती के मरुद्गण और वसुके सब वसु ५० और भानुके सब भानु और मुहूर्त्ता के मुहूर्त्त और लम्बाके घोस और जामीके नागवीथी ५१ और अरुन्धती के पृथ्वी विषयक सब पदार्थ और संकल्पा के सङ्कल्प ऐसे सन्तान उत्पन्न होते भये ५२ और धर्मके सकाशसे लक्ष्मी में जगत्को प्रिय ऐसा कामदेव पुत्रहुआ और कामदेव के सकाश से रति भार्या में हर्ष और यश इननामोंवाले दो पुत्र उत्पन्नहुये ५३ और चन्द्रमा के सकाश से रोहिणी में महाप्रभावाला वर्चा पुत्र हुआ जिसकरके उदय हुआ चन्द्रमा अति तेजवाला प्रतीतहोता है ५४ ऐसे स्त्रियोंके हजारहों पुत्र उत्पन्न हुये हैं और इतनाही जगत्का मूलहै जहां ये लोक प्रतिष्ठित होरहे हैं ५५ पीछे प्रजापति भगवान् गुण से मनुष्यों को देखके राज्य स्थानपै युक्त करतेभये ५६ और दशदिशा पृथ्वी ऋषि समुद्र वृक्ष ओषधी सर्प नदी देवता दैत्य लोकको रचनेवाले प्रजापति आकाश पाताल क्रिया यज्ञपर्वत इन्होंको भगवान् करते भये ५७ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांवाराहेजगत्सर्गोपदर्शनंनामषड्विंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥

दोसौसत्ताइसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् सूर्य्यकेसमान तेजवाले इन्द्रको ब्रह्माजी तीनोंलोक और देवताओं का राजा करते भये १ और वह वज्र और कवचको धारण करनेवाले और जयरूप इन्द्र अदिति के ऐसे पैदाहोतेभये कि जैसे अध्वर्युमन्त्रक ब्राह्मणों से स्तुति कियेहुये थे २ और वेदकीमहिमा करने वाले भगवान् यज्ञमें उत्पन्नहोते हैं और वह इन्द्र अदितिसे उत्पन्नहोनेवाली क्रिया- ओं को धारणकर उसीसमय से देवताओं के ईश और कौशिक संज्ञा इस अधि- कार को प्राप्तहोतेभये ३ और इन्द्रको गद्दी पै बैठा और अभिषेचन कर्मकर फिर ब्रह्माजी क्रमसे राज्यका अधिकार वर्णन करतेभये ४ यज्ञ तथा तप नक्षत्र ग्रह ब्राह्मण और ओषधि इन सबोंका राजा चन्द्रमा को करतेभये ५ और प्रजाके स्वामी दक्ष और जलोंकेस्वामी वरुण और पितरोंकेस्वामी अग्नि ६ संपूर्ण गण

शरीररहित भूत शब्द आकाश और बल इन्होंके स्वामी वायु ७ और सम्पूर्ण भूतपिशाच और मातृगण गौ उत्पातग्रह रोग व्याधि ८ और सपूर्णप्रेत इन्होंके स्वामी महादेव और यक्ष रक्ष गुह्यक धन ६ और सम्पूर्ण रत्न इन्होंकेस्वामी कुबेर और सम्पूर्ण डसनेवालों के स्वामी शेष और नागोंकेस्वामी वासुकि १० और सम्पूर्ण सरीसृपसञ्ज्ञक नागोंकेस्वामी तक्षक और समुद्र नदी मेघ और वर्षा इन्हों के स्वामी पर्ज्जन्य और गन्धर्वोंकेस्वामी चित्ररथ११।१२ और सम्पूर्ण अप्सराओं के स्वामी कामदेव और सम्पूर्ण चौपाये सम्पूर्ण वाहन १३ इन्होंकेस्वामी महेश्वरध्वजनाम गोवृष और दैत्योंकेस्वामी बडे तेजवाले हिरण्याक्ष १४ और यौवराज्यकेस्वामी हिरण्यकशिपु और दानव और सम्पूर्ण असुर १५ इन्होंकेस्वामी विप्रचित्ति और कालकेयसञ्ज्ञक गणोंकेस्वामी महाकाल १६ और अनायुषा के पुत्रोंकेस्वामी वृत्रासुर व अशुभों के करनेवाले सम्पूर्ण उत्पातोंकेस्वामी सिंहिका के पुत्र राहु १७ ऋतु मास युग पक्ष रात्रि दिन पर्व तिथि कला काष्ठा मुहूर्त्तगति अयन १८ योग और गणित इन्होंकेस्वामी संवत्सर पक्षि व चक्षु इन्होंके स्वामी महानल १९ और भोगियों के स्वामी गरुड योग व साध्य इन्होंके स्वामी जवाके पुष्पकेसम कांतिवाले अरुण २० और पूर्व्वदिशाके स्वामी कश्यप प्रजापतिके पुत्र विरथ व सूर्यके पुत्र व बडे यशवाले ऐसे धर्मराजको दक्षिणदिशाके स्वामी करतेभये २१ व तिसका सत्कार इन्द्रभी करते हैं व कश्यपके औरसपुत्र २२ पहिले जलमें प्राप्तहुये व अम्बुराजनामवाले तिसको पश्चिमदिशाका स्वामी करतेभये व कान्तिमान् इन्द्रके तुल्य पराक्रमवाले राक्षस व पिंगलनामवाले ऐसे पुलस्त्य ऋषिके पुत्रको उत्तर दिशाका स्वामी करतेभये २३ और सम्पूर्ण लोकोंको रचनेवाले ब्रह्मा ऐसे राज्योंका विभागकर स्वर्गके लोकोंको पृथक् पृथक् देतेभये २४ और किसी को विजली के समान प्रकाश करतेहुये लोकको देतेभये २५ और किसी को नानावर्णवाले इच्छापूर्व्वक भोगों को देनेवाले और सैकडों योजन विस्तारवाले ऐसे चन्द्रमाके तुल्य कान्तिवाले लोकों को देतेभये २६ और उन लोकोंमें महात्मा और सुन्दर कर्म्मोंके करनेवाले पुरुष प्राप्तहोते हैं २७ और पापियोंको दुर्लभहै वे लोक कैसेहैं कि ग्रह और तारागणों के तुल्य प्रकाशहोते हैं २८ महात्मा तथा पुण्यके करनेवाले और नानाप्रकार की यज्ञोंसे परमेश्वर के पूजन करनेवाले ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनेवाले २९ अपनी स्त्रियोंमें रमणकरने-

वाले सरलस्वभावोंवाले सत्यके वक्ता दीनपुरुषों पै दयाकरनेवाले और ब्राह्मणों की भक्तिवाले ३० लोभ और रजोगुणसे रहित और तपके करनेवाले ऐसे सत लोग उन लोकोंमें प्राप्तहोतेहैं ३१ और ब्रह्मा अपने पुत्रोंको तिस २ अधिकार में प्राप्तकरके कमलरूपी अपने स्थानमें प्राप्तहोतेभये ३२ और इन्द्रसे पालन किये हुये देवता ब्रह्माके दियेहुये अपनेअपने लोकोंमें रमणकरतेभये ३३ ऐसे ब्रह्माने इन्द्रसे आदिले सम्पूर्ण देवता जगत्की पालना करनेमें तत्पर किये और ब्रह्मा जीका सुन्दरयश भी स्वर्गमें प्राप्तहोताभया और यज्ञोंके भागको भोजन करने- वाले देवता आनन्दको प्राप्तहोतेभये ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांसप्तविंशाधिकद्विशततोऽध्यायः २२७ ॥

दोसौअट्ठाइसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् एकसमय पर्वत वाणी को त्याग के परमेश्वरकी मायाके बलसे अपने पाखोंको फैलाके उड़तेभये १ और पश्चिम दिशामें असुरोंके स्थानमें प्राप्तहोके एक तालावमें हाथियोंकी नाईं स्नान करते भये २ और वे पर्वत असुरोंके प्रति स्वर्गके ऐश्वर्यको वर्णन करतेभये वे असुर ऐसे सुन स्वर्गके ऐश्वर्य के हरनेका उद्योग करनेलगे ३ और बड़े पराक्रमोंवाले और क्रूर और पृथ्वी के हरनेमें रतहुये ऐसे भयङ्कर दैत्य आयुधों को ग्रहण क- रतेभये ४ और चक्र तथा तलवार अशनी और भुशुण्डी धनुष और प्रास पाश और शक्ती मुशल और गदा ५ ऐसे दिव्य हथियार और कवचोंको धारण क- रतेभये और कोई असुर मतवाले हाथियों पै कोई रथों पै कोई घोड़ों पै ६ कोई ऊंटों पै कोई बैलों पै कोई भैंसों पै कोई गधों पै ७ और बहुतसे असुर अपनी भुजाओंके बलरूपी सवारियों पै ऐसे अपनी अपनी सवारियों पै स्थितहोके व हिरण्याक्ष को प्राप्तहो ८ युद्धकी इच्छा करतेहुये जहां तहां विचरनेलगे और दे- वताभी सम्पूर्ण इन्द्रके स्थानमें प्राप्तहुये और दैत्योंके उद्योगको देख अपने परम उद्योगको करतेभये ९ और अपनी चतुरङ्गिणी सेनामें सावधानहुये धनुष और अंगुलीत्राण शस्त्र व बाणोंसे भरेहुये तर्कश १० व उग्रहथियार इन्द्रोंको धारणकर अपनी अपनी सेनामें प्राप्तहो व ऐरावत हस्ती पै स्थितहुये इन्द्रके पीछे पीछेस्थित होतेगये ११ और तूर्य तथा भेरी इन्द्रोंको बजाताहुआ हिरण्याक्ष इन्द्रके सामने दो-

इताभया १२ और पैनाफरसा निस्त्रिंश गदा तोमर शक्ति मुशल और भिंदिपाल इन हथियारोंसे इन्द्रको आच्छादन करताभया १३ और वलसे फिंकेहुये वडेघोर रूप व प्रकाश करतेहुये व वडेवेगवाले ऐसे बाणोंकी वर्षा इन्द्रपै होनेलगी १४ व फरसा परिघ खड्ग क्षेपणीय मुद्गर १५ गड शैल घातिनी शतघ्नी यंत्र और त्रिशूल ऐसे २ हथियारों से वे दैत्य १६ संपूर्ण देवता और इन्द्रको हनन करतेभये और नानाप्रकार के हथियारों को धारण करताहुआ १७ और सायकाल के वद्दलकेसम लालकांतिको धारण करताहुआ और उत्तम किरीट को धारण करताहुआ १८ और नीले और पीतवस्त्रों को धारण करताहुआ और सफेद २ उपरले दाँतोंको मुखसे वाहर काढताहुआ १९ और गोडोंपर्यंत भुजाओंवाला ऐसा धूम्रकेश और हरिश्मश्रु और प्रकाशमान वैडूर्य्ययुक्त आभूषणोंको धारण करताहुआ २० और ऊपर के हथियारों को उठाताहुआ ऐसा हर्य्यक्षदैत्य और दैत्योंके भयको दूर करनेवाला और युगांत अग्निकेसम कांतिवाला और मृत्यु के तुल्य ऐसा हिरण्याक्षदैत्य भी ऐसे दैत्यों को देखके इन्द्र और सम्पूर्ण देवता भयसे कॉपतेभये २१ और पर्वतके समान शरीरको धारण करताहुआ हिरण्याक्ष और जम्भदैत्य इन दोनोंको देख देवता अपने अपने धनुषों को धारण करते भये २२ और देवता इन्द्रको अगाडी करके रणमें स्थित होतेभये और सोनाके कवचों को धारण कर दैत्योंकी सेनाभी शोभाको प्राप्त होतीभई २३ और शरद ऋतुकी चांदनी के सम प्रकाशमान होती सेना परस्परमें हथियारों को चलाती हुई अपने अपने मोरचे पै स्थित होतीभई, २४ और योद्धा परस्पर में द्वंद्वयुद्ध करतेहुये भुजाओंको छेदन करतेभये और परस्पर में गदा और वाणों से अंग भग्न हुआ पृथ्वी पै गिरताभया २५ और कोई पृथ्वी पै घूमताभया कोई रथको तोडताभया कोई किसी को मर्दन करताभया २६ कोई संकटको प्राप्त होताभया और रथ चलने को समर्थ नहीं होताभया और दानवों की सेना मेघरूपहै और देवताओं के शस्त्र विजली के तुल्य हैं २७ और परस्परमें वाणोंकी वर्षा से युद्ध रूपी दुर्दिन तिस समय भान होताभया और दितिका पुत्र हिरण्याक्ष महावली क्रोधको प्राप्तहो २८ ऐसे वृद्धिको प्राप्त होताभया कि जैसे महापार्वणी में समुद्र वृद्धिको प्राप्त होताहै २९ और क्रुद्धहुये हिरण्याक्षके मुखमें से अग्निके कणका व अग्निसे मिलाहुआ धूमा निकलताभया ३० और तिसके समीपसे भयानक

नक पवन चलताभया और नानाप्रकार के अस्त्रों के जाल धनुष और परिघ इन्होंकी वर्षासे आकाश ऐसे आच्छादन होताभया ३१ जैसे उछलतेहुए पर्वतों से आकाश छादन होताहै और बहुतसे देवता हिरण्यकशिपु के हथियारों से अगभगहुये युद्धसे चलनेको समर्थ नहीं होतेभये ३२ और यत्नवाले भी देवता यत्नकरनेको समर्थ नहीं होतेभये और हिरण्याक्षसे रणमें रोकेहुयेइन्द्र चलनेको समर्थ न होतेभये ३३ व सम्पूर्ण देवताओं को जीत इन्द्रको रोक सम्पूर्ण जगत्को अपने आत्मा में मानताभया ३४ और सजल मेघके तुल्य शब्द को करतेहुये मतवाले हस्तीको भेदन करतेहुये सिंहकेतुल्य पराक्रम को करतेहुये और धनुषको टङ्कोरतेहुये ऐसे स्थितहुये हिरण्याक्षको देवता देखतेभये ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामष्टाविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२८॥

दोसौउनतीसका अध्याय॥

वैशम्पायन जी वर्णनकरते हैं कि हे राजन् चक्र और गदा को धारणकरने वाले भगवान् हारेहुये इन्द्र और देवताओं को देख हिरण्याक्ष के मृत्युकाउपाय करतेभये १ और पहिले पर्वतनाम वाराह वर्णनकियाहै सो वह असुरोंका नाश करनेवाला भगवान्रूप होके आवताभया २ और वह भगवान् चन्द्रमासरीखी कांतिवाला शंख और एकहजार आराओंवाले चक्रको ३ ग्रहणकरताभया और महादेव महाबुद्धि महायोगी महेश्वर और अव्यय ऐसे नामोंवाले भगवान् को देवता गुह्यनामों से पढते हैं ४ और भगवान् को सत्पुरुष सदा सेवन करते हैं और पूजते हैं व पुराणों से गाते हैं और वह भगवान् सुरेन्द्रोंमें वैकुण्ठरूप है और भोगियों में अनंतरूपहै और योगियों में विष्णुरूपहै और यज्ञके कर्मकर्त्ताओं में यज्ञरूप है ५ ऐसे भगवान् की कृपा से सपूर्ण देवता पृथ्वी में स्थितहुये यज्ञोंमें तीनप्रकार से होमेहुये घृतको भोजन करते हैं ६ और वे भगवान् दैत्यों के नाशरूप अग्नि हैं और देवताओं के गतिरूपहैं और पवित्रोंमें पवित्ररूपहैं और स्वयंभुवों में ब्रह्मारूपहैं ७ ऐसे भगवान् के चक्रमें स्थितहुये दैत्यों के कुल युग युगके प्रति नाशको प्राप्तहोते हैं ८ और वे भगवान् अपने मनमें दैत्यों के जीवन में संदेह को उपजातेहुये तिससमय अपने पुराने शंखको बजानेभये ९ और भयानक शंख के शब्द को सुन के संपूर्ण दैत्य दशोंदिशाओं में देखने

लगे१० और वह महान् असुर हिरण्याक्ष लाललाल नेत्रोंको धारण करताहुआ और यह शंखको बजानेवाला कौन है ११ ऐसे कहताभया और अपने सामने स्थित वाराह और पुरुष शरीर को धारण करतेहुये और शंख चक्र गदा इन्हीं को धारण करतेहुये १२।१३ ऐसे भगवान्को देखताभया और वे भगवान् ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे सूर्य चद्रमा के बीचमें नीलामेघ शोभाको प्राप्त होताहै १४ और संपूर्ण असुर हिरण्याक्षके पास इकट्ठेहो आयुध और निस्त्रिंश ऐसे हथियारोंको उठा भगवान् के सामने दौडतेभये १५ और अति बलवान् दैत्यों से पीड़ित कंपेहुये भी भगवान् अपने रणको छोडके नहीं चलतेभये १६ और बलवान् हिरण्याक्ष दैत्य अपनी प्रकाशकरतीहुई शक्तिको उठाके भगवान् की छाती में मारताभया १७ और शक्तिके प्रहारको देख ब्रह्माको बडा आश्चर्य पैदाहुआ तब भगवान् समीप आतीहुई शक्ति को देख १८ अपने हुंकारशब्द से पृथ्वी में गेरते भये और पृथ्वी में गिरीहुई शक्ति को देख ब्रह्माजी वाह वाह कहनेलगे १९ और क्रोध में प्राप्तहुये भगवान् सूर्य की कांति के सम तेजवाले चक्रको ले २० उत्तमकर्म से हिरण्याक्ष की नाडमें मारतेभये और उसीसमय हिरण्याक्षका शिर टूट पृथ्वीपै ऐसे पडताभया २१ जैसे वज्रसे टूटाहुआ पर्वतका शिखर पड़ताहै फिर मरेहुये हिरण्याक्षको देखके संपूर्ण दैत्य २२ दशोंदिशाओं में दौडतेभये २३ और जैसे प्रलयकाल में खड्गपाणि भगवान् शोभाको प्राप्त होतेहैं वैसेही युद्धमें चक्रपाणि भगवान् शोभाको प्राप्त होतेभये २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामूनत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२९॥

दोसौतीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् भगवान् संपूर्ण दैत्यों को रणमेंसे भगाके इन्द्रसहित बँधेहुये संपूर्ण देवताओं को छुड़ातेभये १ और वे संपूर्ण देवता स्वस्थचित्तहो इन्द्रको अगाडी कर परमेश्वर से बोले २ कि हे भगवन् आप की कृपा और भुजाओंके बलसे अब कालके मुखमेंसे बचे हैं ३ और हे भगवन् हमको आपने आज्ञादीहै अब हम कौन कर्म्मकरें और हम आपके चरणों की शुश्रूषा करनेकी इच्छाकरते हैं ४ वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय पुण्डरीक कमलके समान नेत्रोंवाले भगवान् देवताओं के वचनको सुन उनसे

बोले ५ कि हे देवताओ जिसका जो लोकहै वह मैंनेही पहिले विधान कियाहै सो अपने लोककी यत्नसे पालनाकरो ६ और जहां तहां मेरी आज्ञा की पालना करो ऐश्वर्य और यज्ञोंके भाग को प्राप्तहो यह मैंने पहिले तुम्हारे अर्थ विधान कियाहै ७ फिर इन्द्रसे भगवान् बोले कि हे इन्द्र सत्पुरुष और असत्पुरुषों में तू यथायोग्य न्यायकर ८ और व्रतोंके धारण करनेवाले मुनि तपकरके स्वर्ग को प्राप्तहों और यज्ञोंके करनेवाले पुरुष परमेश्वर का पूजनकर फल को प्राप्तहों ९ श्रेष्ठ धर्म्म और श्रेष्ठ स्वभाववाले पुरुषों का भाव फलो और पापकर्म करनेवाले पुरुषों को अभावका फल प्राप्तहो और सम्पूर्ण आश्रमों में निवास करनेवाले पुरुष स्वर्गमें प्राप्तहों १० सत्य तथा दान और रण इन्होंमें शूरवीरता करनेवाले निंदासे रहित ऐसे पुरुष स्वर्ग के फलको प्राप्तहों ११ श्रद्धासे रहित कामी शठ ब्राह्मणों की भक्तिसे रहित और नास्तिक ऐसे पुरुष नरक को प्राप्तहों १२ और हे देवताओ मेरे कहेहुये इस वाक्यको करो जहा मैं स्थितहों तहां तुमको शत्रु बाधा नहीं करेंगे १३ ऐसे कहके भगवान् अन्तर्द्धान होतेभये और देवताओंको बडा आश्चर्य पैदाहोतामया १४ वाराहजी महाराजके अद्भुतरूपी चरित्रको देख और वाराहजीको नमस्कार कर देवता स्वर्ग में प्राप्तहोतेभये १५ व अपने अपने अधिकारों में प्राप्त होतेभये व इन्द्रभी सम्पूर्ण लोकों के अधिकार में प्राप्त होते भये १६ व दैत्यों से छूटीहुई पृथ्वी अपनी प्रकृतिको प्राप्तहोतीगई फिर पृथ्वीकी स्थिरताके हेतु पर्वतोंको जान पाखोंसे उड़तेहुये १७ पर्वतों को अपने २ स्थानों में स्थापितकर और सौपर्वोंवाले वज्र से पाखोंको छेदन करतेभये १८ और देवताओं से प्रीति करते हुये एक मैनाक पर्व्वत शेष रहताभया १९ ऐसे वाराहजी नारायण का प्रादुर्भाव ब्राह्मणों ने वर्णनकियाहै और पुराणोंमें वाराह कहाहै २० और यह वेदव्यासजी का मत नानाप्रकारकी श्रुतियों करके प्रमाण कियाहुआ है और अशुद्ध पापी और दयारहित तुच्छ नीच गुरुद्वेषी कुशिष्य और कृतघ्नी ऐसे पुरुषोंको यह आख्यान नहीं सुनाना चाहिये २१ व आयु पृथ्वी धन और जय इन्होंकी इच्छा करनेहुये पुरुष को यह देवताओं का जयरूपी आख्यान सुनाना उचितहै २२ व यह पुराण परमेश्वररूपहै पवित्रहै पन्यापका स्थान और सम्पूर्ण प्राणियों के सत्यका उपजानेवालाहै २३ व हे राजन् वाराहजी महाराज का यह प्रकाश मैंने आपके प्रति तुमसे वर्णनकिया २४ और जो पुरुष ममोत्र

देवता और पितरोंकापूजन करते हैं वे पुरुष अपने आत्मासे अपने आत्मा विष्णु को पूजते हैं २५ और लोकायन त्रिदशायन ब्रह्मायन आत्मभवायन नारायण आत्महितायन और महावराह ऐसे भगवान्को हे राजन् तू नमस्कारकर २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिंशदधिकद्विशततोऽध्याय २३० ॥

दोसौइकतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वाराह अवतार मैंने आपके प्रति वर्णन किया अब नारसिंह अवतारको सुनो जहां सिंहरूपहोके भगवान् हिरण्यकशिपु को मारतेभये १ हे राजन् वह हिरण्यकशिपु पहिले सतयुगमें अत्यन्त तपको करताभया २ व एकस्थान और मौन ऐसे दृढ़व्रतको धारणकर ग्यारह हजार और पांचसौवर्ष जलमें वास करताभया ३ तप नियम शम दम और ब्रह्मचर्य्य इन्होंकरके ब्रह्मा तिसपै प्रसन्न होतेभये ४ और आदित्य वसु साध्य मरुत देवता रुद्र विश्वेदेवा यक्ष राक्षस किन्नर ५ दिशा विदिशा नदी सागर नक्षत्र मुहूर्त ग्रह ६ देवता ब्रह्मर्षि सिद्ध सप्तर्षि राजर्षि गन्धर्व अप्सरा ७ इन के सहित और हंस करके संयुक्त सूर्यकीसी कांतिवाले ऐसे विमान में बैठ ब्रह्मा तहां प्राप्त होतेभये और दैत्यसे बोले ८ कि हे हिरण्यकशिपु मैं तेरे पै बहुत प्रसन्नहुआ तू मेरे से इच्छापूर्वक वरमांग तू सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्तहोगा ९ ऐसे भगवान् के वचन को सुन हिरण्यकशिपु हाथ जोड ब्रह्माजी से बोला १० कि हे भगवन् मुझको ऐसावरदो कि देवता असुर गंधर्व यक्ष उरग राक्षस मानुष पिशाच ११ और ऋषियोंके शापसेभी नहींमरूं १२ व शस्त्र अस्त्र गिरि पादप शुष्कवस्तु व गीलीवस्तु इन्होंसेभी मैं नहींमरूं १३ और स्वर्ग पाताल आकाश पृथ्वी भीतर बाहिर रात्रि और दिन इन्होंमेंभी मेरी मृत्यु नहीं होवे १४ और जो एकहाथ से नाशकेहित मेरे मारनेको समर्थहो वह मुझे मारेगा १५ हेभगवन् ऐसा वर मेरेको दो और सूर्य चन्द्रमा वायु अग्नि जल आकाश नक्षत्र दशोंदिशा १६ काम क्रोध वरुण इन्द्र यम कुबेर यक्ष और किंपुरुष १७ ऐसा मेरा रूपहोजावे और हे ब्रह्मन् सम्पूर्ण अस्त्र अपनी २ मूर्ति धारणकर महायुद्धमें मुझको प्राप्तहों १८ ऐसे हिरण्यकशिपुके वचनको सुन ब्रह्मावोले कि हे पुत्र अद्भुतवर सम्पूर्ण तुझको मैंने दिये और सम्पूर्ण कामनाको तू निस्सन्देह प्राप्तहोवेगा १९ वैशम्पायनजी वर्णन

करते हैं हे राजन् ब्रह्माजी ऐसेकहि अपने ब्रह्म स्थानको जातेभये २० और देवता तथा नाग गंधर्व और ऋषि ये सब हिरण्यकशिपुके वरकोसुन पितामहके पास प्राप्तहोतेभये २१ और ब्रह्मासे देवताबोले कि हे भगवन् इसवरको प्राप्तहोके यह असुर हमको पीड़ा देवेगा सो इसके वधका उपायकरो २२ वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वह ब्रह्मा सम्पूर्ण लोकोंका आदिकर्ता २३ स्वयंभू और हव्य कव्योंका रचनेवाला लोकके हितकारी वचनोंको सुन सुन्दर शीतल जलरूपी वचनों से २४ देवताओं को प्रसन्न करताभया और कहनेलगा कि हे देवताओ वह असुर निश्चय तपके फलको प्राप्त होवेगा और तपके अंतमें भगवान् विष्णु उसको मारेंगे २५ ऐसे ब्रह्माके वचनकोसुन सम्पूर्ण देवता अपने २ स्थानों को प्राप्त होतेभये २६ और वह हिरण्यकशिपुदैत्य वरदान से मदोन्मत्त हुआ सम्पूर्ण प्रजाको बाधा देनेलगा २७ और आश्रमों में सम्पूर्ण मुनियों और व्रत सत्य तथा धर्म इन्होंके धारण करनेवाले पुरुषोंको दुःख देनेलगा २८ और वह महासुर त्रिभुवन में स्थितहुआ देवताओं को जीत और त्रिलोकी को वश कर स्वर्ग में वास करताभया २९ और कालप्रभुकी प्रेरणा से मदोन्मत्त हुआ यज्ञों में देवताओंका भागछीन दैत्योंको देताभया ३० फिर तिससमय में आदित्य साध्य विश्वेदेवा वसु रुद्र देवता यक्ष और महर्षि ये सम्पूर्ण इकट्ठे हो ३१ भगवान् के शरणजातेभये और देवमय यज्ञमय ऐसे भगवान् की स्तुति करने लगे ३२ हे नारायण हे महाभाग ये सम्पूर्ण देवता आपके शरण आये हैं सो इन्होंकी रक्षाकरो ३३ और इस दैत्यको नष्टकरो और ब्रह्मादि देवताओं के हमारेदाताहो और परमगुरु और परमदेवहो ३४ ऐसे सुन विष्णु महाराज देवताओंसे बोले कि हे देवताओ अब तुम भयको त्यागो और अभयको प्राप्तहो और थोड़ेही कालमें अपने स्वर्ग में प्राप्त होजावोगे ३५ और मदोन्मत्त सेना सहित दैत्यको में मारूंगा ३६ ऐसे देवताओंसे कह भगवान् हिरण्यकशिपु दैत्यके मारनेका सङ्कल्प करतेभये ३७ और हिमवान् पर्वतके पास आके विचार करनेलगे कि में कौनरूप धारके दैत्यकोमारूं ३८ और कौनमारूंग जल्द मृत्यु की सिद्धि करताहै ऐसे विचार भगवान् नृसिंहरूपको धारणकर ३९ बड़े विस्तार वाला और दिव्यरूपवाला ओंकार शब्दको सहायतामें ले और हिरण्यकशिपु के स्थानमें जाकेप्राप्त होतेभये ४० और सूर्य्यके समान तेजवाले नन्दगाके म-

मान कांतिवाले और आधे मनुष्यके शरीर और आधे सिंहके शरीरको धारण कर ४१ फिर नरसिंह शरीरकरके हाथसे हाथका स्पर्शकर और मनको खुशी करनेवाली और सम्पूर्ण कामनाओंसेयुक्त ४२ ऐसी हिरण्यकशिपुकी सभाको देखतेभये और सौ योजन चौड़ी और पांच योजन ऊंची ४३ और आकाश में विचरनेवाली जरा शोक ग्लानि इन्हों से रहित कल्याणरूप शुभदायक ४४ सुंदर २ आसनोंवाली मनोहर प्रकाश करती हुई तलाओंसे युक्त विश्वकर्मा की रचीहुई ४५ रत्नमय वृक्षोंसे युक्त नील पीत सित श्याम श्वेत लोहित ऐसे वृक्षोंसे युक्त ४६ कपड्वच्च सैकड़ों मंजरियों को धारण करतीहुई बेलों से युक्त ४७ सफेद बद्दलकीसी कांतिवाली प्रकाशमान सुन्दर सुगन्धवाली मनको हरनेवाली ४८ नहीं अत्यन्त शीतल नहीं अत्यन्तगरम क्षुधा प्यास इन्होंसे रहित ४९ नानावर्णोंसे रचीहुई मणिमय स्तंभोंसेयुक्त चंद्रमा सूर्य्य अग्नि इन्होंकोभी प्रकाश करतीहुई ५० संपूर्ण कामनाओंको देनेवाली रसवाले भक्ष्य और भोज्य पदार्थों वाली सुंदर सुगंधवाली मालाओं से युक्त और नित्य पुष्प फलोंवाले वृक्षों से युक्त उष्णसमय में शीतल जलोंवाली शीतकाल में गरमजलोंवाली ५१ और पुष्पयुक्त शाखा और कोमल कोमल पत्रवाले वृक्षों से युक्त बेलोंकी छतवाली व तलाव नदी ५२ नानाप्रकारके वृक्षों से युक्त सुगन्धित पुष्प और रसोंवाले फल सम्पूर्ण तीर्थ इन्होंसे युक्त ५३ नलिन पुण्डरीक सुगंधवाले शतपत्र और रक्त कुवलय नील और कुमुद ५४ ऐसे कमलोंसे युक्त शीतल जलोंवाले तालावों से युक्त और कान्तिवाले धार्त्तराष्ट्र हंस राजहंस कारण्डव ५५ चकवा सारस और कुरर ऐसे पक्षियोंसे युक्त और वृक्षोंपै लिपटीहुई और सुगंधवाले पुष्पोंको धारण करनेवाली ऐसी लताओंसे युक्त ५६ केतकी शोक पुन्नाग तिलक अर्जुन आम्र नीप कदम्ब, नागपुष्प प्रियंगु ५७ शाल्मलि पाटलीवृक्ष जम्बुल सहदि शाल ताल प्रियाल ५८ और चंपक ऐसे और भी पुष्पोंवाले वृक्ष व विद्रुम द्रुम और अग्निकेसे कांतिवाले देवताओं के वृक्ष ५९ और सुन्दर शाखा और डालोंवाले ऊंचे ऊंचे वृक्ष अञ्जन शोक पर्णाश वंजुल द्रुम ६० अरुण वत्सनाभ पनस चंदन नील सुमनस पीत अश्वत्थ तिंदुक ६१, प्राचीन मलक लोध्र मल्लिका भद्रदारु अम्बाड़ा जामन बड़हल एलवा ६२ सर्ज्जरस कुटज पुन्नाग कुटज रक्तकुरुक नीप अगरु ६३ कदम्ब भव्य दाडिम बीजपूरक कालीयक दुकूल हिंगु तैलप-

र्णिक ६४ खजूर नारियल चर्म्मवृक्ष हरीतकी मधूक सप्तपर्ण बिल्व पारावत ६५ पनस तमाल नानाप्रकारके पुष्पफलोंवाले ६६ गुल्मलताओं वाले ऐसे फूले व फलेहुये वृक्षोंके ऊपर रक्त पीत और सफेद वर्णोंवाले चकोर ६७ और शतपत्र और मतवाले कोकिला और मैना ऐसे पक्षी फल फूलों को खातेहुये परस्पर में देखतेहुये आनन्द को प्राप्तहोते हैं ऐसे गुणोंवाली सभाको नृसिंहजी महाराज देखतेभये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामेकत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३१॥

दोसौबत्तीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् ऐसी सभा में सूर्यकी कांति की समकांतिवाले आसनपै १ प्रकाश करताहुआ कांचन के कुंडलोंवाला हिरण्यकशिपुदैत्य शोभाको प्राप्तहोताभया २ और आसनपै बैठे हुये दैत्यके समीप में सुखको उपजानेवाला और सुगंधिको लिये ऐसा मंद मंद पवन चलताभया ३ और देवता गंधर्व अप्सरा सुंदर ताल देदे के गायनविद्या को करतेभये ४ और विश्वाची सहजन्या प्रम्लोचा विश्रुता दिव्या सौरभेयी समीची पुंजिकस्थला ५ मिश्रकेशी रम्भा चित्रसेना शुचिस्मिता चारुनेत्रा घृताची मेनका उर्वशी ६ ऐसेही और भी बहुतसी नृत्य और गीतोंको जाननेवाली अप्सरा हिरण्यकशिपु को प्रसन्न करतीभई ७ और विचित्र आभरणों को धारण करताहुआ और उज्ज्वल कुंडलोंको धारण करताहुआ ८ और हज़ारहा स्त्रियों से युक्त हिरण्यकशिपु का पुत्र शूरवीर तिस सभामें स्थित होताभया ९ और आसन पै बैठेहुये महाबाहु हिरण्यकशिपुको ये सब सेवन करतेभये १० और बलि नरक पृथ्वीजय प्रह्लाद विप्रचित्ति गविष्ठ ११ चन्द्रहन्ता क्रोधहन्ता सुनामा सुनति घटोदर महापार्श्व कथन पिठर १२ विश्वरूप सुरूप विरूप दशग्रीव वाली मेघनाद १३ प्रघस विकट सह्लाद इन्द्रतापन और सम्पूर्णदानव और दैत्य उज्ज्वलकुंडल और मालाओंको धारण करतेहुये १४ और बहुत बोलनेवाले सुंदर चरित्रों के करने वाले सम्पूर्ण वरोंको प्राप्तहुये शूरवीर मृत्यु से रहित १५ सम्पूर्ण आभरणों को धारण करतेहुये और भी बहुतसेदैत्य हिरण्यकशिपुको सेवन करतेभये १६ और भी बहुतसे आभूषणों को धारण करतेहुये अग्निकेतुल्य प्रकाशमान विमानों

में बंधेहुये विचित्रवस्त्रों को धारण करतेहुये १७ विचित्रशस्त्र और कवचों को धारण करतेहुये विचित्र ध्वजा और सवारियों को धारण करतेहुये १८ इन्द्रके धनुष की कांतिसदृश बाजुओं से अपने अपने शरीरों को शृङ्गारतेहुये सुवर्ण जड़ित मुकुटोंको धारण करतेहुये ऐसे सम्पूर्ण दैत्य हिरण्यकशिपुकी उपासना करतेभये १९ सुवर्ण और मणिजडित विचित्र वेदिका और निर्मल हीराओं से जडित २० छोटीगली और हाथियों के दांतों से रचेहुये झरोखा ऐसे कामों से शोभायमान सभामें आसनपै बैठाहुआ और निर्म्मल सुवर्ण के हारको धारण करताहुआ २१ सूर्यकी कांति के तुल्य प्रकाशमान ऐसे हिरण्यकशिपु को नृसिंहभगवान् देखतेभये २२ ॥

इतिश्रीमद्दाभारतेहरिवंशपर्व्वणिनंगतभविष्यपर्व्वभाषायांद्वात्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २३२ ॥

दोसौतेंतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् बड़ीभुजाओंवाले कालचक्र की नाईं आतेहुये और भस्ममें दबाहुआ अग्नि जैसे होताहै तैसे नृसिंह शरीर में लुकेहुये ऐसे भगवान् को हिरण्यकशिपु देखताभया १ व तिससमय में नृसिंह जीका रूप शोभाको प्राप्त होताभया और सम्पूर्ण दानव और हिरण्यकशिपु ऐसे कहतेभये कि शंख कुंद और चन्द्रमा २ इन्होंकी कांतिकी तुल्य यह रूप बडा विचित्रहै ऐसे कहतेहुये दैत्यों के मध्यमें हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लादनाम ३ और बड़ापराक्रमवाला अपने दिव्यचक्षुसे नृसिंहरूप को भगवान्‌कारूप देखताभया ४ और सुवर्ण के पर्व्वतकी समान अपूर्व्व मूर्त्तिको धारण करतेहुये भगवान् को देख दानव और हिरण्यकशिपु आश्चर्य को प्राप्त होतेभये ५ और प्रह्लाद जी हिरण्यकशिपु से बोले कि हे महाराज हे महाबाहो ऐसा नृसिंहरूप मैंने न कभी देखा और न कभी सुना ६ और अद्भुत और दैत्यों का नाशकर्त्ता ऐसा यहरूप हमारे मनमें संदेहको उपजाताहै ७ और देवता समुद्र नदी हिमवान् पारियात्र इन्हों से आदिले सम्पूर्ण पर्वत ८ चन्द्रमा नक्षत्र आदित्य अग्नि कुबेर वरुण यम इन्द्र ९ पवन देवता गंधर्व्व ऋषि नाग यक्ष पिशाच राक्षस १० ब्रह्मा मस्तक में स्थितहुआ चन्द्रमा स्थावर और जङ्गम ११ और तुम्हारा शरीर सम्पूर्ण दैत्यों सहित मेरा शरीर हजारहा विमानों सहित यह भीतरकीसभा १२

सपूर्ण त्रिलोकी और धर्म ये सब नृसिंहके शरीरमें ऐसे भान होते हैं जैसे निर्मल चद्रमाविषे जगत् भान होताहो १३ और प्रजापति मनु ग्रह योग पृथ्वी आकाश उत्पातकाल स्मृति धृति रज सत्व तप दम १४ सनत्कुमार विश्वेदेवा वसु क्रोध काम हर्ष दर्प सम्पूर्ण पितर ऐसे हे राजन् इसनृसिंहके शरीरमें ये सम्पूर्णभान होते हैं १५

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २३३ ॥

दोसौचौंतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् हिरण्यकशिपु ऐसे प्रह्लादके वचन को सुन सम्पूर्ण दानवों से बोला १ कि हे दैत्यो इस सिंहको पकड़लो और जो यह पकडा नहीं जावे तो यह वनगोचर वधकरने के योग्यहै २ ऐसे सम्पूर्ण दैत्य वचनको सुनके आनन्दितहुये और हथियारों को ग्रहणकर नृसिंहजी के मारने को प्रवृत्त होतेभये ३तब वे नृसिंहजी अपने सिंहशब्दको कर उस दिव्य सभाको ऐसे भेदन करतेभये ४ जैसे मुखको फाडताहुआ कालप्रभु मनुष्यको नष्ट करदेता है और हिरण्यकशिपु भेदनकी हुई सभाको देख बडे घोररूप अस्त्रों को भगवान् पै छोडताभया ५ धर्मचक्र अजितनाम महाचक्र रौद्रचक्र ऋषिचक्र ६ महाचक्र त्रैलोक्यसहृत अशिनि शुष्कअशिनि आर्द्रअशिनि ७ त्रिशूल कालनाम मुशल ब्रह्मशरनाम अस्त्र ब्राह्मअस्त्र ८ ऐषिकअस्त्र ऐन्द्रअस्त्र आग्नेयास्त्र शैशिर अस्त्र वायव्यअस्त्र मथनअस्त्र कापालअस्त्र किंकरअस्त्र ९ शक्ति क्रौंचअस्त्र हयशिरास्त्र सोमअस्त्र पैशाचअस्त्र १० सर्पअस्त्र मोहनअस्त्र शोषणअस्त्र सपातन विलापन ११ जृम्भणास्त्र पातनअस्त्र त्वाष्ट्रअस्त्र कालअस्त्र क्षोभणअस्त्र १२ संवर्तअस्त्र मायाधरअस्त्र गान्धर्वअस्त्र दयितअस्त्र असिरत्नअस्त्र नंदकास्त्र १३ प्रस्वापनअस्त्र प्रमथनअस्त्र वारुणअस्त्र पाशुपतअस्त्र १४ जैसे जलताहुआ अग्नि में आहुति छोड़ते हैं वैसेही इन सम्पूर्णअस्त्र और शस्त्रोंको नृसिंहजी पै हिरण्यकशिपु छोड़ताभया १५ और जैसे उदयकाल में सूर्य भगवान् अपनी किरणों से हिमवान् पर्वतको आच्छादन करलेते हैं वैसेही नृसिंहजी को हिरण्यकशिपु अपने अस्त्रों से आच्छादन करताभया १६ और जैसे मैनाकपर्वत को समुद्र चौगिर्द में घेरलेताहै तैसेही दैत्योंका सेनारूपी समुद्र भगवान् को घेरलेताभया १७ और प्रास पाश खड्ग गदा मुशल वज्र अशनि शिला द्रुम १८ मुद्गर कूट

पाश, शूल लूखल पर्व्वत शतघ्नी और दण्ड ऐसे १९ हथियारों से भगवान् के शरीरका किञ्चित्मात्र भी नहीं छेदन होतामया २० तब वे दानव अपने २ हाथों में फाँसियों को ग्रहणकर और इन्द्रके वज्रकेतुल्य वेगसे दौड़तेहुये भगवान् के चारोंओर ऐसे ऐसे स्थित होतेभये जैसे तीन २ शिरोंवाले नागों के बच्चे स्थित होते हैं २१ व सुवर्ण व मोतियों की मालाओं से शरीर को भूषित किये ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये जैसे सुंदर पाखोंवाले हंस शोभा को प्राप्त होते हैं २२ व प्रातःकालके सूर्य के किरणोंकी सम कांतिवाले व वायुकेसमान पराक्रमवाले ऐसे दैत्य भगवान् के चारोंओर शोभाको प्राप्त होतेभये २३ प्रकाशमान अग्नि के तेजकेतुल्य तेजवाले भगवान् शस्त्र व अस्त्रोंकी वर्षा से ऐसे शोभाको प्राप्त होते भये जैसे मेघोंकी वर्षा से आच्छादन कियाहुआ पर्व्वत शोभाको प्राप्त होताहै २४ व बलवान् दैत्यों के शस्त्रों से पीड़ित कियेहुये भगवान् युद्धमें कम्पायमान नहीं होतेभये व ऐसे स्थितहोतेभये जैसे हिमवान् पर्वत एकजगहपै स्थितहै २५ व नृसिंहरूपी भगवान्से भयभीतहुये सम्पूर्ण दैत्य युद्धसे ऐसे दौड़तेभये जैसे पवनसे समुद्रकी झाल दौड़जाती है २६ क्रोधसे भस्महोतेहुये सम्पूर्ण महासुर से कड़ों धनुषोंको धारणकर अत्यन्त वेगसे नृसिंहजी पै बाणोंको छोड़तेभये २७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुस्त्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २३४॥

दोसौपैंतीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् खरोंकेसे रूपवाले खरोंकेसे मुखों वाले मच्छ और सर्पों केसे मुखोंवाले मृगोंकेसे मुखोंवाले वाराहकेसे मुखोंवाले १ बाल सूर्य्य के मुखोंवाले धूम्रकेतु केसे मुखवाले चन्द्रमा और अर्द्धचन्द्रमा केसे मुखोंवाले जलती हुई अग्नि केसे मुखवाले २ हंस कुक्कुट केसे मुखवाले फटेहुये मुखोंवाले पंचमुखोंवाले गलूफोंको चाटतेहुये काक और गृध्रोंकेसे मुखोंवाले ३ और बिजलीकीसी जिह्वावाले तीन शिरोंवाले ग्राहोंकेसे रूपवाले और बल से मदोन्मत्तहुये ४ दानव शरोंकी वर्षासे पर्वतकेसे भगवान् के शरीरमें पीड़ाकरने को समर्थ नहीं होतेभये ५ और दानव फिर भगवान् की छातीमें घोररूपी बाणों को छोड़के ऐसे क्रोधहोतेभये जैसे सर्प क्रोधको प्राप्तहोते हैं ६ और नृसिंहजीपै छोड़ेहुये बाण ऐसे नष्ट होतेभये जैसे आकाशमें प्रकाश करतेहुये खद्योत नष्ट

होजाताहै ७ और क्रोधसे भस्महोनेहुये दैत्य प्रकाशमान घोररूप चक्रोंको लेके फिर नृसिंहजी पै छोडतेभये ८ और पडतेहुये चक्रोंसे आकाश ऐसे आच्छादित होताभया जैसे प्रलयकालमें प्रकाशमानहुये चन्द्रमा और सूर्य से आच्छन्न होताहै ९ और अग्निकैसे प्रकाश करतेहुये सम्पूर्ण चक्रोंको वे नृसिंहरूप भगवान् मुखमें निगलतेभये १० और मुखमें प्राप्त होतेहुये चक्र ऐसे प्रकाश करते भये जैसे मेघकी बडी उदग्ररूपी गुफाको चन्द्रमा सूर्य प्रकाश करते हैं ११ और हिरण्यकशिपु फिर भगवान् पै अग्नि और बिजली की तुल्य प्रकाश करतीहुई अपनी शक्तिको छोडताभया १२ और सिंहरूपी भगवान् आतीहुई घोर शक्ति को देख अपने हुंकार शब्दसे छेदन करतेभये १३ और भगवान् से छेदन की हुई वह शक्ति पृथ्वी पै ऐसे शोभाको प्राप्त होतीभई जैसे आकाशसे पडतीहुई बिजली शोभाको प्राप्तहोती है १४ और असुरों से दूरसे फेंकीहुई बाणोंकीपङ्क्ति नृसिंहजी की ग्रीवामें ऐसे शोभाको प्राप्तहोतीभई जैसे नीला कमल और केसुओंकीमाला शोभाको प्राप्त होती है १५ और फिर नृसिंहजी अपने पराक्रमको कर और इच्छापूर्वक गर्जके दैत्योंकी सेनाको ऐसे भगातेभये जैसे तृणको पवन उड़ादेताहै १६ और वे दैत्य आकाशमें प्राप्तहोके शिला और पर्वतों के शिखरों की वर्षा नृसिंहजी पै करतेभये १७ और वे पत्थर नृसिंहजीके लाग २ और फूट२ के दशोंदिशाओं में ऐसे बिखरतेभये जैसे पटबीजनों के समूह चिमक २ बिखर जाते हैं १८ व बारबार शिलाओं की वर्षासे भगवान् को ऐसे आच्छादन करते भये जैसे रूपाके पर्वतको वर्षाओं से मेघआच्छादन करते हैं १९ और वे दैत्य स्थितहुये भगवान् को एक जगह से नहीं डिगासकेभये जैसे मन्दराचल पर्वत को समुद्र नहीं चलासकताहै २० व पत्थरों की वर्षा नष्टहोनेसे उपरांत गाड़ीके धुरासरीखी जलधाराओं से नृसिंहजी पै वर्षा होनेलगी २१ व आकाशसे पड़ती हुई बड़े वेगवाली हज़ारहा धारा आकाश दिशा व विदिशाओंको आच्छादन करतीभई २२ व धाराओं के पडने से और वायुके वेगसे और बरसीहुई वर्षा से निमममय कुछ भी नहीं मालूम होताभया २३ और युद्धमें स्थितहुये मायारूपी भगवान् से दूरदूर वे मेघ वर्षा करतेभये २४ व पत्थरोंकी वर्षा तथा जलोंकी वर्षा को नष्टहुई देख वे दैत्य फिर वायुसेयुक्त अग्निरूप मायाको रचतेगये २५ और आकाश से उत्पन्नहुआ व बहुत वेगवाला व अग्निरूप मालाओंवाला व बड़ा

भयानक व जलताहुआ २६ ऐसा हिरण्यकशिपुका रचाहुआ अग्नि नृसिंहजी के जलाने को समर्थ न होताभया २७ व महान् कांतिवाला इन्द्र अपने मेघोंको लेके जलकी वर्षासे अग्निको शांत करताभया २८ व नष्टहुई अग्निरूप माया को देखके सम्पूर्ण दैत्य अपनी घोर अन्धकार रूप मायाको रचतेभये २९ तब सम्पूर्ण लोकको अन्धकार से युक्त देख भगवान् दैत्यों के अस्त्र शस्त्रों में ऐसे प्रकाश करतेभये जैसे सूर्य्य प्रकाश करतेहैं ३० व भगवान् के मस्तक में तीन शिखाओंवाली और क्षोभयुक्त भृकुटीको वे दानव ऐसे देखतेभये जैसे त्रिकूट पर्वत पै स्थित गङ्गाको देखते हैं ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वमायापायपञ्चत्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २३५ ॥

दोसौछत्तीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् ऐसे नष्टहुई सम्पूर्ण मायाओंको देखके दुःखितहुए सम्पूर्ण दैत्य हिरण्यकशिपुके शरण जातेभये १ तब हिरण्यकशिपु क्रोध से जलताहुआ और नेत्रों से भस्म करताहुआ सम्पूर्ण पृथ्वीको चलायमान करताभया २ और क्षुभित हुये समुद्र संपूर्ण पर्वत और सम्पूर्ण वन चलायमान होतेभये ३ और हिरण्यकशिपु के क्रोधरूपी अंधकारसे सम्पूर्ण जगत् अंधकारयुक्त होताभया व जगत्में कुछ नहीं दिखताभया ४ तिस समय आवह तथा प्रवह तथा विवह तथा परावह तथा संवह तथा उद्वह तथा परिवह ये ५ और सातोंपवन उत्पातके भयसे क्षुभित भये ऊपर नीचे उलट पलटके चलने लगे ६ व जौनसाग्रह प्रलयकालमें प्रकटहुआ करते हैं वे ग्रह प्रलय के उत्साह से खुशीहोके विचरनेलगे ७ व स्वर्गमें चन्द्रमा कांति से रहित होताभया और ग्रह तथा नक्षत्र इन्होंके सहित रात्रिमें आकाश अग्निके सम जलनेलगा ८ व सूर्यनारायण विवर्णताको प्राप्त होताभया और आकाशमें विनाशिर पुरुष दीखनेलगा ९ और आकाशमें स्थितहुये सूर्यके मंडल होताभया और धूमा की कांतिकी सम कान्तिवाले घोररूप सातसूर्य्य आकाश में दीखनेलगे १० और आकाशमें स्थित चन्द्रमाके ऊपर स्थान में सम्पूर्ण ग्रह स्थित होतेभये ११ और चन्द्रमा के वामभागमें शुक्र और दक्षिणभाग मे बृहस्पति स्थित होतेभये और शनैश्चरका लालरङ्ग होताभया और मंगल सूर्य्यके समान प्रकाशहोगया १२ व

भयानकपची कोकिलाओंको आरोहण करतेभये नक्षत्र और ग्रहोंसे युक्तहुआ चन्द्रमा रोहिणीको नहीं प्राप्त होताभया १३ और राहुउल्कापातसे सूर्य्यको हनन करताभया और जलतीहुई उल्का चन्द्रमाके सामने चलतीभई और देवताओं काभी देवता इन्द्र रुधिरकी वर्षा करताभया और वज्रसे शब्दको करतीहुई आकाशसे बिजली गिरतीभई १४।१५ और अकाल मे वृक्षलता फल और पुष्पों को धारण करतेभये १६ और पुष्पोंमें पुष्प और फलोंमें फल उपजते भये और सम्पूर्ण देवताओं की मूर्तिया आखों को खोलने और मीचनेलगीं और हँसने और रोनेलगीं १७ और अत्यन्त शब्द को करनेलगीं और धूमाकीसी काति को धारणकर जलनेलगीं १८ और वनकें पशु गांव के मृग पक्षी अत्यन्त भयानक शब्दको करतेभये १९ और सपूर्ण नदिया गिधलेजलोंसे उलटी वहने लगीं और लालरेत के उडने से दिशा प्रकाश नहीं होतीभई २० और पूजन करने के योग्य वृक्षोंका पूजन नहीं होताभया और वायुके वेगसे वृक्ष नष्टहोते भये २१ और डालोंमेंसे टूटते और शब्द करतेभये और दुपहर पीछे सपूर्ण प्राणियों के देहकी छाया नष्ट होतीभई २२ और हिरण्यकशिपु के स्थानके ऊपर और वर्तनों के स्थान और हथियारोंके स्थानमें शहद लगताभया २३ और हथियारों के स्थानमें धूमाकी पक्ति दीखनेलगीं ऐसे महान् उत्पातोंको हिरण्यकशिपु देख के २४ अपने शुक्राचार्य पुरोहित से बोला कि हे भगवन् ये उत्पात किस अर्थ उठते हैं सो मैं सुननेकी इच्छा करताहूं मेरे बड़ा आश्चर्य होताहै २५ तब शुक्राचार्य्यजी वर्णन करतेभये कि हे राजन् ये उत्पात महाभयके देनेवाले हैं २६ और जिस अर्थ दीखते हैं सो मेरेमुखसे तू सावधानहोके सुन हे महासुर जिस राजा के राज्य में ये उत्पात दीखते हैं तिस राजाका देश नष्ट होजाता है अथवा वह राजा नष्ट होजाता है २७ और हे महासुर बुद्धि मे देख और ग्रहण कर थोड़ेहीकाल में बड़ाभय प्राप्तहोवेगा २८ ऐसे शुक्राचार्यजी हिरण्यकशिपु से कहके और तेरा कल्याणहो ऐसे कहके फिर अपने स्थानको जातेभये २९ और हिरण्यकशिपु दीनता को धारणकर एकजगह स्थिरहोके शुक्राचार्य्य के वचन को याद करताहुआ विचार करनेलगा ३० कि असुरों के नाश के अर्थ और देवताओंके विजयके अर्थ ये घोर नानाप्रकारके उत्पात दीखते है ३१ ऐसे विचारकर अपनी गदाको ले धरणीको कँपावताहुआ दौड़ताभया और पृथ्वी

को कँपाता भया ३२ और पैरों से पृथ्वी को फोड़ताहुआ क्रोधसे अपने ओठों को ऐसे चाबनाभया जैसे वाराहजीको देखके हिरण्याक्ष होठोंको चाबनाभया ३३ और पृथ्वीके काँपनेसे बहुतसे सर्प भयसे व्याकुलहुये पर्वतों से पृथ्वी पै गिरते भये ३४ और जहरकी ज्वालायुक्त मुखों से अग्निको छोड़तेभये ऐसे चारशिरों वाले और पाच शिरोंवाले और सातशिरोंवाले ३५ और वासुकि तक्षक कर्कोटक धनजय एलापत्र कालिय महापद्म ३६ और हजार शिरोंवाला और हंसतालध्वज शेष हुष्मकप प्रकंपित ३७ और सातों पातालवासी सर्प और जल और रस ये सपूर्ण क्रोधितहुये दैत्यके भयसे काँपतेभये ३८ और भागीरथी नदी सरयू कौशिकी यमुना कावेरी कृष्णवेणा ३९ तुंगवेणा महाभागा गोदावरी चर्मणवती नदियोंका पति समुद्र ४० मेकलप्रभव शोण मणिनिभोदक सुस्रोता नर्मदा वेत्रवती ४१ गोमती गोकुला कीर्णा सरस्वती मही काल मही तमसा पुष्पवाहिनी ४२ सीताईक्षुमती देविका जाम्बूनद स्वचित्र ४३ सुवर्ण कुण्डक सुवर्णकी ध्वजान महानद सुवर्ण से युक्तहुआ लोहित्य पर्व्वत ४४ कौशिक आदि देशोंके शहर चादी की खानोंवाला द्रविड़देश मागधदेश बड़े २ ग्राम पौंड्रदेश वंगदेश ४५ सुह्मदेश पल्हदेश विदेहदेश मालवदेश काशिक देश वैनतेय का भवन और सुपर्ण का भवन ये सम्पूर्ण हिरण्यकशिपु दैत्यके भयसे कापतेभये ४६ और रक्तजलवाला लोहित्यनाम तालाव सफेद मेघकीसी कातिवाला क्षीरोदनाम सागर ४७ सौयोजन ऊचा उदयनाम पर्वत सुवर्ण की वेदियोंवाला मेघकी पंक्तियोंसेयुक्त ४८ सूर्यकी कातिकी सदृश सुवर्णमय ऐसे वृक्षोंसेयुक्त सालवृक्ष तालवृक्ष तमालवृक्ष ४९ और पुष्पोंवाला कर्णिकारवृक्ष ऐसे वृक्षोंसे प्रकाशमान और धातुओंवाला अयोमुख नाम पर्वत ५० तमालवन गंधपर्व्वत मलय पर्व्वत सुराष्ट्रदेश वाह्लीकदेश मद्रदेश आभीरदेश ५१ भोजदेश पाण्ड्यदेश अंगदेश कलिंगदेश ताम्रलिप्तकदेश ओड्रदेश वामचूलदेश केरल देश ५२ और देवता और अप्सराओंके गण ये सम्पूर्ण दैत्यकेभयसे कंपायमान होतेभये और प्राचीन अगस्त्यजीका भवन ५३ सिद्ध और चारण इन्होंके समूहोंसे सेवित और सुमनोहर नानाप्रकारके पक्षियोंवाला सुन्दर फूलीहुई लता और वृक्षोंवाला ५४ और सेनाके शिखरोंवाला और अप्सराओं से सेवित और लक्ष्मीवान् ५५ और समुद्रको फोटके निकसाहुआ और चन्द्रमा सूर्यकांतिन

बड़े २ शिखरोंसे शोभायमान ५६ चन्द्रमा और सूर्य्यकी कान्तिसेयुक्त और समुद्रके जलोंसे आवृत श्रीमान् सौयोजन चौड़ा ५७ और बिजलियों वाला ऐसा विद्युत्वान् नाम पर्वत और श्रीमान् ऋषभनाम पर्वत ५८ और जिसजगह अगस्त्यजी का स्थान है ऐसा कुंजरनाम पर्व्वत और सुन्दर गलियोंवाली और शत्रुओंको अगम्य ऐसी सर्पोंकी भोगवतीपुरी ५९ जिस हिरण्यकशिपु दैत्यने कॅपादी और महामेघ पर्वत पारिपात्र नाम पर्वत ६० चक्रवान् पर्वत वराह पर्वत और जिसमें नरकासुर वसताभया ६१ ऐसा सुवर्णसे रचाहुआ ज्योतिषपुर मेघ पर्वत मेघगम्भीर पर्वत और जिसमें साठहज़ार पर्व्वत स्थितहैं ऐसा उदय होता सूर्य्यकी तुल्य कान्तिवाला सुमेरु पर्वत और मेघसरीखा शब्द करनेवाला पर्वत और यक्ष राक्षस गंधर्व इन्होंसे सेवित और शोभायमान मनोहर ६२ और नित्य खिलेहुये पुष्पोंसे युक्त वृक्षोंवाला ऐसा कैलास पर्व्वत और सुवर्णकीसी कान्ति वाले कमलों से आच्छादित ६३ ऐसा वैखानसनाम तालाब और राजहंसों से सेवित ऐसा मानसरोवर और त्रिशृंगपर्वत और नदियोंमें श्रेष्ठ कुमारीनदी ६४ और मन्दरपर्वत उशीरवीज पर्वत रुद्रोपस्थपर्वत ६५ और ब्रह्माका स्थान पुष्कर पर्वत देवावृत्यपर्व्वत पर्वत वालुक पर्वत ६६ क्रौंचपर्वत सप्तर्षिपर्वत धूमवर्ण पर्व्वत और भी अन्यपर्वत और जनपददेश ६७ नदी समुद्र कपिलमुनि व्याघ्रनामा पृथ्वीका पुत्र ६८ पाताल में वसनेवाले शरीरके पुत्र खेचर नामोंवाले और गैत्र नाम अकुशायुध उद्वेग और भीमवेग ऐसे महादेवके गण सम्पूर्ण कम्पायमान होतेभये ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेखिलेहरिवंशान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांषट्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३६ ॥

दोसौसैंतीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् आदित्य साध्य विश्वेदेवा वसु रुद्र देवता और पवन ये सम्पूर्ण १ लोकके क्षयहोनेके भयसे डरेहुये नृसिंहजी के पासआके कहतेभये २ कि हे भगवन् लोकोंका नाश करनेवाले खोटे आचरण करनेवाले और सम्पूर्ण दैत्योंमे मुख्य ३ ऐसे हिरण्यकशिपुको जल्दमारो और आपही दैत्योंके नाशकरो तुमसे उपरान्त और कोई नहीं है सो इस दैत्य को मारके लोकोंका कल्याणकरो ४ व हे भगवन् तुम्हीं सम्पूर्ण लोकोंके गुरुहो

तुम्हीं इन्द्रहो तुम्हीं पितामहहो तुम्हीं शरणहो सो तुमसे अन्य और कोई शरण न तो पीछेहुआ व न आगाड़ी होवेगा ५ ऐसे देवतों के वचनको सुनके भगवान् मेघके शब्दके समान अत्यन्त भयानक शब्द करतेभये ६ व ऐसे नृसिंहजी के भयानक शब्दको सुनके दैत्यों के हृदय व मन फाटते भये ७ तब ऐसे भगवान् के शब्दको सुनके क्रोधवश कालकेय वेग वेगलेय सैंहिकेय ८ सह्रादीप महाह्रादीय विदेप कपिल व्याघ्राक्ष क्षितिकम्पन ९ खेचर रौद्र मेघनाद अकुशायुध १० ऊर्द्धग भीमवेग भीमकर्म अर्कलोचन वज्री शूली कराल ११ ऐसे असुरों के गण व जीमूतमेघ की तुल्य प्रकाशवाला जीमूतमेघकी तुल्य वेगवाला जीमूतमेघकी तुल्य शब्दवाला जीमूतमेघकी कान्तिवाला व मदोन्मत्तहुआ ऐसा हिरण्यकशिपु दैत्य १२ हथियारोंकोले नृसिंहजी पै दौड़ताभया तब नृसिंहजी कूदके व पैने२ नखों से तिसको फाड़के युद्धमें मारतेभये १३ तब पृथ्वी लोक चन्द्रमा आकाश ग्रह सूर्य सम्पूर्ण दिशा नदी पर्वत व समुद्र ये सम्पूर्ण हिरण्यकशिपुके मृत्युसे खुशी होतेभये १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिभाषायांसप्तत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३७ ॥

दोसौअड़तिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् खुशीहुये देवता व ऋषि नाना प्रकारके स्तोत्रों से भगवान्की स्तुति करतेभये १ कि हे भगवन् धारणकियेहुये इस तेरे नृसिंह शरीरका परमतत्त्वके जाननेवाले महात्मा पुरुष पूजनकरेंगे २ व हे भगवन् हे नृसिंह ऐसे कहके मुनीश्वर आपका गायनकरेंगे ३ व हे भगवन् आपकी कृपासे अपने स्थानोंको अब हम प्राप्तहोतेभये ऐसे नृसिंहजी से कहते हुये देवताओं के मध्यमें ४ प्रसन्नहुये ब्रह्मा परमेश्वरके स्तोत्रको उच्चारण करते भये ५ कि हे भगवन् आप अक्षर अव्यक्त अचिन्त्य गुह्य उत्तम कूटस्थ अकर्ता सनातन और अनामयहो ६ व हे भगवन् सांख्य और योगमें तत्त्वार्थयुक्त नेष्ठावाली बुद्धिको विद्यात्मारूप भगवान् तुम जानतेहो ७ व स्थूलरूप सूक्ष्मरूप ब्रह्मा देवता और आत्मा यह सम्पूर्ण आपका रूपहै ८ व सम्पूर्ण जगत् तुमसेही उपजताहै हे भगवन् श्रीकृष्ण बलदेव प्रद्युम्न व अनिरुद्ध ऐसे चारप्रकारसे विभाग कीहुई मूर्त्तीरूप तुमहो ९ व सम्पूर्ण लोकों के गुरु व पालकहो व सतयुग त्रेता

द्वापर कलियुग ऐसी एकहजार चौकड़ियों के स्वामीहो १० व सम्पूर्ण लोकों के कालके भी काल व चारों वेदरूपहो व चतुर्होत्र यज्ञरूप और चतुरात्मा अर्थात् मन बुद्धि चित्त अहंकाररूपहो ११ व सनातन सम्पूर्ण लोकों के स्थानरूपहो व अनन्त बलरूप और पुरुषार्थरूपहो १२ व कपिलदेवसे आदिले सम्पूर्ण यतियों की गतिरूपहो व अनादि व मध्य १३ व नाशरूपहो व सम्पूर्ण जीवोंकी आत्मा व पुरुषोत्तमहो व जगत्को रचनेवाले १४ नाशकरनेवाले व पालन करनेवाले भी तुमहो और ब्रह्मा १५ रुद्र वरुण यम कर्त्ता निकर्त्ता लोकों के उत्पन्न करने वाले अव्यय १६ परमबुद्धि परमदेव परममन्त्र परमतप परमधर्म परमयश परम सत्य १७ परमहवि परमपवित्र परममार्ग परमयज्ञ १८ परमहोत्र परमशरीर परम धाम परमयोग १९ परमवाणी परमरहस्य परमगति परमपद २० परमप्रभु परम प्रधान परमतत्त्व परमपुराण २१ परमगुह्य परमगुप्त हे भगवन् यह सम्पूर्ण तुम्हाराही रूपहै २२ वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वे सम्पूर्ण लोकोंके पितामह ब्रह्मा ऐसे नृसिंहजी की स्तुतिकर अपने ब्रह्मलोकको जातभये २३ व बाजतेहुये नगाराओं और नाचतीहुई अप्सराओं को छोड़के नृसिंह भगवान् भी वहा से क्षीरसमुद्रके उत्तरकूलपै जाके प्राप्तहोते भये २४ तहा अपने नृसिंह रूपको त्याग नृसिंहमूर्त्ति को स्थापनकर अपने पुराने रूप को धारणकर २५ गरुड़पै सवारहोके वहा से जातभये ऐसे नृसिंहरूपको धारणकर हिरण्यकशिपु को मारते भये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांवर्णनंनामद्विशताष्टत्रिंशोऽध्यायः २३८ ॥

दोसौउनतालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हेजनमेजय मैंने आप के अगाड़ी नृसिंह रूपको वर्णनकिया और यही फिरवामनरूपको धारण करतेभये और वे भगवान् राजाबलिकी यज्ञमें जाके १ और तीन पैंड़से सम्पूर्ण त्रिलोकीको नापके राजा बलिके पास से लेलेतेभये २ और नानाप्रकार के पर्वतों से शोभायमान ऐसी पृथ्वीको लेके इन्द्रको देतेभये ३ जनमेजय पूछते हैं कि हे वैशम्पायनजी इस आख्यानको सुन मेरे यह संदेह और आश्चर्य प्राप्तहुआहै कि वे नारायण कैसे वामनरूपको प्राप्त होतेभये ४ और पुराणोंमें पुराणात्मा नारायण विभु पद्मनाभ

लोकोंके प्रकृति ५ अनादि मध्य नाशरूप सनातन देवतों के भी देव सुराध्यक्ष कृष्ण ६ हव्य और कव्यके प्राप्त करनेवाले और हव्य कव्यको भोगनेवाले ऐसे भगवान् अदितिके गर्भमें कैसे प्राप्त होतेभये ७ और इन्द्रके भी रचनेवाले ऐसे भगवान् इन्द्रके छोटेभाई कैसे होतेभये और स्वर्गमें जन्मलेके विष्णुताको कैसे प्राप्तहोतेभये = सो हे वैशम्पायनजी यह वामनजीकी उत्पत्ति मेरेअगाड़ी विधिपूर्वक वर्णनकरो ९ ऐसे सुन वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् उत्तम ऋषियों से श्लाघाकी हुई और कवि ब्रह्मा और ब्राह्मण इन्हों ने अपने मुखसे वर्णन की १० ऐसी कथा को आपसुनो में वर्णन करताहूं हे जनमेजय मरीचि ऋषिके पुत्र कश्यप के अदिति और दिति दो स्त्री होतीभई ११ और अदिति रानी के कश्यपजी के सकाशसे धाता अर्यमा मित्र वरुण अंश भग १२ इन्द्र विवस्वान् पूषा पर्जन्य त्वष्टा और विष्णु ऐसे देवता पैदाहोतेभये १३ और दितिरानीके हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष ऐसे दोपुत्र पैदाहोतेभये १४ और हिरण्यकशिपु के प्रह्लाद संह्लाद ह्लाद जम्भ और अनुह्लाद ऐसे पांचपुत्र होतेभये १५ और प्रह्लादके विरोचन और विरोचनके बलि ऐसे पुत्र और पौत्र भये तिन्होंका कुल अक्षय होताभया १६ और दैत्योंके हजारहा समूहके समूह देश देशान्तरमें प्राप्तहोतेभये १७ और वे दैत्य नृसिंहजीसे मारेहुये हिरण्यकशिपुको देखके देवताओं के वधके अर्थ बलिको राजा करतेभये १८ और धर्म में तत्पर सत्यकेवक्ता जितेन्द्रिय शूरवीरता और विद्याओंसे सम्पन्न १९ और सम्पूर्ण ज्ञान के जानने व तत्त्वके देखनेवाले और तेजवाले कुन और कृतज्ञ ऐसे गुणोंवाले बलि को २० अभिषेचन कर्मकर और राजगद्दी पै बैठा वे सम्पूर्ण दैत्य पूजन करतेभये २१ और सम्पूर्ण तीर्थों के जलोंसे भरेहुये सुवर्णके कलशों से ब्रह्माने भी प्रसन्नहोके बलिका पूजनकिया २२ तब सम्पूर्ण दानव जय शब्दोंको करने लगे और सम्पूर्ण दैत्य बलि को राजाकर २३ और पृथ्वी मे शिरोंकोनवा ऐसे विज्ञापन करतेभये कि हे दैत्येन्द्र इस सम्पूर्ण वृत्तान्तको आपजानतेहो कि स्थावर और जंगमों करके सहित यह सम्पूर्ण त्रिलोकी का राज्य पहिले हिरण्यकशिपु के होताभया २४ और हिरण्यकशिपु को मार तीनों लोकों के राज्य को खोस वे सम्पूर्ण देवता इन्द्रको अपना राजा करतेभये २५ सो तू अपने दादा के राज्यको इन्द्रसे हरने को योग्यहै २६ हम आपकी सहायता करेंगे हे राजन

तू अतोल पराक्रमवालाहै २७ व हजारहा दैत्यों के गणों मे युक्तहै सो अब स्वर्ग मेंजाके इन्द्रकोजीत व अपने पितामहके यशकोप्राप्तहो २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतहरिवंशपर्वणि भविष्यपर्वभाषायामूनचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३९ ॥

दोसौचालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन वह बलि तिन दैत्योंके वचनको सुन और प्रसन्न मनहो दैत्यों मे आज्ञापन करताभया १ कि हे दैत्यो अभी मैं त्रिलोकी को जीतूंगा ऐसे बलिके वचनको सुनसम्पूर्ण दैत्य युद्धके अर्थ परम उद्योग करते भये २ सो दैत्यों का नाम वर्णन करते हैं कि महापद्म निकुम्भ पूर्णकुम्भ काचनाक्ष कपिस्कन्ध व्याघ्राक्ष क्षितिकम्पन ३ सितकेश ऊर्द्धवक्त्र वज्रनाभ शिखी जटी सहस्रबाहु विकच मीनाक्ष प्रियदर्शन ४ एकाक्ष एकपाद मुड विद्युदक्ष गजोदर गजशिरा गजस्कन्ध गजेक्षण अष्टदंष्ट्र चतुर्दंष्ट्र मेघनादी जलधम ५ । ६ कराल ज्वालजिह्व शताग शतलोचन ७ महत्पात् कृष्णमुख कृष्ण रणोत्कट दानपति शैलकम्पी कुनाक्ष ८ समुद्र रभसश्चण्ड धूम्र प्रियकुर गोवज गोखुर रौद्र गोदत स्वस्तिका और ध्रुव ९ गासय मामगक्ष केतुमान शिवि पकदिव्यशरीर बृहत्कीर्ति महाहनु १० निकुभाड विरूपाक्ष हर अहर श्वेतशीर्ष चन्द्रहनु चन्द्रहा चन्द्रतापन ११ निक्षर दीर्घकण्ठ मत्प्रप माकनागन कालकञ्ज महाक्रोध शलभ कुलभ कम्प १२ समुद्रमथन नादी विदर्भ महानन प्रलव नरक पालीशश्रृग कालखोचन १३ वरिष्ठ गविष्ठ भूतलोन्मथन विभु सुप्रगाढ़ त्रिशिरा सूचीवक्र १४ सुबाहु स्वर्जनबाहु वरुण कलशोदर सोमय देवघात्री वीरमर्दन १५ शुश्रूपु चंडशक्ति कुणनेत्र शशिध्वज ये दैत्यजो थे सो वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् मैंने आपसे वर्णनकिये हैं १६ और भी बहुतसे नानाप्रकारके आभूषणोंसे आभूषितहुए दिव्यमाला व वस्त्रोंको धारण करनेहुए दिव्य रथोंको धारण करेहुए ऊंची २ ध्वजाओं को धारण करेहुए १७ मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए रथोंके शब्दसे पृथ्वीको कपातेहुए सर्पों के शरीरकीसी भुजाओं से दिव्यअस्त्रों को धारणकरतेहुए लाल २ नेत्रोंवाले १८ इन्द्रके वज्रकी तुल्य वेगवाले जांघोंको फाटतेहुए शरदऋतुके मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए १९ एक हजार भुजाओंको धारण करतेहुये बलिका पुत्र बाणासुर एक रथमें सवारहो करके सावधानहो ऐसे

सम्पूर्ण दैत्य युद्धके अर्थ स्वर्ग को जातेभये २० नानाप्रकार की मायाओं को धारण करतेहुए बलरूपी मदोंसे सींचेहुए २१ सुवर्ण के पर्वतोंकीसी कान्तिवाले किरीट मुकुट पगड़ी इन्हों को धारणकरेहुए २२ सुवर्ण के कवचों को पहिरेहुए और रथोंमें बैठे ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे शरदऋतुके आकाश में ग्रह शोभा को प्राप्त होते हैं २३ प्रलयकाल के जलतेहुए अग्नि कीसी कांति वाली धुकधुकियों को धारणकर ऐसे शोभाको प्राप्तहोतेभये जैसे सुवर्ण केपर्वतों पै फूलाहुआ केसू शोभाको प्राप्तहोताहै २४ शक्ति और गदा इन्होंको धारण कर तीनसौ हाथ चौड़े रथमें बैठाहुआ बाणासुर दैत्यों के मध्यमें ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे वर्षाकालमें मेघ शोभाको प्राप्त होताहै २५ और निज ध्वजासे शोभित और सुवर्णकी जालियोंसे विभूषित ऐसे रथमें बैठाहुआ बाणासुरकी अनेकदैत्य रक्षा करतेभये २६ और सुबाहु और मेघनाद और भीमवेग और गगन मूर्द्धा और केतुमान् २७ इननामों से युक्त और महा पराक्रमीवाले और युद्धमें मदोन्मत्त और मुखको फाड़तेहुए और भयानक रूपवाले ऐसेपांच दैत्य बाणासुरके रथकी रक्षा करतेभये २८ और अनायुषाकापुत्र बलनाम महासुर एकलाख रथोंकोलेके और नीलालोहमें जड़ाहुआ २९ और काग के शरीर कीसी कांतिवाला और सौ ऋच्छोंसे युक्त ऐसा रथमें बैठ ३० और नीले वस्त्रों को धारणकर स्वर्गको जाताहुआ सेनारूपी समुद्र में ऐसे शोभाको प्राप्तहोताभया ३१ कि जैसे प्रभात समय में उदय होताहुआ सूर्य्य मुद्रमें शोभाको प्राप्त होताहै ३२ और तपाहुआ सुवर्णकीसी कान्तिवाला किरीटसे बिजली की नाईं प्रकाशमान हुआ ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे बड़ा ऊंचा शिखर से पर्वत शोभाको प्राप्तहोताहै ३३ और खर्गोंसे युक्त और मेघ की तुल्य शब्दों को करनेवाले ऐसे साठहजार रथ और नानाप्रकारसे युद्धोंके करने वाले ३४ और बड़े मेघोंकेसे शरीरोंवाले और वेगवन्त और महाबली ऐसे २ दैत्य नमुचि असुरके संग स्वर्गको तैयार होतेभये ३५ व एकहजार व्याघ्रोंसे युक्त और संपूर्ण रत्नोंसे भूषित व सुवर्णकी ध्वजामें शार्दूलके चिह्नसेयुक्त ३६ ऐसा नमुचि असुर का रथ सम्पूर्ण रथों में ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे मध्याह्नकाल में सूर्य्य शोभाको प्राप्त होताहै ३७ और वह नमुचि असुर बड़े वेगवाला और महाबली नीलेवस्त्र व सुवर्णके कवचको धारण करताहुआ ३८ व धनुषको धारणकर

ऐसे हिमवान् पर्वतकी नाईं स्थितहोताभया कि जैसे तृणको धारणकर दिग्गज स्थित होजाताहै ३९ और घूघरुओंसे शब्दायमान और प्रकाश करतेहुए सामानोंवाला व पताका तथा ध्वजाओंसे युक्त व सध्याकालके मेघकी तुल्य कांतिवाला ४० और चारचक्रोंसे युक्त व आठसौ हाथ चौडा व सुवर्णके झरोखों से युक्त व कालचक्रकी नाईं प्रकाश करताहुआ ४१ व नाना आयुधों को धारण करताहुआ व व्याघ्रोंके चर्मसे आच्छादित ४२ व सैकड़ों तर्कस व शक्ति और तोमर व गदा व मुद्गर इन हथियारोंसे युक्त ४३ व प्रकाश करतेहुए लवायमान वालोंवाले एकहजार रीछोंसे युक्त व चाँदीके पर्व्वतकी नाईं शोभायमान ४४ ऐसे रथमें मयनामा असुर स्थित होताभया व विश्वकर्मा का रचाहुआ रत्नरूपी रथमें बैठाहुआ वह बलवान् असुर ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे उदय कालमें सूर्य शोभाको प्राप्त होताहै ४५ व प्रकाश करतीहुई चादीकी विंदुओंसे शोभायमान व उज्ज्वल सुवर्ण व सुन्दरमणि इन्होंसे जडित ऐसे दशकरोड रथ मयनामा असुरके पीछे २ जातेभये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४० ॥

दोसौइकतालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् शत्रुओंके रथोंको तोड़नेवाला १ और पर्वत की तुल्यऊंचा और लोहके झरोखों से युक्त और चक्रों के शब्द से समुद्रकी नाईं गर्जताहुआ २ और गदा और परिघ और निस्त्रिंश और तोमर और फरसा और शक्ति और मुद्गर ऐसे हथियारों से सजल मेघकीनाईं पूरित ३ और एक हजार ऊंटोंसे युक्त और वायुके समान वेगवाला ऐसे लोहरूपी रथमें स्थितहोके वह पुलोमा दैत्य युद्धमें मदोन्मत्त ऐसे मामानसे युद्धके अर्थ प्रस्थान करताभया ४ और सूर्य्य की तुल्य कान्तिवाले और प्रकाश करतेहुए ऐसे साठहजार रथ पुलोमादैत्यके पीछे २ गमनकरतेभये ५ और तपाहुआ सुवर्णकी तुल्य कान्तिवाले खड्ग और ध्वजाओंसे वह पुलोमादैत्य रथमें स्थितहुआ ऐसे शोभाको प्राप्तहोताभया कि जैसे पर्वतपै स्थितहुआ सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै ६ और सुंदर सुवर्ण के पत्रों से जड़ित कालकी तुल्य ऐसी गदाको ग्रहणकर वह महात्मा पुलोमादैत्य अपनी सेनामें ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे ७•

चीध्वजा शोभाको प्राप्त होतीहै ७ व पर्वतकीतुल्य कांतिवाला और शत्रुओं के रथको भंजन करनेवाला ऐसे रथमें स्थितहोके ८ हयग्रीव संज्ञक असुरों व एक लाख रथोंको सगलेके वह हयग्रीवनाम असुर युद्धके सम्मुख स्थित होताभया ९ व सफेद पर्वतकीतुल्य प्रकाशमान व सफेद कुंडलों से भूषितहुआ हयग्रीव दैत्य रथमें स्थितहोके ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे सफेद शिखरवाला पर्वत शोभाको प्राप्त होताहै १० व अतुलबल व पराक्रमोंवाले व वृद्धिको प्राप्त होतेहुये महारथियों के पीछे २ सैकड़ों असुरों के गण ऐसे गमन करतेभये कि जैसे चलतेहुये इन्द्रके पीछे देवताओं के गण चलते हैं ११ और बड़ा बुद्धिमान् और सम्पूर्ण शास्त्रोंकाज्ञाता और सम्पूर्ण मायाओं का जाननेवाला और श्रीमान् और सैकड़ोंयज्ञोंका करता १२ व अग्निकीतुल्य कांतिवाला ऐसे गुणोंसे युक्त प्रह्लाददैत्य अपने कवचको धारण करके मेघ कीनाई गर्जतेहुये रथों के समूह से सयुक्त १३ व सुवर्ण के कुण्डलोंको धारण करतेहुये अति बलवान शूरमा इन्हों से प्रह्लाद ऐसे युक्त होताभया कि जैसे देवताओं से सयुक्त ब्रह्मा होताहै १४ व अपने पराक्रम से गर्व्वित उन्मत्त हस्तीकीनाई पराक्रम को धारण करताहुआ देवताओं की सेनापै क्षुभितकीनाई स्थित होताभया १५ व धैर्यता में समुद्रकी तुल्य धैर्यवाला व अग्निकीतुल्य प्रकाशमान सूर्यकीतुल्य तेजवाला और क्षमा में पृथ्वी के समान १६ तालकी ध्वजा से प्रकाश करताहुआ रथ में बैठाहुआ देवताओं की सेनाके प्रति जाताहुआ ऐसे प्रह्लादके पीछे २ दानवों के सैकड़ों समूह जातेभये १७ सुवर्ण के कवचोंवाले रत्नों से भूषित दिव्य भूषणों में चंदना दिक और आभूषणोंको धारण करतेहुये युद्धमें नहीं उलटे फिरनेवाले १८ सेना से जड़ित अंगोंवाले मणियोंसे जड़ित बाजुओंको धारण करतेहुये सम्पूर्ण दैत्य दिव्य रथों में ऐसे स्थित होतेभये कि जैसे आकाशमें महा ग्रह स्थित होते हैं १९ और आचारवान् जितेंद्रिय धर्म में रत सत्यवक्ता निंदासे रहित अग्नि मेघ और वायु इन्हों के तुल्य रूपको धारणकरताहुआ प्रह्लाद युद्धमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे प्रलयकालमें कालप्रभु स्थित होताहै २० व बहुत मायाओंको जानने वाला दैत्योंकी रक्षाकरनेवाला सम्पूर्ण युद्धों का जाननेवाला २१ एक नेत्र को धारण करताहुआ दीर्घभुजाओंवाला प्रकाशमान कुंडलोंको धारण करताहुआ जीमूतनाम मेघकीतुल्य कांतिवाला दिव्यमाला और चंदनको धारण करताहु-

आ२२ वह शवरनामदैत्य अपने रथमें स्थितहोके २३ मणि तथा रत्न और वैदूर्य इन्हों मे जड़ित बिजली तथा सूर्यकीतुल्य प्रकाशमान ऐसा मुकुट २४ व प्रकाशमान कवच इन्हों से ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे सन्ध्याकालके रक्त बादलसे अस्ताचल शोभाको प्राप्त होताहै २५ व कालकेतुल्य महाबली विचित्र युद्धको करनेवाले ऐसे नवलाख दैत्य शवरके पीछे २ गमन करतेभये २६ और सफेद वर्णवाले एकहजार घोड़ों से युक्त व प्रकाशमान क्रौञ्च चिह्नसे युक्त ध्वजावाला युद्धमें शोभायमान २७ व प्रकाशमान मणि और सुवर्ण के झरोखों से युक्त नानाप्रकारके पक्षियोंकी रचनासेयुक्त बिजली के प्रकाशकीतुल्य प्रकाशमान घोरशब्द को करनेवाला अत्यन्त वेगवाला ऐसे रथमें स्थितहोके शवर दैत्य शोभाको प्राप्त होताभया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायाएकचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्याय २४१ ॥

दोसौबयालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय चारचक्रोंवाला तीनसौहाथ चौड़ा सिंहकेसे मुखोंवाले महा बलवन्त ऐसे घोड़ोंसे युक्त १ भयानक अतिघोर शब्दवाले ऐसे रथके पहियों के शब्दसे सम्पूर्ण पृथ्वीको कपाताहुआ २ युद्ध की इच्छा करताहुआ शत्रुओं के पुरको जीतनेवाला ऐसा अनुह्रादनाम हिरण्यकशिपुका पुत्र रथमें बैठ युद्धको जाताभया ३ और नाना शब्दोंको करते हुये दैत्य चारोंतरफको परिवारित हुये और सोने की मालावाले करोड़हों रथ स्थितहुये ४ और परिघ भिंदिपाल प्रास पाश फरसा त्रिशूल और मुद्गर ऐसे २ नानाहथियारोंको हाथों में धारण करतेहुये ५ सुवर्णके झरोखोंवाले रथ चक्र और कवच इन्होंसे शोभायमान हुये ६ और शोभायमान ऊंचेपर्वत के समान सुवर्ण तथा रत्नों से जटित अप्रतिमेयरूप ऐसे रथ में स्थितहुआ दैत्यों का अधिपति महा पराक्रमवाला अनुह्राद शोभाको प्राप्त होताभया ७ और सम्पूर्ण आयुधों से युक्त घुंघुरू और झंडाओंसे शोभायमान वेगसे चलनेवाले एकहजार श्रेष्ठ घोड़ाओंसे युक्त ऐसे रथमें स्थितहुआ ८ अग्निके तुल्य कान्तिवाला व सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र विद्याओंमें कुशल व्यूहोंकी रचनाओंको जाननेवाला ९ ज्ञान तथा विज्ञानके तत्त्वको ऐसे जानताहुआ कि जैसे देवताओं में इन्द्र जानताहै १०

ऐसे गुणोंवाला विरोचन दैत्य सुमेरुपर्वत के तुल्य शोभाको प्राप्तहोताभया ११
और मूंगा तथा जाम्बूनद सुवर्णकी रचनाओं से चित्रितकिया हुआ १२ और
लटकतीहुई मोतियों की मालाओंसे शोभायमान ऐसे रथमें स्थितहोके युद्धके
सम्मुख जाताभया १३ और सुवर्णसे जडित हजारोंरथ व मदमें सींचेहुये देवताओं
के शत्रु प्रास पाश और गदा इन शस्त्रों को धारणकर युद्धकी इच्छा करतेहुये
१४ इन्होंसे युक्तहुआ कालपर्वतके समान शरीरवाला सूर्यके तुल्य प्रकाशमान
मुकुट और सम्पूर्ण रत्नों से जडित कवच इन्होंको धारण करताहुआ १५ बहुत
पराक्रमवाला ऐसा विरोचन का छोटाभाई जम्भनामवाला १६ तालवृक्षकी ध्वजा
से शोभायमान सुवर्ण से जडित रथमें बैठाहुआ ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया
कि जैसे सुमेरुपर्वत पै सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै १७ रणमें चतुर पराक्रमवाला
और बुद्धिमान् ऐसा जम्भनाम दैत्य देवताओंकी सेनाके प्रति युद्ध के अर्थ
वेग से ऐसे जाताभया कि जैसे वृत्रासुर के मारने को इन्द्रजाताभया १८ और
पर्वत तथा वृक्षोंको धारणकर युद्धके करनेवाले नानारूपोंको धारण करनेवाले
१९ त्रिशूलोंको धारण करनेहुये आकाशमें विचरनेवाले २० मेघोंकेसम गर्जते
हुये प्रकाशमान धुकधुकियों को धारणकर आकाशको ऐसे आच्छादित करते
हुए कि जैसे वर्षाकाल में उठेहुये मेघ आच्छादित करते हैं २१ ऐसे २ दैत्योंसे
युक्तहुआ पर्वत रूपी हथियारको धारण करताहुआ भयानक शरीर तथा भया-
नक मुखको धारण करताहुआ २२ गाड़ी के पहियों की तुल्य नेत्र तथा बहुत
बडे शरीरको धारण करताहुआ बडी २ दाढ़ और काले २ वस्त्रोंको धारण क-
रताहुआ २३ ऐसा असिलोमादानव स्वर्ग को जाताभया २४ सौ घुंघुरुओं से
शब्दायमान सम्पूर्ण उज्ज्वल वस्तुओं से प्रकाशमान और एकहजार घोडोंसे
युक्त २५ ध्वजा व रक्त पताकावाले बहुतसे रथोंसे युक्त ऐसे दिव्यरथमें स्थितहो
के २६ दैत्यों के आनन्दका बढानेवाला देवताओंका शत्रु बडे शरीरवाला लाल
मुखवाला प्रकाशमान जिह्वाको मुखसे बाहर काढ़ताहुआ २७ और ऊंचे २ रोमों
वाला महाबलवान् नीलेशरीर व लाल ग्रीवावाला मुकुट और लालवस्त्रों को
धारण करताहुआ २८ घोंटोंतक लम्बी भुजाओंवाला और बड़ा भयानक मुख
से बाहर सफेद दाढ़ोंको काढताहुआ २९ बड़ी मायाओं को धारण करनेवाला
सुवर्णके बाजुओंसे भूषित और बहुतसे मणियोंसे जडित कवच और मालाओं

को धारण करताहुआ ३० ऐसा अनायुपकापुत्र वृत्रनाममहासुर युद्धकेअर्थ स्वर्ग को जाताभया ३१ व तपेहुये सुवर्णके बिंदुओंके तुल्य पीतनेत्रोंवाला दैत्योंमें वृषभ रूपदैत्य सेनाका सरदार ३२ खिलेहुये कमलकी कांतिके तुल्य सुन्दर मुख और सफेद दांतोंवाला ऐसा वृत्रासुररथमें स्थितहुआ ३३ शोभाको प्राप्तहोताभया सूर्य व कालप्रभु रुद्र इन्होंके चक्रकीनाईं उदय होताहुआ ३४ एरुचक ऐसे नामवाला असुरसम्पूर्ण आयुधसे पूरित व प्रकाशमान ऐसे अपनेदिव्यरथमें स्थितहोके स्वर्ग को जाता भया ३५ और तिसके संग साठ हजार महारथी विचित्र युद्धके करने वाले लोह व सुवर्णके कवचोंको धारण करनेहुये ३६ रथों पै स्थित ऐसे शोभाको प्राप्त होनेहुये कि जैसे नीले मेघ शोभाको प्राप्तहोते हैं ३७ कालके तुल्य रूप लाल २ नेत्र महानलवत और क्रोधसे ओठोंको चावनेहुये ३८ भयानक शरीरोंवाले देवताओं की सेनाके मारने के अर्थ सावधान होतेहुये ३९ युद्धमें दुर्जय समुद्रके उदरकी तुल्य गभीरताको धारण करतेहुये नीले २ मुखोंवाले असुरों में श्रेष्ठ इस प्रकारसे स्वर्गको जातेहुये ४० ऐसे गर्जतेभये कि जैसे अपनी मर्यादाको छोड़ते हुये समुद्र गर्जते हैं ४१ और बहुत मायाधारी शरीर को बढ़ानेहुये मुकुटों को धारण करतेहुये ४२ सुवर्ण से भूषित अंगोंवाले हथियारोंको हाथों में धारण करतेहुये सम्पूर्ण दैत्य स्वर्गको ऐसे जातेभये कि जैसे पक्षों सहित पर्वत आकाश में जातेहों ४३ और देवताओं की सेनाको मार कवचको धारणकर ऐसे बलिके पुत्र से आज्ञा दियाहुआ ४४ वृत्रासुरका भ्राता बलनाम महा पराक्रमवाला व सुवर्णकी मालाको धारण करताहुआ ४५ बड़ी बड़ी दाढ़ोंवाला फूलोंकी माला सुन्दर कुण्डल व रक्तवस्त्रोंको धारण करताहुआ ४६ युद्धमें दुर्जय बड़े नेत्रोंवाला मुकुट धनुषको धारण करनेवाला ४७ मदोन्मत्त हस्ती और शार्दूलकेसम पराक्रमवाला बड़े तालके वृक्ष के समान ४८ वज्र पड़ने के तुल्य शब्द करनेवाला ऐसे धनुषपै बड़े वेगवाला शोभायमान बाणको धारणकर ४९ बड़े शब्दको करताहुआ सर्प के चिह्नसेयुक्त ध्वजावाला घोड़ोंसे युक्त ऐसे रथमें बैठाहुआ ऐसे शोभाको प्राप्तभया कि जैसे सन्ध्याकाल में सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै ५० और सुवर्ण के पत्रोंसे भूषित त्रिशूल और मुद्गर इन्हों से पूरित ऐसे २ हजारों रथों को सगले युद्धमें तैयारी करताभया ५१ पवनके तुल्य वेग व सुन्दर मानीवाला और खिलेहुये कमलके गर्भके तुल्य गौरवर्णवाला ऐसा बलनाम दैत्य ५२ अ-

पने रथमें स्थितहोके और बहुत वेगसे युद्ध में प्राप्तहोताभया ५३ पर्वतके तुल्य शरीर व सौ शिरों व सौ उदरोंवाला पीतमाला और पीत वस्त्रोंको धारण करता हुआ ५४ जाम्बूनद सुवर्ण से भूषित अंगोंवाला और कोमल मणिके तुल्य कांतिवाला कमलके पत्रके तुल्य नेत्रोंवाला ऐसा सिंहिकाकापुत्र राहु ५५ सुवर्णसे जडित मणि और झरोखोंकी रचनासे युक्त सौ पताकाओं से शोभायमान ५६ व श्रेष्ठ घोडों से युक्त ऐसे रथमें स्थितहोके पृथ्वीतलको कँपाताहुआ महाघोर शब्दको करताभया ५७ व मयनाम दैत्यकी रचीहुई ध्वजा मयूरके पंखों के तुल्य कान्तिवाला लोहेका कवच इन्होंको धारण करताहुआ ५८ व नाना प्रहारोंको करनेवाले प्रकाशको करतेहुये वेगवाले ऐसे रथोंसेयुक्तहुआ ५९ असुरोंका सेनापति हस्ती के तुल्य गमन करताहुआ वह राहु दैत्य शत्रुओंकी सेनाके सम्मुख ऐसे जाताभया कि जैसे अस्ताचलको सूर्य प्राप्तहोताहै ६० व मायाको धारण करनेवाले शूरवीर अस्त्रोंको धारणकरतेहुये ६१ रणमें दुर्जय व कमलके गर्भकी तुल्य कान्तिवाले मेरुपर्वतके शिखरके तुल्य शरीरको धारण करतेहुये ६२ मयनाम दैत्यके रचेहुये रथों में स्थितहोके विचरतेहुये दैत्य ऐसे शोभाको प्राप्तहोते भये कि जैसे शरदऋतुके मेघ आकाशमें विचरतेहुये शोभाको प्राप्तहोते हैं ६३ हंसोंके चिह्नयुक्त ध्वजाओंवाले सफेद दडकीतुल्य ऊंचे२शरीरोंवाले सफेद वस्त्रोंको धारणकरतेहुये ६४ सफेद मालाओंसे भूषितहुये सफेदयन्त्र व सफेद कुण्डलों से शोभायमान मोतियोंके हारोंसे देवताओंकी नाईं शोभायमान होतेहुये ६५ और महाग्रहोंके तुल्यकांतिवाले व शत्रुओंके शरीरों में रोमहर्षको उपजानेवाले ६६ और रक्त विचित्र वस्त्रोंको धारण करनेवाले विचित्र आभरणोंसे भूषित अंगोंवाले ऐसे दैत्य ६७ पुत्र पौत्र इन्हों को अपने संग लेताहुआ वह दनुवंश को बढानेवाला श्रीमान् ब्रह्माकी तुल्य तेजवाला ६८ एकहजार यज्ञोंका कर्त्ता वेदका जाननेवाला तपका करनेवाला ब्रह्मासे वरोंको प्राप्तहोताहुआ ६९ आपभी वरोंके देनेमें समर्थ ईशित्व वशित्व और महत्त्व ऐसी महासिद्धियोंसे युक्त हुआ ७० ऐसा कश्यपकापुत्र विप्रचित्ति युद्धके अर्थ कवचको धारणकर ७१ व कैलासके शिखर के तुल्य आकारवाला आठसौ हाथजोड़ा सफेद रङ्गवाले एक हजार घोड़ाओंसे युक्त ७२ सौ पताकाओंवाले नानायुद्धोंको देनेवाले ऐसे श्रेष्ठ लोकस्यविजय नाम वाले रथ में स्थितहो स्वर्गको जाताभया ७३ हम तथा इन्द्र

कुन्द इन्होंके तुल्य कांतिवाला और शोभायमान ७४ ऐसा सफेदछत्र विप्रचित्ति दैत्यपै धारण कियाहुआ ऐसे शोभायमान होताभया कि जैसे सफेद पर्व्वत के मस्तकपै स्थितचन्द्रमा शोभायमानहोताहै ७५ व एक करोडघण्टोंसे शब्दायमान व दिव्यभैंसोंसे संयुक्त बड़े मेघके तुल्य आकार वाला ७६ व ऊंटके चिह्नसे युक्त और नीले केसरके तुल्य कांतिवाली ध्वजा व नानारंगोंसे चित्रांगों वाली पताका इन्होंसे शोभायमान ७७ ऐसे उत्तम रथमें स्थितहुआ लाललाल नेत्रों वाला नीले मेघके तुल्य कांतिवाला ७८ भयानक और महाग्रह के तुल्य शरीर वाला शत्रुओं के रोमहर्ष को उपजाने वाला ७९ विचित्र माला और वस्त्रोंको धारण करताहुआ रक्त आभरणों से भूषित ८० मोटे नेत्र और भुजाओं वाला शंकुके तुल्य कानोंवाला ऊंचे शब्दको करताहुआ ८१ दानवों में मुख्य ऐसा केशीदानव बड़े उग्रतेजवाले बावनहजार रथोंको सगले युद्धके अर्थ देवताओं के प्रति जाताभया ८२ व वैडूर्य्यमणि व सुवर्णसे जडित बिजली तथा सूर्य इन्हों के तेजकेतुल्य ऐसा प्रकाशमान मुकुट केशी दैत्यका ऐसे शोभा को प्राप्तहोता भया ८३ कि जैसे दावाग्निमे जलताहुआ पर्वतका शिखर शोभाको प्राप्तहोता है ८४ तपेहुये सुवर्ण से जड़ित जूआवाला व भारका सहनेवाला गहनों से जडित और पहियों से शोभायमान ८५ सूर्यकी किरण तथा नक्षत्र तथा बिजली इन्होंकेतुल्य प्रकाशमान ऐसे रथमें स्थितहुआ श्रीमान् वह वृषपर्वा असुर ऐसे स्थित होताभया ८६ कि जैसे मेरुपर्वत के शिखरपै सूर्य स्थित होताहै ८७ व मोतियों से जडित बाजूबंद और एकहजार सुवर्ण के फूलोंसे जडित कवच व युद्धमें लेजाने के योग्य ८८ आभरण इन्होंके तेजसे मध्याह्नकाल के सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान होताभया व महाबली अंगुलियोंकी रक्षाकेअर्थ अंगुलित्राण अस्त्रको धारण करताहुआ ८९ केशुओंकेतुल्य लाल नेत्रोंको धारणकर नेत्रों को फाडताहुआ ९० सुवर्ण से जड़ित धनुषकोग्रहणकर युद्धमें स्थित होताभया ९१ व वैडूर्य व सुवर्ण से शोभायमान और बिजली के तुल्य कांतिवाला सौनल्व हाथ चौड़ा देवताओं के रथकी नाईं प्रकाशमान ९२ व [illegible] धारण करनेवाला मयनाम दैत्यका रचाहुआ ऐसे रथमें चढ़िकर युद्ध के अर्थ स्थित होताभया ९३ व हाथियों के [illegible] के तुल्य भुजाओंवाले [illegible] सुवर्ण के आभरणोंसे भूषित [illegible] ९४ [illegible]

हुये ऐसे एकहजार दैत्य बलिके रथके पीछे स्थितहोतेभये ९५ व घुंघुरुओंसेयुक्त और सैकड़ों सुवर्ण के कमलोंसे शोभायमान ९६ व सुवर्ण के विचित्र २ पुष्पोंसे युक्त ऐसी वैजयन्तीमाला को अपने कंठ में धारण करताहुआ ९७ सम्पूर्ण समृद्धियोंसे युक्त शोभायमान अपनी भुजाओं से ऐसे प्रकाशमान होताभया ९८ कि जैसे आकाशमें स्थितहुआ सूर्य प्रकाशमान होताहै ९९ और हारकी तुल्य वैजयन्तीमाला और सम्पूर्ण समृद्धियों से युक्त वह बलि ऐसे प्रकाशमान होता भया कि जैसे शरदऋतु में चन्द्रमा प्रकाशमान होता है १०० और प्रास तथा पाश और सुवर्ण से जटित ढाल खड्ग फरसा और इन्द्रके धनुषकी तुल्य कान्ति वाला धनुष १०१ और दिव्यगदा वज्र के मुखकीतुल्य शक्ति और दिव्य त्रिशूल और प्रकाशमान बाण १०२ और बाणोंसे पूरित नानाप्रकारके तरकस ये सम्पूर्ण हथियार बलिके रथमें स्थितहुये ऐसे प्रकाशमान होतेभये कि जैसे बिजली प्रकाशमान होती है १०३ और देवताओं को पीड़ा देनेवाले बड़ी २ दाढ़ोंवाले सुवर्ण मोती व मणि इन्होंसे चित्रित हुये १०४ रथमें समीप बैठेहुये बीजनाओं से बलिके पवन करतेभये १०५ अयःशिरा वाजिशिरा वराह गिरि मतङ्ग १०६ विकच जय निकुम्भ कुपथ १०७ दशदानव ये दशयोद्धा बलि के पीठकी रक्षा करने को स्थित होतेभये १०८ व शतघ्नी चक्र अशनि और शक्ति इन हथियारों को हाथों में धारण करतेहुये १०९ पवनकी तुल्य वेगवाले ऐसे हजारहां असुर पैदल बलिकी रक्षाके अर्थ अगाड़ी २ गमन करतेभये ११० व घण्टा शङ्ख झांझ डमरू व नगारा ऐसे २ बाजे बलिके प्रयाणकालमें बाजनेलगे १११ । ११२ और बहुत ऊँची सुवर्णकी वेदियों से युक्त ऐसी पताका प्रकाशमान ध्वजा सुवर्णमय छत्र और कण्ठ में सुवर्ण की माला ये सम्पूर्ण ऐसे शोभाको प्राप्त होनेलगे कि जैसे आकाशमें सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै ११३ दैत्योंमें ऋषिलोग दस्य हाथोंको जोड़तेहुये उपासना करनेलगे ११४ और वेदके वक्ता शील स्वभाव वृद्ध अवस्था वाले ऐसे पुरोहित मंत्रको जपतेहुये तिससमय ओषधियोंको ग्रहणकर बलिके अर्थ स्वस्तिवाचन करतेभये ११५ और वस्त्र सुन्दर गौ रत्न घुरुखुरी इन्होंको ब्राह्मणोंके अर्थ देताहुआ बलि ऐसे अत्यन्त शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे कुबेर शोभाको प्राप्तहोताहै ११६ और एक हजार सर्पोंकी तुल्य प्रकाशमान बहुत से घुंघुरुओंसे शब्दायमान ११७ और बहुतसे दिशा जाम्बूनद सुवर्ण से जटित

एकहजार चांदोंवाला दश हजार ताराओंवाला ११८ ऐसा वलिका रथ अग्नि की तुल्य शोभाको प्राप्त होताभया ११९ और महावलवान् बाणोंसहित धनुषको धारण करताहुआ देवताओं की सेनाको भयभीत करताहुआ १२० वेगवाले व वडे भयानकरूप को धारण करताहुआ और दैत्योंकी सेनासे समुद्ररूप हुआ १२१ ऐसा वलि तिस अपने रथमें स्थित होके देवताओं की सेनाके प्रति ऐसे चलताभया कि जैसे लोकोंके नाशके अर्थ अपनी मर्य्यादा को छोडके समुद्र चलताहै १२२ और तीनों लोकोंको त्रास देनेवाले शरीरों को धारण करतेहुये महावलवन्त धनुषोंसे ऊपरको उठातेहुये १२३ वे दैत्य वलिके अगाडी ऐसे प्रकाश होतेभये कि जैसे वनमें पर्वत प्रकाश होते हैं १२४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांद्वाचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४२॥

दोसौतैंतालिसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय दैत्यों की सेनाका विस्तार आपने सुना और अव देवताओं की सेनाका विस्तार आदिसे सुनो १ देवता तथा मरुद्गण आदित्य विश्वेदेवा साध्य २ और आठोंवसु यक्ष और रक्ष महोरग और विद्याधर गन्धर्व्व ३ और महार्णव शैल और बड़े पराक्रमवाले रुद्र यम वैश्रवण और वरुण ४ सिद्ध और पितर सैकड़ों राजर्षि योग सिद्ध ५ इन सव देवताओं को इन्द्र ऐसे आज्ञा देताभया कि हे देवताओ तुम कवचों को धारण करके दैत्योंकी सेनाका नाशकरो ६ तव वे सम्पूर्ण देवता ऐसे इन्द्रके वचनको सुनके महात्मा और इन्द्रकी तुल्य पराक्रमवाले अपने अपने कवचोंको धारण करतेभये ७ व नानाकवचोंवाले और विचित्र कवच व ध्वजाओंवाले मदोन्मत्त हाथियोंकीनाईं नानाप्रकारसे युद्धों को करनेवाले ८ ऐसे २ देवताओं मेंसे कोई व्याघ्रोंपै कोई रथोंपै कोई हाथियोंपै कोई वैलोंपै ९ हरिश्मश्रुवाला हरितनेत्रवाला ऐसे हाथी के चिह्नसे युक्त ध्वजावाला हरितरंग घोड़ोंसे युक्त ऐसे रथपै स्थितहो युद्धके प्रति जाताभया १० व सूर्यकीतुल्य प्रकाशमान जाम्बूनद सुवर्ण के झरोखा सुवर्णकी रज्जुओं से भूषित ११ विजलीकी नाईं प्रकाशमान कैलासके शिखरकीतुल्य हजारहा ताराओंसे शोभायमान १२ प्रसन्नगात देवताओंकी मालाओंसे मंडित ऊंची ध्वजावाला १३ तेजरूप और पवन वेग-

वाला परमेश्वरके लिये अगाते रचाहुआ १४ ऐसे रथमें स्थितहोके वह शची-
पति लोककापति देवताओंकाईश १५ वज्रकाभर्त्ता सम्पूर्ण भुवनका गोप्ता ऐसा
महात्मा इन्द्र युद्धके अर्थ तय्यार होकर गमन करतामया १६ व अग्नि व सूर्य
की तुल्य प्रकाशमान एकहजार ताराओं मे युक्त ऐसा कवच सूर्यकीतुल्य प्रका-
शमान मुकुट सुवर्णयुक्त वैजयतीमाला इन्होंको धारणकर १७ व सूर्यकी किरणों
कीतुल्य प्रकाशमान पैनी और भयानक अनेक धाराओंवाला असुरों के शरीर
को भोजन करनेवाला सौ पर्वों से भयानक रूपवाला ऐसा त्वष्टाका रचाहुआ
वज्र धारणकर १८ ग्रहोंकी कांतिकेतुल्य कांतिवाले दोवज्र और बडीभयानक
अमोघ शक्ति चक्र धनुष इन्होंको ग्रहणकर इन्द्र युद्धकेअर्थ प्राप्तहुआ और खड्ग
और व्याघ्रके चर्म से मढीहुई ढाल १६ व क्षीरोद समुद्र से निकलेहुये चन्द्रमा
सूर्य नक्षत्र और बिजली इन्होंकी कांतिकी तुल्य कांतिवाले ऐसे आभूषण २०
इन्होंको अदिति के दियेहुये कुंडलों से भूषित दिशा और विदिशाओं को प्र-
काश करताहुआ २१ एकहजार नेत्रोंवाला इन्द्र युद्धके सम्मुख स्थितहुआ ऐसे
शोभायमान होतामया कि जैसे शरदऋतु में मेघोंकासमूह शोभाको प्राप्तहोता
है २२ व अत्रि वशिष्ठ जमदग्नि और्व्व वृहस्पति नारद पर्व्वत ये सम्पूर्ण ऋषि
जयरूप आशीर्वादों को देतेहुये २३ व सुन्दर वचनों से युद्धके अर्थ जातेहुये
इन्द्रकी स्तुति करतेभये २४ व विश्वेदेवा, सम्पूर्ण मरुद्गण, साध्य, आदित्यों के
२५ व देवताओं के गण ये सम्पूर्ण इन्द्रके पीछे २ जातेभये २६ व महर्षि सुरर्षि
राजर्षि ये सम्पूर्ण प्रकाशमान २७ त्रिशूल फरसा धनुष सूर्यकी किरणोंकीतुल्य
प्रकाशमान सुवर्ण के कवच इन्होंको धारणकर इन्द्रके पीछे २ जातेभये २८ व
एकहजार घोड़ों से युक्त बहुत मोलवाले ऐसे रथमें स्थित हो २९ प्रकाशमान
गदाको धारणकर वह कुबेर युद्धके अर्थ जातामया ३० व रात्रि में विचरनेवाले
धूमाकी तुल्य शरीरोंवाले प्रकाशमान नानाप्रकारके हथियारों को ग्रहण करते
हुये ३१ लाल २ नेत्रोंवाले अंजनकी तुल्य वर्णोंवाले प्रास व गदा ऐसे २ ह-
थियारोंको हाथोंमें धारण करतेहुये ३२ ऐसे रक्ष और यक्ष अपने राजाकुबेरके
अगाड़ी २ जातेभये ३३ व पुण्यात्मा प्राणोंकापति धर्मधारियों में श्रेष्ठ वह धर्म
राज बिजलियोंकी तुल्य कांतिवाला सौ घोड़ों से युक्त और सूर्यकी तुल्य प्रका-
शमान ऐसे रथमें स्थित होके युद्ध में जातामया ३४ पापों से दंडित नरों से

प्रकाशमान और नानाप्रकारके आयुधोंको हाथों में धारणकरतेहुये ऐसे पितर धर्मराज के पीछे २ गमन करतेभये ३५ और वह धर्म्मराज सम्पूर्णलोकों का अकुशरूप दडको धारणकर उत्पलसज्ञक सुवर्णमय कमलों की मालाको कंठमें धारणकर ३६ असुरों के मेद मज्जा मास रुधिर इन्हों से भीगाहुआ और तेज रूप मुद्गरको धारणकर सपूर्ण ३७ असुरोंके मृत्युकी इच्छा करताहुआ व्याधियों के गणों से युक्तहुआ सम्पूर्ण असुरों के मृत्युके अर्थ ऐसे बुद्धि धारण करताभया कि जैसे व्याधियोंका पति काल प्रभु धारण करताहै ३८ व वैडूर्य मोती मणि इन्हों से भूषित अंगोंवाला तेजमय हाथों में फासीको ग्रहण करताहुआ चादी के बाजुओं को भुजाओं में धारण करताहुआ ३९ कैलास के शिखरकी तुल्य शरीरवाला समुद्रकापति अमृतका पीनेवाला सर्पो व अपने पुत्रोंसे रक्षा किया हुआ ४० जलके देवताओं से अन्वियमानहुआ जल के जीवों से सेवित ऋषियों से स्तुति कियाहुआ और नागों से पूजित ४१ । ४२ ऐसा वरुण देवता तीन शिरोंवाले सर्पों से युक्त और सुवर्ण से जडित कुन्द व चन्द्रमा की तुल्य कान्तिवाले ४३ ऐसे रथमें स्थितहोके युद्धके अर्थ जाताभया तिससमय सम्पूर्ण प्राणी हर्षितहुये ४४ व हाथों की अजलियों को जोडतेहुये युद्धके अर्थ जाते हुये वरुणको चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशमान देखतेभये ४५ और धाता अर्य्यमा अश भग विवस्वान् पर्ज्जन्य मित्र शशी त्वष्टा विश्वकर्मा व पूषा ये सम्पूर्ण देवता ४६ व कोई रथ सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान व कोई अग्निकी तुल्य व कोई चन्द्रमाकी तुल्य कान्तिवाला कोई बिजलीकी तुल्य प्रकाशमान ४७ कोई नीले मेघकी तुल्य कान्तिमान व कोई कालेलोहेकी तुल्य कान्तिमान ऐसे २ रथों में स्थितहोके दिव्य व प्रकाशमान व त्वष्टाके रचेहुये ४८ ऐसे कवचों को धारण कर व सुवर्ण की तुल्य कमलोंकी मालाओंको धारणकर युद्धके अर्थ जातेभये ४९ व महानुभाव उत्तम रूपवाले धर्मधारियों में श्रेष्ठ सुवर्ण कैसे वर्णवाले ऐसे अश्विनीकुमार देवता दोनों अपने सुन्दर रथों में स्थितहोके रणमें जातेभये ५० व मनुके पुत्र व आठोंवसु ये सम्पूर्ण बलवन्त देवता गण और नागोंपै स्थितहो हाथोंमें पैनेर खड्गोंको धारणकर दैत्योंके मारने अर्थ युद्धमें जातेभये ५१ व शुक्ल व धूम्रवर्णोवाले व सफेद बैलों पै स्थितहुये ५२ व महान् पराक्रमोंवाले गन्धर्व-गणसे युक्त अपने अत्यन्त तेजों से प्रकाशमान होतेहुये ५३ व हाथों में नाना

हथियारोंको धारण करतेहुये मानो लोकोंको दग्धकरतेहुये ५४ ऐसे सम्पूर्ण रुद्र अपनी सेनाओं को सगले प्रकाशमान मालाओं को कण्ठमें धारण करतेहुये युद्धके अर्थ ऐसे जातेभये ५५ कि जैसे बिजलियों से विद्योतमानहुये मेघ जाते हैं और तपसे प्रकाशमान होतेहुये ५६ उत्तम पराक्रमवाले सूर्यकी किरणोंकी तुल्य प्रकाशवाले युद्धमें बडे दुःखसे उलटे मुड़नेवाले ५७ बड़े उत्कटबलोंवाले कमलोंकी मालाओंवाले वैडूर्य मोती मणि व सुवर्णमय रज्जु इन्होंकी रचना से प्रकाशमान रथों में स्थित होतेहुये ५८ नाना आयुधों से व्याप्तहुये और सुवर्ण के झरोखों से चित्रित अत्यन्त निर्मल व अग्निकी तुल्य प्रकाशमान ऐसे चचलायमान सफ़ेद छत्रों से शोभायमान होतेहुये ५६ व घुघुरुओं से युक्त कवच व ध्वजाओंको धारण करतेहुये ऐसे विश्वेदेवा ६० वायुकी तुल्य वेगवाले घोड़ा और कैलासके शिखरकी तुल्य महाबलवन्त ऐसे हाथी इन्हों पे स्थितहो युद्धमें जातेहुये प्रलयकाल की बिजली की नाईं प्रकाशमान होतेभये ६१ व महाप्रभावोंवाले अपने आधीन चक्रोंवाले प्रकाशमान मुखोंवाले ६२ व जाम्बूनद सुवर्ण से भूषित अंगोंवाले गङ्गाके प्रवाहकी तुल्य बलोंवाले दिशा और विदिशाओं को प्रकाश करतेहुये महाबलिष्ठ और जयकारियों में श्रेष्ठ ६३ अष्टभुजाओंवाले अग्नि व सूर्यकी तुल्य प्रभावोंवाले और वेदके वक्ताओंको नमस्कार कियेहुये इन्द्रसहित देवताओं से पूजेहुये ६४ गन्धर्वों के संग जिन्हों के पीछे गम्यमानहैं ऐसे साध्य देवता युद्धके अर्थ जातेभये ६५ वैडूर्य रत्न स्फटिक सुवर्ण और ध्वजा इन्हों से शोभायमान ६६ अत्यन्त प्रकाशमान ऐसा देवताओंका रूप दैत्यों के वधके अर्थ होताभया ६७ व अत्यन्त रत्न कवच व ध्वजा इन्हों से शोभायमान वे साध्य देवता शङ्खके शब्दकी तुल्य व सिंहोंकी तुल्य गर्जतेहुये बड़ी शोभाको प्राप्तहोते भये ६८ व अत्यन्त पराक्रमोंवाले उत्कटबलोंवाले महामेघ की समान वर्णवाले मेघोंकी समान गर्जतेहुये ६६ असुरों को मारनेवाली गदाओंको ग्रहण करतेहुये रणमें मदोन्मत्त और चन्दन से चर्चितहुये सुगंधियुक्त माला व रत्न इन्हों से भूषित अङ्गोंवाले ७० व युद्धमें बाहुओं से लड़नेवाले प्रकाशमान सुंदर भुजाओंवाले क्रोध से जलनेवालों व सुवर्णयुक्त कमलों की मालाओं को धारण करतेहुये इच्छापूर्वक आयुध और कवचोंको धारण करतेहुये ७१ वैडूर्य और सुवर्ण इन्हों से शोभायमान कवचोंसे

धारण करतेहुये ऐसे मरुतों के गण युद्धके अर्थ जातेभये ७२ व सूर्यकी किरणों की तुल्य प्रकाशमान सुवर्णकी वेदियों से युक्त ऐसी ऊंची २ ध्वजाओं से शोभायमान उग्रतेजवाली सिंहों की तुल्य गर्जतीहुई युद्धके अर्थ जातीभई ७३ दैत्यों के वधकेअर्थ युद्धको जाताहुआ इन्द्रकी सुंदर महाप्रभाववाली और भयानक रूपवाली ऐसी सेना होतीभई ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २४३ ॥

दोसौचवालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय तिससे उपरांत देवता और असुरोंका ऐसे सगम होनाभया कि जैसे प्रलयकालमें अपनी मर्यादाको छोड़ समुद्र परस्पर में मिलजाते हैं १ व नानाप्रकार के आयुधों से प्रकाशित अगोंवाले व महाबलवंत व धनुषों को सावधान करतेहुये हाथियों के शुंडोंकेसे भुजाओंवाले मेघोंकी तुल्य गर्जतेहुये २ धनुषोंको टकोरतेहुये सूर्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशवाले चक्रोंको चलातेहुये घोररूप अशनि खड्ग व वज्रकेसे मुखवाली शक्ति ३ व सुवर्ण के पत्रों से जटित गदा व धनुष व मुद्गर व त्रिशूल व वृक्ष व ऐसे २ हथियारोंको ग्रहणकर शूरवीर रणमें सिंहोंकी तुल्य गर्जतेभये ४ तिस समय हनन करतेहुये देवता और दैत्यों का परस्परमें द्वंद्व युद्ध होनेलगा ५ व महाबलवाला देवताओं में श्रेष्ठ ऐसा सावित्रनाम पवन बाणासुर के संग युद्ध करताभया ६ व महासुर रण में बडाउग्र युद्ध करनेवाला ऐसा अनायुषाकापुत्र वलनाम ध्रुवनाम वसुकेसग युद्ध करताभया ७ व अपनी सेनासे युक्त पर्व्वतके तुल्य शरीरवाले कवचको धारण करताहुआ ऐसा पुलोमादैत्य वलिनाम वायुके सङ्ग युद्ध करताभया ८ व सपूर्ण सेनासेयुक्त कालकीनाईं मुखको फाड़ताहुआ असुरों में श्रेष्ठ ऐसा नमुचिनाम असुर धरनाम देवताकेसङ्ग युद्ध करताभया ९ व देवताओं में श्रेष्ठ ऐसा विश्वकर्मा मयनामा दैत्यके संग युद्ध करताभया १० व शूरवीर अमित पराक्रमोंवाला व सूर्य्यकी सम तेजवाला ऐसा पूषादेवता के सग हयग्रीव नागदैत्य युद्ध करताभया ११ व महापराक्रमवाला बड़ी मायाओंवाला युद्धमें मदोन्मत्त ऐसा शम्बरदैत्य भगनाम देवताके संग युद्ध करताभया १२ व दैत्यों में चन्द्रमा व सूर्य्यरूप ऐसा शरभ व शलभनामदैत्य अपने शि-

हथियारोंको धारण करतेहुये मानो लोकोंको दग्धकरतेहुये ५४ ऐसे सम्पूर्ण अ अपनी सेनाओं को सगले प्रकाशमान मालाओं को कंठमें धारण करतेहुये युद्धके अर्थ ऐसे जातेभये ५५ कि जैसे बिजलियों से विद्योतमानहुये मेघ जाते हैं और तपसे प्रकाशमान होतेहुये ५६ उत्तम पराक्रमवाले सूर्यकी किरणोंकी तुल्य प्रकाशवाले युद्धमें बड़े दुःखसे उलटे मुड़नेवाले ५७ बड़े वल्कलवस्त्रवाले कमलोंकी मालाओंवाले वैडूर्य मोती मणि व सुवर्णमय रज्जु इन्होंकी रचना मे प्रकाशमान रथों में स्थित होतेहुये ५८ नानाशस्त्रायुधों से व्याप्तहुये और सुवर्ण के झरोखों से विचित्र अत्यन्त निर्मल व अग्निकी तुल्य प्रकाशमान ऐसे चञ्चलायमान सफ़ेद छत्रों से शोभायमान होतेहुये ५९ व घुघुरुओं से युक्त कवच व ध्वजाओंको धारण करतेहुये ऐसे विश्वेदेवा ६० वायुकी तुल्य वेगवाले घोड़ा और कैलासके शिखरकी तुल्य महावलवन्त ऐसे हाथी इन्हों पै स्थितहो युद्धमें जातेहुये प्रलयकाल की बिजली की नाईं प्रकाशमान होतेभये ६१ व महाप्रभावोंवाले अपने आधीन चक्रोंवाले प्रकाशमान मुखोंवाले ६२ व जाम्बूनद सुवर्ण से भूषित अंगोंवाले गङ्गाके प्रवाहकी तुल्य बलोंवाले दिशा और विदिशाओं को प्रकाश करतेहुये महाबलिष्ठ और जयकारियों में श्रेष्ठ ६३ अष्टभुजाओंवाले अग्नि व सूर्यकी तुल्य प्रभावोंवाले और वेदके वक्ताओंको नमस्कार कियेहुये इन्द्रसहित देवताओं से पूजेहुये ६४ गन्धर्वों के गण जिन्हों के पीछे गम्यमानहैं ऐसे साध्य देवता युद्धके अर्थ जातेभये ६५ वैडूर्य रत्न स्फटिक सुवर्ण और ध्वजा इन्हों से शोभायमान ६६ अत्यन्त प्रकाशमान ऐसा देवताओंका रूप दैत्यों के वधके अर्थ होताभया ६७ व अत्यन्त घन कवच व ध्वजा इन्हों से शोभायमान वे साध्य देवता शङ्ख के शब्दकी तुल्य व सिंहोंकी तुल्य गर्जतेहुये बड़ी शोभाको प्राप्तहोते भये ६८ व अत्यन्त पराक्रमोंवाले उत्कट दन्तोंवाले महामेघ की समान वर्णवाले मेघोंकी समान गर्जतेहुये ६९ असुरों को मारनेवाली गदाओंको ग्रहण करतेहुये रणमें मदोन्मत्त और चन्दन से चर्चितहुये सुगन्धियुक्त माला व वस्त्र इन्हों से भूषित अङ्गोंवाले ७० व युद्धमें चतुराई से लड़नेवाले प्रकाशमान सुंदर भुजाओंवाले क्रोध से रक्तनेत्रोंवाले व सुवर्णयुक्त कमलों की मालाओं को धारण करतेहुये इन्द्रायुधरूपी आयुध और कवचोंको धारण करतेहुये ७१ वैडूर्य और सुवर्ण इन्हों से शोभायमान कवचोंमें

धारण करतेहुये ऐसे मरुतों के गण युद्धके अर्थ जातेभये ७२ व सूर्यकी किरणों की तुल्य प्रकाशमान सुवर्णकी वेदियों से युक्त ऐसी ऊंची २ ध्वजाओं से शोभायमान उग्रतेजवाली सिंहों की तुल्य गर्जतीहुई युद्धके अर्थ जातीभई ७३ दैत्यों के वधकेअर्थ युद्धको जाताहुआ इन्द्रकी सुंदर महाप्रभाववाली और भयानक रूपवाली ऐसी सेना होतीभई ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २४३ ॥

दोसौचवालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय तिससे उपरांत देवता और असुरोंका ऐसे संगम होताभया कि जैसे प्रलयकालमें अपनी मर्यादाको छोड़ समुद्र परस्पर में मिलजाते हैं १ व नानाप्रकार के आयुधों से प्रकाशित अंगोंवाले व महाबलवंत व धनुषों को सावधान करतेहुये हाथियों के शुंडोंकेसे भुजाओंवाले मेघोंकी तुल्य गर्जतेहुये २ धनुषोंको टंकोरतेहुये सूर्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशवाले चक्रोंको चलातेहुये घोररूप अशनि खड्ग व वज्रकेसे मुखवाली शक्ति ३ व सुवर्ण के पत्रों से जटित गदा व धनुष व मुद्गर व त्रिशूल व वृक्ष व ऐसे २ हथियारोंको ग्रहणकर शूरवीर रणमें सिंहोंकी तुल्य गर्जतेभये ४ तिस समय हनन करतेहुये देवता और दैत्यों का परस्परमें द्वंद्व युद्ध होनेलगा ५ व महाबलवाला देवताओं में श्रेष्ठ ऐसा सावित्रनाम पवन बाणासुर के संग युद्ध करताभया ६ व महासुर रण में बडाउग्र युद्ध करनेवाला ऐसा अनायुषाकापुत्र बलनाम ध्रुवनाम वसुकेसंग युद्ध करताभया ७ व अपनी सेनासे युक्त पर्व्वतके तुल्य शरीरवाले कवचको धारण करताहुआ ऐसा पुलोमादैत्य बलिनाम वायुके सङ्ग युद्ध करताभया ८ व संपूर्ण सेनासेयुक्त कालकीनाईं मुखको फाड़ताहुआ असुरों में श्रेष्ठ ऐसा नमुचिनाम असुर धरनाम देवताकेसङ्ग युद्ध करताभया ९ व देवताओं में श्रेष्ठ ऐसा विश्वकर्मा मयनामा दैत्यके संग युद्ध करताभया १० व शूरवीर अमित पराक्रमोंवाला व सूर्य्यकी सम तेजवाला ऐसा पूषादेवता के संग हयग्रीव नागदैत्य युद्ध करताभया ११ व महापराक्रमवाला बड़ी मायाओंवाला युद्धमें मदोन्मत्त ऐसा शम्बरदैत्य भगनाम देवताके संग युद्ध करताभया १२ व दैत्यों में चन्द्रमा व सूर्य्यरूप ऐसा शरभ व शलभनामदैत्य अपने शि-

शिरनाम अस्त्रको ग्रहण कर चन्द्रमा के संग युद्ध करतेभये १३ व बलिरश्मि विरोचन नामदैत्य साध्य सज्ञावाला व विष्वक्सेन नाम ऐसा देवताके संगयुद्ध करताभया १४ व बड़े तेजवाला ऐसा हिरण्यकशिपुका पुत्र कुम्भनाम अपना भाम हथियारको ग्रहण कर अष्टदेवताके संग युद्धकरताभया १५ व प्रकाशमान मुखवाला पर्व्वतको धारण करताहुआ ऐसा असिलोमा दैत्य बलिनाम पवन देवताके संग युद्ध करताभया १६ व अनायुषाकापुत्र वृत्रासुर नाम देवताओं का वैद्य अश्विनीकुमारों के संग १७ चक्रको धारण करताहुआ देवताओं का शत्रु ऐसा एकचक्रनाम दैत्य साध्यदेवताके संग युद्ध करताभया १८ पीतनेत्रों वाला वृत्रासुरका भ्राता ऐसा बलनाम महासुर मृगव्याधनाम रुद्रके संग युद्ध करताभया १६ और विकृत आकारवाला सौ शिरोंवाला बड़े उदरवाला ऐसा राहुनाम दैत्य अजेकपाद देवता के संग युद्ध करताभया २० और दानवों में श्रेष्ठ वर्षाकाल के मेघों की तुल्य शरीरवाला ऐसा केशीदैत्य धनेश्वर देवता के संग युद्ध करताभया २१ निष्कुम्भनाम विश्वेदेवा देवता के संग वृषपर्व्वानाम दानव युद्धकरताभया २२ और महापराक्रमी अपने पुत्रोंसे युक्त रणमें प्रभुकी नाईं स्थितहुआ २३ ऐसा प्रह्लाद कालदेवता के संग युद्ध करताभया २४ और महाबलयुत देवताओंकी सेनाको कोपकरताहुआ ऐसा अनुह्रादनाम दैत्य कुबेरके संग युद्ध करताभया २५ और दैत्यों के आनन्दका करनेवाला युद्ध को चाहताहुआ ऐसा विप्रचित्तिदैत्येन्द्र वरुण महात्मा के संग युद्ध करताभया २६ और देवताओंका राजा महाबली व महात्मा ऐसे इन्द्रकेसंग बलवान बलिनाम दैत्य युद्धकरताभया २७ और शेषदेवता व दैत्य रणमें गर्जतेहुये २८ प्रास म द्गर बाण और शक्ति इन हथियारोंसे परस्परमें हनन करतेभये २६ निरासमय सातोंपवन क्षोभको प्राप्तहोतेभये और पर्वत फटनेलगे ३० व समुद्रोंको सोखतेहुये सातसूर्य तपनेलगे और पवनोंमें गमनकरीहुई ३१ वर्षाओंकी धारा पड़नेलगी पेर्य्यै पै इन्द्रके धनुषसे अंकितहुये ऐसे महामेघ आकाशमें उठनेलगे ३२ और सम्पूर्णप्राणी शब्द करनेलगे सम्पूर्णदिशा अन्धकारसे युक्तहोगईं देवताओं के अन्याय व क्रूरता ऐसा प्रलयका सूचक महाउत्पात होनेलगा ३३ और आकाश व दिशा पृथ्वी और स्वर्ग ये सम्पूर्ण धूलिसे नहीं दीखतेभये ३४ और धुवाओंसे युक्त अत्यन्त भयानक पवन चलनेलगे व सम्पूर्ण दिशाओंमें अंध.

कार होताभया और पृथ्वी तथा आकाश इन्होंमें ईश्वरके रचेहुये ३५ और भी महाउत्पात दीखनेलगे व मणिमय जटित थाभोंसेयुक्त सुन्दर प्रकाश करताहुआ ३६ हजारहों प्राणियों से युक्त तपेहुये सुवर्ण की रस्सियों से जटित सैकड़ों भेरियोंके शब्दोंसे शब्दायमान ३७ नक्षत्र और चन्द्रमा इन्होंकी किरणोंके तुल्य प्रकाशमान मणि,चन्द्रमा और सूर्य ३८ इन्हेंसे शोभायमान ऐसे अपने विमान में स्थितहो अङ्गों सहित चारोंवेद विद्या सिद्ध और श्रेष्ठऋषि इन्हों को सगले देवता और दैत्यों के युद्धको देखताभया ३९ तिस विमान में स्थितहुये पुलह पुलस्त्य मरीचि भृगु और अंगिरा ये सम्पूर्ण ब्रह्मा के पुत्र सामवेदकी ऋचाओं से स्तुति करतेहुये सेवन करतेभये ४० और अग्नि व यज्ञो के देवता अन्य वहुत से प्राणियों से सम्पूर्ण देवताओं का गुरु भुवनका स्वामी और महानुभाव ऐसे ब्रह्माको सेवन करतेभये ४१ महर्षियोंमें मुख्य २ महर्षि वैखानस और देवताओं के पुरोहित ये सम्पूर्ण युद्ध देखने की इच्छा करतेहुये रणभूमि में जातेभये ४२ सूर्यकीसीकांतिवाले और वज्ररूपी आभूषणोंसे भूषित अङ्गोंवाले ऐसे छ ४३ योगेश्वर व नारायण और नरदेव ये सम्पूर्ण विमानों में अंतर्हितहुये युद्ध को देखतेभये ४४ और चारोंवेदोंको धारण करनेवाले चन्द्रमाकीसी कांतिवाले ऐसे चारोंमुखोंसे ४५ ब्रह्मा दिशाओंको ऐसे प्रकाश करताभया कि जैसे नवीन उदयहुआ चन्द्रमा प्रकाश करताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४४ ॥

दोसौपैंतालीसका अध्याय॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय अपने शब्दसे त्रिलोकीको चलायमान करतीहुई दोनोंसेनाओं का फिर युद्ध प्रवृत्तहोताभया १ व गोमुख व आडंवर व भेरी मुरज व झर्झरी व डिंडिम इनबाजाओंका महान् शब्द सुननेलगा २ व रोमहर्षोंको उपजानेवाला अत्यंत शब्दोंवाला स्वर्गमें गीयमान शूरवीरों से प्रशंसा कियाहुआ ३ ऐसा देवता व दैत्यों का रणभूमि में यज्ञरूपी युद्धहोनेलगा ४ व युद्धयज्ञका प्रह्लाद दैत्य नेता व विरोचन अध्वर्यु होतेभये ५ व नमुचिदैत्य होताभया वृत्रासुर उपकल्पक हुआ और अपने पिताके बराबर ६ अथवा अधिक बलोंवाले सम्पूर्ण दैत्य तिस यज्ञकर्म में मन्त्रदृष्टा होतेभये और

शिरनाम अस्त्रको ग्रहणकर चन्द्रमा के संग युद्ध करतेभये १३ व बलिकापिता विरोचन नामदैत्य साध्य संज्ञावाला व विष्वक्सेन नाम ऐसा देवताके संगयुद्ध करताभया १४ व बड़े तेजवाला ऐसा हिरण्यकशिपुका पुत्र कुजम्भनाम अपना प्रास हथियारको ग्रहणकर अश्वदेवताके संग युद्धकरताभया १५ व प्रकाशमान मुखवाला पर्व्वतको धारण करताहुआ ऐसा असिलोमा दैत्य बलिनाम पवन देवताके संग युद्ध करताभया १६ व अनायुषाकापुत्र वृत्रासुर नाम देवताओं का वैद्य अश्विनीकुमारों के संग १७ चक्रको धारण करताहुआ देवताओं का शत्रु ऐसा एकचक्रनाम दैत्य साध्यदेवताके संग युद्ध करताभया १८ पीतनेत्रों वाला वृत्रासुरका भ्राता ऐसा बलनाम महासुर मृगव्याधनाम रुद्रके संग युद्ध करताभया १६ और विकृत आकारवाला सौ शिरोंवाला बड़े उदरवाला ऐसा राहुनाम दैत्य अजैकपाद देवता के संग युद्ध करताभया २० और दानवों में श्रेष्ठ वर्षाकाल के मेघों की तुल्य शरीरवाला ऐसा केशीदैत्य धनेश्वर देवता के संग युद्ध करताभया २१ निष्कुम्भनाम विश्वेदेवा देवता के संग वृषपर्व्वानाम दानव युद्धकरताभया २२ और महापराक्रमी अपने पुत्रोंसे युक्त रणमें प्रभुकी नाईं स्थितहुआ २३ ऐसा प्रह्लाद कालदेवता के संग युद्धकरताभया २४ और महाबलवंत देवताओंकी सेनाको कोपकराताहुआ ऐसा अनुह्लादनाम दैत्य कुबेरके संग युद्ध करताभया २५ और दैत्यों के आनन्दका करनेवाला युद्ध को चाहताहुआ ऐसा विप्रचित्तिदैत्येंद्र वरुण महात्मा के संग युद्धकरताभया २६ और देवताओंका राजा महाबली व महात्मा ऐसे इन्द्रकेसंग बलवान् बलिनाम दैत्य युद्धकरताभया २७ और शेषदेवता व दैत्य रणमें गर्जतेहुये २८ प्रास खड्ग बाण और शक्ति इन हथियारोंसे परस्परमें हनन करतेभये २६ तिससमय सातोंपवन क्षोभको प्राप्तहोतेभये और पर्वत फाटनेलगे ३० व समुद्रोंको सोखतेहुये सातसूर्य तपनेलगे और पवनोंसे मथनकीहुई ३१ वर्षाओंकी धारा पड़नेलगी पेटों पै इन्द्रके धनुषसे अङ्कितहुये ऐसे महामेघ आकाशमें उठनेलगे ३२ और सम्पूर्णप्राणी शब्द करनेलगे सम्पूर्णदिशा अंधकारसे युक्तहोती भई देवताओं के अन्याय व क्रूरता ऐसा प्रलयका सूचक महाउत्पात होनेलगा ३३ और आकाश व दिशा पृथ्वी और सूर्य्य ये सम्पूर्ण धूलिसे नहीं दीखनेभये ३४ और धुवांओंसे युक्त अत्यन्त भयानक पवन चलनेलगे व सम्पूर्ण दिशाओंमें अभ-

कार होताभया और पृथ्वी तथा आकाश इन्होंमें ईश्वरके रचेहुये ३५ और भी महाउत्पात दीखनेलगे व मणिमय जटित थाम्भोंसेयुक्त सुन्दर प्रकाश करताहुआ ३६ हजारहों प्राणियों से युक्त तपेहुये सुवर्ण की रस्सियों से जटित सैकड़ों भेरियोंके शब्दोंसे शब्दायमान ३७ नक्षत्र और चन्द्रमा इन्होंकी किरणोंके तुल्य प्रकाशमान मणि,चन्द्रमा और सूर्य ३८ इन्होंसे शोभायमान ऐसे अपने विमान में स्थितहो अङ्गों सहित चारोंवेद विद्या सिद्ध और श्रेष्ठऋषि इन्हों को सगले देवता और दैत्यों के युद्धको देखताभया ३९ तिस विमान में स्थितहुये पुलह पुलस्त्य मरीचि भृगु और अंगिरा ये सम्पूर्ण ब्रह्मा के पुत्र सामवेदकी ऋचाओं से स्तुति करतेहुये सेवन करतेभये ४० और अग्नि व यज्ञों के देवता अन्य बहुत से प्राणियों से सम्पूर्ण देवताओं का गुरु भुवनका स्वामी और महानुभाव ऐसे ब्रह्माको सेवन करतेभये ४१ महर्षियोंमें मुख्य २ महर्षि वैखानस और देवताओं के पुरोहित ये सम्पूर्ण युद्ध देखने की इच्छा करतेहुये रणभूमि में जातेभये ४२ सूर्यकीसीकांतिवाले और वचनरूपी आभूषणोंसे भूपित अङ्गोंवाले ऐसे ब्र· ४३ योगेश्वर व नारायण और नरदेव ये सम्पूर्ण विमानों में अंतर्हितहुये युद्ध को देखतेभये ४४ और चारोंवेदोंको धारण करनेवाले चन्द्रमाकीसी कांतिवाले ऐसे चारोंमुखोंसे ४५ ब्रह्मा दिशाओंको ऐसे प्रकाश करताभया कि जैसे नवीन उदयहुआ चन्द्रमा प्रकाश करताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वेभाषायांचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४४ ॥

दोसौपैंतालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय अपने शब्दसे त्रिलोकीको चलायमान करतीहुई दोनोंसेनाओं का फिर युद्ध प्रवृत्तहोताभया १ व गोमुख व आडंबर व भेरी मुरज व झर्झरी व डिंडिम इनबाजाओंका महान् शब्द सुननेलगा २ व रोमहर्षोंको उपजानेवाला अत्यन्त शब्दोंवाला स्वर्ग में गीयमान शूरवीरों से प्रशंसा कियाहुआ ३ ऐसा देवता व दैत्यों का रणभूमि में यज्ञरूपी युद्धहोनेलगा ४ व युद्धयज्ञका प्रह्लाद दैत्य नेता व विरोचन अध्वर्यु होतेभये ५ व नमुचिदैत्य होताबना वृत्रासुर उपस्तम्भक हुआ और अपने पिताके बराबर ६ अथवा अधिक बलोंवाले सम्पूर्ण दैत्य नियम गज़रूपी सभ्य होनेलगे और

बाणासुर यष्टाहुआ ७ और ऐंद्र व पाशुपत व ब्रह्म ऐसा दुर्जय और युद्धरूपी यज्ञमें अनुह्लाद दैत्यके प्रेरण कियेहुये सम्पूर्ण दैत्य श्रेष्ठ प्रकारसे वर्तते भये ८ शोभायमान और शत्रुओंकेभय उपजानेवाला गर्जताहुआ देवताओंकी सेनाओंको रणसे भगाताहुआ ऐसा श्रीमान् मयनाम दैत्य उद्गाता होताभया ९ महाबली अग्निकी तुल्य कांतिमान् जयरूप होमोंसे युक्त ऐसा बलिदैत्य ब्रह्मा होताभया १० और रणरूपी जलतीहुई अग्निमें रथरूपी वेदी में और सुन्दर संस्कार कियाहुआ वैररूपी ईंधनको वे सम्पूर्ण दैत्य होमतेभये ११ और बलदैत्य व बलकदैत्य और पुलोमादैत्य ये सपूर्ण रणभूमिको चमसपात्र विधानकर युद्धरूपी यज्ञको करतेभये १२ चित्र विचित्र दण्डाओंवाले उज्ज्वल और बड़े ऐसे रथोंको बड़े फलरूपी युद्धयज्ञ में यूपोंकी कल्पना करतेभये १३ और तोमर तथा धनुष ये सम्पूर्ण हथियार तिस यज्ञमें सोमकलश होतेभये १४ और अस्थि तथा कपाल ये सम्पूर्ण पुरोडास होतेभये और युद्ध यज्ञमें रुधिररूपी घृत होताभया सेनाका मण्डल होमकेयोग्य काष्ठहोताभया १५ और गदाओंका परिस्तरण होता भया और हयग्रीव व असिलोमा व राहु और केशी १६ विरोचन जम्भ कुजम्भ और विप्रचित्ति ये सम्पूर्ण यज्ञसभापति होतेभये १७ और रथोंके धुरोंकी सदृश बाण स्रुवा होतेभये धनुषकी कोटी और धनुषकी ज्या ये सम्पूर्ण सुचिहोतीभई १८ और वृषपर्वा प्रतिप्रास्थानिककर्म्म को करताभया १९ और बलि दीक्षित होता भया और सम्पूर्णसेना बलिकी स्त्रीरूपहोतीभई २० विस्तारित यज्ञकर्म्म में शंबर दैत्य शामित्रकर्म को करताभया २१ और कालनेमि तिसयज्ञकी दक्षिणा होता भया २२ और दैत्योंने प्राणोंसे रहितकिये हैं शरीर जिन्हों के ऐसे देवताओंकी सेनाका यज्ञाभिषेचन बढ़ताभया २३ व युद्धमें खुशीहो गर्जतेहुये दैत्य देवताओंके रुधिरको ऐसे पीतेभये कि जैसे यज्ञमें सोमपान २४ तिससमय में बलिने देवताओंका पराजय किया उसीसमय में अवभृथस्नान होताभया २५ व महा असुरोंके पति यज्ञोंकेकर्ता और बहुत दक्षिणादेनेवाले वेदोंकेवक्ता व्रतधारी शूरवीर २६ युद्धमें शरीर त्यागनेवाले त्रिलोकीके हरनेमें युक्त युद्धरूपी यज्ञके अर्थ दीक्षित और हरिणोंकेचर्म्म को धारण करनेवाले मूंजके यज्ञोपवीत व कटिबन्ध को धारण करनेवाले २७ व एक कार्य्य में निश्चयवाले ऐसे देवता, दानवों की सेनाका युद्धमें महाशब्द होताभया २८ व हाथों में अनेकप्रकारके हथियारोंको

धारण करतेहुये व वेगसे दौड़तेहुये ऐसे शूरवीरोंका अत्यन्त क्षोभयुक्त शब्द २९ व हथियारोंका अत्यन्त शब्द शंख और नक्कारों का शब्द ३० व घोड़ाओं का हिनहिनाना शब्द व रथों के पहियाओं का घोर शब्द ऐसे २ शब्दों से युद्धमें बड़ा तुमुलशब्द होताभया ३१ व दानवोंकी सेना बड़े भयानक शब्दको करती हुई शोभा को प्राप्त होतीभई ३२ और सुवर्ण से भूषित प्रकाशमान हस्ती और रथ युद्धमें ऐसे दीखते भये कि जैसे बिजलीसे युक्त मेघ ३३ ऋष्टि शक्ति गदा त्रिशूल खड्ग और फरसा ये सम्पूर्ण हथियार अपनी अपनी सेनाओं में ऐसे प्रकाशमान होतेभये ३४ कि जैसे अनेकप्रकारके सैकड़ों हजारों सुवर्णसे आच्छादित शिखरोंवाले पर्वत ३५ सूर्यके समान प्रकाशमान सुवर्णके कवचों को धारण करतेहुये देवता और दैत्यों के सेनापति युद्धमें ऐसे दीखते भये ३६ कि जैसे आकाशमें तारागण और खड्ग मुष्टियों को धारण करते हुये ध्वजाओं वाले ऐसे देवता और दानव ३७ युद्धमें अनेक प्रकारके हथियारों से शोभाको प्राप्तहोकर युद्ध करते हुये ३८ व युद्ध में कुशल ऐसे देवता व दैत्यों के पताका और ध्वजाओंको रणमें पवन कपायमान करताभया ३९ ध्वजा आभूषण वस्त्र ढाल और कवच इन्होंको सूर्यनारायण अपनी किरणोंसे प्रकाश करताभया ४० अतोल बलोंवाले योद्धाओं के पैरोंसे उठाहुआ रज दिशाओं को आच्छादन करताभया ४१ व प्रकाशमान वस्त्रोंको धारण करतेहुये रणमें स्थित ऐसे शूरवीर परस्परमें सेनाओं को रोकतेभये मुद्गर मुशल त्रिशूल अपस्तुंड और उलूखल ४२ वज्र अशनि खड्ग वृक्ष और बाण ऐसे चित्र विचित्र ४३ अनेकप्रकार की पैनीधारोंवाले हथियारोंसे पर्वतोंकी तुल्य शरीरोंवाले देवता व दानव परस्परमें हनन करतेभये ४४ सावित्रके वधकी इच्छा करताहुआ बाणासुर धनुष को धारणकर और दिव्य शरोंके जाल से आच्छादन करताभया ४५ ऐसे प्रकाशमान होताभया कि जैसे मंत्रों से होमाहुआ अग्नि देवताओं की समुद्ररूपी सेनाको वह दैत्यों में श्रेष्ठ बाणासुर अपने बाणोंसे ऐसे सोखन करताभया ४६ कि जैसे अपनी किरणोंसे समुद्रको सूर्य सोखलेताहै वह सावित्रपवन अपनी उत्तम शक्तिको ग्रहणकर ४७ बाणासुर पै ऐसे फेंकताभया कि जैसे पर्वतों पै वज्रको इन्द्र बिजलीकी समान प्रकाश करती आतीहुई ४८ शक्तिको बाणासुर अपने पैनेबाणसे दोटूककर पृथ्वी पै गेरताभया ४९ और वह देवताओं में

श्रेष्ठ सावित्र नष्टहुई शक्ति को देख फिर तीक्ष्ण दानवों को मर्दन करनेवाला पीत धारत्र चन्द्रमा कीसी कांतिवाला ५० जहरे सर्पकीनाईं कार्यकी सिद्धि करतेवाला ऐसा विश्वकर्मा का रचाहुआ खड्गको हाथमें ग्रहणकर युद्ध के मध्यमें स्थित होताभया ५१ और बाणासुर तहां स्थितहुआ सावित्रको देख गर्जताभया ५२ सूर्यके किरणों की तुल्य प्रकाशमान वज्रकी तुल्य आकारवाले जहरे सर्प की तुल्य ५३ सुवर्णके परोंवाले पैने अग्रभागवाले और बडे वेगवाले और गहनों से आभूषित ५४ ऐसे बाणोंके समूहको धनुष पै स्थितकर और कानतक धनुष को चढाय सावित्र पै छोंडताभया ५५ और अग्नि की तुल्य प्रकाशमान बडे दृढ धनुषसे छोडेहुये वे सम्पूर्ण बाण सावित्र को ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे कैलासको मेघ ५६ और बाणासुरके शस्त्रोंसे आच्छादित कियाहुआ वह सावित्र रणसे मुखफेरके जाताभया ५७ और बाणासुर सावित्रको जीतके हर्षि त हुआ ५८ फिर घोर धनुषको धारणकर और इन्द्र के रथके सामने जाताभय असुरों में श्रेष्ठ वलदैत्य बडी जेवर गदाको धारणकर ५९ और ध्रुवनाम वसु के मस्तकमें मारताभया ६० फिर तिस गदाके वेगसे ध्रुवका कंधा व सुवर्णका कवच भेदन होताभया ६१ और शेष सम्पूर्ण वसु अपने अस्त्रोंको ग्रहण कर वलदैत्यको अस्त्रोंसे ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे सूर्यको मेघ ६२ और बाणोंसे क्रोध युक्तहुआ वलदैत्य गदाको ग्रहण कर वेगसे रथसे उतरता भया और तिस गदा को शत्रुओं के शिरपै चलाताभया ६३ वह महागदा सम्पूर्ण देवताओंको ऐसे दिशाओंमें दौडाती भई कि जैसे शत्रुओंको इन्द्रकावज्र ६४ बिजली के शब्द की तुल्य तिस गदाके शब्दसे डरतेहुये देवता रथों को त्याग दौडते भये ६५ और फिर बाणों की वर्षा करनेलगे ६६ पैनीधारोंवाले भाला व बकडों के दां तों की तुल्य पैने पैने बाण ऐसे शस्त्रों से वह ध्रुव वसुको वेधन करताभया ६७ और बडी बडी भुजाओंवाला कालकी नाईं मुखको फाडताहुआ बिजली तथा सूर्यकी तुल्य कांतिवाला अग्निकी सम प्रकाशमान ६८ ऐसा वलदैत्य ध्रुव के छोडेहुये बाणोंको मानों मुखसे पीताहुआ ऐसे दौडताभया कि जैसे प्र लयकालमें मर्यादाको छोडके समुद्र दौडताहै ६९ और वह वलके दिशाओंको अपने पराक्रमसे शब्दायमान करताहुआ देवताओं को ऐसे भेदन करताभया कि जैसे वृक्षोंको नदीकावेग ७० वह वलकरके देवताओं के धनुषोंको तोड ७१

और आप अनिल नामवाले ऐसे दोवसुओंके सङ्ग युद्धकरनेलगा तबवे महा-
प्रतापवाले वसु तिस दैत्यपै वाणोंकी वर्षा करनेलगे ७२ तब वह दैत्य आतेहुये
वाणोंको आकाशमें छेदन करताभया और तिस दैत्यके घोरकर्म को नहीं स-
हताहुआ ध्रुव तिसके सामने दौड़ताभया ७३ व यशके करनेवाले शूरवीर और
अभिजन ऐसे दोनों शूरवीर वाणोंकी वर्षा से परस्पर में हनन करतेभये ७४ वे
दोनों वाणों से परस्पर में ऐसे युद्ध करतेभये कि जैसे नखों से शार्दूल व दातों
से हस्ती और वाणों से शरीर को भेदन करतेहुये ७५ व लिखतेहुये परस्पर में
रोकतेहुये रणमें स्थितहो ७६ अपने शरीरों को पीड़ित करतेभये और अनेक
प्रकार से युद्धके मार्ग और मंडलों को करतेहुये क्रोधयुक्तहो परस्पर में वारम्वार
हननकरतेभये ७७ और दोनों पर्वतकी तुल्य शरीरवाले खड्गों से ढाल व धनुषोंको
भेदनकर वाहुयुद्ध करनेलगे ७८ व चौडी चौड़ी छातियों व वडी वडी भुजाओं
वाले युद्धमें चतुर वे दोनों भुजाओं से ऐसे मिलतेभये कि जैसे लोहेके परिघ ७९
व तिनकी भुजाओंके घातसे वैर और वन्धन और वडा भयानकशब्द ऐसे होता
भया कि जैसे पर्वतपै वज्रके पडने से होताहै ८० परस्परमें मिलेहुये दोनों सवा
दो घडीतक ऐसे युद्ध करतेभये ८१ कि जैसे दातों से हस्ती और सींगों से महा-
वृष और वलकरके हाराहुआ वह ध्रुव दैत्यके भयसे रणको त्याग दौडताभया ८२

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतेभविष्यपर्वभाषायांपंचचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४५ ॥

दोसौछियालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय क्रोधयुक्त नमुचि और धर इन
दोनोंका फिर वडा दारुण महायुद्ध होताभया १ व वडी भुजाओंवाले वडे ध-
नुषोंको धारण करतेहुये व शत्रुओंको दमन करनेवाले क्रोधको धारणकरतेहुये
और मानों नेत्रों से भस्म करतेहुये दोनों परस्पर में देखतेभये २ व सुवर्ण की
पीठवाला महाकठोर ऐसा महाधनुष को टकोर वह धर अपने प्राणों का त्यागन
करताहुआ नमुचि के संग युद्ध करताभया ३ व प्रकाशमान वाणरूपी जालों
को वह धर नमुचि दैत्यके रथपर छोड़ताहुआ सूर्यकी प्रभाको आच्छादन करता
भया ४ व शिलाओं की सम पैने व प्रकाशमान व वड़े वेगवाले और असह्य
ऐसे वाणों को नमुचि हँसताहुआ धरपै छोड़ताभया और महातेजवाला वडी

भुजाओंवाला और महावेगवाला, ५ महारथी और अतिरथी ऐसा नमुचि पैनें पैने नववाणों से धरको वेधन करताभया ६ जैसे अंकुशों से भेदन कियाहुआ हस्ती क्रोधित होताहै तैसेही वाणों के वेधन से क्रोधितहुआ धर नमुचि के सम्मुख दौड़ताभया ७ व वेगसे आतेहुये धरको वह नमुचि देख और ऐसे सम्मुख दौड़ताभया कि जैसे मदोन्मत्त हस्ती के प्रति मदोन्मत्त हस्ती ८ व सौ भेरियों के समान शब्दवाले शखकोनजाय उछलतेहुये समुद्रकीतुल्य शत्रुकी सेनाको अत्यन्त क्षोभकर ९ श्रेष्ठवर्णवाले शत्रुके घोड़ों से अपने हंसकीतुल्य कांतिवाले घोड़ों को मिलाताहुआ नमुचि शरोंकी वर्षा से धरको आच्छादन करताभया १० व नमुचि व धर इन दोनों के रथोंको परस्पर में मिलेहुये देख देवताओं की सेना अत्यन्त कांपनेलगी ११ क्रोधयुक्त लाल २ नेत्रों से परस्पर में देखतेहुये शार्दूलों की तुल्य गर्ज्जतेहुये मत्तहस्तियों की तुल्य भेदन करतेहुये १२ ऐसे दोनों योद्धाओं का मनुष्य हस्ती घोड़ा इन्हों से व्याप्त १३ धर्मराजके युद्धकी सम ऐसा युद्ध होताभया १४ तिस युद्धको समाजकी नाईं देखतेहुये महारथी तिन्हों के जयकी इच्छा करतेहुये युद्ध में समूह के समूह स्थित होतेभये सिद्ध तथा गंधर्व और मुनि ये सम्पूर्ण समीप प्राप्तहो १५ महाअस्त्रों को धारण करते हुये देवता दानवों के युद्धको देखतेभये और वे दोनों परस्पर में वाणोंकी वर्षा करतेहुये शरों के जालों से आकाशको आच्छादन करतेभये १६ तीक्ष्णवाणों से परस्पर में हनन करतेहुये दोनों महारथी रणमें ऐसे स्थित होतेभये कि जैसे जलों की वर्षा करतेभये मेघ १७ और सुवर्ण से जटित वाणों को छोड़ते हुये आकाश को सूर्य्य की सम प्रकाशमान ऐसे करतेभये १८ कि जैसे बिजली प्रकाश करतीहै नमुचि और धर इनदोनोंके वाण आकाशमें ऐसे प्रकाशमान होतेभये कि जैसे शरदऋतुके आकाशमें मतवाले सारसोंकी पंक्ति १९ मरेहुये देवता घोड़ा और हस्ती इन्होंसे पृथ्वी ऐसे व्याप्त होतीभई कि जैसे मेघोंसे आकाश २० पैनी धारवाले सूर्य्य के मण्डलकी तुल्य कांतिवाले जलते हुये ऐसे चक्र को नमुचिदैत्य धरके सम्मुख छोड़ताभया २१ ध्वजा आयुध और घोड़ा इन्होंसे युक्त सूर्य्यकी सम प्रकाशमान ऐसे रथको नमुचि का चक्र दग्ध करता भया २२ वह धर चक्रके तेजसे दग्धहुआ रथकोत्याग नमुचिके भयसे आकाशमें जाताभया २३ और धर देवता को जीत नमुचि दैत्य बलसे गर्वितहुआ

अपनी सेनाको सगले फिर देवताओंकी सेनाके प्रति जाताभया २४ विख्यान व श्रेष्ठ और सैकड़ों मायाओंका जाननेवाला २५ देवता व दैत्यों में श्रेष्ठ महात्मा ऐसात्वष्टा देवता और मय दैत्य इन्होंका महायुद्ध होनेलगा २६ बलसेगर्वित वह त्वष्टा मयदैत्यको आक्रमणकर बहुतसे बाणोंसे वेधन करताभया २७ ऐसे आतेहुये बाणोंको देख बहुतपैने व वेगवाले सुवर्ण से जटित ऐसे बाणोंसे मयदैत्य त्वष्टा को वेधन करताभया २८ और त्वष्टा अपने पैने बाणोंमे मयको भेदनकर दैत्यों की सेनाके प्राणों को टोहताहुआ क्रोधमे गर्जताभया २९ सुवर्ण और मणियोंसे जटित विचित्र दण्डवाली व महाकांति वाली ऐसी शक्ति को त्वष्टा ग्रहणकर मयके प्रति ऐसे छोडताभया ३० कि जैसे वज्रको इन्द्र सूर्य और अग्निकी तुल्य कांतिवाला ३१ त्वष्टाकी भुजाओंसे छुटीहुई ऐसी शक्ति को मयदैत्य सातबाणों से छेदन करताभया ३२ और त्वष्टाके प्राणोंको हरनेके अर्थ मयदैत्य कोपयुक्तहुआ फिर बाणों को छोडताभया ३३ और त्वष्टा अपने प्रकाशमान बाणों से मयके बाणों को छेदन करताभया ३४ महाबली वृषों की नाई गर्जतेहुये सिंहों की तुल्य पराक्रमों को करतेहुये परस्पर में दाव देखतेहुये ३५ हनन करतेभये और जहरीले सर्पों की नाई परस्पर में देखतेहुये ३६ बड़े विस्तारवाले धनुष से छोडेहुये बाणोंसे ऐसे हनन करते भये कि जैसे दांतोंके अग्रभाग से मदोन्मत्त हस्ती ३७ बड़े विस्तारवाली प्रकाशमान सुवर्ण के बाजुओंवाली और सबके प्राणोंको हरनेवाली ऐसी गदाको ग्रहणकर ३८ वह मय दैत्य उत्तम घोडोंवाले त्वष्टाको ऐसे हनन करताभया ३९ कि जैसे वज्रसे पर्वतों को इन्द्र और युद्धमें क्रोधहुआ मयदैत्य बहुत पैने दो बाणोंसे फिर त्वष्टाके रथ की ध्वजाको छेदनकर सारथीको धर्मराजके प्रति पहुंचाय ४० बड़े शरीरवाले व बड़े वेगवत ऐसे श्रेष्ठ घोडों को गदासे मारताभया वह त्वष्टा रणमें भेदन की हुई ध्वजा और सूतकोदेख ४१ घोडा तथा सूत इन्होंसे रहित रथको त्याग पृथ्वी में स्थितहुआ और युद्धके अर्थ अपने महान् धनुष को टकोरता भया ४२ मय दैत्य के घोडा सूत और रथ इन्हों को भेदनकर जयरूपी शोभा से सेवन किया हुआ युद्ध में ऐसे स्थित होताभया ४३ कि जैसे प्रकाशमान अग्नि काल की तुल्य प्रसिद्ध हाथ में धनुष को धारण करताहुआ ऐसा मयदैत्य देवताओं की सेना को दग्ध करताहुआ ऐसे दीखताभया कि जैसे वनको दग्ध करताहुआ

दावाग्नि ४४ और अत्यन्त तेजवाले और शिलापे पैनायेहुये अनेक प्रकारकी आकृतियोंवाले ऐसे चौदह वाणों को ४५ मयदैत्य त्वष्टापे छोडता भया और सुवर्ण के गहनोंवाले वे वाण त्वष्टा देवता के रुधिर को ऐसे पीतेभये कि जैसे काल प्रभुके प्रेरणा कियेहुये ४६ सर्प रुधिर में भीगेहुये वे वाण ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे आधे प्रवेशहुये ४७ क्रोधयुक्त बिलों में महान् सर्प सुवर्ण से भूपित हुये वाणोंसे त्वष्टा मयदैत्यको वेधनकर और अत्यन्त उग्र चौदहवाणों से भुजाको विदारण करताभया ४८ और वे वाण मय दैत्य की सव्यभुजाको भेदनकर भूमि में ऐसे प्राप्त होतेभये कि जैसे सर्प ४९ वे वाण पृथ्वी में प्राप्तहुये ऐसे प्रकाश करतेभये कि जैसे अस्ताचल को जातेहुये सूर्य्यमें प्रवेश होतेहुये किरण ५० रुधिरको भोजन करनेवाले अत्यन्त उग्र जलते हुये ऐसे तीनवाणों से मयदैत्य त्वष्टा को भेदन करताभया ५१ मयदानव के वाणों से पीड़ितहुआ त्वष्टा अपने रथको त्याग और लज्जितहुआ रणसे जाता भया ५२ सूत घोडा ओंको मार जहरसे रहित सर्पकी नाईं त्वष्टाको रथसे रहित कर मयदानव आनन्द को प्राप्त होताभया ५३ अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण के बाजुओंवाला अत्यन्त दृढ़ ऐसे धनुष को टकोरताहुआ रण में ऐसे स्थित होताभया कि जैसे प्रकाशमान अग्नि ५४ बलमें श्लाघावाला मदोन्मत्त ऐसा पुलोमादानव सफेद घोडाओंवाले रथमें स्थितहो रणमें दीखताभया ५५ और सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरमें स्थित होनेवाला काल प्रभुकी तुल्य बलवान् ऐसे वायु देवताके संग पुलोमा युद्ध करनेलगा ५६ पुलोमा दैत्यके धनुषकी ज्याके शब्दको पवनदेवता ऐसे नहीं सहताभया कि जैसे मदोन्मत्त हस्ती के शब्दको मदोन्मत्त हस्ती ५७ पुलोमादैत्यके छोडेहुये वाणोंसे दशोंदिशा ऐसे आच्छादन होतीभई कि जैसे सूर्यकी किरणोंके जालसे आकाशसहित जगत् ५८ तांबकेसे नेत्रोंवाला और महान् सर्पकी नाईं श्वास लेताहुआ ऐसा वायु देवता ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे किरणोंसे सूर्य ५९ मोरके पर्खोंकी तुल्य वर्णवाले सुवर्ण की पखोंवाले ऐसे पुलोमादैत्यकी भुजाओंसे छुटेहुये वाण ऐसे प्रकाशित होतेभये कि जैसे हंसों की पंक्ति ६० और अत्यन्त तीक्ष्ण सुवर्ण से विकृत चित्र विचित्र इन वाणोंको पुलोमा ऐसे छोड़ताभया ६१ कि जैसे अग्नि में पतंग ६२ क्रोध हुआ और काल प्रभु की नाईं आतेहुये ऐसे पुलोमा दैत्य को पवन देवता

प्राणों को त्यागताहुआ नव वाणों से वेधन करताभया ६३ तिसके असह्य वेग को देख वह वायु देवता अपने उत्तम पराक्रम में स्थितहो वाणों के समूह को नष्ट करताभया ६४ और वह बलवान् पवनदेवता शरों के जालको नष्टकर पैने मुखोंवाले वाणों से पुलोमादैत्य को वेधन करताभया ६५ व पवनों के गणों में श्रेष्ठ महापराक्रमवाले ऐसे दश देवता वेगसे वाह २ ऐसे कह सिंहके से शब्दों को करतेभये ६६ तुमुल रोमहर्षको उपजानेवाले ऐसे शब्दको सुन वे पौलोम-सञ्ज्ञक दैत्य क्रोधमें मूर्च्छितहुये ६७ पवनके सम्मुख दौडतेभये शरोंकी वर्षा से पवनको ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे वर्षाकाल में जलोंकी धारासे पर्वत को मेघ ६८ क्रोधहुये सात महारथी पवनदेवता को ऐसे पीडित करते भये कि जैसे प्रलयकाल में महाघोररूप सात ग्रह चन्द्रमाको पीडित करते हैं ६९ अनेक प्रकारके रत्नों से भूषित हस्ती के सूंडकीतुल्य आकारवाले ऐसे दाहिनेहाथ को युद्धमें उठा ७० दैत्यों के मस्तक में मारताभया और अपने वायुके वेगसे सात रथोंको फेंकताभया ७१ और वह पुलोमा प्राणोंको त्याग करताहुआ नव वाणों से वायुको वेधन करताभया और वह वायुदेवता प्रकाश करतेहुये ७२ अचिंत्य ऐसे पुलोमा के वाणों के समूहको देख अपने वाणों से दैत्योंकी सेनाको विदा-रण करताभया ७३ रुधिर में भीगेहुये मुकुटोंवाले छिन्नभुजा व अस्थियोंवाले सम्पूर्णदानव युद्धभूमिमें पडेहुये ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे गेरू में रँगेहुये पर्वत ७४ भेदन कियेहुये मदोन्मत्त हस्ती ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे फूलेहुये वृक्ष ७५ और दानवों के फटेहुये शरीरों से बडीभयानक और डरनेवालों के भयको बढ़ानेवाली ऐसी नदी वहनेलगी ७६ देवता दानव हस्ती और घोडा इन्हों के रुधिरसे वह रणभूमि बडीभयानक होतीभई ७७ और गत प्राणोंवाले राक्षस खेचर धनुष यक्ष ध्वजा रथ और घटाओंसे भूषित ऐसे फूटेहुये मस्तकोंवाले हस्ती ७८ प्रकाशकरतेहुये सुवर्णके पत्तोंवाले वाण प्रास तोमर७९ भाला शक्ति व फरसा इन्होंके खण्ड सुवर्ण से जटित धनुष गदा मुशल पट्टिश सुवर्णके बाजू मुकुट व शोभायमान कुण्डल ८० तनुत्र नक्षत्र हार उरूधुकी शस्त्र और रथोंसे रहित भेदन कियेहुये दैत्य इन सम्पूर्णोंसे वह रणभूमि ऐसे शोभाको प्राप्तहोतीभई ८१ कि जैसे ग्रहोंसे आकाश ध्वजा रथ घोडा और हस्ती इन्होंके मरनेसे ८२ देवता और दैत्योंका युद्धत्वान्तर शोभाको प्राप्तहोनाभया ८३ गदा

और मुशलों को धारण करतेहुये ऐसे हजारदैत्यों को सगले पुलोमादैत्य वायु देवताको आवृत्त करताभया ८४ और वे दानवों में श्रेष्ठ एकलाख दैत्य पवन देवताको हननकरतेभये तिनदैत्यों से ताडना कियाहुआ पवन ऐसे शोभाको प्राप्तहोताभया कि जैसे अंकुश से ताडना कियाहुआ हस्ती ८५ वह महावायु पवन आठसौ दैत्योंको मार रास्ताकर रणसे जाताभया ८६ वह मार्ग अबतकभी आकाश में दीखताहै ८७ तिसवायु पथानाम मार्गको सिद्धजन सदा देखतेहैं ८८ वैशम्पायनजी कहतेहैं कि हे राजन् महाबली हयग्रीव दैत्य पूषाको प्राप्तहो सिंहकी नाईं उसे शब्दसे गर्जनाभया ८९ सुवर्ण के जालों से भूपित धनुप को टकोर क्रोधहुआ घोरनेत्रों से पूषाको देखताभया ९० और बाणों को भुजाओंसे लेता सांधता छोडता व खैंचताहुआ ऐसे कर्म्मको करताहुआ हयग्रीवके बीचमें अन्तर नहीं देखताभया ९१ व दाहिने व बायेंहाथसे फेंकेहुये बाणोंका ऐसा चक्र होताभया कि जैसे घुमायाहुआ अग्निकाचक्र ९२ व सुवर्णके पखोंवाले शिला पै पैनायेहुये धनुपोंसे छोडेहुये ऐसे बाणोंसे सूर्य और दिशाओंको आच्छादन करतेभये ९३ और सुवर्णके पखोंवाले और पैनी धारोंवाले ऐसे बाणों को आकाशमें बहुतसमूह दीखनेलगे ९४ और पर्व्वतके शिखरकी तुल्य आकारवाले धनुपसे छोडेहुये ९५ पङ्क्तिरूपहुये बाण आकाशमें जातेहुये ऐसे प्रकाश करते भये कि जैसे आकाश में जातेहुये क्रौंच ९६ और शिलापै पैनाये हुये और सुवर्ण से भूपित और महा वेगवाले ऐसे बाण हयग्रीव छोडताभया ९७ और धनुपकेबलसे घुमायेहुये और बहुत पैने ऐसे बाण पूषाके शरीरको आच्छादन करतेभये ९८ व सुवर्ण से जटितहुये वेबाण आकाशमें ऐसे प्रकाशित होतेभये ९९ कि जैसे वर्षाऋतुमें आकाशमें जातेहुये हजारहों पटबीजना १०० व शिला पै पैनायेहुये और पैने अग्रभागोंवाले ऐसे बाण पूषा को वेधन करतेभये १०१ और वह हयग्रीव बाणोंकी वर्षा से पूषाको ऐसे आच्छादन करताभया कि जैसे पर्वतको मेघ और पूषाकाबल और शूरवीरता और पराक्रम और परिश्रम १०२ इन्होंको सम्पूर्ण देवता आश्चर्यरूप देखतेभये और हयग्रीव के धनुष से होनीहुई शरोंकी वर्षा से पूषा कुछ भी चिंता नहीं करताभया १०३ व क्रोधसे हयग्रीव के सामने दौडताभया १०४ व सुवर्णकी पीठवाला और बडाशब्द करनेवाला और इन्द्रके धनुपकी नाईं सुन्दर मुडेहुये ऐसे धनुष को पूषा ग्रहणकर और बाणों से

आकाशको आच्छादन करताभया १०५ व पूषाके धनुषसे सुवर्ण के पखोंवाले बाणोंकी आकाश में विस्ताररूप माला होतीभई १०६ और पूषाके छोडेहुये शरों के जालोंको हयग्रीवके पैने २ बाण नष्ट करतेभये १०७ व सुवर्ण के पखोंवाले और कर्कवर्णकी नाईं वस्त्रोंवाले ऐसे पडतेहुये हयग्रीवके बाणों से आकाश आच्छादन होताभया १०८ व शिलासे पैनायेहुये और अपने नामसे अङ्कित और सूर्य के तेजकीसम तेजवाले और सुवर्णमे जटित ऐसे बाणों से पूषा हयग्रीवपै फिर वर्षा करनेलगा १०९ व हयग्रीव फिर किला और शरों की वर्षा को रचताभया और ध्वजा और पताका और धनुष ११० व रश्मी और सूत और घोड़ा इन्होंको वह महाबली और अग्नि की नाईं दग्ध करताहुआ ऐसा महा क्रोधयुक्त हयग्रीव छेदन करताभया १११ और चार बाणों से फिर घोडाओं को मार और रथपै से फिर सूतको पृथ्वी में गिराताभया और हयग्रीवने रथसे रहित कियाहुआ पूषा और भयभीतहुआ ११२ ऐसे कांपताभया कि जैसे समुद्र की तरग और मृत्यु के मुखमें से निकसाहुआ इन्द्र के समीप जाताभया ११३ और शम्बर और भग इन दोनोंका फिर घोर और बडा दारुण और अद्भुत ऐसा युद्ध होताभया ११४ और सात हाथ आदि प्रमाण के समान लम्बा और इन्द्रके वज्र की तुल्य शब्दवाला और दृढज्यावाला और बहुत भार को सहनेवाला ११५ ऐसा धनुष को धारण करताहुआ और रथके धुराकी तुल्य बाणों को छोडता हुआ और क्रोधसे रक्तनेत्रोंको धारणकरताहुआ और सम्पूर्ण योगका जानने वाला ११६ ऐसा शम्बरदैत्यको देवताओं की सेना देख ऐसे कम्पायमान होती भई कि जैसे समुद्र की महातरग ११७ और बुरे नेत्रोंवाला और भयानक ऐसे आतेहुये शम्बरको देख और क्रोधसे कम्पायमान ओठों को धारण करताहुआ जल्दी करताहुआ भगदेवता शम्बरदैत्यको निवारण करताहुआ ११८ और बडे धनुषवाला भग दिव्य धनुष को टकोरताहुआ और धनुषकी ज्या के खैंचने मे सम्पूर्ण दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ ११९ बाणोंकी वर्षा करताभया और बाणों को फेंकताहुआ शम्बरदैत्य के प्रति भग ऐसे जाताभया कि जैसे हस्ती के प्रति हस्ती और वृषके प्रति वृष १२० और महा वेगवाले ये दोनों धनुषोंको ग्रहणकर और परस्परमें छेदन करतेहुये बाणों मे आच्छादित होतेभये १२१ और भग और शम्बर इन दोनोंका भयानक और वे प्रमाण ऐसा तुमुल

और घोरयुद्ध होताभया १२२ और बडे पैने पर्वनोंवाले और बडे वेगसे छोड़े हुये ऐसे वाणों से परस्पर में हनन करतेभये १२३ और रुधिर से भरेहुये और भेदन किये अंगोंवाले और रथों में बैठेहुये और मदोन्मत्तहुये १२४ और पैने वाणों से परस्परमें छेदन करतेहुये और परस्परमें देखने को समर्थ नहीं होतेभये १२५ क्रोधसे लाल२ नेत्रोंको करताहुआ कालप्रभु और धर्मराजकीतुल्य उग्रमा- वाला और जल्दीकरताहुआ १२६ ऐसा शम्बरदैत्य वाणोंसे भगको ऐसे भेदन करताभया कि जैसे महान् सर्पोंको गरुड १२७ और सामने आतेहुये, शम्बरके प्रेरित, प्रकाशमान, वेगवत, सूर्य्यकीसम कांतिवाले ऐसे वाणों को भगदेवता अपनेवाणों से आकाश में छेदताभया १२८ और अत्यन्त तीक्ष्ण और सुंदर पैने मुखोंवाले और अत्यन्त वेगवाले ऐसे चौंसठि वाणों से शम्बरदैत्य भगको वेधन करताभया १२९ और बहुत कालपर्य्यंत दोनोंका बराबर युद्ध होताभया १३० और धनुषको धारण करताहुआ रथमें स्थितहुआ १३१ भगको शम्बरकी मायाओं से अन्तर नहीं दीखताभया १३२ और वज्रकी तुल्य धनुषों का शब्द सुनताभया और शम्बरदैत्य भगके घोडाओंको भेदनकर और ध्वजाको छेदन कर १३३ और वाणोंकी वर्षा ऐसे करताभया कि जैसे मेघ जलकीवर्षा करते हैं और शम्बरदैत्य के वाणों से सूर्यरूपी भगदेवता के शरीर में विना छिदके दो अंगुलका भी अंतर नहीं रहताभया १३४ और महाबली और मायाधारी ऐसा शम्बरदैत्य अपनीमाया और लाघवतासे भगदेवता को छलताभया १३५ और एकहजार मायाओंको धारनेवाला और कांतिमान् और देवताओंकी सेनाको भेदन करनेवाला ऐसा शम्बरदैत्य सौवाणों से आच्छादित दीखताभया १३६ और वह महाबली शम्बर फिर प्राणों से रहितहुआ पृथ्वी में पड़ाहुआ दीखता भया और फिर सौ पर्वतोंकी तुल्य दीखनेलगा १३७ और फिर दिग्गज हस्ती पर स्थितहुआ दीखनेलगा और फिर प्रादेशमात्ररूप धारणकर और पर्वत की तुल्य दीखनेलगा १३८ और महामेघका रूप धारणकर कभी ऊपर और कभी तिरछा दीखनेलगा और फिर घोर और विरूप और विकृत ऐसा भयानकरूपको धारणकर १३९ और सम्पूर्ण देवताओंकी सेनाको हरानेलगा और देवता जिस के भयसे ऐसे दौडतेभये कि जैसे सिंहसे मृग १४० और फिर सूक्ष्म नवीनदेह धारणकर और दिशाओं को शब्दसे पूर्ण करताहुआ ऊंचा बढ़नेलगा १४१ व

आकाशमें प्राप्तहो और प्रलयकालके सवर्त्तक मेघकीतुल्य भूमिको जलसेपूर्ण करताहुआ १४२ इन्द्रकी तुल्य वर्षनेलगा और बड़ा पराक्रमवाला और सौआवर्तोंवाला और सौ शिखाओंवाला ऐसा सवर्तक अग्निहो फिर सम्पूर्णदेवताओं को दहनकरनेलगा १४३ और सौमार्गोंवाला व सौ गुफाओं वाला दो घड़ी में ऐसा पर्वत दीखनेलगा व मान गिरताहुआ आकाशको थाभताहुआ कैलास पर्वतकी नाईं दीखने लगा १४४ और आदित्य, साध्य, विश्वेदेवा और देवता इन्हों को जितने अस्त्रफेंके तिन्होंको ग्रसताभया १४५ व रणमें युद्ध करताहुआ अपने रथ सहित गधर्व नगरकी नाईं तिसी जगह अन्तर्द्धान होताभया १४६ और हजारमायाओंको धारण करनेवाला, चित्रतासे युद्ध करनेवाला ऐसा शम्बरदैत्य को देखतेहुये देवता भयभीत होतेभये १४७ व शम्बर के युद्धमें स्थित भगदेवता भी भयभीतहुआ इन्द्रके शरणजाताभया १४८ व शम्बर दैत्य युद्धमें भगदेवता को जीत और प्रकाशकरता हुआ अग्नि देवता के प्रति जाताभया १४९ व अग्नि देवताको मैं तेग मारनेवालाहूं ऐसे कठोर वचनों से भेदनकर व अन्तर्द्धान होताभया, १५० व ब्राह्मणों का राजा और महाबली व शीत अस्त्रों वाला ऐसा चन्द्रमा तिसीसमयमें दैत्योंकी सेनाको हनन करताभया १५१ और कैलासके शिखरकी तुल्य आकारवाला और महा कांतिवाला ग्रहोंमे युक्त ऐसा चन्द्रमा दानवोंको ऐसे हनन करताभया कि जैसे दण्डपाणि कालप्रभु १५२ व रथों को तोड़ताहुआ और घोड़ाओं को मारताहुआ दैत्योंमें ऐसे विचरताभया कि जैसे प्रलयकालमें बलवन्त कालप्रभु १५३ और बड़े वेगसे रथोंको तोड़ता हुआ दैत्योंको ऐसे दग्ध करताभया कि जैसे वनको दावाग्नि १५४ और वह चन्द्रमा शीतसे सम्पूर्ण दानवोंकी सेनाको ऐसे हनन करताभया कि जैसे वृक्षों को वायु १५५ व चन्द्रमाको अस्त्र शत्रुओंके रुधिरसे ऐसे भीगताभया कि जैसे क्रोधमें पशुओंको मारताहुआ महादेवका अस्त्र १५६ और बारबार भगतीहुई देवताओंकी सेनाको निवारणकर १५७ और कालप्रभुकी तुल्य महाबली ऐसा चन्द्रमा दैत्योंकी सेनामें विचरताभया और मृत्युकी नाईं आताहुआ चन्द्रमाको देख योधा विस्मयको प्राप्तहोतेभये १५८ और अन्धकारको दूरकरनेवाला ऐसा शिशिरास्त्र को चन्द्रमा जहां जहां प्रेरण करनेलगा तहां तहां सम्पूर्ण दैत्योंकी सेना नष्टहोतीभई १५९ और अपनी सेनासे युक्त दैत्यों की सेनाको विदारण

करता और मुखको फाड़ताहुआ कालकीनाई दैत्यों की सनाको ग्रसने करता भया १६० और भयानक कर्मको करताहुआ अस्त्रोंको धारण करताहुआ महा युद्धमें १६१ आताहुआ ऐसा चन्द्रमाको देख वे दैत्यों में चन्द्रमा और भास्कर रूप तालवृक्षके प्रमाणमात्र धनुषोंको आकर्षण करतेहुये १६२ महाबलवन्त ऐसे दो योद्धा बाणों से चन्द्रमाको ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे वर्षाकरतेहुये महा मेघ और धनुषोंके खैंचनेमें १६३ व हस्तियों के गर्जनेसे और घोड़ाओंके हींसनेसे और भेरी,शंख,मृदङ्ग इन्होंके बजनेसे ऐसा दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ १६४ आकाशमें महातुमुल शब्दहोताभया १६५ व युद्ध तथा जय व यश इन्होंकी इच्छा करतेहुये योद्धा परस्परमें ऐसे गर्जतेभये कि जैसे गोशालाओं में गोवृष १६६ व पैनेबाणोंसे छेदन कियेहुये दोनों सेनाओं के शिरोंकी आकाश में ऐसे वर्षा होनेलगी १६७ कि जैसे पत्थरों की व कुण्डल व पगडियों को धारण करेहुये १६८ व सुवर्णकी मालासेयुक्त ऐसे २ शिर रणमें पड़ेहुये दीखतेभये व बाणों से छेदित शरीर व धनुषों से युक्त भुजा १६९ व रुधिरमें भीगेहुये कवचों से युक्त शरीर व जाघ व प्रकाशमान मुख १७० व हस्ती मनुष्य घोड़ा इन्होंके शरीरों से भूमि एक मुहूर्त्तमें भरपूर होतीभई १७१ व धनुषरूपी घटा शस्त्रों रूपी बिजली १७२ व बाहुका शब्द गर्जन रूप व रुधिररूप वर्षा व महारूप तुमुलशब्द १७३ ऐसा देवता व दैत्योंके युद्धमें वर्षाका रूपक होताभया १७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांषट्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४६ ॥

दोसौसैंतालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय तुमुल और रोमहर्षोंको उपजानेवाले भयानक ऐसे महायुद्ध में देवता और दानव क्रोधित हुये बाणों की वर्षा करनेलगे १ और जिन्हों के सवार हत होगये है ऐसे हस्ती बाणों से पीड़ितहुये बड़ेशब्द को करतेभये और घोडा दशोंदिशाओं में दौड़तेभये २ और कोई२ बाणों की वर्षा से पीड़ितहुये ऊपरको उछल २ के पृथ्वी में गिरतेभये और शूर वीर और बड़ेवेगवाले और हस्ती और घोड़ा और रथ इन्हों पै चढ़ेहुये ३ ऐसे देवता और दानवों के धनुषोंकी ज्याके शब्दों से रणमें कोई भी नहीं जानपड़ा ४ और बाण, शक्ति, गदा और खड्ग इन्हों से अत्यन्त तेजवाले शूरवीर परस्पर

में दो सेनाओं को हनन करतेभये ५ पश्चात् भुजा और उत्तमअंग और धनुष इन्होंका समूह पडाहुआ देवता और दानवों के युद्धमें दीखनेलगा ६ व देवता तथा दैत्यों के बाणों से मरेहुये घोडे,हस्ती और रथ इन्हों के अंत नहीं प्राप्तहोते भये ७ और गदा, असि, प्रास और बाण इन्हों से योद्धा और बहुत से हस्ती तथा घोडाओंको हनन करतेभये ८ पश्चात् केशरूपी शेवाल और दूबवाली तथा बडेवेग और तरंगोंवाली ऐसी सेनाओं के मध्य में रुधिरकी घोररूपनदी प्रवर्त्त होतीभई ९ और रण में दानवों से हनन कियेहुये देवताओं के महाहाहाकार शब्द होतेभये और भयको देनेवाला और महाघोररूप ऐसा एकयुद्ध देवताओं का दैत्यों के संग होताभया १० और रक्त नेत्रोंको धारण करताहुआ और परम धनुषको धारण करताहुआ ऐसा विष्वक्सेन नामवाला साध्य देवता को उसी रणमें विरोचन हनन करताभया ११ और आताहुआ विरोचनको वह विष्वक्सेन देख और तीन बाणोंको धनुषपै चढा तिसकी छाती में मारताभया १२ व विष्वक्सेनके बाणों से हनन कियाहुआ विरोचन क्रोधसे ऐसे जलताभया कि जैसे यज्ञमें अग्नि १३ पश्चात् प्रकाश समान और वेगवाले ऐसे सातबाणों को विरोचन अपने धनुषपैचढा युद्धमें विष्वक्सेनको वेधन करताभया १४ तत्पश्चात् बलवान् विरोचनसे अत्यन्त वेधन कियाहुआ विष्वक्सेन मूर्च्छाको प्राप्त होताभया १५ पुन विष्वक्सेन सावधान होकर धनुष को टंकोर फिर दैत्यों के मध्यमें स्थितहोताभया १६ व वह विरोचन पैनेर बाणों से देवताओं की सेना को क्षोभ करताहुआ फिर युद्ध करताभया १७ व युद्धकरताहुआ जीमूत मेघकी नाईं गर्जताहुआ ऐसा विरोचन दैत्यका युद्धमें बड़ा शब्द सुननेलगा १८ व वह विरोचन देवताओं की सेनाको हनन करताहुआ ऐसे गर्जताभया कि जैसे ओलोंकी वर्षाकरताहुआ बिजलियोंसहित प्रचण्ड मेघ १९ व अस्त्रोंको उठाताहुआ और बाणोंकी वर्षाकरताहुआ सम्पूर्ण देवताओं की सेनाको युद्धमें भगाताभया २० पश्चात् रथों पैसे रथी और घोडों पैसे सवार, प्यादे ये सम्पूर्ण विरोचनके भयसे दौडते भये २१ और वज्रके शब्दकी तुल्य धनुषके शब्दको सुन भयसे रणमें सम्पूर्ण देवताओं की सेना लुप्तनी भई २२ पश्चात् विरोचन के भयसे डरतेहुये रथी और प्यादे इन्हों के समूह इन्द्रके समीप प्राप्त होते भये २३ व वह महा बली विरोचन विष्वक्सेनके चौदहहजार पीठकी रक्षा करनेवालों के

हनन करताभया २४ व घोडा, हस्ती, रथ और प्यादे इन्हों के समूहमें वह वि-
रोचन हनन करताहुआ दीखनेलगा २५ व वह विरोचन सिकराकीनाईं पांखों
को फैलाताहुआ देवताओंकी सेनाको मारता२ शिरोंको छेदन करताभया २६
पश्चात् घोड़ों के सवार और प्यादे मरने से बचेहुये रथी ये सम्पूर्ण विष्वक्सेनके
संगहो विरोचनके प्रति दौडते भये २७ व खड्ग, ढाल, गदा, शक्ति, परिघ, प्रास,
तोमर इन हथियारों से हनन करतेहुये सिंहके समान शब्दको करतेभये २८ व
वह विरोचन फिर अपनी तलवारको ग्रहणकर वेगसे रथियों के शिर और धनुष
को २९ काटताभया पश्चात् रथ, हस्ती, घोडे इन्हों के समूहमें स्थित और शत्रुओं
को मर्दन करनेवाला महाबली ऐसा विरोचन इक्कीस प्रकारके मार्गोंको आचरण
करताहुआ ३० भ्रान्त उदभ्रान्त आविद्ध आप्लुत प्रसृत सुन सम्पात समुदीर्ण
इन्होंको दिखाताभया ३१ फिर महात्मा विरोचन के पैनी तलवारसे भग्न किये
हुये कवचोंवाले कितनेक देवता गर्जतेभये और कितनेक प्राणों से रहित पृथ्वी
में गिरते भये ३२ पश्चात् महात्मा वलिके पीछेसे छेदन कियेहुये और वाहनों
से रहित कियेहुये ऐसे देवताओं में हस्तीरूप ३३ देवता उलटे दौडतेहुये अ-
पनी सेना को मारते भये और विरोचनके दृढ़ धनुषको छेदन कियेहुये अनेक
प्रकारके तोमर और धनुष और पीलवानों के शिर आकाश से भूमि में गिरने
लगे ३४ व वह विरोचन कितनेक रथियोंका तिरस्कारकर ३५ कूदके अपने खड्गसे
सूत और ध्वजाओं को छेदन करताभया ३६ पश्चात् वारवार कूदताहुआ और
दौड़ताहुआ चित्रविचित्र मार्गोंको आचरणकरता ऐसे विरोचनको देख सम्पूर्ण
असुर विस्मयको प्राप्त होतेभये ३७ फिर किसीको पैरसे मारतागया और किसी
को खड्गसे छेदन करताभया और किसीको शब्दसे भयभीत करताभया ३८ व
कोई विरोचनको देख प्राणोंको त्यागताभया ३९ व रथोंके समूह तथा घोड़े व
हस्ती व देवता इन्हों के नाशरूप महायुद्धमें ४० दैत्यों में श्रेष्ठ जम्भदैत्य अंश दे-
वतासे ऐसे युद्धकरताभया कि जैसे वृषके प्रति वृष ४१ और पर्वतकीसम रूपवाला
तथा मत्त हस्तीकी तुल्य पराक्रमवाला ऐसा जम्भदैत्य पैने व वेगवन्त ऐसे ब-
हुत वाणों से अंश देवताको वेधन करताभया ४२ पश्चात् रथों से मर्दित देवताओं
की हजारहों सेना जम्भके वाणरूपी पथमें प्राप्तहो उलटी नहीं आतीभई ४३
फिर सम्पूर्ण प्राणी शब्द करतेभये व दिशा अन्धकारयुक्त होतीभईं व देवताओं

की बड़ी दारुणहार दीखनेलगी ४४ तव देवताओं में श्रेष्ठ व उत्तम पराक्रमवाला ऐसा अश देवता जम्भदैत्य की वडी वेगवाली दशहजार हस्तियों की सेनाको मारताभया ४५ व शत्रुओं को दमन करनेवाला ऐसा कुजम्भ दैत्य आतीहुई हस्तियों की सेनाको देख बड़े वेगसे हाथमें गदाको धारणकर अपना रथसे नीचे स्थितहोता भया ४६ फिर पर्वतकी तुल्य सारवाली और वडी ऐसी गदाको ग्रहणकर हस्तियोंकी सेनापै ऐसे दौडताभया कि जैसे मुखको फाडताहुआ काल प्रभु ४७ व दानवों में श्रेष्ठ वह कुजम्भदैत्य अपनी गदासे हस्तियों को हनन करताहुआ रणमें ऐसे विचरताभया कि जैसे दण्डको हाथमें ग्रहण करताहुआ काल ४८ फिर दानवों में श्रेष्ठ व महाबली ऐसा कुजम्भ हस्तियों के दात और मस्तकों को भेदन करताभया ४९ व टूटे दातोंवाले व भेदित मस्तकोंवाले ऐसे हस्ती कुजम्भदैत्य के भेदित कियेहुये दशों दिशाओं में दौड़ते भये ५० फिर कुजम्भदैत्यके दिवान निर्मल और तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करतेभये ५१ पश्चात् क्षुर, क्षुरप्र, भाला और दात्र व अंजलिक ऐसे हथियारों से कुजम्भदैत्य देवताओं के अगोंको छेदन करताभया ५२ फिर गिरतेहुये शिरोंकी वर्षा से आकाश ऐसे पूरित होताभया कि जैसे ओलोंकी वर्षा से पूरितहोताहै ५३ व हस्तियों पै बैठे हुये देवता शिरों से रहित ऐसे दीखते भये कि जैसे शिरोंविना तालके वृक्ष ५४ पुन सम्मुख आतेहुये मदोन्मत्त ऐसे अश देवता के हस्तीको जम्भदैत्य एक वाणसे वेधन करताभया और वेधितहुआ हस्ती उलटा जाताभया ५५ पश्चात् दानवों में श्रेष्ठ और गदायुद्धका जाननेवाला ऐसा कुजम्भदैत्य हस्तियों की सेनाको मर्दनकरके गदासे देवताओं के सेनापतियों को हनन करताभया ५६ फिर कुजम्भके एक प्रहारसे मारेहुये और पर्वतकीनाईं पडेहुये ऐसे हस्तियोंको सम्पूर्ण देवता देखतेभये ५७ पश्चात् कुजम्भके अगाडी हस्ती ऐसे भेदन होते भये कि जैसे इन्द्रके वज्रसे पर्वत ५८ व हस्तियों के रुधिरसे भीगीहुई ऐसी लोहे की गदाको धारण करताहुआ और मुखको फाडताहुआ ऐसा कुजम्भदैत्य क्रोधितहुआ वडे भयानक रूपको धारण करताभया ५९ पश्चात् जैसे प्रलयकाल में प्रजाके नाशके अर्थ कालप्रभु क्रोधित होताहै तैसेही अपनी गदासे रणमें क्रीडा करताहुआ कुजम्भदैत्य क्रोधित होताभया ६० व दण्डको धारणकरके हस्तियोंको ऐसे दौड़ाताभया कि जैसे गौओंको पशुपाल ६१ व बडा पराक्रमवाला

और दण्डको उठाताहुआ ऐसा कुजम्भदैत्य को सम्पूर्ण देवता कालकी नाईं दीखतेभये ६२ पुन कुजम्भ देवताओंकी सेना तथा हस्तियों को रणसे भगाता हुआ ६३ और रणमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे कालप्रभु ६४ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांसप्तचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४७ ॥

दोसौअरतालिसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय तिससे उपरान्त सम्पूर्ण देवताओं की सेना बड़े भयानक शब्दोंको करतीहुई दैत्योंके प्रति दौड़तीभई १ व असंख्य रथ, हस्ती, घोडे इन्होंसे व्याप्त शङ्ख नक्कारों से शब्दायमान २ वेगसे आतीहुई व दुःखसे पारहोनेवाली धूलीसे व्याप्त ऐसी वेप्रमाण देवतोंकी सेनाको देख समुद्ररूप दैत्योंकी सेना ऐसे क्षोभहोतीभई कि जैसे पर्वतमें समुद्र ३ पश्चात् आश्चर्यरूप अन्तरहित व बडी अद्भुत रथ, हस्ती, घोडे इन्होंसे व्याप्त ऐसी देवताओंकी ४ महा सेनाको रोक वह महाबली कुजम्भ रणमें ऐसे निश्चल स्थित होताभया कि जैसे सुमेरु पर्वत ५ फिर कुजम्भसे निवारणकीहुई देवताओंकी सेना निरुद्यम होतीभई तब असिलोमा व हरि ये दोनों परस्पर में युद्ध करनेलगे पश्चात् दानवोंका अधिपति ६ देवताओंकी सेनाके अर्थ धूमकेतुकी नाईं उठाहुआ महाक्रोधी ऐसा असिलोमा दैत्य देवताओं की सेनाको ऐसे नष्ट करताभया कि जैसे अन्धकार को सूर्य्य ७ फिर एक हजार सूर्य्यों की तुल्य कान्तिवाला और मायारूपी ऐसा असिलोमा दैत्यका रथ देवताओंकी सेनापै मेघकी नाईं शरों की वर्षा करताभया ८ व घोर दर्शनवाला रुद्ररूप सेनामें दुःखसे निवारण होनेवाला ९ कालप्रभुकी नाईं भ्रमताहुआ ऐसा असिलोमा दैत्य हरिके सग युद्ध करने लगा फिर भयानक मुखवाला महान् हस्तियों को मर्दन करताहुआ १० ऐसा असिलोमा दैत्य देवताओंको मार एक ऊँचा देह चुनताभया फिर देवताओं को ग्रसन करताहुआ व शर्गेकैसी दाढ़ोंवाला महाप्रतापी ११ तलवारकी तुल्य जीभवाला व धनुषकी तुल्य मुखको फाड़ताहुआ फरसाको धारण करताहुआ व मृदङ्गकी तुल्य शब्द करताहुआ १२ दानवों में व्याघ्ररूप ऐसा असिलोमा रणमें व्याघ्रकी नाईं स्थित होताभया १३ व सेनाका समूह घोर समुद्ररूप, भुजा ग्राहरूप १४ धनुषोंकी ज्याका कांपना तरङ्गरूप १५ बाणोंका आवर्त्त तलारूप,

ा तथा तलवार मच्छरूप, धनुपकी ज्यातटरूप, वाण मीनरूप ऐसा गर्जता
ा १६ सेनारूपी समुद्र में घोड़े, हस्ती, प्यादे, रथ, शूरवीर, महारथी इन सब
वह दानवेश्वर असिलोमा डुबोताभया १७ पश्चात् श्रीमान् दैत्यों में श्रेष्ठ
बली असिलोमा सम्पूर्ण देवताओं के समूहको मर्दन करताभया १८ और
द्ध सुवर्णकी तुल्य कान्तिवाला कवच को धारण करताहुआ १९ व युद्ध क-
ाहुआ अग्निकी तुल्य जलताहुआ व मध्याह्न कालके सूर्यकी तुल्य तपता
आ २० ऐसे असिलोमा को सम्पूर्ण सेना देखने को समर्थ नहीं होतीभई व
ग्मऋतुमें बढाहुआ अग्नि जैसे फूसको २१ जलादेताहै तैसेही देवताओंको
सिलोमा अपने तेजसे दहन करताभया २२ व देवता तथा दानवों की सेना
ानक शब्दको करनेलगी तब सम्पूर्ण शूरवीर व्याकुल व मूढहोतेभये फिर
ती, रथ, घोडे इन्हों पै स्थिरहुये २३ श्रेष्ठ बुद्धि को धारण करतेहुये ऐसे शूर-
र रणको नहीं त्यागतेभये २४ व व्याकुलरूप रोमों को उपजानेवाला और
धिरकी नदी व कीचवाला २५ ऐसा देवता तथा दानवोंका महाघोर युद्ध हो-
भया फिर भयरूपी ग्राहसे पीडितहुये सम्पूर्ण दिशा २६ अनेक प्रकारसे किये
ये दानवों के शस्त्र घात इन्हों को नहीं जानतेभये और महारण में मूढचित्त
ाकुलहुये परस्पर में हनन करतेभये २७ और शस्त्रों के तेज से विमूढ हुये
पने और परायों को नहीं जानते भये और कोईक शूरवीर होठोंको चाबता
आ किसीक शूरवीरके केशों को ग्रहणकर २८ युद्ध में शिरको छेदन करता
या और शस्त्रों को त्याग और वज्रकी तुल्य २९ महादारुण ऐसी भुजा और
ष्टियोंसे रणमें परस्पर प्रहार करते भये ३० फिर सकुल, तुमुल और भयके उप-
ानेवाले ऐसे वर्तमान महायुद्ध मे घोडा घोडाको और हस्ती हस्तीको और
ूरवीर शूरवीरको बडेवेगसे भगाताभया ३१ और समीपसे हनन करताभया और
डे पराक्रमोंवाले महारथी ३२ ऐसे देवता तथा दैत्य प्राणोंको त्यागतेहुये प-
स्पर में हनन करतेभये और खुले केशोंवाले कवचोंसे और रथों से रहित छिन्न
नुषोंवाले ३३ ऐसे दानव देवताओंके सग हाथ तथा पैरों से युद्ध करतेभये ३४
िर हरि अपने पैने भालाको असिलोमाके सामनेफेंक और तिसीभालासे धनुप
ी कोटीको छेदनकर पृथ्वी में गिराताभया तत्पश्चात् पैनी धारोंवाले सौ वाण
सिलोमाके प्रति छोडताभया ३५ और छोड़ेहुये वे वाण पवनके वेगसे बड़े वे-

गर्वत हुये और असिलोमाके देहमें आधे बड़ेहुये ३६ ऐसे शोभाको प्राप्त हो भये कि जैसे पर्वतमें सर्प ३७ फिर छेदनहुये और रुधिरको भिरातेहुये ऐसेअंगे से वह असिलोमा ऐसे शोभायमान होताभया ३८ कि जैसे गैरिकादि धातुओं को त्यागताहुआ सुमेरुपर्वत, वह असिलोमा क्रोधितहो और फिर अन्य धनु को धारणकर ३९ सुवर्णके पंखोंवाले बहुतपैने ऐसे बाणोंको हरिके प्रति प्रेरण करताभया सर्प और अग्नि और विष इन्होंकी तुल्य उपमावाले ऐसे तिनबाणों से हरि के मर्म को वेधनकर ४० शरीरको ऐसे आच्छादन करताभया कि जैसे पर्वत को मेघ फिर कालकी तुल्य उपमावाले, सुवर्ण की पंखोंवाले और सूर्यके तुल्य कांतिवाले ४१ ऐसे सौ बाणोंको धनुषपै संधानकर हरिके प्रति छोड़ताभया और तिनबाणों से वेधितहुआ ४२ हरि मोहको प्राप्तहो पृथ्वी में गिरताभया तिससमय में देवताओं का कियाहुआ ऐसा हाहाकार होताभया ४३ कि जैसे सूर्यके गिरने से होताहै ४४ और वह दानवोंमे श्रेष्ठ असिलोमा इकतीस हजार हरिके परिवारके देवताओंको मारताभया ४५ फिर जयरूपी शोभासे सेवितहुआ अग्निकी तुल्य प्रकाशमान ४६ अपने घोर धनुषको धारणकर इंद्रके रथकेप्रति जाताभया और तिस युद्धमें दोनों अश्विनीकुमार देवताओं का शत्रु और महाबली ऐसावृत्रासुरकेप्रति युद्ध करनेलगे ४७ फिर नर्कश और धनुषको धारण करता हुआ युद्धमें प्राणों को त्यागनेवाला ऐसा वृत्रासुर अश्विनीकुमारों को प्राप्तहो युद्धमें ऐसे अचल स्थित होताभया कि जैसे पर्वत ४८ फिर युद्ध में शत्रुओंके रोमों के उपजानेवाले ऐसे शंखकोबजा और धनुषकीज्याके शब्दोंसे संपूर्ण प्राणियोंको मोहित करताभया ४९ पश्चात् हर्षित रोमोंवाले यक्ष तथा देवताओंके समूह ये संपूर्ण समुद्रके शब्दकी तुल्य शब्दवाला ऐसा शंखका शब्द सुननेभये ५० फिर गदा,परिघ,अस्त्र,शक्ति,त्रिशूल,फरसा ये संपूर्ण हथियार राक्षसोंकी भुजाओंमें शोभाको प्राप्तहोतेभये ५१ और बड़े शरीरोंवाले योद्धाओं की तिनभुजाओंसे फेंकेहुये त्रिशूल शक्ति फरसा इन हथियारों को वह वृत्रासुर अपने बड़ेवेग और शब्दोंको करनेवाले भालोंसे भेदन करताभया ५२ फिर वह वृत्रासुर आकाश और पृथ्वीमें विचरतेहुये और गर्जतेहुये ऐसे देवताओंके शरीरोंको छेदन करताभया ५३ पश्चात् वृत्रासुरकी भुजाओं से छोड़ेहुये बाणोंसे छेदन कियेहुये बहुतसे यक्ष तथा गन्धर्वों के शरीर और शिर पृथ्वी पै दीखने

लगे ५४ फिर गदा परिघ इन्होंसे भेदन कियेहुये देवताओं के शरीरों से रुधिर की महावर्षा पृथ्वीको सेचन करतीभई ५५ और बडे भीम पराक्रमवाले वृत्रासुर को सपूर्ण माणी देवताओं के समूहों से ऐसे आच्छादित देखते भये कि जैसे मेघोंसे सूर्य ५६ महावली सूर्यकीनाईं तपता ऐसा वृत्रासुर मर्मवेधी वाणोंसे देवताओंको वेधन करताभया ५७ फिर देवताओं के बाणों से भेदित कियाहुआ भी अनेक प्रकारके शब्दों को करताहुआ ऐसे वृत्रासुर से देवता कुछ भी भय नहीं देखते भये ५८ और खड्ग, शक्ति, गदा, परिघ, प्रास, तोमर, फरसा, त्रिशूल ऐसे हथियारोंकी वे सपूर्ण देवता वृत्रासुर पै वर्षा करनेलगे ५९ और सत्य पराक्रमवाला महावली तिन वाणों से वेधित हुआ ऐसा वृत्रासुर क्रोधितहो सपूर्ण देवताओं पै वाणोंकी वर्षा करता भया ६० फिर वेधन कियेहुये महाआयुधों से आच्छादित ऐसे देवता वृत्रासुरके भयसे पीडितहुये घोर आर्त्त स्वरको करते भये ६१ फिर गदा, शक्ति, त्रिशूल, खड्ग, फरसा ऐसे हथियारों को त्याग वृत्रासुरके त्राससे संपूर्ण देवता उत्तर दिशामें जातेभये ६२ पश्चात् दीर्घछातीवाला और महाभुजाओंवाला त्रिशूल गदाको हाथों में धारण करताहुआ ऐसा वृत्रासुर चराचर सहित संपूर्ण देवताओं को त्रास देताहुआ ६३ रण में धीर्य्यता से स्थित होताभया फिर महाभुजाओंवाला त्रिशूल को धारण करता हुआ ऐसा एक अश्विनीकुमार तिस रणमें स्थित हुआ ६४ फिर दैत्योंका अधिपति तुल्यतासे रहित ऐसे वृत्रासुरके सम्मुख दौड़ताभया ६५ फिर भेदित कियाहुआ हस्ती की तुल्य वह अश्विनीकुमार धनुषको धारणकर वज्रों के तुल्य तीक्ष्ण तीन वाणों से वृत्रासुरके पाशमें वेधन करताभया ६६ फिर बड़े धनुषवाला और अत्यत कोपको धारण करताहुआ महावली गदायुद्धका जाननेवाला ६७ ऐसा वृत्रासुर अत्यत वेधन किया हुआ गदाको धारण करताभया ६८ फिर पर्वतकी तुल्य सारवाली बड़ी दृढ़ और भयानक ऐसी गदाको ग्रहणकर बडे वेगसे अश्विनीकुमार को ताड़ना देताभया ६९ फिर प्रकाशमान दीर्घ और दृढ रोमहर्षोंको उपजानेवाले ऐसे त्रिशूलको अश्विनीकुमार धारणकर वृत्रासुर को मारतेभये ७० फिर गदायुद्धको जाननेवाला वृत्रासुर अपनी गदाके अग्रभाग से त्रिशूलको भेदनकर बड़े वेगसे अश्विनीकुमार के प्रति ऐसे दौडताभया जैसे सर्पके प्रति गरुड़ ७१ फिर वह वृत्रासुर आकाशमें कूद और पर्वतके शिखरकी

तुल्य उपमावाली ऐसी गदाको घुमा अश्विनी देवताकी छाती में मारताभ
७२ फिर गदासे हननहुआ अश्विनी देवता त्रिशूलको त्याग बड़े वेगसे इ
के पास जाता भया ७३ और बड़े पराक्रमी अश्विनी देवताको रणमें जीत ज
यरूप शोभासे सेवितहुआ वृत्रासुर युद्धमें स्थित होताभया ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामष्टचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४८

दोसौउंचासका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय देवताओं में श्रेष्ठ रणाजित
देवता तिसी युद्धमें एकचक्र दैत्यके संग युद्ध करनेलगा १ वह रणाजि रथ
पथाको रोक बड़े शब्दोंको करनेवाली ऐसी एकचक्रकी सेनाको वाणोंकी श
से आच्छादित करताभया २ फिर महावीर्यवाले व महापट्टिशों से युद्धकरनेवा
ऐसे महाअसुर त्रिशूल तथा भुशुंडी इन हथियारोंको रणमें देवताओं के सम्मु
फेंकनेलगे ३ फिर गदा शक्ति इन्होंसे मिलीहुई अकल्याणरूप दैत्यों की की
ऐसी त्रिशूलोंकीवर्षा होनेलगी ४ फिर महापर्वतोंके शिखरोंकीतुल्य आकारवा
और महापराक्रमोंवाले महारथीरूप ऐसे देवता तथा असुर परस्परमें सम्मुखहो
के युद्ध करनेलगे ५ फिर एकचक्र दैत्यके रथके सैकड़ों घोड़े युक्त होतेभये ए
हिरण्यकशिपुके रथकीतुल्य रथमें स्थितहो युद्ध करनेलगे ६ फिर घोड़ोंके पैरों
और रथके पहियोंके शब्दसे और एकचक्र के वाणों से सैकड़ों देवता मृत्युको
प्राप्त होतेभये ७ फिर छोटे और चित्रविचित्र मोटी गाठोंवाले ऐसे वाणों से वह
रणाजि देवता सैकड़ों हजारहों योद्धाओंको छेदन करताभया ८ पश्चात् देवता
ओं के तीक्ष्ण वाणों से वधकियेहुये हस्ती घोड़ा और दानव मृत्युको प्राप्त होते
भये ९ फिर क्षीयमाण दैत्यों को देख और धनुषों को धारण करनेहुये अन्य
दैत्य देवताओंको निवृत्त करतेभये १० पश्चात् प्रहार करतेहुये दैत्य दिशा और
विदिशाओं में स्थितहो पैनेर वाणों से देवताओंको हनन करतेभये ११ पुन
जलतेहुये अत्यन्त तेजवाले घोररूप ऐसे मथननाम अस्त्रको रणाजि देवता पै
छोड़ताभया १२ फिर शस्त्र और त्रिशूल ऐसे हजारहों हथियारों को वह एक
चक्र अपने अस्त्रसे छेदन करताभया १३ फिर सम्पूर्ण त्रिशूलोंको
एकचक्र महासुर पैने२ दशवाणों से तिस रणाजिको

एकचक्र शस्त्रोंके वेगको हननकर जलतेहुये वेगवत ऐसे अस्त्रोंसे देवताओं के हजारहों सेनापतियों को मारताभया १५ पश्चात् छेदन कियेहुये तिन्होंके शरीर ऐसे रुधिरको छोडतेभये कि जैसे वर्षाकालमें जलको पर्वतोंके शिखर १६ पश्चात् इन्द्रके वज्रकी तुल्य स्पर्शवाले वेगवत कुटिलता रहित ऐसे दैत्योंसे हनन किये हुये देवता त्रासको प्राप्तहोते भये १७ फिर सपूर्ण आभूषणों से शब्दायमान समुद्रके शब्दकी तुल्य शब्दवाले १८ मदोन्मत्त और श्रेष्ठ फीलवानोंसे युक्त अच्छेकुलोंमें उत्पन्न हुये बड़े पराक्रमोंवाले १९ गजशिक्षामें निपुण और ऐरावत हस्तीकी तुल्य ऐसे हस्तियोंको वह एक चक्र अपने फरसों और शरों से हनन करताभया कि जैसे हस्तीको हस्ती २० और भयानक रूपवाले तीन जगह से मदोंको भिरतेहुये मेघके गर्जितकी नाईं शब्द करनेवाले और महापर्वत की नाईं ऊंचे हजारहों में श्रेष्ठ सुवर्ण के गहनोंवाले तरुण सूर्यकीतुल्य कांतिवाले २१ ऐसे हस्तियोंको गदायुद्ध करनेवालों में श्रेष्ठ हाथमें गदाको धारणकरताहुआ एक चक्र ऐसे दौड़ाताभया कि जैसे मेघों को वायु २२ वह हस्तियों को हनन करनेवाला एक चक्र गदा से सम्पूर्ण हस्तियों को हननकर फिर घोड़ाओं के समूहको देखताभया २३ पश्चात् सूआके समान वर्णवाले और ऋच्छ तथा मोर इन्होंकी तुल्य वर्णोंवाले और कबूतर तथा हस इन्हों के समवर्णोंवाले २४ अथवा मल्लिका की तुल्य नेत्रोंवाले तथा क्रौंचकी तुल्य वर्णोंवाले अथवा मनकी तुल्य वेगवाले ऐसे घोड़ाओंकी सेनाको वह महाबाहु एकचक्र अपनी गदासे भेदन करताभया २५ व अचिंत्य पराक्रमवाला तथा श्रीमान् ऐसा रणाजि तिस रणमें एक चक्रके कर्मको देख २६ रणसे उपरामको प्राप्त होताभया और गदायुद्धमें कुशल रथों के समूहोंकापनि २७ महाबाहु ऐसा रणाजि इन्द्रके समीप जाताभया और वह एकचक्र तीसहजार योधाओं को मार २८ फिर रणमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे धूमरहित अग्नि और तिसी सग्राममें महाबाहु वलनामदैत्य २९ मृगव्याध रुद्रकेसग युद्ध करनेलगा और होमीहुई अग्निकेतुल्य तेजवाले ऐसे मृगव्याध के पार्षद ३० मतवाले हस्ती और रथ, घोड़े इन्हों पै सवारहो और वलको देख सम्मुख दौड़तेभये ३१ फिर पैनेअस्त्र व तीक्ष्णभाला इन्हों से युक्तहुये ३२ प्रकाशमान सूर्यकी नाईं उदय होताहुआ सूर्य के किरणों कीतुल्य भाओंवाला महावेगवत और महावली ३३ व महामतिवाला तथा बड़े

तुल्य उपमावाली ऐसी गदाको घुमा अश्विनी देवताकी छाती में मारताभया ७२ फिर गदासे हननहुआ अश्विनी देवता त्रिशूलको त्याग बड़े वेगसे इन्द्र के पास जाता भया ७३ और बड़े पराक्रमी अश्विनी देवताको रणमें जीत जयरूप शोभासे सेवितहुआ वृत्रासुर युद्धमें स्थित होताभया ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायामष्टचत्वारिंशदधिकद्विशततोऽध्याय २४८॥

दोसौउंचासका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय देवताओं में श्रेष्ठ रणाजिनाम देवता तिसी युद्धमें एकचक्र दैत्यके संग युद्ध करनेलगा १ वह रणाजि रथ के पथाको रोक बड़े शब्दों को करनेवाली ऐसी एकचक्रकी सेनाको बाणोंकी वर्षा से आच्छादित करताभया २ फिर महावीर्यवाले व महापट्टिशों से युद्धकरनेवाले ऐसे महाअसुर त्रिशूल तथा भुशुंडी इन हथियारोंको रणमें देवताओं के सम्मुख फेंकनेलगे ३ फिर गदा शक्ति इन्होंसे मिलीहुई अकल्याणरूप दैत्यों की कीहुई ऐसी त्रिशूलोंकी वर्षा होनेलगी ४ फिर महापर्वतोंके शिखरोंकीतुल्य आकारवाले और महापराक्रमोंवाले महारथीरूप ऐसे देवता तथा असुर परस्परमें सम्मुखहो के युद्ध करनेलगे ५ फिर एकचक्र दैत्यके रथके सैकड़ों घोड़े युक्त होतेभये ऐसे हिरण्यकशिपुके रथकीतुल्य रथमें स्थितहो युद्ध करनेलगे ६ फिर घोड़ोंके पैरोंसे और रथके पहियोंके शब्दसे और एकचक्र के बाणों से सैकड़ों देवता मृत्युको प्राप्त होतेभये ७ फिर छोटे और चित्रविचित्र मोटी गांठोंवाले ऐसे बाणों से वह रणाजि देवता सैकड़ों हजारहों योद्धाओंको छेदन करताभया ८ पश्चात् देवताओं के तीक्ष्ण बाणों से वधकियेहुये हस्ती घोड़ा और दानव मृत्युको प्राप्त होतेभये ९ फिर क्षीयमाण दैत्यों को देख और धनुषों को धारण करतेहुये अन्य दैत्य देवताओंको निवृत्त करतेभये १० पश्चात् प्रहार करतेहुये दैत्य दिशा और विदिशाओं में स्थितहो पैने२ बाणों से देवताओंको हनन करतेभये ११ पुनः जलतेहुये अत्यन्त तेजवाले घोररूप ऐसे मथननाम अस्त्रको रणाजि दैत्यों पै छोड़ताभया १२ फिर शस्त्र और त्रिशूल ऐसे हजारहों हथियारों को वह एकचक्र अपने अस्त्रसे छेदन करताभया १३ फिर सम्पूर्ण त्रिशूलोंको छेदनकर वह एकचक्र महासुर पैने२ दशबाणोंसे तिस रणाजिको वेधनकरताभया १४ और वह

एकचक्र शस्त्रोंके वेगको हननकर जलतेहुये वेगवत ऐसे अस्त्रोंसे देवताओं के हजारहों सेनापतियों को मारताभया १५ पश्चात् छेदन कियेहुये तिन्होंके शरीर ऐसे रुधिरको छोडतेभये कि जैसे वर्षाकालमें जलको पर्वतोंके शिखर १६ पश्चात् इन्द्रके वज्रकी तुल्य स्पर्शवाले वेगवत कुटिलता रहित ऐसे दैत्योंसे हनन किये हुये देवता त्रासको प्राप्तहोते भये १७ फिर सपूर्ण आभूपणों मे शब्दायमान समुद्रके शब्दकी तुल्य शब्दवाले १८ मदोन्मत्त और श्रेष्ठ फीलवानोंसे युक्त म्लेच्छकुलोंमें उत्पन्न हुये बडे पराक्रमोंवाले १९ गजशिक्षामें निपुण और ऐरावत हस्तीकी तुल्य ऐसे हस्तियोंको वह एक चक्र अपने फर्सों और शरों से हनन करताभया कि जैसे हस्तीको हस्ती २० और भयानक रूपवाले तीन जगह से मदोंको झिरतेहुये मेघक गर्जितकी नाईं शब्द करनेवाले और महापर्वत की नाईं ऊंचे हजारहों में श्रेष्ठ सुवर्ण के गहनोंवाले तरुण सूर्यकीतुल्य कांतिवाले २१ ऐसे हस्तियोंको गदायुद्ध करनेवालों में श्रेष्ठ हाथमें गदाको धारणकरताहुआ एक चक्र ऐसे दौड़ाताभया कि जैसे मेघों को वायु २२ वह हस्तियों को हनन करनेवाला एक चक्र गदा से सम्पूर्ण हस्तियों को हननकर फिर घोड़ाओं के समूहको देखताभया २३ पश्चात् सूआके समान वर्णवाले और ऋच्छ तथा मोर इन्होंकी तुल्य वर्णोंवाले और कबूतर तथा हस इन्हों के समवर्णोंवाले २४ अथवा मल्लिका की तुल्य नेत्रोंवाले तथा क्रौंचकी तुल्य वर्णोंवाले अथवा मनकी तुल्य वेगवाले ऐसे घोड़ाओंकी सेनाको वह महाबाहु एकचक्र अपनी गदासे भेदन करताभया २५ व अचिंत्य पराक्रमवाला तथा श्रीमान् ऐसा रणाजि तिस रणमें एक चक्रके कर्मको देख २६ रणमे उपरामको प्राप्त होताभया और गदायुद्ध में कुशल रथों के समूहोंकापति २७ महाबाहु ऐसा रणाजि इन्द्रके समीप जाताभया और वह एकचक्र तीसहजार योधाओं को मार २८ फिर रणमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे धूमरहित अग्नि और तिसी सग्राममें महाबाहु बलनामदैत्य २९ मृगव्याध रुद्रकेसग युद्ध करनेलगा और होमीहुई अग्निकेतुल्य तेजवाले ऐसे मृगव्याध के पार्षद ३० मतवाले हस्ती और रथ, घोडे इन्हों पै सवारहो और बलको देख सम्मुख दौडतेभये ३१ फिर पैनेअस्त्र व नीक्ष्णभाला इन्हो से युक्तहुये ३२ प्रकाशमान सूर्यकी नाईं उदय होताहुआ सूर्य के किरणों कीतुल्य मालोंवाला महावेगवंत और महाबली ३३ व महामतिवाला तथा बड़े

उत्साहवाला और वडेशरीरवाला और वडेरथवाला और महायोद्धा और सपूर्ण दिशाओं में स्थित ऐसा वलदैत्य को देख ३४ एकवेर चौगिर्द सें संप्रहार काने लगे और पीतरगवाले तथा तीक्ष्ण मुखोंवाले ३५ ऐसे बाणोंको वह मृगव्याध वलके महापर्वतसरीखे शिरमें मारताभया ३६ और शिरमें अर्पित कियेहुये वाणों से वेधितहुआ ३७ वलदैत्य दशोंदिशाओं को शब्दायमान करता हुआ आकाशमें उछलताभया ३८ व धनुपको चढाताहुआ महानली और रथमें स्थित ऐसा मृगव्याध खुशी होताहुआ आकाशमें वलकेपीछे दौडताभया तिस वल को आकाशमें वाणोंकी वर्पा से ऐसे आच्छादन करताभया ३९ कि जैसे ग्रीष्म कालके अतमें पर्वतको मेघ और मृगव्याधसे पीडित कियाहुआ वह वलदैत्य आकाशमें मेघकीतुल्य वडाघोरशब्द करताभया ४० फिर वलदैत्य आकाशमें ऊंचेचढ मृगव्याधके रथपै ऐसे पड़ताभया कि जैसे पाखोंवालापर्वत ४१ तव टूटाहुआ रथका परित्यागकर वह मृगव्याध भूमिमें स्थित होताभया ४२ व हाथोंमें मुद्गरोंको धारणकरतेहुये क्रोधयुक्त लाल२ नेत्रोंवाले ऐसे रुद्रकेपार्पद रथसेरहित रुद्रको देख आकाश में जातेभये ४३ और वह वल जल्द उठ फिर आकाश में युद्ध करनेलगा तत्पश्चात् तिनके मुद्गरोंसे ऐसे मर्दित होताभया ४४ कि जैसे फरसाओं से वृक्ष और गरुडकी समान पराक्रमवाला वह वल दैत्य तिन गणों के वेगसे हननहुआ फिर भूमिमें गिरताभया ४५ तव वह वल शाखाओंसे युक्त ताल वृक्षको उखाड़ सम्पूर्ण रुद्रके गणोंको हनन करताभया ४६ फिर तिन गणों से छेदन कियाहुआ और रुधिरके समूहों से युक्तहुआ ऐसे शोभाको प्राप्तहोता भया कि जैसे उदय होताहुआ वाल सूर्य ४७ फिर मृग सर्प वृक्ष इन्हों सहित पर्वतके शिखरको उखाड़ वह वलमे पूर्ण रुद्रके पार्पदोंको हनन करताभया ४८ व घोड़ोंसे घोडाओंको तथा हस्तियों से हस्तियोंको और योधाओं से योधाओं को ४९ व रथों से रथोंको वह वल ऐसे रुद्रकी शेप सेनाको हनन करताभया कि जैसे प्रलयकालमें प्रजाको कालप्रभु ५० फिर हनन कियेहुये घोड़ा, हस्ती, रथों सहित देव, दानव इन्हों से सपूर्ण पृथ्वी भयानक मार्गवाली होतीभई ५१ और इसप्रकारसे वलदैत्य और मृगव्याध रुद्र ये दोनोंवली रणमें ऐसे युद्ध करतेभये कि जैसे मतवाले हस्ती ५२ पश्चात् तीनोंलोकों में विख्यात और क्रोधकी मूर्त्ति एक पैरवाला ऐसादूसरा अजनाग रुद्र तिसी रणमें राहुकेसग युद्ध करनेलगा ५३

और जयकी इच्छा करतेहुये तिन दोनों शूरवीरों का वडा तुमुल तथा रोमहर्षों को उपजानेवाला और भयानक तथा रौद्र ऐसा युद्ध होताभया ५४ फिर देवताओं तथा दानवों के शरीरों से वडी दुस्तर केशरूपी दूर्वा को वहानेवाली व शरीरों के समूहों को वहानीहुई ऐसी रुधिरकी नदी वहनेलगी ५५ पश्चात् भयानक आकृतिवाला और समर्थ ऐसा क्रोधहुआ रुद्र शत्रुओं की सेना को विदारण करनेवाला व सौ मुखोंवाला ऐसे राहुको युद्धमें हनन करताभया ५६ पश्चात् दैत्यों के बाणोंसे क्रोधितहुआ वह श्रीमान् रुद्रराहुके घोडे और सारथी इन्हों सहित सुवर्ण जडित रथको भेदन करताभया ५७ फिर महाबली एक रुद्र का पार्षद खुशी होताहुआ रणमें अपनी शक्तिसे राहुकी छाती में वेधन करता भया और दानवों में श्रेष्ठ क्रोधसे मूर्च्छित ऐसा राहु आताहुआ रुद्रका रथ को तल हथियारसे भेदन करताभया ५८ फिर वड़े पराक्रमवाला राहु पैने २ बाणों से रुद्र और रुद्रके पार्षदों को वेगसे भेदन करताभया ५९ पश्चात् शरोंकी वर्षा करताहुआ ऐसा घोर दर्शनवाला राहुको मोटी गाठोंवाले बाणों से अजनाम रुद्ररणमें भेदन करताभया ६० व रोमहर्षों को उपजानेवाला रौद्र ऐसा वर्त्तमान युद्धमें रुधिरकेसमूहोंको वहानेवाली वहुतसी महानदी वेगसे वहनेलगीं ६१ फिर नीले पर्वत की तुल्य उपमावाला राहु दानव पैने २ बाणों से रुद्रको ऐसे वेधन करताभया कि जैसे किरणों से मेरुपर्वतको सूर्य ६२ फिर त्रिशूल, शक्ति, फरसा इन्हों से हननहुये और पृथ्वी में गिरेहुये और इच्छापूर्वक विचरनेवाले ६३ ऐसे दानवों में मुख्य दानवों से कियाहुआ रोमहर्षोंको उपजानेवाला और महाघोर ऐसे वर्त्तमान युद्ध में महाभेरु और मृदंग और पणव ६४ तथा शंख और पटह इन्होंका महाशब्द होताभया फिर शब्दको करतेहुये ऐसे मरेहुये दैत्य ६५ तथा देवता तिन्हों का तिस रणमें दारुण शब्द सुनतेभये और घोड़ाओंका मुख व रथकी पुट्ठी ६६ इन्हों से उठीहुई पृथ्वी की रज सम्पूर्ण योधाओं के मार्ग और नेत्रों को रोकतीभई पश्चात् शस्त्ररूपी पुष्पों को देनेवाली ६७ और दुःखपूर्वक दर्शनवाली तथा दुःख से प्राप्त होने के योग्य और मांस रुधिर इन्हों के कीच वाली वह रणभूमि ऐसी होतीभई तत्पश्चात् भाला, खड्ग, गदा, शक्ति, तोमर, पट्टिश ६८ इन हथियारों से हननहुये संग्राम के करनेवाले सेकडों रथ और मतवाले हस्ती और देवता तथा दानव ६९ ऐसे गासके भोजन करनेवालों में

उत्साहवाला और वडेशरीरवाला और वडेरथवाला और महायोद्धा और सपूर्ण दिशाओं में स्थित ऐसा वलदैत्य को देख २४ एकवेर चौगिर्द से समहार करने लगे और पीतरगवाले तथा तीच्ण मुखोंवाले २५ ऐसे वाणोंको वह मृगव्याध वलके महापर्वतसरीखे शिरमें मारताभया २६ और शिरमें अर्पित कियेहुये वाणों से वेधितहुआ २७ वलदैत्य दशोंदिशाओं को शब्दायमान करता हुआ आकाशमें उछलताभया २८ व धनुषको चढ़ाताहुआ महावली और रथमें स्थित ऐसा मृगव्याध खुशी होताहुआ आकाशमें वलकेपीछे दौडताभया तिस वल को आकाशमें वाणोंकी वर्षा से ऐसे आच्छादन करताभया २६ कि जैसे ग्रीष्म कालके अंतमें पर्वतको मेघ और मृगव्याधसे पीड़ित कियाहुआ वह वलदैत्य आकाशमें मेघकीतुल्य वड़ाघोरशब्द करताभया ४० फिर वलदैत्य आकाशमें ऊंचेनढ़ मृगव्याधके रथपै ऐसे पड़ताभया कि जैसे पाखोंवालापर्वत ४१ तव टूटा हुआ रथका परित्यागकर वह मृगव्याध भूमिमें स्थित होताभया ४२ व हाथोंमें मुद्गरोंको धारणकरतेहुये क्रोधयुक्त लाल२ नेत्रोंवाले ऐसे रुद्रकेपार्षद रथसेरहित रुद्रको देख आकाश में जातेभये ४३ और वह वल जल्द उठ फिर आकाश में युद्ध करनेलगा तत्पश्चात् तिनके मुद्गरोंसे ऐसे मर्दित होताभया ४४ कि जैसे फरसाओं से वृक्ष और गरुडकी समान पराक्रमवाला वह वल दैत्य तिन गणों के वेगसे हननहुआ फिर भूमिमें गिरताभया ४५ तव वह वल शाखाओंसे युक्त ताल वृक्षको उखाड़ सम्पूर्ण रुद्रके गणोंको हनन करताभया ४६ फिर तिन गणों से छेदन कियाहुआ और रुधिरके समूहों से युक्तहुआ ऐसे शोभाको प्राप्तहोता भया कि जैसे उदय होताहुआ वाल सूर्य ४७ फिर मृग सर्प वृक्ष इन्हों सहित पर्वतके शिखरको उखाड वह वलने पूर्ण रुद्रके पार्षदोंको हनन करताभया ४८ व घोड़ोंसे घोड़ाओंको तथा हस्तियों से हस्तियोंको और योधाओं से योधाओं को ४६ व रथों से रथोंको वह वल ऐसे रुद्रकी शेष सेनाको हनन करताभया कि जैसे प्रलयकालमें प्रजाको कालप्रभु ५० फिर हनन कियेहुये घोड़ा, हस्ती, रथों सहित देव, दानव इन्हों से सपूर्ण पृथ्वी भयानक मार्गवाली होतीभई ५१ और इसप्रकारसे वलदैत्य और मृगव्याध रुद्र ये दोनोंवली रणमें ऐसे युद्ध करनेगये कि जैसे मतवाले हस्ती ५२ पश्चात् तीनोंलोकोंमें विख्यात और क्रोधकी मूर्त्ति एक पैरवाला ऐसादूसरा अजनाम रुद्र तिसी रणमें राहुके सग युद्धकरनेलगा ५३

और जयकी इच्छा करतेहुये तिन दोनों शूरवीरों का वडा तुमुल तथा रोमहर्षों को उपजानेवाला और भयानक तथा रौद्र ऐसा युद्ध होताभया ५४ फिर देवताओं तथा दानवों के शरीरों से वडी दुस्तर केशरूपी दूर्वों को वहानेवाली व शरीरों के समूहों को वहानीहुई ऐसी रुधिरकी नदी वहनेलगी ५५ परचात् भयानक आकृतिवाला और समर्थ ऐसा क्रोधहुआ रुद्र शत्रुओं की सेना को विदारण करनेवाला व सौ मुखोंवाला ऐसे राहुको युद्धमें हनन करताभया ५६ पश्चात् दैत्यों के वाणोंसे कोपितहुआ वह श्रीमान् रुद्रराहुके घोडे और सारथी इन्हों सहित सुवर्ण जडित रथको भेदन करताभया ५७ फिर महावली एक रुद्र का पार्षद खुशी होताहुआ रणमें अपनी शक्तिसे राहुकी छाती में वेधन करता भया और दानवों में श्रेष्ठ क्रोधसे मूर्च्छित ऐसा राहु आताहुआ रुद्रका रथ को तल हथियारसे भेदन करताभया ५८ फिर वडे पराक्रमवाला राहु पैने २ वाणों से रुद्र और रुद्रके पार्षदों को वेगसे भेदन करताभया ५६ पश्चात् शरोंकी वर्षा करताहुआ ऐसा घोर दर्शनवाला राहुको मोटी गांठोंवाले वाणों से अजनाम रुद्ररणमें भेदन करताभया ६० व रोमहर्षों को उपजानेवाला रौद्र ऐसा वर्त्तमान युद्धमें रुधिरकेसमूहोंको वहानेवाली वहुतसी महानदी वेगसे वहनेलगीं ६१ फिर नीले पर्वत की तुल्य उपमावाला राहु दानव पैने २ वाणों से रुद्रको ऐसे वेधन करताभया कि जैसे किरणों से मेरुपर्वतको सूर्य ६२ फिर त्रिशूल, शक्ति, फरसा इन्हों से हननहुये और पृथ्वी में गिरेहुये और इच्छापूर्वक विचरनेवाले ६३ ऐसे दानवों में मुख्य दानवों से कियाहुआ रोमहर्षोंको उपजानेवाला और महाघोर ऐसे वर्त्तमान युद्ध में महाभेरु और मृदंग और पणव ६४ तथा शंख और पटह इन्होंका महाशब्द होताभया फिर शब्दको करतेहुये ऐसे मरेहुये दैत्य ६५ तथा देवता तिन्हों का तिस रणमें दारुण शब्द सुनतेभये और घोडाओंका सुम व रथकी पुट्ठी ६६ इन्हों से उठीहुई पृथ्वी की रज सम्पूर्ण योधाओं के मार्ग और नेत्रों को रोकतीभई पश्चात् शस्त्ररूपी पुष्पों को देनेवाली ६७ और दुःखपूर्वक दर्शनवाली तथा दुःख से प्राप्त होने के योग्य और मांस रुधिर इन्हों के कीच वाली वह रणभूमि ऐसी होतीभई तत्पश्चात् भाला, खड्ग, गदा, शक्ति, तोमर, पट्टिश ६८ इन हथियारों से हननहुये संग्राम के करनेवाले सैकडों रथ और मतवाले हस्ती और देवता तथा दानव ६६ ऐसे मासके भोजन करनेवालों से

व्यास महाघोर ऐसा युद्ध होताभया ७० व जयकी इच्छा करतेहुये परस्पर में वद्ध वैरोंवाले ऐसे शूरवीरों के सम्पूर्ण दिशाओं में शिरों से रहित धड उछलने लगे ७१ फिर युद्ध से नहीं उलटे हटनेवाले और सम्यक् प्रकार से युद्ध करने वाले ऐसे शूरवीरों का वडा भयंकर प्रहार होनेलगा ७२ पश्चात् एक पैरवाला अज और राहु और युद्धमें प्राप्तहोतीहुई सम्पूर्ण सेना इन्हों का ऐसे शब्द हो ताभया ७३ कि जैसे प्रलयकालमें मर्यादा को छोडते हुये समुद्रों का होताहै फिर गदा, पट्टिश, त्रिशूल इन्हों को धारण करताहुआ और महावली और वडा भीम ऐसा धूम्राक्ष नाम रुद्र ७४ तिसी युद्ध में केशी को भेदन करता भया पश्चात् अनेक प्रकार से प्रहार करनेवाले और भयानक नेत्रोंवाले तथा भयानक दर्शनोंवाले ७५ व रुद्रके प्यारे ऐसे पार्षद केशीके सम्मुख दौडतेभये फिर शोभायमान और तपाहुआ सुवर्ण के कुण्डलोंवाला ७६ दानवों से युक्त और दुर्जय ऐसा केशी रथमें स्थितहो रुद्रसे युद्धकरनेलगा फिर संग्राममें चतुर और उग्र पराक्रमवाला ऐसे युद्धकरतेहुये ७७ केशीके मुखसे विस्तार करतीहुई अग्निकी ज्वाला निकलती भई पश्चात् सिंहकी तुल्य ऊंचे कांधेवाला और शा र्दूलकी समान पराक्रमवाला ७८ और महामेघकी तुल्य कान्तिवाला और मृ दङ्गके तुल्य शब्दवाला और दानवों से युक्त ७९ ऐसा युद्धके सम्मुख पड़ता हुआ केशी दैत्यका स्वर्गको क्षोभकराताहुआ महान् शब्द होताभया तिस शब्द से डरतीहुई देवताओं की सेना ८० पर्वतों को फोडती तोडती फिर आपस में युद्धकरनेको प्रवर्त होतीभई ८१ ऐसे तिस सेनाके पडनेका तुमुल शब्द लोकों के भयका देनेवाला होताभया और तिन्होंका युद्ध महाघोर रोमोंको हर्षकराने वाला होताभया ८२ व तिस महान् युद्धमें देवता तथा दानवों के समूहके प्राणों का नाश होताभया और वे सव अतिवलवाले शूरवीर पर्वतके समान कान्ति-वाले ८३ व सव अस्त्रविद्याओं में निपुण सवशस्त्रोंको उठायेहुये ऐसे देवता तथा दानव आपसमें मारनेकी इच्छाकरनेवाले प्राप्तहोतेभये ८४ फिर तिन्हों के गर्ज-नेका शब्द मेघकेगर्जनेके समान सुनताभया और महाघोर जंगम तथा स्थावर जगत्को कँपानेवाला होताभया ८५ तत्पश्चात् रक्तकान्तिवाली भयंकर धूली उत्पन्न होतीभई और तिन्ह देवते तथा दैत्यों के समूहों से दशों दिशा रुकती भई ८६ व तिस धूली से सवृतहुये आपसमें नहीं देखतेभये ८७ व न ध्वजा न

पताका न वर्म न आयुध न घोडा न रथ न सारथी देखते भये ८८ केवल आपसमें दौडतेहुयों का शब्द सुनाता भया और रूप नहीं प्रकाशित हुआ ८६ व आपसमें दैत्यही दैत्योंको मारतेभये और देवतेही देवतोंको काटते भये ९० ऐसे देवते तथा दैत्य रुधिरसे गीली पृथ्वीको करते भये ९१ पीछे लोहूके समूह से भीजीहुई धूली कोमल होगई ९२ पीछे, शूल, शक्ति, गदा, तलवार, परिघ प्राश, तोमर इन्हों करके देवते तथा दैत्य आपसमें काटनेलगे ९३ व परिघों के आकार वाहुनों करके रुद्रके पार्षद दैत्योंको पीडित करनेलगे ९४ फिर दानव भी बडे२ वृक्ष पत्थर शर इन्हों करके रुद्रके पार्षदों को काटनेलगे ९५ इसी अन्तरमें क्रुद्धितहुआ केशीदैत्य दिव्यरूप वज्रास्त्र करके रुद्रके पार्षदों को काटने लगा ९६ तब पीड़ित और भ्रान्तहुये रुद्रके पार्षद पृथ्वी में पडतेभये ९७ जैसे वज्रसे हतहुये पर्वत ऐसा घोरयुद्ध केशीका और रुद्रका अद्भुत हुआहै ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायावामनप्रादुर्भावेदेवासुरयुद्धेऊनपञ्चाशदधिकद्विशतोऽध्याय २४९ ॥

दोसौपचासका अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय वृषपर्वा दैत्योंका राजा लालसूर्य्य के समान कांतिवाले और अद्भुत पराक्रमवाले ऐसे निष्कुम्भ से युद्ध करताभया १ पीछे क्रोध से मूर्च्छित मुखवाला वृषपर्वा अपने धनुषको कंपाताहुआ शत्रुकी सेना को देख सारथीके अर्थ वेगसे कहनेलगा २ कि हे सारथे इसमेरे रथको यहीं तुम प्राप्तकरो ये सब देवते मेरी सेनाको नाशते हैं ३ इसवास्ते युद्धमें श्लाघा वाले इन देवताओं के मैं मारनेकी इच्छा करताहूं और इन्हीं देवताओंने शत्रुओंकी सेनामें बड़ा छिद्र करदियाहै ४ तब अति वेगवाले रथमें स्थितहुआ वह दैत्य बाणोंसे शत्रुओंको मारनेलगा ५ तब देवते सम्मुख ठहरनेभी नहीं भये अर्थात् वृषपर्वा के बाणोंसे हतहुये देवते भागनेलगे ६ तब मृत्युके वशमें प्राप्तहुये तिन देवताओं को देखके महाबलवाला निष्कुम्भ युद्ध करनेको तय्यार हुआ ७ व तिस निष्कुम्भको देखके बहुतसे देवते इकट्ठेहो निष्कुम्भके चारोंतरफ सहायता करनेलगे ८ व निष्कुम्भके अस्त्रके बलके तेजसे सब देवते बलवाले होनेलगे ९ तब पर्वतके समान स्थितहुये निष्कुम्भके अर्थवृषपर्वा बाणोंकी वर्षा करनेलगा१०

तब शरीर में लगतेहुये वाणोंका नहीं ख्यालकर सेना के मुखमें स्थित हुआ
निष्कुम्भु ११ हँसके पृथ्वीको कपाताहुआ वेगसे वृषपर्वा की तरफ दौड़नेलगा
१२ तब भागतेहुये निष्कुम्भुकारूप प्रकाशमान अग्निकी तरह प्रकाशितहुआ
१३ व रथको त्याग क्रोधको प्राप्तहो बड़ी शाखावाला व बहुतऊंचे वृक्षको उखाड़
के वृषपर्वा की तरफ फेंकताभया १४ तब तिस वृक्षको एक हाथसे ग्रहणकर १५
और बहुतसा शब्दसे भ्रमाके वृषपर्वा हाथी फीलवान रथ और रथमें बैठनेवाले
१६ ऐसे देवताओं को मारताभया तब प्राणोंके हरनेवाले धर्मराजके समान १७
वृषपर्वा को प्राप्तहो सब देवते भागनेलगे और देवतोंको भय देनेवाला १८ वृष
पर्वा को आवतेहुये देखके निष्कुम्भु शब्द करनेलगा और क्रोधको प्राप्तहोता
भया पश्चात् मर्मको भेदन करनेवाले और पैने ऐसे तीस वाणों से वृषपर्वा को
भेदताभया १६ फिर दैत्यों के वाण और बरछी आदिसे पीड़ितहुआ निष्कुम्भु
युद्धमें स्थित शरीर से बहुतसा रुधिरको झिराताभया २० तब उद्विग्न और छूट
गयेहैं बाल जिन्हों के और गर्वसे रहित और पराजित २१ व श्वासको लेतेहुये
ऐसे देवते वृषपर्वा दैत्य के भयसे भागतेभये और वृषपर्वा से दुःखित किये देवते
आपसमें विलोडन करनेलगे २२ व दुःखसे मूढ़हुये पीछेको वारम्बार देखनेलगे
ऐसे युद्धमें वृषपर्वा ने सब देवतोंके शस्त्र गिरादिये २३ और निर्साकालमें लाल
नेत्रों वाला और महा वीर्य्यवाला २४ हिरण्यकशिपुका पुत्र ऐसा प्रह्लाद युद्ध
करनेलगा तब प्रह्लादके हाथसे २५ शुक्राचार्य्य जयको देनेवाले कर्मकरानेलगे
और अग्निमें हवन करनेसे और ब्राह्मणोंको नमस्कार करनेसे २६ उसनक्त आ-
ज्यके गंधको वहनेवाला सुन्दरपवन चलनेलगा और जपके अर्थ अभिमंत्रितकर
२७ अनेक प्रकारकी मालाओंको आप शुक्राचार्य प्रह्लादके शिरमें बांधताभया
२८ फिर अतिवीर्यवाले प्रह्लादके युद्धकरनेके समय में शुक्राचार्य्य शांति कर्म्म
करानेलगे अर्थात् शुक्राचार्य के दशहज़ार शिष्य दैत्योंकी जयके अर्थ शांति
कर्म्म में जाप करनेलगे २६ फिर दिव्य और ब्रह्माकी स्तुतिसे प्रेरित विजयका
देनेवाला ऐसा वेदकी रीतिसेकर्म्म कराया ३० पीछे सब अस्त्रों के जाननेवाले
और युद्धसे नहीं भागनेवाले ३१ व विद्याव्रतसे युक्त और कल्याण रूप कर्म्मों
से युक्त और धनुषों को हाथोंमें धारण करनेवाले और कवचों को पहनेहुये ऐसे
सब दैत्य ३२ बलिराजाकी पूजाकर प्रह्लादके चारोंतरफ स्थितहुये तब दिव्य व

शत्रुके रथको भयदेनेवाला नानाप्रकारके शस्त्रोंसे आकीर्ण ऐसे रथमें जब स्थित हुआ ३३ तब अनेक प्रकारकी सेना प्रकाशहोनेलगीं तब कमल के फूलों की मालाओंसे विभूषित ३४ दैत्य युद्ध करने के अर्थ अपने२ भ्राताओं से मिलके तय्यार होतेभये और सुन्दर कवच व बड़े२ शस्त्रों को धारण करनेवाला ३५ व धनुषको हाथमें लिये सिंह शार्दूलकेसमान गर्वितहुई वहुतसी सेनासेसयुक्त ३६ सत्तर रथ और सत्तरहाथी इन्हों के मध्यमें स्थित धनुषको कपाताहुआ ऐसा कालनेमी दैत्य शब्दकरनेलगा ३७ फिर हसताभया हजारहों प्रकारके बाणोंको छोड़नेलगा पश्चात् शरीरको वढाके पक्षोंकेद्वारा विस्तार करनेलगा ३८ ऐसे सब देवताओं से भेदनकरनेको योग्य ऐसादानव व्यूहहोताभया ३९ पीछे धनुषको धारण करनेवाले दैत्य लक्षोंये और नानाप्रकारके शस्त्रोंवालों का कुछ परिमाणही नहीं और गदा, परिघ, निस्त्रिंश, शूल, पट्टिश, मुद्गर ४० इन्होंकरके दैत्य शोभित होनेलगे जैसे पर्व्वत पीछे शब्द करतेहुये और पुकारतेहुये ४१ महावीर्य्यवाले युद्धसे नहीं भागनेवाले ऐसे दैत्य युद्धकरनेलगे तब हजारहों प्रकार के बाजे बजनेलगे ४२ और अति वेगवाले घोडे तथा हाथियों के चिग्घाडने से और नक्कारोंके बाजनेसे आकाशके गर्जनेके समान शब्द होनेलगा ४३ फिर शंख नक्कारे भेरी इन आदिके शब्दों करके रथों के शब्दसे आकाश शब्दित होनेलगा ४४ ऐसे सागरके समान सेनासे परिवृत ४५ कालरूपी धर्मराज की उपमा के समान प्रह्लाद युद्ध करनेलगा तब प्रह्लादके घोर शब्द करके ४६ सब प्राणी हाहाकार करनेलगे और आकाश से उल्का पड़नेलगी कठिन वायु चलनेलगा ४७ और अग्निको प्रकट करतीहुई शिवा भी प्रकाशित होनेलगी तब महावीर्यवाला प्रह्लाद हँसकरके ४८ तिस कालके योग्य उत्तम वचनको कहनेलगा कि अब मैं अपनी बाहूके बलको दिखाऊंगा ४९ हे दैत्यो मेरे बाणोंसे मरेहुये देवताओंको तुम देखोगे अब शत्रुओं के मासको दैत्य खावेंगे और इस युद्धमें जो उठीहुई धूली है ५० इसको शत्रुओं के लोहूके छिड़कनेसे शान्त करूंगा और अँधेरा के समूहसे हतहुआ सूर्य्य जिसमें सेना की धूलि से लोहित हुआ ऐसे आकाशमें पटबीजनाके समान मेरे बाण पातनकरेंगे ५१ और हे दैत्यो अब तुम सब प्रसन्नहोके देवताओंसे भयकोत्यागो अबमैं कालरूपी इन्द्रको अपने धनुषसे मारूंगा ५२ व बलवालों में श्रेष्ठ वलिराजाको प्रसन्नकरूंगा ५३

और उग्र बाणों करके सब देवताओं को युद्धमें जीतूंगा क्योंकि मेरे पास तूण और सर्प्पों के समान बाण अक्षय रूपहैं ५४ मेरे अगाडी युद्ध में जीतने की इच्छावाले ठहरने को कौन समर्थ है शत्रुओं के समूहको मारके प्रसन्नता और प्रीति राजाके अर्थ करूंगा ५५ युद्ध में मरेहुये का स्वर्गलोकमें वासहोताहै इस वास्ते युद्धके समान उत्तमगतिनहीं है सो सब दैत्य भयको पछाड़ीकर ५६ शत्रुओंको मारके नंदनवनमें आनदकरो ऐसे प्रह्लाददैत्य अपनी सेनाको कहके ५७ वेगसे कालकी सेनाको मर्द्दित करताभया और सब अस्त्रोंको जाननेवाला शूर और अपराजित ५८ युद्धमें सम्मुख रहनेवाला और अपनी बाहू के बलसे गर्वित ऐसा प्रह्लाद युद्धमें सम्मुख खड़ाहुआ नानाप्रकारके शस्त्रोंको धारण करनेवाले दैत्योंके साठिहजार रथ स्थितहुये ५९ और बहुतसे प्रह्लादके पुत्र स्थित हुये नानाप्रकारकी यज्ञोंके करनेसे ६० क्षमावाले और धर्म करनेवाले नित्यप्रति व्रतों में परायण दाता और प्रियवचन को कहनेवाले शास्त्रोंको जाननेवाले ६१ अपनी स्त्रियोंमें रत और इन्द्रियोंको जीतनेवाले ब्राह्मण और सत्य बोलनेवाले नित्यप्रति यज्ञ व अध्ययन करनेवाले ६२ बाण और अस्त्र विद्यामें चतुर बहुत से पराक्रमवाले और मतवाले हाथीके समान चलनेवाले शत्रुकी सेनाको मर्दन करनेवाले ६३ तथा युद्ध करनेकी इच्छावाले और क्रोधसे रंजित नेत्रोंवाले ६४ अपने २ ओष्ठके पुटोंको दशनेवाले और अपने २ भुजाओंको बजाके आपस में प्रसन्न करनेवाले ऐसे दैत्य शख आदि अनेकप्रकारके शब्दों करके कूद कूद युद्ध में प्राप्तहोनेलगे ६५ पश्चात् कितनेक दैत्य ताड वृक्षके समान लम्बे लम्बे धनुषोंको खैंचनेलगे ६६ और कितनेक बाणोंको हाथ में लेनेलगे ६७ और तपायेहुये सोनाके गहनों का धारण किये सफ़ेद वस्त्रोंको धारण किये ६८ अभिमानी और स्वर्गकी इच्छा करनेवाले व जयकी इच्छा करनेवाले शत्रुओं के मारने में पुरुषार्थ करनेवाले ६९ ऐसे दैत्य देवते तथा दैत्यों से नहीं जीतने के योग्य ऐसे कालसे युद्ध करनेलगे तब पताका ध्वजा माला इन्होंसे संयुक्त हाथी घोडा रथ इन्हों से संयुक्त और स्वर्गके मार्ग की इच्छा करनेवाली ७० गर्वित ऐसी दैत्यों की सेना शोभायमानहुई तब भीमपराक्रमवाला और बहुत शब्द करता हुआ बड़े शरीरवाला और बहुतसी व्याधियों से परिवृत ७१ ऐसा कालप्रभु बलवाले और आनदवाले सम्मुख गर्ज्जनेवाले दैत्यों की सेना को

देखताभया ७२ पश्चात् तिस दैत्यकी सेना को आवतीहुई देख व्याधियों करके सहित काल प्रतिलोम प्रकारसे घेरताभया ७३ अर्थात् दैत्योंकी सेनामें प्रवेश कर लोहू के समान लालनेत्रोंवाला अपनी सेनासे परिवृत ७४ ऐसाकाल दैत्यों की सेना का नाशकर पीछे प्रह्लाद दैत्यको दण्ड मुद्गर पट्टिश ७५ इन्हों करके मारनेलगा फिर शर, शक्ति, हृष्टि, तलवार, शूल, मूशल, गदा, परिघ, फरसा, धनुष, शतघ्नी इन्होंकरके सब व्याधियें दैत्योंकी सेना को मारनेलगे ७६ फिर बहुतसी व्याधी युद्धमें दैत्यों को मारतीभई और बहुत से दैत्य भी बहुत सी व्याधियों को मारनेलगे ७७ अर्थात् कितनीक शूलसे और कितनीक फरसासे कितनीक परिघसे ७८ व कितनीक तलवारसे ऐसे कटी हुई व्याधी दैत्योंके हाथमें होतीभई ७९ पश्चात् कितनेक तलवारों से और कितनेक भालों से और कितनेक मुद्गरों से ८० व कितनेक पट्टिशों से कटेहुये दैत्य भी व्याधियों ने करदिये ८१ फिर कितनेक शस्त्रों से कटेहुये और कितनेक मुक्कों से मथित हुये और कितनेक दांत तथा नेत्रोंसे रहितहुये ऐसे दैत्य लोहूको मुखसे बहाते भये ८२ तब कितनेक आर्त्तशब्द को करतेहुये और कितनेक सिंहके समान गर्जतेहुये तिन्होंका युद्धमें उग्रशब्द होनेलगा ८३ पश्चात् कितनेक मुक्कोंकी मारसे पृथ्वीतलमें प्राप्त होनेभये ८४ तब ब्रह्मरूपी झागोंवाली और ध्वजाओं से आवृत कटेहुये बाहुरूप सर्पोंवाली और शूल शक्तिरूप मच्छोंवाली और धनुषरूप ग्राहों से संयुक्त ८५ रथरूपी पत्थरों से संयुक्त और ध्वजारूप वृक्षोंसे संयुक्त घोरशब्दों करके विस्तारवाली ऐसी लोहूकी नदी बहनेलगी ८६ पीछे प्रह्लाद और काल दोनों धनुषोंको धारणकर बाणोंकी वर्षा करनेलगे ८७ पश्चात् आपसमें सेनाओं को वज्रकेसमान बाणों से काटनेलगे ८८ तब दोनों के युद्ध में योद्धाओंको भी यह निश्चयहुआ कि अब जीवना मुश्किलहै ८९ तब कितनेक बाणोंसे कटेहुये अंगोंवाले और कितनेक प्राणोंसे रहित और कितनेक लोहूसे भीगीहुई छातीवाले ऐसे योद्धा पृथ्वीमें पड़नेलगे ९० फिर शीघ्रपने से दोनों महाबलवाले मंडलीकृत धनुषों को धारणकर एकसेही दीखनेभये ९१ पीछे प्रह्लादके बाणों के समूहसे तिस कालरूप धर्मराजकी सेना कटतीहुई भागनेलगी ९२ जैसे वायु से बद्दलों के मंडल तब गर्व्व से रहित युद्धमें भागनेवाला और अपने वशमें स्थित ९३ ऐसे धर्मराजको जानके युद्धमें दुर्मदप्रह्लाद धर्मराज की

सेनाको फिर मर्द्दन करनेलगा ६४ तब काल और प्रह्लादका आपसमें ऐसायु
होनेलगा कि ऐसा कभी न पहलेहुआ और न कभी अगाडीहोगा ६५ ऐसे
कृतवीर्यवाला प्रह्लाद वृद्धीकोप्राप्तहुआ और धर्मराज युद्धसे भागताभया ६६

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांवामनेदेवासुरयुद्धे पञ्चाशदधिकद्विशतोऽध्यायः २५० ॥

दोसौइक्यावनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे प्रह्लादका छोटाभ्राता अनुह्लाद अपनी सेना को
यक्षों की सेना को क्षोभित करताहुआ कुबेरके सग युद्ध करनेलगा १ अर्थ
बहुतसी सेनाको ले अति प्रतापवाला अनुह्लाद कुबेर को पीडित करनेलगा
फिर शस्त्रोंको धारण करनेवाले और युद्धमें स्थित ऐसे देवताओं को नहीं
हनाहुआ अनुह्लाद दैत्य धनुपको हाथमेंलेके देवताओं की सेनाको काटनेला
३ तब देवते तथा दैत्यों के शरीरों करके पृथ्वी व्याप्तहुई जैसे पर्वतों से ४ और
मेरुपर्वतका पृष्ठभाग लोहूसे रँगाहुआ प्रकाशित होनेलगा जैसे केसूके फूलोंसे
चारोंतरफ वैशाखका महीना ५ तब मरेहुयेहाथी और घोड़ोंकरके व्याप्त ६
और मेदरूप कीचडवाली कंक सारसआदि पक्षियों से शब्दित ७ व बमाल
भागों से आकीर्ण बद्दलों के शब्द करनेवाली ८ व कुत्सित पुरुषों से संयुक्त
ऐसी लोहूकी नदी बहतीभई ९ तिस नदी को दैत्य तथा देवते तिरतेभये जैसे
कमलिनी को हाथी १० पीछे वाणोंको छोडनेवाला रथमें स्थित यक्षोंकी सेना
को मारनेवाला ऐसे अनुह्लादको देखके ११ क्रोधको प्राप्तहुआ कुबेर दैत्यों की
सेनाको काटनेलगा जैसे वायु बद्दलोंको १२ तब तिस उग्रयुद्धको देख के अ
नुह्लाद दैत्य आदित्य वर्णवाले रथ में स्थितहो कुबेर के सम्मुख चला १३ प
श्चात् धनुप विद्यावालों मे श्रेष्ठ अनुह्लाद युद्ध में धनुप खैंचके पैने २ वाणोंकी
वर्षा कुबेरके अर्थ करनेलगा १४ तब वे वाण कुबेर को वेधके पृष्ठभाग में स्थित
हुये यक्ष राक्षसोंको भी मारतेभये १५ तब अग्निके समान प्रकाशवाले और तेज
ऐसे वाणों से हतहुआ कुबेर युद्ध में क्रोधको प्राप्तहो अनुह्लाद दैत्य के सम्मुख
भागा १६ तब बहुतसी यक्षोंकी सेनासे परिवृत्त अति वीर्यवाला ऐसा कुबेर वाणों
की वर्षा करनेलगा १७ पीछे जैसे शरदऋतुकी वर्षाकी बूंदोंको भाग तथा मैं

शिरपै सहते हैं तैसे १८ वह अनुह्लाद दैत्य बाणोंकी वर्षाको सहताभया १९ तब बाणोंकी वर्षा से क्रोधको प्राप्तहुआ अनुह्लाद दैत्य अपने सम्मुख इन्द्रकी केतु के समान प्रकाशवाला २० और बढ़ीहुई शाखाओंवाला फलों से संयुक्त ऐसे वृक्षको देखके उसीवृक्ष उखाड हाथमें ग्रहणकर कुबेरके अति वेगवाले घोड़ों को मारताभया तब अनुह्लादके इस गहरकर्मको देखके २१ सब दैत्य सिंहोंके समान शब्द करनेलगे पीछे अनुह्लादका और कुबेरका युद्ध आपस मे होनेलगा २२ तब क्रोधकरके लाल नेत्रोंवाले आपसमें एक दूसरेको मारनेकी इच्छावाले ऐसे दोनों नानाप्रकारके घोर शस्त्रों करके युद्धमें आपसमें काटनेलगे २३ पश्चात् बलवाले देवताओं ने बहुतसे दैत्य मारदिये तब क्रोधको प्राप्तहुये दैत्योंने बहुत से देवते पृथ्वी तलमें गेरदिये २४ पीछे क्रोधको प्राप्तहुये दैत्य अग्निके समान प्रकाशवाले और कंक पक्षीकी पाखोंसे संयुक्त २५ टेढेनहीं चलनेवाले ऐसे पैने बाणोंकरके देवतों को बींधनेलगे तब दैत्यों के समूहसे कटनेहुये देवते फिर भय से रहितहो कर्म्म करनेलगे २६ अर्थात् गदा, पट्टिश, शूल, मुद्गर, परिघ, बाण इन्हों करके दैत्योंको पीडा देनेलगे २७ तब बाण और तलवार आदि शस्त्रोंसे पीडितहुये दैत्य पत्थर और वृक्षोंको ग्रहणकर २८ वारम्बार वीर्य से लाखों देव- ताओं को मथतेभये २९ तब बडे २ पत्थर और बडे २ वृक्षोंकरके घोरयुद्ध होने लगा ३० अर्थात् परिघ, पट्टिश, भिंदिपाल, फरसा इन्होंकरके कितनों के शिर कटगये और कितनों के शरीर कटगये ३१ कितनेक मरके लोहू से भीगेहुये पृथ्वी में पडतेभये और कितनेक भाजतेभये ३२ तथा कितनेकों के हृदय फटते भये और कितनेक पैरों के कटजाने से पृथ्वी में पडतेभये ३३ ऐसे देवते तथा दैत्योंकी दशाहुई तब कुबेर धनुषको धारणकर क्रोधको प्राप्तहो बाणोंकी वर्षासे दैत्योंको दिशाओं में भगानेलगा ३४ तब कुबेर से पीडित सेनाकोदेख क्रोधसे दुगुने लालनेत्रोंवाला ३५ व पिता हिरण्यकशिपु के समान पराक्रमवाला अ- नुह्लाद एक शिलाको ग्रहणकर कुबेरकेरथपै फेंकनालगा ३६ तब गदाको धारण करनेवाला कुबेर आवतीहुई शिलाको देख वेगसे रथसे कूद पृथ्वी में प्राप्तभया ३७ तब चक्र कूबर ध्वजा घोडे शरासन इन आदि से संयुक्त रथ को तोड वह शिला पृथ्वी में पडी ३८ ऐसे कुबेर के रथ को तोड अनुह्लाद दैत्य वृक्षोंकरके देवताओंकी सेनाको मारनेलगा ३९ तब फटेहुये शिरोंवाले और लोहूसे भीगे-

हुये वहुतसे देवते पृथ्वी में पडतेभये ४० ऐसे देवताओंकी सेनाको काटके पर्वत के वडे शृङ्गको ग्रहणकर कुवेरके सामनेभागा तव आवतेहुये दैत्यको गदा धारण करनेवाला कुवेर वुलानेलगा ४१ व दैत्य की छाती में गदाका प्रहार भी करताभया ४२ तव क्रोधसे लालनेत्रोंवाला अनुह्लाददैत्य प्रहारका चिंतवनकर कुवेरके ऊपर उस पर्व्वतके शृङ्गको गेरताभया ४३ तव पर्व्वतके शृङ्गसे ताडित विह्वलरूप अगोंवाला और पीलेनेत्रोंवाला ऐसा कुवेरहोके पृथ्वी में पडताभया ४४ तव विह्वलरूप कुवेर को देखके सव यक्ष तथा राक्षस ४५ चारोंतर्फ से रक्षा करतेभये ऐसे दोघडी तक विह्वल रहके ४६ फिर वेगसे उठ त्रिलोकीको शब्दित करताहुआ कुवेर शब्द करनेलगा ४७ तव पर्वतोंको कम्पानेवाला और अवध्य रूप फिर उठाहुआ ऐसे कुवेरको जानके ४८ और आवतेहुयेको देख सव दैत्य भागतेभये ४९ तव तिन भागतेहुये दैत्यों के प्रति अनुह्लाद कहनेलगा कि कालनेमि सुनेमि महानेमि इन दैत्योंको और आपको अपने वीर्यको अपने कुल को भूलके भयसे पीडितहुये ५० कहा गमन करतेहो सव उलटे चलेआवो क्या प्राणों की रक्षाकरतेहो ५१ यह कुवेर युद्धके अर्थ समर्थ नहीं है और यह हमारी सेना वडी भय मानती है ५२ परन्तु मैं अपने पराक्रमसे कुवेरको मारूंगा तुम सव चलेआवो ५३ तव सव दैत्य उलटे फिरके क्रोधको प्राप्तहो देवताओंकी सेना को मारनेलगे ५४ जव युद्धमें शस्त्र टूटगये तव गर्व के प्रतापसे भुजाओंके द्वारा प्रहार करनेलगे और कितनेक धूलीकरके तथा कितनेक काष्ठों करके और कितनेक पत्थरोंकरके ५५ कितनेक हाथोंकरके और कितनेक मुक्कोंकरके कितनेक नखोंकरके ५६ और कितनेक महा शाखावाले वृक्षोंकरके ऐसे सव दैत्य तथा देवते युद्ध करनेलगे तव क्रोधको प्राप्तहुआ अनुह्लाद दैत्य देवताओंकी सेनाको ५७ जलानेलगा जैसे वनोंको अग्नी तव लोहूसे भीजेहुये वहुतसे योद्धा कटे हुये पृथ्वीमें पड़ते भये ५८ व कुवेरभी सर्पोंके समान वाणोंकरके ५९ अनुह्लाद दैत्य को वींधताभया तव अनुह्लाद के मुखमें वहुतसी अग्नि निकसनेलगी ६० पीछे अनुह्लाददैत्य कुवेरको हजार वाणों से वींधनेलगा ६१ तव वाणों से वींधाहुआ चारोंतरफ से लोहूकरके भीजाहुआ ६२ ऐसे कुवेरके शरीरमें वहुतसा लोहू भिरताभया जैसे पर्वतोंसे पानी ६३ तव फिर सज्ञाको प्राप्तहो कुवेर गदाको ग्रहणकर ६४ अनुह्लाद को मारनेलगा तव अनुह्लादने अपनी गदासे वह गदा

मार्गमेंही ६५ तोडदी तब वडा आश्चर्य होताभया फिर दूसरी गदाको ग्रहणकर कुवेर दैत्यके सम्मुख जाने लगा ६६ तब कैलाश पर्व्वतके समान कान्तिवाला किसी पर्वतके शृङ्गको ग्रहणकर ६७ अनुह्लाद भी सम्मुखभागा तब आवतेहुये अनुह्लादको देखकर कुवेर ६८ युद्धभूमिको त्याग भयसे भागके जहा इन्द्र स्थित था तहा प्राप्तहुआ ६९ व भय से पीडितहुआ वडा आश्चर्य माननाभया ७० ॥
इतिश्रीहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायावामनेदेवासुरयुद्धएकपचाशदधिकद्विशतोऽध्याय २५१ ॥

दोसौबावनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि दैत्योंका स्वामी विप्रचित्ति दैत्य प्रकाशरूप सर्पों के समान ऐसे बाणोंकरके वरुणको बांधनेलगा १ तब दैत्यके बाणोंसे दग्ध होताहुआ वरुण युद्धमें कर्तव्य को नहींजानताभया २ जैसे मन्त्र लोकके स्वामी विष्णुके अगाडी ब्रह्माजी स्थितहोने को समर्थ नहीं हैं तैसे विप्रचित्ति दैत्यके सम्मुख वरुण स्थितहोने को समर्थनहीं हुआ ३ वज्रनाम व्यूहको रचके सबदैत्य देवताओं की सेनाके सग युद्ध करनेलगे ४ और अग्नीकी लटाके समान प्रकाशित सूर्यके मण्डलके समान तेजवाला ऐसामुख विप्रचित्तिदैत्यका उस समयमें होताभया ५ तब महा तेजवाला वरुण विप्रचित्ति दैत्यको अपने नेत्रों के तेजसे दग्ध करताहुआ और जीतनेकी इच्छाकेअर्थ दैत्यके सम्मुख देखनेलगा ६ फिर मालाआदिकों से भूषित और पाचअगुल के अन्तरसेयुक्त कैलाशपर्वत के शिखरके समान उपमावाला ७ और सोनाकी डोरियोंकरके वंधाहुआ धर्मराज के दण्डके समान दैत्यों के भयको दूर करनेवाला ८ ऐसे परिघ शस्त्रको विप्रचित्ति दैत्य ग्रहणकर भ्रमानेलगा ९ तब कण्ठमें स्थित धुकधुकी करके भुजाओं पै स्थित बाजुओं करके और विचित्ररूप कुण्डलों करके तथा विचित्ररूप मालाकरके १० व तिसलोहेके परिघ करके विप्रचित्ति शोभित होनेलगा जैसे इन्द्रका धनुष बिजली गर्जना इन्हों करके मेघ ११ तब विद्याधरों के समूह और गन्धर्व नगर तथा अमरावती तथा सिद्धलोक इन्होंकरके सहित १२ व ग्रह नक्षत्र इन्होंसे रचाहुआ सूर्य और चन्द्रमासे विभूषित ऐसा आकाश विप्रचित्ति के परिघ के फेंकनेसे भ्रमनेलगा १३ पश्चात उस परिघसे युगांत समयकी अग्नी के समान अग्नी उठताभया १४ तब वरुण और सब देवते भयसे फिरतेहुये तहा

ठहरनेको समर्थ नहीं होतेभये तहा अकेला इन्द्रही निर्भयहो स्थिररहा १५ पीछे सूर्य्य के समान तेजवाले उस परिघको विप्रचित्ति दैत्य वरुणकी सेनापै गेरता भया १६ तव दशहजार सेना तिस परिघमे मरतीभई १७ अर्थात् दशहजार देवतोंके शरीरों के हजारहा टुकडे होतेभये १८ फिर उस परिघको भ्रमाके वरुणके अर्थ छोडताभया तव तिस प्रहारकरके वरुण शरीरमे १९ वहुतसी जगहमे लोहू निकसने से निकसकर पटवीजनों की तरह मालूम होनेलगा २० पीछे तिसपरिघके लगने से वरुण चलायमान होनेलगा जैसे भूमिकम्पमें पर्वत २१ पीछे जव वरुणकीसेना कटगई तव दोघडीतक अतिवलवाला वरुण क्रोधको प्राप्तहो २२ शत्रुओंका सहारकरनेलगा और चारसमुद्रो से परिवृत्त २३ वहुतसे प्रकाशमान सर्पोंसे परिवृत्त और शख मोती मणी इन्होंके समान जलमय शरीर को धारण करनेवाला २४ और सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाला तथा नानाप्रकार के रत्नों से जटित वाजुवन्द को धारणकरनेवाला और फासियों को धारण करनेवाला कछुवे और मच्छियों से युक्त २५ ऐसा वरुण क्रोधको प्राप्तहो अपनी सेना को देख कहनेलगा कि हे देवताओ दैत्यों को मारनेकी इच्छा करके युद्धकरो २६ और मैं इस विप्रचित्तिको मारूंगा इसवास्ते भयको छोड लडो २७ तव समुद्रमें वसनेवाले सव सर्प्प युद्ध में दैत्योंको मारनेलगे और नालीक वाण गदा मूसल २८ इन्होंकरके वरुणकीसेना दैत्योंको काटनेलगी तवक्रोधको प्राप्तहुआ महावल और पराक्रमवाला विप्रचित्ति दैत्य २९ गारुड अस्त्र करके सर्पों को मारने लगा ३० तव वाणोंसे पीडित और कटेहुये शरीरोंवाले ऐसे सर्प पृथ्वीमें पडने लगे ३१ जैसे अति वलवाले हाथियोंमे अल्पवलवाले हाथी ३२ पीछे दीप्तरूप वाणों करके क्रोधको प्राप्तहुआ वरुण युद्धमें विप्रचित्तिके अर्थभागा तव वरुणके वाणोंसे कटेहुये हजारहों दैत्य ३३ दशों दिशामें भागतेभये ऐसे इन्द्र के अर्थ पराक्रम करनेवाला वरुण युद्धकरताभया ३४ पश्चात् वरुणकी सेना पत्थरों से और मुक्कों से विप्रचित्ति दैत्यके चारोंतरफ मारनेलगी ३५ तव अनेक प्रकारके शस्त्र और पत्थरोंसे ३६ विप्रचित्ति दैत्यभी वरुणकी सेनाको भगानेलगा पश्चात् अग्निके समान प्रकाशवाले और जल्द चलनेवाले ३७ ऐसे वाणोंमे गहनेंगवाले वरुणके घोडोंको विप्रचित्ति दैत्य वींधताभया ३८ निम कर्मकरके विप्रचित्ति दैत्यका तेजवढ़ता भया ३९ जैसे घृतकी आहुती से अग्नि पीछे सूर्यके समान

प्रकाशवाले ४० बाणोंसे विप्रचित्ति दैत्य वरुणकी सब सेनाको मथनेलगा तब क्षीण होगयेहैं शस्त्र जिसके बाणोंसे आक्रांत और बाणोंके जालकरके मोहित ४१ शूल शक्ति रिष्टि इन्होंसे कटीहुई और लोहूसे भीजीहुई ऐसी वरुणकी सेना होतीभई ४२ पीछे दैत्यके भयको मान अपनी सेनाकरके सहित वरुण भागके इन्द्रकी शरणमें जाके स्थितहुआ ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायावामनेदेवासुरयुद्धेद्विपचाशदधिकद्विशतोऽध्यायः

दोसौतिरपनका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे देवताओं के पराजयको देख ब्रह्मर्षियों से स्तुति किया और देवताओं में उत्तम ऐसा अग्नी दैत्यों के मारने वास्ते मन करता भया १ अर्थात् स्वयप्रभा नामवाली शाण्डिली का पुत्र हव्यको वहनेवाला व हिरण्यरूप वीर्य्यवाला पीले नेत्रोंवाला और देवदूत आहूती को खानेवाला २ व लालरङ्गवाला तथा लाल ग्रीवावाला हरता और दाता और हवि और कवि और पावक विश्वभुक् और देव इन नामोंवाला सब देवताओं का मुख और एकराजा ३ व लोकसाक्षी और ब्राह्मणके हाथकी आहुतीको प्रियतासे ग्रहण करनेवाला प्रभु महात्मा ४ सुवर्चस्त सहस्रार्चि और विभावसु कृष्णवर्त्मा चित्रभानु देवाग्रचित्र अर्चिष्मान् वषट्कृत् हव्यभक्ष शमीगर्भ स्वयोनि ५ इन नामोंवाला और सब कर्मोंको करनेवाला तथा सब भूतों को पवित्र करनेवाला व देवताओं की तपकी खान और सबके पापों को शान्त करनेवाला लेलिहान और तनूनपात् ६ व प्रदक्षिणावर्त शिखशुचि रोमा मखाकूनी हव्यभुक् भूत भव्येश हव्यभाग हरहरि ७ सोमप महातेजा भूतेश सर्वभूतपाव और अधृष्य पावक भूनी भूतात्मा स्वधाधिप ८ स्वाहापति सामगीत सोमपूतागन अर्चिरुक् देव देव महाक्रोध रुद्रात्मा ब्रह्मसस्तुत ९ धूमकेतु धूमशिख सुरोत्तम इन नामों वाला ऐसा अग्नी लाल घोडों से जुताहुआ और वायुके समान पहियोंवाला ऐसे रथमें नीले वस्त्रों को पहन के बैठ १० दिव्य आग्नेय अस्त्र को ग्रहणकर अग्निदेव दैत्यों के रजाग्लाव अर्थ ११ इनकी परिमित सेनाको जलाने लगा और सब प्राणियों का प्राणरूप होके देहमें पांचप्रकार से स्थित होनेवाला १२ अग्नीका सारथी और मित्र और प्रभु और ईश्वर और सब लोकोंका प्रमर्दन

रूप युगान्त में सर्वों को नाशनेवाला १३ व जिसकी योनि सात स्वरोंके द्वारा वाणी से उच्चारित करीजायँ ऐसा आकाश में रहनेवाला और दूर गमन करने वाला तथा शब्दको उपजानेवाला १४ व कर्त्ता निकर्त्ता गतिवालोंकी गति व वेदकर्त्ता ब्रह्माके समान लोकमें सनातन १५ मूर्त्तिसे रहित और महाभूत ऐसा वायु अग्नीको सहायता देताभया १६ अर्थात् स्वर्गको प्राप्त होनेवाली लटाओं से दशों दिशाओं में जम्भमाण अग्नी दैत्योंके नाशके अर्थ प्रलयकी अग्नी के समान होताभया १७ । १८ तब मेद और मज्जारूप कीचडवाला केशरूप हरियाई और काईसे सयुक्त योद्धाओं के शिररूप पत्थरोंसे संयुक्त और मरेहुये हाथीरूप तटसे सयुक्त १९ ऐसी लोहूकी बहती नदी को देखके दैत्यों को भय देनेवाला अग्निदेव बलकरनेलगा २० तब प्रह्लादआदि सबदैत्योंको यहअग्नी पराजित अर्थात् सबोंको जीतताभया २१ व कितनेक दैत्य जलतेहुये मुकुटोंसे सयुक्त और कितनेक दैत्य जलतेहुये केशोंसे सयुक्त और कितनेक दैत्य जलते हुये सम्पूर्ण अंगों से सयुक्त होनेलगे फिर कितनेक दैत्यों के हाथ मुख जलने लगे २२ व कितनेक दैत्यों की जङ्घा जलनेलगीं और कितनेक दैत्यों के छत्र ध्वजा रथ ये जलनेलगे ऐसे प्रकाशितहुये अग्नीसे सब दैत्य दग्ध होनेलगे २३ तब भयसे पीड़ित दैत्य सब प्रकारके शस्त्रोंको त्यागके दशों दिशाओंको भा गनेलगे २४ व अग्नीसे हारेहुये भयभीत दैत्य युद्धमें प्राप्त होनेलगे तब युद्ध में प्रकाशमान अग्निको नहीं देखतेभये २५ व दिशा आकाश पृथ्वी मेघ इन सबोंको जलतेहुये देखनेलगे तब सब दैत्य कहनेलगे कि निश्चय ब्रह्माजी ने यह अग्नी रचा है २६ तब मय और शम्बर इन नामोंवाले दो दैत्य २७ पानी को भिरानेवाली पार्जन्य और वारुणी इन नामोंवाली दो मायाओं को रचने भये तब तिन दोनों मायाओं के प्रतापसे पर्वतके समान पानीकी धारा करके सेच्यमान अग्नी युद्धमें कोमल तेजवाला होनेलगा तब दैत्योंको नाशनेवाला २८ युद्ध में कोमल तेजवाला ऐसे अग्नी से बडी कीर्तिवाला और अतितेज वाला बृहस्पतिजी कहनेलगा २९ हे हिरण्यरेत हे सुशिख हे ज्वलन हे अक्षय हे सर्वभुक् हे सप्तजिह्व हे अनल हे क्षाम हे लेलिहान हे महानल ३० हे विभो तेरा वायु आत्माहै वाम तेरा शरीरहै जल तेरी योनिहै और जलकी तू योनि है ३१ हे महाभाग तेरी लटा ऊपरको व नीचे को व पार्श्व को व चारों तरफ

विचरती हैं ३२ हे अग्ने सर्वरूप तूही है और तेरे विषे यह सब जगत्है और प्रा-
णियों को धारण करनेवाला तूही है इस संसार को भरनेवाला भी तूही है ३३
हव्य वाटभी तूही है और परमहविरूप द्रव्यभी तूही है यज्ञोंमें तेरेहीको सब काल
में सत पूजते हैं ३४ व तूही प्राणियों के शरीरों में अन्नको खाता है और जल
को पीताहै और तेरेसेही यह निजय प्रवृत्त हुआ है और तेरे विषे ये सब लोक
प्रतिष्ठितहैं ३५ व इन तीन लोकोंको रचके समयपै पकानेवाला तूही है तपके
अर्थ जातवेद नामसे विख्यातभी तूही है और तेरे सिवाय अन्यतरा कोप भी
नहीं है ३६ तूही शिवरूपहै और समुद्रोंका पतिभी तूही है यज्ञोंमें अग्रभागको
हरनेवालाभी तूही है ससारकी विभूतिभी तूही है और तेरेही से संसार उपजा है
और तेरेही में सम्पूर्ण ससार स्थितहोताहै ३७ हे अग्ने तू अपनी किरणोंकरके
जलको रचे है और ओषधिभी तूही है ओषधियों का रसभी तूही है और प्रलय
कालमें इस ससारको तूही ग्रहण करताहै और उत्पत्ति कालमें तूही इस जगत्
को रचनेवालाहै ३८ और हे अग्ने सब प्राणियोंकायोनि तूही वेदमें गायागया
है सो देवताओं के कल्याणकेअर्थ तैने बहुतसे दैत्योंका नाशकियाहै ३९ सो तू
इसजलसे उपजाहै सो जल को प्राप्तहो क्यों शिथिल होताहै ४० हे देवसत्तम इन
देवताओंको दैत्योंके भयमे रक्षाकर और हे युगांताग अर्थात् प्रलयकी अग्निके
समान हे दैत्योंकानाश करनेवाला और विश्वकर्म सहस्रभुक् ४१ पिंगाक्ष लोहित-
ग्रीव कृष्णवर्त्म हुताशन इन नामोंवाला हे अग्ने तूही रक्षाकरनेके योग्यहै ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांदवासुरयुद्धेअग्निस्तव
त्रिपञ्चाशदधिकद्विशततोऽध्याय २५३ ॥

दोसौचौवनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे बृहस्पतिजी के सत्यवचनको सुनके युद्धमें फिर
अग्नि प्रज्वलितहुआ जैसे घृतमे यज्ञमे १ तब अग्निने सब दैत्योंकीमाया ना-
शितकरी तब माया और सेनासेरहित बहुतसे दैत्य बलिराजाकेपास प्राप्तहुये २
अर्थात् अद्भुत कर्मवाले अग्नि ने जब सब दैत्य जीतलिये तब प्रह्लाद दैत्योंका
राजा राजाबलिसे कहनेलगा ३ हे दैत्यसत्तम तूही अग्निहै और तूही वायुहै व
तूही सूर्य्य है व तूही जलहै व तूही चन्द्रमा है और तूही नक्षत्ररूप है और तूही

रूप युगान्त में सबों को नाशनेवाला १३ व जिसकी योनि सात स्वरोंके द्वारा वाणी से उच्चारित कीजायँ ऐसा आकाश में रहनेवाला और दूर गमन करने वाला तथा शब्दको उपजानेवाला १४ व कर्त्ता निकर्त्ता गतिवालोंकी गति व वेदकर्त्ता ब्रह्माके समान लोकमें सनातन १५ मूर्त्तिसे रहित और महाभूत ऐसा वायु अग्नीको सहायता देताभया १६ अर्थात् स्वर्गको प्राप्त होनेवाली लटाओं से दशों दिशाओं में जम्भमाण अग्नी दैत्योंके नाशके अर्थ प्रलयकी अग्नी के समान होताभया १७। १८ तब मेद और मज्जारूप कीचड़वाला केशरूप हरियाई और काईसे संयुक्त योद्धाओं के शिररूप पत्थरोंसे संयुक्त और मरेहुये हाथीरूप तटसे संयुक्त १९ ऐसी लोहूकी बहती नदी को देखके दैत्यों को भय देनेवाला अग्निदेव बलकरनेलगा २० तब प्रह्लादआदि सबदैत्योंको यहअग्नी पराजित अर्थात् सबोंको जीतताभया २१ व कितनेक दैत्य जलतेहुये मुकुटोंसे संयुक्त और कितनेक दैत्य जलतेहुये केशोंसे संयुक्त और कितनेक दैत्य जलते हुये सम्पूर्ण अंगों से संयुक्त होनेलगे फिर कितनेक दैत्यों के हाथ मुख जलने लगे २२ व कितनेक दैत्यों की जङ्घा जलनेलगीं और कितनेक दैत्यों के छत्र ध्वजा रथ ये जलनेलगे ऐसे प्रकाशितहुये अग्नीसे सब दैत्य दग्ध होनेलगे २३ तब भयसे पीड़ित दैत्य सब प्रकारके शस्त्रोंको त्यागके दशों दिशाओंको भागनेलगे २४ व अग्नीसे हारेहुये भयभीत दैत्य युद्धमें प्राप्त होनेलगे तब युद्ध में प्रकाशमान अग्निको नहीं देखतेभये २५ व दिशा आकाश पृथ्वी मेघ इन सबोंको जलतेहुये देखनेलगे तब सब दैत्य कहनेलगे कि निश्चय ब्रह्माजी ने यह अग्नी रचा है २६ तब मय और शम्बर इन नामोंवाले दो दैत्य २७ पानी को भिराानेवाली पार्जन्य और वारुणी इन नामोंवाली दो मायाओं को रचते भये तब तिन दोनों मायाओं के प्रतापसे पर्वतके समान पानीकी धारा करके सेच्यमान अग्नी युद्धमें कोमल तेजवाला होनेलगा तब दैत्योंको नाशनेवाला २८ युद्ध में कोमल तेजवाला ऐसे अग्नी से बड़ी कीर्त्तिवाला और अतितेज वाला बृहस्पतिजी कहनेलगा २९ हे हिरण्यरेत हे सुशिम्र हे ज्वलन हे अभय हे सर्वभुक् हे सप्तजिह्व हे अनल हे क्षाम हे लेलिहान हे महानल ३० हे विभो तेरा वायु आत्माहै धाम तेरा शरीरहै जल तेरी योनिहै और जलकी तू योनि है ३१ हे महाभाग तेरी लटा ऊपरको व नीचे को व पार्श्व को व चारों तरफ

विचरती हैं ३२ हे अग्ने सर्वरूप तूहीं है और तेरे विषे यह सब जगत् है और प्राणियों को धारण करनेवाला तूही है इस संसार को भरनेवाला भी तूही है ३३ हव्य बाटभी तूही है और परमहविरूप द्रव्यभी तूही है यज्ञोंमें तेरेहीको सब काल में सत पूजते हैं ३४ व तूही प्राणियों के शरीरों में अन्नको खाता है और जल को पीताहै और तेरेसेही यह विजय प्रवृत्त हुआ है और तेरे विषे ये सब लोक प्रतिष्ठितहैं ३५ व इन तीन लोकोंको रचके समयपै पकानेवाला तूही है तपके अर्थ जातवेद नामसे विख्यातभी तूही है और तेरे सिवाय अन्यतसा कोप भी नहीं है ३६ तूही शिवरूपहै और समुद्रोंका पतिभी तूही है यज्ञोंमें अग्रभागको हरनेवालाभी तूही है संसारकी विभूतिभी तूही है और तेरेही से संसार उपजा है और तेरेही में सम्पूर्ण संसार स्थितहोताहै ३७ हे अग्ने तू अपनी किरणोंकरके जलको रचे है और ओषधिभी तूही है ओषधियों का रसभी तूही है और प्रलय कालमें इस संसारको तूही ग्रहण करताहै और उत्पत्ति कालमें तूही इस जगत् को रचनेवालाहै ३८ और हे अग्ने सब प्राणियोंकायोनि तूही वेदमें गायागया है सो देवताओं के कल्याणकेअर्थ तैंने बहुतसे दैत्योंका नाशकियाहै ३९ सो तू इसजलसे उपजाहै सो जलको प्राप्तहो क्यों शिथिल होताहै ४० हे देवसत्तम इन देवताओंको दैत्योंके भयसे रक्षाकर और हे युगातान अर्थात् प्रलयकी अग्निके समान हे दैत्योंकानाश करनेवाला और विश्वकर्म सहस्रभुक् ४१ पिंगाक्ष लोहितग्रीव कृष्णवर्त्म हुताशन इन नामोंवाला हे अग्ने तूही रक्षाकरनेके योग्यहै ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांदेवासुरयुद्धेअग्निस्तवे त्रिपञ्चाशदधिकद्विशतोऽध्याय २५३ ॥

दोसौचौवनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे बृहस्पतिजी के सत्यवचनको सुनके युद्धमें फिर अग्नि प्रज्वलितहुआ जैसे घृतसे यज्ञमें १ तब अग्निने सब दैत्योंकीमाया नाशितकरी तब माया और सेनासेरहित बहुतसे दैत्य बलिराजकेपास प्राप्तहुये २ अर्थात् अद्भुत कर्मवाले अग्नि ने जब सब दैत्य जीतलिये तब प्रह्लाद दैत्योंका राजा राजाबलिसे कहनेलगा ३ हे दैत्यसत्तम तूही अग्निहै और तूही वायुहै व तूही सूर्य्य है व तूही जलहै व तूही चन्द्रमा है और तूही नक्षत्ररूप है और तूही

आकाशरूपहै और तूही दिशारूपहै और तूही पृथ्वीरूप है ४ और तूही भूतहै तूही भविष्यहै और तूही वर्त्तमानहै ब्रह्माजी ने तेरे अर्थ वरदान दियाहै ५ जिस से तू इन्द्रपनाको और अमरपना को और युद्धमें जीतको और ऐश्वर्यको और सबको वशमें करनेको और अप्रमित दलको तू प्राप्तहुआहै ६ व सब भूतोंका ईश्वर भी तूहीहै और सब कालमें प्रभु भी तूहीहै और महायोगियों का ईश्वर भी तूही है और युद्धमें शूरवीर भी तूही है ७ व सात्त्विक गुणभी तेरे बीचमें है ऐसा तू इन्द्र और सब देवताओंको जीत ८ क्योंकि ब्रह्माजी ने जैसे कहाहै तैसेहीहोगा और अन्यथा नहीं तब प्रह्लाद के वचन को सुन ९ तब परम प्रसन्नहुआ बलि राजा जहां इन्द्रका रथ खड़ाथा तहां जाके प्राप्तहुआ १० तब इन्द्र के समीप में दैत्योंका इन्द्र और उत्तम शोभावाला ऐसा बलिराजा गमन करनेलगा तब ब-लिराजा की मंगलरूप पक्षी और मंगलरूप पशु परिक्रमा करनेलगे ११ और गमन करने के वक्त बड़ी जटाको धारण करनेवाले तपस्वी और कवि नानाप्र-कार के मंगलरूप मंत्रों से बलिराजा की स्तुति करनेलगे १२ तब तपायमान सोनाके चित्राभूषण और नानाप्रकारके दिव्यरत्न इन्हों से अलंकृत और उत्तम तेजसे शोभित ऐसा बलिराजा अग्नि के समान प्रकाशित होनेलगा १३ तब उत्तम वीर्य्य और पराक्रमवाला बलिराजा शत्रुओं की सेना से पीडित अपनी सेनाको देखताभया जैसे वायुसे आकाशमें बद्दल १४ तब चारोंतरफ से युद्ध में अग्निसे रक्षित देवताओंकी सेनाको देख १५ पीछे शूल बरछी रिष्टी गदा तल-वार बाण इन्हों को शत्रुओं की सेना में फेंकताहुआ मदोन्मत्त हाथी की तरह शब्द करताभया जैसे वर्षा के समयमें बद्दल १६ पीछे दिव्यअस्त्ररूप धूमवाला और भुजाओं के वेगरूप वायुवाला और महानलवाला और पौरुष और परा-क्रमरूप इन्धनवाला ऐसा बली घोररूप अग्निकेसमान युद्धमें प्रकाशित होता भया जैसे प्रजाको दग्ध करनेवाला कालवह्नि १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिभाषायामदेवासुरयुद्धेपञ्चपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५४॥

दोसौपचपनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तब बलिराजाने परम इन्द्रके बिना बाणोंकरके सब दे-

वते बाँध और सेनासहित जीतलिये १ तब दैत्यों करके मरतेहुये और बलि के जीतेहुये सब देवते महाबलवाले इन्द्र से कहने लगे २ कि हे इन्द्र तूही हमारा इन्द्रहै और तूही धाताहै और लोकोंका प्रभु भी तूहीहै और तूही अविनाशी है और अप्रतिम कर्म्म करनेवाला भी तूही है और उत्तम कीर्त्तिवाला भी तूही है ३ सो हे देवताओंका ईश्वर सब देवताओं सहित सेना भागी जाती है और रथ चक्र ध्वजा आदि सब दैत्योंने तोडदियेहैं ४ व रथ हाथी घोडे योधा हजारहा प्यादे गदा मूसल पट्टिश ५ इन्हों करके सैकडों छिन्नभिन्न करदिये हैं सो बलि राजाने ऐसा भयानकरूप युद्धमें कियाहै सो दैत्योंकरके मरतीहुई अपनी सेना को आप क्यों त्यागते हैं ६ हे देवश्रेष्ठ हे शरण्य शरण को प्राप्तहुये देवताओं की रक्षाकर ऐसे देवताओं के वचनको सुनके ७ संवर्तक अग्निकेसमान क्रोध को प्राप्तहुआ इन्द्र सब दैत्यों को दग्ध करनेलगा अर्थात् सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशवाले मुकुट को धारण करनेवाला ८ और वैडूर्य्य रत्न के समान कांतिवाला और अनेकप्रकार के रत्नों से जटित बाजूबंद को धारण करनेवाला और धूम्र नेत्रोंवाला और सौ बाहू व हजार नेत्रोंवाला ९ व अकेला व हरीडाढ़ी वाला व हाथीकी ध्वजावाला व महाबलवाला व वज्रकाप्रहार करनेवाला और योगी व सौ शिरोंको धारण करनेवाला १० व धनुष व कवच को धारण करने वाला सौ सूर्य्यों के समान तेजवाला और देवता, गंधर्व, यक्ष इन्हों के समूह से परिवृत ११ व सामवेदको गानेवाले और जाप करनेवाले ऐसे महर्षियों से स्तुति किया और सौ पर्व्वों से संयुक्त और महारुद्र और सब तरफ को मुखवाला १२ ऐसे वज्रको धारण करनेवाला ऐसा इन्द्र सब दैत्यों से युद्ध करनेलगा १३ और तब बलिराजाका और इन्द्रका आपसमें उग्रयुद्ध होनेलगा १४ तब प्रह्लाददैत्यने सैकड़ों स्तुतिरूप जयके देनेवाले कर्मोंकरके बलिराजा को प्रबोधित किया तब अग्निके समान प्रकाशित होताभया १५ ऐसे इन्द्र और बलिराजा के युद्ध को देख दैत्य और देवताओंका फिर युद्ध होनेलगा १६ फिर अस्त्रोंकरके इन्द्र बलि को बाँधनेलगा तब बलिराजाने शस्त्रों के सौसौ टुकडे करदिये १७ पीछे क्रोध को प्राप्तहुआ इन्द्र दुर्व्वारणरूप आग्नेय अस्त्रको बलिकेअर्थ छोडताभया १८ तब आवतेहुये अग्नि के समान अस्त्रको देख बलिराजा वारुणास्त्रसे शांतक-रताभया अर्थात् बुझावताभया १९ पीछे फिर क्रोधको प्राप्तहुआ इन्द्र बलिराजा

को मारने के अर्थ पर्व्वत के समान वज्रको ग्रहण करताभया २० तब आकाश-
वाणीहुई अर्थात् उस आकाशवाणी को इन्द्र सुनताभया २१ तब आकाशवाणी
कहनेलगी हे इन्द्र युद्ध से अलग होजा इस बलिराजा को युद्धमें तू नहीं जीत
सकेगा २२ क्योंकि तपकरके बलिराजा तेरे से उत्तमहै और ब्रह्माजी के वरदान
से और सत्य बोलने से और धर्म्मों के करने से बलिराजा तेरे से अधिकहै २३
सो सब देवताओं सहित तेरेसे भी यह नहीं जीता जावेगा जो इसको जीतने
वाला सनातनहै तिसको तू श्रवणकर २४ जो ब्रह्माका सर्वस्व और देवताओं
की परमगति और धर्मका परम रहस्य २५ व परतेपरे गतिरूप व्यक्त और अ-
व्यक्त व महाभूत व भूत भविष्य वर्तमान को जाननेवाला २६ व हजार शिरों
वाला व हजार पैरोंवाला व हजारों नेत्रोंवाला व शंख चक्र गदा पद्म इन्होंको
धारण करनेवाला और पीलेवस्त्रों को धारण करनेवाला और दैत्यों को मारने
वाला २७ व सबको जीतनेवाला और आप किसी से जीतमें नहीं आनेवाला
ऐसा पुरुष २८ इस बलिराजा को जीतेगा तब ऐसी दिव्यरूप वाणीको सुनके
सब देवताओंकरके सहित इन्द्र युद्धसे निवृत्त होताभया २९ जब इन्द्र चलागया
तब सब दैत्य युद्धमें उग्रशब्दको करनेलगे अर्थात् किलकीशब्द और अपने २
भुजाओंको बजानेका शब्द ३० व शङ्खों के शब्द और योद्धाओंकी टेढ़ी बोली
के शब्द और अनेक प्रकारके बाजाओं के शब्द ये सब होनेलगे ३१ पीछे जय
जयशब्द करतेहुये दैत्यों से संयुक्त बलिराजा अपने स्थान में प्राप्तहुआ ३२ व
हिरण्यकशिपु दैत्यके समान प्रकाशित होनेलगा ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांभार्गवदासगुरुयुद्ध
शाकापयानेपञ्चपञ्चाशदधिकद्विशतोऽध्यायः २५५ ॥

दोसौछप्पनका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि प्रयत्नसे रहित देवता होतेभये और दैत्यों से रक्षित
त्रिलोकी होतीभई और बलवाले बलिकी जयहोतीभई १ और सबदिशा शुद्ध
होतीभई व धर्म्म कर्म्म प्रवृत्त होनेलगे और अधर्म्म के मार्ग दूर होनेलगे २ व
प्रह्लाद शम्बरमय अनुह्लाद इन्होंसे चारोंदिशा रक्षित होनेलगीं और सबदैत्योंसे
आकाश की पालना होनेलगी ३ व अपनी प्रकृति में स्थित लोकों होने से

और सत्मार्ग प्रवृत्त होनेलगा ४ व सब पापोंका अभाव होनेलगा और भाव की स्थिरता होनेलगी और सिद्धोंका तप प्रवृत्त होनेलगा व पापकर्मवालों का अभाव होनेलगा ५ व चार पैरोंवाला धर्म्मस्थित होनेलगा और एक पैरवाला पापस्थित होनेलगा और प्रजा की पालना करने में युक्त राजा होनेलगे ६ व सब आश्रमनिवासी अपने २ धर्म्मों में स्थित होनेलगे ऐसे कालमें देवराज्य पै दैत्यों ने बलिराजा का अभिषेक किया ७ व पद्मासन में स्थित और पद्मों को हाथमें धारण करनेवाली और देवी ८ व वरके देनेवाली और शूरवीरको सेवने वाली ऐसीलक्ष्मी बलिराजाको प्राप्तहोके कहनेलगी ६ हे बलवालोंमें श्रेष्ठ दैत्य-राज मैं तेरे पै देवताओं के पराजय से प्रसन्नहुई तेरेको मंगल प्राप्तहोगा १० व तैंने अपनेबलसे युद्धमें इन्द्र जीतलिया तब तेरे उत्तम बलको देखके मैं आपही प्राप्तहुई हू ११ सो हे दैत्यश्रेष्ठ हिरण्यकशिपु के कुल में उपजेहुये तेरे ऐसे कर्मों में आश्चर्य्य नहीं १२ व हे राजन् तेरे पितामह हिरण्यकशिपु ने सम्पूर्ण यह त्रिलोकी भोगी है १३ परन्तु तिससे तू धर्ममार्ग में विशेषहै इसवास्ते तूभी इस त्रिलोकी को भोगेगा १४ ऐसे कहके वरके देनेवाली और सौम्य ऐसी लक्ष्मी दैत्यपति बलिराजा के शरीरमें प्रविष्टहुई १५ व ह्री कीर्त्ति द्युति प्रभा धृति क्षमा भूति नीति दया मति १६ स्मृति मेधा तुष्टि पुष्टि मुक्ति श्रुति प्रीति ईडा कांति शांति क्रिया १७ ये सब दिव्य अप्सरा नृत्य और गीत में कुशल ऐसी बलि राजाको प्राप्तभई १८ ऐसे ब्रह्मवादी बलिराजाको दैत्यों के संग चराचर त्रिलोकी का ऐश्वर्य प्राप्तहुआहै १६ ॥

इतिश्रीहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनेदेवासुरयुद्धेपट्पंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५६ ॥

दोसौसत्तावनका अध्याय ॥

जनमेजय प्रश्न करनेलगा हे मुने दैत्यों से पराजित किये देवते क्या करते भये और देवताओंको फिर स्वर्गलोक कैसे प्राप्तहुआ १ वैशम्पायन कहनेलगे कि तिस आकाशवाणी को इन्द्र सुनके देवताओंको संगले अदिति के उत्तम स्थान में प्राप्तहोने के अर्थ पूर्व्वदिशा को जानाभया पीछे अदिति के स्थान को प्राप्तहो जो युद्ध में आकाशवाणी के मुखसे सुनाया वह सब वृत्तांतअदिति के अर्थ कहताभया २ । ३ तब अदिति कहनेलगी कि हे पुत्र सब देवताओं के

सहित तेरे करके जो विरोचन का पुत्र बलिराजा युद्धमे नहीं मरसक्ताहै ४ सो हे सहस्राक्ष हजारशिरवाले परमेश्वरके हाथसे निश्चयमरेगा अन्य से नहीं ५ सो मैं बलिराजा के पराजय के अर्थ ब्रह्मवादी और कश्यपनाम से विख्यात ऐसे तुम्हारे पिताके पास जाके पूछती हूं ६ तब अदिति करके सहित सम्पूर्ण देवते कश्यपजी के समीप में प्राप्तहो बीसनपके खजानेवाले ७ व आद्य व देवताओं के गुरु व दिव्य व तेजकरके सूर्य्य के आकार व गौर व अग्नि की शिखाके समान कांतिवाला ८ व न्यस्तदंड व तपसेयुक्त व कृष्णमृगछाला को कांधे पै धारण करनेवाला और वृक्षों के वकलोंको शरीरपै धारण करनेवाला और जटा के समूहसे भूषित ९ व आज्यमंत्र पुस्करूप अग्नि की तरह दीप्यमान और स्वाध्यायमेंरत और साक्षात् अग्नि के समान प्रकाशित १० व ब्रह्मवादियों में श्रेष्ठ देव और दैत्यों का गुरु और तपतेहुये सूर्य्य के समान तेजवाला और मरीचिऋषिका पुत्र ११ व सब प्राणियों को रचनेवाला और प्रजाकापति और आत्मभाव विशेष करके तीसरा प्रजापति १२ ऐसे कश्यप जी को देखते भये पीछे अदिति सहित सब देवते प्रणामकर अञ्जलि बांध वचन कहने लगे जैसे ब्रह्माजी से ब्रह्माके पुत्र १३ व जो युद्ध में आकाशवाणी के सकाश से इन्द्रने श्रवण किया था कि सब देवताओं करके बलिदैत्य जीतने मे नहीं आसक्ता यह सब वृत्तान्त कहते भये १४ तब तिन पुत्रों के वचन को सुनके लोक को रचनेवाले कश्यपमुनि ब्रह्मलोक में गमन करनेके अर्थ बुद्धि करतेभये १५ व कश्यपमुनि कहनेलगे कि हे पुत्रो ब्रह्मलोकमें हम सब चलेंगे सो जैसे तुम्हेंने आकाशवाणी से सुनाहै वह सब ब्रह्माजीके सम्मुख वर्णन करना १६ तब वैशम्पायन कहनेलगे देवर्षिगणोंसे सेवित ब्रह्मलोकको कश्यपजीके गैल अदिति और सब देवते गमन करनेलगे १७ तब दिव्यरूप विमानों में बैठके एक मुहूर्त मे ब्रह्मलोकमें जाके प्राप्तहुये १८ तब यथायोग्य तपकी राशि और अविनाशी ऐसे ब्रह्माजीको देखनेके अर्थ १९ औरोंके गानमे संयुक्त और सामवेदके गान से मिली हुई और कल्याणके करनेवाली और शत्रुओं को नाशनेवाली २० ऐसी ब्रह्माजीकी सभाको देखके प्रसन्न होनेभये और वेद और वेदांगके पारको जाननेवाले ऋच और यद्रुच इन यज्ञ सम्बन्धी नामोंसे विख्यात ऐसे ब्राह्मणों करके विस्तारित किये २१ कर्मों में अनेक प्रकारकी वाणी को श्रवण करनेभये

और यज्ञ वेदाग आदि कर्म इन्हों को जाननेवाले २२ और पदके क्रम को जाननेवाले २३ ऐसे ब्रह्मर्षियों के शब्दसे शब्दित होतेभये और यज्ञकी स्तुति को जाननेवाले और शिक्षावाले २४ और शब्दके यथार्थ अर्थ को जानने-वाले और सब विद्याओं में कुशल और मीमासारूप वाक्यों को जाननेवाले और सब प्रकारके वेदोंको जाननेवाले २५ और हृष्ट पुष्ट स्वरवाले ऐसे ब्राह्मणों के शब्दों से शब्दित देवलोक से भी २६ उत्तम ब्रह्मलोक में वेदों की ध्वनि को सुनतेहुये सब देवते प्राप्तहोतेभये और सब देवते अपने अपने शरीरों को पवित्र मानते भये इसमें सशय नहीं २७ पीछे मौनको धारण करनेवाले और ब्रह्माजी के अर्थ मनको लगानेवाले और आश्चर्यकरके फूलेहुये नेत्रोंवाले ऐसे देवते आपसमें देखनेलगे २८ पीछे मनसे प्रसन्नहुये सब देवते कश्यपजीको अगाडीकर जगत्के स्वामी ब्रह्माजी से प्रणाम करतेभये २६ और अनेकप्रकार के शब्दोंका श्रवण करतेभये ३० और तहा तहा ब्रह्मलोकमें उत्तम व्रतको धा-रण करनेवाले और जप होमआदि कर्मों को करनेवाले ऐसे ब्राह्मणों को देवते देखतेभये ३१ और तिस सभा में लोकका पितामह देवते और दैत्योंका गुरु व दिव्य मायाको धारण करनेवाला ३२ ऐसे ब्रह्माजी स्थितहै और तिस ब्रह्माजी को दक्ष प्रचेता पुलह मरीचि ३३ भृगु अत्रि वशिष्ठ गौतम नारद विद्या मन आ-काश वायु तेज जल पृथ्वी ३४ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध प्रकृति विकृति और सब प्रकारके पृथ्वी के कारण ३५ अंग और उपागों सहित चारोंवेद सत्र क्रिया सब यज्ञ सकल्प प्राण ३६ अर्थ धर्म काम द्वेप हर्ष ३७ शुक्र बृहस्पति सवर्त बुध शनैश्चर राहु शेपरहे सब ग्रह ३८ मरुत् विश्वकर्मा सब नक्षत्र सूर्य चद्रमा ३६ गायत्री सात प्रकारकी वाणी सब स्मृति शास्त्र सब गाथा सब निगम ४० और देहवाले सब भाष्यरूप शास्त्र और क्षण लव मुहूर्त दिन रात्री ४१ पक्ष मास छहों ऋतु सवत्सर कृतयुग त्रेतायुग द्वापर कलियुग सन्ध्या ४२ कालचक्र ये सब व अन्यभी बहुत से ब्रह्माजी के समीप में स्थितथे ४३ अर्थात् सेवामें लगरहे ऐसे दिव्यरूप और सब कामना देनेवाली ऐसी ब्रह्मसभामें देवताओं करके सहित कश्यप ऋषि प्रविष्टहो ४४ पीछे सब प्रकारके तेजों से सयुक्त और दिव्य और महर्षि गणों से सेवित और ब्रह्माके योग्य लक्ष्मी से प्रकाशित और चिन्ता व ग्लानि से रहित ४५ और परम आसनपै स्थित ऐसे ब्रह्माजीको देख शिरकरके

प्रणाम करतेभये २६ पीछे अपने अपने शिरोंकरके ब्रह्माजी के चरणोंका स्पर्श कर सब पापों से निर्मुक्त शान्तरूप ऐसे कश्यपसहित सब देवते होतेभये २७ तब कश्यपके सहित सब देवताओं के आगमनको देख अति तेजवाला और सब देवताओं का ईश्वर ऐसे ब्रह्माजी वचन बोलतेभये २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतहरिवंशपर्व्वणिगर्भाभिविष्णुपर्व्वभाषायांवामनब्रह्मलोकागमने सप्तपञ्चाशदधिकद्विशतोऽध्यायः २५७ ॥

दोसौअट्ठावनका अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहनेलगे हे देवताओ जिस प्रयोजनके अर्थ तुम यहां आके प्राप्त हुयेहो तिस अर्थको मैं यथार्थ जानताहूं १ सो तुम्हारा वाञ्छित मनोरथ होगा अर्थात् बलिदैत्यको जीतनेवाला उत्पन्नहोवेगा २ सो केवल दैत्योंकाही जीतनेवाला नहीं किंतु त्रिलोकीका व देवताओं का जीतनेवाला ३ व सब प्राणियों को पालनेवाला और सनातन और हिरण्यगर्भ नामसे विख्यात ४ और सबोंसे बड़ा और किसीकी जीतमें नहीं आनेवाला ५ और अति वीर्यवाले बलिराजा को जीतनेवाला और मेरे आदि सबोंमें पहले उपजनेवाला ६ और बलिराजाकी और इसजगत्की उत्पत्ति करनेवाला और अचिंत्य और निरात्मा और योग युक्त व जिसको देवते भी नहीं जानसक्ते कौनहै ७ ऐसा और देवतों को और मेरेको व इस संसारको जीतनेवाला ऐसा ईश्वरहै ८ तिसके प्रसादसे परमगति को मैं कहताहूं ९ सो क्षीरसागर के उत्तरकूल पै उत्तरदिशा को अमृत नामसे विख्यात तिस देवका स्थानहै १० सो तहां तुमजाके घोर तपको करो ११ पीछे स्निग्ध व गम्भीर शब्दवाली और समुद्रकेसमान गर्जनेवाली १२ और दिव्य व स्पष्ट अक्षर व पदों से युक्त और रमणीय व अभयकी देनेवाली और पवित्र व सत्य व परम संस्कारसे युक्त १३ और सब पापों को नाशनेवाली व साक्षात् अवतार लेनेवाले ईश्वरकी कहीहुई १४ ऐसी वाणीको तपके अंतमें तुमश्रवण करोगे १५ तब वह देव ऐसे कहेगा कि हे देवताओ तुम्हारा आगमन सफलहै सो मैं किस के अर्थ किस वरकोदेऊं और वरका देनेवाला मैं स्थितहूं १६ तब अदिति और कश्यप तिस देवके पैरों में गिरके यह मांगो १७ कि हे देव तुम साक्षात् हमारे पुत्रहोजाओ तब वह देव यही वरदानदेगा १८ ऐसे तिस

ईश्वरसे वरको प्राप्तहो कृतकृत्यहुने सब देवते अपने अपने स्थानोंको गमनक- रियो १९ तब ऐसेही होजाओ ऐसे कहके सब देवने और कश्यप अदिति येसब ब्रह्माजीके चरणारविंदोंमें नमस्कारकर २० उत्तरदिशाको जानेलगे तब थोडे सेही कालमें ब्रह्माजीके कहेहुये क्षीरसागरको प्राप्तहुये २१ अर्थात् बहुतसे समुद्र पर्वत वन दिव्यरूपनदी इन्होंको उल्लंघनकर घोररूप व सब प्राणियों से वर्जित २२ और सूर्य के प्रकाशसे भी रहित और अंधेरसे आच्छादित ऐसी दिशाको देखते भये २३। २४ तहां अमृत स्थानको प्राप्तहो कश्यपजी करके सहित सब देवते दीक्षाको ग्रहणकर दिव्य व्रतको हजार वर्षोंतक धारण करतेभये २५ अ- र्थात् देवताओंका ईश और योगरूप व नारायण और देव व हजार नेत्रोंवाला २६ ऐसे ईश्वरको प्रसन्न करनेके अर्थ ब्रह्मचर्य्य मौन स्थान आसन शांति इन्हों करके उग्र तप करनेलगे २७ और कश्यपजी उस ईश्वरको प्रसन्न करने के अर्थ वेदोक्त उत्तम स्तोत्रको कहतागया २८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांसमनेअष्टपंचाशदधिकद्विशतोऽध्याय २५८॥

दोसौउनसठका अध्याय॥

अब वेदोक्तस्तोत्र कहाजाता है॥ कश्यपउवाच॥ नमोस्तुतेदेवदेवेश एक शृङ्गवराहरूप।त्रिपसिंधुवृषकपिरूपे सुरवृष सुर १ निर्गित अनिर्मित भद्र कपिल विष्वक्सेन ध्रुव धर्म्म धर्म्मराज वैकुंठ वृषावर्त २ अनादिमध्य निधन धनंजय शुचिश्रव अग्निजपृश्निज अज अजय अमृतेशय ३ सनातन विधानत्रिकाग त्रिधाम त्रिककुत्ककुद्मिन् दुन्दुभे महानाभ लोकनाभ ४ पद्मनाभ लोकनाथ विरंचे बहुरूप रूपक्षय अक्षय विरूप विश्वरूप ५ सत्याक्षर हंसाक्षर हव्यभुक्खगेन्द्र परगो शुक मुञ्जकेश हंसमहाहंस ६ महद्वराहृषीकेश सूक्ष्म परम सूक्ष्म तुरा- षाट विश्वमूर्त्ते सुरभन नील निस्तमो ७ निरजस्तमो रज सत्व सात्वधाम सर्वलो- क सर्वलोक सनिष्टिगिरिनिष्ठितप ८ स्तपोअग्रअग्रज धर्म्मनाभ गभस्तिनाभ धर्म्मनेमे सत्यधामसत्याश्रय ९ गभस्तिनेमे चक्रस्थ निरापान् स्वर्गेन्द्रसमुद्रवास अ- जैकपात् सहस्रशीर्ष १० सहस्रमस्तिन महाशीर्ष सहस्रदृक् सहस्रपात् अधोमुख महामुख महापुरुष ११ पुरुषोत्तम सहस्रबाहो सहस्रमूर्ते सहस्रास्य सहस्रभुज स- हस्राक्ष सहस्रप्रभ १२ सहस्रसत्त्वमाहुर्वेदा विश्वदेव विश्वसंभव सर्वपावन

देवाना १३ सोमग आदोगति निर्थलगाश्रयन विश्वस्थापाहु उत्पन्न । भा
वरदस्त्वमेव १४ वषट्कार वोपट् ओकारस्त्वामेक गाहुरग्यमस्तभाग प्राशिनम् ॥
ततधार १५ महस्रधार भुर्द्भुवर्द्स्वर्द भूर्भुवस्वर्हत्वमेवभूत भुवनस्य गात्मेव नम-
शाय १६ ब्रह्ममय ब्रह्मादिस्त्वमेव द्यौरसि पृथिव्यसि पूषासि मातरिश्वासि धर्मोसि
मघवासि १७ होता पोता हन्ता नेत्तामन्ता होम्यहोता परस्वरस्त्व होम्यहोतात्व
मेव ॥ अपासि विश्वनाक् १८ धात्रापरमेण धाम्नात्वमेवदिव्य सुकृत्सुरगाण
ईज्योमियष्टात्वमसिमभिध्वस्त्वं १९ गतिर्गतिमतामसि मोक्षोसिमात्तासिगुह्योसि
सिद्धोसि धन्योसि योगोसि परमोसि यज्ञोसि सोमोसि यूपोसि दीक्षासि २० द
क्षिणासि विश्वमसि स्थविष्ट स्थविर विश्वतुरापाट हिरण्यगर्भ हिरण्यनाभ हिर-
ण्यनारायण २१ नारायणानग नृणामयन आदित्यवर्ण आदित्यतेजो महापुरुष
पुरुषोत्तम आदिदेव २२ पद्मनाभ पद्मेशय पद्माक्ष पद्मगर्भ हिरण्याग्र केशशुक्र
विश्वेदेव विश्वतोमुख २३ विश्वाक्ष विश्व सम्भव विश्वभुक त्वमेव २४ सुविक्रम
सुविविक्रम स्वविक्रम क्रमानभु क्रमाक्रम सुविसु २५ प्रभाकर शम्भु स्वयंभूश्च
भूतादि भूतात्मन शुश्रुर्महाभूत २६ विश्वभूत विश्व त्वमेव विश्व गोप्तासि
विश्वसभव पवित्रमसि होत्रमसि २७ सत्यगसि तेजोसि सर्वगसि हविर्विश्वभुक्
उर्द्धकर्मन् अमृतेन्धन अमृतन्नम २८ दिवसरते ओतप्रोत विश्वस्पृक विश्वपते
घृतार्चि अग्नेरोहिण सुरासुरगुरो २९ महादेव नृदेवदेवस्तुत हुहिनअनन कर्म-
न्वश ३० प्राग्वश विश्वपात्व त्वमेवविश्वविभर्षि वार्थिनोनस्त्रायस्वेति ३१ इस
स्तोत्रके पाठसे हे देव तू हमारी रक्षाकर ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिअनिभविष्यपर्वभाषाप्रथमनेमहापुरुषस्तवेऊनषष्टयधिकद्विशतोऽध्याय २५९ ॥

दोसौसाठिका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे वेदको जाननेवाले कश्यपजी के मुखमे कहेहुये इस स्तोत्र को १ व बदल के समान शब्दवाले और स्निग्ध गम्भीर रूप ऐसे देवताओं के शब्द को सुनके भीनियुक्त मन करके स्पष्टरूप २ वचन को कहने लगा अर्थात् आकाशमे शब्द सुननेलगा और विष्णुका साक्षात् दर्शनहुआ नहीं ३ ऐसे मौनिराता विष्णु कहनेलगा हे देवताओ तुम्हारे निश्चयमें मे तु

म्हारे अर्थ प्रसन्नहुआ ४ सो वरको मागो तुम्हारा कल्याण होगा में तुम्हारे को वरदेनेवाला हूं ५ तव कश्यपऋषि कहने लगे हे देवश्रेष्ठ जो हम सबों पै तुम प्रसन्नहुये हो तौ हमभी सब कृतकृत्य हुये क्योंकि तूही हमारी परमगति है ६ व जो प्रसन्नहोके वरदेना चाहते हो तौ इन्द्रका छोटाभ्राता और देवताओं के आनंद को वढानेवाला ७ ऐसे तुम मेरे पुत्र अदिति के शरीर में जन्म लेओ ८ वैशम्पायन कहनेलगे कि देवताओंकी माता अदिति भी कहनेलगी ९ कि हे देव तुम मेरे पुत्र होजाओ १० व देवते कहनेलगे कि हमारे कल्याण के अर्थ हे देव हमाराभ्राता व स्वामी व भर्ता व धाता व शरणरूप तूही हो ११ व हे देव जव तू अदिति के पुत्रभाव को प्राप्तहोगा तव इन्द्रआदि सव देवते तेरे को देव कहके वोलेंगे इसवास्ते कश्यपजी के पुत्र तुम होजाओ १२ वैशम्पायन कहने लगे कि इन पूर्वोक्त वचनोंको सुनके विष्णुभगवान् देवते और कश्यपमुनि के अर्थ कहनेलगे ऐसेही होगा १३ व तुम्हारे मंगलकी प्राप्ति होवेगी व तुम मनोवाञ्छित कामना को प्राप्त होजाओगे व जो तुम्हारे शत्रु हैं वे सव एकमुहूर्त भी मेरे अगाडी स्थित नहीं रहेंगे १४ अर्थात् सव दैत्योंके समूहको व शेषरहे देव शत्रुओंको मारके यज्ञभाग में अगाडी भोजन करनेवाले सव देवताओंको करूंगा १५ व हे देवश्रेष्ठो हव्यको खानेवाले देवताओं को व कव्य को खानेवाले पितरोंको प्राजापत्य कर्मकरकेमैं करूंगा १६ व जिसमार्गकरके तुम आयेहो उसी मार्गके द्वारा तुम गमनकरो और देवताओं की माता अदितिका और महात्मा रूप कश्यपजी का १७ मनोवाञ्छित सफल करूंगा इसलिये तुम अपने अपने स्थानों को प्राप्तहो १८ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे विष्णु भगवान् के वचनको सुनके प्रसन्नहुये देवते अच्छे प्रकारसे विष्णुको पूजते भये १९ पीछे विश्वेदेवा कश्यपजी अदिति साध्य देवते मरुद्गण देवते और महानलवाला इन्द्र २० ये सव तिस विष्णुके अर्थ प्रणामकर पूर्वदिशामें कश्यपजी के आश्रममें प्राप्तहुये २१ तव ब्रह्मर्षि गणों से सेवित कश्यपजी के आश्रम में वेदशास्त्रका पाठ करतेहुये २२ सवदेवते विचरनेलगे परन्तु कव अदिति गर्भको धारणकर इसवातकी इच्छा को चाहतीभई २३ तव देवताओंकी माता अदिति भूतात्मा और महात्मा और अति तेजवाला ऐसे गर्भको दिव्य हजारवर्षों तक धारण करतीभई २४ जव दिव्य हजारवर्ष पूर्णहोगये तव देवताओं के भयको दूर करनेवाला और दैत्योंको

नाशनेवाला २५ ऐसे उत्तम गर्भ को जनती भई और गर्भस्थित इस विष्णुने त्रिलोकी के तेजोंको ग्रहण करने से मन देनने रचित करदिये २६ और जब यह देव जन्म लेताभया तब त्रिलोकी में सुखहुआ और देवताओं में आनन्द बढ़ने लगा और दैत्योंको भय देनेलगा २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांवामनजन्मनिदोसौसाठिकोऽध्यायः॥२६०॥

दोसौइक्सठिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि वामनजीका जन्महुआ तब सात प्रजापति और सात महर्षि ये तिस देवको नमस्कार करतेभये १ और भरद्वाज कश्यप गौतम विश्वामित्र जमदग्नि वशिष्ठ अत्रि २ मरीचि अंगिरा पुलस्त्य पुलहक्रतु दक्ष प्रजापति ३ वशिष्ठका पुत्र ओर्वस्तम्ब कश्यप कपीवान् अकपीवान् दत्त अली- च्यवन ४ वशिष्ठ नामसे विख्यात सात वशिष्ठके पुत्र हिरण्यगर्भके पुत्र ५ गा- र्ग्य पृथु अन्यजान्य वामन देवबाहु यदुध्र सोमका पुत्र पर्जन्य ६ हिरण्यरोमा वेदशिरा सत्यनेत्र विश्वेदेवा अनिनिश्व दूसरा च्यवन सुधामा विरजा ७ अति नाम सहिष्णु ये सब नमस्कार करतेभये और प्रकाशमान शरीरवाले और स म्पूर्ण गहनोंमें भूषित ८ ऐसे अप्सराओं के गणभी नृत्य करनेलगे और गन्धर्व अपने बाजोंको बजानेलगे ९ और आकाशमें गंधर्वों के नग तुम्बरु गंधर्व गान करनेलगा और महाश्रुति चित्रशिरा ऊर्णायु अनघ १० गोमायु सूर्यवर्चा सोम- वर्चा युगप तृणप कार्तिनन्दि चित्ररथ ११ शालि शिरा पर्जन्य कलि नारद १२ हाहाहूहू गन्धर्व और अति कीर्तिवाले हंस ये देव गंधर्व गायन करतेभये १३ और प्रसन्नहुई और सब प्रकारके गहनों से भूषित ऐसी अप्सरा नृत्य करनेल- गीं १४ और गान करनेलगीं और अनूका सुगन्धा नागन्ध्या मिश्रासुरा मग- नना १५ पासी मिश्रकेशी अलम्बुषा मरीचि शुचिका विद्युत्पर्णा तिलोत्तमा १६ अद्रिका लक्ष्मणा रम्भा मनोरमा असिता सुबाहु यनिटा सुभगा १७ उर्वशी चित्रलेखा सुग्रीवी सुलोचना पुण्डरीक सुगन्धा और सुरसा प्रमाथिनी १८ काम्या सारद्वती मेनका सहजन्या पर्णिका पुञ्जिकस्थला १९ ये भी अनघ हजारों अप्सरा नृत्यकरती भई और धाता अर्यमा मित्र वरुण अंश भग २० इन्द्र पूषा विवस्वान् त्वष्टा सविता विष्णु यह कश्यप गण कहाहै २१ य अग्निके समान

तेजवाले वारह सूर्य तिस जन्मेहुयेको नमस्कार करतेभये २२ व मृग व्याध स-
र्पनी ऋति अजैकपात् अहिर्बुध्न्य पिनाकी २३ हरन ईश्वर कपाली स्थाणुभव
इन नामोंवाले रुद्र २४ और दोनो अश्विनीकुमार और आठवसु और महावल
वाले मरुत् विश्वेदेवा साध्य २५ व शेषनागजी के छोटेभ्राता और वासुकी हैं
मुख्य जिन्होंमें और कच्छप अपकुज धृतराष्ट्र वलाहक २६ इननामोंवाले और
महाक्रोधी और महावलवाले ऐसे सर्प शेपरहे २७ और भी वहुतसे सर्पपै सव
अजलीवाधके तिस जन्मेहुये ईश्वरको नमस्कार करतेभये २८ व तार्क्ष्य अरि-
ष्टनेमि और महावलवाला गरुड और अरुण आरुणि येभी सव अजलीवाधके
स्थितहुये २९ व आप ब्रह्माजीभी सव महात्माओंके संग आके तहां कहनेलगे
३० कि जिससे यहलोक उत्पन्न होताहै ऐसा सनातन विष्णु यहहै व लोकका
ईश्वर व श्रीमान् व विष्णु भी यही है ३१ ऐसे कहके देवर्षियों सहित ब्रह्माजी
नमस्कारकर स्वर्गको प्राप्तभये ३२ व देवताओंका स्वामी कश्यपकापुत्र व न-
वीन दुर्दिनमें मेघके समान कांतिवाला व लाल नेत्रोंवाला और वामनरूप को
धारण करनेवाला ३३ और श्रीवत्सकरके शोभित ऐसे वामनजी उत्पन्नहुये तव
उत्फुल्ल नेत्रोंवाली अप्सरा तिसको देखनेलगी ३४ और आकाशमें हजार सूर्यों
से एकवेर जो कांति उपजती है तैसी कांतिवाले वामनजी हुये ३५ और देव-
र्षियों के समान उपमावाला और श्रीमान् और भूत भविष्यत् वर्त्तमानको जा-
ननेवाला और शुद्ध रोमोंवाला और वड़ी छातीवाला और सव प्रकारके तेजों
से संयुक्त ३६ और पुण्यशीलों का गतिरूप और पाप कर्मवालोंका अगतिरूप
और योगको जाननेवाला ३७ और आठ गुणोंवाला और देवताओंमें श्रेष्ठ व
मोक्षकी इच्छावाले ब्राह्मण जिसको प्राप्तहोके ३८ जन्मसे और मरणसे छूटजाते
हैं ऐसा और सव आश्रमनिवासी जिसको तप कहते हैं ३९ ऐसा और जिस
को उग्रव्रत करनेवाले मुनि सेवते रहते हैं ऐसा और सर्पों में अनंतनामसे वि
ख्यात और सव प्रकारके सर्पोंकरके सेवित ४० और हजार शिरोंवाला और लाल
नेत्रोंवाला और यज्ञ और स्वर्ग के अर्थ इच्छा करनेवाले ब्राह्मणों से पूजित ४१
और नानाप्रकार के स्थानों में प्राप्त और श्रीमान् और अतिउत्तम कवि और
जिसको वेदवेत्ता कहते हैं ऐसा और सवके अर्थ यज्ञभागको प्राप्त करनेवाला
४२ और चन्द्रमा सूर्यरूप दो नेत्रोंवाला और देव और आकाशमें विग्रहवाला

ऐसा वामनजी जाननेवाला भी योगरूपके बालभावको प्राप्तहुआ मधुरवाणी से सब देवताओं के प्रति कहनेलगा ४३ कि हे देवश्रेष्ठो मैं क्याकरूं और किस वरको तुम्हारे अर्थ देऊं ४४ और जो तुम्हारेको वाञ्छितहो वह प्रसन्न होके तुम कहो तब ऐसे तिस वामनजी के वचनको सुनके ४५ प्रसन्न मनवाले इन्द्र आदि सब देवते अंजली बांधके वामनजी से कहनेलगे ४६ कि ब्रह्माजी के वरदानसे और तप और पराक्रम से ४७ वलिराजा ने हमारा यह सब जगत् हरलियाहै व वह वलिराजा हम सबोंसे अवध्यहै अर्थात् मर नहीं सकता ४८ सो तुम तिसका तिरस्कार करनेको योग्यहो अन्य कोई नहीं इसवास्ते हम सब तेरी शरणहैं ४९ सो हे सुरेश्वर ऋषियोंके और लोकोंके हितके अर्थ ५० और अदिति और कश्यप के प्यारके अर्थ पितरोंको कव्य और देवतोंको हव्य प्रवृत्तकर ५१ और हे महाबाहो इन्द्रके ऋणको दूर करनेके अर्थ इस त्रिलोकीको इन्द्रके अर्थ फिर प्राप्त कर ५२ और इससमयमें वलिराजा अश्वमेधयज्ञ करने लग रहाहै ५३ सो जिस प्रकार लोकोंका फिर राज्य इन्द्रको मिले ऐसा चिन्तवनकरो ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांवामनेप्रादुर्भावेएकषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥

दोसौबासठिका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे ऐसे देवताओं के वचनको सुन सब देवताओं को प्रसन्न करनेवाले और वामनरूप को धारण करनेवाले ऐसे विष्णु वचन कहने लगे १ कि हे देवताओ वेद के पारको जाननेवाला और बड़ा ऋषि और उग्र तेजवाला और अंगिराऋषिका पुत्र ऐसा बृहस्पति २ बलिराजा की यज्ञमें मेरे को प्राप्तकरो तहां मैं प्राप्तहोके यथायोग्य त्रिलोकी को हरने के अर्थ यज्ञभूमि में विचरूंगा ३ तब वैशम्पायन कहनेलगे पीछे श्रीमान् बृहस्पतिने बलिराजाकी यज्ञ होनेलगरहीथी तहां वामनजी को प्राप्त करतेभये ४ अर्थात् मुंजकी तागड़ी को धारण करनेवाला और यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ को धारण करनेवाला ५ और छत्र दण्ड मृगछाला इन्होंको धारण करनेवाला और धूम्र और लालरंग नेत्रोंवाला और बालकरूपको धारण करनेवाला ६ और लोकेश्वरोंका भी ईश्वर और ब्रह्मा आदि देवतोंका भेजाहुआ और बालकहोके भी वृद्धों के समान कर्म करनेवाला ७ ऐसा वामनजी दैत्योंके प्रति बलिराजाके यज्ञस्थानमें प्राप्तहुआ ८

व युद्धके योग्य सामग्रीवाले दैत्योंकरके आच्छादित यज्ञद्वारमें भी वामनजी के वेगकरके प्रवेश करताभया ९ तहा मन्त्रों को उच्चारण करनेवाले ऋत्विक् जनों करके चारोंतरफमे परिवारित दैत्योंके राजे वलिके समीपमें स्थितहुआ १० और ब्रह्मर्षि गणोंसे सेवित तिस यज्ञभूमिमें प्राप्तहो यज्ञकी सराहना करनेलगा ११ व यथायोग्य यज्ञका वर्णनकर विस्तार पूर्व्वक नानाप्रकारके प्रयोगोंसे शुक्राचार्य्य आदि ऋत्विजोंको १२ यज्ञकर्मका जाननेवाला वामन उत्तर देनेको असमर्थ करताभया १३ पीछे सब ऋत्विक् वलिराजाके समीपमें आत्मारूप यज्ञको अप्रकाश रूप वैदिक मन्त्रोंकरके ऋषिके समूहोंके प्रत्यक्ष देखताभया १४ तब सब वृद्धरूप उपाध्याय और मुनियों को जब बालकरूपवाला वामन उत्तर देने में असमर्थ करताभया १५ तब विरोचनका पुत्र वलि वामनजीको अद्भुत माननेलगा १६ अर्थात् मस्तक सहित अंजलिको बांध विस्मितहुआ वलिवचन कहनेलगा १७ कि कहासे तू आयाहै और कौन तू है और किसका शिष्यहै और यहां क्या तेरा प्रयोजनहै १८ व ऐसे उत्तम ज्ञानवाला ब्राह्मण पहिले मैंने कभी नहीं देखा और बालक और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ज्ञान और विज्ञान को जाननेवाला १९ व शिष्टों की वाणी व रूपसे सम्पन्न व मनोहर व प्रियदर्शन ऐसा तू है २० परन्तु देवते व ऋषियों के भी ऐसे तेरे समान पुत्रही हैं और नाग यक्ष दैत्य राक्षस पितर सिद्ध गंधर्व इन्हों के भी पुत्र तेरे समान नहीं हैं २१ सो जैसा तैसा रूप वाला तू है तेरे अर्थ नमस्कार करूहूं और तू कह मैं तेरे किस कामको करूं २२ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे वलिराजाके वचनको सुन उपायके तत्त्वको जानने वाला वामनजी मंदमुसुकान सहित वचनको कहनेलगा २३ कि बहुत खाने के पदार्थों से युक्त और सुन्दर संस्कारों से युक्त ऐसा यज्ञ वलिराजाका होरहाहै २४ यह अति आश्चर्य है जैसे पहिले ब्रह्माजीका यज्ञ हुआथा तैसे २५ व हे दैत्यों के इन्द्र वलिराजा देवताओं के स्वामी इन्द्र यम वरुण इन्हों के यज्ञों से भी तैंने विशेष यज्ञ करे हैं २६ व स्वर्गमार्ग को दिखानेवाला और सब यज्ञों में उत्तम ऐसे अश्वमेधयज्ञ करके सब पापोंके नाशके अर्थ तू पूजा करताहै २७ सो ब्रह्मवादियों ने सर्वकामना से संयुक्त और सब यज्ञों में उत्तम और अश्वमेधनाम से विख्यात ऐसा तेरायज्ञ मानाहै २८ व सुवर्ण के शृङ्गों से संयुक्त और महानुभाव वाला और वायुकेसमान वेगवाला व महात्मा व सत्यरूप नेत्रोंवाला और नित्य-

क्योंकि ऐसा तेरा अश्वमेध है अर्थात् पवित्र है २६ व अश्वमेधयज्ञ करके मनुष्य पापोंको तरते हैं और अश्वमेधयज्ञ के घोडे को वेदको जाननेवाले विप्र अग्नि रूप कहते हैं ३० जैसे सब आश्रमों में उत्तम गृहस्थाश्रम है व सब मनुष्यों में उत्तम ब्राह्मण है व सब दैत्यों में उत्तम तू बलिराजा है ३१ तैसे सब यज्ञोंमें उत्तम यह अश्वमेधयज्ञ है ३२ वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे वामनजी के कहे वचन को सुनके आनन्द से प्रसन्नहुआ दैत्यों का पति बलिराजा कहनेलगा ३३ कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ किसका तू शिष्य है और क्या इच्छा करी है जो मैं तेरे अर्थ देऊं सो तेरा कल्याण होगा ३४ मेरे से वरमांग अर्थात् मनोवांछित फलको तू प्राप्त होवेगा ३५ तब वामनजी कहनेलगे राज्य सवारी रत्न भार्या इन्होंको मैं नहीं मांगता ३६ जो तू मेरे पै प्रसन्नहुआहै और धर्म में तेरी बुद्धिहै तो भारी प्रयो- जनको मेरे अर्थ दे अर्थात् हे दैत्यराज तीनपैग पृथ्वीका दान मेरे अर्थ दे यही परम वरहै ३७ तब बलिराजा कहनेलगा कि हे विप्रेन्द्र तीनपैग पृथ्वीकरके तेरेको क्या होगा दश बीसलाख पैग पृथ्वीको मांगो ३८ तब शुक्राचार्य कहनेलगे हे राजन् पृथ्वीका दान मतकर तू नहीं जानताहै ३९ मायाकरके आच्छादित सा- क्षात् विष्णु यहहै सो वामनरूपको धारके इन्द्रके प्यारके अर्थ तेरेको ठगने के अर्थ बालकके रूपकोधरके आयाहै ४० ऐसे शुक्राचार्यकेवचनको सुन बहुत कालतक चिन्तवनकर आनंदितहुआ बलिराजा ४१ वामनजी से उपरांत अन्य पात्रको नहीं जानके अशरफीको हाथमें ले कहनेलगा ४२ हे विप्रेन्द्र मैं पूर्वको मुखकरे स्थितहूं और आप उत्तरको मुखकरो व तीनपैग पृथ्वी ग्रहण करनेके अर्थ मेरे हाथमें जलकी प्राप्ति करो ४३ क्योंकि तेरे गुरुकी वाञ्छा पूर्ण होनीचाहिये ४४ फिर शुक्राचार्य कहनेलगे हे दैत्य इसके अर्थ पृथ्वीकादान मत दे व मैंने जान लिया कि यह साक्षात् विष्णुहै ४५ सो तेरेको ठगताहै ठगाई में मतआवे ४६ तब बलिराजा कहनेलगा कि इसयज्ञमें साक्षात् आप विष्णु आके प्राप्त होगये ४७ सो जिस २ बातकी इच्छा ये विष्णु भगवान् करेंगे सोई मैं देऊंगा ४८ व इस विष्णुसे उपरान्त अन्य उत्तम कौन पात्रहै ऐसे कहके इसीतरह बलिराजा अपने हाथमें जल ग्रहण करतागया ४९ तब वामनजी कहनेलगे हे दैत्येन्द्र मेरे पैरोंसे मापीहुई तीनपैग पृथ्वीकी मैं इच्छाकरताहूं ५० सो मुझे मिलनी चाहिये अन्य पदार्थकी इच्छानहीं ५१ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे वामनजी के वचनको सुन

के कालेमृगछाला को कधापै धारण करनेवाला वलिराजा कहनेलगा कि ऐसे हीहोगा ५२ तव पानीसे पूरित अशरफी को अच्छीतरह हाथ में धारण करने लगा ५३ तव वलिराजाके राज्यको लेनेकी इच्छावाला वामन तत्काल अपने हाथको पसारता भया ५४ जव पूर्वको मुखवाला वलिराजा मनकरके अशरफी सहित जलको वामनजीके हाथ में देनेलगा ५५ तव अचिंत्य और अति पराक्रमवाले और वलिराजाकी लक्ष्मी को हरनेवाले ऐसे वामनजी के रूपको देख ५६ लक्षणोंको जाननेवाला और बुद्धिमान् ऐसा प्रह्लाद वचन कहनेलगा कि हे प्रिय वामनरूप धारण करनेवाले इस वालकके हाथमें जलमतदे ५७ यह वह विष्णुहै जिसने तेरा प्रपितामह हिरण्यकशिपु माराहै सो तेरे को ठगनेके वास्ते इसजगह प्राप्तहुआहै ५८ तव वलिराजा कहनेलगा कि इस देवके अर्थ मैं प्रतिग्रह देऊंगा और जो यह साक्षात् विष्णुहै ५९ तौ वडी अच्छीवातहै और ब्रह्माजीसेभी उत्तम यह पात्र हमको प्राप्तहुआ ६० व हे असुर श्रेष्ठ दीक्षित पुरुषको आवश्यक दानदेना चाहिये ६१ ऐसे दैत्योंके समूहमें कहके वलिराजा तीनपैग पृथ्वी वामनजीके अर्थ देताभया ६२ व जिसवक्त वामनजीके हाथमें वलिराजा जल देनेलगा ६३ तव फिर प्रह्लादवोला कि हे दैत्यराज इस ब्राह्मणके अर्थ प्रतिग्रह तू मतदे इस वालकको मैं ब्राह्मणका पुत्र नहीं जानता ६४ व ऐसा ब्राह्मण नहींहोयहै और हे दैत्येन्द्र इस रूपकरके फिर तिस नृसिंहजी के आगमनको मैं मानताहूं ६५ तव वलिराजा कहनेलगा हे दैत्य जो ब्राह्मण दानकी याचनाकरै ६६ और दाता दान नहीं देवे तव दोनोंकी अलक्ष्मी यजमानके शरीरमें प्रवेश करती है ६७ व जो यजमान ब्राह्मणके अर्थ प्रतिज्ञा करके प्रतिग्रह नहीं देताहै ६८ तव मित्र गोत्रसे सयुक्त वह पापी मनुष्य नरकमें जाके वसै है ६९ इसवास्ते अलक्ष्मी के भयसे भयभीत हुआ मैं इस पृथ्वीका दान करताहूं ७० व इसवक्त मेरा हृदय अति प्रसन्नहै और वामनरूपको धारण करनेवाले इस उत्तम ब्राह्मण को देखिकै अभी मैं दानदेताहूं ७१ किसीके कहनेसेभी मैं निवारित नहींहोऊंगा ऐसे कहके फिर वामनजी से वलिराजा कहनेलगा ७२ हे स्वल्पमने तीन पैग पृथ्वीसे तेरेको क्याहोगा सव समुद्रोंसे परिवृत इस समस्त पृथ्वीको मैं तेरे अर्थ देताहूं ७३ तव वामनजी कहने लगे कि समस्त पृथ्वी को लेनेकी मेरी इच्छा नहीं है मैं तीनपैग पृथ्वीसे प्रसन्नहुआहूं ७४ यह वरदान मेरे को देनाचाहिये ७५

तब वैशम्पायन कहने लगे कि ऐसेही होगा यह वचन बलिराजा कहके तीन पैग पृथ्वी बामनजी के अर्थ देनेको अपने हाथसे दक्षिणा सहित जलको बामनजीके हाथमें छोड़ताभया ७६ जब बामनजी के हाथके जलका स्पर्शहुआ तब बामनजी बामनरूपको त्याग सर्व देवमय रूपको दिखाते भये ७७ अर्थात् पृथ्वीहै दोनों पैर जिसके और आकाशहुआहै शिर जिसका चन्द्रमा और सूर्य हैं नेत्र जिसके ७८ पिशाच हुये हैं पैरोंकी अंगुली जिसकी और गुह्यकहुये हैं हाथोंकी अंगुली जिस की ७९ व विश्वेदेवा हुये हैं जानु गोड़ जिसके और साध्य देवता हुये हैं जांघ जिसकी और यक्षहुये हैं नख जिसके ८० व अप्सरा भी हुई हैं नख जिसके और बिजली हुईहै दृष्टि जिसकी ८१ व सूर्य्यकी किरणें हुई हैं केश जिसके और तारागण हुये हैं रोमकूप जिसके ८२ व महर्षिहुये हैं रोमा जिसके और विदिशाहुई हैं बाहु जिसके ८३ व दिशाहुई हैं कान जिसके और दोनों अश्विनीकुमारहुये हैं कानके भीतर सुननेका शब्द जिसके ८४ व वायुहुआहै नासिका जिसके व चन्द्रमाहै प्रसाद जिसके व धर्म है मन जिसका और सत्य है बाणी जिसके और सरस्वती है जिह्वा जिसकी और ८५ अदिति है ग्रीवा जिसकी और प्रकाशवाला सूर्य्य है तालुवा जिसके ८६ और स्वर्गका द्वारहुआहै नाभि जिसके मित्र और त्वष्टा ये दोनों हैं भृकुटी जिसके ८७ और अग्निहै मुख जिसके और दक्षप्रजापतिहै वृषण जिसके ८८ ब्रह्माजी हैं हृदय जिसके और कश्यपजी हैं पुरुषपना जिसके ८९ और पृष्ठभाग में हैं वसुदेवते जिसके और मरुद्देवते हैं मन सन्धियों में जिसके ९० और सब छंदहैं दांतोंकी जगह जिसके और ज्योतिर्गणहै प्रभा जिसके ९१ और महादेवहैं उरु जिसके और समुद्रहै धैर्य्य जिसके ९२ और गन्धर्व व दिव्य सर्प हैं उदर जिसके और लक्ष्मी मेधा धृति कान्ति सब विद्या ये हैं कटि जिसके ९३ व परमपदस्थान है मस्तक जिसके और सब ज्योति है तप जिसके ९४ व देवताओंका राजा इन्द्रहै तेज जिसके और चारोंवेदहैं दोनों चूची व कान जिसके ९५ और यज्ञहैं ओठ जिसके व ब्राह्मणों के चेष्टितहैं दृष्टि जिसके ९६ ऐसे विष्णुके रूपको देख क्रोधको प्राप्तहुये महादैत्य समीपमें प्राप्त होनेलगे जैसे पतंग अग्नि में ९७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वणिभाषायांवामनविश्वरूपदर्शनेद्विसप्त-
तितमोऽध्यायः ७२॥

दोसौतिरसठिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे हे जनमेजय तिन दैत्यों के नामरूप आभरण और मुख्य शस्त्र तिन्हों को श्रवणकर १ और विप्रचित्ति शिवि शकुरय शकु अयंशिरा अश्वशिरा हयग्रीव वेगवान् २ केतुमान् उग्रसोग्र व्यग्र पुष्कर पुष्कल शाश्व अश्वपति ३ प्रह्लाद अश्वशिरा कुंभ संह्लाद गगनप्रिय अनुह्लाद हरिहर ४ वराह संहर अरुज वृषपर्वा विरूपाक्ष सुनींद्र चन्द्रलोचन ५ निष्प्रभ सुप्रभ निरुदर एकचक्र द्विचक्र ६ महावक्र कालसन्निभ बृहत्कीर्ति महाजिह्व शकुकर्ण महाध्वनी ७ शरभ शलभ कुपथ कापथ क्रथ दीर्घजिह्व ८ अर्कनयन मृदुचाप मृदुप्रिय वायु गविष्टनमुचि ९ शंवरमहान् वीक्षर चन्द्रहता क्रोधहता क्रोधवर्द्धन कालक १० कालकाक्ष वृत्र क्रोध विमोक्षण गरिष्ट हविष्ट प्रलम्बनरक ११ पृथु इन्द्रतापन वातापी केतुमान् वलदर्पित असिलोमा १२ पुलोमा वाष्कल प्रमद मद खसिम कालवदन १३ कराल केशि एकाक्ष राहु तुहुड समल सृप १४ इन नामोंवाले सब व अन्य भी बहुतसे कितनेक फासी को हाथमें लेनेवाले और कितनेक मुखको फाड़ने वाले १५ व कितनेक गधाके समान शब्दको करनेवाले १६ व कितनेक शतघ्नी व चक्रको हाथों में लेनेवाले १७ व कितनेक फरसा को धारण करनेवाले और कितनेक प्राग मुद्गर परिघ इन्होंको हाथोंमें धारण करनेवाले १८ और कितनेक महाशिला शूल व महावृक्ष इन्होंको हाथोंमें धारण करनेवाले १९ व महापट्टिश व मुशल गदा वटूक वज्र इन्हों को हाथोंमें धारण करनेवाले २० और कितनेक तलवारों को हाथों में फिरानेवाले २१ और कितनेक नानाप्रकार के प्रहारों को धारण करनेवाले और कितनेक युद्धमें दुर्मद २२ और कितनेक नानाप्रकार के वेषोंको धारण करनेवाले और कितनेक कछुआ और मुर्गाके मुखों के समान मुखवाले २३ व कितनेक हंसीके मुखके समान मुखवाले और कितनेक गधा व ऊंटके मुखके समान मुखवाले २४ और कितनेक शूकरके मुख के समान मुख वाले और कितनेक मच्छके मुखके समान मुखवाले २५ व कितनेक शिशुमार मच्छके मुखके समान मुखवाले २६ और कितनेक बिलार तोता अश्व गाय मूषक मृग ऊंट सेह हाथी नकुल बाज २७ वगेला वानर वकरा भेड भैंसा कुत्ता क्रौंच चकवा गोधा मत्स्य श्वान शार्दूल गैंडा सिंह इन्हों के मुखोंके समान मुखवाले २८

और कितनेक हाथी के चाम के वस्त्रोंवाले और कितनेक मृगछाला के वस्त्रोंवाले २९ और कितनेक चीर रूप वस्त्रोंवाले और कितनेक वृक्षों के वक्कलों के वस्त्रोंवाले ३० और कितनेक पगड़ी को बांधनेवाले और कितनेक मुकुट को धारण करनेवाले ३१ और कितनेक कुण्डलों को पहिननेवाले और कितनेक लम्बीचोटीवाले ३२ और कितनेक शङ्ख के समान ग्रीवावाले और कितनेक सुन्दर तेजवाले ३३ व कितनेक नानाप्रकार के वेषों को धारण करनेवाले ३४ व कितनेक नानाप्रकार की माला व चंदनआदि अनुलेपों को धारण करनेवाले ३५ ऐसे सब दैत्य नानाप्रकारके प्रकाशितरूप अपने अपने शस्त्रोंको ग्रहणकर ३६ पैरों से पृथ्वी को मापनेवाले विष्णु के समीप में प्राप्तहुये ३७ तब पैर और हाथों के तलुवों करके सब दैत्योंको मथके तीन पैरों से स्वर्गलोक को ३८ और बड़े शरीरवाले रूपको धारण कर पृथ्वी को भगवान् हरतेभये ३९ व त्रिलोकी को हरने के वक्त विस्तृतरूपवाले विष्णु की सूर्य के समान कांतिहुई ४० व पृथ्वी को विक्रमण करने के वक्त तिस विष्णु के चन्द्रमा और सूर्य दोनों स्तनियों के मध्यस्थानमें स्थितहुये ४१ व आकाश में प्रक्रमण करने के वक्त विष्णु के सक्थि देशमें चन्द्रमा और सूर्य स्थितहुये अर्थात् कटि के समान भागमें स्थितहुये ४२ व विष्णु के अति विक्रमण करने के वक्त चन्द्रमा और सूर्य पादमूल में स्थित हुये ४३ ऐसे अमित वीर्यवाले विष्णुके यशको ब्राह्मण कहते हैं ४४ पीछे सब लोकोंको जीतके और बहुतसे दैत्यों को मारके लोक नमस्कृत विष्णु भगवान् इन्द्रकेअर्थ पृथ्वी देतेभये ४५ व पृथ्वीतलके नीचे सुतलनाम पाताल बलिराजा के निवास के अर्थ देतेभये ४६ और बलिराजा उत्तम गतिको प्राप्तहो पातालमें वास करनेलगा ४७ और सदा परमध्यान में स्थितहुआ बलिराजा विष्णु भगवान् से वचन कहनेलगा ४८ कि हे देव मुझे क्या करना चाहिये यह विस्तार से वर्णनकरो ४९ तब बलिराजा से विष्णु भगवान् कहनेलगे हे महाभाग मैं अर्थ वर देऊंगा तू ग्रहणकरो भाग ५० मैं प्रसन्नहुआ तेरा कल्याणहो और मनोवांछित फल को प्राप्तहो ५१ व इन्द्र के वचन को कभी भी उल्लंघना नहीं मैं तेरे को आज्ञा देताहूं ५२ तू सुखको प्राप्तहोगा ऐसे कहके फिर बलिराजाको मधुरवाणी से सांत्वन करनेवाले और सर्वलोक को करनेवाले ऐसे विष्णु कहनेलगे ५३ जो मैंने अपनेहाथमें जलदिया और मैंने यह जल ग्रहण किया इससे तेरा

और देवताओं से तू नहीं मरेगा ५४ व सुतल नाम पाताललोक में सब दैत्य गणों के संग तू मेरे प्रसादसे वासकर ५५ व देवताओंका देव और अति तेज वाले ऐसे इन्द्रकी शिक्षाका नाश नहीं करना मेरी शिक्षा को मानके ५६ और तू सब देवताओं की पूजा करनी इस करके हे महाभाग मनोवाञ्छित रूप दिव्य कामनाओं को तू प्राप्त होवेगा ५७ व इसलोकमें और परलोक में सुखको और नानाप्रकारके स्थानोंको ५८ व दैत्यों के राजपने को और नानाप्रकारके भोगों को और दक्षिणावाले यज्ञोंको तू मेरे प्रसादमे प्राप्त होवेगा ५९ और जो तू मेरी कही मर्यादा को उल्लघन करेगा तौ तेरेको अतिवज्रवाले सर्प अपने फणों से मारेंगे ६० इसवास्ते देवताओंका पति इन्द्र तेरेको नमस्कार करने योग्यहै ६१ और मेरा वडाभ्राता व देवताओं में श्रेष्ठ ऐसे इन्द्र की शिक्षा सब कालमें ग्रहण करनी उचितहै ६२ तव वलि कहनेलगा हे देवदेव हे महाभाग हे शंख चक्र गदाधर हे सुरासुर गुरुश्रेष्ठ हे सर्वलोक महेश्वर ६३ पातालमें वास करनेवाले मेरे को भाग वर्णनकर और कैसे मैं तहां स्थितिकरू और मेरे भोजन के अर्थ क्या मिलेगा ६४ जिस करके अक्षय मेरी तृप्तिहोवे तव विष्णु भगवान् कहनेलगे ६५ हे दैत्यसत्तम वेदको जाननेवाले के विना श्राद्ध किया और व्रतके विना वेदका पाठकिया ६६ और दक्षिणा रहित यज्ञ और ऋत्विक् के विना हवन और श्रद्धा के विना दान किया ६७ व संस्कारसेरहित हवि अर्थात् द्रव्य ये छ भाग तेरे हैं ६८ व मेरे सेवैर करनेवालों का और मेरे भक्तों से वैर करनेवालों का पुण्य और क्रय विक्रयकरनेवाले ६९ अग्निहोत्रियों का पुण्य और श्रद्धा से रहित दान और पूजन यह सब हे दैत्येंद्र मेरे प्रसाद से तेराभाग होगा ७० वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे विष्णु के वचन को सुन के ऐसेही हो इस वचन को कहके और विष्णु की आज्ञा को प्रतिपालन करके पाताललोक में प्रवेश करता भया ७१ पीछे इसी काल में देवताओं से पूजित विष्णु भगवान् राज्य का विभाग करने लगे ७२ अर्थात् इन्द्र की पूर्वदिशा को अमित तेजवाले इन्द्र के अर्थ देने भये ७३ और दक्षिण दिशाको पितरों का राजा धर्मराजके अर्थ देनेभये और पश्चिम दिशा को वरुणजी के अर्थ देतेभये और उत्तर दिशाको यक्षों के राजा कुवेर के अर्थ देतेभये ७४ व नीचेके लोकों को शेषनागके अर्थ देतेभये ७५ व ऊर्ध्व दिशा को ब्रह्माके अर्थ देनेभये ७६ ऐसे वलवालों में उत्तम विष्णु त्रिलोकी का वि-

भागकर देवताओं ने शोक को दूर करतेभये ७७ ऐसे सब प्राणियों में इन्द्रकी प्रतिष्ठाकर महर्षियोंसे पूज्यमान वामनजी स्वर्ग को प्राप्त होतेभये ७८ व अति तेजवाले वामनजी जब गमन करतेभये तब सब देवते इन्द्र को अगाड़ीकर आनंदित भये ७९ वैशम्पायन कहनेलगे जब वामनजी वलिराजाको नागशिरवाले और कंबल अश्वतर इन आदि नामोंवाले सर्पोंसे बांधके स्वर्गमें चलेगये ८० तब नागोंके बंधनसे पीडितरूप वलिराजाके समीपमें यदृच्छा करके नारद मुनि प्राप्तहुआ ८१ तब कुच्छ्रगत वलिराजाको देख दयासेयुक्त नारदमुनि कहनेलगे ८२ हे दानव श्रेष्ठ तेरे अर्थ इस पीडासे छूटनेका उपाय देताहूं ८३ देवताओं का देवता और वासुदेव नामसे विख्यात और नहीं है आदि और अन्त जिसके ८४ व अक्षय अविनाशी ऐसे विष्णु के स्तोत्रका तू विशुद्ध अन्तरात्माकरके तद्गत मनको लगा ८५ पाठकर तत्काल इस दुःखसे छूटजावेगा ८६ तब विरोचनकापुत्र वलिराजा अजलिवांध गोविंदके स्तोत्र को नारदजी से पढ़तागया ८७ पीछे नारदजी से कहेहुये तिसस्तोत्र को पढ़नेलगा ८८ जिस करके इस पृथ्वीका उद्धारहुआ था अब जिस स्तोत्रको वलिराजा जपतेभये वह स्तोत्र वर्णन किया जाताहै ८९ व फलकी प्राप्तिके वास्ते सत्यरूप स्तोत्रनिरागपाठ॥नमोस्त्वनंतपतयेअक्षयायमहात्मने ॥ जलेशयायदेवायपद्मनाभायविष्णवे ९०समस्तुर्यंवपु कृत्वात्रीन्लोकान्क्रान्तवानसि॥भगवान्कालरूपस्त्वंतेनसत्येनमोक्षय ९१ नष्टचन्द्रार्कगगनेक्षीणपवनपक्रिये॥पुनश्चिन्तयसेलोकांस्तेनसत्येनमोक्षय ९२ ब्रह्मरुद्रेन्द्रवाय्वग्निसरिद्भुजगपर्वता ॥त्वत्स्थाद्दृष्टाश्चितेन्द्रेणतेनसत्येनमोक्षय ९३ मार्कण्डेनपुराकल्पे भविष्यत्सृष्टवान्॥जगज्जगत्यंद्दष्टं तेनसत्येनमोक्षय ९४ एकोविद्यामहायस्त्वं योगीयोगमुपागतः ॥पुनर्लोकांश्चमुख्यंच तेनसत्येनमोक्षय ९५ जलमध्यमुपासीनो योगनिद्रामुपागतः ॥लोकांश्चिन्तयसेभूयस्तेनसत्येनमोक्षय ९६ वराहरूपमास्थाय वेदयज्ञमुरस्तुतः॥ जगदुत्क्षिप्तवान्येन तेनसत्येनमोक्षय९७उत्पत्यदंष्ट्रयाचक्रात्रीचपिण्डानकरानपि ॥ सोपिनृपापविद्धे तेन सत्येनमोक्षय ९८ नरहरि सुराणां हिरण्याक्षवरार्दिता ॥ नृसिंहनामस्तपाहस्तेन सत्येनमोक्षय ९९ दीर्घनखेणरूपेण हिरण्याक्षस्ततंपुरा ॥विदीर्णहृतोरेण तेन सत्येनमोक्षय १०० भवनमुद्धांस्विवमहत्तो हिरण्यकशिपु पुरा ॥ दुःखापहर्त्तोदैत्य तेनसत्येनमोक्षय१०१दानवाम्भोदानादिता मायया वामन पुरा॥त्रिलोक्याक्रान्ता

तेनसत्येनमोक्षय १०२ कृत्वाहयशिरोरूपहत्वातुमधुकैटभौ॥ ब्रह्मणेतेऽर्पितावेदास्ते नसत्येनमोक्षय १०३ अपान्तरत्तमानाम जातोदेवस्यवैसुत ॥ कृताश्चतेनवेदार्था स्तेनसत्येनमोक्षय १०४ देवयज्ञाग्निहोत्राणि पितृयज्ञहवींपिच ॥ रहस्यंतवदेव स्य तेनसत्येनमोक्षय १०५ ऋपिर्दीर्घतपानाम जात्यधोगुरुशापत ॥ त्वत्प्रसा दाच्चचक्षुष्मा तेनसत्येनमोक्षय १०६ ग्राहग्रस्तंगजेन्द्रश्च दीनमृत्युवशेस्थित ॥ भ क्तमोक्षितवास्त्वंहि तेनसत्येनमोक्षय १०७ अक्षयश्चाव्ययश्चत्वं ब्रह्मण्योभक्तवत्स ल ॥ उच्छ्रनानानिहतासि तेनसत्येनमोक्षय १०८ शङ्खचक्रगदातूर्ण शार्ङ्गग रुडमेवच ॥ प्रसादयामिशिरसा तेबन्धान्मोचयतुमा १०९ इस स्तोत्र के पाठ से प्रसन्नहुये विष्णु भगवान् पक्षियों में उत्तम और सर्पों को मारनेवाले ऐसे गरुड जी से कहनेलगे ११० हे प्रिय वलिराजा को वन्धनसे छुटा पीछे अतुल पराक्रम वाला गरुड पाखों को ऐंक्रताहुआ जहा वलिराजा स्थितथा तिस पृथ्वी के मूल में प्राप्त हुआ १११ गरुड़जी के आगमन को जान भयसे पीडित सबसर्प वलि राजा को छोड के भोगवती पुरी में प्राप्तहुये ११२ विष्णु के प्रसाद से छुटाहुआ वलि विष्णु को चिन्तना करनेवाला ११३ लक्ष्मी से भ्रष्ट और सर्पों के बन्धन से रहित वलिराजा को गरुडजी कहनेलगे ११४ हे दानवेंद्र हे महावाहो विष्णु तेरे से कहते भये हैं कि पुत्रजन वाधवों सहित तू पाताल में वस ११५ और यहा से तूने दो कोश भी गमन नहीं किया जो तू इस प्रतिज्ञाको भेदन करेगा तो तेरे मस्तकके सौ सौ टुकडे होजावेंगे ११६ ऐसे गरुड़जीके वचन को सुन वलिराजा कहनेलगा तिस विष्णुकी आज्ञाको मान समय पै मैं स्थितहू ११७ परन्तु वही ईश्वर मेरे जीवनेके अर्थ भोजनका उपाय करो जिस करके यहीं स्थितहुआ मैं, पुष्टरहूं ११८ ऐसे वलिके वचनको सुनके गरुडजी कहनेलगे कि हे राजन् ११९ तेरे जीवनेका उपाय पहलेही विष्णुने करदियाहै १२० अर्थात् विधिको नहीं जा-ननेवाले और प्रायश्चित्तको नहीं जाननेवाले और ऋत्विक् सज्ञासे भिन्न ऐसे ब्राह्मण जो यज्ञ को करेंगे वह यज्ञभाग तेराहै १२१ अर्थात् जिस यज्ञभाग को देवते नहीं ग्रहण करेंगे इस करके पुष्टहुआ तू सुखपूर्वक यहीं बसेगा १२२ तब वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे विष्णुके सदेशको वलिराजाके अर्थ गरुडजी कहते भये १२३ इस पूर्वोक्त स्तोत्रको जो पढेगा तिस के सब पाप नाशको प्राप्त हो-जावेंगे १२४ और गायको मारनेवाला गोहत्यासे छूटजावेगा और ब्रह्मघ्न ब्रह्म-

दुःखसे छूटजावेगा। १२५ और जिसके पुत्र नहीं होवे वह पुत्रको प्राप्तहोवेगा व कन्या वाञ्छितरूप पति को प्राप्त होवेगी १२६ और लग्न गर्भवाली स्त्री गर्भ से छूट जावेगी और गर्भिणी स्त्री पुत्रको जनेगी १२७ और इस स्तोत्र के प्रताप से मोक्ष की इच्छावाले योगी श्वेतद्वीप में जाके प्राप्तहोंगे १२८ यह विष्णु का स्तोत्र सब कामनाओंका देनेवालाहै १२९ और पवित्ररूप मनुष्य प्रभातमें उठ के इस स्तोत्र का पाठकरेगा वह मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्तहोवेगा इस में संशय नहीं १३० यहवामन अवतार वेदको जाननेवाले विप्रोंके पढ़नेके योग्य है १३१ इस वामनके आख्यान को जो पर्वकालमें भक्तिसे राजा श्रवणकरै तो शत्रुओंको निश्चयजीते जैसे महाबलवाला विष्णु १३२ और उत्तम यश और सद्गति को प्राप्तहो और सब प्राणियोंका प्रियहो और धन्य बुद्धिवाले व गुण वाले ऐसे पुत्रों को प्राप्तहोवे १३३ और इस स्तोत्रको पठन करनेवाले मनुष्योंमें सब कामनाओं को देनेवाला १३४ विष्णु भगवान् प्रसन्न होजाता है ऐसे वेद-व्यासजी ने कहाहै १३५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिअन्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनप्रादुर्भावेविष्णुस्तोत्रंनामत्रिषष्टयधिकद्विशततमोऽध्यायः २६३

दोसौचौंसठिका अध्याय॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे देवताओंके देवते विष्णुभगवान् महादेव के आलयरूप कैलास शिखरमें किसवास्ते प्राप्तहुये १ व नारद आदि बड़ेतपस्वि योंने नीललोहित रूप महादेव देखा व हे विप्र उत्तम तपको करनेवाले विष्णु ने महादेव का पूजनकिया यह मैंने सुनाहै २व तहां पुरातन और जगत्केनाथ ऐसे महादेव और विष्णुकी इन्द्र आदि देवताओंने पूजाकरी ३ व पर आत्मा वाले और जगत्की योनि और सृष्टि और संहारको करनेवाले ४ व आपस के समावेशसे जगत्की पालनामें स्थित हरि और महादेव इन दो नामोंसे ऐसे इन दोनोंका जैसे कैलासपर्वतमें वृत्तान्त बीताहै ५ व इन दोनों पुरुषोत्तमों को देखके सब ऋषि क्या चेष्टा करतेभये यह सब विशेष करके हे ब्रह्मन् तुम कहने को योग्यहो ६ और जैसे पुरातन विष्णुरूप कृष्ण कैलासमें प्राप्तभये ७ व जैसे त्रयों के सुखदेनेवाले महादेवजी तहां कर्तव्य करतेभये यह सब यत्नसे वर्णनकरो ८ वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् जैसे कृष्ण भगवान् कैलासको प्राप्तभये और

जैसे महादेवजी देखे ६ तिस वृत्तान्त को तू सावधानहोके सुन और जैसे कृष्ण भगवान् तप करतेभये और जैसे मुनिजन भी प्राप्तभये ऐसे इन दोनोंके वृत्तान्त को हे नरोत्तम श्रवणकर १० जैसे वेदव्यासजी मेरेसे कहते भये हैं गरुड वाहन वाले श्रीकृष्णको नमस्कार कर तैसे मैंभी कहताहू ११ यह आख्यान शुश्रूषासे रहित और नृशंस और तपसे रहित और मूर्ख इन्हों के अगाडी कहना उचित नहींहै १२ और यह आख्यान पुण्यवालों के पुण्यरूपहै और स्वर्ग व यशका देनेवालाहै और धन्यहै और सब कालमें वृद्धि और शुद्धिको करनेवालाहै १३ और पुण्यात्माओंके नित्यप्रति ध्यान करनेके योग्यहै और वेदके अर्थोंसे निश्चितहै १४ इस आख्यानको नारदआदि मुनि नित्यप्रति सेवते हैं और कैलास पर्वतमें १५ विष्णुका और शिवका अद्भुतरूप वृत्तान्तहुआहै और जब नरकासुर आदि दैत्यों के समूह मारेगये १६ और कल्लुक शत्रु शेष रहगये तब श्रीकृष्ण भगवान् पृथ्वी में शिक्षा देनेलगा १७ और द्वारकापुरी में वृष्णियों के साथ वास करनेवाले और रुक्मिणी रानीके संग श्रीकृष्ण बसतेभये १८ पीछे किसी समयमें रुक्मिणीके संग रात्रि में क्रीडा करनेवाले और प्रसन्नहुये विष्णु शयन करनेलगे १९ तब रुक्मिणी कहनेलगी हे देवेश हे माधव सोना के गहनों को धारण करनेवाला और आनन्दका देनेवाला २० और अतिबलवान् और रूप से संपन्न और तेरे रूपके समान रूपवाला और वृष्णि वंशवालों का नेता और अतिवीर्य्यवाला और तपका समुद्र २१ और सब शास्त्रके अर्थ में चतुर व राजविद्यामें अतिचतुर इन आदिगुणों से युक्त पुत्रको तेरे से चाहती हू सो तुम देने को योग्यहो २२ और तेरे विषे सबों को देना नित्यप्रति स्थिर हैं और तू सब जगत् का कर्ताहै और तूही दाताहै व तूही भोक्ताहै व तूही जगत्पति है २३ व शुश्रूषा करनेवाले भृत्योंका तूही स्वामीहै और हे देवेश जो तेरे विषे मेरी पूर्ण भक्तिहै २४ व मेरे पै अनुग्रहहै तो हे जनार्द्दन वीर्य्यवाले पुत्रको तुम देने को योग्य हो २५ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे प्रिया रुक्मिणी के वचन को सुन के रुक्मिके शत्रु और यदुवंश में उत्पन्न होनेवाले २६ ऐसे श्रीकृष्ण रुक्मिणी से कहनेलगे हे मानिनी जैसे पुत्रकी इच्छा करती है तैसे पुत्रको मैं तेरे अर्थ दूंगा २७ और तू मेरी नित्यप्रति भक्तिनी है इसवास्ते तू संशय मतकर निश्चय शत्रुओंको जीतनेवाला तेरे पुत्र दूंगा २८ और पुत्र करके उत्तम लोकों में मनुष्य

हत्यासे छूटजावेगा १२५ और जिसके पुत्र नहीं होवे वह पुत्रको प्राप्तहोवेगा व कन्या वाञ्छितरूप पति को प्राप्त होवेगी १२६ और लग्न गर्भवाली स्त्रीगर्भ से छूट जावेगी और गर्भिणी स्त्री पुत्रको जनेगी १२७ और इस स्तोत्र के प्रताप से मोक्ष की इच्छावाले योगी श्वेतद्वीप में जाके प्राप्तहोंगे १२८ यह विष्णु का स्तोत्र सब कामनाओंका देनेवालाहै १२९ और पवित्ररूप मनुष्य प्रभातमें उठ के इस स्तोत्र का पाठकरेगा वह मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्तहोवेगा इस में संशय नहीं १३० यहवामन अवतार वेदको जाननेवाले विप्रोंके कहनेके योग्य है १३१ इस वामनके आख्यान को जो पर्वकालमें भक्तिसे राजा श्रवणकरै तो शत्रुओंको निश्चयजीते जैसे महावलवाला विष्णु १३२ और उत्तम यश और सद्गति को प्राप्तहो और सब प्राणियोंका प्रियहो और धन्य बुद्धिवाले व गुण वाले ऐसे पुत्रों को प्राप्तहोवे १३३ और इस स्तोत्रको पठन करनेवाले मनुष्यपै सब कामनाओं को देनेवाला १३४ विष्णु भगवान् प्रसन्न होजाता है ऐसे वेद-व्यासजी ने कहाहै १३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायावामनप्रादुर्भावेत्रिषष्ठ्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६३ ॥

दोसौचौंसठिका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे देवताओंके देवते विष्णुभगवान् महादेव के आलयरूप कैलास शिखरमें किसवास्ते प्राप्तहुये १ व नारद आदि वृद्धतपस्वि-यों ने नीललोहित रूप महादेव देखा व हे विप्र उत्तम तपको करनेवाले विष्णु ने महादेव का पूजनकिया यह मैंने सुनाहै २ व तहां पुरातन और जगत्केनाथ ऐसे महादेव और विष्णुकी इन्द्र आदि देवताओंने पूजाकरी ३ व एकआत्मा वाले और जगत्की योनि और सृष्टि और संहारको करनेवाले ४ व आपस के समावेशसे जगत्की पालनामें स्थित हरि और महादेव इन दो नामोंवाले ऐसे इन दोनोंका जैसे कैलासपर्वतमें वृत्तान्त वीताहै ५ व इन दोनों पुरुषोत्तमों को देखके सब ऋषि क्या चेष्टा करतेभये यह सब विशेष करके हे सत्तम तुम कहने को योग्यहो ६ और जैसे पुरातन विष्णुरूप कृष्ण कैलासमें प्राप्तभये ७ व जैसे सर्पों के भूषणवाले महादेवजी कुछ कर्त्तव्य करतेभये यह सब यत्नसे वर्णनकरो ८ वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् जैसे कृष्ण भगवान् कैलासको प्राप्तभये और

जैसे महादेवजी देखे ६ तिम वृत्तात को तू सावधानहोके सुन और जैसे कृष्ण भगवान् तप करतेभये और जैसे मुनिजन भी प्राप्तभये ऐसे इन दोनोंके वृत्तात को हे नरोत्तम श्रवणकर १० जैसे वेदव्यासजी मेरेसे कहते भये हैं गरुड वाहन वाले श्रीकृष्णको नमस्कार कर तैसे मैंभी कहताहू ११ यह आख्यान शुश्रूषासे रहित और नृशस और तपसे रहित और मूर्ख इन्हों के अगाडी कहना उचित नहींहै १२ और यह आख्यान पुण्यवालों के पुण्यरूपहै और स्वर्ग व यशका देनेवालाहै और धन्यहै और सव कालमें वुद्धि और शुद्धिको करनेवालाहै १३ और पुण्यात्माओंके नित्यप्रति ध्यान करनेके योग्यहै और वेदके अर्थोंसे निश्चितहै १४ इस आख्यानको नारदआदि मुनि नित्यप्रति सेवते हैं और कैलास पर्वतमें १५ विष्णुका और शिवका अद्भुतरूप वृत्तातहुआहै और जव नरकासुर आदि दैत्यों के समूह मारेगये १६ और कल्लुक शत्रु शेप रहगये तव श्रीकृष्ण भगवान् पृथ्वी में शिक्षा देनेलगा १७ और द्वारकापुरी में वृष्णियों के साथ वास करनेवाले और रुक्मिणी रानीके सग श्रीकृष्ण वसतेभये १८ पीछे किसी समयमें रुक्मिणीके सग रात्रि में क्रीडा करनेवाले और प्रसन्नहुये विष्णु शयन करनेलगे १९ तव रुक्मिणी कहनेलगी हे देवेश हे माधव सोना के गहनों को धारण करनेवाला और आनन्दका देनेवाला २० और अतिवलवान् और रूप से सपन्न और तेरे रूपके समान रूपवाला और वृष्णि वशवालोंका नेता और अतिवीर्य्यवाला और तपका समुद्र २१ और सव शास्त्रके अर्थ में चतुर व राजविद्यामें अतिचतुर इन आदिगुणों से युक्त पुत्रको तेरे से चाहती हू सो तुम देने को योग्यहो २२ और तेरे विषे सवों को देना नित्यप्रति स्थित है और तू सव जगत् का कर्ताहै और तूही दाताहै व तूही भोक्ताहै व तूही जगत्पति है २३ व शुश्रूपा करनेवाले भृत्योंका तूही स्वामीहै और हे देवेश जो तेरे विषे मेरी पूर्ण भक्तिहै २४ व मेरे पै अनुग्रहहै तो हे जनार्दन वीर्य्यवाले पुत्रको तुम देने को योग्य हो २५ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे प्रिया रुक्मिणी के वचन को सुन के रुक्मिके शत्रु और यदुवश में उत्पन्न होनेवाले २६ ऐसे श्रीकृष्ण रुक्मिणी से कहनेलगे हे मानिनी जैसे पुत्रकी इच्छा करती है तैसे पुत्रको मैं तेरे अर्थ दूंगा २७ और तू मेरी नित्यप्रति भक्तिनी है इसवास्ते तू सशय मतकर निश्चय शत्रुओंको जीतनेवाला तेरे पुत्र दूगा २८ और पुत्रकरके उत्तम में

प्राप्त होते हैं और पुत्रनामहै नरक का अथवा दुःखका २९ तिससे जो रक्षाकरै तिसको पुत्र कहते हैं ऐसे पुत्रको इसलोक में और परलोक में चाहते हैं और हे प्रिये पुत्रवाले मनुष्यको अनन्त श्रमरूप लोक प्राप्तहोते हैं ३० और प्रथम पति भार्य्या में प्रवेश करै है पीछे माताके पेटमें गर्भरूप होके रहै है पीछे तिस माता के सकाशसे फिर नयेरूपको धारणकर दशवें महीने में जन्मताहै ३१ और पुत्र वाले मनुष्यसे इन्द्र भी भयमानताहै और पुत्रसे रहित मनुष्य उत्तम लोकों को नहीं प्राप्तहोसक्ता परन्तु कुपुत्रसे वन्ध्या भार्य्या रहनी उत्तमहै और कुपुत्रसे नरक होताहै और सुपुत्रसे स्वर्गहोताहै इसवास्ते विनीत श्रुतवाला दयावान् ३२। ३३ और विद्यासे विनय होता है इसवास्ते विद्यावाला सुधार्मिक ऐसे पुत्र की कामनावाला पुरुष इच्छाकरै ३४ इसवास्ते विद्यावान् और धार्मिक ऐसे पुत्र को तेरेअर्थ देऊंगा अब पुत्रकी प्राप्ति के अर्थ पर्वतों में उत्तम कैलासपर्वत को गमन करताहूं ३५ तहां नीललोहितरूप महादेवकी उपासनाकर प्राणियों पै दयाकरने वाले महादेवजी के सकाश से पुत्रको प्राप्तहूंगा ३६ और तपसे ब्रह्मचर्य से महादेवजीको प्रसन्नकरूंगा ३७ सो महादेवजी को देखने के अर्थ अवहीं मैं गमन करताहूं और तपकरके प्रसन्नहुआ महादेव मेरेको पुत्र देवेगा ३८ तहां गमन कर पार्वती सहित महादेवको नमस्कारकर पवित्र मुनियों से युक्त तपोमयी ३९ और अग्निहोत्रों से आकुल और दिव्य गंगाजलसे प्लावित मृग और पक्षियों से युक्त सिंह और हाथियों के सैकडे से आकुल ४० और बड़बेरी के फलों से पूरित और वानरोंकरके शोभित वृक्षोंवाली और वेत्रआदि से आरूढ महावृक्षों वाली और केलाओं से मंडित ४१ और वेदों के तत्त्वार्थ के विचारमें निपुण व प्रमाण में निपुण ४२ ऐसे मुनियों करके युत और यह एकहै और यह तत्त्वहै ऐसे निश्चित मनवाले मुनियों से उपास्यमान ४३ और इतिहासपुराण इन्होंको जाननेवाले महर्षि और सिद्धों से सेव्यमान और स्वर्ग को जाने के वक्त इस शरीरको त्यागके ४४ तब प्रसिद्ध सुकृत स्थानरूप ऐसी बदरीपुरी में प्रवेशकर स्थितहूंगा ऐसे कहके श्रीकृष्ण विगमको प्राप्तभये ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांचतुःषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः

दोसौपैंसठिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जब रात्रि व्यतीतहुई और प्रभात होगया तब गमन करने की इच्छावाले श्रीकृष्ण अग्नि में हवनकर और दक्षिणा दानदे १ और गौओंका दान ब्राह्मणोंके अर्थ देके और ब्राह्मणोंको नमस्कारकर अपने बैठने के स्थानमें प्रवेश करतेभये २ तहां सुन्दर आसन पै स्थितहो सब वृष्णिवंशको और बलदेव सात्यकि कृतवर्मा शट सारण ३ उग्रसेन और नीतिमें कुशल और जिसकी बुद्धिके आश्रयहो सब देवते सुखपूर्वक जीवते हैं ४ ऐसा और सबयदु और सब वृष्णियोंका नेता और धर्ममें तत्पर और जिसकी नीतिसे देवते भी भय मानते हैं ५ ऐसा और जिसकी बुद्धिके वशसे समस्त पृथ्वी को शिक्षित करतेभये ऐसा और वृष्णियों में श्रेष्ठ और वीर और देवताओं के समान कांति वाला ६ ऐसा उद्धव और अन्य भी सबयादव इन्होंसे श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे हे यादवो मेरे वचनको तुम सब सुनो ७ और हे उद्धव मेरेपिताने जो मेरे अर्थ वचन कहाहै वह भी सुन दुष्टोंके निग्रह करने में ८ मैंने बाल्यअवस्था से यत्न कियाहै सो प्रथम पूतना मारी है पीछे केशी मैंने बालकहीमें माराहै ९ पीछे गोवर्द्धन पर्वत धारण कियाहै और गौओंकी प्रतिपाल करी है पीछे इन्द्रने मेरा अभिषेक कियाहै १० पीछे चाणूर मुष्टिककरके सहित कंस भी माराहै व उग्रसेन का अभिषेककिये पीछे द्वारकापुरी बसाई है ११ औरभी बहुतसे बलवाले राजा मैंने मारे हैं और जरासंध राजा भी बलवाले भीमसेनके हाथसे मैंने मरवादिया है १२ और गोमतपर्वत से गमन करनेवाले मैंने युद्ध में शृगाल राजाको भी माराहै १३ और वीरदुरात्मा ऐसा नरकासुर भी मैंने माराहै ऐसे निष्कण्टकलोक मैंने करदियाहै १४ परन्तु भौमासुरका सखा और वीर और वीर्यवालोंका नेता व सबकालमें मेरा वैरी १५ और द्रोणाचार्यका शिष्य और बलवाला और ब्रह्मास्त्र को जाननेवाला और पंडित और शास्त्रों को जाननेवाला और नीतिवाला व सबोंका नेता और यशवाला १६ और योद्धा और युद्धमें प्रियता माननेवाला और मानों दूसरे परशुरामजी हैं ऐसा और मेरा एकान्त द्वेषी और सबकालमें मेरे छिद्रको ढूंढनेवाला १७ ऐसा पौंड्राजा छिद्रको प्राप्तहो पुरीको पीड़ितकरेगा और वह अल्पसाध्य राजा नहीं है १८ इसवास्ते हे यादवो तुम धनुषबाण आदिमे

सावधान रहियो जिससे पौंडराजा इस द्वारकापुरीको बाधे नहीं १६ और किसी कारणसे मैं कैलास को महादेवजी के देखने के अर्थ जाताहूं २० जबतक मेरा आगमनहो तबतक सावधानरहो और मेरेसे रहित इसपुरीको जानके २१ पौंड राजा इस पुरीमें आके युद्धकरेगा व वह राजा इसपुरी को यादवों से रहित कर सक्ताहै २२ इसलिये तलवार पाश फरसा भिंदिपाल इन आदि शस्त्रोंको धारण कर सावधानरहो २३ व द्वारकापुरी के सब दरवाजों को किवाड़ोंसे बदकर एक बड़ेद्वारको जाने आवनेके वास्ते खुलारक्खो २४ व जो राजाके सम्मुखमें गमन कर वह छापालगवाके गमनकरसके व छापासे रहित द्वारपालके देखने कोईभी प्रवेश नहीं करसके २५ जबतक मेरा आगमन न हो तबतक ऐसे होनाचाहिये और न शिकार खेलने जानाचाहिये और न पुरीसे बाहर क्रीडा करनी चाहिये २६ व आने जानेमें अपने पराये पुरुषको जाननाचाहिये जबतक मेरा आगमन हो २७ तबतक ऐसे सब यादवोंको कहके फिर सात्यकी से कहतेभये २८॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांपंचषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्याय २६५॥

दोसौछाछठिका अध्याय ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे हे सात्यके मेरे वाक्यको सुनो और हे युधाम्बर सावधानहोजा और तलवार गदा धनुषबाण इन आदि हथियारोंको ग्रहण कर १ इस पुरीकी रक्षाकर और हे प्रिय तूने रात्रि में शयनकरना नहीं २ और हे शास्त्र कुशल तूने शास्त्रको व्याख्या भी करना नहीं और वादीजनों के सग वाद भी करना नहीं ३ और तूही योद्धाहै और तूही बलवालाहै व तूही धनुर्वेद को जानने वाला है तैसे करना कि हम उपहास्यता को प्राप्तहोवें नहीं ४ तब सात्यकी कहनेलगे हे जनार्दन अपनी शक्तिपूर्वक तेरे वचनोंको करूंगा और हे जगन्नाथ तेरी आज्ञाको सबकाल में धारण करूंगा ५ व हे माधव बलदेवजी के भृत्यके समानहोके विचरूंगा और जबतक आपका आगमनहोगा तबतक यत्नसे रहूंगा ६ व हे गोविन्द तुम्हारी कृपा जो मेरे में रहेगी तो शत्रुओंके निग्रह करनेमें मेरेको कुछभी दुस्साध्य नहींहै ७ जो इन्द्र धर्मराज कुबेर वरुण इन देवताओंको भी जीतसक्ताहूं फिर एक मनुष्यरूप पौंडराजाको जीतनेकी कौन कथाहै ८ सो हे प्रिय तू अपने कार्य के अर्थ गमनकर मैं निरन्तर सावधान हूं

पीछे श्रीकृष्ण उद्धवजीसे कहनेलगे ९ हे उद्धव तू यत्नपूर्वक मेरे वचनको करेगा सो इस पुरीकी रक्षाकरना १० व सावधान होके हमारी सहाय करना और तेरे अगाडी कहनेमें मेरे को लाजआती है ११ क्योंकि समग्र विद्याके पारका तू नेताहै इसलिये विद्यावाले के सम्मुख कौन शिक्षादेने को समर्थ है और कार्य्य अकार्यको अच्छीतरहसे आप जानते हैं इसवास्ते आपके सम्मुख कुछ विशेष कहना उचित नहीं १२ तब उद्धव कहनेलगे हे गोविन्द आप कैसे मेरे प्रतिकहते हैं आपकी प्रसन्नताहै या प्रीति है १३ व हे जगन्नाथ आपके विस्तारको मैं जानताहू जिसपै तुम प्रसन्नहोतेहो तिसको क्या नहींहोता १४ व तुम सबजगत् के कर्त्ता और हर्त्ताहो और सब कार्योंके उत्पत्तिस्थानहो १५ व वक्ता श्रोता प्रमाणके जाननेवाले धाता ध्यानमय और ध्येय ऐसे आपको ब्रह्म के जाननेवाले कहते हैं १६ व शत्रुओं के तुम जीतनेवालेहो और देवताओं की तुम रक्षा करनेवालेहो और तुम्हारीही कृपा से हतहोगये हैं वैरी जिन्हों के ऐसे हम जीवते हैं १७ व नीतिको जाननेवाले भी तुमहो और सब कार्य्योंके नीतिरूप आपतुमहो १८ और तुम्हारे बिना नीतिको जाननेवाला कौनहै ऐसे मेरी निश्चितमति है १९ व यह नीतिमार्ग दुर्गमहै ऐसे नीतिके जाननेवालों ने कहाहै २० व हे जनार्दन चारप्रकारसे नीति कही है साम दाम दण्ड भेद सो दण्डके देने योग्योंको दण्डदेना उचितहै और सामान्य साम उचितहै २१ व बलवालों में देना उचितहै और इन तीनोंमे जो वशमें नहीं आवे तहा भेद करना उचितहै २२ ऐसे नीतिवालों का मतहै और तहा तहा सब कार्य्यों में तेरे को प्रमाण रूप मानते हैं २३ यहा बहुत कहनेसे क्याहै सबकार्य तेरेई विषे समर्पितहै २४ वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे कहके नीतिके जाननेवाले उद्धव शान्तहुये तब श्रीकृष्ण २५ यादवोंकी सभामें बडी भुजावाले बलदेवजीसे राजा उग्रसेनसे व कृतवर्मासे कहतेभये २६ पीछे फिर श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहनेलगे कि तुम्हारो को प्रमाद नहीं करना सबकाल में यत्नवालेरहो २७ व हे महाबाहो जहां तुम स्थित रहोगे तहा जगत्को पीडानहीं होगी इसवास्ते हे आर्य सबकालमें गदाको धारणकर २८ सब यत्नसे इस द्वारकापुरीकी रक्षाकरो और जैसे हम उपहास्यताको प्राप्तनहीं होवें तैसे करो २९ व सबकाल में उत्साहकरना और यत्नसेभी उन्माद का त्याग नहीं करना इस वचनको सुनके बलदेवजी श्रीकृष्णसे कहनेलगे कि

आपका कहना ठीकहै ३० पीछे सब यादव अपने२ स्थानोंको जातेभये तब कै-
लास पर्वतको जानेकेअर्थ श्रीकृष्ण भगवान् गमनकरनेकी इच्छा करनेलगे३१॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांषट्षष्ठ्यधिकद्विशततोऽध्यायः ॥

दोसौसरसठिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तदनन्तर श्रीकृष्ण पक्षियों में श्रेष्ठ गरुडजीको चिंत-
वन करतेभये अर्थात् हे गरुड जी जल्दआवो १ पीछे उसीसमय वेदोंका जान
नेवाला और अतिबलवान् और योगशास्त्र को जाननेवाला २ व यज्ञमूर्त्ति व
पुराणात्मा व साममूर्द्धा व पवित्र व ऋग्वेद रूप पाखोंवाला और पिंगल और
जटिलके समान आकृतिवाला ३ और तावाके समान तुण्डवाला और अमृत
को हरनेवाला और शत्रुओंको जीतनेवाला और महा शिरवाला और सर्पोंका
वैरी और कमलके फूलोंके समान नेत्रोंवाला और साक्षात् विष्णु भगवान् के
समान मानो दूसरा ४ विष्णु और श्रीकृष्णका वाहन और दैत्यों की स्त्रियों के
गर्भको खण्डन करनेवाला और राक्षस और दैत्यों के समूहको पाखों के बलसे
जीतनेवाला ५ ऐसा गरुडजी श्रीकृष्ण के अगाड़ी प्रकटहो गोडोंसे पृथ्वी में
पड हे विष्णो हे जगत्पते ६ हे देवदेवेश हे स्वामिन् हे हरे ऐसे कहताहुआ न
मस्कार करनेलगा तव श्रीकृष्ण अपने हाथसे स्पर्श करतेभये और कहने लगे
कि हे गरुड़ तेरा सुन्दर आगमन हुआ ७ व हे प्रिय महादेवजी को देखने के
अर्थ कैलास पर्व्वत को गमनकरूंगा ८ तव गरुड़जी कहनेलगे कि महाराज
ठीकहै तव गरुडजी पै श्रीकृष्ण सवारहोके समीपमें स्थितहुये यादवों से कहने
लगे ९ कि हे प्रियो तुम स्थितरहो तव ऐशान्य दिशाको भगवान् गमन करने
लगे पीछे वडे वेगकरके त्रिलोकीको कँपावनेवाला १० व पैरोंसे समुद्र को क्षो
भित करनेवाला पाँखोंसे सव पर्व्वतोंको कँपावनेवाला और श्रीकृष्णको वहने
वाला ११ ऐसा गरुड समुद्र को क्षोभित करताभया पीछे आकाश में स्थित दे-
वता और गन्धर्व इष्टरूप वाणियों से श्रीकृष्ण की स्तुति करनेलगे १२ अर्थात्
यहां भी फलकी प्राप्तिके अर्थ संस्कृतमें स्तोत्र प्रकाशित किया जाताहै ॥ जय
देवजगन्नाथ जयविष्णोजगत्पते ॥ जयाजयनमोदेव भूतभावनभावन १३ नम
परमसिंहाय दैत्यदानवनाशन ॥ जयाजयहरेदेव योगिध्येयपरागते १४ नाराय

णनमोदेव कृष्णकृष्णहरेहरे ॥ आदिकर्त्त पुराणात्मन् ब्रह्मयोनेसनातन १५ न
मस्तेसकलेशाय निर्गुणायगुणात्मने ॥ भक्तिप्रियायभक्ताय नमोदानवनाशन
१६ अनित्यमूर्त्तयेतुभ्य नमस्तेसकलेश्वर ॥ इस स्तोत्र करके १७ देव गन्धर्व्व
ऋषि सिद्ध चारण श्रीकृष्णकी स्तुति करतेभये पीछे स्तुति वाक्यों को सुनते
हुये १८ श्रीकृष्ण देवता और मुनियोंकेसङ्ग जहा पहिले लोकोंके हितकी का-
मनाकरके दशहजार वर्षोंतक उग्रतपको करके १९ पीछे नर नारायण नामसे
दो शरीरो को उत्पन्न करते भये तहां प्राप्तभये २० व जहा सब नदियों में श्रेष्ठ
और पवित्र गगाजी मध्यभागमें चलती हैं और जहां वेदार्थोंके तत्त्वको जान-
नेवाले वृत्रासुरको २१ इन्द्र मारके ब्रह्महत्या दूर करनेके अर्थ दशहजार वर्पोंतक
तप करतेभये हैं और जहा विष्णुका ध्यानकर सिद्ध स्थित रहते हैं २२ व जहा
रावणको मारके रामचद्र शिक्षादेने की इच्छाकरके घोर तपको करते भये हैं २३
व जहा पवित्ररूप देवता और मुनि सिद्धिको प्राप्त होते हैं और जहा नित्यप्रति
साक्षात् विष्णु वमते हैं २४ व जहा मुनिगणों के सहित यज्ञ होते हैं और जिस
के स्मरण करनेसे मनुष्य स्वर्गको गमनकरताहै २५ व जिसको मुनिजन सा-
क्षात् स्वर्ग की सीढ़ी मानते हैं और जहा वसके शत्रुभी मित्रभावको प्राप्तहो-
जाते हैं २६ व जो पुण्यशीलोंका और उत्तम धर्मवालोंका परम स्थान है और
जहा विष्णुकी आराधनाकर देवता स्वर्ग में प्राप्तभये हैं २७ व जिसको मत्सर-
तारहित मुनिजन सिद्धक्षेत्र कहते हैं ऐसी विशाला बदरीको देखनेके अर्थ २८
सायकालमें देवताओंके गण और तत्त्वोंको जाननेवाले मुनियोंके सङ्ग ऋषि-
योंसे जुष्ट और महापवित्र ऐसे तपोवन में प्रवेश करते भये २९ अर्थात् अग्नि-
होत्रों से आकुल काल होरहा है और पक्षियों के बोलनेसे मंकुलकाल होरहा
है और मब पक्षी अपने अपने घोंसलों मे स्थित होरहे हैं और गायें दुहीजाती
हैं ३० और अपने अपने आमनों पे मुनिजन स्थित होरहे हैं और समाधि में
स्थित होनेवाले मुनिजन विष्णुको चिन्तवन करनेलगरहे हैं और जहा घृत
गर्म्म होरहाहै और जहा अग्नि प्रज्वलित होरहा है और जहा चारोंतर्फ अ-
ग्नियों हवन होरहा है ३१ व जहा अतिथि की पूजा होरही है ऐसी वेला में देव-
ताओं के सङ्ग श्रीकृष्ण ३२ मुनियों से जुष्ट और तपोमयी ऐसी बदरीपुरी अ-
र्थात् बदरिकाश्रम में प्रवेश करनेलगे ३३ तब आश्रमके मध्यभाग में श्रीकृष्ण

प्रवेशकर गरुड़ से उतर दीपकाओं से दीपित प्रदेश में प्रथम स्थितहुये ३४ ॥
इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांसप्तषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६७

दोसौअरसठिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे तब देवताओं के देव श्रीकृष्ण को स्थितहुये मुनिगण देख अग्निहोत्रों को समाप्तकर और अतिथियोंका पूजनकर १ व कितनेक दीर्घकाल से तप करनेवाले और कितनेक समाधि में निश्चय करनेवाले और कितनेक जटाको धारणकरनेवाले और कितनेक मुडको मुडानेवाले और कितनेक नसों से व्याप्त २ और कितनेक मज्जासेरहित और कितनेक रससेरहित ३ और कितनेक वेतालों की तरह रहनेवाले और कितनेक पत्थर से कूटे हुये पदार्थ को खानेवाले और कितनेक परभिक्षा करनेवाले ४ और कितनेक वेद विद्याव्रतों से स्नान और कितनेक भोजन को नहीं करानेवाले और कितनेक सब कालमें विष्णुका स्मरण करनेवाले ५ और कितनेक आसन मुक्तिवाले व कितनेक ध्यान में तत्पर और कितनेक ध्यानमें मनसे विष्णुको देखनेवाले ६ और कितनेक तपहीको धन माननेवाले और कितनेक एक वर्ष में भोजन करनेवाले और कितनेक जलमें विचरनेवाले और कितनेक इन्द्रको भी भय देनेवाले और कितनेक श्रुति स्मृति में परायण ७ और वशिष्ठ वामदेव रैभ्य धूम्र जाजली काश्यप कण्व भरद्वाज गौतम ८ अत्रि अश्वशिरा शखनिधि कुणि वेदव्यास पवित्राक्ष याज्ञवल्क्य ९ कक्षीवान् अङ्गिरा दीर्घतपा असित देवल व महातप करनेवाला वाल्मीकि १० इन आदिनामोंवाले ऐसे मुनि अर्घको ग्रहण कर श्रीकृष्ण को देखने के अर्थ अपनी अपनी कुटियों से आके ११ भक्ति से नम्रहुये मुनि भक्तवत्सल श्रीकृष्ण को प्रणाम करतेभये १२ और कहनेलगे हे कृष्ण हे कृष्ण हे देवदेव हे प्रणवात्मन् हे जगन्नाथ हे हरे हम शिरसे नमस्कार करते हैं १३ और हे कृष्ण हे विष्णो हे केशव हे हृषीकेश आप को सब मुनि जगत् के पति मानते हैं सो यह अर्घ्यपाद्य और आसन ग्रहणकरो और आपने हम सबको कृतकृत्य करदियाहै इसवास्ते हे देव हमारे ऊपर प्रसन्नहो १४ और हम क्याकरैं क्या हमारा कृत्यहै और हमसे कोई दोष हुआहै कि ऐसे श्रीकृष्ण के देखतेहुये सब अञ्जली बांधके कहते भये १५ तब सब देवताओं से युक्त श्री

कृष्ण कहनेलगे कि हे मुनिवरो तुमने सब सुकृत किये हैं इसवास्ते तुम्हारा तप बढतारहै १६ ऐसे कहनेहुये और तिस गरुड़जी के संग प्रसन्नहुये रात्रि में श्रीकृष्ण आसन को प्राप्त होतेभये १७ पीछे सब मुनियों से अग्निहोत्र में तप में भृत्यों में कुशल पूछनेलगे १८ तब सब मुनि श्रीकृष्ण के अर्थ कुशल बताते भये १९ पीछे नीवार धान्य फल मूल इन आदि से सब देवताओं और विशेष करके श्रीकृष्ण का आतिथ्य करतेभये २० सो आतिथ्य को प्राप्तहोके श्रीकृष्ण अतिप्रसन्न हुये २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायामष्टपष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः ॥

दोसौउनहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे नहीं जानीजावे गति जिसकी ऐसे विष्णु भगवान् जहां पहिले तप करतेभये १ गंगाजी के उत्तर तीरपै तिस देशके देखनेको साक्षात् हरि भगवान् तपोवन में प्रवेश करतेभये २ तहां मनोरम देश में प्रवेश कर उत्तम आश्रम में स्थितहोके ३ समाधि में मनको युक्त करतेभये तब देवताओं के ईश्वर श्रीकृष्ण ध्यानकरके ४ समाधि में दीपककी नाईं प्रकाशित हुये तब महाघोर रूप शब्द चारोंओर से प्रकट होनेलगा ५ कि खाओ खाओ प्रसन्न हो इन मृगोंको प्राप्तहो और श्रीकृष्ण के प्रसाद से सब कुत्तोंको मैं प्रेरताहूं ६ और विष्णु कृष्ण हरि ईश अच्युत यह स्थितहै सो हे विष्णो हे देवेश हे स्वामिन् हे माधव हे केशव तेरेअर्थ नमस्कारहो ७ इस आदि घोरशब्द मृगों के पीछे भागतेहुओंका और भयवाले मृगों का व ऋक्षोंका व गेंड़ोंका ८ व गर्जने वाले हाथियोंका जहां तहां से बढताहुआ और महावायु से क्षुभितहुये समुद्रके शब्द के समान ९ और त्रिलोकी में त्रासका देनेवाला ऐसा शब्द रात्रि में प्रकट होने लगा तब तिस शब्दको श्रीकृष्ण सुनके १० समाधि के क्षोभको प्राप्त हो और श्वासले चिंतवन करनेलगे कि यह महाशब्द क्याहै ११ व मेरीस्तुति से मयुक्त किसका यह ऐसा शब्द है और आश्चर्य है इस वनमें शिकारके अर्थ विचरते हुये कुत्तोंका शब्द १२ व सब मृगोंकाशब्द और मेरीस्तुतिसे मिलाहुआ ऐसा शब्द होरहाहै १३ ऐसे मनमें चिंतवन करके सब दिशाओंको चारोंओरसे देख १४ पीछे जहां श्रीकृष्ण स्थितथे तहां मृग भागनेहुये आये और तिन्होंके पीछे

कुत्ताओंका समूह भागताहुआ १५ आया और तहां सैकडों हजारों दीपकोंसे चादना होरहाथा इसवास्ते अंधेरे का नाशहो दिनका समय होगया १६ पीछे भूतों के समूह तहां दीखनेलगे पीछे वहुतसे शब्दों को करनेवाले १७ व मांस को खातेहुये व लोहूको पीवतेहुये और विकृत मुखोंवाले और महाघोर ऐसे पिशाच प्रकट होतेभये १८ व जहां तहांसे भागतेहुये और वाणोंसे विंधेहुये मरने के योग्य और मरेहुये मृग पडनेलगे १९ ऐसे हजारहों मृग तहां प्राप्तहुये जहां श्रीकृष्ण स्थितथे २० व श्रीकृष्ण के चारोंओर विकृत आकारवाली और कराल रूपवाली व जिन्हों के देखने से रोमावली खडी होजावे २१ ऐसी व पुत्रोंवाली ऐसी पिशाचोंकी भार्या प्राप्तहुईं व तहां चारोंओर को कुत्तोंके गण विचरनेलगे २२ तव श्रीकृष्ण भगवान् सवों को देखके आश्चर्य को प्राप्तहो तहांहीं स्थितरहे २३ व कहनेलगे किसका यह विस्तारपूर्वक शब्दहै व किसका यह कुटुम्ब यहां प्राप्तहुआहै व कौन मेरीभक्ति स्तुति कररहा है और मैंभी प्रीतिवालाहूंगा २४ व जव मैं प्रसन्नहुआ तव किसको मुक्ति दुर्लभहै ऐसे चिन्तवन करके मनुष्य की तरह भगवान् स्थित होतेभये २५ ॥

इतिमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायामूनसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २६९

दोसौसत्तरिका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि पीछे विकृत मुखवाले और धूलिको उड़ानेवाले व पिंगल रोमोंवाले व लम्बी जिह्वावाले व वडी ठोढीवाले १ व लम्बे केशोंवाले और विरूप नेत्रोंवाले और हीही हाहा ऐसे वोलनेवाले और मांसकी वोटीको खानेवाले और वहुतसे रुधिरको पीनेवाले २ व आंतोंसे वेष्टित अङ्गोंवाले और लम्बे व कृशरूप उदरवाले और लम्बायमान शूल सरिखे शिरको धारण करनेवाले ३ व दोनों भुजाओंसे मुर्दों के शिरोंको खैंचनेवाले और नानाप्रकार के हासको हसनेवाले और अपनी जाति के सदृश चेष्टा करनेवाले ४ व वहुत से रूपोंमें संयुक्त वचनों को कहनेवाले और अपनी जांघोंसे वड़े वडे वृक्षों को कँपानेवाले ५ व सृक्किणी अर्थात् अपने ओष्ठप्रान्त देशको अपनी जीभसे चाटनेवाले व दाँतों को चावनेवाले और हाड व नसोंमें आकीर्ण व धमनीरूप रज्जु से विस्तृत ६ व हे कृष्ण हे कृष्ण हे माधव इन वचनोंको निरन्तर कहनेवाले व

किस कालमें विष्णुदीखेगा और विष्णु अब कहां स्थित है ७ और मेरा स्वामी श्रीकृष्ण कहां वसताहै और कैसे देखनेको हम यत करें व किस देशमे वह देवेशरूप ईश्वर वसताहै ८ और कमलके पत्तोंके समान नेत्रोंवाला और साक्षात् इन्द्रका छोटाभ्राता और जिसको ब्रह्मको जाननेवाले विद्वान् साक्षात् ब्रह्मकहते हैं ९ ऐसा व जन्म से रहित और विश्वको रचनेवाले ऐसे ईश्वरको देखने को हम यत्न करते हैं और अन्तकाल में इसी ईश्वरमें तीनोंजगत् लय होते हैं १० ऐसे ईश्वरको जल्द हम कैसे देखेंगे व समार में अति घोररूप व मन जन्तुओं करके त्यागीहुई ११ व पिशाचों के योग्य व मनुष्यों के मास व हाड़ आदिको ग्रहण करानेवाली और सब प्रकारके भयको देनेवाली १२ ऐसी बुरीदशा कैसे हमारे को प्राप्तहुई कि आश्चर्य है १३ कि पूर्वजन्म में हमोंने बहुत बुरेकर्म करे हैं जिस करके इन पूर्वोक्त बुरेकर्मों में हमारी प्रीति सबकालमें उपजती है १४ व जबतक यह हम दोनोंमे किया बुराकर्म स्थित रहेगा तबतक प्राणियोंको पीडा करनेवाली और सबोंमे त्यागीहुई ऐसी दशा हमारी रहेगी १५ व बहुत जन्मों करके हमसे बुराकर्म बन आयाहै इसवास्ते यह घोर रूप फल अब भी निवृत्त नहीं होता १६ क्योंकि कुत्तों के समूहो के सङ्ग प्राणियोंको मारने के अर्थ हम सावधानहैं व बालक अवस्थामें १७ अज्ञानमें आवृत चित्तवाले प्राणी कृत्य व अकृत्यको नहीं जानते और यौवन अवस्थामें विषयों करके बंधेहुये चित्तवाले मनुष्य अपने कल्याणके अर्थ यत नहीं करते हैं १८ व वृद्ध अवस्थामें घोररूप ज्वरआदि अनेक प्रकारकी व्याधियों से पीडित १९ व नष्ट इन्द्रियोंवाले होके मनुष्य कल्याणके अर्थ यत नहीं करते हैं पीछे मरके विष्ठा व मूत्रमे युक्त गर्भवासमें निरन्तर भ्रमते हैं २० पीछे बहुत से दुःखोंकरके व्याप्तहुये घोररूप गर्भमे ससार मंडलमें जन्मते हैं २१ पीछे आपसमें हिंसा करतेहुये और कर्मका सञ्चय करतेहुये इस दुःखयुक्त घोर ससारमें २२ अज्ञानसे बहुतसे पापोंको करते है ऐसे ससारकी महिमा प्राणियोंमें विस्तृतहै २३ व शास्त्रआदि अनेक प्रकारके उपायोंसे अछेद्य अर्थात् कटने के योग्य नहीं है इसवास्ते प्राकृत बुद्धिवाले मनुष्य इस संसार से निवृत्त नहीं होते २४ व इस मनुष्येंद्र को मारके इसके धनको मैं हरूं व इसके धनको चोरासे मैं अपना बनालूं २५ व इस शांतरूप मनुष्यको भिक्षुक के धनको हरूंगा इन आदि मनोरथों से व्याकुल हुये मूर्ख प्राणियों को

पीडादेनेके अर्थ यत्न करते हैं २६ न इस दुःखके मूलरूप ससारका सबकाल में शख चक्र गदाको धारण करनेवाला २७ व आदिदेव व पुराणात्मा व ब्रह्मको जाननेवालों का आत्मा ऐसा विष्णु औषधहै इसवास्ते सब यत्नकरके सबकाल में तिस विष्णु को हम देखेंगे २८ ऐसे बोलतेहुये दोनों पिशाच विष्णुके अगाड़ी प्रकट होतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांसप्तत्यधिकद्विशततोऽध्याय २७०

दोसौइकहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे विष्णु भगवान् मास को भक्षण करनेवाले और दीपकाको धारण करनेवाले १ ऐसे महाघोररूप दो पिशाचोंको देखतेभये और वे दोनों पिशाच सुंदर आसनपै स्थितहुये विष्णुको देखतेभये २ तब लोकेश्वरों के ईश्वररूप विष्णुको देखके और विष्णुके समीपमें जाके और विष्णुको मध्यमें कर दोनों पिशाच कहनेलगे ३ हे मनुष्य तू कौनहै और किसका शिष्यहै और कहां से आयाहै और मृगोंसे व्याप्त और मनुष्यों से रहित और हाथियोंसे आवृत और पिशाच गणोंसे सेवित और स्वापद प्राणियोंसे और सिंहोंसे सेव्यमान ४ ऐसे वनमें तू किसवास्ते प्राप्तहुआ है और कुमार अवस्थावाला और सुन्दर अङ्गोंवाला और साक्षात् मानो दूसरा विष्णु है ऐसा और पद्मके पत्तों के समान नेत्रोंवाला और श्याम और कमलके समान कांतिवाला और शोभाका पति ५ और हमारेको प्रीति करनेवाला ऐसा तू देवहै व यक्ष है व गंधर्वहै व किन्नरहै ६ व इन्द्रहै व कुबेरहै व यमहै व वरुणहै और ध्यानार्पित मनवालेकी तरह इस वनमें तू कौनहै ७ हे मनुष्य यथार्थ करके वर्णन कर मैं जानने की इच्छा करताहूं ऐसे पिशाचों से पूंछाहुआ श्रीकृष्ण कहनेलगा कि यदुवंश मे उत्पन्न होनेवाला और क्षात्र वृत्तमें अनुष्ठित ८ व लोकोंकी रक्षा करनेवाला और सब कालमें दुष्टोंको शिक्षा देनेवाला ऐसा मैं क्षत्रिय हूं सो महादेवजी को देखनेके अर्थ कैलास पर्वतको गमन करनेवाला हूं ९ ऐसे मेरा वृत्तांतहै परन्तु तुम दोनों कौनहो यह कहो और इस ब्राह्मणाश्रम में तुम किसवास्ते प्राप्तहुये हो १० और पवित्र और नानाप्रकार के विप्रों से सेवित ऐसी यह बदरीपुरी विख्यात है और यह दुष्टपुरुषों से कहीं भी सेवित नहीं ११ व तपस्वियों से जुष्ट व सिद्धों से सेवित

ऐसा यह बदरिकाश्रमहै यहाकुत्तों के गण व मासकोभोजन करनेवाले पिशाच नहीं दीखते है १२ और यहा मृगनहीं मारनेके योग्यहै और यहा शिकारनहीं खेलाजाताहै और क्षुद्र कृतघ्न नास्तिक इन्होंका प्रवेश यहा नहीं होसकता है १३ व इसदेशका मैं रक्षा करनेवालाहू इसमें संशयनहीं व जो व्यतिक्रम होवे जब भी मैं यत्नसे शिक्षा करनेवालाहू १४ व तुम दोनों कौनहो और कहाको जातेहो व किसकी यहबडीसेना है और यहा से अगाडी तुम प्रवेश नहींकरना क्योंकि अगाडी ऋषिजन बसते हैं १५ व तपस्वियों के तपमें विघ्नहोसकता है इसवास्ते प्रथम यहीं स्थितरहो और पीछे सुखपूर्वक बोलो १६ व जो मेरे वचन को नहीं मानोगे तो बलसे और वाक्यसे रोकदेऊगा १७ वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे पूंछे हुये दोनों पिशाच कहने को समीप में प्राप्तहुये परन्तु तिन दोनों में जो एक महाघोर और दीर्घ बाहुओंवाला १८ ऐसा एक पिशाच हृदय में जो वचनथा सो कहता भया १९ पिशाच कहने लगा जगत्केनाथ और जगत्केपति और हरि ऐसे कृष्णको नमस्कार कर मैं वर्णन करताहू तू सावधान मनहोके सुन २० और आदिदेव अज वरेण्य अनघ पवित्र ऐसे विष्णु का ध्यानकर मैं सम्पूर्ण कहूगा जो तू इच्छा किये है तैसे सुन २१ मास को खानेवाला और घोर दर्शन वाला और विकृत और घोर और मृत्युके समान मानों दूसरा मृत्यु २२ व महादेवका मित्र और कुबेरका अनुचर ऐसा मैं घण्टाकर्ण नामसे विख्यात पिशाच हूं और यह मेरा छोटा भ्राता है और मैं अन्तकका भी अन्तक हू २३ और यह बडी शिकार विष्णुकी पूजाके अर्थ है और यह मेरीसेना है और कुत्तोंका गण भी मेराही है २४ व मैं कैलास पर्व्वतसे आयाहू और पाप करनेवाला और पिशाचके वेष करके युक्त २५ मैं निरन्तर विष्णुको दूषितकरताहुआ दोनों कानों में घण्टाओंको बाधके कि मेरे कानों में विष्णुका नाम प्रवेश नहींकरे ऐसे चिन्तवन करके २६ पीछे कैलास पर्व्वतमे जाके महादेवजीकी आराधनाकर निरंतर महादेवजीकी स्तुति करताभया २७ तब प्रसन्नहुये महादेव मेरेसे कहनेलगे कि वरमाग तब मैंने महादेवके समीपमें मुक्तिकी प्रार्थना करी २८ तब मुक्तिकी प्रार्थना करनेवाले मुझसे महादेव कहनेलगे कि सबोंको मुक्तिका देनेवाला विष्णुहै इस में संशय नहीं २९ तिस कारण से बदरिकाश्रम में जाके विष्णु भगवान्की आराधना करनेसे तू मुक्तिको प्राप्तहोगा ३० ऐसे महादेवजीके कहनेसे

तिसी विष्णुको परगमानके गरुडध्वजरूप गोविन्दको जानता भया ३१ तिसमे मुक्तिकी प्रार्थना करनेवाला मैं इस देशमें प्राप्तहुआ हूं अन्यभी मेरा कार्य्य सुन जो तेरे को आश्चर्य है तो ३२ पश्चिम समुद्रके तटपै यदुवृष्णियों से आकीर्ण व समुद्रके तरङ्गोंसे आकुल ३३ ऐसी द्वारावतीपुरी है तिस पुरी में हरि भगवन् व सते हैं तिसको देखनेके अर्थ ३४ इन अनुचरोंके सङ्ग हम निकसके प्राप्त हुये है सो सर्वोका ईश्वररूप विष्णु हमको अब देखना योग्यहै ३५ व लोकोंका उत्प त्तिस्थान और संसार की रक्षा करनेवाला और कर्ता और हर्ता और जगत्का पति और आदिकाभी आदि और सर्वो का उत्पत्ति स्थान और कारण ३६ व सर्वोका करनेवाला और सर्वो के पापोंको हरनेवाला और पुरातन और प्रभुओं काभी प्रभु और सत्य आत्मावाला और वरका देनेवाला और आदिदेव ऐसे विष्णुको देखनेके अर्थ अब हम सब यत्न कररहे है ३७ व जिसके प्रसादसे प्राणी गंधर्व महासर्प इन्होंका समूहरूप जगत् ऐसा होताभया और देव और जगत् के योनि और अजन्मा और दुष्टजनोंको पीडादेनेवाले ऐसे विष्णुको देखनेके अर्थ अब हम यत्न कररहे हैं ३८ व जिसके उदरसे यह विश्व उपजताभया और प्रलयमें जिसके शरीरमें यह जगत् लयहोगा और जिसके साक्षात् वशवर्ती स सारहै ऐसे पुरुषोत्तमरूप विष्णुको देखेंगे ३९ व सब संसारका रचनेवाला पाल- नेवाला देवहर्ता भुवनका ईश्वर हरि पुरातन आद्य में होनेवाला ४० व अवि- नाशी ऐसे विष्णुको हम देखेंगे और ब्रह्मा आदिको करनेवाला और भुवनका गोप्ता और पातालकाकर्ता व जिसकी कृपामे शुद्धबुद्धिकी प्राप्ति होती है ऐसा हरि एक है ४१ व इस सम्पूर्ण जगत्को निगलके साक्षात् बालककी तरह होके वडके पत्रमें स्थितहो पैरोंको फेंकताहै और हाथों को कँपाताहै ४२ और जिस की नाभिसे सोनाके समान कांतिवाला और पत्तोंसे सहित कमल प्रकटहुआ तिसमें जगत् की सृष्टि के अर्थ ब्रह्माजी जन्मे है ४३ और जो अपनी डाढ़ के अग्रभाग पै पृथ्वीको स्थापितकर महामेघकी तरह शब्द करताहुआ ऐसा वराह जी पृथ्वी को धारण करताभया ४४ और वही वराह हरि पुराण पुरुषोत्तम प्रभु समस्तका कर्ता सबका साक्षी यज्ञात्मक यज्ञपति जगत्पति ऐसा जो है तिसको देखने को हम उद्यत हुये हैं ४५ और कितनेक इस देवको बहुत रूपों करके व- र्णन करते है और कितनेक एकरूप करके वर्णन करते है और वेदान्तकरके स-

स्थापित सत्त्व संयुक्त ऐसे तिस ईश्वर के देखने को हम उद्यत होते हैं ४६ और श्रुति स्मृति न्याय इन्हों से निविष्ट चित्तवाले बहुतसे बहुतप्रकारसे कहते हैं और अजन्माहै और साक्षात् आत्माहै ऐसे ईश्वरके भी देखनेको हम सब उद्यतहुये हैं ४७ और जो आद्यहै वरका देनेवालाहै और श्रेष्ठ प्रकाशवालाहै और एकांत तत्त्ववाला है और सब प्राणियों में स्थित है और देवहै और दुष्टोंका पीडा देनेवालाहै ऐसे ईश्वरको हम देखने को यत्न करते हैं ४८ और आदि कालमें जिस जगत्पति में यह विश्व स्थितहै तिसको भी देखनेको हम सावधान हैं और अब हम क्या कहेंगे ४९ हे मनुष्य हम अन्यजगह गमनकरते हैं और तू अन्यजगह गमनकर और जो तेरे रुचे हैं तो अभी मनोवाञ्छित देश को चलाजा ५० ऐसे कहके विकृत मुखवाला और घोररूप ऐसा पिशाच ५१ इस देश में बहुत सा रुधिरका पानकर और यथायोग्य मासके समूहका भक्षणकर ५२ और कुल्लेकर और समीपमें सब प्रकारके साधन और महाघोर रूप अत्रपाश को स्थापनकर ५३ पीछे कुशके आसन को बिछा पानी से आप पवित्रहो और सब कुत्तों के गणों को त्याग सुंदर ५४ आसनपै स्थितहो समाधि के अर्थ यत्न करनेलगा पीछे एकचित्त होके ५५ और विष्णुको नमस्कार कर घोररूप पिशाच इस मंत्र का पाठ करनेलगा भगवान् को नमस्कारहै और वसुदेवके पुत्र ५६ और चक्र गदा को धारण करनेवाले को नमस्कार है और नारायण के अर्थ नमस्कार है विष्णु और प्रभविष्णु इन नामोंवाले को नमस्कार है ५७ और हे केशव तेरे कीर्त्तन से मेरी आत्माकी शुद्धिहो और यह घोररूप जन्म मेरे मतहो ५८ और हे गोपते तेरे स्मरण से मैं देवदूत होजाऊं और तेरे चक्रके प्रहारसे मेरा शरीर नष्ट होजावै ५९ और मेरेको फिर यह संसार नहीं मिले यह मेरी प्रार्थनाहै और अर्थियोंका कल्पवृक्ष तूही है और सब कालमें वरोंका दाता तूही है ६० और हे देव जहां जहां मेरा जन्महोवे तहां तहां मेरे हृदयमें तू स्थितरहै यह दूसरी मेरी प्रार्थनाहै ६१ व तेरे अर्थ वारम्वार नमस्कारहै और विषयोंमें रहित मेरी प्रार्थनाहो सो तेरे अर्थ नमस्कार है ६२ और जब मेरी मृत्युहोजावे तब भी स्मृति वनीरहै और दिन रात्रि में और क्षण क्षण में मेराचित्त तुम्हारे विषे स्थितरहै ६३ हे देव ऐसे मेरेको प्रेरितकर और नृशंस रूप यह पिशाच है इसपै दयाकरनी उचित है ६४ ऐसा तेराचित्त मतहो और पराई पीडाके अर्थ मन मतहो हे भगवन्

हे प्रभो नमस्कारहै ६५ व सब इन्द्रिया इन्द्रिय के अर्थों को मतमजो यह तुम्हारे प्रसादसे अब और अन्तकाल में होजाओ ६६ व पृथ्वी मेरी नासिका की रक्षा करो और जल मेरी जिह्वा की रक्षाकरो और सूर्य्य मेरे नेत्रों की रक्षाकरो और वायु मेरे स्पर्श की रक्षाकरो ६७ व आकाश मेरे कानों की रक्षाकरो और मन मेरे प्राणों की रक्षाकरो ऐसे जल पृथ्वी ६८ सूर्य्य वायु आकाश दुःखों से मेरी रक्षाकरो ६९ और मेरामन विषयों में नहीं लगे ऐसी मेरी रक्षाकरो और मनके विपर्य्यय होने से पुरुषों का नाश होताहै ७० और यही मन मनुष्य को पापों में और परपीडा में युक्त करता है इसवास्ते हे देव वारम्वार मेरे मन की रक्षाकरो ७१ व मेरे मनमें कालिस मत रहो और मेरा मन निर्म्मल होजावो और जिसका चित्त कालिस से सयुक्त होता है वह नरक में वसता है ७२ और वाह्यइन्द्रिया भी मेरी सब निर्म्मल होजावो और जिसका मन कालिससे सयुक्तहोता है तहा ये इन्द्रिया कुछ कार्य्य नहीं करसक्तीं ७३ और जो वाहर से स्नानकर सक्ताहै और भीतर मन में कालिसराखे ७४ उसका स्नान वृथा है इसवास्ते सब यत्न करके हे जनार्द्दन मेरे चित्तकी तू रक्षाकर ७५ व यह इन्द्रियोंका समूह बलवान्हे इसके विषयोंकोभी निवारणकर और हे जगन्नाथ परवाद से वाणी की रक्षाकर ७६ व हे जनार्द्दन पराये द्रव्यसे और पराई स्त्रीमे मेरी रक्षाकर और हे केशव तेरे प्रसाद से ७७ सब जगह दया और विषे अचलरूप भक्तिरहै और बहुत कहनेसे क्याहै हे भगवन् तू मेरे एक वचनको सुन ७८ सुख दुःख प्रीति भोजन गमन जागना और सोना इन सब समयों में मेरा मन तेरे में लगारहै ७९ व हे जनार्द्दन तेरे अर्थ नमस्कारहै ऐसे कहनेवाला ८० वह पिशाच भगवत् का भक्तहोके समाधिको प्राप्तभया अर्थात् आर्तोंकी फासीकरके अपने शरीरको वाध ८१ निश्चलरूप मनकरके सुखपूर्वक बैठाहुआ हरि जगद्योनि विष्णु पीताम्बर शिव ८२ मुकुद आदिपुरुष एकाकार अनामय नित्यशुद्ध ज्ञानगम्य सब प्राणियों का कारण ८३ ऐसे श्रीकृष्ण का ध्यान करताहुआ और ॐकाररूप सनातन वेदको पढताहुआ ८४ व नासिकाके अग्रभागको देखताहुआ निरन्तर एकाग्रचित्तको विष्णुमें समर्पित करके ८५ व विकल्पसे रहित चित्तको हृदयके मध्यमें प्राप्तकर ८६ पीछे कमलरूप हृदयमें विष्णुको स्थापनकर व तीन प्रकारसे सनातन विष्णुको जपताहुआ पिशाच सुखपूर्वक योगी होके स्थितहुआ ८७॥

इति श्रीहरिवंशोवर्णनभविष्यपर्वंभाषायांकैलासयात्रायांघण्टाकर्णमोक्षकथनमष्टविंशोऽध्यायः

दोसौबहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे अपने आत्माको चिन्तवन करनेवाला शुद्ध व शुद्धिसे समन्वित १ व आत्मा में स्थित और अकेले ॐकारको पढने वाला व अपने आत्मासे प्रार्थना करनेवाला २ ऐसे पिशाच को विष्णु भगवान् देखते भये पीछे पुण्यको सञ्चय करनेवाला व पुण्य कर्मका कारण ३ व कुवेरके उपदेश करके पृथ्वी में वासुदेव कृष्ण माधव ४ जनार्द्दन हरि विष्णु भूतभावन भावन नरकारि जगन्नाथ नारायण परायण ५ इननामों करके दिन रात और सोताहुआ जागताहुआ व स्थितहुआ व भोजन करताहुआ व गमन करता हुआ व कहताहुआ ६ मेरेको जपताहै और मासकी बोटी को खाताहुआ और लोहूको पीवताहुआ व वहुतसे मृगोंको मारताहुआ ७ व मारनेमें भोजन करनेमें जागतेमें व सोतेमें सव कार्य्यों में मैं करताहूं ऐसे मानताहू ८ सो इस घोर कर्मका पाप यही है व ऐसे निश्चय करनेसे जगन्नाथ अर्थात् श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके ९ अपने स्वरूप को दिखाते भये अर्थात् जव पिशाचका अन्त करण शुद्ध होगया १० तव वह घोररूप पिशाच अपनेही आत्मा में पीलेवस्त्रों को धारण करनेवाला व कमल के समान नेत्रोंवाला व श्याम रङ्गवाला ११ व शङ्ख चक्र गदा माला मुकुट कौस्तुभमणि इन्हों को धारण करनेवाले व श्रीवत्स चिह्न से आच्छादित छातीवाले १२ व नीलेमेघके समान कान्तिवाला और प्रकाशित व गरुड़पै स्थित और चारभुजाओं वाला और सुन्दरवाणी वाला व निश्चल १३ व सर्वगत व कल्याणरूप व नहीं है आदि व अन्त जिसका व नित्य और मायावाला व मायासे रहित व सत्यरूप व सव कालमें शुद्ध व बुद्धिमें प्राप्तहोनेके योग्य व सव कालमें मलसेरहित १४ ऐसे श्रीकृष्णको अनेक प्रकारसे मन में देखताभया पीछे आखोंको मीचके कृतार्थहुआहू ऐसा मानताभया १५ और कहने लगा कि अव साक्षात् विष्णु मैंने देखा व विष्णु मेरे अर्थ प्रसन्न है इस वास्ते मेरेको विष्णुके दर्शनहुये १६ व मेरे जन्मका कृत्यसिद्धिहुआ व इसके उपरात मेरेको कोई भी कृत्यनहीं है व मेरे हृदय की ग्रन्थी छूटगई है व वशमें मेरी इन्द्रियहोगई है १७ व विशेष करके मैंने मनभी जानलियाहै व मेरेमे इच्छा दूरहोगई है व मैं प्रसन्नहोगयाहूं व इनपिशाचोंसेभी मैं अलग होगयाहूं व जो मै

छोटा भ्राताहै वहभी मेरीतरह विष्णु भगवान्‌का भक्तहै १८ और समयपाके नि-र्मुक्तहुआ विष्णुके समीपमें माप्तहोगा ऐसे चिंतवनकरके आत्रपाशको भेदनकर १९ क्रमसे अपने प्राणों को उतार और सब दिशाओं को देख और शरीर का समरूपकर सुखसे सयुक्तहुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांघंटाकर्णस्य विष्णुसाक्षात्कारोद्विसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्याय २७२ ॥

दोसौतिहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि जैसे वह पिशाच समाधि में श्रीकृष्णको देखता भया तैसेही पृथ्वी में भी स्थितहुआ श्रीकृष्ण देखा १ तब यहविष्णुहै यह विष्णु है ऐसे वह पिशाच कहनेलगा २ व नाचता व हँसताहुआ फिर बोला ३ कि चक्र शर शार्ङ्गधनुष गदा रथी तूण इन्होंको हाथमें धारण करनेवाला और ह-जार शिरोंवाला और सब देवताओं का स्वामी और जगत् का निवास ऐसा विष्णु भगवान् यहहै ४ व सबोंको जीतनेवाला और जगत्‌का स्वामी और पु-रातन व पुरुषों में उत्तम व विश्वका ईश व विश्वका कर्ता ऐसा सनातन विष्णु यहहै ५ व इस विष्णुके दोनों स्तनों के बीचमें कौस्तुभमणि विराजमानहै जिस करके चन्द्रमाकीतरह रात्रि प्रकाशित होरहीहै ६ और जो जलके समूहसे पृथ्वी को अपनी डाढ़पैधर बाहर काढ़ताभया और साक्षात् वराहकेरूपको धारणकरने वाला ऐसा विष्णु यहहै ७ और उग्र पौरुषवाले बलि दैत्यको नाथके इन्द्रकेअर्थ राज्य देताभया तब पुरातन मुनियों ने स्तुति किया ऐसा विष्णु यहहै ८ और डाढ़ोंकरके कराल और बडेरूपको धारण करनेवाला होके युद्धमें दैत्योंको मार शोक से रहित इस लोक को करताभया ऐसा विष्णु यहहै ९ व आदि में एक भुजाकरके मदराचल पर्वत को धारणकर और समुद्र में सब दैत्योंको जीत इन्द्र के अर्थ अमृत देताभया ऐसा विष्णु यह स्थितहै १० व मधुकैटभ दैत्योंको मार के समुद्र में शेष नागरूप शय्यापै शयन करनेवाला ११ व आद्य व जगत् का पति व सबका धाता और अजन्मा और अन्योंको जनानेवाला और सूक्ष्म से सूक्ष्म और मोटा से मोटा ऐसा विष्णु यहहै १२ व संहार कालमें यह जगत् जिस में स्थित होताहै और आदि में जिससे उत्पन्न होताहै ऐसा विष्णु यह है १३ व

जिसकी इच्छाकरके यह जगत् प्रवृत्त और निवृत्त होजाताहै व पुरुषोत्तम और शिव और यादवेश्वर ऐसा विष्णु यह मेरे समीप में स्थितहै १४ और जो भृगु वंशमें परशुराम नामसे उत्पन्नहो और महादेवका शिष्यहोके युद्धमें फरसाकरके महाबलवाला १५ और कृतवीर्यका पुत्र और घोडे हाथी रथ इन्हों में बैठनेवाला ऐसे सहस्रबाहुको मारतेभये १६ पीछे इक्कीसवार क्षत्रियों से रहित इसलोक को करतेभये पीछे कुरुक्षेत्र में प्राप्तहो पितृक्रिया करतेभये ऐसे विष्णु यही हैं १७ व रघुवंशमें उत्पन्न होनेवाले और सीता व शोभासे संयुक्त व अनुचररूप लक्ष्मण भ्राता से संयुक्त और विद्वान् १८। १९ व रामचंद्र समुद्रमें सेतुको बनाय और पैने बाणों से रावण को मार और विभीषण के अर्थ राज्यदे पीछे दश अश्वमेध यज्ञ करतेभये २० ऐसे विष्णु भी यही हैं और वसुदेवके कुलमें जन्मनेवाले और वासुदेव नामसे विख्यात और बलदेवजी के संग गोकुल में क्रीडा करनेवाले २१ व सौधेशयन करतेहुये और बालक के रूपको धारण करनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण पूतनाकेदियेहुये स्तनको पीने से पूतनाकोमारके पीछे सुखपूर्वक बसतेभये २२ व दूधके पीने से और नौनी घृत के खाने से क्रोध को प्राप्तहुई माताने रस्सी से दृढ़ बांधदिये २३ तब दृढरूप रस्सी से बँधेहुये यमलार्जुन वृक्षों को गेरते भये और गोकुलमें बसके गोपियों के संग सुख और स्तनको आच्छादितकर क्रीड़ा करते भये २४ और गोपों के बालकों के संग यमुनामें कालियसर्प के फणों पै क्रीडाकर और वीर्य के अतिशयको देखने के अर्थ कालियसर्प को नाथतेभये २५ व ताल वनमें उग्ररूप धेनुक दानव को तिसी वनके फलोंकरकेमार गोपों को आश्चर्य दिखातेभये २६ व मेघके समागम में इन्द्रके बलको निडवन करते हुये और गोप गोपी गोकुल इन्होंको आनन्दित करते हुये २७ उग्ररूप गोवर्द्धन पर्वतको धारण करतेभये और मायाकरके मनुष्य देहको धारणकरनेवाले और गोपियोंके अधरामृतको पीनेवाले और गोपियोंके स्तनोंके मध्यमें इच्छा पूर्वक क्रीडाकरनेवाले २८ व गोपियोंके संग रात्रि में एकान्त स्थान में शयन करनेवाले २९ व अक्रूरके संग बुलायेहुये रथमें चलनेके समय अक्रूरने यमुनाके जलमें जो ईश्वर देखे वहीरूपभी देखे ३० व मथुरापुरीमें चलतेहुये मार्ग में अपने बलसे उग्ररूप रजक अर्थात् धोबीको मारके मनोवांछित वस्त्रोंको ग्रहणकर बलदेवजीके संग मथुरापुरी में विचरते भये ३१ व माला कारो बहुतसी

मालाओंको ग्रहणकर तिसके अर्थ वरदान देतेभये व कुब्जासे सुन्दर अनुले-
पनको ग्रहणकर तिसको सुन्दर रूपवाली बनातेभये ३२ पीछे रङ्गसमाजमें जाके
धनुषको ग्रहणकर मध्यसे तोड़सिंहके शब्दके समान शब्द करतेभये जैसे क-
ल्पके अन्तमें बद्दल ३३ पीछे उदग्र रूपवाले कुवलयापीड़ हाथीको मार तिसके
दाँतोंको ग्रहणकर रंगसमाज में नाचतेभये और कंसको अतिभय देतेभये ३४
पीछे कंसके देखतेहुये महामल्ल चाणूरको मारके यादवों के अर्थ प्रीति देतेभये
३५ पीछे शत्रुके पक्षको मारनेवाला और पिताका वैरी और ऐसे कंसको मार
के उग्रसेनराजाको राज्यपै स्थितकर सांदीपिनि नाम गुरूके समीप प्राप्तभये ३६
तहां सम्पूर्ण विद्याको प्राप्तहो और दक्षिणामें गुरूको पुत्रका दानदे बलदेवजी
के संग श्रीकृष्ण मथुरामें प्राप्तभये ३७ व नरकासुर दैत्य को मारके और दैत्यों
को पीड़ादेके ब्राह्मणमुनियोंके समूह देवता इन्होंकी रक्षाकरतेभये ३८ ऐसे वि-
ष्णु भगवान् अब मैंने देखे हैं सो मैं कृतकृत्यहुआ और मोक्ष को प्राप्तहूगा ३९
क्योंकि जिसने साक्षात् विष्णु देखलिया तिसके हाथमें मुक्ति स्थित है सो यह
विष्णु मेरे सम्मुख स्थितहै ४० व मैंने पूर्वजन्ममें बहुत धर्म्मका संचितकिया जिस
करके यह विष्णु भगवान्को मैं देखताहू ४१ व सब कालमें मैं पुण्यवाला और
संसारके बंधनोंसेरहित ऐसा मैंहू और क्या वस्तु मैं इसकेअर्थ देऊं और क्या मैं
अब कहूं ४२ व हे विष्णो मैं अब क्या करूंगा जो अब वाञ्छितहो सो कहो ४३
वैशम्पायन कहते हैं ऐसे ऊंचे स्वरसे कहके वह पिशाच फिर हँसता भया और
नाचताभया ४४ व हे हरे हे केशव हे कृष्ण हे यादवेश्वर तेरे अर्थ नमस्कार
है ऐसे कहताहुआ श्रीकृष्णके सम्मुख नानाप्रकारसे नाचनेलगा ॥ ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वणिभाषायांकैलासयात्रायांपिशाचकृतविष्णुस्तवेत्रिसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७३ ॥

दोसौचौहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे ऐसे वह पिशाच वारम्वार हँसके पीछे मरेहुये १ ब्रा-
ह्मणके शरीरके दो भागकर पीछे पानीसे शुद्धकर सुन्दर पात्रमें धर २ श्रीकृष्ण
को नमस्कारकर अंजलीबांध नम्रहोके कहनेलगा ३ हे जगन्नाथ हे प्रभो तुम्हारे
योग्य यह भक्ष्य पदार्थ है इसको ग्रहणकीजिये और हे हरे तुम्हारे सखाओं को

यह पदार्थ सबप्रकार से ग्रहणकरना चाहिये ४ व हे विष्णो हम भक्तिसे नम्रहैं इसमें विचार नहीं करना चाहिये जो भक्तिनम्र पुरुष देवै वह स्वामी को ग्रहण करना उचित है ५ व नवीन अच्छीतरह संस्कारित किया और ब्राह्मणका शरीररूप मुरदा ऐसा भक्ष्य हमारे शास्त्रमें उत्तम कहाहै ६ इसवास्ते हे भगवन् जो दोष नहींहो तो आपग्रहण कीजिये ऐसे वारम्वार विकृत कहके और हँसके ७ नहीं स्पर्श करनेके योग्य ऐसे उसमुरदेके टुकडेको श्रीकृष्णके अर्थ देनेकी इच्छा करनेलगा तब तिस पिशाच के अर्थ प्रसन्नहुये श्रीकृष्ण तिस को मनसे पूजतेभये ८ व कहनेलगे कि आश्चर्य है इसका स्नेह मेरे विषे सब जगहहै ऐसे मनसे चिन्तवन करके श्रीकृष्ण कहनेलगे ९ हे पिशाच मैं इस करके पूर्णहुआ और मेरे सरीखे मनुष्योंने ब्राह्मणरूप मुरदाका स्पर्श करना उचित नहीं है १० क्योंकि धर्मकी आकांक्षावाले सब मनुष्योंके सब कालमें ब्राह्मण पूजने योग्यहैं और घोर कर्मवाले पिशाच ब्राह्मणके मारनेमें यत्न करताहै ११ व सब काल में भी ब्राह्मण मारनेके योग्य नहीं है क्योंकि ब्राह्मणको मारनेसे निश्चय नरकहोताहै इसवास्ते हमको यह मुरदा स्पर्श करना योग्य नहीं है इसमें संशय नहीं करना १२ परन्तु तेरा कल्याणहो मैं तेरी प्रीतिसे प्रसन्नहुआ और जिस भक्तिसे तेरामन निर्मलहुआ और जिसका मन शुद्धिको प्राप्तहो तिसपै मैं प्रसन्न होजाताहूं १३ व इसकीर्त्तन से निरन्तर तेरा अन्तःकरण शुद्ध प्रतीत होताहै सो मैं तेरे पै अति प्रसन्नहूं ऐसे कहके १४ श्रीकृष्ण उस पिशाचके सब अङ्गोंको चारों ओरसे कोमल हाथसे स्पर्श करतेभये और पापोंसे उस पिशाच को छुटाते भये १५ तब कामदेवके समानरूप और कांतिवाला और लंबेकेशों वाला और लंबीबाहुओं वाला और सुन्दर नेत्रोंवाला १६ व समान अँगुलियों वाला और समान नखोंवाला और समान मुखवाला और सम्यक् प्रकारसे ऊंची नासिकावाला और कमलके समान नेत्रोंवाला और कमलके वर्णके समान कांतिवाला और कमलके शब्दकी तरह भूषित १७ व केयूर बाजूबन्ध इन्होंको धारण करनेवाला और रेशमी कपडों को पहने हुये और ज्ञानमाना और सत्त्वगुणों से संपन्न और साक्षात् इन्द्रकी तरह मानो दूसरा इन्द्र १८ व गन्धर्वके समानगानेवाला और सिद्धके समान सिद्ध ऐसा वह पिशाच होताभया १९ अर्थात् श्रीकृष्णके हाथके छुवनेसे जैसारूप उस पिशाचको मिला तैसे रूपको उपमाप द-

रनेवाले मुनिजनभी प्राप्त नहीं होसके २० व ऐसा कौनजन है कि श्रीकृष्ण के आश्रितहोके दुःखितरहे २१ व हे राजन् विष्णुको नित्यप्रति ध्यान करनेसे पढ़नेसे जपकरनेसे ऐसी कौन वस्तु है जिसकी प्राप्ति नहीं होसकती है पीछे कामदेवके समानरूप को धारण करनेवाले उस पिशाच से श्रीकृष्ण कहनेलगे २२ कि जबतक इन्द्र स्वर्ग में बसेगा तबतक तूभी स्वर्ग में बसेगा २३ व जब इन्द्र नष्ट होजावेगा तब तू मेरे समीपमें प्राप्तहोवेगा और तेरा भ्राताभी तेरेसंग स्वर्ग में बसेगा २४ व तेरा कल्याणहो जो तेरे मनमेंहो सो तू वरमाग और मैं सब जगह सब वरोंको दूंगा इसमें संशय नहीं तब घण्टाकर्ण कहनेलगा कि हे देव जो निरन्तर इस मेरे तुम्हारे संगमका स्मरणकरे उस मनुष्यकी तेरे विषे अचल भक्तिहो २५ व तिसके मनकी शुद्धिरहे और तिसके मनमें क्लेशमतरहे यह वर मैंने माँगा २६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि ऐसेही होगा और तू स्वर्ग में गमन कर और तू इन्द्रका अतिथि होजा अर्थात् तेरे को देखके इन्द्र खुशीरहेगा २७ ऐसे कहके श्रीकृष्ण पीछे जो पिशाचने मुरदारूप ब्राह्मणका शरीर जो पहले भेंटमें दियाथा तिस ब्राह्मणको जिवाके और तिस ब्राह्मणसे स्तुतिकिये श्रीकृष्ण तिसी ब्राह्मणको पूजके २८ उस देशसे उठ जहा अग्निहोत्र करनेवाले सिद्ध और मुनि बसेथे तहा प्राप्तभये २९ पीछे वह घण्टाकर्ण भी श्रीकृष्णकी आज्ञासे स्वर्ग में प्राप्तगया इसवास्ते हे राजन् जो तू मनकी शुद्धिकी इच्छाकरे है तो सब कालमें इस आख्यानका पाठकर ३० इसके पाठ करनेसे निश्चय मन शुद्ध होजाता है ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकैलासयात्रायांघण्टाकर्णमोक्षेचतुःसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७४ ॥

दोसौपचहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे श्रीकृष्णजी पिशाचके संग जो वृत्तान्त बीता वह सब मुनियों के अर्थ कहतेभये १ तब सब मुनि सुनके अति आश्चर्य मानतेभये और आश्चर्य है कि तेरे दर्शनसे उस पिशाचका जन्म सफलहुआ २ पीछे सब मुनिजनों से अर्चित किये श्रीकृष्णजी सूर्य के उदय होने के समयमें ३ गरुड़पै चढ़ कैलासपर्वतको गमन करतेभये और मुनिजनों से कहनेलगे कि तुम्होंने

भी तहां गमन करना योग्यहै ४ जहा तप करनेवाले विश्वके ईश्वर सिद्ध बसते हैं और जहा साक्षात् कुबेर महादेवजीकी उपासना कररहाहै ५ और जहा मानसरोवरनाम हंसों का स्थान है और जहा भृगीऋषि शिवकी उपसना करके ६ वाणों के स्वामी भानको प्राप्तहोके महादेव जी के समीप में विचरताहै और जहा सिंह वराह हाथी गैंडा मृग ७ ये आपसमें मित्रभावसे क्रीडाकरते हैं और जहां समुद्रमें जानेवाली गंगासे आदिलेके नदियां उत्पन्न हुई हैं ८ और जहां महादेवजी ब्रह्माके शिरको काटतेभये हैं और जहा उत्पन्नहुये बडे बडे वेत्र प्राणियों की दृढताको प्राप्त होते हैं ६ और जहा पार्वती के सग नील लोहित रूपवाले महादेव जी वसते हैं और जहा ऋषियों से प्रार्थित किया हिमाचल महादेव के अर्थ अपनी पुत्री को देताभया १० और जहा बहुत दिनोंतक कमलों करके महादेवजीकी उपासनाकर विष्णु भगवान् चक्रको प्राप्त होतेभये ११ और जिसकी गुफाओं में सिद्ध किन्नर १२ अपनी २ स्त्रियों के सग क्रीडा करते हैं और आनन्दित होते हैं और उत्तम मधुकापान करते हैं और जिसको रावण सब भुजाओं से उठा नहीं सका १३ ऐसे कैलास पर्व्वत में मानसरोवर के उत्तरतीर पै श्रीकृष्ण भगवान् जाके १४ पीछे केशोंको वढानेवाले और चीररूप कपडोंको धारण करनेवाले और तपके अर्थ चित्तको धारण करनेवाले १५ व मनुष्य के देहको धारण करनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण गरुड़ से उतरके बारहवर्षतक तप करने के १६ अर्थ मन को धारण करनेवाले शुद्धभूमि में स्थितहुये और फाल्गुन के महीने में श्रीकृष्ण ने तपका आरम्भ किया १७ व शाकोंका भोजन करनेवाले और मत्रों को जपनेवाले और वेदों के अध्ययन में तत्पर ऐसे विष्णु किसीको उपदेशकर तप करनेलगे १८ तब महादेव के चिंतवन करने से तिस पर्व्वत में कोई भी विघ्न नहीं हुआ १६ व कश्यपकासुत गरुड़ तप करतेहुये श्रीकृष्ण के समीप में होम करने के अर्थ इन्धनों को इकट्ठे करताभया २० व सुदर्शनचक्र श्रीकृष्णके समीपमें पुष्पोंको इकट्ठे करनेलगा और सब दिशाओं में पाञ्चजन्य शंख रक्षा करताभया २१ और यवक्रके नन्दकनाम खड्ग बहुतसी कुशाओं को श्रीकृष्णके समीप ल्याके गेरताभया और कौमोदकी गदा श्रीकृष्णकी परिचर्या अर्थात् टहल करतीभई २२ व दैत्यों को भयदेनेवाला शार्ङ्गधनुष श्रीकृष्ण के सम्मुख मृत्यके समान स्थित रहा २३ पीछे अनेक प्रकारके काष्ठों से और घृत

आदि से हवनकर और अग्निकी पूजा करताभया २४ व एक महीना में एक दिन पीछे छःमहीनों में एकदिन २५ पीछे एकवर्ष में एकदिन ऐसे इसप्रकारसे भोजन करनेवाले २६ श्रीकृष्ण एकमहीना घाट बारहवर्षतक अग्निमें हवनकरते हुये २७ व मन्त्रका पाठ करतेहुये और महादेवजी का ध्यान करतेहुये और आरण्यक विधिको पढतेहुये २८ और ॐकार का विचार करतेहुये और ध्यान में तत्पर ऐसे श्रीकृष्ण स्थितरहे २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकैलासयात्रायांपञ्चसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥

दोसौछिहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि तब साक्षात् इन्द्र ऐरावतहाथी पै चढके तपकरने वाले विष्णुके देखनेको प्राप्तहुआ १ पीछे भैंसापै चढ़के धर्मराज अपने दूतोंकर के सहित कैलास पर्वतमें प्राप्तभये २ पीछे श्वेतछत्रको लगानेवाला और श्वेत बीजनासे वीजित ऐसा वरुण ३ लोकके वासियों के संग श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ कैलासपर्वत में प्राप्तहुआ ४ व हे राजन् अन्य भी देवता व सब आदित्य सब वसु और सब रुद्र ५ सिद्ध मुनि सब नृत्य गीतमें विशारद रूप अप्सरा ६ येभी सब श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ कैलासपर्वत में प्राप्तभये ७ पीछे पर्वत ऋषि नारदऋषि और विस्मयकरके स्थित और चलायमानहैं नेत्र जिन्हों के ऐसेऋषि व देवगण ८ येभी सब श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ कैलासपर्वत में प्राप्तहुये और सब कहनेलगे कि ऐसा आश्चर्यहै कि हुआ न होगा तिसको देखो ९ कि योगीजनोंको ध्यान करनेके योग्य व सबका बड़ा ऐसा श्रीकृष्ण आप तपकरता है १० ऐसा समय कबहोगा ऐसे सबगण मानतेभये ११ पीछे जब बारहवर्ष तप करते पूर्णहोगये तब सब जगत्का ईश्वररूप महादेव पार्वती और भूतसंग के संग कृष्णको देखने के अर्थ गमन करतेभये १२ कुबेर गुह्यक इन्होंके संग और जटाको धारण करनेवाला और पिशाचों करके परिवृत शर और खड्गको धारण करनेवाला और चन्द्रमाको मस्तकमें धारण करनेवाला १३ व एक हाथमें दाभके समूहको धारण करनेवाला व दूसरे हाथमें दीपिकाको धारणकरनेवाला और तीसरेहाथमें बड़ी डिंडिमाको धारण करनेवाला और चौथे हाथमें त्रिशूल को धारण करनेवाला १५ और रुद्राक्षोंकी मालाओं को धारण करनेवाला और

पीलीजटाओंको धारण करनेवाला और पार्वती से संयुक्त और सफेद रङ्गके बैल से संयुक्त १५ व पार्वतीजी के दोनों स्तनों के बीचमें मिलापकरके पीछे अधरामृतको पीडन करनेवाला और गंगाजल से क्षालित शिरवाला और पार्वतीजी की ओर बारम्बार देखनेवाला १६ व भस्म आदिसे मुखमें लेपकरनेवाला और महासर्पोंको जटाओं में धारण करनेवाला और शिरकी खोपरियोंकरके शोभित १७ व जिसको सांख्यवादी अन्य महापुरुष पुरातन ऐसे कहते हैं और जिसके उत्तम चौबीस तत्त्वगुणहैं १८ व जिसको पुरातन पुरुष कणाद अज महेश्वर इन नामों से कहे हैं और दक्षके यज्ञका नाशकर देवता और दैत्यों को मारके जो सनातनहै १९ और भूतों के तत्त्वों को जाननेवाला भूतेश भूतभावन वामदेव विरूपाक्ष २० महादेव सहस्राक्ष कालमूर्ति चतुर्भुज रुद्र रोदन विश्वेश्वर शिव २१ अप्रमेय अनाधार नग्न नागोपवीत नागी अग्निवर्णा २२ शातशिव आदिसनातन इन नामोंवाला और हे जनार्दन जिसकी मूर्ति यह पृथ्वी आदि सब पदार्थ हैं २३ अर्थात् पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश सूर्य चन्द्रमा यजमान ऐसे आठ प्रकृतिवाला २४ व महायोगी गिरीश और नीललोहित आदिकर्त्ता महीभर्त्ता शूलपाणि उमापति २५ इन नामोंवाला ऐसा महादेव भूतगणों के सङ्ग विश्वके ईश्वररूप विष्णुके देखनेके अर्थ प्राप्त होनेलगा २६ ॥

इतिमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांषट्सप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७६॥

दोसौसतहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि तिस महादेवजी के अगाडी हजारभूतों के सङ्ग व घण्टाकर्ण विरूपाक्ष कुडधार कुमुदह १ दीर्घरोमा दीर्घभुज दीर्घबाहु निरंजन उरुवक्र शतमुख शतग्रीव शतोदर २ कुण्डोदर महाग्रीव स्थूलजिह्व द्विबाहुरु पार्श्ववक्र सिंहमुख उन्नतास महाहनु ३ त्रिबाहु पञ्चबाहु व्याघ्रवक्र शतानन इनआदि बहुतसे नामोंवाले और दीर्घ मुखोंवाले और दीर्घनेत्रोंवाले ४ और नृत्य करतेहुये और हँसतेहुये और आपस में स्फोटन करतेहुये और कितनेक घोररूप और कितनेक विकृत मुखोंवाले ५ और प्रेतोंको भक्षण करनेवाले और प्रेतों को वहनेवाले मांस और लोहूका भोजनकरनेवाले और बहुतसे मुर्दों को भक्षण करनेवाले ६ व घोररूप लोहूको पीनेवाले और बहुतसे मुर्दोंको खुद्दित

करनेवाले और कराल व निस्तृत व लम्बे व नाडी व नसोंसे व्याप्त ७ व नाना प्रकारकी आकृतिवाले व वीरव शूलके अग्रभागमें मनुष्योंको लटकानेवाले व शिरोंकी मालाको पहननेवाले व कितनेक आत्रपाशों को धारण करनेवाले ८ व डिंडिम और अट्टहासों से इस पृथ्वीको शब्दित करनेवाले और कपालोंको धारण करनेवाले व भयदेनेवाले और कितनेक जटाको धारण करनेवाले और कितनेक मूड मुडायेहुये ९ ऐसे बहुतप्रकारके पिशाच महादेवजी के अगाड़ी स्थित होरहे हैं व बहुत से मुनिजन परमेश्वर को ध्यावते हुये १० व वेद और वेद के अङ्गोंका पठन करनेवाले व कितनेक कुशाके चीरोंको धारण करनेवाले ११ और कितनेक कौपीनमात्र वस्त्रोंको धारण करनेवाले और कितनेक कषाय वस्त्रोंको धारण करनेवाले १२ व कितनेक भक्तिकरके माहेश्वर स्तोत्रों से महादेवजी की स्तुति करनेवाले ऐसे मुनिजनों के गण और महादेवजी के गण और सिद्ध और अपनी २ स्त्रियों के सङ्ग १३ गंधर्व और नृत्यकर्म में और गायन कर्म्म में चतुर कन्या और विद्याधर ये सब महादेवजीकी स्तुति करहे हैं १४ व गमन करते हुये महादेवजी के अगाड़ी अप्सराओं के गण नाचरहे हैं ऐसे पिशाच भूत किन्नर १५ मुनि अप्सरा इन्होंके सग जटाको धारण करनेवाले और ॐकारको जपनेवाले पार्वती और गंगाजीसहित १६ ऐसे महादेवजी जहां विष्णु तप कररहे थे और लोकपाल देखने के अर्थ १७ जो स्थितहुये हैं तहां महादेवजी श्रीकृष्णके देखनेके अर्थ प्राप्तहुये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांकैलाशयात्रायांमहादेवागमने सप्तसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७७ ॥

दोसौअठहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे इसप्रकार बहुतसे भूत पिशाच उरग इन्हों के संग हुये और बैलपे चढ़ेहुये महादेव आके १ उत्तम तपको तपते हुये और देवताओंके मालिक और पवित्रहव्य करके अग्निमें हवन करतेहुये २ व गरुडजीसे हवनके काष्ठको इकट्ठे करायेहुये और जटाधारण कियेहुये और पुराने वस्त्रको धारण कियेहुये और चक्रसे पुष्पों को इकट्ठा करतेहुये अपने तप में प्रभाको इकट्ठा करतेहुये ३ व अपनी गदा से सब आचार करतेहुये और इन्द्र आदिक

देवताओं के समूहसे और मुनिगणों से युक्त ४ व सब जीवोंको अचिंत्य और कल्क ध्यान करते हुये ऐसे विष्णु भगवान् को देखते भये ५ व पश्चात् प्रसन्न आत्मावाले और मस्तकमें तीसरे नेत्रवाले ऐसे वह शिवजी बैलके ऊपरसे उतरतेभये ६ व पश्चात् सब भूत पिशाच राक्षस गुह्यक ७ व ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मुनि ये सब जय शब्द करनेलगे कि हे देव हे जगन्नाथ हे जनार्दन जयहो ८ और हे विष्णो जयहो और हे इन्द्रियोंके ईश हे नारायण जयहो और हे रुद्र और हे पुण्यात्मन् हे हरेश्वर जयहो ९ व हे आदिदेव व हे शंकरको उत्पन्न करनेवाले हे कौस्तुभमणि को धारनेवाले हे भस्म विराजित १० व मोतियों से प्रकाशित अङ्गवाले और नागोंका आभूषण करनेवाले देव तुम्हारे अर्थ जयहै ११ ऐसे वे सब मुनि हरिभगवान् की स्तुति करनेलगे इन विशेषणों से यहां अभेद दिखायाहै ऐसे स्तुति करनेके पश्चात् वह विष्णु भगवान् १२ वृषकी ध्वजावाले विरूपाक्ष और शङ्कर और नीले और रक्तवर्णवाले ऐसे शिवजी को देखके प्रसन्न होके स्तुति करनेलगे १३ श्रीभगवान् कहते हैं हे शितिकण्ठ हे नीलग्रीव हे वेधस हे सोचिष हे उपवासिन् तेरे अर्थ नमस्कारहै १४ व हे मेढुष और हे गदिन् तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे विश्वतनु हे वृष हे वृषरूपी तेरे अर्थ नमस्कारहै १५ व हे अमूर्तदेव हे पिनाकिन् हे कुब्ज हे कृष्ण हे शिव हे शिवरूपिन् तेरे अर्थ नमस्कार है १६ व हे तुण्ड हे तुण्ण हे तुटितुट तेरे अर्थ नमस्कार है और शान्तरूपी शिव जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै और पर्वतमें शयन करनेवाले तेरे अर्थ नमस्कारहै १७ व हे हर हे हिम हे हरिहर हे घोर हे अघोर हे घोरघोर प्रिय तेरे अर्थ नमस्कार है १८ व घण्टा व अघण्टारूप और घटिपटरूप जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै और शान्तरूप सर्वरूप भूतोंका अधिपति ऐसा जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै १९ व विरूपवाला और पुररूपको नाश करनेवाला और आद्य, विज्ञ, शुचि, अष्टस्वरूपी ऐसा जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कार है २० व पिनाक धनुष को धारण करनेवाले और शूल खड्गको धारण करनेवाले और खट्वाके अग अर्थात् पाया आदिको हाथमें धारण करनेवाले और चर्मके वस्त्रों को धारण करनेवाले ऐसे जो तुमहो सो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है २१ व हे देवदेव आकाशमूर्ति हे हरिनेत्र हे हर तीक्ष्ण तेजको धारण करनेवाले तेरे अर्थ नमस्कारहै २२ व हे भक्तप्रिय भक्तोंको चाहनेवाले और भक्त और हे आकाशमनि देव हे नगनकी मूर्तिको धा

रण करनेवाले देव तेरे अर्थ नमस्कारहै २३ व हे चन्द्रदेव हे सूर्यदेव हे प्रधानदेव हे भूतपति तेरे अर्थ नमस्कार है और हे कराल हे मुण्डरूप हे विकृत और जटा को धारण करनेवाले हे अज हे भूतभावन तेरे अर्थ नमस्कारहै २४ व हे हरिकेश हे पिंगलरूप हे अभीशु अर्थात् अश्वादिकोंकी रश्मिको हाथमें धारण करनेवाले हर तेरे अर्थ नमस्कार है २५ व भयंकर रूपको धारण करनेवाले और घोर पुरुषोंको भयदेनेवाले और दक्ष प्रजापति की यज्ञके नाश करनेवाले और भगके नेत्रोंको हरनेवाले ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २६ व हे उमापति तेरे अर्थ नमस्कारहै और कैलासमें स्थान करनेवाले आदिदेव और भव भवरूपी ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कार है २७ व कपाल हाथ में रखनेवाले और त्र्यंबक त्र्यक्ष शिव ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २८ व वरदेनेवाले, वरेण्य, चन्द्रशेखर, इध्मरूप, हविरूप ध्रुव, कृश ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २९ और युक्तके अर्थ नमस्कारहै और नागफासी इन्द्रों का प्रिय, विरूप, सुरूप, मद्यपानप्रिय ऐसे तेरे अर्थ नमस्कार है ३० व श्मशानमें नित्य रति रखनेवाले और जय शब्दके प्रिय, खरप्रिय, वामनरूप खर, खररूपी ऐसे तेरे अर्थ नमस्कार है ३१ व भद्रप्रिय, भद्र, भद्ररूपको धारण करनेवाले ऐसे तेरे अर्थ नमस्कारहै और विरूप, स्वरूप, महाघोर ३२ व घण्ट और घटभूषी और घण्टाका आभूषण करनेवाले और तीव्ररूपी और तीव्रप्रिय ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ३३ व नग्न, नग्नरूप, नग्नरूपप्रिय, भूतवास ऐसे तेरे अर्थ नमस्कारहै और सबका वासारूप ३४ व सर्वात्मा और मुक्तिदायक ऐसे तेरे अर्थ नमस्कारहै और वामदेव, महादेव ऐसे तेरे अर्थ नमस्कार है ३५ व हे स्तुति मतांतर तेरी करनेलायक कौन वाणी है और कौन तेरी स्तुति करने को समर्थ है और तेरी स्तुति करने में किसकी जिह्वा फुरती है ३६ सो हे हर तू क्षमाकर मैं तेरा भक्त हूं मेरी रक्षाकर और हे सर्वात्मन् सर्वभूतेश मेरी निरंतर रक्षाकरो ३७ व हे देव हे जगन्नाथ तुम मर्वात्मा करके लोकों की रक्षाकरो और हे महादेव हे भक्तप्रिय तुम सदाभक्तोंकी रक्षाकरो ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिगर्गेनमविष्यपर्वेभाषायां [illegible]

[illegible]ऽध्यायः ७५८ ॥

दोसौउनासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहनेलगे फिर वह वृषध्वज और शूली और सत् उमापति शिव चक्रको धारण करनेवाले विष्णु भगवान् के हाथको हाथसे स्पर्शकरके १ वह भगवान् रुद्र सब देवता और भावितात्मावाले मुनियों के सुनतेहुये गरुड़ध्वज केशव के प्रति कहनेलगे २ कि हे देवदेव हे चक्रपाणे हे जनार्द्दन यह क्या है किसवास्ते यह तपश्चर्या तुम करते हो और हे विभो तुम्हारी क्या प्रार्थनाहै ३ और तुम आप विष्णुहो और हे हरे आपही तपहो और हे देव और हे जनार्द्दन तेरी यह तपश्चर्या पुत्रके वास्ते है ४ सो हे जगत्पते मैंने पहले तुमको पुत्र दियाहै सो हे कारणात्मक इस में कारण सुनो हे हरे पहले सतयुग में मैं किसी समय दशहजार वर्षतक महाघोर तपकरनेको प्रवृत्तहुआ ५।६ और हे देव, पिता हिमाचल करके दईहुई यह वरवर्णिनी उमा अर्थात् पार्वती मेरी परिचर्या करने लगी ७ सो हे देव तब भयभीत हुआ इन्द्र मेरे प्रति कामदेव को प्रेरताभया फिर वह कामदेव पुष्परसों से संयुक्त हुआ मेरे प्रति आवताभया ८ फिर अपने पुष्प रूपी बाणों से लक्ष्यरूपी मुझको मारने लगा तब यह पार्व्वती मुझको पुष्पादिकों से सेवनेलगी तब मैं तिसप्रकार विधिवाले कामदेव को देख क्रोध करता भया ९ फिर मेरे क्रोध करतेहुये नेत्रों से अग्नि गिरताभया १० सो हे हरे फिर वह अग्नि कामदेवको भस्म करताभया सो हे विष्णो पश्चात् इन्द्रका चिकीर्षित अर्थात् यह इन्द्रको करनाचाहा था ११ ऐसा मैं चिंतवनकरा और मुझको दया आनेलगी और हे विष्णो फिर मुझे ब्रह्मा प्रेरताहुआ १२ सो हे जगत्पते तब मैंने पुरुषरूपकरके तेरा बड़ापुत्र पैदाकराहै और वह प्रद्युम्ननाम करके विख्यातहै १३ सो हे देव उसको तुम कामदेवजानो इसमें संदेह नहीं ऐसे वह शिवजी कहके फिर अपने देहको यथात्म्य दिखानेकी तरह हुआ और यथात्म्य १४ सुननेकी इच्छावाले मुनियोंके मध्यमें विष्णुको उद्देशलेके व हाथोंकी अञ्जलीबाँधके १५ पार्वती के संगहुआ वह शिवजी यथार्थ आत्माके वर्णन करनेकी इच्छा करता भया १६ और मुनि, देव, गंधर्व, सिद्ध, किन्नर ये सब देवदेवेश्वर विष्णुविषे अञ्जली बाँधतेभये १७ शिवजी कहनेलगे जो कुछ प्रकृति सहित कारण सांख्य के जाननेवाले कहते हैं और तीनप्रकार जगत्की योनि प्रधान कारणात्मक कहते

है १८ और सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन्हीं को कहते हैं सो इन सबोंका कारण सांख्यके जाननेवाले तुम्हींको कहते हैं १९ और पहले महान् अहंकार पैदा हुआ तिसमें माया कारणहै तिसीरूप करके तुम विष्णु परिणाम के अधिष्ठाता हो और तिस महावीर अधिष्ठाता से अहंकार पैदा हुआ सो हे जगन्नाथ तुम आदि में जगत्के परिणामहो २० और हे प्रभो अहंकारसे महान् कारणपैदाहुये हैं और पश्चात् तन्मात्रा पैदाहुये हैं और पञ्चतत्त्व पैदाहुये हैं २१ सो हे जगत्पते तिन पांचतत्त्वों को तेराही रूप कहते हैं २२ और पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि ये पांचतत्त्व हैं और चक्षु, घ्राण, स्पर्श, जिह्वा, श्रोत्र ये पांचइंद्रिय हैं और हे देव इन्हों के प्रेरनेवाला छठा मन है २३ और हे जनार्दन वाक्आदिक अन्य कर्मेन्द्रियहैं इन सबोंको नियत आत्मावाले तुमहीं करते हो २४ और हे हरे अपने २ विषयों में इन इन्द्रियोंको तुम प्रवेश करते हो २५ और जब तुम रजोगुण से युक्त होते हो तब जीवोंको रचतेहो और जब सत्त्वगुणसे युक्त होतेहो तब तीनों लोकोंकी पालना करते हो २६ और जब तमोगुणसे युक्त होते हो तब जगत्का संहार करते हो इसप्रकार तीनगुणों में युक्तहुये तुम सृष्टिकी रक्षा और विनाश करते हो २७ और हे माधव नियत आत्मावाले तुम तीन प्रकारकी ऐश्वर्य को प्राप्तहोके इन्द्रियों के अर्थ में नियुक्त करते हो २८ और हे जगद्गुरो प्राणियों के उपभोगकेवास्ते अन्नरचके फिर सब भोगोंवाले तुम सब जीवों विषे वर्त्ततेहो २९ और सृष्टि कालमें तुम ब्रह्माहो और स्थिति कालमें विष्णु होजाते हो और संहारसमय तुम रुद्रनामवाले हो ऐसे तुम तीन भागोंवाले हो ३० और हे देव पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश ये तेरी प्रकृति मुझसे सर्वत्र भिन्नहैं ३१ और हजार शिरोंवाला पुरुष अर्थात् ईश्वर और हजार नेत्रोंवाला हजार पैरोंवाला हजार प्रकारवाला हजारमुख और आत्मावाला और स्वर्गकापति ऐसे तुमहो ३२ और इस सब भूमिको व्याप्तहोके और सातोंद्वीप और सागरों में व्याप्तहोके और सूक्ष्म रूपसे सब जगह स्थित ३३ जो जगत् होगयाहै और जो होगा सो तुम्हींमें व हे जनार्दन तुमसे विराट्रूप उत्पन्न है और तुमसेही प्रजापति उत्पन्न है ३४ व हे जगन्नाथ तुम्हारे मुखसे लोक की रक्षा करनेवाले षट्कर्मों में रत ऐसे ब्राह्मण पैदाहुये हैं ३५ व रक्षाकरने में तत्पर ऐसे क्षत्रिय तुम्हारी बाहुओं से पैदाहुये हैं व जांघों से वैश्य पैदाहुये हैं और पैरों से शूद्र पैदा भये हैं ३६ सो हे जगन्नाथ देव

ऐसे सब वर्ण तुम्हारे देहसे पैदाभये हैं और तुम्हारे मनमें ३७ सब भूतोंको सुख करनेवाला और शीतल किरणोंवाला और अमृतके समान ऐसा चन्द्रमा पैदा हुआहै और सब प्राणियों के नेत्ररूप ३८ और जिसकी कांति से सब जगत् प्रकाशमान होरहा और किरणोंवाला ऐसा सूर्य तुम्हारेनेत्रों से पैदाहुआहै और मुखसे जल पैदाहुआहै और अग्नि पैदाहुई है और नाभि कमल से वायु पैदाहुई है ३९ और पैरों से पृथ्वी पैदाहुई है और हे जगत्पते तुम्हारे कानों से दिशा पैदा हुई है ऐसे इस सब जगत् को तुम रचके फिर तिसी में व्याप्तहोके अवस्थित हो रहेहो ४० और हे केशव तुम इन सब लोकोंको व्याप्तहोके स्थितहोरहे हो क्योंकि इसीवास्ते तुम्हारा विष्णुनाम है कि विष्णु इस शब्दका अर्थ सब जगह व्याप्त होनेवालेका नामहै ४१ और नारानाम जलों के समूहका है और उन्हों के अयननाम प्रवृत्त करनेवाले तुमहींहो इसवास्ते तुमको नारायण कहते हैं ४२ और हे देव तुम जीवों को हरतेहो इसवास्ते तुम को हरि कहते हैं और हे देव तुम सदा शं अर्थात् मंगल करते हो इसवास्ते तुमको शंकर कहते हैं ४३ और बृहत्होने से और बृहण अन्योंको बढ़ानेवाले होने से तुम ब्रह्म कहातेहो और मधुइन्द्रियों का नामहै इसवास्ते तुम मधुनिषूदन कहातेहो ४४ और हृषीकनाम इन्द्रियोंका तिनके तुम ईशहो सो हे केशव तुम इस वास्ते देवताओं में हृषीकेश नामसे प्रसिद्धहो ४५ व यह ब्रह्माकानाम और सब भूतों का ईश शंभू सो हम दोनों तुम्हारे अंग से पैदाहुये हैं इस वास्ते तुम को केशव कहते हैं ४६ और हे हरे गो नाम गायाकाहै सो उसके तुम धव नाम स्वामीहो इसवास्ते तुमको माधव कहते हैं ४७ और गोनाम वाणीका है सो उसको तुम जानतेहो इसवास्ते तुमको मुनियों ने गोविन्द कहा है ४८ और त्रिनाम मुनियों ने तीनवेदों का कहाहै सो तुम उन्हों के क्रमते नाम उत्साह करातेहो और बढ़ातेहो इसवास्ते तुमको त्रिविक्रम कहते हैं ४९ और अणुनाम वामनका है सो आपने वामन अवतार धारण किया है इस वास्ते तुमको अणु कहते हैं और मनन करने से तुमको मुनि कहते हैं और यमन करने से तुमको यमी कहते हैं ५० व तुम जो तपका आचरण करतेहो इसवास्ते तुमको तपस्वी कहते हैं और तुम्हारे विषे सब भूत बसते हैं इसवास्ते तुमको भूतावास कहते हैं ५१ व हे हरे तुम सब जीवोंके ईश हो इसवास्ते तुमको ईश्वर कहते हैं और हे विभो सब वेदोंका और गायत्री का

तुम ॐकाररूपहो ५२ व अक्षरोंके बीचमें तुम अकारहो और सब वर्णोंका आश्रयरूप स्फोट अर्थात् स्फुटितहो और रुद्रोंके बीचमें मेरेरूपसे तुमहो और वसुओंके बीच में तुम पावक अर्थात् अग्निरूपहो ५३ और वृक्षों में तुम पीपलरूप हो और लोकोंके गुरू तुमहीं ब्रह्माहो और पर्वतों के बीच में तुम सुमेरु पर्वतहो व देवऋषियोंके बीचमें तुम नारदहो५४ व दैत्यों के बीचमें तुम ज्ञानवान् प्रह्लाद हो और सब सर्प्पोंके बीचमें तुम वासुकी संज्ञकहो ५५ व सब गुह्यकों के बीचमें तुम कुवेरहो और जलों के राजा तुम वरुणहो और तुमहीं गंगाहो ५६ व तुम सबभूतों के आदिहो और मध्यहो और अन्त हो और तुम्हारेही विषे यह सब जगत् उत्पन्न होताहै और तुम्हारेही में लीनहोजाता है ५७ व हे जनार्दन में हूं सो तुमहो और तुमहो सो में हूं हमारा तुम्हारा अन्तर शब्दों करके और अर्थों करके नहींहै ५८ व हे गोविन्द जो तुम्हारे महान् नाम लोकमें प्रसिद्ध हैं वेही मेरे नामहैं इसमें कुछ विचार नहीं है ५९ व हे गोविन्द जो तुम्हारी उपासना है वही मेरी उपासनाहै और जो तुमसे वैरकरैहै वह मुझसेभी वैरकरै है इसमें संदेह नहीं है ६० व हे हरे तुम्हारा विस्तारहै इसीवास्ते में भूतपतिहों सो हे देव जो तुमसे रहितहो ऐसा कछु नहीं है ६१ व हे जगत्पते जो होताभया और जो वर्त्ते हैं और जो भाविहै सो तुम्हारे विना कुछ नहीं है ६२ व हे विभो तुम्हारी स्तुति देवता अपने २ गुणोंकरके करते हैं और हे विभो तुम ऋग्वेदहो और यजुर्वेद हो और सामवेदहो ६३ सो हे देव मुझसे क्या कहाजाता है तुम सर्वभूतभावनहो और हे देव हे विष्णो हे माधव हे केशव ६४ सर्वात्माकरके तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे सर्वात्मन् तेरे अर्थ नमस्कार करोंहों और हे कमलनाभ तुझको में नमस्कार करताहूं ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिभाषायांकैलासयात्रायांविष्णुस्तवेऽना
शीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७० ॥

दोसौअस्सीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं इसप्रकार वह शिवजी विष्णुकी स्तुति करके मुनियोंके प्रति कहने लगा कि हे विप्रो और हे भक्तो देखने को आयेहुये तुम यह जानो १ कि यही विष्णुदेव परम वस्तुहै और तुमको इससे उपरान्त कुछ नहीं

है २ व हे विप्रो इसीको तुम्हें अपने मनसे सदा ध्यान करना चाहिये ३ व यही तुम्हारा परम कल्याण है और यही तुम्हारा परमधन है ४ व यही तुम्हारे जन्म का कृत्यहै और यही तुम्हारे तपका फल है और यही तुम्हारे पुण्यका स्थान है और यही सनातन धर्म है ५ व यही मोक्षका दाताहै और यही मोक्षरूपहै और यही पुण्यका देनेवालाहै और यही साक्षात् तुम्हारे कर्मोंका फलहै ६ व ब्रह्मको जाननेवाले विद्वान् इसीकी प्रशंसा करते हैं और हे विप्रो यही वेदत्रयीकी गति है और इसगतिकी प्रार्थना ब्रह्मको जाननेवाले भी करते हैं ७ व सांख्ययोगको आश्रितहुये पुरुषभी इसीकी प्रशंसा करते हैं और ब्रह्मके जाननेवाले पुरुषोंका मार्ग यही है ऐसे वेदके जाननेवाले पुरुषोंने कहा है ८ ऐसे तुमको जानना चाहिये इसमें कुछ विचार नहीं करना और सतोगुणको प्राप्तहुये तुमको सदा इस एक हरिकाही ध्यान करना चाहिये ९ व इस विष्णु नारायण से उपरान्त जगत्में अन्यदेव नहीं है और हे विप्रो तुम सदापाठ करतेहुये १० व ध्यान करतेहुये ओं ऐसे कहते हुये कल्याण को प्राप्तहोओगे सो इसप्रकार हरिके ध्यान करनेसे साक्षात् हरि तुम्हारेमें प्रसन्नहोवेगा ११ व यह हरि संसारकी उत्पत्ति व नाशमें तत्परहै सो हे विप्रो इच्छासे प्राप्तहुये इस विष्णुको तुम सदा ध्यावो १२ व यही संसारको विभव देताहै और यही संसारका विनाश करैहै और यही संसारका गुरुहै सो हे विप्रो तीनप्रकार शरीर को धारण करनेवाले विष्णुका तुम स्मरणकरो १३ व हे विप्रो यत्नसे अपने मनका सदा संयमनकरो सो शुद्ध अन्तःकरण होनेसे विष्णु प्रसन्नहोवेगा १४ व सब यत्नकरके मेरा ध्यान करके फिर तुम इस विष्णुको जानो और हे विप्रो इस हरिकी उपासना करनेसे मेरीही उपासना होजाती है १५ सो मेरे कहने से अब तुम को उपासना करनी चाहिये इसमें कुछ सन्देह नहीं है और हे विप्रो सारावाले इस विष्णुका यत्न पापों के नाशके वास्ते तुम सदाकरो १६ क्योंकि तुम्हारी सब बुद्धि यत्न करनेमें शुद्धहो जायगी सो हे विप्रो जैसे यह विष्णुदेव प्रसन्नहोवे तैसे तुमकरो १७ वैशम्पायन जी कहनेलगे ऐसे कहतेहुये वे सब पुण्यमें स्वभाव रखनेवाले मुनि यथार्थ वस्तु को प्राप्त करतेहुये संशयसे रहितहोगये १८ व शिवजीसे मुनि यह कहनेलगे कि हे शिव ऐसेही है हमारा सब सन्देह दूरहोगया १९ व हम इसीवास्ते तुम्हारे स्थानपै आयेथे सो अब तुम्हारे दोनोंके दर्शनसे हमारा सब शोक नष्टहोगया२०

तुम ओंकाररूपहो ५२ व अक्षरोंके बीचमें तुम अकारहो और सब वर्णोंका आश्रयरूप स्फोट अर्थात् स्फुटितहो और रुद्रोंके बीचमें मेरे रूपसे तुमहो और वसुओंके बीच में तुम पावक अर्थात् अग्निरूपहो ५३ और वृक्षों में तुम पीपलरूप हो और लोकोंके गुरू तुमहीं ब्रह्माहो और पर्वतों के बीच में तुम सुमेरु पर्वतहो व देवऋषियोंके बीचमें तुम नारदहो५४ व दैत्यों के बीचमें तुम ज्ञानवान् प्रह्लाद हो और सब सर्प्पोंके बीचमें तुम वासुकी तक्षकहो ५५ व सब गुह्यकों के बीचमें तुम कुबेरहो और जलों के राजा तुम वरुणहो और तुमहीं गंगाहो ५६ व तुम सबभूतों के आदिहो और मध्यहो और अन्त हो और तुम्हारेही विषे यह सब जगत् उत्पन्न होताहै और तुम्हारेही में लीनहोजाता है ५७ व हे जनार्दन में हूं सो तुमहो और तुमहो सो मैं हूं हमारा तुम्हारा अन्तर शब्दों करके और अर्थों करके नहींहै ५८ व हे गोविन्द जो तुम्हारे महान् नाम लोकमें प्रसिद्ध हैं वेही मेरे नामहैं इसमें कुछ विचार नहीं है ५९ व हे गोविन्द जो तुम्हारी उपासना है वही मेरी उपासनाहै और जो तुमसे वैरकरै है वह मुझसेभी वैरकरै है इसमें संदेह नहीं है ६० व हे हरे तुम्हारा विस्तारहै इसीवास्ते मैं भूतपतिहों सो हे देव जो तुमसे रहितहो ऐसा कछु नहीं हैं ६१ व हे जगत्पते जो होताभया और जो वर्त्ते है और जो भाविहै सो तुम्हारे विना कुछ नहीं है ६२ व हे विभो तुम्हारी स्तुति देवता अपने २ गुणोंकरके करते हैं और हे विभो तुम ऋग्वेदहो और यजुर्वेद हो और सामवेदहो ६३ सो हे देव मुझमे क्या कहाजाता है तुम सर्वभूतभावनहो और हे देव हे विष्णो हे माधव हे केशव ६४ सर्वात्माकरके तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे सर्वात्मन् तेरे अर्थ नमस्कार करोंहों और हे कमलनाभ तुझको में नमस्कार करताहू ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायाकैलासयात्रायांविष्णुस्तवेऊनाशीत्यधिकद्विशतोऽध्याय २७९ ॥

दोसौअस्सीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं इसप्रकार वह शिवजी विष्णुकी स्तुति करके मुनियोंके प्रति कहने लगा कि हे विभो और हे भक्तो देखने को आयेहुये तुम यह जानो १ कि यही विष्णुदेव परम वस्तुहै और तुमको इससे उपरान्त कुछ नहीं

है २ व हे विप्रो इसीको तुम्हें अपने मनसे सदा ध्यान करना चाहिये ३ व यही तुम्हारा परम कल्याण है और यही तुम्हारा परम धन है ४ व यही तुम्हारे जन्म का फल है और यही तुम्हारे तपका फल है और यही तुम्हारे पुण्यका स्थान है और यही सनातन धर्म है ५ व यही मोक्षका दाताहै और यही मोक्षरूपहै और यही पुण्यका देनेवालाहै और यही साक्षात् तुम्हारे कर्मोंका फलहै ६ व ब्रह्मको जाननेवाले विद्वान् इसीकी प्रशंसा करते हैं और हे विप्रो यही वेदत्रयीकी गति है और इसगतिकी प्रार्थना ब्रह्मको जाननेवाले भी करते हैं ७ व सांख्ययोगको आश्रितहुये पुरुषभी इसीकी प्रशंसा करते हैं और ब्रह्मके जाननेवाले पुरुषोंका मार्ग यही है ऐसे वेदके जाननेवाले पुरुषोंने कहा है ८ ऐसे तुमको जानना चाहिये इसमें कुछ विचार नहीं करना और सतोगुणको प्राप्तहुये तुमको सदा इस एक हरिकाही ध्यान करना चाहिये ९ व इस विष्णु नारायण से उपरान्त जगत्में अन्यदेव नहीं है और हे विप्रो तुम सदापाठ करतेहुये १० व ध्यान करतेहुये ऐसे कहते हुये कल्याण को प्राप्तहोगे सो इसप्रकार हरिके ध्यान करनेमें साक्षात् हरि तुम्हारेपै प्रसन्नहोवेगा ११ व यह हरि संसारकी उत्पत्ति व नाशमें तत्परहै सो हे विप्रो इच्छासे प्राप्तहुये इस विष्णुको तुम सदा ध्यावो १२ व यही संसारको विभव देताहै और यही संसारका विनाशकरै है और यही संसारका गुरुहै सो हे विप्रो तीनप्रकार शरीर को धारण करनेवाले विष्णुका तुम स्मरणकरो १३ व हे विप्रो यत्नसे अपने मनका सदा संयमनकरो सो शुद्ध अन्तःकरण होनेसे विष्णु प्रसन्नहोवेगा १४ व मन यत्नकरके मेरा ध्यान करके फिर तुम इस विष्णुको जानो और हे विप्रो इस हरिकी उपासना करनेसे मेरीही उपासना होजाती है १५ सो मेरे कहने से अब तुम को उपासना करनी चाहिये इसमें कुछ सन्देह नहीं है और हे विप्रो पापनाशे इस विष्णुका यत्न पापों के नाशके वास्ते तुम सदाकरो १६ क्योंकि तुम्हारी सब बुद्धि यत्न करनेसे शुद्धहो जायगी सो हे विप्रो जैसे यह विष्णुदेव प्रसन्नहोवे तैसे तुमकरो १७ वैशम्पायन जी कहनेलगे ऐसे कहेहुये वे सब पुराणमें स्मरण करनेवाले मुनि महादेवजी को प्रणाम करतेहुये संशयसे रहितहोगये १८ व शिवजीसे मुनि यह कहने लगे कि हे शिव ऐसेनही है हमारा सब सन्देह दूरहोगया १९ व हम इसीवास्ते तुम्हारे स्थानको आये सो अब तुम्हारे दोनोंके स्मरणसे हमारा मन मोह नष्टहोगया२०

व हे देवेश जैसे तुम कहतेहो तैसेही हमारा कल्याण है और हम वही करेंगे २१
ऐसे वे सब मुनि कहके हरिकेशवको प्रणाम करतेभये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायाकैलासयात्राया
म्ऋष्युपदेशोऽशीत्यधिकद्विशततोऽध्याय २८० ॥

दोसौइक्यासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे पश्चात् वह भगवान् रुद्र सब ऋषियों को आश्चर्य्य कराताहुआ और स्तुतिकरतेहुये अर्थवाली श्रुतियों करके मुनियों के देखतेहुये विश्वेश्वर विष्णुभगवान् का स्तोत्र वर्णन करनेलगा १ अब शिवजी से कहा हुआ विष्णुस्तोत्रका वर्णन करते हैं २ महेश्वरउवाच ॥ नमोभगवतेतुभ्य वासुदेवायधीमते ॥ यस्यभासाजगत्सर्वं भास्यतेनित्यमच्युत ३ नमोभगवतेदेवनित्यसूर्यात्मनेनम ॥ य शीतयतिशीतांशुर्लोकान्सर्वानिमान्प्रभु॰ ४ नमस्तेविष्णवेदेव नित्यसोमात्मनेनम ॥ य प्रजा प्राणयत्येको विश्वात्माभूतभावन ५ नम सर्वात्मनेदेव नमोवाय्वात्मनेहरे ॥ योदधारकरेणासौ कुशचीरादियत्सदा ६ दधारवेदान्सर्वांश्च तस्मैब्रह्मात्मनेनम ॥ सर्वान्संहरतेयस्तु संहारेविश्वदृक्सदा ७ क्रोधात्मासिविरूपोसि तुभ्यरुद्रात्मनेनम॰ ॥ सृष्टौसृष्टासमस्ताना प्राणिनाप्राणदायिने ८ अजायविष्णवेतुभ्य सृष्टेविश्वसृजेनम ॥ आदौप्रकृतिमूलाय भूताना प्रभवायच ९ नमस्तेदेवदेवेश प्रधानायनमोनम ॥ पृथिव्यांगधरूपेण संस्थित॰ प्राणिनाहरे १० दृढायदृढरूपाय तुभ्यगन्धात्मनेनम ॥ अपारसायसर्वत्र प्राणिनासुखहेतवे ११ नमस्तेविश्वरूपाय रसायचनमोनम ॥ तेजसाभास्करोयस्तु घृणोजंतुहित॰सदा १२ तस्मैदेवजगन्नाथ नमोभास्कररूपिणे ॥ वायौस्पर्शोगुणो यत्र शीतोष्णसुखदु खद १३ नमस्तेवायुरूपाय नम स्पर्शात्मनेहरे ॥ आकाशेऽवस्थित शब्द सर्वश्रोत्रनिवेशन १४ नमस्तेभगवन्विष्णो तुभ्यशब्दात्मनेनम ॥ योदधारजगत्सर्वं मायामानुपदेहवान् १५ नमस्तुभ्यजगन्नाथ मायिनेमायदायिने ॥ नमआद्यायबीजाय निर्गुणायगुणात्मने १६ अचिंत्यायसुचिंत्याय तस्मैचिंतात्मनेनम ॥ हरायहरिरूपाय ब्रह्मणेब्रह्मदायिने १७ नमोब्रह्मविदेतुभ्यं तुभ्यब्रह्मात्मनेनम ॥ नम सहस्रशिरसे सहस्रकिरणायच १८ नमःसहस्रपादाय सहस्रनयनायच ॥ विश्वायविश्वरूपाय विश्वकर्त्रेनमोनम॰ १९ विश्वकर्त्रेनमो

नित्य भूतावासनमोनम ॥ इंद्रियायेन्द्ररूपाय विषयायसदाहरे २० नमोऽस्त्र शिरसेतुभ्य वेदाभरणरूपिणे ॥ अग्नयेऽग्निपतेतुभ्य ज्योतिषापतयेनम २१ सूर्यायसूर्यवपुषे तेजसापतयेनम ॥ नम सोमायसौम्याय नम शितात्मनेहरे २२ नमोवषट्कृतेतुभ्य स्वाहास्वधास्वरूपिणे ॥ नमोयज्ञायईज्याय हविषेहव्यसस्कृते २३ नम स्रुवायपात्राय यज्ञागायपरायच ॥ नम प्रणवदेहाय क्षरायाप्यक्षरायच २४ वेदरूपायवेदाय शास्त्रायशास्त्ररूपिणे ॥ गदिनेखड्गिनेतुभ्य शङ्खिनेचक्रिणेनम २५ शूलिनेचर्मिणेनित्य वरदायनमोनमः ॥ बुद्धप्रियायबुद्धाय प्रबुद्धायसुखाय च २६ हरयेविष्णवेतुभ्यं नम सर्वात्मनेगुरो ॥ नमस्तेसर्वलोकेश सर्ववक्त्रेनमो नम २७ नम स्वभावशुद्धाय नमस्तेयज्ञशूकर ॥ नमोविष्णोनमोविष्णो नमो विष्णोनमोहरे २८ नमस्तेवासुदेवाय वासुदेवायधीमते ॥ नम कृष्णायसर्वाय सर्वावासनमोनम २९ नमोभूयोनमस्तेस्तु पाहिलोकान्जनार्दन ३० इसप्रकार इस स्तोत्रकरके विष्णुकी स्तुतिकरके फिर वह शिवजी मुनियों के प्रति कहने लगा ३१ कि जो इसस्तोत्रका पाठकरेंगे वे नित्य विष्णुको प्राप्तहोवेंगे और सव भूतोंकारक्षक विष्णु कल्याण करेगा ३२ और जो पापोंका नाशकरनेवाला इस स्तोत्रका पाठकरेगा तिन्हों के प्रति भगवान् प्रसन्न होवेंगे और सुननेवालों के प्रति भी प्रसन्न होवेंगे ३३ और धर्मात्मा विष्णु निश्चय कल्याण करेगा इस में कुछ संशय नहीं है सो तुम अवश्य केशव भगवान् का ध्यान मनसे करो ३४ क्योंकि जो पैनेव्रतवाले तुम कल्याण की इच्छाकरते हो इसवास्ते ऐसे कहके वह भगवान् रुद्र अपने गणकेसहित तहा अतर्द्धान होगया ३५ और पश्चात् वे सव मुनि परम निवृत्त होगये ३६ और तिस नारायणको परमतत्त्व जानके परम विस्मयको प्राप्तहोके आपेको कृतार्थ मानतेभये ३७ और तव लोकपाल विष्णु को नमस्कारकरके अपने गणों से युक्तहुये अपने अपने घरोंविषे जातेभये ३८ और पश्चात् विष्णुभगवान् गरुडपैचढके और शङ्ख चक्र गदा खड्ग धनुष तूणीं तलत्र ३९ इन शस्त्रोंको धारणकिये और अपनी इच्छापूर्वक वदरिकाश्रम अर्थात् वदरीनारायण में जातेभये और तहा संध्यानमय में प्राप्तहोके ऋषियों ने सेवितहुये ४० और तहा यथायोगसे सवको नमस्कारकर और मुनियों मे सेवित हुये सुखपूर्वक आसनपै वैठतेभये ४१ ॥

इतिहरिवंशपर्वणिवंशभाविष्यपर्वभाषायां नारायणागमनवर्णनं नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥८८॥

दोसौचयासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं इसीकाल के अनन्तर पौंड्रनामवाला और बलवान् और सत्वसम्पन्न और योद्धा और अति पराक्रमवाला १ और यादवोंका शत्रु और कृष्ण से वैर करनेवाला ऐसा एकराजा सब राजाओं को बुलाके अपनी सभामें यह कहनेलगा २ कि मैंने सब पृथ्वी जीतली और सब राजा जीतलिये और ये बलसे उन्मत्तहुये यादव कृष्णके आश्रयहोके गर्वित होरहे हैं ३ सो ये मुझको करदेवेंगे और जो नहीं देवेंगे तो ये मेरे शत्रु हैं और यह कृष्ण चक्रको धारणकरके मुझको विनाजाने स्थित होरहा है ४ और तिस गोपके यह गर्व होरहाहै कि मैं चक्रको धारण करनेवालाहूं और शङ्खवालाहूं चक्रवालाहूं और गदा शार्ङ्ग धनुष बाण तूणीर इन्होंको धारण करनेवालाहूं ५ ऐसे तिसके गर्व होरहाहै और वासुदेव इस नामसे प्रसिद्ध होरहाहै ६ सो वह गोप मदसे युक्तहुआ मेरे नामको ग्रहणकररहाहै और तिसके नामवाला मेराभी चक्र बड़ा पैनाहै ७ और उसके सुदर्शनचक्र के गर्व्वका नाश करनेवाला है और हज़ार पैनाइयों वालाहै और तिसके चक्रका नाश करनेवालाहै ८ और हे राजाओ मेराभी यह धनुषशार्ङ्ग नामवाला है और महाशब्द करनेवाला है ९ और कौमोदकी नाम वाली यह मेरी बड़ी गदाहै और यह गदा हजारभार लोहाकी बनीहुई है १० य नंदकनामवाला यह मेरा दृढ खड्गहै और यह कालका भी नाश करनेवाला है और तिस कृष्णके खड्गका नाश करनेवालाहै ११ इसवास्ते मैं गदीहूं और चक्री हूं और खड्गी हूं और शस्त्र और धनुषको धारण करनेवालाहूं और युद्धमें कृष्ण को जीतनेवालाहूं इसमें कछु विचार नहीं है १२ और हे राजाओ मुझको तुम गदावाला कहो और चक्री शङ्खी शार्ङ्गी और शूरवीर मुझकोही कहो १३ और वासुदेवभी मुझकोही कहो और यदुओं में उत्तम तिस कृष्णको गतकहो और तिस गोपके पुत्रको मारके मैं एकही वासुदेव जगत् में प्रसिद्ध रहूंगा और यह कृष्ण मेरे मित्र नरकासुर को मारनेवालाहै और जो कोई मुझको वासुदेव नहीं कहेगा तो वह सैकड़ोंभार १४ सुवर्ण के और बहुतसे शस्त्रों के मारने के दंड देने लायक होगा इसप्रकार दु सह वचन इस राजाके कहने के १५ पीछे श्रीकृष्णके रस और बलवीर्य्य इन्हों को जाननेवाले कई तो वीर्य्यवान् राजा लज्जासे युक्त

होगये १६ और कई राजा यह कहनेलगे कि आप कहते हो ऐसेही है और अनेक मदवाले राजा ऐसे कहनेलगे कि तिस कृष्णको हम रणमें जीतेंगे १७ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांद्व्यशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८२ ॥

दोसौतिरासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे तिसीकालके अनन्तर नारदमुनि कैलास पर्व्वत से निकसके पौंड्रराजाके नगरके प्रति आताभया १ व आकाशमार्ग से उतरके तिस राजाके दरवाजे आगे आके स्थित होताभया पश्चात् द्वारपालको खबरदी २ फिर राजा इस नारदमुनिकी पूजा अर्घादिकोंसे करताभया फिर पूजितहुआ वह नारदमुनि श्रेष्ठ आसनपै बैठगया ३ फिर वह श्रेष्ठमुनि कुशल पूछनेलगा पश्चात् वह पौंड्रक राजा बलसे गर्वितहुआ यह कहनेलगा ४ कि तुम सर्वत्र चतुरहो और सब कार्यों में चतुरहो और देव सिद्ध गन्धर्व महात्मा इन्होंमें तुम प्रसिद्धहो ५ व सबजगह विचरनेवालेहो और सब जगह बाधासे रहितहो और हे मुनीन्द्र तेरेको ब्रह्माण्ड में अगम्य कछुभी नहींहै ६ सो हे नारद तुम यह कहो कि सिद्ध और लोकमें विख्यात ऐसा तू जहाजहां गयाहै ७ सो तहां पौंड्रराजा वासुदेव नामसे प्रसिद्ध है और शङ्ख धारण करनेवाला चक्र धारण करनेवाला और गदा धारण करने वाला और खड्गी शार्ङ्गी तूणी तलत्रवान् ८ व राजर्षी सिद्धोंको जीतनेवाला और सबवस्तुको देनेवाला और भोगनेवाला और सब राज्यको बलसे भोगनेवाला और शिक्षादेनेवाला ९ व शत्रुओंकी सेनासे जीतने लायक नहीं और स्वजनों की रक्षाकरनेवाला ऐसा मैं प्रसिद्ध होरहाहूं अथवा जो कि अब यह गोप वासुदेव होरहाहै इसको प्रसिद्ध मानते हैं १० व इसके वीर्यबल तो मेरे नामसे नहीं होवेंगे और वह गोप वृथा बालकपनसे मेरे नामको धारण करैहै ११ सो तुम यह निश्चयकरो कि मैं बलवान यदुओं को जीतके अकेलाही प्रसिद्धहोऊं १२ व बल में इन सब यादवों को जीतके मथुरापुरीको दग्ध करूंगा और हे महामते यदुओं के स्थानोंवाली द्वारकाको भी मैं जीतूंगा १३ व ये सब बलवाले राजा मेरे पास आरहे हैं और वेगवाले अश्व हैं और वायु सरीखे वेगसे चलनेवाले रथहैं १४ व मदवाले हजारों ऊंट और दश हजार हाथी हैं सो इस सेनासहके युद्धमें मैं केशव को अर्थात् श्रीकृष्णको मा-

रूंगा १५ सो हे विभो यह मेरी तेरे से प्रार्थनाहै और हे तपोधन तेरेको नमस्कार करता हू १६ नारदमुनि कहनेलगे मैं सदा सब जगह ब्रह्माण्ड पर्य्यन्त विचरताहू और हे नृप मैं सब कार्य्यों में और गमनमें अवार्य अर्थात् किसीसे निवारण करनेलायक नहीं हू १७ परन्तु हे राजन् तेरे आगे कछु कहने में मैं कछु उत्साह नहीं मानताहू क्योंकि देवताओंका ईश और चक्र धारण करनेवाला १८ व सब जगह विचरनेवाला ऐसा विष्णु भगवान् दुष्ट बाधयोंको मारके जबराज्य कररहाहै तब इस हरिके आगे कौन वासुदेव नामसे ठहरे हैं १६ व कृष्णके राज्य करतेहुये ऐसे कौन नामको कहताहै और स्वभावसे समर्थ मनुष्य अज्ञानसेही ऐसे कहतेहोंगे २० व सब जगह विचरनेवाले और अचिन्त्य विभववाले और शार्ङ्गधनुषको धारण करनेवाले और गदाधर २१ ऐसे विष्णु तेरे अभिमानको दूर करेंगे और हे महाराज यह वार्त्ता तू हास्यके वास्ते कहता है २२ और वह श्रीकृष्ण शार्ङ्गधनुष तथा महाघोर खड्ग तुझको नहींदेगा सो हे राजन् यह तेरा हास्यकाल प्राप्त होरहाहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांपौंड्रकनारदसंवादेत्र्यशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः

दोसौचौरासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं पश्चात् मदवलसेयुक्त वह पौंड्रनामवाला राजा क्रोध से युक्तहोके ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तिस नारदके प्रति कहनेलगा १ कि हे विप्र ऋषि क्या मैं राजा नहीं हूं सो हे मुने तुम अपनीइच्छा से चलेजावो और तुम सदा शापके देनेवाले हो २ सो हे महाबुद्धे तुमसे मैं भयमानताहू तू इच्छापूर्वक चलाजा ऐसे राजाके कहते वह नारद चुपहोगया ३ पश्चात् जहां श्रीकृष्णभगवान् थे तहां आकाशमार्ग करके जाताभया और तहां जाके विष्णुके तेजवाले श्रीकृष्ण के प्रति सब वृत्तान्त वर्णन करताभया ४ और पश्चात् वह विष्णुभगवान् सुनके यह बोला कि हे द्विजसत्तम उसका अभिमान हम थोड़ेदिन छेदन करेंगे ५ ऐसे कहके तिस बदरिकाश्रम में रमण करतेभये और पश्चात् वह पौंड्रनाम वाला राजा बहुतसी सेनाओंकरके युक्त ६ और अनेकहजारअश्व और हाथियों करकेयुक्त और किरोड़ों हथियारों करके युक्त ७ और कईएक हजारों के सैकड़े प्यादों से युक्त और एकलव्य नामआदि अनेक राजाओं से युक्त ८ और आठ

हज़ार रथोंसे युक्त और दशहज़ार हाथियों से युक्त और एकअर्व पियादों से युक्त इसप्रकार अपनी सेनासे युक्तहुआ ६ वह राजा युद्धमें प्राप्त होताभया और जैसे उदयहोता सूर्य्य प्रकाशमान होवै तैसे प्रकाशित होताभया १० व इसतरह सेना से युक्तहोके अर्धरात्रि के समय द्वारकापुरी विषे प्राप्तहोताभया और अंधेरामेंयुक्त तिस दारुण रात्रिविषे अपने २ हाथों विषे सव दीवटआदि लेतेभये ११ और अनेक प्रकारके शस्त्रों से युक्तहुये शूरवीरों से सम्पन्न और महाघोर ऐसी द्वारका-पुरीमें प्राप्त होतेभये १२ और वडे रथमें बैठके और शस्त्रों के समूहसे युक्तहुआ और पट्टिश शस्त्रविशेष और खड्ग और गदा और परिघ १३ और शक्ति और तोमर इनशस्त्रों से युक्त और ध्वजा और मालासे शोभित और किंकिणी और जालियोंसे युक्त १४ और महाघोर और महारौद्ररूप और युगांत मेघसरीखे रूप वाला और धनुष गदा इन्हों से युक्त १५ और अग्नि और सूर्य के समान आकार वाला ऐसा वह वलवान् राजा दीपक आदिकों को ग्रहण कियेहुये द्वारकापुरी में प्राप्त होताभया १६ और महाकांतिवाला वह राजा श्रीकृष्णको और यादवों को मारने की इच्छा करताहुआ वलवाले योद्धाओं को वुलाके १७ और तिस पुरी के दरवाजों के आगे अपनी सेनाको स्थित करके सव राजाओं के प्रति यह कहनेलगा १८ कि भेरीआदि वाजे मेरानामलेके वजाओ और यह कहो कि हे यादवो तुम जल्द युद्धकरो और नहीं तो इस राजाको करदेवो और वीर्यवाला पौंड्रकनाम राजा तुम सवोंको कृष्णसमेत मारने के वास्ते आयाहै १६ ऐसे भेरे हुये वे सव सूचक यदुओं के प्रति जातेभये और दीपक आदि सैकड़ों हज़ारों प्रदीप्त होगये २० व युद्धकी लालसा करतेहुये राजा जहां तहां युद्ध करनेलगे और शस्त्रवाले वे सव क्षत्रिय द्वारकापुरीको आगेकरके २१ सिंहसरीखा शब्द करनेलगे और शस्त्रोंके समूहोंसे युक्तहुये यह कहनेलगे कि यादवों में श्रेष्ठ वह जगत्पति राजाहुआ श्रीकृष्ण कहाँहै २२ व सात्यकि शूरवीर कहाँहै और हा-र्दिक्य कहाँ है और यादवों में श्रेष्ठ वलदेव कहाँ है २३ ऐसे कहते हुये वे सव राजा वहुतसे शस्त्रोंकोलेके और अपने अपने धनुषवाणोंको लेके श्रीकृष्णकी द्वारकापुरी के प्रति युद्धकेवास्ते युक्त होतेभये २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिगर्भविष्णुपर्वभाषापौंड्रकद्वारका गमनेचतुरशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८४ ॥

दोसौपचासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहते हैं पश्चात् सब यादव तिस सेनाके समूह को देखके व रात्रि विषे महाशस्त्रों से सयाकुल प्राप्तहुये व्यसन को देख १ ऐसे देखतेभये कि जैसे महावात से उपजा कल्पके अंतसे समुद्र चढ़ाआताहो और फिर वे यादव शस्त्र बाँधके युद्धकी इच्छा करतेहुये २ और दीपकआदिकों को ग्रहण कियेहुये और शस्त्रों से युद्ध करनेवाले सब आतेभये और सात्यकि बलदेव हार्दिक्य व निशठ ३ महा बुद्धिवाला उद्धव महाबलवाला उग्रसेन और अन्य सब यादव अपने अपने कवचोंको पहनेहुये ४ और युद्धमें कुशल और रात्रिमें अतियुद्ध करनेवाले और शस्त्रोंको धारण करनेवाले और खड्गको धारण करनेवाले और अनेक प्रकारके शस्त्रों से युक्त ५ ऐसे बहुत से बाहुशाली राजा युद्धके वास्ते आतेभये और रथों से युक्त और हाथियों से युक्त और हथियारों से युक्त ६ और धनुष और बाणों से युक्त ऐसे महात्मा अनेक योद्धा नगरसे बाहर दीपकआदिकों से युक्तहुये जल्द निकसते भये ७ व सब यादव ऐसे कहते भये पौंड्रराजा कहाँ है और दीपकों से वह देश अँधेरा से रहित होगया ८ व जब चारोंओर उजियाला होगया तब तिन शत्रुओं के संग यादवोंका घोरयुद्ध मचनेलगा व तब महान् नाद रोमों को खड़ा करनेवाला होताभया और अश्व तो अश्वों के संग लपते भये और हाथी हाथियों के संग लपते भये ९ व रथ रथोंकेसंग लपते भये और अश्वों पै चढ़ेहुये पुरुष अश्वों पै चढ़ेहुयों के संग लड़ते भये और त लवारोंवाले तलवारवालों के संग व गदावाले गदावालों के संग युद्ध करनेलगे १० ऐसे आपसमें उन्होंका दारुण युद्ध होताभया व तिन महात्माओंका शब्द महाप्रलय के क्षोभसरीखा होनेलगा ११ व चारोंओर भाजनेहुयों को मारनेलगे व आपसमें ऐसे कहनेलगे कि यह महाबाहु खड्गको धारण कियेहुये पड़ाहै १२ व यह घोर बाणोंवाला अति दारुणहुआ वर्त्तरहाहै व यह महावीर्यवाला गदा को धारण कियेहुये है नृप हमें बाधादेताहै १३ व यह रथमें बैठाहुआ गम्भीर हम को बाधा देरहाहै व बाणोंवाला व गदावाला हमको बाधादेरहाहै १४ व यह शूली व तलवार व पट्टिश शस्त्रवाला व कुन्त शस्त्रवाला ये सब हमको बाधा देरहे हैं १५ व यह शूलको धारण कियेहुये चारों ओर फिर रहा है और महान्

दन्तवाला यह हाथी सबकेप्रति भाजरहाहै १६ व भालावाले पुरुष भालावालोंको हनन करते हैं व यह एक शूरवीर वायुसरीखे वेगकरके विचरताहुआ बाणों से बाणोंको छेदन कररहाहै १७ व दण्डों करके दण्डोंको छेदन कररहाहै व परिघ शस्त्रोंको परिघों से छेदन कररहे हैं व शूलों करके शूलोंको छेदन कररहे हैं १८ ऐसे वैशम्पायनजी परीक्षित के प्रति कहते हैं कि हे महाराज इसप्रकार तिन्हों के युद्धकरतेहुये महान् शब्द होताभया १६ व तिस युद्धमें बहुतसे भूत शब्द करतेहुये और शस्त्रोंको लियेहुये प्रकट होतेभये २० व तिस युद्धमें रात्रि के समय महान् रोमोंको खडा करनेवाला शब्द होताभया व तिन्हों के संग यादवों का दारुण युद्धहुआ २१ व कई एक महापराक्रमवाले शूरवीर हनहुये पृथ्वी में गिरते भये व कई एक गिरतेहुये युद्ध करनेलगे २२ व कई एक हाथों में शस्त्र लिये पृथ्वी में गिरते भये व कई एक राजे मर्म स्थानसे भिन्नहुये पृथ्वी में गिरते भये २३ व आपसमें युद्धकरके वधकरने की इच्छा करतेहुये व शस्त्रों से रहित हुये २४ ऐसे अनेक राजा प्राणों से रहितहोके पृथ्वी में गिरतेभये और कई धर्मराज के स्थानको बढाते भये अर्थात् युद्धमें भाजनेलगे इसप्रकार पीडितहुये वे सब जब मरनेलगे २५ तब एकलव्य नामवाला निषादोंका पति और अन्तकाल के सदृश वर्णवाला २६ ऐसा वह योद्धा अपने धनुषको ग्रहण करके युद्धमें आताभया व पश्चात् तिन यादवोंको अनेक हजार बाणोंकरके पीड़ा देताभया व मर्मको भेदनकरनेवाले २७ ऐसे अनेक पैनेर बाणों से यादवोंकी सब सेनाको पीडा देताभया २८ व हाथों में शस्त्र लियेहुये जो क्षत्रिय युद्धकररहे थे तिनको पीडा देनेलगा २६ व पचीस बाणों से निशठ राजाको पीडा देताभया व सारण यादवको बींधता भया और हार्दिक्य यादवको पांच बाणों से बींधताभया ३० व उग्रसेनको ६० बाणोंसे बींधताभया और वसुदेवको ७ बाणोंसे पीडा देताभया और दश बाणोंसे उद्धवको पीडा देताभया और अक्रूरको पांचबाणोंसे पीडा देताभया ३१ इसप्रकार ये सब यादव पैने बाणोंसे हननकिये ३२ व पश्चात् पराक्रम वाला वह एकलव्य राजा ऐसे कहनेलगा कि अब वह सात्यकि शूरवीर कहां जावेगा ३३ व मदमें मत्तहुआ बलदेव हलको धारण करनेवाला और गदाको धारण करनेवाला अब कहाँ जाता है ३४ ऐसे वह एकलव्य राजा कहके सिंह सरीखे शब्द से सबोंको आश्चर्य करताभया ३५ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २१०॥

दोसौछियासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं जब ऐसे प्रकार युद्ध करने से यदुओं की सेना नि-
वृत्तहोगई और भयभीत और हतहोगई १ व दीपक शांतहोगये और सब जगह
चुप होगये तब यादवों की सेनाजीतली ऐसा जानके २ वह महापराक्रमवाला
पौंड्रराजा अपनी सेनासे यह कहनेलगा कि तुम सब जल्दजाके इस द्वारकापुरी
को भालोंसे और कुठारों से और पत्थरों से जल्द छेदन करदेवो ३ व चारोंओर
राजा प्राप्त होजायँ और इस नगरी की ध्वजा और महलों को छेदन करदेवो ४
व यहांकी सबकन्या और दासियों को ग्रहण करलेवो ५ और मुख्य २ रत्नोंको
ग्रहण करलेवो और सब धनको खोसलेवो ऐसे वह राजा कहताभया फिर सब
राजा सुनके ऐसेही करेंगे ६ यह कहके पौंड्रककी आज्ञासे चारोंओर महलों को
और ध्वजाओंको छेदन करनेलगे ७ व जब वे सब राजा पत्थरोंको छेदन करने
वाला टंकशस्त्रसे ध्वजा आदिकों को काटनेलगे तब महान् शब्द होताभया ८
व पूर्वके दरवाजों के महलों को छेदन करने के शब्दको सात्यकि यादव सुनके
क्रोध में मूर्च्छितहोताभया ९ व यह विचार करनेलगा कि यादवोंका ईश्वर श्री-
कृष्ण मेरे भरोसे सबकुल सौंपके कैलास पर्वतमें शिवको देखने गया है १० सो
अवश्य यह द्वारकापुरी मेरेही से रक्षित होनीचाहिये ऐसे मनसे चिन्तवन करके
जल्द धनुषको ग्रहणकर ११ व बड़े रथमें बैठ और वह रथ दारुकके पुत्रसे रचा
हुआ था और उसरथका सारथी वह दारुकका पुत्र आपही होताभया १२ और
तिस महान्धनुषको ग्रहणकर और सर्पके विषकेसमान उपमावाले बाणोंको ग्र-
हण करताभया और दृढकवच पहिनताभया १३ । १४ व अंगदी अर्थात् बाजूबन्द
को धारणकिये और कुंडली अर्थात् कुंडलोंको धारणकियेहुये और तूण, बाण,
धनुष, गदा, खड्ग इन्होंको धारणकर और श्रीकृष्णके वचनों को स्मरण करता
हुआ गर्वसे युद्धकेवास्ते चलताभया १५ पश्चात् दीपकों से प्रकाशित देशमें
वह सात्यकि प्राप्तहुआ और बलदेव भी गरुड़ध्वज रथमें बैठ १६ गदा और बाणोंको
धारणकर सिंहसरीखा शब्द करताहुआ और भयकर शब्द करताहुआ युद्धकी
इच्छाकरके प्राप्त होताभया १७ व बलवाला उद्धव भी हाथी पै चढ़के महाघोर
शब्द करता हुआ १८ व नीति विचारता हुआ और परम प्रसन्नहुये निशठमें

प्राप्त होनाभया और भी हार्दिक्य आदि सब यादव युद्धकी लालसाकरके १९ रथों पै और हाथियों पै बैठके और दीपकों से युक्तहुये २० व सिंहसरीखा शब्द करते हुये और केशव के वचनका स्मरण करते हुये पूर्व के दरवाजे प्राप्त होके यथायोग्य स्थित होनेभये २१ व पश्चात् दीपकों से प्रकाशित देशमें प्राप्त होके वह गदी और शर्गी चापी और तूणी ऐसा सात्यकि वीर वायुरूपी अस्त्रको लेके बाणमें युक्त करताभया २२ पश्चात् धनुषको कानपर्य्यंत तानके तिसको छोड़ता भया २३ फिर तिस वायुरूपी शस्त्रसे पराजितहुये सबराजा बायुके वेगसे निर्धूत हुये पौंड्रराजाके समीप जातेभये २४ व फिर वह सात्यकि वीर जहां वे राजा पहले स्थित होरहे थे २५ तहां सर्पसरीखा पैनाबाणलेके जल्द प्राप्तहोताभया और यह कहनेलगा २६ कि अब महाबुद्धिवाला पौंड्रराजा कहाँ है और मैं धनुषबाणों को लिये युद्धकेवास्ते खड़ाहूं २७ व जो मैं दुष्टात्मा नराधमको अब देखूं तो मार देऊं और मैं केशवका भृत्यहूं सो यहां पौंड्रके मारनेकी इच्छाकरे खड़ाहूं २८ व सब क्षत्रियोंके देखतेहुये तिसके शिरको छेदनकर गीध व श्वानोंके अर्थ बलिदेऊंगा। २९ व चोरकी तरह सब यादवोंके सोतेहुये ऐसा कर्म करताहै ३० सो यह राजा सर्वथा चोरहै और राजबलसे युक्त नहीं है यदि यह राजा समर्थहोवे तो ऐसा चोरीका कर्म नहीं करे ३१ सो बड़ाआश्चर्य है कि यह ऐसा चोरकर्म करताहै सो अब मैं इसको नहीं जानेदेऊंगा ३२ ऐसे कहके वह सात्यकि वीर हँसताभया व अपने दृढ़ धनुषपै बाणको चढ़ाताभया ३३ व पश्चात् वह पौंड्रराजा सात्यकिके वचनों को सुनके ऐसे कहनेलगा कि कहाँ है वह गोपालकृष्ण और अब कहाँ चलागया ३४ व स्त्रियोंके मारनेवाले और पशुओं के मारनेवाले ऐसे कृष्णको तू स्वामीभावसे सेवताहै व वह अब मेरे नामको ग्रहण करके कहाँ है ३५ [illegible] मेरे प्यारे नरकासुर को मारनेवालाहै सो इस युद्धमें मैं उसको मारूंगा [illegible] हे वीर तू चलाजा मुझसे युद्ध करनेलायक नहीं है यदि उदार है तो [illegible] बलको देख ३७ घोरबाणों करके तेरे शिरको काटूंगा व तेरे मारने के [illegible] रुधिर को यह पृथ्वी पीवैगी ३८ व वह गोपकृष्ण भी सुनेगा [illegible] भगगया ऐसे सुनने से तेरे अभिमानवाला वह कृष्ण भी [illegible] हे महामते हमने यह पहलेही सुनलिया है कि तेरे लिये [illegible] वह कृष्ण कैलास पर्वतमें गयाहै ४० सो हे सात्यकि वीर [illegible]

बाणको ग्रहणकर ४१ ऐसे कहके वह पौंड्र राजा बाणकोलेके युद्धकेवास्ते स्थित होताभया ४२ ॥ इतिश्रीमहाभारतेपौंड्रकवधेरात्रियुद्धेपडशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८६॥

दोसौसत्तासीका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहते हैं पश्चात् यादवों में श्रेष्ठ वह सात्यकि वासुदेव के स्मरण करतेहुयेकी तरह वचन कहनेलगा १ श्रीकृष्णको ऐसे वचन कहने को कौन युक्त है और जगत्के नाथको ऐसा वचन कहके कौन अधम नृप जीवने की इच्छाकरताहै २ सो हे पौंड्र ऐसे वचन कहतेहुये सर्वथा तुझको मृत्युप्राप्तहो रही है और ऐसा वचन कहतेहुयेकी तेरी जिह्वाके सौ टुकड़े करना चाहिये ३ व हे पौंड्रक इस तेरे शिरको कायासे नीचेगेरूंगा क्योंकि जो तू वासुदेव अपना नाम कररहाहै ४ व इतने तेरा शिरकटके पृथ्वी में गिरेगा इतने तू वासुदेव बना रह पश्चात् प्रात काल वही श्रीकृष्ण वासुदेव रहेंगे ५ इसमें सन्देह नहीं और हे दुरात्मन् सबजगत्का कर्त्ता जगन्नाथ देव एकही होवेगा इसमें संशय नहीं है ६ व हे पौंड्रक जो अब विष्णु भगवान् नहीं आवेंगे तो मैं इस तेरे शिरको काटूंगा ७ व अब तू अस्त्र वीर्य और बल सब मुझको दिखा और हे राजन् व तेरा कछु वीर्य नहीं है ८ सो तू सब अपना बल मुझको यत्नकरकेदिखा मैं यहां शर,चाप, गदा, खड्ग इन्हों को धारण किये सर्वथा खड़ाहूं ९ व यह नगर मायावी नहीं है यह बात मैं सत्य करके कहताहूं सो तुझ वासुदेव को देखके मैं सर्वथा कृतकृत्य हूं १० व तेरे अंगके छोटे २ टुकड़े करके श्वानों के वास्ते गेरूंगा ऐसे कहके वह सात्यकि तिस वासुदेवके प्रति बाण उठाताभया ११ व पश्चात् कानतक धनुषको खींचके पैने २ बाणों से तिस राजाको बींधताभया पश्चात् प्रतापवाला वह पौंड्र राजा १२ सात्यकि से बींधाहुआ पैने २ नव बाणों से सात्यकि को बींधताभया और बहुतसा शब्द करताभया १३ व पश्चात् वह ऐश्वर्य्यवाला वासुदेव राजा पैने बाणको धारणकरके फिरसात्यकि यादवके मारताभया १४ व रात्री में अपने पुरुषों को प्रसन्न करताभया पश्चात् तिस बाणसे बिंधाहुआ वह १५ सात्यकि मस्तक की जगह दृढ लगने से दुःखी होगया और निश्चेष्ट की तरह होनेलगा १६ व पश्चात् वह पौंड्र राजा सात्यकि के दशबाण मारताभया और पचीसबाण तिसके सारथी के मारताभया और चारों घोड़ोंको मारताभया १७ फिर वे घोड़े

और वह सारथी रुधिरमें आसक्त हुये वासुदेवके देखतेहुये विह्वल होगये १८ व
पश्चात् वह वासुदेव अपने रथ में बैठाहुआ सिंहसरीखा शब्द करताभया तिस
शब्दसे सात्यकि बोधसे रहित होगया। १९ पश्चात् वह विद्वान् और महापराक्रम
वाला सात्यकि तिसप्रकार घोडों को और सारथि को देख क्रोधकरता २० यह
कहनेलगा कि सब तेरे पराक्रम को देखूंगा ऐसे कह बाणको धारणकर पश्चात्
तिस राजाकी छाती में मारताभया २१ फिर तिस बाणके लगनेसे वह वासुदेव
राजा तिस युद्धमें चलायमान होगया और छाती से घोर रुधिर बहनेलगा २२
रथके उपस्थ भाग में ऐसे गिरताभया कि जैसे तडफता हुआ सर्प गिरे और
कृत्य को भी नहीं जानता दुःख को प्राप्त होगया २३ पश्चात् वह सात्यकि दश
बाणोंसे रथको भालासे तिसकी ध्वजाको छेदन करताभया २४ व बाणों करके
चारों घोड़ों और सारथिको मारताभया पश्चात् सारथीके संग वह सात्यकि युद्ध
करताहुआ २५ तिस सारथिके शिरको कायासे नीचे गेरताभया और तिसके
रथकी ग्रन्थीको छेदन करताभया और घोडे मृत्यु को प्राप्त होतेभये २६ वेगसे
दश बाणोंकरके तिसके चक्रके टुकडे करताभया ऐसे करके फिर वह सात्यकि
वासुदेव को बहुतसा हँसने लगा २७ पीछे यादवों को आनन्द देनेवाला वह
सात्यकि सब क्षत्रियों के देखतेहुये २८ शब्दकरके जल्द ७० सत्तर बाणोंकरके
तिस राजाको पीड़ा देताभया और वे बाण टीड़ियों के आकारहुये तिसके चारों
तरफ गिरतेभये २९ शिर पार्श्व पीठविषे और आगे बाणोंका वनकीतरह समूह
होगया ३० जैसे मनस्वी तपस्वी विरक्त हुआ खड़ाहो ऐसे वह पौंड्रकराजा ख-
ड़ाहोताभया पश्चात् बलवाला वह वासुदेव राजा क्रोध करताभया ३१ धनुष
को ग्रहणकरके युद्धमें सात्यकिको बाधादेनेलगा और आताहुआ सात्यकि को
बींधताभया ३२ पश्चात् तिस धनुषसे विंधाहुआ वह सात्यकि पौंड्रके धनुषको
पांच बाणों से छेदन करता सिंहसरीखा शब्द करनेलगा ३३ फिर वासुदेव गदा
को ग्रहणकर पैरोंतक भ्रमा जल्द सात्यकि की छाती में मारता भया तब ३४
वह सात्यकि बायें हाथमे तिस गदाको खींचके अपने बाण को ग्रहणकर तिस
पौंड्र राजाको पीडा देताभया ३५ पश्चात् वासुदेवराजा तिस बाणको बीचमें पकड़
के दश शक्तियोंकरके सात्यकिको हनन करताभया ३६ पश्चात् निन्दोंसे घिरा
हुआ सात्यकि जल्द धनुषको छोड़के हाथमें गदाको धारण करताभया ३७॥
इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायां[illegible]वासुदेव[illegible]नामाध्यायः ८४।

दोसौअट्ठासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात् गदाको हाथमें लिये वह यदुनन्दन सात्यकि क्रोधकरके तीक्ष्णगदा से वासुदेव को मारताभया १ और वह वासुदेव अपनी गदाकरके सात्यकिको हनन करताभया इसप्रकार युद्ध करतेहुये वे दोनों शूरवीर शोभित होतेभये २ जैसे वनमें आपस में मारने की इच्छा करके सिंह युद्ध करतेहों ऐसे उन्होंकी शोभा होतीभई ऐसे युद्धकरतेहुये सात्यकि क्रोधकर तिसके बायें तरफ आताभया ३ फिर वह वासुदेव दाहिने आयाहुआ सात्यकि को अपने स्तनों के बीच में करके पीडा देताभया फिर दोनों युद्ध करनेलगे और सात्यकि तिसको बाहुओं के बीच में पीड़ा देनेलगा ४ फिर अच्छीतरह पीडितहुआ वह राजा गोडोंके तान पृथ्वी में गिरताभया पश्चात् खडाहोके सात्यकिके मस्तकमें गदा मारताभया ५ पश्चात् तिस गदासे कछुक पीडितहुआ सात्यकि पौंड्रराजाको गदासे हनन करताभया ६ तब वासुदेव बली राजा साक्षात् दूसरे मृत्युकी तरह नेत्रोंसे जलाता हुआ सात्यकि यादवको गदासे हनन करताभया ७ फिर वह सात्यकि तिस गदा के लगने से ताड़ितहुआ पृथ्वी में गिरताभया जैसे अन्तकालकी मृत्युसे ८ गिरे पीछे सज्ञाकोप्राप्तहो अपनेहाथों से तिसकी गदाको पकड ९ लोहाकी तिस भारीगदा के टोटुकड़े करताभया और उछल के सिंहसरीखा शब्द करताभया १० पश्चात् वह वासुदेव भी उछल के बायेंहाथ से सात्यकि को पकड के दाहिनेहाथ की ११ और मुष्टि बांधके वासुदेवराजा सात्यकि के स्तनों के बीचमें मारताभया १२ पश्चात् वह यादवों में उत्तम सात्यकि अपनी गदाको त्यागकर पीछे हाथके तलवे से वासुदेव को हनन करताभया १३ पश्चात् वह वासुदेवराजा अपने हाथ के तलभाग से मारताहुये प्रहार करताभया इसप्रकार उन दोनोंका तलयुद्ध महान् होताभया १४ गोड़ोंसे गोडे भिडानेलगे बाहुओं से बाहु भिड़ाते भये शिरसे शिर भिड़ाते भये छाती से छाती भिड़ाते भये १५ हाथों से हाथ भिडातेभये और पैरों के तलवों को भिड़ानेका ऐसा शब्द होताभया १६ जैसे वनमें दो वृक्षों के घर्षण से अग्नि उत्पन्नहोके महान् शब्द होताहो तैसे और पौंड्रक और सात्यकि ये दोनों महाबली १७ तिस रात्री में शस्त्रों को त्यागके इसप्रकार युद्धकरने लगे कि जैसे अदृश्य हो

में मल्ल मल्लयुद्ध करतेहों १८ दोनुओं की सेना सशयको प्राप्तहो कहनेलगी कि क्या सात्यकि शूरवीर हत होजायगा आश्चर्य है १९ हम यह प्रश्न करते हैं कि क्या वासुदेव हत होजायगा आपस में वधकरने की इच्छावाले २० महावीर ये दोनों युद्धकरतेहुये स्वर्ग में प्राप्तहोवेंगे अन्यथा ये युद्ध से हटेंगे नहीं २१ आश्चर्य है कि इन शूरवीरोंमें बडा धैर्य है येही लोकमें महाबलवाले और महाप्रकृतिवाले हैं २२ घोरयुद्ध तो देवता और राक्षसोंकाभी हुआ सुनाहै पर ऐसा युद्ध सुना न देखाहै २३ ऐसे दोनों सेनाओं के मनुष्य आपसमें तिस रात्री के दारुण युद्धको देखके कहतेथे २४ पश्चात् वे शूरवीर अपनी अपनी बाहुओंकरके क्रोधसे गिरते भये और फिर सात्यकि वासुदेवराजा के दशमुष्टि मारताभया २५ पांच मुष्टियों करके पौंड्रराजा सात्यकि को मारताभया ऐसे तिन्हों का चटचटा शब्द ब्रह्माण्डको क्षोभकराने २६ व सबको आश्चर्य करानेयोग्य प्रकटहोताभया २७॥

इतिमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांपौंड्रकसात्यकिवासुदेवयुद्धेअष्टाशीत्यधिकद्विशतोऽध्याय ॥

दोसौनवासीका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं इस कालके अनन्तर एकलव्य नामवाला निषादों का पति राजा बलदेवको देख जल्द धनुषको धारण करके १ दशबाणों करके तिसके धनुषको सब क्षत्रियों के देखतेहुये छेदन करताभया २ व दशबाणों से सारथिको मार तीन बाणों करके रथको छेदनकर भालासे ध्वजाको छेदन करताभया ३ फिर वह एकलव्य निषाद अन्य बड़े धनुषको लेके तिस में दृढ १० ताल प्रमाणवाला ४ ऐसा बाण धारणकर बलदेवको तिस बाण से बाधा देता भया तब महापराक्रमवाला वह बलदेव भी शेषनाग की तरह श्वास लेताहुआ ५ पृथ्वी के समान भारवाले दशबाणों से तिसके धनुष को मुष्टि देश से तोडता भया ६ फिर वह एकलव्य निषाद जल्दही पैनी और घोर खड्ग को ग्रहणकर बलदेवको हनन करनेलगा ७ पश्चात् वह बलदेव तिस खड्गके पांच बाणों करके टुकड़े करताभया ८ फिर वह एकलव्य राजा दूसरा महान् खड्गको लेके बलदेव के सारथीको बाधा देताभया ९ पश्चात् यादवों में श्रेष्ठ मधुवनमें होनेवाला वह बलदेव दशबाणों करके तिसकी बाहुओं के मध्यमें बाधा देताभया १० पश्चात् वह राजा घण्टा और माला से युक्तहुई शक्ति को बलदेवके सामने फेंकताभया ११

व सिंह सरीखा शब्द करताभया वह फेंकीहुई शक्ति बलदेव के सामने आती भई १२ पीछे प्रतापवाला वह बलदेव पड़तीहुई तिस शक्तिको देख सबको आश्चर्य करातेहुये की तरह १३ तिस शक्तिको अपने हाथमें थामके उलटी तिस एकलव्य राजाकी छाती में मारताभया फिर वह शूरवीर राजा अपनी शक्तिसे ताडितहुआ १४ सब गात्रों में विह्वल होनाभया पृथ्वी में गिरताभया और बलदेव से ताड़ितहुआ वह निषाद प्राणों के संशयमें होगया १५ पश्चात् तिसके सैकड़ों हजारों निषाद और अट्ठासी हजार तिस राजा के योद्धे १६ गदा खड्ग महा बाणोंको धारण किये महाबलवाले १७ अनेक पट्टिश शस्त्र शक्ति फरसा गदा शूल परिघ प्रास तोमर करौत कुठार इन शस्त्रोंको भी धारण कियेहुये १८ वे सब निषाद बलदेव के ऊपर ऐसे प्राप्त होतेभये कि जैसे जलतीहुई अग्निविषे टीड़ी गिरपड़े और वह बलदेव ऐसे प्रकाशित है १९ कि जैसे दूसरा रामचन्द्र होवे पश्चात् वे निषाद कईक तो कुहाड़ों से कईक करौतों से २० कईक फरसाओं से कईक गदासे शक्तिसे बलदेवको एकवार मारने लगे २१ तब वह साक्षात् हलवाला बलदेव अपने हलसे सबको आकर्षण कर २२ और मूसल करके पीड़ा देताभया पश्चात् हननहुये वे पर्वतके समान निषाद २३ सैकड़ों हजारों पृथ्वी में गिरते भये पश्चात् तिन्हों को अपने बाणसे हननकरके २४ सिंहसरीखा शब्द करताहुआ तिसी जगह स्थितहोगया पश्चात् तिसरात्रीमें २५ मासके खानेवाले महाघोर भूत पिशाच प्रकट होतेभये और तिन्होंका मास खानेलगे और मुर्दा के कोठेको छेदन कर रुधिर पीनेलगे २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभगवत्प्रविष्यपर्वेभाषायामेकलव्यसैन्यवधेऊनद्विशततमोऽध्यायः॥

दोसौनव्वेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे तिससमय वे स[illegible] [illegible]ोंको भ[illegible]
और हँसतेहुये महान्शब्द [illegible] १ बहु[illegible] [illegible] वे
रदोंको शिखापर्यंत [illegible] २ व [illegible] वे तिस
करतेभये काक, बगुले, [illegible]
भक्षण करतेहुये विचरने [illegible]
अनन्तर वह एकलव्य

को देख फिर गदालेके क्रोधसे बलदेवके प्रति आताभया ५ फिर आके बलदेव को शत्रु जानके मारताभया ६ पश्चात् वह मदसे युक्तहुआ बलदेव अपनी गदा तिस निषाद के मारताभया इसप्रकार उनदोनों से तुमुलयुद्ध होताभया ७ और तिन्हों के युद्धका शब्द आकाश में होताभया जैसे कल्पके नाशमें समुद्रों की झालका शब्दहोवे ८ शेषनाग क्षोभित होताभया पाताल में नागक्षोभित होते भये ९ पृथ्वी और आकाश तिस शब्द से सब भरपूरहोगया तब रणके जानने वाला वह पौंड्रराजा सात्यकि यादवको १० अपनी गदासे बाधादेनेलगा और सात्यकि तिस पौंड्रको बाधादेनेलगा ११ ऐसे आपसमें वधकी इच्छा करनेवाले उनदोनों का तुमुलयुद्ध होताभया १२ ब्रह्मांड में दारुण शब्द होताभया पश्चात् युद्ध करतेहुये धूल प्रकटहोनेलगी १३ तारागण कान्तिसे रहितहोगये अंधेरा का नाशहोगया व प्रात काल दीखनेलगा १४ सूर्यभगवान् उदय होताभया चन्द्रमा क्षयको प्राप्तहोताभया १५ तब तिनकी चारबाहुओंका दारुणयुद्ध होनेलगा १६ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांपौंड्रकवधेनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २०० ॥

दोसौइक्यानबेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे पश्चात् जब प्रभातहोगया तब देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण भगवान् बदरिकाश्रम से द्वारकापुरी में आनेकी इच्छाकरतेभये १ फिरसब मुनियों को नमस्कारकर गरुडपैचढ फिर महान् वेगसे चलनेभये पश्चात् द्वारका पुरीको आतेहुये २ श्रीकृष्ण तिनके युद्ध का महान् शब्द सुन यह चिन्तवन करनेलगे कि यह क्या शब्द होरहा है ३ फिर विचारते भये कि पौण्ड्रक राजा द्वारकापुरी को आके प्राप्त हुआ है सो अवश्य तिससे सब सात्यकि का युद्ध होरहा है ४ यादव शूरवीरों के युद्धका यह शब्द है इसमें कुछ सन्देह नहीं ५ ऐसे चिन्तवन करके फिर वह श्रीकृष्ण भगवान् यादवोंको प्रसन्नता करताहुआ महान् शब्दवाले अपने पाञ्चजन्य शङ्खको बजावताभया ६ तिस शङ्ख के शब्द से पृथ्वी और आकाश को पूर्णकरताभया पश्चात् वे यादव तिस शङ्ख के शब्द को सुन ७ ऐसे माननेभये कि निश्चय यह श्रीकृष्ण भगवान् आते हैं ८ और सब यादव निर्भय होगये फिर तिसीक्षणमें अम्बरमें उदयके आताहुआ गरुडको देख ९ फिर देवकी के पुत्र श्रीकृष्णको देखनेभये और तिस श्रीकृष्ण के आगे

सूत, मागध पुरोहित ये आतेभये १० पश्चात् कमल सरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण भगवान्की स्तुति करनेलगे और सब यादव श्रीकृष्णके पीछे २ गमनकरनेलगे ११ पश्चात् श्रीकृष्ण गरुडके प्रति कहतेभये कि तू स्वर्गलोकको जा ऐसे विसर्जन करतेभये १२ व दारुक सारथिको यह आज्ञा देते भये कि तू रथलेआ फिर वह सारथि उसीक्षण रथको लाताभया १३ व यह कहनेलगा कि हे भगवन् हे देव यह रथहै मुझको क्या करना चाहिये ऐसे कह प्रणाम कर भगवान्के आगे खड़ा होताभया १४ पश्चात् गरुडके जानेकेबाद श्रीकृष्ण रथमें जल्द बैठ जहां वह युद्ध होरहाथा तहां जातेभये १५ व पांचजन्यमहाशङ्ख बजातेभये १६ तब पौण्ड्रराजा यह कृष्णहै ऐसे देखके रणकी लालसा करताहुआ सात्यकिको पीछेके श्रीकृष्णके सामने आताभया १७ फिर वह सात्यकि क्रोधसे तिस पौण्ड्रराजाको निवारण करताहुआऐसे कहनेलगा कि हे राजन् इसयुद्धसे तुझे जाना नहीं चाहिये यह सनातनधर्म नहीं है १८ । १९ । २० हे राजन् मुझे जीतके दूसरेसे युद्ध करनेजा तू क्षत्रियहै और मैंतेरे आगे स्थितहूं २१ इस तेरे सागरका क्षय मैं युद्धमें करूंगा ऐसेकहके वह सात्यकि तिस राजाके आगे खड़ा होताभया २२ तब श्रीकृष्णको देखतेहुये वह पौण्ड्र राजा सात्यकिको त्याग श्रीकृष्णके सामने जाताभया २३ पश्चात् वह सात्यकि तिस राजाको झड़कके क्रोधमें मूर्च्छित हुआ श्रीकृष्णके देखतेहुये गदाका प्रहार करताभया २४ तब श्रीकृष्ण भगवान् यथा प्राण और यथायोग सात्यकि को सत्य पराक्रमवाला देखके प्रशंसा करनेलगे २५ और पश्चात् सात्यकिको निवारण करतेहुये ऐसे कहतेभये २६ कि इसको इन्द्रयुद्ध करनेदे इसप्रकार कृष्ण के निवारण करने से वह सात्यकि निवृत्त होगया २७ पश्चात् वह पौण्ड्रराजा श्रीकृष्णके प्रति कहनेलगा हे यादव गोपाल अब तू कहां चलागया मैं वासुदेवहूं तेरे को देखने आयाहूं २८ हे कृष्ण तुझको मैं सेना सहित मारके फिर पृथ्वी में वासुदेव रहूंगा २९ हे गोविंद जो तेरे महान् विख्यात सुदर्शनहै सो यह इस मेरे चक्रसे पीड़ितहोगा और तेरे जो चक्रका अभिमानहै उसको मैं अब नाश करूंगा मुझको तुम शार्ङ्गधनुषवाला जान और यही शार्ङ्ग भूत विशेषण है ३० हे जनार्दन मैं शार्ङ्ग और गदी हूं नहीं जाननेवाले शूर वीर मुझकोही कहते हैं ३१ तू पहले बिना यत्नवाले वृद्ध स्त्री बकुनमें नाग के न्होंको मारके और गौओंको मारके महान् गर्व को प्राप्तहुआहै ३२ सो मैं सब

गर्वको मैं छेदन करूंगा यदि मेरे आगे तू स्थित होवेगा हे गोविंद जो तू युद्ध करनेमें समर्थ है तो मेरे शस्त्रको ग्रहण कर ३३ ऐसे कहके वह पौण्ड्रराजा जगत् के पति श्रीकृष्णके समीप खड़ाहुआ अपने बाण को चढ़ाताभया ३४ पश्चात् श्रीकृष्ण तिसके ऐसे वचन सुन तिस राजा के प्रति यह कहनेलगे कि हे नृप मैं सदा पातकीहूं तू मुझको इच्छापूर्वक कह ३५ मैं गोघातीहूं बालघातीहूं स्त्री हन्ताहू और हे नृप सर्वथा तू चक्री गदी और शार्ङ्गीहोजा ३६ मेरेनाम वासुदेव शार्ङ्गी चक्री गदी और शङ्खी येभी वृथाहैं ३७ परन्तु हे राजन् मैं कुछ कहताहूं तू सुन जो कि बलवान् क्षत्री मेरे जीवतेहुये तुझको मेरी तरह कहते हैं सो तेरा चक्र महाघोर असुरोंका नाश करनेवाला ३८ ऐसा मेरे चक्रके वृत्त अर्थात् गुलाई में है और पराक्रममें नहीं सब शस्त्रोंमेंभी नामकी सादृश्यताहै ३९ हे राजन् मैं सर्वदा गोपहूं अर्थात् सब प्राणियोंको प्राण देनेवाला रक्षक दुष्टको शिक्षादेने वालाहूं ४० सो हे नृपाधम तुझको जीत के मेरा कथन करना चाहिये तू मेरे जीते विना शस्त्रवाला मेरे आगे क्या कथन करता है ४१ हे पौण्ड्रराज यदि तू समर्थ है तो मुझको मारके कुछ कहना मैं चक्र धनुष गदा खड्ग इन्होंको धारण किये रथमें बैठा तेरे आगे खड़ाहूं ४२ तू रथमें बैठके इसयुद्धमें युक्तहो ऐसे कहके श्रीकृष्ण भगवान् सिंहसरीखे शब्दको करतेभये ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिश्रीमभविष्यपर्वभाषायांकृष्णपौण्ड्र
युद्धेएकनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २०१ ॥

दोसौबानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहनेलगे पश्चात् श्रीकृष्ण अपने धनुष को धारण कर पैने बाणसे पौण्ड्रराजाको हनन करते भये १ फिर पौण्ड्रराजा सौबाणों करके यदुओं में श्रेष्ठ श्रीकृष्णको हनन करताभया २ व पच्चीस बाणोंसे दारुक सारथीको हनन करताभया और दशबाण घोड़ों के मारताभया सत्तरबाण श्रीकृष्ण के मारता भया ३ पश्चात् केशव भगवान् हँसके यह पौण्ड्रराजा अपने मनमें प्रसन्न होरहाहै ऐसे जानके ४ अपने शार्ङ्गधनुषको उठाके फिर पैनेबाण से तिसकी ध्वजा को छेदन करताभया ५ सारथीका शिर कायासे नीचे गिरताभया चार बाणोंकरके चारोंघोड़ों को मारताभया ६ पश्चात् श्रीकृष्ण तिस राजा के रथ को छेदन कर

समीपके दोनों सारथियोंको मार तिसके चक्रके टुकड़ेकर फिर कहते हुए खड़े होगये ७ फिर पौंड्रराजा रथसे नीचे कूदके पैना खड्गको ले केशवके मारता भया ८ फिर श्रीकृष्ण तिस खड्गके सौ टुकड़ेकर चुपहोगये ९ पश्चात् वह राजा कालसमान महाघोर परिघ शस्त्रको उठाके सब क्षत्रियों के देखतेहुये यादवों में शूरवीर श्रीकृष्ण के मारताभया १० फिर जगत्‌केनाथ श्रीकृष्ण तिसके भी दो टुकड़े करते भये फिर वह राजा हजार पैंखड़ियों वाला ११ महाघोर नीमगार लोहाका बनाहुआ शत्रुका मारनेवाला ऐसाचक्र उठाके श्रीकृष्ण के प्रति यह वचन कहनेलगा १२ कि तू इस पैने महाघोर मेरे चक्रको अपने चक्रका नाश करनेवाला देख हे गोविंद इस करके तेरा अभिमान मैं खण्डित करूंगा १३ हे कृष्ण यह चक्र तेरेहीवास्ते है हे हरे जो तू समर्थ है १४ तौ इसको महान् स्थान रूपको विदारणकर ऐसे कहके पौंड्रराजा तिस चक्रको सौगुना भ्रमाके १५ श्रीकृष्ण के प्रति फेंकताभया और महापराक्रमवाला वह पौंड्रराजा १६ तिस जगह से कूदके अन्यजगह उछलके स्थित होगया और सिंहसरीखा शब्द करताभया फिर देवकी के पुत्र श्रीकृष्णभगवान् विस्मयको प्राप्तहो १७ यह मानताभया कि अहो इस पौंड्रराजाका आश्चर्य धैर्य दुस्सहहै ऐसे विचारके रथसे नीचे उतरगया १८ पश्चात् वह पौंड्रराजा श्रीकृष्णके प्रति शिलाको फेंकताभया फिर श्रीकृष्ण तिसी शिलाको उलटी तिस पौंड्रराजा के सामने फेंकतेभये १९ ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् तिस पौंड्रराजाकेसंग बहुतबार क्रीड़ाकर फिर रक्तकाभोजन करनेवाला २० पैना दैत्यों के माससे बढ़ाहुआ अग्निवाला नारियों के गर्भको छुटानेवाला सुवर्णमय घोर दैत्योंका नाश करनेवाला २१ हजार पैंखड़ियोंवाला दैत्यों को भय दिखानेवाला अद्भुत परम ऐश्वर्यवाला देवताओं से नित्य पूजित २२ ऐसे अपने सुदर्शनचक्र से पौंड्रराजा को मारतेभये २३ और मासका भोजन करने वाला वह चक्र तिस राजाकी देहको फाड़ फिर सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के हाथमें आता भया २४ फिर वह पौंड्रराजा प्राणों से हीनहुआ पृथ्वी में गिरताभया पश्चात् दु- र्जेय गतिवाले विष्णुभगवान् यादवोंसे पूजितहुए २५ सुखसे अर्थात् द्वारका पुरी में प्रवेश होतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणि ... ... विष्णुपर्वणि ... अध्याय: १२२ ॥

दोसौतिरानबेका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं फिर बलदेव तिस एकलव्य निषादराजा को शक्ति करके छाती की जगह हनन करताभया और सिंहसरीखा शब्द करताभया १ पीछे वह निषादों का पति क्रोधकरके अपनी गदासे बलदेव को हनन करता भया २ फिर तिससे आहतहुआ बलदेव अपनी दोनों भुजाओंसे प्राणोंकोनाश करनेवाली महाघोर ऐसी आवती हुई तिस गदा को पकड़ताभया पश्चात् वह एकलव्य निषाद मकरालय समुद्रके प्रति भाजताभया ३ पश्चात् भाजता हुआ तिस राजाके पीछे २ बलदेव भी भाज के जहां रहगया तहांहीं प्राप्त होतेभये ४ फिर वह निषाद समुद्र में प्रवेशहोके भयभीतहुआ पांचयोजन जलके भीतर ५ अन्यद्वीपमें जाके प्राप्तहोगया फिर वह बलदेव इसप्रकार तिस निषादको जीत के ६ सात्यकिके युद्धसे संसक्तहुई मणि रत्न इन्होंसे युक्त ऐसी यादवोंकी सभा में वह हलायुध अर्थात् बलदेव प्रवेश होतेभये ७ और तहां अन्य बहुतसे यादव यथायोग्य बैठेहुये तिस वक्त श्रीकृष्ण भगवान् सब यादवों को यथायोग्य सराहके फिर यह वचन कहनेलगे ८ कि हमने कैलाश पर्व्वत देखा तहां नील और रक्तवर्ण शिवजीदेखा फिर हे यदुवों में श्रेष्ठो प्रसन्नहुआ वह शिवजी मेरे को वरदेताभया ९ तहां देवता और तपोधन अर्थात् तपरूपी धर्मवाले मुनि ये भी आये और शिवजी प्रसन्नहुआ मेरी स्तुतिकरके मुझको प्राप्त होताभया १० हे यादवो तहां मैंने रात्रिको एक अति आश्चर्य देखा कि दो महाघोर पिशाच मेरी कथाको कहतेहुये सदामेरा चिन्तवन करतेहुये ११ मृगोंका शिकार सेवते हुये विचररहे थे फिर वे मुझ को देख प्रसन्नहुये तपस्वीहुये १२ भक्तिसे नम्रहुये महात्माहुये मुझको प्रणाम करतेभये पश्चात् मैं सब तरह प्रसन्नहुआ तिन्हों को स्वर्गमें प्राप्त करताभया १३ और शिवजीको प्रसन्न कर फिर यहां प्राप्तहुआहूं १४ वैशम्पायनजी कहनेलगे पश्चात् वे सब यादव श्रीकृष्ण की प्रशंसा करतेभये और केशवके आश्रयहुये सर्वथा कृतकृत्य होगये १५ पीछे सब यादव अपने २ घरोंको जातेभये और श्रीकृष्ण भगवान् अपने महलोंमें प्रवेशहो १६ रुक्मिणी और सत्यभामा इन दोनों रानियों के आगे जो २ वृत्तान्तहुयेथे सो सब कहते भये फिर वे दोनोंरानी केशवसे युक्तहुई प्रसन्नहोतीभई १७ वैशम्पायनजी राजा

समीपके दोनों सारथियोंको मार तिसके चक्रके टुकडेकर फिर कलुक हँसतेहुये खडे होगये ७ फिर पौंड्रराजा रथसे नीचे कूदके पैना खड्गको ले केशवके मारता भया ८ फिर श्रीकृष्ण तिस खड्गके सौ टुकडेकर चुपहोगये ९ पश्चात् वह राजा कालसमान महाघोर परिघ शस्त्रको उठाके सब क्षत्रियों के देखतेहुये राजा में शूरवीर श्रीकृष्ण के मारताभया १० फिर जगत्केनाथ श्रीकृष्ण तिसके भी दो टुकडे करते भये फिर वह राजा हजार फैंसड़ियों वाला ११ महाघोर तीक्ष्ण लोहाका बनाहुआ शत्रुका मारनेवाला ऐसाचक्र उठाके श्रीकृष्ण के प्रति यह वचन कहनेलगा १२ कि तू इस पैने महाघोर मेरे चक्रको अपने चक्रका नाश करनेवाला देख हे गोविंद इस करके तेरा अभिमान में खण्डित करूंगा १३ हे कृष्ण यह चक्र तेरेहीवास्ते है हे हरे जो तू समर्थ है १४ तो इसको महान् स्थान रूपको विदारणकर ऐसे कहके पौंड्रराजा तिस चक्रको सौगुना भ्रमाके १५ श्री कृष्ण के प्रति फेंकताभया और महापराक्रमवाला वह पौंड्रराजा १६ तिस जगह से कूदके अन्यजगह उछलके स्थित होगया और सिंहसरीखा शब्द करताभया फिर देवकी के पुत्र श्रीकृष्णभगवान् विस्मयको प्राप्तहो १७ यह मानताभया कि अहो इस पौंड्रराजाका आश्चर्य धैर्य दुस्सहहै ऐसे विचारके रथसे नीचे उतरगये १८ पश्चात् वह पौंड्रराजा श्रीकृष्णके प्रति शिलाको फेंकताभया फिर श्रीकृष्ण तिसी शिलाको उलटी तिस पौंड्रराजा के सामने फेंकतेभये १९ ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् तिस पौंड्रराजाकेसंग बहुतवार क्रीड़ाकर फिर रक्तकाभोजन करनेवाला २० पैना दैत्यों के मांसमें रद्दाहुआ अग्निवाला नारियों के गर्भका लूटनेवाला सुवर्णमय घोर दैत्योंका नाश करनेवाला २१ हजार फैंसड़ियोंवाला दैत्यों को भय दिखानेवाला अद्भुत परम ऐश्वर्यवाला देवताओं से नित्य पूजित २२ ऐसे अपने सुदर्शनचक्र से पौंड्रराजा को मारतेभये २३ और मांसका भोजन करने वाला वह चक्र तिस राजाकी देहको फाड़ फिर मरेंश्वर श्रीकृष्णके हाथमें आता भया २४ फिर वह पौंड्रराजा प्राणों से हीनहुआ पृथ्वी में गिरताभया पश्चात् द्विजेन्द्र गतिवाले विष्णुभगवान् यादवोंसे पूजितहुये २५ सुधर्मा सभा द्वारका पुरी में प्रवेश होतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वमणिभाषायांपौंड्रकवधोनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

दोसौतिरानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं फिर बलदेव तिस एकलव्य निषादराजा को शक्ति करके छाती की जगह हनन करताभया और सिंहसरीखा शब्द करताभया १ पीछे वह निषादों का पति क्रोधकरके अपनी गदासे बलदेव को हनन करता भया २ फिर तिससे आहतहुआ बलदेव अपनी दोनों भुजाओंसे प्राणोंकोनाश करनेवाली महाघोर ऐसी आवती हुई तिस गदा को पकड़ताभया पश्चात् वह एकलव्य निषाद मकरालय समुद्रके प्रति भाजताभया ३ पश्चात् भाजता हुआ तिस राजाके पीछे २ बलदेव भी भाज के जहां वहगया तहांहीं प्राप्त होतेभये ४ फिर वह निषाद समुद्र में प्रवेशहोके भयभीतहुआ पांचयोजन जलके भीतर ५ अन्यद्वीपमें जाके प्राप्तहोगया फिर वह बलदेव इसप्रकार तिस निषादको जीत के ६ सात्यकिके युद्धसे ससक्तहुई मणि रत्न इन्होंसे युक्त ऐसी यादवोंकी सभा में वह हलायुध अर्थात् बलदेव प्रवेश होतेभये ७ और तहां अन्य बहुतसे यादव यथायोग्य बैठेहुये तिस वक्त श्रीकृष्ण भगवान् सब यादवों को यथायोग्य सराहके फिर यह वचन कहनेलगे ८ कि हमने कैलाश पर्व्वत देखा तहां नील और रक्तवर्ण शिवजीदेखा फिर हे यदुवों में श्रेष्ठो प्रसन्नहुआ वह शिवजी मेरे को वरदेताभया ९ तहां देवता और तपोवन अर्थात् तपस्वी धर्मवाले मुनि ये भी आये और शिवजी प्रसन्नहुआ मेरी स्तुतिकरके मुझको प्राप्त होताभया १० हे यादवो तहां मैंने रात्रिको एक अति आश्चर्य देखा कि दो महाघोर पिशाच मेरी कथाको कहतेहुये सदामेरा चिंतवन करतेहुये ११ मृगोंका शिकार खेलते हुये विचररहे थे फिर वे मुझ को देख प्रसन्नहुये तपस्वीहुये १२ भक्तिसे नम्रहुये महात्माहुये मुझको प्रणाम करतेभये पश्चात् मैं सब तरह प्रसन्नहुआ तिन्हों को स्वर्गमें प्राप्त करताभया १३ और शिवजीको प्रसन्न कर फिर यहां प्राप्तहुआहूं १४ वैशम्पायनजी कहनेलगे पश्चात् वे सब यादव श्रीकृष्ण की प्रशंसा करतेभये और केशवके आश्रयहुये सर्व्वथा कृतकृत्य होगये १५ पीछे सब यादव अपने २ घरोंको जातेभये और श्रीकृष्ण भगवान् अपने महलोंमें प्रवेशहुये १६ रुक्मिणी और सत्यभामा इन दोनों रानियों के आगे जो २ वृत्तान्तहुयेथे सो सब कहते भये फिर वे दोनोंरानी केशवसे युक्तहुई प्रसन्नहोतीभई १७ वैशम्पायनजी राजा

से कहते हैं कि यह सब श्रीकृष्ण का चरित्र तेरेआगे हमने कहा है इसप्रकार श्रीकृष्ण सब पृथ्वीको महाबलवाले दुष्टोंको मारके शिक्षित करतेभये १८ और घोरकर्म करनेवाला नरकासुर पौंड्रराजा हयग्रीव, निशुम्भ मुर, अर्बुद इन सब दुष्टोंको मारके १६ फिर ब्राह्मणोंसे और मुनियोंसे पूजितहुये भगवान् रक्षा करतेभये ब्राह्मणोंके वास्ते धन और गोदान देतेभये २० अग्निहोत्र कर्मकरते भये और ब्रह्मचर्य करके ब्राह्मणोंको और मुनियों को तृप्त करतेभये देवताओं को अनेक प्रकारकी यज्ञोंकरके प्रसन्न करतेभये २१ सब पितरोंको स्वधा शब्द करके तृप्त करतेभये इसप्रकार तिनके राज्य करने के समय निष्कंटक राज्यहो-गया २२ और ब्राह्मण आदिक सब प्रजा सुखपूर्वक जीवतीभई २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतहरिवंशपर्वाणिभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकवधेत्रिनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २९३ ॥

दोसौचौरानबेका अध्याय ॥

जनमेजय प्रश्न करतेभये कि हे द्विजश्रेष्ठ वैशम्पायनजी महाराज मैं शङ्ख चक्र गदा इन्होंको धारण करनेवाले श्रीकृष्णके चरित्रों को फिर विस्तार पूर्वक सुननेकी इच्छा करताहूं १ भगवान् की कथा सुनतेहुये मेरी तृप्ति नहीं होती है देवताओं और चक्रके धारण करनेवाले ऐसे भगवान्के नामोंको सुनताहुआ २ रात्रि दिन स्मरण करताहुआ कौन तृप्तहोताहै जो हरिकी कथाका श्रवणहै यही एक पुरुषार्थ है ३ सो हे महाराज जगत्के हेतु श्रीकृष्ण का और हंस डिंभकइन्हों का युद्ध जगत्को विस्मय करनेवाला कैसे होताभया ४ और विचक्रदानव का युद्ध श्रीकृष्ण के संग होताभया क्योंकि वह दानव तिनका मित्रहुआ ५ ऐसे हमने सुनाहै ५ वे दोनों हंस,डिंभक शुक्राचार्यके शिष्य वेदोंमें सब शस्त्र विद्याओं में चतुर शूरवीर और सिंहजैसे पराक्रमवाले ६ ऐसे किसके पुत्र उत्पन्नहुये थे जिनके संग अट्ठासी हजार महाबलवाले दानवोंका ७ और विचक्र दानवकी सेना जोकि पैनी शूलको धारण करनेवाली तिसका महानयुद्ध युद्ध की इच्छा करनेवाले यादवोंके संग होताभया ८ वह विचक्र नामवाला दानव सदा देवताओंको जीतताहै ९ तब सदा विष्णु भगवान् उसका वध करते हैं १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने जनमेजयप्रश्नोनामचतुर्नवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २९४ ॥

दोसौपंचानबेका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं हे जनमेजय शाल्वदेशमें एक ब्रह्मदत्त नामवाला राजा होताभया जो पवित्र आत्मावाला सब भूतोंमें दया करनेवाला १ यज्ञकरने में तत्पर जितात्मा जितेन्द्रिय ब्रह्म और वेदको जाननेवाला शुभरूप ऐसा वह राजा होताभया २ जिसके दो रानी रूप उदारता और गुणों से युक्त होतीभई उन्हों के कुछ सन्तान पैदा नहीं भई ३ वह राजा उन्हों के संग इसप्रकार रमण किया करताथा कि जैसे इन्द्राणी के संग इन्द्र रमण करते हैं तिस राजाके मित्र-सहनामवाला ४ महायोगी वेद वेदान्त में तत्पर ऐसा एक ब्राह्मण मित्र होता भया सो वह भी राजाकी तरह अनपत्य अर्थात् संतानरहितथा ५ पश्चात् वह राजा उन रानियों के संगहुआ दश वर्षतक एकान्त मनमें शिवजीका पूजन करताभया ६ और वह ब्राह्मण वैष्णवयज्ञ करताभया ७ फिर तिस राजापै प्रसन्न हुआ शिवजी अपने रूपको स्वप्नमें देखाताभया और यहवचन कहताभया ८ कि हे राजन् तेरे ऊपर मैं प्रसन्न हुआ तेरा कल्याणहो तू वरमांग ९ ऐसे सुन वह राजा हँसताहुआ शिवजीसे यह कहताभया कि मेरे दो पुत्रहोवें पश्चात् महादेवजी तो अन्तर्द्धान होतेभये १० और वह राजा जागताभया और वहमित्र-सहनामवाला ब्राह्मण पांच वर्षतक भक्तिकर विष्णु भगवान्को पूजता भया ११ फिर वह देवोंका देव जनार्द्दन भगवान् पूजतेहुये तिस ब्राह्मणके वास्ते अपने नामके सदृश एकपुत्र देताभया फिर वे दोनों राजाकी नारी शिवजीके तेजरूपके गर्भको धारण करतीभई १२ और ब्राह्मणकी नारी विष्णु तेजको धारण करतीभई १३ पश्चात् वे राजाकी रानी तो शिवजी के तेजरूप दो पुत्रोंको जनती भई पश्चात् वह राजा तिन बालकोंको नामकर्म आदिक किया करताभया १४ और सब कुछ विधिवत् करताभया ब्राह्मणोंके वास्ते बहुत धन बांटताभया पीछे वह विनीतात्मा ब्राह्मण एक पुत्रको प्राप्त होताभया १५ पश्चात् भगवान् विष्णुकी तरह स्थिति उस पुत्रका जात कर्मादिक कर्म वह ब्राह्मण कराताभया १६ फिर वे दोनों राजाके कुँवर और वह ब्राह्मणका लड़का तीनों सुन्दर अंगवाले होते भये और सब वेदोंको पढ़तेभये व दंड नीतिको सुनते १७ धनुर्वेद तथा अन्य विद्यामें निपुण होतेभये और वह राजाका पुत्र बड़ा तो हंसनामसे प्रसिद्ध हुआ

और छोटा डिंभकनामसे विख्यातहुआ १८ वह ब्राह्मणका पुत्र जनार्द्दन ना
से विख्यात होताभया और वे सब बालक आपसमें मित्र होतेभये १९ ॥

इतिमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेपञ्चनवत्यधिकद्विशततमोऽध्याय

दोसौछानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहते हैं कि फिर हंस डिंभकनामवाले वे दोनों राजाके पु
शिवजीका तप करने की इच्छाकरके १ हिमवान् पर्व्वत में जातेभये वहांजा
हमारेवीर्य और अस्त्रविद्या हो ऐसे मनमें विचार के एकाग्रमनवाले होके नील
ग्रीव उमापति ऐसे शिवजी की तपस्या करनेलगे २ जल और वायुका आह
करने लगे ३ हे देवों के देव हे हर हे शिवानन्द हे शर्व नीलग्रीव हे उमाप
ऐसे रात्रि दिन ध्यान करनेलगे ४ हे वृषध्वज हे विरूपाक्ष हे हर्यक्ष हे जगत
पत हे भक्तप्रिय हे गिरिशेश हे वामदेव हे अच्युत ५ हे सद्योजात हे महादे
हे गुहाशय हे भुवनभावन हे भूतेश हे प्रणवात्मन् हे सदाशिव ६ इत्यादिक नामों
करके शिवजी की स्तुति करनेलगे और हृदयमें शिवजी का ध्यान करके नर
से शिवजी का तपकरनेलगे ७ ममता व अहंकारसे रहित मौनव्रत तपकरते
पांचवर्षतक शिवकातप करतेभये ८ पश्चात् तिन्होंकी तपस्या करनेमें शिवजी
प्रसन्नहोके व्याघ्रचर्म को धारण कियेहुये तिन्हों को दर्शन देतेभये ९ शूलको
धारणकिये और अर्धचन्द्रमा को मस्तकमें धारण कियेहुये ऐसे अपने रूपको
दिखातेभये १० पश्चात् वे दोनों शिवजी को देखके नमस्कार करतेभये ११ श्री
महादेवजी कहनेलगे जो तुम्हारी इच्छाहो सो वरमांगो तुम्हारा कल्याणहो ऐसे
सुनके फिर वे कहने भये कि जो तुम प्रसन्नहुये होतो १२ हमको पहलो प्रथम
यह वरदेवो कि देवता और दैत्य, राक्षस, गन्धर्व इन्होंकी सेनासे हम जीते नहीं
जावें १३ और दूसरा हमको यह वरदेवो कि भयंकर अस्त्रोंसे संयुक्त माहेश्वर
अस्त्र हमको देवो १४ और धनुषआदिसे छेदन न होनेवाला ऐसा हमको कव
चवरदेवो और सदा रक्षाकेवास्ते एक कम्पदेवो १५ हम जब युद्धमें जावें तब
हमको सहायक अनुचर देवो ऐसे सुनके फिर महादेव जी बोले १६ कि ऐसेही
होवेगा कुण्डोदर और विरूपाक्ष ये दोनों भूतेश रणके समय तुम्हारे अनुचर होवें
गे १७ ऐसे कहके शिवजी भगवान् तहां अन्तर्द्धान होगये १८ फिर शीघ्र से

सपन्नहुये वे दोनों हंस और डिभकनामवाले अस्त्रविद्या व धनुष विद्यामें तत्पर हुये १६ कवच को पहिनेहुये देवता और दानवों से जीतने में असमर्थ ऐसे वे राजाके पुत्र शिवजी में नित्य भक्ति करनेलगे २० नित्य शिवजीका उत्सव करना भस्मलगाना त्रिपुण्ड्र तिलक करना और जटा धारणकरेहुये २१ रुद्राक्ष की मालाओंसे युक्त व्याघ्रचर्मको ओढ़ेहुए नम शिवाय शान्ताय महादेवाय धीमते २२ इत्यादिक शिवजी के नामों से शिवजी की स्तुति करते हुए ऐसे वे दोनों साक्षात् शिवजीकी तरह प्रकाशित होतेभये २३ पश्चात् तिस तपस्या से निवृत्त होके अपने पिताकेघर आ पिता और माताके चरणों में गिरतेभये २४ इसीतरह महाबुद्धिवाला वह ब्राह्मणका पुत्र जनार्द्दनभी विद्याका पार करताभया २५ वह पीताम्बरधारी विष्णुकी उपासना ब्रह्मतत्त्व में तत्पर जितेंद्रियहुआ करताभया २६ पश्चात् वे दोनों हंस डिंभक कुनदार होतेभये अर्थात् उन्होंका विवाह होता भया और जनार्द्दनका भी विवाह होगया २७ फिर वे तीनों यज्ञमें और पञ्चयज्ञमें निरत होतेभये और अपनी स्त्री में रत और गुरुकी शुश्रूषा में रत होतेभये २८ धर्महीं परमश्रेयहै ऐसे मानतेभये २९ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेपञ्चनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २०६ ॥

दोसौसत्तानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि फिर किसीसमय वे दोनों जनार्द्दनसहित रथोंकरके और घोड़े हाथियों से युक्तहुये शिकार खेलने के वास्ते जातेभये १ फिर वन में जाके सिंह व्याघ्र आदिकों को मारनेलगे और तीक्ष्णबाणों करके वराह शूकरको मारतेभये २ सर्प मृग और हिंसकजीव इन्हों को मारतेभये व श्वानों करके युक्त हुये विचरते भये बड़े नेत्रोंवाला और विपुल शरीरवाला यह वाराह आताहै ३ यह सिंह चलाजाताहै इसको बाणसे छेदनकरो यह बड़े सींगोंवाला महिष आताहै ४ ये मृग अपने बच्चों के संग भागरहे हैं ये सफेद शूमे भ्रम रहे हैं ५ ये शूसों के बच्चे स्तन पीरहे हैं सो ये मारने नहीं चाहिये ये सब श्वानोंकरके रोकलेना चाहिये ६ इत्यादिक शब्दोंको कहतेहुए वे दोनों क्षत्रिय और व्याधों के भाजतेहुये ७ वनसे मृग व्याघ्र और सिंह इन्होंको मारके मध्याह्न में श्रमको प्राप्तहोगये ८ शिकार खेलने से तृषित इनको श्रम प्राप्तहोगया ऐसे कहके श्रेष्ठ

तलावके समीप जातेभये ६ मुनिगणों से सेवित और पक्षियों से शब्दित ऐसे तलावपै प्राप्तहोके श्रमसे सुखको प्राप्तहोते भये १० फिर अन्य सब मनुष्य तिस तलावमें गोतामारके कमलोंके और पद्मोंके कंद निकाल तिन्होंको भक्षण करतेभये ११ फिर जनार्दनके संगहुये वे दोनों हंस डिम्भक कहींक निसलता पै बैठके सब श्रमको त्यागतेभये १२ सुखपूर्वक तहां तलाव पै बैठेहुये मुनियों से कथन कियाहुआ परमब्रह्मको सुनतेभये १३ ऋषियों के वेदपाठ करनेकी श्रेष्ठ स्वरकी ध्वनिको सुन के प्रसन्न होतेभये १४ फिर मुनिकृत यज्ञदेखने की इच्छा करतेभये और अपनी सब सेनाको वहां स्थापित करतेभये १५ पश्चात् महापराक्रमवाले कईक शूरवीर बाणोंकोले के हंस डिंभक १६ और जनार्दन ये सबपैदल ही हुये कश्यपमुनिके आश्रममें वैष्णवयज्ञ देखनेको जातेभये १७ तहां कश्यपजी महाराज जपहोममें तत्पर मुनियोंके सङ्ग पूजन कररहेथे ऐसी वह यज्ञभी॥१८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने सप्तनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०७॥

दोसौअट्ठानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि फिर धर्मात्मा वह जनार्दन और हंस व डिम्भक तिस यज्ञके स्थानमें प्रवेशहोके मुनीश्वरों को प्रणाम करतेभये १ फिर आयेहुये तिन्हों को शिष्यों समेत वे सब मुनि तिन्हों की अर्घपाद्य आदिक पूजा करते भये २ पश्चात् वे दोनों राजा के कुंवर और वह जनार्दन ब्राह्मण का पुत्र तिस पूजाको ग्रहण करके प्रसन्नहुये आसनों पै बैठतेभये ३ फिर वह हंस नामवाला राजा का पुत्र तिन मुनियों के प्रति यह कहताभया कि हे मुनिश्रेष्ठो मेरापिता यज्ञकरनेको चाहताहै ४ सो तुमको तहां यज्ञमें चलना चाहिये हम राजसूययज्ञ करके दिग्विजय करके ५ फिर अपने पिता करके यज्ञका पूजन करवावेंगे सो हे विप्रेन्द्रो तुम वहां अपने शिष्यों समेत चलो ६ और हम अब निश्चय सबदिशाओंको जीतेंगे और हम सेनाओंके समूहको इकट्ठे करनेमें तत्परहैं ७ हमारे आगे स्थित होनेमें देवता और दानव भी नहीं हैं हमें शिवजीसे वरदान होरहा है ८ हम शत्रुओंसे जीतेनहीं जावेंगे ऐसे कहके वह हंसनामवाला राजा वहां विराम करनेलगा ९ मुनि कहते हैं हे नृपोत्तम जो ऐसेही है तो हम को संग

चलेंगे और अन्यथा नहीं है १० वैशम्पायनजी कहनेलगे फिर तहां से चलके पुष्कर से उत्तरदिशाकी तरफ जहादुर्वासा ऋषि तपरहाथा तहा चलनेकी इच्छा करतेभये ११ ब्रह्ममन्त्रका सेवन करतेभये ब्रह्मसूत्र पद में सक्त लोकोंमें तत्पर १२ ममता व अहंकारसे रहित कौपीन धारण कियेहुये ऐसे यतीजन तहा नियतहुये आत्मा और जगत्की योनि विश्वके ईश्वर १३ प्रभरूप शुभशात अक्षर सर्वतो-मुख वेदवेदान्त की मूर्ति अव्यक्त अनन्त शाश्वत शिव १४ नित्ययुक्त निरुपाम भूताधार अनामय ऐसे विष्णुदेवको मनकरके ध्यातेहुये १५ दुर्वासा ऋषि कर-के वेदांत शास्त्रके रसको जानके तत्त्वके निश्चयमे अपने चित्तको निर्मलकररहे १६ तहा हंस और परमहंस ऐसे दुर्वासाके शिष्य स्थिनहोरहे १७ तहा वे दोनों हंस डिंभकजाके फिर ऊर्द्धदाररेतस अर्थात् शुक्र जिसके प्राप्तहोरहा महाबुद्धि वाला पद २,को चीन्हताहुआ ऐसा दुर्वासाऋषि को देखतेभये १८ यदि यह दुर्वासाऋषि क्रोध में युक्तहोजावे तो तीनलोकों को दग्धकरने में समर्थ है १९ जिस क्रोधहुये को देवते भी देखने में समर्थ नहीं हैं जो सदा रोषकी मूर्ति है २० विश्वात्माहै सब कुछ धारण करनेवाला है २१ रक्त कौपीन को धारण कियेहुये है परमहंसहै ऐसे इस मुनिकोदेख तिन्होंकी यह बुद्धिहोतीभई २२ कि यह महा-भूत,कषाय वर्णवाला कौन नामकहै यह गृहस्थ आश्रमको त्यागके किस आ-श्रममें होरहाहै २३ गृहस्थीही धर्मात्माहै धर्मके जाननेवालोंमें श्रेष्ठहै गृहस्थीही धर्मरूपहै गृहस्थीही वर्ण है २४ और गृहस्थ आश्रम प्राणियों की मानाहै और जीवनहै सो उसके बिना जो अन्यरूपसे विचरे वह मूर्खहै २५ सो यह उन्मत्तहै अथवा विरूपहै अथवा मूर्खहै अथवा यह ध्यान करताहुआकी तरह ठगहै २६ ये प्राकृतज्ञानवाले ये सब कल्क ध्यान करनेकी तरह क्या कररहेहै २७ सो हम आश्रम के अन्तकरनेवाले दुराचार मूढ और अज्ञान में तत्पर ऐसे इन मदबुद्धि वाले द्विजों को गृहस्थ आश्रम में बलसे स्थापित करेंगे २८ कौपीनकन्था को ग्रहण कियेहुये मूर्ख खोटी मतिवाले ऐसे इन्होंका शास्ता कौन मूढहै हम नहीं जानते २९ हम इन्हों को धर्ममार्ग में प्रवेशकर फिर निवृत्तहुये चलेंगे ऐसे वे दोनों चिन्तवन करके ३० तिस जनार्द्दन के मायाहुये मोहसे और गर्वके मद से तिस दुर्वासा यती के समीप जातेभये ३१ फिर समीपजाके अनीतिसे तिन दुर्वासा व अन्य यतियोंको क्रोधमें आके कहतेभये ३२ ॥

इति श्रीहरिवंशपर्व्वणिभविष्यपर्व्वणिभाषानुवादे ... [illegible]

तलावके समीप जातेभये ९ मुनिगणों से सेवित और पक्षियों से शब्दित ऐसे तलावपै प्राप्तहोके श्रमसे सुखको प्राप्तहोते भये १० फिर अन्य सब मनुष्य तिस तलावमें गोतामारके कमलोंके और पद्मोंके कंद निकास तिन्होंको भक्षण करवातेभये ११ फिर जनार्दनके संगहुये वे दोनों हंस डिम्भक कहींक तिसतलाव पै बैठके सब श्रमको त्यागतेभये १२ सुखपूर्व्वक तहा तलाव पै बैठेहुये मुनियों से कथन कियाहुआ परमब्रह्मको सुनतेभये १३ ऋषियों के वेदपाठ करनेकी श्रेष्ठ स्वरकी ध्वनिको सुन के प्रसन्न होतेभये १४ फिर मुनिकृत यज्ञदेखने की इच्छा करतेभये और अपनी सब सेनाको वहा स्थापित करतेभये १५ पश्चात् महापराक्रमवाले कईक शूरवीर वाणोंकोले के हंस डिंभक १६ और जनार्दन ये सब पैदल ही हुये कश्यपमुनिके आश्रममें वैष्णवयज्ञ देखनेको जातेभये १७ तहां कश्यपजी महाराज जपहोममें तत्पर मुनियोंके सङ्ग पूजन कररहेथे ऐसी वहयज्ञथी१८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने सप्तनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २९७ ॥

दोसौअट्ठानवेका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि फिर धर्मात्मा वह जनार्दन और हंस व डिम्भक तिस यज्ञके स्थानमें प्रवेशहोके मुनीश्वरों को प्रणाम करतेभये १ फिर आयेहुये तिन्हों को शिष्यों समेत वे सब मुनि तिन्हों की अर्घपाद्य आदिक पूजा करते भये २ पश्चात् वे दोनों राजा के कुवर और वह जनार्दन ब्राह्मणका पुत्र तिस पूजाको ग्रहण करके प्रसन्नहुये आसनों पै बैठतेभये ३ फिर वह हंस नामवाला राजा का पुत्र तिन मुनियों के प्रति यह कहताभया कि हे मुनिश्रेष्ठो मेरापिता यज्ञकरनेको चाहताहै ४ सो तुमको तहा यज्ञमें चलना चाहिये हम राजसूययज्ञ करके दिग्विजय करके ५ फिर अपने पिता करके यज्ञका पूजन करावेंगे सो हे विप्रेंद्रो तुम वहां अपने शिष्यों समेत चलो ६ और हम अब निश्चय दशोदिशाओंको जीतेंगे और हम सेनाओंके समूहको इकट्ठे करनेमें तत्परहैं ७ हमारे आगे स्थित होनेमें देवते और दानव भी नहीं हैं हमें शिवजीसे वरलब्ध होरहा है ८ हम शत्रुओंसे जीतेनहीं जावेंगे ऐसे कहके वह हंसनामवाला राजा तहा विराम करनेलगा ९ मुनि कहते हैं हे नृपोत्तम जो ऐसेही है तो हम तेरे संग

चलेंगे और अन्यथा नहीं है १० वैशम्पायनजी कहनेलगे फिर तहां से चलके पुष्कर से उत्तरदिशाकी तरफ जहांदुर्वासा ऋषि तपरहाथा तहां चलनेकी इच्छा करतेभये ११ ब्रह्ममन्त्रका सेवन करतेभये ब्रह्मसूत्र पद में सब लोकोंमें तत्पर १२ ममता व अहंकारसे रहित कौपीन धारण कियेहुये ऐसे यतीजन तहां नियतहुये आत्मा और जगत्‌की योनि विश्वके ईश्वर १३ ब्रह्मरूप शुभशान्त अक्षर सर्वतो-मुख वेदवेदान्त की मूर्ति अव्यक्त अनन्त शाश्वत शिव १४ नित्ययुक्त निरूपाख्य भूताधार अनामय ऐसे विष्णुदेवको मनकरके ध्यातेहुये १५ दुर्वासा ऋषि कर-के वेदांत शास्त्रके रसको जानके तत्त्वके निश्चयमें अपने चित्तको निर्मलकररहे १६ तहां हंस और परमहंस ऐसे दुर्वासाके शिष्य स्थितहोरहे १७ तहां वे दोनों हंस डिंभकजाके फिर ऊर्द्धद्वाररेतस अर्थात् शुक्र जिसके प्राप्तहोरहा महाबुद्धि वाला पद २,को चीन्हताहुआ ऐसा दुर्वासाऋषि को देखतेभये १८ यदि यह दुर्वासाऋषि क्रोध में युक्तहोजावे तो तीनलोकों को दग्धकरने में समर्थ है १९ जिस क्रोधहुये को देखने भी देखने में समर्थ नहीं हैं जो सदा रोषकी मूर्ति है २० विश्वात्माहै सब कुछ धारण करनेवाला है २१ रक्त कौपीन को धारण कियेहुये है परमहंसहै ऐसे इस मुनिकोदेख तिन्होंकी यह बुद्धिहोतीभई २२ कि यह महा-भूत,कषाय वर्णवाला कौन नामकहै यह गृहस्थ आश्रमको त्यागके किस आ-श्रममें होरहाहै २३ गृहस्थीही धर्मात्माहै धर्मके जाननेवालोंमें श्रेष्ठहै गृहस्थीही धर्मरूपहै गृहस्थीही वर्ण है २४ और गृहस्थ आश्रम प्राणियों की माताहै और जीवनहै सो उसके विना जो अन्यरूपमें विचरे वह मूर्खहै २५ सो यह उन्मत्तहै अथवा विरूपहै अथवा मूर्खहै अथवा यह ध्यान करताहुआको तरह ठगहै २६ ये प्राकृतज्ञानवाले ये सब कलुक ध्यान करनेकी तरह क्या कररहे हैं २७ सो हम आश्रम के अन्तकरनेवाले दुरारोह मूढ और अज्ञान में तत्पर ऐसे इन मंदबुद्धि वाले द्विजों को गृहस्थ आश्रम में बलसे स्थापित करेंगे २८ मोटीनर्कना को ग्रहण कियेहुये मूर्ख खोटी मतिवाले ऐसे इन्होंका शास्ता कौन मूढहै हम नहीं जानते २९ हम इन्हों को धर्ममार्ग में प्रवेशकर फिर निवृत्तहुये चलेंगे ऐसे वे दोनों चिन्तवन करके ३० तिस जनार्द्दन के मगहुये मोदमें और गर्वके वश से तिस दुर्वासा यती के समीप जातेभये ३१ फिर समीप जाके अजितेन्द्रिय तिस दुर्वासा व अन्य मुनियोंको क्रोधमें आक्षेप करतेभये ३२ ॥

दोसौनिन्नानवेका अध्याय ॥

हंस डिम्भक दोनों कहते हैं कि हे द्विज ज्ञानकेलेशसे हीन आत्मावाले तुझको यह क्या व्यवसित कररक्खाहै और तुझको जो आश्रितकर रक्खा है यह कौन आश्रमहै १ गृहस्थ आश्रम त्याग के यह तुझको क्या साधित कररक्खा है तुझको यह शोक विषे दम्भही धारण कर रक्खा है और दूसरी बात नहीं है २ हे मूढ तू निवृत्त हुआ इन लोकों का सदा नाश करताहै इन सबोंको तू नरक में गेरेगा ३ हे मूर्ख तू आप तो नष्टहै और इन्होंको भी नष्ट करेगा सो हे मन्दमतिवाला ब्राह्मण बड़ा आश्चर्य्यहै कि तेरे को कोई शिक्षा देनेवाला नहीं है ४ सर्व्वथा तेरेको प्राप्त करनेवाला पापहै सो हे विप्र इस आश्रमको तू त्याग और गृहस्थी होजा ५ हे विप्र पाच यज्ञों को सदाकर यत्नमें तत्परहो फिर तू स्वर्ग में जावेगा स्वर्गही में महान् सुखहै ६ हे विप्र जीवते हुये जो तुझको इच्छा होतो यही परमकल्याण है ऐसे कहते हुये उन दोनों को वह धर्मात्मा जनार्द्दन ब्राह्मण ७ सुनके कहनेलगा और तिस दुर्व्वासा यतीको भयभीतकी तरह प्रणाम करताभया हे मन्दबुद्धिवाले राजा तुम ऐसे मतकहो ८ ऐसे घोर वचन इसलोक और परलोक में सुनानेलायक नहीं हैं जो बांधवों समेत जीवने की इच्छा करताहो वह कौन ऐसा वचन कहै ९ सर्व्वथा यह तुम्हारा काल प्राप्त हुआहै मन्दचित्तवाले जो तुमहो सो तुम्हारी आयु समाप्त होचुकी तुम ब्रह्मदण्डसे हतहोगये १० क्योंकि ये यती शुद्धहैं ज्ञानसे दीप्तचित्तवाले हैं ज्ञानरूपी अग्नि से कर्मोंको दग्ध करनेवाले हैं प्राणोंको प्राणोंही में हवन करते हैं ११ सो तुम्हारे विना ऐसे वचन कहने में कौन समर्थ है हमने अच्छीतरह जानलिया कि तुमने अपना जीवन समाप्त करलिया १२ हे नृपो ऋषियोंने पहले चारआश्रम विहित किये हैं कि ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ भिक्षुक ४ । १३ सो तिन्होंका अग्रणी यह चौथा भिक्षुकआश्रमहै सो महाबुद्धिवाला इस आश्रम में रहताहै यही आश्रम अति पुण्यवालाहै १४ तुम नीतिवाले वृद्ध पुरुषों की उपासना नहीं कीहै तिनसे तुमको ज्ञानलब्ध नहीं हुआ है नहीं तो ऐसे क्यों कहते १५ ऐसे घोर वचन मेरे सुनने लायक नहीं हैं हे मदात्मावाले तुम मित्र होने से मैं क्याकरू १६ जो तुमको गुरुओं से ज्ञानलब्ध कियाहै वह ज्ञान यदा

केवल इ सके वास्ते होगया क्योंकि ज्ञानही धर्मको उत्पन्न करनेवाला व वलसे पापको विधान करनेवाला होजाताहै १७ सो मैं तुमको त्यागके जाऊंगा अथवा शिलातल में गिरूंगा अथवा महाघोर विष पीऊं अथवा समुद्रमें डूबजाऊं १८ अथवा देखतेहुये और सुनतेहुओं के आगे अपने आत्माको त्याग देऊं ऐसे कहके विलाप करनेलगा और वे दोनों ऐसे कहतेभये कि तुम मतबोलो १९ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिभकोपाख्यानेनवनवत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २९९ ॥

तीनसौका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि फिर वह दुर्वासाऋषि क्रोधकरके मानों इन्द्रों के भाणोंको दग्धकरदेवेगा ऐसे एकभयङ्कर अग्निरूप आसिसे १ देखताभया रोष से व्याकुल इन्द्रियोंवाला दुर्वासा यती तिन्होंको ऐसे देखताभया मानों तीनों लोकों को दग्ध करदेवेगा २ उस जनार्दन ब्राह्मण को सौम्यदृष्टिकरके देखता हुआ यहवचन कहनेलगा कि तुम्हारा नाशहो नाशहो ३ हेराजाओ तुम यहां से जाओ देरमतकरो मैं तुम्हारे वचनका क्रोधधारण करने में समर्थ नहीं हूं ४ अन्यथा मैं सब राजाओंको दग्धकरने में समर्थहूं क्योंकि मेरेआगे हठ करनेमें कौन समर्थ है ५ तुम्हारे अभिमान को लोकमें विख्यात शङ्ख चक्र गदा इन्हों का धारण करनेवाला श्रीकृष्ण खंडितकरेगा अब मैं क्याकहूं ६ ऐसे कहके वह धर्मात्मा दुर्वासा यति तहांसे गमनकरनेकी इच्छा करताभया फिर वह हंसराजा तिसकी भुजाको पकड ७ काल की तरह क्रूरहुआ तिस के कौपीन को छेदन करताभया फिर अन्ययती दशों दिशाओं में भाजतेभये ८ फिर वह जनार्दन ब्राह्मण हा कष्टहै ऐसे कहताहुआ मित्रभाव से तिस राजा को निवारण करता भया और यह कहताभया कि यह क्या हठहै ९ पश्चात् सत्य धर्मवाला दुर्वासा यती तिसके मारनेको समर्थ भी था परन्तु मंद २ ऐसे कहताभया कि राजकुल में अधमरूप तुमको मैं मारनेमें तो समर्थहूं परन्तु हम यती हैं इसवास्ते तुमको नहीं मारते १० जो यादवोंका पति शङ्ख चक्र गदा इन्होंको हाथमें धारणकरने वाला भगवान्है वह तुम्हारे अभिमान का नाशकरेगा ११ यदुओंमें श्रेष्ठ जगत् का पति ऐसे श्रीकृष्णके होनेमें तुम्हारा जीवना सुजीवहै अर्थात् नहीं जीवना बहुतहै १२ जरासन्ध भी तुम्हारा बंधु वह भी कटु कहनेकी इच्छा नहीं करताहै

ऐसे लोकके वैरमें वह भी युक्त नहीं है १३ जरासंध सरीखा तुम्हारे वंधु फिरनहीं होगा सो उसके सङ्ग भी तुम्हारा द्वेष होजावेगा और जो ऐसे घोररूपको सुन के वह तुम्हारा वन्धु भी सहजावेगा तो धर्म्मका नाश होजावेगा इसमें सन्देह नहीं १४ । १५ ऐसे कहके वह दुर्वासायती हस राजाको यह कहताभया कि तू चलाजा २ पश्चात् दुर्वासायती उस जनार्दन ब्राह्मणको यह कहताभया १६ कि तेरा कल्याणहो और शङ्ख चक्र गदा इन्होंको धारण करनेवालेकी तेरीसगतिहो १७ आज अथवा सवेरे अथवा स दासाधुहै और साधु अर्थात्श्रेष्ठ पुरुषकाविनाश दोनोंलोकोंमें नहींहैं १८ सोतूजा यह सबवृत्तात अपनेपिताके आगे कह १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायाहंसडिमकोपाख्यानेत्रिशततमोऽध्याय ३००॥

तीनसौएकका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि पश्चात् वेदोनों हस डिम्भक क्रोधहुये और काल से प्रेरेहुये तिन यतियोंके छींके कमडलु इंधन १ दण्ड और पात्रविशेष इनसबों को छीन और भेदनकरके फिर तहा व्याधों करके मासको जलातेभये २ और तहा मासका भक्षणकर फिर अपनी पुरीको आतेभये और वहधर्मात्मा जनार्दन ब्राह्मण स्नेहसे युक्तहुआ तिन्हों के पीछे पीछे आताभया ३ और ये नष्टहोगये ऐसे दुःखितहोके मानताभया जब वे सब चलेगये तब दुर्वासायति ४ भाजतेहुये सब यतियों को यह कहताभया कि यहा से पुष्कर पुण्यस्थानसे चलके ५ व विश्राम करके फिर द्वारकापुरी में प्राप्तहोके शङ्ख चक्र गदा पद्म इन्होंको धारण करनेवाला श्रीकृष्ण को ६ देख फिर तिस ईश्वरके आगे यह सब वृत्तान्तसुनावेंगे और वह इस जगत्की रक्षा करताहुआ धर्म्ममार्ग में संस्थितहै ७ आद्य है लोकका गुरुहै विष्णुहै शातात्माहै तत्त्व जाननेवालों का प्रियहै सब कटकोंका नाशकरके इस पृथ्वीको रक्षित कराहै ८ वह प्रभु इन पापियोंको और घोर कर्म्म करनेवालों को सबों को मारेगा और ज्ञान में नियत आत्मावाले हम को रक्षित करेगा ९ सो हे विप्रो यह अब तुम क्षमाकरो अब तुमको तहा गमनकरना चाहिये उन्होंनेजो हठ कियाहै और पात्र छेदन किये हैं १० यह सब वृत्तात हम श्रीकृष्ण के आगे कहेंगे फिर ऐसेही है यह प्रतिज्ञा करके ज्ञानचक्षुवाले ने यति ११ तिन्होंकरके छेदन कियेहुये काष्ठमयछींके कोपीन मृगछाला १२ और भम-

इक्षु इत्यादिक अनेक वस्तुओं को लेके श्रीकृष्ण को दिखाने के वास्ते तमकी योनि औ ईश्वरकी आत्मामे उत्पन्नहुआ ऐसा १३ वह दुर्वासायति पांचहजार मुनियोंको आगेकरके तहा से चलताभया १४ फिर वे सब मुनि एक रात दिनमें कृष्णमे पालीहुई द्वारकापुरी में प्राप्तहोतेभये और शान्तरूप महात्मा और रोमों वाले केशों से वर्जित १५ ऐसे वे यतीश्वर प्रात काल बावडी में प्रवेशहो स्नान कर १६ फिर महान् यत्नसे कंटकों के नाशमें तत्पर ऐसे विष्णुको देखने के वास्ते उद्यत होतेभये और सब इकट्ठेहोके तिस द्वारकापुरी में प्रवेशहुये १७ ॥

इति श्रीहरिवंशपर्वणिगर्तभविष्यपर्वभाषायाहर्षोंदिमकोपाख्यानेएकाधिकत्रिशतोऽध्याय ३०१ ॥

तीनसौदोका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं पश्चात् वे सबयति सर्वेश्वर विष्णु कमलसरीखे नेत्रों वाले श्यामवर्ण पीताम्बर और शोभावाले १ मुकुट को धारण किये लक्ष्मी के पति नीले बालोंवाले अव्यक्त शाश्वतदेव सकलरूप और वीररूप २ ऐसा वह श्रीकृष्ण कदाचित् क्रीडाकरने के वास्ते सात्यकी आदि अनेक कुमारों के संग तिस द्वारकापुरी में गोल क्रीडा करतेहुये विचर रहेथे ३ और यह गोल प्रथम मेराहै पश्चात् तेरा होवेगा ऐसे वह श्रीकृष्ण सात्यकी के प्रति कहताहुआ क्रीडा कर रहा ४ वसुदेव और उद्धवआदि अनेक यादव तिन्हों के समीप स्थित हो रहे ५ भूतात्मा और भूतभावन ऐसे श्रीकृष्ण अन्य व्यापार से रहितहुये तहां खेलतेभये ६ जैसे पहिले सुग्रीव के संग रामचन्द्र क्रीडा करतेभये ७ वह विष्णु भगवान् मध्याह्न समय में सात्यकी के संग क्रीडा करके श्रांतहो फिर खेलने में बन्ध होताभया ८ और तब वे सबयति पहले दरवाजे के आगे द्वारपाल मे रोके हुये तिस सभाके दरवाजेही के आगे स्थित होगये ९ और दीप्ततपवाले वे मुनि दुर्वासा मुनिको आगे कियेहुये श्रीकृष्ण को देखतेभये १० गोल क्रीडामें हाथमें गोलकको लियेहुये पद्मके पत्तों के समान नेत्रोंवाला ११ एक नेत्रसे देखताभया और एक नेत्रसे तिस गोलकको देखताभया ऐसे श्रीकृष्ण को वे सब मुनि देखतेभये १२ पश्चात् सब यादव और श्रीकृष्ण सात्यकी बलदेव वसुदेव अक्रूर उग्रसेन १३ और अन्ययादव सब भ्रमको प्राप्तहोतेभये यह क्याहै २ ऐसे व्याकुल मनवाले होतेभये १४ तिन यतियों के पीछे पीछे गमन करताहुआ जैसे त्रि-

लोकों को दग्ध करनेकीइच्छा कररहाहो ऐसे होरहा और कौपीन को धारण किये कछुक स्मरण करताहुआ १५ अपने हृदय में खेदसेयुक्त खंडितहुआ दंड को धारण कियेहुये क्रोधसे अन्तर जलताहुआ तिस हंसराजके पापको प्राप्त हुये १६ नेत्रों में जिसके महाअग्नी उपजरही और यादवों के ईश्वर श्रीकृष्ण को देखरहा ऐसे दुर्वासायति को वे यादव देखतेभये और भयभीत होतेभये १७ यह क्रोधहुआ क्याकरेगा हमको क्याकहेगा ऐसे वे सब यादव अञ्जली बांधके खड़े होतेभये १८ वे यादव कछुक ऐसे कहतेभये कि यह तुम्हारेवास्ते आसन है पश्चात् श्रीकृष्ण भगवान् तहां प्राप्तहोके यह कहताभया १९ कि यह आसनहै तुम स्थितहोजाओ हे विप्र में यहां स्थितहूं सो क्याकरूं २० पश्चात् वह दुर्वासाऋषि आसनपै बैठताभया फिर तिसके आसनपै बैठे पश्चात् कुटिलतासे रहित २१ वे सब यति यथायोग्य आसनों पै बैठतेभये पश्चात् मुकुटको धारण करनेवाला श्रीकृष्ण तिन्होंकी अर्घ्य आदिक विधि करताभया २२ फिर श्रीकृष्ण दुर्वासायति को पूछताभया कि हे विप्र तुम्हारा यहां आना कैसेहुआ २३ तुमको कछु महत् कारण देखाहै क्योंकि तुम ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ पापसे रहित २४ ऐसे सन्यासीहो सो तुमको कछु प्रार्थनाकरनीभी नहीं है कछुइच्छाभी नहीं है २५ ऐसे तुम इच्छासे प्रेरितकर्म वाले क्षत्रिय तुम्हारे समीप प्राप्तहोते हैं तुम्हारे तो हम को कुछ भी इच्छा नहीं दीखती है २६ सो हे ब्रह्मन् तुम्हारे आगमनका कारण हमनहींजानते परन्तु हम यहअनुमान करते हैं कि तुम्हारा किंचित् कारणहै २७ सो आपकहो हमतुम से सुनाचाहते हैं पश्चात् ऐसे श्रीकृष्णके कहनेसे २८ उस दुर्वासामुनिके फिर महान् क्रोध पैदाहोताभया और तिस पहिले कोप से भी ज्यादह कोपहोताभया २९ तीनलोकोंको दग्ध करनेकी तरह देखताहुआ भक्षण करनेकी तरह वहदुर्वासा यति रक्तनेत्रों करिके क्रोध करताभया ३० फिर क्रोधसे मूर्च्छितहुआ श्रीकृष्ण के प्रति दुर्वासा कहनेलगा कि हे यादवेश्वर में नहीं जानता तुम हमको ऐसे क्यों कहतेहो ३१ हे विष्णो तुम श्रेष्ठ देवहो में तुमको जानताहूं हम पुरातनहैं पहिले वृत्तान्तोंको जाननेवाले हैं ३२ सो क्या तू हमको ठगनेकी तरहकहता है व तू मायासे मनुष्य देहवाला देवदेवहै तू हमसे कैसे गुप्तहोता है ३३ जो ब्रह्म जाननेवालों का परमपदहै सो तूहै जो भावि है सोभी तूहै हम तेरे जानेहुये हैं ३४ जिससे यह विष्णु पैदा होताहै सो परमपद आपहीहो जो स्थूलरूप करके

तुमको अपने चित्तसे जानते हैं ३५ वह ईश्वर भी तूहै सो हे विश्वेश तुम्हाराश-
रीर हमने पहिलेही जानलियाहै जो श्रेष्ठ कर्मसे प्राप्तहोताहै तिसका स्मरणकर
के हम निवृत्त होरहे हैं ३६ अन्य मनुष्य प्रत्यक्ष भी तुम्हारे रूप को देखतेहुये
नहीं जानते हैं सो हे देव हम तिनसरीखे मूढबुद्धिवाले नहीं हैं ३७ तुम जो
हमको कहतेहो कि मैं तुम्हारा कारण नहीं जानता यह क्या हठहै हे केशव जो
मूलको जानते हैं उनका कियाहुआ चेतनफल जानना क्याहै ३८ वेदांतविषे
जो विख्यात तेरातेजहै वह विचारा जाताहै ३९ हे प्रभो जो पापोंसे रहित ज्ञान
से तृप्त योगीजनहैं वे अपने हृदामें तेरे इस शरीरको देखते हैं ४० वेदों करके
जो तेरा तेज सुनाजाताहै और ब्रह्म ऐसा प्रतिपादन कियाजाता है सो तेरे इस
ऐश्वर्यरूप को मैं जानताहूं ४१ जो वेदों में परमवैष्णव तेज पढाजाताहै सो हे
विष्णो इस तेरेही शरीर को मैं जानताहूं ४२ जो ॐ ऐसा शब्द कहाजाता है
और जिसकी वाणी है ऐसा कहाजाताहै सो हे विष्णो तूही है ४३ फिर मैं नहीं
जानता ऐसा मतकह जो कछु परोक्षहै वह भी आपके कहने लायकहै फिर हे
हरे मैं नहीं जानता ऐसा हठ मतकर ४४ विष्णु जब उत्पन्न होता है तब तुमसे
ही होताहै क्षयहोनेके पीछे भी तुम्हारेही में लीन होजाताहै ऐसे तुम्हारे ऐश्वर्य
तेजको मैं जानताहूं ४५ हे भूत भव्येश मेरे हृदयमें तुम सदा कर्त्ताभान होते
हो जोजो रूप मैं नित्य स्मरण करताहूं ४६ वह सब मेरेहृदयमें तुम्हीं भानहोते
हो हे विष्णो जब तुम ना पुरुषकरके मेरे हृदामें ध्यानसे देखेजातेहो तब तिसी
रूपसे मेरे हृदामें तुम स्थितहो ४७ आकाश विष्णुहै ऐसा कदाचित् मेरी बुद्धि
में कियाजाताहै तब मेरे हृदामें तिसीके रूपसे तुम स्थित होजातेहो ४८ कदा-
चित् पृथ्वी विष्णुहै ऐसे मैं जब विचारताहूं तब मुझको तुम सदा पार्थिव रूपसे
भानहोतेहो ४९ हे देव यह रसहै ऐसे कदाचित् चिन्तवन कियाजाताहै तब तुम
रसात्मकही मेरे हृदयमें स्थित होतेहो ५० जब तुमको मैं तेजरूप स्मरण करता
हूं तब तुम तेजरूप मुझको दीखतेहो ५१ जब चन्द्रमाकी जगह तुमको देखताहूं
तब तुमको मैं चन्द्रमा स्वरूप से देख के प्रसन्न होजाताहूं ५२ तुम्हारीही रूप में
सूर्यकी जगह देखता हूं तब तिसी भावना से तुम मुझको सूर्य दीखतेहो ५३
सो इस वास्ते सब कुछ तुम्हीं हो ऐसी मेरी मति निश्चित है ५४ इस वास्ते
तुमको मेरे से यह नहीं कहनी चाहिये कि मैं नहीं जानता ५५ हे विष्णो हम

इसवास्ते आये हैं कि तुम हमारी पीडा को चिंतवन नहीं करतेहो ५६ हम अ-
त्यन्त दुःखीहुये तुम्हारे आश्रय आये हैं हमारी जो ऐसी अवस्था होरही है ५७
इसको तुम स्मरण नहीं करते सो हम अपने भागको नष्ट चिंतवनकरते हैं ५८
हे विष्णो हम मदभाग्य हैं जो कि तुम हमको स्मरण नहीं करते हे विष्णो दो
क्षत्रिय शिवजी के गर्व्वसे युक्तहुये ५९ हंसडिंभक नामवाले हमारे समीप आके
हमको वाधा देनेलगे व हमारी निन्दा करतेभये ६० जहा कहीं भाजते भये तहां
पापके वचन व और वहुतसे अयुक्त वचन कहतेहुये हमको झडकतेभये ६१ हे
विष्णो यह असह्य पाप करतेभये सो तुम देखो कि वहुतसी हमारी वस्तु छेदन
करदी ६२ छींके काष्ठकेपात्र द्विदल और वेणुक इत्यादिक हमारेपात्र खडित कर
दिये तिन्हों के हठका कियाहुआ ६३ यहहै कि हमारी यह कौपीन फाडदी है
यही हमारा परमधनहै हे प्रभो यह कमण्डलु छेदन करदियाहै ६४ सो क्षत्रधर्म
में युक्तहुआ तू हमारी रक्षा नहीं करताहै यह वडाआश्चर्य है ६५ हम मन्दात्मावाले
मदभाग्यवाले क्या करेंगे अव हमारा रक्षक कौन है हे जगतों के पति यह तुम
कहो ६६ वे दोनों जीवते रहे तो तीनोंलोक नष्ट होजावेंगे न विप्र रहेंगे और
न राजे रहेंगे वैश्य और शूद्रभी न रहेंगे ६७ वे दोनों अत्यन्त वलवाले हैं पैने
दंडोंको धारण करनेवाले हैं तिन्हों के आगे देवता भी खड़े होने में समर्थ नहीं
हैं ६८ भीष्म और भयकर पराक्रमवाला वाह्लीकराजा येभी उन्हों के आगे खडे
होनेलायक नहीं हैं ६९ जो क्षत्रियोंको भय देनेवाला जरासधराजाहै वहभी वि-
शेष करके तिन्हों के आगे स्थित होने में समर्थ नहीं है क्योंकि उन्हों ने शिवजी
से वरले रक्खाहै और नित्य तिन्होंका खोटासंग रहताहै ७० इसवास्ते हे विष्णो
उन शूरवीरोंको तुम मारो और इनलोकोंकी रक्षाकरो नहीं तो तुम रक्षा करतेहो
यह शब्द वृथाहोवेगा। ७१ यहां वहुत कहने से क्याहै तुम त्रिलोकीकी रक्षाकरो
ऐसे कहके वह दुर्वासायती क्रोधसे मूर्च्छित होताभया ७२ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेद्व्यधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३०२ ॥

तीनसौतीनका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि ऐसे दुर्वासायती के वचन सुन श्रीकृष्ण गद २
स्वरसे फिर तिस दुर्वासायती के प्रति कहनेलगे १ कि हे महाराज मेराही सब

दोप है सो तुमको क्षमाकरनी चाहिये मेरावचन सुनो फिर क्षमाकरो २ मैं हंस और डिंभक इन दोनोंको रण में जल्द जीतूगा चाहे शिवजी वरदें अथवा इन्द्र अथवा कुवेर ३ अथवा यम अथवा वरुण अथवा चारमुखोंवाला ब्रह्मा परन्तु उन दोनोंको मैं सेनासहित मारूंगा और तुमको प्रसन्न करूंगा ४ यहबात मैं सत्य कहूहूं तुम रोपमतकरो उनदोनों दुष्टराजोंको मारके तुम्हारी रक्षाकरूंगा ५ तुम्हारा दोप करनेवाले खोटे आत्मावाले ऐसे उन दोनुओं को मैं जानता हूं यह पहले मैंने भी सुना है कि वे दोनों तीक्ष्णदण्ड धारण कररहे हैं ६ अत्यन्त वलवाले और मदवाले शिवके वरसे गर्व्वित विशेप यत्नकी साधनावाले जरासंध से हितकी इच्छावाले ७ ऐसे उन दोनोंको मैं जानताहूं और वह जरासंधराजा उन दोनुओं के प्राणोंका भी नाश करेगा इसमें सन्देह नहीं ८ सो हे मुनिजनो उन दोनोंके जीतनेसे फिर तुमको कल्याण होवैगा और जहां२ वे जाके स्थितहोवैंगे ९ तहांहीतहां जाके मैं उन्होंको मारूंगा इसमें कुछ संदेह नहीं है हे यतिजनो तुम अपने कार्य्य में परायणहुये इच्छापूर्व्वकजाओ १० और मैं थोड़ेही कालमें उन दोनोंको रणमें मारूंगा फिर वह दुर्वासायती प्रसन्नहो यादवेश्वर कृष्णकेप्रति कहनेलगा ११ कि हेकृष्ण जगतोंको कल्याण देनेवाला जो तूहै सो तेराकल्याणहो और हेकेशव तेरेको दुःसाध्य क्याहै १२ तुम त्रिलोकीके ईशहो त्रिधामहो रचना और संहारके करनेवालेहो देवताओं के भी देवहो सर्वत्र समदर्शीहो १३ हे विष्णो हे हरे हे चक्रपाणे तेरे अर्थ नमस्कारहै स्वभावसे शुद्ध १४ व शुद्धरूप व शांतरूप जो तूहै सो तेरेअर्थ नमस्कारहै हे शब्दगोचर हे देवेश हे भक्तवत्सल तेरेअर्थ नमस्कारहै मैंने ज्ञानसे अथवा अज्ञानसे जो कहाहै उसको क्षमा करो १५ हे जगन्नाथ तुम्हीं को कहाहै कि हमारा तुम्हारा कुछ अन्तर नहीं है इसवास्ते तुम क्षमाकरो साधुजनों के तो क्षमाही सारहै १६ श्रीभगवान् कहतेहैं कि हेविप्र तुमको क्षमाकरनी चाहिये क्योंकि तुम्हारे सदा क्षमाहीसारहै सन्यासियों के क्षमासार होती है उन्होंके क्षमाही परमवलहै १७ क्षमानित्य मोक्षकरने वाली है और तत्त्वज्ञान की तरह क्षमाहै क्षमाधर्म है कर्म है और क्षमाही सत्यहै व क्षमाही यज्ञहै १८ क्षमा स्वर्गकी पैंडी है ऐसे वेदके जाननेवाले कहते हैं इस वास्ते सब यत्नकरके तुम अपने शिष्यादिकों को क्षमाका पालन करवाओ १९ तुम सब यतीश्वरो अत्यन्तज्ञानसे संयुतहो सो ये सब यतियोंको मुझसे पूजाहोनी

चाहिये २० सो सब यतियोंको मेरे भिक्षाकाअन्न भोजनकरना चाहिये २१ पश्चात् वे सब यती अङ्गीकारकरके श्रीकृष्णकेघर भोजनकरनेकी इच्छा करतेभये २२ पश्चात् वह विष्णु भगवान् अपने भवनमें प्रवेशहोके चारप्रकारके भोजन यथाविधि से करवाके २३ फिर तिन सब यतियोंको भोजन करवाताभया कोमल रेशमीवस्त्रों को छेदनकरके २४ तिन्हों के अर्थ कौपीन आदिकों के वास्ते वह श्रीकृष्ण भगवान् देताभया पश्चात् वे सब प्रसन्नहोके जहा से आये थे तहा चलेगये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायाहंसडिंभकोपाख्यानेयति भोजनेत्र्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०३ ॥

तीनसौचारका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि पश्चात् वह दुर्वासायति तहा अपने आश्रममें नारदमुनि के सङ्ग ब्रह्मतत्त्वका चिंतवन करताहुआ यथासुखसे विचरताभया १ व भगवान् भी तिन हंसडिंभकों के वासको विचारताभया फिर वेदोनों हंसडिंभक तिस कालमें २ अपने पिता ब्रह्मदत्त राजाकी जनोंकी सभामें यह कहतेभये ३ कि हे पिता राजसूय महायज्ञ को तुम यत्नसेकरो और हे नृपश्रेष्ठ इस महीने में हमयज्ञका यत्नकरेंगे ४ हम दोनों दशोंदिशाओंके जीतनेमें तत्परहैं हाथी घोडे इत्यादिक सेनासे युक्तहुये हम दशोंदिशाओं को जीतेंगे ५ हे नृपोत्तम यज्ञकी सिद्धिकेवास्ते तुमको सब वस्तुल्यानी चाहिये पश्चात् ऐसे सुन के वह ब्रह्मदत्त राजा ऐसेही करेंगे यह कहताभया ६ पश्चात् वहजनार्दन ब्राह्मण उन्होंका मित्र भी तिनके हठको देखके तिनकी सामर्थ्य नहीं जानताहुआ अपने मित्र हंसके प्रति कहनेलगा ७ कि हे हंस मेरावचन तूसुन फिर सुन के निश्चय करके फिर हठका उद्योगकरना ८ कि भीष्मराजा और जरासन्ध व वाह्लीकराजा व सब यादव शूरवीर इन्होंके होतेहुये तू कैसे सबको जीतेगा ९ भीष्मराजा बलवान्है वृद्धहै सत्यमें युक्त जितेन्द्रियहै जो भृगुवंशी परशुराम इक्कीसवार इस पृथ्वी को जीतताभया था १० तिसको यह भीष्म सब क्षत्रियों के देखतेहुये युद्ध में जीतताभया और जरासंधका जो युद्धमें पराक्रमहै उसको तुम जानतेही हो ११ व जो यादव शूरवीरहैं अस्त्र विद्यावाले हैं युद्धमें दुर्मदहैं तिन्हों में श्रीकृष्ण शत्रुओंको जीतनेवाले हैं १२ हत्यको करनेवाले हैं और जरासंधके संग युद्धकरने

में सदा श्रमनहीं मानते हैं उसके आगे स्थितहुआ कोई जीतने में समर्थनहीं है १३ बलदेव मदवालाहै यदि कोपसे युक्तहोवै तो युद्धमें इन तीनों लोकों को जीतलेवै ऐसी मेरी मतिहै १४ और सात्यकि यादव भी रण में शत्रुओं के जीतने में समर्थहै अन्य यादव भी श्रीकृष्णके आश्रयहोके गर्वित होरहे हैं १५ तुमने जो पहले यतियोंके साथ विरोध कियाथा सो दुर्व्वासायति सब यतियोंके संगहुआ श्रीकृष्णको देखनेके वास्तेगयाहै १६ हमको यह वृत्तान्त भोजन करके आयेहुये ब्राह्मणसे मिलाहै सो इसप्रकार होनेमें जैसे तुम्हारा कार्य सिद्धहो तैसे अपने मन्त्रियोंके संग सलाहकरलेवो १७ पीछे इस राजसूय यज्ञको हम विधान करेंगे १८ हंसराजा कहनेलगा वृद्ध और हीनबलवाला मन्दात्मा ऐसा कौन भीष्महै वह वृद्ध क्या हमारे आगे युद्धमें स्थितहोनेको समर्थ है १९ और यादव हमारे आगे युद्धमें स्थितहोने को समर्थ हैं यह बडा आश्चर्य है ऐसा तू चिंतवन कर २० कौन कृष्ण है व मदवाला कौन बलदेव है जो हमारे आगे स्थितहो और सात्यकि तो हमारे आगे खडेहोनेको समर्थ नहीं २१ धर्मात्मा जराम तू तो मेरा सदा बंधुहै २२ हे विप्र तू जल्दयादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णके पासजा २३ और यह वृत्तान्त कह कि यज्ञके वास्ते तुम को सर्वस्व करदेना होगा २४ हे केशव बहुतसे लवणों को भेटके वास्ते जल्द तू आ और तुझ को कछु विलम्ब नहीं करना चाहिये २५ तू यह सब वृत्तान्त विप्रयदुवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णके आगे जाके जल्दसुना और तू कछु उत्तर मेरे आगे मतकहै २६ तुझको सौगंध देऊं तू मेरा प्रियहै इसवास्ते तुझसे कहताहूं कि यह सबवृत्तान्त श्रीकृष्णके आगे कहना २७ यह तुझको बारबार सौगन्ध दिवाता हूं ऐसे कहाहुआ वह विप्र कछु उत्तर नहीं देताभया २८ वैशम्पायनजी कहते हैं कि हे जनमेजय धर्मात्मा वह जनार्द्दन ब्राह्मण मित्र भावसे स्नेह युक्तहुआ नित्यगमन करने में उद्यत होताभया २९ भा- जंगल अथवा पर्व्वतों जगत्की योनि शंख चक्र गदा इन्होंको धारण करनेवाले ऐसेदेवके देखनेको मैं जाऊंगा ३० ऐसे यत्न करताभया पश्चात् वहधर्मात्मा अके- लाही घोडे पै असवारहोके ३१ प्रात काल जल्दी द्वारकापुरीको देखनेके वास्ते गमनकरताभया वह द्विज हरि कृष्ण हृषीकेशको ऐसे मनमें स्मरण करताभया ३२

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांविष्णुपर्व्वणिवासुदेवदर्शनेच्छा- द्वारकाप्रस्थानेपञ्चसप्ततिशततमोऽध्यायः १०४॥

तीनसौपांचका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि पश्चात् वह ब्राह्मण घोडे पै असवारहोके विष्णु भगवान्‌को जल्द प्राप्तहोताभया १ जैसे गरमीके समय में सूर्य्य की किरणों से पीडित होके पियासा बटेऊ जल देखनेके वास्ते जल्द जाता है २ तैसे वह विप्र विष्णु भगवान् को देखनेकेवास्ते जाताभया और गमनकरता हुआ वह घोडे को हाकताहुआ ऐसे चिन्तवन करताभया ३ कि हंस मेरे मित्र को मेरा प्रिय-हित किया क्योंकि उसका भेराहुआ मैं साक्षात् हरिको देखूगा ४ मैं सदा धन्य हूं मुझ से कोई अधिक नहीं है क्योंकि जो मैं द्वारकापुरी में बसताहुआ वि-ष्णु भगवान् को देखूगा ५ वह मेरी माताभी धन्य हैं जो कि हरिको देख फिर आयेहुये मेरे मुखको देखेगी सो वह मनस्विनी सर्वदा कृतार्थ होजावैगी ६ क-मलकी केशर सरीखी कांतिवाले भगवान् के मुखको देखूगा देवताओं के देव चक्रधारी धनुषधारी ७ ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के कमलके पत्तोंसरीखी कांति-वाले शरीर को देखूगा ८ शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष इन्हों से विभूषित देखूंगा और पद्मकी केशर सरीखी कांतिवाले भगवान्‌के नेत्रोंको देखूगा दीन आत्मा वाला मैं तिन्होंको देखके नष्ट दुःखवाला होजाऊगा ९ वह योगात्मा सौम्यदृष्टि से मुझको देखेगा और मुझसे प्रिय वचन बोलेगाभी और स्वस्तिहै ऐसा वचन भी कहेगा १० त्रिलोकी की सदृश भगवान्‌के शरीर में देखूंगा भगवान्‌के पैर-रूपी कमलोंको मेरामन जल्दी कररहाहै ११ फुरतेहुये रत्नोंसेयुक्त ऐसी भगवान् की छाती को मैं देखताहुआ की तरह गमनकरता हूं १२ पीलेवस्त्रों को धारण कियेहुये लम्बे हारसे विभूषित कछुक हँसाहुआ ओष्ठवाले ऐसे विष्णु भगवान् को मैं वारम्वार देखताहू १३ हरिके रूपका स्मरण करतेहुये मेरे रोम खड़ेहोते हैं और गमन करताहुआके आगे शंख चक्र गदा खड्ग इन्होंको धारण करनेवाला १४ भगवान् मुझ को भान होताहै जगत्‌के गुरुदेव विष्णु मुझको चलतेहुयों की तरह दीखते हैं यह भगवान्‌हैं ऐसे कहनेको मेरी जिह्वा फुरतीहै १५ मैं यह अति दुःख मानताहूं कि कर देवो मुझको ऐसा वचन कहनाहोगा १६ सो उस राजाका यह हठहै हे विष्णो तुम हंसराजा को करदेवो मैं तिसकी आज्ञा करने आयाहूं ऐसा वचन निर्दयी होके तिस भगवान् के आगे जाके कहूंगा १७ मैं

मूढोंका अग्रिणी हूं ऐसे कहके निर्लज्ज हुआ हे हरे तुम हमराजा को करदेवो ऐसा वचन कहूंगा १८ बहुतसे लवणोंकी तुमको करदेनी चाहिये सो ऐसे कहनेको तिनके आगे मैं समर्थ नहींहूं १९ तोभी अपने मित्रभावसे मुझको यह घोर वचन कहनाही चाहिये कृतात्मा मनुष्यों को मित्रभाव का यह कष्ट है २० अथवा विष्णु भगवान् सबके हृदयकी जानते हैं सब प्राणियोंके भावको जानते हैं सबकी शोभा में रतहैं २१ मित्रभावसे मैंतो कहूंगा मुझको क्या दोष है घोर वचन कहनेको जो मैं युक्तहूं २२ सो मेरी रक्षा विष्णु भगवान्‌ही को करनी चाहिये नीली जुल्फोंवाले और बालोंवाले श्रीकृष्ण को मैं देखूंगा शङ्खसरीखी ग्रीवावाले श्रीवत्स चिह्न से आच्छादित छातीवाले २३ पद्मसरीखी बाहुओंवाले आत्माकी इच्छा करके २४ जगत् की रक्षा करनेवाले जल पै शयन करनेवाले २५ ऐसे भगवान् को मैं देखूंगा भगवान् को मैं देखके कृतार्थ होऊंगा २६ हरि भगवान्‌के देखनेसे अब मेरा जन्म सफल होवेगा अब मेरी यज्ञ सफल होवेंगी साक्षात् हरि भगवान्‌के देखनेसे मेरे नेत्र सफल होवेंगे २७ घोर कर्म को कहने वाले मुझको प्रसन्नहुआ विष्णु भगवान् दोनों नेत्रों को कछुक मींचतेहुये देखेंगे २८ मूल समेत विष्णु भगवान्‌को मैं बारम्बार देखूंगा श्रीकृष्णके शरीरको अपने दोनों नेत्रोंके द्वारापान करूंगा २९ तिन्होंके पैरोंकी मंगलीक रज को मैं धारण करूंगा पश्चात् मैं कृतार्थ होजाऊंगा उन्होंके पैरोंकी रज स्वर्ग का मार्ग है ३० मेघके शब्द सरीखा गभीर ऐसा हरिके स्वरको मैं सुनूंगा जगत्‌का पति चक्रधारी ऐसे विष्णुके पादरूपी कमलों को मैं देखूंगा ३१ मैं पूर्ण चन्द्रमा के समान कांतिवाला भगवान्‌के मुखको देखतेहुयेकी तरहहूं और जगत्‌रूप हरि को देखतेहुये की तरहहूं मैं जो अयुक्त वचन कहने की इच्छा करता हूं ३२ सो मेरेपै विष्णु भगवान् प्रसन्नहो चचल कुण्डलोंवाला देव चन्दन से चर्चित ३३ फुरतेहुये कङ्कणोंमें युक्त बाहुओंवाला बायें हाथ में प्रकाशमान हुआ महाशंख को धारण कियेहुये ३४ रश्मिजालसे वह शंख शोभित होरहा और तपताहुआ सूर्यके समान वर्णवालाहै ऐसे तिस शंखधारी भगवान्‌को मैं देखूंगा ३५ प्रकाशमान कङ्कणों और बाजूबंदसे युक्त पीले और कुसुमवाले वस्त्रों को धारण किये हुये ३६ विस्तार छातीवाले ऐसे विष्णु भगवान्‌को मैं अब फिर कदाचित् देखूंगा मैं तिनके शरीर के देखने के वास्ते उद्यतहुआ सर्वथा कृतकृत्यहूं ३७ मेरे अर्थ

नमस्कारहै नमस्कारहै क्योंकि जो मैं हरि भगवान्को देखने को उद्यतहूं जगन्नाथ वलदेव के सगहुये जगत् के गुरु ऐसे विष्णु भगवान् को मैं देखूंगा ३८ शोभायमान कौस्तुभ मणिसे विराजित छाती पीताम्बरको धारण कियेहुये कुण्डलोंको धारण कियेहुये कमल सरीखे नेत्रोंवाले मुकुटको धारण करनेवाले चक्र गदा कमल इन्होंको हाथमें धारण करनेवाले ऐसे विष्णु भगवान्का शरीर मेरी ऐश्वर्य के अर्थहो ३९ वेदरूपी समुद्र में शुद्धस्नान कियाहुआ मन्दराचल पर्वतपै स्थितहुआ समुद्रके मथन समय प्रकाशमान देवताओंसे सेवित ऐसे नारायणके नामरूपी अमृत को मैं पीताहूं ४० मोक्ष की इच्छा करनेवालों से ध्यान करने लायक अनन्त और स्थूल सूक्ष्मरूप ४१ एक और अनेकरूप आद्यरूप त्रिलोकीको पैदाकरनेवाली ज्योति ४२ देवताओं से वन्दित ऐसे अच्युत भगवान् मेरी आखों के आगे दर्शनदेवो ४३ इसप्रकार चिन्तवन करताहुआ और घोडेको प्रेरताहुआ वह विप्र द्वारकापुरीको प्राप्तहोताभया और अपनेको कृतार्थ मानता भया ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिविष्णुपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेजनार्दनस्यद्वारकागमनेपञ्चाधिकत्रिशततोऽध्यायः ३०५॥

तीनसौछ:का अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहते हैं कि पश्चात् वह ब्राह्मण द्वारकापुरीमें प्रवेशहोके भगवान् की सभाके द्वारपाल को सब वृत्तान्त सुना फिर तिस सभाके भीतर प्राप्त होताभया १ पश्चात् तहां देव देवेश भगवान्को वलदेव के सहित महान् आसनपै वैठेहुये को देखताभया २ श्रीकृष्ण के आगे तो सात्यकि स्थित होरहा और वरावर में नारदमुनि स्थित होरहा और दुर्वासाकी कथाको कहरहे उग्रसेन राजाको आगे कियेहुये स्थित होरहे ३ गंधर्व तहां गायन कररहे अप्सरा नृत्य कररहीं सूत मागध वन्दि इन्होंकरके श्रीकृष्ण भगवान् सेवित होरहे ४ उद्गीयमान यशवाला ब्राह्मणों करके सामवेद का गानहोने से तिस हरिका गायन होरहा ऐसे विष्णुभगवान् को देखके रोम खडेहोते भये और मैं जनार्दन नामवालाहूं ऐसे अपनानाम वताके श्रीकृष्णके चरणोंमें नमस्कार करताभया ५।६ पश्चात् वलदेवको नमस्कार करताभया श्रीकृष्ण के प्रति यह कहता भया कि हे

देवदेवेश में हस और डिभक राजाओं का दूतहूं ७ ऐसे कहताहुआ उस विप्र को माधव भगवान् कहनेलगे कि पहले तू इस आसनपै बैठजा फिर यथार्थ अपने प्रयोजनको वर्णनकर ८ पश्चात् वह ब्राह्मण तिन्हों के वचनको अङ्गीकार कर स्थित होताभया फिर श्रीकृष्ण भगवान् तिस ब्राह्मण को वाणी से पूजन करके फिर कुशल पूछतेभये ९ कि हे विप्र ब्रह्मदत्त हंसडिंभक इन राजाओंकी कुशल कहो उन्होंका पराक्रमभी हमने सुना है और प्रयोजनभी सुनाहै १० हे विप्र अपने पिताकी कुशल कहो ११ जनार्दन विप्र कहनेलगा हे केशव ब्रह्मदत्तकी और मेरे पिताकी कुशल है और हे जगन्नाथ हसडिंभक राजाकी भी कुशलहै १२ श्री भगवान् कहनेलगे हे द्विजोत्तम हसडिंभक दोनोंराजे तुझको क्या कहतेभये सो सब तू वर्णन कर इसमें कछु शंका नहीं करनी १३ हे द्विजोत्तम कहनेलायकहो अथवा अवाच्यहो सो सब तू कह फिर हम सुनके वैसाही विधान करेंगे १४ हे विप्र तू दूतहै तेरे वाच्यकी और अवाच्यकी कल्पना नहीं है जो कछु राजाने कहाहै सो दूतकर्म्म से सब कहदे १५ यहां तुझको कछु शङ्का नहीं करनी चाहिये जो कछु उन्होंने कहाहै सो तू कह १६ ऐसे श्रीकृष्णसे कहा हुआ वह जनार्दन विप्र कहनेलगा कि हे भगवन् तुम विना जाननेवालेकी तरह क्या कहतेहो तुम तो सबप्रत्यक्ष देखनेवाले हो १७।१८ जगत्का वृत्तांत तुम्हारे से कछु परोक्ष नहीं है सब कछु अपने मनसे देखतेहुये तुम मुझसे क्या पूछतेहो १९ हे विष्णो तुम विद्वानों से सदा ऐसे गायन कियेजाते हो कि दृष्ट और अदृष्ट विचेतनरूपको तुम प्राप्तहोतेहो २० इस सब जगत्रूप तुमहो तुम्हारेही विषे यह जगत् स्थित है तुम्हारे से रहित चराचर एक भी पदार्थ नहीं है २१ तुम्हारा विनाजाना कछु नहीं है तुम सब जगह प्राप्त होनेवालेहो सब जीवों के पतिहो संहार कर्मको करनेवाले रुद्र तुम्हींहो २२ हे विष्णो सदा रक्षाकरनेवाले हो तुम्हीं संसार को पैदाकरनेवाले हो फिर ऐसे मुझको तुम क्या पूछते हो २३ तुम को ज्ञानात्मानाम से विद्वान् गाते हैं हे माधव प्राणों के जाननेवाले तेरे को प्राण कहते हैं २४ हे पुरुषोत्तम शब्दज्ञ तेरे को शब्द कहते हैं सो हे हृषीकेश ऐसे भी तुम मेरे से क्या पूछते हो २५ सो हे देवेश तौभी वारम्वार तुम्हारे से प्रेरणहुआ मैं कहताहूं कि राजसूययज्ञ को करने के वास्ते ब्रह्मदत्त राजा सुझको सो हंस और डिंभकने मैं भेजाहूं २६ उस यज्ञमें करदेने के वास्ते मुख्य यादवोंको और तुम्हारे

को बुलाने को आया हूं सो हे केशव यज्ञ के वास्ते तुम बहुतसा लवणदेवो २७ इसवास्ते मैं उन्हों का भेजा हू और अन्य भी वृत्तान्त उन्हों से कहा हुआ तुम सुनो २८ कि बहुतसे लवणों को लेके आओ ऐसी उन्हों की आज्ञाहै २९ पश्चात् ऐसा वचन उस विप्रदूतका सुनके श्रीकृष्ण सुन्दर तरह हँसतेभये और उस दूतके प्रति कहतेभये ३० कि हे दूत तू सुन यह वचन मेरेको युक्तही है क्यों कि मैं करदेनेही वालाहू सो उन्होंके वास्तेकरदेऊगा ३१ हे विप्र जो वे मुझ से करलिया चाहते है यह उन्होंका हठही है सो बड़ा आश्चर्य है कि उन शूरवीर क्षत्रियों के ऐसा हठहै और जो वस्तु मुझसे करमागे ३२ ऐसा तो हमने पहिले नहीं सुनाहै ऐसे श्रीकृष्ण दूतके अर्थकहके फिर यादवों के प्रति कहनेलगा ३३ कि हे यदुश्रेष्ठो यह हास्य है जो कि मुझसे करलेना चाहताहै राजसूय यज्ञका पूजन वह ब्रह्मदत्तराजा कियाचाहताहै ३४ और वे दोनों हंसडिंभक उसकेपुत्र यज्ञकराया चाहते हैं तिन दुरात्माओं की यज्ञमें लवणको प्राप्त करनेवाला यदु श्रेष्ठ श्रीकृष्णहै ३५ श्रीकृष्णही करदेनेवाला है हे यदुमत्तमों मैं उन्होंको जीत लियाहूं सो यह बडा हास्यहै ऐसा तुम वचनसुनो ३६ ऐसे जब श्रीकृष्ण भग वान् कहचुके तब बलदेवआदि अन्य सब यादव ३७ करका देनेवाला श्रीकृष्ण है ऐसे कहतेहुये हँसनेलगे और आपसमें हथेलियोंसे हथेली भिड़ाके ऊंचेस्वरसे हास्य करतेभये ३८ तिन्हों की हथेलियों और हास्यके शब्द से आकाश और पृथ्वी पूर्ण होतीभई और वह जनार्दन विप्र मित्रको व अपनी आत्माको निंदा करताहुआ ३९ आश्चर्य है २ और कष्टहै २ जो मैंने दूत कर्मकिया ऐसे लाज से युक्त और नीचेकी तर्फ मुखवाला जनार्दन दूत चुप होताभया ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिगर्गभविष्यपर्वभाषायांपदधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०६ ॥

तीनसौसातका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे हासकरनेवाले तिन्होंके पीछे शत्रुओंको जीतनेवाला श्रीकृष्ण दूतसे कहनेलगा कि जल्द गमनकर और मेरेवचनसे वर्णनभी जाकेकर १ अर्थात् हंस और डिम्भकको कहदे कि शार्ङ्गधनुषसे छुटे पैनेबाणों से २ और तलवार से जल्दही मैं तुम्हारा अर्थ करदेऊगा पीछे सुदर्शनचक्रसे तुम्हारे शिर को काटूगा ३ और जो महादेवने तुमको वरदानदियाहै अगर महादेव भी तु

म्हारी आके रक्षाकरेगा तब भी में महादेव को जीतकर तुम दोनोंको निश्चय मारूंगा ४ और जहां तुम्हारे संग मेरामिलाप होवे वहदेश बनाना चाहिये तहां सेना और वाहनोंकोले में प्राप्तहोजाऊं ५ और तुम भी निर्भयहोके अपनी सेना को ले तिमीदेश में प्राप्तहोजाओ अर्थात् पुष्कर में व प्रयागमें व मथुरा में जहां तुम प्राप्तहोगे ६ तहां मैंभी प्राप्त होजाऊंगा। इसमें संशय नहीं है दूत जो मित्रभाव से तू कहनेको नहीं समर्थहोवे तो ७ यह सात्यकि तेरे संग गमनकरके तेरा साक्षी होके कहदेगा ८ और हे विप्रेन्द्र यह तो मैं जानताहूं कि तू मेरे विषे सब काल में स्नेहकरता है इसवास्ते तू इस संसारको जीतकर ९ सबकाल में मेरी कथा में तत्पर रहाकर १० ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंमकोपाख्यानेकृष्णवाक्यंनामत्र्यधिकत्रिशततमोऽध्यायः ॥

तीनसौआठका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे ब्राह्मण को श्रीकृष्ण कह फिर सात्यकि से कहनेलगे हे शैनेय इस ब्राह्मण के संग गमनकर मेरेवचन से हंस और डिंमक के सम्मुख १ जो मैंने कहाहै वह सब विस्तारसे कह जैसे मेरेसंग तिन दोनुओं का युद्धहोजावे ऐसी रीतिसे जाके कह २ हे यदूत्तम धनुषको ग्रहणकर कवच आदिको धारणकर और एक अश्वपै सवारहोके गमनकर अन्यकी सहायताको ग्रहण मतकरे ३ ऐसे श्रीकृष्ण के वचनको सुन नमस्कारकर सात्यकि के संग दूत तब सात्यकिने कहा कि ठीकहै पीछे शीघ्र चलनेवाले अश्वपर चढ़ सहायता से रहित सात्यकि गमनकी इच्छा करताभया ४ पीछे दूतको विदाकर श्रीकृष्णबोले कि आश्चर्य है हंसडिम्भक का अति हठ है ५ शाल्वनगर को गमन करताभया ६ पीछे तहां प्रवेशकरके वह धर्मात्मा दूतरूप ब्राह्मण सुंदर आसन को सात्यकि के अर्थ देके ७ आपभी स्थितहुआ पीछे सात्यकि को हंस और डिम्भकके अर्थ दिखाके कहनेलगा ८ कि श्रीकृष्णकी बाईंभुजा रूप यह सात्यकि दूतहोके आयाहै तिस ब्राह्मण के वचन को सुन हंस कहनेलगा ९ यह सात्यकि पहले भी सुनाथा परन्तु अब मैंने देखाहै धनुर्वेद वेदशास्त्र और शस्त्र इन्हों में १० कुशल और शूर ऐसा सात्यकि मैंने सुना अब मेरीदृष्टि के सम्मुखहुआ मेरे अर्थ प्रीतिको उपजाताहै ११ हे सात्यके श्रीकृष्ण और वसुदेव मगन से हैं

और सब उग्रसेनआदि सात्वत वंशके पुरुष मंगलरूपहैं १२ तब ऐसे वचन को सुनके मंद मुसकानेवाला सात्यकि कहनेलगा कि सब आनन्दित हैं पीछे हंस, जनार्दन ब्राह्मण से कहनेलगा १३ कि तैंने कृष्ण देखा और हमाराकार्य सिद्ध हुआ सो विस्तारपूर्वक कह वृथा कालको मत गमावे १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने हंसवाक्येऽष्टाधिकत्रिशतोऽध्याय १०८ ॥

तीनसौनवका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे हंसके वचनको सुनके जनार्दन ब्राह्मण नारायणकी स्तुति करता हँसताहुआ १ कहनेलगा कि हाथमें चक्र और शंखको धारण करनेवाले २ तप्त सोनाकरके भूषित अङ्गवाले चंचल प्रकाशितरूप रत्नों को धारण करनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण को मैं देखताभया पुरातन यतियोंकरके सेव्यमान मुनिगणों करके सेव्यमान वन्दीजन और मागधों करके संस्तूयमान, मंदमुसकान करके सहित मूंगाकेसमान ओष्ठको धारण करनेवाले ३ पुरातन कवी और देवताओं करके जाननेयोग्य फूलेहुये कमलों से शोभित ऐसे श्रीकृष्णको फिर मैं देखताभया ४ अजन्मा जगत्का गुरु वचनकरके यादवोंको प्रसन्नकरनेवाला पुरातन मुनीश्वरोंकरके निरूपित और शब्दरूप वेदोंके अर्थका समुद्र ऐसे श्रीकृष्णको मैं वारम्वार देखताभया ५ जगत्के कल्याणकारी जगत् में कल्याणके अर्थ वसनेवाले ६ कमलके समान नेत्रोंवाले रुक्मिणीजीके संग वसतेहुये समुद्रमें शयनकरनेवाले भक्तों के प्रिय और भक्तजनोंके आश्रय पापों को हरनेवाले ऐसे श्रीकृष्णको मैं फेर देखताभया ७ यादवेश्वरों के संग विहार में क्रीडाकरनेवाले यादव मुख्यों के संग रमतेहुये ऐसे श्रीकृष्ण को ८ वारम्वार देखके नेत्रोंकरके तिसके रूपको वारम्वार निरखताहुआ ऐसा मैं धन्य हुआहूं ९ जगत्के आद्यप्रभु विभु सबसे बड़े और विश्वासु आदि रूपोंवाले कृष्णको देख मैं निर्वृत हुआहूं १० जगत्के स्वामी छातीपै कौस्तुभमणि को धारण करनेवाले सैकड़ों चामरोंसे वीज्यमान ११ तुम्हारे द्वेषसेसंयुक्त चित्तकरके स्मरणकरनेवाले विष्णु कहनेलगे कि कहा हंस और डिम्भक ये दोनों हैं १२ कब मैं उन दोनों मदोंको देखूंगा कैसे वे मेरे सम्मुख स्थित होंगे ऐसे ध्यान करतेहुये श्रीकृष्णको

देखताभया १३ मेरे से कर मांगनेवाले हसको मैं कब देखूंगा नारद और दुर्वासा ऋषिकेअर्थ अनेक प्रकारके वचनोंको कहनेवाले ऐसे श्रीकृष्णको मैं देखताभया १४ ब्रह्मसूत्र पदरूप वाणीको मुनीश्वरोंके अर्थ देनेवाले ऐसेश्रीकृष्णकोबारम्बार देखके हे नृपोत्तम मैं वारम्वार चिन्तवन करताभया १५ कि हंस और डिम्भक से यह श्रीकृष्ण असाध्यहै इसवास्ते हे राजन् अबसे अगाडी इस कार्यका आरम्भ मतकरो १६ जो तुम्हों ने कथा ग्रहणकरी वह निवृत्त होगई और विस्तारपूर्व्वक सब ये सात्यकि तेरे अर्थ कहेगा १७ इस वचनको सुनके क्रुद्धरूपहुआ हंस कहने लगा १८ कि अरे ब्राह्मणके पुत्र यह तेरी किसतरह की वाणी है त्रिलोकी को जीतनेवाले हम दोनोंके सम्मुख ऐसी वाणी कहनी उचित नहीं १९ लीला के विधानको जाननेवाले श्रीकृष्णने तुझको मायाकरके भ्रमाया है तिसको देखके तेरेको भ्रमहुआहै २० शङ्ख चक्र गदा धनुष वनमाला इन्होंसे विभूषित वृष्णि-वीरोंमें यशको प्राप्त करनेवाला २१ सूत मागधों से स्तुतिकिया अद्भुत यशकी राशि करके लोकों को प्रकाश करनेवाला २२ चारभुजाओं के बल से आक्रांत वृष्णि और यादवोंकी सभामें अद्भुत ऐसे श्रीकृष्णको देखके तेरेको भ्रमहुआ है २३ हे मन्दात्मन् विप्र अबभी वह श्रीकृष्ण तेरेको भ्रमाता है जैसे इन्द्रजाल विद्या २४ हे विप्र यह तेरी चपलताहै तुझेमेरेसमान वर्तना नहीं चाहिये २५ हे विप्र मित्रभावसे तेरा वचन मैंने सहाहै अन्यथा ऐसे वचनको कौनसहै २६ परन्तु हे मन्दमते मनोवाञ्छित स्थानको चलाजा यहां मतठहरे २७ गोपालकेपुत्र श्री-कृष्णको और बहुतसे यादवोंको जीतके पीछे सब यादवोंको जीतूंगा यह मेरा प्रथमसंकल्पहै २८ सदा मेरे संग भोजनकरके शत्रुपक्ष की स्तुति करता है इस वास्ते हे विप्र तू यहां वसनेयोग्य नहीं है २९ मुझे कष्टमें भी ब्राह्मणका वधकरना उचित नहीं है इस वास्ते जल्द गमनकर ऐसे ब्राह्मण को कहके फिर हंस सात्य-किसे कहने लगा ३० अरे यादव तू यहां किसवास्ते प्राप्तहुआ है और नन्दके पुत्रने क्या कहाहै क्या मेरे अर्थ करनहीं देताभया ३१ सात्यकि कहनेलगा हे हंस शङ्ख चक्र गदा पद्म को धारण करनेवाले का यह वचन है कि पैनेबाणों करके ३२ और पैनी तलवार करके तेरे अर्थ करदूंगा अर्थात् करदानरूप तेरे शिरको काटूंगा ३३ हे नृपाधम तेरी मूर्खताहै कि जगतके स्वामीसे तू करमां-गताहै ३४ तिसकी यही करहै कि तेरी निद्राका हरन किया जावेगा हे मूढ़ निम

श्रीकृष्णके धनुष और शङ्ख के शब्द को सुनके ३५ कौन शत्रु ठहर सकता है महादेव के वरके गर्वसे ऐसे वचन को कौन कहसके है ३६ जो तैंने कहा वल-देवजी आदि हम वहुतसे सहायकहैं अर्थात् प्रथम वलभद्र दूसरा मैं सात्यकि ३७ तीसरा कृतवर्मा चौथानिशठ पाचवा वभ्रू छठा उत्कल ३८ सातवा तारण आ-ठवा सारण नवा विपथू ३९ दशवा उद्धव और हम ऐसे वहुत १० योद्धा श्री-कृष्णके अर्थ सहाय करनेवाले अगाडी ठहरनेवाले हैं ४० महादेव के युद्ध में स्थित होनेवाले मद और वलसे अन्वित श्रीकृष्ण वलदेव तुम को मारनेवाले हैं ४१ तुम्हारे अर्थ वरदानकर महादेव तौ पर्व्वतही में स्थितहैं और तुम दोनों को युद्धमें ठहरना होवैगा ४२ साक्षात् ईश्वररूप श्रीकृष्णसे कौन करकी इच्छा करसकताहै इसवास्ते तुम दोनों को त्रिलोकी की रक्षाकरनेवाला ४३ श्रीकृष्ण शार्ङ्गधनुष से स्थितकिये वाणसे नाशैगा और यह भी श्रीकृष्णने पूंछा है कि हमारा तुम्हारेसंग संग्राम किसदेशमें होवैगा ४४ अर्थात् पुष्कर गोवर्द्धनपर्वत मथुरा प्रयाग इन क्षेत्रों में से एक कोईसे में मैं अपनी सेनाओंकोले स्थितहो-जाओं ४५ शङ्ख चक्रधर जगत्के पालक ऐसे श्रीकृष्ण के स्थितहुये राजसूय रूप महायज्ञको कौन करसक्ता है ४६ तिसकी कृपाविना कौन कल्याण सुखको प्राप्तहोसक्ताहै यह तुम्हारा वड़ा मूढपना जडपनाहै कि ऐसे अद्भुत वचन तुमने कहा ४७ हे मूढ जो इसी कर्त्तव्यकी इच्छारखताहै तौ संसारमें हास्यताको प्राप्त होवैगा ऐसे कहके हँसतेहुये की तरह सात्यकि स्थितरहा ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिहंसडिमकोपाख्यानेसात्यकिवाक्येनवाधिकत्रिशततमोऽध्यायः १०९॥

तीनसौदशका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे वचनको सुनके क्रुद्धरूप रोषकरके व्याकु-लित नेत्रोंवाले १ अन्यराजाओं की तर्फ देख सब दिशाओं को दग्धकरनेवाले हाथ से हाथको पीडनकर तिस वचनको स्मरण करनेवाले २ कहा नंदका पुत्र है कहा वलदेव है ऐसे कहनेवाले हंस व डिंभक सात्यकि से कहनेलगे ३ कि अरेमूढ़ हमारे सम्मुख तू क्या वोलताहै हे महात्मन् यहांसे निकसजा तू इसहै ४ नहीं तो माराजाना ऐसे वचन कहनेसे प्रतीत होताहै कि तू निर्लज्ज भी है ५

हमों ने सब जगत् जीतलिया ऐसा कौन मनुष्य मनुष्यलोकमें है जिस ने हमों को कर न दिया हो ६ इस वास्ते सब गोपालों को मार के यादवों को बांधके करको ग्रहण करेंगे हे नराधम तू चलाजा ७ दूतताको प्राप्त हुआ तू अवध्य है हमारे अर्थ वर और अस्त्रोंका देनेवाला महादेव है ८ युद्ध करने के वक्त दो महादेवकेगण हमारी रक्षाकरते हैं युद्धमें गोपालों को मारके पितरों के अर्थ यज्ञ करेंगे ९ जो तैंने कायररूप सबयोद्धा गिनाये हैं युद्धमें तिन्होंको और सेनाको मारके पीछे श्रीकृष्णको जीतेंगे १० बाण और धनुषों को धारणकरनेवाली प्राश मूसल कवच ११ रथ गदा परिघ और अनेकप्रकार के साधन १२ छत्र ध्वजा घंटा शस्त्र कुटी तोमर १३ इन्होंको धारण करनेवाली सेना तैयारकरो और सेनाके पतियों को भी चारोंतर्फ शुरूकरो और तू अवध्यरूप हुआ अब गमन कर १४ कल्ह या परसों पुष्कर में हमारा संग्राम होवैगा तहां श्रीकृष्ण बलदेव आदि जो तैंने योद्धे गिनाये हैं तिन्होंमें और मेरे में जो बलहै तिसको हम जानलेंगे १५ सात्यकि कहनेलगा हे राजाओ कल्ह या परसों तुम्हारे को मारनेके अर्थ मैं अब गमन करताहूं जो मैं दूतभावको नहीं प्राप्तहोता तौ अभी मेरे से तुमदोनों वध्यरूपथे १६ इसवास्ते दूतपनेका होनाही मुझको दुःखरूप प्रतीतहोताहै १७ नहीं तो तुम दोनोंको मारके अभी निर्वृतीको प्राप्त होजाता १८ शङ्ख चक्र गदाको हाथमें धारण करनेवाला १९ और शार्ङ्गधनुषवाला मुकुटको धारण करनेवाला नील कुंचितकेशोंसे आढ्य लंबबाहुओंवाला लक्ष्मी से परिवृत २० सबलोकका उत्पत्तिस्थान विश्वरूप सुन्दररूपवाला दैत्य और दानवोंको मारने वाला योगियों को ध्यान करने के योग्य पुरातन २१ कमलकी केशरके समान मुखवाला श्यामल सत्य पराक्रमवाला सृष्टिस्थितिप्रलय इन्हों का कर्त्ता तीनों लोकोंकापति २२ ऐसा श्रीकृष्ण पैने शरकरके युद्धमें तुम्हारे गर्वको दूरकरेगा ऐसे कहके सात्यकि घोडे पै सवारहोके गमन करताभया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वणिभाषायांवैशम्पायनजनमेजयसंवादे
सात्यकिगमनंनामदशाधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३१० ॥

तीनसौग्यारहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि सात्यकि द्वारकामें मंत्रकर हंसडिम्भकों के

श्रीकृष्णके धनुष और शङ्खके शब्द को सुनके ३५ कौन शत्रु ठहर सकता है महादेव के वरके गर्वसे ऐसे वचन को कौन कहसके हे ३६ जो तैंने कहा वल-देवजी आदि हम वहुतसे सहायकहे अर्थात् प्रथम वलभद दूसरा मैं सात्यकि ३७ तीसरा कृतवर्मा चौथानिशठ पाचवा वभ्रू छठा उत्कल ३८ सातवा तारण आठवा सारङ्ग नवा विप्रथू ३९ दशवा उद्धव और हम ऐसे वहुत १० योद्धा श्रीकृष्णके अर्थ सहाय करनेवाले अगाडी ठहरनेवाले हैं ४० महादेव के युद्ध में स्थित होनेवाले मद और वलसे अन्वित श्रीकृष्ण वलदेव तुम को मारनेवाले हैं ४१ तुम्हारे अर्थ वरदानकर महादेव तो पर्व्वतही में स्थितहैं और तुम दोनों को युद्धमें ठहरना होवैगा ४२ साक्षात् ईश्वररूप श्रीकृष्णसे कौन क्रकी इच्छा करसकताहै इसवास्ते तुम दोनों को त्रिलोकी की रक्षाकरनेवाला ४३ श्रीकृष्ण शार्ङ्गधनुष से स्थितकिये वाणसे नाशैगा और यह भी श्रीकृष्णने पूंछा है कि हमारा तुम्हारेसग संग्राम किसदेशमें होवैगा ४४ अर्थात पुष्कर गोवर्द्धनपर्वत मथुरा प्रयाग इन क्षेत्रों में से एक कोईसे में मैं अपनी सेनाओंकोले स्थितहोजाओं ४५ शङ्ख चक्रधर जगत्के पालक ऐसे श्रीकृष्ण के स्थितहुये राजसूय रूप महायज्ञको कौन करसक्ता है ४६ तिसकी कृपाविना कौन कल्याण सुखको प्राप्तहोसक्ताहै यह तुम्हारा वडा मूढपना जडपनाहै कि ऐसे अद्भुत वचन तुमने कहा ४७ हे मूढ जो इसी कर्त्तव्यकी इच्छारखताहै तो ससारमें हास्यताको प्राप्त होवैगा ऐसे कहके हँसतेहुये की तरह सात्यकि स्थितरहा ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायाहंसडिंभकोपाख्यानेसात्यकिवाक्ये नवाधिकत्रिशतोऽध्याय ३०९॥

तीनसौदशका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि ऐसे वचनको सुनके क्रुद्धरूप रोषकरके व्याकुलित नेत्रोंवाले १ अन्यराजाओं की तर्फ देख सव दिशाओं को दग्धकरनेवाले हाथ से हाथको पीडनकर तिस वचनको स्मरण करनेवाले २ कहा नदका पुत्र हैं कहा वलदेव है ऐसे कहनेवाले हस व डिंभक सात्यकि से कहनेलगे ३ कि अरेमूढ हमारे सम्मुख तू क्या वोलताहै हे मंदात्मन् यहासे निकसजा तू दूतहै ४ नहीं तो माराजाता ऐसे वचन कहनेसे प्रतीत होताहै कि तू निर्लज्ज भी है ५

हमों ने सब जगत् जीतलिया ऐसा कौन मनुष्य मनुष्यलोकमें है जिस ने हमों को कर न दिया हो ६ इस वास्ते सब गोपालों को मार के यादवों को बाँधके करको ग्रहण करेंगे हे नराधम तू चलाजा ७ दूतताको प्राप्त हुआ तू अवध्य है हमारे अर्थ वर और अस्त्रोंका देनेवाला महादेव है ८ युद्ध करने के वक्त दो म-हादेवकेगण हमारी रक्षाकरते हैं युद्धमें गोपालों को मारके पितरों के अर्थ यज्ञ करेंगे ९ जो तैंने कायररूप सबयोद्धा गिनाये हैं युद्धमें तिन्होंको और सेनाको मारके पीछे श्रीकृष्णको जीतेंगे १० बाण और धनुषों को धारणकरनेवाली व प्राश मूसल कवच ११ रथ गदा परिघ और अनेकप्रकार के साधन १२ छत्र ध्वजा घंटा शस्त्र कुटी तोमर १३ इन्होंको धारण करनेवाली सेना तैयारकरो और सेनाके पतियों को भी चारोंतर्फ युक्तकरो और तू अवध्यरूप हुआ अब गमन कर १४ कल्ह या परसों पुष्कर में हमारा संग्राम होवेगा तहां श्रीकृष्ण बलदेव आदि जो तैंने योद्धे गिनाये हैं तिन्होंमें और मेरे में जो बल है तिसको हम जा-नलेंगे १५ सात्यकि कहनेलगा हे राजाओ कल्ह या परसों तुम्हारे को मारनेके अर्थ में अब गमन करताहूं जो मैं दूतभावको नहीं प्राप्तहोता तो अभी मेरे से तुमदोनों वध्यरूपथे १६ इसवास्ते दूतपनेका होनाही मुझको दुःखरूप प्रतीतहो-ताहै १७ नहीं तो तुम दोनोंको मारके अभी निर्वृतीको प्राप्त होजाता १८ शङ्ख चक्र गदाको हाथमें धारण करनेवाला १९ और शार्ङ्गधनुषवाला मुकुटको धारण करनेवाला नील कुंचितकेशोंसे आढ्य लंबेबाहुओंवाला लक्ष्मी से परिवृत २० सबलोकका उत्पत्तिस्थान विश्वरूप सुन्दररूपवाला दैत्य और दानवोंको मारने वाला योगियों को ध्यान करने के योग्य पुरातन २१ कमलकी केशरके समान मुखवाला श्यामल सत्य पराक्रमवाला सृष्टिस्थितिप्रलय इन्हों का कर्त्ता तीनों लोकोंकापति २२ ऐसा श्रीकृष्ण पैने शरकरके युद्धमें तुम्हारे गर्वको दूरकरेगा ऐसे कहके सात्यकि घोडे पै सवारहोके गमन करताभया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वेभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने सात्यकिप्रतिगमनेदशाधिकत्रिशततमोऽध्याय ३१० ॥

तीनसौग्यारहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि सात्यकि [illegible]

सग जो वृत्तान्त वीता सो श्रीकृष्णके अर्थ कहताभया १ पीछे प्रभात में मंगल कर्म का करनेवाला श्रीकृष्ण सेनाके स्वामियों से कहनेलगा २ कि रथ हाथी घोड़ा इन्होंवाला और अनेक भेरी नक्कारे प्राश तलवार परिघ ३ ध्वजा पताका अलंकार परिच्छद इन्होंसेयुक्त सेनाको सावधानकरो तब श्रीकृष्णके वचन को सुन ऐसेही करतेभये ४ हलको धारण करनेवाला नीले वस्त्रोंवाला वनकी मा- लाओं को धारण करनेवाला श्वेत कांतिवाला चन्द्रमाके समान चमकताहुआ ऐसा बलदेव सेनाके अग्रभागमें चलनेलगा ५ और शस्त्रोंको ग्रहण करनेवाला क्रोधसे संयुक्त महाबली ऐसा सात्यकि भी अग्रभागमें चलनेलगा ६ अपने अ- पने शस्त्रोंको ग्रहण करनेवाले सिंहके समान शब्द को करनेवाले शूरवीर ऐसे यादव भी गमन करनेलगे ७ दृढ धनुषों को धारणकर रथमें स्थितहो कवच आदि से दंशितहुये सेनाके स्वामी भी अगाड़ी अगाड़ी गमन करनेलगे ८ पीछे शार्ङ्गधनुष को धारण करनेवाला ९ हाथ में चक्रको लेनेवाला गदा शूल शर तलवार इन्होंको लेनेवाला कवच आदि को पहननेवाला पीले वस्त्रोंवाला १० कमलोंकी मालाको पहननेवाला नीले बद्दलके समान कान्तिवाला दारुक करिके सन्नद्ध किये रथमें स्थित आनन्दितरूप ब्राह्मणों से स्तूयमान ११ सूत मागध पौंड्र इन्हों से गीयमान ऐसा श्रीकृष्ण सपूर्ण सेनाकोप्राप्तहो उत्तरदिशा को चलनेलगा १२ तब मुखमें पांचजन्य शङ्ख को स्थापितकर जोरसे बजाता भया तब शत्रुओं को भयका देनेवाला शब्दहुआ १३ वह शब्द पृथ्वी और आकाश में पूरित होगया १४ पीछे अन्यभी अपने अपने शख को बजानेलगे व भेरी नक्कारे मृदग येभी बजानेलगे १५ तब जैसे वर्षा कालमें बद्दल गर्ज्जता है तिसकी तरह शब्द होनेलगा पीछे सबयादव पवित्ररूप पुष्कर तीर्थ पै आके १६ तीर्थ के तीरपै निवेशकर अपनी अपनी तमोटी और तम्बुओंमें प्रवेशकरते भये १७ श्रीकृष्ण भी सुन्दर पुष्कर तीर्थ को देखके तहा स्नानकर मुनियों को प्रणामकर १८ हंस डिम्भकके आगमनको देखताहुआ चारोंतरफ ब्राह्मणोंके १९ वेदध्वनिको सुनताहुआ ऐसा श्रीकृष्ण तीरपै सुखपूर्वक स्थितहुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेश्रीकृष्णस्य पुष्करप्रवेशेएकादशाधिकत्रिशतोऽध्याय ३११ ॥

तीनसौबारहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि पीछे दशक्षौहिणी सेना को लेनेवाले धनुष को धारण करनेवाले १ रथमें स्थित सबों से अग्रभाग में चलनेवाले पृथ्वी को भस्म से परिवेष्टित करनेवाले २ त्रिपुण्ड्र तिलक को मस्तक में लगानेवाले रुद्राक्ष की मालासे परिशोभित लोकका संहार करनेवाले मानो दो महादेव आते हैं ३ ऐसे दोनों हंस और डिंभक पुष्कर में प्राप्तभये ४ हे महाराज तिन दोनों का मित्र पर्व्वत के समान ५ जिसके सम्मुख इन्द्रभी नहीं स्थित होसके जो देवासुर युद्ध में ६ देवताओं को मारके देवेंद्र को जीतता गया और जिसने विष्णु के संग पहिले युद्ध किया ७ जो द्वारका में प्राप्तहोके यादवोंको दुःखित करताभया ऐसा विचक्र दैत्य युद्धको सुनके ८ अनगणित शस्त्रों को धारण करनेवाले बहुतसे दैत्योंकी सेनाको ले श्रीकृष्ण के द्वेषमे ६ हंस और डिम्भककी सहाय करने के अर्थ उद्यतहुआ और विचक्र दैत्य का मंत्री हिडिम्बराक्षसेश्वर १० शिला शूल तलवार इन्होंके धारण करनेवाले बहुतसे राक्षसोंको लेके विचक्र दैत्यकी रक्षाके अर्थ प्राप्तहुआ ११ तहां शिला और परिघों को हाथमें धारण करनेवाले राक्षस अट्ठासीहजारथे १२ तब ऐसी अनेक प्रकारकी सेना पुष्करमें प्राप्तभई १३ और तिस युद्ध में शापके भयसे भीतहुआ जरासन्ध हंसडिम्भक की सहायता नहीं करताभया १४ और सिंहके समान शब्दों को करनेवाले और आपस में कहने वाले मैंहीं पहले श्रीकृष्ण के संग युद्ध करूंगा १५ ऐसे कहतेहुए बहुतसे राजे पवित्ररूप १६ मुनियों से जुष्ट और तपवाले ऋषियों से सेवित लोकों में अति मंगलरूप १७ ऐसे पुष्करमें प्राप्तभये और हे राजन् पुष्करतीर्थ और श्रीकृष्ण ये दोनों दर्शन से और स्पर्शनसे पापको काटनेवाले स्थित हैं १८ और विष्टरश्रवा नामवाले हरिको देखकर और पवित्ररूप पुष्करको देख १६ राजे कहनेलगे कि हे हंस तेरे पापोंका नाशहोचुका २० पीछे तहां अनेक प्रकारकी सेनाको प्राप्त कर अनेक प्रकारके नकारेआदि बाजनेभये २१ और युद्धके अर्थ उपस्थितहुये श्रीकृष्णको देखतेभये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणिभविष्यपर्वणिभाषायांहंसडिम्भकसहायार्थं
पुष्करगमनेद्वादशाधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३१२ ॥

तीनसौतेरहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि हे राजन् ऐसे सब सामग्रियों से संयुक्त दोनोंसेना आपसमें युद्ध करनेलगीं १ तब धनुषों से छोड़ेहुये वाण योद्धाओंके शरीरोंको भेदनकर दूरपडनेलगे २ और योद्धाओंके बाहुओं से मुक्तहुई तलवार छातीको काटके टूटनेलगी ३ योद्धाओं के बाहुओं से प्रेरित किये परिघ योद्धाओं के शिरोंको काटके ४ तिलोंके समान टुकडे करनेलगे और आपसमें मारने की आकांक्षा वाले ५ दैत्य और राक्षस और राजे शब्दकरके युद्ध करनेलगे ६ तब हाथियों से हाथी घोड़ों से घोडे रथोंसे रथ और सादियों से सादि ७ पट्टिश तलवार वाण भाला शक्ति परिघ प्राश फरसा ८ भिंदिपाल इन्होंकरके आपस में राक्षस दैत्य और क्षत्रिय चारोंतरफमे मारतेभये ९ और मदवाले हाथीके समान पराक्रमवाले राक्षस और दैत्य सर्पोंके समान वाणोंसे भेदन करनेलगे १० और आपसमें जहांतहा भागतेहुये शब्द करनेलगे ११ हे राजन् कितनेक तलवारों से कटेहुये पृथ्वीमें पड़तेभये और कितनेक गदाओंसे मथित मस्तकोंवाले पृथ्वीमें पडतेभये १२ कितनेक पट्टिश और परिघोंसे भग्नरूप ग्रीवावाले धर्मराज के लोकमें प्राप्तभये और कितनेक स्वर्गको प्राप्तभये १३ कितनेक अपने शरीर को देखतेहुये अप्सराओं के संग स्थितहुये और कितनेक अपने और परायों को मारके भ्रातोंकीतरह होतेभये १४ पीछे इसी अन्तरमें हे राजन् हजारहा शंख हजारहा भेरी और हजारहां मृदङ्ग बजनेलगे १५ और मध्याह्नमें सूर्य दग्धकरने लगा तब विकृतरूप पिशाच १६ और महा घोररूप राक्षस प्रसन्नहुये लोहूका पानकरनेलगे १७ और कितनेक हाथोंमें तलवार लेनेवाले कबन्ध उठतेभये १८ मुर्दोंको बाज गीध बगुला कंक आदि पक्षी खैंच खैंचके जहातहा भक्षण करने लगे १९ तिससमय में ८७००० हाथी ४०००० घोड़े २० और एकलाख रथियों के सहित रथों का नाशहुआ और तीसकिरोड़ पियादे मारेगये २१ कितनेक निहतहुये पुष्करमें प्रवेश करतेभये २२ कितनेक पृथ्वी में प्राप्तहो हताहता ऐसे कहते भये कितनेक खुले चोटियोंवाले रथको त्यागके पडतेभये २३ ऐसे पुष्कर तीर्थपै अद्भुत महायुद्धहुआ २४ जैसे पहले देवते व दैत्योंका हुआथा २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायाहंसडिम्भको पाख्यानेसकुलयुद्धेत्रयोदशाधिकत्रिशततोऽध्यायः ३१३ ॥

तीनसौचौदहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि इसी अन्तर में हे राजन् द्वन्द्वयुद्ध प्रवृत्तहुआ अर्थात् श्रीकृष्ण विचक्र दैत्य के सग युद्ध करनेलगा १ और हंसके सग बलभद्र डिम्भके सग सात्यकि वसुदेव और उग्रसेन इन दोनोंके संग हैडम्बराक्षस २ व शेषरहे शेषोंके सग द्वंद्वयुद्ध करनेलगे तब श्रीकृष्ण तिहत्तरबाणों से दैत्य की छातीको वींधताभया ३ तब दैत्यभी इन्द्रके देखतेहुये अपने धनुषको कानोंतक खैंचके दृढरूप एक पैने बाणसे ४ श्रीकृष्णके दोनों स्तनों के मध्यमें वींधता भया ५ तिस बाणकरके छाती देशमें विद्धहुये श्रीकृष्ण लोहूको थूकनेभये जैसे आदि कालमें भजा ६ पीछे क्रुद्धरूपहुये श्रीकृष्ण क्षुप्र शस्त्रकरके दैत्यकी ध्वजाको और तीनबाणोंकरके चारोंघोडे औरसारथीको मारके ७ शखको बजाते भये पीछे क्रोधसे मूर्च्छित हुआ दैत्य रथसे कूद ८ महाघोररूप गदाको ग्रहण कर श्रीकृष्ण के मुकुट पे मारताभया ९ फिर श्रीकृष्ण के मस्तकपै मारके सिंह की तरह शब्द करनेलगा पीछे दैत्य बडी शिलाको ग्रहणकर १० सौगुणीभ्रमा के श्रीकृष्ण की छाती पै फेंकनेलगा तब आवतीहुई शिलाको देख श्रीकृष्ण हाथसे ग्रहणकर ११ दैत्यको मारताभया तब पृथ्वी में ध्यान लेताहुआ दैत्य मरे की तरह होके गिरपडा १२ पीछे फिर संज्ञाको प्राप्तहो क्रोधसे दैत्यदुगुना प्रकाशितहोके घोररूप परिघ को ग्रहणकर श्रीकृष्णसे कहनेलगा १३ कि हे गोविंद तेरे गर्वको इसकरके काटताहू तब मेरे विक्रमको तू जानेगा १४ जो देवासुर युद्ध मेंथे वही दोनों मेरे भुजाहैं और वही मैंहू तथापि हे वीर तू मेरी गैल युद्धकरेहै १५ हे महाबाहो मेरीबाहुसे निकसा इस परिघका निवारणकर ऐसे श्रीकृष्ण से कहके परिघको छोडताभया १६ तब सब लोकके देखतेहुये श्रीकृष्ण तिस परिघ को अपनी बाहुसे ग्रहणकर १७ पैने तलवार से परिघ के टुकड़े बनाताभया व कहनेलगा कि मैं देखा १८ तब क्रुद्धरूप दैत्य शतशाखावाला और महा शिलाओंवाला ऐसे वृक्षको उखाड़ १९ तिसकरके श्रीकृष्णको पीड़ित करनेलगा तब श्रीकृष्ण अपनी तलवार से तिस वृक्षके भी टुकडे करतेभये २० ऐसे बहुत काल तिस दैत्यकेसग क्रीडाकरके फिर श्रीकृष्ण दैत्यको मारनेकी इच्छाकरता भया २१ सो पैने बाण को ग्रहणकर और आग्नेयअस्त्र से संयुक्त कर निसकरके

दैत्यको मारताभया तब वह शर दैत्यको दग्धकरके सब लोकोंके देखतेहुये २२ श्रीकृष्णके हाथमें प्राप्तहुआ तब मरनेसे बचेहुये दैत्य दशोंदिशाओं को भागने लगे२३सो हे जनमेजय समुद्रमें गमनकरतेहुये अवतकभी निवृत्त नहींहोतेहैं२४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांहसडिंमको पाख्यानेविचक्रवधेचतुर्दशाधिकत्रिशतोऽध्याय ३१४॥

तीनसौपंद्रहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे वाणों के धारण करनेवालों में श्रेष्ठ धर्मात्मा बलदेव भी धनुषको ग्रहणकर दशवाणोंसे हंसको वींधताभया १ तब हंस भी पांचवाणों करके बलदेवको वींधताभया फिर दशवाणों करके हंसके दोनों स्तनों के मध्य में भेदनकर २ फिर एक वाणसे हंसके मस्तकको वींधताभया तब बहुतकालतक हंस मूर्च्छित होगया ३ पीछे संज्ञाको प्राप्तहो हंस एकवाणको ग्रहणकर तिससे बलदेवको वींध ४ देवताओंको आश्चर्य दिखाताहुआ सिंहकी तरह शब्दकरने लगा तब तिस वाण करके विद्धहुआ बलदेव ५ अत्यन्त लोहूको थूकताहुआ युद्धमें श्वासलेनेलगा पीछे लोहू से आविष्ट शरीरवाला बलदेव ६ सातहजार वाणोंकरके हंसके समान गमन करनेवाले हंसको विदारण करनेलगा ७ तब रथ में ध्वजामें धनुषमें छत्रमें तर्कसमें वाणलगतेहुये ८ और हंसको दुःखित करते भये तब वीर्य मदसे अन्वित हंस ९ एक वाणसे बलदेवको वींधके दूसरेवाणसे बलदेवके रथकी ध्वजाको तोड और चारवाणसे बलदेवके चारोंघोड़ों को वींध फिर एक वाणसे बलदेवके रथके सारथीको मारताभया १० तब क्रुद्धहुआ बलदेव गदाको ग्रहणकर शेषनागकी तरह फुंकार मारके ११ हंसको एकगदा की चोटदेके पीछे हंसके ध्वजा रथ चक्र ईषा सूत इन्हों के टुकडे बनायके वारम्वार शब्दकरके १२ फिर गदासे हंसको मारनेलगा तब हंस भी रथसे कूद गदाको ग्रहण करताभया १३ तब लोकमें प्रथित तेजवाले महारथी १४ अतिअद्भुत विक्रांत और आपसमें मारनेकी इच्छावाले संचित श्रमवाले युद्धमें सिंहकेसमान गमन करनेवाले १५ और देवासुर युद्धमें इन्द्र व वृत्रासुरकी तरह युद्धकरनेवाले और लोहूकरके भीजेहुये १६ अद्भुतवाले युद्धमें परस्पर बलकरके अत्यंत खेदित ऐसे हंस और बलदेव आपसमें युद्ध करनेलगे पीछे दक्षिण मंडलको बलदेव

प्राप्तहुआ १७ और बायें मण्डलको आपही हस प्राप्तहुआ तब हाथी के समान पराक्रमवाले १८ दोनों गदाओं करके मरणके अर्थ पीड़ित होनेलगे ऐसे सब देवताओं के देखतेहुये देवासुर युद्धके समान संग्राम प्रवृत्तहुआ १९ सब देवते व मुनि आश्चर्यको प्राप्तहुये २० और आश्चर्यके वशसे देवते गंधर्व किन्नर कहने लगे कि ऐसा युद्ध न कभी देखा न पहलेसुना २१ तब दोनों अपने २ मंडलोंके अनुसार गोड़ोंको नवाय गदा से युद्ध करतेभये २२ अर्थात् सब देवताओं के देखते हुये अतिपराक्रम हुआ २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेहंस बलदेवयोर्युद्धेपञ्चदशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१५ ॥

तीनसौसोलहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे पीछे अतिबलवाले और क्षत्रियों में विख्यात १ युद्धमें अति पराक्रम करनेवाले और निरन्तर वृद्धोंको सेवनेवाले ऐसे डिम्भक और सात्यकि आपसमें युद्ध करनेलगे २ तब सात्यकि दशबाणोंसे स्तनके मध्य में और छाती में डिम्भकको बींधताभया ३ तब युद्ध में गर्वित डिम्भक पांचहजार बाणोंसे सात्यकि को बींधनेलगा ४ तब तिसी अन्तरमें सात्यकि तिनबाणोंको काट सातबाणों से डिम्भकको बींधताभया पीछे डिम्भक लाखबाणों से सात्यकि को बींधनेलगा ५ तब तीक्ष्ण छुरेसे डिंभकके धनुषको सात्यकि मध्य से तोड़ता भया ६ व हे राजन् डिंभकभी रौद्ररूप क्षुरप्र शस्त्रसे सात्यकिको बींधनेलगा ७ तब बहुतसे लोहूको भिराताहुआ सात्यकि केसूके वृक्षकीतरह शोभित हुआ तब ८ फिर सात्यकि ने डिंभक का धनुष मध्यसे तोड़दिया फिर डिंभक अन्य धनुषको लेके ९ सब क्षत्रियों के देखतेहुये बाणोंकी वर्षा करनेलगा तब फिर पैने बाणसे सात्यकि ने डिंभकका धनुष तोड़दिया १० तब फिर डिंभकने अन्य धनुषलिया ११ ऐसे डिंभक के पन्द्रहजार धनुष सात्यकिने तोड़े १२ तब सात्यकि सब क्षत्रियों के देखते शब्द करनेलगा पीछे दोनों धनुषों को त्यागके १३ उग्ररूप तलवारों को ग्रहणकर युद्धमें स्थितहुये १४ हे राजन् द्रोणपुत्र सोमदत्त अभिमन्यु नकुल सात्यकि डिंभक ये १५ खड्ग युद्ध को जाननेवालों में श्रेष्ठ कहे हैं १६ इसवास्ते डिंभक और सात्यकि भ्रान्त उद्भ्रान्त विद्ध प्रविद्ध प्लुत्ति वृत्त १७ आ

कर विकर भिन्ननिर्मर्याद अमानुर संकोचित कुलचित जांनु विजानु १८ आहित चित्रक क्षिप्त कुद्रव लवण धृत सर्वबाहु विनिर्वाहु सव्येतर उत्तर१६ त्रिवाहु तुगबाहु सव्योन्नत उदासी पृष्ठगत प्रथित यौधिक प्रथित २० ऐसे बत्तीसप्रकार खड्गयुद्धमें कहे हैं तिन्होंको वारम्वार करतेहुये दानों परिश्रमको नहीं प्राप्तभये २१ तव देवते गंधर्व सिद्ध महर्षि दोनोंकी २२ स्तुति करनेलगे आश्चर्य है कि इनदोनों बलवानों के युद्धमें २३ व खड्ग युद्धमें दोनों समर्थ हैं तिन्हों में डिंभक महादेवका शिष्यहै और सात्यकि द्रोणाचार्यका शिष्यहै २४ अर्जुन सात्यकि श्रीकृष्ण ये तीन युद्धमें विख्यातहैं २५ और डिंभक स्वामिकार्तिक और महादेव ये भी तीनों विख्यातहैं२६ ऐसे देव गन्धर्व सिद्ध यक्ष सर्प आकाशमें स्थितहुये कहनेलगे२७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वोवर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेसात्यकि डिंभकयोर्युद्धे षोडशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१६ ॥

तीनसौसत्रहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि युद्धमें कुशल और जराकरके जरित सब अंगों वाले पलितरूप अंग और शिरको धारण करनेवाले १ ज्ञान विज्ञानमें सपन्न राज मार्ग में विशारद ऐसे वसुदेव और उग्रसेन हैडम्बराक्षसके सग युद्ध करनेलगे २ तव कईहजार बाणों से हैडम्बको वींधतेभये ३ और हैडम्बराक्षस सब मनुष्यों को खाताहुआ अति प्रवृद्ध दुष्टात्मा लंबेबाहु और बडी ठोढीवाला ४ लंब उदरवाला विरूपाक्ष पिंगरूपकेश और बड़े नेत्रोंवाला सिकराके समान नासिकावाला महारौद्र ऊर्ध्वगत रोमोंवाला महाभुजाओंवाला ५ पर्वतके आकार गात्रोंवाला दीर्घ दंष्ट्रावाला शिवाकेसमान मुखवाला दीर्घरूप दांतोंवाला हाथीके समान ग्रास करनेवाला ६ बडी छातीवाला दीर्घग्रीवावाला हाथीके समान उपमावाला ऐसा हैडम्बहोके मासको खाताहुआ लोहूके समूहको पीताहुआ७हाथियोंको हाथियों से घोड़ोंको घोड़ोंसे रथोंको रथोंसे पियादोंको पियादोंसे भिडाताहुआ ८ अपने अगाड़ी मनुष्यों को देख कितनेक यादवों को मारके अपनी नासिका में चढ़ाताभया और कितनेक यादवों को खाताभया ९ अर्थात् जिन्होंको अपने सम्मुख देखे उन्होंको मारडाले और अन्ययादवरूप पियादोंको फेंकनेलगा १० जैसे अतकालमें क्रुद्धहुआ महादेव प्राणियों को तब एकक्षणमें बहुतसे यादवों

को खाताभया ११ तब कितनेक भयकोमान वृष्णिदिशाओंको भागतेभये और कितनेक तिसराक्षसने भक्षण करलिये १२ जैसे कुम्भकर्णने वानरों की सेना तब शेषरही वृष्णियोंकी सेना चित्रवस्त्र पै स्थितकी तरह रही १३ पीछे इसी अन्तरमें क्रोधको प्राप्तहुये वसुदेव और उग्रसेन धनुषोंको धारणकर राक्षसके सम्मुख स्थित हुये १४ जैसे क्रुद्धरूपसिंहके सम्मुख क्रुद्धहुये दो मेंढे पीछे इन दोनोंको देख मुख को फाड राक्षस भागनेलगा १५ तब उग्रसेन और वसुदेव शरोंकरके राक्षसकोबीं-धनेलगे और जिस जिसतरफके मनुष्योंको खाताहुआ राक्षस विचरनेलगा १६ तहा दोनों यदुवीर बाणों स बींधतेभये १७ पीछे वह राक्षस बाहुओं को पसारके दोनों के धनुषों को श्रमके युद्ध में तोड़ताभया १८ और वृद्धों को सेवनेवाला पृथ्वीको पालनेवाला ऐसे वसुदेवको ग्रहण करने के अर्थ राक्षस यत्न करनेलगा १९ हिडिम्ब कहनेलगा हे वसुदेव हे नृपाधम तुम दोनों को मैं भक्षण करूंगा और हे उग्रसेन तू किसवास्ते मेरे सम्मुख स्थित है २० यहा आके मेरे मुख में प्रवेश करो तुम दोनों मेरे ग्रासरूपहो और तुमको ब्रह्माने मेरे अर्थ रचाहै २१ और बुभुक्षित श्रमसे पीड़ित युद्ध में त्वरित विक्रमवाला ऐसा जो मैं हू सो मेरे मुखमे तुम गमन नहीं करोगे अर्थात् वेगसे मेरेमुखमें प्रवेशकरो २२ तुम दोनों के लोहूका पानकर मैं तृप्तिको प्राप्तहोऊंगा फिर तुम दोनों के मासको सुखपूर्वक खाऊगा २३ ऐसे कहताहुआ क्रुद्ध फाड़ेहुये मुखवाला बड़ी डाढ़ोंवाला ऐसे हि-डिम्ब राक्षस भागनेलगा २४ तब भयभीतहुये वसुदेव और उग्रसेन चारोंतरफको देख शस्त्रों से रहितहुये दिशाओं में भागनेलगे २५ तब इसी अन्तर में वसुदेव और उग्रसेन को भागतेहुये देख प्रतापवाला बलदेव युद्ध करनेहुये २६ इनको श्रीकृष्ण के अर्थ सौंप राक्षस के समीप में प्राप्तहो २७ कहनेलगा कि हे राक्षस साहस मतकरे इन दोनोंको छोड मैं स्थितहुआ हूं शत्रुको जीतनेवाले मेरे से तू युद्धकर २८ मैं तेरेको मारूगा यह तू क्या डराताहै ऐसे कहतेहुये बलदेवको देख राक्षस तिन दोनों को छोड़ २९ बलदेव के सम्मुख पहिलेकी तरह मुखको फाड़भागा तब राक्षस के सम्मुख स्थितहुआ ३० बलदेव धनुषबाण को त्यागके बाहुको स्फोटन करताहुआ मुष्टीको ग्रहण करनेलगा ३१ तब दुष्टात्मा हिडिम्ब मुष्टीकरके बलदेव की छाती में मारताभया ३२ पीछे मुष्टी से ताड़ितहुआ युद्ध रूप ऐसा बलदेव मुष्टि से राक्षस को मारनेलगा ३३ तब दोनोंका आपसमें म-

ष्टियुद्ध प्रवृत्तहुआ ३४ तव चटचटाशब्द प्रकट होताभया पीछे हिडिम्ब मुक्कासे वलदेवकी छाती में मारताभया ३५ जैसे वज्रकरके इन्द्र पीछे वलवाला वलदेव ३६ मुक्कासे हिडिम्बकी छाती में चोट मारनेलगा पीछे दोनोंहाथोंकी घुआथड़ से राक्षसके मुखपै मारनेलगा ३७ तव प्राणोंसे रहितकीतरह राक्षस पृथ्वी में पड़ा ३८ तव वलदेव दोनोंहाथोंसे राक्षसको ग्रहणकर वाहुके वेगसे भ्रमाके ३६ सव लोकों के देखतेहुये चारकोसपै फेंकताभया तव वह राक्षस मृत्युको प्राप्तभया ४० और तिस युद्ध में शेपरहे राक्षस वलदेवजी के भयसे दशोंदिशाओं में भागते भये ४१ पीछे सूर्यनारायण अपने तेजोंको ग्रहणकर जव सूर्य्य अस्तहोनेलगा ४२ तव चन्द्रमा उदयहुआ और संध्या का अँधेरा नष्टहोनेलगा ४३ सव योद्धा कहनेलगे कि प्रभातकाल में किन्नरके गीतोंसे नादितरूप गोवर्द्धन के समीपमें युद्ध होनाचाहिये ऐसे कहतेहुये सव राजे युद्धको शांत करतेभये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेहिडिम्बवधे सप्तदशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१७ ॥

तीनसौअठारहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि हे राजन् हंस और डिम्भक ये दोनों रात्रिमें गोवर्द्धन पर्वतको जातेभये १ पीछे प्रभातमें जव सूर्य उदयहोगया तव श्रीकृष्ण २ सात्यकि वलदेव सारण आदि यादव गन्धर्व्व और अप्सराओं से नादित रूप गोवर्द्धन पर्वतके समीपमें प्राप्तहुये ३ पीछे यमुनाके समीपमें युद्ध प्रवृत्तहुआ ४ तव हंस और डिम्भक को उग्रसेन राजा तिहत्तरि वाणों से वींधताभया ५ और वसुदेव सात वाणोंसे सारण पचीस वाणोंसे कंक दश वाणोंसे ६ निशठ तिहत्तरि वाणोंसे सात्यकि सातवाणोंसे विपृथु अस्सी वाणोंसे उद्धव दशवाणोंसे ७ प्रद्युम्न तीसवाणोंसे साम्ब सातवाणोंसे अनाधृष्टि इकसठि वाणोंसे हंस और डिम्भकको वींधतेभये ८ ऐसे सव यादव मिलके घोररूप युद्धको करतेभये ६ पीछे हंस और डिम्भक ये भी दोनों सव यादवों को १० दश दश वाणोंसे वींधतेभये ११ तव पीडितहुये सव यादव लोहूको झिरातेहुये दीखनेलगे १२ जैसे वैशाख के महीनेमें फूलेहुये केसू के वृक्ष तव भयभीतहुये यादवभागनेको तैयारहुये १३ तिसी कालमें श्रीकृष्ण और वलदेव युद्ध करनेलगे १४ जैसे स्वामिकार्तिक व

इन्द्र आकाश में तब देखते गन्धर्व सिद्ध यक्ष महर्षि १५ ये सब विमानों में बैठे हुये इस युद्धको देखतेभये १६ पीछे महादेवके भेजेहुये दोदूत हंस डिम्भक की रक्षाके वास्ते प्रकटभये १७ पीछे हंसके संग श्रीकृष्णका और डिम्भकके संग बलदेव का युद्ध होनेलगा १८ तब सब योद्धा अपने अपने रथमें स्थितहुये शंख बजानेलगे १९ पीछे श्रीकृष्ण पाञ्चजन्य शङ्खको बजानेलगे २० पीछे महायोग लम्बे उदर और शरीरवाले २१ दोनों महादेव के दूत शूलको ग्रहणकर श्रीकृष्ण को मारनेके अर्थ भागे २२ और शूलसे श्रीकृष्णको पीडित करनेलगे तब श्रीकृष्ण रथसे उतर २३ दोनों दूतोंको पकड सौगुणा भ्रमाके कैलासका उद्देशकर फेंकताभया २४ तब दोनों फेंकेहुये कैलास पर्व्वतके शृङ्ग में जाके पडे तब बड़े आश्चर्य्य को प्राप्तहुये २५ पीछे रोषसे लालनेत्रोंवाला हंस सब देवताओं के देखतेहुये श्रीकृष्ण से कहनेलगा २६ कि हे केशव राजसूय यज्ञमें किसवास्ते विघ्न करताहै २७ मेरा गुरु ब्रह्मदत्त राजा यज्ञ करेगा तिसके अर्थ तू जो प्राणों की इच्छा करै है तो करदे २८ अथवा तू क्षणभर स्थितहो तू बहुतसे कर को देगा २९ और मैं सब राजाओं का ईश्वर हूं जैसे देवताओं का महादेव इसवास्ते युद्धमें तेरे वीर्य्य के विभव को नाशूंगा ३० ऐसे कहके हंस ताडवृक्ष के समान लम्बे धनुषको खैंच और जोर से तिस पै बाणचढा ३१ श्रीकृष्ण के मस्तक पै मारताभया ३२ तब वह बाण ललामकी तरह हुआ तब श्रीकृष्ण सात्यकिसे कहनेलगा ३३ कि हे मित्र तू मेरे रथकोहाक और दारुकको पृष्ठमें बैठा ३४ पीछे श्रीकृष्ण अपने बाण में आग्नेय अस्त्रको युक्तकर कहनेलगा ३५ कि हे हंस इसबाण करके तेरेको दग्धकरूंगा जो तू समर्थहो तो निवारणकर तेरे बहुतसे युद्ध करके क्याहै ३६ हे शठ तू क्षत्रियहै जो तू मदसे मत्तहुआ मेरेसे करको चाहताहै ३७ तो अब अपने पराक्रमको दिखा ३८ और तैंने पुष्करमें स्थितहुये पिताहै पीडितकरेहै ३९ तू मेरे स्थितहोने ब्राह्मणोंको शिक्षादेताहै ४० हे नराधम तेरे सरीखे दुष्टक्षत्रियोंको मारके ब्राह्मणोंके बेगी और दुष्ट क्षत्रियोंको मैं शिक्षा देनेवालाहूं ४१ मुनियों के शापसे तू तो पहलेही मरगयाहै ४२ परन्तु अब तेरेको मृत्यु के अर्थ निवेदन कर ब्राह्मणों की रक्षा मैं करूंगा ऐसे कहता हुआ श्रीकृष्ण युद्धमें आग्नेय अस्त्रको छोडताभया ४३ तब हंस भी वारुणास्त्रके आग्नेयास्त्रको शान्तकरताभया पीछे फिर श्रीकृष्ण हंसके अर्थ नारायण

अस्त्रको छोडताभया ४४ तब हंसराजा माहेन्द्रअस्त्रकरके वायव्यअस्त्रको काटता
भया पीछे श्रीकृष्ण माहेश्वर अस्त्रको छोडताभया ४५ तब हंसराजा रौद्र अस्त्र
करके माहेश्वर अस्त्रको काटताभया पीछे गान्धर्व राक्षस पैशाच ४६ ब्रह्मास्त्र इन्द्रो
को श्रीकृष्ण छोडताभया ४७ तब हंसभी कौबेर आसुरयाम्य इन अस्त्रोंसे श्रीकृष्ण
के चारोंअस्त्रोंको काटताभया ४८ पीछे क्रोधसे मूर्च्छितहुआ श्रीकृष्ण सब अस्त्रों
को नाशनेवाला ब्रह्मशिर अस्त्रको हंसके अर्थ छोडनेलगा ४९ तब हंस भी
ब्रह्मशिर अस्त्रकरके ब्रह्मशिर अस्त्रको निवारण करताभया ५० पीछे श्रीकृष्ण
यमुनाके जलमें स्नानकर जिसकरके दैत्योंको देवते मार राज्यको प्राप्तभये ५१
तिस वैष्णव अस्त्रको शरमें नियुक्तकर हंसको मारनेके अर्थ छोडताभया ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेश्रीकृष्णस्य
वैष्णवास्त्रत्यागेअष्टादशाधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३१८॥

तीनसौउन्नीसका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि महारौद्ररूप वैष्णवास्त्रको देख भयभीत हुआ हं-
सराज निश्चेष्टकी तरहहोके रथ से कूद यमुनाजी में भागा सो जहां श्रीकृष्ण
कालीयनागको मथतेभये १।२ तिस पातालतक डूंघे गम्भीररूप ह्रदमें हंसपडता
भया ३ जब हंस यमुना में कूदा तब पडतेहुये पर्वतोंके समान शब्द होनेलगा
४ तब रथसे कूदके श्रीकृष्ण भी जगत्को आश्चर्य दिखाने की तरह ५ यमुना
में हंस के ऊपर पडताभया और पैरों से प्रहार करताभया ६ तब कितनेक ऐसे
कहते हैं कि श्रीकृष्ण के पैरके प्रहारसे हंस राजा उसीवक्त मरगया और कित
नेक कहते हैं ७ कि यमुनाके जलकेद्वारा पातालमें प्राप्तभया तबसर्पोंने खालिया
परन्तु दीखा नहीं यह सुना ८ पीछे फिर श्रीकृष्ण अपने रथमें प्राप्तहोगये और
हे राजन् जनमेजय जब हंस मारागया तबहीं तेरा पितामह युधिष्ठिर ९ राजसूय
यज्ञको करताभया और जो हंसराजा जीवताहोता तो राजसूय यज्ञमें कौन अ-
न्य राजा आके प्राप्तहोसके था १० क्योंकि सब अस्त्रविद्याओं को जाननेवाला
और महादेव से लब्ध वरवाला ऐसा हंसराजा था ११ पीछे श्रीकृष्णने कालीय
ह्रदमें हंसराजाको मारदिया यह वार्त्ता क्षणभरमें पृथ्वीमें फैलतीगई पीछे गन्धर्वों
के पति देवलोकमें दिव्य गान करतेभये १२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसवधेऊनविंशत्यधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३१९॥

तीनसौवीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि अतिउग्र और वीर्य्यशाली ऐसे हंसकी मृत्युको सुन वलदेव के संग युद्ध करता डिम्भक वलदेव को त्याग १ यमुनाके समीपमें प्राप्तहुआ तब तिसके पृष्ठभाग में वलदेव भी भागा २ पीछे जहां हंस यमुना में डूवाथा तहां क्रुद्धहुआ डिम्भक यमुना के ३ भीतर पड और वारम्वार गोतेमार जलको भ्रमाताहुआ ४ परन्तु कहींभी हंसको नहीं देखताभया पीछे जलसे निकस श्रीकृष्णको देख ५ डिम्भक कहनेलगा अरे गोपालकेपुत्र वह मेराभाई हंस कहा है ६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगा हे राजन् अपने भाईको यमुनामें पूंछ ७ तब इसवचन को सुन डिम्भकराजा फिर यमुनामें प्रवेशकर वहुत प्रकारसे चारोंतरफ को देख ८ भ्राता हंसको यादकरताहुआ डिम्भक विलाप करनेलगा ९ और कहनेलगा कि हे राजेंद्र हंस अकेले भ्राताको छोडके कहागया ऐसे विलापकर भ्रातृवत्सल डिम्भक १० मरनेके अर्थ यमुनाके ह्रदमें वारम्वार गोतेमार ११ और अपने हाथसे अपनी जीभको खेंच और वारम्वार विलापकर पीछे जडसहित जिह्वा को खेंचके १२ यमुनाके जलमें नरकके अर्थ मग्नभया जब हंस और डिम्भक दोनों मरगये १३ तब प्राणियों को आश्चर्य दिखाताहुआ श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके १४ श्रीकृष्ण और वलदेव कछुक कालतक गोवर्द्धन पर्वतमें वसतेगये १५ ॥

इति श्रीहरिवंशपर्व्वणि भविष्यपर्व्वभाषायां हंसडिम्भकमरणोनामविंशत्यधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३२० ॥

तीनसौइक्कीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि कृष्णके दर्शन करने में चितवाले यशोदा और नन्दगोप गोवर्द्धन में आयेहुये १ श्रीकृष्ण और वलदेव को सुनके नैनू घृत दही खीर मयूरकी पांखोंके बाजूबन्द इन्होंको ग्रहणकर २ गोप गोपियोंके संग होके गोवर्द्धन पर्व्वतको गये तहां जाके यशोदा और नन्द श्रीकृष्णको देखते भये ३ तब श्रीकृष्णभी यशोदा और नंदगोपको देखके प्रसन्नहुआ ४ श्रीकृष्ण कहनेलगा हे मात व्रजमें कुशलता है ५ हे तात गोपनोंमे कुशलता है जनक दूधवाली गायें दूधदेती हैं हे पित वन्द मन्दीनरहे ६ हे मात व्रजके वानक पर्वा अन्धीनरहते ७ हे पित वहुतकोशोंवाले तृण अन्धीनरह लगरहे ८ गाढे

अस्त्रको छोड़ताभया ४४ तब हंसराजा माहेन्द्रअस्त्रकरके वायव्यअस्त्रको काटता भया पीछे श्रीकृष्ण माहेश्वर अस्त्रको छोडताभया ४५ तब हंसराजा रौद्र अस्त्र करके माहेश्वर अस्त्रको काटताभया पीछे गांधर्व राक्षस पैशाच ४६ ब्रह्मास्त्र इन्हों को श्रीकृष्ण छोड़ताभया ४७ तब हंसभी कौवेर आसुरयाम्य इन अस्त्रोंसे श्रीकृष्ण के चारोंअस्त्रोंको काटताभया ४८ पीछे क्रोधसे मूर्च्छितहुआ श्रीकृष्ण सब अस्त्रों को नाशनेवाला ब्रह्मशिर अस्त्रको हंसके अर्थ छोडनेलगा ४९ तब हंस भी ब्रह्मशिर अस्त्रकरके ब्रह्मशिर अस्त्रको निवारण करताभया ५० पीछे श्रीकृष्ण यमुनाके जलमें स्नानकर जिसकरके दैत्योंको देवते मार राज्यको प्राप्तभये ५१ तिस वैष्णव अस्त्रको शरमें नियुक्तकर हंसको मारनेके अर्थ छोडताभया ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने श्रीकृष्णस्य वैष्णवास्त्रत्यागेअष्टादशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१८ ॥

तीनसौउन्नीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि महारौद्ररूप वैष्णवास्त्रको देख भयभीत हुआ हंसराज निश्चेष्टकी तरहहोके रथ से कूद यमुनाजी में भागा सो जहां श्रीकृष्ण कालीयनागको मथतेभये १।२ तिस पातालतक डूबे गम्भीररूप ह्रदमें हंसपड़ता भया ३ जब हंस यमुना में कूदा तब पडतेहुये पर्वतोंके समान शब्द होनेलगा ४ तब रथसे कूदके श्रीकृष्ण भी जगत्को आश्चर्य दिखाने की तरह ५ यमुना में हंस के ऊपर पडताभया और पैरों से प्रहार करताभया ६ तब कितनेक ऐसे कहते हैं कि श्रीकृष्ण के पैरके प्रहारसे हंस राजा उसीवक्त मरगया और कितनेक कहते हैं ७ कि यमुनाके जलकेद्वारा पातालमें प्राप्तभया तबसर्पोंने खालिया परन्तु दीखा नहीं यह सुना ८ पीछे फिर श्रीकृष्ण अपने रथमें प्राप्तहोगये और हे राजन् जनमेजय जब हंस मारागया तबहीं तेरा पितामह युधिष्ठिर ९ राजसूय यज्ञको करताभया और जो हंसराजा जीवताहोता तो राजसूय यज्ञमें कौन अन्य राजा आके प्राप्तहोसके था १० क्योंकि सब अस्त्रविद्याओं को जाननेवाला और महादेव से लब्ध वरवाला ऐसा हंसराजा था ११ पीछे श्रीकृष्णने कालीय ह्रदमें हंसराजाको मारदिया यह वार्त्ता क्षणभरमें पृथ्वीमें फैलतीभई पीछे गन्धर्वों के पति देवलोकमें दिन रात गान करतेभये १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसवधेऊनविंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१९ ॥

तीनसौबीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि अतिउग्र और वीर्यशाली ऐसे हंसकी मृत्युको सुन वलदेव के संग युद्ध करता डिम्भक वलदेव को त्याग १ यमुनाके समीपमें प्राप्तहुआ तब तिसके पृष्ठभाग में वलदेव भी भागा २ पीछे जहां हंस यमुना में डूबाथा तहां क्रुद्धहुआ डिम्भक यमुना के ३ भीतर पड़ और वारम्वार गोतेमार जलको भ्रमाताहुआ ४ परन्तु कहींभी हंसको नहीं देखताभया पीछे जलसे निकस श्रीकृष्णको देख ५ डिम्भक कहनेलगा अरे गोपालकेपुत्र वह मेराभाई हंस कहां है ६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगा हे राजन् अपने भाईको यमुनामें पूछ ७ तब इसवचन को सुन डिम्भकराजा फिर यमुनामें प्रवेशकर वहुत प्रकारसे चारोंतरफ को देख ८ भ्राता हंसको यादकरताहुआ डिम्भक विलाप करनेलगा ९ और कहनेलगा कि हे राजेंद्र हंस अकेले भ्राताको छोड़के कहांगया ऐसे विलापकर भ्रातृवत्सल डिम्भक १० मरनेके अर्थ यमुनाके ह्रदमें वारम्वार गोतेमार ११ और अपने हाथसे अपनी जीभकोखैंच और वारम्वार विलापकर पीछे जड़सहित जिह्वा को खेंचके १२ यमुनाके जलमें नरकके अर्थ मरताभया जब हंस और डिम्भक दोनों मरगये १३ तब प्राणियों को आश्चर्य दिखाताहुआ श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके १४ श्रीकृष्ण और वलदेव कछुक कालतक गोवर्द्धन पर्वतमें रमतेगये १५ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकमरणोनामविंशत्यधिकत्रिशततमोऽध्यायः ३२० ॥

तीनसौइक्कीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि कृष्णके दर्शन करने में चित्तवाले यशोदा और नन्दगोप गोवर्द्धन में आयेहुये १ श्रीकृष्ण और वलदेव को सुनके नैनू घृत दही खीर मयूरकी पाखोंके वाजूबन्द इन्होंने ग्रहणकर २ गोप गोपियोंके संग होके गोवर्द्धन पर्वतको गये तहां जाके यशोदा और नन्द श्रीकृष्णको देखते भये ३ तब श्रीकृष्णभी यशोदा और नंदगोपको देखके प्रसन्नहुआ ४ श्रीकृष्ण कहनेलगा हे मात व्रजमें कुशलता है ५ हे तात गोधनोंमें कुशलता है जनक दूधवाली गायें दूधदेती हैं हे पित नन्द भण्डीरवट है ६ हे मात वनके वालक पर्वत अच्छीतरह है ७ हे पित वहुतरूपोंवाले तृण अच्छीतरह लगे हैं ८ गाढे

सब अच्छीतरह चलते हैं और गोपिया पुत्रों को जनतीभई हैं ९ और क्या नित्य-
प्रति बहुतसे दूधको गायें देतीरहती हैं १० और नैनू घृत दूध दही ये सब नित्य-
प्रति उपजते रहते हैं हे पित सब गोधन आरोग्यको प्राप्तरहताहै ११ नन्द कहने
लगा कि हे यदु श्रेष्ठ सब कुशल और आरोग्यसे बसते हैं १२ हे देवेश तेरीरक्षा
से हम सब कुशलरूप होरहेहैं रोगोंसे रहित गोधन बछडे होरहेहैं १३ हे केशव
एकही दुःखहै कि जो तेरेको हम नहीं देखते यह दुःख हमारी बुद्धिको हरतक्त
शिथिल करता रहताहै १४ वैशम्पायन कहनेलगे इस आदि वचनोंसे विलापकर-
तेहुये नन्द यशोदा को कहनेलगे हे मात हे पित अपने गृहको गमनकरो १५
जो मनुष्य हे मात तुम्हारे को कीर्त्तन करेंगे वे स्वर्ग में प्राप्तहोवेंगे जो मनुष्य
तुम्हारे को नमस्कार करेंगे वे मेरे अत्यन्त प्रिय होवेंगे १६ सबकाल में मेरे भक्त
होंगे १७ ऐसे माता और पितासे कहके अति प्रीतिमे मिल शरीर में स्पर्शकर
प्रसन्नहुये माता पिताको श्रीकृष्ण व्रजके अर्थ भेजताभया १८ तब यशोदा और
नन्दगोप अपने स्थानपै प्राप्तभये पीछे यादव और वृष्णियों के सग श्रीकृष्ण
भी द्वारकापुरी को गमन की इच्छा करतेभये १९ जो मनुष्य नित्यप्रति इस आ-
ख्यान को सुनेगा व पढ़ेगा वह पुत्रवान् धनवान् ऐसा होके अन्त में मोक्षको
प्राप्त होवेगा २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वेभाषायांयशोदानन्दगोपबलभद्रकृष्णसमागमे
एकविंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२१ ॥

तीनसौबाइसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि यादवों के सग श्रीकृष्ण पुष्करजी में प्राप्तहो मु-
निजनों को देखतेभये १ तब मत्सरता से रहित इकट्ठेहुये सबऋषि श्रीकृष्णको
देख अर्घ आदि से पूज २ कहनेलगे कि हे विष्णो हे श्रीकृष्ण हे जनार्दन तेरा
वीर्य अति अद्भुतहै ३ जिसकरके हंस और डिम्भक और देवोंसे दुसह ४ ऐसा
निचक्रदैत्य येसब मारेगये और तपको करनेवाले हमोंके सबकार्य्यों में कुशल
हुआ ५ और हे हरे तेरे स्मरणसे पापसे रहित हम होजावेंगे और तूहीमनद लों
को हरताहै ६ और तेरा स्मरण जन्तुओं को पुण्यका देनेवाला है तूही हमारा
निरन्तर धाताहै तूही तपका विधाताहै ७ हे हरे तेरे अर्थ नमस्कार है तूही ओं-

कारहै तूही वषट्कारहै तूही यज्ञहै तूही पितामहहै तूही ज्योतिहै तूही ब्रह्मकी मूर्त्तिहै तूहीब्रह्मा तूही महादेवहै ८ सब भूतोंका प्राण और अन्तरात्मा भी तूही है यज्ञ और दानों करके सब भूतोंका उपास्य भी तूही है ९ और विश्वको रचने वाला जो तू है सो तेरे अर्थ नमस्कारहै विश्वमूर्त्ति जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे देव ब्राह्मणों के वैरियोंको सबकालमें मारके इसलोककी रक्षाकर १० पीछे ऐसेही मुनियों के वचन को अङ्गीकार श्रीकृष्ण द्वारकापुरी में जाके वृष्णियों के संग वसतेभये ११ हे जनमेजय ऐसे श्रीकृष्णकी चेष्टा तेरेअर्थ कही अब तू क्या सुननेकी इच्छा करे है १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकृष्णस्यद्वारकामन्यागमने द्वाविंशत्यधिकत्रिशतोऽध्याय ३२२ ॥

तीनसौतेइसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा हे भगवन् बुद्धिमानों को किस विधिकरके भारत सुनना चाहिये और सुननेका क्या फलहै और भारतके सुननेमें किन देवताओं का पूजनकरना चाहिये १ और पर्व्व पर्व्वकी समाप्ति में क्या देनाचाहिये और कैसा भारतको वाचनेवाला पण्डित होनाचाहिये ये सब मेरे अर्थ कहो २ वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् जो भारतको श्रवण करनेकी विधि और फल सुनने से होताहै जोतू मेरेसे पूछैहै तो श्रवणकर ३ हे राजन् देवते क्रीडाके अर्थ पृथ्वी में प्राप्तभये और इस कार्य्यको कर फिर स्वर्गलोक को प्राप्तभये ४ पृथ्वीतल में उत्पन्नहुये ऋषि व देवताओंका सम्भव मैंकहताहूं तू सावधानहोके सुन ५ सब रुद्र साध्य विश्वेदेवा सब आदित्य दोनों अश्विनीकुमार लोकपाल महर्षि ६ गुह्यक गंधर्व नाग विद्याधर सिद्ध धर्म ब्रह्मा कात्यायन मुनि ७ सबपर्वत सबसमुद्र सब नदी सब अप्सराओं के गण सब ग्रह सब संवत्सर सब अयन सबऋतु ८ स्थावर व जंगम जगत् सब देवते और सब राक्षस ये सब भारतमें एकजगह स्थित दीखते हैं ९ इन्होंके नाम कर्मोंके अनुकीर्त्तन से भनिष्ठान पो। सुनके घोरपातक से भी मनुष्य छूट जाताहै १० और यथाक्रम से इस इतिहास को सुनके भारत के पार को प्राप्तहो ११ तिन पूर्वोक्तोंके अर्थ श्राद्ध करने चाहिये और शक्ति के अनुसार भक्ति करके १२ महादान और नानाप्रकार के रत्न गौ कांसिपात्रदान महनी

से भूपितकरी कन्या १३ नानाप्रकारकी सवारी नानाप्रकारके स्थान पृथ्वी वस्त्र सुवर्ण १४ नानाप्रकारके वाहन घोडे, मदवाले हाथी शय्या पालकी रथ १५ जो कछु घरमें सुन्दर श्रेष्ठहो वहसब ब्राह्मणोंके अर्थ दान देनाचाहिये और आत्मा स्त्री पुत्र इन्होंका भी दान भारतके अन्तमें करै १६ सुन्दर मनवाला और प्रसन्न शुश्रूषा करनेवाला १७ सत्य कोमलता में रत दान्त पवित्र और शौच से समन्वित श्रद्धावाला क्रोध को जीतनेवाला ऐसा सुननेवाला होना चाहिये १८ पवित्र शीलसे अन्वित आचारोंवाला श्वेत वस्त्रोंवाला जितेन्द्रिय संस्कारवाला और सब शास्त्रों को जाननेवाला श्रद्धावाला निन्दा को नहीं करनेवाला १९ रूपवाला सुन्दर ऐश्वर्य्यवाला दान्त सत्यवादी दान और मानको ग्रहण करने वाला ऐसा वाचक अर्थात् भारतको वाचनेवाला पण्डित होनाचाहिये २० और नतौ ज्यादै विलम्ब करै न ज्यादै विस्तार करै न जल्दकरै धीर्य्यता करै अच्छी तरह रसभाव से समन्वित अक्षरपदों का उच्चारणकरै २१ तरेशाठ वर्णों करके सयुक्त आठ स्थानों करके सयुक्त ऐसे पदका उच्चारणकरै पीछे स्वस्थहोके सुदर आसनपै स्थितहोके सावधानहोके २२ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तम देवीं सरस्वतींव्यास ततोजयमुदीरयेत् इस श्लोक का प्रथम उच्चारण करै २३ सो हे राजन् ऐसे वाचकसे महाभारत को सुन नियममें स्थित होनेवाला पवित्र ऐसा श्रोता पूर्ण फलको प्राप्त होता है २४ और प्रथम पारणको प्राप्तहो ब्राह्मणों ने कामनाओं से तृप्तकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको मनुष्य प्राप्त होता है २५ और अप्सराओं के गणों से सकीर्ण विमान में बैठके देवताओं से आनन्दित हुआ स्वर्गलोकमें जाके वसताहै २६ द्वितीय पारणको प्राप्तहो अतिरात्रिफलको प्राप्त होताहै तब सब रत्नमय और दिव्य ऐसे विमान में २७ दिव्यमाल्य, कपड़ों को धारणकर, दिव्य गन्ध से विभूपित दिव्य बाजूबन्दको धारण करनेवाला ऐसा मनुष्य स्थितहो देवलोकमें वसताहै २८ और तृतीयपारणको प्राप्तहो द्वादशाह फल को प्राप्त होता है देवके समान कान्तिवाला होके दशहजार वर्षोंतक स्वर्ग लोकमें वसताहै २९ और चतुर्थ पारण में वाजपेय यज्ञका फल होता है पाचवें पारण में दो वाजपेय यज्ञोंका फल होताहै उदय हुये सूर्यके समान कान्तिवाला अग्निके समान प्रकाशित ३० ऐसे विमानमें देवताओंके सग स्थितहोके स्वर्ग लोकमें गमनकर दशहजार वर्षोंतक स्वर्गलोक में आनन्दित रहताहै ३१ और

छठे पारणमें पूर्वोक्त से दुगुना फल होताहै सातवें पारणमें पूर्वोक्तसे त्रिगुणाफल होताहै अर्थात् कैलासके शिखर के समान आकारवाला वैदूर्यमय वेदियोंवाला ३२ और मणि विद्रुमोंसे भूषित ऐसे विमानमें अप्सराओंके सग स्थितहोके३३ दूसरा सूर्यकीतरह सबलोकोंमें विचरताहै आठवें पारणमें राजसूययज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३४ तब चन्द्रमाके कान्तिके समान कान्तिवाला रमणीय चन्द्रमाकी किरणों के समान प्रकाशवाले मनके समान वेगवाले ऐसे घोडों से संयुक्त ३५ ऐसे विमानमें चन्द्रमाके मुखसे ज्यादे मुखवाली सुन्दर स्त्रियोंसे सेव्यमान तिन नारियोंके गहनोंके शब्दसे ३६ सुखपूर्वक शयनकरके जागताहै और नवेंपारण में सब यज्ञों में उत्तमरूप अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है ३७ तब सुवर्णके स्तम्भोंसे संयुक्त वैदूर्य्यमय वेदियों से युक्त सुवर्णमय दिव्य झरोखों करके चारों तरफसे परिवृत ३८ अप्सराओंके समूह आकाशचारी गधर्व इन्होंसे सेवित परम शोभासे प्रज्वलित ३९ ऐसे विमानमें दिव्यमाल्य वस्त्रोंको धारण करनेवाला दिव्य चदन से भूषित ऐसा देवकीतरह होके देवताओंके साथ आनन्दित होताहै ४० और दशवें पारणको प्राप्तहो ब्राह्मणोंको नमस्कारकर किंकिणीजालसे शब्दित पताका और ध्वजाओं से शोभित ४१ वैदूर्य्यमणि रूप तोरणों से संयुक्त ४२ गीतोंमें कुशलरूप गधर्व व अप्सराओं से शोभित मुक्तानियों के वासके योग्य ४३ ऐसे विमान में सूर्यके समान वर्णवाले सोनाके मुकुटसे विभूषित दिव्य चदनसे लेपित अङ्गोंवाले दिव्य मालाओं से विभूषित ४४ दिव्य भोगों से समन्वित देवताओं के प्रसादसे उत्तम शोभाकरके युक्त ४५ ऐसे मनुष्यहोके बहुत वर्षोंतक स्वर्गलोकमें वसताहै पीछे गधर्वों से सहित होके इसीमहनार वर्ष इन्द्रके लोकमें इन्द्रके सग आनन्दित होताहै ४६ पीछे सूर्य्यलोक में वसके पीछे चन्द्रलोक में वसके ४७ पीछे शिवलोकमें वसके विष्णुलोकमें वसताहै हे राजन् इसमें सशय नहीं है ४८ और श्रद्धावाले पुरुष को ऐसे श्रवण करनाचाहिये ऐसे मेरे गुरू कहतेभये हैं जो जो मन करके वाञ्छितहो वह २ लेनकके अर्थ देनाचाहिये ४९ और हस्ती घोडा रथ यान सवारी वाहन कड़ने कुंडल यज्ञसूत्र अर्थात् सोनेका जनेऊ ५० और विचित्रवस्त्र गन्ध इन्होंकरके लेनक औा वाचककी पूजाकरनेसे नरलोकमें मनुष्य वास करसक्ताहै ५१ हेराजन् जो भारत के पर्व पर्वमें दानकरने उचित है वे कहता हूं ज्ञानी देशमन्त माहात्म्य धर्मवत्ती इन्हों को जानके ५२

और आद्य में ब्राह्मणों की द्वारा स्वस्तिवाचन कराके भारत को सुनने का आरम्भ करनाचाहिये ५३ और जब प्रथमपर्व्व समाप्तहोवै तब अपनी शक्ति से ब्राह्मणोंकी पूजाकरै ५४ आद्यमें वस्त्र गंधसे समन्वित वाचकको सुंदर खीरका भोजन कराके ५५ पीछे मूलफल पूप खीर सहत घृत इन्हों से भोजन करावै ५६ और प्रथम पर्वांतर्गत आस्तिक पर्व्वमें गुड और ओदनका दानकरै ५७ और मालपुआ और मोदक आदिका भोजन करावै और हे राजेंद्र सभापर्व्वमें ब्राह्मणों के अर्थ हविष्य भोजनकरावै ५८ वनपर्वमें मूलफलों से ब्राह्मणों को तृप्त करै वनपर्वांतर्गत अरण्यपर्व में जलसे पूरित कलशोंका दानकरै ५९ वनकेमूल और फलोंका दानकरै और सुंदर अन्नोंकादान ब्राह्मणों के अर्थ देवै ६० विराट पर्व में नानाप्रकारके वस्त्रोंकादानकरै उद्योगपर्वमें सर्वकाम गुणों से अन्वित ६१ भोजनसे गंधमाल्यसे अलंकृत ब्राह्मणोंको तृप्तकरै व भीष्मपर्व्व में उत्तमसवारी का दानकरके ६२ पीछे सवगुणोंसे संयुक्त संस्कृत ऐसे अन्नकादानकरै द्रोणपर्वमें उत्तम भोजन ब्राह्मणोंको देवै ६३ बाण धनुष तलवार इन्होंका दानकरै कर्णपर्व में सार्व्वकामिक व संस्कृत ऐसा भोजन ब्राह्मणों के अर्थ देवै ६४ शाल्यपर्व्व में मोदक गुड चावल ६५ मालपुआ आदि पदार्थ इन्हों से ब्राह्मणोंको तृप्त करै गदापर्व में मूंगका भोजन से ब्राह्मणों को तृप्तकरै ६६ ऐषिकपर्व्व में घृत और चावलकादान करै और स्त्रीपर्व में रत्नों करके ब्राह्मणोंको तृप्तकरै ६७ पीछे अनेक प्रकारके अन्नों से ब्राह्मणोंको भोजन करावै और शांतिपर्व्व में हविष्यरूप अन्नसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरै ६८ अश्वमेधपर्व में सार्वकामिक भोजनदेवै आश्रमनिवासपर्व्व में हविष्य भोजनदेवै ६९ मौशलपर्व्व में सब प्रकारका गन्धमाल्य अनुलेपन इन्होंका दानकरै महाप्रास्थानिक पर्व्व में सर्वकाम गुणों से अन्वित ७० गंध और माल्य अनुलेपन इन्होंका दानकरै स्वर्गपर्व में ब्राह्मणोंको हविष्य भोजन करावै ७१ हरिवंशपर्व के अन्त में हजार ब्राह्मणोंको भोजन करावै ७२ सोनासंयुक्त एक गायका दानकरै जो सामर्थ्य नहीं हो तो ५०० ब्राह्मण जिमावै ७३ और पर्व पर्वके अंतमें सुवर्ण से संयुक्त पुस्तक वाचनेवाले ब्राह्मणको देवै ७४ हरिवंश पर्वमें खीरका भोजन देवै पारणके अन्तमें ऐसेही करै ७५ जब सम्पूर्ण भारतको सुनचुके तब रेशमी वस्त्रमें पुस्तकको बँधवाके ७६ शुभदेशमें स्थापित कराके पीछे श्वेत वस्त्रों को धारण करनेवाला फूलोंकी माला को पहननेवाला

पवित्र और अच्छे गहनोंसे अलंकृत ऐसा यजमानहोके ७७ भारतकी पुस्तकों को धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर ७८ बारह तोले सोना गौ वस्त्र नानाप्रकारकी दक्षिणा और बारहतोले सोना अथवा छ तोले अथवा तीनतोले सोना की दक्षिणा देनी चाहिये ७९ और जो जो अपने को प्यारा लगताहो सो सर्वस्व ब्राह्मणके अर्थ दान देवै ८० सब प्रकारसे भक्तिकरके भारतके बाचनेवाले ब्राह्मण को अपना ईश्वर जानके प्रसन्नकरै सब देवताओंका नर और नारायण अवतारोंका कीर्तनकरै ८१ पीछे गन्ध और मालाआदिसे ब्राह्मणोंको अलकृत कर नानाप्रकार की कामनाओं और दानों से तृप्तकरै ८२ सो अतिरात्रयज्ञ के फलको पर्व पर्वके सुनने में प्राप्त होसक्ताहै और बाचनेवाला पण्डित जो भारत के अन्तमें भविष्य पर्व्व है तिसको बाचनेवाला स्पष्टतासे सुनावै ८३ जब सब ब्राह्मण भोजन करचुकैं तब गहने और वस्त्रोंसे शोभितहुये बाचनेवालेको अति प्रसन्न करके भोजन करावै ८४ जब बाचनेवाला प्रसन्न होताहै तब पूर्ण फलको प्राप्त होता है सब कामनाओं से ८५ जबतक भारत बाचै तबतक ब्राह्मणों का वरण करावै हे राजन् ८६ यह विधि तेरे अर्थ मैंने कहा भारतके सुनने में सब काल श्रद्धासे रहना चाहिये ८७ भारतको नित्यप्रति सुनै भारत को नित्यप्रति कीर्तन करै जिसके स्थानमें भारतकी पुस्तकहै तिसके हाथमें जय है ८८ भारत परम पवित्रहै और भारतमें नानाप्रकारकी कथाहै देवते भारतको सेवते हैं और भारत परमपदहै ८९ सब शास्त्रों में उत्तम भारतहै भारतसे मोक्ष प्राप्त होनाहै यह मैं तेरे अर्थ कहताहूं ९० महाभारत का आख्यान पृथ्वी गौ वाणी ब्राह्मण श्री कृष्ण इन्होंका कीर्तन करने से उत्तम लोकको पुरुष जाताहै ९१ वेद रामायण भारत तिन्होंकी आदि अन्त मध्यमें सब जगह हरिका गान किया जाताहै ९२ जहां दिव्यरूप सनातनरूप विष्णुकी कथा होतीहो वह परमपदकी इच्छा करने वाले ब्राह्मण को सुननी चाहिये ९३ यह परमपवित्र है यह उत्तम धर्म है सब गुणोंसे संयुक्त है ऐसा महाभारत मुनी की इच्छा करनेवाले मनुष्य को श्रवण करना उचितहै ९४ और असाररूप संसारमें वाञ्छित मनोरथका कारण हरिवंश का श्रवणहै ऐसे वेदव्यास ने कहा है ९५ हजार अश्वमेध सैकड़ों वाजपेययज्ञ इन्होंके करने से जो फल प्राप्त होताहै वह हरिवंश के सुननेसे है ९६ अजर अमर सबों के ध्यान करने के योग्य शून्य आदि अन्त से रहित सगुण निर्गुण

स्थूल अत्यन्त सूक्ष्म उपमासे रहित अनुमान करनेके योग्य ज्ञानगम्य त्रिभुवन का गुरु ऐसे विष्णुके मैं शरण हुआहू ९७ ऐसे कहनेके पीछे—सर्वस्तरतुदुर्गाणि सर्वोभद्राणिप्रश्यतु । सर्वेषावाञ्छिताअर्था भवन्त्वस्यचपारणात् ॥ इस मंत्ररूप श्लोक का उच्चारण करै ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्व्वभाषायासर्वपर्वानुकीर्तनेत्रयोविंशत्य धिकत्रिशतोऽध्याय ३२३ ॥

तीनसौचौबीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा हे ब्रह्मन् आकाशमें स्थितरूप तीन पुरोंका महादेव के सकाशसे जो नाश हुआहै वह सुनने की इच्छा करूंहू १ वैशम्पायन कहनेलगे बाहुशाली सब प्राणियों के विरोधी ऐसे दैत्योंका नाश जो तू पूछता है वह विस्तारसे सुन २ हे राजन् तीन शरोंसे दैत्योंका नाश महादेव ने किया है ३ सो हे पुरुष व्याघ्र बहुतसी धातुओं से समीरित और आकाश के मध्यमें मेघ समूहकी तरह उत्थित ४ उत्तम शोभासे प्रकाशित सोनाके कोटमे और प्रकाशितरूप मणियो व सब रत्नरूप तोरणों से संयुक्त ५ ऐसा त्रिपुर विख्यातहुआ पाशों से संयुक्त बलसे दर्पित ऐसे घोडे तिस पुरको वहनेलगे ६ वह पुर गंधर्व्व नगरकी तरह अनेक प्रकारके स्थानों से संयुक्त प्रकाशित होताभया जैसे चैत्ररथवन ७ तिस पुरमें सूर्यनाभ चन्द्रनाभ आदि दानव ८ ब्रह्मासे मोहितहुये देव मार्ग व पितृमार्ग को काटते और रोकतेभये ९ सबों के भागों को दूर करतेभये तब पुकारतेहुये देवते १० कि भागके छेदन करने से शत्रुगणों ने मारदिये ऐसे कहते हुये ब्रह्माजी के समीप में जाके कहनेलगे ११ कि हे देव तिन दैत्यों के मारनेका उपायकहो १२ तिसको जानके हम भी उपायकरें तब सब देवताओं को शांतकर ब्रह्मा कहनेलगा १३ कि हे देवताओ तुम सुनो यह दैत्य महादेव के बिना अन्यके हाथसे अवध्यहैं अर्थात् नहीं मरसकता १४ तब इस बचन को सुनके सब देवते पृथ्वीमें प्राप्तहो १५ विंध्याचल मेरु और मध्यभाग पृथ्वीतलमें उग्र तपके योगको जाननेवाले १६ सब देवने ब्रह्मसहिता को जपतेहुये महादेव जी के समीपमें प्राप्तभये १७ डाभपै शयनकरनेलगे कालेमृगोंकी चर्मको धारण करनेलगे १८ पीछे आकाशमार्ग को प्राप्तहो मायाकरके आवृतहुये सब देवते

महादेवके कैलासपर्वत में प्राप्तहुये १६ तहा महादेवजी को नमस्कारकर प्रकट विधानमे कहनेलगे २० कि भस्मसे आच्छादित अग्निविषे अज्ञानसे घृतदिया तैसे तेरे विमुख हुये हमारे विषे वरदान दिया २१ हे देव ब्रह्मका वचनकरो जो ब्रह्माजीने आकाशचारियों के समीपमें कहाहै २२ तब देवताओं के वचनों से और भाविअर्थ के बलसे इन्द्रआदि देवताओंके साथ महादेव सावधानहोके २३ युद्ध करने को तय्यार हुआ सब आदित्य भी रथ में प्राप्त हो प्रकाशित होते भये २४ महादेव के संग सब रुद्र भी सन्नद्धहुये प्रकाशित होनेलगे २५ और दानवोंको मारने के अर्थ विश्वेदेव भी सावधानहुये २६ इन सबोंकरके चारोंतर्फ से परिवारित महादेव धनुषबाणको ग्रहणकर त्रिपुरसे युद्ध करनेलगा २७ पीछे भिन्न देहोंवाले दैत्यपुरसे पृथ्वी में पडनेलगे जैसे टूटेहुये पर्व्वत २८ कितनेक देवताओं ने २९ तलवारों से काटे और कितनेक चक्र फरसा बाण इन्हों से काटे तब छिन्न भिन्न मुखोंवाले दैत्य जब सूर्य अस्त होनेलगा ३० तब पृथ्वी में पडने लगे पीछे देवते भी दैत्यों के बाणों से कटेहुये पृथ्वी में पडनेलगे ३१ पीछे नि-शाकालमें जयको प्राप्त होनेवालेदैत्य पैनेबाणों से देवताओंको बींधनेलगे ३२ तब जयको प्राप्त होके राक्षस कहने लगे कि जयकी आकांक्षा करनेवाले देवते युद्धमें पीड़ित करदिये हैं ३३ प्रास तलवार भाला इन्हों से संयुक्त और शुक्रा-चार्य्य के वचन से बोधित ऐसे दैत्य जयको प्राप्तभये ३४ तब सब देवताओं से परिवृत महादेव रथमें स्थितहो ३५ गर्वितरूप दैत्यों को बाणों से जलानेलगा जैसे प्रलयमें अग्नि ३६ पीछे मनके समान वेगवाले घोडों से चलनेवाला ३७ बैलकीध्वजावाला इन्द्रके वज्र और बद्दलकी तरह गर्ज्जनेवाला ३८ ऐसे रथमें महादेव स्थितहुये तब आकाशमें प्राप्तहुये सिद्ध ऋषि तपस्वि स्तुति करनेलगे ३९ और देवताओं के समूह और गन्धर्व गान्धर्वस्वरकरके गानेलगे ४० पीछे तब दैत्य बाणोंकी वर्षा करनेलगे और गदा भाला शूल इन्हों करके उग्रकर्म्म करने लगे ४१ और गदाओं करके गदाको भालों करके भालाओंको काटनेलगे ४२ और अस्त्रों से अस्त्रों को मायाकरके माया को शर शक्ति फरसा वज्र इन्हों को मायासे रचीहुई तलवारों से काटनेभये ४३ तब बाणोंकी वर्षा से देवते मरनेलगे और गन्धर्व नगरके आकार महादेवजी दैत्यों के शस्त्रों से निष्फल होनेलगा ४४ और अनेकप्रकारके शस्त्रोंसे इन्द्र स्थितहुआ निर्भय गणोंमें ऋषियों और

ब्राह्मणोंका दिव्य शब्द प्रकट होनेलगा ४५ और जब महादेवकारथ पडनेलगा ४६ तब सब प्राणी हाहाकार करनेलगे पर्वतों के अग्रभाग टूटनेलगे ४७ चला यमान हुये समुद्र क्षोभको प्राप्तहुये दशोंदिशा प्रकाशित हुई ४८ वृद्धब्राह्मण परब्रह्मको जपनेलगे योगहेतु करके आत्मामें आत्माको लगाके सबों के देखते हुये ४९ योगको धारण करनेवाला विष्णु वृषके रूपको धारणकर उत्तम रथको वहनेलगा ५० और सींगों से क्रीडाकरताहुआ शब्द करनेलगा तब वृषके शब्द से दु खितहुये दैत्य युद्ध करनेलगे ५१ पीछे धनुषपै चढ़े बाणमें अग्नि का स धानकर ब्रह्मास्त्रसे युक्तकर तीन प्रकारसे दैत्यके नगरों के अर्थ छोडताभया ५२ तब तिन बाणों से अनेक प्रकारके शस्त्र निकस तीनों पुरोंको काट पृथ्वी में प्राप्त करतेभये ५३ ऐसे ब्रह्मास्त्र करके दग्धहुये तीनोंनगर पृथ्वी में पड़े जब तीनोंपुर पृथ्वी में गिरपडे ५४ तब आनन्दसे युक्तहुये देवताओं से विष्णु कहनेलगे ५५ कि शत्रुओंको मारो तब सब देवते शत्रुओंको काटतेभये पीछे ऋषि ब्रह्मा महा देव देवते ये सब मिलके विष्णुकी स्तुति करनेलगे ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायान्त्रिपुरवधेचतुर्विंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ॥

तीनसौपच्चीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे जो इस हरिवंशमें वृत्तात कहेगये हैं वेसब क्रमसे गि नायेजातेहैं तिन्हों में प्रथम आदिसर्ग पीछे भूतसर्ग १ पीछे पृथुका आख्यान पीछे मनुओं का कीर्तन पीछे वैवस्वतकुलकी उत्पत्ति पीछे धुधुमारकी कथा २ पीछे गालवकी उत्पत्ति पीछे इक्ष्वाकुके वंशकाकीर्त्तन पीछे पितृकल्प पीछे च न्द्रमाकी उत्पत्ति पीछे बुधकी उत्पत्ति ३ पीछे अमावसूके वंशका वर्णन पीछे इन्द्र की उत्पत्ति ४ पीछे दिवोदासकी प्रतिष्ठा पीछे त्रिशंकुका चरित पीछे ययातिका चरित्र पीछेपुरुवंशका कीर्तन ५ पीछे कृष्णकी सभूतिका कीर्तन पीछे स्यमन्त कमणि का कीर्तन पीछे सक्षेपसे विष्णुके अवतार ६ पीछे तारकामययुद्ध पीछे ब्रह्मलोकका वर्णन पीछे योगनिद्राका उत्थान पीछे ब्रह्मा विष्णुकी वाक्य ७ पीछे देवताओंका अशोंसे अवतरण पीछे नारदजीवाक्य पीछे स्वगर्भ निधि ८ पीछे आर्यास्तव पीछे कृष्णकी उत्पत्ति पीछे गोव्रजमें विष्णुका गमन पीछे शकटका निवर्तन ९ पीछे पूतनाका वध पीछे यमलार्ज्जुनका भग पीछे वृकदर्शन पीछे

वृन्दावन निवेशन १० पीछे शारद् ऋतुका वर्णन पीछे यमुनाह्रद दर्शन पीछे कालियका दमन पीछे धेनुकका वध ११ पीछे प्रलम्बका निधन पीछे शरदवर्णन पीछे गिरियज्ञ प्रवृत्ति पीछे गोवर्द्धन धारण १२ पीछे गोविंदका अभिषेक पीछे गोपी सक्रीडन पीछे अरिष्टासुरका वध पीछे अक्रूरका वृन्दावन में भेजना १३ पीछे अन्धककी वाक्य पीछे केशीका निधन पीछे अक्रूरका आगमन पीछे नाग लोकका दर्शन १४ पीछे धनुषकाभंग पीछे कसकी वाक्य पीछे कुवलयापीड़ कावध पीछे चाणूराद्यवध १५ पीछे कसका निधन पीछे कसकी स्त्रियों का वि· लाप पीछे उग्रसेन का अभिषेक पीछे यादवों का आश्वागमन १६ पीछे गुरुकुल से राम कृष्णका आगमन पीछे मथुराका उपरोध पीछे जरासन्धका निवर्तन १७ पीछे विरुद्ध वाक्य पीछे वलदेवका दर्शन और भाषण पीछे गोमन्तक रोहण पीछे जरासन्ध गमन १८ पीछे गोमन्त पर्वतका दाह पीछे करवीर पुरमें गमन कर शृगालका वध पीछे मथुरामें आगमन १९ पीछे यमुनाका खेंचना पीछे म· थुरापक्रम पीछे कालयवनका उपायसे वध २० पीछे द्वारावती का निर्माण पीछे रुक्मिणी का हरण पीछे रुक्मिणीका विवाह पीछे रुक्मीका वध २१ पीछे वल· देवाह्निक पीछे वल माहात्म्य पीछे नरककावध पीछे पारिजातका हरण २२ पीछे निकुम्भके वधका आख्यान पीछे प्रभावती का हरण पीछे वज्रनाभवध २३ पीछे फिर विशेषकर द्वारावतीका निर्माण पीछे द्वारकामें प्रवेश पीछे सभामेंप्रवेश २४ पीछे नारदकीवाक्य पीछे वृष्णिवशका अनुकीर्तन पीछे षट्पूर्ववधाख्यान पीछे अन्धका निवर्हण २५ पीछे कृष्णकी समुद्रयात्रा पीछे जलक्रीड़ा कुतूहल पीछे मधुपान प्रवर्तन २६ पीछे शालिक गधर्व सुभद्राहरण पीछे भानुमतीका हरण व कीर्तन २७ पीछे शम्बरका वध पीछे धन्योपाख्यान पीछे वासुदेव का माहात्म्य पीछे वाणयुद्ध २८ पीछे भविष्य पीछे पुष्कराख्यान पीछे वाराह नरसिंह वामन २९ इन्द्रोंके आख्यान पीछे कृष्णकी कैलासयात्रा पीछे पौंड्रकका वध पीछे हंस डिंभकका वध ३० पीछे त्रिपुरका सहार हे राजन् सब पापोंको नाशनेवाला यह वृत्तात संग्रह तेरे अर्थ कहा ३१ जो सावधान होके प्रभात और सायकाल में इस वृत्तान्त को सुने वह सब कामनावाला होके ३२ धन यश आयुष्य भुक्ति मुक्ति फलका देनेवाला ऐसा वैष्णवधाम को प्राप्त होवेगा ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वणि [illegible]

पर्वाविद्यानुक्रमणिका [illegible] ३२४ ॥

तीनसौछब्बीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा हे मुनिवर हरिवंश पुराणके श्रवण करने में क्याफल है और क्यादेना योग्यहै यह मेरे अगाडी वर्णन कर १ वैशम्पायन कहनेलगे कि हरिवंश पुराण के सुनने से कायिक और वाचिक और मानसिक पापका नाशहोताहै जैसे सूर्योदयमें जाड़ा २ और अठारह पुराणोंके सुननेसें जोफलहै ३ वह इसके सुननेसे फल वैष्णवको होताहै इसमें संशय नहीं और हरिवंशका आधाश्लोक व चौथाई श्लोक को ४ श्रद्धासे युक्त मनुष्य सुनते हैं वे वैष्णव पदको प्राप्तहोंगे और हे राजन् कलियुग में जम्बूद्वीपके आश्रयहो हरिवंश को सुननेवाले दुर्लभहैं ५ यह मैं सत्यकहूहूं और पुत्रकी कामनावाली स्त्रियोंको यह वैष्णवयश निश्चय सुनना योग्यहै ६ और इसको सुनके वाचकके अर्थ बहत्तर तोलासोना देनाचाहिये ७ और सोनाके सींगोंवाली और बच्छासे संयुक्त और वस्त्रोंसे संयुक्त ऐसी कपिलागौ वाचकके अर्थ देनीचाहिये ८ और गहने और विशेषकरके कानका आभूषण और सवारी पृथ्वी इन्हों का दान ९ ब्राह्मण के अर्थ देनाचाहिये पृथ्वी के दान के समान दान न हुआ न होगा १० और जो हरिवंशको सुने व सुनावै वह सब पापोंसे निर्मुक्तहो वैष्णव पदमें बसे ११ और अपने एकादशपितर और आत्मा और पुत्र व स्त्री इन्होंकर उद्धार होताहै १२ और सुननेवालेन को दशांश हवन करना चाहिये हे राजन् मैंने तेरे अगाडी संपूर्ण कहदियाहै १३ इसको सुननेमे सबपापोंसे मनुष्य छूटजाताहै और अपुत्र पुत्रको प्राप्त होताहै और निर्धन धनको प्राप्तहोता है १४ और नरमेध और अश्वमेध से जो फल प्राप्तहोताहै वह इसके सुननेसे निश्चय फल मिलताहै १५ व ब्रह्महत्यासे और गर्भहत्या से और गोहत्यासे और मदिरा पीनेवाले १६ और गुरूकी शय्यापै स्थित होनेवाले ये सब इसपुराणको एकबार सुननेसे भी पवित्र होते हैं अन्यथा नहीं १७ यह श्रीकृष्णका माहात्म्य तेरे अर्थ मैंने कहा सो इस को सुननेसे और पढनेसे संसार में दुर्लभ फल प्राप्त होताहै १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांपर्वणिवैयासिक्यांवंशीनिवासकरविदत्तरचितहरिवंशपर्वणि भविष्यपर्वभाषायांहरिवंशश्रवणफलकीर्तिनंषड्विंशत्यधिकत्रिशततमोऽध्याय ३२६ ॥

इति हरिवंशपर्व समाप्तम् ॥

इस यन्त्रालय मे जितने प्रकार की महाभारते छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥



जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेकप्रकार के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेद कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानो यह पुस्तक वेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ७० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राजी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेखाने में छपीथी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारखानेका दस्तूरहै ॥

अब दूसरीवार डबलपैका बडे हरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी क़ीमतमें किफायत होसक्ती है ॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग २ भी मिलते हैं ॥

पहले भाग में (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरे भाग में (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरे भागमें (८) कर्णपर्व्व (९) शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिकपर्व्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्व राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व (१५) आश्रमवासिकपर्व्व (१६) मौसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० ऐषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मौसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढेहुये मनुष्यों कोभी भलीभांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसका तर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगया है और आदिपर्व्व से लेके हरिवंश पर्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगये हैं ॥